CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वविद्यालय प्रकाशन,
के. ४०/६, भैरवनाथ,
वाराणसी-१.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुलाई

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५९

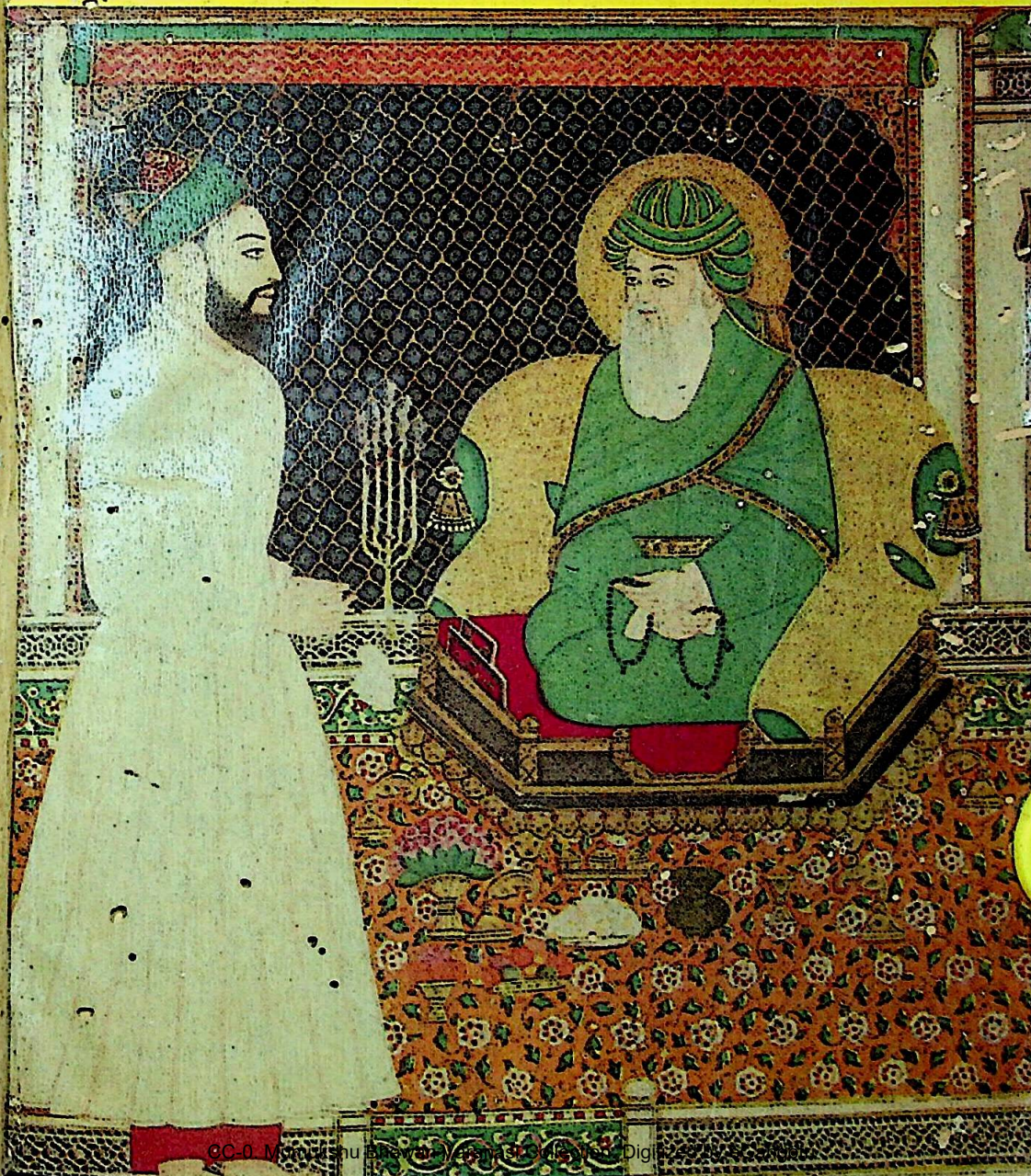

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपका बच्चा...

...इसने अपनी तन्दुरुस्ती और सुख आप पर छोड़ रखा है। इसका अर्थ यह है कि आप उसे जो खाद्य देते हैं वह सबसे बढ़िया होना ही चाहिए। बेशक! मां का दूध बच्चों के लिए परिपूर्ण है – परन्तु ऑस्टरमिल्क भी ठीक वैसा ही है।

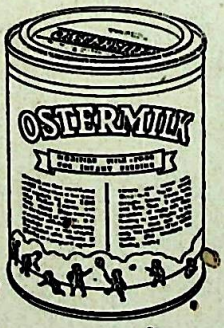

OSTERMILK

ऑस्टरमिल्क—मां के दूध के समतुल्य

डिप्थीरिया घातक है—प्रतिरोध शक्ति स्वास्थ्य के लिए वरदान है

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुमित्रा कहती है —

घुँघराले काले केशों से
दुनिया करती प्यार ।
किन्तु जभी वे होते उजले
जग देता दुत्कार ॥

इसलिये यदि आप अपने केशों को मेरी तरह सुन्दर, लम्बे, घने, काले और चमकीले बनाना चाहते हों तो आप भी हमेशा मेरी तरह के एम पी मार्का विशुद्ध नारियल तेल व्यवहार करें।

के ऐम पी
मार्का
नारियल तेल

१००% विशुद्ध

सभी जगह ½ पौंड, १ पौंड, २ पौंड, तथा ५ पौंड की भैकुम सील्ड टीनो में प्राप्य है

फोन : ३४-३४१४

प्रस्तुतकर्ता :—
पवित्र हिन्दू आयल मिल्स
१ मछुआ बाजार स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीघ्र यातायात सेवा

क्या हम आपको याद दिलायें ?

मध्य रेलवे प्रमुख लाइनों पर, निम्नलिखित रेलवे स्टेशनों के बीच आपके माल के लिए 'शीघ्र यातायात सेवा' की सुविधा प्रदान करता है।

	माल स्वीकार करने के दिन	अधिक से अधिक लगने वाला समय
१. वाड़ीबन्दर से शालीमार	मंगलवार, वृहस्पतिवार और शनिवार	८ दिन
वाड़ीबन्दर से टाटानगर	,, ,,	७ दिन
वाड़ीबन्दर से नागपुर	,, ,,	४ दिन
२. वाड़ीबन्दर से मद्रास	बुधवार और शनिवार	७ दिन
वाड़ीबन्दर से अडोनी	,, ,,	५ दिन
३. वाड़ीबन्दर से कानपुर	शुक्रवार	७ दिन
४. देहली से मद्रास	इतवार और बुधवार	१२ दिन
५. बेलनगंज से मद्रास	,, ,,	११ दिन
६. वाड़ीबन्दर से बेंगलौर व्हाया पूना (घौरपुरी)	रोजाना	५ दिन
७. वाड़ीबन्दर से कोल्हापुर व्हाया पूना (घौरपुरी)	रोजाना	३ दिन

'शीघ्र यातायात सेवा' से सम्बन्धित अन्य जानकारियों के लिए कृपया माल अधीक्षक, वाड़ीबन्दर, बम्बई, तथा सम्बन्धित 'डीपो' से सम्पर्क कीजिए।

मध्य रेलवे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

PHILIPS

PHILETTA DE LUXE

Larger modern restyled cabinet, 6 Noval valves AC/DC, all wave coverage, three wave bands. two position tone control, pickup connection. Fully tropic proof

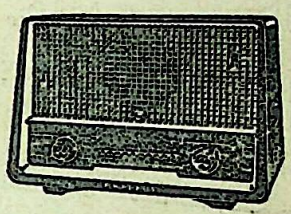

PHILIPS novosonic RADIO

A NEW WORLD IN SOUND

B3CA77U
PRICE RS. 315/-
(exclusive of all taxes)

AUTHORISED PHILIPS RADIO DEALER

PSPD 19

PHILIPS RADIO

Dealers :

Tel : 27958

JAMNADAS RUTONSI,
14, New Queens Road, BOMBAY-4.

Tel : 28208

MODERN RADIO STORES,
Prarthana Samaj, BOMBAY-4.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

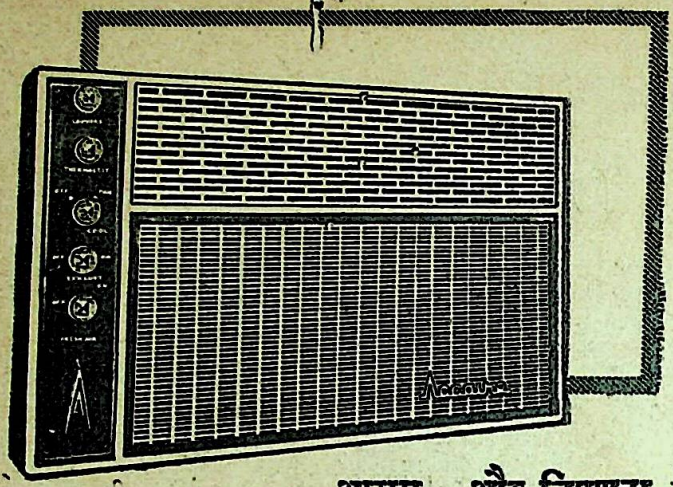

आराम...और निपुणता के लिए

ऍकायर— ए. डब्ल्यू. १०२ ए. सी. डी. डब्ल्यू. १०२ डी. सी.

खिड़कीनुमा कमरे को ठंडा बनानेवाला

- कम कीमत
- शान्तिपूर्ण कार्य
- कष्टरहित सेवा
- एक साल की जिम्मेवारी

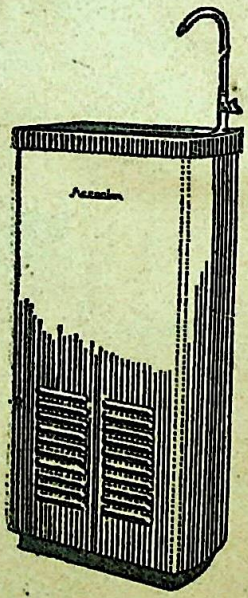

एकूलर—वाटर कूलर्स

- ठंडे स्वास्थ्यदायक जल की निरन्तर प्राप्ति
- जंगसे रक्षित 'केबिनट' ● आसानी से लगाने योग्य

सुसंगठित
सेवा
आपके आदेशार्थ

एअर कन्डीशनिंग कोर्पोरेशन प्रा. लि.

कलकत्ता बंबई नयी दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहाँ भी वे मिलती हैं उनकी बात होती है मोरारजी के वस्त्रों के बारे में

Morarjee
FABRICS

हर कहीं
उनकी नई चमकदार
छींट उनकी विख्यात
क्वालिटी के साथ
श्रीमतीजी को भा गई है
इस बार कपड़ा
खरीदते समय
मोरारजी के कपड़े माँगिए।

मैनेजिंग एजेंट—पीरामल एन्ड स स

दी मोरारजी गोकुलदास स्पि. एन्ड वी. कं. लि. परेल, बम्बई-१२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

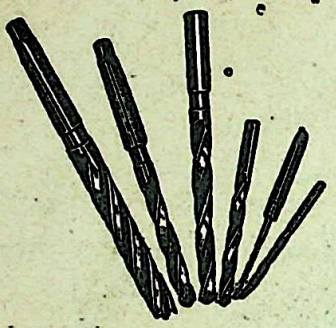

ड्रिल

टैप

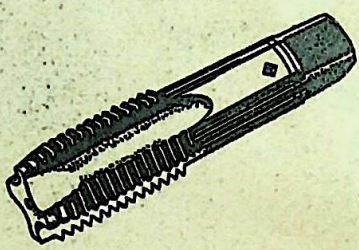

कटर

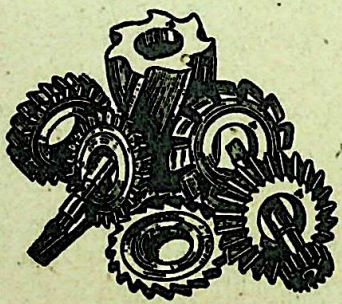

दी इंडियन ट्रूल मैन्यूफैक्चरर्स लि.

१०१, शीव रोड, बम्बई २२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२१ जुवेल की पानी, धूल, नमी और धक्के आदि सब से
सुरक्षित शानदार रेडियम डायल वाली घड़ी

पाँच साल की जिम्मेवारी

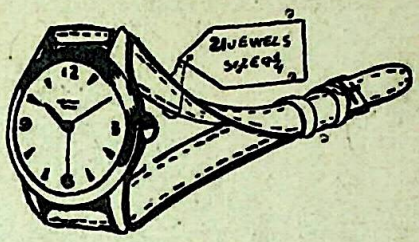

२१ जुवेल की 'क्रोम स्टील' के ढक्कन वाली कीमत ५०) रुपया।
२१ जुवेल की 'रोल्ड गोल्ड' के ढक्कन वाली कीमत ५५) रुपया।
पेकिंग व पोस्टेज के २) रुपया अतिरिक्त

ओस्का वॉच कंपनी
पो. बाक्स नं. ४११८ बम्बई–७.

योग विद्या का अद्वितीय ग्रंथ

"उमेश योग दर्शन"

(प्रमथ खंड)–चार भाषाओं में

गुजराती * हिन्दी * मराठी * अंग्रेजी लेखक : योगीराज श्री उमेशचंद्रजी
संस्थापक व संचालक : श्री रामतीर्थ योगाश्रम बम्बई–१४

इस ग्रंथमें रोगी तथा निरोगी स्त्री- पुरुषोंकी तन्दुरुस्ती अच्छी रखनेके लिए ६ प्रकार के मलशोधन कर्म, आसन, मानसिक इलाज, जलोपचार, सूर्य किरण चिकित्सा, आहार चिकित्सा आदि अनेक शक्ति वर्धक तथा रोग निवारक, घर में हो सकें ऐसे सुलभ, साध्य इलाज बताये गये हैं। ४०० से अधिक पृष्ठ तथा १०८ से अधिक चित्र हैं। ग्लेज आर्ट पेपर पर योग के आसनों के चित्र, मलशोधन कर्म के चित्र तथा स्वामीजी के रंगीन चित्र हैं। ३५ वर्षों का निजी अनुभव तथा २५ वर्षोंके दौरानमें श्री रामतीर्थ योगाश्रमसे लाभप्राप्त भाई-बहनोंके अनुभवोंके प्रमाण पत्र भी योगीराज ने इस ग्रंथमें प्रस्तुत किये हैं। संक्षेप में, स्त्रियों, पुरुषों, बालकों, रोगियों तथा निरोगिगों सबको अपूर्व मार्ग दर्शन करानेवाली अजोड़ पुस्तक है।

प्रत्येक भाषा की पुस्तक की प्रति का मूल्य रु. १५)
डाक खर्च रु. २) अलग। मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर से भेजिये।
वी. पी. नहीं भेजी जाती। श्री रामतीर्थ योगाश्रम, दादर, बम्बई-१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों को विशेष प्रिय

गोला

मिठाइयाँ
और
टाफ़ियाँ

गोला मिठाइयाँ और टाफ़ियाँ जितनी स्वादिष्ट हैं, उतनी ही पौष्टिक भी। प्राकृतिक 'ए' 'बी,' 'बी₂', और 'सी' विटामिनों से परिपूर्ण होने के कारण वे बालकों के स्वाभाविक शरीर-विकास में बड़ी अमूल्य सहायता देती हैं

दी हिन्दुस्तान शूगर मिल्स लि.
५१, महात्मा गांधी रोड, फोर्ट, बम्बई १

A.S.P.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

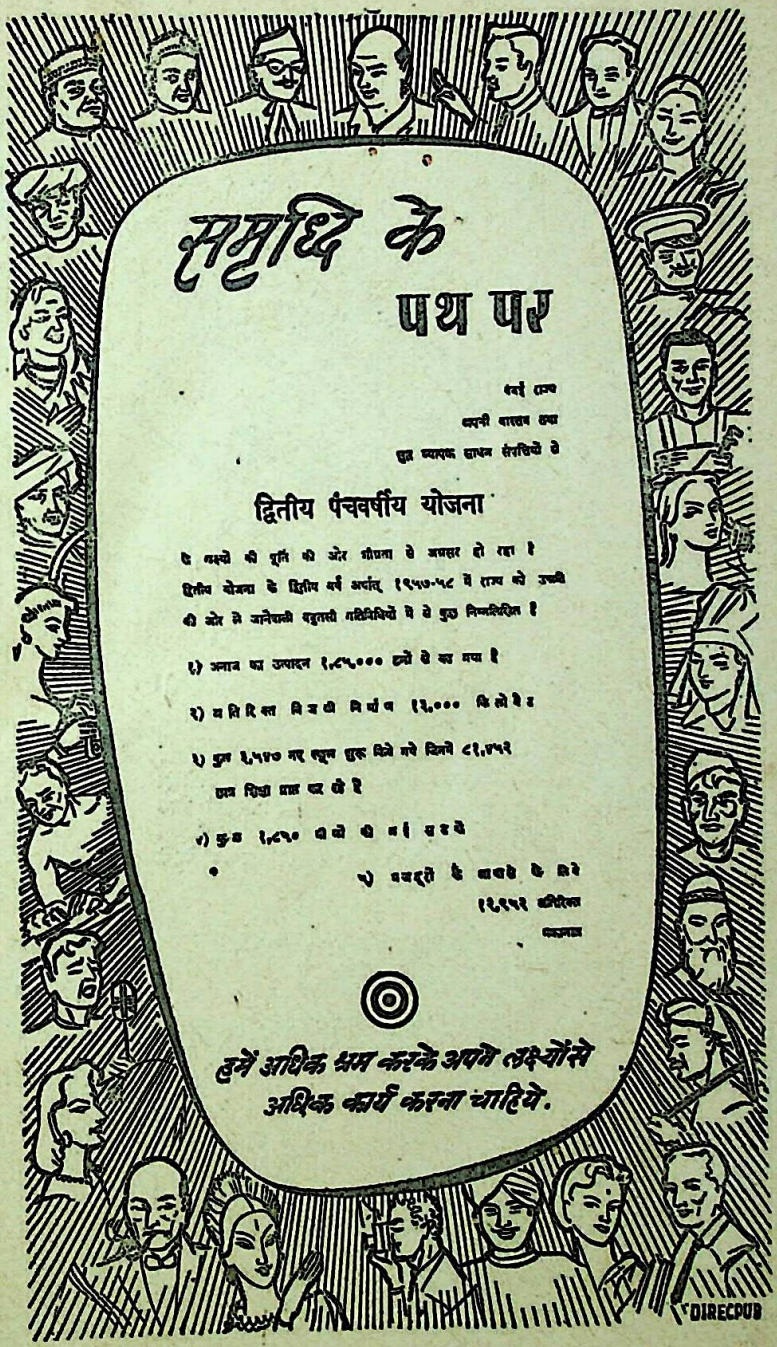

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

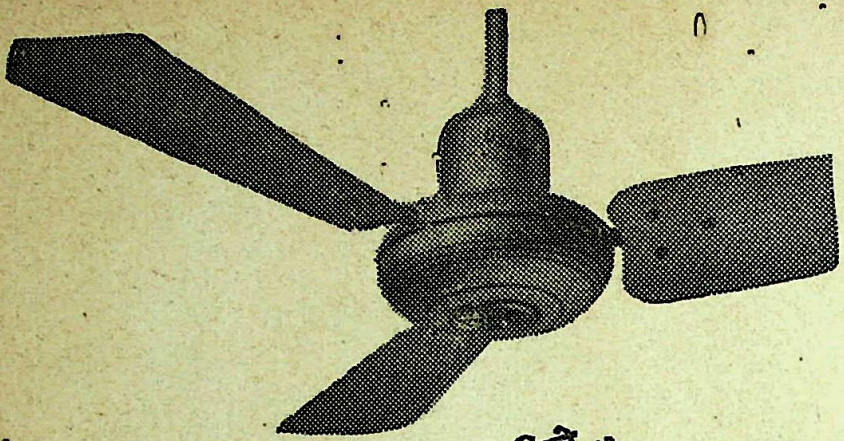

यह देखिये...

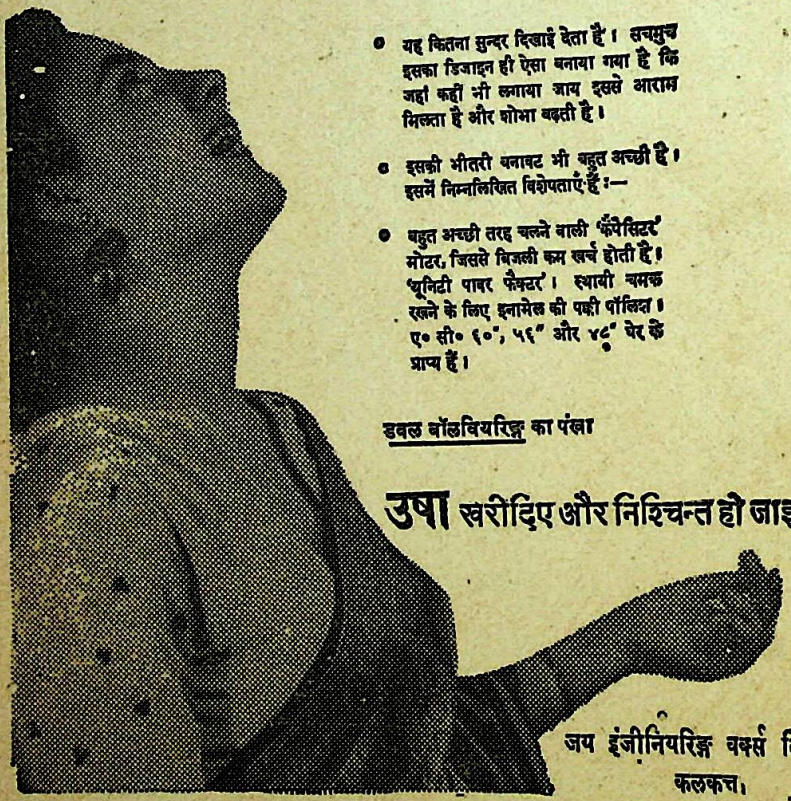

- यह कितना सुन्दर दिखाई देता है। सचमुच इसका डिजाइन ही ऐसा बनाया गया है कि जहां कहीं भी लगाया जाय इससे आराम मिलता है और शोभा बढ़ती है।
- इसकी भीतरी बनावट भी बहुत अच्छी है। इसमें निम्नलिखित विशेषताएं हैं:—
- बहुत अच्छी तरह चलने वाली 'कैपेसिटर' मोटर, जिससे बिजली कम खर्च होती है। 'यूनिटी पावर फैक्टर'। स्थायी चमक रखने के लिए इनामेल की पक्की पॉलिश। ए० सी० ६०", ५६" और ४८" घेर के प्राप्य हैं।

डबल बॉलबियरिङ्ग का पंखा

उषा खरीदिए और निश्चिन्त हो जाइए

जय इंजीनियरिङ्ग वर्क्स लिमिटेड
कलकत्ता।

J-E6-39

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुलाई **नवनीत** १९५९
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

सम्पादक
रतनलाल जोशी

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

सहकारी
रमेश सिन्हा : विद्याभूषण

शिल्प: गोपालकृष्ण भोंडे

लेख-सूची

१ उत्तर
२ प्रेम की परम सार्थकता
३ पाब्लो पिकासो
४ प्रेरणा-पुष्प
५ पत्थर की लकीरें
६ ...झूठ क्यों बोला
७ योगी मिलरेप
८ सुख-दुःख
९ शब्दों की पूँछ
१० मादाम सोफिया
११ न देखा : न सुना
१२ सहश्रम का नंदनवन
१३ क्यों
१४ ...यह अविस्मरणीय अध्याय
१५ आजादी

'तत्वमंजरिका' से १७
डा० रानाडे १८
डा० आनंद २२
पाब्लो पिकासो २३
... ... २४
महावीर त्यागी २५
गंगाशंकर मिश्र २८
टी० एल० बस्वानी ३२
धर्मेंद्र शास्त्री ३४
शिवाजी शंकर कार्लेकर ३७
... ... ४३
अशोक मेहता ४५
रामनारायण उपाध्याय ४९
'इतिहासकार' ५१
भारती ५२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१६ पानी केरा बुदबुदा...	'पुस्तक-कीट'	५५
१७ असगर गोंडवी	रशीद अहमद सिद्दीकी	५९
१८ मोती	असगर गोंडवी	६३
१९ ...काल की छाया	डा० एडमंड ग्रेगरी	६६
२० साँप	संतराम	७१
२१ ...हमसे भी श्रेष्ठ प्राणी	दीपशंकर	७५
२२ सर्वश्रेष्ठ	वल्लत्तोळ	७६
२३ कवि (फ्रेंच-कविता)	रोशे	८०
२४ मुस्कान : सुख की खान	... ...	८१
२५ ...मुसोलिनी को कैद से चुराया	मेजर गुड्रेज	८३
२६ साहस (जर्मन-कविता)	हाफ्तमैन	८४
२७ कड़वे-मीठे जीवन-घूँट	... ...	८९
२८ अंतर	एक स्विस लोक-कथा	९०
२९ ...प्रसन्नता मापिये	श्रीकृष्णदत्त भट्ट	९३
३० आदिम पाप (हिन्दी-कहानी)	यशपाल	९७
३१ आइने (उर्दू-कहानी)	डा० सलाउद्दीन अकबर	११५
३२ चाँद के बहनोई (पुस्तक-संक्षेप)	कर्नल जोरावरसिंह	१२९
३३ स्वाध्याय-समीक्षा	राजहंस	१५१

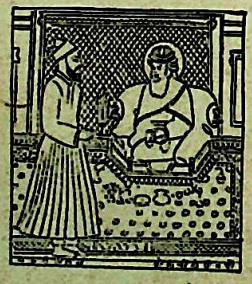

दाराशिकोह अपने गुरु के सम्मुख

[चित्र : प्राचीन मुगल-दक्खिनी कलम]

– रेखाचित्र –

जैनुल आबेदिन, तूम्रे, डी० जी० कुलकर्णी, केर्यट, वी० एन० ओके, हरेनदास, वाई० के० शुक्ला

श्री रतनलाल जोशी-द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, १४१ तारदेव, बम्बई-७ के लिए प्रकाशित तथा एसोसिएटेड ऐडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक:
श्रीगोपाल नवदिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष ८ : : अंक ७

जुलाई, १९५९

उत्तर

"मैं क्या करूँ?" यह प्रश्न क्रुद्ध वृश्चिक की भाँति आनंद के मानस को इतनी क्रूरता से दंशित करने लगा कि, उनकी सारी दिनचर्या ही अभिशप्त हो उठी। इसी प्रकार आध्यात्मिक पीड़ा में तिलमिलाते वे एक दिन तथागत की सेवा में पहुँचे और बड़े भक्ति-विह्वल भाव से उन्होंने अपना प्रश्न उनके सम्मुख रखा। भगवान् कुछ देर तक अपने प्रिय शिष्य आनंद का वह उलझन-उत्पीड़ित मुख अमित ममत्व-भरी दृष्टि से देखते रहे; फिर सहज-सस्मित स्वर में बोले—"आनंद! यह तो तुम भी जानते हो कि, जब को घुड़सवार विजन जंगल में मार्ग भूल जाता है, तो उसे स्वयं ही अपना मार्ग ढूँढ़ना पड़ता है...और आयुष्मान् आनंद! यह भी तुम जानते हो कि, जैसे नदियों के मार्ग अपने-अपने, अलग-अलग होते हैं, वैसे जीव के परम काम्य भी अलग-अलग वैयक्तिक ही होते हैं। एक का गंतव्य भला दूसरा कैसे बता सकता है?"

"मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया, करुणामय!" श्रद्धा-सजल नेत्रों से आनंद ने भगवान् के चरणों में अपना सिर टेक दिया। —'तत्वमंजरिका' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि प्रेम से भी परे कुछ है– यदि प्रेम से भी कुछ अप्राप्य है– तो फिर उसे कौन प्राप्त कर सकेगा ? प्रेम से बड़ी पहुँच क्या और किसी की है ? डा० रानडे के वचनामृत से निःसृत नीचे की कथा में इस परम तत्व की पुष्टि प्राप्त कीजिये।

देवगुरु बृहस्पति सर्वशास्त्र-पारंगत होकर जब गुरुगृह से वापस लौट रहे थे, तो उनके साथ उनके छोटे भाई संवर्त भी थे। संवर्त भी अपने ज्येष्ठ भ्राता की भाँति विद्या-बुद्धि-समर्थ थे। मार्ग की एक नदी पार कर जब वे मल्लाह को नाव का किराया देने लगे, तो मल्लाह ने कहा– "ऋषिपुत्र, किराये के बजाय यदि आप मेरे एक प्रश्न का उत्तर दे दें, तो मेरा बड़ा उपकार हो जायेगा।" दोनों भाइयों को उस मत्स्य-कुलोत्पन्न केवट की जिज्ञासा पर बड़ा विस्मय हुआ और उन्होंने उसे प्रश्न पूछने की आज्ञा दे दी।

केवट ने विनीत भाव से पूछा–"प्रेम सत्य है या मिथ्या ?" प्रश्न सुन कर दोनों भाइयों के मुखमंडल पर मुस्कानें खिल गयीं। केवट के इस तुच्छ प्रश्न पर दोनों हँसे बिना न रह सके। बृहस्पति ने कहा–"केवट, तुम्हारा प्रश्न अति क्षुद्र है ! कोई गूढ़ प्रश्न पूछते ! हम दोनों चौदह विद्याओं को हस्तगत करके घर जा रहे हैं। अच्छा होगा कि, तुम हमारे ज्ञान से लाभ उठाओ–कोई महत्व का प्रश्न पूछो।"

केवट आदर और नम्रता में और झुक गया, बोला–"विप्रवर। गूढ़ प्रश्न मेरी बुद्धि पर कहाँ से जमें ? मैं ठहरा निपट निरक्षर मल्लाह ! कई वर्षों से यह एक प्रश्न मुझे उलझन में डाल रहा है, सो आपसे पूछ लिया....और आपसे ही क्यों, पिछले पच्चीस वर्षों से जो भी विद्वान् मेरी नाव से पार उतरता है, उससे यह प्रश्न मैं पूछता हूँ। किंतु किसी ने अभी तक मेरे इस प्रश्न का सही उत्तर नहीं दिया है। बड़ा निराश हो गया था; किंतु आपको देख कर अकस्मात् मेरी मृताशाएँ फिर जीवित हो उठी हैं। कृपया आप दोनों मेरा समाधान कीजिये !"

बृहस्पति ने संवर्त की ओर देखा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संवर्त ने बृहस्पति की ओर। कौन मुख खोले पहले? दोनों सोचने लगे। आखिर, बृहस्पति बोले– "केवट! प्रेम-मात्र मिथ्या है। ज्ञानियों की परम्परा आदिकाल से यह घोषणा करती आ रही है। तू इसे ही सत्य मान और संतोष प्राप्त कर!"

किंतु बृहस्पति की बात समाप्त भी न हो पायी थी कि, संवर्त का विरोधी मत व्यक्त हो उठा। तर्जनी उठा कर संवर्त ने कहा–"केवट! प्रश्न तेरा वास्तव में गहन है; किंतु यह आज का प्रश्न नहीं है, सनातन-कालीन प्रश्न है और सनातन-काल से ही इसका एक अविभाज्य उत्तर दिया जाता रहा है। भगवान् नारद कल्प के प्रारम्भ में ही इस प्रश्न का श्रुतिमान्य उत्तर दे चुके हैं–'एक भगवत्प्रेम को छोड़ कर शेष सारे प्रेम-सूत्र मिथ्या हैं।' स्वकल्याण के लिए तू मुनिश्रेष्ठ नारद के इस निर्णय को ही अपना मार्गदर्शक मान–विशेष भ्रांति में मत पड़।"

दोनों विद्वान भाइयों के उत्तर सुन कर केवट असमंजस में पड़ गया। वह आश्चर्य-निश्चेष्ट भाव से दोनों को देखता रहा, फिर कहने लगा–"आप दोनों तो विद्वान् हैं। शास्त्रों में भरा समुद्र-सा अगाध ज्ञान आपके अधिकार में है। सत्संग और गुरु-प्रसाद भी आप दोनों को मिला है; किंतु मुझ-जैसे मूढ़ के पास तो कुछ भी नहीं है। मैं इन भेद-भरे उत्तरों को भला कैसे समझूँ? अब आप दोनों निर्णय करके कृपया मुझे स्पष्ट उत्तर दें।"

केवट की विनयपूर्ण मुद्रा से निःसृत इन थोड़े-से सरल शब्दों ने दोनों ज्ञान-विज्ञान-पारंगत भाइयों को परस्पर-शास्त्रार्थ में निमग्न कर दिया। ज्ञानमार्गीय बृहस्पति प्रेम-मात्र को बंधन का प्रतीक कहते थे और भक्तिमार्गीय संवर्त भगवत्प्रेम को मोक्ष का परम माध्यम मानते थे। दोनों के द्वारा शास्त्रों से प्रमाण-पर-प्रमाण दिये जा रहे थे– दोनों अपनी-अपनी स्थिति से अच्युत थे।

दोनों भाइयों को शास्त्र की गहराइयों में गोते लगाते और अपने मत की पुष्टि में नये-नये प्रमाण-मोती निकालते काफी समय लग गया, तो केवट का धैर्य स्थिर न रह सका। उसने दोनों भाइयों को सम्बोधित करते हुए कहा–"ब्राह्मण-पुत्रो! कृपया मुझे क्षमा कीजिये। मेरे प्रश्न का फलार्थ इस रूप में घटित होगा, यह मुझे

त्रिशंकु-पतन
[चित्र : जायसवाल]

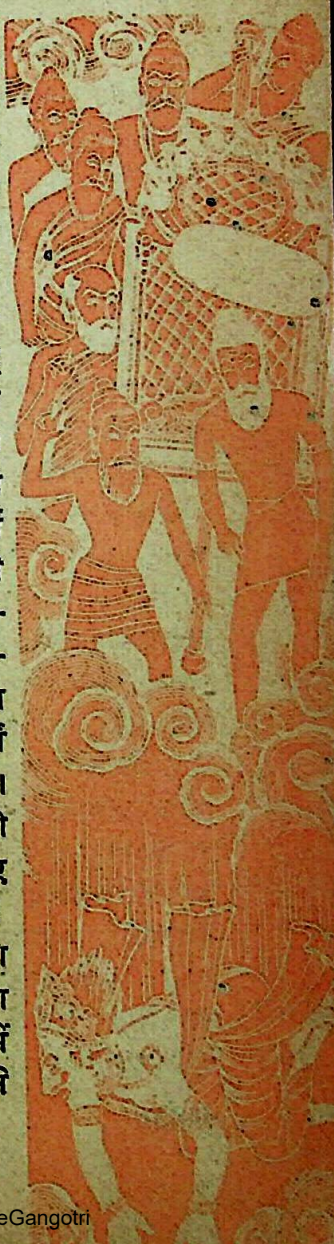

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञात नहीं था। क्या आप यह बता सकते हैं कि, आपके शास्त्रार्थ का निर्णय कितना समय और लेगा?"

बृहस्पति और संवर्त दोनों शास्त्र-विद्या की तह में इतने गहरे चले गये थे कि, उन्हें केवट के अधैर्य और संताप की कोई भी सुध नहीं थी। अपने-अपने मत को परम सत्य के सर्वोच्च आसन पर प्रतिष्ठित करने के हठ में वे इतने ध्यानस्थ थे कि, देश, काल और स्थिति का उन्हें कुछ भी भान नहीं रहा था। क्षमा-याचना और अनुनय-विनय करता हुआ निपट दुःखी केवट अंततः अपने घर चला गया।

कई दिन-रात बीत गये, ऋतुएँ बदल गयीं; किंतु बृहस्पति और संवर्त के मत-विवाद का कोई अंत निकट आता प्रतीत नहीं हुआ। दोनों अविचलित लगन और और निष्ठा के साथ निजमत-पुष्टि के प्रयत्न में संलग्न थे। अंत में, दयार्द्र ब्रह्मा ने आकर दोनों का शास्त्रार्थ भंग किया। दोनों को सम्बोधित करके ब्रह्मा ने कहा—"व्रतवान् विप्रो! मैं तुम दोनों के शास्त्रार्थ का निर्णय देने के लिए नहीं आया हूँ। मेरी सम्मति में दो शास्त्रार्थियों के मत-वैभिन्न्य का निर्णय यदि तीसरा शास्त्री आकर देगा, तो वह सही नहीं होगा। भोले स्नातको! तुम शायद नहीं जानते कि, शास्त्र को शास्त्र प्रमाणित नहीं करता, जीवन प्रमाणित करता है। ज्ञान को ज्ञान प्रमाणित नहीं करता, जीवन प्रमाणित करता है। भक्ति को भक्ति प्रमाणित नहीं करती, जीवन प्रमाणित करता है। यहाँ— हमारे आगे-पीछे, बाहर-भीतर—जो-कुछ है, सब जीवन को लेकर है, जीवन के निमित्त है। जीवन से पोषित होकर ही सब जीवित हैं—जीवन का स्पर्श-सम्पर्क खोकर यहाँ प्रत्येक अवस्थिति मिथ्या है। इसलिए केवट के प्रश्न का उत्तर तुम शास्त्रों में मत खोजो, जीवन में खोजो। शास्त्र तो वैयक्तिक अनुभवों और निर्णयों के बही-खाते हैं—केवल पुस्तकीय पूँजी हैं। उदाहरण के लिए, भोजन पकाने की विविध व्यक्तियों-द्वारा आविष्कृत विविध प्रणालियों का लेखा-जोखा तुम्हारे पास है। पर इनसे तुम विधियों की जानकारी पा सकते हो, परितोष नहीं पा सकते— भूख नहीं बुझा सकते। अतः समय और शक्ति का यों व्यर्थ ह्रास मत करो। जाओ, जीवन की वीथियों में प्रश्न का उत्तर खोजो।"

अनुरक्ता

[चित्र : एक प्राचीन चित्र की सरल रेखानुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मा की आज्ञा शिरोधार्य कर दोनों भाई निखिल जीवन के दुर्गम वन-कांतारों में सत्य-मिथ्या के तत्व खोजने निकल पड़े – दोनों भाई एक-दूसरे के विरोधी, एक-दूसरे को नीचा दिखाने में तत्पर-प्राण! दोनों प्रकांड पंडित तो थे ही, अल्प काल में ही दोनों के पांडित्य की ख्याति समस्त सप्तखंड में फैल गयी। इक्ष्वाकु-वंशीय मरुत्त ने अश्वमेध का निश्चय किया और वह बृहस्पति के पास पुरोहित बनने का अनुरोध लेकर आया। बृहस्पति को राजा मरुत्त के उत्तरोत्तर बढ़ते हुए लौकिक-अलौकिक वैभव से चिंता हो गयी। उन्होंने यज्ञ करवाने से इन्कार कर दिया। राजा संवर्त के पास गया। संवर्त ने राजा के दीर्घकाम्य यज्ञ को संम्पन्न करने का दायित्व स्वीकार कर लिया।

बृहस्पति ईर्ष्या की ज्वाला में ऐसे विदग्ध हुए कि, यज्ञ को भंग करने की कामना लेकर इंद्र के पास गये। इंद्र ने अग्नि को यज्ञ का उच्छेदन करने के लिए भेजा। अग्नि संवर्त के ब्रह्मचर्य-बल के सामने ठहर नहीं सके– स्वयं भस्म होते-होते बचे। आकाशवाणी हुई कि, इंद्र यज्ञ भंग करने के दुर्व्रत को छोड़, यदि ईर्ष्या के कारण शोष रोग के चंगुल में ग्रस्त बृहस्पति को यज्ञभोज करवायें, तो देवताओं का विशेष हित होगा।

इंद्र बृहस्पति को लेकर यज्ञ-स्थान पर पहुँचे; किंतु इंद्र, बृहस्पति और संवर्त, तीनों के संम्मिलित प्रयत्न से भी यज्ञ-मंच पर, यज्ञ-वलि ग्रहण करने के लिए, महावैश्वानर का अवतरण नहीं हुआ। देवताओं की प्रार्थना पर धर्मराज ने प्रकट होकर कहा– "प्रेम सत्य है या मिथ्या? इस प्रश्न का उत्तर जिसके जीवन में सार्थक हो गया है, उसी के हाथों महावैश्वानर हवि ग्रहण करने आयेंगे। एक बूढ़े केवट के सिवाय अभी तक किसी ने इस प्रश्न का उत्तर अपने जीवन में चरितार्थ नहीं किया है। उस केवट को यज्ञ का होता बनाइये। यज्ञ सुफलित होगा।"

जब केवट आया, तो बृहस्पति और संवर्त, दोनों ने अवज्ञा से मुंह फेर लिया। तब धर्मराज ने कहा–"इस सनातन प्रश्न का उत्तर बड़ी सरलता से इस केवट ने अपने जीवन में खोजा है– अपने से प्रेम आसक्ति है, जो मिथ्या है और भगवान् से प्रेम दिव्यानुरक्ति है, जो यद्यपि आत्यंतिकरूपेण सत्य है; किंतु अत्यंत दुस्साध्य है। अतः स्वात्मा और परमात्मा के बीच का जो प्राणी-लोक है, उसमें प्रेम-भागीरथी बन कर बहते रहना ही जीव के लिए सहज गति है। यहाँ मिथ्या होकर भी प्रेम परम सत्य है।"

★

जल से अंग गीले करके कोई मानव 'स्नात' (स्नान किया हुआ) नहीं कहला सकता। इंद्रियों को वश में करनेवाला ही स्नात है। –वेदव्यास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाब्लो पिकासो

जीवन की ग्रंथिमयता के मार्मिक पक्षों को चित्र-शिल्प-द्वारा प्रकाशित करनेवाले मनस्वी कलाकार का डा० आनंद-लिखित संक्षिप्त जीवन-वृत्त। सामने के पृ३ पर चित्र और मर्म-वचन देखिये।

पाब्लो पिकासो इस युग के आधे शतक के आकाश में दोपहर के सूर्य की भाँति कला के जगत् को अपनी आत्मा के प्रकाश और तपस्या की ऊष्मा देता आ रहा है। जीव और प्रकृति; दो नितांत भिन्न इकाइयाँ हैं। जीव का केंद्र, प्राण है और प्रकृति का केंद्र, वस्तु। जीव प्रकृति से कहीं अधिक सक्रिय है। पिकासो की मान्यता है कि, "जीव की इन असंख्य मुद्राओं का अभिलेख ही कला का धर्म होना चाहिए। कला प्रकृति की अनुकृति-मात्र रहे, यह तो जीव की महत्ता का निपट निरादर है। जब प्रचलित साहित्य प्रकृति के चिर-स्थैर्य, चिर-अप्रमेय का चित्रण नहीं है, तो कला के ही माथे पर यह पत्थर की शिला क्यों रखी जा रही है? जीव की तपस्या जीव को प्रकृति बनाने में खर्च हो, यह तो व्यक्ति का विकास नहीं कहा जा सकता—अधोगति अवश्य कही जा सकती है। आश्चर्य है कि, इतने वर्षों से कलाकारों की परम्परा चैतन्य की उपेक्षा कर जड़ को ही पूजती आ रही है।"

अपने इन्हीं निर्णय-संकल्पों को अपनी साधना में मूर्त करने में पिकासो को जीवन की हर तरह की लाचारी और गरीबी भोगनी पड़ी है। २० से लेकर ३० वर्ष की प्रखर युवावस्था में पिकासो को एक समय खाने का ही नहीं, सोने के लिए छः फुट जमीन का भी अभाव भोगना पड़ा है। वर्षों तक वह एवं उसका एक लेखक-मित्र, दोनों बारी-बारी से एक ही बिस्तर पर सोते रहे हैं। रात को पिकासो काम करता, तो लेखक सोता और दिन में लेखक लिखता, तो पिकासो सोता! ऐसे में ही एक दिन ऐसी निष्ठुर घड़ी भी आ गयी कि, पिकासो का पूरा शरीर भयानक सर्दी में ठिठुर कर काठ ही हो जाता, यदि वह अपने सारे चित्रों को जला कर आग तापने का प्रबंध नहीं करता।

किंतु सर्वत्याग-मूलक साधना की कीमत आँकनेवाला काल आखिर कब तक परीक्षा लेता? उसने कीर्ति-केसर के तिलक से पिकासो की वंदना की और पिकासो युगाधार कलाकार ही नहीं, लक्ष्मी का परम कृपाभाजन भी हो गया; किंतु करोड़पति होकर भी पिकासो की दिनचर्या और अपरिग्रहपूर्ण जीवन-यात्रा में कोई परिवर्तन नहीं आया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कला का मूलधर्म मनुष्य को पहचानना है, मनुष्य को पहचान कर मनुष्य से प्यार करना है और मनुष्य से प्यार कर मनुष्य के साथ आत्मरूप हो जाना है। इसके लिए मन के यात्री को उन सारी पगडंडियों से गुजरना होगा, जिनमें मनुष्य की कई संधि-अभिसंधियाँ फैल कर बैठ गयी हैं। स्वयं बिंदु-रूप मानव आज कितने लघु कणों में खोकर रह गया है। मानव के इस रूप को आज कलाकार देखे और दिखलावे, अन्यथा मनुष्य के प्रति स्वाभाविक प्रेमोद्रेग हम सबमें कैसे हो सकेगा ? —पाब्लो पिकासो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

★

इस समय आपके सामने जो व्यक्ति बैठा है, वह या तो आपका आदर्श-पुरुष राम है, या आपके द्वारा सबसे घृण्य जीव रावण! दोनों का मिश्रण भी वह हो सकता है; किंतु वह आप-जैसा नहीं हो सकता। आप क्या हैं, यह तो स्वयं आपको भी कभी ज्ञात नहीं हो सकेगा। अतः अपने को बाट मान कर उसे मत तौलिये। इससे न आपके साथ न्याय होगा और न उस व्यक्ति के साथ। —विश्वेश्वरैया

दुनिया में सारे दीपक बुझ जाते हैं। आकाश के दीपक भी कालांतर में बुझ जाते हैं। वैभव के दीपक अंधेरे में भटक जाते हैं। धर्म के दीपक भी क्षीण हो जाते हैं। किंतु साहस-द्वारा इतिहास के भाल पर लिखी गयी लिपि की ज्योति कभी मंद नहीं होती। —कोजाई (जापानी कवि)

आलस्य से भी दुनिया का अधिक नुकसान लापरवाही ने किया है। आलस्य ने सभ्यता की गति को केवल मंद ही रखा है; किंतु लापरवाही ने तो उसके बने-बनाये कई महलों को जला कर राख कर दिया है— लापरवाही की एक चिनगारी-मात्र से ही इस संसार में क्या-क्या अनर्थ नहीं हो गये हैं! —महमूद तैमूर

पाप-पुण्य, दोनों ही वाणी के खेल हैं। कड़वे बोल से बड़ा भी क्या कभी कोई पाप हो सकता है? जो बोल तन को छेद, मन को छेद, प्राण को छेद, आत्मा को छेद कर वर्षों तक सालते रहते हैं, क्या कोई विष-बुझा तीर उनकी तुलना में ठहर सकता है?... और जिस मीठे बोल को सुन कर सिंह भी आसपास पूँछ हिलाता फिरे, घाव का कोई मलहम उससे भी अकसीर होता है क्या? —हिमनेज

जिस छाया-तले बैठे हो, उसके छेद ही देखोगे, तो छाया-सुख का कैसे अनुभव कर सकोगे? किंचित् देनेवाला भी दाता तो है ही— इतना औदार्य भी अगर मन पर आ गया, तो विश्वास मानो, छाया की कमी नहीं रहेगी। —शरच्चंद्र

एक मूर्ख भी एक मिनट में इतने प्रश्न कर सकता है, जिनके उत्तर एक दर्जन बुद्धिमान मिल कर एक घंटे में भी नहीं दे सकते। —लेनिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राम के मंदिर में झूठ क्यों बोला

महावीर त्यागी-लिखित एक मर्मस्पर्शी संस्मरण

बात तो बहुत छोटी-सी है; पर जितनी पुरानी पड़ रही है, उतनी ही बोझिल होती जाती है। कहीं मेरे हृदय में ही कुलबुला कर न रह जाये, इसलिए आज मित्रों को भी 'शरीकेजिगर' किये लेता हूँ।

स्वराज्य-प्राप्ति के कुछ ही महीने पहले मेरे भाग्य से एक बार गांधीजी कुछ लम्बे अरसे के लिए विश्राम के हेतु मसूरी चले आये। उनका स्वास्थ्य कुछ गिर रहा था। मसूरी के बिड़ला-भवन में ठहरने की बात ठहरी। मैं उन दिनों उत्तर-प्रदेश की विधान-सभा का सदस्य था। गांधीजी के आने की बात सुनते ही मैं १५-२० स्वयंसेवकों की टुकड़ी लेकर मसूरी जा पहुँचा और बिड़ला-भवन के बिल्कुल नजदीक एक मकान में पड़ाव डाल दिया। किसी सस्ते-से होटल में खाने का भी प्रबंध हो गया। जो भी स्वयंसेवक वहाँ गया, वह अपने को धन्य समझता था।

मुझे शुरू से स्वयंसेवकों के बीच सोने-उठने का शौक था। उन दिनों सिगरेट-लायक तो पैसे थे नहीं, बीड़ी पीकर ही हम काम चलाते थे। बस, दो ही नशे करते थे— एक बापू का और दूसरा बीड़ी का। पर कभी दोनों एक साथ न कर सके। बापू को देखते ही बीड़ी इस ढंग से बुझाते कि, कहीं शुबहा न हो जाये। कभी बुझाने का मौका न लगा, तो हाथ जेब में डाल कर, अंदर-ही-अंदर, पोरों से आग मसलनी पड़ती। उनकी चोरी से पीते थे। पर बुझाते समय की भावना और भक्ति वैसी ही अगाध और पवित्र होती थी, जैसे दान-बलिदान के समय होती है।

बापू सुबह-शाम टहलने जाते, तो डा० सुशीला नायर, प्यारेलालजी और ब्रजकृष्णजी चाँदीवाला, आदि सब परिवार के रूप में उनके साथ-साथ जाते। और, हम? हम रास्ते में किसी ऐसी जगह खड़े हो जाते, जहाँ हम पर उनकी नजर पड़ जाये, तो दूर से प्रणाम कर लें। लालच रहता था कि, शायद बुला भी लें। कभी-कभी बुला भी लेते थे। एक दिन बुलाया और मेरे कंधे पर हाथ रख कर चलने लगे। बस, पाँच मिनट ही उनका हाथ रहा होगा कि, एक लड़की ने पीछे से आकर मुझसे हाथ छीन लिया और अपने कंधे पर रख लिया।

मैंने बापू की ओर अपील-भरी आँखों से देखा; पर वे ऐसे मुस्कराये, जैसे कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात नहीं हुई हो। मेरी दुनिया लुट गयी और वह भी एक लड़की के हाथों! वे मुस्करा दिये। कितने कठोर थे बापू! पर उन्हीं की हस्तछाया में चल रहा हूँ आज तक। मैंने उनसे धोखे किये– उनके जीते-जी भी किये और उनके मरने पर भी कर रहा हूँ। ऐसा अभागा हूँ, मैं महावीर त्यागी। पर उनकी हस्तछाया वैसी ही बनी है। कैसे उदार थे बापू!

सायंकाल प्रार्थना होती थी। पहले हैपी-वैली के मैदान में आरम्भ की; पर लोगों का तकाजा हुआ कि, शहर के बीच में होनी चाहिए। मैंने डरते-डरते बापू से आज्ञा चाही। उन्होंने स्वीकार कर लिया। फिर सिल्वरटन होटल के मैदान में प्रार्थना होने लगी। बापू का ध्यान राम में और हमारा बापू में। गरज कि, सारी जनता ध्यानावस्थित होकर अमृत-वचन का पान करती थी। अभी तक वह छवि आँखों में और शब्द कानों में गूँज रहे हैं। भीड़ के चारों ओर मेरे साथी स्वयंसेवक गमलों के फूलों की तरह अपनी वर्दी पहने खड़े रहते थे। कितने सीधे और सच्चे थे वे गाँव के स्वयंसेवक! बेचारे अंधविश्वासी और श्रद्धालु– हर काम के लिए सैनिक की भाँति तैयार! उन्होंने हमारा बहुत साथ दिया; पर मैं उनके किसी काम न आया। कैसा निकम्मा नेता हूँ मैं!

जन-घोष

एक दिन मेरे एक मित्र ने, जो मुझसे कुछ ईर्ष्या करते थे (क्योंकि मैं गांधीजी का मुँहलगा सेवक था और वे अपरिचित भगत थे), गांधीजी के कान भर दिये कि, मेरे स्वयंसेवक मसूरी के कुलियों को प्रार्थना में आने से रोकते हैं; क्योंकि उनके कपड़े गंदे होते हैं। गांधीजी को यह सुन कर बड़ी चोट लगी। आव-देखा-न-ताव, उन्होंने खटाक् से अपने प्रवचन में कह दिया– "स्वयंसेवकों ने कुलियों को प्रार्थना में आने से रोका है, इससे मुझे बहुत पीड़ा हुई है। दरिद्रनारायण को मंदिर में आने से रोक दिया; क्योंकि उनके कपड़े मैले हैं!....." आदि, आदि।

मेरे स्वयंसेवकों को उन्होंने सब-कुछ कह डाला। वे बेचारे खड़े-के-खड़े रह गये। इधर मैं जल कर राख हो गया। मुँहफट तो था ही। प्रार्थना खत्म होते ही गांधीजी को ऊँची-नीची सुनानी शुरू कर दी– "राम के मंदिर में बैठ कर आप झूठ क्यों बोले? अगर पूछताछ करने से पता चला कि, एक भी कुली को नहीं रोका गया, तो?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे स्वयंसेवकों का तो मुँह काला कर दिया! आपको उस खुले झूठ का यकीन कैसे आया? मेरी वर्षों की कमाई पर आपने मिट्टी डाल दी!"

मैं जितनी-जितनी बदतमीजी करता गया, वे उतना ही हँसते गये।

बिड़ला-भवन पहुँचते ही बापू ने ब्रजकृष्णजी चाँदीवाला और प्यारेलालजी को आज्ञा दी कि, वे इसकी पड़ताल करें और कल की प्रार्थना से पहले रिपोर्ट दें। यह कमीशन दिन-भर मसूरी घूमा; पर एक भी कुली ऐसा न मिला, जिसे प्रार्थना में आने से रोका गया हो। कमीशन ने सच्ची रिपोर्ट बापू को दे दी।

अभी मुझे इसकी भनक तक न पड़ी थी। मैं तो गांधीजी से रूठा हुआ था। अगले दिन प्रार्थना में मैं अनमना-सा दूर जाकर खड़ा हो गया। प्रार्थना समाप्त होते ही गांधीजी का प्रवचन आरम्भ हुआ। मुझ पर बिजली गिर पड़ी। बापू ने कहा—"आज तो मैं प्रायश्चित्त करना चाहता हूँ।"

सारी जनता घबड़ा उठी—"कहीं बापू उपवास न कर बैठें।"

बापू बोले—"त्यागी तो मुझसे नाराज हो गया है। वह मुझे कहता है कि, तू झूठा है— तू राम के मंदिर में बैठ कर झूठ क्यों बोला? (मैंने बापू को कभी 'तू' नहीं कहा था। मुझे डर हुआ कि, मेरे जिले के सब लोग मुझे थू-थू करेंगे कि, मैं गांधीजी को 'तू' कह कर बुलाता हूँ।) मुझे एक व्यक्ति ने आकर खबर दी थी कि, कुलियों को प्रार्थना में आने से रोका जाता है। मैंने उसकी बात का भरोसा कर लिया और कल आपके सामने कह भी दिया। फिर तहकीकात से वह बात गलत निकली। तो फिर त्यागी ठीक कहता है न? मैं तो राम के मंदिर में बैठ कर झूठ बोला। इसका मुझे प्रायश्चित्त करना होगा! और, मैं तो आखिर महात्मा ठहरा— तुम सब तो महात्मा भी नहीं हो। जब मैं ऐसा पाप कर सकता हूँ, तब तुम सब भी जरूर ऐसा पाप करते होगे! फिर तो, अपना पाप धोना है। आओ, मैं और तुम, सब मिल कर प्रायश्चित्त करें।

"प्रायश्चित्त तो यही है कि, भविष्य में पाप न हो। तो, सब भाई-बहन अपनी आँखें भींच कर राम का ध्यान करो और प्रतिज्ञा करो कि, जब किसी की बुराई आँख में पड़े, तो अपनी आँख बंद करना और कान में पड़े, तो कान बंद करना। अगर फिर भी किसी की बुराई तुम्हारे भीतर आ जाये, तो मुँह बंद कर लेना। ऐसा करने से पाप से बच सकते हो। तो फिर, मैंने तो प्रण कर लिया— तुम भी करो कि, किसी की बुराई और बदनामी की बात बिना छानबीन किये मुँह से नहीं निकालोगे! ..."

प्रार्थना समाप्त होते ही मैंने नजदीक जाकर बापू को प्रणाम किया, तो बोले— "अपने पापी को क्षमा कर दिया?"

मैं रो पड़ा। आज मैं बापू से पूछता हूँ कि, आपने अपने पापी को क्या किया? वह तो क्षमा के योग्य भी नहीं है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योगी मिलरेप

गंगाशंकर मिश्र-द्वारा लिखित लामा-परम्परा की तंत्रसिद्धि के एक योगाचार्य की जीवन-झलक

मिलरेप का जन्म सन् १०५५ के लगभग एक धनी व्यापारी के यहाँ हुआ। जब वह सात वर्ष का था, तभी उसके पिता की मृत्यु हो गयी। मृत्यु के पहले उसने अपने भाई को सारी सम्पत्ति सौंप दी और मिलरेप, उसकी बहन तथा माता का भरण-पोषण करते रहने के लिए कहा; पर मिलरेप के चाचा और चाची की नीयत खराब हो गयी। दोनों ने सब सम्पत्ति हड़प ली और मिलरेप तथा उसकी बहन एवं माता को तरह तरह के कष्ट देने लगे। माता को यह देख कर बड़ा कष्ट होता था। उसने मिलरेप से, जो ११ वर्ष का था, कहा—"तू किसी गुरु के पास तंत्र-मंत्र क्यों नहीं सीखता, ताकि इन शत्रुओं का विनाश किया जा सके!"

यह सुन कर मिलरेप गुरु की तलाश में निकल पड़ा। पहले उसे एक गुरु मिला, जिसे उसने अपनी सारी व्यथा सुनायी। उसने बालक मिलरेप को एक दूसरे गुरु के पास 'मारण'-मंत्र की शिक्षा लेने के लिए भेज दिया। बड़ी सेवा करने पर गुरु ने उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'मारण' और ओला बरसाने के मंत्रों की दीक्षा दी। दो सप्ताह तक भूमि के भीतर एक बंद गुफा में रह कर उसने इन मंत्रों की सिद्धि प्राप्त की। एक बार उसने स्वप्न में देखा कि, ३५ व्यक्तियों के कटे सिर उसके सामने पड़े हैं। बाद में उसे पता लगा कि, उसके घर के समीप बड़ा उपद्रव हुआ, जिसमें उसके ३५ शत्रु कुटुम्बियों के प्राण गये; पर उसके चाचा और चाची नहीं मरे। यह सब देख कर उसकी माता बड़ी प्रसन्न हुई और चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगी—"मेरे सुपुत्र ने बदला चुका लिया।"

इस पर उसके कुटुम्बी लड़के को मारने के लिए तैयार हो गये। इसका भी पता मिलरेप को लग गया और उसने मंत्रों-द्वारा ओलों की वर्षा से धान की खड़ी फसल नष्ट कर दी। इससे सब लोग बुरी तरह भयभीत हो गये।

पर बाद में, मिलरेप को इससे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। उसने सोचा, इतने व्यक्तियों के प्राण लेकर और धान की फसल नष्ट कर मैंने क्या किया? कितना अच्छा होता, यदि मैंने इतना परिश्रम कर ऐसी शिक्षा प्राप्त की होती, जिससे इस जीवन में निर्वाण की प्राप्ति होती है।

उसके गुरु ने भी ऐसा ही सोचा और गुरु-शिष्य, दोनों ने एक ही साथ तांत्रिक अभिचारों का प्रयोग छोड़ कर निर्वाण-मार्ग पर चलने का निश्चय किया।

गुरु की खोज में घूमते-फिरते मिलरेप को मर्प के दर्शन हुए। उसके यहाँ बड़ा कठिन अनुशासन चलता था। प्रति दिन शिक्षा लेनेवालों की किसी-न-किसी प्रकार से परीक्षा होती रहती थी। मिलरेप पर गुरु की कड़ी निगाह रहती थी। किसी दिन वह मिलरेप से कहता—"मेरे लड़के के लिए अकेले एक मकान बनाओ।" जब मकान पूरा होने को होता, तो कहता कि, इसे गिरा दो और मेरे लिए एक दूसरे ढंग का मकान बनाओ। इस तरह, उसने तीन-चार मकान बनवाये और गिरवा दिये। वह बड़े कठिन काम मिलरेप को देता और बराबर उस पर बिगड़ता रहता। वह अन्य शिष्यों को शिक्षा देता; पर जब मिलरेप प्रार्थना करता, तो डाँट देता। कभी-कभी हतोत्साह के प्रवाह में आकर बेचारे

साधना

[चित्र : गोआ में प्राप्त एक शिल्प की अनुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलरेप के मन में आत्महत्या करने की भावना जगती। पर मर्प की स्त्री बड़ी दयालु थी। वह मिलरेप को बराबर प्रोत्साहित करती और उसे हर प्रकार की सहायता पहुँचाती थी। दो बार मिलरेप ने निकल भागने की चेष्टा की; पर बहुत सोच-विचार कर फिर लौट आया। इस बीच उसने 'प्रज्ञापारमिता' का अध्ययन और 'वज्रवाराही' की उपासना सीखी। इस तरह कष्ट सहते हुए कई वर्ष बीत गये। अंततः गुरु की कृपा हुई और 'मंत्राणी तंत्र' की शिक्षा प्राप्त हुई। इसमें 'शमवर' की उपासना का रहस्य है। फिर गुरु की आज्ञा से द्वंद्वातीत होने का अभ्यास चला। इसमें अपनी ही बनायी हुई एक गुफा में उसे ११ महीने तक बंद रहना पड़ा। समय से एक छिद्र-द्वारा उसके पास भोजन पहुँचा दिया जाता था। अभ्यास समाप्त होने पर उसे 'डाकिनीकरण तंत्र' की शिक्षा दी गयी। एक बार उसने स्वप्न में देखा कि, उसकी माता नहीं रही और बहन भीख माँगती फिरती है। उसने गुरु मर्प से घर जाने की अनुमति माँगी। गुरु ने अनुमति तो दे दी; पर साथ ही यह भी कहा कि, लौटने पर तुम्हें हमारे दर्शन न होंगे।

इससे मिलरेप बड़ा दुःखी हुआ। मर्प ने उसे बहुत समझाया और 'स्वप्नविज्ञान' एवं 'नित्य षोडषकार्णव तंत्र' की अंतिम दीक्षा दी।

गाँव जाकर मिलरेप को ज्ञात हुआ कि, सात वर्ष पहले ही उसकी माता का शरीर छूट गया था। विपत्ति लाने के कारण सब गाँववाले उसे घृणा की दृष्टि से देखते और भयभीत रहते थे। उसने अपनी माता की हड्डियों को बटोर कर ढेर लगाया और उस पर अपना सिर रख कर एक सप्ताह तक वह साधना करता रहा। फिर, उसने अपनी माता का अंतिम संस्कार किया। बाद में, वह अपने चाचा और चाची के यहाँ भिक्षा माँगने गया। दोनों ने उसे बड़ा अपमानित किया और पीटा; पर तब भी उसने कुछ नहीं कहा। अंततः उसके चाचा और चाची ने अपने पहले कृत्यों के लिए उससे क्षमा माँगी।

जिस लड़की से उसका विवाह होनेवाला था, उसे भी उसने समझाया और अपनी बहन को भी उपदेश दिया। गाँव के पास ही एक कंदरा में रह कर वह ध्यान में मग्न रहने लगा। उसके पास वस्त्र भी नहीं रहा और वह नग्न ही घूमने लगा। लोग उसे 'भूत' समझते और बहुत डरते थे। डाकुओं ने उसे कई बार डराया-धमकाया; पर वह सदा मस्त रहा। कितने ही प्रलोभन उसके सामने आये; पर उसने सबको ठुकरा दिया। इस बीच उसने उड़ने की शक्ति प्राप्त की। इसे देख कर लोग बहुत घबड़ाये; पर वह सबको शांत करने का प्रयत्न किया करता था। जो-कुछ भी मिल जाता, उसे ही खाकर वह अपनी कंदरा में ध्यानमग्न रहता था। कुछ दिन तक उसने हिमालय के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'लपचीकग'-शिखर पर भी तप किया। उसे ही 'एवरेस्ट' बतलाया जाता है।

क पंडित को उसकी सिद्धि से बड़ी जलन थी। एक दिन उसने अपनी एक रखैल को उसके पास भेज दिया। वह दही में विष मिला कर ले गयी। मिलरेप समझ गया और कहने लगा—"अब मेरा समय आ गया है; इसलिए मैं दही खा लेता हूँ।"

शनैः-शनैः विष का प्रभाव बढ़ने लगा; पर उसने कुछ परवाह नहीं की। उसका व्यवहार देख कर उक्त पंडित को बड़ी लज्जा आयी और उसने इसके लिए क्षमा माँगी। कई दिनों तक मिलरेप अपने शिष्यों को बुला कर उपदेश देता रहा। ८० वर्ष की अवस्था में, सन् ११३५ के लगभग, उसका देहांत हो गया। उसके शव के दाह के समय कितने ही चमत्कार देखने में आये।

उन्हीं दिनों भारत पर मुसलमानों का आक्रमण हो रहा था। हिन्दू-मंदिर, बौद्ध-मठ और विहार नष्ट किये जा रहे थे एवं अमूल्य ग्रंथ आग में जलाये जा रहे थे। उस समय भारत की 'योग तथा तंत्र'-विद्याओं की तिब्बत में बहुत-कुछ रक्षा हुई। इसमें मर्प और मिलरेप ने जो प्रयत्न किया, उसके लिए भारत उनका कृतज्ञ रहेगा। उनके ही कारण हजारों दिक्कतों के बावजूद उन विद्याओं की परम्परा अब भी तिब्बत में जीवित है।

मिलरेप का स्वर बड़ा मधुर था। वह प्रश्नों के उत्तर प्रायः भजनों में दिया करता था। वे भजन बड़े भावपूर्ण हैं और उनमें बड़े ही सुंदर उपदेश मिलते हैं। तिब्बती भाषा में उसकी जीवनी उसके पट्टशिष्य रिशंग ने लिखी। वह गुरु से उसके जीवन-सम्बंधी प्रश्न करता था, जिसका उत्तर मिलरेप देता था। इस तरह उक्त जीवनी एक प्रकार से उसकी आत्मकथा है। साहित्य की दृष्टि से वह एक उच्च कोटि की कृति है और पढ़ने में बड़ी ही रोचक है।

पहले-पहल सन् १९२५ में बैसी नामक विद्वान् से उसका फ्रांसीसी में अनुवाद किया। बाद में, लामा दवसंदूप ने मूल-ग्रंथ का अँग्रेजी में अनुवाद तैयार किया। वे तिब्बती-भाषा के पंडित तो थे ही, अँग्रेजी-भाषा का भी उन्होंने अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था और कलकत्ता-विश्वविद्यालय में कुछ वर्षों तक तिब्बती भाषा के अध्यापक रहे थे। पर उनके जीवन-काल में उसका अँग्रजी-अनुवाद प्रकाशित न हो पाया। बाद में आक्सफोर्ड-विश्वविद्यालय के डाक्टर इवांसवेंट्ज ने उसका सम्पादन किया। उनकी विद्वत्तापूर्ण टिप्पणियों से पुस्तक की, जो सन् १९२८ में प्रकाशित हुई, उपयोगिता और बढ़ गयी।

अपनी भूमिका में उन्होंने लिखा है—"आधुनिक लोग सोचते हैं कि, योगियोंएवं तपस्वियों को केवल अपनी मुक्ति या निर्वाण की चिंता रहती है। परंतु उन्हें यह ज्ञात नहीं कि, ऐसे व्यक्तियों का समस्त जीवन दूसरे लोगों के कल्याण के लिए होता है। मिलरेप धन्य थे!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुख-दुःख

"प्रभो, सुख भी दे, दुःख भी दे– सुख-दुःख में अच्युत रहने की शक्ति भी दे...इस सुख-दुःख-सम्पन्न संसार से मुझे वंचित न कर देना; क्योंकि इससे निरपेक्ष होकर मैं कुछ भी तो नहीं रह पाऊँगी।" १५-वीं सदी के आस्ट्रिया की संत एनी की इस प्रार्थना के बाद बस्वानी-लिखित नीचे की कथा पढ़िये।

*

उस दिन सुख और दुःख में फिर कलह हो गयी। सुख ने कहा–"रे अभिशप्त। तू होते ही क्यों न मर गया! जिधर जाता है, उधर हाय-तौबा मच जाती है– होंठों की मुस्कान में जैसे बिच्छू मार जाता है। तेरा जीना धिक्कार है।"

दुःख ने यह भर्त्सना सुनी, तो आग-बबूला हो गया। फुँफकारते हुए बोला– "जा, रास्ता नाप रे, पाखंडी। कहता कुछ है, करता कुछ है। तूने सभ्यताओं का विनाश किया। जिस घर में तेरा स्वागत हुआ, उस घर में तूने मदिरा के घट उड़ेले और लोगों को आपस में लड़ाया। तूने भाई-भाई को अलग किया, पिता-पुत्र को परस्पर-शत्रु बनाया। मैं तेरे-जैसा जघन्य पापी नहीं हूँ। मैं रुलाता हूँ; किंतु लड़ाता नहीं। मैं सबको प्रेम की डोर में बाँधता हूँ।....."

सुख से न रहा गया, बात काट कर चिल्लाया–"जबान बंद कर, झूठे! कितने होनहार बिरवों को तूने बिन-खिले सुखा दिया। कितने बेहतरीन मोतियों को तूने सीपी में ही सड़ा दिया। तेरा मिलाना मरघट का मिलाना है– मार-मार कर एक जगह इकट्ठा करना है, रे मूढ़। तू इतना भी नहीं समझता कि, सब तेरा विरोध करने के लिए, तेरे खिलाफ आवाज उठाने के लिए, मिलते हैं– तेरा गुणगान करने के लिए नहीं!"

दुःख भी लानत सहने का आदी नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। वह गरजा—"डूब मर चुल्लू-भर पानी में! शर्म नहीं आती तुझे गाल बजाते हुए? जड़! मूढ़! जहाँ जाता है, बुद्धि को पाषाण बना देता है—दया-धर्म, सबका स्रोत सुखा देता है। ऋषि-मुनियों के तपोबल को क्षीण करना; माँ जगदम्बा नारी को वेश्या बनाना; वेद-पुराण एवं धर्म-शास्त्रों को अपमानित करना और विद्वानों को धन और शक्ति का दास बनाना—ऐसे पापाचारों के सिवाय तेरी जीवन-झोली में और है ही क्या?"

सुख का मुख क्रोधानल में आरक्त हो उठा। जबान से आग उगलते हुए बोला—"अगर आगे एक शब्द भी जबान पर लाया, तो यहीं ढेर कर दूँगा। मैं चुप हूँ, तो बकता ही जाता है। सचमुच इस दुनिया में सज्जनों की मौत है। कितना ही मीठा बोलो, दुष्ट अपना स्वभाव नहीं छोड़ता। साँप का बच्चा क्या दूध पिलाने से जहर छोड़ देगा?..."

"तू है साँप का बच्चा—मैं नहीं, रे दुष्ट! ठहर, अभी तेरी थोथ नोच कर तुझे यमलोक भेजता हूँ। लात का देव बात से नहीं मानता। सौ से ज्यादा अपराध तो भगवान् भी क्षमा नहीं करते।" कहते हुए दुःख तीर की तरह सुख की तरफ झपटा। सुख भी प्रहार करने को सन्नद्ध था। दोनों जुथ पड़े। घमासान मल्ल-युद्ध आरम्भ हो गया।

उस दिन फरिश्तों में आपस में जिक्र चल रहा था, तो पेड़ की आड़ में से मैंने भी सुन लिया। एक फरिश्ते ने कहा—"लाखों जवानियाँ और बुढ़ापे मैंने काट दिये; मगर देखता आ रहा हूँ कि, यह लड़ाई अभी तक वैसी-की-वैसी ही है। दोनों जी-जान से लड़ रहे हैं। कोई भी हार नहीं मानता।" दूसरे ने कहा—"असलियतें नहीं लड़ रही हैं—नकाबें लड़ रही हैं। दुनिया में ऐसा ही होता है! जो-कुछ हो रहा है—जो भी प्रेम या द्रोह नजर आ रहा है—वह सब नकाबों का नाच है। जिंदगी तो बहुत दूर, कहीं बीराने की नदी की तरह, बहती रहती है।"

*

प्रख्यात वैज्ञानिक-आविष्कर्ता थामस एडिसन कई दिनों के बाद जब प्रयोगशाला से निकले, तो उनकी पत्नी दृढ़ अनुरोध के साथ बोलीं—"भगवान् के लिए अब तो थोड़ा विश्राम ले लीजिये। कल ही कहीं छुट्टी के लिए निकल जाइये।"

"लेकिन छुट्टी पर जाऊँ कहाँ? कोई सुरम्य स्थल बताओ?"

"इतनी लम्बी-चौड़ी धरती पड़ी है—जहाँ मन लगे, वहीं चले जाइये।"

"तुम ठीक कहती हो। मैं इस पर विचार करता हूँ।"

सुन कर, श्रीमती एडिसन का मन प्रफुल्ल हो उठा।

...और दूसरे दिन, सचमुच एडिसन अपनी प्रिय जगह छुट्टी मनाने चले गये—वह जगह थी, उनकी वही पुरानी प्रयोगशाला! —थामस एडिसन (जीवनी)

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शब्दों की पूँछ

धर्मेंद्रनाथ-लिखित एक गवेषणापूर्ण प्रबंध

काफी दिनों के बाद एक मित्र के यहाँ जाने का मौका हुआ। लम्बे अर्से के बाद मिलन और स्नेही मित्र! आने ही न दे; बोले—"अब तो रोटी-वोटी खाकर ही जाने दूँगा।" मित्र-पत्नी ने कहा— "रोटी तो मैं बना दूँगी; पर 'बोटी' खिलानी हो, तो किसी होटल में ले जाओ। यह वैष्णवों का घर है! हाँ!" और, वे हँस दीं।

क्या आपने कभी सोचा है कि, इन जोड़ीदार शब्दों का क्या रहस्य है? उत्तर-प्रदेश का हिन्दी-भाषी नागरिक बोलता है— "रोटी-ओटी तो खा ली होती!" ग्रामीण कहता है—"रोटी-फोटी अब कौन खाये!" इसी तरह, पंजाबी में 'रोटी-शोटी' चलती है, तो मराठी में 'रोटी-गिटी'। बंगाली और गुजराती रोटी के साथ 'जोटी' लगाते हैं, तो बुंदेलखंडी 'मोटी'। तमिल और मल-यालम-भाषियों का आहार रोटी से भिन्न भले ही हो; पर जोड़ बिठाने की आदत हमसे भिन्न नहीं है। उनके यहाँ भी 'शापळ' (भोजन) के पीछे 'किपळ' घड़ल्ले से चलता है। "शापळ-किपळ कडच्चा?" (भोजन-वोजन मिल गया?) 'पानी-वानी' के वजन पर तमिल में 'तण्णि-किण्णि' चलता है। "तण्णि-किण्णि कुडिक्किरेर कळा?" (पानी-वानी पियेंगे क्या?)।

शब्दों का अनुकरण करनेवाले इन शब्दों को कुछ भाषा-शास्त्री 'अनुवचन' या 'अनुशब्द' कहना चाहते हैं।

संस्कृत में देखें, तो पाणिनीय व्याकरण में एक शब्द मिलता है— 'द्विर्वचन', यानी एक ही शब्द को दो बार बोलना—जैसे, 'शनैः-शनैः', 'मंदं-मंदं', आदि। इसके पहले भाग को 'अभ्यास' कहते थे और दूसरे भाग को 'आम्रेडित'।

हो सकता है कि, संस्कृत में जिस प्रकार 'अस्त-व्यस्त', 'आकुल-व्याकुल', 'वाद-विवाद', 'चित्र-विचित्र'-जैसे कुछ प्रयोग कहीं-कहीं देखे जाते हैं, उन्हीं की नकल पर, परवर्ती काल में, अर्थानर्थ का विचार किये बिना, चाहे जिस शब्द के पीछे आम्रेडित में 'वि' उपसर्ग लगा कर जोड़े बनाने की प्रथा चल पड़ी हो और आधुनिक भारतीय भाषाओं में ये रंग-बिरंगे अनुवचन अपभ्रंश की किसी ऐसी ही प्रवृत्ति से उत्तराधिकार में आये हों।

अनुवचनों को मोटे तौर पर चार भागों में विभक्त किया जा सकता है। १— पर्यायानुवचन, २— छायानुवचन, ३— पूरक अनुवचन और ४— निरपेक्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुवचन।

(१) पर्यायानुवचन– अर्थात् एक ही शब्द के दो पर्यायों को मिला कर बोलना। जैसे –'काला-स्याह', 'लाल-सुर्ख' 'बर्तन-भाँड़े', 'बाग-बगीचा', 'साग-सब्जी', 'मैला-कुचैला', 'धन-दौलत', 'बाल-बच्चे', आदि। ये सारे पर्यायवाची अनुवचन सार्थक ही हों, ऐसा आवश्यक नहीं है। सफेद के साथ 'भक्' या अँधेरे के साथ जो 'घुप्' लगता है, वह केवल व्यंजनावाचक ध्वनि-पर्याय-मात्र है– उसका शाब्दिक अर्थ कुछ नहीं है। पर्याय-वाची शब्द या पर्यायवाची ध्वनि मिला कर बोलने का मतलब, शब्द पर अधिक जोर देकर व्यंजना को स्फुट बनाना ही है।

वीणापाणि

[चित्र : एक प्राचीन शिल्प की रेखानुकृति]

(२) छायानुवचन–यानी ऐसे अनुवचन, जो पूर्ववर्ती शब्द के वजन पर, प्रायः निरर्थक अनुप्रास बना कर बोले जाते हैं और जिनका मूल-शब्द से अलग होकर स्वतंत्र कोई अर्थ नहीं होता। जैसे– 'रोटी-वोटी', 'अलग-थलग', 'वैळइ-किळइ' (तमिल-भाषा में 'काम-वाम')। इस शैली में, सामान्यतया सार्थक शब्द पहले आता है और निरर्थक अनुप्रास पीछे। लेकिन कभी-कभी इसका व्यतिक्रमण भी हो सकता है। जैसे– 'पास-आस' नहीं बोला जाता, 'आस-पास' ही बोला जाता है। 'अगल-बगल', 'आजू-बाजू', 'आमने-सामने', आदि भी इसी पूर्वक्षिप्त अनुवचन के उदाहरण हैं। छायानुवचन हमेशा मूल-शब्द का हमशक्ल ही होता हो, यह आवश्यक नहीं है। 'लोग' के साथ 'बाग' भी लग जाता है और 'मेल' के साथ 'जोल' भी चलता है। 'बोल' के साथ 'चाल' और 'बात' के साथ 'चीत' जुड़ने में भी कोई बाधा नहीं होती। कभी-कभी दोनों शब्द भी निरर्थक हो सकते हैं। जैसे– 'ऊबड़-खाबड़', 'गंड-बंड', 'ऊल-जलूल', 'ऊट-पटाँग', 'अनाप-शनाप', 'लग-भग' आदि।

(३) पूरक अनुवचन– ऐसे अनुवचन, जो न पर्याय-वाची होते हैं और न निरर्थक छाया-मात्र; लेकिन जिनके साथ मिलने से भाषा मुहावरेदार और अर्थ अधिक स्फुट हो उठता है। जैसे– "रुपया-पैसा हाथ का मैल है।" देखा जाये, तो रुपया बड़ा सिक्का है और पैसा छोटा सिक्का। लेकिन दोनों के मिश्रण से यहाँ एक नया अर्थ उद्भूत हुआ, 'सम्पत्ति' के रूप में। या, जैसे– "यह दस-बीस का काम नहीं है, हजारों रुपये चाहिए।" 'दस' और 'बीस' अपने-आप में निश्चित राशियाँ हैं; लेकिन यहाँ 'दस' के पीछे 'बीस' को अनुलग्न करने से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रस्तुत संदर्भ में एक नया मानी पैदा हो गया– 'थोड़ी रकम' के रूप में। इसी प्रकार, 'घर' के पीछे 'द्वार' लगाने से, उसमें रहनेवाले 'परिवार' का बोध होता है। जैसे–"हमें अपना घर-द्वार भी तो देखना है।" ऐसे ही 'खेत' के पीछ 'क्यार' बतौर अनुवचन लगता है, जिसका फलितार्थ 'किसान का काम' होता है। (खेत-क्यार से ही फुरसत नहीं मिलती।) 'चौका-चूल्हा' (रसोई बनाना), लिखा-पढ़ी (दस्तावेज, वगैरह की कानूनी कार्रवाई), 'सीना-पिरोना' (गृह-कार्य), 'भरा-पूरा' (सम्पन्न), आदि भी ऐसे ही उदाहरण हैं, जिनमें एक शब्द के पीछे, उपयुक्त पूरक शब्द अनुलग्न करने से, भासमान अर्थ नये रूप में चमक उठता है।

(४) **निरपेक्ष अनुवचन**– ये शायद सबसे ज्यादा दिलचस्प हैं। मूलतः ये कभी निरर्थक छायानुवचन-मात्र थे। लेकिन शताब्दियों के प्रयोग ने इन निरर्थक शब्दों को सार्थक बना दिया। वैसे तो, अब भी ये प्रायः अपने मूल-शब्द के साथ ही प्रयुक्त होते हैं; लेकिन इनका स्वतंत्र प्रयोग भी चल पड़ा है। और, वस्तुतः ये मूल-शब्द से निरपेक्ष होकर पर्याय की हैसियत में आ गये हैं। जैसे–'नौकर-चाकर'। नौकर के साथ कभी एक छाया-अनुवचन 'चाकर' जुड़ गया होगा। लेकिन निरंतर प्रयोग के अमृत-स्पर्श से इसमें अर्थ-संचार हो उठा। खयाल है, मीराँ की 'म्हानें चाकर राखोजी' की रचना से भी पहले इसकी सत्ता स्वतंत्र हो गयी होगी। अब तो इसका निज का परिवार भी हो गया है– 'चाकरी', आदि के रूप में! ऐसा ही एक शब्द 'मुन्ना' है, जो कभी 'नन्ना' या 'नन्हा' का निरर्थक पिछलग्गू-मात्र था। 'नन्ने-मुन्ने' की जोड़ी आज भी चलती है। परंतु 'मुन्ना' अब न केवल सार्थक और निरपेक्ष हो गया है; बल्कि लोकप्रियता की दृष्टि से 'नन्ने' से अधिक सौभाग्यशाली भी सिद्ध हुआ है। आज घर-घर में बच्चों को 'मुन्ना-मुन्नी' कह कर पुकारा जाता है। 'नन्ना' या 'नन्नी' का प्रयोग उतना नहीं होता। एक और शब्द 'भूरा' है, जो कभी 'गोरा' का अनुवचन-मात्र था। गाँवों में तो 'गोरा-भूरा' अब भी साथ-साथ ही चलते हैं। 'गोरी-भूरी' बहू कौन सास नहीं चाहती? ये 'भूरा' या 'भूरी' थे क्या? केवल निर्जीव छाया-मात्र। लेकिन प्रयोग-सातत्य ने इनमें भी जान फूँक दी है। यहाँ तक कि, आज तो गौर वर्ण का पल्ला छोड़ कर, 'भूरा' शब्द, निरपेक्ष रूप से एक अलग किस्म के मटमैले रंग को भी व्यक्त करने लगा है।

*

अमेरिका के एक करोड़पति ने बीस हजार डालर की जायदाद उस आदमी के नाम वसीयत में लिख दी है, जो उसे एवं उसकी पत्नी को कब्र में से खोद कर किसी दिन चंद्रमा में ले जाकर दफना देगा!

—न्यू० हे० ट्रिब्यून

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मादाम सोफिया

एक समय के विश्वविख्यात भारतीय सर्कस– कार्लेकर ग्रैंड सर्कस– की मनोविश्लेषण में निष्णात नटी की संक्षिप्त जीवन-गाथा, शिवाजी शंकर कार्लेकर के शब्दों में।

★

"अमरावती में आपकी जो मोटर है, उसका नम्बर है, सी० पी० एल० २२०९।" उस महिला के मुँह से ये शब्द निकलते ही भास्करराव देशपांडे की ऐसी अवस्था हो गयी, मानो उन्होंने दोपहर में तारे देख लिये हों!

यह घटना है, सन् १९२७ की। उन दिनों 'कार्लेकर ग्रैंड सर्कस' बम्बई में, चर्नी रोड स्टेशन के निकट, अपने खेल दिखा रहा था। उसी सर्कस की रंगभूमि में यह अद्भुत घटना घटी थी। बम्बई शहर से सैकड़ों मील दूर अमरावती में स्थित किसी मोटर का नम्बर, केवल अपनी आत्म-शक्ति के सहारे ठीक-ठीक बता देनेवाली वह महिला, हंगेरी की निवासिनी थी। उसका नाम था, 'मादाम सोफिया'!

मादाम सोफिया का जन्म सन् १८८७ में हंगेरी के एक गरीब किसान-परिवार में हुआ था। सोफिया के पिता राबर्ट के पास बहुत थोड़ी-सी जमीन थी, जिसके द्वारा वह अपने परिवार का किसी प्रकार भरण-पोषण करता था। सोफिया अपने माँ-बाप की पहली संतान थी; पर वही अंतिम भी साबित हुई; क्योंकि उसके जन्म के एक महीना बाद ही उसकी माता का देहांत हो गया। बेचारा राबर्ट अभी संतान-प्राप्ति का हर्ष ठीक से मना भी न पाया था कि, अपनी प्रिय पत्नी के निधन की भयंकर विपत्ति का उसे सामना करना पड़ गया।

माता का देहांत होने के बाद, सोफिया के पालन-पोषण का भार उसकी वृद्धा दादी पर आ पड़ा। अपना जी-जान लगा कर वह उसकी देखभाल करती। उसका पिता भी उसे अपने प्राणों से लगाये रखता। उसकी बाल-लीलाओं का ही सहारा पाकर वह अपनी पत्नी के वियोग की व्यथा को भूल गया। सोफिया देखने में बड़ी सुंदर थी। उसके घुँघराले-सुनहले बालों एवं गहरी नीली आँखों को देख कर राबर्ट का मन न अघाता। वह सब-कुछ भूल जाता उसे देख कर। इसीलिए जब लोगों ने उससे दूसरा विवाह कर लेने का आग्रह किया, तो सोफिया को विमाता के कारण कष्ट पहुँचने की बात सोच कर उसने साफ 'ना' कर दिया।

जब सोफिया बारह वर्ष की हुई; तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसकी एकमात्र देखभाल करनेवाली दादी भी चल बसी। अब राबर्ट ने उसे अपने एक मित्र के यहाँ रख कर, नौकरी की तलाश में, वियेना जाने का विचार किया। उसके पास जो थोड़ी-सी जमीन थी, उसे उसने बेच दिया और सोफिया को अपने एक मित्र जान के हवाले कर दिया। जाते वक्त उसने सोफिया को विश्वास दिलाया कि, शीघ्र ही वियेना से लौट कर वह उसे अपने साथ ले जायेगा। जान बड़ा ही सुसंस्कारी एवं मृदु स्वभाव का व्यक्ति था। उसके अपनी भी एक लड़की सोफिया की उम्र की ही थी। सो, उसने राबर्ट को वचन दिया कि, वह सोफिया को अपनी पुत्री के समान ही रखेगा। और तब, आश्वस्त होकर, राबर्ट वियेना चला गया।

पर जान जितना सरल एवं सुंदर स्वभाव का व्यक्ति था, उसकी पत्नी उतनी ही झगड़ालू थी। सोफिया का अपने घर आना जान की पत्नी और लड़की को पसंद नहीं आया। इसलिए उन लोगों ने पहले दिन से ही कलह आरम्भ कर दिया। सोफिया के घर में पाँव रखते ही दोनों माँ-बेटी ने मिल कर घर का सारा काम उसके सिर मढ़ दिया। अब बेचारी सोफिया के पास एकांत में बैठ कर चुपचाप सुबकने और पिता को याद करने के अलावा कोई चारा न था। उस नन्ही-सी बच्ची को न केवल घर की सफाई, बर्तन एवं कपड़े धोना तथा खाना बनाने का काम करना पड़ता; बल्कि जंगल से लकड़ियाँ भी काट लानी पड़तीं। वह इतने काम करती और पुरस्कार के रूप मिलती, मार तथा गालियाँ। राबर्ट अपनी लाड़ली पुत्री के लिए प्रति मास नियमित रूप से कुछ रकम भी भेजा करता था; क्योंकि उसे एक थियेटर में नौकरी मिल गयी थी; पर उस रकम का उपयोग कभी भी सोफिया के लिए नहीं हुआ। जान ने एकाध बार अपनी पत्नी को टोका भी; पर उसका कोई परिणाम नहीं निकला।

एक दिन सोफिया को जंगल में लकड़ी लाने के लिए भेजा गया, तो उसे कुछ-कुछ ज्वर था। फिर भी, उसने लकड़ियाँ काटीं और उनका गट्ठर सिर पर लेकर चलने लगी। तभी अचानक उसके पाँव में एक बड़ा काँटा चुभ गया। अब उसके लिए एक पग भी आगे चलना मुश्किल हो गया– वह वहीं बैठ कर रोने लगी। उसी समय, उधर से एक चरवाहा निकला, जो राबर्ट का परिचित था। उसने सोफिया को पहचाना और उसका काँटा निकाल दिया। सोफिया की यह दशा देख कर उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने स्वयं अपने सिर पर लकड़ी के बोझ को उठा लिया और गाँव तक ले आया। इधर जान की पत्नी मेरी, सोफिया के लौटने में देर होने पर अलग लाल-पीली हो रही थी। सो, जब उसने उसको चरवाहे के साथ आते देखा, तो उसका पारा और भी चढ़ गया। उसने आव देखा न ताव, उसे मारने लगी। बेचारे चरवाहे ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बीच-बचाव करके किसी तरह उसे छुड़ाया; पर उस दिन की पिटाई इतनी निष्ठुर थी कि, सोफिया की आत्मा विद्रोह कर उठी। उसने अपनी मुक्ति का संकल्प कर लिया।

दूसरे दिन, प्रातःकाल होते ही, सोफिया घर से निकल पड़ी। वियेना जाकर पिता से मिलने का उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था। भूखा पेट, शरीर पर फटे कपड़े, हल्के ज्वर से शरीर टूटता-सा—ऐसी स्थिति में वह बालिका वियेना जानेवाले मार्ग पर बढ़ने लगी। गाँव से काफी दूर चले जाने पर उसे जिप्सियों की एक टोली मिली, जो उस समय भोजन करने की तैयारी में थी। भूख से व्याकुल सोफिया उनके पास गयी। उस जिप्सी-टोली का प्रमुख एक दयालु वृद्ध पुरुष था। उसने सोफिया को भर पेट खाना खिलाया और प्रेमपूर्वक उसकी सारी राम-कहानी सुनी। सोफिया ने उसे यह भी बतला दिया कि, इस समय अपने पिता की तलाश करने के लिए वह वियेना जा रही थी।

विश्वविख्यात रोमन सर्कस की नटी सोफिया, जो बाद में वैरागिनी होकर ईसाई संत-वाणी की सरस्वती बन गयी।

सुन कर वृद्ध ने कहा— "बेटी! वियेना तो बहुत दूर है। अकेली कैसे जायेगी? हम लोग भी वियेना ही चल रहे हैं। न हो, तू हमारे साथ चल। मैं तेरे पिता से तुझे मिला दूँगा।" सोफिया ने बात मान ली।

इधर वियेना में, जिस समय सोफिया ने घर छोड़ा, उसी समय रावर्ट ने एक दुःस्वप्न देखा। उसने देखा कि, एक भयानक काला व्यक्ति उसकी लड़की सोफिया को किसी बहुत ऊँचे पर्वत की चोटी से नीचे फेंक रहा है। बस, उसी समय 'सोफिया सोफिया' चिल्लाता वह जाग पड़ा और अविलम्ब सोफिया से मिलने के लिए चल पड़ा। जब वह आधे रास्ते में पहुँचा, तभी उसे जिप्सियों की एक टोली पड़ाव डाले दिखायी पड़ी। पर उसे क्या पता था कि, उसकी लाड़ली उसी टोली में थी। वह उधर ध्यान न दे, सीधा गाँव चला गया।

गाँव में जान की पत्नी से उसने सुना कि, सोफिया भाग गयी थी। उससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सदमा बर्दाश्त न हुआ। वह वहीं मूर्च्छित होकर गिर गया। थोड़ी देर बाद, होश आने पर, वह अस्त-व्यस्त-सा 'सोफिया-सोफिया' चिल्लाता, जो रास्ता सामने दिखायी पड़ा, उसी पर उसे खोजने निकल पड़ा।

जिप्सियों की टोली ने वियेना पहुँच कर राबर्ट की बहुत खोज की; पर वह कहीं न मिला। इससे सोफिया को बहुत निराशा हुई– अपने आगे दूर-दूर तक उसे अंधकार ही दिखायी पड़ने लगा। जिप्सी-टोली के उस वृद्ध प्रमुख ने उसकी कठिनाई को समझा और कहा कि, जब तक उसके पिता न मिल जायें, तब तक वह उनके साथ ही रहे। सोफिया के पास इसके सिवाय चारा भी क्या था! उसने प्रस्ताव को चुपचाप स्वीकार कर लिया।

लगभग तीन वर्षों तक सोफिया उस खानाबदोश जिप्सी-टोली के साथ सारे यूरोप का भ्रमण करती रही। इस बीच उसने कई जिप्सी-नृत्य सीख कर उनमें प्रवीणता प्राप्त कर ली। अब तक वह पंद्रह वर्ष की हो गयी थी और देखने में स्वर्गीय अप्सरा के समान लगती थी।

तीन वर्षों के पश्चात् वह जिप्सी-टोली फिर वियेना आयी। उस समय तक सोफिया उस वृद्ध प्रमुख तथा टोली की प्राण बन चुकी थी।

प्रातःकाल का समय था। सोफिया चाय-पानी की व्यवस्था में लगी थी। वृद्ध प्रमुख रावटी के बाहर, एक आरामकुर्सी पर बैठा था। उसके पास ही, पाँव के निकट, एक भयानक अल्सेशियन कुत्ता भी बैठा था। इतने में, एक बिखरे बालों एवं फटे कपड़ोंवाला व्यक्ति आता दिखायी पड़ा। उसके पास आते-न-आते कुत्ता उसके पीछे दौड़ा और वह व्यक्ति डर के मारे भाग खड़ा हुआ; पर कुछ ही दूर जाने पर ठोकर खा गिर पड़ा और सिर में अधिक चोट लगने के कारण बेहोश हो गया। वृद्ध प्रमुख ने उसे अपनी रावटी में मँगवाया और उसकी सेवा-शुश्रूषा की। कुछ देर बाद, जब उसे होश आया, तो वह इधर-उधर देखने लगा। उस समय सोफिया भी वहीं, पास में ही, खड़ी थी। वह व्यक्ति उसकी ओर एकटक ताकने लगा। फिर कुछ क्षण बाद चिल्ला पड़ा– "ओह! सोफिया! मेरी बेटी!" और, उसने झपट कर सोफिया को अपने हृदय से लगा लिया।

कुछ दिनों तक जिप्सियों की टोली में विश्राम करने के पश्चात् राबर्ट, सोफिया को लेकर चला गया। अब वह पूर्णतः स्वस्थ हो चुका था और उसकी सारी परेशानियाँ ध्वस्त हो चुकी थीं। एक दिन वह सोफिया को लेकर उस थियेटर में गया, जहाँ वह पहले काम करता था। इस थियेटर का स्वामी एक पच्चीस-वर्षीय सुंदर युवक था। उसका नाम था, अल्फांसो। उसके पिता अभी हाल में ही एक बहुत बड़ी सम्पत्ति छोड़ कर मरे थे। अब वह उस सम्पत्ति का एकमात्र स्वामी था। काफी ऐश्वर्य का स्वामी होने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ-साथ वह एक उत्कृष्ट जादूगर भी था—उसने मोहिनी-विद्या का अभ्यास कर, उसे सिद्ध कर लिया था। 'माइंड-रीडिंग' (दूसरे के मनोगत बात को जान लेना) भी वह बहुत अच्छी तरह जानता था। दूसरे के मन की बात को ठीक-ठीक बता देने के लिए, सारे यूरोप में उसकी प्रसिद्धि हो चुकी थी।

रावर्ट, सोफिया को लेकर उसके निकट आया, तो उसके अपार सौंदर्य को देख कर वह चकित रह गया। उसने राबर्ट से स्पष्ट रूप से सोफिया के लिए प्रार्थना की। अल्फांसो-सरीखा सुंदर, गुणवान और श्रीमंत जामाता मिलने पर भला कौन पिता प्रसन्न न होता? उसने अल्फांसो की बात मान ली और सोफिया-अल्फांसो विवाह-सूत्र में आबद्ध हो गये।

विदूषक

[चित्र : मेक्सिकन कलाकार तूबे का एक रेखाचित्र]

विवाह के पश्चात् सोफिया को अल्फांसो ने अनेक प्रकार के नृत्य सिखाये और 'माइंड-रीडिंग' में भी उसे पारंगत किया। तत्पश्चात् दोनों अपनी पार्टी के साथ यूरोप के दौरे पर निकले। इस यात्रा में उन्हें बहुत प्रसिद्धि तथा धन मिला। सोफिया की भी चारों ओर चर्चा होने लग गयी। अब तो वह भी दूसरों के मनोगत विचारों को ठीक-ठीक बता देने में पूर्णतः कुशल हो चुकी थी।

सन् १९१३ में अल्फांसो जर्मनी का दौरा कर रहा था। बर्लिन में उसके कार्यक्रम की बड़ी धूम मची। जर्मनी के तत्कालीन बादशाह विलियम कैसर के भी कान में सोफिया की करामात की चर्चा पड़ी। उसने राजमहल में अपने कार्यक्रम दिखाने के लिए उन्हें निमंत्रित किया। जब राजमहल में कार्यक्रम चल रहा था, तभी कैसर ने सोफिया से पूछा कि, उसके मन में इस समय कौन-से विचार चल रहे हैं? सोफिया ने दस मिनट के लिए अपनी आँखों को बंद किया और फिर उत्तर दिया—"इस समय आप सारे यूरोप को जीतने का विचार कर रहे हैं। आप न केवल सारे यूरोप; बल्कि अन्य नये स्थानों के भी स्वामी बनना चाहते हैं।" सुन कर, कैसर स्तम्भित रह गया। उसने प्रसन्न होकर सोफिया को 'मादाम' की उपाधि से विभूषित किया। तब से उसका नाम 'मादाम सोफिया' प्रचलित हो गया।

इस घटना के ९ वर्ष बाद, सन् १९२२ में, दमा की बीमारी से अल्फांसो की मृत्यु हो गयी और सोफिया ने अपनी कम्पनी बंद करके, पेरिस की 'अमार' कम्पनी में नौकरी पकड़ ली। पेरिस में ही उसने सन्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९२५ में 'कार्लेकर सर्कस' का नाम सुना। 'कार्लेकर सर्कस' का नाम सुन कर भारत-भ्रमण की उसकी चिर-प्रतीक्षित कामना बलवती हो उठी और उसने सर्कस के व्यवस्थापक श्री रामभाऊ जोशी को एक पत्र लिखा। श्री जोशी०ने उसे ५००० रुपये मासिक पर बम्बई बुला लिया। भारत आने पर उसकी 'माइंड-रीडिंग' की ख्याति बढ़ने लगी। बहुत-से लोग तो केवल उसकी अद्‌भुत करामात देखने के लिए ही सर्कस में आने लगे। उससे प्रश्न करने में लोगों को बड़ा आनंद मिलता। एक दिन सर्कस-संचालक प्रो० शंकरराव कार्लेकर के मित्र भास्करराव तथा माधवराव भी मादाम सोफिया की करामात देखने अमरावती से बम्बई आये। उन्हें वस्तुतः यह विश्वास ही नहीं होता था कि, कोई व्यक्ति इस तरह अदृश्य को प्रकट करने की सामर्थ्य रख सकता है। सो, उन्होंने स्वयं ही मादाम सोफिया की परीक्षा लेने का निश्चय किया। अपने इस निश्चय के अनुसार ही, जब सर्कस में मादाम सोफिया ने अपना खेल आरम्भ किया, तो भास्करराव देशपांडे ने उठ कर पूछा—"अमरावती-स्थित मेरी मोटर का क्या नम्बर है?" मादाम सोफिया ने थोड़ी देर तक आँखें बंद करके अपना ध्यान केंद्रित किया; फिर कहा—"अमरावती में आपकी जो मोटर है, उसका नम्बर सी० पी० एल० २२०९ है।" सुन कर, स्वभावतः ही, उनके आश्चर्य की सीमा न रही। वही उनकी मोटर का नम्बर था। यह घोषणा होते ही कि, नम्बर बिल्कुल ठीक था, प्रेक्षकों की दीर्घा में तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी।

इस अद्‌भुत सामर्थ्य से सम्पन्न महिला मादाम सोफिया ने 'कार्लेकर ग्रैंड सर्कस' में दो वर्ष तक काम किया। सन् १९२९ में, जब सर्कस पुनः बम्बई आया, तो सोफिया ने वियेना के लिए प्रस्थान किया; पर वहाँ पहुँचने के दूसरे ही वर्ष 'मधुमेह' का शिकार होकर वह चल बसी।

★

एक नाई को अपने पड़ौसी के खिलाफ मुकदमे में जब सफलता नजर आती नहीं दिखलायी दी, तो उसने अपने वकील से कहा— "वकील साहेब, मुझे मुकदमे के बारे में भय लग रहा है। मैं जज साहेब को सौ रुपये का नजराना भेजना चाहता हूँ।"

वकील ने बिगड़ कर कहा— "तो मुकदमा जरूर हारोगे। जज साहेब तुम्हें कभी माफ नहीं करेंगे।"

...आखिर, नाई मुकदमा जीत गया। उसने वकील से कहा— "वकील साहेब, आपने तो मना किया था; मगर मैंने नजराना भेजा था!"

"ऐं! मगर....."

"मगर क्या? मैंने नजराना अपने विपक्षी के नाम से भेजा था।"—'नावक के तीर' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि मनुष्य के पास मीठा जल न हो, तो सागर की अपार जल-राशि के बीच होते हुए भी उसे प्यास के कारण अपने प्राण गँवा देने पड़ें। पर अतलांतिक महासागर का एक क्षेत्र ऐसा है, जहाँ आपको पीने के लिए मीठा जल प्राप्त हो जायेगा। यह स्थान अतलांतिक महासागर के ब्राजील के निकटस्थ भाग में अवस्थित है। खारे जल के अपार भांडार के बीच मीठे जल की उपस्थिति यों आश्चर्य की बात तो है; पर इसका रहस्य सीधा-सा है। ब्राजील की 'आमेजन' नदी अतलांतिक महासागर में जहाँ गिरती है, वहाँ उसके जल की मात्रा और वेग बहुत ही अधिक है। प्रति सेकंड १० लाख घन फुट की दर से आमेजन का पानी अतलांतिक में गिरता है और सागर में २०० मील के क्षेत्र में फैल जाता है। फलतः इस सम्पूर्ण क्षेत्र में कुछ सौ फुट की गहराई तक पूर्णतः शुद्ध पेय जल मिल जाता है।

× × ×

किसी ऐसी रानी की कल्पना भी की जा सकती है, जिसने कभी अपने राज्य की सूरत तक नहीं देखी हो? पर इंग्लैंड को एक ऐसी रानी प्राप्त हुई थी। उसका नाम था बेरेंगरिया और वह राजा रिचर्ड की पत्नी थी। जब रिचर्ड सन् ११९० में अपने तीसरे धर्म-युद्ध-अभियान के लिए रवाना हुआ, तो इटली में उसकी मुलाकात नवारे के सांको षष्ठम की पुत्री बेरेंगरिया से हुई। एक वर्ष बाद, १२ मई, ११९१ को, साइप्रस में इन दोनों का विवाह हो गया; रप इसके बाद रिचर्ड इंग्लैंड चला गया— बेरेंगरिया उसके साथ नहीं गयी। तदुपरांत उसी वर्ष के अंतिम समय में एक बार और उसके बाद सन् ११९५ में, दोनों पति-पत्नी का मिलन हुआ। रिचर्ड का जीवन चूँकि अधिकांशतः इधर-उधर भटकने में ही बीता था, इसलिए बेरेंगरिया या तो इटली में रहा करती थी, या फ्रांस में। आखिर में, सन् १२३० में, फ्रांस में ही, उसका देहांत हो गया और अपने अंतिम समय तक वह उस देश में नहीं गयी, जिसकी वह एक लम्बे अर्से तक रानी रही।

× × ×

संसार के सबसे भीमकाय मेढ़क अफ्रीका के दक्षिण-कैमरून और फ्रांसीसी पश्चिम-अफ्रीका-अंचल में उपलब्ध हैं। इन्हें 'रन गोलियथ' के नाम से पुकारा जाता है। इनकी लम्बाई प्रायः दो फुट और वजन पाँच सेर होता है। वहाँ की नीग्रो-जातियाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्हें खाने के काम में तो लाती हैं; पर इनकी हड्डियों को बहुत पवित्र मानती हैं— उनका वे लोग पूजा-पाठ में उपयोग करते हैं। इसके ठीक विपरीत, संसार के सबसे छोटे मेढ़क क्यूबा, सांतो दोमिंगो और समस्त उष्ण-कटिबंधीय क्षेत्रों में मिलते हैं। ये मेढ़क मक्खी के आकार के होते हैं। यदि २५ हजार इन छोटे मेढ़कों को एक जगह जमा किया जाये, तो वे एक 'रन गोलियथ' की बराबरी वजन में कर सकेंगे। ऐसे डेढ़ सौ मेढ़कों का वजन मुश्किल से आधा छंटाँक होता है।

× × ×

मिसिसिपी की पास्कागौला नदी को संगीत से बड़ा गहरा प्रेम है। वह हर क्षण संगीत की लहरियाँ अपने आसपास प्रतिध्वनित करती रहती है। लाखों लोगों ने अब तक इस नदी के संगीत को सुना है; पर इसका रहस्य किसी की समझ में नहीं आ सका है। कितने लोग तो केवल संगीत सुनने के उद्देश्य से ही इस नदी के तट पर पहुँचते हैं। एक धीमी ध्वनि से आरम्भ होकर शनैः-शनैः अपने चरम पर पहुँचने पर इस नदी का संगीत श्रोताओं को पूर्णतः आत्मविस्मृत कर देता है। एक मजे की बात यह भी है कि, लोग इस संगीत को सुनते तो हैं; पर उन्हें यह पता नहीं लग पाता कि, यह ध्वनि आती किस दिशा से है। फिर, यह भी उल्लेख-योग्य है कि, नदी के किसी विशेष स्थान पर यह संगीत मुखरित नहीं होता— नदी के सम्पूर्ण क्षेत्र में यह सुनने को मिलता है।

× × ×

कोई लेखक अपनी लिखी पुस्तक की अवहेलना तक नहीं सह सकता, उसके पन्नों को फाड़-फाड़ कर खा जाने की बात तो दूर। पर डेनमार्क के एक लेखक थियोडोर रिंकिंग को ऐसा ही करना पड़ा था। यह घटना सन् १६४४ की है। उसने एक पुस्तक लिखी, जो विषय-वस्तु की दृष्टि से गणतांत्रिक तत्वों से भरी थी। डेनमार्क के तत्कालीन राजा क्रिश्चियन चतुर्थ को यह बात सह्य न हुई। उसने रिंकिंग को आदेश दिया कि, या तो वह अपनी लिखी पुस्तक को पूर्णतः खा डाले, या फिर फाँसी के तख्ते पर चढ़ने को तैयार हो जाये। रिंकिंग ने फाँसी चढ़ने से अच्छा पुस्तक को खा जाना ही समझा। वह पुस्तक के पन्नों को टुकड़े-टुकड़े करके, भोजन के साथ मिला कर, खा गया।

× × ×

यदि किसी व्यक्ति की नाक बंद कर उसे गाय और बकरे का माँस अलग-अलग खिलाया जाये, तो वह दोनों में कोई अंतर नहीं पायेगा। यही बात सेब और प्याज के साथ है। आप सेब और प्याज, दोनों को छील कर एक ही आकार के टुकड़े काट लें और फिर अपनी नाक बंद कर उन्हें खाकर देखें। आपको दोनों के स्वाद में तनिक फर्क नहीं मिलेगा। ऐसा इसलिए होता है कि, वस्तुतः उन दोनों के बीच का अंतर केवल गंध में है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहस्रश्रम का नंदनवन

इजरायल में क्रांतिकारी कृषि-प्रयोग के स्वर्ण-फलों की भूमिका व्यक्त करनेवाला अशोक मेहता-लिखित एक पठनीय लेख

★

इजरायल देश का आधे से अधिक क्षेत्रफल चार इंच से कम वार्षिक वर्षावाला रेगिस्तान है। उत्तर के हिस्से में जाड़े में वर्षा होती है। यहाँ की अधिकांश जमीन बलुई तथा पथरीली है। आज से पहले यहाँ वर्षा के अलावा सिंचाई के कोई साधन नहीं थे। आवागमन के साधनों में भी घोड़ा अथवा ऊँट ही था। सड़कों का अभाव था। मलेरिया से पूरी तरह त्रस्त यह क्षेत्र उजाड़-सा था। इन विषम परिस्थितियों में यूरोप से आये ८-८, १०-१० युवकों के कुछ दल एक-दूसरे को बगैर जाने-पूछे जहाँ-तहाँ जमीन पर बस कर खेती करना शुरू करते थे। ये सभी युवक जानते थे कि, संसार का भविष्य श्रम के ही स्वेद-बिंदुओं से लिखा जायेगा और सच्चा श्रमिक वह है, जो भूमि पर बसे और उसमें से अपनी रोजी पैदा करके खाये। उनकी दृढ़ धारणा थी कि, जब तक देश की मिट्टी से कोई सीधा सम्बंध नहीं जोड़ता, तब तक उस देश को अपना कहने का उसे अधिकार नहीं। भूमि के साथ एकप्राण होकर ही कोई व्यक्ति अपनी भावनाओं की इमारतों में उस देश को खड़ा करने में समर्थ हो सकता है।

प्रखर जीवनोन्मेष की इन्हीं भावनाओं के पोषण में आज के इजरायल के निर्माण की ईंट रखी गयी थी। आज इजरायल की २० लाख की आबादी में से १८ लाख यहूदी, दो लाख अरब, ईसाई, मुसलमान और ड्रूज हैं। यहाँ ९८ प्रतिशत लोग बा-रोजगार हैं। हर बालक को ५ से १४ वर्ष की आयु तक अनिवार्य शिक्षा मिलती है। हर व्यक्ति को चिकित्सा की सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। कम-से-कम मजदूरी या वेतन ७ रुपये प्रतिदिन है और अधिक-से-अधिक वेतन ६०० रुपये प्रति मास है; अर्थात् न्यूनतम एवं अधिकतम वेतन-क्रम में अनुपात १—३ का है। अकुशल श्रमिक और अकुशल बुद्धिजीवी में पारिश्रमिक का अंतर केवल ८ प्रतिशत है।

इतने कम समय में, एशिया-भर में सबसे ऊँचे जीवन-स्तरवाला देश— इजरायल— किस प्रकार यह सब सम्भव कर सका? स्वतंत्र इजरायल देश के प्रथम राष्ट्रपति वीजमैन ने कहा था—"'असम्भव' नामक गाय के थनों से दूध दुहना है— एकमन, एकतन होकर बल लगाओगे,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तभी कुछ मिल सकेगा।" दरअसल इस 'असम्भव' ने ही इजरायल को यह जीवन-दर्शन दिया– 'सहकारिता ही परमत्राण है!' सहकारिता केवल नाम की ही नहीं, सम्प्रति जीने में भी सहकारिता! यहाँ गाँव-के-गाँव सहकारी हैं। बड़े-से-बड़े कारखाने सहकारी हैं। मकान-निर्माण सहकारी है। मार्केटिंग सहकारी है। आयात-निर्यात सहकारी है! सड़क-परिवहन सहकारी है। देश की चिकित्सा-संस्था भी, जो देश के ८० प्रतिशत नागरिकों के लिए रोगोपचार सुलभ करती है, सहकारी है। संक्षेपतः देश का ४५-५० प्रतिशत आर्थिक जीवन सहकारी है।

इजरायल की कुल भूमि का ७७ प्रतिशत भाग 'ज्यूइश नेशनल फंड'-द्वारा विभिन्न मालिकों से खरीदा गया है। ६ प्रतिशत भूमि अभी भी व्यक्तिगत भूमि-मालिकों के पास है। सदियों से वीरान पड़ी भूमि को खरीदना, उसे तोड़ कर खेती-योग्य बनाना और उस पर लोगों को बसाने का काम 'ज्यूइश नेशनल एजेंसी' दुनिया-भर के यहूदियों से चंदा तथा सहायता के रूप में मिले धन-द्वारा करती है। यह जमीन काश्तकारों या सामुदायिक बस्तियों को बाइबिल के कानून के अनुसार ४९ वर्ष के पट्टे पर दी जाती है। पचासवें वर्ष पट्टे का नवीनीकरण कराना होता है। पट्टे की शर्तें साधारण होती हैं:

१. खेती स्वयं करूँगा।

२. बस्ती के नियमों को मानूँगा।

३. भूमि के टुकड़े नहीं होंगे।

५. जमीन पड़ती नहीं छोड़ूँगा।

यह भूमि-व्यवस्था लोगों की भिन्न-भिन्न रुचि तथा विशेष देशीय परिस्थितियों के फलस्वरूप तीन तरह से विकसित हुई–'किबुत्ज', 'मोशाव ओवडिम' तथा 'मोशाव शितूफी'। ये नाम इजरायल की भाषा हिब्रू के हैं।

किबुत्ज पूर्णतः सामुदायिक गाँव हैं। सबसे प्रथम किबुत्ज की स्थापना १९०९ में जार्डन नदी के किनारे १०-१२ युवकों ने की थी। आज पूरे इजरायल में २१२ की संख्या में किबुत्ज हैं। देश की जनसंख्या का ५ प्रतिशत यहीं रहता है। प्रत्येक किबुत्ज में ६०० से १,२०० तक लोग रहते हैं। किसी-किसी में संख्या १,८०० तक भी है। इन समुदायों में काम और जीवन, सभी सामुदायिक हैं। भूमि गाँव की; स्कूल-अस्पताल गाँव का; खेती गाँव की; गोशाला, मुर्गीखाना, टैक्टर, कारखाना, स्टोर, सभी-कुछ गाँव का है। भोजनालय भी पूरे गाँव का एक ही है। माताओं का प्रसव अस्पताल में होता है। सात दिन बाद माता अपने कमरे में जाती है तथा बच्चा नर्सरी में पहुँचाया जाता है। दिन में ४-५ बार माता बच्चे को दूध पिलाने आती है। जन्म से लेकर १८ वर्ष की आयु तक पूरे गाँव के बच्चे बालघरों में ही रहते हैं। वहीं उनकी देख-भाल, पालन-पोषण तथा शिक्षा, आदि की उत्तम व्यवस्था रहती है। रोज शाम को तीन घंटे तथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शनिवार को पूरे दिन बालक अपने माता-पिता के साथ रहते हैं। काम का बटवारा आदमी की शक्ति-सामर्थ्य तथा समाज की आवश्यकता की दृष्टि से होता है। हर दो वर्ष पर गाँव के सभी कामों का संचालन करने के लिए पदाधिकारियों तथा समितियों का चुनाव होता है। प्रति सप्ताह पूरे समाज की बैठक होती है, जिसमें छोटे-बड़े सभी मसलों पर विचार और निर्णय होता है– लगभग सर्वानुभूति की परम्परा से। किबुत्ज की आंतरिक व्यवस्था में कोई भी बाहरी एजेंसी किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकती; यहाँ तक कि, कई मामलों में तो राजकीय कानून भी आंतरिक कामों और व्यवस्था में बाधक नहीं होता। राज्य ३५ बालकों के पीछे एक शिक्षक के हिसाब से शिक्षकों का वेतन, किबुत्ज को सहायता के रूप में दे देता है। 'किबुत्ज' शिक्षा की व्यवस्था अपनी ओर से करता है। सार-रूप में यहाँ के जीवन के आधार निम्नलिखित हैं–

१. हर व्यक्ति शक्ति-भर काम करे और आवश्यकता प्राप्त करे।

२. सब काम समान हैं।

३. सभी व्यक्ति तथा स्त्री-पुरुष समान हैं– कोई छोटा-बड़ा नहीं।

मोशाव ओवडिम दूसरे प्रकार के गाँव हैं, जिनकी स्थापना सबसे पहले जजरील की घाटी में १९२२ में हुई। आज इनकी संख्या २८९ है। ये सब पारिवारिक जीवन और व्यक्तिगत खेती-वाले सेवा-सहकारी गाँव हैं। एक गाँव में ८० से १२० तक परिवार होते हैं। हर

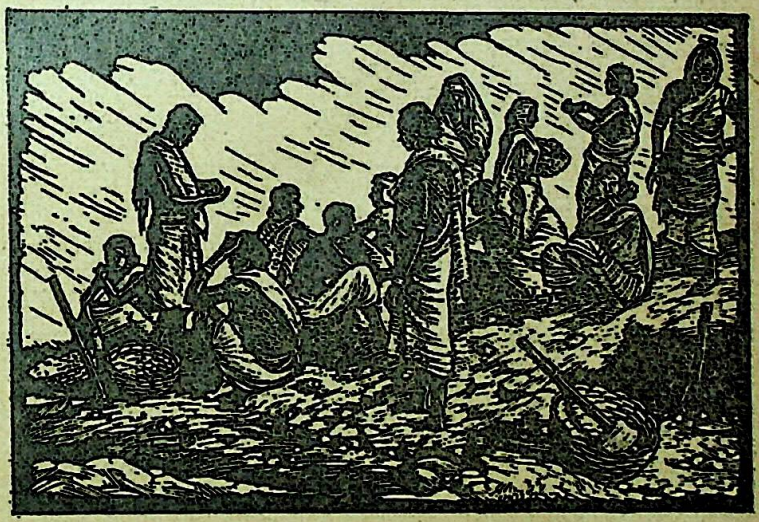

सहश्रम

[चित्र : हरेनदास-निर्मित एक काष्ठ-शिल्प की सरल अनुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिवार को ५॥ एकड़ भूमि दी जाती है। इसी के अंदर उसका मकान, गोशाला, मुर्गी-पालन, फल-बगीचा, खेती, सभी-कुछ रहता है। हर परिवार अपनी-अपनी खेती स्वयं करता है। लेकिन हर चीज की खरीद-बिक्री, प्रोसेसिंग, आदि तथा सभी म्युनिसिपल कार्य– यथा शिक्षा, चिकित्सा, रोशनी, पानी, मनोरंजन– गाँव की सहकारी प्रणाली से चलते हैं। मवेशियों का बीमा तथा बुढ़ापे की पेंशन-जैसी व्यवस्थाएँ भी गाँव ही करते हैं। राज्य केवल आयकर लेता है; दूसरा कोई टैक्स नहीं। बाकी मामलों में गाँव स्वशासित हैं।

मोशाव शितूफी तीसरे प्रकार के गाँव हैं। इनका अस्तित्व १९३७ में आया। मोशाव ओवडिम के कुछ लोगों का विचार हुआ कि, उन लोगों का जीवन अधिक व्यक्तिवादी हो गया है। और, दूसरी ओर, किबुत्ज में कुछ लोगों को लगा कि, उनका जीवन अधिक सामूहिक हो गया है। अतः बीच का मार्ग 'मोशाव शितूफी' को अस्तित्व में लाया। इसमें समुदाय के काम– यथा, खेती, गोपालन, आदि– सभी सामूहिक हैं तथा जीवन पारिवारिक है। समुदाय की ओर से प्रत्येक परिवार को घर में प्राणियों के हिसाब से पारिवारिक भत्ता मिल जाता है और हर परिवार अपनी आवश्यकता की चीजें सामुदायिक स्टोर से खरीदता है। मोशाव शितूफी में किबुत्ज के सिद्धांत– शक्ति-भर काम, जरूरत-भर सामान– की पूरी रक्षा की गयी है। लेकिन पारिवारिक जीवन में पर्याप्त स्वतंत्रता है।

खेती के अतिरिक्त उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में भी सहकारिता का व्यापक प्रसार है। प्रत्येक गाँव के अलावा नगरों में स्थान-स्थान पर 'उपभोक्ता सहकारी भंडार' हैं। स्वयं सेवा के आधार पर चलने-वाले इन भंडारों में प्रतिदिन के प्रयोग की वस्तुएँ आम तौर पर बाजार से १० प्रतिशत सस्ती ही मिलती हैं। इसका मूल कारण है, थोक सहकारी भंडार, जो विभिन्न 'उपभोक्ता सहकारी भंडारों'-द्वारा मिल कर स्थापित किया गया है। यह आवश्यक वस्तुओं का सीधा आयातकर्ता भी है। चूँकि इन भंडारों को सब माल सीधे उत्पादकों से मिलता है, इसलिए खुले बाजार में ये हर चीज सस्ती दे सकने में समर्थ हैं। दूसरी ओर, किसान के सभी उत्पादन को खरीद कर उसे अच्छे भाव से बेचनेवाली भी कई विक्रय-सहकारिताएँ हैं, जिनसे किसान को उसकी उपज का अच्छा दाम मिलता है। देश में ग्लास, तेल, साबुन, कपड़ा, सीमेंट, आदि के अनेक बड़े-बड़े कारखाने हैं, जो उनमें काम करनेवाले मजदूरों की सहकारी समितियों-द्वारा संचालित होते हैं।

पूरे इजरायल देश में सड़कों-द्वारा यात्रियों को लाने-ले जाने का काम तीन सहकारी समितियाँ करती हैं। इनमें से एक तेल-अवीव शहर में है, दूसरी हाइफा शहर में तथा तीसरी का विस्तार सभी देहाती क्षेत्रों में किया गया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों

उस दिन डा० सी० वी० रमण के यहाँ सत्संग के लिए गया था। बड़े उन्मुक्त 'मूड' में थे वे... कह रहे थे—"प्रश्न भी क्या है, द्रौपदी का चीर है—खींचते ही जाओ....यह प्रश्न ही हमें खींच लाया है यहाँ तक....शायद प्रश्न का तकाजा ही हमें जन्म धारण करने को कहता है!" इसी परम प्रश्न 'क्यों' पर रामनारायण उपाध्याय ने नीचे जो आयोजन किया है, उसे भी देखिये।

☆

"जिस दिन इस संसार की सृष्टि हुई, उसी दिन 'क्यों' भी अस्तित्व में आया। जिस दिन यह नष्ट होगी, उसी दिन 'क्यों' का भी विनाश हो जायेगा। सृष्टि के रहते 'क्यों' मिट जाये, यह सम्भव नहीं है।"—महर्षि थोरो का यह कथन एक स्वयंसिद्ध तथ्य है। संसार की हर भाषा का साहित्य 'क्यों' के उत्तर की उत्कंठा से भरा पड़ा है। कुछेक 'क्यों' के सही-गलत उत्तर देने के तो प्रयास भी साहित्य-मनीषियों ने किये हैं— अपनी मधुर सतरंगी कल्पनाओं के सहारे। यहाँ ऐसे ही कुछ 'क्यों' और साहित्य-महारथियों की रंगीन कल्पना पर आधारित उनके उत्तर प्रस्तुत हैं।

पहला 'क्यों' देखिये— बादल पर्वतों पर क्यों छा जाते हैं?

इसके उत्तर में 'मैत्रायणी संहिता' में लिखा है—"प्रजापति की बड़ी संतान पर्वत हैं। पहले वे पंखोंवाले थे, सो जहाँ चाहते, उड़ कर चले जाया करते। उस समय यह पृथ्वी बहुत दुर्बल थी; अतः पर्वतों की इस क्रिया से उसे बड़ा कष्ट होता था। उसने देवराज इंद्र से इसकी शिकायत की। पृथ्वी की कष्ट-गाथा सुन कर इंद्र को क्षोभ हुआ और उसने सभी पर्वतों के पंख काट दिये। ये पंख 'जीमूत' अथवा 'बादल' बन गये और पर्वत अचल हो गये। चूँकि पंख हल्के होते हैं; अतः बादल उड़ कर इधर-उधर मँडराने लगे। पर अब भी, वर्षा-काल में, उन्हें अपने पिता पर्वतों की याद आती है और वे येन-केन-प्रकारेण पर्वतों के दर्शनार्थ पहुँच जाते हैं।"

दूसरा प्रश्न है— लोग मछलियों को खोज-खोज कर क्यों मारते हैं?

इस सम्बंध में 'तैतरीय संहिता' कहती है—"अग्नि के तीन बड़े भाई थे। वे देवताओं का हव्य ले जाते हुए मारे गये। इससे अग्नि डर गया। उसने सोचा कि, वह भी, निश्चय ही, मनुष्यों-द्वारा कष्ट को प्राप्त होगा। अतः वह पानी में घुस कर छिप गया। जब देवताओं ने उसकी खोज की, तो मछली ने उसका पता बता दिया। इस पर अग्नि ने क्रुद्ध होकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे शाप दे दिया कि, लोग तुझे खोज-खोज कर मारा करेंगे। इसी शाप के कारण लोग मछलियों को खोज-खोज कर मारते हैं।"

तीसरा 'क्यों' है– सुबह होते ही चंद्रमा पश्चिम में क्यों चला जाता है?

इस सम्बंध में महाकवि माघ ने एक अत्यंत ही सुंदर रूपक प्रस्तुत किया है– "चंद्रमा ने अपनी प्रिया कुमुदनी के साथ हास-विलास में सारी रात जागरण किया है। अतः सर्वथा शिथिल हो जाने के कारण, कुछ क्षण विश्राम लेने के लिए, वह ऊँघता हुआ अपनी दूसरी नायिका 'पश्चिम-दिशा' की गोद में जाकर गिर गया है।"

पर लगभग इसी प्रश्न का एक दूसरा उत्तर भी माघ ने प्रस्तुत किया है। अपने नये रूप में यह प्रश्न है–प्रातःकाल सूर्योदय के समय चंद्रमा अदृश्य क्यों हो जाता है?

इस प्रश्न के उत्तर में वे कहते हैं– "सूर्य कुछ समय के लिए बाहर जाकर 'पूर्व-दिशा'-रूपी अपनी पत्नी के पास वापस आ गया। उसे देख कर चंद्रमा, जो सूर्य-पत्नी के साथ रमण कर रहा था, भागा– ठीक वैसे ही, जैसे किसी नायिका के पति के आ जाने पर उप-पति (जार पुरुष) पिछले दरवाज़े से भाग जाता है।"

चाँदनी बड़े प्राचीन काल से कवियों की प्रिया रही है। उसकी सुंदरता ने सबको मोह रखा है; पर चाँदनी होती क्यों है, यह बहुत कम लोगों को मालूम है। इस सम्बंध में जरा एक कवि की कल्पना देखिये–"चंद्रमा की एक प्रिया रात भी है। इसी कारण वह रजनीपति, निशापति, राकेश, आदि कहलाता है। चाँद और रात, दोनों का आकाश-कुंज में मिलन होता है। रात के वस्त्र काले होते हैं; अतः जब चंद्रमा उसके प्रति अपना प्रेम व्यक्त करता है, तो उसके वस्त्र अस्त-व्यस्त हो जाते हैं और देह-यष्टि की कांति बिखर पड़ती है। यही चाँदनी है।"

अंत में, "सूरज लाल क्यों है?" जरा इसका उत्तर सुन लीजिये। कोरिया में इस सम्बंध में यह लोक-कथा प्रचलित है– "एक बार दो भाई-बहन स्वर्ग पहुँचे। स्वर्ग के देवता ने उनसे पूछा—'तुम लोग कौन-सा काम करना चाहते हो?' वे बोले—'जो आप कहें।' आदेश मिला— 'तुम दोनों दुनिया में उजाला करने का काम करो।' भाई को सूरज बन कर दिन में उजाला करने का और बहन को चाँद बन कर रात में उजाला करने का काम सौंपा गया। पर एक दिन बहन ने कहा– 'रात में मुझे डर लगता है। यदि मुझे दिन में काम करने के लिए सूरज बना दिया जाये, तो ठीक रहे।' स्वर्ग के देवता ने उसकी बात मान ली। पर दूसरे दिन जब बहन सूरज बन कर दुनिया को उजाला देने आयी, तो सब लोग उसकी नंगी देह को घूर-घूर कर देखने लगे। पुरुषों को इस तरह अपनी ओर घूरते देख कर उसका चेहरा शर्म से लाल होने लगा और धीरे-धीरे इतना लाल हो गया कि, अब कोई उसकी ओर आँख भी नहीं उठा सकता।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वातंत्र्य-संग्राम का यह अविस्मरणीय अध्याय

जहाँ शरीर की शाखा-प्रशाखाएँ बँधी हों, जहाँ विचार की सर-सरिताएँ नियंत्रित हों, वहाँ आत्मा का योग अपनी ज्योति कैसे जला सकेगा? जहाँ दीपक, बाती और तेल, सभी पराये हैं, वहाँ 'आत्मानम् विद्धि'—अपने को जानो—का क्या अर्थ? संन्यासी-विद्रोह के मूल में यही प्रेरणा थी। प्रस्तुत लेख पढ़ कर देखिये।

☆

बंगाल का 'संन्यासी और फकीर-विद्रोह', जो अँग्रेजी सत्ता को भारत से उखाड़ फेंकने के लिए पूरे चौदह वर्ष (सन् १७६०-७४) तक चला, आज भारतीय इतिहास का एक विस्मृत पृष्ठ है। जब लार्ड क्लाइव और उसके सहकर्मी धीरे-धीरे बंगाल को निगलने की कोशिश कर रहे थे, तब संन्यासियों और फकीरों ने उन्हें रोकने की प्राणपण से चेष्टा की। दुर्भाग्य से वे असफल रहे; क्योंकि उनमें पर्याप्त संगठन नहीं था और न ही उनके पास सुव्यवस्थित कार्यक्रम था। फिर, अंत में तो, नेतागीरी के लिए मुखियों में फूट भी पड़ गयी, जो उनके दुःखद अंत का कारण बनी।

शस्त्रधारी संन्यासियों की प्रथा अकबर के समय में पहले-पहल आरम्भ हुई। डा० फर्कुहर ने लिखा है—"सोलहवीं सदी में मुसलमानों में हजारों शस्त्रधारी फकीर थे, जो युद्धों में भाग लिया करते थे। जब युद्ध नहीं होता था, तब वे लोग धार्मिक उन्माद में भर कर हिन्दू संन्यासियों पर आक्रमण करते और उन्हें मार डालते थे। बेचारे संन्यासी अहिंसा-व्रत के कारण रक्षा के लिए शस्त्र धारण नहीं कर सकते थे।"

अकबर के समय में जब फकीरों का उपद्रव असह्य हो उठा, तब काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान्-संन्यासी मधुसूदन सरस्वती बादशाह से इस समस्या का निवेदन करने आगरा गये। अकबर और स्वामीजी की मुलाकात के समय बीरबल भी मौजूद था। उसने सुझाया कि, स्वामीजी बहुत-से अब्राह्मण हिन्दुओं को संन्यास-दीक्षा दे दें और ये लोग शस्त्र-धारण करके फकीरों का मुकाबला करें। बादशाह ने आश्वासन भी दिया कि, मुगल-सरकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसमें हस्तक्षेप नहीं करेगी। इस तरह सशस्त्र संन्यासियों का सम्प्रदाय आरम्भ हुआ।

मोहम्मद एहसान फानी ने अपने 'दबिस्तान' में लिखा है कि, संन्यासी प्रायः लड़ाइयों में उलझे रहते थे। एक बार तो एक बुढ़िया के नेतृत्व में संन्यासियों की एक टुकड़ी ने औरंगजेब की सेना को भी परास्त कर दिया था। जब सन् १७६४ में मीर कासिम को, ईस्ट इंडिया कम्पनी ने बंगाल की नवाबी से हटा दिया, तब उसने राजगद्दी पुनः प्राप्त करने के लिए संन्यासियों की सहायता ली।

शस्त्रधारी फकीरों का आरम्भ का इतिहास अधिक स्पष्ट नहीं है। पर वे मूलतः भारतीय ही थे। अपने नाम के अंत में वे 'शाह' शब्द का प्रयोग करते थे। 'दबिस्तान' के लेखक फानी का कहना है कि, ये फकीर सच्चे मुसलमान नहीं, अपितु हिन्दू ही थे। फकीरों का 'मदारी'-सम्प्रदाय, जिसका उल्लेख बहुधा संन्यासियों के साथ पाया जाता है, हिन्दुओं के 'अवधूत'-सम्प्रदाय-जैसा था। संन्यासी-विद्रोह के समय का महान् फकीर-नेता मजनूशाह 'मदारी'-सम्प्रदाय का था।

अँग्रेजों से संन्यासियों और फकीरों की मुठभेड़ १७६० से १७६४ तक लगातार चलती रही। परंतु ईस्ट इंडिया कम्पनी के लिए सबसे बड़े संकट के वर्ष थे, सन् १७७३-७४, जब बंगाल में भयानक अकाल चल रहा था। वारेन हेस्टिंग्ज के दस्तावेजों से पता चलता है कि, सन् १७७३ में संन्यासियों ने वाकरगंज पर धावा बोल दिया। हेस्टिंग्ज ने लिखा है—"उसी वर्ष फकीरों ने ढाका की कोठी पर भी हमला कर दिया और कोठी के प्रधान अधिकारी मि० लीसेस्टर ने कोठी खाली कर देना ही ठीक समझा। बाद में, कैप्टेन ग्रांट ने कोठी पर फिर कब्जा किया और जो फकीर लड़ाई में पकड़े गये थे, उनसे कोठी की मरम्मत में कुली का काम लिया।"

सन् १७६६ में कूचबिहार की स्थिति बड़ी डाँवाडोल थी। रामानंद गोसाईं के षड्यंत्र से वहाँ के बालक राजा की हत्या कर दी गयी। इस पर राज्य के सेनापति नजीर ने अँग्रेजों से सहायता माँगी और विरोधी-पक्ष ने संन्यासियों को मदद

आजादी

शिकारी की गोली से शेर घायल पड़ा था। सियार ने आत्मीयता के साथ कहा—"क्या स्वभाव है आपकी जाति का कि, शिकारी आता है; पर आप लोग भागते नहीं? अब भोगिये, मूर्खता का दंड!" मृत्यु-मुख में होते हुए भी, शेर की त्यौरियाँ चढ़ गयीं; गरज कर बोला—"चुप रह, अधम! क्या आजादी से बड़ी देह होती है? अरे, देह तो बार-बार मिल जाती है; पर आजाद हवा, आजाद जमीन, भाग्य से ही मिलती है!" —भारती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लिए बुलाया। अगस्त, १७६६ में दोनों सेनाओं में कई टक्करें हुईं। अगले साल भी संघर्ष चलता रहा। सन् १७६९ की एक भिड़ंत में अँग्रेजी टुकड़ी का सेनापति लेफ्टिनेंट कीथ मारा गया। मि० कल्डसैल के एक दस्तावेज से पता चलता है कि, सन् १७७१ में भी संन्यासी प्रजाजन से 'चौथ' वसूल कर रहे थे।

सन् १७७२ में मजनूशाह फिर बंगाल लौट आया और उसने नैटोर की रानी भवानी को अपने पक्ष में करने की कोशिश की। परंतु वहाँ उसका स्वागत सेनाओं-द्वारा हुआ। नैटोर रियासत के कारभारी ने फकीरों को रोकने के लिए सेना भेजी। अंत में, वे कुछ गाँवों को लूट-पाट कर चले गये।

काल-भैरव

[चित्र :- डी० जी० कुलकर्णी-निर्मित स्केच]

कुछ समय चुप रहने के बाद, सन् १७७२ में फकीर फिर धूमकेतु की तरह प्रकट हुए। ३० दिसम्बर, १७७२ को शामगंज में फकीरों और अँग्रेजों की मुठभेड़ हुई, जिसमें अँग्रेज कप्तान टामस मारा गया। युद्ध जीत कर, फकीर लोग कूचबिहार की ओर चल पड़े। वहाँ राजगद्दी के उत्तराधिकार के लिए नजीर-देव के साथ झगड़ा चल ही रहा था। संन्यासियों ने संतोषगढ़ को जीत लिया।

अब, कूचबिहार के सेनापति नजीरदेव ने कम्पनी से सहायता माँगी। मि० पुर्लिंग तुरत कूचबिहार को चल पड़ा। कप्तान स्टेवर्ट को जलपाईगुड़ी भेजा गया और ३ फरवरी को बहरामपुर से एक और टुकड़ी आ गयी। किला जीत लिया गया।

पर उसी साल जनवरी में उत्तर-बंगाल में संन्यासियों की एक और विशाल सेना प्रकट हो चुकी थी। ६ जनवरी को बगड़ा के घबड़ाये हुए कलक्टर ने कम्पनी के अधिकारियों को सूचित किया कि, परगना चौगांग में संन्यासियों ने बड़े जमींदार के नायब को हवालात में रख कर पैसा ऐंठ लिया है। दो दिन बाद, उसने अधिकारियों को यह भी लिखा कि, बगड़ा में लगभग दो हजार संन्यासी आ गये हैं तथा उनके पास एक सौ घोड़े और अस्सी बैलगाड़ियों में हथियार हैं।

यह समाचार मिलते ही, कम्पनी ने कप्तान एडवर्ड को चिलमारी रवाना किया। उसके साथ तीन टुकड़ियाँ थीं। १७ जनवरी, १७७३ को रंगपुर जिले में, उलीपुर पहुँचने पर, कप्तान एडवर्ड को पता चला कि, संन्यासी परगना मुखरिया में पहुँच कर वहाँ 'चौथ' वसूल कर रहे हैं। वहाँ से आगे संन्यासी कहाँ गये, इसका पता वह नहीं लगा सका।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परन्तु कलक्टर को उनकी पूरी गति-विधि का पता लग गया था। २६ जनवरी को उसने लिखा—"आज मुझे परगना मैमनसिंह के जमींदार किसन राम से ६ माघ को लिखा एक पत्र मिला है, जिसमें बताया गया है कि, जमालपुर सबडिविजन के जफरशाही परगने में ५,००० संन्यासी घुस आये हैं। उनके नेता का नाम दरियागीर बताया जाता है।"

कलक्टर को यह आशंका थी कि, कहीं संन्यासी ढाका पर न चढ़ाई कर दें; क्योंकि शस्त्रास्त्रों से लैस संन्यासी अलापसिंह परगने तक चढ़ आये थे। यह सम्भावना थी कि, संन्यासी मैमनसिंह चले आयेंगे और वहाँ ७,००० और संन्यासी उनसे आ मिलेंगे। शेरपुर से समाचार मिल ही चुका था कि, चिलमारी के पास बहुत संन्यासी जमा हैं और जुरवालगीर पंद्रह किश्तियों में संन्यासियों को लेकर वहाँ पहुँच गया है। ४ फरवरी को ५,००० संन्यासी कामगारी पर चढ़ आये। उनके अभियान का लक्ष्य था, ढाका। कलक्टर ने लखीपुर और यशोहर से और सेनाएँ मँगवायीं और जसरथखाँ से ५०० भालाधारी सैनिक भेजने की माँग की।

संन्यासियों की संख्या कप्तान एडवर्ड के सिपाहियों से बहुत अधिक थी। सो, कप्तान स्टुअर्ट और कप्तान जोंस को भी संन्यासियों का दमन करने पर लगाया गया। एडवर्ड-द्वारा पीछा किये जाने पर संन्यासी अटिया से तो हट गये; पर उन्होंने ढाका पहुँचने का एक और प्रयत्न किया। लेकिन एडवर्ड ने उनके पीछे अपने दस्ते लगा दिये थे। मार्च, १७७३ में एडवर्ड संन्यासियों तक जा पहुँचा। वे संख्या में कोई ३,००० थे। बारबाजू में लड़ाई हुई और बारह सिपाहियों को छोड़ कर अँग्रेजों की तमाम सेना काट डाली गयी। अपनी इस विजय से प्रसन्न होकर संन्यासी अलग-अलग छितरा गये। उनकी सेना का बड़ा अंग सिलहट तक चला गया। इसका भी प्रमाण है कि, वे अँग्रेजों को सत्ता से च्युत करने के लिए जयंतिया के राजा से सहायता माँगने गये थे।

दो साल बाद, मजनूशाह फिर बंगाल में प्रकट हुआ। उसके विरुद्ध लेफ्टिनेंट राबर्टसन के नेतृत्व में सेना रवाना की गयी। १४ नवम्बर, १७७६ को कई मुठभेड़ें हुईं और मजनूशाह हार गया।

मजनू का प्रमुख अनुयायी था भवानी पाठक, जिसके कार्यक्षेत्र परगना प्रताप-बाजू और पटिलाढ़ा थे। पाठक का मुख्य सहायक एक पठान था, जो कम्पनी के सिपाहियों से डट कर जूझा। अंत में, पठान, पाठक और दूसरे दो मुखिया मारे गये। देवी चौधुरानी भी पाठक से सम्बद्ध थी। वह स्वयं भी लूटपाट मचाती थी और लूट में से हिस्सा भी लेती थी।

पर अब तक संन्यासियों और फकीरों में फूट पड़ चुकी थी और वे आपस में लड़ने लगे थे; जिससे कम्पनी के लिए उनका उन्मूलन करना काफी आसान हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पानी केरा बुदबुदा....

पानी के बुदबुदे के साथ मनुष्य की नश्वरता को तौलते हुए कबीर ने कहा था—"पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात।" किंतु वैज्ञानिक साकोव ने पानी के ही बुदबुदे पर जब यों कहा कि, हमने खुली किताब की तरह पानी के बुदबुदों को पढ़ा और प्राणतत्व के रहस्य जान लिये, तो आश्चर्य के प्रकम्प से शायद ही कोई अछूता रहा हो! नीचे हम पानी के बुदबुदे पर नवीनतम वैज्ञानिक खोजें प्रस्तुत कर रहे हैं।

मनुष्य जिस वायु में साँस लेता है और जिस जल से अपनी प्यास बुझाता है, उसके महत्व को वह सामान्य तौर पर अनुभव नहीं करता। प्रकृति और ईश्वर का सहज-सुलभ वरदान मान कर वह उनके अस्तित्व को स्वाभाविक मान लेता है। परंतु वायुरहित स्थान में बंद हो जाने पर, अथवा चारों ओर फैले हुए मरुस्थल में फँस जाने पर, वह इनके लिए उसी प्रकार व्याकुल हो उठता है, जिस प्रकार जल से अलग होते ही मछली तड़पने लगती है। तब पानी की एक बूँद पाने और हवा में एक बार खुली साँस लेने के लिए वह अपने समस्त वैभव को भी ठुकरा सकता है।

वह जल, जो हम और आप पीते हैं तथा जिसका हम तरह-तरह के कार्यों में इस्तेमाल करते हैं, उतना साधारण और सामान्य पदार्थ नहीं है, जितना हम उसे मान बैठे हैं। संसार के वैज्ञानिक इस सम्बंध में बराबर अनुसंधान कर रहे हैं कि, जल का आविर्भाव किस प्रकार होता है, उसमें किस प्रकार की रासायनिक क्रियाएँ या प्रतिक्रियाएँ होती हैं तथा उसका मौलिक रूप क्या है। परंतु जल की रासायनिक प्रक्रियाएँ इतनी असामान्य हैं कि, आज तक कोई भी वैज्ञानिक इन प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाया है।

'कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट आव टेक्नालाजी' के वैज्ञानिक भी अनेक वर्षों से जल की रासायनिक प्रक्रियाओं, उसके आविर्भाव तथा उसके मौलिक स्वरूप की जानकारी प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। इस कार्य के लिए इंस्टीट्यूट में एक विशेष परीक्षणशाला का निर्माण किया गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार, पानी में उठनेवाले छोटे-से बुलबुले का जीवन अधिक-से-अधिक २३ मिनट का होता है। उक्त परीक्षणशाला में ऐसी व्यवस्था की गयी है, जिसकी सहायता से एक सेकंड में पानी के बुलबुले के कम-से-कम २०,००० चित्र उतार लिये जाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार, बुलबुले के कुल जीवन-काल —उसके उद्भव से लेकर अंत होने तक— का समस्त इतिहास इन चित्रों के द्वारा प्राप्त कर लिया जाता है।

यदि जल पर अत्यधिक तीव्र गति से आघात किया जाये, तो उससे एक प्रकार की नीली-सफेद आभा उत्पन्न होती है। विद्युदणु-नेत्र की सहायता से यह नीली-सफेद आभा विद्युत्-तरंगों के रूप में परिणत हो जाती है। ये विद्युत्-तरंगें गामा-विकिरण से युक्त होती हैं। इस प्रकार के विकिरण का उपयोग खाद्य-पदार्थों को दीर्घ काल तक सुरक्षित रखने के लिए किया जा सकता है।

पानी में बुलबुले उठने की क्रिया वस्तुतः बड़ी हानिकारक होती है। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप पानी के नलकों में छेद हो जाते हैं, जहाज के पंखे बेकार हो जाते हैं तथा बड़े-बड़े बाँधों में लगे लोहे के विशाल फाटक तक गल जाते हैं। 'कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट आव टेक्नालाजी' की परीक्षणशाला में इन्हीं बुलबुलों के सम्बंध में कई वर्षों से निरंतर अनुसंधान हो रहा है। इस परीक्षणशाला में किये गये अनुसंधानों से पता चला है कि, सामान्य जल से सभी जल-कण आपस में पूरी तरह नहीं मिल पाते और उनके मध्य बहुत-सी सूक्ष्म संधियाँ रह जाती हैं। पानी के अंदर तेज गतिवाले पंखों के घूमने के फलस्वरूप ये संधियाँ और चौड़ी तथा गहरी हो जाती हैं। इन्हीं संधियों में पानी की भाप से युक्त बुलबुलों का जन्म होता है। यदि पानी में किसी भी पदार्थ का सूक्ष्मातिसूक्ष्म कण मौजूद रहता है, तो वह जल-कणों के सम्मिलन में बाधक होता है। किंतु यदि कोई पदार्थ पानी में पूर्ण रूप से घुल जाये, अथवा जल को सभी बाहरी तत्वों से मुक्त कर दिया जाये, तो उसकी मजबूती बढ़ जाती है। वस्तुतः इस प्रकार के कई परीक्षणों में वैज्ञानिकों ने पानी की धार के सहारे 'बोट' टिका दिये, फिर भी पानी का तार नहीं टूटा।

इन बुलबुलों का अध्ययन करने में वैज्ञानिक अनेक वर्षों से संलग्न हैं। इससे पता चलता है कि, जल के सम्बंध में पूर्ण अनुसंधान करने के लिए कितना समय चाहिए। उदाहरणार्थ, तेज गति से उड़ने-वाले 'जेट' यानों के उपयोगार्थ एसा रासायनिक पदार्थ तैयार करने के लिए, जिस पर वर्षा के जल का कोई असर न पड़े, डा० पास्टर डी० स्वेल को चार वर्ष लग गये।

आज भी, हिम-कणों, जल के स्वरूप, औद्योगिक क्षेत्रों के जल में पाये जानेवाले विचित्र स्वाद, गंध और प्यास, इत्यादि के सम्बंध में वैज्ञानिक लोगों को बहुत कम जानकारी है। कई दशाब्दियों से निरंतर प्रयत्न जारी रहने के बाद भी, जल के वास्तविक स्वरूप की जानकारी अभी तक प्राप्त नहीं हो पायी है। वास्तव में, जल कोई सामान्य पदार्थ नहीं है, जैसी कि लोगों की धारणा है। कोई-कोई इसे हाइड्रोजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और आक्सीजन का संयोग मानते हैं; परंतु अधिकांश वैज्ञानिकों में आज इस प्रश्न पर मतभेद है कि, हाइड्रोजन के साथ आक्सीजन का कितना संयोग जल का निर्माण करता है। वे यह भी तय नहीं कर पाये हैं कि, जल-कणों का अलग-अलग अस्तित्व है, अथवा वे किसी बड़ी इकाई के पूरक अंश-मात्र हैं।

वैज्ञानिक इस सम्बंध में अनुसंधान कर रहे हैं कि, क्या समुद्र में फँसा मनुष्य खारे जल में जीवित रह सकता है। खारे पानी का मनुष्य के शरीर और अंगों पर क्या प्रतिक्रिया होती है, इसका भी अध्ययन किया जा रहा है। फ्रांस की नौसेना ने इस सम्बंध में एक परीक्षण किया था। इस परीक्षण में डा० एलियन वोमवार्ड ने १९५२ में कैनारी-द्वीप से वरवोडास-द्वीप तक लट्ठों के बेड़े पर यात्रा की थी। अमरीकी और ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने भी इस सम्बंध में अनेक परीक्षण किये हैं।

कहत कबीर सुनो भाई साधो...

इससे सम्बंधित एक दूसरी समस्या भी है—खारे जल को शुद्ध कर पीने-योग्य बनाने की; क्योंकि बहुत-से स्थानों में शुद्ध जल का अभाव है।

अमेरिका तथा संसार के अनेक देश खारे पानी को मीठे जल में परिणत करने के सम्बंध में निरंतर परीक्षण कर रहे हैं। अकेले अमेरिका में प्रति दिन २ खरब ६२ अरब गैलन जल खर्च होता है और आशा है कि, १९७५ तक यह मात्रा दुगुनी हो जायेगी। अतएव मीठे जल की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि, समुद्र के खारे जल को मीठे जल में परिवर्तित करने का कोई सरल और सस्ता तरीका ढूँढ़ निकाला जाये।

अमेरिका में १ हजार गैलन जल साफ करने पर लगभग २० सेंट लागत बैठती है और खारे जल को साफ कर मीठा जल तैयार करनेवाले कारखाने, प्रति हजार गैलन के लिए डेढ़ डालर से लेकर ३ डालर तक वसूल करते हैं। अतएव वैज्ञानिकों के समक्ष सबसे बड़ी समस्या यह है कि, खारे जल को शुद्ध करने पर आनेवाली लागत को किस प्रकार घटाया जाये।

लगभग ६ वर्ष के अंदर अमेरिका में खारे जल को मीठे जल में परिणत करने के लिए एक नया यंत्र तैयार हो जायेगा। इसमें गहरे 'ट्रे'-नुमा बर्तनों में खारा जल भरा होगा। इन बर्तनों के नीचे से भाप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुजरेगी और इस भाप के जोर से सारे जल से भरे पात्र चक्कर काटने लगेंगे। इसी प्रक्रिया के दौरान, भरा जल भाप के रूप में परिणत होने लगेगा। खारे जल से भरे 'ट्रे'-नुमा बर्तनों के ठीक ऊपर दूसरे 'ट्रे'-नुमा बर्तन फिट होंगे। नीचे से उठने-वाली भाप इन्हीं बर्तनों में जाकर, जल के रूप में परिणत हो जायेगी और इस प्रकार ऊपर के सभी बर्तनों में एकत्र होनेवाली भाप, एक नलके की राह से जलागार में चली जायेगी। एक दिन में यह यंत्र १ लाख से २ लाख गैलन तक खारा जल साफ कर सकेगा। इसके द्वारा १ हजार गैलन खारा पानी साफ करने में ३० सेंट से अधिक खर्च भी नहीं आयेगा।

कुछ अन्य वैज्ञानिक खारे जल को साफ करने के लिए, ऐसी छन्नियाँ तैयार करने में भी संलग्न हैं, जिनमें सूर्य के ताप का उपयोग किया जायेगा।

एक दूसरी विधि भी है, खारे पानी को जमा कर साफ करने की। वैज्ञानिकों का कथन है कि, पानी को उबालने के बजाय, उसे जमाने पर कम शक्ति खर्च होगी। कोलम्बस के 'बैटले मेमोरियल रिसर्च इंस्टीटचूट' ने बर्फ जमाने की नियंत्रित विधि का प्रयोग कर, समुद्री जल को पेय जल के रूप में बदलने में, पर्याप्त सफलता प्राप्त की है।

संसार के प्रायः सभी भागों में जल-सम्बंधी अनुसंधान-कार्य बड़ी तेजी से हो रहा है। काहिरा-विश्वविद्यालय के एक वैज्ञानिक एम०ए०एच०झल सैयद मिस्र की मरुभूमि में काफी नीचे मौजूद जल का पता लगाने के लिए एक नयी विधि का उपयोग कर रहे हैं। विशेष यंत्र की सहायता से वे रेडियो की ध्वनि-तरंगें पृथ्वी के गर्भ में भेजते हैं। कुछ रेडियो-तरंगें सतह के साथ-साथ जाती हैं और कुछ भूमि-गर्भ में प्रविष्ट होकर जल की सतह से टकराती हैं और उनकी प्रतिध्वनि पुनः ऊपर की ओर वापस लौटती है। रेड़ियो-ट्रांसमीटर से कुछ १०० फुट की दूरी पर रखे रेडियो-संकेत-ग्राहक यंत्र-द्वारा इन तरंगों की प्रतिध्वनि ग्रहण कर ली जाती है और इसके आधार पर डा० सैयद यह पता लगा लेते हैं कि, पृथ्वी के गर्भ में किस गहराई पर पानी मौजूद है।

खारे पानी को मीठे पानी में बदलने के साथ-साथ वैज्ञानिक इस बात के लिए भी प्रयत्नशील हैं कि, जल के सुलभ भांडार को कम न होने दिया जाये। उनका कहना है कि, यदि झीलों और जलागारों पर 'हैक्सा-डिकैनोल' नामक रासायनिक पदार्थ की परत पड़ जाये, तो भाप बन कर उड़ने-वाला ७५ प्रतिशत जल बचाया जा सकता है। यह रसायन पानी के ऊपर तेल की तरह छाया रहता है और जल-कणों को भाप बन कर नहीं उड़ने देता।

यही नहीं, वैज्ञानिक आणविक विस्फोटों या आणविक पदार्थों के सम्पर्क में जाने के कारण दूषित हो गये जल को शुद्ध करने के तरीकों की भी खोज में संलग्न हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असगर गोंडवी

आत्मा उनकी वाणी में बोलती थी

"अगर खामोश रहूँ मैं, तो तू ही सब-कुछ है। जो कुछ कहा, तो तेरा हुस्न हो गया महदूद।" अनुभूति की ऐसी गहराइयों में से मर्म की वाणी बोलनेवाले असगर गोंडवी की एक स्मरण-झाँकी।

★

असगर साहब से मेरी पहली मुलाकात सन् १९२५ की सर्दियों में अलीगढ़-कालेज की पचास-साला जुबिली के मौके पर अलीगढ़ में हुई थी। मुलाकात करानेवाले थे, मौलाना इकबाल अहमद 'सुहेल'। उस वक्त तक मैं असगर की जात और कलाम, दोनों से ही ना-आशना था। मौलाना 'सुहेल' से बेशक पुरानी याद-अल्लाह थी।

रात के आठ बजे थे। मौलाना और असगर साथ ही मकान पर तशरीफ लाये। मौलाना 'सुहेल' बड़े हाजिर-जवाब थे और साथ ही, फिकरे चुस्त करने में भी अपना जवाब आप ही थे; इसलिए मैं उनके आने की खबर सुन कर अंदर से ही कुछ गैर-जिम्मेदाराना फिकरे– कुछ अधूरे, कुछ पूरे– जबान पर लिये बाहर आया। मैं जानता था कि, अगर उन्होंने पहल कर दी, तो फिर काबू में लाना मुश्किल हो जायेगा; इसलिए मैं तैयार होकर निकला। लेकिन कुछ कहने ही वाला था कि, सामने एक साहब नजर आये– ऊँचा कद, दर्मियाना बदन, खुशवजा पोशाक, सर पर पट्टे, भरी-भरी फ्रेंच-कट दाढ़ी, सर पर बालों की ऊँची टोपी, चेहरे पर उजाला, आँखों में खुलूस की गहराई, तेवरों में शराफत! पहली ही नजर में दिल ने गवाही दी कि, अच्छे आदमी से मुलाकात हुई। यही असगर साहब थे।

असगर साहब

असगर साहब किसी कदर झुके हुए-से थे; लेकिन यह झुकना ऐसा ही था, जैसे कोई बड़ा आदमी बड़ाई और भलमनसाहत से झुक गया हो।

'सुहेल' से मैं बेतकल्लुफ ही नहीं, गुस्ताख भी था; लेकिन अभी खामोशी ही अख्तियार करनी पड़ी। आखिर, मौलाना ही बोले–"लो, एक इन्सान लाया हूँ।" मैंने मौका जाने नहीं दिया; कहा– "शुक्र है, आपने महसूस तो किया कि, आपके साथ कभी-कभी किसी इन्सान का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ रहना बहुत जरूरी है।" बोले–"मिलो, असगर साहब हैं।" असगर मुस्करा कर आगे बढ़े और बगलगीर हो गये।

मौलाना ने इतनी फुर्सत गनीमत समझी और वहीं रखे अपने बँधे हुए बिस्तर पर बैठ गये। पास ही लोटा था– उसे इस तरह हाथ में उठा लिया, जैसे मेरे हाथ उसे बेचनेवाले हों। मुझसे असगर साहब के बक्स पर बैठने को कहा और मैं अभी बैठने क्या, सम्भलने भी न पाया था कि, बोले–"सुनो, असगर साहब का एक शेर सुनाता हूँ।" अभी शेर की बारी नहीं आयी थी कि, फिर बोले–"असगर साहब, कसर बस यह रह गयी कि, जाकिर नहीं हैं, वर्ना देखते क्या लुत्फ आता!" फिर एक खास तरन्नुम से यह शेर पढ़ा–

रिंद (शराबी) जो ज़र्फ़ (पात्र) उठा लें,
वही सागर बन जाये।
जिस जगह बैठ के पी लें,
वही मैयख़ाना बन जाये।

मौलाना 'सुहेल' शेर के बड़े अच्छे पारखी थे। जाकिर साहब तो अच्छे शेर सुन कर नयी और अछूती दुनिया गढ़ने में कमाल रखते हैं। मैं इनमें से किसी में नहीं हूँ; लेकिन अच्छा शेर मुझ पर भी कुछ ऐसा ही असर करता है, जैसे अच्छा काम करने से एक खुशी-सी होती है।

"मौलाना, शेर बड़े मजे का है!"– मैंने कहा–"लिल्लाह! बक्स व बिस्तर पर बैठ कर और लोटा हाथ में लेकर इसे गारत न कीजिये।"

तब सब इत्मीनान से बैठे, और खाना आया। मौलाना ने फिर फरमाया–"असगर साहब, जरा 'रूहे-निशात' तो निकालिये। इनको कुछ सुनाऊँ।" मैंने अर्ज किया–"मौलाना! जरा दम तो लेने दीजिये। जाड़ा पड़ रहा है, अँगीठी आती है, खाना खाकर चाय का दौर होगा; फिर झूठ-सच मिलाया जायेगा। आप तो शेरों का व्यापार करते हैं। इससे असगर साहब की दुनिया और मेरी आकबत खराब होती है। आपका क्या? न दुनिया के काबिल, न उकबा (परलोक) के कायल!" सुन कर मौलाना अपने खास अंदाज में हँसने लगे।

अगले दिन असगर साहब ने 'निशाते-रूह' की एक जिल्द बड़ी मोहब्बत से भेंट की। फिर कई दिन बाद उन्होंने पूछा–"आपने 'निशाते-रूह' का मुताला भी किया?" मैंने कहा–"असगर साहब, इस वक्त मौलाना सुहेल मौजूद नहीं हैं; आप खुद कुछ सुनाइये। यह शख्स बलाए-बेदर्मा है। शेर से लुत्फ उठाने नहीं देता, सोचने के चक्कर में डाल देता है। वह देखिये, अहाते के फाटक पर किसी से उलझा हुआ है और उससे ऐसी बातें कर रहा होगा, जो अफलातून और अरस्तू से करनी चाहिए।"

असगर साहब मुस्करा दिये। फिर अपने खास नर्म लहजे में उन्होंने एक अच्छी-सी गजल सुनायी।

काफी अर्सा गुजरा। एक बार ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बीमार पड़ा कि, जिंदगी के लाले पड़ गये। लखनऊ मेडिकल-अस्पताल में मुद्दतों रहना पड़ा। उस जमाने में असगर साहब इलाहाबाद में थे। तकरीबन हर इतवार को, मैं अस्पताल के अपने कमरे में, दिन के नौ बजे के आसपास, पाँव की एक खास आहट सुनता, दरवाजा खुलता और असगर साहब आहिस्ता-आहिस्ता कदमों से कमरे में दाखिल होते। चेहरे पर मुस्कराहट, जैसे कुछ देख कर या महसूस कर खुश हो रहे हों। 'अस्सलामालैकुम' इस लहजे और अंदाज से कहते, जैसे कोई खुशखबरी सुना रहे हों। कुर्सी पर बैठ कर मुझसे तो क्या, किसी और से भी न पूछते कि, कैसा हूँ या क्या हो रहा है? बात इस अंदाज से करते, जैसे मुझे देखने के लिए कोई लम्बा सफर करके नहीं आये थे, बल्कि अस्पताल तक टहलने के लिए ही आये थे और मेरी तरफ भी आ निकले। बातें ऐसी छेड़ते, जिनका ताल्लुक दूर-दूर तक भी मर्ज या अस्पताल से न होता।

कविता
[चित्र : एक ईरानी चित्र की रेखानुकृति]

उसी जमाने में मेरा एक मजमून 'शैतान की आँत' छपा था। मैंने एक दिन असगर साहब से पूछ लिया—"असगर साहब, यह आप हर हफ्ते इलाहाबाद से यहाँ आने और जहमत-व-जेरबारी उठाने की तकलीफ क्यों करते हैं?"

उन्होंने कुछ सोचा, फिर मुस्करा कर बोले—"शैतान की आँत खींच लाती है।"

मैंने कहा—"फरिश्तों को भी?"

फरमाया—"फरिश्ते को शैतान हो जाते भी तो आपने सुना होगा!"

इसी तरह वे घंटे-दो घंटे बैठ कर वापस चले जाते और वह भी इस तरह, जैसे रुख्सत नहीं हो रहे, बल्कि यूँ ही बाहर जा रहे हैं।

जब मैं ठीक होकर अस्पताल से वापस आ गया, तो काफी दिनों के बाद, मालूम नहीं, किस सिलसिले में मैंने पूछा—"क्यों, असगर साहब, जब आप अस्पताल में मुझे देखने आते थे, तो आप पर एक तरह की शगुफ्तगी (प्रसन्नता) क्यों तारी (छायी) रहती थी? मैंने आपको महज अल्लाकी तौर पर भी कभी फिक्रमंद नहीं पाया! क्या इससे मेरी हिम्मत बँधाना मकसूद था?"

बोले—"बिल्कुल नहीं। सुनिये, एक लतीफा सुनाता हूँ। एक दिन मैं एकेडेमी से मकान वापस आ रहा था कि, राह में एक साहब मिले और बड़े अफसोसनाक लहजे में बोले—'असगर साहब, बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अफसोस की बात है, रशीद साहब का इंतकाल हो गया! वे ऐसे थे, वैसे थे।' मैं सुन कर हँस पड़ा और बोला—'हजरत, होश की बातें कीजिये। इंतकाल करना कैसा? मैं जानता हूँ, वे जिंदा हैं और तंदुरुस्त होकर रहेंगे।' उन्होंने मुझे बद-हवास समझा और लगे अपनी खबर के जरिये बताने-गिनाने। मैंने कहा—'यह सब ठीक; लेकिन मैं हर हफ्ते देख आता हूँ— उनकी पेशानी पर निहायत उभरे हुए लफ्जों में जिंदगी लिखी हुई है।' लेकिन वह न माने। मैंने कहा—'आप नहीं मानते, तो आइये, तार देकर मालूम कर लें।' चुनाँचे ऐसा ही किया गया और जब खबर गलत निकली, तो वे मान गये। रशीद साहब! हकीकत यह है कि, जब लखनऊ पहुँच कर आपको देखता, तो फौरन यह नजर आता कि, जिंदगी अपनी पूरी ताबिश-व-ताजगी के साथ मौजूद है और मैं मसरूर-व-मुत्मइन हो जाता।"

असगर साहब का साथ दस-बारह साल तक रहा। मैंने उन्हें हर हाल में देखा और हमेशा 'असगर साहब' ही पाया। वे अगर शायर न भी होते, तो भी उनकी इज्जत या शोहरत में फर्क न आता। वह तो जिस हाल, जिस जगह होते, वहीं मुमताज और महबूब रहते।

उनकी आमदनी बहुत कम थी; लेकिन मैंने उन्हें कभी तंगदस्ती का शाकी न पाया। काफी खर्च था— अच्छा पहनते थे, उससे अच्छा खाते थे; अपनी हैसियत से ज्यादा अपने दोस्तों की खातिर-मदारात करते थे।

इलाहाबाद में पहले-पहल उन्होंने कटरे में एक मकान, दूकानों के बीच में, सड़क के किनारे, ले लिया था। बैठक में बुर्राक चाँदनी का फर्श, तीन-चार गावतकिये, अलमारियों पर रोगन और दीवारों पर कलई! मैं मिलने गया, तो पूछ बैठे— "क्यों, मकान मिलने में आपके कोई दुश्वारी तो नहीं हुई?"

मैंने कहा—"जी नहीं, अलबत्ता जरा शुबा जरूर हुआ कि, आपका मकान है या हकीम अजमलखाँ का दवाखाना! खुदा के लिए, इस जगह को छोड़िये। लोग बैठे हों, तो शुबा होता है कि, या तो पोशीदा बीमारियों के मरीज जमा हैं या आप खास किस्म के पीर हैं।" असगर साहब हँस पड़े; उन्होंने फरमाया— "आपने बात ठीक कही।"

बाजार में कोई नयी चीज आती, तो उसे फौरन खरीद लेते, दोस्तों को दिखाते और कोई पसंद कर लेता, तो उसी की नजर कर देते। एक बार मुरादाबाद से निहायत बारीक और हसीन नक्शे की सेनी लाये। रास्ते में मेरे यहाँ ठहर गये। सेनी दिखायी, पूछा—"कैसी है?" मैंने कहा—"बहुत खूब है। फतूहात (नजर-नियाज) में से है या खरीदी है?"

बोले—"जी नहीं, फतूहात यहाँ कहाँ? मैं न मुल्ला, न अँग्रेज— खुशी तो खरीदने की ही होती है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने पूछा– "क्या कीमत दी है?"

कहने लगे– "वाह, पसंद की भी कोई कीमत होती है! बस, आपकी नजर है।"

वह सेनी अब तक मेरे पास है। हाँ, बच्चों के घर में उसकी सूरत जरूर बदल गयी है। मुझे नजर आ जाती है, तो उसे मँजवाता हूँ और उसी में खाना मँगवा कर खाता हूँ।

असगर साहब खिलाने-पिलाने के बड़े शौकीन थे। मैं आनेवाला होता, तो वे अजीब-अजीब एहतमाम करते।

मरहूम का इंतकाल फालिज में हुआ। पहला हमला सहने को सह गये; मगर हाथ-पाँव कमजोर हो गये थे– पाँव मुश्किल से ठीक तौर से पड़ते थे। आखिर में, इलाहाबाद के सिनेट-हाल के सामने, एक मकान किराये पर ले लिया था। मकान से अहाते के फाटक तक तकरीबन पौन फर्लांग रास्ता चला गया था। मेरा इलाहाबाद पहुँचने का रास्ता मुकर्रर था और मैं उन्हें हमेशा इस लम्बी सड़क पर इंतजार में टहलते हुए पाता। इसमें कभी फर्क न आया। पहले चूड़ीदार पाजामा पहनते थे– बीमारी के बाद से चौड़े पायचों का पाजामा पहनने लगे।

लम्बी आस्तीनों का कुर्ता, सर पर सफेद टोपी, एक हाथ में पानों की डिबिया-बटवा, दूसरे हाथ में कई तरह के सिगार-सिगरेटों के डिब्बे। आहिस्ता-आहिस्ता सर झुकाये कदम सम्भालते टहलते हुए, मुझे आता देख कर बाग-बाग हो जाते। हाय! उनका बाग-बाग हो ना! जबान से मरहबा, मुबारक-सलामत कुछ न कहते; अलबत्ता आँखों में खुशी की ऐसी चमक होती कि, मुझे अपने दिल में उतरती मालूम होती। कहते–"रशीद साहब, सुना? जब से बीमार हुआ हूँ, जरा अय्याश हो गया हूँ, हर तरह के पान-तम्बाकू मुहैया रखता हूँ। यह देखिये, हर मार्के का सिग्रेट है। हर एक का रंग जुदा है। इनमें वही लुत्फ आता है, जो तरह-तरह के दोस्तों की सोहबत में।" इसी तरह की बातें करते मकान पहुँचते और नौकर को आवाज देते– "नाश्ता लाओ"। फरमाते– "यह लीजिये, मैंने 'हारलिक्स' मिल्क शुरू कर दिया है। यह 'ओवलटीन' का गिलास है।"

मोती

वे इश्क की अजमत से, शायद नहीं वाकिफ हैं;
सौ हुस्न करें पैदा, एक-एक तमन्ना से।
लो शमअ-हकीकत की, अपनी ही जगह पर है;
फानूस की गर्दिश से, क्या-क्या नजर आता है।
यहाँ तो उम्र गुजरी है, इसी मौजे-तलातुम में;
वे कोई और होंगे, सैरे-साहिल देखनेवाले।

—असगर गोंडवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गरज, हर चीज बड़े शौक से पेश करते ; फिर कहते—"नाश्ता कर लीजिये। वह भी हाजिर किया जायेगा। मुद्दतों से बाँग दे-देकर फरियाद कर रहा था। मैंने कह दिया था, दिन करीब हैं। आज उसे अपने दस्तरख्वान पर चारों शाने चित पायेंगे।" यह मुर्ग-मुसल्लम का जिक्र था।

यह सब-कुछ था; लेकिन मैं खूब समझता था कि, यह इंतजाम मेरे लिए था और जो चीजें और जो बातें मुझे पसंद थीं, वह उन्हीं को खुद ओढ़ कर पेश कर रहे थे। अमरूदों की फसल होती, तो एक टोकरा साथ कर देते और देने का कोई-न-कोई बहाना कर देते। कभी कहते – "फलाँ साहब को भेजने थे, वह आजकल मौजूद नहीं हैं। ज्यादा तो मैंने रख लिये हैं, कुछ आप लेते जाइये।" कभी कहते– "फलाँ साहब ने अलीगढ़ में फरमाइश की थी; थोड़े उन्हें भी भेज दीजियेगा।"

मुझे गुलाबों का बड़ा शौक है। वह यह जानते थे। सो, जब कभी इलाहाबाद जाता, तो वह पता लगाये होते कि, कहाँ-कहाँ अच्छे गुलाब हैं। अजनबी होता, तो उससे ताल्लुकात पैदा करते, मुझे ले जाते और गुलाब पसंद कराते। एक बार ऐसी ही एक जगह मुझे ले गये। मालिक से ज्यादा खुद हर गुलाब की तारीफ करते। गुलाब यूँ ही-से थे। मैंने अल्लाकन एक-आध की टूटी-फूटी तारीफ भी कर दी। अब क्या था, असगर साहब ने उसे हासिल करने के लिए डोरे डालने शुरू कर दिये। मैंने मौका निकाल कर चुपके से कह दिया– "असगर साहब, फिक्र न कीजिये– सब मामूली दर्जे के हैं।" आपको बड़ी मायूसी हुई। वापसी पर मैंने पूछा–"यह आप चुप कैसे हो गये ?" तो कहने लगे– "क्या कहूँ ? इन गुलाबों के नादिर होने और इस शख्स के नामाकूल होने की बड़ी शोहरत सुनी थी। गुलाबों के बारे में तो आपने फैसला करा दिया, नामाकूल होने का हाल मुझसे सुनिये। कमबख्त किसी तरह राजी ही न होता था। ...साहब (इलाहाबाद के सबसे ज्यादा वाइज्जत आदमी) के जरिये काबू में किया। इसके साथ मैंने वक्त-वक्त पर जितना अख्लाक बरता, इलाहाबाद का कोई शरीफ और माकूल आदमी बरतना गवारा न करेगा। ठीक है, ऐसे नामाकूल आदमी के गुलाब क्यों कर उमदा हो सकते हैं।" फिर खुद ही खुल कर हँस पड़े।

मुझमें एक बद-आदत यह है कि, कहीं जाऊँ, अलीगढ़ से आखिरी गाड़ी से रवाना होऊँगा और काम खत्म होने पर पहली गाड़ी से वापस आ जाऊँगा। असगर साहब की आखिरी बीमारी के जमाने में मेरा इलाहाबाद जाना हुआ। सुबह पहुँचा, शाम को वापस आना चाहा। वे चाहते थे कि, रात वहीं गुजारूँ। हजार तरीकों से वक्त टालने की कोशिश करते रहे ; लेकिन जब देखा कि, काम नहीं चलता, तो इसरार करने लगे– "छुट्टियों के दिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं, कोई हर्ज न होगा! सुबह चले जाइयेगा।" मैं ऐसा बदबख्त कि, न माना और शाम की ही गाड़ी से वापस चला आया।

मुझे क्या खबर कि, यह आखिरी मुलाकात और पहला और आखिरी ही इसरार था। मेरे इंकार पर ऐसा मालूम हुआ, जैसे मरहूम के चेहरे पर बर्फ पड़ गयी हो; लेकिन बड़े जब्त से फर्माया— "तो फिर आपकी खुशी।"

दो-एक रोज के अंदर ही तार आया कि, इंतकाल कर गये!

फालिज के हमले के बाद से डाक्टरों ने उन पर बहुत-सी पाबंदियाँ लगा दी थीं, जिन पर वे सिर्फ इसलिए चलते थे कि, डाक्टर का हुक्म था, वर्ना वे बीमारी के अंजाम से न डरते थे। खून का दबाव बेहद था; लेकिन वे भले-चंगों की तरह रहते थे। एक बार खुद डाक्टर ने कहा— "खून का इतना दबाव होने पर भी, आपका जिंदा रहना एक करामात ही है।"

असगर साहब ने कहा—"मुमकिन है, मौत इसी की वजह से हो; लेकिन जिंदा रहने के और ही गुर हैं। जिंदा रहने में इरादे को बड़ा दखल है। होशो-हवास में मैं मरूँगा नहीं। बेशक, बेसुधी में आपका बस चले, तो मौत से निपट लीजिये।"

चुनाँचे ऐसा ही हुआ। किसी दोस्त के यहाँ रात के खाने की दावत थी। सब लोग हँस-बोल रहे थे कि, फालिज का सख्त हमला हुआ और अचानक हुआ। कुछ घंटे बिलकुल बेखबरी की हालत में रह कर वे हमेशगी में मिल गये।

*

...मेरे बागियाना रुख ने नौबत यहाँ तक पहुँचा दी कि, मेरी नमाजें तर्क हो गयीं, दाढ़ी मुड़ गयी, रात का रोना और सुबह का आहें भरना खत्म हो गया और मैं उस मंजिल में आ गया, जहाँ हर कदीमी रस्मो-रिवाज रिवायत पर एतराज करने को जी चाहता है। नतीजा यह हुआ कि, मेरे बाप ने वसीयतनामा तहरीर फर्मा कर मेरे पास भेज दिया कि, अगर मैं अपनी जिद नहीं छोड़ूँगा, तो सिर्फ १०० रुपये माहवार वजीफे के अलावा कुल जायदाद से महरूम कर दिया जाऊँगा। लेकिन मुझ पर इसका भी मुतलक असर नहीं हुआ। छः माह के बाद तलब किये जाने पर सर झुकाये, अदब के साथ, वालिद के पास पहुँचा। देखा, उनकी बड़ी-बड़ी गुलाबी आँखों में आँसू डबडबाये हुए हैं; बोले— "यह देखो, नया वसीयतनामा! मैंने जायदाद में हिस्सा तुम्हारे दोनों भाइयों के बराबर कर दिया है! ...इस दौलत और जायदाद की खातिर लोग माँ-बाप और भाई-बहन तक को मार डालते हैं— ईमान भी गँवा देते हैं। मगर तुमने इस दौलत और जायदाद की अपने उसूल के सामने जर्रा-बराबर भी परवाह न की। मुझे तुम्हारी यह बात बहुत पसंद आयी!" —'जोश' मलीहाबादी

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काले पानी में काल की छाया

नृतत्व-विज्ञान के प्रकांड पंडित डा० एडमंड ग्रेगरी के एक यात्रा-प्रसंग का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

रंगून में जब हमारे जनरल मैनेजर ने मुझसे कहा कि, मुझे उत्तर-अंडमान के द्वीप-समूह में हाथियों की मदद से लकड़ी प्राप्त करने की सम्भावनाओं का अध्ययन करने जाना होगा, तो मुझे बहुत खुशी हुई; क्योंकि पशुओं का अध्ययन एवं संसर्ग मुझे सदैव से ही बड़ा प्रिय रहा है। मेरे साथ तीन और यूरोपियन जानेवाले थे– इंजीनियर जेफ रंगून से साथ चलनेवाला था और बाकी दो दक्षिण-अंडमान के बंदरगाह पोर्ट ब्लेअर से साथ होनेवाले थे। इनमें से एक स्वीडन के 'फारेस्ट स्कूल' से निकला हुआ नवजवान था। उसका नाम था, कार्ल। दूसरा भी नवजवान ही था। उसका नाम था, ब्रूनो।

उत्तर-अंडमान के द्वीप-समूह में जीवनोपयोगी कोई चीज मिलनेवाली तो थी नहीं, इसलिए आवश्यकता का सारा सामान और खाने-पीने की चीजें भी हमें रंगून से ही साथ लेनी थीं। जो-कुछ वहाँ छूट जाये, या लेना याद न रहे, वह पोर्ट ब्लेअर से ली जा सकती थी।

इस्तेमाल की चीजों के अलावा हमने उन द्वीपों के नक्शे भी खरीद लिये। साथ ही, मिलने-जुलनेवालों से वहाँ की जानकारी भी प्राप्त की। अधिकांश लोगों की धारणा यही थी कि, जो भी एक बार उन द्वीपों को गया, वह जीवित लौट कर नहीं आया। वस्तुतः सन् १८५५ से अंडमान-द्वीपों में केवल 'दंडित' लोगों की ही एक बस्ती बन गयी थी, अन्यथा वे निर्जन थे।

पोर्ट ब्लेअर में हमने वहाँ के कार्यवाहक कमिश्नर एथेल्स्टन एल्काक से भेंट की। उनसे मैंने अपने काम की ब्यौरेवार जानकारी प्राप्त की।

हमें सिर्फ उत्तरी द्वीपों में कम-से-कम दस प्रकार के भारतीय वृक्षों का पता लगाना था और यह देखना था कि, प्रति एकड़ कितनी लकड़ी मिल सकती है तथा उसे हाथियों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, या नहीं। इस काम के लिए हमें तीन मास का समय दिया गया था।

पोर्ट ब्लेअर के आगे जलपोतों का नियमित आवागमन नहीं था। भारतीय जंगल-विभाग ने अपने पोत 'सुरमई' से हमें आगे पहुँचाने और लगभग चार महीने बाद लौटा लाने की व्यवस्था कर दी थी। उन द्वीपों में हमें अपनी ही नावों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का उपयोग करना था। मजदूरों के रूप में वे 'दंडित' लोग हमें उपलब्ध थे। कमिश्नर ने चेतावनी दी कि, रक्षकों और चौकीदारों को साथ न लेने के कारण हमें उनसे बहुत सावधान रहना होगा। उन्होंने यह भी इशारा कर दिया कि, उनके लिए हमें गैर-कानूनी ढंग से अफीम का बंदोबस्त भी करना होगा। साथ ही, कमिश्नर ने हमें बधाई भी दी कि, हम ऐसे द्वीपों का अध्ययन करने जा रहे हैं, जिनके बारें में अभी तक किसी को कोई वैज्ञानिक जानकारी नहीं है। उनका कहना था कि, अंडमान के आदिवासी प्राचीन लौह-युग के अध्ययन के श्रेष्ठ साधन थे; परंतु यह जाति शीघ्रता से विलीन होती जा रही थी।

विदा होते समय कमिश्नर ने मुझे पोर्ट कार्नवालिस, उत्तर-अंडमान-द्वीप-समूह, के पते पर अपनी पत्नी के नाम एक पत्र दिया। वास्तव में, उनकी पत्नी विवाह के एक सप्ताह बाद ही बीमार होकर मर गयी थी और मुझे पता लगा कि, स्वर्ग के पते पर उनकी पत्नी के नाम अनेक पत्र डाकखाने में पड़े थे। जो पत्र उन्होंने मुझे दिया था, उसे मैंने अपन बक्स में, कपड़ों के नीचे, रख दिया। और सब विषयों की बातचीत में वह व्यक्ति मुझे समझदार मालूम हुआ; परंतु पत्नी के विषय में उसका मस्तिष्क बिल्कुल खराब था। क्या अजीब थी यह स्थिति!

स्मिथ द्वीप में अपना मुख्य शिविर बना कर हम द्वीप की विशिष्ट जानकारी जमा करने में लगे। सौ हाथियों के लिए वहाँ चारे और पानी के काफी साधन थे। हमारे लिए भी मछलियाँ बहुत मिलती थीं।

एक दिन मैं और ब्रूनो मोटर-बोट में सैर को निकले और बांड-बे पहुँचे। दूर किनारे पर, जंगल में, हमें एक व्यक्ति बिल्कुल नंगा भागता हुआ दिखायी दिया। दूरबीन से हमने वहीं चार व्यक्ति और एक झोंपड़ी देखी। वे किनारे की ओर कुछ दूर आकर ठहर गये और हमें देखने लगे। हमने उनकी ओर हाथ हिलाये; परंतु उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। वे संदेह की दृष्टि से हमें देख रहे थे। हमने अपनी सद्भावनाएँ प्रकट करने के उद्देश्य से एक खोखे में कुछ सामान रखा और उन्हें दिखा कर उसे किनारे की ओर बहा दिया। वह किनारे पर पहुँच भी गया; लेकिन उनमें से दो उसे उठाने को आगे तभी बढ़े, जब हमने अपनी नाव को वापस होने के लिए फेरा। हमने देखा कि, वे दोनों स्त्रियाँ थीं।

...चारों ने जमा होकर उसके अंदर के सामान का निरीक्षण किया।...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे उसे उठा कर ऐसे भागीं, जैसे कोई चीज चुरा कर ले जा रही हों। चारों ने जमा होकर उसके अंदर के सामान का निरीक्षण किया; परंतु न तो उन्होंने किसी तरह का आभार प्रकट किया और न अपनी नाव में बैठ कर वे हमसे मिलने ही आये। उन्हें पता भी क्या था कि, हमने उन्हें कुछ खाने-पीने की चीजें भेजी थीं!

दूसरे दिन हम फिर उस जगह गये; लेकिन उन लोगों का कहीं चिह्न भी नहीं था। हमने किनारे जाकर पता लगाने का फैसला किया; मगर उस झोंपड़ी से हमें पता चला कि, वे लोग वह जगह छोड़ कर चले गये थे। न उनका कोई सामान वहाँ था और न हमारा भेजा हुआ खोखा। हाँ, तरह-तरह की मछलियों की हड्डियाँ और सीपों के ढेर वहाँ अवश्य पड़े थे, जो उनके भोजन की कहानी हमें सुना रहे थे। अपनी नाव में बैठ कर वे कहीं चले गये थे।

हमने अपनी मोटर-बोट ट्रिल्बी-द्वीप के पश्चिमी किनारे की ओर मोड़ी। वह द्वीप दलदल-ही-दलदल था। एक जगह थोड़ा-सा पक्का किनारा था और वहीं वे लोग हमें दिखायी दे गये। वे अपनी नाव उठाये जंगल में चले जा रहे थे। अकस्मात् उन्होंने भी हमें देख लिया। बस, तुरत नाव छोड़ कर वे भाग खड़े हुए। हमारा भेजा हुआ खोखा किनारे पर पड़ा था।

हम फिर अपनी दोस्ती का प्रमाण देने के लिए एक और खोखा लेकर किनारे पर गये और चुपचाप उसे रख कर अपनी नाव को लौट आये और प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करते हुए मछलियाँ पकड़ने लगे।

कोई एक घंटे बाद, वे दोनों औरतें जंगल से निकलीं। पहले वे हमारे खोखे को उठा कर रख आयीं। उनके लौटने के बाद दोनों पुरुष भी निकल आये और अपनी नाव में बैठ कर तेजी से हमारी तरफ आने लगे। कुछ दूरी पर ठहर कर, उन्होंने पानी पीने के इशारे किये, जिससे हमने समझा कि, वे ऐसी जगह आ फँसे थे, जहाँ पानी नहीं था। हमने पानी की दो बोतलें उनकी तरफ फेंक दीं। हमें खुशी थी कि, हमारे प्रति उनका भय मिट गया था।

उन औरतों की शक्ल हब्शियों-जैसी थी। दोनों ही हमें बहुत बदसूरत लगीं; परंतु उनमें से एक नवयुवती— और शायद अविवाहित— थी। उसके शरीर की बनावट भी बहुत सुंदर थी।

ब्रूनो और कार्ल किनारे उतर कर सारे परिवार से मिले। वृद्ध परिवार का मुखिया था। एक-दूसरे की भाषा तो हम समझते नहीं थे; परंतु हमने उन्हें अपने साथ चलने को राजी कर लिया। जो थोड़ा-सा उनका सामान था, उसे लेकर वे हमारे साथ हो लिये। न-जाने अतीत के किस युग में किस मुसीबत ने उनके पूर्वजों को यहाँ लाकर कैद कर दिया था।

हम उन्हें अपने साथ ले तो चले; परंतु विचार आया कि, उन 'दंडितों' के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास, जिन्होंने वर्षों से स्त्री की शक्ल नहीं देखी थी, इन स्त्रियों को रखना एक बड़ी मुसीबत का कारण बन जायेगा। अतः 'दंडितों' के मुखिया की राय के अनुसार उन्हें हमने अपने शिविर से कुछ दूर बसा दिया। उनकी नौकाएँ हम अपने साथ ले आये; परंतु उनकी जरूरत की चीजें हमने उन्हें भरपूर दे दीं।

अपनी अग्नि वे साथ लाये थे। हमारी दियासलाइयों का प्रयोग देख कर भी उन्होंने अपनी अग्नि को नहीं छोड़ा। वे शायद समझते थे कि, अगर आग बुझ गयी और हमारे लौट जाने के बाद दियासलाइयाँ चुक गयीं, तो क्या होगा! उनकी जाति के और परिवार तो विलुप्त हो गये ही जान पड़ते थे, अन्यथा उन्हीं से आग माँग लाते! दूसरे दिन उनकी नौकाएँ हमने उन्हें लौटा दीं। परंतु उनकी भाषा, प्रयत्न करके भी, हम नहीं समझ सके। यदि ऐसा हो पाता, तो उनसे हमें अपने काम में बड़ी सहायता मिलती।

उनसे हमारी वास्तविक मित्रता तो नहीं हुई; लेकिन बूढ़ा और नवयुवती अक्सर हमारे शिविर में आते थे और दिन-दिन-भर हमारा काम देखा करते थे।

तभी वह दिन आया, जब हमारी कम्पनी के दो विमान जंगलों की हवाई तस्वीरें उतारने के लिए आनेवाले थे। उस दिन दोनों पुरुष शिविर में नमक लेने आये हुए थे; परंतु जहाजों को आता देख कर, डर के मारे भाग खड़े हुए।

हमने समझा था कि, जहाजों को लौटता देख कर, वे फिर हमारे पास आ जायेंगे; लेकिन वे नहीं आये। तब हम उनकी खोज में निकले। हम जब उनकी झोंपड़ी में पहुँचे, तो वृद्ध वहाँ मौजूद न था और बाकी तीनों ने अपना सामान फिर कहीं चले जाने को जमा कर लिया था। वे तीनों बड़े दुःखी थे। संकेतों से हमें ज्ञात हुआ कि, जब हमारे विमान लौटे, तब बूढ़ा पहाड़ियों में शिकार करने गया हुआ

...कुछ ही देर में उसके साथ की मादाएँ भी निकल आयीं। सबने पानी पिया और फिर अपने नर के साथ इस किनारे आ गयीं।...(पृष्ठ ७०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। जहाजों को देख कर वह अपने को उनसे बचाने के लिए एक ऊँचे पहाड़ से कूद पड़ा था, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी थी। नवयुवती को दुःख इस बात का था कि अब उनका वंश भी समाप्त हो जायेगा और आग भी बुझ जायेगी। हमने उन्हें ढाढ़स बँधाने की कोशिश की और अगले दिन फिर आने का वादा करके लौट आये। लेकिन अगले दिन उनका कहीं पता नहीं चला।

हमें यहाँ रहते बहुत दिन हो गये थे और हमने समझ लिया था कि, किसी प्रकार के पशु यहाँ नहीं हैं; परंतु एक दिन जब मैं दंडितों के मुखिया के साथ संध्या के समय खाड़ी के किनारे घूमने चला जा रहा था, तो मेरी निगाह दूसरे किनारे खड़ी एक पशु-आकृति पर पड़ी। बहुत गौर से देखने के बाद उसके सुंदर और लम्बे सींग दिखायी दिये। उसकी आँखें हम अनजान लोगों को अपलक देख रही थीं। उनमें न भय था, न चिंता। मैंने इतने सुंदर हिरन भारत में भी नहीं देखे थे।

मेरा खयाल था कि, क्षण-भर में ही वह डर कर भाग खड़ा होगा; परंतु वह तो फिर निश्चिंत होकर घास चरने लगा। उसने पहले न कोई जंगली खूँख्वार जानवर देखा था, न आदमी। अतः उसे हमसे किसी खतरे की आशंका न थी।

कुछ ही देर में उसके साथ की मादाएँ भी निकल आयीं। सबने पानी पिया और फिर अपने नर के साथ इस किनारे आ गयीं। उनकी जिज्ञासा उन्हें हमारे पास लिये आ रही थी।

हमारे पास आ जाने पर नर ने अपनी लम्बी गर्दन आगे निकाली और उसके मखमली नथुने मेरे हाथ की पहुँच के अंदर आ गये; परंतु मैं बिना हिले-डुले खड़ा रहा। तब उसी ने और आगे बढ़ कर अपने नथुने मेरे हाथ में लगा दिये। वह मेरा हाथ चाटने लगा। उसकी साथिनें भी हमें घेर कर खड़ी हो गयीं।

उस नर के साथ छः मादाएँ थीं; लेकिन बच्चा एक भी नहीं था। मुझसे नहीं रहा गया। मैंने अपने साथी से पूछ ही तो लिया कि, बच्चे कहाँ गये। हमारी शक्ल और गंध से तो वे जानवर नहीं डरे थे; परंतु आवाज ने उन्हें चौंका दिया। पलक झपकते ही वह सारा परिवार चौकड़ी भरता हुआ बीस गज दूर जा पहुँचा। अब मैं मनाने लगा कि, वे हमारे पास लौट आयें; किंतु वे न आये— जंगल में अदृश्य हो गये।

दंडितों के मुखिया ने ठंडी साँस भरते हुए मुझसे कहा—"इस नर ने अपने बच्चों को पहले तो हत्या कर दी और अब बूढ़ा हो गया है। अतः वंश बढ़े, तो कैसे!"

मानो एक बिजली-सी मुझ पर गिरी— क्या इन हिरनों की जाति भी वैसे ही विलुप्त हो रही है, जैसे अंडमान के आदिवासियों की। कदाचित् यह संसार वनस्पतियों का है, जिसमें जीवधारियों के लिए स्थान नहीं है— वे चाहे मानव-जाति के हों, चाहे पशु-जाति के!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संतरामजी बी० ए०-द्वारा लिखित एक रोचक प्रबंध

भारत में प्रति वर्ष कोई एक लाख व्यक्ति साँप के काटने से मर जाते हैं। इस पर भी यहाँ सर्प-पूजा होती है। कारण, कुछ लोगों को विश्वास है कि, साँप अपनी आकृति में भगवान् होते हैं। केरल के लोग प्राचीनता के बड़े भक्त हैं। वे भगवान् और देवता के रूप में साँपों की पूजा करते हैं। केरल के प्रत्येक धनी व्यक्ति के घर में आपको साँपों के कई बिल मिलेंगे। वहाँ के साँप स्वच्छंद रूप से घूमा करते हैं। वे किसी को कोई क्षति नहीं पहुँचाते। किसी को इन साँपों तक जाने या इनका अपमान करने को अनुमति नहीं दी जाती। कारण यह कि, इन साँपों को छेड़ना नागदेवता को कुपित करना समझा जाता है!

अनेक अवसरों पर इन साँपों ने अपने स्वामियों के प्राण भी बचाये हैं। कुछ वर्ष हुए, मलाबार के एक व्यक्ति ने अपने जीर्ण मकान को बिल्कुल तोड़ कर पुनः बनाने का संकल्प किया; परंतु यह काम साँपों को बेघर किये बिना सम्भव न था। फलतः एक ज्योतिषी से उस व्यक्ति ने परामर्श लिया। ज्योतिषी ने कड़ी ताकीद की कि, घर के साँपों को कोई कष्ट न पहुँचाया जाये। ज्योतिषी ने उससे यह भी कहा कि, जब तक उसके घर में साँप रहेंगे, कुटुम्ब का कोई व्यक्ति किसी का मोहताज न होगा। गृहस्वामी ने ज्योतिषी की बात मान ली। कहते हैं कि, साँप का घर छोड़ना दरिद्रता और विपत्ति आने का सूचक है।

कुछ वर्ष हुए, केरल के एक दंगे में कुछ बलवाइयों ने एक धनाढ्य ब्राह्मण के घर पर आक्रमण किया और उसकी सब वस्तुएँ लूटने लगे; परंतु अचानक कई साँप बिलों से निकल आये और उन्होंने बलवाइयों की ओर अपने फणों से फूँकें मारनी आरम्भ कर दीं। यह देख, बलवाई भाग खड़े हुए। इस प्रकार, साँपों ने अपने स्वामी के प्राणों की रक्षा की और उसकी सम्पत्ति को लुटने से बचा लिया।

केरल का एक किसान अपने मकान के अहाते में रहनेवाले एक साँप को प्रतिदिन दूध पिलाया करता था। एक दिन रात को एक चीता उसके घर में घुस आया और पशुओं को काटने लगा। अहाते में रहनेवाला नाग चीते के आक्रमण का अनुभव करके बिल से बाहर निकल आया। उसने चीते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को कई स्थानों पर काट खाया। तब वह अपने सोये हुए स्वामी के पास पहुँचा। उसने उसके पैर में अपने-आपको लपेट कर उसे जगा दिया। किसान की आँखें खुलीं, तो साँप ने अपनी पकड़ ढीली कर दी और वह वाटिका की ओर द्रुतगति से भागने लगा। जहाँ पशु बँधे थे, वहाँ पहुँचने पर किसान को यह देख आश्चर्य हुआ कि, एक घायल चीता अहाते से बाहर निकल रहा है। दूसरे दिन चीता वाटिका के निकट ही मरा पाया गया।

इसी प्रकार की एक और विचित्र घटना है। इसमें एक नाग ने डाकुओं का पीछा करके एक बच्ची के प्राण बचाये। बाद को जोधपुर के एक गाँव के लोगों ने इस नाग को 'रखवाला' की उपाधि प्रदान की। घटना इस प्रकार थी— एक कुटुम्ब अपने दस वर्ष के एक लड़के और तीन वर्ष की एक लड़की को घर में अकेले छोड़ कर किसी काम से बाहर चला गया। इस बीच में कुछ डाकुओं ने घर में घुस कर जब कोई वस्तु लूटने के योग्य नहीं पायी, तो उन दोनों बच्चों को ही ले जाने का प्रयास किया, ताकि उनके माता-पिता से कुछ नकद धन प्राप्त किया जा सके। परंतु उसी समय वहाँ एक साँप पहुँच गया। उसने डट कर डाकुओं का सामना किया। एक डाकू को डस कर उसने मार भी डाला; परंतु दूसरे डाकू लड़की को लेकर भाग जाने में सफल हो गये। जब माता-पिता शाम को घर वापस आये, तब उन्हें एक पत्र मिला। उसमें लिखा था कि गाँव से बारह मील के अंतर पर अवस्थित अमुक स्थान पर आकर और इतना धन देकर अपनी लड़की को लौटा ले जाओ।

उस घर के स्वामी मोची ने डाकुओं से मिलने की एक नयी विधि सोची। वह अपना साँप और अपहृत बच्ची के वस्त्र साथ ले नियत स्थान के लिए चल दिया। जिस जगह पर मिलने के लिए डाकुओं ने लिखा था, जब वह वहाँ पहुँचा, तो उसने सघन वन में डाकुओं को पुकारा। उसे उत्तर मिला कि, हाथ ऊपर उठा कर एक फर्लांग तक वन के भीतर आ जाओ। इस आदेश का पालन करने के पूर्व मोची ने अपहृत लड़की के वस्त्र अपने साँप से सुँघा कर उसे वन में छोड़ दिया। तीन मिनट में ही मोची को किसी के कराहने का शब्द सुनायी दिया। उसने पीछे मुड़ कर देखा, तो एक व्यक्ति कराहता हुआ इतनी देर में मर भी चुका था। उस डाकू का दूसरा साथी एक हाथ में मोची की बच्ची को दबाये, अपने साथी की सहायता के लिए पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था; परंतु साँप ने थोड़ी देर में उसे भी समाप्त कर दिया था। इतना ही नहीं, वह साँप रोती हुई बालिका के पास उसकी रक्षा के लिए पहुँच चुका था।

भारत में सर्प-राजा और नाग-रानी के कई मंदिर हैं। कन्याकुमारी-अंतरीप के निकट नाग-माता के बाप का भी एक मंदिर है। साँप का विष यद्यपि मनुष्य के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए घातक होता है, तथापि यह विभिन्न रोगों में काम आता है। सिर का नजला, जिसे अब तक असाध्य रोग समझा जाता था, अब सर्प-विष से ठीक किया जा सकता है। इस रोग की औषध वियेना के एक युवक चिकित्सक ने तैयार की है। इसका प्रधान उपादान सर्प-विष होता है। इस औषध का प्रयोग एक मरहम के रूप में होता है। यह मरहम कान या छाती पर नहीं लगाया जाता, वरन् कुहनी के गड्ढों पर लगा दिया जाता है। इन गड्ढों की त्वचा की अनुभव-शक्ति बहुत तीव्र होती है। यहाँ से त्वचा में सोखे जाकर इस प्रलेप के उपादान रक्तवाहिनी नाड़ियों के द्वारा नाक और सिर में पहुँच जाते हैं। इस चिकित्सक का दावा है कि, यह प्रलेप सिर-पीड़ा और छींकों को दो-तीन मिनट में दूर कर सकता है। वियेना में इसका एक बहुत बड़ा कारखाना है।

सर्प-रक्षा के लिए आजीवन आंदोलन करनेवाला इसाई महंत इग्नाशियो

बंकाक में साँपों का एक विधिवत् फार्म है। उसमें सब प्रकार के साँप रखे जाते हैं। इन साँपों को देखकर एक अनजान तो भयभीत हो जाता है; परंतु इस फार्म का डाक्टर इन्हीं साँपों के बीच बिना किसी भय के चलता-फिरता है। उसने सर्प-दंश का एक ऐसा 'सीरम' तैयार किया है, जो स्याम-देश के हजारों व्यक्तियों के प्राण बचाने में लाभदायक सिद्ध हुआ है।

बंकाक के इस फार्म में प्रत्येक गुरुवार को साँपों का विष निकाला जाता है। उस दिन वहाँ सहस्रों लोगों की भीड़ रहती है। यहाँ विष निकालने की विधि यह है कि, एक वेटरीनरी सर्जन धारदार काँच की कुछ प्लेटें एक मेज पर बिखेर देता है। तब वह एक छड़ी में लिपटा हुआ एक साँप उस मेज पर लाता है। वहाँ एक दूसरा डाक्टर उपस्थित होता है। वेटरीनरी सर्जन अपने दाहिने हाथ की पहली उँगली और अँगूठे से साँप का मुँह फैला देता है। दूसरा डाक्टर काँच की एक प्लेट उसके मुँह में शीघ्रता से डाल देता है। थोड़ी देर बाद, मुँह में काँच के लगने से एक चिकना या तरल द्रव बहने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगता है। यह उस सर्प का विष होता है। जब चाय के डेढ़-दो चमचे-भर विष बाहर आ जाता है, तो उस साँप को उठा कर पानी कुंड में डाल दिया जाता है।

जापान में प्रतिदिन सहस्रों साँप चूर्ण-रूप में बिकते हैं। वहाँ सामान्य रूप से एक विश्वास चला आ रहा है कि, साँप यक्ष्मा और सिल की सर्वोत्तम औषध है। जापान में एक सहस्र से अधिक दूकानें साँपों से बना चूर्ण बेचती हैं। यह चूर्ण साँपों को तंदूर पर सेंक कर बनाया जाता है। टोकियो के निकट एक स्थान पर साँपों का एक स्टोर है। उसमें सब समय दस सहस्र साँप सप्लाई के लिए वर्तमान रहते हैं। कहते हैं, यहाँ वर्ष-भर में एक लाख साँप बेचे जाते हैं।

यह एक सर्वमान्य सत्य स्वीकार किया जाता है कि, सपेरा साँप को पकड़ने के लिए किसी मंत्र या औषध का प्रयोग नहीं करता। वह केवल अपने साहस और हाथ की सफाई से साँप पकड़ता है; परंतु सपेरे की बीन का रहस्य अभी तक किसी को ज्ञात नहीं हो सका कि, वे कौन-सी इन्द्रियाँ हैं, जो साँप को बीन के शब्द पर नाचने के लिए विवश कर देती हैं, जब कि यह भी कहा जाता है कि, साँप के कान नहीं होते और वह बीन या किसी बाजे की ध्वनि नहीं सुन सकता।

मुझे अपने अनुभव से पता लगा है कि, साँप बीन की ध्वनि पर मस्त नहीं होता। बीन बजानेवाला साँप की आँख के साथ अपनी आँख मिला कर बीन बजाता है। आँखें मिलाये-मिलाये सपेरा जिस ओर बीन को झुकाता है, साँप भी उधर ही झुक जाता है। इसी को साँप का डोलना कहते हैं। वास्तव में, साँप स्वयं डरता है कि, मुझ पर आक्रमण न हो जाये। इसलिए वह सपेरे की आँख-से-आँख मिलाये रखता है। मनुष्य के गाफिल होने या आँख दूसरी ओर फेर लेने से ही साँप उस पर वार करता है। मैंने साँप और सपेरे के बीच चादर तान कर देखा। सपेरा बीन बजाता रहा; पर साँप टस-से-मस न हुआ।

कुछ ऐसे मंत्र बताये जाते हैं, जिनसे साँप के काटे को आराम हो जाता है। कोचीन के एक महाराज के विषय में कहा जाता है कि, वे एक ऐसा मंत्र जानते थे, जिससे डसनेवाले साँप को अपने पास बुला सकते थे। केवल इतना ही नहीं, वरन् उनके मंत्र के प्रभाव से वह साँप, जिस व्यक्ति को उसने डसा था, उसके शरीर से अपना विष भी चूस कर बाहर निकाल लेने के लिए बाध्य हो जाता था। आज भी दक्षिण-भारत में लोग साँप के काटे के उपचार के लिए मंत्रों पर विश्वास रखते हैं। पर मेरे मत से तो साँप के डसे हुए व्यक्ति पर मंत्र से एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। इससे हल्का विष तो दब जाता है; परंतु तीव्र विषवाले साँप का काटा मंत्र-जंत्र से कभी नहीं बचता। जो हो, यह बात इस योग्य है कि, इसका अन्वेषण किया जाये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मांड में हमसे भी श्रेष्ठ प्राणी

महर्षि व्यास की यह घोषणा अगले कुछ वर्षों में ही शायद अपने अर्थ में विकलांग हो जाये कि, सृष्टि में मनुष्य से श्रेष्ठ और कुछ नहीं हैं; क्योंकि खगोल-विज्ञान आज ऐसे स्पष्ट आभास दे रहा है कि, अन्य ग्रहों में मनुष्य से भी अधिक उन्नत, सशक्त एवं मेधावी प्राणी हो सकते हैं। दीप शंकर ने भविष्य की इसी सम्भावना को यहाँ विवेचनात्मक रूप से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

*

रामायण में पुष्पक-विमान का वर्णन सुन कर लोग कवि की कल्पना का मजाक उड़ाया करते थे। भला जो वस्तु उन्होंने कभी देखी नहीं, सुनी नहीं, उसको सत्य कैसे मान लें? महाभारत में वर्णित नाना प्रकार के ब्रह्मास्त्रों के सम्बंध में भी लोगों का यही दृष्टिकोण था। परंतु जब एक कल्पनाशील मानव ने वायुयान उड़ा कर दिखा दिया, तो लोगों को विमान-जैसी वस्तु के अस्तित्व पर विश्वास हो गया। इस सृष्टि के अनंत रहस्यों के सम्बंध में भी यही बात सत्य है।

मानव-सभ्यता के आदिकाल में मानव को आश्चर्य-विमोहित और भयभीत करने-वाले प्रकृति के अनेक रहस्यों को भेद कर आज हम बहुत आगे बढ़ आये हैं। कल्पना नहीं, अपितु वैज्ञानिक तथ्यों और अनुसंधानों के आधार पर हम यह मानने के लिए विवश हो गये हैं कि, इस अद्भुत ब्रह्मांड में करोड़ों ऐसी सृष्टियाँ विद्यमान हैं, जिनमें पृथ्वी-जैसे या इससे भी कहीं अधिक विशाल ग्रह-उपग्रह विद्यमान हैं। जिस अंशुमाली की प्रखर किरणें धरती को जीवन-दान दे, वनस्पतियों और प्राणियों का पालन-पोषण करती हैं, उससे भी करोड़ों-गुने प्रचंड सूर्य, जिनकी गणना भी कर पाना सम्भव नहीं, इस ब्रह्मांड में विद्यमान हैं। इनको केंद्र-बिंदु बना कर कितनी ही सृष्टियाँ इस ब्रह्मांड में हैं।

किंतु आज हमारे समक्ष प्रश्न यह नहीं है कि, हमारे सौरमंडल में विद्यमान १० ग्रहों और उपग्रहों में जीवन का अस्तित्व है या नहीं? इस बात का पता तो हम देर-सवेर लगा ही लेंगे। यदि पृथ्वी पर जीवन है, तो हो सकता है, इस सौरमंडल के अन्य कुछेक ग्रहों में भी जीवन हो। परंतु आज मानव के समक्ष एक अन्य अत्यंत गम्भीर समस्या विद्यमान है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह तो कोई प्रश्न नहीं हुआ कि, अन्य सृष्टियों में भी जीवन विद्यमान है या नहीं! यदि हमारे सौरमंडल में जीवन विद्यमान है, तो अन्य सौरमंडलों में जीवन के अस्तित्व में संदेह करने का कौन-सा कारण हो सकता है? यह सोचना कि, सम्पूर्ण सृष्टि में केवल हम ही जीवित प्राणी हैं, आज के युग में निरी मूर्खतापूर्ण बात होगी। हाँ, इस सम्बंध में अवश्य शंका की जा सकती है कि, इन सृष्टियों में विद्यमान प्राणी-जीवन का स्वरूप क्या होगा?

जब तक सत्य बात का पता नहीं लगता, ज्ञात वैज्ञानिक तथ्यों और सिद्धांतों के आधार पर हम कल्पना तो कर ही सकते हैं। क्या मालूम, हमारी यह कल्पना सत्य हो, जैसा कि पहले कई बार हो चुका है।

इस स्थिति तक पहुँचने की कहानी बहुत लम्बी है। परंतु अपनी वास्तविक स्थिति का सही-सही मूल्यांकन करने के लिए हमें सृष्टि के रहस्यों के उद्घाटन के क्रमिक इतिहास पर दृष्टिपात करना आवश्यक है; क्योंकि आज की तर्क-प्रधान सभ्यता में यह प्रश्न सहज ही किया जा सकता है कि, जो मनुष्य अपनी दुनिया के वायुमंडल के बारे में कभी पूर्णतः अनभिज्ञ था, वह इतनी ऊँचाइयों और गहराइयों तक कैसे पहुँच गया?

मानव-सभ्यता के आदिकाल में प्रकृति के समक्ष बार-बार पराजित मनुष्य ने यह अनुभव किया कि, उसके ऊपर भी एक शक्ति है, जो उस पर शासन करने की क्षमता रखती है। इस अज्ञात शक्ति को खोजने के सिलसिले में उसे यह ज्ञात हुआ कि, सृष्टि का केंद्रबिंदु मनुष्य नहीं, बल्कि धरती है, जहाँ वह निवास करता है। अतः उसने पृथ्वी को ही समस्त सृष्टि का केंद्रबिंदु मान लिया। अन्य सृष्टियों की विद्यमानता की बात तो जाने दीजिए, यह स्वीकार करने के लिए भी वह उस समय किसी प्रकार प्रस्तुत नहीं था कि, स्वयं पृथ्वी का जीवन किसी दूसरी वस्तु पर निर्भर है और वह उस केंद्रबिंदु के अधीनस्थ ग्रहों और उपग्रहों में से एक है। पर पृथ्वी को सृष्टि का केंद्रबिंदु मान लेने से भी स्थिति

सर्वश्रेष्ठ

उस दिन सरोवर में कमल जब खिला, तो दर्प के साथ चारों दिशाओं को सम्बोधित कर बोला—"दिक् बंधुओ, मुझे प्रणाम करो। नियम है कि, जो सर्वश्रेष्ठ है, उसकी आराधना की जाये। उठो, शीश नवा कर मेरी अभ्यर्थना करो!" सुना, तो उधर सूर्य गरज उठा—"यह झूठा है, दिक् देवियो! तुम मुझे पूजो। यह डंठल तो मेरे प्रताप से खिलता है!" चारों दिशाएँ व्यंग्य में हँस पड़ीं—"दोनों झूठे! सर्वश्रेष्ठ जहाँ है, वहाँ है। उसे अपना दावा जताने की जरूरत नहीं पड़ती!"—वल्लत्तोळ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में कोई अंतर नहीं पड़ा; क्योंकि इतना होते हुए भी मनुष्य का यह विश्वास तो बना ही रहा कि, वह सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ और सबसे अधिक शक्तिशाली प्राणी है और अन्य कोई भी प्राणी उसका मुकाबला नहीं कर सकता।

लेकिन अचानक ही उसका यह स्वप्न भंग हो गया। मनुष्य को उस समय एक गहरी ठेस पहुँची, जब उसने सुना कि, पृथ्वी तो सूर्य के चारों ओर घूमनेवाला एक सामान्य ग्रह-मात्र है। इस प्रकार सृष्टि में उसकी श्रेष्ठता या प्रभुता समाप्त हो गयी। किंतु हठ उसने फिर भी नहीं छोड़ा और अपने हृदय को संतोष देने के लिए यह मान बैठा कि, यह सूर्य ही समस्त सृष्टि का जीवन-दाता और प्रभु है और सृष्टि में विद्यमान समस्त ग्रह-उपग्रह और नक्षत्र-पुंज इसके ही दास हैं।

जोजफ कप्लान
अंतर्राष्ट्रीय भू-भौतिकी वर्ष-अभियान के प्रधान

परंतु यह भ्रमजाल भी अधिक समय तक न टिक सका। अपने विश्वास को ठीक ठहराने के लिए उसने तरह-तरह की कपोल-कल्पनाएँ गढ़ीं और उनमें बहुत समय तक मग्न रहा; लेकिन १६-वीं शताब्दी के आसपास इन कपोल-कल्पनाओं का महल ढहने लगा और बीसवीं सदी के प्रारम्भ होते-होते यह बात पूरी तरह निश्चित हो गयी कि, इस ब्रह्मांड में ऐसे न-जाने कितने सूर्य और सौरमंडल हैं।

ब्रह्मांड-सम्बंधी इस नवीनतम रहस्य के उद्घाटन ने अनंत सृष्टियों को समावेत करनेवाले ब्रह्मांड में इस पृथ्वी का स्थान बतलाया— लाखों आकाशगंगाओं में से एक आकाशगंगा के छोर पर स्थित एक छोटा-सा ग्रह। किंतु हमारी प्रगति का मार्ग आकाशगंगाओं तक पहुँच कर ही समाप्त नहीं हो जाता। इस क्षेत्र में और अधिक जानकारी प्राप्त करना हमारे लिए अत्यधिक आवश्यक और अनिवार्य हो गया है।

हमारे समक्ष इस समय सबसे ज्वलंत समस्या ब्रह्मांड में प्राणी-जीवन की विद्यमानता और स्वरूप की खोज करने की है। यह प्रश्न लगभग सभी मनुष्यों के हृदय में उठ रहा है कि, इस विशाल ब्रह्मांड में क्या केवल पृथ्वी पर ही जीवधारियों की सत्ता है और क्या मनुष्य की बराबरी करनेवाला अन्य कोई जीव अखंड ब्रह्मांड में विद्यमान नहीं? इस सम्बंध में हमें तीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातों को अवश्य ध्यान में रखना है।

सबसे पहली बात तो यह है कि, ब्रह्मांड में तारों की संख्या कुल कितनी है ? प्राचीन काल में लोगों को केवल कुछ ही हजार तारों के अस्तित्व का ज्ञान था। दूरवीक्षण-यंत्र का आविष्कार होने पर इनकी संख्या लाखों तक पहुँच गयी। दूरवीक्षण-यंत्र में सुधार होने के साथ ही इनकी संख्या भी निरंतर बढ़ती जा रही है। यह ज्ञात होने पर कि, धूमकेतु भी वस्तुतः एक प्रकार की आकाशगंगा है, इन तारों-नक्षत्रों की संख्या अरबों तक पहुँच गयी है। यहाँ तक कि, ब्रह्मांड के सभी तारों को देख पाना या उनका पता लगा पाना मनुष्य के वश की बात नहीं रह गयी है। जहाँ तक हमारे सौरमंडल का सम्बंध है, १० ग्रहों के अस्तित्व को तो सभी स्वीकार करते हैं।

मनुष्य से भी श्रेष्ठ जीव शुक्र-ग्रह में हैं! —आंद्रे नीव

दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि, क्या ग्रहों का सम्बंध कुछ ऐसे अत्यंत प्रकाशवान नक्षत्रों से रहता है, जो ग्रहों में जीवन की सृष्टि करने की क्षमता रखते हैं ?

आज से कई हजार वर्ष पूर्व अंतरिक्ष में पदार्थ इतने अधिक घनीभूत रूप में विद्यमान रहा होगा कि, पदार्थ-पुंज का परस्पर टकराना और विखंडित होकर इधर-उधर फैल जाना एक सामान्य बात रही होगी। रेडियो-सक्रियता की सहायता से माप करने पर यह पता चला है कि, पृथ्वी की ऊपरी सतह अरबों वर्ष पुरानी है। इसलिए यह स्वाभाविक निष्कर्ष निकलता है कि, ब्रह्मांड में व्याप्त इस उथल-पुथल के समय ही पृथ्वी तथा सौरमंडल के अन्य ग्रहों का जन्म हुआ होगा। इसी समय लाखों अन्य सौरमंडलों और ग्रह-मंडलों का भी विकास हुआ होगा।

अंत में, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि, इस ब्रह्मांड में लाखों सौरमंडल मौजूद होने चाहिए। इनकी उत्पत्ति और विकास चाहे जिस प्रकार हुआ हो, यह तो सामान्यतः सभी स्वीकार करते हैं कि, इन सौरमंडलों में असंख्य पृथ्वी-जैसे या इससे भी बड़े और छोटे ग्रह और उपग्रह होंगे। विज्ञान और भौतिक विज्ञान-सम्बंधी हमारे नियम केवल पृथ्वी पर ही नहीं, बल्कि ब्रह्मांड के अन्य भागों पर भी लागू होते हैं।

तब यह भी निश्चित है कि, पृथ्वी-जैसी परिस्थितियों और वातावरण से युक्त अन्य ग्रहों में भी जीवन अवश्य विद्यमान होगा। यह बात दूसरी है कि, ऐसे ग्रहों की संख्या कितनी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह भी प्रश्न उठता है कि, हमारे सौर-मंडल के १० ग्रहों में, क्या पृथ्वी को छोड़ कर अन्य किसी ग्रह पर भी जीवन किसी रूप में विद्यमान है? इस प्रश्न का उत्तर मिलना शेष है। यह तो वैज्ञानिक मानने लगे हैं कि, जीवन पृथ्वी तक ही सीमित नहीं। जिस प्रकार एक दिन मनुष्य के समक्ष यह स्वयं ही स्पष्ट हो गया था कि, सृष्टि केवल पृथ्वी तक ही सीमित नहीं, उसी प्रकार समय आने पर सृष्टि और ब्रह्मांड के अन्य भागों में जीवन के अस्तित्व को हमें स्वीकार करना ही पड़ेगा। कुछ वैज्ञानिक तो यह मानने भी लगे हैं कि, इस सृष्टि में मनुष्य अकेला नहीं है। एक तीसरी बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर हमारे इस निश्चय को और भी अधिक बल मिलता है। विज्ञान इतना आगे बढ़ चुका है कि, इस बात में कोई संदेह नहीं कर सकता कि, जीवन के अनुकूल वातावरण और परिस्थितियाँ मिलने पर जीवन का प्रादुर्भाव स्वयं हो जाता है। हाँ, यह प्रश्न दूसरा है कि, इस जीवन का स्वरूप क्या होगा। जीवन का प्रादुर्भाव कोई जादू का करिश्मा नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक क्रिया का पूर्ण विकास है—आधार-भूत रासायनिक अनुसंधान-द्वारा यह पूरी तरह सिद्ध हो चुका है। अन्य ग्रहों में भी ऐसे जीवधारी हो सकते हैं, जो मनुष्य-जितने या उससे भी अधिक बुद्धिमान हों। अतएव यह कहना सर्वथा गलत होगा कि, सम्पूर्ण ब्रह्मांड में मनुष्य से अधिक बुद्धिमान अन्य कोई प्राणी नहीं होगा। हाँ, उसका स्वरूप या आकार-प्रकार कुछ भिन्न हो सकता है।

इस प्रकार, आज मानव-जाति के समक्ष एक चौथी समस्या उपस्थित है। यह समस्या यह तथ्य स्वीकार करने की है कि, ब्रह्मांड में स्थित असंख्य सौर-मंडलों में या स्वयं हमारे सौरमंडल में ऐसे जीवधारियों का होना सम्भव है, जो मनुष्य से भी अधिक बुद्धिमान और मेधावी हों। अपनी श्रेष्ठता पर इस चौथे प्रहार को भी मानव-जाति को सहना ही पड़ेगा। अतएव समय रहते हमें इस आघात को झेलने के लिए प्रस्तुत हो जाना चाहिए; क्योंकि किसी भी दिन यह सम्भावना सत्य बन सकती है और दीर्घकाल से चली आ रही मानव-जाति की श्रेष्ठता और प्रभुता अतीत की वस्तु बन सकती है। जिस प्रकार पृथ्वी अब असंख्य ग्रहों में से एक है, उसी प्रकार मानव भी असंख्य जीवधारियों में केवल एक रह जायेगा।

★

अगर हम पूरी पृथ्वी को मकड़ी के जाले के धागे से घेरें, तो उस धागे का वजन कोई ४५० ग्राम होना चाहिए। लेकिन अगर उस धागे को हम निकटतम तारे को— दक्षिण-तारकमंडल के प्रधान नक्षत्र को— पहुँचाना चाहें, तो उसका वजन कुछ हजार-लाख ग्राम-किलोग्राम नहीं, बल्कि ५ लाख टन के बराबर होगा। —संकलित

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवि

कवि कोई अजगर तो है नहीं,
जो सब-कुछ खाता ही चला जाये
भीतर की आग में सब देता ही चला जाये—
जो भी मिले उसे राह में, कल्पना में सरस-विरस!

कवि कोई कुआँ तो है नहीं,
जो समेट कर बैठ जाये बस अपने में ही
आसपास का सारा ज्ञान, रस और प्राण
गहरा-ही-गहरा होता जाये, पहुँच से दूर, दुर्लभ!

कवि कोई प्याज-फल तो है नहीं,
जो आवरण को सात-सात गुफाओं में भी
महत्वहीन, अर्थरहित कुछ नहीं-जैसा हो
पट-पर-पट उतारो, अव्यक्त फिर भी मौन-मूढ़!

कवि कोई जलाशय तो है नहीं
जो बिम्बित करता रहे हर छवि को वक्ष पर
जैसे करता है दर्पण जड़, मनहीन, परम दीन—
सब-कुछ स्थिति का, अपना कुछ नहीं!

मूल: रोशे (फ्रांस) अनुवाद: केदारनाथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिर्जा गालिब को चने के पकवानों में बड़ी रुचि थी। बादशाह उनके इस शौक से परिचित थे। एक दिन जब बादशाह के चोबदार ने बेसनी रोटी का तोहफा लाकर मिर्जा के सामने पेश किया, तो उनकी बाँछें खिल गयीं। गालिब के इस असंयत जोश को बेगम ने देखा, तो त्यौरियाँ चढ़ गयीं, बोलीं—"शर्म कीजिये, बेसन की रोटियाँ क्या मिल गयीं, गोया नियामत मिल गयी।"

मिर्जा तो वाक्पटुता में दक्ष थे; भला कैसे मात खाते। बोले—"बेगम, तुम चने के रुतबे को नहीं समझती हो... अरे, यह अहमक चना वह चीज है कि, इसने एक दफा जनाबे-इलाही में फरियाद की थी—'दुनिया में मुझ पर बड़े जुल्म होते हैं। मुझे दलते हैं, पीसते हैं, भूनते हैं, पकाते हैं और मुझसे सैकड़ों खाने की चीजें बना कर खाते हैं। ऐ खुदा, जैसा मुझ पर जुल्म होता है, वैसा किसी पर नहीं होता।' परवरदिगार थोड़ी देर गौर से सोचते रहे, फिर हुक्म दिया— 'ऐ चने! तेरी खैर इसी में है कि, तू हमारे सामने से चला जा, वरना हमारा भी जी यही चाहता है कि, तुझे खा जाऊँ!'"

यह बात सुन, बेगम की त्यौरियाँ दृढ़ नहीं रह सकीं, तत्काल ही पिघल कर हँसी में बिखर गयीं।

× × ×

मिर्जा की मजाक की यह आदत इतनी आम थी कि, गम्भीर-से-गम्भीर मौकों पर भी व्यंग्य कसे बिना नहीं रहते थे। गालिब की छोटी बहन खानम बीमार हो गयी। मिर्जा रोज नियम से उसकी हालत पूछने जाते थे। एक दिन खानम बड़ी संतप्त नजर आयी। मिर्जा ने तबीयत का हाल पूछा, तो उसकी आँखों में आँसू आ गये। सुबक-सुबक कर वह बोली—"मरने से तो डरती नहीं हूँ। फिक्र मुझे कर्ज की है। बड़ी कोशिश की; मगर कोई सूरत पैदा न हो सकी कि, उसे अदा कर सकूँ। कर्ज के बोझ को वहाँ भी ले जाऊँ..."

बीच में ही बात काट कर गालिब ने कहा—"बुआ, तुमने भी खूब कही! अरे, यह भी कोई फिक्र है। खुदा के यहाँ भी क्या मुफ्ती सद्रुद्दीन खाँ बैठे हैं, जो डिग्री करके पकड़वा बुलवायेंगे?"

खानम के मलिन होंठों पर हँसी आये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना न रही। ये मुफ्ती सद्रुद्दीन खाँ साहब वही जज साहेब थे, जिनकी अदालत में गालिब को एक डिग्री के तकाजे पर पेश होना पड़ा था और जिनके सामने अपना बयान देते हुए मिर्जा ने कहा था—

कर्ज की पीते थे मय,
लेकिन समझते थे कि हाँ,
रंग लायेगी हमारी—
फाकेमस्ती एक दिन।

गरज यह कि, खुद मुफ्ती साहब ने अपनी जेब से मिर्जा गालिब की डिग्री की रकम अदालत में भरी।

× × ×

स्वर्गीय तेज बहादुर सप्रू अपने जमाने के विशिष्ट व्यक्ति थे— सांस्कृतिक दृष्टि से भी। उर्दू-भाषा से उन्हें विशेष प्रेम था। फारसी-अरबी का भी उनके परिवार में अच्छा-खासा प्रचलन था। एक दिन एक जज साहब उनसे कहने लगे—"बुरा न मानें, तो एक शिकायत सुना दूँ। क्या यह सच है कि, आप अपने परिवार की लड़कियों को फारसी पढ़ाते हैं?"

सर सप्रू ने साश्चर्य कहा—"हाँ!"

जज साहब की भौंहों पर कुछ बल पड़े, बोले—"क्या आप इस प्रकार परिवार को संस्कृति-भ्रष्ट नहीं कर रहे हैं?"

सर तेज के होंठों पर मीठी मुसकान खेल गयी। मुस्कान के बीच ही बोले—"मैं तो ऐसा नहीं समझता। फारसी-भाषा और संस्कृत-भाषा दोनों बहनें हैं। हाँ, अगर मैं अपने बच्चों को फ्रेंच पढ़ाऊँ, तो जरूर खतरा है; क्योंकि वह संस्कृत से बिल्कुल परायी भाषा है।.... सुनता हूँ, आप अपनी लड़कियों को फ्रेंच पढ़ाते हैं!"

बस, संवाद इससे आगे नहीं बढ़ सका।

× × ×

शराबबंदी की अवज्ञा के एक मामले में एक दिन पुलिस ने एक वारली (आदिवासी) को पेश किया। जज ने उससे पूछा—"क्या तुमने शराब पी थी?" वारली ने कोई जवाब नहीं दिया। जज ने फिर पूछा; मगर इस बार भी जवाब न मिला। परेशान जज ने गुजराती में पूछा, मराठी में पूछा; मगर वारली पूर्ववत् पत्थर की भाँति अचल-मौन खड़ा रहा। जज को बड़ी ग्लानि हुई। उसने उसे बरखास्त करते हुए कहा—"ले जाओ इसे! कहाँ से बहरा-गूँगा पकड़ लाये!"

दूसरा मुकदमा भी शराबबंदी का ही था। उसमें पेशी थी, एक पढ़े-लिखे धनाढ्य व्यक्ति की। अपराधी एक प्रख्यात वकील को अपनी पैरवी के लिए साथ लाया था। वकील ने बड़ी जोरदार बहस की और जज के सामने यह करीब-करीब प्रमाणित कर दिया कि, उसका मुवक्किल निर्दोष है; मगर जज की चेतना को संतोष नहीं मिला— उसने उसे १५ रोज की सजा सुनायी।

अदालत से बाहर निकलते ही वकील साहब को वारली मिल गया, बोला—"देख लिया न, ज्यादा बोलने का नतीजा? आपसे तो एक अपढ़-मूढ़ ही अच्छा, जो मौके पर चुप तो रहता है!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब मैंने मुसोलिनी को कैद से छुड़ाया

मेजर गुंड्रज की डायरी का एक लोमहर्षक अध्याय

★

२६ जून, १९४३ को फ्यूहरर की आज्ञा के अनसार स्थल-सेना, वायु-सेना और गुप्त पुलिस (एस० एस०) के पाँच अधिकारियों के साथ मैं फ्यूहरर के गुप्त निवास-स्थान में उपस्थित था। थोड़ी ही देर में धीमे कदमों से फ्यूहरर कमरे में प्रविष्ट हुए। उन्होंने हमारे मुख से हमारे सैनिक जीवन की जानकारी प्राप्त की और दो-एक प्रश्न पूछने के बाद शेष पाँचों व्यक्तियों को वापस भेज दिया।

जब हम दोनों अकेले रह गये, तो उन्होंने (हिटलर ने) मुझसे कहा—"एक बहुत महत्व का काम मैं तुम्हें सौंप रहा हूँ। मेरे परम मित्र मुसोलिनी के साथ उनके नरेश ने दगाबाजी की है और उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। मैं इटली के उस सपूत का साथ इस कठिनाई में नहीं छोड़ सकता। उन्हें तुरत मुक्त कराना है, अन्यथा उन्हें ब्रिटेन के हवाले कर दिया जायेगा। उन्हें मुक्त कराने की जिम्मेदारी मैं तुम्हें सौंपता हूँ। 'डचूस' (मुसोलिनी) कहाँ बंदी हैं, यह तुम्हें ही पता लगाना होगा। तुम्हें सारी बात पूर्णतया गुप्त रखनी होगी। मैं कामना करता हूँ कि, भाग्य तुम्हारा साथ दे!"

फ्यूहरर की वाणी में इतना विश्वास भरा था कि, मुझे उस समय एक क्षण के लिए भी यह शंका नहीं हुई कि, मैं असफल भी हो सकता हूँ। उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और भेंट समाप्त हो गयी।

बाहर आकर कुछ क्षणों में मैंने अपने विचारों को संयत किया और बर्लिन में अपने सहायक को टेलिफोन से ऐसे पचास व्यक्ति छाँटने को कहा, जिन्हें इतालवी भाषा आती हो। साथ ही, आवश्यक शस्त्रास्त्र और गोली-बारूद की व्यवस्था के लिए भी आदेश दे दिया।

अगले दिन मैं अपने उच्च अधिकारी जनरल स्टूडेंट के साथ हवाई जहाज से फ्रास्कार्ट पहुँचा। इटली में यह स्थान जर्मन सेनाओं का प्रधान केंद्र था। मेरे चुने हुए व्यक्ति भी वहीं आ गये।

मुसोलिनी के विषय में कई अफवाहें प्रचलित थीं। कुछ लोगों का कहना था कि, उन्होंने आत्महत्या कर ली है और कुछ का कहना था कि, वे सख्त बीमार हैं और किसी सेनेटोरियम में रखे गये हैं। लेकिन असलियत क्या थी, इसका कोई साक्ष्य नहीं था। २५ जुलाई को वे अपने नरेश से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलने गये थे। उसके बाद फिर दिखायी नहीं दिये। बस, इसके आगे कुछ भी पता नहीं चलता था।

कुछ दिन तक मेरे काम में कोई प्रगति नहीं हो सकी। फिर हमें मालूम हुआ कि, ड्यूस किसी 'क्रूजर' से किसी अज्ञात स्थान को भेजे गये हैं। मुझे आज्ञा मिली कि, मैं उन्हें जहाज से छुड़ा लाऊँ। चौबीस घंटे में बड़ी मुश्किल में पड़ा रहा; क्योंकि लड़ाकू जहाज के आदमियों की आँखों में धूल झोंक कर किसी को निकाल लाना बच्चों का खेल नहीं था। सौभाग्य से, अगले दिन सुबह ही यह निश्चित रूप से ज्ञात हो गया कि, मुसोलिनी कहीं और भेज दिये गये हैं।

फिर एक सूचना आयी कि, एक 'अत्यंत महत्त्वपूर्ण बंदी' सांता मादालेना द्वीप पर रखा गया है। मैंने मोटर-टारपीडो के एक बेड़े को अधिकृत प्रदेश के दौरे के रूप में द्वीप पर ले जाने की योजना बनायी। साथ ही, खुफिया-विभाग की कुछ और सुसज्ज नौकाएँ भी कोर्सिका से मेरे आदमियों को उसी समय वहाँ पहुँचा देनेवाली थीं।

२६ अगस्त को मैं अपने सहायक राडल के साथ, योजना के अनुसार, सांता मादालेना पहुँचा; लेकिन वहाँ ज्ञात हुआ कि, मुसोलिनी सबेरे ही हवाई जहाज-द्वारा वहाँ से प्रस्थान कर चुके थे।

शीघ्र ही मेरे जासूसों ने मुझे सूचना दी कि, लगभग निश्चित रूप से मुसोलिनी आब्रूजी पहाड़ों में एक होटल में बंदी हैं और इटालियन पुलिस का पहरा उन पर मुस्तैदी के साथ तैनात है।

कई दिन तक हम उस प्रदेश के सही नक्शे पाने के प्रयत्न करते रहे; क्योंकि होटल किसी नक्शे पर अंकित नहीं था।

आखिर, ८ सितम्बर को हम एक विमान से छानबीन करने निकले। हमने देखा कि, हमारा गंतव्य स्थल लगभग ६,५०० फुट ऊँचे पठार पर था, जिसके उत्तर-पूर्वी छोर पर ७,००० फुट ऊँची सासो चोटी खड़ी थी। भवन बहुत ही बड़ा दिखायी दे रहा था। राडल ने मेरी टाँगें पकड़ीं और मैंने खिड़की में लटक कर उस क्षेत्र की कुछ तस्वीरें खींचीं। होटल के पीछे मुझे एक तिकोना मैदान दिखायी दिया। मेरे दिमाग में यह विचार बिजली की तरह कौंध गया कि, हमारा

साहस

जहाँ सूरज नहीं पहुँच पाता,
वहाँ साहस पहुँच जाता है।
जहाँ बीज नहीं उग सकता,
वहाँ साहस के अंकुर जम जाते हैं।
जहाँ वरदान बाँझ हो जाता है,
वहाँ साहस पुत्ररत्न पाता है।
जहाँ भाग्य पराजित हो जाता है,
वहाँ साहस ध्वजा फहराता है।

—हाफ्तमैन (जर्मन कवि)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुक्ति-विमान इसी मैदान में उतरेगा।

रोम लौटने पर हमें मालूम हुआ कि, इटली की सरकार ने हथियार डाल दिये हैं और घर में लोग इस पर खुशियाँ मना रहे हैं। अब तो हमारे लिए और भी कठिनाई हो गयी।

मुसोलिनी वास्तव में उस होटल में थे, इसका निश्चय करने के लिए मैंने रोम के एक महत्वाकांक्षी डाक्टर की सहायता ली, जो इटालियन सैनिकों के इलाज के लिए नियुक्त था। उसने मेरी सलाह के अनुसार उस होटल के दौरे की योजना बनायी। कई दिन बाद लौट कर उसने बताया कि, होटलवाले स्थान को जाने के अंतिम रेल-स्टेशन तक ही वह जा सका। उसके आगे इटालियन पुलिस ने नाकेबंदी कर रखी थी। परंतु उसे यह अवश्य ज्ञात हुआ था कि, कुछ समय पहले वह होटल नागरिकों से खाली करवाया गया था और उसमें २०० सैनिकों के रहने की व्यवस्था की गयी थी। साथ ही, घाटी में कई उच्च अधिकारी उसी समय तैनात किये गये थे। कुछ ऐसे लोगों से भी उसकी भेंट हुई थी, जिनका विश्वास था कि, स्वयं मुसोलिनी उस होटल में बंदी थे।

हर घड़ी मुसोलिनी के स्थानांतरण का, या उन्हें 'शत्रु राष्ट्रों' के हवाले किये जाने का, खतरा बढ़ता जा रहा था। स्थलीय कार्रवाई से सफलता प्राप्त करने की तो तनिक भी आशा नहीं थी; क्योंकि उसमें पहरेदारों को हमारे आगमन की पूर्व-सूचना मिल जाती।

सफलता के लिए आवश्यक था कि, आक्रमण इस तरह किया जाये कि, उसकी आकस्मिकता से पहरेदार किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जायें। अतः सम्भावनाएँ दो ही थीं— या तो छतरीधारी सैनिक उतरें, या 'ग्लाइडर' विमान काम में लाये जायें। हमने बहुत विचार करके ग्लाइडरों का उपयोग करने का निर्णय किया। हमारी सारी योजना इस चीज़ पर आधारित थी कि, होटल के पिछवाड़े का तिकोना मैदान विमान उतारने के काम आ सकेगा।

मुसोलिनी और हिटलर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनरल स्टूडेंट ने सुझाव दिया कि, रात को एक छतरीधारी बटालियन घाटी में उतारी जाये और वह रेल-स्टेशन पर कब्जा कर ले। वह हमारे पृष्ठ-भाग की रक्षा का काम भी दे सकेगी और आवश्यकता हुई, तो लौटने का मार्ग भी हमारे लिए खुला रहेगा।

१२ सितम्बर को अपना काम करने के लिए मैंने और राडल ने योजना बनायी—हथियार वगैरह निश्चित किये और १२ ग्लाइडरों के उतरने के लिए 'उतराव-स्थल' का बड़ा नक्शा बनाया। हर विमान में चालक के अलावा दस सैनिक जानेवाले थे।

मैंने तीसरे ग्लाइडर में जाना तय किया, ताकि मेरे दल और चौथे दल के आक्रमण के बचाव के लिए दो दल पहले से वहाँ मौजूद रहें। पर यह हमें अच्छी तरह ज्ञात था कि, हमारी सफलता की सम्भावनाएँ अत्यंत क्षीण हैं।

अगले दिन लगभग बारह बजे, योजना के अनुसार, हमारे ग्लाइडर प्रस्थान के लिए पंक्तिबद्ध खड़े थे कि, साढ़े बारह बजे हवाई हमला हो गया। लगा, जैसे ऐन मौके पर योजना मिट्टी में मिल जायेगी; परंतु आक्रमण एक बजे से कुछ पहले ही समाप्त हो गया और हमारे ग्लाइडर सही-सलामत बच गये। फिर, एक बजे ग्लाइडर क्रम से रवाना होने लगे।

बादल छाये हुए थे। कोई चीज दिखायी नहीं दे रही थी। बादल पार होने के बाद हम स्वच्छ प्रकाश में पहुँच गये। तभी मेरे ग्लाइडर के चालक ने मुझे सूचित किया कि, पहला और दूसरा दल आगे नहीं है—अब कमान किसके हाथ में रहेगी? खबर बुरी थी। मुझे तब यह भी ज्ञात नहीं था कि, मेरे पीछे भी नौ के बदले सात ही दल हैं। दो ग्लाइडर रवाना होते समय, हवाई आक्रमण से हुए गड्ढों में पड़ कर, बिगड़ गये थे। हठात् कमान अब मुझे स्वयं ही सम्भालनी पड़ी।

ठीक वक्त पर हम एक्विला की घाटी के ऊपर थे और हमारी स्थल-गाड़ियाँ जमीन पर अपने गंतव्य की तरफ बढ़ रही थीं। मैंने उतरने की तैयारी की आज्ञा दी। तभी हमें मालूम पड़ा कि, जिस मैदान पर हमने उम्मीद बाँध रखी थी, वह पहाड़ी के ढाल पर था। उस पर उतरने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। मैंने ग्लाइडर को होटल के निकट-से-निकट 'क्रैशलैंड' करने का आदेश दिया। सबसे पहले मैं अपने हथियार सम्भाले हुए ग्लाइडर से तिरछा कूदा।

पहला इटालियन पहरेदार मुझे कोई ५० फूट की दूरी पर होटल के एक कोने पर खड़ा हुआ दिखायी दिया। वह हैरान था और मैं भागता हुआ उसके पास से गुजर गया। मेरे पहले किसी को गोली चलाने की आज्ञा नहीं थी। हम होटल तक पहुँच गये। वहाँ भी संतरी हमें देख कर हैरान हो गया। उसे 'हाथ ऊपर' करने की आज्ञा देकर हमने होटल में प्रवेश किया। एक इटालियन सैनिक रेडियो पर बैठा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। उसे ठोकर मार कर हमने गिरा दिया और रेडियो को चूर-चूर कर दिया। इस कमरे से होटल के अंदर जाने का आगे रास्ता नहीं था। इसलिए हम वापस बाहर निकले। भागते हुए हम होटल की दूसरी ओर पहुँचे और वहाँ अपने एक सैनिक के कंधों पर पैर रख कर मैं एक छज्जे पर चढ़ गया। दूसरे लोग मेरे पीछे-पीछे थे।

पहली ही मंजिल पर मुझे मुसोलिनी का जाना-पहचाना चेहरा दिखायी दिया। सामने से इटालियन सैनिक आ रहे थे। पिस्तौल के कुंदे से मार-मार कर मैं उनके बीच अपने लिए रास्ता बनाता हुआ आगे बढ़ा। दो मशीनगनें मिलीं, जिन्हें मैंने बेकार कर दिया। अब तक एक भी गोली नहीं चली थी।

ड्यूस की पत्नी

विगत की सबसे भाग्यशाली महिला, आज की सबसे निरीह नारी !

अब मैं हाल के अंदर था। पीछे क्या हो रहा था, इसकी मुझे जरा भी चिंता नहीं थी। दायीं ओर एक जीना मैंने देखा। उससे ऊपर पहुँच कर, दायें हाथ का पहला द्वार खोलते ही, मुझे दो इटालियन अफसरों के बीच खड़े हुए मुसोलिनी के दर्शन हुए। अफसरों को मैंने एक ओर हटा दिया। अपने आक्रमण के पहले दौर में हमने पूर्ण सफलता पायी थी। 'ड्यूस' हमारे हाथों में सुरक्षित पहुँच गये थे। इस सारी कार्रवाई में कुल तीन-चार मिनट लगे थे।

मैंने खिड़की से झाँक कर देखा कि, राडल तथा तीसरे और चौथे ग्लाइडर के सैनिक भागते हुए चले आ रहे हैं। उन्हें मैंने पहरे पर लगाया।

दूर गोलियाँ चलने की आवाजें आ रही थीं। होटल के सैनिक अधिकारी ने आत्म-समर्पण कर दिया। अब मैंने मुसोलिनी को अपना परिचय दिया और उद्देश्य प्रकट किया। उन्होंने मुझे गले लगा कर कहा– "मैं जानता था कि, मेरे मित्र हिटलर इस मुसीबत में मेरा साथ नहीं छोड़ेंगे।"

हमारी स्थलीय कार्रवाई भी सफल हो चुकी थी। रेल-स्टेशन हमारे हाथ में आ गया था। अब मुसोलिनी की सुरक्षा के लिए मैं उत्तरदायी था। प्रश्न यह था कि, उन्हें रोम कैसे ले जायें ?

सड़क से जाना खतरनाक था; क्योंकि बीच में ऐसा क्षेत्र पड़ता था, जिस पर इटालियन सेनाओं का अधिकार था और वे हथियार डाल चुकी थीं। अतः हवाई जहाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से ही जाना था। इसके लिए जनरल स्टूडेंट की सलाह से हमने तीन योजनाएँ बनायी थीं। पर पहली योजना रेडियो के काम न करने से त्यागनी पड़ी। दूसरी योजना के अनुसार विमान तो आया; मगर उतरते वक्त उसमें कुछ खराबी आ गयी; इसलिए यह योजना भी त्यागनी पड़ी। अंततः केवल तीसरी बची।

हथियार डाल देने के बाद इटालियन सैनिकों ने हमें काफी मदद दी। उन्होंने तीसरी योजना के विमान के उतरने के लिए उड़न-पट्टी साफ की। हवाई जहाज इस बीच आ गया और उतरने के लिए जगह हो जाने का इंतजार करने लगा। कुशलतापूर्वक वह उतरा। जहाज छोटा था, इसलिए उसके चालक कप्तान गर्लेख ने प्रस्ताव किया कि, अकेले मुसोलिनी को वह ले जा सकता था। यह मुझे स्वीकार नहीं था और खतरा उठा कर भी मैंने स्वयं भी जाना निश्चित किया।

मुसोलिनी सीट पर बैठे और मैं किसी तरह सिमट-सिकुड़ कर पीछे बैठा। जहाज रवाना हुआ; परंतु अभी वह जमीन से उठा भी नहीं था कि, उड़न-पट्टी का छोर आ गया और सामने था एक खड्ड। मैंने सोचा कि, यही अंत है। तभी एकाएक विमान ने धरती त्याग दी। परंतु तुरत ही उतरने का बायीं ओर का पहिया वापस पृथ्वी से जा टकराया। विमान एक ओर को झुक गया और अब हम सीधे खड्ड की ओर बढ़ने लगे। बायीं ओर जरा मुड़ कर हम उसके एक किनारे के ऊपर से निकले। मैंने आँखें बंद कर लीं।

सारी घटना तीन-चार सेकंड में ही घट गयी होगी; क्योंकि जब मैंने आँखें खोलीं, तब गर्लेख ने विमान को नियंत्रित और सीधा कर लिया था। हवाई जहाज की गति भी बढ़ रही थी।

...आखिर हम रोम के ऊपर उड़ान कर रहे थे। विमान खराब तो हुआ ही था; अतः बड़ी सावधानी बरतने के बाद वह उतर सका। तीन विमान वहाँ हमारा इंतजार कर रहे थे। एक से हम रवाना हुए और वियेना होते हुए म्युनिख पहुँचे। मुसोलिनी के परिवार को एक अन्य सैनिक-दल ने छुड़ा कर पहले ही वहाँ पहुँचा दिया था। मुसोलिनी फिर से अपने सगे-सम्बंधियों से जा मिले।

१५ सितम्बर को– मुझे आदेश मिलने के सात सप्ताह बाद – दोनों डिक्टेटर हिटलर के गुप्त सदर मुकाम में मिले। कुछ देर दोनों हाथ-में-हाथ डाले बातें करते रहे। फिर, हिटलर ने मुझे धन्यवाद दिया और मैंने सविस्तर सारी कार्रवाई उन्हें सुनायी। दो घंटे तक यह चर्चा जारी रही। हिटलर की कृतज्ञता का अंत ही नहीं था। उन्होंने कहा–"मैं तुम्हारा ऋण कभी नहीं भूलूँगा।"

*

मनहूस का सबसे बड़ा गुण यह है कि, वह नहीं जानता कि, वह मनहूस है। —शा

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असंस्कार

दक्षिण-महाराष्ट्र की बात है– काफी पुरानी। उन दिनों मैं कालेज का छात्र था। एक बार तीन-चार दिन की छुट्टियाँ बिताने मैं अपने एक मित्र के गाँव गया। उसका परिवार बड़ा सम्पन्न था और उसी के अनुरूप उसका मकान और रहन-सहन भी।

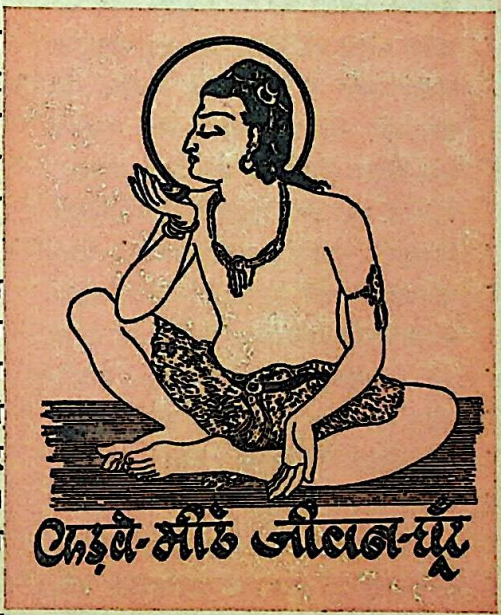

जिस दिन वहाँ पहुँचा, उसके दूसरे ही दिन मेरा मित्र मुझे अपने बगीचे के कुएँ पर नहाने के लिए ले गया। बड़ा अच्छा कुआँ था– काले पत्थर से बाँधा हुआ, खासा लम्बा-चौड़ा। नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ भी थीं। काफी देर तक हम उसमें तैरते रहे।

स्नान के उपरांत जब मैं बाहर निकला, तो मेरी नजर बगीचे के एक छोर से दूसरे छोर तक दौड़ने लगी। सचमुच मैं बहुत खिन्न हो गया, बगीचे की अवस्था देख कर। केवल आठ-दस पेड़ थे उसमें– बाकी सारा बगीचा उजाड़ पड़ा था। मैंने अपने मित्र से कहा–"ओह, कितना अच्छा बगीचा बन सकता था यह ! इसे इस तरह उजाड़ क्यों छोड़ दिया है ?"

मित्र ने आहत स्वर में कहना आरम्भ किया– "यह पहले उजाड़ नहीं था। मेरे पिताजी को बागबानी का बड़ा जबर्दस्त शौक था। उन्होंने इस बगीचे में तरह-तरह के फलों और फूलों के पौधे लगाये थे। उस समय इस बगीचे का रूप ही कुछ दूसरा था। मेरे पिताजी प्रायः गाँववालों को यहाँ बुलाते और फूलों का सुवास तथा फलों का स्वाद उन्हें ग्रहण कराते। प्रायः नित्य ही, यहाँ गाँववालों के साथ मेरे पिताजी की बैठक जमती थी। पर गाँववालों ने कुछ काल बाद अपना असंस्कार दिखाना शुरू कर दिया। अब वे सुबह-सुबह उठ कर पूजा के लिए फूल तोड़ने यहाँ आ जाते। शाम को भी मालाएँ गूँथने को यहाँ से फूल ले जाते। अब उनका भोजन भी थाल की जगह यहाँ के केले के चिकने पत्तों पर होने लगा। वे फल तोड़ते-तो-तोड़ते, डालियाँ और पत्ते भी तोड़ कर बगीचे में गिरा देते। पिताजी ने गाँववालों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुतेरा समझाया; पर सब यही कहते कि, वे कभी बगीचे की किसी चीज को हाथ नहीं लगाते। आखिर, एक दिन क्रुद्ध होकर पिताजी ने सभी केले के पत्तों को बाँस मार-मार कर फाड़ दिया, ताकि वे पत्तल के काम न आ सकें। पर इस पर भी गाँववाले न माने। वे केले के थम्भ की छाल नोच कर ले जाने लगे। उनके जानवर भी बगीचे में चराई करने लगे और सारे फूल के पौधे चर गये। पूरा बगीचा एकदम उजाड़-सा हो गया। और तब, पिताजी से न रहा गया। एक दिन, उन्होंने सभी गाँववालों को बगीचे में दावत दी और जब सब लोग खा-पी चुके, तो पिताजी ने उनके सामने ही मालियों से बगीचे के सारे पेड़ कटवा डाले– सभी पौधे उखड़वा दिये। तब से यह बगीचा उजाड़ पड़ा है। जो आठ-दस पेड़ अभी नजर आ रहे हैं, वे उस प्रलय के दिन छोटे थे और मालियों के हाथों से भाग्यवश बच गये थे! अन्यथा ये गरीब भी आज यहाँ नहीं होते!"

सुन कर मैं स्तब्ध रह गया। मेरे मुँह से आवाज न निकली। पर आज भी मैं सोचता हूँ कि, यदि गाँववाले अपने को इस तरह असंस्कारी साबित न करते और मेरे मित्र के पिताजी थोड़ी और धीरता के साथ परिस्थिति का सामना करते, तो गाँव की वह दिलकश रौनक क्या आज भी वैसी ही बनी न रहती?

—काका कालेलकर,
नयी दिल्ली

★

अंतर

चंद्रमा के दो बेटियाँ थीं—आँधी और पवन। चंद्रमा को पवन बड़ी प्रिय थी और आँधी को पिता का यह पक्षपात भाता नहीं था। चंद्रमा आँधी के इस रुख को ताड़ गये और उन्होंने उसे आत्म-निरीक्षण का एक अवसर दिया। एक दिन उन्होंने दोनों बेटियों से कहा—"जाओ, पारिजात की सात परिक्रमा करके आओ।" आँधी बात-की-बात में परिक्रमा करके आ खड़ी हुई। पवन को समय लग गया; किंतु जब वह आयी, तो सारा भवन मधुर गंध से महक उठा। चंद्रमा ने आँधी से कहा—"देखा न, बेटी! अत्यधिक तेज गति खाली झोली लेकर ही लौटती है, जब कि स्वाभाविक गति की झोली मनोमुग्धकारिणी गंध से महकती रहती है।" —स्विस कथा

नास्तिक

यह घटना गोआ की है, जहाँ मेरा सारा बचपन बीता। आर्द्रा, मृगशिरा और पुनर्वसु नक्षत्रों के बीत जाने पर वहाँ के लगभग सारे कुएँ भर जाते हैं —गिर्जाघरों के सामने बनाये गये छोटे-छोटे कुंड तो पृथ्वी की सतह तक भर आते हैं और बच्चे उनमें कूद-कूद कर नहाते हैं। फिर, संत जान के उत्सव के दिन तो बच्चों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का यही काम ही रहता है कि, वे 'संत जान की जय' कह कर कुंड में कूद जायें और फिर बाहर निकल आयें। वे बार-बार इस क्रिया को दुहराते हैं। जिस समय यह घटना घटी, उस समय मेरी अवस्था लगभग १२ साल की थी और मैं स्कूल में पढ़ता था। उस दिन– संत जान के उत्सव के दिन– जब मैं स्कूल से लौट रहा था, तब देखा कि, गिर्जाघर के सामने के कुंड में मेरे कुछ परिचित लड़के नहा रहे हैं। वहाँ पहुँचा, तो उनमें से एक ने कहा– "आओ, तुम भी लगा लो दो-चार डुबकियाँ!" मैंने गर्वपूर्वक कहा–"मैं धर्म-ईश्वर नहीं मानता। तुम्हीं अपने संत को स्मरण कर-करके डुबकियाँ लगाओ!" इस पर लड़कों ने मुझे समझाया कि, यह कोई जरूरी नहीं है कि, धर्म-ईश्वर मानने-वाला ही कुंड में नहाये। "तुम नहीं मानते, न सही– नहाने में क्या हानि है? कितना मजा आता है इसमें नहाने में!"– उनमें से एक ने कहा, तो मैंने दूसरी कठिनाई प्रस्तुत कर दी–"मुझे तैरना भी तो नहीं आता!" इस पर, मुझसे भी एक छोटे लड़के ने उत्साह के साथ कहा–"मुझे भी कहाँ तैरना आता है। पर यह देखो!" कह कर उसने कुंड में छलाँग लगायी और दूसरे क्षण बाहर निकल आया। इससे मुझे भी थोड़ा उत्साह मिला और मैं कपड़े उतार कर कुंड में कूद पड़ा। पर यह क्या, मैं तो ऊपर आने के बजाय नीचे ही फड़फड़ाने लगा। बहुत चेष्टा करने पर भी मैं ऊपर नहीं आ पा रहा था– नाक-मुँह से होकर पेट में पानी भरा जा रहा था, सो अलग। मरता क्या न करता, बाहर निकलने के लिए मैंने जी-जान लगा दी और बहुत देर बाद इसमें मुझे सफलता भी मिल गयी। मैं पानी की सतह पर आ गया; पर दुर्भाग्यवश कुंड के ठीक बीचो-बीच, जहाँ से किसी किनारे को पकड़ सकना बिल्कुल ही असम्भव था। परिणामतः मैं फिर नीचे चला गया। अब तक मैं पानी तो काफी पी ही चुका था, थक भी बहुत गया था। मैंने अपने जीवन की आशा छोड़ दी और तभी न-जाने किस प्रेरणा से मेरे मन की आवाज मेरे कानों में गूँज उठी–"हे भगवान्! अब मैं मरता हूँ!" पर आश्चर्य, दूसरे ही क्षण मैंने अनुभव किया कि, मेरे दोनों पैरों के बीच किसी ने अपनी गर्दन लगा दी है और मैं ऊपर की ओर उठ रहा हूँ। सचमुच, मेरा एक मित्र मुझे अपने कंधों पर सम्भाल कर बाहर ला रहा था। बाद में पता चला, सभी लड़के जब अपने प्राणों के भय से मुझे बचाने के लिए कुंड में नहीं कूद रहे थे, तब मेरा वह मित्र उधर आ निकला था और सारा हाल सुन कर कुंड में कूद पड़ा था। उसी दिन से मैं ईश्वर की सत्ता को मानने लगा; पर मेरा वह मित्र, जिसने मुझे बचाया, अब भी नास्तिक ही है। वह इसे निरा संयोग कहता है!

–जी० के० श्रेष्ठ, बम्बई

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीख

तीन वर्ष पहले भारतीय संगीतकारों का जो शिष्टमंडल चीन गया था, उसमें एक तबला-वादक की हैसियत से मुझे भी स्थान मिला था। पेकिंग में हमें एक बड़े भव्य होटल में ठहराया गया, जहाँ हमारे सेवा-सत्कार की बड़ी सुंदर व्यवस्था की गयी थी। वह दिन बड़े मजे में हँसते-खेलते कट गया और रात होने पर हम लोग अपने-अपने बिछौनों पर जा पड़े। पर दूसरे दिन तड़के ही कुछ 'खुट्-खाट्' की आवाज सुन कर मेरी नींद टूट गयी और मैंने किंचित् रोष के साथ उस ओर देखा, जिधर से आवाज आयी थी। एक चीनी युवती कमरे की झाड़-पोंछ कर रही थी। मुझे ताकते देख, वह अपने को मानो अपराधिनी-जैसी अनुभव करने लगी। उसने दोनों हाथ जोड़ कर मुझसे क्षमा माँगी और पुनः सो जाने का मुझसे अनुरोध किया। मैंने सोचा कि, होटल की परिचारिका होगी, सो मैंने उसकी क्षमा-याचना और अनुरोध पर कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया। उस चीनी युवती ने कमरे की सफाई करने के बाद मेरी जूतियाँ साफ कीं और उसके बाद चली गयी। पर उसी दिन शाम को जो सांस्कृतिक समारोह हुआ, उसमें वह युवती बिल्कुल ही दूसरे रूप में मुझे दिखायी पड़ी। वह काफी कीमती कपड़े पहने थी और देखने में पढ़ी-लिखी-सी लग रही थी। मेरा कौतूहल जागा, सो उसका परिचय पुछवाया। और, जब दुभाषिये ने मुझे उसका परिचय दिया, तो सच मानिये, मुझे काठ-सा मार गया। वह पेकिंग-विश्वविद्यालय की रिसर्च-स्कालर थी और भारतीय कलाकारों के सेवा-सत्कार के लिए उसने स्वयंसेविकाओं में अपना नाम लिखवाया था। मैंने तुरत उससे अपने सुबह के व्यवहार के लिए क्षमा-याचना की; पर उसने मेरे हाथ पकड़ लिये; बोली—"क्षमा-याचना करके कृपया मुझे लज्जित न कीजिये। सबेरे मुझसे असावधानी हो गयी थी!" तभी मुझे अपने देश के युवकों और युवतियों का स्मरण हो आया, जो अच्छे-से-अच्छे कलाकारों को भी 'हूट' करने में गौरव अनुभव करते हैं और जूते-चप्पलों तथा सड़े अंडों का उन्हें उपहार देते हैं!

—मुन्नेखाँ (उस्ताद), लखनऊ

स आत्महत्यां कृतवान् महाकविः प्राप्तंच येनात्र समस्त वस्तु।
स्युस्तेन काव्यानि हि श्रावितानि नूनं कदाचिद्रसशून्यसन्निधौ॥

—क्या कहा? सांसारिक सभी सुख जिसे प्राप्त थे, उस 'रससिद्ध' महाकवि ने आत्महत्या कर ली? हाय, हाय! अवश्य बेचारे को कहीं किसी अरसिक के सामने कविता सुनानी पड़ी होगी।

—सुभाषित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यूफोरिमीटर से प्रसन्नता मापिये

रसमयता में डुबो कर श्रीकृष्णदत्त भट्ट-लिखित एक मनोविज्ञान-सम्बंधी लेख

हाँ, प्रसन्नता भी मापी जा सकती है! उसे मापनेवाले पैमाने का नाम है— यूफोरिमीटर!

थर्मामीटर शरीर की गर्मी मापता है, तो यूफोरिमीटर आपके दिल की गर्मी-सर्दी मापता है। जरा इसके खास-खास गुण भी सुन लीजिये—

१. यह ठीक-ठीक बता देगा कि, आप कितने प्रसन्न हैं, कितने अप्रसन्न।

२. यह बता देगा कि, आप कल के मुकाबले में कम प्रसन्न हैं, या अधिक।

३. यह बता देगा कि, आज आप कितने प्रसन्न हैं, इस हफ्ते में कितने प्रसन्न रहे, इस महीने में कितने प्रसन्न रहे और आप प्रसन्नता की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं कि, अप्रसन्नता की दिशा में!

४. यह बता देगा कि, आपकी अप्रसन्नता के मुख्य कारण क्या-क्या हैं!

× × ×

बात है, सन् १९३० की। कोलम्बिया-विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक डाक्टर गुडदिन वाटसन ने पहले-पहल अपना एक शोध प्रकाशित किया, नाम रखा—'सेल्फ एस्टीमेट्स आव हैपीनेस'। इसमें उन्होंने ५०० नवजवानों और नवयुवतियों पर कई साल तक किये गये अपने प्रयोगों का विवरण छापा था। यह था, प्रसन्नता को मापने का पहला शोध।

फिर सन् १९३१ में वाटसन साहब के ही सहयोगी डाक्टर रेनडोल्फ सी० सेलर ने १७ से २२ साल की उम्र के ५०० युवकों की प्रसन्नता मापी, जिसके परिणाम कोलम्बिया-विश्वविद्यालय ने छापे। इस पुस्तक का नाम है— 'हैपीनेस सेल्फ एस्टीमेट्स आव यंगमेन'।

तीसरा शोध था, डाक्टर मार्गरेट सिडनी क्वायली का। आपने ६३ 'संतुष्ट' और ६१ 'असंतुष्ट' स्टेनोग्राफरों की हालत की जाँच की। यह शोध भी कोलम्बिया-विश्वविद्यालय ने १९३५ में छापा और इसका नाम रखा—'सम ऐस-पेक्ट्स आव सैटिसफैक्सन इन वोकेशन आव स्टेनोग्राफी'।

वाटसन साहब के शोध में दो बातें बड़े मार्के की थीं—

१. किसी भी वस्तु से आप प्रसन्नता की जो मात्रा प्राप्त करते हैं, वह आपके मानने पर निर्भर करती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२. आप अपनी प्रसन्नता या अप्रसन्नता की अभिव्यक्ति विशेषणों में करते हैं। उसके लिए न तो आप संज्ञा का उपयोग करते हैं और न क्रिया का।

वाटसन के काम को आगे बढ़ाया, डाक्टर हार्नेल हार्ट ने। न्यूयार्क की मैकमिलन कम्पनी ने आपके शोध का परिणाम छापा और पुस्तक का नाम रखा—'चार्ट फार हैपीनेस'।

'यूफोरिमीटर' इन्हीं हार्ट साहब-द्वारा आविष्कृत है। यूनानी 'यूफोरिया' से यह शब्द बनाया गया है। 'यूफोरिया' का अर्थ है, 'प्रसन्नता'।

डाक्टर हार्ट ने २,२०० व्यक्तियों को यूफोरिमीटर की इस कसौटी पर कसा और बड़े आश्चर्यजनक नतीजे निकाले। आप-हम, कोई भी व्यक्ति इस कसौटी पर अपने को कस सकता है।

हाँ, एक बात है। थर्मामीटर के विपरीत, इस यूफोरिमीटर के कसने का काम स्वयं आपको ही करना होगा। आप ही नम्बर देंगे और नतीजा भी आप ही निकालेंगे।

प्रसन्नता के कई स्तर हैं--

१. साधारण स्तर। मोटे तौर पर आप प्रसन्न हैं या नहीं?

२. वर्तमान स्तर। इस समय, आज, इस हफ्ते, इस महीने आप कितने प्रसन्न हैं?

३. विभिन्न क्षेत्रों के स्तर— जैसे, प्रेम के क्षेत्र में, विवाह के क्षेत्र में, परिवार के क्षेत्र में, व्यवसाय के क्षेत्र में, मनोरंजन के क्षेत्र में, मित्रों के क्षेत्र में, आदि।

आइये, हम साधारण स्तर की प्रसन्नता को ही लें। हार्ट साहब का यूफोरि-मीटर हमारे सामने है। इसमें सात प्रश्न हैं। इन प्रश्नों का उत्तर दीजिये और अपने नम्बर निकालिये। हर विशेषण के ऊपर नम्बर अंकित हैं। आनंद की प्रवृत्तियाँ धनात्मक हैं और नैराश्य की प्रवृत्तियाँ ऋणात्मक।

प्रश्न १—आप कैसा महसूस करते हैं?

अत्यधिक उत्साहशून्य	—२००
कुछ हताश	—१००
न हताश, न उत्साही	०
साधारणतः उत्साही	१००
आनन्द से उत्फुल्ल	२००

प्रश्न २ — आपका वर्तमान जीवन-क्रम कैसा है?

इससे बचना चाहते हैं	— २००
पलायनवादी वृत्ति	— १००
मध्य-स्थिति	०
आधी से अधिक स्थायी वृत्ति	१००
ज्यों-की-त्यों बढ़ने देने की वृत्ति	२००

प्रश्न ३— भविष्य के बारे में आप चिंतित रहा करते हैं?

हाँ	—१००
नहीं	१००

प्रश्न ४— क्या आप सोचते हैं कि, आज आप जितने प्रसन्न हैं, उससे अधिक प्रसन्न आपको होना चाहिए?

हाँ	—१००
नहीं	१००

प्रश्न ५— पिछले साल आपको कितनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बार आत्महत्या के विचार को अपने मन से निकालना पड़ा ?

बिल्कुल नहीं	०
एक बार	–५०
कई बार	–१००
प्रायः	–२००

प्रश्न ६– आपका स्वभाव छुई-मुईवाला है या अधिक स्थिर ?

छुई-मुईवाला	–१५०
अधिक स्थिर	०

प्रश्न ७– किसी बात के बारे में आप अपने को अपराधी-जैसा महसूस करते हैं ?

प्रायः कभी नहीं	+१००
एकाध बार	०
अधिक बार	–५०
प्रायः हर समय	–१००

अब आप इन सभी प्रश्नों के नम्बर जोड़ लीजिये। ऋणवाले एक तरफ जोड़िये धनवाले दूसरी तरफ। धनवाले नम्बर अधिक हों, तो उसमें ऋणवाले नम्बर घटा दीजिये। उत्तर धन में आयेगा।

ऋणवाले नम्बर अधिक हों, तो उसमें धनवाले नम्बर घटा दीजिये। अब उत्तर ऋण में आयेगा।

अब आप देखिये कि, आप कहाँ हैं ?

डाक्टर हार्ट का कहना है कि, उनके इस यूफोरिमीटर का नतीजा इस प्रकार है—

सबसे अधिक प्रसन्न	६५०
अत्यधिक प्रसन्न	४०० से ऊपर
साधारण से अधिक प्रसन्न	२०० से ४००
साधारण प्रसन्न	० से २००
कुछ दुःखी	० से –२००
अत्यधिक दुःखी	–२०० से अधिक

× × ×

प्रश्नावली का एक-एक प्रश्न विचारणीय है। पहला प्रश्न कहता है कि, आप अपने-आप को कैसा महसूस करते हैं ? आप अपने को कितना प्रसन्न महसूस करते हैं ? आप अपने में कितनी स्फूर्ति पाते हैं ?

यदि आज आपमें कम स्फूर्ति और उत्साह है, तो परवाह नहीं। आप कोशिश कीजिये उसे बढ़ाने की और देखिये, आपके नम्बर बढ़े बिना न रहेंगे।

दूसरा प्रश्न कहता है कि, आपका जो जीवन-क्रम चल रहा है, उसके बारे में आपकी धारणा कैसी है ? आप उसे पसंद करते हैं या नहीं ? उसे आप बदलना चाहते हैं, तो कितना ? उससे आप यदि भागना चाहते हैं या उसे बिल्कुल बदलना चाहते हैं, तो यह ठीक नहीं। उसे सहज गति से बढ़ने दीजिये। उसमें रस लीजिये।

तीसरा प्रश्न है कि, क्या आप भविष्य के बारे में चिंतित रहा करते हैं ? भविष्य के बारे में सोचते रहना अप्रसन्नता बढ़ाने का कारगर साधन है। आपको ऐसी कुटेव लग गयी है, तो उसे अभी जल्दी-से-जल्दी छोड़ दीजिये। अपना कर्तव्य-कार्य करते जाइये। भविष्य की चिंता भविष्य खुद ही कर लेगा।

चौथे प्रश्न में आपकी प्रसन्नता परखी गयी है। आप आज से अधिक प्रसन्न रहने को उत्सुक हैं। इससे जाहिर है कि, आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन से असंतुष्ट हैं और यह खतरे की बात है। खूब प्रसन्न रहिये। अपनी प्रसन्नता में कोई कमी मत महसूस कीजिये।

पाँचवाँ प्रश्न कहता है कि, आप जीवन से ऊब कर अपना ही खात्मा कर डालने की गंदी बात तो नहीं सोचने लगते? अमेरिका में यह रोग बुरी तरह बढ़ा हुआ है। वहाँ साल में सोलह हजार व्यक्ति आत्महत्या कर डालते हैं।

अमरीकी मनोवैज्ञानिक इसके निम्न कारण बताते हैं—

१. निरंतर शोक और विषाद की भावना का बना रहना।

२. निराशा की भावना की बार-बार चर्चा करते रहना।

३. मन पर चतुर्दिक दबाव।

४. सामाजिक सम्पर्कों से पलायन।

५. अरक्षा की अनुभूति।

६. अत्यधिक मदिरापान।

७. दीर्घकालीन अनिद्रा।

८. चित्त को एकाग्र करने की दिशा में असमर्थता।

यदि प्रश्नकर्ता में ऐसे एकाध भी लक्षण दीख पड़ें, तो उसे सावधानी से दूर कर डालना चाहिए।

छठा प्रश्न कहता है कि, आपका मिजाज घड़ी के पेंडुलम की तरह तो नहीं है? आप पल-भर में नाराज तो नहीं हो जाते? मन के संतुलन को पल-पल पर बदलना ठीक नहीं। मिजाज जरा स्थिर रहना चाहिए। आपकी आदत ऐसी नहीं है, तो इसे सुधारिये। गुस्से और नाराजी के हाथ में खिलौना मत बनिये। देखिये, आपकी प्रसन्नता का धन-नम्बर कितनी तेजी से ऊपर उठता है।

सातवाँ प्रश्न कहता है कि, आप अपने को अपराधी तो नहीं महसूस करते रहते? 'मो सम कौन कुटिल खल कामी' की भावना यों एक दृष्टि से भले ही अच्छी मान ली जाये; पर यदि वह मनुष्य में हीनता की भावना जगाये, तो बुरी है।

गलती हो गयी, तो हो गयी। उसका सर्वोत्तम प्रायश्चित्त यही हो सकता है कि, उसकी पुनरावृत्ति न की जाये। उस पर बार-बार सोचते रहना, दुःखी होते रहना, गलत है। उससे मनुष्य की प्रसन्नता में घुन लग जाता है। खबरदार रहिये। अपनी प्रसन्नता में कभी भूल कर भी घुन न लगने दीजिये।

ये सातों सवाल आपकी कसौटी हैं। इस कसौटी पर आप अपने-आपको कसिये और देखिये कि, आप कहाँ खड़े हैं?

मैंने उस दिन अपने-आप से ही शुरुआत की, तो नतीजा निकला ४४०।

डाक्टर हार्ट के अनुसार ४४० का आँकड़ा अत्यधिक प्रसन्नता का सूचक है।

अब आप? निकालिये अपने नम्बर! यदि आपको कम नम्बर मिलें, तो भी कोई हर्ज नहीं। प्रसन्नता तो अपने हाथ की चीज है। वह जरूर बढ़ायी जा सकती है। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि, आप उस दिशा में कदम बढ़ायें!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदिम पाप

यशपाल के कथा-शिल्प की एक मर्म-आलोड़िनी भावमूर्ति

१९४२ के अप्रैल की बात है। फादर सेबिल सुबह नौ बजे की गाड़ी से विड़िन्नरा स्टेशन पर उतरे। वे रोमन-कैथोलिक-संघ की ओर से विड़िन्नरा के समीप निष्कलंक कुमारी माता मरियम के पुरातन गिरजे की इमारतों और सम्पत्ति का निरीक्षण करने आये थे। फादर सेबिल एक लम्बा सफेद चोगा पहने स्टेशन से निकले। कमर में पद की सूचक रस्सी बँधी थी। चेहरे पर अनुभव की साक्षी लम्बी खिचड़ी दाढ़ी और माथे पर विचार की रेखाएँ। उनके कंधे से लटकते झोले में बहुत-सी पुस्तकें थीं। दूसरी बगल में कम्बल में लिपटा छोटा-सा बिस्तर था।

बिड़िन्नरा स्टेशन से बाहर निकल, उन्होंने यात्रियों की प्रतीक्षा में खड़े तीन-चार ताँगों की ओर दृष्टि डाली। माता मरियम के पर्व का समय नहीं था, इसलिए सवारियाँ कम ही थीं। मौजूद ताँगों में से उन्हें रोजेरियो का साफ-सुथरा ताँगा ही अपने-योग्य जँचा। फादर सेबिल उसके ताँगे की ओर बढ़ आये और छः मील दूर स्थित माता मरियम के गिरजे तक जाने का किराया पूछा। रोजेरियो ने बहुत संयत ढंग से उत्तर दिया—"फादर, माता मेरी के गिरजे तक जाने का किराया एक रुपया है।"

ताँगेवालों के सदा ही उचित से अधिक किराया माँगने और भाव-ताल करने के अनुभव के कारण फादर सेबिल ने मुस्करा कर पूछा—"क्या यही उचित किराया है?"

"फादर, मैं एक गरीब पापी हूँ"—रोजेरियो ने विनय से उत्तर दिया—"परंतु यथाशक्ति पाप से बचने का ध्यान रखता हूँ। मैं झूठ नहीं बोलता।"

फादर सेबिल ने खिचड़ी हुई दाढ़ी-मूँछ में छिपे होंठों पर आती मुस्कान को और भी छिपा लिया तथा ताँगे पर बैठ गये। रोजेरियो साधारण ताँगेवालों के अभ्यास के विरुद्ध, घोड़ी को गाली दिये या ललकारे बिना और सवारी से भी कोई बात न कर संयत भाव से ताँगा हाँके जा रहा था। उसकी नजरें सामने सड़क पर थीं। फादर सेबिल को विस्मय हो रहा था कि, यह व्यक्ति कोई बात क्यों नहीं कर रहा है। सो, उन्होंने रोजेरियो से पूछा—"पुत्र, तुम स्वस्थ तो हो?"

"हाँ धर्मपिता, आपके आशीर्वाद से मेरे शरीर में कोई कष्ट नहीं है!"

"तब तुम्हारे मन में कोई कष्ट है?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

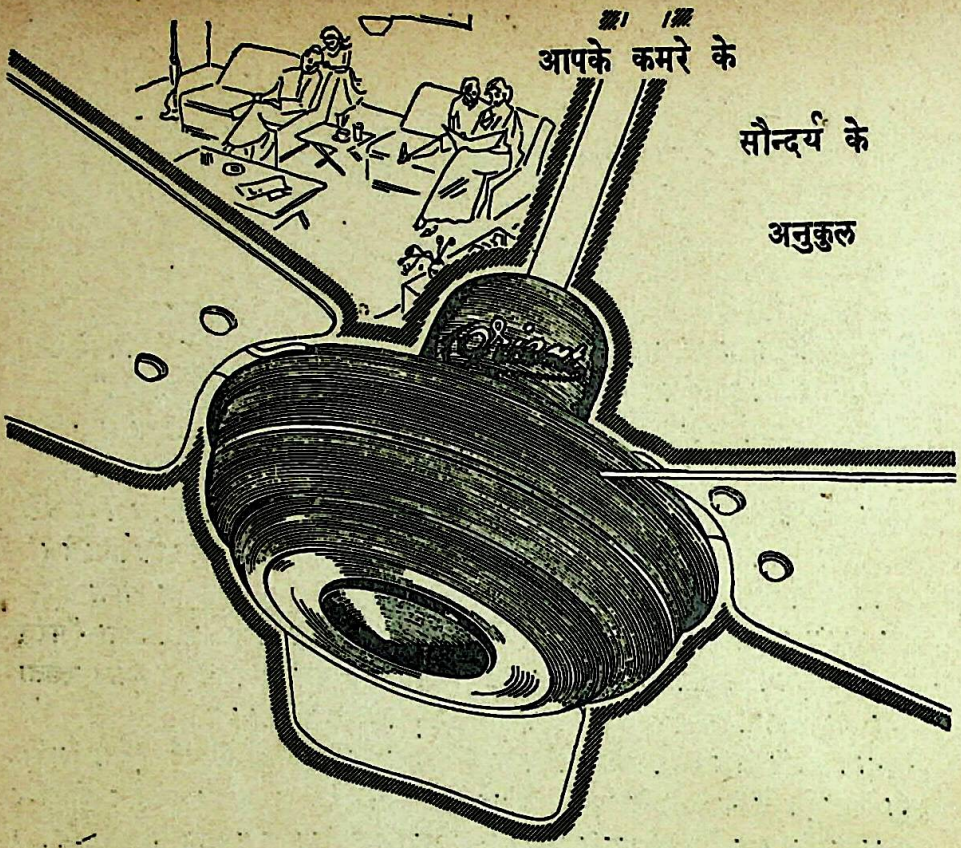

आपके कमरे के

सौन्दर्य के

अनुकुल

ओरिएन्ट पंखे के नवीन डिजाइन से जिस उन्नत दृष्टिकोण का परिचय प्राप्त होता है, वह इस उद्योग के क्षेत्र में अभूतपूर्व है।

जिससे आपके कमरे तथा उसके सारे असबाब का सौन्दर्य बना रहे, वैसा पंखा ही ओरिएन्ट के डिजाइनरों ने बनाया है। गठन-सौन्दर्य का आभिजात्य और मोती-सा शुभ्र सदास्थायी स्टोव एनामेल फिनिश इस पंखे की विशेषता है। पंखा क्या है, मानो भास्कर्य का एक नमूना हो। आनन्द के स्रोत इस पंखे में कला-कौशल का उत्कर्ष सम्पन्न हो गया है।

Orient FANS

ओरिएन्ट पंखा— सौन्दर्य और सेवा में सदा अग्रगामी

ओरिएन्ट जेनरल इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

६, घोर बीबी लेन कलकत्ता-१९

OG-478

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—कुछ सोच कर फादर ने पूछा।

"नहीं, धर्मपिता! मेरा मन भी स्वस्थ है; क्योंकि मैं व्यर्थ इच्छाएँ नहीं रखता!"

फादर सेबिल मन-ही-मन मुस्कराये; उसका नाम पूछ कर बोले—"पुत्र, व्यर्थ इच्छा से तुम्हारा क्या अभिप्राय है? क्या तुम्हारे मन में कोई कामना नहीं है?"

रोजेरियो ने उत्तर दिया—"धर्मपिता, मैं और मेरी गरीब पत्नी नित्य धर्म-पुस्तक का पाठ करते हैं। हम दोनों की केवल एक इच्छा है कि, निष्कलंक कुमारी माता की कृपा से, पापियों के लिए अपना जीवन देनेवाले भगवान् के पुत्र हमें शीघ्र अपने चरणों में स्थान दें और हम दोनों निष्पाप रहते हुए उनके सम्मुख उपस्थित हो सकें।"

अंतर्लीना

[चित्र : जैनुल आबेदिन के एक चित्र की सरल अनुकृति]

फादर सेबिल के मन में रोजेरियो के प्रति गहरी सहानुभूति उत्पन्न हुई। उन्होंने पूछा—"पुत्र, क्या तुम दोनों सदा मृत्यु की ही प्रतीक्षा करते रहते हो?"

रोजेरियो ने भावशून्य स्वर में उत्तर दिया—"आप ठीक कहते हैं। यह संसार पापमय है। पाप के परिणाम से जन्म लेनेवाले मनुष्य से सदा ही पाप हो जाने की आशंका रहती है, इसलिए..."

फादर सेबिल का मन रोजेरियो के प्रति करुणा से भीग गया। उन्होंने पुनः प्रश्न किया—"पुत्र, भगवान् ने आशीर्वाद-रूप तुम्हें कितनी संतानें दी हैं?"

रोजेरियो ने निपराध व्यक्ति के गर्व से उत्तर दिया—"धर्मपिता, मैं और मेरी गरीब पत्नी 'आदिम पाप' (आरिजिनल सिन) से बचने के लिए संयम का जीवन व्यतीत करते हैं। हमारे कोई संतान नहीं है।"

रोजेरियो के निष्पाप जीवन और मृत्यु की कामना की घोषणा से फादर सेबिल की साँस आधे में रुक गयी। कुछ देर तक सोचते रहने के बाद उन्होंने पूछा—"पुत्र, इस पृथ्वी पर तुम्हारे जीवन का प्रयोजन क्या है?"

रोजेरियो ने उत्तर दिया— "धर्मपिता, इस पृथ्वी पर हमारे जीवन का प्रयोजन, निष्पाप रह कर स्वर्ग में भगवान् के पुत्र के राज्य में स्थान पाना है।"

फादर सेबिल की गम्भीरता और बढ़ गयी। उन्होंने कहा— "पुत्र, रोजेरियो, धर्मपिता से संकोच उचित नहीं। सच कहो, क्या तुम्हारा पारिवारिक जीवन सुखी है?...क्या तुम्हारी पत्नी तुमसे कलह नहीं करती?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चुनी हुई वर्जीनिया तम्बाकू
विशिष्ट मिश्रण
सुमधुर स्वाद
मृदु-मधुर सुवास

यानी एक मनपसन्द धूम्रपान

पनामा आपको आख़िरी
क़श तक मज़ा देती हैं!

GTC
GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD.

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता :
गोल्डन टोबेंको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई २४
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

Greens' Adv'g.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"नहीं, धर्मपिता! वह बहुत धर्मभीरु है।"

"कभी कलह नहीं करती?"

"नहीं!"

"तुम्हारा विवाह हुए कितने वर्ष हुए?"

"बारह वर्ष, धर्मपिता!"

"बारह वर्ष में एक बार भी कलह नहीं हुई?"– फादर विस्मय में बड़बड़ाये। पर उनके चेहरे का भाव अविश्वास अथवा विस्मय का नहीं, गहरी करुणा का था। वे देर तक सोचते रहे। इस बार रोजेरियो ने ही प्रश्न किया–"धर्म-पिता! मेरा विश्वास है, मेरा जीवन निष्पाप है और भगवान् मुझसे प्रसन्न हैं।"

फादर सेबिल ने गम्भीर चेहरा उठा कर करुण स्वर में उत्तर दिया– "मुझे दुःख है, पुत्र! भगवान् तुमसे प्रसन्न नहीं हैं।"

रोजेरियो निष्प्रभ नेत्रों से फादर की ओर देखता रह गया; पर उसका चेहरा भावों के परिवर्तन से इतना शून्य था कि, यह निराशा भी उस पर प्रकट न हुई।

"नहीं पुत्र, भगवान् तुमसे प्रसन्न नहीं हैं!"–फादर सेबिल ने दृढ़ता से अपनी बात दुहरायी–"अगर तुम भगवान् की कृपा चाहते हो, तो तुम्हें धर्मपिता का आदेश मानना पड़ेगा। मेरा आदेश मानोगे?"

"कोई भी धर्मभीरु व्यक्ति धर्मपिता के आदेश की अवहेलना नहीं कर सकता!" –रोजेरियो ने विश्वास दिलाया–"मैं धर्मपिता का आदेश अवश्य मानूँगा।"

फादर सेबिल ने चेतावनी के लिए तर्जनी उँगली उठा कर समझाया– "तुमने भगवान् को प्रसन्न करने के लिए पतीस वर्ष की आयु तक धर्म का पालन किया है। आज तुम्हें अपने विश्वास और ज्ञान का उपयोग न कर मेरे आदेश का ही पालन करना होगा।..."

रोजेरियो ने विश्वास दिलाया कि, वह आदेश का पालन करेगा।

अब फादर ने प्रश्न किया–"पुत्र, तुमने कभी शराब पी है? कभी सिगरेट पी है तुमने?"

रोजेरियो ने धर्मपिता को उत्तर दिया कि, उसने कभी सिगरेट नहीं पी। गिरजा-घर में उपासना के समय, मनुष्यों की रक्षा के लिए बहाये भगवान् मसीह के रक्त के प्रतीक-स्वरूप, पवित्र मदिरा के आचमन के अतिरिक्त उसने कभी शराब भी नहीं पी।

फादर सेबिल ने पूछा–"तुम्हारे इस नगर में शराब बिकती है?

"हाँ, धर्मपिता!"–रोजेरियो ने कहा।

"तब, आज संध्या-समय घर लौटते वक्त तुम शराब के ठेके से एक छटाँक शराब पीकर जाना। फिर, घर जाकर खाना पकाने के बर्तनों में से कोई नितांत आवश्यक चीज ऐसी जगह फेंक देना कि, तुम्हारी पत्नी को खोजने पर भी न मिल सके। हाँ, घर लौट कर तुम एक सिगरेट अवश्य पीना। खोये हुए बर्तन के सम्बंध में पत्नी चाहे जितना पूछे, दो घंटे से पहले उसे बर्तन का पता न देना। दो घंटे के बाद जो सूझे, अथवा जैसा मन चाहे,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझदार लोग कह गये हैं कि पुरानी रीतियों पर बेकार अड़े रहने में नुक़सान ही नुक़सान है। ऐसा करनेवाले अपने जीवन के नये-नये सुखों को आपने ही हाथों खो बैठते हैं।

उदाहरण के लिए वनस्पति की ही बात लीजिए। आपने लोगों को कहते सुना होगा, "भई, हम तो वनस्पति इस्तेमाल ही नहीं करते" या "हमने सुना है कि वनस्पति स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता"। यह तो एक बड़ी पुरानी धारणा है। आज के वैज्ञानिक सिद्ध कर चुके हैं कि हमारे स्वास्थ्य के लिए स्निग्ध पदार्थ बहुत ज़रूरी हैं और यह भी कि वनस्पति एक बहुत ही पुष्टिदायक और साफ़-सुथरा स्निग्ध पदार्थ है।

कही-सुनी पुरानी बातों में उलझ कर जीवन के नये सुख न खो बैठिए!

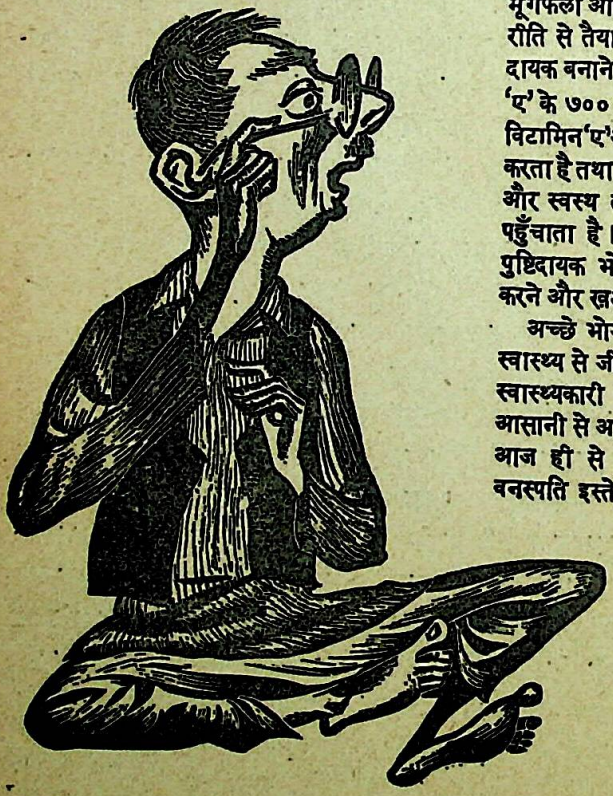

आवश्यक विटामिन से भरपूर

वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि तन्दुरुस्ती और ताक़त को बनाये रखने के लिए हर आदमी को कम से कम दो आउंस चिकनाई हर रोज़ चाहिए ही चाहिए। चिकनाइयों से पाचन-शक्ति बढ़ती है और भोजन अंग लगता है। इनसे थकन और बीमारियों की रोक-थाम में सहायता मिलती है और स्वस्थ काया का पूरा-पूरा सुख भोगने में ये हमारी बहुत मदद करती हैं।

वनस्पति एक विशुद्ध स्निग्ध पदार्थ है जिसे मूँगफली और तिल के तेलों को शोध कर वैज्ञानिक रीति से तैयार किया जाता है। इसे अधिक पुष्टिदायक बनाने के लिए इसके हर आउंस में विटामिन 'ए' के ७०० अन्तर्राष्ट्रीय यूनिट रिसाये जाते हैं। विटामिन 'ए' आँखों और त्वचा के स्वास्थ्य की रक्षा करता है तथा बीमारियों के बाद स्वास्थ्य लाभ करने और स्वस्थ तंतुओं को छूत से दूर रखने में मदद पहुँचाता है। और इसीलिए वनस्पति बहुत ही पुष्टिदायक भोज्य होने के साथ-साथ इस्तेमाल करने और ख़रीदने में किफ़ायती भी होता है।

अच्छे भोजन से स्वास्थ्य सुधरता है... अच्छे स्वास्थ्य से जीवन अधिक रसमय बनता है। शुद्ध, स्वास्थ्यकारी और किफ़ायती वनस्पति से आप आसानी से अच्छा भोजन कर सकते हैं। क्यों नहीं आज ही से आप भी खाना पकाने के लिए वनस्पति इस्तेमाल करना शुरू कर देते?

वनस्पति –
गृहिणी का सच्चा सहायक

दि वनस्पति मैन्युफ़ैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैसा कर सकते हो। आज मेरे आदेश का अक्षरशः पालन करना तुम्हारा कर्त्तव्य है।"

फादर सेबिल की बात समाप्त होते-होते ताँगा माता मरियम के गिरजाघर में पहुँच गया। फादर सेबिल ताँगे से उतरे। निश्चित भाड़ा एक रुपया रोजेरियो को देने के बाद उन्होंने एक और रुपया रोजेरियो को देकर आदेश दिया—"यह रुपया तुम्हारे आज के शराब और अतिरिक्त खर्चे के लिए है।"

× × ×

बिड़िन्नरा स्टेशन पर सवारियों को ताँगे में लाने-ले जाने का व्यवसाय करनेवाले, प्रभु मसीह के भक्त रोजेरियो का संक्षिप्त इतिहास बतलाना यहाँ आवश्यक है। इस शताब्दी के आरम्भ में भारत के दक्षिण-भाग में देहातों की अशिक्षित और वहकी हुई जनता का यह लोक और परलोक सुधारने के लिए रोमन-कैथोलिक-सम्प्रदाय के पादरियों ने विराट् आयोजन किया था। एक जर्मन जेजूइट पादरी फादर बाइदा ने बिड़िन्नरा स्टेशन के समीप अपना धर्म-प्रचार का केंद्र बना लिया था।

बिड़िन्नरा के समीप एक गाँव में ढेंपा, वंश-परम्परा से मरे हुए पशुओं की खाल उतार कर सम्पन्न लोगों के जूतों के लिए चमड़ा बनाने का काम करता आया था और समाज के समीप आने के अधिकार से वंचित था। फादर बाइदा ने ढेंपा को विश्वास दिलाया कि, तुम मनुष्य हो और शिक्षित तथा सम्पन्न लोगों के समान तुम्हारी आत्मा को भी स्वर्ग और भगवान् की कृपा का अधिकार है। अपनी बात के प्रमाणस्वरूप फादर बाइदा ने ढेंपा को अपने आलिंगन में ले लिया। फिर, उसका अंत्यज कार्य छुड़वा कर उन्होंने उसे अपने सारथी का पद दे दिया। ढेंपा का नाम 'लायल' हो गया और वह खाकी जीन का कुर्ता, पाजामा और टोपी पहन कर फादर बाइदा का ताँगा हाँकने लगा। समय पर लायल के पुत्र रोजेरियो को भी बपतिस्मे के संस्कार-द्वारा आदिम पाप से मुक्त कर, प्रभु मसीह की शरण में ले लिया गया।

१९१४ में जब पहला महायुद्ध आरम्भ हुआ, तो फादर बाइदा को अपने देश लौट जाना पड़ा। जाते समय वे अपने स्वामी-भक्त सेवक लायल को अपना ताँगा और घोड़ी भविष्य में सम्मानपूर्वक जीवन-निर्वाह करने के लिए दे गये। लायल बिड़िन्नरा स्टेशन पर उतरनेवाले मुसाफिरों को कस्बे और समीप के गाँव तक पहुँचा कर निर्वाह करने लगा।

जब रोजरियो के पिता को प्रभु मसीह ने विश्राम के लिए प्रलय के दिन ही जागने वाले शयनागार में शरण दे दी, तो रोजेरियो उत्तराधिकार में पाये व्यवसाय से निर्वाह करने लगा। रोजेरियो ने बचपन से धार्मिक शिक्षा पायी थी और २२-२३ वर्ष की अवस्था में पिता ने उसका विवाह फादर बाइदा के पुराने बावर्ची माइकेल की एकमात्र पुत्री मार्था से कर दिया था। रोजेरियो और मार्था भगवान् के एकमात्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

MPS

बालों की हिफ़ाजत

जिनके लिये
विशेष
महत्वपूर्ण है
उनके लिये

केशा

अब पिलफरप्रुफ
पेकिंग वाली नयी
सुन्दर बोतल में

"केशा" के उपयोग से
होनेवाले लाभ

- बाल झड़ने बंद होते हैं और बढ़ते है।
- बाल घने और मुलायम होते हैं।
- असमय सफेद बाल नहीं होते।
- इसकी अद्वितीय खुशबु आपको दिनभर प्रसन्न रखती है।

सुप्रसिद्ध लोमा के उत्पादको द्वारा ही निर्मित

सोल एजेन्ट : एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद १

एजेन्ट : सी. नरोतम एण्ड कम्पनी, बम्बई-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुत्र-द्वारा निर्दिष्ट त्याग और वासना से मुक्त जीवन व्यतीत करने लगे।

भगवान् की सृष्टि को पथभ्रष्ट करके दुःख में फँसाने के लिए ही शैतान ने आदम और हौआ के मन में आदिम पाप की प्रवृत्ति पैदा की थी। उस आदिम पाप से निवृत्ति न पा सकने के कारण ही सृष्टि के समस्त दुःखों की परम्परा चली आ रही है। उस पाप के परिणाम में ही मनुष्य स्वर्ग से बहिष्कृत होकर पृथ्वी पर रहता है। परंतु नर-नारी शैतान-द्वारा उनके रक्त में भरे गये आदिम पाप के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाते और वे दुःख भोगने के लिए आदिम पाप-द्वारा, दूसरे मनुष्यों को जन्म देते जाते हैं। पर धर्म-प्राण रोजेरियो-दम्पति आदिम पाप से मुक्त रहने की प्रतिज्ञा को निबाह रहे थे।

रोजेरियो-दम्पति प्रातःकाल उठ कर कुछ देर 'यंजील' का पाठ करते। उसके बाद रोजेरियो घोड़ी को खरहरा और मालिश करता। मार्था इतने में दिन का भोजन तैयार कर लेती। दोनों भगवान् से उस दिन के लिए खाना मिलने की प्रार्थना और भोजन पाने के लिए उन्हें धन्यवाद देकर भोजन कर लेते। रोजेरियो ताँगे में घोड़ी जोत कर स्टेशन चला जाता और मार्था अपनी झोंपड़ी की सफाई कर, उसे सम्भालती और फिर घर के चारों ओर लगी तरकारी के खेतों में काम करती रहती। चौथे पहर वह ताजी तरकारी टोकरी में लेकर कस्बे के बाजार में चली जाती।

मार्था तरकारी बेच कर बाजार से सूर्यास्त के बाद ही लौट पाती। उसी समय रोजरियो भी दिन-भर का श्रम पूरा करके लौटता। रोजरियो ताँगा खोल कर घोड़ी के शरीर पर हाथ फेर, दस-पंद्रह मिनट टहला कर, उसे थान में बाँध देता और सामने घास डाल देता। उसके बाद वह ताँगा धो डालता। मार्था रात का खाना बनाने में लग जाती। रोजेरियो पंद्रह-बीस मिनट खाट पर पीठ सीधी करता और तब तक खाना तैयार हो जाता।

पति-पत्नी फिर भगवान् से अगले दिन भोजन मिलने की प्रार्थना और भोजन पाने के लिए उन्हें धन्यवाद देकर शांति एवं संतोष से भोजन कर लेते।

घर में एक लालटेन थी। पति-पत्नी अपनी-अपनी 'यंजील' ले, लालटेन के समीप बैठ कर, घंटे-डेढ़ घंटे तक पाठ करते और फिर अपनी-अपनी खाट पर सो जाते। सुबह उठते, तो एक-दूसरे से सामना होने पर एक-दूसरे के कल्याण के लिए भगवान् से दुआ माँगते। बारह वर्ष से रोजेरियो-दम्पति का धर्मनिष्ठ-एकरस जीवन इसी प्रकार चला आ रहा था।

× × ×

संध्या-समय घर लौटने से पहले, रोजेरियो का धर्म-भीरु मन शराब पीने की आशंका से संकुचित हो रहा था; परंतु वह धर्म-पिता के आदेश की अवहेलना भी न कर सकता था। जैसे-तैसे एक छटाँक शराब उसने गले से नीचे उतारी। शराब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पॉपलिन्स

शर्टिंग्स

मर्सराइज्ड धोतियाँ

छपी हुई वायल्स और लोन

'SANFORIZED'
REGISTERED TRADE MARK
OF CLUETT PEABODY & CO. INC., U.S.A.

रायपूर मिल्स लि.

अहमदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की दुर्गंध और कड़ुवेपन से उसका मन ऊब रहा था। मुख से उस स्वाद को दूर करने के लिए उसे दो पैसे का दाल-सेव खाना पड़ा। घर पहुँचते-पहुँचते उसका सिर कंधों से उठा जा रहा था। जैसे-तैसे घोड़ी को ताँगे से खोला और कुछ मिनट टहलाया। ताँगा धोने की इच्छा न हुई। वह जाकर लेट रहा। तभी याद आया, उसे कोई आवश्यक बर्तन फेंकना या छिपा देना है। वह लड़खड़ाता हुआ उठा। रसोई के कोने में से उसने करछुल उठा ली और छिपा दिया। फिर, वह झोंपड़ी के बाहर खाट पर जा लेटा।

खाट पर लेट कर रोजेरियो को याद आया कि, उसे सिगरेट भी पीना है। उसका सिर धीमे-धीमे चकरा रहा था। माचिस लेने के लिए फिर उठना पड़ा। सिगरेट सुलगा कर माचिस और सिगरेट का पैकेट खाट के नीचे ही छोड़, वह धुआँ उड़ाने लगा। तम्बाकू पीने का अभ्यास न होने के कारण, जान पड़ रहा था कि, उसके मुख से निकलते धुएँ के साथ-साथ उसका मस्तिष्क भी आकाश की ओर उड़ता चला जा रहा है। वह सिगरेट समाप्त न कर सका। सिगरेट उसकी उँगलियों में थमी-थमी बुझ गयी। बुझी सिगरेट भी उसने खाट के नीचे डाल दी।

मार्था तरकारी बेच कर लौटी। झोंपड़ी के समीप, छप्पर के नीचे, खड़े ताँगे की ओर उसकी दृष्टि गयी। ताँगा धोया नहीं था, यह देख कर मार्था को विस्मय हुआ। झोंपड़ी के भीतर जाकर पति को खाट पर लेटा देख, मार्था का विस्मय आशंका में बदल गया। समीप जा, उसने स्नेह से पूछा—"क्यों प्यारे, क्या जी अच्छा नहीं?... क्या धूप लग गयी है?"

रोजरियो ने कुछ उत्तर न देकर करवट बदल ली। मार्था ने झुक कर पति का माथा छुआ। ज्वर की ऊष्णता न पाकर उसे संतोष हुआ। "अच्छा तुम लेटो। तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए मरियम माता से दुआ माँग लूँ। फिर खाना बनाऊँगी।"—बोल कर वह अंदर चली गयी।

मरियम की अर्चना के बाद मार्था दाल का अदहन चढ़ा कर चावल बीनने लगी। तभी दाल में उबाल आया और उसने करछुल रखने की जगह पर हाथ बढ़ाया। करछुल गायब थी। सभी सम्भव जगहों पर करछुल खोज कर विवश हो, मार्था ने पति से ही पूछा—"प्यारे, करछुल नहीं मिल रही है।"

"नहीं मिल रही है, तो मैं क्या करूँ?"—रोजेरियो का कठोर उत्तर था।

"ऐसे तो तुम कभी नहीं बोलते थे, प्यारे।"—मार्था ने खाट की ओर बढ़ कर कहा। तभी उसका पाँव खाट के नीचे पड़ी माचिस पर पड़ा। झुक कर देखा—आधी बुझी सिगरेट भी थी। मार्था के विस्मय का अंत न था। विस्मय में पुकार उठी—"हाय क्या तुमने सिगरेट पी है?"

मार्था के स्वर की वेदना से चोट पाकर और अपने अपराध को छिपाने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुनिया की यात्रा पर हिन्द साइकिल-

श्री. मिश्रीलालजी ने हिन्द साइकिल पर ९३,००० मील की यात्रा की।

भारत से प्रारंभ करके श्री. मिश्रीलाल जयस्वालजीने हिन्द साइकिल पर सवार होकर अपनी विश्व-यात्रा सम्पन्न की और बड़ा नाम पाया। विश्व परिक्रमा करते करते श्री. मिश्रीलालजी ने कई अद्भुत नगर देखे जिनमें मोम्बासा, बैरूत, मास्को, लन्दन, न्यू यार्क, रीओ-दी-जानेरो और तोकिओ आदि थे।

चार महाद्वीपों की अपनी महान् यात्रा में श्री. मिश्रीलालजी ने अद्वितीय हिन्द साइकिल पर ही भरोसा रखा था। मजबूत, वजन में हल्की, आरामदेह, विश्वसनीय और चलने में तेज होने के कारण ही उन्होंने हिन्द साइकिल को चुना था।

भारत लौटने पर साइकिल-पटु मिश्रीलालजी ने दो नये माडलों—एडमिरल और नॉर्टन (हिन्द साइकिल लि. द्वारा निर्मित) की कड़ी जाँच की और वे सहर्ष बोले: "श्रेष्ठता में ये साइकिलें दुनिया की किसी भी साइकिल से कम नहीं।"

नॉर्टन या एडमिरल साइकिल पर सवार होकर आपभी श्री. मिश्रीलाल जयस्वालजी की तरह सैर का असीम आनंद लूटिये।

हिन्द साइकिल्स लिमिटेड २५० हरी बम्बई १८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विवशता में रोजेरियो ने कड़े स्वर में उत्तर दिया—"तुम्हें इससे मतलब ?"

पति के इस निरादरपूर्ण उत्तर से मार्था को और भी चोट लगी। क्षण-भर सोच कर उसने अनाचार का विरोध करने के लिए अपने-आपको एकाग्र किया। इस एकाग्रता में उसे रोजेरियो के श्वास में वीभत्स-सी गंध अनुभव हुई। वह पूछे बिना न रह सकी—क्या तुमने शराब पी है ?"

मार्था के इन प्रश्नों का रोजेरियो के पास क्या उत्तर था ! फादर सेविल के आदेश के अनुसार वह दो घंटे से पहिले मार्था को कुछ बता नहीं सकता था। धर्म-संकट और आत्म-ग्लानि के द्वंद्व में विक्षिप्त होकर वह भड़क उठा—"तुझे क्या ?.... जा, हट यहाँ से !"

बारह वर्ष के विवाहित जीवन में मार्था को इससे बड़ी चोट न लगी थी। वह पति की खाट से दूर हट कर आले में रखी निष्कलंक कुमारी माता मरियम की प्रतिमा के सामने धरती पर जा गिरी और फूट-फूट कर रोने लगी।

रात का अंधेरा गहरा हो गया; पर घर में लालटेन न जलायी जा सकी। चूल्हे में भी आग बुझ गयी थी। झोंपड़ी के भीतर अंधेरे में रोजेरियो की लम्बी-लम्बी साँसों और मार्था की हिचकियों का क्रम पूर्ववत् जारी था।

रोजरियो ने अनुमान लगाया कि, दो घंटे का समय बीत चुका है। पर अभी शराब के नशे की उत्तेजना मस्तिष्क और शरीर में बाकी थी। उस अवस्था में पत्नी के साथ किये दुर्व्यवहार का परिताप भी उतनी ही तीव्रता से अनुभव हो रहा था। वह खाट से उठा। धरती पर पड़ी मार्था के समीप जा, पिघले-से स्वर में बोला—"सुनो प्यारी ! मैं क्षमा माँग रहा हूँ।"

न-जाने क्यों, यह सुन कर मार्था और जोर से रो पड़ी।

मार्था की रुलाई के प्रवाह में रोजेरियो का मन भी बह गया। उसने आर्द्र स्वर में पुकारा—"प्यारी, सुनो तो !..."

विवाहित जीवन के बारह वर्षों में आदिम पाप के प्रति आशंका के कारण रोजेरियो और मार्था ने एक-दूसरे के शरीर का स्पर्श शायद ही कभी किया था—कम से-कम हृदय की आर्द्रता और भावुकता से तो कभी भी नहीं। पर आज रोजेरियो ने मार्था के कंधे पर हाथ रख कर अनुनय किया—"प्यारी, सुनो तो। तुम्हें नहीं मालूम, मेरा दोष नहीं है।"

पति के हाथ के स्पर्श से मार्था और भी सिमट गयी और उसे मनाने के लिए रोजेरियो ने उस पर झुक, उसके कान के समीप मुँह ले जाकर विनय की—"मेरी प्यारी, मेरी बात सुनो. . .." अपनी बात सुना सकने के लिए, अपना अपराध क्षमा करा सकने के लिए, रोजेरियो को अपनी पत्नी को गोद में खींच लेने के अधिकार का प्रयोग करना पड़ा।

ज्यों-ज्यों रोजेरियो मार्था को अपनी गोद में खींच रहा था, मार्था सिमटी जा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग-बिरंग चित्रों से भरपूर ४८ पेजी मासिक पत्रिका। दुनिया के छठे भाग में रहनेवाली
ारियों के विराट रचनात्मक प्रयासों की सम्यक झांकी। इसे पढ़कर आप सोवियत नारी
ीवन के सभी पहलुओं को जान सकेंगे—उस नारी को जो अपने देश की पूर्ण नागरिक है,
ी मजदूर और मां के रूप में सुख-चैन की वंशी बजाती है। उनके हर्ष-विषादों, उनकी कामयाबियों
ौर आगे की योजनाओं —सभी की सच्ची
सवीर आप इसमें पायेंगे। रोचक स्तम्भ हैं:
हानियाँ, बच्चों का लालन-पालन,
शीदाकारी-बुनाई, आज का फ़ैशन, आदि।

र सालाना पाहक को सोवियत डाक
ःकट या पोस्ट कार्ड पर छपे रंगीन
स्वीरों का एक सेट उपहार में
ंया जायेगा।

चन्दा यहां लिया जाता है।

सोवियत नारी

स्त्रियों के लिए आदर्श पत्रिका

चन्दा सालाना ४.२५

एक प्रति ०.५०

१. पीपल्स पब्लिशिंग हाउस, (प्रा.) लि., एम. एम. रोड, न्यू देहली
२. पी. जी. एच. बुक स्टाल, १९० बी, खतवाडी मेन रोड बंम्बई–४
३. जैको सबस्क्रिपशन एजेंसी, १२५, महात्मा गांधी रोड बंबई–१
४. करंट बुक हाउस, रघुनाथ दादाजी स्ट्रीट बोम्बे–१
५. ओर के. बी. एण्ड कंपनी, नाकरा हाउस, ओलिवर रोड, बंबई–१
६. पीपल्स बुक हाउस, कावसजी पटेल स्ट्रीट, बंबई–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रही थी। न मालूम, मार्था को पति के स्पर्श से भय अनुभव हो रहा था, या अधिक आग्रह और अधिक बलपूर्वक समेटे जाने के संतोष की इच्छा थी?

रोजेरियो को अपने अपराध के सम्मुख पूर्णतया परास्त हो जाना पड़ा। उसने अपनी पराजय स्वीकार करने के लिए मार्था को गोद में समेट लिया और उसकी रुलाई स्वयं ले लेने के लिए मार्था के होंठों पर अपने होंठ रख दिये।

उस रात को झोंपड़ी में लालटेन न जली, चूल्हा भी न जला। रोजेरियो और मार्था ने लालटेन के समीप बैठ कर धर्म-पुस्तक का पाठ भी न किया।

विलम्ब से सोने के कारण मार्था की आँखें देर से खुलीं। रोजेरियो का सिर उसकी बाँह पर था। गहरी नींद में उसका श्वास समगति से चल रहा था। मार्था उसकी मुँदी हुई पलकों की ओर देखती रही। उसके होंठों पर मुस्कान आ गयी। बायें हाथ से वह रोजेरियो के केश सहलाने लगी। विलम्ब अधिक हो गया था— रोजेरियो को उठा देना आवश्यक था। "प्यारे" कहने के लिए उसके होंठ खुले; परंतु रोजेरियो के होंठों पर झुक गये।

रोजेरियो की पलकें खुल गयीं और मार्था का साँवला चेहरा ताम्बे की तरह लाल हो गया। दोनों खाट से उठ जाना चाहते जरूर थे; परंतु न-जाने क्यों, एक-दूसरे को उठने न दे रहे थे।

इस प्रकार, रोजेरियो और मार्था का पिछले बारह वर्ष से चला आया जीवन-क्रम बदल गया। अब दिन-भर के काम के बाद, घर लौटते समय रोजेरियो की इच्छा होती कि, मार्था के लिए कुछ लेता जाये। इस प्रेरणा से रोजेरियो को पहले की अपेक्षा कुछ अधिक समय तक भाग-दौड़ करनी पड़ती। सवारियों की खोज भी वह अधिक उत्साह से करता। ताँगे को रोगन करा कर आकर्षक बनाये रखने का वह ध्यान रखता। अपनी घोड़ी को प्रसन्न और उत्साहित रखने के लिए वह उससे बात कर थपथपाता रहता। चेहरे पर कभी क्रोध और कभी मुस्कान भी दिखायी देती। ताँगेवाले और कस्बे के लोग आते-जाते उसे टोक कर बात भी करने लगे। लगभग दस महीने बीते होंगे कि, रोजेरियो की झोंपड़ी से बच्चे के रोने-ठुनकने की सुरीली आवाज भी सुनायी देने लगी।

× × ×

१९४७ के जून में एक दिन फिर फादर सेबिल बिड़िन्नरा स्टेशन पर उतरे। उन्हें याद आया कि, पाँच वर्ष पहले वे माता मरियम के गिरजे तक, जीवन से उदास एक ताँगेवाले की सवारी पर चढ़ कर गये थे।

फादर स्टेशन से बाहर निकल, सवारियों की ओर देख रहे थे कि, एक व्यक्ति ने आकर उन्हें आदर से प्रणाम किया और उनकी बगल में थमा बिस्तरा स्वयं लेकर कहा— "धर्मपिता, आइये! गिरजे तक जाने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माँ हमेशा हमाम ख़रीदती हैं

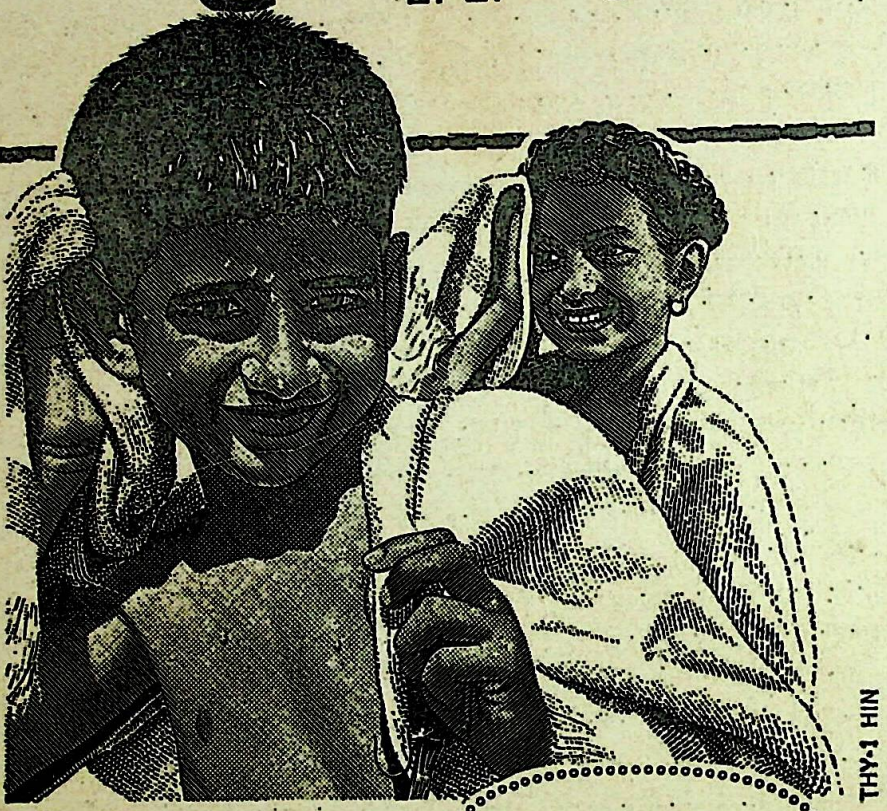

THY-1 HIN

चिकने, मुलायम झाग...
त्वचा को कोमल करनेवाले नये
रसायन की करामात!
सफ़ाई के साथ-साथ
ताज़गी...
'हमाम इस्तेमाल करने में
कितना उम्दा और सुगन्धमय है।
चलता भी खूब है...
कितना कमख़र्च है!

हमाम से नहाकर
ताज़गी और सुगन्ध का आनन्द लीजिए।

सारे परिवार का मन-पसन्द- हमाम यह एक शुद्ध-उत्पादन है-अवश्य ही उम्दा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए आपका ताँगा हाजिर है।"

फादर सेबिल ने ध्यान से देख कर पहचाना और कहा—"पाँच वर्ष पूर्व मैं तुम्हारे ही ताँगे पर गिरजाघर गया था?"

"ठीक कह रहे हैं, धर्मपिता। यह सेवक ही आपको माता मरियम के गिरजाघर तक ले गया था।"

फादर सेबिल ने अभ्यास के अनुसार भाड़ा पूछा। रोजेरियो ने मुस्करा कर उत्तर दिया—"धर्मपिता, आप बस्ती के लोगों के कल्याण के लिए पधारे हैं। आप क्रिश्चियन लोगों के बच्चों को बपतिस्मा देकर उन्हें प्रभु मसीह की शरण में स्थान देंगे। मेरे भी दो बच्चे आपकी शरण हैं। आपसे क्या किराया लूँ!"

फादर के होंठ मुस्कराहट से घूम गये और भारी भौंहों के नीचे की आँखों में प्रसन्नता चमक उठी।

रोजेरियो फादर सेबिल को ताँगे पर बिठाये गिरजाघर की ओर लिये जा रहा था। पाँच ही मिनट में रोजेरियो ने फादर को कस्बे, बच्चों के स्कूल और गिरजाघर के सम्बंध में बहुत-सी बातें बता दीं। बीच-बीच में वह अपनी घोड़ी को पुचकारता जा रहा था और बरसात के मौसम में स्कूल के सामने कीचड़ भर जाने से बच्चों के कष्ट की शिकायत कर रहा था।

कुछ देर बाद, फादर सेबिल उसे टोक बैठे—"पुत्र, यह तो बताओ कि, इस पापमय संसार को छोड़ कर शीघ्र ही भगवान् के पुत्र की शरण में चले जाने के सम्बंध में अब तुम्हारा क्या विचार है?"

रोजेरियो लज्जा से कुछ झेंप गया, दबे स्वर में उत्तर दिया—"धर्मपिता, क्षमा चाहता हूँ। अभी तो भगवान् के दिये गोद में एक लड़का और एक लड़की है। उन्हें पाल-पोस कर बड़ा करने की जिम्मेदारी सिर पर है। कस्बे के साहू निम्बालकर का भी कुछ ऋण देना है।"

फादर सेबिल के दाढ़ी-मूँछों से घिरे होंठों पर हँसी फूट आयी। विनोदपूर्वक उन्होंने पूछा—"पुत्र, अब तो तुम सुखी हो, संतुष्ट हो?"

रोजेरियो ने लज्जा से सिर झुका लिया—"हाँ, धर्मपिता! परंतु अब हम सांसारिक पापों में लथपथ हो गये हैं। अब हम लोग धर्म-पुस्तक का पाठ भी नियम से नहीं कर पाते। अब तो भगवान् की दया का ही एकमात्र भरोसा है।"

फादर सेबिल का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। उन्होंने आश्वासन दिया—"पुत्र, प्रसन्नता की ही बात है। अब तुम भगवान् की दया के पात्र हो गये हो। जैसे तुम्हें धूल और कीचड़ से लथपथ अपने बच्चों को हृदय लगा लेने से संतोष होता है, वैसे ही भगवान् भी पापी सृष्टि को हृदय से लगा कर पाप-मुक्त करने में संतोष पाते हैं। उस साँझ की लड़ाई ने तुम्हारे हृदय पर से दम्भ का ढकना उतार कर तुम्हें पृथ्वी का मनुष्य बना दिया। अब तुम पुण्य का अहंकार छोड़, संसार के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहे हो!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दस रुपये का नोट

"एजेंट साहब, मेरी पत्नी के लिए एक ऐसी योजना बताइए जिससे उसे नियमित आय मिलती रहे" यह वाक्य जीवन-बीमे को "ना" कहनेवाले युवक के मुँह से सुनते ही बीमा एजेंट के अचरज का ठिकाना न रहा। उसी दम बीमा एजेंट ने पूछा, "आपका यह विचार एकाएक कैसे बदला?"

"सुनिये, सब कुछ बताता हूँ, मैं अभी अभी अपने गाँव से वापिस आया हूँ। अपने प्रथम बालक को साथ लेकर मैं गया था ताकि मेरी माँ अपने पोते को देख सके। जिस दिन हम वहाँ से निकलने वाले थे मेरी माँ अपने कमरेमें गयी और दस रुपये का नोट लेकर लौटी। उस नोट को मेरे बच्चे की मुठ्ठी में रखकर बोली "यह तुम्हारे बच्चे के लिए है।"

इस दस रुपये के नोट ने मुझे कई साल पहले की घटना याद दिलायी। उस समय मेरे पिताजी चल बसे थे। जाते समय उन्होंने हमारे लिए दो वस्तुएँ छोडी थीं एक कपड़े की दूकान और दूसरी जीवन-बीमा पालिसी। छोटी उम्र होने के कारण न तो मैं और मेरा भाई दूकान चला सकते थे न हमारी माँ भी। लाचार होकर हमें अपनी दूकान बंद करनी पड़ी।

गत १४ सालों से जीवन-बीमें के जरिये प्रतिमास लगभग ५० रुपये की नियमित आय मेरी माँ को मिलती आयी है और जबतक मेरी माँ जिन्दा रहेगी तबतक यह मिलती रहेगी। इसी धन से उसने हमारी परवरिश की और हमें अपने कदमों पर खड़ा किया। आज वह मेरे भाई के साथ रहती है और उसके खर्चे में भी हाथ बँटाती है। यह दस रुपये का नोट उसकी स्वतंत्रता तथा आत्मसम्मान का प्रतीक है। इस तरह जीवन-बीमे के द्वारा मेरे पिताजी ने अपनी पत्नी के प्रति अपने कर्तव्य को निभाया था। आज मैं भी अपनी पत्नी और बच्चे के लिए वैसा ही प्रबंध करना चाहता हूँ।"

लाइफ़ इन्श्योरन्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इन्डिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

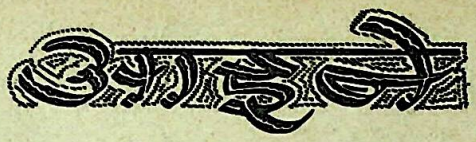

उर्दू-कथाकार डा० सलाउद्दीन अकबर की व्यंग्य-वैदग्ध्य से ओतप्रोत एक कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

जब सब मेहमान रुखसत हो गये, तो अजीज ने कहा—"आओ डार्लिंग, जरा बाहर से घूम आयें!"

"उँह, रात काफी गुजर चुकी है!"

"अरे, अभी तो साढ़े दस ही बजे हैं—सिर्फ साढ़े दस। 'माल' रौनक से भरा होगा अभी। रेस्तराँ जगमगा रहे होंगे। कहीं बैठ, थोड़ी-सी चाय पियेंगे, बस!"

"जैसी तुम्हारी मर्जी!"—सलीमा ने कहा और अजीज फौरन गेराज से कार निकालने चल पड़ा।

कार बाहर आ गयी, तो उसने सलीमा को पास बिठा लिया और कार 'स्टार्ट' कर दी। चंद मिनट यों ही खामोशी में बीते और तब अजीज बोला—"सलीमा..."

सलीमा खामोश रही; पर इससे अजीज को कोई झिझक नहीं हुई, वह बोलता गया—"अगर मैं तुम्हें 'सलीमा' के बजाय 'सलमा' कहा करूँ, तो तुम्हें कोई एतराज तो न होगा? शादी के बाद वैसे भी लोग नाम तब्दील कर लेते हैं। सलमा अच्छा नाम है..शायराना। सलमा, मेरी सलमा!" और फिर, वह खुद में ही मस्त हो गुनगुनाने लगा—"बस्ती की लड़कियों में बदनाम हो गया हूँ—सलमा से दिल लगा कर!..."

और, इसके साथ ही उसे वे सब लड़कियाँ याद आने लगीं, जिनसे उसका जिंदगी के किसी-न-किसी दौर में वास्ता रहा था। उन लड़कियों की तादाद भी कोई मामूली थोड़ी ही थी—एक-पर-एक वे उसकी आँखों के सामने आती गयीं।

अजीज अच्छे खाते-पीते घराने का लड़का था। शक्ल-सूरत से भी काफी अच्छा; लेकिन उसके मिजाज में लड़कपन से ही आशिकी भरी थी। बाप और बड़े भाई की लाइब्रेरी की किताबों में उसे पसंद थीं, सिर्फ शायरी की किताबें। उन्हें ही वह रटता था, जैसे इम्तहान में उनमें से ही सवाल पूछे जानेवाले हों। 'महबूब' (प्रेमिका), 'शराब' और 'साकी' (शराब पिलानेवाली) -जैसे लफ्ज उसके जेहन में अजीब-अजीब नक्शे बनाया करते थे। वह शेरों को पढ़ता और तसव्वुरात (कल्पनाओं) में गुम हो जाता। आगे चल कर उसने शराब, सुरूर और मस्ती की झलक अपने इर्द-गिर्द भी देखने की कोशिश की। हमसाइयों की लड़कियाँ जब कोठे पर बाल सुखा रही होतीं, या यों ही बैठी होतीं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तबीयत बाग़-बाग़ होगयी !

पेट की गड़बड़ी में **ईनो** से
जल्द आराम मिल जाता है !

अगर हलके जुल्लाब की ज़रूरत
हो तो खाली पेट पर कुछ अधिक
मात्रा में ईनो लीजिए।

कभीकाल अगर बदहज़मी के कारण तबीयत में ढीलापन या चिड़चिड़ापन पैदा होजाय या ज़्यादा खा लेने की वजह से आप पेट में भारीपन महसूस करें तो चमकदार ईनो का एक गिलास पीजिए। ईनो पेट में पहुँचते ही अपना काम शुरू कर देता है और तकलीफ़देह अम्लों को मिटाकर तरावट पहुँचाता है जिससे फिर पहले जैसी प्रसन्नता और उमंग आजाती है।

हलके अम्लनाशक ईनो का ज़ायका भी अच्छा होता है और बूढ़े-बच्चे सभी इसे पी सकते हैं। पेट की गड़बड़ी और बेचैनी से जल्द आराम पाने के लिए ईनो लीजिए।

ईनो 'फ़्रूट साल्ट' से
तबीयत खिल उठती है !

'ईनो' और 'फ़्रूट साल्ट'—ये शब्द रजिस्टर किये हुए ट्रेड मार्क हैं।

ग्रूप लेबोरेटरीज़ (इण्डिया) प्राइवेट लि०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो वह किसी-न-किसी बहाने अपने कोठे पर से उन्हें झाँकने की कोशिश करता और वे इस पर नजर पड़ते ही वहाँ से तुरत भाग खड़ी होतीं।

बड़े-बूढ़े और बड़ी-बूढ़ियाँ ऐसे मामलों पर खास नजर रखती हैं। सो, उनकी नजर से अजीज की गुस्ताखी छिपी न रह सकी। उन्होंने कई बार उसे झिड़का; फिर समझाया—"अजीज बेटा! अक्ल सीखो—अच्छे हमसाये बनो!"

इन बुढ़ियों के मारे अजीज को बहुत कोफ्त होता। वह सोचता—"यह भी कोई जिंदगी है! न साकी, न बादा (शराब), न जाम! आखिर, कुछ तो हो।.. ये बूढ़ी औरतें तो कहीं झाँकने तक नहीं देतीं। लगता है, चारों तरफ उनकी आँखें बिछी हैं।... तब क्या घर में..."

लेकिन घर की नौकरानी पर नशे का वक्त गुजर चुका था— उसकी जवानी की दोपहर ढल चुकी थी। बाकी रही थी, सिर्फ मेहतरानी। सो, मजबूर होकर अजीज ने उसे ही साकी बनाने की कोशिश की; लेकिन वह एक ही आफत की पुड़िया थी। उसकी दाल नहीं गल पायी वहाँ। फिर भी, अजीज ने हिम्मत का साथ नहीं छोड़ा। वह इधर-उधर साकियों की खोज में लगा रहा। और, 'जहाँ चाह, तहाँ राह'! आगे चल कर, उसे एक-दो नहीं, सैकड़ों साकियाँ मिलीं— एक-से-एक बढ़ कर। उन साकियों की याद भी बड़ी पुरलुत्फ थी।

"तुम कहाँ खो गये हो, डार्लिंग?"— सलीमा की आवाज ने उसे चौंका दिया। जल्दी से अपने-आपको सम्भालते हुए वह बोला—"कहीं तो नहीं! मैं सोच रहा था, आज की दावत बड़ी अच्छी रही।... ये खाँ साहब भी बड़े अच्छे आदमी हैं।"

शृंगार

[चित्र : बाई० के० शुक्ला के एक उत्कर्तन की अनुकृति]

पर सलीमा ने इस चर्चा में कोई दिलचस्पी न ली, तो अजीज ने बात का रुख बदल दिया—"इस वक्त 'आइनो' में बड़ी रौनक होगी! वहीं चलें, तो कैसा रहे। ओह, क्या खूब जगह बनायी है। दीवारों और छत पर इस कदर आइने लगा रखे हैं कि, हर तरफ रोशनी का तूफान उमड़ता नजर आता है! फर्श पर डांस करता हुआ एक जोड़ा सैकड़ों का रूप धर लेता है। वहाँ बैठे लोग भी वैसे ही मुहज्जब और शाइस्ता होते हैं।...."

"आइनो? वहाँ क्या जाओगे? वहाँ की बेअंदाजा रोशनी आँखों को खीरा और हर चीज को उरियाँ (नग्न)-सा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर से **आश्चर्यजनक** स्वास्थ्यका अनुभव कीजिये !

वॉटरबरीज़ कम्पाउंड एक प्रमाणित बलवर्धक औषध है जिसका उपयोग दुनिया भर में स्वास्थ्य का ख्याल रखनेवाले, अपने और अपने परिवार के लिये, करते हैं।

वॉटरबरीज़ कम्पाउंड में जीवनोपयोगी पौष्टिक तत्व हैं जो आपको और अपने परिवार को वह अतिरिक्त शक्ति प्रदान करते हैं जो प्रबल, स्वस्थ व आनन्दपूर्ण जीवन के लिये जरूरी है।

वॉटरबरीज़ कम्पाउंड निरन्तर खांसी, सर्दी और फेफड़े की सूजन आदि का खंडन करता है। बीमारी के बाद शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिये डाक्टर इसकी सिफारिश करते हैं।

अब बोतलों में ऐसे ढक्कन लगाए गए हैं जिनमें से थोड़ी-सी भी दवा का चुराना संभव नहीं है। साथ ही बोतलों पर अब नया, लाल, 'लेबिल' लगा है।

अब पुराना लाल रंग का 'रेपर' हटा दिया गया है।

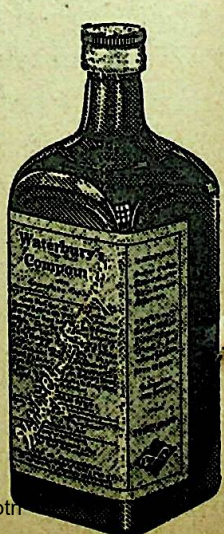

तन्दुरुस्त बने रहने के लिये

वॉटरबरीज़ कम्पाउंण्ड

लीजिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर देती है। बेशुमार आइने हर तरफ से झाँकते हैं। बेशुमार कान हर आहट के लिए खुले होते हैं!"

"यों ही, जरा-सी देर के लिए। हमको कौन-सा वहाँ बैठे रहना है। मेरा तो खयाल था, तुम्हें भी पसंद है 'आइनो'! मैंने तुम्हें पहले-पहल वहीं तो देखा था। याद है न, वह क्या तकरीब थी वहाँ—किसी बड़े आदमी के ऐजाज में! दावत के बाद देर तक महफिल जमी रही थी। सब लोग तुम्हारी ही तरफ मुतवज्जे थे। लड़कियाँ तो खार खा रही थीं...."

तब तक वे 'आइनो' के पास पहुँच गये थे। अजीज ने कार रोक दी और दोनों शहर के उस शानदार होटल में दाखिल हुए। उन्हें देखते ही, मैनेजर ने कहा—"ओह, अजीज साहब? भई, कमाल हो गया। आपने तो आना-जाना ही छोड़ दिया।" और, वह खुद उन्हें एक मेज तक लेकर गया।

"पहले फरमा दिया होता। मैं आपके लिए बेहतरीन मेज रख छोड़ता। आज तो तकरीबन सब रिजर्व हो चुकी हैं। इत्तेफाक से पहली लाइन में यही एक खाली थी। आप यहाँ तशरीफ रखिये!"

"आज क्या कोई खास प्रोग्राम है?"—अजीज ने मैनेजर से पूछा।

"हुजूर, भला आपसे क्या छुपा है—आज हफ्ते (शनिवार) की शाम है। कैबरे है। वही पुरानी आर्टिस्ट है।"

"अच्छा-अच्छा, जरा चाय भेजिये!"

चंद मिनटों के अंदर ही बेयरा चाय लेकर हाजिर हुआ और दोनों चाय पीने लगे। पर कुछ ही देर बाद सलीमा की नजर सामने की मेज पर गयी, जहाँ बैठा एक आदमी लगातार उसकी तरफ घूर रहा था। उसकी नजरों में साफ-साफ शरारत झाँक रही थी। सलीमा को उसकी यह हरकत बिल्कुल पसंद न आयी—उसने अपनी कुर्सी बदल ली।

यह देख, अजीज ने पूछ दिया—"क्या बात है, सलमा?"

"कुछ नहीं! आपके सामने बैठना चाहती हूँ।" बोल कर वह बजाहिर उससे बेपरवाह बैठ गयी; मगर इस बात का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) वह जरूर देखना चाहती थी। उसने निगाह उठा कर देखा। ऊपर, छत के आइने में, एक शरीर नव-जवान झाँक रहा था। इसके साथ ही सलीमा को कुछ पुरानी बातें याद हो आयीं—कालेज का उस दिन का वाकया भी!

"आज आपने एक मिनट के लिए भी तवज्जह से लेक्चर नहीं सुना?"—अमजद ने उससे कहा था।

"आपको इससे मतलब?"

"इसलिए कि, मैं भी आज लेक्चर एकदम नहीं सुन सका।"

"यानी?"

"यानी यह कि, मैं बराबर आपकी ही तरफ देखता रहा।"

"आपकी चार आँखें हैं क्या?"

"दो ही आँखों से इंसान काम ले ले, तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता. २६ जून से प्रदर्शित—

'शहनाई' की मनमोहक गूँज जादू डालेगी

प्रकाश पिक्चर्स कृत

गूंज उठी शहनाई

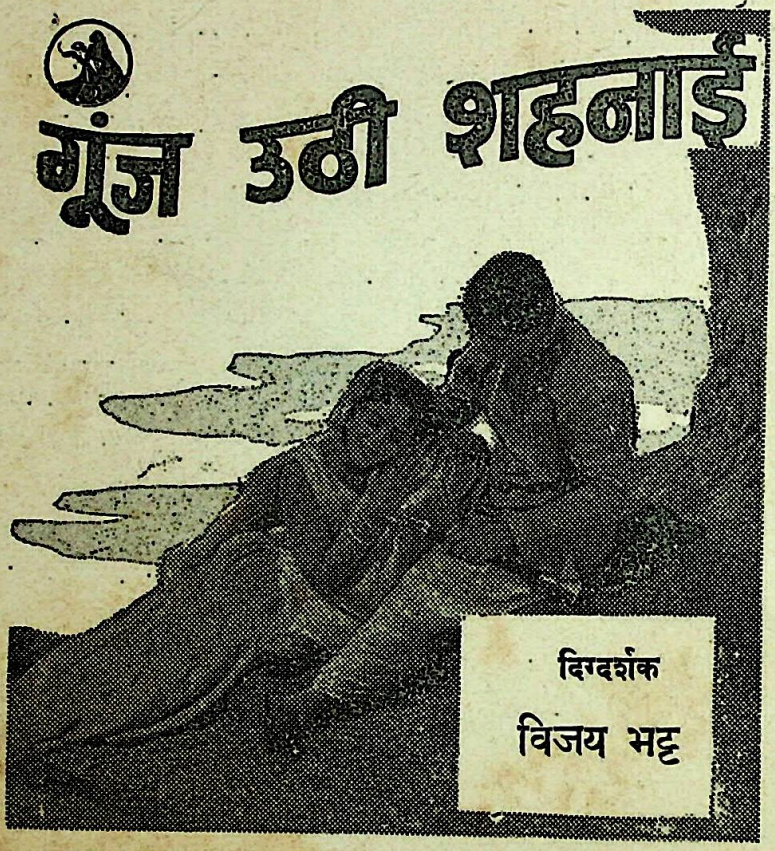

संगीत : वसन्त देसाई, गीत : भरत व्यास

कलाकार : राजेन्द्र कुमार, अमिता, आई. अेस. जौहर, उल्हास, कृष्णा कुमारी, प्रताप (नया चहेरा) तथा अनिता गुहा.

(शहनाई—बिस्मिल्ला खाँ)

रॉक्सी — बम्बई और अन्य छबिगृहों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत है।"—ढिठाई से भरा हुआ उसे जवाब मिला था।

और, चंद दिन बाद, सलीमा को मालूम हो गया था कि, लड़कियों की सीट से एक सीट आगे बैठनेवाला अमजद उसके हर राज को जानता था। लेकिन वह उसके बारे में सिर्फ यही जानती थी कि, वह एक अच्छा स्टूडेंट था; लेकिन मालदार न था।

लेकिन न-जाने क्यों, धीरे-धीरे सलीमा का दिल उसकी तरफ खिचने लगा था और किसी-किसी बहाने से वह उससे बातें करने लगी थी। ऐसी बातें तो हवा के दोश पर उड़ती हैं। उड़ती-उड़ती यह बात सलीमा के बाप के कानों तक जा पहुँची। सलीमा के बाप को इस लड़के की जुर्रत पर बड़ी हैरानी हुई कि, एक आम आदमी का बेटा अपनी औकात भूल कर कैसे उसकी लड़की से राह-व-रस्म बढ़ा रहा था। उसने उनकी बात आगे बढ़ने से रोकने के लिए कोशिशें शुरू कर दीं और आखिर में उसे कामयाबी भी मिली।

अभी आइने में दीखनेवाला वह आदमी अमजद ही था!

अचानक सलीमा बुरी तरह घबड़ा गयी। वह उसकी ही मेज की तरफ आ रहा था। फिर भी, उसने अपनी घबड़ाहट को जाहिर नहीं होने दिया। अमजद उसकी मेज के पास आ गया और बोला—

"हलो, अजीज!"

"हलो, अमजद!"

"कहो भई, कैसे हो? बड़ी मुद्दत से दिखायी नहीं दिये?"

"यों ही, बस मसरूफियत समझ लो। ...हाँ, इनसे मिलो। ये हैं, बेगम सलमा अजीज।"

"मिजाजशरीफ!"

"मिजाजशरीफ!"

और, इसके बाद अमजद चुपचाप चला गया। जाने के बाद अजीज ने सलीमा से पूछा—"जानती हो, यह कौन है?"

"भला मैं क्या जानूँ?"—सलीमा बोली।

"यह है अमजद! आजकल सेक्रेट्री है, जराअत का! बड़ा अच्छा आदमी है। पिछले दिनों एक काम पड़ा, तो उसी वक्त कर दिया बेचारे ने, हालाँकि मेरा-उसका कोई लम्बा-चौड़ा वास्ता भी नहीं था। यहीं मुलाकात हुई थी उससे!...इसे भी दावत में बुलाना चाहिए था। अब कोई मौका हुआ, तो जरूर बुलायेंगे इसे!"

"जरूर!"

बैंड ने नई धुन शुरू की और पाँव ताल पर हिलने लगे।

फर्श पर बहुत-से जोड़े इकट्ठे हो गये। सलीमा के चेहरे पर थकान के आसार देख कर अजीज ने कहा—"नींद आ रही है क्या? लो, एक कप और चाय पियो।... या फिर उठो। आओ, जरा एक चक्कर डांस का ही लगा लें। मुझे मालूम है, तुम्हें डांस यों ही-सा आता है। लेकिन यहाँ जो-सब घूम रहे हैं, उन्हें ही कब नाचना आता है। यों ही बहाना है बातें करने का।"

दोनों नाचने के लिए उठ खड़े हुए और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

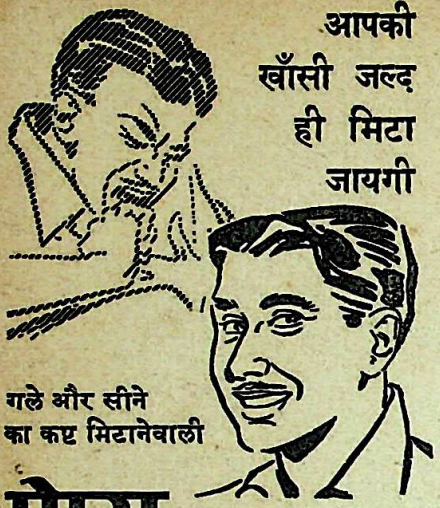

आपकी
खाँसी जल्द
ही मिटा
जायगी

गले और सीने
का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स टिकियाँ लीजिए

पेप्स टिकियां चूसिए और फिर अनुभव कीजिये कि इनकी गुणकारी भाप दर्द मिटाने में किस खूबी से कारगर है और गले का दर्द, ब्रोंकाइटिस, खाँसी या सर्दी–ज़ुकाम पैदा करनेवाले रोगाणुओंका कितनी जल्दी नाश करती है। पेप्स फ़ौरन आराम देकर इन शिकायतों को शीघ्र दूर करती हैं।

FPY 54 HIN

पेप्स में
कोई नुकसानदेह
दवा नहीं
ये बच्चों को बेखटके दी
जा सकती हैं
ब्रांकाइटिस,
गले का दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती हैं
सभी औषधि-विक्रेताओं
के यहाँ प्राप्य

सी. ई. फुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट :
केम्प एन्ड कं. लि., पो. बा. ९३७

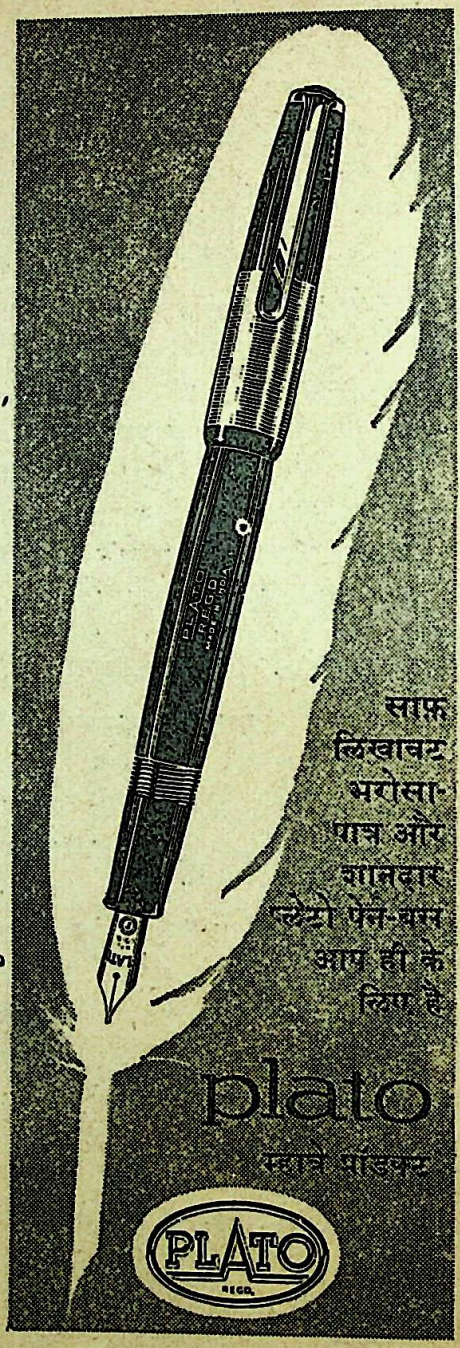

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैंड की धुन के साथ-साथ उनके पैर थिरकने लगे। पर अजीज का दिमाग कहीं और था। उसे याद आ रहा था वह दिन, जब वह नया-नया ही नाच सीखा था और एक लड़की को छाती से लगाये बैंड की धुन पर थिरक रहा था। उस लड़की ने दो-तीन मिनट नाचने के बाद उससे कहा था—"तुमसे बेहतर 'स्टेप्स' तो मेरे हैं।"

"नाच की बात छोड़ो, मिस !.. क्या नाम है तुम्हारा ?"

"एलिस !"

और तब, अजीज ने कहा था—"यह नाच-वाच तो महज बहाना है। दरअसल, मैं कई दिनों से तुमसे बात करने का इरादा कर रहा था ; मगर तुम्हारे साथ हमेशा वे लड़के होते थे।"

"नालायक हैं वे लड़के। मुझे उनसे कोई दिलचस्पी नहीं।"

"आज तुम्हें अकेले देख कर मैंने तुमसे एक डांस की इजाजत माँगने की जुर्रत की और यह मेरी खुशकिस्मती है कि, तुमने इस पेशकश को ठुकराया नहीं ! तुम मुझे किस कदर अच्छी लगती हो !"

और, उसी नाच के दर्म्यान अजीज ने एलिस से उसकी जिंदगी की मुख्तसर कहानी सुन ली थी। वह एक शराबी बाप की लड़की थी। उससे छोटे दो-तीन भाई-बहन और थे। बाप ने अपनी सारी कमाई हमेशा शराब में उड़ायी थी और बुढ़ापे में उसे रुपया भी चाहिए था और शराब भी। उसकी सब जरूरतों की जिम्मेदारी एलिस के सर ही थी। दिन-भर वह एक दफ्तर में क्लर्क की हैसियत से काम करती और रात को कभी-कभार बाहर आने का मौका मिलता। अजीज ने उसकी बातें सुन कर कहा था—"तुम्हें इसके मुतल्लिक कोई फिक्र न करनी चाहिए। आइल-कम्पनीवालों के साथ मेरे ताल्लुकात बहुत अच्छे हैं। अगर वहाँ कोई अच्छी जगह न भी हुई, तो मुझे यकीन है कि, ऐसी जगह बनायी जा सकती है। तुम मुझसे मेरे दफ्तर में मिलो। मेरा इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का काम है; लेकिन अभी वह इतना बड़ा नहीं है कि, मैं तुम्हें अपने यहाँ जगह दे सकूँ। और फिर, दूरी में मुलाकात का कुछ और ही मजा है।"

"थैंक यू ! थैंक यू वेरी मच !" —एलिस उसके एहसान के बोझ से झुक-सी गयी थी। उसके बाद वह उससे अक्सर मिलती रही। अजीज भी उससे आइल-कम्पनी की टाइपिस्ट तो क्या, तेल के मुल्क की रानी बनाने की बातें करता रहा। लेकिन आखिर तक एलिस को मायूसी के सिवा और कुछ न मिला।

बैंड की आवाज एक-ब-एक रुक गयी और इसके साथ ही सभी नाचनेवाले जोड़ों के पैर भी। अजीज सलीमा को लिये अपनी मेज पर आ गया। लेकिन अभी वे लोग ठीक से बैठे भी न थे कि, सारी बत्तियाँ गुल हो गयीं और एना-उंसर की आवाज गूँज उठी—"मिस मारिया—मशहूर कैबरे-आर्टिस्ट !"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्षोंका दीर्घ अनुभव

जम्मी पिछले ४५ वर्ष से बच्चों की तिल्ली-जिगर की बीमारी के इलाज के विशेषज्ञ हैं। प्रति वर्ष वे हजारों बच्चों को मृत्यु से बचाते हैं। शीघ्र ही जम्मी से सलाह लीजिए और उनके विशाल अनुभव से लाभ उठाइए।

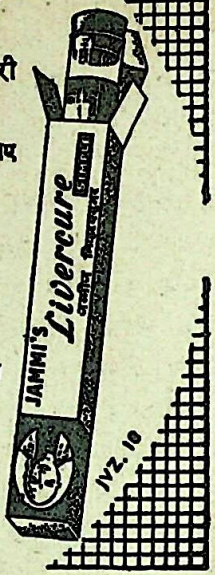

जम्मी का लिवरक्योर

बच्चों की तिल्ली-जिगर की शिकायत के लिए जम्मी के डाक्टर प्रति मास सब बड़े शहरों का दौरा करते हैं। उनके कार्यक्रम की सूचना प्राप्त कीजिए।

जम्मी वेंकटरमणैया एण्ड सन्स
प्रधान कार्यालय-मद्रास
शाखाएँ: बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, लखनऊ, नागपुर, बंगलोर, विजयवाडा, तिरुचिरापल्ली, और कुम्भकोणम

रो क्सा ना

रोक्साना
भारत की
सर्वश्रेष्ठ घडियां...

किसी भी स्थान के लिए "रोक्साना" दीवाल की घडियां सर्वथा उपयुक्त हैं। इन्हें खरीदकर भारत की अनोखी कारीगरी के लिए गर्व अनुभव कीजिये। २० से भी अधिक मोडलों में प्राप्य रोक्साना घडियां डिजाइनों और निर्यामता में वास्तव में अग्रणी हैं।

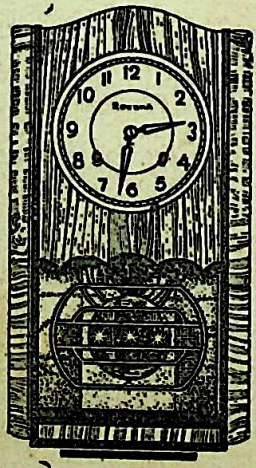

पूर्ण विवरण वाला सूचीपत्र मंगाइये

मास्टर क्लॉक एण्ड वॉच वर्क्स (प्रा.) लि.
३५ ए तुलसी पाइप रोड, माटुंगा (W. R.) बम्बई १६.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सलमा, इधर बैठ जाओ..मेरे पास! अब तो रोशनियाँ गुल हो गयी हैं।" अजीज ने कहा और सलीमा पूरे इत्मीनान के साथ अजीज के कंधे पर अपना सर रख कर बैठ गयी।

सब लोग नाचनेवाली की हरकतों को गौर से देख रहे थे। उसने हवाई किस्म का लिबास पहन रखा था। वह जरा भी एक तरफ को घूमती, तो उसकी रानों तक उरियाँ (नग्न) हो जातीं। ऊपर उसने सिर्फ एक छोटा-सा रंगीन कपड़ा छातियों पर बाँध रखा था, जिनको वह हर चक्कर पर, खूब अच्छी तरह जुम्बिश देकर नुमायाँ करती थी।

सलीमा ने आँखें बंद कर लीं। उसने आँखें बंद कीं, तो जैसे सारे आइने फिर से उसके सामने जगमगा उठे।

"अमजद! मेरे खत लौटा दो!"

"आखिर क्यों? मेरा कुसूर क्या है?"

"कुछ भी नहीं, मगर मैं चाहती हूँ कि, तुम मुझे वे खत लौटा दो।"

"अगर तुम्हारा खयाल है कि, मैं तुम्हें कभी ब्लैकमेल करूँगा, तो यह मेरी और तुम्हारी दोनों की तौहीन है। मैं तो महज इसलिए उन्हें रखना चाहता हूँ कि, तुम्हारी यह निशानी मेरे पास होगी—तुम्हारी याद दिलाने के लिए।"

फिर, यादों के अंधेरे में एक और चेहरा जगमगा उठा, सलीमा की आँखों के सामने। साँवला, मजबूत, घुँघराले बाल, सफेद मोतियों के से दाँत—यूसुफ खाँ! कालेज-स्पोर्टस में 'रोविंग' में उनकी मुलाकात हुई थी। जीतनेवाली कश्ती की 'स्टेयर' वह थी और उसका खास चप्पूवान था, यूसुफ खाँ।

"अगर आप हमारी कश्ती को इतना अच्छा स्टेयर न करतीं, तो हम कभी न जीत सकते।"—यूसुफ बोला था।

"हौसला-अफजाई का शुक्रिया! मगर यह तो सब आपकी हिम्मत का नतीजा है।"—सलीमा ने कहा था।

दरअसल, उसकी मुस्कराहट में, उसकी आँखों की चमक में, उसके मजबूत-सुडौल जिस्म में एक कशिश (आकर्षण) थी, जिसके सामने सलीमा की हिम्मत ने हथियार डाल दिये। उसके बाद बहते दरिया की लहरों ने, किनारों की खामोश-नमआलूद रेत ने उनकी रूमान-भरी सरगोशियों को बार-बार सुना, जिनमें सलीमा ने यूसुफ को 'यूसुफे सानी' कहा और यूसुफ ने उसे 'जुलैखा' का नाम दिया। उसके बाद भी कई बार सलीमा यूसुफ से मिली थी।

यूसुफ की मुस्कराहट अभी आइने को शरमा ही रही थी कि, एक दूसरा चेहरा उसके सामने आ खड़ा हुआ और सलीमा ने घबड़ा कर आँखें खोल दीं। हाल में अभी उसी तरह अंधेरा था—घुँघरुओं की आवाज, बैकग्राउंड म्यूजिक और एक नीम-उड़ियाँ (अर्धनग्न) जिस्म बेशुमार कानों और आँखों को बेसुध किये था। नाचनेवाली के हाथ में एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुन्नी रोई तो भला क्यों ?

मुन्नी ने जब रोना शुरू किया तो पहिले फुस फुस करने लगी। फिर सुब्कियाँ भरीं और देखते ही देखते आसमान सर पर उठा लिया। मुन्नी की सहेली नीनू चुपके चुपके मुन्नी को मना रही थी। अपनी तोतली भाषा में कह रही थी, "ना रो मुन्नी, जब मेरे पिता जी ओफिश से आयेंगे तो उनको मैं बोलूंगी ..." लेकिन नीनू की सुनता कौन है। मुन्नी की नई गोल मटोल गुड़िया के भरे भरे गुलाबी गालों पर मैल का बड़ा सा तिल लगा था, गुड़िया की नई फ़्राक पर मैली उंगलिओं के निशान पड़े थे ... और मैं खिड़की की ओट में खड़ी यह तमाशा देख रही थी। जब मुन्नी नहीं मानी तो मैं अंदर आई। मुझे देख कर तो जैसे गवैया वाह वा पाने पर ऊंची ऊंची तानों में गाने लगता है, मुन्नी उसी तरह से रोने लगी। बेचारी नीनू, हमारे पड़ोसियों की लड़की, दुबक कर सहमी सहमी सी एक कोने में खड़ी हो गई। अभी मैं सोच ही रही थी कि मुन्नी को मनाऊं तो नीनू और घबराएगी और जो नीनू को दिलासा दूँ तो मुन्नी अपनी चीख़ों से कानों के पर्दे फाड़ देगी, तभी नीनू की माँ, सुशीला दौड़ी आई। मुन्नी को लपक कर गोदी में उठाया और लाड से कहने लगी, "हमारी बिटिआ को कौन मारता है।"

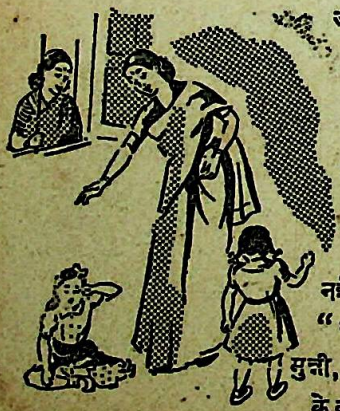

और बिटिआ रानी सिसकियाँ ले ले कर बोली, "चाची, चाची, नीनू—नीनू ने गुड़िया की फ्राक मैली कर दी!"

"ओ, हो, हो! हम नीनू को मारेंगे। अपनी प्यारी मुन्नी को नई फ़्राक लाके देंगे।"

"चाची, चाची, मेरे लिये नहीं, गुड़िया के लिये।"

मुन्नी, नीनू और गुड़िया को सुशीला अपने साथ ले गई और मैं घर के काम काज में लग गई। शाम के चार बजे होंगे जब मुन्नी गुड़िया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को ले कर नाचती हुई घर आई। नई फ़्राक देख कर मैं ने सुशीला को आंगन से आवाज़ दी और चाय मेरे घर पीने को कहा। सुशीला आई तो मैं ने शिकायत की: "भला नई फ़्राक लाने की क्या ज़रूरत थी?"

"यह नई नहीं बहिन! वही तो है। ज़रा धो डाली और इस्त्री कर दी, बस!"

"ज़रा धो डाली! ना बहिन, यह तो बहुत ही साफ़ और उंजली धुली है! क्या चमक रही है!"

सुशीला चाय का एक घूंट पी कर बोली: "वह तो इस लिये कि इसे सनलाइट से धोया है। घर के कुछ कपड़े थे, मैं ने कहा चलो मुन्नी की गुड़िया की फ़्राक भी धो डालूँ।"

मैं ने मन में कहा अब बात की जड़ तक उतर के रहूँगी: "तो कितने कपड़े धो डाले तुम ने? अब हमें बनाओ मत! कपड़े पीटने पटख़ने की आवाज़ तक तो आई नहीं!"

सुशीला बोली: "अब चाय पी लें तो घर चल कर तुम्हें एक चीज़ दिखाऊंगी।"

सुशीला मज़े से चाय पीती रही, मुसकराती रही, मुझे देखती रही। मैंने तो ऐसे तैसे कर के चाय पी डाली।

उस के घर जा कर देखा तो इस्त्री किये हुए कपड़ों का ढेर पड़ा था। उन्हें गिनने के लिए मैं हाथ लगाते डरती थी कि कहीं मैले न हो जाएं। सुशीला से बातों बातों में मालूम हुआ कि ये सभी कपड़े उस ने सनलाइट से धोए हैं। इन में चादरें, तौलिए, पर्दे, पाजामे, क़मीज़ें, धोतिआं, फ़्राकें, वग़ैरह वग़ैरह, कोई एक चीज़ तो नहीं थी। मैं हैरान हो गई कि इतने सारे कपड़े धोए हैं तो समय भी कितना लगा होगा और साबुन भी कितना ख़र्च हुआ होगा। उस ने मुझे समझाया कि, "यह सभी कपड़े आसानी से, आराम से, कम ख़र्ची में साफ़ और उजले धुले हैं। एक ही टिकिया से ४०/५० छोटे बड़े कपड़े धोना कोई बड़ी बात नहीं।"

अब उस दिन मैं ने फ़ैसला किया कि मैं भी अपने कपड़े सनलाइट से धो कर देखूँगी। और सचमुच सुशीला की एक एक एक बात सच निकली। सनलाइट साबुन थोड़ा सा मलने पर भरपूर झाग देता है और वह भी ऐसा कि जो कपड़े के ताने बाने में जा कर सारा मैल बाहर खींच लाए—न पीटने की ज़रूरत, न पटखने की—और कपड़े साफ़ और उजले धुल जाएं।

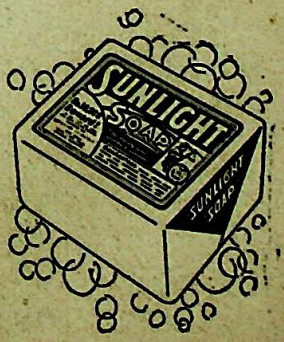

हाँ, एक बात और! सनलाइट की सुगंध भी ऐसी है कि कपड़ों में से सवच्छता की महक आती है और इस का झाग हाथों को कोमल और मुलायम रखता है। अब जिसे इतना कुछ मिले उसे और क्या चाहिए!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लम्बा-सा हार था, जिसे नाच के आखिर में उसे किसी को पहना देना था।

सलीमा ने अजीज की तरफ देखा; मगर वह अपने ही खयालात में मगन था—

"मारिया!"

"आप मुझसे क्यों मिलना चाहते हैं?"

"आपने वह हार जो मेरे गले में डाला था....."

"वह तो ऐसे ही खेल था।"

"मगर मैं कहता हूँ कि, ऐसी हर्ज की बात भी कौन-सी है? हार तो आप वापस ले लें.....शायद यह महज इत्तेफाक की बात है। मगर इसी इत्तेफाक को आपसे मुलाकात का बहाना बना कर मैं चला आया हूँ। आपको एतराज हो, तो...."

"अच्छा, तशरीफ रखिये!"

और फिर, वह उसे उस शाम अपनी कार में सैर के लिए ले गया था। बड़ी रात तक दोनों इधर-उधर घूमते रहे थे।

"मैं कोई पेशेवर डांसर नहीं हूँ।" कार में चुपचाप बैठी मारिया ने अजीज को बतलाया था— "मेरी माँ मर चुकी है। मुझे मेरी एक दूर की रिश्तेदार ने पाला है। लेकिन शायद मैं जन्म से ही मनहूस हूँ। जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गयी, मेरी उस रिश्तेदार पर ज्यादा-से-ज्यादा मुश्किल वक्त पड़ता गया। वह एक होटल में मुलाजिम थी, जहाँ से उसे अच्छी तनख्वाह मिल जाती थी। वह एक ऐसा ही होटल था, जहाँ वह हमारी-जैसी लड़कियों को नचाया करती थी; मगर आहिस्ता-आहिस्ता होटल का बिजनेस कम होता गया और उसे वहाँ से निकलना पड़ा। फिर मेरी पढ़ाई का सिलसिला टूट गया और यह नाच का सिलसिला शुरू हो गया। बहुत-से शरीफ आदमियों ने हार पहन कर मुझसे दोस्ती बढ़ायी; मगर कोई भी साबितकदम न रहा। वे मेरे हुस्न की तरीफ करते और मैं उनके धोखे में आ जाती। लेकिन दरअसल, वे जिस चमन की तारीफ करते, उसी के फूल तोड़ कर, उसे वीरान करके, चले जाते। मैं ख्वाबों में हकीकी (सच्ची) मुहब्बत का हार लिये उस शरीफ का इंतजार ही करती रही, जिसे मैं उसे पहना सकूँ। ...तुम भी उन्हीं में से एक हो। अब मैं इस खेल को अच्छी तरह समझ चुकी हूँ।"

आज भी नाच खत्म होने पर मारिया ने उसके गले में हार पहना दिया। उसने घबड़ा कर सलीमा की तरफ देखा। बिजलियाँ रौशन हो चुकी थीं। वह हार को अपने गले में देख कर शर्मिंदा-सा हो गया। तुरत ही हार उतार कर उसने मेज पर रख दिया और सलमा से कहा— "आओ, चलें!" और, वे बाहर निकल आये।

घर पहुँच कर जब अजीज ने एक धचके के साथ कार खड़ी की, तो सलीमा ने उसका सहारा ले लिया। अजीज बोल उठा—"थक गयीं, मेरी सलमा?"

"हाँ डार्लिंग! इतनी ज्यादा रोशनियाँ, इतने ज्यादा आइने—इंसान अपनी ही इतनी ढेर-सी शक्लें देख कर घबड़ा जाता है.....।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाँद के बहनोई

कर्नल जोरावरसिंह-लिखित "लाइफ्स डिस्टेंट हिलाक्स" में अपने को 'चाँद के बहनोई' बतानेवाले साँसियों का एक ओजस्वी प्रसंग

★

शिकार का पहला सबक मैंने साँसियों से सीखा। साँसी एक बनैली जाति होती है, जो सारे मध्यदेशीय पठार पर आटे में नमक की तरह बिखरी हुई है। मगर बनजारों की तरह यह खानाबदोश कबीला नहीं है। यह गाँवों में घर बसा कर रहता है और ज्यादातर रात को चौकीदारी का काम करता है। घोर जंगलों और डकैती के आशंकित स्थानों पर जो पुलिस-चौकियाँ कायम की जाती हैं, उन पर पुलिस की तरफ से साँसियों को तैनात किया जाता है। दरअसल, यह कौम बड़ी दिलेर होती है। इन-जैसे लट्ठबाज भारत में शायद ही कहीं हों। काम नहीं मिलने पर, ये लोग चोरियाँ करते हैं, या डाके डालते हैं। पचास-पचास कोस ये लोग बिना थके चले जाते हैं और तीन-तीन मन बोझा लादे बाढ़ में— विकराल तरंगित नदी में— तैर जाते हैं। मैंने अपनी आँखों से देखा है, पचास कोस के एक रजवाड़े के छः ऊँटों को कुल जमा चार साँसिये तीन नदियों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से पार करके ३६ घंटों में ले आये थे। कद के ये छोटे होते हैं; मगर शरीर से बड़े दृढ़ होते हैं और इतने फुर्तीले होते हैं कि, बंदरों की तरह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर बात-की-बात में छलाँग मार जाते हैं। बंदर इनकी गंध तक से डरते हैं। ये बंदरों को पकड़ कर पका खाते हैं। मगर इनका सबसे स्वादिष्ट भोजन होता है, साँप की कढ़ी और चने की रोटी।

...उस वक्त मैं सिर्फ पंद्रह वर्ष का ही था। मेरे ताऊ अपनी जागीर की एक बड़ी जटिल समस्या को सुलझाने में व्यस्त थे। उस समय तो वह समस्या बहुत ही जटिल और चिंताजनक थी— आज जरूर नहीं है। उस इलाके में साँसियों ने एक गाँव बसाया था। मेरे पितामह ने ही उनको अपनी जागीर में बसाने की व्यवस्था की थी। साँसियों के साथ उनकी सहानुभूति काफी गहरी थी। राज्य और पुलिस ने जो बर्बर एवं अमानुषिक दृष्टिकोण बनैली जातियों के प्रसंग में बरत रखा था, मेरे पितामह को उससे स्पष्टतः घृणा थी। उन्होंने स्वयं राजा साहब से इस मामले का जिक्र किया था और अपना दृष्टिकोण उनके सामने रखा था; किंतु नौकरशाही के सामने मेरे पितामह को सरकारी नीति को बदलने में सफलता नहीं मिली। अस्तु, अपनी जागीर में तो वे जो-कुछ चाहते, करने को पूर्णतया स्वतंत्र थे। अतः अपने इलाके में उन्होंने एक गाँव साँसियों के लिए बसा दिया और कुछ साँसियों को अपनी ड्योढ़ी पर नौकर के रूप में नियुक्त भी कर लिया।

पितामह का प्रयोग बड़ा सफल और फलप्रद रहा। नये गाँव में बसे सभी साँसी खेती-बाड़ी में लग गये। दूसरा सबसे बड़ा लाभ जो जागीर को हुआ, वह यह कि, उस इलाके में डकैतियाँ और ठगी बंद हो गयी। सरहद पर पठानों के डाके पड़ते थे। सिंधिया और होलकर की फौज से जिन पठानों और अफगानों को छुट्टी दे दी गयी थी, वे छोटी-छोटी रियासतों में आ-आकर बस गये थे और सरहदों पर लूट-मार किया करते थे। मेरे पितामह की जागीर के सामने भी यही समस्या थी। इन 'अवकाशप्राप्त' अफगानों और पठानों का आतंक जागीर को हमेशा बना रहता था। इनके पास बहुत अच्छे फौजी हथियार भी होते थे और इन हथियारों का इस्तेमाल ये हमारी छोटी-सी पुलिस की अपेक्षा अच्छा जानते थे।

पितामह अफगानों के इस आतंक को अपनी जागीर से हमेशा के लिए समाप्त कर देना चाहते थे। साँसियों को बसाने के पीछे उनकी यही योजना थी। जैसे ही साँसियों की वफादारी में उनका विश्वास जमा, उन्होंने उन्हें पुलिस में भी भर्ती कर लिया और नये-से-नये डिजाइन की बंदूकों से उन्हें लैस कर दिया। हर साल गेहूँ की फसल आने के बाद पिंडारियों और पठानों के डाके आसपास के सम्पन्न गाँवों पर पड़ते थे। कभी-कभी तो सारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फसल ही ये लोग अपने साथ उठवा ले जाते थे। सरकारी पुलिस कहाँ-कहाँ इनका पीछा करती? लुटेरे एक रियासत से दूसरी रियासत में भाग जाते। अक्सर औरतों को भी ये लुटेरे ले जाते। चारों तरफ बड़ा भय और त्रास फैला रखा था इन आवारागर्दों ने। राजाओं का आपसी वैमनस्य और छोटे-बड़े की भावना इतनी विषैली हो गयी थी कि, सब मिल कर काम करने की सोच ही नहीं सकते थे। उल्टे, एक रियासत अपने यहाँ घुस आये लुटेरों को, दूसरी रियासत की पुलिस को खोजने तक नहीं देती थी। इसे वह अपनी प्रभुता का अपमान मानती थी, हालाँकि प्रभुता का छद्म प्रतीक तक किसी को प्राप्त नहीं था।

अपने सजीले घोड़े पर सवार एक बूढ़ा साँसी

राजपूत जागीरों में ये लुटेरे कम आते थे; क्योंकि वहाँ इन पर अक्सर मार पड़ जाती थी; मगर जागीरदारों के पास इतने हथियार तो होते नहीं थे। केवल स्वाभिमान और राजपूती साहस ही उनसे ऐसे असाधारण वीरत्व के काम करवा लेता था। मेरे पितामह ने अपने जीवन-काल में चालीस-पचास पिंडारियों को मौत के घाट उतारा था। उनका इन पर बड़ा आतंक था। मगर सारी जागीर में तो वे घूम-फिर नहीं सकते थे। ये डाकू अपने छोटे-छोटे तेज टट्टुओं पर रियासतों की सरहदें बड़ी आसानी से पार कर लेते थे और सुरक्षित जंगलों में जाकर पड़ाव डाल देते थे। मेरे ताऊ ने प्रशिक्षित साँसियों और राजपूतों को लेकर एक बार ऐसे ही एक पड़ाव को लूटा था और बारह पिंडारियों को बाँध कर ले आये थे। उनके इस दुस्साहस पर मेरे पितामह बड़े बिगड़े थे। उनके बिगड़ने का सबसे बड़ा हेतु यह था कि, ताऊ बिना इजाजत दूसरी रियासत की सरहद में घुस गये थे।

× × ×

साल-भर मेरे पितामह साँसियों और भीलों को नयी बंदूकों के परिचालन में प्रशिक्षित करते रहे। होली के बाद उन्होंने नलखेड़े के जंगल के मुहाने पर अपनी चौकियाँ बनायीं और साँसियों को दो-दो फर्लांग के फासले पर तैनात कर दिया। प्रायः इसी जंगल की राह डाकू जागीर में आते थे। नलखेड़ा सम्पन्न कस्बा था। उस पर अक्सर पठानों की लोलुप दृष्टि अटकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहती थी। कस्बे के पश्चिम में दूधी नामक छोटी-सी नदी बहती है, जो बरसात में इतनी भयानक हो जाती है कि, मछुवों और मोघियों की बस्तियों को उदरस्थ कर लेती है। नलखेड़े के पास आकर जंगल के बीच, भीमकाय कगारों के मध्य में, छहराती और अपने ही उदर को चार-पाँच धाराओं में चीरती जब दूधी बहती है, तो लगता है, मानो कई जुड़वाँ नागिनें फुफकारती हुई किसी अभागे पर आक्रमण करने जा रही हैं। जंगल का यह भाग हिंसक पशुओं का ही नहीं, चोरों और डाकुओं का भी आवास रहा है। बूँदी के निर्वासित सरदार शूरसिंहजी एक महीने से भी अधिक समय तक इस नदी के किनारे रहे थे और यहीं से अँग्रेजी पल्टन को उन्होंने अपने अचूक बाणों से घायल करके पीछे लौटा दिया था— सिर्फ एक ही पल्टन को नहीं, बल्कि तीन-तीन पल्टनों को।

यह नदी दो रियासतों के बीच की सरहद भी बनाती थी। इसलिए काफी लम्बी दूरी तक यह डाकुओं की शरणदायिनी रही है। दीवाली से बरसात के आने तक इसके किनारे-किनारे पिंडारियों और पठानों की टोलियाँ मँडराया करती थीं। मेरे पितामह इस खतरे को निकाल फेंकने के लिए कृतसंकल्प थे। चोरी एवं डकैती के अलावा हमारा एक नुक्सान और भी होता था। यहाँ अक्सर शेरों के फेरे हुआ करते हैं। मेवाड़ से लेकर मैसूर तक शेरों के फेरों का एक रास्ता नलखेड़े का जंगल भी है। प्रकृति की इस नियामत को पितामह खोना नहीं चाहते थे। स्वयं शिकार करने एवं शिकार के लिए मेहमान बुलवाने का उन्हें बड़ा शौक था। शिकार की ही बदौलत उनसे कई बड़े राजे-नवाबों की पहचान थी। रियासतों के अँग्रेज एजेंटों और रेजीडेंटों तक भी उनकी पहुँच शिकार को ही लेकर थी। पठानों एवं पिंडारी डाकुओं की चौकियों के कारण शेर भाग जाया करते थे। खालें बेचने के लिए ये लोग उन्हें ढूँढ़-ढूँढ़ कर मारा करते थे। एक बार तो तीन महीने में ही तेरह बड़े शेर सादुल्ला खाँ पठान ने मारे थे। चीतल और हिरन की खालों की भी बड़ी माँग रहती है। अतः अपने फुरसत के समय में ये डाकू सारे जंगल को छान डालते थे और जो भी जानवर मिलता, उसे अपनी गोली का निशाना बना देते थे। काले हिरनों का तो नामोनिशान ही मिट गया था और यही हाल करीब-करीब चीतलों का था। नदी के दोनों किनारों पर दूर-दूर तक जो छोटे-छोटे गाँव बसे थे; उनमें तो लगभग साल-भर भय और त्रास की भयावह स्थिति बनी रहती थी। आज के जमाने में यह सब अजीब-सा लगता है; मगर अभी कुछ वर्ष पूर्व तक यह सब इन बाशिंदों को भोगना पड़ा था।

इतनी तैयारी करने के बाद पितामह ने जागीर के हिस्से में पड़नेवाली पूरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नदी को सुरक्षित करना शुरू किया। नदी के ऊपरी हिस्से में जहाँ आमद-रफ्त के लिए नदी पार की जाती थी, उस घाटी के एक लम्बे टुकड़े को, जो नदी के समानांतर जाता था, उन्होंने इनाम के तौर पर सौंसियों को दे दिया, बशर्ते वे नेकचलनी और जागीर के प्रति पूरी वफादारी से रहें। इस गाँव का नाम उन्होंने 'राज सौंसिया' रखा था, जो सरकारी फाइलों में अब तक चला आता है।

पितामह के मित्रों ने उन्हें सौंसियों के स्वभाव की कई बातों के प्रति सचेत किया था। सौंसी बलवान के प्रति ही वफादार रहता है, निर्बल के प्रति नहीं। यह तत्व उनके चरित्र का मूलभाव है। अपने से निर्बल के सामने सौंसी किसी भी प्रलोभन के बूते नहीं झुकता, चाहे उसे साम्राज्य ही क्यों न दे दिया जाये। इसके अभिप्राय और भी हैं– सौंसी अपने दुर्बल मालिक की उपेक्षा ही नहीं करता, बल्कि उसके दर्प-प्रदर्शन पर इतना असहिष्णु हो जाता है कि, बात-की-बात में उसे मार भी बैठता है। पुलिस के कई अफसरों के साथ ऐसी घटनाएँ घटी थीं। पितामह को भी इस खतरे से आगाह किया गया; मगर वे तो हर चीज को तौल कर करते थे। आग बुझा कर दावानल मोल लेने की गलती उनसे नहीं हो सकती थी। सौंसियों को अपनी जागीर में बसाने से पहले वे इस बाबत जो-कुछ जरूरी था, वह कर चुके थे, अर्थात् उन्होंने सौंसियों को अपने बल का सबूत पहले ही दे दिया था।

मेक्सिको के आदिवासी, जिनके रस्मो-रिवाज सौंसियों से साम्य रखते हैं।

एक रात को जब वे अपने शिकार-नाके पर एक पेड़ के नीचे सो रहे थे, तो साथ के एक सौंसी सरदार के मन में यह संदेह जागृत हुआ कि, कहीं मैं अपने पूर्वजों के मान-सम्मान को तो नहीं बेच रहा हूँ? कहीं मैं सुरक्षित और निश्चित भोजन के लोभ में अपनी जाति की शौर्य-निष्ठा को तो लात नहीं मार रहा हूँ? केवल रहने के लिए छत और खाने के लिए अन्न देकर यह राजपूत मेरे कुल-शील को तो नहीं खरीद रहा है? कहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

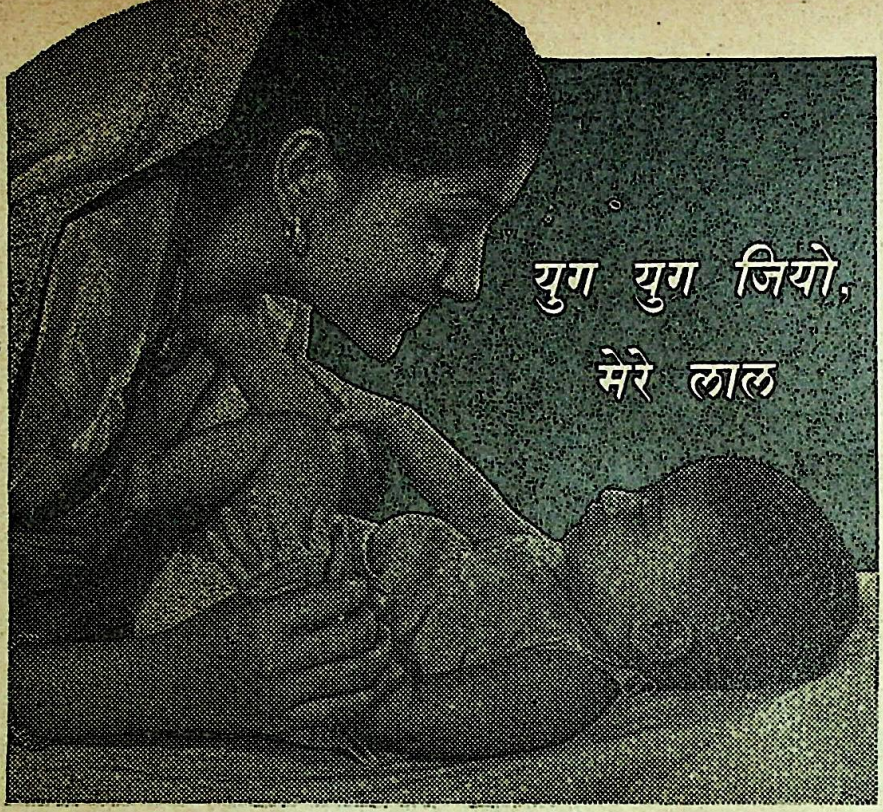

यह उनकी प्रथम संतान है। इसने अपने माता पिता के जीवन में सुख और हर्षोल्लास की नयी रोशनी फैलायी है। अपने बच्चे की परवरिश ये दिलोजान से करेंगे और उसके लिये अच्छीसे अच्छी चीजोंका प्रबन्ध करते रहेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं। बच्चों के बढने के लिए और उनमें रोग प्रतिरोध शक्ति निर्माण करने के लिए उनका पोषण सही तरीके से होना चाहिये। बच्चों के आहार के बारे में मामूली जानकारी से यह काम नहीं बनेगा। बच्चों का स्वास्थ्य और शरीर-विकास संतुलित आहार पर निर्भर है और इसकी पूरी जानकारी केवल आपके डॉक्टर के पास ही है।

डॉक्टर के ज्ञान और अनुभव का लाभ अपने बच्चों का भावी जीवन सुरक्षित रखने के लिए अवश्य उठाइये। हमेशा —

अपने डॉक्टर से सलाह लीजिये।

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड, बड़ौदा-३

ACW 59-2 D HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

EVEREST

मेरी छत्रछाया में रहनेवाले साँसी नर-नारी किसी दिन यह न कह दें कि, रावदा ने सारी साँसी-जाति के आस्था-विश्वास को अपने लाभ के लिए बलि पर चढ़ा दिया !

रावदा के सामने सचमुच एक टेढ़ी समस्या थी। एक तरफ उसके सामने मेरे पितामह का प्रेम, उनकी परवरिश के एहसान और उनका विश्वास था और दूसरी तरफ थी, उसकी जातिगत चरित्र-सम्पत्ति – उसकी नस्ल की अदम्य शौर्य-निष्ठा– वह निष्ठा, जिसके तकाजों को पूरा करने के लिए साँसी-जाति सहस्रों वर्षों से बेघरबार दर-दर मारी फिरती रही है। आखिर, रावदा ने यही निर्णय किया कि, वह जाति के प्रति द्रोह नहीं करेगा, चाहे मनुष्यता के प्रति उससे विश्वासघात हो जाये।

नाच-रंग में व्यस्त
साँसी प्रेमी और प्रेमिका
[चित्र : केयट-निर्मित एक स्केच]

जाति तो गंगा का स्रोत है, जिसमें वह एक बूँद की तरह है और अगर बूँदें बगावत करने लग जायें, तो स्रोत का प्रवाह ही रुक जाये। रही बात मनुष्यता के साथ घात करने की। सो तो, उसकी गलती थी। क्यों उसने राजपूत की नौकरी मंजूर कर ली ? उसकी गलती की सजा जाति क्यों भोगे ? अपराध का दंड अपराधी को ही मिलना चाहिए।

..और उसने इस दंड का रूप भी निश्चित कर लिया– राजपूत की वह परीक्षा लेगा। यदि राजपूत निर्बल निकला, तो उसे मार कर वह स्वयं आत्महत्या कर लेगा। इस तरह वह जाति को भी बचा लेगा और राजपूत के विश्वास को भी। उसने अपने साथी साँसियों को अपना यह इरादा बतलाया। पितामह के स्नेह से उनके दिल इतने ओतप्रोत थे कि, वे अपने सरदार के इस निर्णय को मानने से पहले तो साफ इन्कार कर बैठे; मगर जब सरदार की हुक्मी आँखें उन्होंने देखीं और उसकी दर्पभरी आवाज उनके कानों ने सुनी, तो नस्ल का प्रसुप्त चरित्र उनके भीतर भी जाग उठा।

कृतसंकल्प रावदा, पितामह के बिछौने के पास गया और पितामह को जगाने के बाद कहने लगा– "साँसी बहादुर की ही नौकरी करता है, डरपोक की नहीं। रे भोले राजपूत, शायद तुझे साँसियों का यह रिवाज याद नहीं था, नहीं तो तू हमें अपने यहाँ नौकरी पर नहीं लगाता। साँसी भूखों मर जायेगा; मगर कमजोर की छाया में कभी जीना नहीं चाहेगा। उठ, अगर तुझमें कुछ हो, तो मेरे सामने आज तलवार थाम ले।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

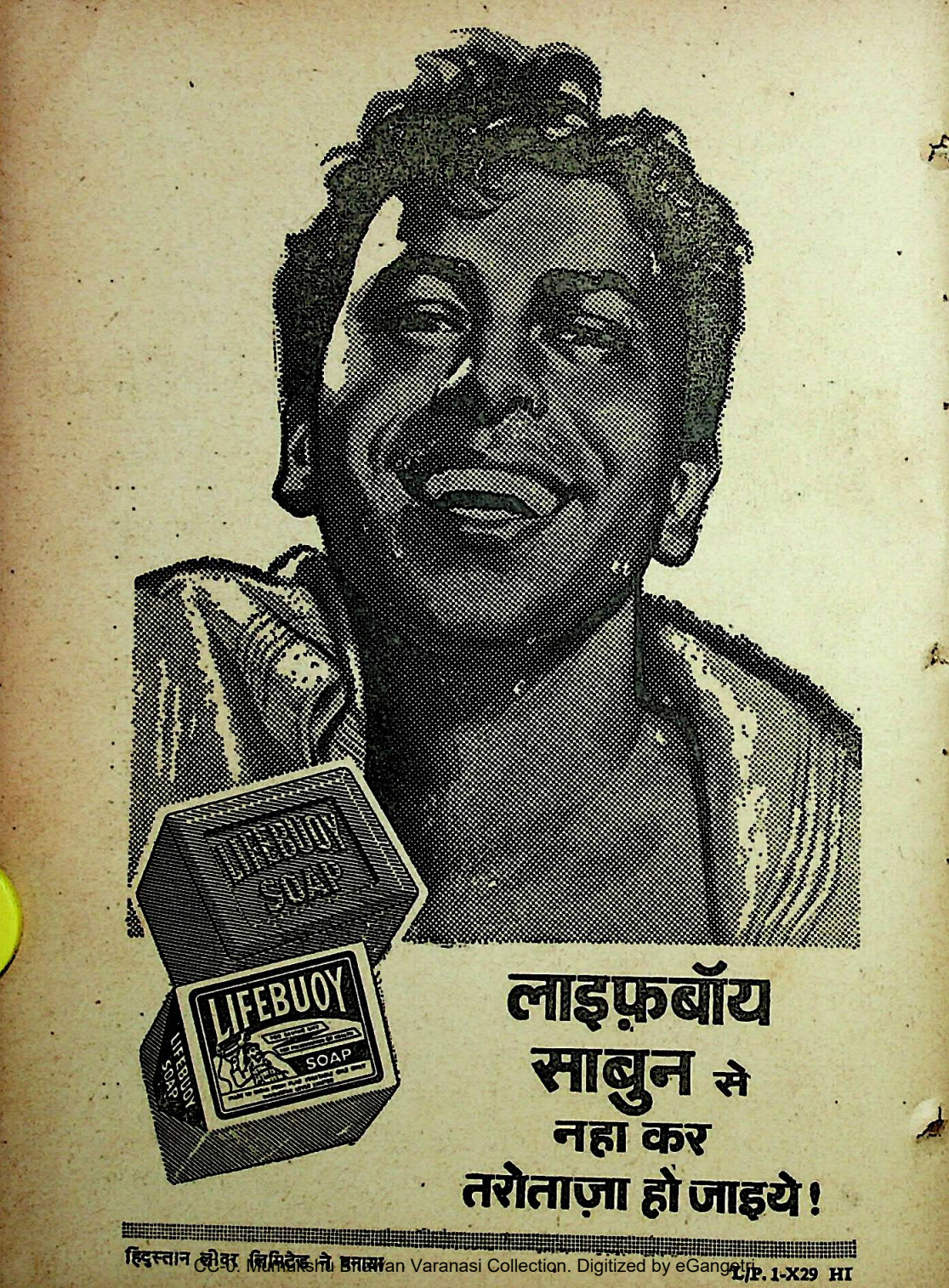

लाइफ़बॉय
साबुन से
नहा कर
तरोताज़ा हो जाइये!

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड का उत्पाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पितामह ने आँखें खोलीं, तो देखा कि, उनका सबसे स्वामीभक्त नौकर आधी रात को, बीच बियाबान में, उनके सामने नंगी तलवार लिये खड़ा है और उन्हें दो-दो हाथ करने के लिए ललकार रहा है। क्षण-मात्र में ही पितामह ने स्थिति समझ ली और झपट कर राबदा के तलवारवाले हाथ की कलाई पकड़ ली। राबदा के मुख से एक हृदय-विदारक चीख निकली और उसके साथ ही तलवार खनखनाहट के साथ जमीन पर आ गिरी। फिर कलाई छोड़, पितामह ने राबदा के चेहरे को गौर से देखा और एक तमाचा उसके बायें गाल पर ऐसा मारा कि, नाक से खून बहने लगा और राबदा बेसुध होकर धड़ाम से जमीन पर आ रहा।

सोती बालिका छोटे भाई के साथ

इसके बाद बंदूक-बिछौना वहीं छोड़, पितामह उसी आधी रात को घर लौट आये। सब ने कुशल-क्षेम पूछा; किंतु उन्होंने तीव्र-कुटिल भृकुटि एवं आग उगलती आँखों के सिवाय किसी को कुछ नहीं बताया। उनके ये तेवर देख कर, दरअसल, किसी की गहरे जाने की हिम्मत नहीं हुई। वे सीधे अपने शयनागार में चले गये और सबेरे दस बजे तक सोते रहे। कोई भी उन्हें जगाने का साहस नहीं कर पाया। सब झाँक-झाँक कर वापस लौट आये।

नौ बजे तक राबदा अपने साथ के साँसियों को लेकर ड्योढ़ी के सामने आकर बैठ गया था। उसके साथियों ने सारी घटना लोगों को सुनायी। सबके चेहरे तमतमा गये; किंतु पितामह का भय सबके आवेश पर ठंडा पानी क्या, बर्फ छिड़क रहा था। पितामह उठे और बरामदे में आकर बैठ गये। राबदा आगे बढ़ा और अपनी पगड़ी और तलवार पितामह के कदमों पर रख कर निर्भीक-निश्शंक स्वर में बोला—"मालिक, राबदा आपके सामने खड़ा नहीं रह सका। उसके हाथ की तलवार उठ नहीं सकी। यह देवता का नहीं, तो और किसका इशारा हो सकता है कि, तुझे जो मिला है, वह बहादुर मालिक ही मिला है। तेरा संदेह बेसूद है। मैं यही सोच रहा था कि, आपने मुझे गुस्ताखी के लिए सजा भी दे दी। अच्छा ही किया। अब राबदा आपका नौकर है। शरीर की एक-एक बोटी वह आपके लिए न्यौछावर कर देगा। अब राबदा को सिर्फ एक मौत ही अपने मालिक से अलग करेगी... मालिक, मुझे माफ कर दो।"

पितामह तनिक मुस्कराये। उन्होंने तलवार म्यान से निकाल कर राबदा के हाथों में दे दी और उसकी पगड़ी स्वयं उसके सिर पर रखते हुए उससे कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

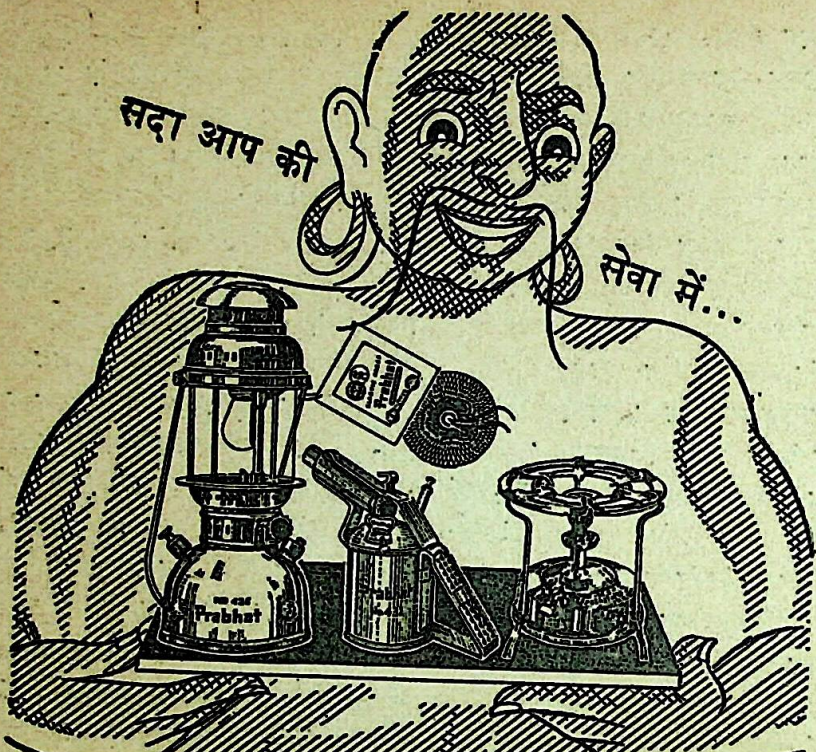

प्रभात के उत्पादन

चिराग के खिलते ही जिन्न, हाथ बांधे उस की हर आज्ञा, हर कामना पूरी करने के लिए, अलादीन के सामने आ खड़ा होता था। वह पूरा विश्वासयोग्य था... पूरे भरोसे के क़ाबिल... प्रभात के उत्पादन भी वैसे ही विश्वासनीय हैं, वैसे ही भरोसे के क़ाबिल,... सदा आप की सेवा में !

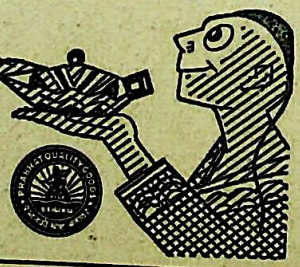

"भारत के प्रथम...अब तक सर्वोत्तम!"

प्रभात (स्टोव ऐण्ड लॅम्प) प्राडक्टस कम्पनी प्राइवेट लि., नोबल चैम्बर्स, पारसी बाज़ार स्ट्रीट, फ़ोर्ट, बम्बई-१.
MM.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अपनी इस इज्जत को मेरी प्रजा की इज्जत समझना और इस तलवार को मेरी सौगंध मानना। जब तक जीवित रहना, प्रयत्न यही करना कि, सरहद के इस पार आकर डाकू उत्पात नहीं मचावें।"

राबदा पुलकित हो उठा। पितामह ने देवपूजन के लिए उस दिन सौंसियों को सात बकरे दिये और स्वयं देवी के मंदिर में शीश नवाने चले गये। सौंसियों ने बकरे काटे, देवता को चढ़ाये और उस दिन रात-भर वे पूरी मस्ती में नाचते-गाते और खाते-पीते रहे।

× × ×

पिंडारियों को पितामह-द्वारा आयोजित नाकेबंदी का भान नहीं था। हमेशा की तरह वे आये। करीब दस-बारह की टोली थी। सब घोड़ों पर थे। सौंसियों के संतरियों ने उन्हें देखा और मिनट-भर में ही सिंगों की ध्वनि-द्वारा सूचना एक नाके से दूसरे नाके होती हुई सभी नाकों में पहुँच गयी। पिंडारियों ने नदी को पार किया और ज्यों ही घाटी पर चढ़ना शुरू किया, दोनों– दायीं और बायीं– दिशाओं से दनादन गोलियाँ उन पर बरसने लगीं। पिंडारियों के लिए यह अप्रत्याशित था। उनके भय और आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब कि उनके पाँच आदमी केवल पाँच गोलियों से ही धराशायी हो गये। उनकी समझ में आ गया कि, गोलियाँ सुदक्ष हाथों से चली हैं। अनाड़ी किसानों के हाथ ये नहीं हो सकते। क्षण-भर में ही वे अपनी स्थिति समझ गये। उन्होंने घोड़ों की बागें मोड़ीं और नदी में वापस घुसने के बजाय तुरत जंगल के झुरमुट में हिरनों की भाँति भागते हुए गायब हो गये।

किंतु जैसा कि पितामह ने अपने पहरेदारों और सौंसियों को आगाह किया था, यह विजय अथवा पिंडारियों का यह दुम दबा कर भाग जाना, न तो डाकुओं के आतंक की समाप्ति थी और न सौंसियों के साहस और शौर्य की परीक्षा ही; बल्कि सारे डाकू-बल के धुआँधार प्रतिशोध की शुरुआत थी। चीलों की तरह झपट्टे मारनेवाले पिंडारियों और अफगानों के खतरे को मेरे पितामह ने देखा था और पड़ोस की एक काफी बड़ी रियासत को इन खतरों की चपेट में तिलमिलाते देख, उन्होंने एक दिन बातों-ही-बातों में महाराजा से कहा था–"अगर कोई राजा अपनी प्रजा को चोरों और ठगों से सुरक्षित नहीं रख सकता, तो उसे राज्य करने का कोई अधिकार नहीं है।" महाराजा ने भी इसका उत्तर माकूल ही दिया था–"ठाकुर, मैं अपनी बात कहता हूँ। मैं खुद उनके खिलाफ अकेला खून की आखिरी बूँद तक लड़ने के लिए संकल्प-बद्ध हूँ; मगर पड़ोस की हर रियासत उनके साथ सहयोग जो कर रही है।"

पिंडारियों की इस पिटाई के पाँच रोज बाद ही जागीर पर विपत्तियों की घटा छा गयी। पितामह ने स्वयं अपनी देखरेख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन ब दिन ब दिन...

रेक्सोना साबुन

आप की जिल्द को निखारे चला जाता है

रेक्सोना में तेलों का एक विशेष मिश्रण, कैडिल, मिलाया जाता है जो जिल्द के स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए बहुत गुणकारी है। रेक्सोना के मलाईदार मुलायम झाग को अच्छी तरह अपनी जिल्द पर मलिये और देखिये कि दिन ब दिन यह कैसे निखरती चली जाती है!

आप के सौंदर्य के लिए

...रेक्सोना

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने रेक्सोना सोसायटी लि., लॉरेंटिया के लिए भारत में बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में डाकुओं के मुकाबले की तैयारी की थी। रात के करीब ग्यारह बजे थे कि, सौंसियों की एक गश्ती-मंडली को नदी के उस पार घुड़सवारों की चहल-पहल और भाग-दौड़ नजर आयी। बस, सिंगियाँ बज उठीं– सारी चौकियाँ सजग हो गयीं। हमारे घुड़सवार भी काठियों पर जा जमे। जैसी कि योजना थी, चौकियों की रोशनियाँ बुझा दी गयीं। पितामह का इरादा डाकुओं को रोकने का नहीं था। वे तो मरने-मारने की ठान बैठे थे। सबेरे उन्होंने अंतरंग मित्रों को बुला कर देवी की पूजा की थी। कुलदेवी को बलि चढ़ाते हुए उन्होंने जगन्माता से कहा था–"माँ! अगर आज डाकू इस भूमि पर घुस आये, तो अपनी बलि भी चढ़ा दूँगा।". फिर अकेले काफी देर तक वे देवी के मंदिर में बैठे रहे थे। इसी प्रकार शाम को उन्होंने अपने पूर्वजों की ढाल-तलवार को भी सिंदूर और श्रीफल चढ़ाया था।

व्यूह-रचना के अनुसार हमारे सिपाहियों ने अपने-अपने स्थान अख्तियार कर लिये। थोड़े समय तक चारों तरफ सुनसान व्याप गया– पत्ता तक नहीं खड़का। फिर, अकस्मात् तीन तरफ से तड़ातड़ गोलियों की बरसात ऐसी शुरू हुई कि, रात जैसे मौत की रात बन गयी। गोलियों की आड़ में डाकू अपने घोड़ों पर आगे बढ़े। उन्होंने नदी में घोड़े डाल दिये। हमारी तरफ से गोलियों का नाममात्रेण जवाब दिया गया। यहाँ-वहाँ की चौकियों ने अपनी एक-दो बंदूकों से निशानेबाजी जारी रखी। बाकी सैनिक चंद्राकार व्यूह में बराबर पीछे हटते गये। पिंडारी और अफगान डाकू तेजी से नदी पार कर रहे थे और सामने के किनारे पर गोलियों की बरसात किये जा रहे थे। हमारी चौकियाँ भी योजना के मुताबिक आग उगल रही थीं। डाकुओं ने तीन जत्थों में नदी को पार किया। अब वे साफ नजर आने लगे थे। कोई सवा सौ आदमी होंगे। सबके पास घोड़े थे। सिपाहियों की-सी वर्दी पहने इन लुटेरों की बगलों में तलवारें टँगी थीं और किन्हीं-किन्हीं के कंधों पर बरछे भी लटक रहे थे। जैसे ही वे नदी के किनारे पर एकत्र हुए, हमारे जवानों ने एक साथ ही दनादन बंदूकें दागीं। डाकुओं को इतनी बंदूकों का अनुमान नहीं था। वे सोच में पड़ गये; मगर फिर उन्होंने राइफलें सम्भालीं और अंधाधुंध गोलियाँ चलाते हुए आगे बढ़ने लगे। हमारी तरफ से गोलियाँ चलती रहीं– अविराम बंदूकें दागी जाती रहीं। मगर फिर भी डाकू आगे बढ़ते गये। वे लगातार फायर कर रहे थे और काफी तेजी से घाटी पर चढ़ते जा रहे थे। अपनी मदांधता में उन्हें पता नहीं था कि, हमारे यहाँ से खाली फायर हो रहे हैं, गोलियाँ नहीं चल रही हैं। ऐन मौके के सिवाय पितामह गोलियाँ बर्बाद करना नहीं चाहते थे। डाकू उनके जाल में फँस गये और इन खाली धमाकों के जवाब में बेतहाशा गोलियाँ चलाते रहे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'एनासिन'

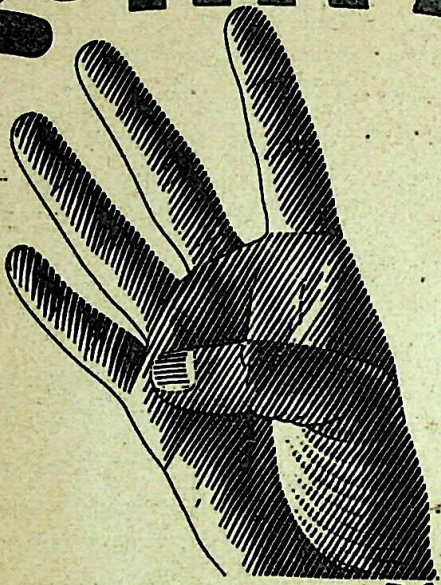

इसकी चार दवाइयों के साथ सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार व रगपुट्ठों के दर्द पर बेहतर है

याद रखिये। सिर्फ़ एक दवावाली दर्द की कोई भी दवा आपको 'एनासिन' जैसा फ़ौरन...बिनाहानि व अचूक आराम नहीं दे सकती! इसमें डाक्टर के नुस्ख़े जैसा चार दवाइयों का वैज्ञानिक मिश्रण है'। लाखों जानते हैं कि सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार, दान्तदर्द व रगपुट्ठों के दर्द से फ़ौरन पूर्ण आराम पाने के लिए 'एनासिन' ही बेहतर है। अपने घरमें हमेशा 'एनासिन' रखिये।

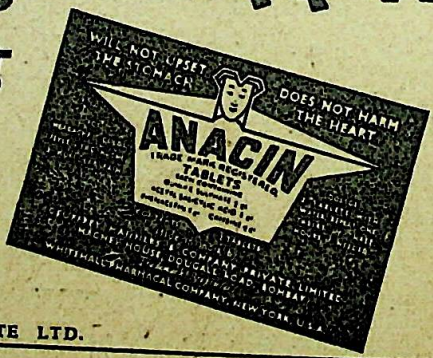

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & COMPANY PRIVATE LTD.

K-68 (R) HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे सैनिक बराबर पीछे हटते रहे। उन्होंने एक भी गोली नहीं चलायी थी। इधर तो केवल आसपास बिखरी ग्यारह चौकियाँ ही बंदूकें दाग रही थीं। डाकुओं का साहस बढ़ता गया और वे अपने विजयोल्लास में और भी तेजी से घाटी पर चढ़ने लगे। सारा जंगल बारूद के धमाकों से काँप रहा था। पेड़ों के झुरमुटों में सोये पक्षी भाँति-भाँति के सभीत नाद करते हुए हवा में चक्कर काट रहे थे। व्याकुलता और भय की लहरें वायुमंडल में भीषण रूप ग्रहण करती जा रही थीं। आसमान में लाखों तारे टिमटिमा रहे थे और आतंक और आसन्न काल के इस वातावरण में ऐसा लगता था कि, उनमें से प्रत्येक नक्षत्र नीचे उतर कर अग्निकुंड बन जाना चाहता था— हर तारा इस रात को निगल जाना चाहता था। नदी के दोनों किनारे, जो दरअसल सीधी दीवारों-जैसी दो घाटियाँ थीं और जिनके वक्ष पर विशाल शरीर और सघन हरियाली-लदे ऊँचे-ऊँचे वृक्ष लहलहा रहे थे, इस कयामत की रात को जैसे अपने प्रलम्ब बाहुओं में समेटे बैठे थे। पत्थरों और वृक्षों की जड़ों का स्पर्श करती हुई नदी की धारा अगहन के तेज प्रवाह में 'घर्र-घर्र' बह रही थी, मानो एक मापहीन अजगर नींद में सोया पड़ा हो और अपने नथुनों से श्वास-प्रश्वास के बादल उगल रहा हो। उस रात जैसी हवा उस भग्नप्राण जंगल में बह रही थी, लोग कहते हैं कि, वैसा वायु-प्रवाह उस क्षेत्र में कभी नहीं देखा गया था। स्थावर-जंगम, सभी अपलक-अचेत बने, एक महान् निर्णय की प्रतीक्षा में ऐसे आकुल जिज्ञासालीन बैठे थे, जैसे स्थिति युगांतर के मोड़ पर हो और एक परम्परा खत्म होकर नये दौर का रूप धारण करनेवाली हो। कहते हैं कि, उस वर्ष नियमित रूप से निरंतर सियार बोलते रहे थे और खेतों ने ऐसी फसल प्रसूत की थी कि, नब्बे वर्ष के बूढ़े भी वैसी फसल अपने जीवन-काल में पैदा नहीं कर पाये थे। और, पितामह का वह आम्रकुंज! पाँच-पाँच वर्ष के बाँझ आमों में भी उस वर्ष इतनी इफरादी से फल आये थे कि, पितामह बाँट-बाँट कर थक गये थे।

डाकुओं का हल्ला आधी घाटी तक बढ़ आया था। घोड़ों को एँड़ें लगाते और भयंकर गर्जना करते हुए वे अविराम ऊपर चढ़ते आ रहे थे। आगे की टुकड़ी दनादन गोलियाँ छोड़ती जा रही थी और पीछे के घुड़सवार नंगी तलवारें चमकाते हुए पूरे गले से ललकारें भर रहे थे। अचानक हमारे पक्ष की बंदूकें मौन हो गयीं। जीत के गर्वानुभव में डाकुओं ने जय-जयकार किया। वे इतने उच्च और तीव्र स्वर में चिल्लाये कि, जंगल थर्रा उठा। नदी के किनारों के बाशिंदों ने दूर-दूर तक वह जयनाद सुना था। वे कुछ शिथिल हुए। घोड़े रुके। बंदूकें कंधों पर टँग गयीं और तलवारें म्यान के हवाले हुईं। अब विश्वास के साथ गर्वीली गति से काफिला आगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंद कीजिये

मसूढ़ेकी तकलीफ
दंतक्षय
बदबूदार साँस

फोरहन्स टूथपेस्ट का इस्तेमाल कीजिये

**तथा अपने चमकीले,
सफेद, स्वस्थ दाँतों पर गौरव कीजिये।**

हाल ही में फोरहन्स-चमकीली-मुस्कान-प्रतियोगिता में समस्त भारत से असंख्य प्रशंसा पत्र आए हैं जिनमें फोरहन्स टूथपेस्ट के विशिष्ट गुण की चर्चा है। और कोई आश्चर्य नहीं...क्योंकि फोरहन्स ही एकमात्र ऐसा टूथपेस्ट है जिस में मसूढ़ों के लिये डा. आर. जे. फोरहन द्वारा बनायी विशेष पौष्टिक दवा मौजूद है। फोरहन्स टूथपेस्ट दंतक्षय, बदबूदार साँस व मसूढ़ों की तकलीफ को प्रभावशाली ढंगसे बंद कर देगा। फोरहन्स टूथपेस्ट का इस्तेमाल कीजिये तथा अपने चमकीले, सफेद, स्वस्थ दाँतों पर गौरव कीजिये।

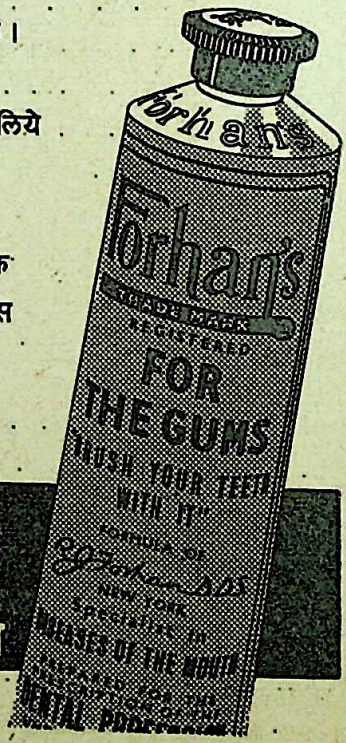

फोरहन्स

एक दंतचिकित्सक द्वारा निर्मित

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.

S. 28 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ने लगा; किंतु बीस कदम भी वे नहीं गये थे कि, सिंगीनाद के अत्यंत तीव्र स्वर के साथ सामने से गोलियों की बरसात उन पर उबल पड़ी। भील और साँसिये पेड़ों की डालों पर निशाने बाँधे बैठे थे। शत्रुओं के निकट आते ही उन्होंने ऐसे ताक-ताक कर निशाने जमाये कि, आगंतुक घुड़सवार मिट्टी की मूर्तियों की भाँति लुढ़क-लुढ़क कर जमीन चूमने लगे। पाँच मिनट तक बंदूकों ने ऐसी आग फूँकी कि, डाकुओं के पैर उखड़ गये। आगे के बंदूकचियों में भगदड़ मच गयी। उन्होंने घोड़ों को पीछे मोड़ा। पीछे के अश्वारोहियों को यह नागवार गुजरा। फायर करते हुए वे आगे बढ़े और ललकार कर भागनेवालों की पस्त हिम्मत को सम्भाला। दोनों तरफ से गोलियों का आदान-प्रदान होने लगा; किंतु पेड़ों पर छिपे बैठे सुरक्षित राजपूतों और साँसियों के सामने वे कब तक टिकते? मगर गजब के साहसी और शूर थे वे पिंडारी और पठान भी। मर-मर कर भी आगे ही बढ़ते आ रहे थे।

डाकू एक-एक करके गिरते जा रहे थे। घोड़ों में इस आग के सामने भागने की ऐसी चेतना जागी थी कि, उन्हें रोकना मुश्किल हो रहा था। नीचे, नदी अपनी घहराहट में बह रही थी और रात की छाती से इधर आग की घातक शलाकाएँ निकल रही थीं। इसी समय दायें और बायें से भी गोलियाँ चलनी शुरू हुईं। अब तो पैर टिकना असम्भव हो गया। तीन तरफ से इस अग्नि-फूत्कार ने डाकुओं के सारे शौर्य और धैर्य को तहस-नहस कर दिया। अपनी रही-सही ताकत में वे पीछे मुड़े और तीव्र गति से नीचे उतरने लगे। फिर सिंगी बजी और उसके स्वर के क्षीण होने के साथ ही कोई बीस-पच्चीस मशालें नदी के किनारे चंद्राकार मंडल बनाती हुई जल उठीं। डाकुओं ने देखा, कोई चालीस-पैंतालीस सवार बंदूकें साधे वहाँ नीचे उनके स्वागत में तैयार खड़े हैं। उनके होश उड़ गये। वे असमंजस में पड़ गये कि क्या करें, कहाँ जायें? इसी बीच गाँव की तरफ से घुड़सवार राइफलें दागते और वायुवेग से आगे बढ़ते उन पर झपटे। 'हर-हर महादेव' के एक सामूहिक वज्रनाद के साथ वे डाकुओं पर ऐसे टूटे कि, उनका भागना मुश्किल हो गया। कद्दुओं की भाँति वे अपने घोड़ों से नीचे गिरने लगे। मिनटों में सारी कहानी का अंत स्पष्ट हो गया। डाकू तितर-बितर होकर इधर-उधर भाग चले। अब उन्हें गिन-गिन कर मारना शुरू हुआ। जगह-जगह मशालें जल गयीं। चारों तरफ की अग्नि-वर्षा में डाकुओं की वही गति होने लगी, जो गर्म तवे पर पड़े चनों की होती है। पचासों डाकू भून दिये गये। आठ पकड़ाये और कुछ जंगल में जा छिपे।

यों नाटक की यवनिका गिरी और पितामह ने विश्राम की साँस ली। मगर डाकुओं का यह धावा मुँह की खाने के लिए नहीं हुआ था। पड़ौस की जागीरों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्व चैम्पियन की पसंद फायरस्टोन

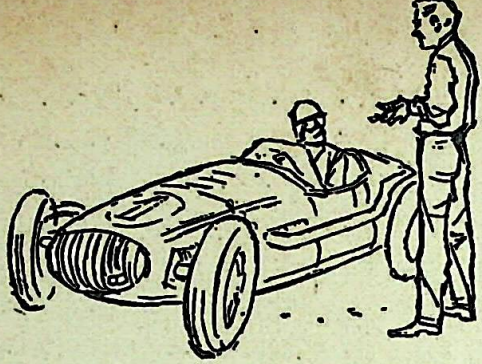

...फिर, आपकी क्यों न हो

क्योंकि–विश्व की मुख्य मोटर-रेसों में फायरस्टोन टायरों की सुरक्षा, वर्षानुवर्ष सिद्ध हो रही है। इन टायरों की इन रेसों में बेरहमी के धक्के, भारी तोड़-मरोड़, और गर्मी बर्दास्त करनी पड़ी है, फिर भी एक टायर खराब नहीं हुआ। आप भी बिल्कुल ऐसी ही सुरक्षा व विश्वसनीयता प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि आपकी कार के फायरस्टोन टायरों में भी रेस के टायरों जैसी ही सुरक्षात्मक निर्माण विशेषताएं मौजूद हैं। फायरस्टोन टायरों की सुरक्षा क्रियाशीलता द्वारा प्रमाणित है।

डार्लिंग्टन, साउथ कारोलीना, की ९ वीं वार्षिक '५०० मील' की रेस के विजेता ग्लेन रावर्टस की घोषणा है कि मुख्यतः फायरस्टोन टायरों के कारण ही, जिन्होंने सड़क के १२१ डिग्री तापमान को बर्दाश्त किया में अपना आश्चर्यजनक करिश्मा दिखा सका।

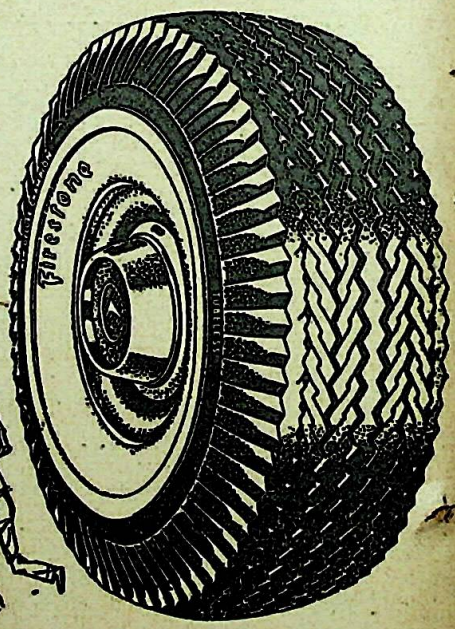

Firestone

न्यू डिलक्स चैम्पियन

ट्यब रहित या ट्यूब सहित

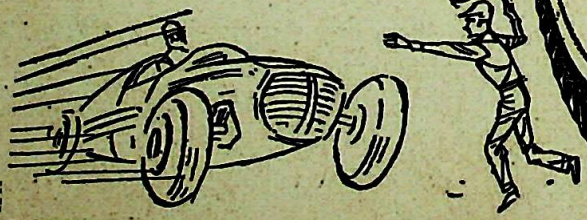

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने उन्हें पितामह की तैयारी की काफी-कुछ सूचना दे दी थी। गलती उनकी यही हुई थी कि, उन्होंने यह विश्वास नहीं किया था कि, पितामह की वैसी तैयारी भी संघर्ष के लिए हो सकती है। इसलिए वे इतनी थोड़ी संख्या में आये थे। यों तादाद में वे कम नहीं थे और फौजों में काफी वर्षों तक काम करते रहने से मार-काट का उन्हें पूरा अभ्यास था। उनके पाँच सौ आदमी आसानी से एकत्र किये जा सकते थे। किंतु इस बार वे गर्व में मुँह की खा गये। उनके कुछ ही आदमी बचे होंगे।

मार-काट समाप्त हो चुकी थी और अब हो रही थी सबकी खोज। हमारे चार आदमी मरे थे, बाकी लोग बिल्कुल सही-सलामत थे। मरहम-पट्टी के बाद सबका खाना-पीना हुआ और विश्राम करने के लिए सब बैठे ही थे कि, साँसियों की एक चौकी को ठीक नदी के बीच डेढ़-दो सौ आदमियों का जमघट नजर आया। वे लोग तेजी से नदी पार कर रहे थे। पितामह विचार में पड़ गये। किंतु देरी या सोच-विचार का अवसर जरा भी नहीं था। भूखे चीतों की तरह प्रत्येक व्यक्ति अपने हथियार लिये नदी की तरफ टूट पड़े और पहले की तरह सबने मोर्चाबंदी अख्तियार कर ली। मगर इस बार पितामह साँसियों को व्यूह-रचना के घेरे में ज्यादा देर तक स्थिर न रख सके। उन्होंने इतने धैर्य को आवश्यक नहीं समझा। राबदा ने कहा—"मालिक! इस बार तो हमें अपने ढंग से दुश्मनों से निबटने दीजिये।" ...और, अनुमति के लिए इंतजार किये बिना ही, वह तेजी से वहाँ से चला गया। राबदा के पीछे कोई पैंतीस साँसिये थे। पितामह और उनके साथी बड़े चिंतित थे कि, क्या किया जाये? साँसियों की जिद को कैसे मिटाया जाये? आखिर, यही तय पाया गया कि, राबदा को रोकने के सवाल को छोड़ कर उसकी मदद के लिए जो भी बन सके, किया जाये। अतः चौकियों को सजग कर दिया गया, साँसियों के स्थान पर नये आदमी पहरों पर बैठा दिये गये और भीलों और राजपूतों की एक टुकड़ी मरने-मारने के लिए तैयार खड़ी हो गयी, जिसके नेता थे स्वयं मेरे पितामह।

किंतु राबदा की सहायता करने के के लिए प्राणों की कुर्बानी लिये ये रणार्थी आश्चर्य एवं असमंजस में डूबे रहने के सिवाय और कुछ नहीं कर सके। स्थिति ने ऐसी करवट ली कि, करने के लिए कोई गुंजाइश निकले, उससे पूर्व ही नया पटाक्षेप सामने आ जाता। जैसे ही डाकुओं के दल के कुछ लोग किनारे लगे, घाटी में से बाजों की तरह साँसी उन पर झपट पड़े। यह अभियान इतनी तेजी से हुआ था कि, आगंतुकों को अपनी बंदूकें सम्भालने तक का अवसर नहीं मिला। पंद्रह मिनटों में साँसियों ने एक भी गोली चलाये बिना सिर्फ तलवारों की मार से डाकुओं को वापस नदी में खदेड़ दिया। डाकुओं ने ऐसी पराजय जिंदगी में शायद ही कभी खायी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप के लिए – चित्र तारिकाओं सा खिला हुआ रंग रूप!

अनिता गुहा को एक नज़र देखते ही आप उनके खिले हुये रंग रूप से चकित रह जायेंगे। सुंदरी अनिता गुहा का कहना है, "रंग रूप की देख भाल के लिए सुगंधित सफ़ेद और शुद्ध लक्स टॉयलेट साबुन से बढ़िया कोई साधन नहीं।"

आप भी अपना रंग रूप वैसा ही सुंदर और आकर्षक बना सकती हैं!

शुद्ध सफ़ेद

लक्स टॉयलेट साबुन

चित्र तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

LTS. 602-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। सौसियों ने डाकुओं के बीचोबीच घुस कर उन्हें इस तरह तराशा कि, चीख-पुकारों से नदी गूँज उठी। अनेक डाकू प्राण बचा कर भाग गये, बाकी बाईस घुड़सवारों को घेर कर रावदा और उसके साथी नदी के किनारे ले आये। नदी के तट पर पैर रखते ही उसने कर्णभेदी सिंगी फूँकी। जंगल का मानो मर्म विदीर्ण हो गया। पितामह अपनी टुकड़ी के साथ नीचे लपके; किंतु रावदा का स्वर जैसे ही उनके कान में पड़ा–"मालिक! आहिस्ते आइये। काम खत्म हो गया है।" तो उन्होंने मशालें जलाने का हुक्म दे दिया और रोशनी में जो-कुछ उन्होंने देखा, उस पर वे सहसा विश्वास नहीं कर सके। खून में लथपथ रावदा गर्दन झुकाये खड़ा था। उसके हाथ में नंगी तलवार थी। पितामह के आते ही उसने तलवार उनके चरणों पर रख दी। पितामह ने उसे छाती से लगा लिया; मगर अब रावदा को खड़े रहने की ताकत नहीं थी। वह नीचे लटक गया। पितामह ने उसे अपनी गोद में लिटा लिया। पानी मँगा कर उसे पिलाया गया और उसके माथे पर काफी देर तक पितामह पानी के छींटे देते रहे। किंतु रावदा को चेत नहीं आया। आखिर, कैदियों को साथ ले, विजय-पथ से पितामह गढ़ी में आये। दो रोज के इलाज के बाद रावदा की मूर्च्छा जागी और इन दोनों रोज पितामह एक क्षण के लिए भी रावदा से विलग न हुए– एक कण भी अन्न उनके मुख में नहीं गया। मालिक हो, तो ऐसा हो! जो भी समझाने आता, उससे वे यही कहते–"तुम नहीं समझते, रावदा मेरा प्राण है। उसने राजपूत की इज्जत रखी है। सारे मुल्क के सामने गढ़ी आज अपना गर्वोन्नत ध्वज फहरा कर कह सकती है कि, राजपूत के राज्य में प्रजा सुख-नींद सो सकती है। माथे पर से कालिख पोंछनेवाला मेरा रावदा मुझसे छूट नहीं सकेगा। ये दो शरीर एक ही चिता में जलेंगे।"

...अकस्मात् फिर वे फूट-फूट कर रो पड़े–"अरे, मैंने जब उसे छाती से लगाया, तो रावदा मुझसे कुछ माँगने जा रहा था– वह मुझसे अपनी कोई प्रिय इच्छा कहनेवाला था; किंतु कमजोरी ने उसे लाचार कर दिया– वाणी उसके मुख में बंदी रह गयी। मैं इंतजार कर रहा हूँ। वह आँखें खोलेगा– जो नहीं बोल सका, वे वचन वह बोलेगा। वह जो माँगेगा, मैं उसे वही दूँगा। जागीर दूँगा, अपना यह शरीर दे दूँगा, मैं कुछ भी उसकी माँग से बचा कर नहीं रखूँगा।"

इसी प्रकार शोक-विह्वल स्वर में, आत्मा के परिपूर्ण प्रपीड़न में, पितामह विलाप करते रहे। आखिर, उनकी प्रतीक्षा सार्थक हुई। एक रात को लगभग चार बजे रावदा ने नयन खोले। पितामह ने उसके मुख में गंगाजल डाला। रावदा के होंठों पर तृप्ति की दीर्घ मुस्कान फैल गयी। उसने कुछ कहना चाहा; किंतु पितामह ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया; कहा–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"राबदा! थोड़ा और विश्राम करो-- फिर जो चाहो, कहना।" राबदा मान गया; मगर जैसे उसे धैर्य नहीं था। उसने फिर होंठ खोले--"मालिक! अब ढोना मुश्किल हो गया इन साँसों का बोझ! राबदा लाचार है। अब उसका आखिरी सलाम कबूल कीजिए। माफ करें, मालिक। नमक खाया पूरा अदा नहीं कर पाया।"

पितामह की आँखों में आँसू छलछला आये। अपनी पगड़ी के छोर से राबदा की गीली आँखों को सहलाते हुए उन्होंने कहा--"राबदा! कर्जदार मैं हूँ। ऋण तुमने मुझे दिया है। अभी ठहरो, कर्ज वसूल करके जाओ। मुझे कर्ज से उबार कर जाओ। राजपूत कर्जखोरी में नहीं मरना चाहता।"

"पानी पिला दो, मालिक। ऐसा भाग्य भी किस सेवक का! मालिक की गोद...हाँ, जीते जी मालिक का प्रेम-- मालिक की छाया-- मिले और मरते वक्त मालिक की गोद। मालिक के हाथों ठंडा पानी! मेरे ठाकुर! राणीजी की चरण-रज मेरे माथे पर चढ़ा देना और मेरे भाइयों को मेरा सलाम कहना। मालिक, इन साँसियों को राबदा की तरह ही रखना... मुझे एक बार और पाँव में लोटने दो... मेरे मालिक! जनम-जनम में मुझे मिलना... राबदा जब जन्मे, अनाथ नहीं रहे... सलाम लो, मालिक। राबदा को हुकुम दे दो अब..."

पितामह का हाथ खींच कर राबदा ने अपने माथे पर रख लिया और आखिरी साँस लेते-लेते - वह उनकी छाती से चिपट गया। पितामह ने एक चीख भरी; चीत्कार किया--"राबदा! धोका दे गया रे, मुझे तू! ठहर, मैं भी तेरे पीछे-पीछे आ रहा हूँ... तू भाग नहीं सकेगा मुझसे।"

और, दो हफ्ते की बीमारी के बाद पितामह, वास्तव में, राबदा--अपने प्राणवत् सेवक राबदा-- की खोज में चल दिये। राजपूत ने अपने वचन निभाये। राजपूत कर्जखोरी में कैसे जीता? अपना कर्ज चुकाने वे खुद साहूकार के पीछे-पीछे चल दिये... और जब इतना हो गया, तो यह भी जरूर हुआ होगा कि, जहाँ भी ठाकुर गये होंगे, वहाँ राबदा भी उनके साथ होगा-- जरूर होगा! मेरी आत्मा के सहस्र-सहस्र मुख मुझे यही प्रतीति देते हैं।

यह जमाना देखा है मेरे बचपन ने, जिसकी याद आज साँप-जैसी सीने पर लोट जाती है... बिजली-सी कौंध जाती है। कैसे इंसान बसते थे इस जमीन पर, मानो इंसानियत की गगनचुम्बी इमारतें खड़ी हों। और, आज क्या है? कहाँ ठोकर खाकर गिर पड़ा है जमाना-- कैसा सूखा व्याप गया कि, शूरमाओं के खेत ही बंजर हो गये। खोज-खोज कर हार जाइये, लाख दरवाजे भटक जाइये, हजार गाँव की खाक छान फिरिये-- न ठाकुर मिलेंगे वैसे और न राबदा। रो-रोकर आँखें सूख जायेंगी! दिल की गंगा के ये दर्शन ऐसे गये कि, अब शायद ही कभी मिल पायेंगे। क्या घटी है कि, सरोवर ज्यों-के-त्यों हजारों हैं; मगर कमल एक में भी नहीं!

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परम्परा (राजस्थानी-बात-संग्रह)– सम्पादक : नारायणसिंह भाटी; प्रकाशक : राजस्थानी - शोध-संस्थान, जोधपुर; मूल्य : छः रुपये।

राजस्थानी-वाङ्मय के पुनरुत्थान की दिशा में राजस्थानी-शोध-संस्थान-द्वारा वस्तुतः बड़े महत्वपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं। अर्वाचीन राजस्थानी-साहित्य को अभीष्ट प्रोत्साहन देने के साथ-साथ वह उन प्राचीन राजस्थानी-कृतियों को भी, प्रयत्नपूर्वक शोध के उपरांत, मँजे हुए रूप में प्रकाश में ला रहा है, जिनसे कभी राजस्थान की वीर-प्रसवा भूमि मुखरित रहती थी। इस संस्थान के मुखपत्र 'परम्परा' का यह छठा-सातवाँ भाग 'राजस्थानी-बात-संग्रह' के रूप में प्रकाशित हुआ है और इसमें सात रस-प्राण प्राचीन राजस्थानी-कथाओं को प्रस्तुत किया गया है। ये कथाएँ हैं– (१) ढोला-मारू, (२) जलाल बूबना, (३) डाढ़ाळौ सूर, (४) राठौड़ अमरसिंह गज-सिंहोत री बात, (५) सांई री पलक में खलक, (६) पलक दरियाव री बात और (७) सूरे खींबे कांधळोत री बात। ये सभी कृतियाँ एक सौ वर्ष से अधिक पुरानी हैं और संस्थान ने मूल पांडुलिपियों की खोज कर, शोधोपरांत इन्हें यहाँ प्रस्तुत किया है। संस्थान का यह कार्य कितना श्लाघनीय है, यह स्वयमेव ही स्पष्ट है। 'परम्परा' के इस अंक में अगरचंद नाहटा, डा० कन्हैयालाल सहल और कमल कोठरी के तीन पठनीय लेख भी हैं।

टोडी रागिनी

[चित्र : एक प्राचीन चित्र की सरल रेखानुकृति]

दक्षिणा– सम्पादक : सुंदरम्; प्रकाशक: श्री अरविंद-कार्यालय, पांडिचेरी; मूल्य : एक प्रति का डेढ़ रुपया, वार्षिक पाँच रुपये।

पांडिचेरी-स्थित श्री अरविंद-आश्रम से प्रकाशित इस गुजराती त्रैमासिक पत्र का अप्रैल, १९५९ का अंक हमारे सामने है। इस पत्र का उद्देश्य श्री अरविंद के जीवन-दर्शन का अनुशीलन और प्रचार करना है। तदनुरूप ही, इस अंक में कई लेख और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कविताएँ हैं, जिनमें से अधिकांश श्री अरविंद एवं श्री माताजी-द्वारा लिखित हैं। श्री माताजी ने 'प्रश्नो अने उत्तरो' शीर्षक लेख में बड़े ही विद्वत्तापूर्ण ढंग से कई दार्शनिक विषयों का विवेचन किया है।

किशोरलालभाई की जीवन-साधना—लेखक: नरहरिभाई परीख; अनुवादक: बैजनाथ महोदय; प्रकाशक: अ० भा० सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, काशी; मूल्य: दो रुपये।

प्रस्तुत ग्रंथ, जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, स्व० श्री किशोरलालभाई मशरूवाला का जीवन-चरित है। किशोरलालभाई को यों ख्याति तो गांधीजी के सान्निध्य में आने और 'हरिजन' पत्रों का सम्पादन-भार ग्रहण करने से मिली; पर यदि उनके जीवन के इस पहलू को छोड़ दिया जाये, तो भी उनका व्यक्तित्व एक आदर्श महापुरुष के रूप में प्रकट होता है। एक सच्चे शिक्षा-शास्त्री के अनुरूप ही 'सरल जीवन एवं उच्च चिंतन' की उक्ति को उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ किया। इस ग्रंथ में नरहरिभाई परीख ने, जिन्हें किशोरलालभाई के बहुत निकट रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, बड़े ही सुंदर ढंग से उनका संक्षिप्त जीवन-वृत्त और कतिपय रोचक एवं प्रेरक संस्मरण प्रस्तुत किये हैं। अनुवाद की भाषा बड़ी सरल और सजीव है।

पत्रकार-बृहत्त्रयी—लेखक: गौरीशंकर गुप्त; प्रकाशक: हिन्दी-संसद, गायघाट, वाराणसी; मूल्य: सवा रुपया।

हिन्दी-संसद-प्रकाशन के प्रथम पुष्प के रूप में प्रकाशित इस पुस्तक में प्रारम्भिक हिन्दी-पत्रकारिता के तीन प्रमुख स्तम्भों—श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, स्व० बाबूराव विष्णु पराड़कर और श्री लक्ष्मणनारायण गर्दे—का संक्षिप्त जीवन-वृत्त प्रस्तुत किया गया है। उन दिनों हिन्दी-पत्रकारों का जीवन कितना संघर्षमय था, यह पुस्तक में दिये गये कतिपय संस्मरणों से स्पष्ट हो जाता है। इन महानुभावों ने हिन्दी-पत्रकारिता की तो सेवा की ही, राष्ट्रीय स्वातंत्र्य-आंदोलन को भी यथासामर्थ्य आगे बढ़ाया। भारत-भूमि के ऐसे सपूतों के प्रेरणापूर्ण जीवन से, निस्संदेह, सर्वसाधारण को परिचित और लाभान्वित होना चाहिए। गुप्तजी ने इस दिशा में यह जो प्रयास किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

नन्हे-मुन्ने—रचयिता: कपिल; प्रकाशक: आत्माराम ऐंड संस, दिल्ली; मूल्य: डेढ़ रुपये।

इस पुस्तक में हिन्दी के तरुण कवि श्री कपिल की बीस बालोपयोगी कविताएँ संगृहीत हैं। सीधे-सादे शब्दों के माध्यम से, खेल-खेल में, बच्चों को ज्ञानोपयोगी बातें बताने का यह प्रयास प्राचीन 'ममत्व-शिक्षण' की परम्परा को पुनरुज्जीवित करता प्रतीत होता है। साज-सज्जा और मुद्रण की दृष्टि से भी पुस्तक काफी आकर्षक बनी है। आशा है, कपिलजी बालकों के लिए भविष्य में और भी ऐसी ही विशिष्ट कृतियाँ प्रस्तुत करेंगे।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : बम्बई-२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिवार-मित्र

दासनल

खाँसि तथा गले की बीमारी के लिये

MARTIN & HARRIS (PRIVATE) LTD.

MERCANTILE BUILDINGS, LALL BAZAR, CALCUTTA - 1.

ALSO AT

BOMBAY MADRAS DELHI RANGOON

"कोनारक" सिमेंट

सबल व उत्कृष्ट होने के कारण प्रसिद्ध है
और देश की बड़ी-बड़ी योजनाओं में बरती जाती है।

पूछताछ के लिए कृपया लिखिए—

उड़िशा सिमेंट लिमिटेड राजगंगपुर, उड़िशा

प्रबन्ध अभिकर्ताः—

डालमिया एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

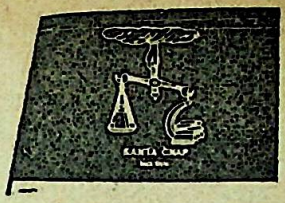

प्रेम कुटीर में आप सुन्दरतम् दिखाई देगी

निर्माता

बोम्बे डाइंग एण्ड मैन्यु-फेक्चरिंग कम्पनी लि.

मरसराइज्ड और सेनफो-राइज्ड की सूती पोषाक, छत्तीस इंच के पने और अठारह से भी अधिक शर्तिया पक्के रंगो में मिल सकती है।

इन सब के लिए आदर्श पोषाक

- स्पेर्टस वीयर
- बच्चों की पोषाक
- स्कर्ट
- बुश शर्ट
- कसीदाकारी और
- स्कूल की पोषाक के लिए भी

प्रेमकुटीर

'रेडीमेड' पोषाक के निर्माताओं को विशेष प्राथमिकता दी जायगी

थोक विक्रेता :-

चिमनलाल उमाजी एण्ड सन्स

२७/२९ गनेशवाडी, एम्. जे. मार्केट, बम्बई–२

टेलीफोन : २२४९१ तार : चीमूमा

RPC/OBD/59-3

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौन्दर्य प्रसाधन का एक मूलगामी सिद्धान्त

नारी के लुभावने केशकलाप को और भी नज़ाकत भरा बनाने को
और कोई मार्ग नहीं सिवाय के नियमितता से उपयोगित

स्वस्तिक पर्फ्यूम्ड कॅस्टर ऑइल

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लिमिटेड, बम्बई

(SMo! 272 A)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

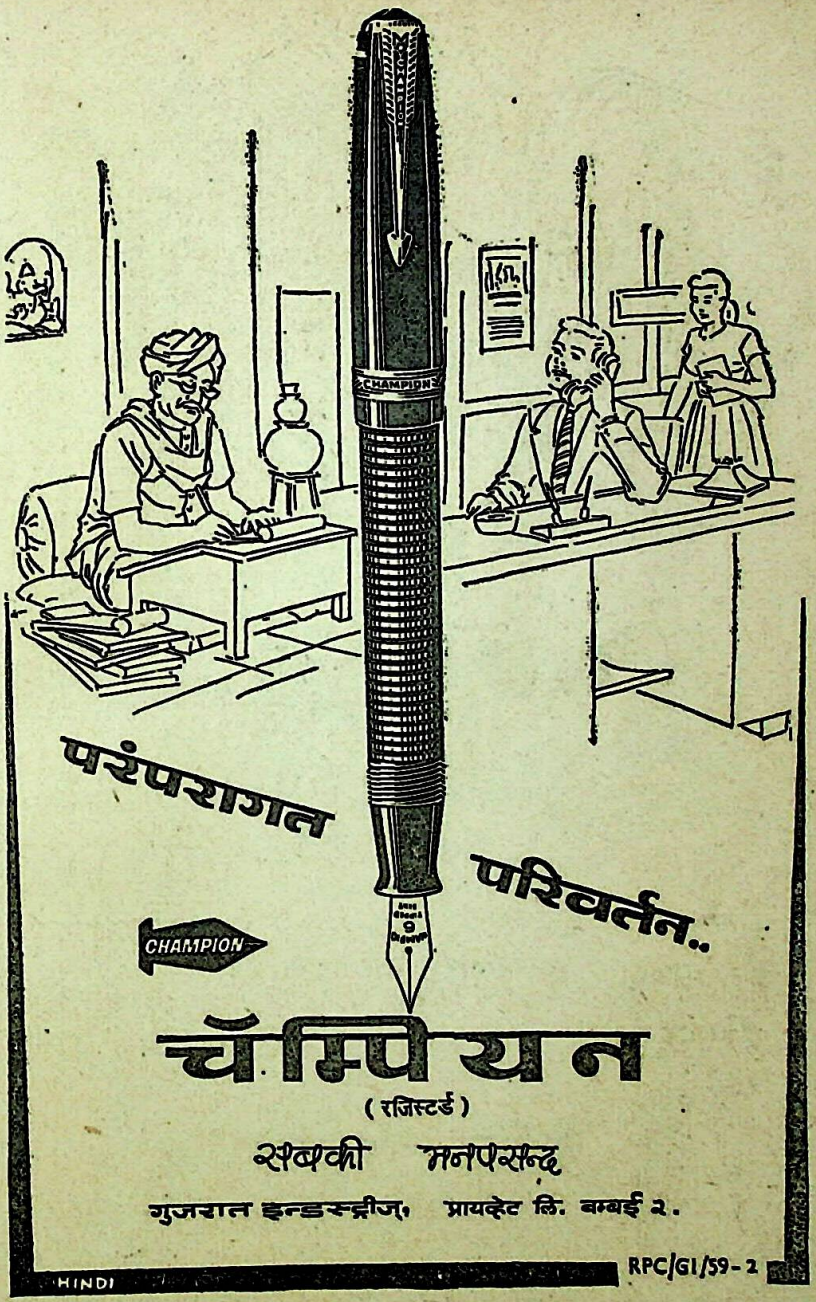

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

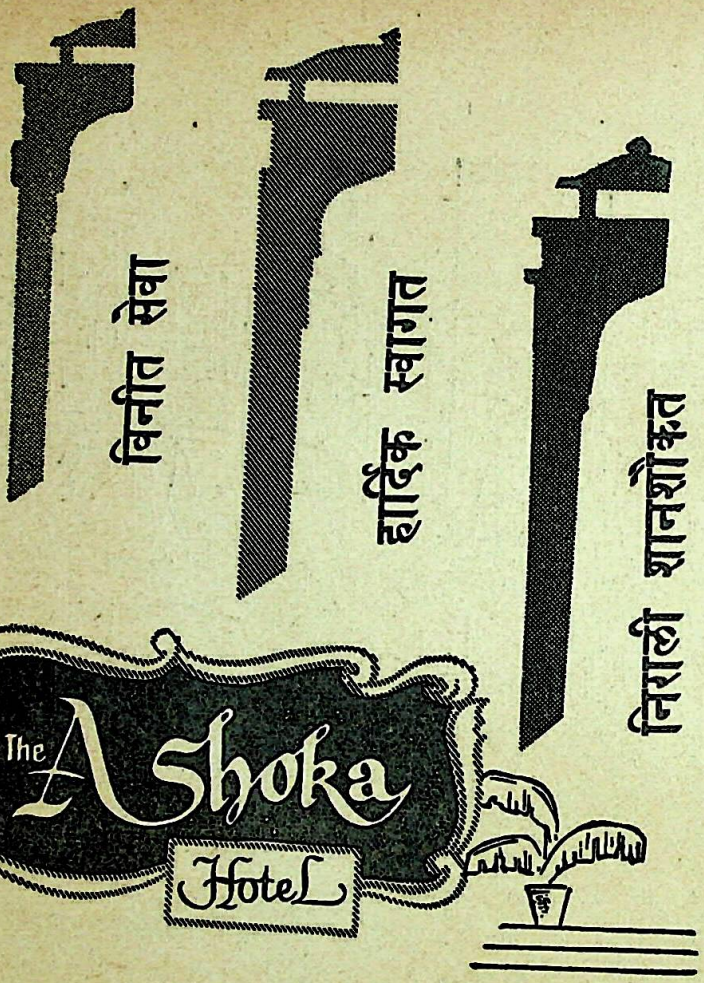

चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–३.

तार : 'अशोक होटल'

फोन : ३०१११ (४० लाईन)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैंकिंग हमारा काम है

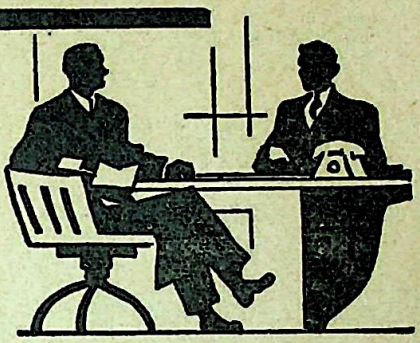

देश भर में ३७० कार्यालय और विदेशी विनिमय विभाग, साथ ही विशेषज्ञ कर्मचारियों के अधीन आंचलिक कार्यालय आपकी सेवा में संलग्न हैं।

चालू खाता ● हुण्डी का बट्टा
बचत खाता ● विदेशी विनिमय
मुद्दती खाता ● सेफ-डिपौजिट वौल्ट
कैश सर्टिफिकेट ● अग्रिम-ऋण

कार्यगत कोष १६४ करोड़ रुपये से अधिक

एस० पी० जैन
चेयरमैन

ए० एम० वॉकर
जनरल मैनेजर

दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित सन् १८९५ ई०
प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फ़्लिट के ज़हर से खटमलों की बस्ती की बस्ती वीरान!

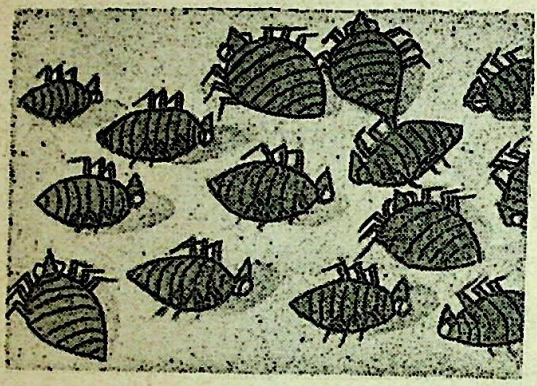

चैन की नींद सो रहे थे। कीटाणुनाशक फ़्लिट का हमला इतनी तेज़ी से हुआ कि वे बेचारे उठ कर भाग भी न सके! इस हत्याकांड से खाटपुर के खटमलों में भारी हलचल मच गयी है।

खाटपुर के खटमलों में हलचल!

चारपाई ज़िले के फलते-फूलते ग्राम, खाटपुर, में रहनेवाले बहुत से खटमलों को कल दिन-दहाड़े फ़्लिट ने बड़ी बेदर्दी के साथ मौत के घाट उतार दिया।

इस दुखद दुर्घटना के समय क़रीब-क़रीब सभी खटमल

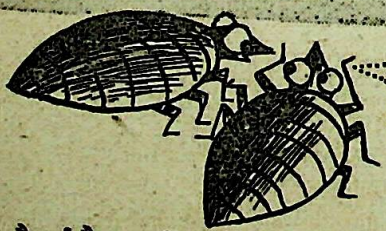

'अब जान नहीं बच सकती!'

V. 8058

स्टैण्डर्ड-वैक्यूम ऑइल कंपनी (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में संस्थापित)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बचत का अच्छा तरीका

सबसे अच्छी चीज़ खरीदना है

प्रायः हम यह सोचने लगते हैं कि सस्ती चीज़ खरीदने से पैसों की बचत होती है किन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। कम कीमत का घटिया बनस्पति खरीदने से कुछ पैसे अधिक देकर अच्छा बनस्पति खरीदना कहीं अच्छा है। कुसुम खरीदते समय आपकी सच्ची बचत होती है क्योंकि यह श्रेष्ठ क्वालिटी का बनस्पति है। दूसरे, ज़रूरत से अधिक पैसे देने की भी ज़रूरत क्या है।

अधिक दाम
देकर भी कुसुम जैसा
अच्छा बनस्पति नहीं
खरीद सकते

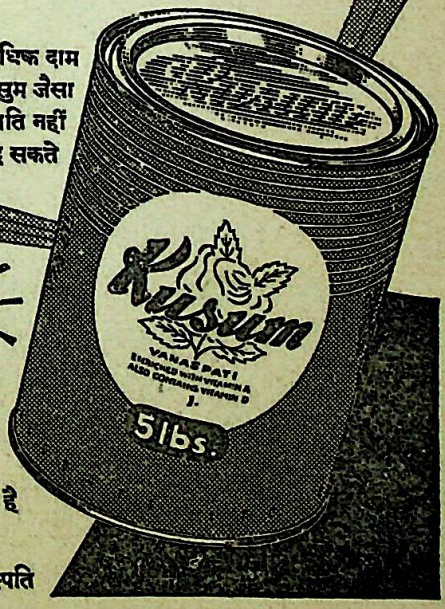

खरीदिए नया कुसुम

इसमें विटामिन ए की पुष्टई और विटामिन डी भी है

उचित कीमत पर बहुत अच्छा बनस्पति

HVP/G/543

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लि०

[१९४३ में रजिस्टर्ड]

प्रधान कार्यालय : २ इन्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूँजी.....८,००,००,०००

लागत पूँजी.....४,००,००,०००

चुकती पूँजी.....२,००,००,०००

सुरक्षित कोष.....१,४८,००,०००

शाखाएँ

भारत : सभी प्रमुख नगरों तथा औद्योगिक और व्यवसायिक प्रसिद्धि के शहरों में–

पाकिस्तान : चटगाँव तथा करांची

बर्मा : रंगून, मोलमिन, अक्याब, मांडले तथा बेसीन

मलाया : सिंगापुर, पिनांग, कौला–लामपुर तथा क्लांग

यू० के० : लन्दन

अन्य हांगकांग,
युरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया,
आदि सारे विश्व में एजेन्ट हैं।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्स्चेंज का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्व-व्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक-सम्बन्धी सेवा प्रदान करती हैं।

सुविधाजनक मूल्यों के रुपयों में ट्रेवेलर चेक दिए जाते हैं।

जी. डी. बिड़ला
चेयरमेन

एस. टी. सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया!

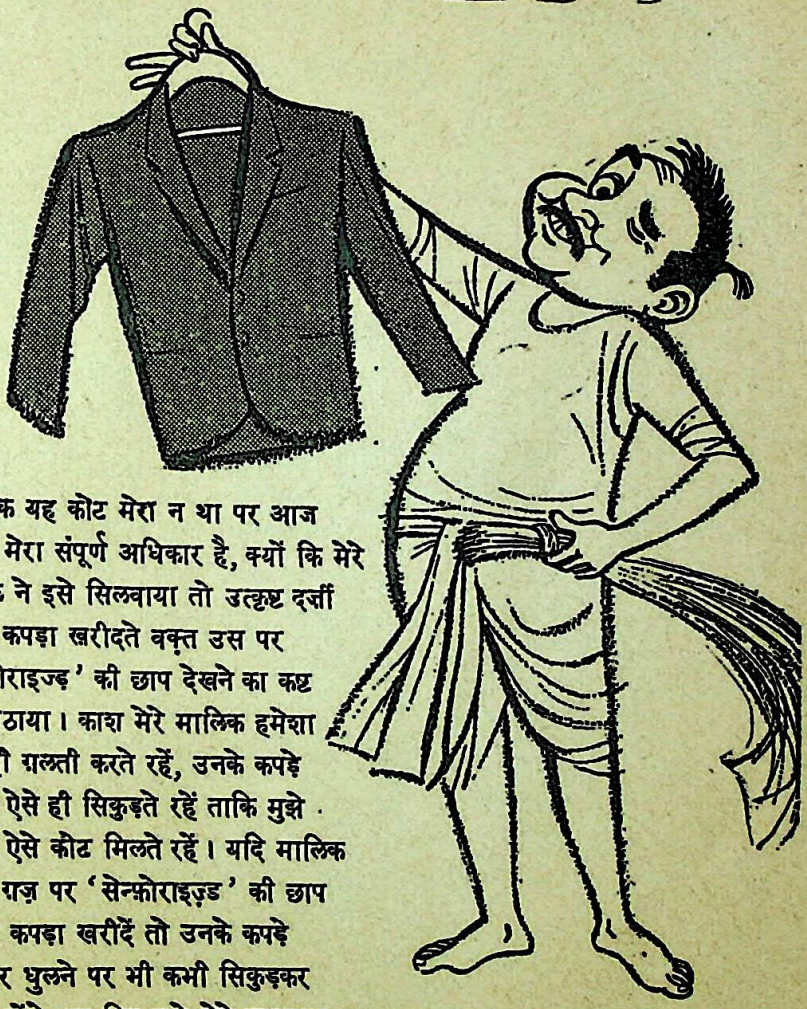

कल तक यह कोट मेरा न था पर आज इसपर मेरा संपूर्ण अधिकार है, क्यों कि मेरे मालिक ने इसे सिलवाया तो उत्कृष्ट दर्जी से पर कपड़ा ख़रीदते वक़्त उस पर 'सेन्फ़ोराइज्ड' की छाप देखने का कष्ट नही उठाया। काश मेरे मालिक हमेशा ऐसी ही ग़लती करते रहें, उनके कपड़े हमेशा ऐसे ही सिकुड़ते रहें ताकि मुझे हमेशा ऐसे कोट मिलते रहें। यदि मालिक प्रत्येक गज़ पर 'सेन्फ़ोराइज़्ड' की छाप देखकर कपड़ा खरीदें तो उनके कपड़े कई बार धुलने पर भी कभी सिकुड़कर तंग न होंगे, पर फिर मुझे ऐसे ख़ूबसूरत तोहफ़े नही मिलेंगे।

लेबल पर 'SANFORIZED' यह छाप

देख लीजिए फिर आप के कपड़े कभी सिकुड़कर तंग नहीं होंगे!

रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क 'सेन्फ़ोराइज्ड' के मालिक क्लुएट, पीबॉडी एण्ड कं. इन्कॉपोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में स्थापित) द्वारा प्रचारित। 'सेन्फ़ोराइज्ड' ट्रेड मार्क केवल उन्हीं कपड़ों पर लगाने की अनुमति दी जाती है जो इस कंपनी द्वारा निर्धारित कपड़ा न सिकुड़ने की कड़ी शर्तों को पूरा करते हैं।

अधिक जानकारी के लिए: 'सेन्फ़ोराइज्ड' सर्विस, ९५, मरीन ड्राइव, बम्बई-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौंदर्य के लिये..

त्वचा सुकोमल रखता है

रेमी स्नो

ए.व्ही.आर.ए. ॲण्ड कं.
बम्बई २

विश्वसनीय

कलमें
"सुलेखा"
और
"ब्रीफमॅन"

PENMEN'S INDUSTRIAL SERVICES
BOMBAY-47.
MPS.

बच्चे इसे पसन्द करते हैं

और साथ में इसे भी

जीपला
बालामृत
और
ग्राइप वाटर

बच्चों को स्वस्थ रखता है.
जीपला बम्बई १२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विख्यात 'गाय - छाप' प्रतीक द्वारा प्रस्तुत !

SEVASHRAM PRODUCTS
REGD.
TRADE MARK
UDAIPUR

ब्राह्मी-आँवला तैल

सार्सापरिला

द्राक्षासव

ये उत्पादन जमाने की कसौटी पर खरे उतरे हैं और लाखों का विश्वास प्राप्त किया है।

मातृ-जीवन

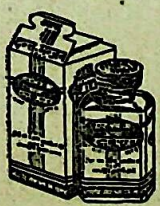

काला दंतमंजन

ब्राह्मी-जीवन

आयुर्वेद सेवाश्रम लि० उदयपर (राजस्थान)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि बैंक आफ जयपुर लि.,

राजस्थान सरकार के ट्रेजरार्स

चेयरमैन : श्री जी. डी. सोमानी, एम. पी.

अधिकृत पूंजी रु. २,००,००,०००

जारी व विभाजित पूंजी रु. १,००,००,०००

चुकता पूंजी रु. ५०,००,०००

रिजर्व तथा अन्य निधियां रु. २५,००,०००

सम्पूर्ण बैंकिंग सेवाएँ–विदेशी विनिमय सहित

एस. एल. कोठारी, जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

20 % बचाइये

आप अपने खाना पकाने की स्निग्धताओं का खर्च घटाईये परन्तु भोजन के स्वास्थ्यवर्धक गुणों को कायम रखये। इस लिए

पोस्टमैन

ब्राण्ड विशुद्ध मूंगफली का तेल इस्तेमाल कीजिये।

यह खाना पकाने का प्रमाणित, विटामिनों से भरपूर, तेल की बूसेरहित और सुपाच्य माध्यम है। यह बिल्कुल शुभ्र और जमाये हुए तेलों से २०% सस्ता भी है।

५ पौंड, १० पौंड और ३४½ पौंड के टीनों में मिलता है।

उत्पादक : अहमद मिल्स, बम्बई ८

AH-P-13-1

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आश्चर्य! इतनी शक्ति;
कहाँ से—"
युवावस्था में शक्ति का ह्रास स्वाभाविक है। इसकी पूर्ति भी उतनी ही शीघ्रता से होनी चाहिए; नही तो शारीरिक वृद्धि व स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव हानिकारक सिद्ध होगा।
पाक-माध्यम के रूप में वनस्दा निरन्तर शक्ति प्रदान करती है। कारण—यह विटामिनों से पूर्ण व पौष्टिक है।

वनस्दा
विटामिन-युक्त वनस्पति
बरार ऑयल इण्डस्ट्रीज, आकोला

Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नटखट बालक, लोकप्रिय कथाकार

प्रकाशक— नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई—७

संसार के हास्य-व्यंग्य-सर्जन में मार्क ट्वेन का स्थान चोटी के साहित्यकारों में है। पाश्चात्य जगत् की कोई ऐसी संस्था, पत्र-पत्रिका एवं रंगस्थली नहीं, जहाँ मार्क ट्वेन के मुख से निकली फुलझड़ियाँ बार-बार न दोहरायी जाती हों। प्रस्तुत पुस्तक अँग्रेजी-साहित्य के इन्हीं 'बीरबल'-जैसे चरित्र की जीवन-कहानी है।

भाषा सरल और वृत्तान्त उपन्यास की तरह रोचक हैं।

मूल्य : केवल डेढ़ रुपये

पुस्तक-विक्रेताओं को नियमानुसार कमीशन

सागर की गोद में

प्रकाशक— नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई—७

उक्त उपन्यास में सागर-तट पर वंश-परम्परा से बद्धमूल एक सीधे-सादे अमरीकी परिवार की जीवन-कहानी है। उनकी संघर्षमयी जिन्दगी, सागर की विशालता और सागर-तटीय निवासियों पर उसका स्वाभाविक ममत्व - इन सबको प्रस्तुत उपन्यास में शब्दों की लड़ी में पिरोया गया है।

मूल्य : केवल एक रुपया

पुस्तक-विक्रेताओं को नियमानुसार कमीशन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B. 6248

इन के रंग रूप में अभी चार चाँद लगा देंगे...
सौंदर्य सिंगार के
ये साधन
हिमालय
बुके
स्नो
टॉयलेट पाउडर
टॅल्कम पाउडर

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने हॉरिंग्स लंदन के लिए भारत में बनाये
HBT 20-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

अगस्त

१९५९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

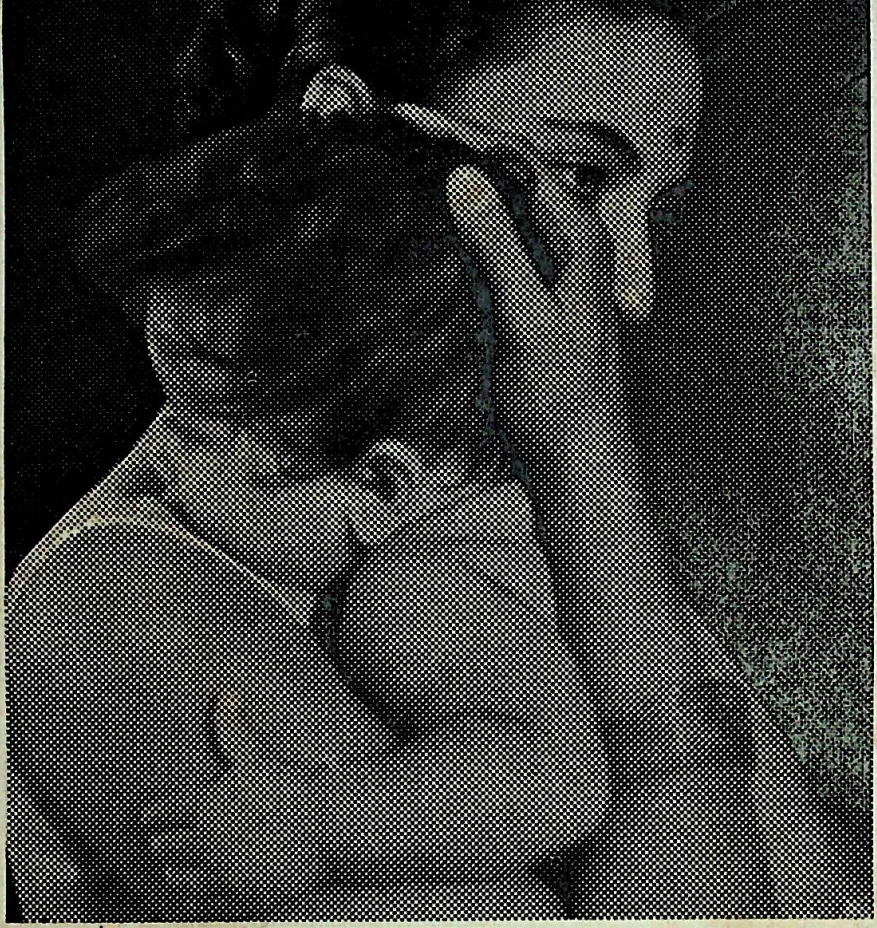

पालन पोषण के लिए मां की ममता और ऑस्टरमिल्क

मां की छाती से लगा मुन्ना कैसा प्रसन्न है, कैसा संतुष्ट! इस लिए कि मां उस का पालन पोषण ऑस्टरमिल्क से करती हैं जो कि शुद्ध दूध का आहार है। इस में वे सब गुण हैं जो मां के दूध में होते हैं। मुन्ने के लिए ऑस्टरमिल्क बनाते समय, आप की ममता सदा हमारे ध्यान में रहती है।

मुफ्त! ऑस्टरमिल्क "पुस्तिका" (अंग्रेज़ी में)...बच्चों की देख भाल के बारे में सभी आधुनिक सूचनायें! डाक ख़र्च के लिए, ५० नये पैसे, इस पते पर भेजिये "ऑस्टरमिल्क, P. O. Box No. 202, बम्बई १।"

मां के दूध के समान

फ़ैरेक्स, मुन्ने का पहला ठोस आहार! जब मुन्ना चार पांच महीने का हो जाये तो उसे फ़ैरेक्स दीजिये जो अनाज का एक पौष्टिक मिश्रण है।

OS. 1-50 HI

आवरण मुद्रक: नवजीवन प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

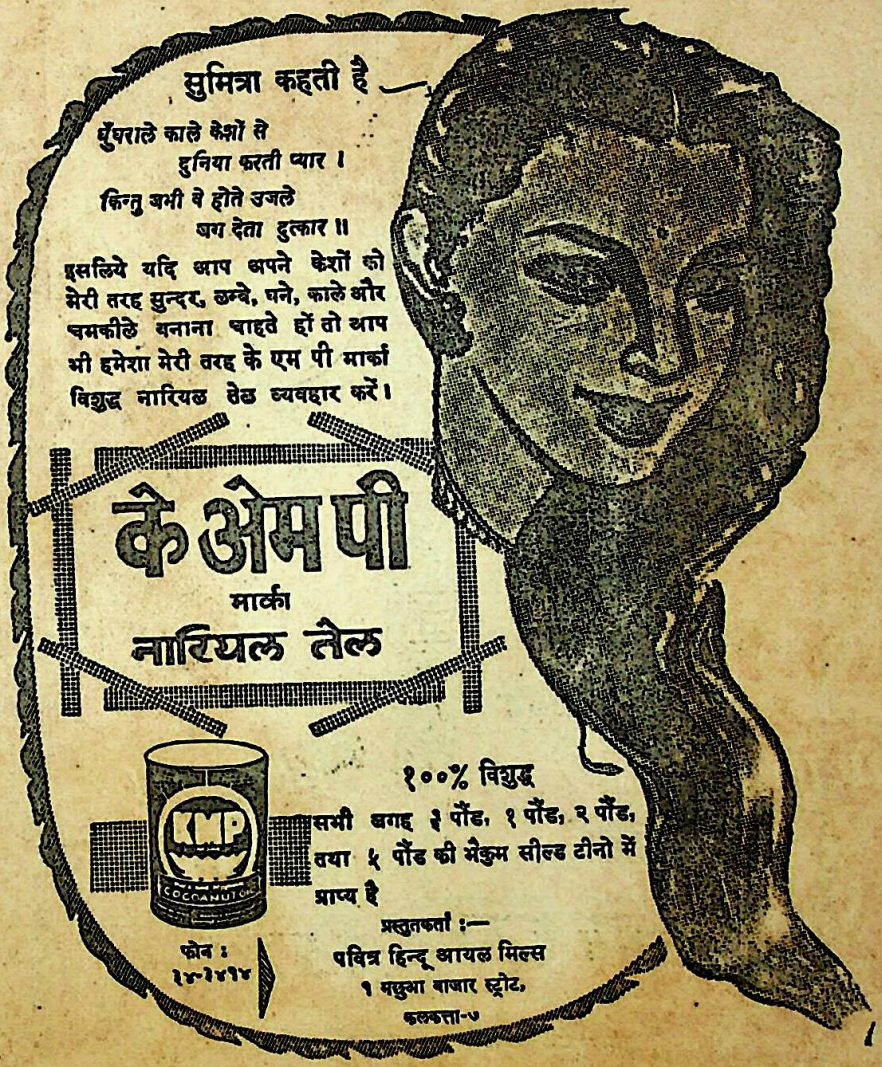

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर से **आश्चर्यजनक** स्वास्थ्यका अनुभव कीजिये !

वॉटरबरीज़ कम्पाउंड एक प्रमाणित बलवर्धक औषध है जिसका उपयोग दुनिया भर में स्वास्थ्य का ख्याल रखनेवाले, अपने और अपने परिवार के लिये, करते हैं।

वॉटरबरीज़ कम्पाउंड में जीवनोपयोगी पौष्टिक तत्व हैं जो आपको और अपने परिवार को वह अतिरिक्त शक्ति प्रदान करते हैं जो प्रबल, स्वस्थ व आनन्दपूर्ण जीवन के लिये ज़रूरी है।

वॉटरबरीज़ कम्पाउंड निरन्तर खांसी, सर्दी और फेफड़े की सूजन आदि का खंडन करता है। बीमारी के बाद शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिये डाक्टर इसकी सिफारिश करते हैं।

अब बोतलों में ऐसे ढक्कन लगाए गए हैं जिनमें से थोड़ी-सी भी दवा का चुराना संभव नहीं है। साथ ही बोतलों पर अब नया, लाल, 'लेबिल' लगा है।

अब पुराना लाल रंग का 'रेपर' हटा दिया गया है।

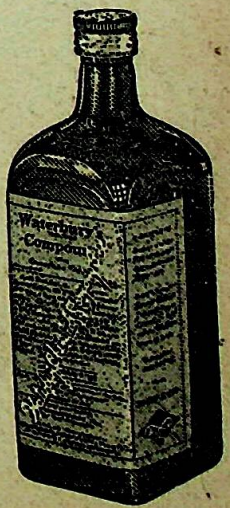

तन्दुरुस्त बने रहने के लिये

वॉटरबरीज़ कम्पाउंण्ड

लीजिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि बैंक आफ जयपुर लि.,

राजस्थान सरकार के ट्रेजरार्स

चेयरमैन : श्री जी. डी. सोमानी, एम. पी.

अधिकृत पूंजी रु. २,००,००,०००

जारी व विभाजित पूंजी रु. १,००,००,०००

चुकता पूंजी रु. ५०,००,०००

रिजर्व तथा अन्य निधियां रु. २५,००,०००

सम्पूर्ण बैंकिंग सेवाएँ–विदेशी विनिमय सहित

एस. एल. कोठारी, जनरल मैनेजर

११७-११९ पंडित पुरुषोत्तमराय स्ट्रीट कलकत्ता–७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

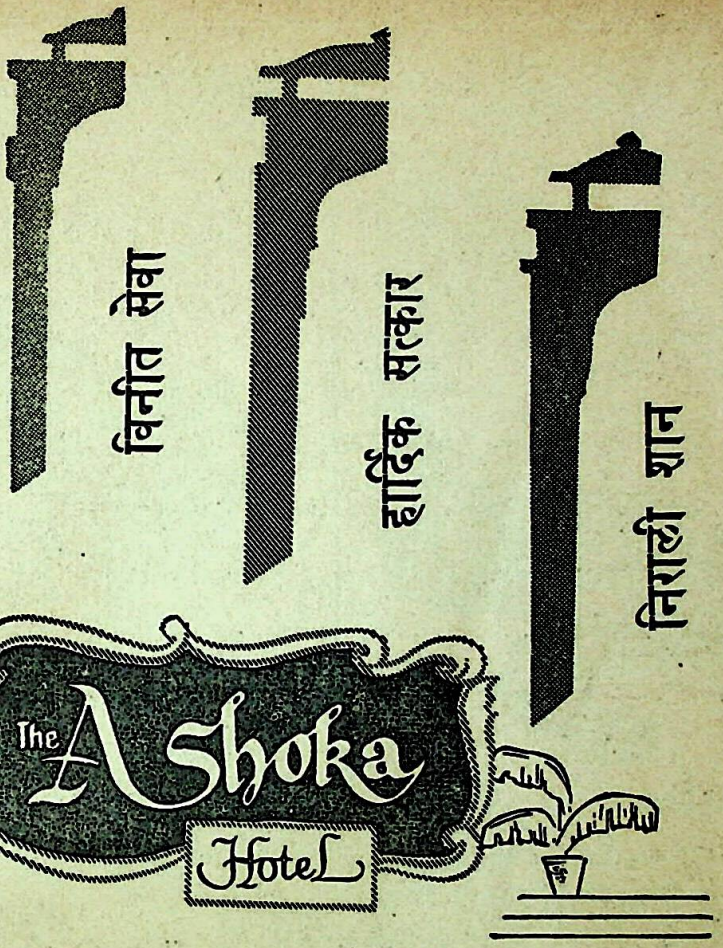

चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–३.

तार : 'अशोक होटल' फोन : ३०१११ (४० लाईन)

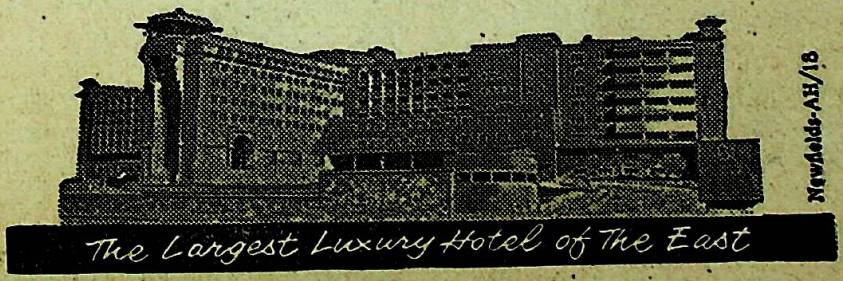

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामतीर्थ ब्राह्मी तैल

आयुर्वेदिक औषधि (रजिस्टर्ड)

सिरकी रुसी तथा गिरते बालों को रोकने के लिए एक अमूल्य हेयर टॉनिक। शीघ्र ही गिरते हुए बालों को रोकता है और घने बाल उगाता है। प्राकृतिक काला रंग प्रदान करता है। सर्व ऋतु में सबके लिए उपयोगी। कीमत बड़ी शीशी ४/ छोटी शीशी २) रु. प्रत्येक स्थान पर मिलता है। ६/५० का मनीआर्डर बड़ी शीशी के लिए तथा ४/- का मनीआर्डर छोटी शीशी के लिए (डाक-व्यय मिला कर) भेजें। आसन चार्ट: स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिये हमारा योगिक आसनों का आकर्षक चार्ट (नक्शा) मंगाइये जो डाक खर्च सहित रु. २/५० में प्राप्य है। ये आसन सरलता से घर पर किये जा सकते हैं।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम
दादर, (सेन्ट्रल रेलवे) बम्बई–१४
टेलिफोन : ४२८९९

आपकी खाँसी जल्द ही मिट जायगी

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स

टिकियाँ लीजिए

पेप्स की गोलियाँ चूसिए—आप देखेंगी कि इनकी आरोग्यकारी भाप बहुत ख़ूबी से दर्द को हल्का करती है, गले की तकलीफ़ को साफ़ करती है और ब्रॉंकाइटिस, खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती है।

इनमें कोई नुकसानदेह दवाएँ नहीं होतीं
ये बच्चों को बेखटके दी जा सकती हैं
ब्रांकाइटिस, गले का दर्द, नज़ले, जकड़न, सर्दी और खाँसी में शीघ्र आराम पहुँचाती हैं
सभी औषधि-विक्रेताओं के यहाँ प्राप्य

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

FPV 55 HIN

बम्बई के सोल एजेन्ट :
केम्प एण्ड कं. लि. पो. बा. ९३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाह, कितनी सुन्दर हो!

सतेज शुभ्र—डेट धुले वस्त्रों में कितनी सुन्दर लगती हो

डेट—भारतवर्ष का अद्भुत डिटर्जेण्ट, हरकामी धुलाई का माध्यम ज़ो साबुन को मातहत करता है। वह साबु से भी ज्यादा तेज काम देता हैं. चाहे क्षारयुक्त या शुद्ध पानी हो, वह चिकनाहट तुरन्त दूर कर देता है, भरपूर झागभरा फ़ेन दिलाता है, और गंदगी को तनिक भी नहीं रखता।
डेट की धुलाई से आपके शुभ्र वस्त्रों को अद्भुत शुभ्रता प्राप्त होती है, आपके रंगीन वस्त्र मनोरम चमक से निखर उठते हैं। खासियत यह है कि आपके सबसे बढ़िया प्यारे और सबसे नाजुक वस्त्रों को डेट एक बड़ा उपकारक मित्रमात्र हैं।

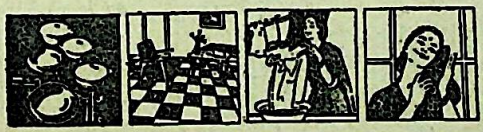

डेट चिकनाहट को तुरन्त भगा देता है

वह घरबार की हर चीज को शुभ्रता और स्वच्छता दिलाता है: उजले मान्डे-बर्तन, क्रॉकरी, कटलरी दीवारें और फ़र्श।
डेट का इस्तेमाल कीजिए आपके घरबार की हर धुलाई के लिए। खुशियाँ मनाओ, परेशानियाँ भूल जाओ, गर्व मानो कि हमारी धुलाई डेट से होती है

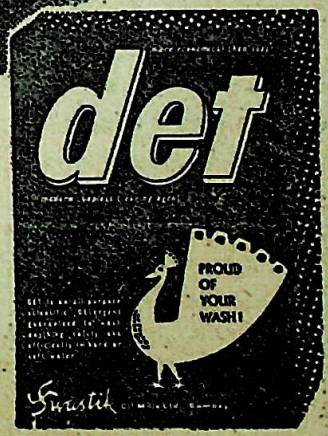

Shilpi 668

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोवियत संघ

क्या आप जानना चाहेंगे...

सोवियत जनता कैसे रहती और काम करती है...सोवियत की अर्थ-व्यवस्था, विज्ञान और इंजीनियरिंग में कौन सी नयी बातें हैं... सोवियत संघ और दूसरे देशों का सम्बंध कैसे बढ़ रहा है...वहां सातसाला योजना को कैसे लागू किया जा रहा है...मेहनतकश जनता देश का शासन कैसे करती है ..परमाणिक शक्ति का कहां और किस तरह उपयोग होता है...मकान की समस्या कैसे हल की जाती है... राज्य किस तरह जनता के स्वास्थ्य की हिफाजत करता है...सोवियत युवकों को पढ़ने-लिखने की क्या सुविधाएं हैं...जनता को विश्राम और मनोरंजन की क्या सहूलियतें हैं...सांस्कृति क्षेत्रों का विकास कहां तक हुआ है...

यदि हां, तो

सोवियत संघ

नाम की पत्रिका को ही आप पढ़ें।

चित्रों से भरपूर यह मासिक पत्रिका हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू समेत दुनिया की १३ भाषाओं में प्रकाशित होती है। ४८ पन्नों की इस पत्रिका में सोवियत जीवन के सभी पहलुओं से सम्बंधित सचित्र कहानियां और विशेष लेख प्रकाशित होते हैं।

चन्दा यहां जमा होता है।

हर सालाना ग्राहक को सोवियत डाक टिकटों के एक सेट या पोस्ट कार्ड पर छपे चित्रों के एक पैकेट का उपहार।

वार्षिक चन्दा	६.७५ न. पै.
छमाही "	३.३७ न. पै.
एक प्रति "	०.७५ न. पै.

१. पी. पी. एच. बुकस्टाल, १९० बी, खेतवाडी मेन रोड, बम्बई ४.
२. जेको सबस्क्रिपशन एजेंसी, १२५, म. गांधी रोड, बम्बई १.
३. करंट बुक हाउस, रघुनाथ दादाजी स्ट्रीट, बम्बई–१.
४. ओर के. बी. एण्ड कंपनी, नाकरा हाउस, ओलिवर रोड, बम्बई–१
५. पीपुल्स बुक हाउस, कावसजी पटेल स्ट्रीट, बम्बई–१.
६. पीपुल्स बुक हाउस, लक्ष्मी रोड, नियर लक्दी ब्रिज, पूना-२.
७. विजय स्टोर्स, स्टेशन रोड, आनन्द।
८. विजय स्टोर्स, ६२, कल्यान भुवन, अहमदाबाद।
९. सस्ता किताब घर, अहमदाबाद।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

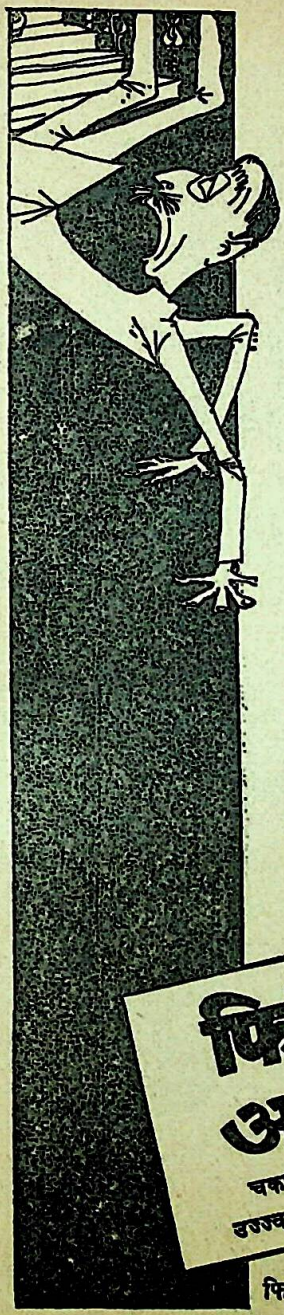

प्रकाश के विषय
में कंजूसी
न करें···

फिलिप्स
अर्जेण्टा
लगाकर बुद्धिमत्ता
का परिचय
दीजिये

सीढ़ियों में कम प्रकाश
होने से हर सीढ़ी पर
ठोकर लगने और गिरने
का भय बना रहता है।
सीढ़ियों को फिलिप्स
'अर्जेण्टा' से प्रकाशित
कर बेखटके
आइये जाइये।

अब १५० वाट
में प्राप्य।

फिलिप्स
अर्जेण्टा
चकाचौंध-रहित
उज्ज्वल प्रकाश के लिए

PHILIPS

फिलिप्स इण्डिया लिमिटेड

P 3630

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

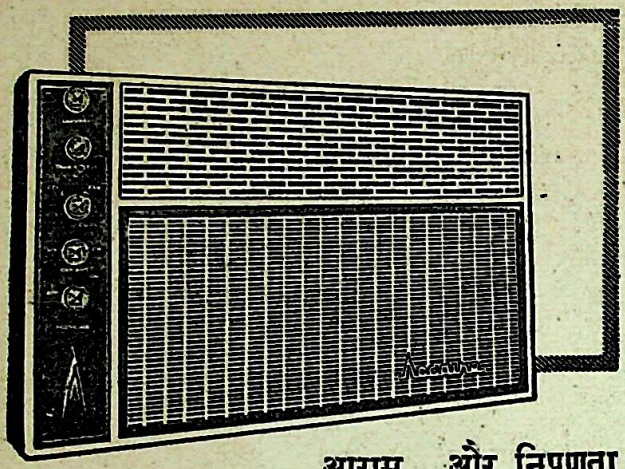

आराम...और निपुणता के लिए

ऍकायर— ए. डब्ल्यू. १०२ ए. सी.
डी. डब्ल्यू. १०२ डी. सी.

खिड़कीनुमा कमरे को ठंडा बनानेवाला

- कम कीमत
- शान्तिपूर्ण कार्य
- कष्टरहित सेवा
- एक साल की जिम्मेवारी

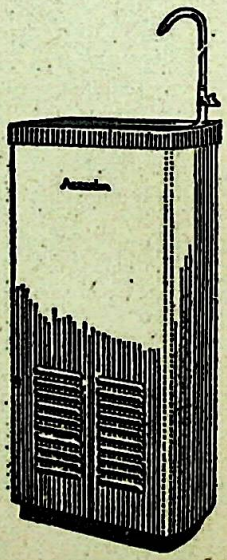

एकूलर–वाटर कूलर्स

- ठंडे स्वास्थ्यदायक जल की निरन्तर प्राप्ति
- जंगसे रक्षित 'केबिनट' ● आसानी से लगाने योग्य

सुसंगठित
सेवा
आपके आदेशार्थ

एअर कन्डीशनिंग कोर्पोरेशन प्रा. लि.

कलकत्ता बंबई नयी दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

TJY-2 HIN

मैं हमेशा

हमाम

ख़रीदती हूं

चिकने, मुलायम झाग
त्वचा को कोमल करनेवाले नये
रसायन की करामात!
सफ़ाई के साथ-साथ
ताज़गी . .
'हमाम इस्तेमाल करने में
कितना उम्दा और सुगन्धमय है।
चलता भी खूब है . .
कितना कमख़र्च है!

हमाम से नहाकर
ताज़गी और सुगन्ध का आनन्द लीजिए।

सारे परिवार का मन-पसन्द- **हमाम** यह एक टाटा – उत्पादन है – अवश्य ही उम्दा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वसनीय

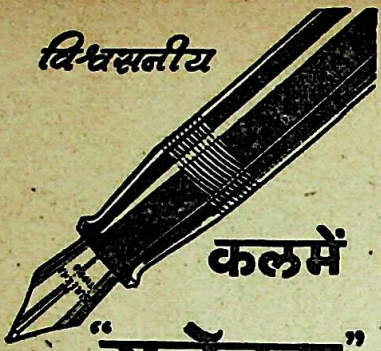

कलमें

"सुलेखा"

और

"ब्रीफमॅन"

PENMEN'S INDUSTRIAL SERVICES

BOMBAY-47.

MPS.

सपट

लोशन

या

मलहम

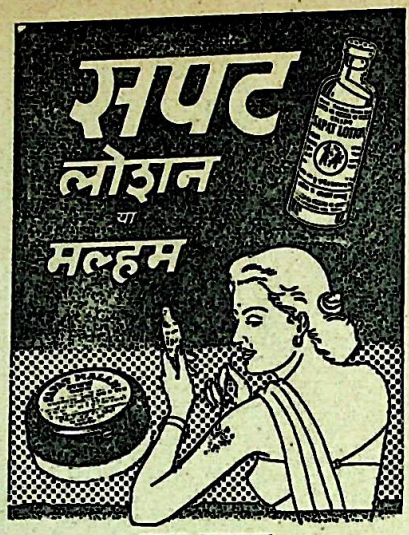

दाद, खाज,

खुजली पर

मेन्यु : सपट एण्ड कं. मुंबई–२

स्त्रियों के स्वास्थ्य

और सुख के लिए

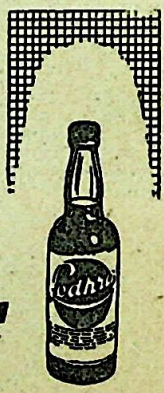

लोध्रा

केसरी कुटीरम

प्राइवेट लि.

रोयापेट्टा, मद्रास-१४

SISTA'S

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पतिसेवा की कसौटी!

दिनभर की मेहनत और दौड़धूप के बाद आप के पति थक गये होंगे–उनकी थकान उतारने के लिये उन्हे शाम की चाय के साथ कम से कम छ पार्ले के कुरकुरे ग्लुको बिस्कुट ज़रुर दीजिये–वे आप को बेहद सराहेंगे।

हर पत्नी अपने पति की प्रसन्नता के लिये शाम की चाय के साथ उसे कुछ न कुछ स्वादिष्ट चीज़ खाने को देती है–और पार्ले के कुरकुरे ग्लुको बिस्कुट ऐसे वक़्त के लिये आदर्श होते हैं। वे आप के पति को प्रसन्न रक्खेंगे तथा उन्हें ताज़गी प्रदान करेंगे.

याद रखिये: पार्ले के कम से कम छ कुरकुरे और पौष्टिक ग्लुको बिस्कुट उन्हें शाम के नाश्ते पर देना न भूलिये।

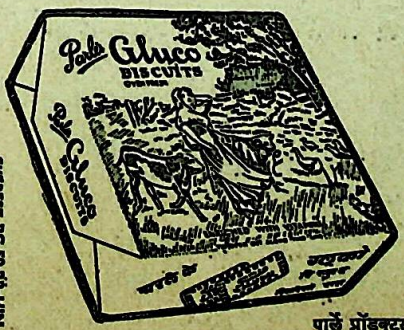

EVEREST PG.59-28-HIN

पार्ले के
ग्लुको
बिस्कुट

विटामिनों से भरपूर

पार्ले प्रॉडक्टस् मॅन्युफॅक्चरींग कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई–२४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

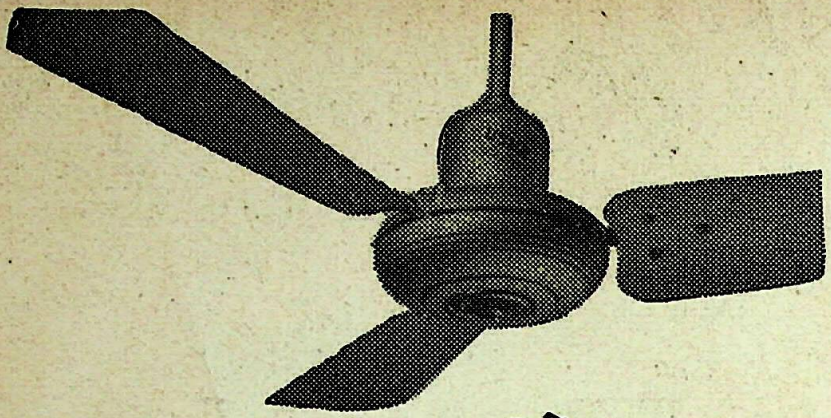

यह देखिये...

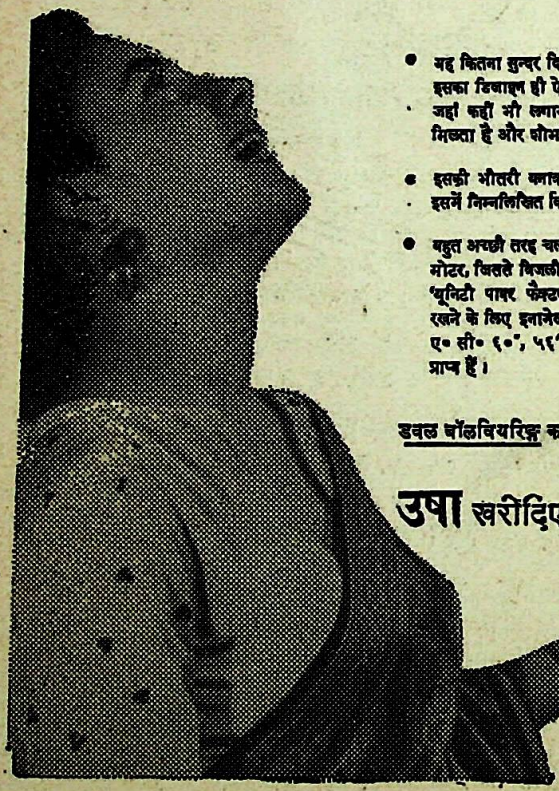

- यह कितना सुन्दर दिखाई देता है। सचमुच इसका डिजाइन ही ऐसा बनाया गया है कि जहाँ कहीं भी लगाया जाय इससे आराम मिलता है और शोभा बढ़ती है।
- इसकी भीतरी बनावट भी बहुत अच्छी है। इसमें निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :—
- बहुत अच्छी तरह चलने वाली 'कैपेसिटर' मोटर, जिससे बिजली कम खर्च होती है। 'यूनिटी पावर फैक्टर'। स्थायी चमक रखने के लिए इनामेल की पक्की पॉलिश। ए० सी० ६०", ५६" और ४८" पेर के प्राप्य हैं।

डबल बॉलबियरिङ्ग का पंखा

उषा खरीदिए और निश्चिन्त हो जाइए

जय इंजीनियरिङ्ग वर्क्स लिमिटेड
कलकत्ता

J-E6-29

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगस्त **नवनीत** १९५९

[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

सम्पादक
रतनलाल जोशी
सहकारी
विद्याभूषण

शिल्प: गोपालकृष्ण भोबे

लेख-सूची

१	अक्षमा	'सम्बोधिकल्पद्रुम' से	१७
२	तत्व-साक्षात्कार	अनंत विष्णु शास्त्री	१८
३	संशय	के० एम० पणिक्कर	२०
४	वरदान	संत ब्यूनो	२१
५	उस्ताद अलाउद्दीन खाँ	... ...	२४
६	प्रेरणा-पुष्प	उस्ताद अलाउद्दीन खाँ	२५
७	...आठवें समुद्र का निर्माण	श्रीमोहन अनन्य	२६
८	मृत्युंजय	रवीन्द्रनाथ टैगोर	२८
९	लोकतंत्र को ग्राहों से बचाइये	डा० सम्पूर्णानंद	३१
१०	...दिलीप सिंह के चार पत्र	महीप सिंह	३३
११	जो रानी शेबा पूछना भूल गयी	आंद्रे मोराउस	३९
१२	मार्ग	अबुलकलाम आजाद	४०
१३	झपकी न लग जाये	डा० महींद्र शेषप्पा	४२
१४	स्वतंत्रता	विक्टर ह्यूगो	४३
१५	प्रेम	स्वामी रामतीर्थ	४५
१६	मुस्कान : सुख की खान	... ...	४७
१७	हँसो	'बायोग्राफिकल नोट्स' से	४८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८ हब्शियों की जगदम्बा	डा० एस० के० कल्याणसुंदरम्	४९
१९ मूल्य	'श्रीश्री'	५५
२० सफेद अंधकार का देश	गोविंद रत्नाकर	५७
२१ नींद नहीं आती	मैत्रेयी दत्ता	६०
२२ यात्री	शि० रा० फाटक	६४
२३ मृत पुरुष के साथ सहवास	डा० विधुभूषण भट्टाचार्य	६६
२४ हुसैनखाँ टुकड़िया	राहुल सांकृत्यायन	७०
२५ मछलियों के कान	शीला तिवारी	७६
२६ कान-आँख	भारती	७८
२७ यह कौम मर नहीं सकती	मोहम्मद अली कसूरी	८१
२८ न देखा : न सुना	... ...	८३
२९ ...कितना सौरभ बटोरते हैं	'नवनीत-मानसशास्त्र-विभाग'	८५
३० संगम का तेंदुआ	लेफ्टिनेंट उदय सिंह	८८
३१ विश्वास	जोरावर सिंह	९०
३२ कड़वे-मीठे जीवन-घूँट	... ...	९३
३३ मधु-घट (मराठी-कविता)	भा० रा० ताम्बे	९६
३४ बड़े मियाँ (उर्दू-कहानी)	वाजिदा तबस्सुम	९७
३५ परी के आँसू (पंजाबी-कहानी)	सुखबीर	१११
३६ मैं कौन हूँ (अँग्रेजी-कहानी)	अल्फ्रेड स्टिगलिट्स	१२५
३७ पीड़ा की नश्वर प्याली (पुस्तक-संक्षेप)	जुनीचीरो तानीजाकी	१२९
३८ सपना	अकूतागावा	१३२
३९ तृप्ति	योन् नागूची	१३७
४० स्वाध्याय-समीक्षा	राजहंस	१५१

उत्कंठा

[चित्र : ए० ए० अलमेलकर]

— रेखाचित्र —

केंजी इतो, आबिद सुर्ती, तुले, वी० एन० ओके, गूरे, मोले, हिरोशी योहची, सुरेश दीक्षित

श्री रतनलाल जोशी-द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, १४१ तारदेव, बम्बई-७ के लिए प्रकाशित तथा एसोसियेटेड पेडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक:
श्रीगोपाल नेवटिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष ८ : : अंक ८

अगस्त, १९५९

अक्षमा

उस चौमासे में तथागत मृगवन में विहार करते थे। पूर्णमासी की उस रात्रि को धर्म-चर्चा समाप्त करके तथागत ने अपनी देह को जैसे ही बिस्तर पर रखा कि, उन्हें प्रगाढ़ निद्रा आ गयी। आनंद के सिवाय समस्त जिज्ञासु-समुदाय विस्मय-विमुग्ध रह गया। तब आनंद ने मंद हास्य के साथ कहा—"अनन्यो! तुम्हें याद होगा कि, नृत्यचतुरा उर्वशी देवसभा में एक बार ताल भूल गयी थी और उसके समस्त कला-चातुर्य को उपेक्षित करते हुए महाराज इंद्र ने उसे दंड दिया था।...और, सुश्रावको! यह भी तुम्हें याद होगा कि, त्रेता में महा-प्रतापी राम ने केवल संदेह से उत्प्रेरित हो, अपनी धर्म-परायणा पत्नी का परित्याग कर दिया था।...और, आर्यार्थियो, यह भी तुम्हें याद होगा कि, दुर्वचन कहने पर त्रेता के परम तेजस्वी कृष्ण ने शिशुपाल का वध किया था।...तो, हृदयंगम करो, जिज्ञासुओ, कि, देवों और पुरुष-पुंगवों को जीतनेवाली इस राक्षसी अक्षमा को तथागत ने जीत लिया है—क्षमा के अजर-अमर अक्षरों से उन्होंने अक्षमा के अथाह-असीम विषसागर को पी लिया है! इसीलिए वे चिदानंद सोते हैं और चिदानंद जागते हैं!"

—'सम्बोधिकल्पद्रुम' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्र-साक्षात्कार

राष्ट्र-श्रद्धा के सर्वोच्च आसन पर प्रतिष्ठित मासों में श्रेष्ठ मास अगस्त की वंदना में अपनी फूल-पँखुड़ियाँ अर्पित करते हुए पुण्य-स्मरण-स्वरूप हम अपने समस्त श्रेयमना पाठक-परिवार के लाभार्थ सुप्रसिद्ध दर्शनवेत्ता स्व० डा० रानाडे-उत्प्रेरित एवं अनंत विष्णु शास्त्री-नियोजित यह ध्वनि-रूपक प्रस्तुत करते हैं।

वाचक : १९०८ ईसवी सन् के आरम्भ होते-होते बाळ गंगाधर टिळक 'लोकमान्य' हो गये थे। कश्मीर से लेकर कन्या-कुमारी तक के व्यापक जन-मन पर उनका प्रतिज्ञा-मंत्र— 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे मैं लेकर रहूँगा !' वज्राक्षरों में अंकित हो गया था। सरकारी कोप से भयभीत केवल विनयपूर्ण याचना-द्वारा स्वराज्य-प्राप्ति की समस्त दुर्बल स्थापनाएँ टिळक की तीस वर्ष की तपोज्ज्वल देशभक्ति के सम्मुख निस्तेज हो गयी थीं। सत्य, न्याय और श्रेय की रक्षा में सर्वस्व-अर्पण का जो ज्वलंत आदर्श टिळक महाराज ने प्रतिष्ठित किया था, उससे देश के राजनीतिक आंदोलनों की मानो काया पलट गयी थी—अनिश्चय, दौर्बल्य, तर्क-वितर्क और आडम्बर के स्थान पर दृढ़ संकल्प, त्याग और शौर्य के अदम्य केतु फहराने लगे थे। अँग्रेज-सरकार को भारत के भाग्य का यह शुक्रोदय भाया नहीं। टिळक महाराज-द्वारा प्रवाहित हिलोर कहीं साम्राज्य की नींव ही नहीं उखाड़ दे, यह भय उसकी न्याय-बुद्धि पर ऐसा छाया कि, उसने टिळक महाराज को बंदी बना लिया और उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया। सरकार की आपत्ति टिळक-द्वारा लिखे गये दो लेखों पर थी। मुकदमा क्या था, एक आडम्बर था। मराठी-भाषा का एक अक्षर भी नहीं जाननेवाले यूरोपियन जूरियों के मत से सहमत होकर जस्टिस दावर ने लोकमान्य को ६ वर्ष के देश-निकाले की सजा दी। दंड-आज्ञा सुनाने से पूर्व जस्टिस दावर ने कुटिल सौजन्य का प्रदर्शन करते हुए लोकमान्य से पूछा—

जस्टिस दावर— "क्या आप इस प्रसंग में कुछ कहना चाहते हैं ?"

लोकमान्य— "मैं आपसे दान-भिक्षा माँगने नहीं आया हूँ। जो-कुछ मैंने लिखा है, उसे जनसाधारण के प्रति अपना कर्तव्य समझ कर लिखा है। असत्य का उच्छेदन करने और सत्य को प्रतिष्ठित करने के लिए विधि का जो भी विधान होगा, उसे मैं भोगने के लिए सदैव तैयार रहूँगा।"

जस्टिस दावर— "तो फिर आपने अपने पक्ष की ऐसी परिश्रमपूर्ण पैरवी क्यों की ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोकमान्य– "दंड के भय से नहीं, बल्कि सत्य के सूर्य पर छिड़के गये कीचड़ को दिखाने के लिए। मैं अपने देश को ही नहीं, वरन् सारे संसार को यह दिखाना चाहता हूँ कि, भारत में अँग्रेजी राज्य के न्यायालय कैसे हैं!"

जस्टिस दावर– "तो क्या आप जूरी के बहुमत को भी अमान्य करते हैं?"

लोकमान्य– "जूरी ने मुझे दोषी ठहराया; किंतु उनका निर्णय मुझे मान्य नहीं; क्योंकि मेरा अंतःकरण कहता है कि, मैंने कोई अपराध नहीं किया है। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि, लौकिक अदालत की शक्ति से कहीं विराट् एक और शक्ति है, जो इस निखिल ब्रह्मांड का सूत्र-संचालन करती है। उस परमात्म-शक्ति में मेरा अटल विश्वास है और मैं यह देख रहा हूँ कि, उस ईश्वर की ही ऐसी इच्छा है कि, मेरे मुक्त रहने के बजाय मेरे दंड भोगने से मेरे ध्येय की पूर्ति अधिक होगी। भगवान् के इस विधान को शिरोधार्य करके मैं यह सजा भोगने को प्रस्तुत हूँ।"

['टिळक महाराज की जय!', 'लोकमान्य की जय!', 'भगवान् टिळक की जय!', 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है!', 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है!', 'हम उसे लेकर रहेंगे!', 'हम उसे लेकर रहेंगे!', 'टिळक महाराज जिंदाबाद!', 'लोकमान्य जिंदाबाद!', आदि नारों की ध्वनि]

वाचक : कालेपानी का दंड भोगने के लिए टिळक महाराज को मांडले भेज दिया गया – ५२ वर्ष की जीर्ण-क्लांत आयु में अपने प्राणप्रिय स्वदेश से हजारों मील दूर। सारा देश शोक-सागर में डूबा हुआ था। लोकमान्य जन-मन-नायक थे – प्राणों का रस सींच-सींच कर उन्होंने अपनी जननी-जन्म-भूमि को नव-पल्लवित किया था। अतः ऐसा लगता था, मानो तैंतीस करोड़ भारत-वासियों ने एक-हृदय होकर उनके देश-निष्कासन की पीड़ा झेली थी। कश्मीर के केवट, कारखानों के मजदूर, गाँवों के किसान और मालावार के मछुवे—सभी की आँखों में आँसू उमड़े और छः वर्ष तक सभी टिळक महाराज के अभाव में संताप अनुभव करते रहे। पूना के एक पत्रकार उस समय कश्मीर में थे। संध्या की सैर के लिए जब वे एक नाव में बैठे, तो नाविक ने बड़े विषाद से पूछा–

तत्व-चरु

[चित्र : प्राचीन शिल्प की रेखानुकृति]

नाविक– "बाबूजी, क्या टिळक महाराज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को हम लोग छुड़ा नहीं सकते ?"

पत्रकार– "नहीं, टिळक महाराज स्वयं यह नहीं चाहते। वे सत्य और न्याय की लड़ाई के योद्धा हैं। कारावास तो उनकी स्वराज्य-साधना है।"

नाविक–"बाबूजी, देश में तो करोड़ों लोग हैं। हम सब मिल कर क्यों नहीं अपने टिळक महाराज की तरह स्वराज्य की लड़ाई लड़ें ?"

पत्रकार– "भाई, जिस रोज हमारे देश में यह भावना जाग उठेगी, उस रोज हमारा देश बिना किसी लड़ाई के ही स्वतंत्र हो जायेगा। लोकमान्य टिळक महाराज अपनी तपस्या से हमारी उसी सोयी हुई भावना को जगा रहे हैं।"

[घनघोर वर्षा, मेघों का गर्जन, भयभीत पशु-पक्षियों की ध्वनियाँ]

वाचक : इस भयावह रात्रि में, मांडले की एक काल-कोठरी में क्षीण प्रकाश जल रहा है। श्रीमद्भगवद्गीता के कई भाष्य यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। चिंतन में लीन टिळक महाराज अभी तक बैठे हैं। नींद उन्हें नहीं आ रही है। गीता का प्रत्येक अध्याय उनके मानस-पट पर अंकित होता है — कुछ नये प्रश्न, नयी समस्याएँ उदित हो जाती हैं। इन गुत्थियों को वे सुलझाते हैं, शंकाओं के समाधान निकालते हैं; किंतु गीता जैसे अनंत जीवन की जन्मकुंडली है, वैसे उसकी समस्याएँ भी अनंत हैं। ....और, इन समस्याओं के साथ ही गीता के वे महाप्राण भाष्यकार– शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, ज्ञानेश्वर महाराज, आदि – भी एक-एक करके अपने अलौकिक व्यक्तित्व में मानो साकार सामने खड़े हो जाते हैं।

संशय

प्रलयंकर आँधी से आलोड़ित उस तांडव-तड़िता अमावस्या को एक जीर्ण-प्राणा युवती, अर्धरात्रि के उस श्मशानी घंटा-रव के मुहूर्त में, मेरे द्वार पर आकर अति विलाप करने लगी। मैंने उसके आँसू पोंछने का प्रयत्न किया, तो वह झुँझला कर बोली–"पुत्र, मरण के आँसू पोंछने की क्षमता क्या तुम्हारे अंतर्यामी में है? जरा पूछ कर देखो! मैं क्रांति हूँ। आज मेरा एकमात्र पुत्र फाँसी पर लटका दिया गया है। क्या मैं तुम्हें अपना पुत्र कहूँ? मैं इसीलिए तुम्हारे द्वार पर आयी हूँ!" मैं सोचने लगा, फिर जैसे ही 'हाँ' कहने को मुँह खोला, तो देखा कि, वह वहाँ नहीं थी। हाय रे संशय के क्षण! तूने मुझे कहीं का नहीं रखा! –पणिक्कर

शंकराचार्य– "मैं शंकर हूँ, टिळक! गीता पर मेरा भाष्य पढ़ कर तुम्हें जो शंकाएँ हो गयी हैं, उनका समाधान करने के लिए तुम्हारे सम्मुख आ गया हूँ।"

टिळक– "साष्टांग प्रणाम करता हूँ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवन् । आपके गीता-भाष्य पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है और हो भी नहीं सकती । केवल एक अभाव मुझे खटक रहा है – वह है, कर्म को हीन बता कर ज्ञान और संन्यास का आपके द्वारा प्रबल महत्व-प्रतिपादन ।"

शंकराचार्य– "ज्ञान के प्रति मेरा पक्षपात अनुचित कैसे है ? कर्म तो ज्ञान के सम्मुख सदैव ही हीन रहा है । अद्वैत-स्थिति का ज्ञान हो जाने पर तो कर्म का महत्व बिल्कुल नगण्य ही हो जाता है ।"

टिळक– "हाँ, आपके गीता-भाष्य में यही निष्कर्ष है । आप ज्ञान और कर्म को प्रकाश और अंधकार की भाँति परस्पर-विरोधी बतलाते हैं । आप तो गीता में वर्णित 'ज्ञानकर्म-सम्मुच्चय' को भी असंगत ही मानते हैं । परंतु भगवन्, मेरी समझ में, यह वस्तुस्थिति का सम्मान नहीं है....गीता को लेकर तो बिल्कुल ही नहीं है ।"

शंकराचार्य– "मैं देखता हूँ कि, अद्वैत-ज्ञान के प्रति तुम्हारी भी आस्था अटल ही है । अंतर केवल कर्म की स्थिति को लेकर है । लेकिन मैं इसे अंतर नहीं मानता । टिळक, यह तो देश-काल की स्थिति का आग्रह-मात्र है ।"

टिळक– "देश-काल का आग्रह ही मान लीजिये; किंतु आपके गीता-भाष्य के अति उच्चस्तरीय निष्कर्ष को शायद मानव-समाज ने– या यों कहूँ कि, जनसाधारण ने – ठीक तरह हृदयंगम नहीं किया । दुष्परिणाम यह निकला कि, गीता घर-घर में संन्यास को प्रेरित करनेवाली पुस्तक मानी जाने लगी । लड़कपन में मेरे घरवालों ने भी मुझे यही बताया था कि, दुनिया में नाम और यश कमाना हो, तो पुरुषार्थ करो और अगर मोक्षार्थी संन्यासी बनना हो, तो गीता का पाठ करो । संन्यास के स्वर्ण-सूत्र पाने के लिए ही मैंने गीता पढ़ी थी । किंतु बार-बार पढ़ने पर भी मैंने तो गीता के श्लोकों में एक भिन्न ही स्थापना देखी । मेरे मूल्यांकन में तो कर्म-योग को ही गीता में सर्वोपरि महत्ता दी गयी है । देखिये, श्रीकृष्ण गीता के प्रत्येक अध्याय में किसी-न-किसी रूप में कर्मयोग की विशेषता दोहराते हैं ।"

वाचक : शंकर के बाद रामानुजाचार्य ने चर्चा आगे बढ़ायी—

वरदान

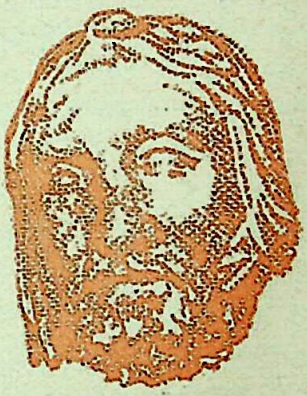

मुझे अमरत्व नहीं चाहिए,
मुझे कीर्तिधन नहीं चाहिए !
हटा लो, प्रभो ! मेरे सम्मुख से–
तुम्हारे यह दिवालिये वरदान !
मुझे वह शक्ति दे दो, नाथ !
दुर्बल को बाँह थाम उठा लूँ,
अश्रु को पोंछ विश्राम लूँ !

—संत ब्यूनो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामानुजाचार्य – "टिळक, जिसे तुम कर्मयोग कह रहे हो, वह कर्मयोग नहीं, वस्तुतः भक्तियोग है। गीता में मूलतः 'शांडिल्य-सूत्र' की भक्ति को ही विस्तार के साथ श्रीकृष्ण ने निरूपित किया है। अठारहवें अध्याय में तो यह और भी स्पष्ट है, जहाँ समस्त गीतादर्शन का अंतिम निष्कर्ष देते हुए श्रीकृष्ण स्वयं कहतें हैं—

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसिमे ॥"

टिळक– "प्रभो, गीता में भक्तियोग को जो प्रतिष्ठा दी गयी है, वह मुझे मान्य है। गीता में जिस प्रकार ज्ञानयोग की व्याख्या है, उसी प्रकार भक्तियोग की भी। किंतु जिस वातावरण और मनः-स्थिति में गीता कही गयी है और जिस समस्या के समाधान का उसमें लक्ष्य है, उस प्रसंग में न तो ज्ञान की संगति सर्वोपरि है और न भक्ति की – केवल कर्म का ही औचित्य वहाँ सर्वाधिक अनुकूल जँचता है। जीवन स्वयं कर्म का अनंत प्रवाह है। ज्ञान कर्म की दृष्टि है और शक्ति गीतोक्त कर्म की प्रणाली। दूसरे शब्दों में, कर्म व्यक्ति है, जिसका मस्तिष्क ज्ञान है और हृदय भक्ति है। गीता के अनुसार, ज्ञान कर्म का परिशोधक है और भक्ति कर्म के लिए ऐसा ढाँचा, जिसमें ढल कर व्यक्ति के कर्म सारे मानव-समाज की श्रेय-सेवा के साधन बन जाते हैं। ज्ञान और भक्ति की सर्वोच्च सिद्धि जीवन-मुक्ति की स्थिति है, जहाँ पहुँच कर कर्म की कोई अपेक्षा नहीं रह जाती – ऐसा ज्ञानियों एवं भागवतों का मत है। किंतु मैं तो इसे गीता-सम्मत नहीं मानता। केवल जनक-याज्ञवल्क्य ही क्यों, स्वयं भगवान् शंकराचार्य भी आजीवन लोक-संग्रहार्थ कर्मलीन बने रहे, यद्यपि वे अद्वैत-ज्ञान की ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर चुके थे। अतः मेरे मर्म-ग्रहण में गीता का योग यही कर्मयोग है – अर्थात् कर्मफलाशक्ति त्याग कर भगवदर्पण-बुद्धि से लोकसंग्रहार्थ जीवन के अंतिम क्षण तक मनुष्य का कर्मशील बने रहना !"

वाचक : छः वर्ष के पंचाग्नि-तप-जैसे कारावास की अवधि समाप्त कर जब लोकमान्य स्वदेश आये, तो घर-घर में दीपावलियाँ सजायी गयीं और हर्षोत्साह की एक ऐसी प्रबल हिलोर जन-मन पर छायी कि, उनके कट्टर-से-कट्टर विरोधी भी परम श्रद्धालु हृदय से उनके अभिनंदन को दौड़ पड़े। लाला लाजपतराय के शब्दों में 'ऐसा विराट् उल्लासपर्व भारत-भूमि पर शायद ही कभी मनाया गया होगा — सारा देश एक हर्षालोड़ित समुद्र की भाँति उनके स्वागत को उमड़ पड़ा।' वास्तव में, टिळक महाराज का स्वदेशागमन हमारे स्वातंत्र्य-आंदोलन के इतिहास का स्वर्ण-पृष्ठ था। उनके आते ही हमारी राजनीतिक क्रांति की सारी परिभाषा बदल गयी। औपनिवेशिक स्वराज्य के स्थान पर पूर्ण स्वराज्य हमारे संघर्ष का ध्येय बन गया। किंतु सबसे बड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चमत्कार उनके 'गीता-रहस्य' ने किया। संन्यास एवं विरक्ति के निवृत्तिमूलक जीवन-दर्शन का स्थान ऊर्ज्वसित कर्मयोग ने लिया, जिसके फलस्वरूप एक तन-मन-प्रबुद्ध पीढ़ी अपनी अजेय-अदम्य महत्वाकांक्षा में विकास पाने लगी। भारत में आते ही, लोकमान्य ने फिर अपनी समस्त शक्ति स्वराज्य के स्वप्न को चरितार्थ करने में लगानी शुरू कर दी। गाँव-गाँव का भ्रमण, पत्रों का सम्पादन एवं सभा-संस्थाओं का संचालन — सारा जीवन-क्रम फिर अहोरात्र यज्ञ बन गया। किंतु आयुर्बल कब तक इस महावेलि को सींचता। उनकी शक्तियाँ निर्बल होती गयीं और एक दिन निमोनिया के पाश में उन्होंने अपनी जीर्ण-शीर्ण देह को त्याग दिया— जतन से ओढ़ी इस देह चदरिया को उनकी आत्मा ने ज्यों-की-त्यों धर दिया। अंतिम साँस लेते हुए उनके मुख से निकला –

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

[समुद्र का गर्जन, घंटा-नाद, भजन और 'टिळक महाराज की जय' के नारे]

वाचक– चौपाटी पर टिळक का शवदाह हुआ। आबाल-वृद्ध-बम्बई अंतिम दर्शनों को उमड़ पड़ी। सिसकियों एवं विलाप के साथ जय-जयकार के तुमुल जयघोष काल की पराजय को दिगंतव्यापिनी बना रहे थे। तभी प्रेरणा के अबाध हिलोरों में उद्वेलित विराट् मेदिनी को चीरता हुआ एक प्रलम्ब-बाहु अस्थिपंजर चिता की ओर बढ़ा। नाद थम गया। क्षण-भर को दिशाएँ स्तब्ध हो गयीं। गांधीजी ने चिता को प्रणाम किया और लोकमान्य की उस उत्तप्त चिता-भस्म को सिर चढ़ा कर अपनी सत्यसाध्य वाणी में मानो दिग्दिगंत को सम्बोधित करते हुए कहा–

गांधीजी– "हमारे युग में ऐसा कोई दूसरा नेता नहीं हुआ, जिसका जनता पर ऐसा व्यापक प्रभाव हो। इसी जमाने में दादाभाई गये, फिरोजशाह गये, गोखले भी चले गये। सबके साथ हजारों लोग श्मशान तक गये थे; पर टिळक महाराज ने तो हद ही कर दी। उनके पीछे तो जैसे सारी दुनिया ही आ गयी। वास्तव में, वे इस शताब्दी के सबसे बड़े जन-आराध्य थे। उनके निधन से पुरुषों में से पुरुषसिंह संसार से उठ गया। ...उनकी स्वदेश-भक्ति ही उनकी जीवन-धारा थी। वस्तुतः उनका जीवन वह ग्रंथ है, जिसे खोलने की भी जरूरत नहीं – वह तो सदैव खुला हुआ है।.....आज जो वातावरण मैं सर्वत्र देख रहा हूँ, उससे मेरा यह विश्वास दृढ़ हो गया है कि, टिळक वास्तव में मरे नहीं हैं – वे जन-जन में व्याप्त होकर अमर हो गये हैं। ....इस पुनीत अवसर पर मैं उनकी चिता का भस्म अपने सिर पर चढ़ाते हुए प्रतिज्ञा करता हूँ कि, प्राण देकर भी लोकमान्य के स्वराज्य के मंत्र को चरितार्थ करूँगा!"

['महात्मा गांधी की जय!', 'लोकमान्य अमर हो गये!', 'भारत माता की जय!', 'लोकमान्य जिंदाबाद!' के नारों की ध्वनियाँ।]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ

रस-कोलाहल के इस युग में भारतीय शास्त्रीय संगीत को फिर से अपने सांस्कृतिक रस-कूलों में नियोजित करनेवाली विभूति का संक्षिप्त परिचय। चित्र एवं प्रेरणा-पुष्प सामने के पृष्ठ पर।]

"ललित कलाओं में संगीत की साधना, मेरे विचार में, सबसे अधिक दुरूह है! शायद इसका कारण यह है कि, कोई भी अन्य कला दिव्यत्व के उतना निकट नहीं है, जितना संगीत! इसकी शरण जाते ही साधक का रोम-रोम दिव्य अनुभूतियों से सजीव हो उठता है!" सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ येहूदी मेन्यून के ये शब्द वस्तुतः संगीत की महत्ता को प्रतिबिम्बित करनेवाले ऐसे स्वच्छ-निर्मल दर्पण हैं, जिनमें आराध्य के साथ-साथ सच्चे आराधक का व्यक्तित्व भी प्रभासित हो उठता है।

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ दिव्य-कला—संगीत— के ऐसे ही गिने-चुने आराधकों में से एक हैं। वे संगीत को परम-ब्रह्म का एक अंश मानते हैं, जिसकी शरण-प्राप्ति मनुष्य को त्रय-तापों से मुक्त कर देती है। उनका कहना है— "जन-जन के मन को शांति प्रदान करना ही संगीत-साधक का धर्म है— कला-मर्मज्ञता के दम्भ का प्रदर्शन नहीं।"

भारत-भूमि के इस महान् संगीतज्ञ में संगीत के प्रति आकर्षण बचपन से ही था। आठ वर्ष की कच्ची उम्र में ये संगीत-सान्निध्य के लिए घर से भाग निकले। अपने आराध्य की खोज में, जगह-जगह इन्होंने ठोकरें खायीं, फुटपाथ इनका बिछौना बना और कंगाली-भोजन जीवन-रक्षा का आधार। भाँति-भाँति के अभिशापों ने इन्हें जी-भर डँसा; पर इनकी दृढ़ता के आगे, अंत में, ये सारे अभिशाप के काँटे वरदान के कोमल पुष्प बन गये और एक दिन दर-ब-दर मारा चलनेवाला क्षुद्र बालक देश का अत्यंत महान् संगीतज्ञ बन गया।

आज रविशंकर, अली अकबर और पन्नालाल घोष— जिन्हें क्रमशः सितार, सरोद और बाँसुरी-वादन के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है— योग्य शिष्यों के रूप में अपने इस महान् गुरु की कीर्ति-पताका को फहराते चल रहे हैं। लोक-स्तर पर भी संगीत के इस एकनिष्ठ पुजारी की साधना बड़ी प्रबल सिद्ध हुई है।

अभी उस्ताद अलाउद्दीन खाँ की अवस्था ८९ वर्ष की है; पर इस पकी उम्र में भी वे संगीत की अर्चना करते हैं। वे कहते हैं— "माँ सरस्वती के चरण मेरे हाथों से केवल मृत्यु ही छुड़ा सकती है!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

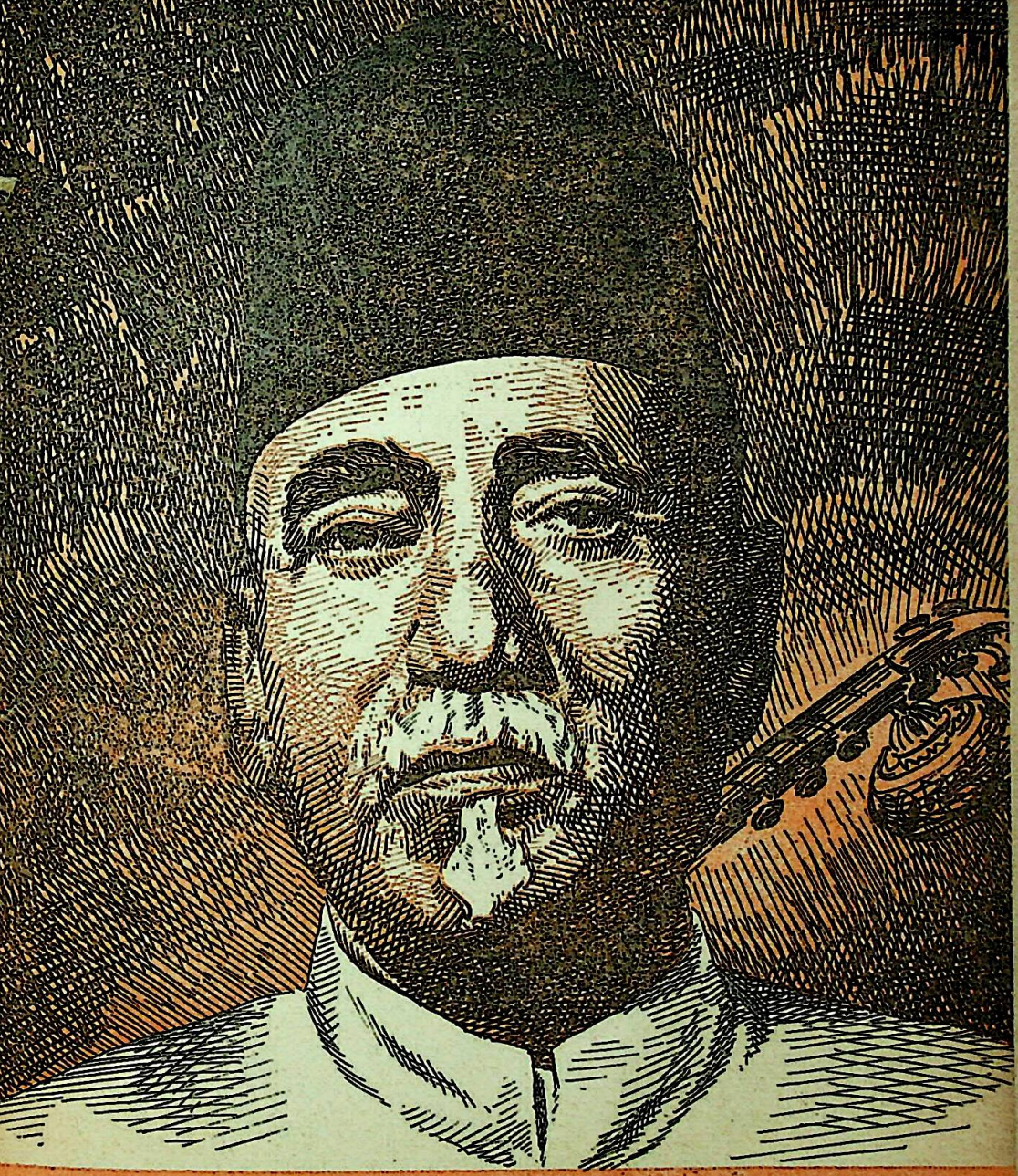

संगीत की साधना से मैंने सबसे मूल्यवान सबक यह सीखा है कि, मधुरता देकर दूसरों के प्राण भी प्राप्त किये जा सकते हैं। माधुर्य से भरा एक शब्द आप दीजिये और उसी क्षण सारा जीवन ले लीजिये—देनेवाला कभी संकोच नहीं करेगा, कोई सौदा नहीं करेगा, आपकी निष्ठा पर जरा भी अविश्वास नहीं करेगा, आँख मूँद कर सर्वस्व सामने रख देगा। दरअसल, दोष हमारा ही है, कृपणता का कोढ हमारे ही चित्त पर है कि, हम अपने भीतर लबालब भरे माधुर्य-सिंधु में से प्रायः एक बूँद देने में भी संकोच कर जाते हैं। —अलाउद्दीन खाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक भगीरथों द्वारा आठवें समुद्र का निर्माण

मानवीय एषणा की राज्य-रेखा ने जिसे निरुद्वेग विभाजित कर दिया था, उस झील-कुल का यह पुनर्मिलन जहाँ एक ओर मानव के बुद्धि-कौशल का जय-जयकार है, वहाँ इस सत्य की प्रतिध्वनि भी है कि, भौगोलिक ऐक्य के अनुरूप मानवीय ऐक्य की सिद्धि ही व्यापक कल्याण का अक्षय सेतु है। श्रीमोहन अनन्य-लिखित इस ऐतिहासिक निर्माण के वृत्तांत में उपर्युक्त निष्पत्ति के प्रत्यक्ष दर्शन कीजिये।

*

पहले-पहल कश्मीर में एक छोटे-से शिकारे को, झेलम के जल-स्तर से ५-७ फुट ऊँचा उठ कर, डल झील में पहुँचते देख, मुझे मनुष्य की प्रतिभा पर गर्व हुआ था। झेलम और झील, दोनों के जल-स्तरों के बीच एक बाँध, बाँध के दोनों ओर दो द्वार और द्वारों पर लकड़ी के विशाल कपाट। जिस तरफ का द्वार खोला जाये, उसी तरफ के जल-स्तर के समान दो कपाटों के बीच का जल-स्तर हो जाये। छोटे शिकारे, भार से लदी नावें, या शौकीनों के हाउसबोट एक द्वार से प्रवेश कर, उस द्वार को बंद कर, दोनों द्वारों के बीच के जल-स्तर के समान होने पर, बाहर निकल जाते।

हिटलर की जर्मनी में देखी — फीनो-नहर, जिसमें हजारों टन के जहाज आते-जाते थे। यह नहर एक जगह सहसा नीचे आ गयी थी। पुराने तरीके से दो फाटकों के बीच जल-स्तर में परिवर्तन कर नावों को नीचे उतारने एवं ऊपर चढ़ाने का वह युग नहीं रह गया था। वैज्ञानिक युग का वह जो आयोजन मैंने नीदरफीनो में ओडर और स्प्री नदियों को जोड़ने-वाली फीनो-नहर में देखा, उसके आगे कश्मीरवाली वह करामात खिलौना-सी ही लगी। फिर, जब वहाँ के गाइड ने एक तरफ की ५ अश्व-शक्ति की मोटर दिखा कर कहा कि, यही है वह शक्ति, जो हजारों टन का बोझ नीचे-से-ऊपर या ऊपर-से-नीचे पहुँचाती है, तब मुझे बर-बस दाँतों-तले उँगली दबानी पड़ी थी।

पर यह कैसे सम्भव होता था, यह समझना आसान है। नहर के ऊपर तथा नीचे के प्रवाहों के बीच एक लिफ्ट लगी थी। लिफ्ट के दो पलड़े थे — पलड़े क्या थे, समझिये कि, इतने बड़े सरोवर थे, जिनमें पूरे-के-पूरे जहाज समा जायें। एक तरफ का पलड़ा जब नीचे रहता, तो दूसरा ऊपर। सरोवरों के विशाल द्वार बने थे, जो ऊपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varahasi Collection. Digitized by eGangotri

या नीचे पहुँचने पर नहर के जल-प्रवाह के साथ एकाकार करने के लिए खोल दिये जाते थे। दरवाजे जब बंद कर दिये जाते, तो वे पलड़े एक तालाब की तरह हो जाते, जिनमें ऊपर-नीचे आने-जानेवाले जहाज तैरते रहते।

पानी का सिद्धांत है कि, जितने वजन की चीज उसमें तैरेगी, उतने वजन का पानी जगह छोड़ देगा। नीदरफीनो के उन दो कोठों के पानी का वजन एक समान था। उनमें प्रवेश करनेवाला जहाज जितने वजन का होता, उतना पानी कोठे में से कम हो जाता। इस प्रकार दोनों कोठों का वजन सदा एक-सा रहता। यह मानी हुई बात है कि, समान वजन के दो पलड़ों में से जिसे जरा-सा दबावें, वह नीचे चला जायेगा और दूसरा ऊपर। इस जरा-से वजन का काम वह ५ अश्व-शक्ति की मोटर करती थी। हजारों टन वजन को ऊपर-नीचे ले जाने के लिए वह जरा-सी ताकत पर्याप्त थी। मनुष्य की विलक्षण बुद्धि की ऐसी उपज और फिर कर्तृत्व की ऐसी अभिव्यक्तियाँ ही आज के संसार को पूर्वकालीन संसार से सर्वथा विभिन्न बनाती जा रही हैं।

पर संसार के ऐसे सबसे बड़े कार्य-सम्पादन का उद्घाटन तो अभी पिछले जून की २६ तारीख को ब्रिटेन की महारानी ने किया है। उत्तर-अमेरिका के भू-भाग में यह सबसे बड़ी इंजीनियरिंग-योजना है। ७४४ मील की दूरी और ६०२ फुट की ऊँचाई पर विजय पाकर, कनाडा के झीलों और नदियों से परिपूर्ण सुप्रसिद्ध सेंट लारेंस बेसिन को समुद्र से जोड़ा गया

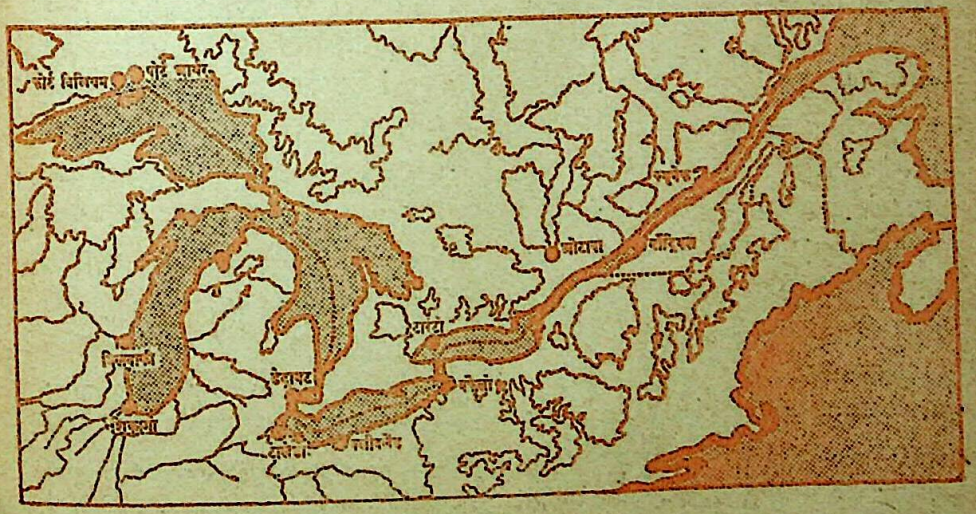

आठवें समुद्र के भौगोलिक विन्यास का द्योतक मानचित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है और उसे जल-यातायात की सुविधा से पूर्ण कर, संसार के उद्योग-सम्पन्न घनी प्रदेशों में से एक बनाने का कार्य सम्पन्न किया गया है।

अमेरिका के पूर्वोत्तर-क्षेत्र में, कनाडा और अमेरिका की सीमा-रेखा, लेक सुपीरियर, लेक ह्यूरोन और लेक ओंतारियो को चीरती हुई जाती है—अर्थात् झीलों का आधा भाग अमेरिका का और आधा भाग कनाडा का। लेक ओंतारियो के पूर्वोत्तर में प्रवाहित होती है विशाल नदी सेंट लारेंस, जो उसी नाम की खाड़ी में गिर कर अतलांतिक-सागर में समा जाती है। ये तीनों प्रकृति-निर्मित झीलें समुद्र-सदृश हैं। नदी-तट पर बसे प्रमुख शहर क्यूबेक से लेक सुपीरियर के पश्चिमी तट पर स्थित पोर्ट आर्थर में भी करीब १,२०० मील का फासला है। इन झीलों में यों तो जहाज चलते रहे हैं; पर समुद्र से सेंट लारेंस नदी में और उसके उपरांत एक-के-बाद-एक तीनों झीलों को पार कर पोर्ट आर्थर तक जहाजों के सीधे पहुँचने का प्रबंध नहीं था। इन झीलों के तटों पर कनाडा और अमेरिका के बड़े नामी और सम्पन्न नगर बसे हैं। अतः जहाज विभिन्न झीलों में ही सीमित न रह कर, पूरब से पश्चिम सीधे आ-जा सकें, ऐसी सुविधा की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। यदि बम्बई से दिल्ली तक जहाज आ-जा सकें, तो कितनी सुविधा हो जाये, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

ऐसी ही सुविधा की कल्पना अमरीकी भी करते थे। पर इसके लिए इन झीलों के बीच में नहर काट देने से ही काम पूरा नहीं हो सकता था; क्योंकि सेंट लारेंस नदी के जल-स्तर से लेक ओंतारियो का जल-स्तर २४६ फुट, लेक ह्यूरोन (लेक मिचिगन भी, जो उसी के एक अंग के समान सम्बंधित है) का जल-स्तर ५९० फुट और लेक सुपीरियर का जल-स्तर ६२० फुट ऊँचा है। अतः सेंट लारेंस नदी से लेकर झील-समूह तक पहुँचने के लिए ७४४ मील जहाजरानी के लायक नहरें बनाने और मार्ग में जगह-जगह जहाजों को आवश्यकतानुसार ऊँचा उठाने की व्यवस्था आवश्यक थी। यह कार्य, निश्चय ही, भगीरथ के

मृत्युंजय

जतो बड़ो हओ तुमि तो—
मृत्युर चेये बड़ो न ओ;
आमि मृत्यु चेये बड़ो,
एइ शेष कथा बले—
जाबो आपि चले!

—तुम चाहे जितने भी बड़े हो; पर मृत्यु से बड़े नहीं हो सकते। इससे पूर्णतः भिन्न स्थिति मेरी है। इसीलिए 'मैं मृत्यु से बड़ा हूँ।' यह अंतिम बात कह कर प्रस्थान कर दूँगा।" —रवीन्द्रनाथ टैगोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिमालय से गंगा को उतार लाने के पराक्रम से निम्न कोटि का नहीं था। पर आज के मशीनी तरीकों और अदम्य उत्साह ने ५ वर्ष में ही यह काम पूरा कर दिखाया। अगस्त, १९५४ में यह काम प्रारम्भ हुआ और जून, १९५९ में महारानी एलिजाबेथ ने, अमरीकी राष्ट्रपति आइजनहोवर के साथ, अपने निजी जहाज 'ब्रिटानिया' पर सवार होकर इस समुद्र-मार्ग से यात्रा की तथा मोंट्रील के समीप सेंट लेम्बर्ट 'लाक' की सहायता से नीचे के जल-स्तर से ऊपर उठ कर, इस महान् इंजीनियरिंग - यज्ञ को पूर्णाहुति दी।

बुद्धि-संगम

[चित्र : गूरे-कृत कांस्य-शिल्प की रेखानुकृति]

इस योजना में दोनों तरह के लाक बनाये गये हैं — जर्मनी के नीदरफिनो की भाँति लिफ्ट भी तथा दो फाटकों के बीच जल-स्तर को ऊँचा-नीचा करके जहाजों को उतारने-चढ़ाने के साधन भी। जहाँ जैसी सुविधा और आवश्यकता हुई, उसके अनुसार सादे लाक या लिफ्ट-लाक बना दिये गये हैं। पनामा-नहर के दो ओर के समुद्र के स्तर में ८५ फुट का अंतर है। इतनी-सी ऊँचाई के लिए भी वहाँ के लाक जब इंजीनियरिंग के विशेष नमूने हैं, तो सैकड़ों फुट की ऊचाइयों पर विजय पाना तो २०-वीं सदी के उत्तरार्द्ध के लिए ही सम्भव था।

लेक ओंतारियो तक पहुचने के लिए २२, ६७ और १५१ फुट ऊँचे लाक हैं, जब कि लेक ओंतारियो से लेक ह्युरोन तक पहुँचने के लिए ३२६ फुट की ऊँचाई चढ़नी पड़ी है। नाम को तो यह नहरी मार्ग है; पर है यह भूमध्य-सागर के समान लम्बा। यह मार्ग कितना दुस्तर है, यह इसी से स्पष्ट है कि, जहाँ स्वेज में एक फुट की भी चढ़ाई-उतराई नहीं, यहाँ ६०२ फुट की चढ़ाई-उतराई है। पाँच वर्ष तक १५ हजार आदमियों और विविध प्रकार की वर्तमान मशीनों और सवा दो करोड़ पौंड विस्फोटक पदार्थों की सहायता से यह कार्य सम्पन्न हुआ है। मशीनें भी कैसी ? उनमें से एक का परिचय सुनिये। नाम है उसका 'जेंटिलमैन'। काम है मिट्टी खोदना— प्रति ४८ सेकंड, एक खोद में २० टन। उसका अपना वजन है ६५० टन ! ऐसे जेंटिलमैनों की सहायता से ही वे पचासों बाँध बँध पाये हैं और सैकड़ों मील लम्बी नहरें खुद पायी हैं। आजकल जहाँ पानी बाँधने की योजना होती है, वहाँ बिजली-उत्पादन तो आसान हो ही जाता है। यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योजना मात्र यातायात के लिए ही मनुष्य का सेवक — बहुत सस्ता सेवक — नहीं साबित होगी; बल्कि इस योजना से सम्बद्ध दोनों ओर अमेरिका और कनाडा में बने बिजली-घर करीब १९ लाख किलोवाट विद्युत् की भी क्षमता रखेंगे। 'मौरोज सैंडरी' नामक ये विद्युत्-केन्द्र उत्तर–अमेरिका में सबसे बड़े सिद्ध होंगे।

कनाडा के दक्षिण-पूर्व में लेब्राडोर-प्रदेश खनिज पदार्थों का आगार है। उन खनिज पदार्थों का उपयोग करनेवाली मिलें हैं, भीतर झीलों के तट पर स्थित नगरों में। वहाँ तक कच्चे माल को पहुँचाना अब तक बहुत खर्चीला रहा है; पर सेंट लारेंस का समुद्री मार्ग खुल जाने से अब बहुत कम खर्च से वह ढोया जा सकेगा। ऐसा अनुमान है कि, इससे किराये में करीब १५ करोड़ रुपये सालाना की बचत होने लगेगी। कनाडा एवं अमेरिका के ये झीलवाले प्रदेश अन्न के भांडार हैं। फलतः अन्न को यत्र-तत्र-सर्वत्र पहुँचाने की तकलीफें भी इससे दूर हो जायेंगी एवं खर्च भी निहायत कम हो जायेगा।

इस प्रदेश के नक्शे को देखने से पता चलता है कि, सब झीलों में से होकर जाने-लायक गहरा जल-पथ बन जाने पर इस समुद्र-नदी-नहर-झील-मार्ग का लाभ क्यूबेक, मोंट्रील, टोरेंटो, वफेलो, क्लीवलैंड, डिट्रायट, मिलवाकी, शिकागो, पोर्ट आर्थर-सरीखे कनाडा और अमेरिका के शहरों को मिलेगा। गंगा में बड़े जहाज कलकत्ता से कानपुर तक आने-जाने लगें, तो बीच के शहरों को जो लाभ हो, उसकी जरा कल्पना कीजिये। और फिर, कनाडा तथा अमेरिका के ये भूभाग तो धन-धान्य, खनिज पदार्थों और उद्योग-धंधों से इतने परिपूर्ण हैं कि, यातायात के इस नये साधन से वहाँ की समृद्धि में और भी उन्नति होगी। सबसे पहले जब कनाडा का पता जेम्स कार्टियर ने लगाया था, तब उसने भी इस नदी में ६२० मील तक नाव से यात्रा की थी। यातायात के वर्तमान काल के साधनों में आज भी जल-मार्ग सबसे अधिक सस्ता और सरल है। बीस करोड़ टन माल के प्रति वर्ष लाने-ले जाने का यह साधन उपस्थित हो जाना उद्योग के लिए सचमुच ही बहुत श्रेयस्कर होगा।

पौने पाँच अरब रुपये के व्यय से निर्मित कनाडा और अमेरिका की इस कलियुगी भागीरथी की प्रशंसा में 'गंगा-लहरी' लिखनेवाले कवि जगन्नाथ आज भले ही न हों– और भले ही न हों श्रद्धापूर्वक डुबकी लगा कर पीढ़ियों के पाप धोनेवाले– पर वे हजारों-लाखों जन तो होंगे ही, जो उसका भौतिक लाभ उठायेंगे और उसकी कृपा से जीवन को सुखकर बनायेंगे।

बेला हो कि चमेली, या पद्मा तगर चंदन,
सभी सुरभियों से है बड़ी सुरभि शील की। —आनंद (थेर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोकतंत्र को ग्राहों से बचाइये

नव-स्थापित भारतीय लोकतंत्र के द्वार पर खड़े कंटकाकीर्ण भविष्य से सुरक्षा-प्राप्ति के लिए संम्पूर्णानंदजी-द्वारा सुझाये गये कुछ स्वर्ण-सूत्र

अक्सर देखा गया है कि, जब अलोकतंत्री शक्तियाँ अपना सिर उठाती हैं, तो लोकतंत्र उनका डट कर सामना नहीं कर पाता। उस समय जो लोग शासन करते हैं, वे अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए प्रयत्न करते हैं और जनता उनकी भूलों और बुराइयों को याद करके कहती है– "यह सब पाखंड है।" इसीलिए यदि कोई ऐसा शासक आ जाये, जो जनता के व्यक्तिगत मामलों में विशेष हस्तक्षेप न करे और अच्छी तरह शासन करे, तो जनता अपने राजनीतिक अधिकार छिनने और लोकतंत्र के अंत पर आँसू नहीं बहाती।

लोकतंत्र के प्रति यह उदासीनता इसलिए है कि, लोग अभी ठीक से इसके महत्व को नहीं समझ सके हैं। वे इसे राजनीतिक अधिकार हथियाने का साधनमात्र समझते हैं। जब चुनाव के दिन आते हैं, तो राजनीतिक पार्टियाँ जनता के सामने जाती हैं और उसे फुसला कर वोट ले लेती ह। इसके बाद वे इसकी चिंता नहीं करतीं कि, जनता में लोकतंत्र के प्रति सच्ची आस्था पैदा हो। परिणाम यह होता है कि, जनता में लोकतंत्र का पल्ला मजबूती से नहीं जम पाता और क्रांति के सामने लोकतंत्र घुटने टेक देता है!

इस समय स्थिति बड़ी नाजुक है। निरंकुश शासन की प्रवृत्ति जोर पर है। साम्यवादी तानाशाही तो है ही, दूसरे प्रकार की तानाशाहियाँ भी सिर उठा रही हैं। स्पेन और पुर्तगाल में पुराने अधिनायकतंत्र बने हैं। हमारे पड़ौस में पाकिस्तान और फारमोसा, आदि देश सैनिक तानाशाही के शिकंजे में हैं। पर कुछ ऐसी भी तानाशाही प्रवृत्तियाँ हैं, जो कुछ समय बाद प्रबल हो सकती हैं। इनमें से एक है– 'टेक्नोक्रेसी', अथवा कारीगरों या शिल्पियों की तानाशाही। यह मशीन का युग है। जो काम पहले लोग मेहनत और बुद्धि से किया करते थे, वे सब धीरे-धीरे मशीन से किये जाने लगे हैं। कुछ काल बाद ही ऐसी स्थिति आ सकती है कि, मनुष्य को कुछ करना न पड़े और सारा कार्य मशीन के जरिये ही हो। ऐसी स्थिति में सारी सत्ता मशीन बनानेवालों या कारीगरों के हाथ में चली जायेगी। मशीन-विज्ञान के इस विकास से अंत में मनुष्य का फायदा होगा या नुकसान, यह तो और प्रश्न है; किंतु लोकतंत्र का अवश्य सफाया हो जायेगा।

अगर सुखी जीवन केवल यही है कि,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोगों को अच्छे घर मिल जायें, अच्छा भोजन मिलने लगे और गरीबी से छुटकारा मिल जाये, तो फिर लोकतंत्र की कोई आवश्यकता नहीं है। किंतु यदि आदमी आत्म-सम्मान तथा व्यक्तित्व का विकास चाहता है, तो उसे लोकतंत्र अपनाना पड़ेगा और उसकी रक्षा करनी पड़ेगी।

"पर लोकतंत्र की रक्षा हो कैसे ?" यहाँ यह प्रश्न उठता है। दरअसल, यह प्रश्न न तो अत्यंत दुरूह है और न असमाधेय। जरूरत सिर्फ इस ओर ध्यान देने की है। लोकतंत्र की रक्षा के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि, उसके सिद्धांत पुस्तकों में ही नहीं रहें, उनका प्रवेश जनता के जीवन में भी हो। लोकतंत्रवादी कहने को तो कहता है कि, जनता हमारी मालिक है; किंतु कोई यह नहीं समझता कि, यदि अपने मालिक को गुलाम नहीं होने देना है, तो उसे शिक्षित करना भी जरूरी है। लोकतंत्र में लोगों को आधुनिक विज्ञान तथा अन्य विषयों का इतना ज्ञान तो होना ही चाहिए कि, आज जो नये-नये विकास हो रहे हैं, उन्हें वे समझ सकें। यदि ऐसा न हुआ, तो विज्ञान को वे जादूगरी और वैज्ञानिक तथा कारीगर को जादूगर समझ बैठेंगे एवं उनके वश में रहेंगे।

लोगों को सामाजिक विज्ञान– विशेष रूप से, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र– की भी शिक्षा दी जानी चाहिए। यह शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि, लोग व्यक्ति की गरिमा का आदर करना सीखें। जब यह समझा जायेगा कि, मानव-आत्मा अमर और स्वतंत्रता उसका नैसर्गिक गुण है– सब लोग सिद्धांततः समान हैं तथा सबको विकास की पूरी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए– तभी लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी। यदि भौतिकवाद का सामना करना है, तो इन सिद्धांतों को अंगीकार करना ही होगा। लोकतंत्र की शिक्षा केवल वोट देने और विधानसभा के कार्य की प्रणाली सिखाने से पूरी नहीं होती।

दुनिया के अन्य देशों की तरह भारत में भी आज साम्यवाद तथा अन्य तानाशाही प्रवृत्तियों का आक्रमण हो रहा है। हमारे यहाँ की सामाजिक विषमता और गरीबी के कारण इनके प्रबल होने की अधिक सम्भावना है। लोग इन कष्टों से राहत पाने के लिए लोकतंत्र को त्याग कर दूसरे तरीके आजमाने को सहज ही तैयार हो जायेंगे। बहुत-से पढ़े-लिखे लोग भी ऐसा समझते हैं कि, तानाशाही का तरीका अपना कर हम शीघ्र उन्नति कर सकते हैं। अतः आज हमारे विचारकों और शासकों का सबसे बड़ा काम यह है कि, वे जनता को बतावें कि, लोकतंत्र का नाश होने से कितनी हानि होगी। वे उचित शिक्षा-द्वारा जनता को लोकतंत्र का सच्चा अर्थ बतावें और उसकी भावना भरें। भारत की आध्यात्मिक परम्परा से, निस्संदेह, इस कार्य में बड़ी सहायता मिल सकती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्वासित महाराज दिलीपसिंह
के
चार पत्र

"है कितना बदनसीब 'जफर' दफ्न के लिए, दो गज जमीं भी मिल न सकी कूए-यार में।" दिल्ली के इस बदनसीब बादशाह बहादुरशाह की तरह सिख-सम्राट् महाराजा रणजीत सिंह का राजकुमार दिलीप सिंह भी 'कूए-यार'– अपनी जननी-जन्मभूमि की गोद– में सिर छिपाने के लिए अंतिम साँस के अंतिम आँसू तक सिसकियाँ भरता रहा था। महीप सिंह ने इसी अभागे राजकुमार के लिखे चार दुर्लभ पत्रों को 'नवनीत' के पाठकों के लाभार्थ यहाँ सुलभ किया है।

*

एलवेडन हाल,
थेट फोरड, सफक,
७ अक्तूबर, १८८५ ईसवी।

मेरे प्रिय सरदार संत सिंह,

आपका पत्र प्राप्त कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे यह जान कर अत्यंत संतोष हुआ है कि, आप मेरी स्वर्गीया माता के सम्बंधियों में हैं। अपने प्रिय देश से निर्वासित हुए मुझे आज तीस वर्ष से अधिक हो चुके हैं। मुझे उस दिन की धूमिल स्मृति-मात्र है, जब मैं अपने पूज्य पिता पंजाब-केसरी महाराजा रणजीत सिंह के राज-सिंहासन पर अंतिम बार बैठा था। अँग्रेज सेनाधिकारियों की नंगी संगीनों की छाया में लाहौर का वह अंतिम दरबार था। एक अँग्रेज अधिकारी ने उस दरबार में एक घोषणापत्र पढ़ा था। वह घोषणा-पत्र नहीं, बल्कि उतरती हुई एक गहरी संध्या थी, जो हर राज-कर्मचारी के चेहरे पर छाती जा रही थी। मुझसे कहा गया था कि, मैं उस पर हस्ताक्षर कर दूँ। मैं हस्ताक्षरों का मूल्य नहीं जानता था। एक बारह वर्ष के अबोध बालक से यह अपेक्षा भी कैसे की जा सकती है? मुझसे हस्ताक्षर करवा लिये गये और देखते-देखते मैं महाराजा से भिखारी बन गया– सदैव अँग्रेजों की कृपादृष्टि का भिखारी!

आज अपने विगत जीवन का स्मरण करता हूँ, तो लगता है, जैसे मैं एक दीर्घ-कालीन नशे की अवस्था से निकला हूँ। आज मैं जो स्मरण कर रहा हूँ, उसे इसके पूर्व करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिलीप सिंह के भाई राजा शेर सिंह [चित्र : प्राचीन शबीह की रेखानुकृति]

की सुधि तक नहीं आयी। वह कौन-सी मादकता थी, जो आज तक मुझ पर छायी रही? आज अनुभव होता है कि, वह अँग्रेजी प्रभाव की मादकता थी– अँग्रेजी संस्कारों की मादकता थी! उस अबोध-अवस्था में ही मुझे अपनी पूज्या माँ से विलग कर दिया गया। मुझे फतेहगढ़ में रखा गया। मेरे चारों ओर अँग्रेजी परिवारों का एक जाल-सा बिछा था। मेरे संरक्षक डा० लेगिन और लेडी लेगिन मुझे सभी प्रकार से अँग्रेजी संस्कारों में दीक्षित कर रहे थे। मुझे स्मरण है, एक बार लार्ड डलहौजी मुझसे मिलने आये थे। डा० लेगिन ने मुझे उनके स्वागत के लिए एक अँग्रेजी वाक्य रटाया था, जिसका अर्थ उस समय मुझे ज्ञात नहीं था; किंतु एक रटे तोते की भाँति मैंने उसका उच्चारण किया था– "आई ऐम हैपी टु मीट यू, माई लार्ड!" (हे स्वामिन्, मैं आपके दर्शन से कृतकृत्य हुआ।)

'स्वामी!' यह उसी 'स्वामी' की कृपा का फल है कि, मैं महाराजा से भिखारी बना, अपने पूर्वजों के धर्म से च्युत हुआ और विदेशों में दर-ब-दर की ठोकरें खाता रहा।

मैंने अपने धर्मच्युत होने की बात कही। फतेहगढ़ में ही मैंने अपने रेशम-से सुनहले केश कटवा दिये थे। फिर मैंने ईसाई बनने की इच्छा व्यक्त की थी। किंतु क्या वह मेरी इच्छा थी? नहीं! मेरे अंदर वह इच्छा उत्पन्न की गयी थी। मेरे चारों ओर का वातावरण, मेरा सम्पर्क, मेरे संस्कार–ये सभी मुझे वह सब करने को प्रेरित कर रहे थे।

मैं अपना राज्य त्याग चुका था, अपने सम्बंधी त्याग चुका था, अपना धर्म त्याग चुका था और अब देश त्यागने की बारी थी। उन दिनों मुझमें इंग्लैंड देखने की इच्छा बड़ी बलवती थी। मैंने इंग्लैंड जाने की अभिलाषा व्यक्त की और वह तुरत पूरी कर दी गयी। ब्रिटिश राज्य का कल्याण इसी में था कि, मैं इस देश को छोड़ कर कहीं दूर चला जाऊँ, जिससे मुझे या मेरी संतान को देख कर मेरे देशवासियों में कभी मेरे प्रति किये गये अन्याय का स्मरण न हो आये।

आज मुझे इंग्लैंड में निवास करते लगभग तीस वर्ष हो गये हैं। इस बीच मैंने ब्रिटिश सम्राज्ञी महारानी विक्टोरिया के प्रति पूरी तरह वफादार रहने का प्रयास किया है। किंतु मुझे उस वफादारी का कोई फल नहीं मिला। मेरी वार्षिक वृत्ति में निरंतर कटौती की गयी है। मेरी अवयस्कावस्था में मेरी वार्षिक वृत्ति देने से जो बचा, उसे देने में भी यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'न्यायशील' सरकार पूरी तरह से चुप्पी साध गयी है। मेरे प्रति किये गये 'न्याय' का इससे अधिक अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है कि, अवध-जैसे छोटे-से राज्य के अपदस्थ नवाब वाजिदअली शाह को पचास लाख रुपये की वार्षिक वृत्ति मिली है और पंजाब के विशाल राज्य के अपदस्थ महाराजा को पाँच लाख वार्षिक देना भी इसे भारी पड़ रहा है।

ब्रिटिश सरकार के न्याय से पूरी तरह निराश होकर मैंने भारत में रहने का निश्चय कर लिया है। मैं आगामी १६ दिसम्बर को इंग्लैंड छोड़ रहा हूँ और दिल्ली में कोई स्थान लेकर चुपचाप रहूँगा ; क्योंकि अब मैं एक निर्धन व्यक्ति हूँ।

आप को यह पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि, मैंने पुनः अपने पूर्वजों का धर्म ग्रहण कर लिया है। इसलिए मैं 'वाहे गुरुजी की फतेह' कह कर आपका अभिवादन करता हूँ।

आपका प्रिय सम्बंधी,
दिलीप सिंह

(२)

कारलटन क्लब,
पाल माल-एस० डब्ल्यू०,
९ मार्च, १८८६ ईसवी।

मेरे प्रिय सरदारजी,

वाहे गुरुजी की फतेह!

आपका पत्र प्राप्त कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। परंतु मैं आपको सलाह दूँगा कि, सरकार की अनुमति के बिना आप मेरे निकट न आयें ; क्योंकि इस कारण आप सरकारी अधिकारियों-द्वारा किसी भी विपत्ति में डाल दिये जा सकते हैं।

कुछ कठिनाइयों के कारण मैं अपने पिछले पत्र में लिखी हुई तिथि पर यहाँ से नहीं चल सका। अब मैं अपने परिवार-सहित इस माह की ३१ तारीख को इंग्लैंड से चल पड़ूँगा। परंतु हो सकता है कि, अदृश्य कारणों से थोड़ा-बहुत विलम्ब भी हो जाये।

सिख-सम्राट् रणजीत सिंह
[चित्र : प्राचीन शबीह की रेखानुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर मैंने अपने परिवार का उल्लेख किया है। आज से २०-२१ वर्ष पूर्व जब मैं अपनी पूज्या माँ महारानी जिंदाँ का अंतिम संस्कार भारत में सम्पन्न करके इंग्लैंड वापस आ रहा था, तब मिस्र के एलेक्जेंड्रिया नामक स्थान में मेरी भेंट एक मिस्री युवती से हुई। अपनी माँ के वियोग में मैं इतना व्यथित था कि, सम्पूर्ण संसार मुझे आकर्षणहीन लग रहा था। किंतु उस युवती में मुझे एक ऐसा दीपक जलता दिखायी दिया कि, मुझे लगा, इस दीपक के प्रकाश से मेरे मन का अंधकार दूर हो जायेगा। मैंने उससे विवाह का प्रस्ताव किया और उसने स्वीकार कर लिया। फिर, हम दोनों विवाह के बंधन में बँध गये। आज हमारे ६ बच्चे हैं।

बम्बई पहुँच कर मैं विधिवत् सिख-धर्म की दीक्षा लूँगा। मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि, उस समय मुझे कितनी प्रसन्नता होगी, जब आप मेरे सिख-धर्म में दीक्षित होने के संस्कार 'पहुल' के समय वहाँ उपस्थित होंगे।

मैं अब भारत पहुँचने के लिए तरस रहा हूँ। हालाँकि सरकार मेरे पूर्व-पश्चिमी प्रांतों में रहने से भय खाती है और चाहती है कि, मैं उटकमंड में रहूँ; पर मैंने अपना पूर्ण निश्चय सद्गुरु पर केंद्रित रखा है और मैं जानता हूँ कि अब, जब कि मैं क्षमा के लिए उनके चरणों में आ गया हूँ, वे मुझे नहीं भुलायेंगे।

आपका विश्वस्त मित्र और शुभचिंतक,
दिलीप सिंह

(३)

लंदन,
२५ मार्च, १८८६ ईसवी

मेरे प्रिय देशवासियो,

भारत में आकर रहने और बसने की मेरी कभी इच्छा नहीं थी। परंतु सद्गुरु सबके विधाता हैं। वे हम सबसे अधिक शक्तिमान हैं। मैं उनका भ्रांत जीव हूँ। मेरी इच्छा न होने पर भी मैं उनकी इच्छा से भारत में आकर साधारण रूप से रहूँगा। मैं सद्गुरु की इच्छा के आगे सिर झुकाता हूँ। जो उनकी इच्छा है, वही होगा।

खालसाजी! मैं अपने पूर्वपुरुषों के धर्म को त्याग कर विदेशी धर्म ग्रहण करने के लिए आप लोगों से क्षमा माँगता हूँ। परंतु जिस समय मैंने ईसाई धर्म की दीक्षा ली थी, मेरी अवस्था बहुत छोटी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बम्बई पहुँच कर 'पहुल' की दीक्षा लेने की मेरी बड़ी तीव्र इच्छा है। मैं विश्वास करता हूँ कि, आप सद्गुरु के सम्मुख इस महत्वपूर्ण और पवित्र अवसर पर मुझे क्षमा प्रदान करने के लिए प्रार्थना करेंगे।

मेरी अत्यधिक इच्छा होने पर भी मैं पंजाब आकर आप लोगों से नहीं मिल सकूँगा ; क्योंकि ऐसा करने की मुझे अनुमति नहीं है। इसलिए आप लोगों को यह पत्र लिखने के लिए बाध्य हुआ हूँ।

भारत की सम्राज्ञी के प्रति जो मेरी परम भक्ति है, उसका यह क्या ही शानदार पुरस्कार है ! परंतु सद्गुरु की इच्छा ही पूर्ण होगी।

वाहे गुरुजी की फतेह !

मैं हूँ, मेरे प्रिय देशवासियो !
आप का रक्त और मांस,
दिलीप सिंह

(४)

अदन,

मेरे प्रिय देशवासियो,

बड़ी उमंगें लेकर इंग्लैंड से चला था। सोचा था, और कुछ नहीं, तो स्वदेश की मिट्टी में अपने प्राण त्याग कर अपने पापों का प्रायश्चित्त करूँगा। किंतु मेरा दुर्भाग्य एक बार फिर मेरे मार्ग में आ खड़ा हुआ है। मेरा जहाज अदन तक पहुँच चुका है। भारत का तट मेरे नेत्रों के सम्मुख झिलमिला उठा है। हृदय की आनंद-हिलोरें अरब-सागर की लहरों से एकरूप होकर बम्बई के समुद्र-तट से टकरा रही हैं। किंतु....मैं स्वदेश नहीं पहुँच सकूँगा। ब्रिटिश सरकार ने मुझे यहीं बंदी बना लिया है और आज्ञा दी है कि, मैं इंग्लैंड वापस लौट जाऊँ। मुझे भारत जाने देने की आज्ञा वापस ले ली गयी है।

ब्रिटिश सरकार मुझे भारत क्यों नहीं लौटने देना चाहती ? शायद इसलिए कि, मेरे वहाँ पहुँचते ही विद्रोह हो जायेगा। मेरा भारत लौटना अँग्रेजी शासन को भय से खाली नहीं दिखता। मेरे पहले पत्र के उत्तर में, मुझे पंजाब से अपने एक देशवासी का पत्र प्राप्त हुआ था। उसमें लिखा था—

"प्यारे महाराजा ! आपके इंग्लैंड-परित्याग और सिख-धर्म-ग्रहण की दृढ़ प्रतिज्ञा देख कर जो आनंद हुआ है, उसे प्रकट करना असम्भव है। ब्रिटिश सरकार ने आप पर जो अत्याचार किया है, उसके लिए पंजाब ही क्यों, समस्त भारत रो रहा है।..... आपके अनेक देशवासी आपका स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं। पर जिस सरकार ने आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को यहाँ तक आने के लिए विवश किया है, वह सरकार और किसी प्रकार की बाधा न उपस्थित कर दे, यह भय हम सब लोगों को हो रहा है।"

मेरे स्वदेशी बंधुओ! आपका भय ठीक ही निकला। मेरे स्वागत के लिए आपका उत्साह देख कर ब्रिटिश सरकार चिंतित हो उठी है। वह मुझे अब भारत नहीं जाने देना चाहती। ब्रिटिश सरकार के इस व्यवहार से मेरा चित्त बड़ा दुःखी हुआ है। यहाँ से मैंने एक तार महारानी विक्टोरिया को भेजा और पुनः विश्वास दिलाया कि, मेरे मन में अब अपना राज्य वापस लेने की इच्छा नहीं है। मैं भारत के किसी भी भाग में एक शांत नागरिक की भाँति रहना चाहता हूँ। मुझे भारत जाने से न रोका जाये। मैंने एक तार यहाँ से भारत के गवर्नर-जनरल को भी भेज कर प्रार्थना की कि, मुझे अपना वकील ब्रिटिश कौंसिल में भेजने का समय दिया जाये। पर मेरी दोनों प्रार्थनाएँ ठुकरा दी गयीं।

मैं बलात् इंग्लैंड वापस भेजा जा रहा हूँ। एक भयंकर प्रतिक्रिया का तूफान मेरी नस-नस से उमड़ रहा है। आज मुझे यह घोषित करते तनिक भी संकोच नहीं है कि, ब्रिटिश शासन ने मेरे साथ विश्वासघात किया है और मैं ब्रिटिश राज्य का विरोधी हूँ। मेरी बारह वर्ष की अवस्था में, बलपूर्वक मुझसे संधिपत्र पर हस्ताक्षर करवाये गये थे और पंजाब का राज्य जब्त कर लिया गया था। अब वह संधि मुझे स्वीकार नहीं है।

प्रिय बंधुओ, मैं नहीं जानता कि, मेरा भविष्य क्या है! शायद कुछ भी नहीं है। किंतु इतना तो निश्चित है कि, मुझे अब स्वदेश के दर्शन नहीं होंगे। शेष जीवन मुझे ब्रिटिश शासन की कड़ी दृष्टि के नीचे ही व्यतीत करना होगा। किंतु अब मुझे इस विदेशी सरकार के निकृष्टतम व्यवहार की भी कोई चिंता नहीं है; क्योंकि अब मैं उसका कृपाकांक्षी नहीं हूँ! उसका विद्रोही हूँ! उसका शत्रु हूँ!

अच्छा भाइयो! अलविदा! अपनी स्मृति-स्वरूप आपके निकट भेजने के लिए तो अब मेरे पास कुछ भी नहीं है...बस, अदन के समुद्र-तट पर खड़ा होकर मैंने अपने स्वदेश और स्वदेशवासियों के लिए आँसुओं की कुछ बूँदें गिरायी हैं। अरब-सागर की उत्ताल तरंगें उन अश्रु-कणों को लेकर भारत के पश्चिमी तट की ओर बढ़ रही हैं।... मेरी प्रतीक्षा में बम्बई के समुद्र-तट पर खड़े मेरे स्वदेशी बंधुओ! जब आप समुद्र की लहरों की ओर दृष्टि दौड़ायेंगे, तो उन पर मेरे अश्रु-कण आपको तैरते मिलेंगे। बस, यही मेरी स्मृति है.....पंजाब-केसरी महाराजा रणजीत सिंह के अभागे पुत्र की स्मृति..... पंजाब के निर्वासित महाराजा की अंतिम स्मृति.....बस।

मैं हूँ, आपका अभागा महाराजा,
दिलीप सिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो रानी शेबा भूलना भूल गयी

अभी कुछ ही वर्ष गुजरे हैं, कवंधों की सहायता से नये अविजित किले सर किये जाते थे। फ्रांस के सुप्रख्यात लेखक आंद्रे मोराउस ने आजकल इसी शैली को अपनाया है। पुरानी कथाओं के रस-प्रवाह में संतरण करते हुए वे नये अनुभव-लोकों का पता देते हैं।

★

शेबा की महारानी ने एक दिन महा-प्रतापी सुलेमान की परीक्षा ली थी। वह सुलेमान की विद्वानों और चतुर प्रवीणों से सुसज्ज सभा में, ठीक मंडप के बीच, जा पहुँची। उसके वजीर के दोनों हाथों में दो गुलाब थे। महारानी शेबा का संकेत पाते ही वजीर ने सम्राट् सुलेमान से सादर पूछा—"नृपेंद्र! हम लोग आपकी बुद्धि की विश्व-विश्रुत कीर्ति सुन कर आपके दरबार में आये हैं। सुगंध की तरह सर्वत्र व्याप्त आपके विवेक-चातुर्य को हम विश्वास-श्रद्धापूर्वक स्वीकार करते हैं; किंतु लाख कान भी एक आँखों-देखे प्रमाण की बराबरी नहीं कर सकते। आज इस सभा में हमारे उपस्थित होने का प्रमुख लक्ष्य यही है कि, वर्षों से जो कानों को तृप्ति देता रहा, उसे हम प्रत्यक्ष प्रमाणित देखें।"

राजमहिषी

[चित्र : प्राचीन शिल्प की रेखानुकृति]

राजेश्वर सुलेमान के प्रत्येक सभासद का हाथ अपनी तलवार पर गया। प्रधान सेनापति ने आरक्त मुखमंडल से सगर्जना कहा—"हीन देश से आये हीन-बुद्धि मंत्री! देवताओं को जिसके लिए प्रमाण की आवश्यकता महसूस नहीं होती—सप्तद्वीप, नवलोक जिसके सुयश-गान से नहीं थकते—उसकी परीक्षा लेना चाहते हो, पामर जीव?"

सभा-मंडप के बीच खड़ा वजीर कुछ कहने ही जा रहा था कि, महारानी शेबा का इंगित उसे निर्वाक् कर गया और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ललितांग छवि में उठ कर खड़ी हो गयी। फिर, मधु-मिश्रित स्वर में बोली— "क्षमा करें, सेनापतिजी! मुझे लगता है कि, आपको कहीं-न-कहीं आज पराभव सहना पड़ गया है— अपनी मोटी बुद्धि के कारण आप आज किसी शिष्ट-समाज में अवश्य अपमानित हुए हैं! क्षमा करें, हमें इसकी प्रतीति नहीं थी कि, संसार के परम ज्ञानी सम्राट् का सेनापति चरम अज्ञानी होगा; क्योंकि हमारे कीर्तिगान को उसने सम्राट् की परीक्षा समझ लिया है...।"

तत्पश्चात् वह काननचारी नयनांगना सम्राट् की ओर अभिमुख हुई और बोली— "महाराज! दर्पण में एक बार मुख देखने के बाद फिर कई बार मुख देखने की क्यों आवश्यकता पड़ती है? आप-हम क्यों बार-बार अपना मुख दर्पण में देखते हैं? दर्पण की उपस्थिति में हम सबकी यह जिज्ञासा क्या स्वाभाविक नहीं है? प्रतीति को बार-बार दोहराने में व्यक्ति को जो आनंद आता है, क्या वह निष्कलंक आनंद नहीं होता?"

सम्पूर्ण सभा के तन-मन पर शून्य व्याप गया। तन उस विश्ववंद्य सौंदर्य पर मुग्ध था और मन उसकी वाणी के चातुर्य-विभास पर! स्वयं सम्राट् सुलेमान अपनी तेजस्वी आँखों में रानी शेबा के प्रति मुग्ध अनुकूलता ओत-प्रोत किये हुए थे। मंडप के उच्च गवाक्षों से झाँक रही राज-रमणियों के शशिमुखों पर ईर्ष्या एवं असहिष्णुता की राहु-छायाएँ स्पष्ट थीं।

क्षण-भर रुक कर थोड़े मंद्र स्वर में अपने उत्तरीय को स्कंधमूल की ओर फेंकते हुए महारानी शेबा ने फिर कहना प्रारम्भ किया। उसका स्वर पहले से अधिक सशक्त हो गया था— "मैंने सुना है कि, सूर्य की तरह कीर्ति-मुखर सम्राट् प्रेमकला में भी परम निपुण हैं। मैं उनसे प्रश्न करना चाहती हूँ कि, प्रेमी और प्रेमिका बार-बार मिलने के लिए क्यों तरसते हैं? एक बार, दस बार, सौ बार के मिलन-सामीप्य से भी उनकी तृष्णा तुष्ट क्यों नहीं हो जाती? जो मनोहर है, उसे मन बार-बार देखना चाहता है; जो प्रिय है, उसे मन बार-बार सुनना चाहता है; जो आत्मा है, उसे बार-बार अपनाना चाहता है! क्या यह सब कुटिल जिज्ञासा की प्रताड़ना से होता है?"

सहस्र-सहस्र हीरक-मणियों से जड़ित राज-राजेश्वर का मुकुट रानी शेबा के विदग्ध तर्क के झोंकों से हिलने लगा। सस्मित भाव से उन्होंने रानी के वाग्नैपुण्य

मार्ग

बुद्धि का स्वामी सुलेमान और रूप की स्वामिनी शेबा भी जब स्वर्ग नहीं बसा सके, तो क्या यह सच नहीं है कि, मनुष्य की पीढ़ी ने गलत मार्ग पकड़ रखा है। —आजाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की प्रशंसा की और वज़ीर से परीक्षा प्रारम्भ करने का शिष्ट आग्रह किया।

चारों ओर गम्भीर उत्सुकता छा गयी। वज़ीर ने दोनों हाथों के गुलाबों को कंधों के बराबर ऊँचा उठाते हुए घोषणा की– "नृप-शिरोमणि! इन्हें देख कर कृपया यह बतलाइये कि, इन दो गुलाबों में कौन असली है और कौन नकली।"

सम्राट् ने दोनों गुलाब अपने हाथों में ले लिये– दोनों का सौंदर्य परस्पर-अप्रतिम। सम्राट् ने दोनों को सूँघा– दोनों में सुगंध। सम्राट् केंद्रस्थ-चित्त से दोनों गुलाबों को देखते-सूँघते रहे। सारी सभा स्तब्ध और रानी शेबा के प्रफुल्ल मुख पर क्षण-क्षण नये चैतन्य का निखार!

सहसा सम्राट् ने आज्ञा दी– "द्वार-रक्षक! वह बगीचे की तरफ का दरवाजा अभी खोल दो।"

तत्काल द्वार खोल दिया गया– एक मंद सौरभ-लदी बयार सभा-भवन में लहरा गयी। सम्राट् उठे और बगीचे की ओर चल पड़े और किंचित् विलम्ब में ही वहाँ से वापस लौट कर सभागार में आ गये। दायें हाथ के गुलाब को समस्त उत्सुकता-विजड़ित सभा की ओर उन्मुख करते हुए सम्राट् ने कहा–"चतुर सभासदो! यह गुलाब असली है। प्रमाण अपनी आँखों से देख लीजिये—इस गुलाब पर मधुमक्खियाँ मँडरा रही हैं। यह मेरे बायें हाथ का गुलाब नकली है। किंतु मेरे साथ आप भी रानी शेबा के कलानैपुण्य की प्रशंसा कीजिये। भगवान् की सृजन-शक्ति का ऐसा अद्भुत-अपूर्व अनुकरण मेरी दृष्टि में दूसरा नहीं आया।"

यह पुरातन कथा यहीं समाप्त होती है; किंतु मेरे पाठक मित्रो! यह मेरे लिए एक विशिष्ट बात कहने को और आपके लिए एक विशिष्ट बात सुनने को काफी-कुछ सामग्री छोड़ जाती है।

मेरे और आपके लिए मैं यह कहना चाहता था कि, महारानी शेबा ने सम्राट् सुलेमान की जो परीक्षा ली, वह जिंदगी के किसी खास तथ्य को प्रकाशित नहीं करती। और नहीं, तो वह सुलेमान से यही पूछ लेती कि, कहाँ प्रशंसा खत्म होती है और कहाँ से खुशामद शुरू होती है! प्रशंसा दोनों हैं; किंतु एक असली है और दूसरी नकली। मुझे विश्वास है कि, सम्राट् सुलेमान की तीव्र बुद्धि इन दोनों का भी निर्णय कर देती। मगर महारानी शेबा को शायद यह प्रश्न याद नहीं आया। अतः अब हमें ही यह सीमा-रेखा ढूँढ़नी होगी, जो कि लगता है, असम्भव के बहुत पास है।

जो हो, गुलाब के ये दो फूल हमारे सामने हैं। सुलेमान की तरह असली और नकली को पहचान कर एक को 'प्रशंसा' कहिये और दूसरे को 'चापलूसी'। अगर नहीं पहचान सकते, तो भरी सभा में पराभव और सर्वत्र अपकीर्ति! सारी जिंदगी का दारोमदार आपकी इसी निर्णय-चातुरी में है!

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झपकी न लग जाये

...और, जब वह बाज का बच्चा कोटर में से निकल कर बाहर जाने लगा, तो माँ ने चेताया —"नयनतारे। फूँक-फूँक कर कदम धरना...क्षण-मात्र की गफलत ही तेरे पिता के लिए आजीवन का कारावास हो गयी है...आजादी और परतंत्रता के बीच एक क्षण कभी-कभी कल्प से भी बड़ा होता है।" अपने देशवासियों को डा० महींद्र शेषप्पा ने भी यहाँ यही चेतावनी दी है।

★

बीस वर्ष पहले की कुछ विदग्ध स्मृतियाँ आज अकस्मात् मन के गगन पर बार-बार कौंध गयी हैं। लगता है, जीवन की बाढ़ कुछ थम गयी है और जो प्राप्य पीछे छूट गया था, वह दौड़ कर पास आ गया है। मुहूर्त का तकाजा भी हो सकता है— मुहूर्त अतीत के खजाने में से अपने काम की चीजें उठा लेता है। खैर, आज जो याद आ रहा है, वह कतई विशृंखल या अस्त-व्यस्त नहीं है— सार्थकता की तरफ पूरा-पूरा इशारा है।

...बिहार का वह छोटा-सा गाँव— अथेना। श्रावण का सजल मास— इतना सजल कि, कोसी अपने-आप में नहीं। गाव-के-गाँव लील गयी। अथेना भी उस सर्पिणी की कुंडली में ग्रस्त था। आबाल-वृद्ध 'त्राहिमाम्' कर रहे थे। फुँफकारती नदी की पूजा-अर्चना हो रही थी। मगर कोसी को अपने कोप से कहाँ फुरसत? बैल बचाते-बचाते उस अस्सी वर्ष के जग्गू पासी का जवान बेटा भी बाढ़ में फिसल गया। धाड़ें मार-मार कर वह बूढ़ा रोया— "सभी मिल कर पूजा करो या बलि चढ़ाओ! यह चुड़ैल इस भूमि को कभी सुख से नहीं रहने देगी।"

× × ×

...छत्तीसगढ़ का वह छोटा-सा नगला— बहत्तर झोपड़ियों का गाँव, जिसमें सतरह झोपड़ियाँ चमारों और भंगियों की। ५५ झोपड़ियों और उनके मवेशियों के लिए एक लम्बी-चौड़ी बावड़ी— स्फटिक की तरह शीतल-स्वच्छ पानी जिसमें लबालब भरा हुआ। पास ही एक छोटी कुइयाँ— कच्ची और उथली, जिसमें उन सतरह झोपड़ियों के मनुष्य और पशु पानी पीते थे। माँ-बाप अभिशप्त, उनकी संतानें भी अभिशप्त— जन्म ही मूर्तिमंत अभिशाप! वह गर्मी बड़ी क्रूर थी। हैजे ने भूखे गिद्ध की तरह आँख मीच कर पेट भरना प्रारम्भ कर दिया। चमारों की गली से उसने अपना शिकार शुरू किया। आसन्न मृत्यु के भय से विजड़ित नर-नारी उन पचपन झोपड़ियों के मुखिया के द्वार पर आकर बैठ गये—"मालिक, कुइयाँ का पानी सड़ गया है। बावड़ी का पानी मिल जाये— दूर से ही कोई बाल्टी भर-भर डाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देगा...नहीं तो मालिक! सेवा करने के लिए कोई जीवित नहीं बचेगा।" मगर भला ऐसा रहम भी किया जा सकता है– ईश्वरीय विधान को मुखिया बदल दे, तो उसकी सात पीढ़ियों का क्या होगा? क्या वे नरक में सड़ें?...और, मक्खियों की तरह उन झोपड़ियों के राम, लक्ष्मण, दशरथ और कौशल्याएँ मरने लगे। जवान कालू चमार के शव पर लुढ़क-लुढ़क कर उसकी स्त्री चीत्कार करती रही– "महामारी! खा जा हमारी सारी जाति को ही...खा जा...वंश ही बूड़ जाये हमारा। हमसे तो कीड़े-मकोड़े भले!"

× × ×

...उस संध्या को गाँव के राम-मंदिर में ही ठहरना पड़ा था। पौष का ठिठुरता महीना था। शीत से काठ भी काँपता लगता था। रात के कोई एक बजा होगा। चौंक पड़ा। नौ स्त्री-पुरुष-बच्चों को घेरे छः पुलिस कांस्टेबल मंदिर के सामने रुके। गाँव के पटेल और चौकीदार भागे-भागे आये। अँगीठियाँ जलीं। सेरों दूध गर्म हुआ। एक बकरा कटा और तीन मुर्गियाँ पकीं। कांस्टेबलों ने पेट-भर खाया और अँगीठियों के आसपास कम्बलों में दुबक गये। वे नौ स्त्री-पुरुष– केवल लंगोटियों के माध्यम से ही इंसान लगनेवाले स्त्री-पुरुष– रात-भर उसी सर्दी में आसमान की चरम क्रूरता के नीचे रोते-मरते पड़े रहे।

स्वतंत्रता

स्वतंत्रता पीछे फिर कर नहीं देखती, सामने भी नहीं देखती—आदर्श का शिरमंडल ताकती चलती है। आओ, उसके चरण बन कर हम चलें, तभी वह निरापद चल सकेगी। —ब्रूगो

ये थे कंजर–ग्वालियर राज्य के आदिवासी, जो वर्षों से पागल कुत्तों की तरह पुलिस के द्वारा यहाँ-वहाँ खदेड़े जाते रहे हैं। ....मैं ही क्या, शायद उस रात मंदिर के वे मर्यादा पुरुषोत्तम राम भी नहीं सोये होंगे!

× × ×

शांतिनिकेतन की वह पुरातन सांध्य-लालिमा। टिळक-दिवस समाप्ति पर था। बलई मुखर्जी हम लोगों के बीच बैठे 'चित्रा' में प्रकाशित गुरुदेव की एक कविता सुना रहे थे और हमारे श्वासोच्छ्वास इस साढ़े तीन हाथ के देह-पिंजर में समा नहीं पा रहे थे। बलई मुखर्जी की वाणी गूँज रही थी–"अरे अभागे, तू बंशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बजाना छोड़ कर उठ। जरा बाहर जाकर देख कि, कैसी आग लगी है– स्फीतकाय अपमान किस प्रकार लाखों मुखों-द्वारा अक्षमों की छाती से रक्त सोख रहा है... भीत क्रीतदास किस तरह छद्मवेश में अपने को छिपा रहे हैं...यह देख! कितने दीन-हीन यहाँ नतमस्तक खड़े हैं, जिनके ललाटों पर सौ-सौ सालों की व्यथा-कथा लिखी पड़ी है...तुझे इन सब मूक मुखों को वाणी देनी होगी। इन सबसे पुकार-पुकार कर कहना होगा कि,'तुम सब जरा तन कर तो खड़े हो जाओ...अरे, जिसके भय से तुम सब आक्रांत हो, वह आततायी तो तुमसे भी ज्यादा कायर है!' हे कवि! उठो, यदि तुम्हारे पास प्राण है, तो उसे आज दान करो। सामने का कष्टपूर्ण संसार अत्यंत दरिद्र और क्लांत है...उसे अन्न चाहिए, प्राण चाहिए, प्रकाश चाहिए... मुक्त वायु चाहिए...और चाहिए साहस से भरी हुई चौड़ी छाती! इस विश्वव्यापी दैन्य के बीच, हे कवि, एक बार स्वर्ग से विश्वास की छवि ले आओ।"

सारा एकत्र श्रद्धालु समुदाय आत्म-डोर में बँधा-सा कवि की इस विद्रोहिणी शब्द-भैरवी को सुन कर कुंठित क्रोध के निःश्वास छोड़ रहा था और उधर कवि की आँखों से अजस्र अश्रुधारा बह रही थी। कारुण्य का प्रपीड़ित मौन मानो सबके अंतर्यामी से यही विदग्ध प्रश्न पूछ रहा था–"इन लाख-लाख मानव-पिंडों को अन्न, प्राण, प्रकाश, मुक्त वायु और साहस से चौड़ी छाती क्या कभी मिलेगी? इस देश का मानव क्या कभी अपने भाग्य का विधाता बन सकेगा? सात समुद्र-पार जा रहा माँ का दूध क्या कभी उसके भूखे-सूखे बच्चों को भी मिल सकेगा?"

× × ×

अभी बारह वर्ष गुजरे हैं, दुर्दैव का यह क्रूर धूमकेतु अस्त हुआ है— ग्रहण की छाया विच्छिन्न हुई है और धीमे-धीमे पूर्णचंद्र की किरणें मुक्ताकाश में विचरने लगी हैं। युगलिपि के प्रणेता महाव्यास ने काल-ग्रंथ का नया अध्याय शुरू किया है। कोसी और उसकी बहनों को सुनियंत्रित करके परम पोषक पयस्विनी बनाया जा रहा है। कहते हैं, किसी पुरातन काल में गायें भी जंगलों में ही रहती थीं और मनुष्य की फसलें ही नहीं खा जाया करती थीं, उसे मार भी डालती थीं। किंतु मनुष्य ने उन्हें अपनी बुद्धि-शक्ति से कामधेनु बना लिया! कोसी एवं उसकी बर्बर बहनों के भाग्य पर भी आज हमने यही भावी लिपि लिख दी है। जग्गू पासी के संतप्त विलाप की 'चुड़ैल' कुछ ही वर्षों में 'देवी' की प्रतिष्ठा प्राप्त करेगी! अभी तक गौ-माता जैसे हमारे चतुर्दिक कल्याण की स्रोतस्विनी रही है, वैसे ही ये नदी-माताएँ हमारे भौतिक कल्पवृक्ष को फलोन्नत करेंगी!

सौ-डेढ़ सौ वर्ष तक विदेशी शासन की पताका देश पर फहराती रही। विंस्टन चर्चिल ने अपने 'अँग्रेज-जाति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के इतिहास' में लिखा है कि, 'भारत को अँग्रेजी राज की सबसे महान् देन थी, देश में अविभाज्य शांति का प्रसार।' इस कथन से हमें इन्कार नहीं है; किंतु यह शांति चिड़ियाघर की शांति थी, जिसमें व्यक्ति के आत्म-चैतन्य का सारा उत्स ही सुखा दिया गया था। मन की हीनता ने अफीम की तरह राष्ट्र-पिंड के सम्पूर्ण स्नायु-मंडल को ऐसा अवसन्न कर दिया था कि, व्यक्ति अपना दोहन निरुद्वेग देखता रहा। उसने अपनी प्रज्ञा, प्रतिष्ठा और प्राण ही नहीं बेचे, अपना इतिहास भी बेच दिया। अभिप्राय यह है कि, ब्रिटेन का परिपुष्ट लोकतंत्र जो आज हमारे सामने है और जिसके राजमार्ग पर चलने के लिए हमें चारों ओर से उपदेश दिये जा रहे हैं, उस लोकतंत्र का सारा पोषण हमारे दोहन से ही हुआ है।

हमारी शपथ का लोकतंत्र तो एकदम निर्विकार-निष्कलंक रहेगा। साध्य से पहले, हमारे संकल्प में साधन के पावित्र्य की महत्ता है। गांधीजी के शब्दों में, "पुराणों में वर्णित राजा भगीरथ हमारे लोकतंत्र का प्रतीक है। पर्वत-पत्थरों के बीच से वह गंगा निकाल कर लाया और सारे मानव-समाज को कह गया कि, आओ, तुम्हारी-हमारी पीढ़ियाँ इसके किनारे फले-फूलें।"

वाणी में 'लोकतंत्र' शब्द बड़ा मधुर लगता है; किंतु अमल के मार्ग में मानो 'क्षुरस्य-धारा' ही है। 'तलवार की धार पर धावनो' कहावत यहाँ पूरी-पूरी चरितार्थ होती है। उसके एक ओर निरंकुश शासन-सत्ता की परिधि है, जो अपनी सुरसा की-सी लोलुप जीभ निरंतर फैलाती रहती है और दूसरी ओर खड्गधारी डिक्टेटर-शाही के पनपने की उर्वर भूमि है, जहाँ राष्ट्रीय कल्याण के जयघोषों की आड़ म फासिज्म के दानव की बलि-पूजा शुरू हो जाती है। पश्चिम के देशों की लोक-तंत्रीय प्रगति में ऐसे नागपाश उत्तरोत्तर पैदा होते रहे हैं!

इसीलिए हमने अपने लोकतंत्र की नींव में समाज या राष्ट्र के स्थान पर व्यक्ति को प्रतिष्ठित किया है। पुष्ट ईंट की इमारत ही निरापद होती है। व्यक्ति सजीव है, समाज मशीन है। निर्माण की

प्रेम

कथा पुरातन है। एक बार ज्ञान और मोह कल्पगंगा के किनारे पहुँचे। गंगा ने कहा—"आओ, स्नान करो। मैं तुम्हें दिव्य रूप प्रदान करूँगी।" ज्ञान ने सुना, तो व्यंग्य से हँस पड़ा; किंतु मोह ऐसी अनुराग-पगी मनुहार को नहीं टाल सका। वह गंगा में कूद पड़ा। जब वह बाहर निकला, तो ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी उसे प्रणाम करने आये—वह मोह का स्वरूप त्याग, 'प्रेम' हो गया था!

—स्वामी रामतीर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेतना में प्रबुद्ध व्यक्ति समाज को बनायेगा, समाज को माँजेगा। "निर्बल-से-निर्बल व्यक्ति की वाणी को भी जहाँ सत्ता का सक्रिय आश्वासन मिलेगा, उस सत्ता को ही मैं सच्चा लोकतंत्र समझूँगा।" गांधीजी के तत्वदर्शन को लेकर जब रोम्याँ रोलाँ ने लोकतंत्रीय शासन-प्रणाली का यह मूलमंत्र बताया, तो अछोर अरण्य में भटकते कई लोकतंत्र के हिमायतियों की आँखें खुलीं और लोगों को ऐसा लगा, जैसे कई दिनों के घटाटोप बादल फट गये हों और दोपहर के सूरज की किरणें फिर रोशनी फेंकने लगी हों।

व्यक्ति-प्रतिष्ठा का हमारा काम अछूतोद्धार से शुरू हुआ था। दुर्बलतम और निम्नतम को अपनी आत्मीयता के केंद्र में बिठा कर हमने लोकतंत्र की जड़ों को सींचना शुरू किया था। आज कालू चमार की औरत अपनी नस्ल को कभी लानत नहीं भेजेगी। वैषम्य का जहरीला साँप आज घर-घर दूध का कटोरा नहीं पाता है। कानून से नहीं, बल्कि अपनी मननीय रागानुभूति में हम परस्पर इतने एकरूप हो गये हैं कि, द्वैत के संशय की कहीं गुंजाइश ही नहीं रही है। राष्ट्र की दीवार में आज दरारें नहीं है— दरारोंवाली वह दीवार हमने गिरा दी है। अब तो हमने नयी नींव, नयी दीवारें और नयी इमारत शुरू की है!

"राज्य को जाने दो, समाज को मर जाने दो, सुख-सम्पदा सब-कुछ खत्म हो जाने दो— इनकी मुझे कोई चिंता नहीं है! तुम बाँह पकड़ कर व्यक्ति को उबारो, आदमी को मरने से बचाओ। अगर इंसान मर गया, तो तुम्हारा अपरम्पार राज्य तुम्हारे लिए धिक्कार है!" तत्वदर्शी थोरो की यह चेतावनी पुरातन-प्रतिष्ठित लोकतंत्रों के लिए ही नहीं, हमारे नूतन— नयी कोंपल-जैसे वर्धमान— लोकतंत्र के लिए भी मर्मभरी चेतावनी है। हमने अपने प्रयत्नों को इस दिशा में प्रवृत्त तो किया है; मगर लोकतंत्र का मार्ग कभी भी काँटों से खाली नहीं रहा है। कदम-कदम पर खाइयाँ हैं— आँख सामने न रही, तो हम कभी भी लक्ष्य-भ्रष्ट हो सकते हैं।

स्वामी रामकृष्ण एक कथा अक्सर अपने भक्तों को सुनाया करते थे—"एक बाज और एक तोता, दोनों एक जंगल से दूसरे जंगल की तरफ चले। दोनों के पास राजा का संदेश था— उस पार के राजा तक आवश्यक समाचार पहुँचाना था। तोते ने मार्ग में अनाज के दाने देखे और वह बहेलिये के जाल में फँस कर सोने के पिंजरे में जा बैठा।...सुख-सुविधा में ऐसा बेसुध रहा कि, अपना गंतव्य ही भूल गया। इसके विपरीत बाज की नजरें कभी नीची नहीं हुईं। वह तीर की तरह उड़ता गया और निर्विघ्न अपने लक्ष्य तक पहुँच गया।"

इस कथा का मर्म आज हमारे लिए वस्तुतः विशेष अर्थमय है। मानव-कल्याण का संदेश लेकर हमने उड़ान भरी है— कहीं नजरें नीची न हो जायें!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुख की खान

★

रानपुर की अनाजमंडी में पहुँचने से पहले ही आमने-सामने तीन कैम्प पड़ते थे – हिन्दू मिशनरी सभा, इस्लाम-बिरादरी कैम्प और प्रेसबिटेरियन धर्म-सोसाइटी। मंडी में ज्यादातर गौंड और संथालों का आवागमन होता था। सो, इन्हें ही अपने-अपने धर्मों में दीक्षित करने के लिए पंडित, मौलवी और पादरी जी-जान लगाते थे। उस दिन जब एक बूढ़ा गौंड किसान अपने सिर पर चावल की गठरी धरे मंडी की तरफ जा रहा था, तो ये तीनों दीक्षा-गुरु उसे घेर कर खड़े हो गये। तीनों ने अपने-अपने धर्म-मार्ग पर उसे आरूढ़ करने की भरसक चेष्टा की। जब तीनों अपनी पैरवी समाप्त कर चुके, तो बूढ़े ने कहा– "अब आप तीनों मेरे एक प्रश्न का जवाब दे दीजिये। प्रश्न यह है कि, जब मैं मंडी में पहुँच जाऊँगा, तो व्यापारी मेरे सिर पर रखे माल की कीमत लगायेंगे या मेरे मार्ग की और मैं भी माल के लिए ही जा रहा हूँ, रास्तों की जानकारी के लिए नहीं!" तीनों धर्मगुरु सोच में पड़ गये और बूढ़ा आगे बढ़ गया।

× × ×

अमेरिका में चोर पकड़ने का एक नया तरीका ईजाद हुआ है। कहानी इस प्रकार है— एक चोर एक बैंक में घुसा। तिजोरी पर उसने पढ़ा – "घुंडी को बाईं ओर घुमाओ। तिजोरी अपने-आप खुल जायेगी।" चोर को बड़ी खुशी हुई— इतनी आसानी से कामयाबी मिल गयी। उसने घुंडी घुमायी। मगर यह क्या? चारों तरफ तेज रोशनी ही नहीं हो गयी, अलार्म की घंटियाँ भी बज उठीं। चोर पकड़ा गया। जब वह मजिस्ट्रेट के सामने खड़ा हुआ और उससे पूछा गया कि, तुम्हें अपने अपराध के बारे में क्या कहना है, तो वह बड़ी मायूसी के साथ बोला – "क्या कहूँ! आज मानवता पर से मेरा सारा विश्वास उठ गया!"

× × ×

एक हाथी नदी के एक पुल को पार कर रहा था। पुल लकड़ी का था और हाथी के वजन से चर्र-मर्र काँप जाता था। हाथी की पीठ पर एक चींटी भी थी। जब बीच नदी में पुल ज्यादा काँपने लगा, तो चींटी ने हाथी से कहा— "मैंने तुमसे पहले ही कहा था न कि, मेरा और तुम्हारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संयुक्त वजन यह पुल बर्दाश्त नहीं कर सकेगा ! मगर तुम हो कि, कोई बात ही कान पर नहीं धरते। अब क्या होगा ? देखो, अगर डर लगता हो, तो अब भी मैं उतर जाऊँ !"

× × ×

घंटी बजने लगी, तो पशुपालन-अधिकारी ने टेलीफोन का रिसीवर उठा लिया और कहा– "मैं पशुपालन-अधिकारी बोल रहा हूँ।"

टेलीफोन में कोई महिला बोल रही थी– "बात यह है कि, मैंने कुछ मुर्गियाँ पाल रखी हैं और एक मुर्गा भी मँगवाने का विचार कर रही हूँ। मैं जानना यह चाहती हूँ कि, मुर्गा आने के कितने समय बाद मुर्गियाँ अंडे देना शुरू करेंगी ?"

"बस, एक मिनट !..." कह कर अधिकारी उस मेज की ओर बढ़ने लगे, जिस पर इस सम्बंध की जानकारी-वाली पुस्तक रखी थी; पर तभी महिला ने "धन्यवाद !" कह लाइन काट दिया।

× × ×

आखिर, अपने सामने खड़े व्यक्ति की कटूक्तियों से तंग आकर उस व्यक्ति ने कहा— "महाशयजी, क्षमा कीजियेगा, किसी भले आदमी से बात करने का यह ढंग नहीं है !"

दूसरा व्यक्ति क्रोध में तो था ही; बोला– "लेकिन कौन कहता है कि, तुम भले आदमी हो !"

पहले व्यक्ति को यह सुन कर क्षोभ तो हुआ; पर उसने संयत वाणी में ही कहा– "क्यों, सभी भले लोग ऐसा कहते हैं !"

और, यह सुनते ही दूसरे व्यक्ति का क्रोध हवा में उड़ गया– "क्षमा कीजियेगा ! मैं अपने शब्द वापस लेता हूँ !"

× × ×

एक नये लेखक ने एक सम्पादक के पास अपने नये उपन्यास की पांडुलिपि अवलोकनार्थ भेजी और उसके साथ के पत्र में लिखा– "इस उपन्यास के सभी पात्र कल्पित हैं। किसी भी ज़ीवित या मृत व्यक्ति के चरित्र से इनका सादृश्य नहीं है !"

कुछ दिन बाद, पांडुलिपि के साथ सम्पादक का पत्र उसे मिला– "आपने बिल्कुल सही लिखा था कि, किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति के चरित्र से आपके पात्रों का चरित्र मेल नहीं खाता। यही इस उपन्यास की एकमात्र खराबी है !"

हँसो

मनोविद् एडलर जब काम से थक जाते थे, तो घर के लम्बे-चौड़े हाल में बैठ कर जोर-जोर से हँसा करते थे। उनके सहयोगी युंग ने पूछा– "आप यह क्या करते हैं ?" एडलर और जोर से हँसे; बोले– "तुम भी हँसो, जोर से हँसो। जीवन की गर्द झाड़ने का इससे अच्छा कोई तरीका नहीं है।" –'बायग्राफिकल नोट्स' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हब्शियों की जगदम्बा

अनुराग को केंद्रस्थ करके जब नारी लोक-दुःख के मार्ग में उतरती है, तो मरुथलों के अग्नि-हृदयों से भी दूध के स्रोत फूट निकलते हैं—ऐसी ही एक श्वेतांग सुसंकल्पा नारी के अमित दाक्षिण्य की यह कहानी अपनी प्रेरणा के इंगितों से हम सबका आह्वान कर रही है।

★

"चलो, आज मैं तुम्हें यहाँ के एक बड़े सम्पन्न परिवार में ले चलती हूँ।" —मेरी स्लेसर से उसकी पथ-प्रदर्शिका ने कहा और दोनों ड्यूक-टाउन के उस सम्पन्न हब्शी-परिवार से मिलने चल पड़ीं, जिसको अभी हाल में ही ईसाई धर्म में दीक्षित किया गया था।

उन्हें देखते ही, गृह-स्वामिनी स्वागत के लिए आगे बढ़ आयी। वह बड़ी मोटी थी, सो जब उसने मेरी से हाथ मिलाया, तो उसे ऐसा लगा, जैसे उसका हाथ किसी पहलवान ने पकड़ रखा हो। पर जब पथ-प्रदर्शिका से, जो मेरी के स्थानीय भाषा 'एफिक' से अनजान होने के कारण दुभाषिये का भी काम करती थी, उसे मालूम हुआ कि, गृह-स्वामिनी की अवस्था कुल १८ वर्ष थी और अभी तीन महीने पहले ही उसका विवाह इस परिवार के लगभग ५० वर्ष की अवस्थावाले मुखिया से हुआ था, तो उसे बड़ा कौतूहल हुआ। बाद में, पथ-प्रदर्शिका ने उसे बतलाया कि, यहाँ मोटापा स्त्रियों का सौंदर्य माना जाता है; इसीलिए जब लड़कियाँ विवाह-योग्य हो जाती हैं, तब उन्हें 'स्थूलता-संवर्द्धन-गृह' में भेज दिया जाता है। वहाँ वे केवल आराम करती और चर्बी बढ़ानेवाले पदार्थों का सेवन करती हैं। पथ-प्रदर्शिका ने मेरी को यह भी बतलाया कि, यहाँ वर की योग्यता केवल उसके वैभव से आँकी जाती है—रूप, स्वास्थ्य और वय पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। स्थानीय निवासियों की अज्ञानता का यह हाल सुन कर मेरी

माँ जगदम्बा
[चित्र: प्राचीन हब्शी-मृण्मूर्ति की रेखानुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्लेसर चिंतित हो गयी।

कुछ देर बातचीत करने के बाद, गृह-स्वामिनी ने अपने अतिथियों से चाय पीने का आग्रह किया और अपनी नौकरानी को आवाज लगायी। तुरत ही नौकरानी एक बर्तन में गर्म पानी लेकर आयी और चाय के बर्तन में उड़ेल कर चली गयी। अपनी नौकरानी को देख कर गृह-स्वामिनी की तबीयत भिन्ना उठी ; बोली—"उँह, ये गुलाम कितने गंदे होते हैं!" और फिर, प्याली के अंदर उसने परीक्षणात्मक दृष्टि डाली। प्याली में थोड़ी गर्द जमा थी। "देखिये, यह गंदगी!"—उसने अपने अतिथियों को वह प्याली दिखलायी और फिर उसमें थूक कर मेजपोश के एक कोने से पोंछ डाला। उसकी नजर में अब प्याली साफ हो गयी थी, सो उसने उसमें चाय ढाल कर पथ-प्रदर्शिका की ओर बढ़ा दिया। पथ-प्रदर्शिका, अपने मन के तीव्र विरोध के बावजूद, अस्वीकार न कर सकी। उसने प्याली स्वीकार कर ली और शहादत की भावना के साथ उसमें मुँह लगाने ही जा रही थी कि, मेरी ने उसके हाथ से प्याली लेकर चाय फेंक दी। उसके बाद उसने गृह-स्वामिनी से कहा—"देखिये, मैं आपको चाय बनाने का सही ढंग बतलाती हूँ!" और, प्यालियों को अच्छी तरह साफ कर उसने यथाविधि चाय बनायी तथा सबको पीने को दी।

लौटते समय, मार्ग में, पथ-प्रदर्शिका ने मेरी से कहा—"इतनी अभद्रता मुझसे तो नहीं हो सकती थी। डैडी और ममी एंडरसन को इसकी सूचना देनी ही होगी!...तुम जानती हो, ये लोग इस मिशन के गण्यमान्य सदस्य हैं!"

मेरी ने उत्तर दिया—"लेकिन झूठे दम्भ और आडम्बर के चक्कर में पड़ कर क्या हमें रोगों को प्रोत्साहन देना चाहिए? इन्हें स्वच्छता और करुणा का पाठ पढ़ाना भी तो हमारा काम है!"

पथ-प्रदर्शिका को यह बात बिल्कुल अच्छी न लगी। उसने मेरी से कहा—"हमारा काम यह सब नहीं है। हमें तो केवल उनकी अमर आत्मा की रक्षा के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए!"

"क्षमा करना, बहन! मेरे विचार कुछ दूसरे हैं। आत्मा की रक्षा के साथ-साथ इनके शरीर की रक्षा को भी मैं आवश्यक मानती हूँ। अरक्षित शरीर की आत्मा सुरक्षित नहीं हो सकती। अतः हमारा काम इन्हें सभ्य बनाना और इनके जीवन-यापन के स्तर को ऊँचा उठाना भी है! मेरे विचार में भगवान् ईसा-द्वारा निर्देशित सच्चा 'मिशन' यही है!"—मेरी स्लेसर ने दृढ़ता के साथ अपने पक्ष का प्रतिपादन किया और आगे चल कर, उसने अपने इन विचारों को पूरी तरह कार्यान्वित भी किया। तभी तो, आज भी नाइजीरिया के हब्शी उसका नाम-मात्र सुन कर श्रद्धा-पूर्वक शीश झुका लेते हैं।

वास्तव में, मेरी स्लेसर ने अफ्रीका के नाइजीरिया-प्रदेश में जिस साहस, त्याग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और कठोर परिश्रम से काम किया, वह वर्णनातीत है। लगातार ४० वर्षों तक वह मानवता के संदेश का प्रचार वहाँ के खूँख्वार और कठोर-हृदय आदिवासियों के बीच करती रही और सन् १९१५ की १३ जनवरी को जब उसने अपनी इहलीला समाप्त की, तो सारा नाइजीरिया अपनी सम्पूर्ण विह्वलता के साथ आर्तनाद कर उठा। नाइजीरिया-वासियों के शब्दों में, उन्हें कल्याण-मार्ग दिखानेवाली 'जगदम्बा' उनसे रूठ कर चली गयी थीं।

मेरी को मानवता के प्रति प्रेम की यह दीक्षा अपनी माता से उत्तराधिकार के रूप में मिली थी। उसने स्वयं अपनी माता को अभावपूर्ण वातावरण में भी साहस से काम करते और दीन-दुःखियों को गले लगाते देखा था। मेरी का जन्म एक गरीब मोची-परिवार में सन् १८४८ में हुआ था। उसका पिता जो-कुछ कमाता, उसे शराब में खर्च कर देता। फलतः परिवार निरंतर दरिद्रता के अग्नि-कुंड में झुलसता रहता। यह तो मेरी की माता थी, जो अपने साहस और मानवीय गुणों के कारण किसी प्रकार घर को सम्भाले हुई थी। अपनी इस पारिवारिक दुरवस्था के कारण ही मेरी को ११ वर्ष की कच्ची उम्र में काम करने के लिए एक जूट-मिल की शरण लेनी पड़ी। अपनी २८ वर्ष की अवस्था तक वह इसी तरह मेहनत-मजदूरी करके परिवार का खर्च चलाने के साथ-साथ अपने पठन-पाठन की व्यवस्था करती रही। और तब, उसे अपना चिर-वांछित कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वह स्काटलैंड के 'यूनाइटेड प्रेसबटेरियन चर्च' की ओर से 'मिशनरी' बना कर अफ्रीका के नाइजीरिया-प्रदेश के कालाबार-क्षेत्र में भेज दी गयी।

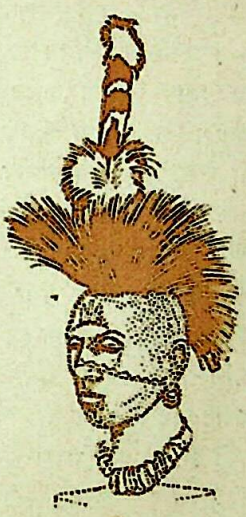

केश-विन्यास
[चित्र : हब्शी-नारी-शृंगार की रेखानुकृति]

यहाँ आकर, पहले तो उसे डैडी एंडरसन तथा ममी एंडरसन के संरक्षण में काम करना पड़ा; पर बाद में उसने अपनी इच्छा के अनुसार, स्वतंत्र ढंग से, काम करना आरम्भ कर दिया; क्योंकि साधारण 'मिशनरियों' की तरह आडम्बर के पीछे वास्तविक उद्देश्य को भूल जाना उसे कतई पसंद नहीं था। उसने स्थानीय हब्शियों के सर्वतोमुखी विकास के लिए उनके साथ पूरी तरह घुल-मिल कर कार्य करने की योजना बनायी और उसकी पूर्ति में संलग्न हो गयी।

पहले-पहल जब मेरी ने अपनी योज़ना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के अनुसार, हब्शियों के बीच जाकर, उनसे मिलना-जुलना और बात करना आरम्भ किया, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। वह जिस किसी कबीले में जाती, लोग उसे घेरे लेते और निकट से उसे देखने का प्रयत्न करते। कोई उसके कपड़े छूता, कोई छाता और कोई उसके शरीर को ही छूकर कुछ समझने-बूझने का प्रयास करने लगता। पर धीरे-धीरे यह अवस्था समाप्त हो गयी और हब्शी उसे अपने-जैसा ही एक मनुष्य मानने लगे। इन जंगली लोगों से ज्यों-ज्यों उसका सम्पर्क बढ़ा, त्यों-त्यों उसे ज्ञात हुआ कि, इन काले और खूँख्वार लोगों में भी धर्म-भावना है और अपने समाज के अनेक कायदे-कानून हैं। पर इनके विकास में सबसे बड़े बाधक वे अनगिनत अंधविश्वास हैं, जो इनके भीतर अज्ञानतावश जड़ें जमा चुके हैं। इन्हें निर्मूल करना ही इनके उद्धार के लिए सर्वाधिक आवश्यक है।

एक दिन वह एक कबीले में गयी हुई थी, तभी वहाँ के लोग 'एगबो-एगबो' चिल्लाते हुए इधर-उधर छिपने लगे। घरों के दरवाजे भीतर से बंद हो गये। कुत्ते तक डर के मारे एक बड़े लकड़ी के ढेर के पीछे एकत्र हो गये और मुर्गियाँ चीख-चीख कर इधर-से-उधर भागने लगीं। मेरी ने 'एगबो' नामक रहस्यमय खूँख्वार दल के सम्बंध में सुन रखा था; पर कभी प्रत्यक्ष देखने का उसे अवसर नहीं मिला था। सो, एक वृक्ष से सटी, वह आसन्न दुर्घटना की प्रतीक्षा करने लगी।

कुछेक क्षण बाद घंटी बजने की आवाज आने लगी। चारों ओर शोर-गुल मच गया। कभी किसी नारी का आर्तनाद सुनायी पड़ता, तो कभी किसी का अट्ट-हास। वह साँस रोके परिस्थिति को समझने का प्रयास ही कर रही थी कि, एक पूर्णतया नग्न स्त्री भागी आती दिखायी पड़ी। एक लम्बा पुरुष, जो ऊपर से नीचे तक लाल-सफेद धारियों में रँगा कोई वस्त्र पहने था, उसका पीछा कर रहा था। उसके हाथों और पावों में परों की बनी आवरण-सज्जा थी। उसने अपने चेहरे को भी रेशों से बनी किसी वस्तु से ढँक रखा था।

पल-भर बाद ही वह उस स्त्री के पास पहुँच गया और उसे गैंडे के चमड़े से बने हंटर से मारने लगा। मार खाकर स्त्री असह्य वेदना से चीखने लगी; पर उसका हंटर चलता रहा। हंटर लगने की आवाज के साथ-साथ उस पुरुष का अट्टहास वातावरण को और भी भयानक बना दे रहा था। स्त्री का शरीर थोड़ी ही देर में लहूलुहान हो गया और वह बेहोश हो गयी। इतने में दो और पुरुष पहले व्यक्ति की तरह ही दौड़ते आये। उनमें से एक ने आते ही मुर्गियों के एक जोड़े को अपने कोड़े से मार डाला और दूसरा उस चेतनाहीन स्त्री को घसीट कर एक झोंपड़ी की ओर ले चला।

इस बर्बरता को देख, मेरी का हृदय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीत्कार कर उठा– वह अपने को न रोक सकी। स्त्री को घसीट रहे व्यक्ति की ओर वह निर्भय दौड़ पड़ी और पास जाकर गरज उठी– "ठहरो! छोड़ दो इसे!" वह व्यक्ति आश्चर्य से मेरी की ओर देखने लगा। उसके हाथ ढीले पड़ गये– स्त्री के केश उसकी मुट्ठी से छूट गये। इस बीच उस स्त्री को भी होश आ गया। एक क्षण को वहाँ सन्नाटा छाया रहा। फिर, 'एगवो'-दल के उस व्यक्ति ने अपनी भाषा में मेरी से कुछ कहा।

जवाब में मेरी भी कड़की– "अभी भाग जाओ यहाँ से!"

पर इसका उस व्यक्ति पर कोई असर न हुआ। उसने अपना कोड़ा हवा में फटकारा, जो मेरी के सिर के ऊपर से निकल गया। मेरी समझ गयी कि, इन लोगों से रौब और निर्भीकता से ही निबटना पड़ेगा। पर अभी वह आगे के कार्यक्रम पर विचार ही कर रही थी कि, उस व्यक्ति ने उस स्त्री पर फिर कोड़े बरसाने आरम्भ कर दिये। अब मेरी ने आव-देखा-न-ताव, अपने छाते से ही उस व्यक्ति को पीटना आरम्भ कर दिया। उत्तर में, उस व्यक्ति ने वही कोड़ा मेरी को मारने के लिए उठाया; परंतु उससे पहले ही मेरी ने उससे कोड़ा छीन लिया। इस बीच 'एगवो'-जाति के तीन-चार अन्य व्यक्ति भी वहाँ आ गये थे और इस दृश्य को देख रहे थे।

मेरी ने जोर से डाँटा–"भागो यहाँ से! बदमाश कहीं के!" वह बकती जाती थी और उसे मारती जाती थी। आखिर, वह व्यक्ति भाग गया। अब मेरी दूसरे आततायियों की ओर मुड़ी। वे भी अपने प्राण लेकर भाग गये।

सुकेशा

[चित्र : हर्ग्शी-काष्ठ-मूर्ति की रेखानुकृति]

तब से उस कबीले के लोग उसे स्वर्गीय देवी के रूप में मानने लगे। अब मेरी जो कहती, वे वही करते। मेरी ने भी उनके बीच, वहीं रहने का निश्चय किया और आदिवासियों ने रहने के लिए उसे एक झोंपड़ी दे दी। वहीं मेरी ने एक स्कूल खोला और वहाँ के बच्चों को पढ़ाने तथा सयानों को स्वच्छता, आदि की शिक्षा देने का कार्य आरम्भ किया। साथ ही, उसने उन बच्चों की सहायता से अन्य गाँवों में जाकर और वहाँ के मुखियों से मिल कर स्कूल खोलने और शिक्षा देने का प्रयास भी जारी रखा। वे बच्चे मेरी से इतने हिलमिल गये कि, वे हमेशा उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास ही बने रहते। रात की प्रार्थना के पश्चात्, मेरी के आसपास ही वे निश्चिंत भाव से सो भी जाते।

हब्शियों के अत्यंत निकट सम्पर्क में रहने के कारण मेरी को उनकी भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान हो गया। फलतः उनकी कठिनाइयों को समझने और सुझाव देने में उसे विशेष सुविधा होने लगी। कहते हैं कि, अफ्रीका की जंगली भाषाओं पर मेरी का जितना अधिकार था, उतना किसी भी यूरोपीय को कभी प्राप्त न हो सका। इससे उसे अपने सेवा-कार्य में बड़ी जबर्दस्त सफलता मिली और वह कालांतर में हब्शियों के लिए 'देवी का अवतार' बन गयी। उसका एक-एक शब्द उनके लिए कानून बन गया।

नाइजीरिया की जंगली जातियों में एक प्रथा थी कि, यदि कोई गुलाम माता प्रसव के समय मर जाये, तो उसके बच्चों को भी मार डाला जाये अथवा निकाल बाहर कर दिया जाये, ताकि उनके पालन-पोषण के भार से उनका स्वामी मुक्त हो जाये। बाद में, यह प्रथा मेरी के प्रयत्नों से बहुत-कुछ समाप्त हो गयी ; पर आरम्भ में ऐसे जितने भी बच्चे फेंक दिये जाते, उन्हें मेरी अपने यहाँ उठा लाती और उनके पालन-पोषण का भार अपने कंधों पर उठा लेती। ये लड़के आगे मेरी की उद्देश्य-सिद्धि में बहुत बड़े सहायक बने।

वहाँ एक दूसरी प्रथा इससे भी भयंकर थी। किसी भी स्त्री को, चाहे वह दासी हो या स्वतंत्र, यदि जुड़वाँ बच्चे पैदा होते, तो सारे कबीले में आतंक छा जाता। लोगों का विश्वास था कि, उस स्त्री के साथ अवश्य ही किसी जिन या प्रेत का सम्बंध है और वही उन दो बच्चों में से किसी एक अथवा दोनों का ही पिता है। अतः जुड़वाँ बच्चों के पैदा होते ही, वे लोग उन बच्चों को मिट्टी के घड़े में भर कर किसी जंगल में छोड़ आते थे। दूसरी ओर, बच्चों की माँ को, किसी भूत-प्रेत के साथ व्यभिचार करने के अपराध में, गाँव से बाहर निकाल दिया जाता था और उसे कोई भी व्यक्ति सहारा या आश्रय नहीं देता था।

एक दिन शाम को मेरी दिन-भर के काम से थक कर अपनी झोंपड़ी में लेटी विश्राम कर रही थी, तभी उसे दो स्त्रियों की कानाफूसी सुनायी पड़ी। वह झट समझ गयी कि, किसी के प्रसव का समय आसन्न है। वह शीघ्रतापूर्वक उठी और कुछ दवाएँ, तौलिये, रुई, आदि आवश्यक सामान लेकर उस झोंपड़ी की ओर चल पड़ी, जिसमें जच्चा थी। वहाँ जाकर उसने देखा कि, एक सत्रह-वर्षीया लड़की बिस्तरे पर पड़ी पीड़ा के मारे कराह रही है। झोंपड़ी में खूब धुआँ कर दिया गया था और एक ओर नारियल-तेल का एक दीपक टिमटिमा रहा था। एक प्रौढ़ा स्त्री ने उस लड़की के दोनों पाँवों को पकड़ रखा था और कुछ दूसरी स्त्रियों ने उसके हाथ। उसके फूले हुए पेट पर कई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घाव के निशान दिखायी पड़ रहे थे, जिन्हें वहाँ के मांत्रिक ने जन्म देनेवाले देवता के अभिवादनार्थ बनाया था। वह लड़की दर्द के मारे कराह रही थी और उसका चेहरा नीला पड़ गया था। कुछ देर बाद, एक स्त्री उसके पेट पर इतनी जोर से हुमच कर बैठ गयी कि, असह्य वेदना के कारण वह चिल्ला पड़ी। इतने में ही एक क्षीण रोने की आवाज भी झोंपड़ी में गूँज उठी और उपस्थित स्त्रियाँ नव-जात शिशु को घूरती हुई बाहर चली गयीं। पर क्षण-भर बाद ही एक दूसरा बच्चा भी पैदा हो गया।

दूसरे बच्चे का पैदा होना था कि, एक जबर्दस्त हलचल मच गयी। सब लोग बच्चों को जंगल में फेंकने और प्रसूति को घर से निकाल देने के लिए तत्परता दिखाने लगे। पर वास्तविकता से लोगों को परिचित कराने का यह स्वर्ण अवसर मेरी भला क्यों खोती? उसने लोगों से कहा कि, वह बच्चों और प्रसूति को अपने यहाँ रखेगी और यदि उनके अपने साथ रहने के कारण उसका कोई अनिष्ट नहीं होगा, तो उन्हें इस प्रचलन को सदा के लिए बंद करना होगा। लोग राजी हो गये और जैसा कि निश्चित था, कालांतर में लोगों को अपना यह रिवाज बंद करना पड़ा।

कालाबार-क्षेत्र में १२ वर्ष बिताने के बाद मेरी ओकोयांग-इलाके में गयी। ओकोयांग लोग और भी भयंकर तथा खतरनाक किस्म के थे। ओकोयांग क्रास और काला-बार नदियों के बीच में स्थित एक त्रिकोण द्वीप है, जहाँ बड़ा ही घोर जंगल है। कोई भी व्यक्ति वहाँ जाने की हिम्मत नहीं करता था। उन लोगों में किसी भी अपराध की सजा मृत्यु थी। इस जाति में उन लोगों को ही सामाजिक प्रतिष्ठा और सम्मान मिलता था, जिनके पास अधिक-से-अधिक दास-दासियाँ, पत्नियाँ तथा बच्चे हों। परंतु उस व्यक्ति के मरने के साथ ही उसके दास-दासियों, पत्नियों तथा बच्चों को भी मौत के घाट उतार दिया जाता था, ताकि उस व्यक्ति को परलोक में किसी प्रकार का कष्ट न हो। इस जाति में एक कानून और था कि, यदि कोई बड़ा आदमी अपराध कर

मूल्य

उस दिन फिर फल और डाल में कलह हो गया। डाल आँखें तान कर बोली—"यों शेखी बघारते और अपनी महिमा गाते तुम्हें शर्म नहीं आती? हमारा ही प्राण पी-पीकर जब पकते हो, तो ये मनुष्य हमें भी काट ले जाते हैं।" इस बार फल से न रहा गया; बोला—"तुम क्यों कहती हो कि, फल मेरा है? स्वामित्व जताने का मूल्य तो आखिर चुकाना ही पड़ता है!" —'श्रीश्री'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दे, तो वह अपने स्थान पर अपने किसी दास को कत्ल करने के लिए दे सकता था।

ऐसे खतरनाक प्रदेश में जाने से मेरी स्लेसर को लोगों ने बहुत रोका ; पर वह न मानी। उस भयावह प्रदेश में मेरी ने अकेले ही प्रवेश किया। उसे देखते ही वहाँ के लोगों ने उसे घेर लिया और भाले, बर्छी, तलवार, आदि नचा-नचा कर डराने लगे। पर मेरी निर्भीक-निश्चल खड़ी रही। इतने में वहाँ का मुखिया आया और आते ही उसने मेरी को सलाम किया। मेरी ने मधुर शब्दों में उसका स्वागत किया—"मैं तुमसे मिलने आयी हूँ, प्रमुख इडेन!"

"आप आयीं, माँ! बहुत अच्छा हुआ! आपके साथ और कोई नहीं है क्या? आप आते समय डरीं तो नहीं?"—प्रमुख ने मेरी से अपनी सहानुभूति जताते हुए स्नेहपूर्वक पूछा।

मेरी ने कहा—"नहीं, भाई! भगवान् हमारी रक्षा करता है।"

यह दृश्य देख, स्वभावतः ही, सारे ओकोयांग लोग, जो अब तक उसे डरा रहे थे, आश्चर्यचकित रह गये। उनके सिर स्वयमेव मेरी के आगे झुक गये।

प्रमुख के साथ चलते-चलते मेरी ने कहा—"प्रमुख, मैं तुम्हारे यहाँ रहने के लिए आयी हूँ। तुम्हारे इलाके में भी स्कूल खोले जायेंगे, ताकि तुम्हारे आदमी भी, कालाबार-इलाके की तरह, लिखना-पढ़ना और तौर-तरीके सीखें।"

प्रमुख ने इसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया और मेरी को अपने घर के पास ही एक घर रहने के लिए दे दिया। थोड़े ही दिनों में वहाँ जितने भी गाँव थे, सबमें स्कूल खुल गये और मेरी ने धीरे-धीरे अपनी सेवा तथा स्नेहिल व्यवहार से सबको अपने वश में कर लिया। कालाबार की ही स्थिति यहाँ भी पैदा हो गयी। ज्यों-ज्यों शिक्षा का प्रसार हुआ, खूँख्वार ओकोयांग अपने अंधविश्वासों से मुक्ति पाते गये और मेरी उनकी 'परमवंदनीया माता' बन गयी। मेरी के आदेशों का पालन करने के कारण उनकी बर्बरता बहुत हद तक विलुप्त हो गयी। ओकोयांग में मेरी-द्वारा दिखाये गये इस चमत्कार ने आखिर डैडी एंडरसन से कहलवा ही लिया—"हजारों शेरों को एक साथ, उनके ही जंगल में जाकर, काबू में करना माता मेरी के लिए ही साध्य था! मुझे विश्वास नहीं होता कि, यह मनुष्य के वश की बात हो सकती है!"

चालीस वर्षों तक अफ्रीका के भयंकर जंगलों में निवास करके वहाँ के 'मनुष्य' नामधारी हिंसक पशुओं में सफलतापूर्वक मानव-गुण भरनेवाली इस असाधारण नारी के लिए उपर्युक्त उक्ति, निश्चय ही, अतिशयोक्ति नहीं है! मेरी ने जंगली हब्शियों को जीवन का सही रूप तो समझाया ही, सभ्यता के वातावरण में साँस लेनेवाले गुमराह मनुष्यों को भी मानवता की सेवा का वास्तविक दिशा-निर्देश दिया!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफेद अंधकार का देश

अंधेरे-उजाले की आँखमिचौनी वैसे ही काफी मायाविनी है। यदि उसमें यह भी हो जाये कि, अंधेरा सफेद चोगा पहन कर आये, तो फिर स्वयं रहस्य ही रसार्णव बन जाये। गोविंद रत्नाकर-सर्जित इस प्रबंध में ऐसे ही एक देश की सैर कीजिये।

यह है तो मात्र कल्पना ही ; फिर भी मान लीजिये कि, पचीस-पचास हजार परमाणु-बम दक्षिण-ध्रुव-प्रदेश में बरसाये जायें, तो क्या हो? सम्भव है, उस प्रहार से उस प्रदेश का बर्फीला आच्छादन नष्ट हो जाये और उसके नीचे से करोड़ों वर्ष पुरानी ऐसी भूमि निकल आये, जिस पर भाँति-भाँति के लता-वितान, फल-फूल और खाद्यान्न उपजने लगें तथा वह शस्य-श्यामला बन जाये। वैज्ञानिकों का मत है कि, किसी जमाने में—करोड़ों वर्ष पूर्व—वह भू-भाग वैसा ही था। कठोरतम शीत से श्वेत हिम-राशि के आच्छादन और शीतोष्ण ऋतु से हरियाली के परिधान का क्रम, पृथ्वी के उत्तर-दक्षिण तथा मध्य-भागों में, बारी-बारी से चलता रहता है। करोड़ों बर्ष पहले वहाँ शस्य-श्यामला भूमि थी, जहाँ अब हिमराशि है और जहाँ आज सभ्य मानव का निवास है, वहाँ हिम-दानव का निवास था। पर इस प्रकार प्रकृति जो कार्य करोड़ों वर्षों में करती है, वही यदि आज का परमाणु-बम कुछ ही काल में कर दिखाये, तो? वैसी अवस्था में, ध्रुव-गिरि-शिखरों के हिम-मुकुटों को एक बार तो ध्वस्त किया ही जा सकेगा, भले ही प्रकृति कुछ काल बाद उसे पुनः वही ताज पहना दे।

अभी तो यह भू-भाग पूर्णतः श्वेत और शीतल है! आकाश भी श्वेत और हिम-कण-मिश्रित होने के कारण हवा भी श्वेत! तापमान यदि कुछ 'उष्ण' हो, तो पानी जमने-जितना, नहीं तो उससे १०० डिग्री नीचे तक। ऐसी ठंडक में किसी चीज का ह्रास-विनाश नहीं हो पाता। जैसे घर के रेफ्रीजरेटर में दस-पाँच दिन चीज नहीं सड़ती, उसी तरह प्रकृति के इस रेफ्रीजरेटर में सैकड़ों-हजारों वर्षों तक चीजें ज्यों-की-त्यों बनी रहती हैं। चीजों का ह्रास-विनाश करनेवाली गंदगियाँ और कीटाणु जब वहाँ के वातावरण में हैं ही नहीं, तो चीजें दूषित कैसे हों? वहाँ ध्रुव के यात्रियों-द्वारा छोड़े हुए २५-३० वर्ष पुराने भोज्य पदार्थ तरोताजा देखने को मिले हैं—मृत जानवरों के भी ऐसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरीर मिले हैं, मानो वे अभी-अभी मरे हों। परंतु दक्षिण-ध्रुव-प्रदेश के इस अद्‌भुत गुण का वास्तविक लाभ तो तभी उठाया जा सकता है, जब इसे संसार का संग्रहालय बना लिया जाये। जो युग चाँद व मंगल पर बस्ती बसाने की योजना बनाता है, वह क्या अपनी पृथ्वी पर के ही एक भाग को ऐसा उपयोगी गोदाम बनाने में असमर्थ होगा? वस्तुतः आज के विकासमान विज्ञान के लिए यह कोई असाध्य बात नहीं होगी।

दक्षिण-ध्रुव का प्रदेश 'सफेद अंधकार का देश' है। गहरी सफेदी से आच्छादित वहाँ का वातावरण दृष्टि के लिए कई बार तो अभेद्य होता है। साथ-साथ चलनेवाला साथी भी सफेदी में ऐसा लुप्त हो जाता है कि, उसकी आवाज तो सुनायी देती है; पर उसका दिखायी पड़ना बंद हो जाता है। दिशा-ज्ञान का तो यहाँ कोई साधन है ही नहीं—खास कर, बदली के समय सारा दृश्य इतना धुँधला हो जाता है कि, ऊँची-नीची बर्फ-श्रेणियों से जो थोड़ा मार्ग-प्रदर्शन हो सकता है, वह भी नहीं हो पाता। सबसे विचित्र बात तो यह होती है कि, उस श्वेत अंधकार में परछाईं नहीं पड़ती, उठा हुआ पाँव नीचे की बर्फ का सही अनुमान नहीं लगा पाता और चलनेवाला लड़खड़ाता हुआ चलता है। ऐसे में नहीं चल सकना ही ठीक होता है; क्योंकि कौन जाने अगला कदम हजारों फुट गहरे खंदक में हो।

गर्मियों में सूर्य क्षितिज पर चौबीस घंटे दाहिने से बायें घूमता रहता है और उसी गति के वशीभूत होकर या किसी और कारण से मनुष्य —यदि चाल के लिए सहारा न हो, तो— वहाँ बायीं ओर घूम कर चक्कर काटता रह जाता है। कई बार देखा गया है कि, ध्रुव-यात्री इस श्वेत अंधकार में महसूस तो करता है कि, वह आगे बढ़ रहा है; पर दाहिने से बायें घूमते हुए, मील-भर का चक्कर काट कर, जहाँ से चला था, वहीं-का-वहीं रह जाता है। उत्तर-ध्रुव पर स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, बायें से दाहिने घूमने की। दक्षिण एवं उत्तर-ध्रुवों की बायें और दाहिने घूमने की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति वहाँ की बर्फ में भी पायी जाती है।

शिकार

[चित्र : एक अति प्राचीन भित्तिचित्र]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दक्षिण-ध्रुव-प्रदेश के इस सम्पूर्ण श्वेत वातावरण में कभी-कभी हरियाली का अजीब नजारा भी देखने को मिलता है। यह होता है तब, जब सूर्य क्षितिज पर होता है। उस समय क्षितिज से लेकर भूमध्य के बीच तक शोभा का विस्तार वैसे ही हो जाता है, जैसे सूर्यास्त के समय। अंतर बस इतना होता है कि, यह सूर्यास्त सिंदूरी, गुलाबी या लाल नहीं होता– यह होता है पूर्ण रूप से हरा। एक बार तो यह दृश्य क्षितिज पर ५० मील लम्बा और १० मील ऊँचा फैला हुआ देखा गया, मानो आकाश में कटी-सँवारी दूब का मैदान हो और उसके किनारे पर हरी-भरी झाड़ियाँ हों। दरअसल, प्रकृति के अनेकानेक खिलवाड़ों में से इसे भी एक खिलवाड़ ही समझना चाहिए।

वैज्ञानिकों का मत है कि, दक्षिण-ध्रुव-प्रदेश आजकल अपने शीत-युग के मध्य में है। यदि उसके हिम-आच्छादन को भेद कर, उसकी मूलभूमि की यात्रा की जा सके, तो वह एक करोड़ वर्ष पुराने लोक का अवलोकन सिद्ध होगा। उत्तर-ध्रुव-प्रदेश भी पहले पूर्णतः हिमाच्छादित हुआ था ; पर वहाँ के प्राणियों को शनैः-शनैः उसे सहने के लिए अपने-आप में परिवर्तन कर लेने का अथवा बच कर दूसरे भू-भागों में भाग निकलने का अवसर मिल गया। दक्षिण-ध्रुव-प्रदेश में ऐसा सम्भव नहीं हो सका ; क्योंकि वह चारों ओर समुद्र से घिरा है। करोड़ों वर्ष पहले भूमध्य-रेखा पर जमी बर्फ ने फिसल कर दक्षिण-प्रदेश पर आक्रमण किया होगा। उसके पहले वह प्रदेश हरा-भरा और उष्ण रहा होगा। ऐसे लक्षण देखने में आ रहे हैं कि, अब बर्फ वहाँ से खिसकने लगी है और सम्भव है कि, करोड़ वर्ष बाद फिर वहाँ उष्णता आ जाये और हरियाली लहलहाने लगे।

पर यदि ऐसा हुआ, तो इसका मतलब होगा, आज के भूमि-भाग का प्रलय। दक्षिण की गली बर्फ समुद्र की सतह कई सौ फुट ऊँचा उठा देगी और उसका क्या परिणाम होगा, यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। उस समय न रहेगी बम्बई और न रहेंगे न्यूयार्क-लंदन। ये सब द्वारिका बन जायेंगे।

पर इस जल-प्रलय की बात से हमें चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। करोड़-दो करोड़ वर्ष अभी बहुत दूर हैं। फिर, यह बात भी है कि, जैसे आज की निवास-भूमि किसी समय हिमाच्छादित होने के बावजूद अभी परम सुखमय है, उसी प्रकार आज के हिमाच्छादित प्रदेश में भी यदि कभी मनुष्य-जाति को रहना पड़ा, तो वहाँ भी उसे उतने ही या उससे भी अधिक सुख-साधन मिल जायेंगे। जैसे आज द्वारिका न रही, तो दिल्ली तो मौजूद है, वैसे ही करोड़ वर्ष बाद ये महाद्वीप यदि नहीं रहे, तो नये महाद्वीप बसेंगे। प्रलय और सृष्टि का तो यह क्रम ही है।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...नींद नहीं आती

सिसेरो सोये पड़े थे—निश्चिंत नींद में सागर की तरह अगाध। रोम-सम्राट् आये। खूब जगाया। सिसेरो नहीं जागे। सम्राट् वापस चले गये। दरबारियों ने सोचा, सिसेरो को प्राणदंड मिलेगा। मगर जब वे नींद समाप्त कर सम्राट् के पास पहुँचे, तो सम्राट् ने कहा—"सिसेरो, साम्राज्य ले लो और अपनी नींद मुझे दे दो!" प्रस्तुत प्रबंध-द्वारा इसी परम मूल्यवान नींद के बारे में वैज्ञानिक जानकारी देने का प्रयत्न किया गया है।

☆

"नींद नहीं आती!" की शिकायत करनेवाले व्यक्ति के चेहरे के भावों को आपने कभी ध्यान से देखा है? उस समय इतनी दीनता और करुणा छा जाती है उसके मुखमंडल पर कि, सुननेवाले का भी हृदय करुणा से अभिभूत हो उठता है। सचमुच नींद बड़ी प्यारी है हमें— उतनी ही मीठी भी। पर यह एक सचाई है कि, अपनी इतनी प्यारी चीज के बारे में भी हम बहुत-कुछ नहीं जानते। वह नियमित रूप से हमसे मिलने आती है, हमारी थकान दूर करती है, हममें स्फूर्ति का संचार करती है— हम अपने जीवन का एक-तिहाई से कुछ अधिक ही हिस्सा उसकी गर्म-नर्म गोद में गुजार देते हैं। फिर भी, उसका रहस्य नहीं जान पाते। पर अब विज्ञानवेत्ता संसार के अन्य रहस्यों की तरह नींद के रहस्य का भी शनैः-शनैः उद्घाटन कर रहे हैं।

हमारे शरीर की सामान्यतः दो अवस्थाएँ होती हैं— निद्रावस्था और जागृतावस्था। इन दोनों का नियंत्रण हमारे मस्तिष्क के दो छोटे-छोटे अवयव करते हैं। शरीर-विज्ञान में इन्हें 'रेक्टिक्युलर फार्मेशन' और 'हाइपोलैग्मस' कहते हैं। हमारा मस्तिष्क स्नायुओं के द्वारा शरीर के सभी अंगों से जुड़ा है। ये अंग स्नायुओं के जरिये मस्तिष्क को सदा कुछ-न-कुछ सूचनाएँ भेजते रहते हैं। जागृति की अवस्था में 'रेक्टिक्युलर फार्मेशन' और 'हाइपोलैग्मस' उन्हें ग्रहण करके और पहले से अधिक जोरदार बना कर पुनः प्रसारित करते हैं, जिससे मस्तिष्क तुरत उनके विषय में अपना निर्णय तथा आदेश देता है।

कई घंटे काम कर लेने के बाद, 'रेक्टिक्युलर फार्मेशन' और 'हाइपोलैग्मस', जिन्हें हम सुविधा के लिए 'नियंत्रण-कार्यालय' कह सकते हैं, काम करना बंद कर देते हैं। तब, स्नायुएँ अपने संदेशों को मूल रूप में— अर्थात् अत्यंत क्षीण रूप में— दिमाग के पास पहुँचाने लगती हैं। फलतः दिमाग तत्परता से उनका उत्तर नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देता। यही नींद की अवस्था है।

साधारण धारणा है कि, नींद में मनुष्य अचेत हो जाता है; पर असलियत यह नहीं है। अद्वैत-दर्शन में जो नींद को चैतन्य की एक अवस्था माना गया है, वही ठीक है। वस्तुतः नियंत्रण-कार्यालय के बंद हो जाने पर, मस्तिष्क का बाहरी संसार से और शरीर के विभिन्न अंगों से सम्बंध टूट नहीं जाता। नियंत्रण-कार्यालय कभी पूरी छुट्टी नहीं लेता। वहाँ हरदम कोई-न-कोई कर्मचारी ड्यूटी पर रहता है। तभी तो, जब हम सो रहे हों और कोई हमें पुकारे अथवा शरीर के किसी भाग में दर्द उठे, तो नियंत्रण-कार्यालय उसे मस्तिष्क के लिए पुनः प्रसारित करता है और हम हड़-बड़ा कर उठ बैठते हैं। यदि ऐसी व्यवस्था न हो, तो सचमुच नींद बड़ी खतरनाक चीज हो जाये।

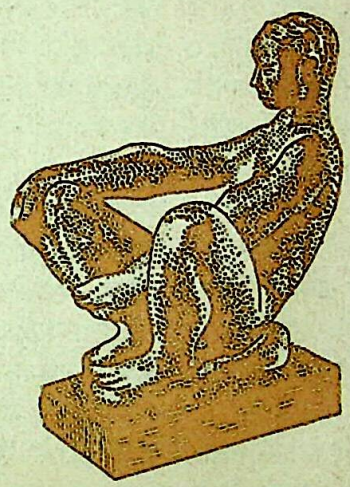

चिंता

[चित्र: प्राचीन रोमन मूर्ति का रेखानुकरण]

हल्की नींद में ऐसी व्यवस्था हो सकती है कि, हमारा नियंत्रण-कार्यालय कुछ विशेष प्रकार के संवेदनों और सूचनाओं को ही पुनः प्रसारित करे और बाकी को नहीं। यदि आप बम्बई या कलकत्ता के किसी उपनगर में रहते हैं और प्रति दिन लोकल ट्रेन में बैठ कर दफ्तर जाते हैं, तो आपने देखा होगा कि, बहुत-से लोग ट्रेन में चढ़ते ही सो जाते हैं और अपना स्टेशन आते ही जाग कर उतर जाते हैं। ये लोग गर्व से कहते हैं– "नींद पर मेरा पूरा नियंत्रण है। मैं जितने बजे उठने का संकल्प कर लूँ, ठीक उतने बजे नींद खुल जाती है।" पर वास्तव में, उनमें कोई विशेष शक्ति नहीं होती। वस्तुस्थिति यह है कि, वे नियंत्रण-कार्यालय को ताकीद कर देते हैं कि, अमुक समय हमें सूचित कर देना।

यह तो हुई बाहरी जगत् की सूचनाओं की बात। हमारे शरीर के अवयवों की सूचनाएँ भी इसी प्रकार मस्तिष्क के पास पहुँचती हैं। जब शरीर यह अनुभव करता है कि, काफी आराम मिल चुका, तो यह संदेश मस्तिष्क में पहुँच जाता है और नियंत्रण-कार्यालय के दरवाजे खुल जाते हैं। यही जागरण है। स्वाभाविक निद्रा और मूर्च्छा में यही बहुत बड़ा अंतर है कि, मूर्च्छा की अवस्था में कोई संवेदन– चाहे वह कितना ही तीव्र क्यों न हो–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मस्तिष्क तक नहीं पहुँचता।

हमारी प्रिय नींद का सबसे प्रबल शत्रु है, चिंता। चिंता केवल मानसिक क्रिया नहीं है; उसका शारीरिक पहलू भी होता है। चिंता स्नायुओं के तनाव के रूप में शरीर में रहती है। यदि स्नायुओं को शिथिल छोड़ दें, तो चिंता रह ही नहीं सकती। तनाव का नींद से जन्मजात विरोध है। बिस्तर पर घंटों पड़े रहने पर भी यदि आपको नींद नहीं आती, तो समझिये कि, आपकी मांस-पेशियाँ अभी तनाव की स्थिति में है। 'एलेक्ट्रोमायोग्राफ' और 'आसिलोस्कोप' से आपके तनाव के चित्र साफ-साफ लिये जा सकते हैं। ये यंत्र सूक्ष्म-से-सूक्ष्म तनाव को भी जान जाते हैं। वस्तुतः जब आप जबर्दस्त चिंता में ग्रस्त होते हैं, तब आपकी मांस-पेशियाँ वैसी ही तन जाती हैं, जैसे जोर-शोर से टेनिस खेलते समय।

इसी तरह, सपनों में भी हमारी मांस-पेशियाँ तनी होती हैं। जब आपको पैदल जाने का सपना आ रहा हो, तब 'एलेक्ट्रो-मायोग्राफ' तथा 'आसिलोस्कोप' से जाँच करें, तो पता चलेगा कि, आपकी पिंडलियों तथा जाँघों में तनाव आ गया है और मेरुदंड सीधा हो गया है। कई सपनों में तो तनाव इतना बढ़ जाता है कि, दिल की धड़कन बढ़ जाती है और साँस इतनी तेजी से चलने लगती है, मानो आप अभी पचास सीढ़ियाँ चढ़ कर आये हों। वैसे नींद में दिल की धड़कन प्रायः ५४ प्रति मिनट होती है। कुछ लोगों की तो हृद्‌गति ३६ धड़कन प्रति मिनट तक उतर आती है। गहरी नींद में आदमी साँस भी गहरी लेता है। उस समय उसका रक्त-चाप भी कम हो जाता है।

नींद से उठने पर दिल की धड़कन और रक्तवाहिनियों पर खून का दबाव भी धीमे-धीमे बढ़ने लगता है। साथ ही, शरीर की उष्णता भी बढ़ने लगती है। जब यह उष्णता अपनी सीमा पर पहुँचती है, तब मनुष्य खूब सक्रिय होता है। शरीर कब और कितनी देर में उष्णता की सीमा पर पहुँचता है, इसका जल्दी या देर से उठने और सोने के साथ गहरा सम्बंध है। जिन लोगों का शरीर जल्दी गर्म होकर दिन के मध्य-भाग में उष्णता की सीमा पर पहुँच जाता है, वे जल्दी उठते हैं और जिनका शरीर जरा देर से गर्म होता है, वे देर से उठते हैं– उनकी नींद जरा देर से खुलती है। वस्तुतः ब्राह्म-मुहूर्त में नींद खुलने का नैतिक श्रेष्ठता से कोई सम्बंध नहीं है, जैसा कि बहुत-से लोग समझते हैं।

शिकागो-विश्वविद्यालय के निद्रा-विशेषज्ञ डा० नैथानील क्लीटमन ने मनुष्यों को मोटे तौर पर दो वर्गों में बाँटा है– (१) प्रभातप्रिय और (२) संध्याप्रिय। प्रभातप्रिय जरा जल्दी उठते हैं और सबेरे चुस्ती से काम करते हैं। कारण यह है कि, उनका शरीर जल्दी गर्म होने लगता है, सो वह जल्दी ठंडा भी हो जाता है। शाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होते-न-होते उनकी पलकें झपकने लगती हैं और जल्दी खाना खाकर वे बिस्तर की शरण लेते हैं। संध्याप्रिय लोगों का शरीर जरा देर में गर्म होता है। शाम के समय वे सबसे अधिक सक्रिय रहते हैं। रात में उनका दिमाग खूब दौड़ता है।

आप यदि जानना चाहें कि, प्रकृति से आप क्या हैं– संध्याप्रिय या प्रभातप्रिय, तो सात दिन तक रोज हर घंटे अपने शरीर का तापमान लेकर औसत निकाल लीजिए और देखिये कि, आपके शरीर का तापमान कब बढ़ना शुरू होता है और बढ़ते-बढ़ते कब वह चरम-बिंदु पर पहुँचता है। फिर, कब तक वह वहाँ रहता है और कब घटने लगता है। यदि दिन के ११ से ३ बजे तापमान सबसे अधिक रहता है, तो आप प्रभातप्रिय हैं। आपको जरा जल्दी उठना चाहिए और अपने अधिक महत्व-पूर्ण और मेहनत के काम ११ से ३ के बीच करने चाहिए। पर यदि आपका तापमान ४॥-५ बजे से लेकर ७-८ बजे तक सर्वाधिक रहता है, तो आप संध्या-प्रिय हैं। आपको अपने महत्वपूर्ण काम-काज उसी समय करने चाहिए।

स्वाभाविक रूप से उठने की प्रक्रिया काफी लम्बी होती है। जब आप का उठने का समय आता है, उसके पहले शरीर के अवयव धीरे-धीरे जागने लगते हैं। यह प्रक्रिया सोने की प्रक्रिया से उल्टे क्रम में होती है। दिमाग सबसे पहले सोता है, सो वह सबके बाद उठता है। शरीर की बड़ी-बड़ी मांस-पेशियाँ– टाँगों, पीठ और कंधों की– सबके बाद सोती हैं, सो वे सबसे पहले उठती हैं। उँगलियाँ, आदि उतनी जल्दी सचेत नहीं होतीं। इसीलिए नींद से उठने पर थोड़ी देर तक मनुष्य लड़खड़ा कर चलता है और उँगलियों से दक्षतापूर्वक काम नहीं कर सकता।

इंद्रियाँ भी धीरे-धीरे ही जागती हैं। सबसे पहले स्पर्श-शक्ति आती है, फिर सुनायी देने लगता है, फिर दीखता है और सबसे अंत में सूँघने की शक्ति लौटती है। इसलिए यह कहना गलत है कि काफी की खुशबू से मेरी नींद खुल गयी। वस्तुतः काफी की गंध के जो बादल आपके शयन-गृह में आये, उन्होंने पहले आपके नथुनों की स्पर्श-शक्ति को गुदगुदाया। वह काफी की गंध थी, यह तो आपने जागने के बाद जाना।

सोने और उठने का एक सामाजिक एवं पारिवारिक पहलू भी है। यदि आप बहुत देर से सोते हैं और बहुत देर से उठते हैं, तो स्वभावतः आपको घर के दूसरे लोगों से और खास कर अपने बच्चों से मिलने एवं बातें करने का अवसर कम मिलेगा ; क्योंकि जब वे सोते हैं, तब आप जागते हैं और जब वे जागते हैं, तब आप सोये होते हैं। जिन्हें शिकायत हो कि, वे बच्चों के साथ पर्याप्त समय नहीं बिता पाते, वे अगर एक घंटा पहले उठें, तो देखेंगे कि, जब मन तरोताजा हो, तब बच्चों से बातें कर वे कितना उल्लास पा सकते हैं!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यात्री

दीपक जलाते ही हमारे कर्तव्य की पूर्ति नहीं हो जाती है– हवा के झोंकों से दीपक कहीं बुझ न जाये, यह दायित्व भी हमें ओढ़ना पड़ता है। इसीलिए तो मौलाना रूमी ने कहा है– "मंजिल पा जाने पर तो पलक मारना भी गफलत में शुमार होता है।" शि० रा० फाटक ने प्रस्तुत कथा-कणिका में इसी सत्य के समर्थन का प्रयत्न किया है।

★

भयानक अंधेरी रात थी। 'साँय-साँय' करते घने जंगल में एक पेड़ के नीचे एक यात्री लेटा था। तभी एक पथिक आया। उसने पूछा–"आप कहाँ जानेवाले हैं?"

"मुझे ज्ञात नहीं। सोने दो मुझे।"

पथिक चुपचाप आगे बढ़ गया।

फिर, एक दूसरा राहगीर उधर आया। उसने भी उससे वही प्रश्न किया– "आपको कहाँ जाना है?"

प्रश्न सुन कर यात्री कुछ सोच में पड़ गया। उसका मानस चंचल हो उठा–"मैं कहाँ से आया हूँ और मुझे कहाँ जाना है?"

चैत्य का घंटा बजा-बजा कर यह बौद्ध स्थविर 'दिव्य यात्रा' के स्वर्ण-स्वप्न में आत्ममुग्ध है!

वह विचार में उलझा रहा और तब तक दूसरा राहगीर भी आगे बढ़ गया।

अब, एक तीसरा पथिक उधर से निकला। विचारमग्न यात्री को देख, उसने पूछा–"क्यों भाई, कहाँ जाना है?"

"कहाँ जाना है?" – उसने दुहराया – "दूर – बहुत दूर– एक देदीप्यमान लोक है। बस, मुझे वहीं जाना है।"

"ठीक है, मैं भी वहीं जा रहा हूँ। आओ, हम साथ ही चलेंगे।"

"नहीं, मुझसे चला नहीं जाता। मेरे पैर में काँटे चुभे हुए हैं।"

"राम-राम! लो भाई, यह काँटा लो। काँटे से ही काँटा निकलता है।" और,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काँटा देकर वह भी चला गया।

यात्री काँटे निकालने लगा। धीरे-धीरे उसने सारे काँटे निकाल डाले।

पीछे और भी राहगीर आ रहे थे। उनमें से किसी ने पूछा—"क्यों भाई, हमारे साथ आ रहे हो क्या?"

"नही भाइयो, मुझसे चला नही जाता। बहुत दिनों से खाना नहीं मिला।"

"ओह! यह लो लाठी और पेड़ से फल तोड़ कर क्षुधा शांत करो।"

वह फल तोड़ने लगा और राहगीर आगे बढ़ गये।

इतने में यात्रियों का एक दल और आ पहुँचा। दल के मुखिया ने पूछा—"आओ, हमारे साथ आ रहे हो?"

"नहीं भाई, मुझे बड़ी जोरों से प्यास लग रही है।"

उनमें से एक ने कहा— "उधर दक्षिण में एक फर्लांग पर एक निर्झर बह रहा है।"

तेजी से वह उस ओर भागा। जल पीकर उसके चेहरे पर उत्साह खेलने लगा।

अब, उस भयानक जंगल से वह आगे बढ़ा। कहीं-कहीं वन्य पशुओं को देख कर वह घबराया और वापस लौटने को ही था कि, उसे 'दूर एक देदीप्यमान लोक है' यह वाक्य स्मरण हो आया। दृढ़ निश्चय के साथ वह उसी समय अपने मार्ग पर अग्रसर हुआ।

ऐसे कई अवरोधों को उसे मार्ग में पार करना पड़ा।

कुछ देर बाद, सुदूर क्षितिज के उस पार, प्रकाश की एक हल्की-सी किरण उसे दृष्टि-गोचर हुई। खेतों में कार्यरत किसानों की मधुर तान उसे स्पष्ट सुनायी देने लगी। थोड़ी देर वह वहीं रुक गया और "वह देदीप्यमान लोक कैसा होगा?" उसका उत्तर चित्र-रूप में अपने अंतःचक्षु के सम्मुख देखने लगा।

उसने देखा—"उस लोक में धन-धान्य की विपुलता होगी। प्रत्येक घर में सुख और शांति का राज्य होगा। नैतिकता का हरण करनेवाले शहर वहाँ न होंगे। वहाँ स्वातंत्र्य-रवि की उज्ज्वल किरणें स्वच्छंदता से विहार कर रही होंगी। उस लोक के प्राणी सुखी जीवन का उपभोग कर रहे होंगे। उनमें पूर्ण एकता और प्रेम-भाव होगा। वे सभी पूर्णतया अपने उज्ज्वल ध्येय से प्रेरित होंगे।..... अहा! वह देदीप्यमान लोक!"

यात्री दुगुने उत्साह से आगे बढ़ने लगा। मंजिल पूरी हुई। उसे मार्ग में मिलनेवाले वे पथिक भी यहाँ मिले। उन्होंने उसका स्वागत किया— "देदीप्यमान लोक के नवीन नागरिक, तुम्हारा कल्याण हो! इस लोक की असाधारण दीप्ति से तुम प्रभासमान हो! पर तुम भी इस तथ्य को कभी मत भूलना कि, यह दीप्ति आत्म-ज्योति नहीं है—इसे अक्षुण्ण रखने का भार एकमात्र यहाँ के निवासियों पर है! इस दीप्ति की रक्षा करना हम सबका सामूहिक कर्तव्य है; क्योंकि इसके अभाव में यह लोक भी अंधकार के आवरण में ढँक जायेगा! तो वचन दो कि, यह दीप्ति तुम आजीवन अक्षुण्ण रखोगे! श्रम की पुत्री यह दीप्ति तुम्हारे जीते-जी कभी मद्धिम नहीं पड़ेगी!...."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृत पुरुष के साथ सहवास

वज्रयानी आख्यानों के अनुसार तंत्र-योग में प्रवीण कुमारियाँ मृत लामाओं का आह्वान करके उनके संसर्ग से संतानोत्पत्ति करती थीं। ये संतानें परम मेधावी एवं तेजस्वी हुआ करती थीं। रहस्यावरण में ओझल ये आख्यान तो आज वस्तुस्थिति के निकट नहीं हैं; किंतु विज्ञान ने इस प्रसंग में बहुत-कुछ सफलता प्राप्त कर ली है।

*

पिछले साल अखबारों ने इराक, पाकिस्तान, सूडान आदि देशों की क्रांतियों के समाचार तो जोर-शोर से छापे; परंतु एक बहुत बड़ी क्रांति का समाचार किसी अखबार के मुखपृष्ठ पर नहीं छपा। शायद इसका कारण यह था कि, इस क्रांतिकारी घटना का सम्बंध राज्य-शास्त्र से नहीं, अपितु जीव-शास्त्र से था। इस घटना की सूचना देते हुए पेरिस के विख्यात जीव-शास्त्री जीन रास्टेंड ने प्रकट किया है कि, एक महिला वैज्ञानिक ने कई वर्ष पहले मरे हुए अपने पति से गर्भ धारण किया और दो पुत्रों को जन्म दिया। उसके पति की मृत्यु कई वर्ष पूर्व एक मोटर-दुर्घटना में हो चुकी थी; परंतु उसके जो शुक्राणु ३० प्रतिशत ग्लिसरीन-मिश्रित घोल में, ११० डिग्री फारनहाइट तापमान में सुरक्षित रखे गये थे, उससे उसने गर्भ धारण किया।

प्रजनन-शास्त्र और समाज-शास्त्र की दृष्टि से देखें, तो यह घटना किसी विप्लव से कम नहीं है; क्योंकि अब तक के न्याय-शास्त्र, धर्म-शास्त्र और सामाजिक रीतियों एवं रूढ़ि-मान्यताओं का आधार यह विचार रहा है कि, संतानोत्पत्ति के लिए पुरुष और स्त्री का शारीरिक संयोग आवश्यक है। इस नये प्रयोग ने इस धारणा की जड़ें हिला दी हैं।

इस नये परीक्षण ने यह तो प्रत्यक्ष कर ही दिया है कि, मृत पति से पत्नी का और बगैर किसी पुरुष को देखे या स्पर्श किये किसी कुमारिका का गर्भवती होना सम्भव है, कुछ अन्य प्रयोगों से यह भी व्यक्त किया है कि, एक स्त्री के डिम्बों को दूसरी स्त्री के गर्भाशय में स्थानांतरित करके एक स्त्री का बच्चा दूसरी स्त्री के पेट से पैदा करना भी असम्भव नहीं है। यही क्यों, यह भी असम्भव नहीं है कि, स्त्रियों के ही अंडाशय में ऐसा परिवर्तन कर दिया जाये कि, कम-से-कम जीव-शास्त्रीय दृष्टि से वे अपने बच्चों के पिता भी स्वयं ही बन जायें। इस प्रकार, अब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ पुरुष भी हजारों बच्चों के पिता अनजाने ही बन सकते हैं।

ये सब बातें अभी कुछ समय पहले तक कोरी कल्पना प्रतीत होती थीं; पर अब विज्ञान ने उन्हें सर्वथा साध्य बना कर समाज, न्यायालय एवं धर्म के लिए बड़ी पेचीदी समस्याएँ खड़ी कर दी हैं।

एक उदाहरण लीजिये। न्यूयार्क की एक महिलाने अपने पति की अनुमति से कृत्रिम गर्भाधान करा कर एक पुत्र को जन्म दिया। पति-पत्नी, दोनों को पुत्र से बड़ा प्रेम था। परंतु आगे चल कर किसी कारण से इस दम्पति का विवाह-विच्छेद हो गया। न्यूयार्क की एक अदालत ने पति को अपने पुत्र से मिलते रहने का अधिकार किया; क्योंकि अदालत की दृष्टि में वह उस बच्चे का 'एक प्रकार से गोद लेनेवाला पिता' था। दूसरी ओर, पत्नी ने दावा किया कि, उसका पति उसके बच्चे का पिता हर्गिज नहीं है। उसका यह दावा ओक्लाहोमा की अदालत ने स्वीकार किया और कहा कि, बच्चा तो केवल उस महिला का है।

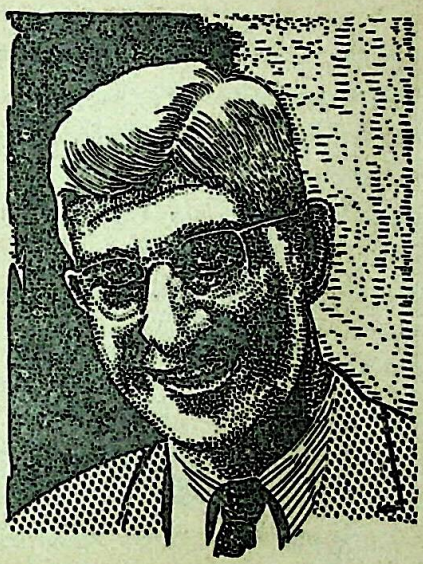

परमाणु-युग के उपरांत मानव-जाति जिस युग-परिधि में प्रवेश करेगी, वह होगी लौकिक एवं अलौकिक के बीच की शून्य परिधि, जहाँ मानव प्रजनन के 'वैचित्र्य' पर अधिकार प्राप्त करने में सफल होगा। —मेक्स देबूर

अब प्रश्न उठता है कि, उस बालक का पिता कौन है—वह अज्ञात-कुल-गोत्र पुरुष, जिसके शुक्राणुओं से कृत्रिम गर्भाधान किया गया, या वह डाक्टर, जिसने कृत्रिम गर्भाधान की क्रिया सम्पन्न की? सचमुच हमारे वर्तमान कानून-शास्त्र के पास इसका कोई उत्तर नहीं है। फिर भी, न्यायालयों को ऐसे मामलों पर निर्णय देना पड़ता है। कनाडा के एक न्यायाधीश ने ऐसे एक मामले में निर्णय दिया कि, पति की अनुमति के बिना कृत्रिम गर्भाधान कराना व्यभिचार है। इस पर कानून-शास्त्रियों में बड़ा तहलका मचा और ब्रिटेन के कानून-शास्त्र के प्रसिद्ध प्राध्यापक डा. ग्लैनविल विलियम्स तथा कुछ अन्य कानून-शास्त्रियों नें इस बात की आवश्यकता व्यक्त की कि, शरीर-विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों के अनुसार कानून

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी बदले जाने चाहिए। डा. विलियम्स न अपनी नवीन पुस्तक "द' सैंक्टिटी आव लाइफ ऐंड द' क्रिमिनल ला" में ऐसी अनेक समस्याओं पर विचार किया है।

कृत्रिम गर्भाधान दो प्रकार से किया जाता है (१) पति के शुक्राणु से और (२) किसी अन्य पुरुष के शुक्राणु से। अस्पतालों में इनके लिए क्रमशः 'ए. आइ. एच.' (आर्टिफिशियल इन्सेमिनेशन बाइ हस्बैंड) और 'ए. आइ. डी.' (आर्टिफिशियल इन्सेमिनेशन बाइ डोनर) संकेत प्रचलित हैं। अब तीसरी निधि है— पुरुष-शुक्राणुओं को भविष्य के लिए सुरक्षित रखना और आवश्यकता पड़ने पर उनका उपयोग करना। ग्लिसराल मिला कर शुक्राणुओं को वर्षों तक प्रसुप्त अवस्था में रखा जा सकता है। अयोवा (अमेरिका) में इस नूतन वैज्ञानिक विधि से रखे गये शुक्राणुओं से कई महिलाओं को गर्भाधान कराया गया है।

शुक्राणुओं को सुरक्षित और सजीव रखने की विधि निकल आने से अब शुक्राणु-कोष स्थापित करने की भी सम्भावना बढ़ चली है। यों, सुनने में यह बात वाहियात-सी जान पड़ सकती है। परंतु यदि परमाणु-युद्ध आरम्भ हो जाये, तो सम्भव है कि, सभी राष्ट्रों को अपनी अगली संतान को परमाणु-विकिरण से पैदा होनेवाले भीषण वंशानुगामी रोगों से बचाने के लिए शुक्राणु-कोष जैसी ही कोई व्यवस्था करनी पड़े। इससे देश के सब स्वस्थ युवकों के मोर्चे पर चले जाने पर भी बच्चों की जन्मसंख्या नहीं घटेगी और जो लोग "ओलिगोजूस्पर्मिया" (वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या कम होने की शिकायत) के कारण निपूते हैं, वे भी पिता बन सकेंगे।

परंतु यह बात निश्चित है कि, यदि इस प्रकार की संतानोत्पत्ति प्रचलित हो जाये और हमारे वर्तमान विवाह और उत्तराधिकार-सम्बंधी कानून ज्यों-के-त्यों बने रहें, तो तरह-तरह की समस्याएँ खड़ी हो जायेंगी। अतः हमारी सामाजिक मान्यताओं को बदलना आवश्यक होगा। जरा कल्पना कीजिए कि, यदि चिकित्सक एक गर्भिणी के पेट से शुक्राणु-युक्त स्त्री-बीज किसी दूसरी महिला के गर्भाशय में रख दे, तो क्या होगा। वैज्ञानिक दृष्टि से अब ऐसा पूर्णतः सम्भव है। साउथ वेस्ट रिसर्च इंस्टीटचूट (सान एण्टोनियो, टेक्सास राज्य, अमेरिका) में एक ऊँची नस्ल की गाय से इस प्रकार एक वर्ष में २० बच्चे पैदा कराये गये हैं। हर बार उसके गर्भ से भ्रूण को निकाल कर दूसरी गाय के गर्भाशय में रख दिया जाता था। कनेक्टिकट राज्य के न्यू हेवन-स्थित कुत्तों के प्रसिद्ध अस्पताल तथा इंग्लैण्ड के कैम्ब्रिज-विश्वविद्यालय के कृषि-कालेज की पशुशाला में जीव-शास्त्रियों ने प्राणियों के सम्पूर्ण अंडाशय को निकाल कर दूसरे पशुओं में लगा दिया है। और पाया है कि, स्त्री-बीज या भ्रूण का संक्रमण करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्पन्न किया गया पशु नस्ल आदि में अपने मूल पुरुषों के ही अनुरूप होता है।

वैसे मनुष्यों में दूसरे के गुर्दे, आदि अवयव लगाने के आपरेशन कठिन होते हैं और उनका परिणाम भी उतना संतोष-जनक नहीं होता। परंतु दूसरों के अंडाशय किसी दूसरे के शरीर में लगाने के प्रयोग पशुओं में इतने सरल और सफल रहे हैं कि, चिकित्सकों का अनुमान है, आँख की 'कार्निया' अथवा शरीर की अन्य हड्डियों की तरह ही आसानी से अंडाशयों को भी स्त्रियों में अन्यसंक्रमित किया जा सकेगा।

पर जीव-शास्त्रियों को इतने से ही संतोष नहीं है। वे और अधिक क्रांतिकारी परीक्षणों में लगे हैं। वे स्त्री के बीजाणुओं की रासायनिक रचना को ही बदल देने का प्रयत्न कर रहे हैं। सामान्यतः गर्भाधान के लिए शुक्राणु और स्त्री-बीज का मिलन आवश्यक है। ये दोनों मिल कर बराबर संख्या में 'क्रोमोसोम' (मनुष्य में १२-१२) प्रदान करते हैं, जिससे संतान का विकास होता है। अब यह कोशिश हो रही है कि, स्त्री-बीज को ही इस प्रकार का बना दें कि, वह शुक्राणु के हिस्से के 'क्रोमोसोम भी स्वयं मुहैया कर ले। पशु-जगत् में बहुत बिरले तौर पर कभी-कभी ऐसा हो जाता है ; पर क्यों होता है, इसका रहस्य अब तक कोई नहीं जान सका है। जीव-शास्त्री जाँ रोस्तांद का तो कहना है कि, विज्ञान कुछ ही समय बाद यह सम्भव कर देगा कि, स्त्री अपने गर्भाधान के लिए आवश्यक संख्या में क्रोमोसोम स्वयं तैयार कर ले, अर्थात् अपने बच्चों का पिता भी स्वयं ही बन जाये।

इसके अतिरिक्त कुछ प्रयोगशालाएँ 'पित्रैक' (जीनी) में रासायनिक परिवर्तन करके उसके गुण-धर्मों को बदलने के प्रयत्न में लगी हैं। इसके कुछ प्रयोग तो बड़े ही आश्चर्यजनक और रोचक हैं। कैलिफोर्निया-विश्वविद्यालय में डा. मैन्यु-एल गोर्डन ने खरगोश के शुक्राणुओं का विश्लेषण करके उन्हें "उद्द्वार" और "निर्द्वार" (एनोड और कैथोड) इन से वर्गों में बाँटा है और नर खरहों की उत्पत्ति बढ़ाने में सफलता पायी है।

फ्रांस में एक नस्ल की बतखों के शरीर का "डिआक्सिराइबोनूक्लिक" अम्ल (जिसे प्रायः "डी. एन. ए." कहा जाता है और जो आनुवंशिक गुण-धर्मों का नियंत्रण करता है, निकाल कर एक दूसरी नस्ल की बतखों के शरीर में प्रवेश करा कर उनकी नस्ल ही बदल दी गयी है। वाशिंग्टन-विश्व-विद्यालय में रासायनिक विधि से 'डी. एन. ए.' तैयार भी किया गया है। पंद्रह-बीस बूँद 'डी. एन. ए.' लाखों बच्चों के आनुवंशिक गुण-धर्मों को बदल देने के लिए काफ़ी है।

और, ये सब परीक्षण, प्रयोग और अन्वेषण मनुष्य के हाथ में जो शक्ति दे रहे हैं, वह परमाणु-शक्ति से कम भयानक नहीं है। उसका सदुपयोग और समुचित नियंत्रण करने के लिए अत्यंत संयम और विवेक आवश्यक होंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुसैनखाँ टुकड़िया

मूर्ति-भंजकों की अति लम्बी परम्परा में हुसैनखाँ टुकड़िया का मूढ़ाग्रह भी किसी से कम नहीं था। राहुल सांकृत्यायन-लिखित इस लेख में इस 'बुत-शिकन' के व्यक्तित्व को सविस्तर चित्रित किया गया है।

भारत में मूर्ति-ध्वंसक बहुत आये-गये; लेकिन उनमें से एकाधिक के ही कार्य से हम परिचित हैं। हुसेन खाँ टुकड़िया इन्हीं में से था। कुमाऊँ गढ़वाल में आज जो मूर्तियाँ टूटी-फूटी मिलती हैं वे टुकड़िया का ही काम हैं। टुकड़िया मूर्तियों को तोड़ने तथा मंदिरों और धन को लूटने को अलमोड़ा में सोमेश्वर बैजनाथ, बागेश्वर, द्वाराहाट सभी जगह, पहुँचा। जोशीमठ, बदरीनाथ, तपोवन, केदारनाथ में गढ़वाल की मूर्तियों और मंदिरों को भी नष्ट-भ्रष्ट करनेवाला टुकड़िया ही था। उससे पहले शायद ही कोई मुसलमान विजेता पहाड़ों के भीतर इतनी दूर तक इस काम के लिए गया हो। यह निश्चित ही है कि, अपने घर से खर्च करके यदि जहादियों के इन पहाड़ों में मूर्तियों को तोड़ कर सवाब हासिल करना होता, तो वे कभी नहीं जाते। असल में वहाँ की अपार सम्पत्ति का लोभ ही उन्हें खींचकर ले गया। वे वहाँ की मूर्तियों को गला कर उनके दरब को बेच देते थे, जेवर और नकद पैसे ले लेते थे, मंदिर में लकड़ी जमा कर आग लगा देते थे और मूर्तियों को हथौड़ी से तोड़ देते थे। नाक पर उनका हथौड़ा पहले चलता था।

टुकड़िया ने जितनी मूर्तियों को तोड़ा, शायद ही किसी ने उतनी संख्या में उन्हें तोड़ा होगा। केदारनाथ के रास्ते पर मैखंडा में हरगौरी की असाधारण सुन्दर खंडित मूर्ति को देखकर मन क्षुब्ध हुए बिना नहीं रहता। कैसे उस आततायी का हाथ इस सुंदर कलाकृति पर उठा होगा?

यह टुकड़िया कौन था? अकबर का एक सम्मानित उच्च अधिकारी, यह जान कर और भी आश्चर्य होता है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि, उसके इन महापापों में अकबर की सहानुभूति थी। इससे यही मालूम होता है कि, अकबर को कैसे लोगों के बीच में रह कर अपना काम करना पड़ा था।

टुकड़िया एक आदर्श मुस्लिम वीर था। हुमायूँ हिन्दुस्तान की ओर लौटते हुए अफगानिस्तान पहुँचा। उसी समय हुसेन खाँ नामक अफगान बैरम खाँ खान-खाना का नौकर हो हुमायूँ के साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहने लगा। कंधार की विजय में उसने अपनी बहादुरी के जौहर दिखलाये। उसका यश बढ़ा। हुमायूँ के एक पठान सरदार मेंहदी कासिम खाँ की लड़की से उसका व्याह हो गया। मेंहदी उसका मामा भी था। हुमायूँ के बाद अकबर गद्दी पर बैठा। अब भी पंजाब की तरफ सिकंदर सूर मुगलों से लड़ रहा था। मानकोट के किले में उसके साथ मुकाबला हुआ। भाई हसन खाँ मारा गया। हुसेन खाँ की बहादुरी की दाद अकबर और सिकंदर दोनों देते रहे। ९६५ हिजरी (१५५७ – १५५८ ई.) में विजय के बाद अकबर दिल्ली की तरफ लौटा। हुसेन खाँ को उसने तब पंजाब का हाकिम बना दिया।

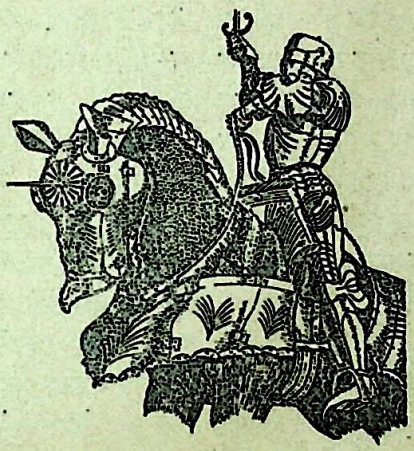

इस्लाम का यूरोप पर आक्रमण

लाहौर में महमूद गजनवी के समय से ही मुसलमानी शासन था। मालिकों की देखादेखी हिन्दुओं को भी दाढ़ी रखने का शौक था। एक लम्बी दाढ़ीवाला आदमी हकिम के दरबार में आया। हुसेन खाँ सम्मान के लिए उठ खड़ा हुआ। उससे कुशल-मंगल पूछने लगा। पीछे मालूम हुआ कि, वह हिन्दू था! उसने हुक्म दे दिया कि, अबसे हरेक हिन्दू अपने कंधे पर एक रंगीन कपड़े का टुकड़ा टँकवा लिया करे। लाहौर के सारे हिन्दू अपने कंधों पर टुकड़ा टँकवाने लगे और उन्होंने उसका नाम 'टुकड़िया' रख दिया। तब से वह इसी नाम से महशूर हुआ।

अगले साल टुकड़िया अकबर के पास आगरा आया। उसे रणथंभौर के युद्ध में भेजा गया। इसी समय अब उसके आका बैरम खाँ का जमाना बिगड़ा। टुकड़िया लड़ाई छोड़ ग्वालियर जा वहाँ से मालवा जाना चाहता जा। खानखाना के बुलाने पर वह उसके पास पहुँच गया और उसके लिए बराबर लड़ता रहा। पर खानखाना के दुश्मनों की पीठ पर अकबर का हाथ था। कई अमीरों के साथ हुसेन खाँ पकड़ा गया। अकबर हुसेन खाँ की बहादुरी को जानता था, इसलिए पहले उसे उसके साले के हाथ में रखा और फिर पटियाली इलाके की जागीर दे दी– वही पटियाली, जहाँ पर कि फारसी के महान् कवि अमीर खुसरो पैदा हुए थे। ९७४ हिजरी (१५६६–१५६७ ई.) में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके ससुर और मामा मेंहदी कासिम हज करने चले। टुकड़िया पहुँचाने के लिए समुद्र-तट तक गया। लौटते वक्त देखा कि, इब्राहिम हुसेन मिर्जा आदि तैमूरी शाहज़ादों ने अकबर के खिलाफ बगावत की है। वह स्वामी के लिए लड़नेवालों में शामिल हो गया। पर पाँसा उल्टा पड़ा। इब्राहिम ने समझा-बुझाकर विरोधियों को आत्म-समर्पण करने के लिए तैयार किया। टुकड़िया भी बाहर आया। उसे शाहज़ादे के पास जाने के लिए कहा गया, लेकिन उसने स्वीकार नहीं किया—वह अपने बादशाह के बागी को कैसे सलाम करता? अकबर ने पहले ही उसके बारे में सुन लिया था। आने पर उसे तीन हजारी का दर्जा और शमशाबाद इलाके की जागीर दी गई। टुकड़िया को मजहब ने अंधा बना दिया, नहीं तो उसमें न लोभ था और न शाहखर्ची की कमी थी। इतनी बड़ी जागीर मिलने पर भी उसका हाथ तंग रहता था।

तीन साल बाद ९७७ हिजरी (१६६९–७०ई०) में टुकड़िया को लखनऊ की जागीर मिली। इसी समय उसका ससुर हज करके लौटा। अकबर ने उसे लखनऊ की जागीर दे दी। हुसेन खाँ इस जागीर को छोड़ना नहीं चाहता था। मामा-भतीजे, ससुर-दामाद में जागीर के लिए मनमुटाव हो गया। बादशाह ने जागीर ससुर को दे दी। टुकड़िया ने ससुर पर बुखार निकालने के लिए अपने चचा की बेटी से दूसरा ब्याह कर लिया। नई बीबी को अपने पास पटियाली में रखा और कासिम खाँ की बेटी को उसके भाइयों के पास खैराबाद (जिला सीतापुर) में भेज दिया।

जागीर हाथ से निकलने का उसके दिल पर बड़ा सदमा हुआ। निश्चय किया कि, अब बादशाह की नौकरी करने की जगह अल्ला मियाँ की नौकरी करूँगा। अल्ला मियाँ आसमान से भन्ना तो नहीं टपकाते, और टुकड़िया कोई दुआ करने-वाला फकीर भी नहीं था। उसने अब काफिरों को मारते-लूटते जहाद का कर्तव्य पूरा कर अल्ला को खुश करना निश्चय किया। उसने सुना था, कुमाऊँ गढ़वाल के पहाड़ों में ऐसे मंदिर हैं जो चाँदी-सोने की ईंटों से बने हैं। वहाँ अपार धन है। उसने जहादियों को भर्ती किया। लूटके माल के लिए कितने ही मुसलमान तैयार थे। सैकड़ों धर्मवीर टुकड़िया के झंडे के नीचे जमा हो गये। तब १५७१–७२ ई० में वह इस फौज के साथ पहाड़ के भीतर घुसा।

पहाड़ के लोगों ने थोड़ा-बहुत मुकाबला किया, पर उनके पास इतने अच्छे-अच्छे हथियार नहीं थे। वे अपने गाँवों को छोड़ कर भाग गये। हुसेन खाँ टुकड़िया अपने जहादियों को लिये भीतर बढ़ा। जाते-जाते बर्फानी स्थानों में पहुँच गया। शायद यह गरब्यां नया जोहार होगा। सुना था, वहाँ सोने-चाँदी की खानें और तिब्बत से कस्तूरी और रेशम आते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मगर जहादियों को लालच बुरी बला साबित हुई। बर्फ पड़ने लगी। खाने के लिए घास के पत्ते भी नहीं थे। भूख के मारे प्राण जाने लगे। टुकड़िया ने बहुत हिम्मत बढ़ाई। सोने-चाँदी की ईंटों की बातें सुनाईं, लेकिन बर्फ के सामने जहादियों की हिम्मत नहीं हुई। वे टुकड़िया के घोड़े की लगाम पकड़ कर ज़बर्दस्त नीचे खींच लाये। अब टुकड़िया की पल्टन की हालत वही थी, जो मास्को से लौटते नैपोलियन की हुई। पहाड़ के लोग उसका रास्ता रोके थे। वे विष से बुझे बाणों को चलाते पत्थरों की वर्षा करते। बहुत-से जहादी इस दुनिया को छोड़ कर स्वर्ग पहुँच गये। कितने ही घाव के विष के कारण पाँच-पाँच छः-छः महीने में घुल कर मरे। हुसेन खाँ सही-सलामत नीचे उतरा। जहाद का नशा कुछ ठंडा हो गया था, पर पूरी तौर से नहीं।

अब हुसेन खाँ अकबरी दरबार में पहुँचा। मालूम नहीं, अपने जहाद की दास्तान को किस तरह सुनाया। वह पहाड़ियों पर जला-भुना था। शायद अकबर की भी कुमाऊँ-गढ़वाल के ऊपर नजर थी। टुकड़िया ने कांट गोला (शाहजहाँपुर-पीलीभीत) का इलाका जागीर के लिए माँगा। झगड़ेवाले इलाके को अकबर हमेशा देने के लिए तैयार ही रहता था। टुकड़िया वहाँ पहुँचा। उसने पहाड़ में घुस कर अपनी जहाद जारी रखी। जहादियों की क्या कमी हो सकती थी, जबकि जानेवालों को लूट की अपार सम्पत्ति मिलनेवाली थी। मुगल शाहजादों में इब्राहिम हुसेन ने अकबर को बहुत तंग किया था। वह हिन्दुस्तान (उत्तर प्रदेश) में आकर तहलका मचाये हुए था। टुकड़िया को खबर लगी, तो वह लड़ने गया। आँख में गोली लगी। प्रसिद्ध इतिहासकार मुल्ला अब्दुल कादिर बदाऊँनी उसके पास वर्षों रहे। बदाऊँनी भी इस्लामी जहाद के दिलदादा थे। वे अपने मुरब्बी की प्रशंसा करते नहीं थकते। गोली लगते समय के बारे में लिखते हैं—"मैंने पानी छिड़का, आस-पास के लोगों ने जाना कि, रोजा रखने की कमजोरी है। मैंने घोड़े की लगाम पकड़ कर चाहा कि, पेड़ की ओर में ले जाऊँ। आँख खोली। गुस्से की नजर से मुझे देखा और झुंझला कर कहा—"लगाम पकड़ने की क्या बात है। बस रन में उतर पड़ो।" उसे वहीं छोड़ कर सब उतर पड़े। घमासान लड़ाई हुई। दोनों तरफ से इतने आदमी मारे गये, जिनकी गिनती नहीं की जा सकती। शाम के समय इस छोटी-सी टुकड़ी पर अल्ला ने रहम किया, विजय की हवा चली। दुश्मन सामने से इस तरह हटने लगे, जैसे बकरियों के रेवड़ चले जाते हैं।

विजय प्राप्त कर बूढ़ा टुकड़िया कांटगोला लौट गया। इलाके का कुछ प्रबंध करने में लगा था इसी समय सुना कि, बादशाह का बागी शाहजादा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुसेन मिर्जा सम्भल से १५ कोस पर है। वह पालकी पर बैठ कर चल पड़ा। मिर्जा बाँसबरेली चला गया। वह टुकड़िया की बहादुरी को अच्छी तरह जानता था। हुसेन खाँ आधी रात को सम्भल पहुँचा। नगारे की आवाज सुन कर अकबर के सरदारों ने समझा, मिर्जा आ गया। सब किले का दरवाज़ा बंद कर भीतर बैठ गये। किले के नीचे से आवाज दी गई हुसेन खाँ तुम्हारी मदद के लिए आया है तब उनकी जान में जान आई। यह लोग शाहजादा (मिर्जा) के पीछे गंगा-पार आहार (बुलंदशहर) की ओर दौड़े और मिर्जा आमरोहा को लूटते चौमाला के घाट पर गंगा पार हो लाहौर की तरफ चला। टुकड़िया ने गढ़वाल कुमाऊँ में जी-भर लूटमार और खून-खराबी करके पुण्य अर्जन किया था।

टुकड़िया फिर अपनी कांटगोला जागीर में आ गया। ९८२ हिजरी (१५७४–७५ ई.) में भोजपुरी इलाका बिगड़ा हुआ था। अकबर उसके लिए परेशान था और वहाँ वह दौरा कर रहा था। टुकड़िया के बारे में पूछा, तो मालूम हुआ कि, वह अवध में लूट-मार करता फिर रहा है। अकबर बहुत नाखुश हुआ। अकबर दिल्ली पहुँचा। उस समय टुकड़िया पटियाली और भोगाँव (मैनपुरी जिला) में आया था, जहाँ से दरबार में पहुँचा। पता लगा कि, मुजरा करने का हुकुम नहीं है। अफसर को हुकुम था कि, उसे शाही दौलतखाने की सीमा से बाहर निकाल दो। ऐसे जालिम के लिए यह दंड बहुत कम था, इसमें शक नहीं। यह खबर सुन कर टुकड़िया ने अपने हाथी, घोड़े और सभी सामान को लुटा दिया–कुछ हुमायूं के मकबरे के मुजावरों को दे दिया, कुछ मदरसों को, और कुछ गरीबों को। बुढ़ापे में गले में कफनी डालकर फकीर बन कहने लगा–"जिसने मुझे नौकर रखा था, जो मेरा कदरदान था, मैं सब कुछ उसी (हुमायूँ) की कब्र पर झाड़ दूँगा।"

अकबर को खबर लगी, उसको दया आयी और टुकड़िया को कांटगोला और पटियाली की एक करोड़ बीस लाख दाम की जागीर दी। ९८२ हजरी (१५७४–७५ ई.) में फिर टुकड़िया सोने-चाँदी की खानों और सोने-चाँदी के मंदिरों को लूटने के लिए कुमाऊँ-गढ़वाल की भीतरी पहाड़ियों की ओर चला। तराई में बसंतपुर में उसके पहुँचते ही भाग कर जमींदारों और करोड़ियों ने दरबार में शिकायत की कि, हुसेन खाँ बागी हो गया है। बसंतपुर की लड़ाई में टुकड़िया के कंधे पर भारी जख्म लगा। अब वह जहाद करने लायक नहीं था। इसलिए पटियाली में अपने बालबच्चों के पास आने के लिए गढ़मुक्तेश्वर पहुँचा। अपने पुराने दोस्त सादिक मुहम्मद मजअन खाँ के पास जा वह उससे बादशाह के पास सिफारिश करवाना चाहता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अबुल फजल ने 'अकबरनामा' में लिखा है कि, हुसेन खाँ मुल्क लूटता फिरता था। बादशाह सुन कर दुबारा नाराज हुआ और उसके खिलाफ एक सरदार को बड़ी सेना के साथ भेजा। अब हुसेन खाँ को कुछ होश आया। घाव से भी कुछ दिल टूट गया था। वह रास्ते पर आया और जो गुंडे साथ में थे, वे बादशाही फौज की खबर सुन कर भाग गये। हुसेन खाँ ने सोचा, बंगाल में जाकर अपने पुराने दोस्त मनअमर खाँ से मिले और उसके द्वारा दरबार में क्षमा प्रार्थना करें। जब वह गढ़ मुक्तेश्वर के घाट से नाव पर सवार होकर चला था, उसी समय बारा के स्थान में पकड़ लिया गया।

घाव खतरनाक था। बादशाही जर्राह पट्टी बदलने आया। बित्ते-भर सलाई भीतर घुस गयी। वह उसे भीतर से कुरेद कर जख्म का पता लगा रहा था। टुकड़िया की त्योरी पर बल तक नहीं था। वह बेपरवाही के साथ मुस्कराता बातें कर रहा था। इसके तीन-चार दिन बाद टुकड़िया मर गया। उसे पटियाली में लाकर दफनाया गया। मुल्ला बदाऊँनी ने अपनी किताब में उसके लिए बहुत आँसू बहाये। तारीफ करते कहते—"वह पैगम्बर के जमाने में होता, तो उनके सहाबों (दोस्तों) में होता। जब वह लाहौर में हाकिम था, तो भिश्ती लोगों से सुना गया कि, संस्कार की सारी नियामतें मौजूद थीं, लेकिन वह जौ की रोटी खाता था—सिर्फ इस खयाल से कि, जब रसूल ने हर स्वाद के खाने नहीं खाये थे, तो मैं क्यों खाऊँ? वह पलंग और नरम बिछौनों पर नहीं सोता था, क्योंकि हजरत मुहम्मद ने इस तरह आराम नहीं किया, फिर मैं ऐसे आराम का आनन्द कैसे उठाऊँ? उसने हजारों मस्जिदों और मकबरों का निर्माण और मरम्मत करायी। उसने कसम खायी थी कि, रुपया जमा न करूँगा। कहता था कि, रुपया मेरे पास आता है, जब तक उसे खर्च नहीं कर डालता, वह बगल में तीर की तरह गड़ता है। इलाके पर से रुपया आने नहीं पाता; वहीं चिट्ठियाँ पहुँच जाती थीं और लोग रुपये ले जाते थे।"

टुकड़िया के रूप के बारे में उसके कृपापात्र मुल्ला बदाऊँगी बतलाते हैं—"वह बहुत लम्बा-तगड़ा, शान-शौकतवाला बड़ा दर्शनीय जवान था। मैं हमेशा युद्ध क्षेत्र में उसके साथ नहीं रहा। पर कभी-कभी जंगलों की लड़ाइयों में मौजूद था। दरअसल जो बहादुरी मैंने उसमें पायी, वह पहलवानों की पुरानी कहानियों में ही सुनी जाती है।"

मरते समय उस पर डेढ़ लाख रुपये से अधिक कर्ज था। उसका बेटा युसुफ खाँ जहाँगीर के दरबार में अमीर था कुमाऊँ और गढ़वाल के मंदिरों और मूर्तियों का ध्वंस करनेवाला यही टुकड़िया था, जिसके सारे गुण मजहबी पक्षपात के कारण दोष में बदल गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मछलियों के कान

कन्फ्यूशस के सामने एक दिन एक तार्किक आया और पूछने लगा—"अच्छा, बताइये! जो देखता है, वह दिखता भी है या नहीं?" कन्फ्यूशस मौन मुस्कराये और उक्त तार्किक को आदमकद शीशे के सामने ले गये। 'मछलियाँ सुनती हैं या नहीं?' इस प्रश्न के उत्तर में शीला तिवारी ने भी यहाँ, लगता है, कन्फ्यूशस का अनुकरण किया है! उन्होंने भी पाठकों को प्रयोग के आइनों के सामने खड़ा कर दिया है।

★

मछलियों में आवाज सुन सकने की क्षमता है अथवा नहीं, यह प्रश्न आज जीव-शास्त्रियों के लिए बड़े विवाद का प्रश्न बना हुआ है। अधिकांश लोगों का अनुमान है कि, चूँकि मछली के शरीर में कान की भाँति, या अन्य किसी प्रकार का, कोई ध्वनि-ग्राहक यंत्र है ही नहीं; अतः वह कोई आवाज नहीं सुन सकती। उनका विश्वास है कि, मछलियाँ बधिर होती हैं। पर यह विश्वास पूर्णतः सही नहीं है। वस्तुतः मछलियों में आवाज सुनने की क्षमता है; पर इस तथ्य का निश्चित रूप से पता चले अभी बहुत समय नहीं हुआ है। पहले जीव-शास्त्रियों का भी ऐसा ही विश्वास था कि, मछलियाँ बहरी होती हैं; पर आज अधिकांश जीव-शास्त्री ऐसा नहीं मानते।

कहा जाता है कि, बहुत समय पहले आस्ट्रिया के एक मठ के तालाब में एक ज़ाति-विशेष की एक मछली पली हुई थी। जब कोई मठवासी उस मछली को भोजन देने आता, तब वह अपने साथ एक छोटी-सी घंटी भी लाया करता था। जब वह तालाब के किनारे खड़ा होकर घंटी बजाता, वह मछली जहाँ भी होती, तत्काल तैर कर उस मठवासी की तरफ किनारे आ जाती। लोगों की ऐसी धारणा थी कि, वह मछली घंटी की आवाज सुन सकती है। किंतु एक जीव-शास्त्री ने जब यह अद्‌भुत समाचार सुना, तब वह तुरत वास्तविकता का पता चलाने के लिए मठ में पहुँचा। वहाँ उसने कई दिनों के अध्ययन के बाद यह पता लगाया कि, जब भी कोई मठवासी तालाब के किनारे जाता था, तभी मछली उसकी तरफ आ जाती थी, चाहे वह घंटी बजाये या न बजाये। मछली मठवासी को आते देखती थी, इसीलिए उसकी तरफ तैर कर आ जाती थी। अतः उस जीव-शास्त्री ने फतवा दिया कि, वस्तुतः मछली सुन नहीं सकती—केवल एक विशेष प्रकार के लम्बे चोगे धारण करनेवाले मठवासियों को देख कर ही वह उनकी तरफ आ जाती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। इस दृष्टांत-विशेष में मछली के सुन सकने की क्षमता में संदेह करने की गुंजायश ही नहीं बल्कि पूरा मौका भी मिल जाता है ; पर इस दृष्टांत से ही एक अन्य बात निश्चित हो जाती है—वह यह कि, मछलियों को किसी खास काम के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। मछलियों को खाने की किसी चीज का पुरस्कार अथवा प्रलोभन देकर किसी सर्कस के जानवर की तरह शिक्षित किया जा सकता है।

उपर्युक्त घटना में तथ्य यह था कि, मठवासियों ने अनजाने ही उस मछली की इस बात की शिक्षा दे दी थी कि, जब भी वह किसी लम्बे चोगाधारी आदमी को तालाब की तरफ आते देखे, तो फौरन तैरती हुई उसकी तरफ आ जाये। मछली को इस बात का ज्ञान हो गया था कि, चोगाधारी किसी व्यक्ति के तालाब की तरफ आने का अर्थ है, कुछ खाने की वस्तु की प्राप्ति। घंटी का सुनना-न-सुनना उसके लिए कोई विशेष अर्थ नहीं रखता था। पर इसी प्रशिक्षण की बात लेकर वैज्ञानिकों ने इस सत्य का रहस्योद्घाटन किया कि, मछलियाँ सुन सकती हैं।

चीन की मत्स्य-कन्या

वैज्ञानिकों का यह प्रयोग इस रूप में कार्यान्वित हुआ। एक जलाशय में एक मछली पाली गयी। जब भी इस मछली को भोजन दिया जाता था, उससे ठीक पहले एक सीटी जरूर बजायी जाती थी। पाँच बार मछली के साथ यही प्रयोग किया गया और जब वह निकट आयी, तब सीटी बजाने के फौरन बाद उसे खाने की चीज दी गयी। छठी बार जैसे ही सिटी बजायी गयी, वैसे ही वह मछली तैर कर किनारे आ गयी। इसके बाद भी लगभग ३० बार यही प्रयोग किया गया। यहाँ यह शंका की जा सकती है कि, जो आदमी प्रयोग कर रहा था, उसे मछली पहचान गयी थी और उसके आने का अर्थ वह यह समझने लगी थी कि, वह कुछ-न-कुछ खाने को लाया होगा। पर यह शंका निर्मूल है ; क्योंकि जो आदमी यह प्रयोग कर रहा था, वह एक पर्दे की आड़ में बिल्कुल स्थिर खड़ा होकर सीटी बजाता था। इससे यह बात बिल्कुल निश्चित हो जाती है कि, मछली को उस आदमी की उपस्थिति का कोई ज्ञान नहीं हो पाता था और वह सीटी की आवाज सुन सकती थी।

उपर्युक्त प्रयोग मिनी (एक जाति-विशेष का नाम) नामक मछली के साथ गया था। उसके बाद ऐसे प्रयोग अन्य प्रकार की मछलियों के साथ भी किये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गये और यह निश्चित हो गया कि, अधिकांश मछलियों में आवाज सुन सकने की क्षमता होती है। मछलियों को न केवल सीटी की आवाज, बल्कि वाद्य-संगीत का संकेत करके किनारे बुलाने का प्रयोग भी सफलतापूर्वक किया गया है। बेला बजा कर मछलियों को बुलाने का प्रयोग काफी सफल रहा है, और इस प्रकार मछलियों की ध्वनि-ग्राहकता के सम्बन्ध में बहुत-सी अज्ञात बातों का भी पता चला है।

सर्वविदित है कि, स्वर सात होते हैं। आदमी एक स्वर से दूसरे स्वर का अंतर बड़ी सरलता से सुन-समझ सकता है। पर क्या मछलियाँ भी स्वरों के अंतर को समझ सकती हैं? अगर नहीं, तो कैसा स्वर-भेद उनकी समझ में आता है? इस बात का पूरा पता लगाने के लिए ही वैज्ञानिकों ने यह प्रयोग किया।

एक तालाब में पली हुई मछलियों को इस बात का अभ्यास कराया गया कि, बेला जब एक विशेष स्वर में बजे, तब वे किनारे की तरफ आयें और भोजन प्राप्त करें। जब भी वह विशेष स्वर बजता, मछलियाँ फौरन भोजन के लिए किनारे आ जातीं। उनकी समझ में आ गया कि, इस स्वर-विशेष का अर्थ है—'आओ, खाना तैयार है।' जब मछलियों को इसका अभ्यास हो गया, तब उसी वेला पर वही धुन एक स्वर चढ़ा कर बजायी गयी। मछलियाँ फिर किनारे आयीं। लेकिन इस बार उन्हें भोजन नहीं दिया गया, बल्कि उन्हें उँगली की हल्की थपकियाँ लगा कर सजा दी गयी। पहले स्वर में जब धुन बजायी जाती थी, तब मछलियों को खाना दिया जाता था और दूसरी धुन में थपकी के रूप में सजा। यह बात अनेक बार दोहरायी गयी। धीरे-धीरे तालाब की उन मछलियों को दोनों स्वरों के अंतर का और उनके भिन्न परिणामों का ज्ञान हो गया।

इस प्रकार, यह प्रयोग काफी सफल रहा। पर इस प्रयोग ने यह बात भी स्पष्ट कर दी कि, मछलियों में ध्वनि अथवा सुरों के सूक्ष्म उतार-चढ़ाव का अंतर पता लगाने की वैसी क्षमता नहीं है, जैसी आदमी में होती है। इसका कारण यही है कि, मछलियों के कान उतने अधिक

आँख-कान

कान और आँख के प्रेम को भला कौन नहीं जानता। किंतु आरम्भ में दोनों में बड़ा वैमनस्य था। आँख कहती थी—"मेरा अनुभव ही पूर्ण सत्य है।" कान कहता था—"नहीं, जो मुझे सुनायी पड़ता है, उसके सामने सब घटिया है।" कहते हैं कि, इस मतभेद को दूर करने के लिए ही ब्रह्मा ने अप्सरा रम्भा को बनाया—वह जितनी सुंदर थी, उतनी ही मधुर गायिका भी थी! —महाकवि भारती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकसित नहीं हैं, जितने हमारे हैं। उनकी रचना भी उतनी जटिल नहीं है, जितनी हमारी है। किंतु इसके बावजूद ध्वनि-भेद याद रखने की उनकी क्षमता अद्भुत और आश्चर्यजनक है। प्रयोग करने के महीनों बाद भी उन्हें वे दोनों स्वर स्मरण रहे, जिनका उन्हें अभ्यास कराया गया था। जब उस स्वर में धुन बजायी गयी, जिसके बाद उन्हें भोजन मिलता था, तब वे फौरन किनारे आ गयीं; किंतु जब स्वर की धुन बदल कर सजावाली कर दी गयी, तब वे किनारे नहीं आयीं।

मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि, मछलियों की सुनने की शक्ति लगभग उतनी ही अच्छी होती है, जितनी हमारी है। जो आवाजें हम सुन सकते हैं, उन्हें मछलियाँ भी सुन सकती हैं। अब वहाँ यह सवाल उठता है कि, यदि मछलियाँ इतनी हल्की आवाज सुन सकती हैं तब वे नदी-किनारे, अथवा तालाब में खड़े किसी व्यक्ति के चिल्लाने से डरतीं क्यों नहीं? इसका उत्तर यही है कि, मछली के लिए चिल्लाने की आवाज का कोई महत्त्व ही नहीं है। आखिर, आदमी भी तो उसी आवाज पर हिलता-डुलता है, जिसका उसके लिए कोई अर्थ हो, अन्यथा वह निरर्थक ध्वनि की कहाँ परवाह करता है। सारा दिन हम ऐसी आवाजें सुनते रहते हैं, जिनका हमारे लिए कोई अर्थ नहीं होता—जैसे, बाहर सड़क पर होनेवाली आवाज। हम उस आवाज की तरफ ध्यान भी नहीं देते। चूँकि हमारे लिए ये आवाजें रोजमर्रा की और निरर्थक हैं, इसलिए उनकी तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता। इसीलिए किसी वैज्ञानिक प्रयोग में यदि कोई मछली एक ध्वनि-विशेष की ओर आकृष्ट होकर किनारे की तरफ आती है, तो वह केवल इसलिए कि, उसके लिए उस ध्वनि-विशेष का एक विशेष अर्थ होता है। चिल्लाने की आवाज का उस के लिए कोई अर्थ नहीं होता, इसीलिए वह उस ओर ध्यान नहीं देती।

कुछ लोगों का कहना है कि, अगर मछली सुन सकती है, तो उसके कान क्यों नहीं होते? दरअसल, यह धारणा ही गलत है। उसके कान होते हैं; पर हम देख नहीं पाते। चिड़ियों के कान भी तो नहीं दिखायी पड़ते। फिर भी, सब मानते हैं कि, चिड़ियाँ सुनती हैं! वस्तुतः मछलियों और चिड़ियों के कान उनकी खोपड़ी के अंदर ही छिपे होते हैं। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि, जब मछली बोल ही नहीं सकती, तब वह सुन कैसे सकती, है। मछली सुन तो सके; किंतु बोल न सके, यह बात सचमुच अजीब लगनेवाली है। पर यहाँ भी हमारी धारणा भ्रांत है। वास्तव में, मछली बोलती भी है। विशेषज्ञों को इस बात की जानकारी है। बहुत-सी मछलियाँ तो ऐसी हैं, जो काफी आवाज पैदा करती हैं।

यह सही है कि, मछलियों के गले में हमारी तरह या अन्य दूसरे जानवरों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की तरह बोलने का कोई यंत्र नहीं है ; किंतु यह भी सही है कि, मछलियाँ ध्वनि पैदा करती हैं। अधिकांश मछलियों के शरीर में हवा की थैलियाँ होती हैं। ये थैलियाँ ही मछली को पानी में उतराते रहने में सहायता देती हैं। कुछ मछलियों की हवा-थैलियों की दीवार पर ऐसी मांस-पेशियाँ होती हैं, जो आवश्यकता पड़ने पर हवा-थैलियों को तरंगित कर देती हैं। हवा-थैलियों के तरंगित होने से एक प्रकार की आवाज उत्पन्न हो जाती है। इसे ही हम मछली की आवाज कहेंगे। दूसरे प्रकार की मछलियों में उनकी रीढ़ की हड्डी की जड़ों में जो खाली जगह होती है, वही उनके सुखनों का एक भाग भी होती है। इन खाली जगहों में जब 'चूँ-चूँ' या 'चर्र-चर्र' की आवाज पैदा होती है, तब उसे हम मछली का बोलना कहते हैं। हमारे लिए ये आवाजें कितनी ही बेमतलब हों ; लेकिन उसी जाति की दूसरी मछली के लिए इन आवाजों के खास मतलब होते हैं।

मछलियाँ आवाज करती हैं, इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि, भारत के तटवर्ती प्रदेशों के मछुए इन्हीं आवाजों के सहारे समुद्र में मछलियों के समूह का पता चलाते हैं। ये मछुए अधिकांशतः आज भी अपने पुराने ढंग से समुद्र के किसी भाग में मछलियों के समूह का पता चलाने के लिए खूब लम्बे और खोखले बाँस के डंडे का उपयोग करते हैं। अभ्यस्त, अनुभवी और कुशल मछुआ डोंगी पर बैठे-बैठे एक खोखले बाँस को पानी में खूब गहरे डाल देता है और तब उसका दूसरा सिरा अपने कान से लगा कर मछलियों द्वारा पैदा की जानेवाली आवाज ढूंढ़ता है। ये मछुए इतने कुशल और अनुभवी होते हैं कि, बाँस की इस तारबर्की के सहारे पानी के भीतर से आनेवाली आवाज के सहारे न केवल यही पता चला लेते हैं कि, मछलियों का समूह किधर और कहाँ है, बल्कि यह भी अनुमान लगा लेते हैं कि, उनका समूह कितना बड़ा है। यह अनुमान आम तौर पर सही ही होता है। मलाया के मछुए एक दूसरा तरीका अपनाते हैं। उनके यहाँ ऐसे गोताखोर होते हैं, जो समुद्र में डुबकी लगा कर पानी के भीतर आवाजें सुनने की कोशिश करते हैं और उन आवाजों के आधार पर ही यह बताते हैं कि, आसपास कहीं मछलियों का समूह है, अथवा नहीं—अगर है, तो छोटा है अथवा बड़ा।

✱

माडर्न आर्टिस्ट पिकासो के बारे में उस नये पोस्टमैन को सुनी-सुनायी काफी जानकारी हो गयी थी। अतः जब उस दिन वह डाक देने गया, तो पिकासो के स्टूडियो में उसे उनकी दस-वर्षीया लड़की मिली। पोस्टमैन ने समझा कि, खिलवाड़-जैसे वे सारे चित्र उस लड़की ने ही बनाये हैं; अतः उसने लड़की से कहा—"अच्छी लड़कियाँ मन लगा कर सीखती हैं, खिलवाड़ नहीं करतीं !" —'जर्नल' से

✱

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कौम मर नहीं सकती

पाकिस्तान-अफगानिस्तान की सीमा पर बसे कुछ कबीलों में यह प्रथा अभी तक चली आ रही है कि, पुत्र-जन्म होते ही नवजात शिशु के होंठों पर शेर का गोश्त छुवाया जाता है और उसके हाथ में तलवार थमायी जाती है। नीचे इस प्रथा के अनुरूप शौर्य-संस्कारों की एक झलक देखिये। यह वृत्तांत प्रसिद्ध क्रांतिकारी पर्यटक मोहम्मद अली कबरी की डायरी का एक अध्याय है।

★

काबुल से यागिस्तान के लिए रवाना हुए, तो हमारे पास एक मुकम्मल स्कीम थी, जिसे वहाँ पहुँचते ही हमने कामयाब बनाने की कोशिश शुरू कर दी। यागिस्तान वह इलाका है, जो बँटवारे से पहले अँग्रेजी सरकार और अफगानिस्तान-सरकार की सरहद के बीच में पड़ता था। अफगानी सरहद डूरेंड-कमीशन ने तय की थी और यह इलाका अँग्रेजी असर में समझा जाता था। लेकिन असल में यहाँ कोई हुकूमत नहीं थी। इसीलिए इसका नाम 'यागिस्तान', यानी 'बागियों का मुल्क' था। यहाँ सिर्फ मुल्लाओं का हुक्म चलता था। हमारी स्कीम यह थी कि, यागिस्तान को हथियारबंद करके अँग्रेजों के खिलाफ पेशावर से लेकर क्वेटा तक एक ही वक्त गुरिल्ला लड़ाई शुरू कर दी जाये और उनकी फौजों को तब तक उलझाये रखा जाये, जब तक अमीर-अफगानिस्तान बाकायदा हमला करके हिन्दुस्तान को 'होम-रूल' देने का एलान न कर दें।

चुनाँचे यागिस्तानी मुल्लाओं को एक मुकाम पर इकट्ठा करने की कोशिशें शुरू कर दीं। चमरकंड हमारा हेडक्वार्टर था। वहाँ हमने एक मिलिट्री ट्रेनिंग स्कूल खोल कर कबाइलियों को कवायद और निशानाबाजी सिखाना शुरू किया। धीरे-धीरे हमारे पास एक अच्छा लश्कर इकट्ठा हो गया। जर्मनी की फतूहात से हमारे दिल बढ़ रहे थे और अँग्रेजों का खौफ दिलों से उठता जा रहा था।

अब वक्त आ गया था कि, अमली कदम उठाया जाये। चुनाँचे सवात के अमीर अमीरे-मुजाहिदीन, संडा के मुल्ला साहब, चित्राल के महतर और नवाब अम्ब के पास कासिद भेज दिये गये कि, कब और किस तरफ से धावा बोलना है।

अँग्रेजों को भी सब खबरें पहुँच रही थीं। उन्होंने सरहद पर, उन तमाम जगहों पर, जहाँ से हमले का अंदेशा हो सकता था, काँटेदार तार लगा कर उनमें बिजली दौड़ा दी थी। इस खतरे का मुकाबला करने के लिए मैंने 'इन्सूलेटेड-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीजर्स' बनायी, जिससे ये तार बिल्कुल ही बेकार हो गये। मैंने चमरकंड में एक जंगी कौंसिल बुलायी, जिसमें फैसला किया गया कि, एक कासिद अमीर हबीबुल्लाह के पास भेजा जाये, जो उन्हें तमाम हालात से बाखबर करके उनका तआवुन (सहयोग) हासिल करे। इधर से हम चलें और उधर से अमीर हमला करें।

काबुल कासिद रवाना करने के बाद हमारा सामना एक अँग्रेजी लश्कर से हो गया। हमारे साथ कोई तीस हजार लश्कर था। उसे टोलियों में बाँट कर हमने पूरे दर्रे पर कब्जा कर लिया और अँग्रेजों के आगे बढ़ने के तमाम रास्ते बंद कर दिये। हमसे कोई दो सौ गज पर अँग्रेजी गोरा-फौज खंदकें खोद कर मोर्चों में बैठी हुई थी। उनके पीछे शबकद्र का मशहूर किला था। ग्यारह हवाई जहाज हमारे मोर्चों पर उड़ानें भरते हुए हमारी खोज-खबर ले रहे थे; क्योंकि उस जमाने में हवाई जहाजों से गोलाबारी नहीं की जा सकती थी।

हमारा मोरचा पहाड़ी पर एक महफूज़ जगह पर था और अँग्रेजी तोपों के गोले उसके अंदर नहीं आ सकते थे; लेकिन मोर्चे के पीछे गिर कर बड़े जोर से फटते थे। उनके साथ ही मशीनगनों से गोलियों की बारिश भी हो रही थी, जिसके नतीजे में इस मोर्चे पर हमारे ग्यारह आदमी शहीद हो गये।

तीन दिन और तीन रात बराबर गोलाबारी होती रही और हम भी बराबर जवाब देते रहे। इन बहत्तर घंटों में न हमने खाना खाया, न सिवाय पानी के कोई चीज हमारे हलक से उतरी। आखिर, तीन दिन के बाद अँग्रेजी फौज 'शबकद्र' के किले की तरफ पीछे हट गयी और हमारे सिपाही उनकी खंदकों पर पिल पड़े। उस वक्त सैकड़ों बंदूकें और लाखों कारतूस हमारे हाथ लगे।

ज्यों ही इस जीत की खबर गाँव में पहुँची, औरतें गाती-बजाती हुई आयीं और हमारे मोरचों में घुस पड़ीं। उन्होंने पहुँचते ही लाशों को उलट-पुलट कर देखना शुरू किया कि, कोई शख्स पीठ पर गोली खाकर तो नहीं मरा? जब उन्होंने देखा कि, सभी मरनेवाले सीनों पर गोलियाँ खाकर शहीद हुए हैं, तो माँ बेटे का मुँह चूमने लगी, बहन भाई को प्यार करने लगी, बीवी शौहर को गले लगाने लगी और सब पश्तो में गीत गाने लगीं, जिसका मतलब कुछ इस तरह था—

"जाओ, तुमको खुदा के सुपुर्द किया। तुम शहीद हो। अब जन्नत की सैर करो। मगर खुदा के लिए हमें न भूल जाना। खुदा से दुआ माँगो कि, हम भी उसकी राह में काम आयें और तुम्हारे भाइयों को भी तुम्हारे कदमों पर चलने की तौफीक मिले।"

फिर शहीदों की लाशों को उठा कर, खुशी के गीत गाती, वे अपने गाँव को वापस लौट गयीं और उन्हें उन्हीं के कपड़ों में दफ्न कर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ वर्ष पहले न्यूयार्क की एक अदालत में एक ऐसी समस्या उपस्थित हुई कि, न्यायाधीश के साथ-साथ दूसरे लोग भी चक्कर में पड़ गये और इसके चलते एक अपराधी को सजा काटने से मुक्ति मिल गयी। इस समस्या का सूत्रपात करनेवाला था, उस अपराधी का वकील। उस व्यक्ति पर अपने एक शत्रु के घर आग लगाने का अभियोग था और सबूत-पक्ष के पास इतने सबल प्रमाण थे कि, उसका छुटकारा सर्वथा असम्भव प्रतीत होता था। पर अपराधी के वकील ने मुकदमे के प्रारम्भिक दिनों में इतनी दृढ़ता के साथ अपने मुवक्किल की निर्दोषिता उपस्थित की कि, सबूत-पक्ष का वकील घबड़ा उठा और जब अपराधी के वकील ने सबूत-पक्ष के वकील के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि, 'आग लगाने' का अभियोग वापस ले लिये जाने पर उसका मुवक्किल 'आग लगाने के प्रयत्न' का अपराध स्वीकार कर लेगा, तो उसने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। तदनुसार ही, मुकदमे का स्वरूप बदल दिया गया और न्यायाधीश महोदय अपराधी को सजा देने की तैयारी करने लगे। वहाँ के कानून के अनुसार, किसी अपराध को करने का प्रयत्न करने का दंड वस्तुतः उस अपराध को कर गुजरने के दंड का आधा होता था और प्रचलित कानून में किसी के घर आग लगाने के अपराध का दंड था, आजीवन कारावास! ठीक इसी स्थल पर बचाव-पक्ष के वकील ने उक्त समस्या पेश की—"एक मनुष्य का जीवन-काल क्या है?...धर्मग्रंथ कहते हैं कि, जीवन के बारे में एक क्षण का भी भरोसा नहीं किया जा सकता। तब, मेरे मुवक्किल को कितने समय का कारावास दिया जायेगा—आधे क्षण का, या एक दिन का, या एक वर्ष का?" इस समस्या के प्रस्तुत होते ही अदालत में खलबली मच गयी। लाख सिर पटकने के बाद भी कोई व्यक्ति किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका और तब, हार कर, न्यायाधीश ने अपराधी को मुक्त कर दिया।

× × ×

उपर्युक्त घटना में तो बुद्धि-प्रयोग ने एक अपराधी को मुक्त करवा दिया; पर इंग्लैंड में एक व्यक्ति की बौद्धिक कुशलता ने उसे फाँसी के तख्ते पर चढ़वा दिया। इंग्लैंड के एक गाँव में एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसान की हत्या कर दी गयी थी और पुलिस को अपराधी का पता नहीं चल पा रहा था। एक दिन उस मृतक के पड़ौसी ने पुलिस को सूचित किया कि, सपने में उसके पड़ौसी का भूत उसके समक्ष उपस्थित हुआ था और उसने अपराधी का नाम 'जान्स' बतलाया था। पुलिस ने तत्काल उस गाँव के 'जान्स' नामक एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। उस व्यक्ति पर मुकदमा चला और न्यायाधीश भूत की बात पर विश्वास कर उसे अपराधी मान बैठे। पर तभी बचाव-पक्ष के वकील ने एक कानूनी अड़चन पेश की—"गवाह को अदालत में आकर बयान देना चाहिए!" बात ठीक थी। पुलिस को आदेश मिला कि, वह उस भूत को अदालत में पेश करे। अब पुलिस क्या करती? उसने मृतक के पड़ौसी को सपने का विवरण सुनाने के लिए अदालत में उपस्थित किया। पड़ौसी बयान देने अदालत के कठघरे में पहुँचा, तो बचाव-पक्ष का वकील उससे जिरह करने लगा। और, अंत में, मुकदमे का निबटारा हो गया—गवाह पड़ौसी बातों-बातों में यह स्वीकार कर बैठा कि, हत्या स्वयं उसने की थी।

× × ×

इन दोनों से पृथक्, न्याय-सम्बंधी यह तीसरी घटना चीन की है। लगभग एक शताब्दी पहले चीन के पीचिहि-लि प्रदेश में दो व्यवसायियों म एक बेंत की टोकरी को लेकर झगड़ा आरम्भ हुआ और वे दोनों स्थानीय न्यायाधीश के पास पहुँचे। एक व्यवसायी ने कहा—"हुजूर, मैं चाय का व्यवसाय करता हूँ। यह टोकरी मेरी है। इसमें मैं कितनी ही बार चाय भर कर ले गया हूँ!" दूसरे व्यवसायी ने कहा—"हुजूर, पहले इसने कभी इस टोकरी की सूरत भी नहीं देखी। यह टोकरी मेरी है।" दोनों की बातें सुन लेने के बाद, न्यायाधीश बोला—"तुम दोनों शांत हो जाओ! मैं...इस टोकरी से ही पूछ लेता हूँ!" सब लोग चकित हो गये—"कहीं न्यायाधीश पागल तो नहीं हो गया!" पर तभी न्यायाधीश चिल्लाया—"बोल, टोकरी! तेरा मालिक कौन है?" पर टोकरी क्या जवाब देती! कुछ क्षण उपरांत न्यायाधीश ने सेवक को आदेश दिया—"इस टोकरी को दस डंडे मारो!" सेवक ने आदेश का पालन किया और तब न्यायाधीश टोकरी को हटा कर, घुटने के बल वहीं बैठ, पृथ्वी पर झुक गया। कुछ देर बाद, वह सेवक से बोला—"चावल के व्यवसायी को पचास डंडे मार कर निकाल दो और टोकरी चाय के व्यापारी को दे दो!...ये रहे टोकरी के आँसू, जिन्होंने मुझे वस्तुस्थिति से परिचित कराया!" और, उसने सबके समक्ष चाय की पत्ती के छोटे-छोटे कण प्रस्तुत कर दिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन के उद्यान से आप कितना सौरभ बटोरते हैं

"...इस उद्यान की जिस कली के द्वार पर मैं गया, उसी ने मोतियों का थाल भर कर मेरी झोली में अयाचित डाल दिया! मेरी अभ्यर्थना कहाँ नहीं हुई? काँटे की झाड़ियों ने भी कोई कृपणता नहीं दिखलायी– मन के चुने हुए मोती मुझ पर वार दिये।...अतः आज जब ये क़दम थक गये हैं और मैं इस विश्वोद्यान में पर्यटन समाप्त कर रहा हूँ, तो मैं वस्तुतः एक मधुर आभार में दबा जा रहा हूँ!" जीवन-साफल्य के उद्गारों को वहन करनेवाली जीवन के अंतिम काल में लिखित वल्लत्तोळ की इस कविता के प्रेरणा-सौरभ के साथ नीचे की पंक्तियों पर ध्यान केंद्रस्थ कीजिये।

क्या ही अच्छा हो कि हम-आप, कम-से-कम महीने के अंत में ही सही, अपने बारे में कुछ सोचने की फुरसत निकाल लिया करें। कहीं बहुत तेज और कहीं बहुत धीमे जिंदगी बहती रहती है। वह कैसी बह रही है? कहाँ बह रही है? और, अपना देकर वह क्या-कुछ ले रही है? इन प्रश्नों को हम अपने-आप से, यदि इस अवकाश में पूछ लिया करें, तो शायद हम उस स्थिति से बच जायें, जो उस घोड़े की हुई थी—यानी वह चलता ही गया और जब थक कर रुका, तो उसने पाया कि, वह घोर जंगल में खड़ा है, जहाँ से वापस लौटना दुष्कर है और हिंसक जंतुओं से घिरे उस निर्जन वन में रात सिर पर है।

बूढ़ा होते-होते अँग्रेजी का प्रसिद्ध लेखक बेकन काफी निर्धन हो गया था। एक दिन उसकी पत्नी ने उससे शिकायत की–"बुढ़ापे में धन का न होना कितना बड़ा शाप है! क्या आपको यह स्थिति अखरती नहीं है?"

बेकन के अधरों पर अकस्मात् मुस्कान नाच उठी। वह कहने लगा–"धन तो कमाने से आ ही जाता है; मगर जीवन को जीना आसानी से नहीं आता। मैं जीवन को जीना सीखता रहा हू और उस सीख से मुझे जो सुख एवं आनंद मिला है, वह किसी भी धन-सम्पत्ति से बढ़ कर है।"

और, अल्बर्ट स्वीत्जर की यह एक सांध्य-प्रार्थना भी भावुकता की प्रतीक नहीं है, जब वे अपने इष्टदेव के सामने घुटने टेक कर कहते हैं–"मेरी सृष्टि के स्वामी! प्राणों के साथ जीवन को जानने की जो जिज्ञासा आपने बाँध दी है, उसे कृपया क्षीण न कर देना– जीवनानंद का प्याला अगर होंठों से हट गया, तो प्राणों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का रखना असह्य बोझ हो जायेगा।"

इसलिए क्या ही अच्छा हो कि, हर महीने की तीस-इकतीस तारीख को आप-हम बैठ जायें और अपने विषय में थोड़ी-सी छानबीन कर लें। अगर इस महीने से ही शुरू कर दें, तो सबसे अच्छा— जिंदगी की देरी फिर कभी पूरी नहीं की जा सकती। हैं आपके जीवन-क्रम की जाँच को सुलभ करने के लिए हमने यहाँ कुछ प्रश्न एकत्र किये हैं। ये प्रश्न जीवन की अनेक दिशाओं की गहराई के मापदंड हैं। थोड़ा व्यवस्थित-चित्त होकर आप अपने को इन मापों-द्वारा मापें। अपने-आपको जानने का यह प्रयास आपके भावी जीवन के लिए बड़ा उपयोगी होगा।

बोधि-शाखा हाथों में लिये प्रियदर्शी अशोक-पुत्र महेंद्र

१. रविवार की छुट्टी के बाद जब सोमवार का सवेरा आता है, तो (क) क्या आप अपने-आपको काम के लिए उत्साही अनुभव करते हैं? (ख) क्या काम आपको बहुत अखरता है? (ग) क्या आप मुँहजोर घोड़े की तरह मन को बार-बार काम में खींचते हैं?

२. गये साल आपने (क) क्या इतने मनोरंजन अपनाये कि, आप गिना ही नहीं सकते? (ख) क्या आपने एक भी मनोरंजन नहीं अपनाया; क्योंकि आप पहले के मनोरंजन-साधनों से ही संतुष्ट थे? (ग) क्या सिर्फ एक-दो नये मनोरंजनों में ही आपने अपने को सदैव निमग्न बनाये रखा।

३. जब आप नये कपड़े खरीदते हैं, तो (क) क्या आप हर बार विभिन्न प्रकार के कपड़े पसंद करते हैं? (ख) क्या आप हमेशा की तरह की ही पोशाक एवं रंग अपने लिए उपयुक्त समझते हैं? (ग) क्या आप प्रचलित फैशन के मुताबिक ही कपड़े रखना पसंद करते हैं?

४. जब आप किसी व्यक्ति से प्रथम बार मिलते हैं, तो (क) क्या आप उसमें पूरी दिलचस्पी लेते हैं और उसे अपने स्वयं के बारे में कुछ कहने के लिए प्रेरित करते हैं? (ख) क्या आप उसके साथ बातचीत निबाहने में कठिनाई महसूस करते हैं? (ग) क्या आप मुख्यतः अपने स्वयं के ही बारे में बातें करते हैं?

५. सोच कर देखिये, (क) क्या आप अपने भीतर कोई निश्चित महत्वाकांक्षा सँजोये बैठे हैं? (ख) क्या अपनी वर्तमान स्थिति से ही आप संतुष्ट हैं? (ग) क्या आप सोचते हैं कि, कभी-न-कभी आपकी मनोरथ-सिद्धि अवश्य होगी?

६. जब कभी दफ्तर में बहुत आवश्यक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काम आ जाता है और आपके अफसर आपसे थोड़ा और बैठने को कहते हैं, तो (क) क्या आप बखुशी देर तक बैठना स्वीकार कर लेते हैं? (ख) क्या आप नाराज हो उठते हैं? (ग) क्या आप इसीलिए अतिरिक्त समय तक बैठना पसंद करते हैं कि, पैसे मिलते हैं ?

७. जब आप म्लान महसूस करते हैं, तो (क) क्या आप म्लानता को जीत कर प्रफुल्ल होने का प्रयत्न करते हैं? (ख) क्या आप हर किसी पर यह प्रकट होने देते हैं कि, आप क्लांत और म्लान हैं? (ग) क्या आप क्लांति की बाढ़ को अपने भीतर ही तब तक जब्त किये रहते हैं, जब तक वह स्वयं ही समाप्त न हो जाये?

ऊपर के सात पैमानों-द्वारा अपने को ईमानदारी से मापने की चेष्टा कीजिये। हर (क) के लिए ५ अंक, (ख) के लिए २ अंक और (ग) के लिए ३ अंक निर्धारित किये जा रहे हैं।

यदि आपकी कुल अंक-संख्या ३० और ३५ के बीच में है, तो आप जीवन-मार्ग पर निर्द्वंद्व चले चलिये। सफलता, सम्पन्नता और सुख आपके पास बिना माँगे आयेंगे। वास्तव में, यह अनुभवसिद्ध सत्य है कि, जो व्यक्ति जीवन की हर दिशा में जाने और उसमें अपनी शक्ति आजमाने के लिए सदा उत्साही रहता है तथा अपने काम में परिपूर्ण रुचि और आनंद प्रदर्शित करता है, वह कभी भाग्य का मोहताज नहीं रहता।

२५ से २९ तक का जोड़ बतलाता है कि, आपमें सफलता प्राप्त करने की लगन तो है; किंतु वह काफी प्रबल एवं गहरी नहीं है। काम के प्रति उत्साह और रुचि को और स्थायी बनाइये। अनिच्छा के कामों में भी आप एकाग्र उत्साह का परिचय दीजिये।

१५ से २४ तक का जोड़ अच्छी स्थिति का द्योतक नहीं है। अपने मन और जीवन-चर्या पर विशेष ध्यान दीजिये। तल से उठने के लिए बार-बार जोर लगाइये। आपको अवश्य सफलता मिलेगी।

१४ से नीचे का जोड़ स्पष्ट करता है कि, आपने या तो गलत रास्ता चुना है, या अभी अपने जीवन-मार्ग पर ध्यान ही नहीं दिया है— आप गफलत में सुप्त हैं। आप तत्काल अपना सारा दृष्टिकोण बदलिये। गलती सुधारने में देरी कभी देरी नहीं गिनी जाती और जिसने दृढ़ संकल्प के पंख पाँव में बाँध लिये हैं, उसके लिए कोई भी मंजिल दूर नहीं होती।

तारों को देख कर एक हँसोड़ ने कहा—"मित्रो, मेरी खूबी तो देखो। जब मैं हँसता हूँ, तो आसमान में भी फूल खिल उठते हैं।" तभी कोने में बैठा मनहूस हँसोड़ की खामखयाली पर सिर पीट उठा—"हाय राम! क्या सभी पागल हो गये हैं? यह जमीन, यह आसमान, ये तारे और यह इंसान!"—'हास्यचंद्रिका' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संगम का तेंदुआ

लेफ्टिनेंट उदयसिंह-लिखित एक रोचक शिकार-वृत्तांत

मैं उन दिनों बंगलोर में रहता था। मुझे उड़ती-उड़ती खबर मिली कि, बंगलोर से ७० मील दक्षिण, संगम नामक स्थान के पास, एक नरभक्षी तेंदुए ने उत्पात मचा रखा है – वह एक स्त्री और एक बच्चे को मार कर खा गया है। परंतु मुझे इस बात पर विश्वास नहीं हुआ; क्योंकि ऐसी खबरें अक्सर आती रहती थीं। उनकी जाँच-पड़ताल करने पर असलियत यह प्रकट होती थी कि, किसी गाँववाले ने या अनाड़ी शिकारी ने तेंदुए को घायल करके जंगल में उसका पीछा किया था और इस प्रकार अपनी ही गलती का शिकार हो गया था।

तो, मैंने इस नयी अफवाह को भी सच नहीं माना। लेकिन तभी उसने तीसरा और फिर चौथा शिकार किया। बंगलोर, मैसूर और मद्रास के कुछ शिकारी उसके पीछे गये। एक के हाथ से एक तेंदुआ मारा गया। उसी समय उस नरभक्षी की करतूतें भी बंद हो गयीं। इसलिए सबको विश्वास हो गया कि, मारा गया तेंदुआ वही था।

पर जब तेंदुए ने पाँचवें आदमी का शिकार किया, तब यह विश्वास झूठा साबित हो गया। यह आदमी चार कुत्तों के साथ एक कमरे में रहता था। कमरे के चारों ओर काँटों का बाड़ा था। रात को तेंदुआ उस बाड़े में जगह बना कर कमरे में घुस गया। यद्यपि उस समय कुत्ते भौंकें तो बहुत; पर उस आदमी को सम्भलने का मौका नहीं मिला। तेंदुए ने झपट कर उसका गला पकड़ा। उसके मुँह से एक चीख निकली और इसके साथ ही उसका दम भी।

गाँव में और आसपास फिर से आतंक छा गया और मुखिया ने मुझे सूचना देने के लिए सीधा बंगलोर का रास्ता पकड़ा।

मैंने दो दिन की छुट्टी ली। तीसरे दिन रविवार था। सो, तीन दिन में उस तेंदुए का शिकार कर लेने के इरादे से मुखिया के साथ अपनी मोटर से संगम को चल पड़ा।

वह गाँव कावेरी और उसकी सहायक नदी अर्क्कावर्ती के संगम पर बसा था। इसी से उसका नाम संगम पड़ गया था। यह कावेरी के दाहिने किनारे पर था। नदी के इस किनारे का इलाका मैसूर राज्य में था और बायें किनारे का इलाका मद्रास में। दोनों ही तरफ घने जंगल थे।

वहाँ पहुँच कर मैं डाकबँगले में ठहरा और वह जगह देखी, जहाँ वह कुत्तों का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालिक मारा गया था। पूछताछ और बातचीत से पता चला कि, तीन दिन के भीतर तेंदुए का शिकार करना मुश्किल ही होगा। फिर भी, इंतजाम होने लगा। मैंने पटेल की मदद से पाँच तगड़े-तगड़े बछड़े खरीदे और तेंदुए को ललचाने के लिए नदी से आधा मील की दूरी पर, नदी के समानांतर चार मील के क्षेत्र में, उन्हें जगह-जगह बँधवा दिया।

रात को मैं बँगले में सोया। सुबह खोज-खबर लेने पर मालूम हुआ कि, पाँचों बछड़े सही-सलामत थे। उन्हें मारने की बात तो दूर, तेंदुआ कहीं उनके आसपास भी नहीं आया था। आधा दिन मैं इधर-उधर खोजता रहा; लेकिन तेंदुआ तो क्या, उसके पैरों के निशान भी मुझे नहीं मिले। तीन दिनों में से डेढ़ दिन तो यों ही बीत गया।

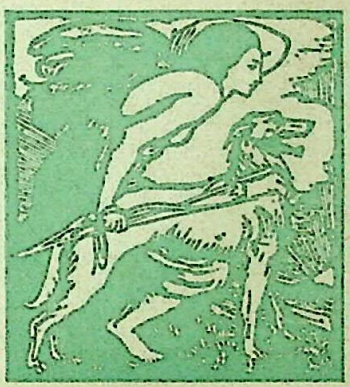

शिकार

[चित्र : एक नागा काष्ठशिल्प]

तीसरे पहर मैं फिर उसकी खोज में निकला और इस बार भी निराश होकर शाम को बँगले लौट आया।

दूसरी रात के लिए मैंने नयी योजना बनायी। बँगले के चौकीदार का कुत्ता मैंने तीन रुपये में खरीदा और बँगले से लगभग एक मील की दूरी पर एक पहाड़ी के तले उसे इस आशा में बाँध दिया कि, शायद तेंदुआ उसका शिकार करने आ जाये। पहाड़ी के ऊपर दूसरी तरफ छिप कर मैंने कई घंटे तेंदुए के इंतजार में गुजार दिये; लेकिन एक लकड़बग्घे के अलावा कोई जानवर उस तरफ नहीं आया।

लगभग बारह बजे होंगे, तभी ग्यारह आदमी दो लालटेनों के साथ मुझे खोजते हुए वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने बताया कि, मुश्किल से एक घंटा पहले तेंदुए ने फिर गाँव में हमला किया और एक स्त्री को बुरी तरह घायल कर दिया।

वह स्त्री चार व्यक्तियों के साथ अपने घास-फूस के झोंपड़े में सो रही थी। तेंदुआ दीवार में रास्ता बना कर अंदर घुसा और जो भी शिकार उसके हाथ में आया, उसे मुँह में दबोच कर चल पड़ा। स्त्री ने हो-हल्ला किया और उससे छूटने की कोशिश की। इसमें वह बुरी तरह घायल होकर बेहोश हो गयी और उसके कपड़े तार-तार हो गये। उसके भाई ने तेंदुए को देख कर पीतल का कलश उस पर फेंक कर मारा। नरभक्षी जानवर हमेशा डरपोक होते हैं, सो इस आक्रमण पर तेंदुआ अपनी जान लेकर भाग निकला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब, ये लोग मुझे ढूँढ़ने निकले।

मैं उनके साथ गाँव लौट आया। उस स्त्री की हालत खराब थी, इसलिए कुछ मरहम-पट्टी के बाद हम उसे मोटर में कंकणहल्ली ले चले। सबसे नजदीक वहीं अस्पताल था। साढ़े तीन बजे हम वहाँ पहुँच गये। फिर मैं डाकबँगले में चला गया।

सुबह उठते ही, मैंने पहले डाकखाने जाकर चार दिन की छुट्टी बढ़ाने का तार दिया। उसके बाद लौट कर डाकबँगले आया, तो उस स्त्री की मृत्यु का समाचार मिला। थोड़ी देर बाद हम अस्पताल से उसका शव लेकर लौटे, ताकि उसका दाह-संस्कार कावेरी के किनारे किया जा सके।

अब तेंदुए के बारे में मुझे तीन बातों का निश्चय हो चुका था—(१) जानवरों से वह ललचानेवाला नहीं था, (२) छिपने के लिए उसके पास स्थान बहुत था और (३) झोंपड़ियों में सोते हुए लोगों पर आक्रमण करने की उसकी प्रवृत्ति हो गयी थी। इन बातों को ध्यान में रख कर मैंने एक योजना बनायी।

संगम कोई दर्जन-भर झोंपड़ियों का छोटा-सा गाँव था। बीच में रास्ता था और अगल-बगल झोंपड़ियाँ थीं। बायीं तरफ एक बाड़ा भी था, जिसमें गाँववालों के मवेशी बंद किये जाते थे। बाड़े से लगा था वह कमरा, जिसमें चार कुतों का अभागा मालिक तेंदुए का शिकार हुआ था। मैंने सोचा कि, मैं बाड़े में मवेशियों के साथ बैठ कर तेंदुए के आने की प्रतीक्षा करूँ। इसमें तेंदुए के आकस्मिक आक्रमण से मैं सुरक्षित था; क्योंकि तेंदुए की गंध पाते ही मवेशी चौकन्ने होकर बेचैन हो जाते हैं। फलतः उसके आने की सूचना मिल जाती है।

तेंदुए के डर के मारे गाँववाले छः बजने से पहले ही अपनी-अपनी झोंपड़ियाँ बंद करके बैठ जाते थे। मैं भी साँझ पड़ते ही बाड़े में पहुँच गया। पहले तो मवेशी मुझे गैर समझ कर जरा उद्विग्न हुए; लेकिन फिर शांत हो गये और मैं उनके बीच में जा बैठा।

समय धीरे-धीरे बीतने लगा। पर यहाँ एक दूसरी मुसीबत मेरे सामने आयी, जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। मवेशियों पर भिनभिनानेवाले भुनगों

विश्वास

एक दिन शेर ने संन्यास ले लिया—अपनी माँद में बैठ कर सुमरनी जपने लगा। तेंदुए ने आकर शीश नवाया। हाथी ने भी यश गाया। सूअर और रीछ ने भी चरण-रज सिर पर चढ़ायी। मगर मृग का भय नहीं मिटा। सबने उसे धिक्कारा, तो वह बोला— "मैं कैसे विश्वास कर लूँ? भूख सतायेगी, तो क्या शेर घास खायेगा? लाख संन्यासी हो जाये, वह भोजन तो हमारा ही करेगा न?"—जोरावर सिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और मच्छरों ने मेरी बड़ी दुर्दशा की।

आधी रात बीतने के बाद गाँव के उत्तर की ओर से एक मादा साँभर की आवाज सुनायी दी। वह कई बार चिल्लायी। फिर एक लंगूर भौंकने लगा और उसके बाद हिरनों की आवाजें आने लगीं। इससे मैंने अनुमान लगा लिया कि, कोई जानवर जंगल में निकला जरूर है।

अचानक मवेशियों में बेचैनी नजर आने लगी और वे बाड़े में ही गली से दूरी की तरफ एक जगह जमा होने लगे। पड़ोस के कुत्ते जोरों से भौंकने लगे। कुछ ही क्षणों में उनका भौंकना रुदन में बदल गया। मैं समझ गया, कि, उन्हें डरानेवाला जानवर गली में आ चुका है।

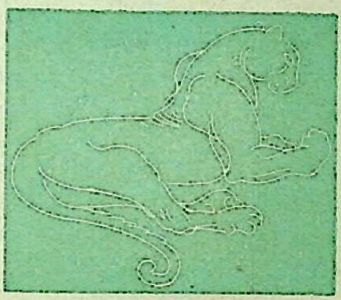

शेरनी

[चित्र : तुले के चित्र की प्रतिकृति]

मैं जानवरों के बीच से बचता हुआ गली की तरफवाले बाड़े की ओर बढ़ने लगा; लेकिन अंधेरे के कारण कुछ दिखायी नहीं देता था। आँखें काम नहीं दे रही थीं; लेकिन आवाज से पता लगाने के लिए मेरे कान पूरी तरह चौकन्ने थे।

कुछ क्षणों में मुझे दरवाजा खरोचने की आवाज सुनायी देने लगी। मैंने अनुमान लगाया कि, तेंदुआ दरवाजा खोलने की कोशिश में है। मैं दबे-पाँव बाड़े तक पहुँचा और झाँक कर गली में देखने लगा। मेरी बंदूक और टार्च तैयार थी। उसी समय झोंपड़ीवालों ने हो-हल्ला मचा दिया। मैंने तुरत बाड़े से बाहर निकल कर टार्च जलायी; लेकिन तेंदुआ तो मानो हवा में विलीन हो गया था। मैं समझा, वह शायद झोंपड़ी में घुस गया होगा; लेकिन झोंपड़ी सही-सलामत थी। मैंने पुकारा; परंतु पहले तो किसी ने मेरी आवाज सुनी ही नहीं और जब सुनी, तो डर के मारे दरवाजा खोलने से सबने इन्कार कर दिया।

मैं लौट कर बाड़े में जा बैठा; लेकिन रात बेकार गयी। दूसरे दिन मैं डाकबँगले में खूब सोया; क्योंकि रात को फिर पहरा देना था। लेकिन अब बाड़े में मवेशियों के साथ बैठने की कल्पना से भी कँपकँपी आती थी — पिछली रात मच्छरों से मैं काफी परेशान हो चुका था।

अब मैंने एक नयी योजना बनायी। यह रात मैंने बाड़े के पड़ौस में कुत्तोंवाले कमरे की छत पर बिताने का फैसला किया। छत चद्दरों की थी और बीच से दोनों ओर ढलवाँ थी। गाँववालों ने उस पर मेरे लिए पुआल बिछा दी और सुरक्षा की दृष्टि से उसके तीन ओर काँटों का बाड़ा लगा दिया। गली की तरफ का हिस्सा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने खुला छोड़ दिया। छः बजे के आसपास मैंने वहाँ अपना आसन जमाया। यहाँ दो कठिनाइयाँ सामने आयीं; लेकिन उनके समाधान का कोई चारा न था। एक तो यह कि, गली की ओर मुँह करके लेटने से टाँगें सिर से ऊँची होती थीं और दूसरी बात, पेट के बल लेटने को बाध्य होना पड़ा। फिर भी, इस तरह मच्छरों से तो छुटकारा मिला।

रात के दो बज गये; लेकिन जंगल से तेंदुए के प्रकट होने का कोई संकेत नहीं मिला। मुझे कुछ-कुछ नींद आने लगी, तभी एकाएक छत के नीचे, कमरे के अंदर से, एक कुत्ता भौंक उठा और उसके बाद चारों-के-चारों कुत्ते भौंकने लगे।

मैं सावधानी के साथ गली में नजर दौड़ाने लगा। अंधेरा बहुत था। झोंपड़ियाँ भी साफ दिखायी नहीं देती थीं। उस वक्त न कुछ दिखायी देता था और न कुछ सुनायी देता था।

तभी एक बहुत हल्की आवाज मैंने सुनी, जैसे कोई साँप फुंफकार रहा हो। फिर दुबारा वह फुंफकार सुनायी पड़ी। गली में ठीक मेरे सामने से वह आवाज आ रही थी; पर वह साँप की है या तेंदुए की, इसका निश्चय नहीं हो पा रहा था।

पहले तो मुझे बहुत कोशिश करने पर भी गली में कुछ दिखायी नहीं दिया। पर बाद में एक लम्बी-सी धँधली आकृति दीखने लगी। कुछ हिलती हुई भी मालूम हुई वह। इस बार फुंफकार कुछ ज्यादा स्पष्ट निकली। कुत्ते रोने लगे और मवेशियों की बेचैनी भी बढ़ गयी।

मैंने बंदूक उठायी, तो मालूम हुआ कि, जहाँ मैं लेटा था, वहाँ से निशाना मारने में छत बीच में पड़ती थी, इसलिए आगे सरकना अनिवार्य था। परंतु सरकना कठिन था; क्योंकि चद्दर की छत थी, और जरा-सी आवाज भी उस पर सुनायी देती थी।

तभी उस आकृति के गले से एक गुर्राहट निकली। मैं जान गया कि, तेंदुआ मेरी उपस्थिति से परिचित हो गया है और कुछ सेकंडों में ही वह उछल कर मुझ पर आ रहेगा। सो, मैं सारी सावधानी को दूर फेंक कर तेजी से आगे सरका और टार्च जला दी। आँखों पर रोशनी पड़ते ही तेंदुए ने मेरा निशाना लेकर उछाल मारी और वह निश्चय ही, मुझ तक पहुँच जाता, यदि मैंने फौरन बंदूक का घोड़ा न दबा दिया होता। निशाना बड़ा अचूक बैठा और वह बीच से ही धरती पर गिर गया। उसके धरती पर गिरते ही मैंने दो गोलियाँ और चलायीं, ताकि वह उठ न सके और सचमुच उन गोलियों ने उसे चिर-निद्रा में सुला दिया।

अगले दिन सुबह देखा गया कि, वह तेंदुआ एक वृद्ध मादा थी। बुढ़ापे ने उसे जानवरों का शिकार करने में असमर्थ कर दिया था और इस दशा में शायद भूखों मरने की आशंका ने उसे नर-भक्षी बना दिया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिछले वर्ष की बात है। मैं पुरी गया था और वहाँ के एक होटल में चार दिन ठहरा था। लौट कर जब घर आया, तो मुझे पता चला कि, जगन्नाथजी की जो मूर्ति मैंने खरीदी थी, वह वहीं होटल में छूट गयी। एक-दो रोज तक मुझे उसका बड़ा मलाल रहा; किंतु फिर धीरे-धीरे बात गफलत में पड़ कर खत्म हो गयी। अभी कुछ दिन हुए, जब मैं कटक गया था, तो मन में आया कि, पुरी जाकर जगन्नाथजी के दर्शन भी कर आऊँ। बस जाती थी, बैठ गया। होटल में पहुँचा, तो लगा कि, मालिक बदल गया है और जो नया मालिक आया है, वह वहीं का पुराना हेड-कुक—बड़ा रसोइया—है। मैं उसके दफ्तर में गया और एक दिन-रात के लिए उससे एक कमरा माँगा। उसने मुझे सिर-से-पैर तक गौर से देखा और फिर कुर्सी से उठ कर मेरे पैर छूने के लिए नीचे झुका। मैंने आश्चर्य-स्तब्ध भाव से उसे उठाया। उसकी आँखों में अगाध कृतज्ञता हिलोरें ले रही थीं। वह परमार्द्र स्वर में बोला—"आपकी कृपा को मैं कभी नहीं भूल सकूँगा। वस्तुतः आपने मेरे ऊपर जितना उपकार किया है, उससे उऋण होने के लिए मेरे पास शायद ही कुछ हो।"

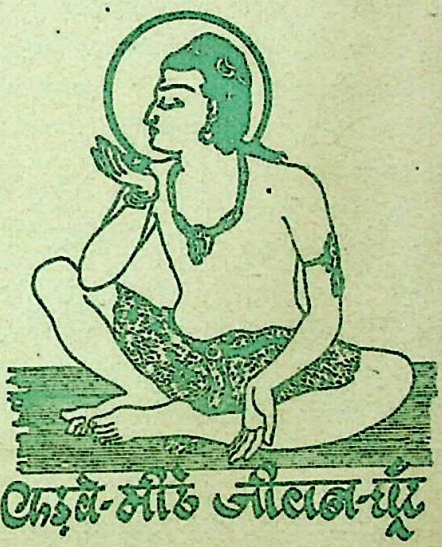

एक विचित्र रहस्य मेरे सामने मुँह बाये खड़ा था। मैंने पूछा—"क्या आप मुझे जानते हैं? मुझे तो लगता है कि, आप मुझे पहचानने में भूल कर बैठे हैं! मैं, दरअसल, वह आदमी नहीं हूँ, जो आपकी श्रद्धा को ऐसा मान्य है।"

पर उसने उसी प्रकार आदरपूर्ण भाव से कहा—"यह आप क्या कह रहे हैं! मैं आपको नहीं जानता? अरे, मैं क्या, मेरी सात पीढ़ी भी आपको नहीं भूल सकेगी। आपकी ही कृपा का फल है कि, यह होटल आज मेरे कब्जे में है।"

तत्पश्चात् वह मुझे उस कमरे में ले गया, जहाँ मैं गत वर्ष ठहरा था। कमरा क्या, वह तो मंदिर हो गया था। कमरे के बीच एक सुंदर सिंहासन था, जिस पर जगन्नाथजी की मूर्ति विराजमान थी—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वही मूर्ति, जो मैं होटल में भूल गया था। अब प्रसन्न-बदन वह मुझसे बोला– "जब इस कमरे में यह मूर्ति मुझे मिली, तो उसके नीचे एक कागज रखा था, जिस पर लिखा था– 'साहस करके, दृढ़ संकल्प के साथ, तू इसी क्षण अपना सब-कुछ लगा दे। अगर आशातीत सफलता न मिले, तो मैं झूठा।' होटल चल नहीं रहा था। मैंने अपना सब-कुछ बेच कर, और थोड़ा उधार लेकर इसे 'लीज' पर ले लिया। जगन्नाथजी का वचन झूठ कैसे होता! आज मैं तीन होटलों का मालिक हूँ।"

मेरे सामने सारी स्थिति स्पष्ट हो गयी। कुछ वर्षों से मैं संतवाणी एकत्र कर रहा हूँ। यह प्रेरणा-वाक्य महर्षि रमण का था, जो उन्होंने आध्यात्मिक जीवन-साफल्य के लिए किसी श्रोता-भक्त से कहा था। मूर्ति के साथ मैं उस कागज के टुकड़े को भी वहीं भूल गया था। संयोगवश, उस रसोइया को मेरी दोनों चीजें मिलीं और अपनी समझ के अनुसार उसने उनका उपयोग किया। किंतु इस उपयोग से मुझे कुछ दुःख ही हुआ, सुख नहीं हुआ। अतः मैंने उससे कहा– "क्या ही अच्छा हो कि, आप इस सफलता को पहली सीढ़ी मानें और भगवान् रमण के उस आश्वासन से अपने नैतिक जीवन में भी सफलता प्राप्त करें।" वह थोड़ा चकित भाव से मेरी ओर देखने लगा। फिर बोला– "अभी तो उसकी जरूरत महसूस नहीं हो रही है। मौका मिलेगा, तो वह भी करूँगा।"

इसके बाद वह मुझे एक बहतरीन सुसज्ज कमरे में ले गया और मेरे आतिथ्य में जुट गया। मगर मैं वहाँ ज्यादा नहीं ठहर सका। अजीब तरह की मिश्रित भावनाओं में मेरी चेतना डूबती-उतराती थी। वत्सलता की वाणी में भीगा ऋषि-वाक्य कभी मिथ्या नहीं होता; किंतु सत्य भी तो वैयक्तिक है– पिंड-पिंड में भिन्न-भिन्न! नदी के किनारे नाव पड़ी रहती है! चोर भी पार उतरता है, चोरी करने की योजना बना कर... और संत भी पार उतरता है, चोर से सावधान रहने का उपदेश देने के लिए। —एन० कृष्णस्वामी, बंगलोर

*

कलम के बीज

मोहल्लेवाले शैतान का विश्वास कर सकते थे; मगर गफूरभाई का नहीं। चौदह वर्ष तक गफूरभाई कभी जेल में और कभी जेल से बाहर भगोड़े की स्थिति में रहे। कुछ वर्ष पहले की बात है, जब वे अपनी बीमार मौसी के घर में घुसे और एक घंटे बाद बाहर निकले, तो मौसी ही नहीं, खुद मौसा भी दुनिया से कूच कर गये थे। गफूर ने लाख कसमें खायीं; मगर किसी ने उन पर दिल से यकीन नहीं किया– शाम को ही एक होटल जो उन्होंने किराये पर चलाना शुरू कर दिया था।

मैं भी गफर के बारे में अभी तक कुछ ऐसी ही धारणा रखता था; किंतु उस रात बात कुछ ऐसी गवाही दे गयी कि,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गफूरभाई को ही नहीं, मनुष्य-मात्र को मैंने उसकी ऊपरी पोशाक और रहन-सहन से जाँचना बंद कर दिया। रात के कोई दो बजे होंगे, जब किसी ने मेरे कमरे की घंटी बजायी। मैं बड़ी गहरी नींद में सोया था। मुश्किल से जग सका। मेरी माँ और पत्नी भी जग गयी थीं; पिताजी ने दरवाजा खोला। तब तक मैं भी उठ कर दरवाजे की ओर चल पड़ा था। देखा, तो एक आदमी के साथ गफूरभाई खड़े थे। उनके हाथ में छुरा था। मैंने गफूर से कड़क कर पूछा– "इतनी रात को यहाँ आने का क्या मकसद है तुम्हारा?" गफूर ने मुस्करा कर कहा– "परसों आपके जमाई के घर में चोरी हो गयी है न? लीजिये यह है चोर और यह है चोरी का माल।" कहने के साथ ही उसने मेरी लड़की हमीदा के जेवरात मेरे सामने रख दिये। चोर को भी मैंने पहचान लिया– हमारा ही एक भानजा था। हम धन्यवाद दें, या किसी-न-किसी रूप में उनका एहसान मानें, इससे पहले ही गफूरभाई वहाँ से गायब हो गये थे। उस दिन से मैंने यह गाँठ बाँध ली है कि, घृणा करने से पहले गफूरभाई का स्मरण कर लिया करूँ! —जाफर खाँ, नगीना, विजनौर

★

माँ की रसीद

"टेंडर भरो, तो मेरे पास आकर हकीकत पूछ जाना!"—शिवराम काका ने मुझसे उस दिन कहा था, जब मैं बाँध-काम के लिए एक अच्छा-खासा टेंडर भरने की योजना बना रहा था, शिवराम काका सरकारी टेंडर के मामले में 'उस्ताद' माने जाते थे। मैं तो एकदम नया, नौसिखिया था। कहीं जोखिम न उठानी पड़ जाये, इस खयाल से शिवराम काका के यहाँ चला गया। उनसे गुरुमंत्र लेकर मैं दूसरे दिन कमिश्नर साहब के बँगले पर पहुँचा। बड़े इखलाक से वे मिले और आने का मकसद पूछा। मैंने एक हजार के नोट उनके सामने मेज पर रखते हुए कहा– "यों ही आ गया था। सोचा, आपके दर्शन कर लूँ! बड़ी हिम्मत करके इस बार टेंडर भरा है!" कमिश्नर साहब ने गौर से मेरी तरफ देखा और मुस्करा कर बोले– "नवीनभाई, मैं आपको दस हजार रुपया देता हूँ– क्या आप अपनी माँ मुझे बेच देंगे? आप जानते हैं– यह नौकरी मेरी माँ है, मेरे परिवार का पोषण इसी से होता है। क्या आप इसे खरीदना चाहते हैं? आप अभी नये हैं, इसलिए मैं आपके खिलाफ कार्रवाई करना नहीं चाहता। जाइये, जो भी करें, ईमानदारी से करें। किसी की ईमानदारी न तो खरीदने की कोशिश कीजिये और न अपनी ईमानदारी बेचने की।" मैंने कमिश्नर साहब से माफी तो माँगी; मगर कई दिनों तक स्वयं अपने को क्षमा नहीं कर सका।

—नवीन देसाई, आमोद, सूरत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मधु-घट

मधु माँग न, मेरे मधुर मीत ! मधु के दिन मेरे गये बीत !

मैंने भी मधु के गीत रचे !
तेरे मन की मधुशाला में यदि हों मेरे कुछ गीत बचे;
तो उन गीतों के कारण ही कुछ और निभा ले प्रीत-रीत !
मधु माँग न, मेरे मधुर मीत ! मधु के दिन मेरे गये बीत !

मधु कहाँ, यहाँ गंगाजल है !
प्रभु के चरणों में रखने को जीवन का पका हुआ फल है ;
मन हार चुका मधुसूदन को, मैं भूल चुका मधु-भरे गीत !
मधु माँग न, मेरे मधुर मीत ! मधु के दिन मेरे गये बीत !

वह गुपचुप प्रेम-भरी बातें !
यह मुरझाया मन भूल चुका वन-कुंजों की गुंजित रातें ;
मधुकलशों के छलकाने की हो गयी मधुर वेला व्यतीत !
मधु माँग न, मेरे मधुर मीत ! मधु के दिन मेरे गये बीत !

ढलता है रे, दिन ढलता है !
अंधियारी जीवन-संध्या में डगमग पग नहीं सम्भलता है !
अब तो उस पार लगी आँखें जग के रस-रंग से नहीं प्रीत !
मधु माँग न, मेरे मधुर मीत ! मधु के दिन मेरे गये बीत !

मूल: बाम्बे (मराठी) अनुवाद: नरेन्द्र शर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालों की हिफ़ाजत

जिनके लिये
विशेष
महत्वपूर्ण है
उनके लिये

केशा

अब पिलफरप्रुफ
पेकिंग वाली नयी
सुन्दर बोतल में

"केशा" के उपयोग से होनेवाले लाभ

- बाल झड़ने बंद होते हैं और बढ़ते है।
- बाल घने और मुलायम होते हैं।
- असमय सफेद बाल नहीं होते।
- इसकी अद्वितीय खुशबु आपको दिनभर प्रसन्न रखती है।

सुप्रसिद्ध लोमा के उत्पादको द्वारा ही निर्मित

सोल एजेन्ट : एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद १

एजेन्ट : सी. नरोतम एण्ड कम्पनी, बम्बई-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विख्यात 'गाय - छाप' प्रतीक द्वारा प्रस्तुत !

SEVASHRAM PRODUCTS

REGD.

TRADE MARK

UDAIPUR

ब्राह्मी-आँवला तैल

सार्सापरिला

द्राक्षासव

ये उत्पादन जमाने की कसौटी पर खरे उतरे हैं और लाखों का विश्वास प्राप्त किया है।

मातृ-जीवन

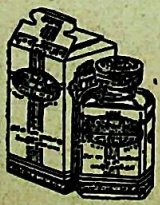

काला दंतमंजन

ब्राह्मी-जीवन

आयुर्वेद सेवाश्रम लि० उदयपुर (राजस्थान)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पॉपलिन्स

शर्टिंग्स

मर्सराइज्ड धोतियाँ

छपी हुई वायल्स और लोन

रायपूर मिल्स लि.

अ ह म दा बा द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझदार लोग कह गये हैं कि पुरानी रीतियों पर बेकार अड़े रहने में नुक़सान ही नुक़सान है। ऐसा करनेवाले अपने जीवन के नये-नये सुखों को आपने ही हाथों खो बैठते हैं।

उदाहरण के लिए वनस्पति की ही बात लीजिए। आपने लोगों को कहते सुना होगा, "भई, हम तो वनस्पति इस्तेमाल ही नहीं करते" या "हमने सुना है कि वनस्पति स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं होता"। यह तो एक बड़ी पुरानी धारणा है। आज के वैज्ञानिक सिद्ध कर चुके हैं कि हमारे स्वास्थ्य के लिए स्निग्ध पदार्थ बहुत ज़रूरी हैं और यह भी कि वनस्पति एक बहुत ही पुष्टिदायक और साफ़-सुथरा स्निग्ध पदार्थ है।

कही-सुनी पुरानी बातों में उलझ कर जीवन के नये सुख न खो बैठिए!

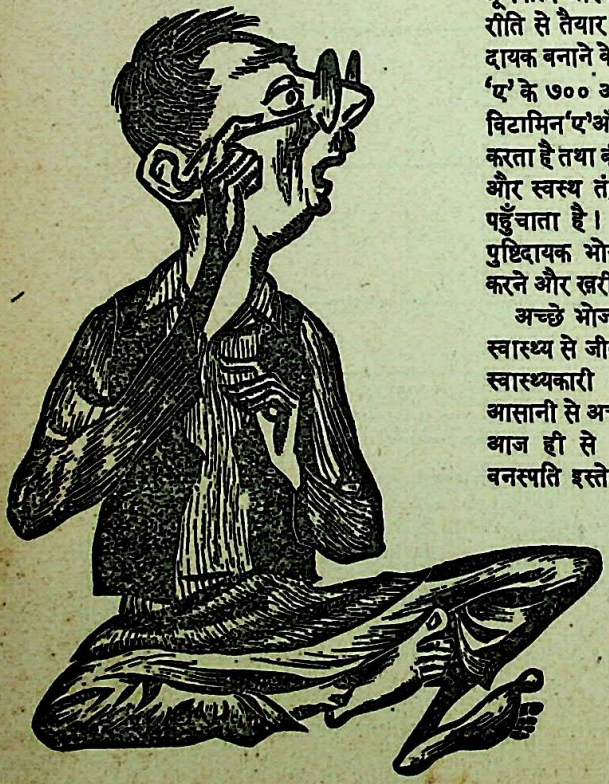

आवश्यक विटामिन से भरपूर

वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि तन्दुरुस्ती और ताक़त को बनाये रखने के लिए हर आदमी को कम से कम दो आउंस चिकनाई हर रोज़ चाहिए ही चाहिए। चिकनाइयों से पाचन-शक्ति बढ़ती है और भोजन अंग लगता है। इनसे थकन और बीमारियों की रोक-थाम में सहायता मिलती है और स्वस्थ काया का पूरा-पूरा सुख भोगने में ये हमारी बहुत मदद करती हैं।

वनस्पति एक विशुद्ध स्निग्ध पदार्थ है जिसे मूँगफली और तिल के तेलों को शोध कर वैज्ञानिक रीति से तैयार किया जाता है। इसे अधिक पुष्टिदायक बनाने के लिए इसके हर आउंस में विटामिन 'ए' के ७०० अन्तर्राष्ट्रीय यूनिट रिसाये जाते हैं। विटामिन 'ए' आँखों और त्वचा के स्वास्थ्य की रक्षा करता है तथा बीमारियों के बाद स्वास्थ्य लाभ करने और स्वस्थ तंतुओं को छूत से दूर रखने में मदद पहुँचाता है। और इसीलिए वनस्पति बहुत ही पुष्टिदायक भोज्य होने के साथ-साथ इस्तेमाल करने और ख़रीदने में किफ़ायती भी होता है।

अच्छे भोजन से स्वास्थ्य सुधरता है ... अच्छे स्वास्थ्य से जीवन अधिक रसमय बनता है। शुद्ध, स्वास्थ्यकारी और किफ़ायती वनस्पति से आप आसानी से अच्छा भोजन कर सकते हैं। क्यों नहीं आज ही से आप भी खाना पकाने के लिए वनस्पति इस्तेमाल करना शुरू कर देते?

वनस्पति –
गृहिणी का सच्चा सहायक

दि वनस्पति मैन्युफ़ैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़े मियाँ

उर्दू-कथा-साहित्य को अल्प काल में ही अपनी लेखनी से नयालोक प्रदान करनेवाली लेखिका वाजिदा तबस्सुम की एक कहानी

×

बड़े मियाँ दस्तरख्वान पर से उठे और हाथ धो, रुमाल से मुँह पोंछते हुए, तख्त पर आकर बैठ गये।

"अरे बन्ने! खिलाल की डिविया तो लाइयो!" हमेशा की तरह उन्होंने आज भी जोर से आवाज लगायी।

बन्ने डिविया लेकर आया, तो चुपके-से उन्होंने पूछा—"क्यों बन्ने! यह 'किब्ला' (पश्चिम) किधर है?"

बन्ने हँसते-हँसते दोहरा हो गया—"अरे! बड़े अब्बा किब्ले को पूछते हैं!"

बड़े मियाँ भौंचक! यह बात क्या इतनी काबिले-ताज्जुब थी? वे कौन-से सिजदों में सिर दिये बैठे थे कि, किब्ले-काबे की उन्हें खबर रहती।

"चुप बे, हँसे जाता है! नामाकूल!"—बड़े मियाँ ने घुड़की दी और बन्ने उनके बिगड़े तेवर देख कर खिसक गया।

बड़े मियाँ ने डिबिया खोली, नीम की तीली निकाली और खिलाल करने में मशगूल हो गये।

× × ×

खटके से दादी बी की आँखें खुल गयीं। अधखुली आँखों से उन्होंने देखा कि, बड़े मियाँ लोटा उठा कर बाहर निकल रहे हैं। लेकिन दादी बी को क्या पड़ी थी कि, पूछतीं—वे करवट लेकर सो रहीं। मगर पाँच-दस मिनट भी न गुजरे होंगे कि, बड़े जोरों से नमाज पढ़ने की आवाज आने लगी। अभी हल्का-हल्का अंधेरा था। दादी बी ने तकिये से सिर उठा कर देखा—बड़े मियाँ नमाज पढ़ रहे थे।

दादी बी की आँखों से उड़ कर नींद दूर भाग गयी। वे एकदम उठ कर बैठ गयीं। आँखें मल-मल कर उन्होंने देखा। हाँ, वही तो थे—चौखाने की हरी तहमद, चार कली का ढीला मलमल का कुर्ता और सिर पर आड़ी टोपी! बड़े जलाल में वे पढ़े चले जा रहे थे—"अल्लाहोअकबर... अल्लाहोअकबर..."

सुबह दादी बी ने सबसे कहा—"अय, सुनते हो, सुबह मजहर मियाँ नमाज पढ़ रहे थे।" लेकिन यह बात इतनी बईद-अज-कयास (कल्पना से परे) थी कि, दादी बी के लाख यकीन दिलाने पर भी किसी को इसका यकीन न आया।

× × ×

बड़े मियाँ भी, बस, अपनी तरह के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

JETSTREAM*

JETSTREAM*

JETSTREAM*

JETSTREAM*

सिर्फ टी० डब्ल्यू० ए० के भव्य एवं विश्व-मान्य जेट्स्ट्रीम से ही, भारत से टी. डब्ल्यू. ए. के विश्वव्यापी यात्रा मार्गों पर हवाई यात्रा कीजिये।

सर्वोत्तम हवाई यात्रा के लिए.....

जेट्स्ट्रीम की सुविधा सिर्फ टी० डब्ल्यू० ए० द्वारा ही उपलब्ध है।

TWA
TRANS WORLD AIRLINES

TWA/134

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक ही थे। हर हरकत ओछी और हर आदत निराली। दादी बी को कैसा-कैसा गुस्सा आता उनके खिलाल करने पर। मगर वे सुनते कहाँ थे? उनका मामूल था कि, हर खाने के बाद खिलाल करते। घर-भर के बच्चे पिछवाड़े के नीम-नीचे से तीलियाँ जमा करके लाते और गड्डियाँ बना कर रख लेते। बड़े मियाँ पैसे-पैसे उनसे गड्डी खरीद लेते और मजे से खिलाल किया करते।

खाना खाने के तुरत बाद उनकी डिबिया आती और खिलाल चलनी शुरू हो जाती। दादी बी कभी-कभी जल कर कहतीं—"इस हाड़-पीटे ने लकड़ियाँ चला-चला कर अच्छे-खासे दाँत मुए खुल-खुले कर लिये।"

बड़े मियाँ...

मगर यह तो दादी बी भी अच्छी तरह जानती थीं कि, दाँत खुल-खुले उमर से हुए थे या खिलाल से! बड़े मियाँ दादी बी के बच्चों में सबसे बड़े थे। छोटे बहन-भाइयों की शादियाँ हो गयीं। वे बच्चे छोड़, पोतों-नवासोंवाले हो गये; मगर बड़े मियाँ वहीं-के-वहीं रहे।

बड़े मियाँ और मँझले मियाँ की निस्बत साथ-साथ ही भेजी गयी थी; लेकिन यह तो अल्लाह की मर्जी है, जिसे चाहे नवाज दे। मँझले मियाँ देखने-दिखाने में थोड़े अच्छे होने के साथ-साथ जरा चार हरफ पढ़ भी गये थे। सो, बेटीवालों ने मँझले मियाँ को तो 'हाँ' का जवाब दे दिया और बड़े मियाँ के लिए साफ कह दिया—"हमारी बेटी बहिया में बह कर नहीं आयी है कि, उठा मारें।"

सुन कर बड़े मियाँ को वह गुस्सा आया कि, सारे में पीट दिया—"शादी वह करे, जिसने सूअर का गोश्त खाया हो।"

अब भाईबंद समझाने लगे—दोस्त-अहबाब सौ-सौ बातें मिलाने लगे; लेकिन बजाय इसके कि, कसम टूटे, उल्टे वे उन्हीं पर बरस पड़े और बोले—"शादी करूँ, तो दो बापों की औलाद समझ लेना।"

यह गाली साफ दादी बी पर पड़ती थी; सो वे झल्ला उठीं—"जाये मुआ चूल्हे-भाँड़ में! हमारी इज्जत लूटे लेता है।" और, दादी बी ने भी मुँह भर कर कसम खायी—"शादी करने को अगर बोलूँ, तो दो मर्दों की जोरू समझ लेना।" अब माँ ही दखल न दे, तो किसकी चँदिया खुजलायी थी कि, मुँह से चूँ भी करता!

लेकिन सैलाब का पानी और जवानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगमग जगमग चमकदार

-यह है विम का चमत्कार!

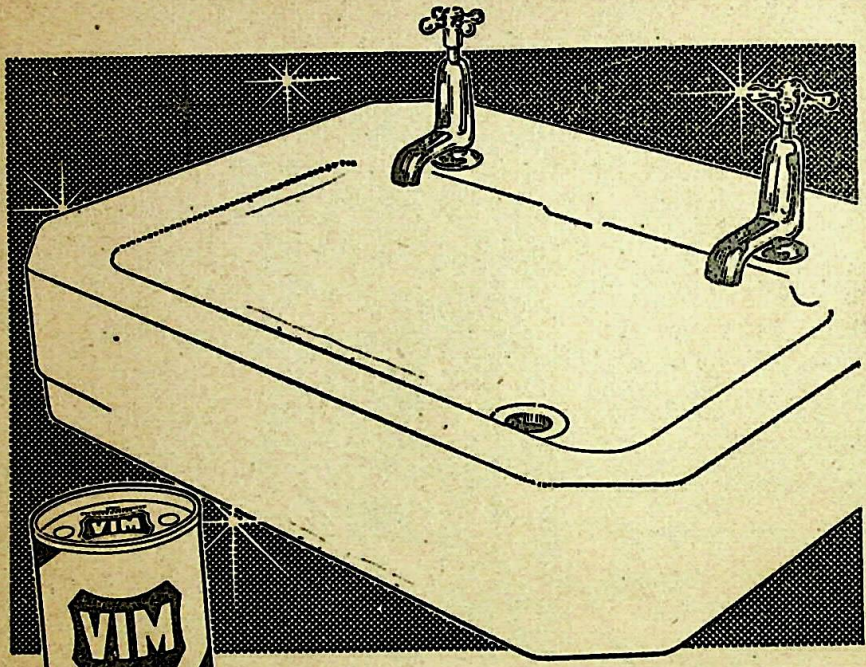

विम से एक बार साफ़ कीजिये और देखिये हर चीज़ कैसे जगमगाने लगती है—कांच या चीनी का सामान हो या रसोई घर के बरतन, फ़र्श और बरतन मांझने की चिलमचियां। विम से सफ़ाई कीजिये तो न रगड़ के निशान पड़ते हैं न कड़ी मेहनत।

और आराम कितना है! गीले कपड़े पर विम छिड़किये, हलके से मलिये—देखते ही देखते एक दमक आ जायेगी और दाग़ ग़ायब! घर की शान बनानी है तो विम इस्तेमाल कीजिये।

विम से हर चीज़ चमक उठती है

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

V. 98-50HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का जोर रोके नहीं रुकता। बड़ी पारसाई (संयम) का दावा किये बैठे थे बड़े मियाँ ; मगर अब आगे-पीछे से, अँधेरे-उजाले में, कोने-कचरे में, जहाँ किसी का मुँह देखते, उनकी राल टपक पड़ती। लेकिन यह भी जरूरी था कि शादी न करने का जो जतन उन्होंने किया था, उसे पूरा किया जाता। सो, थोड़े दिनों में ही सारे खानदान को यह मालूम हो गया कि, हजरत बुरी बातों में पड़ गये हैं। झूठ-सच कौन उड़ाये। अल्लाह को मुँह दिखाना है। सामने आकबत है। सुनने में तो यही आता था कि, शहर-भर की बदजात औरतों और कंगालिनों का पता उन्हें मालूम था। जहाँ कहीं वे बैठ जाते, एक महफिल जम जाती। रंगीली बातों से उन्हें बड़ी मुहब्बत हो गयी थी।

रमणी

[चित्र : खजुराहो के चित्र की आबिद सुर्ती-द्वारा रेखानुकृति]

पीपल की टेकवाली मस्जिद से लग कर मेवातियों का मुहल्ला था। उसमें रोहीले भी थे, जो सरहद पार करके हिन्दुस्तान के बाहर से आये थे। उनकी औरतें इतनी चौड़ी-चकली होती थीं कि, बड़े मियाँ-जैसों की राल तो टपकती ही, बड़ी मस्जिदों के मुल्ला भी दम छोड़ देते थे। उन्हीं में एक खान पठान भी था। उसकी एक छोकरी थी। नाम था, गुलाबो। थी भी कमबख्त गुलाबी-गुलाबी। सफेद चिकनी मिट्टी में गुलाब की पँखुड़ियाँ गूँथ कर जैसे अल्लाह मियाँ ने उसे इंसान के रूप में ढाला था। कुर्ता सदा खुले गले का पहनती। आधे बटन खुले, आधे बटन बंद। चलती, तो ऐसी थिरक-थिरक कर कि, बोटी-बोटी जगह छोड़ देती। उसका बाल-बाल चलते हुओं को मुखातिब करता। खुली रखने की जगह को वह बंद रखती और बंद रखने की जगह को हवा खिलाती, सारे बाड़े में कुदकड़े लगाती फिरती। फिर देखनेवालों की आँखें कौन बंद करे? सामने आयी चीज तो सभी देखते हैं!

बड़े मियाँ ने भी उसे देखा और ऐसे रीझे कि, दादी बी की तिजोरी से उनके चढ़ावे के छः तोले के कंगन ले जाकर बदमाशों के हाथ सौंप दिया कि, बस, कैसे भी वह लौंडिया उड़ा लाओ। वे ताक में रहे और मौका मिलते ही उसे उठा लाये। उन्होंने जी-भर खेल खेले— खूब-खूब बागबानी की। पर इसका पता उसके बाप को चला गया। उसने तेरे-मेरे को मिला कर गवाहियाँ साबित कीं और बड़े मियाँ धर लिये गये।

खैर, किसी तरह इस जंजाल को बड़े मियाँ ने पार किया। दादी बी और दूसरे लोगों ने समझा कि, यह अच्छा सबक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

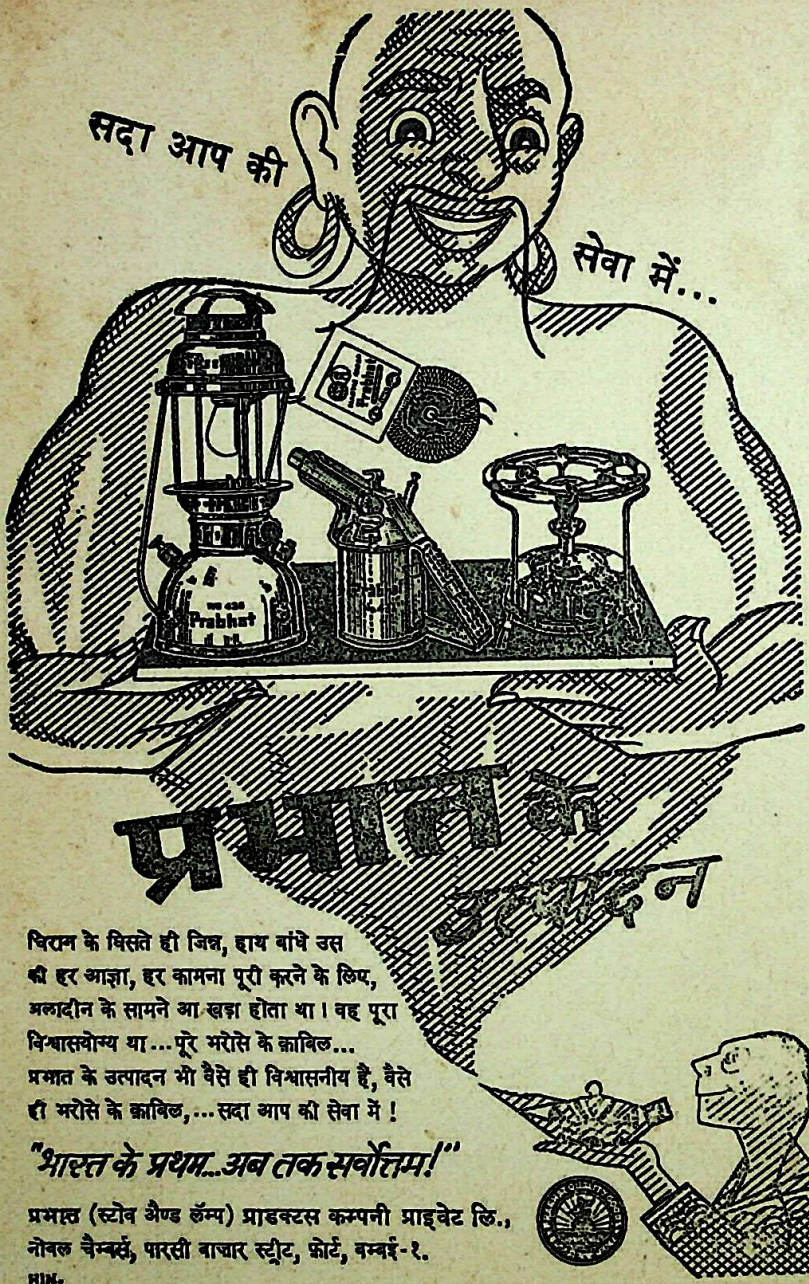

प्रभात

चिराग़ के घिसते ही जिन्न, हाथ बांधे उस
की हर आज्ञा, हर कामना पूरी करने के लिए,
अलादीन के सामने आ खड़ा होता था। वह पूरा
विश्वासयोग्य था...पूरे भरोसे के क़ाबिल...
प्रभात के उत्पादन भी वैसे ही विश्वासनीय हैं, वैसे
ही भरोसे के क़ाबिल,...सदा आप की सेवा में !

"भारत के प्रथम...अब तक सर्वोत्तम!"

प्रभात (स्टोव ऐण्ड लॅम्प) प्राडक्टस कम्पनी प्राइवेट लि.,
नोवल चैम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट, फ़ोर्ट, बम्बई-१.
MIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़े मियाँ को मिल गया है और अब वे रास्ते पर आ जायेंगे; लेकिन उनका खयाल खयाल ही रहा। बड़े मियाँ की जवानी छलकती रही और उसके साथ-साथ नयी-नयी हसीनाएँ भी उनके आगोश में किलकती रहीं। इसी तरह दिन बीतते गये और बड़े मियाँ उम्र की तीसरी मंजिल में जा पहुँचे। अब उनके दाँत देखो, तो यों भागने को आमादा, जैसे बच्चे 'छुपाछाई' में एक-दूसरे को लूटने में तुले हों। गोश्त में ढीलापन भी आने लगा। कहाँ तो यह आलम था कि, बदन छूने से सितार-जैसी 'घन्-घन्' आवाज निकलती थी और अब माँस चुटकियों में हारा-थका-सा गिरफ्तार हो जाता था। मगर इतने गये-गुजरे होकर भी वे निराले थे। नमाज तो शब्बीर मियाँ के जन्म के वक्त ही पढ़ी हो, तो पढ़ी हो। अब शब्बीर मियाँ भी अल्लाह के फजल से दो-दो बच्चों के बाप थे। ईद-बकरीद की नमाजों से तो खुदावास्ते का बैर था। ईद-बकरीद के दिनों में भी, वे मजे से दस-ग्यारह बजे उठते और मुँह-हाथ धोकर बाहर निकल जाते। लौटते वही रात के बारह बजे, दो बजे और कभी-कभी तीन बजे। बच्चे बोलते—"बड़े अब्बा, नमाज पढ़ो ना!" तो तन-तना कर बोलते—"तुम्हारे जनाजे की नमाज पढ़ेंगे। अभी से क्या पढ़ना?" इस उमर में अक्सर लोग सम्भल जाते हैं; मगर इनका ढंग सबसे निराला था।

× × ×

बड़े मियाँ के भतीजे कमाल मियाँ की शादी का वह धूम-धड़ाका था कि, लोग रातों को सोना तक भूल गये। बड़े घर की बेटी उठायी— किसी बात की कमी न थी। यहाँ भी हर चीज सेर को सवा सेर। रतजगे होते, तलन होते— गुलगुले, पूरियाँ, चोंगे तले जाते और ढोलक पर वह-वह थापें पड़तीं कि, बड़े-बड़े सिड़ भी नींद से रह-रह कर चौंक पड़ते।

गर्मियों के दिन थे, सो बड़े मियाँ अपने मामूल के मुताबिक तीन बजे रात के आसपास बाजार से लौटे। साथ में दोस्तों की मंडली भी थी। अच्छे-खासे घर-बारियों को उनकी बीवियों से वे तुड़वा देते थे; बोलते—"अरे मियाँ! बाजार की हाँड़ी में जो मजा है, वह घर की हाँड़ी में कहाँ?" ऐसे-ऐसे चकमे देते कि, अपनी राह जानेवाले भी पालतू कुत्ता बन साथ हो लेते।

जब वे लौटे, तो रतजगे की धूम थी। आँगन-बीच मड़वा पड़ा था— फूल-पत्तों से लहकता-महकता। वह गड़बड़, वह शोर कि, तौबा! मड़वे-तले गीत हो रहे थे। ढोलक पर थाप-पर-थाप पड़ रही थी। लड़कियाँ गा रही थीं—

"...जी का जंजाल मुआ बाजरा लाये।
मैं निक्को बोली बाजरा—
तुम काहे को लाये बाजरा!..."

वह जो बीच में मोटी-मोटी आँखों-वाली अल्हड़-सी छोकरी थी, वह तान उठाती और सब साथ देतीं— वह अपनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्व चैम्पियन की पसंद

फायरस्टोन

...फिर, आपकी क्यों न हो

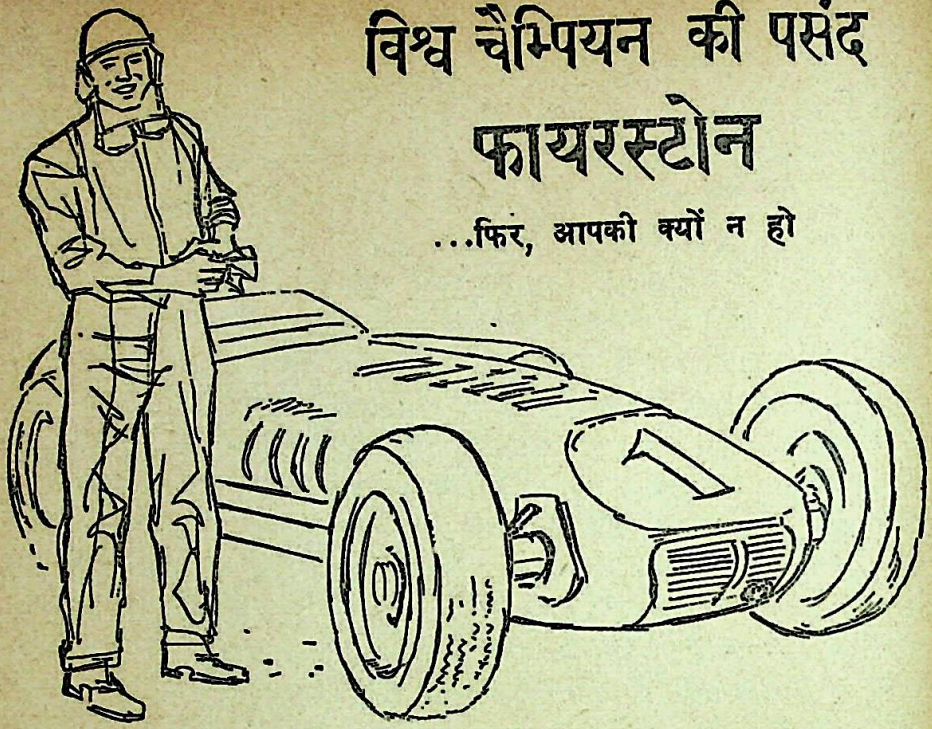

५०० मील की विश्व प्रसिद्ध 'इण्डियाना पॉलिस' रेस के विजेता जिम्मी ब्रेअन ने प्रति घण्टे १४० मील की गति पर भी बखूबी काम आने वाले फायरस्टोन टायरों की खूब प्रशंसा की, हालांकि टायरों को कड़ी कसौटी पर उतारने वाले इस रेस-मार्ग पर टायरोंको बेरहमी से धक्के खाने पड़े, उनकी तोड़-मरोड़ व घिसाई हुई। आप भी बिल्कुल ऐसी ही सुरक्षा व विश्वसनीयता प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि आपकी कारके फायरस्टोन टायरों में भी रेस के टायरों जैसी ही सुरक्षात्मक निर्माण विशेषताएँ मौजूद हैं। फायरस्टोन टायरों की सुरक्षा क्रियाशीलता द्वारा प्रमाणित है।

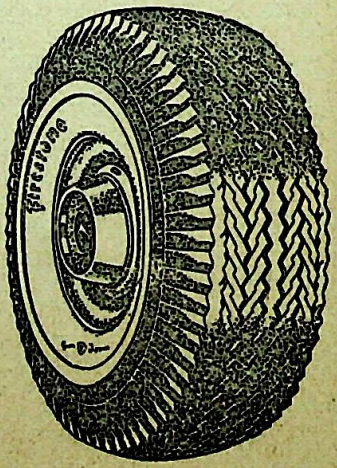

Firestone

न्यू डिलक्स चैम्पियन

ट्यूब रहित या ट्यूब सहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पतली-सी नाक चढ़ा कर 'निक्को' इस मजे से बोलती कि, जी लोट-पोट हो जाता—

"...जब मैं वो बाजरा छड़ने को बैठी,
भूसा उड़-उड़ जाये— मुआ बाजरा।..."

और फिर, भूसे से बचने के लिए उसने आँखों पर इस जाविये से मुँह बना कर हाथ उठाया कि, बड़े मियाँ ढेर हो गये।

"...मैं निक्को बोली बाजरा !
तुम काहे को लाये बाजरा !..."

पतली-सी नाक 'निक्को' पर बार-बार चढ़ती-उतरती।

"...जब मैं वो बाजरा चुनने को बैठी,
आँखें मेरी फूटी जायें—मुआ बाजरा !..."

रात के तीन भी तो बज रहे थे। उसने अपनी नींद-भरी मोटी-मोटी आँखें सबके सामने खोल कर जोर से मीच लीं।

"...आँखें मेरी फूटी जायें—मुआ बाजरा !..."

बड़े मियाँ का जी चाहा, सारा बाजरा, खुद ही चुन-चुना कर साफ कर दें।

"...जी का जंजाल मुआ बाजरा..."

बाजरे की तकरार चलती रही और बड़े मियाँ वहीं खड़े रहे। सुबह-सुबह जब अँधेरा छट रहा था और सुबह की हल्की-हल्की रोशनी भरपूर उजाले में बदल रही थी, बड़े मियाँ वहीं खड़े उसको घूरे जा रहे थे— उसको, जो वहीं ढोलक के पास टाँगें फैला कर सो गयी थी !

न-जाने क्या नेकी बड़े मियाँ के दिल में आयी। उसकी तरफ कोई बुरा खयाल उनके दिल में न आया। झट सोच लिया— "बस, इसी से शादी कर लेंगे।" इतने गये-गुजरे होकर भी लाखों पर भारी थे बड़े मियाँ। कौन था, जो बेटी न देता भला ? लोग मर्द की उमर नहीं, उसका धन देखते हैं और धन की यहाँ क्या कमी थी !

बड़े मियाँ ने हाथ-पाँव चलाये, तो पता चला कि, बड़े घरवालों की पोती है। उन्होंने माँ के आगे जाकर हाथ-पाँव जोड़े, खुशामदें कीं। माँ दो मर्दों की जोरू ठहरीं— खुद दो बापों की औलाद ठहरे; मगर दिल की चोट थी ! 'तौबा-तुल्ला' करके कसम लौटायी और माँ के कदमों में गिर कर गुजरे दिनों की माफी माँग ली।

दादी बी बड़े ठस्से से गयीं, पोपले मुँह से पोपले मुँहवाले बेटे का पयाम लेकर। उधर, बड़े मियाँ सारी बदी भूल गये। लोगों ने कनमनी आँखों से देखा कि, बड़े मियाँ पटापट सिजदे कर रहे हैं। वे बार-बार माँ को लड़कीवालों के पास भेजते और खुद सिजदे-पर-सिजदे किये जाते। अल्लाह मियाँ से दुआएँ भी यों माँगते, जैसे बराबरी के दोस्त-अहबाब से बातें कर रहे हों—"अरे अल्लाह मियाँ, आप क्या समझते हैं ! क्या मैं उसको भगा नहीं सकता ? मगर मौला ! अब मेरा दिल खुद नहीं चाहता ! भूल है, अल्लाह मियाँ, भूल ! बस, अब तो दिल चाहता है कि, शरीफ मर्दों की तरह घर बैठ कर जिंदगी गुजार दूँ।.. अरे, पाँचों वक्त की नमाज पढ़ा करूँगा। रमजान के रोजे रखूँगा। कुरानशरीफ भी पढ़ूँगा।... मुझे सचमुच हाजरा से इश्क हो गया है..."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नयी
साड़ी ?

नहीं-लक्स में धुली है !

शिफ़ॉन, निनॉन, वॉयलें, बढ़िया रेशम—आप के सभी नाज़ुक कपड़े शुद्ध, मुलायम लक्स फ़्लेक्स में धुल कर जगमगा उठते हैं और इन की चमक दमक भी नहीं बिगड़ती।

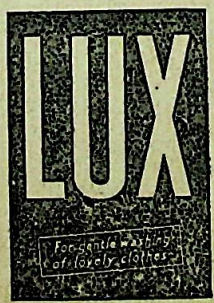

लक्स की धुलाई में क़ीमती कपड़ों की भलाई है

LX. 139-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई, का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अल्लाह मियाँ के कान शायद खुले थे। या फिर बड़े मियाँ की दुआओं में ही असर होगा। दौड़ा-दौड़ी के बाद 'हाँ' हो गयी। बड़े मियाँ के मानो जमीन पर पाँव ही न पड़ते थे। 'हाँ' होते ही सबसे पहला काम उन्होंने यह किया कि, वजू बना कर कुरान-शरीफ लेकर बैठ गये और दो पारे पढ़ कर 'आँहजरत' के नाम बख्श दिये।

× × ×

दस्तरख्वान बिछे हुए थे। सफें-की-सफें बैठतीं और खाना खाकर जगह खाली कर देतीं। फिर दूसरी सफ बैठती। बड़े मियाँ फूलों के गजरों और सेहरे से लदे-फदे सिर पर जरी का साफा बाँधे, हाथ धोने के लिए रखी सिलफ्ची लोटे की तरफ बढ़े। सीढ़ियाँ उतरे, तो पास ही से सिसकी-सी सुनायी दी। आगे बढ़े, तो कोने में एक साया-सा काँप रहा था। बोले—"इधर कौन है? खाना खा चुके?"

"....."

"अरे भई, जवाब क्यों नहीं देते। चोरों की तरह क्यों खड़े हो!" और, बड़े मियाँ ने हाथ पकड़ कर उसे सामने खींच लिया।

"अरे, चुन्नू भाई के बेटे हो? क्या नाम है मियाँ तुम्हारा? भूल ही गया मैं तो...हाँ-हाँ, याद आया— जफर मियाँ! अच्छे तो हो?"

बड़े मियाँ ने जफर मियाँ की आँखों में झाँका—"हाय, रो रहे हो तुम?...अरे, बात क्या है? घर में तो सब अच्छे हैं न?"

"जी हाँ! सभी अच्छे हैं। बस, मैं ही नसीबों का पूरा हूँ।"

"बात क्या है, मियाँ?"—बड़े मियाँ ने बड़े प्यार से पूछा।

एकदम जफर मियाँ औरतों की तरह फफक पड़े—"अपनी किस्मत की सियाहियों का शुमार करूँ, तो पूरे तौर से बरसात की रात बन चुका हूँ। कहीं उजाला नहीं..."

"औरतों की तरह रोये जाते हो— बात बताते नहीं! अरे, हुआ क्या?... घर तो नीलाम पर नहीं उठ गया?"

चुन्नू मियाँ बेचारे अच्छे दिन देखे बैठे थे। बड़े नाना के जमाने में दरवाजे पर हाथी झूलता था। अस्तबल में असील घोड़े एक-दो नहीं, पूरे आठ थे। सवारी के लिए बग्घी थी— ऐसी 'घर-घर-छन-छन' करती आती कि, लोग एक मील परे से ही बोलना शुरू कर देते—"अरे, हटना मियाँ! हवेलीवालों की सवारी आ रही है।" मगर चाँद तो घटता-बढ़ता रहता है। बुरे दिन आये और ऐसे आये कि, घर की हर अच्छी-बुरी चीज बिक-बिका कर कोयला बन गयी। कहाँ तो वह हाथी, घोड़े और बग्घियाँ और कहाँ यह हाल कि, जूतियाँ चटखाते फिरते; मगर कोई पास बिठा कर सलाम लेने का भी रवादार न होता। अब नसीबों से सिर्फ एक मकान बच रहा था। सर छुपाने को, बस, एक वही आसरा था! बड़े मियाँ ने समझा कि, शायद वही नीलाम पर उठ रहा होगा।

लेकिन जफर मियाँ बड़े शायराना अंदाज में बोले—"मकान का तो नहीं, मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परियों की राजकुमारी

मिन्नी को जब मैं ने नया फ्रॉक पहनाया तो वह तालियां बजा कर नाचने लगी।

बड़े प्यार से मैं ने यह फ्रॉक तैयार किया था—दूधिया सफेद फ्रॉक जिस के बार्डर पर नीले रंग के नन्हें नन्हें फूल...

मिन्नी उछलती कूदती शीशे के सामने गई। वहां उस ने घूम कर चारों ओर से फ्रॉक को देखा और फिर दूसरे क्षण अपनी सहेलियों को फ्रॉक दिखाने घर से बाहर निकल गई।

मैं ने पुकारा, "मिन्नी, मिन्नी! फ्रॉक उतार दे, मैला हो जायेगा। शाम को शादी पर जाते समय पहनना..."

पर मिन्नी वह गई, वह गई।

मैं ने उसे देखा तो लगा जैसे वह परियों की राजकुमारी हो। बड़ी ही प्यारी लगी वह उस फ्रॉक में।

दिल में तो आया कि मिन्नी को वापस ले आऊँ। फ्रॉक तो मैं ने नाप देखने के लिए ही पहनाया था। लेकिन तभी रसोई में जो भाजी के जलने की महक आई तो उधर दौड़ी और फिर वहां काम में ऐसी फँसी कि होश ही भूल गई।

होश तब आई जब दर्वाजे में अपनी सहेली राधा की आवाज सुनी। इतने अर्से के बाद उसे देख कर चाव चढ़ गया। और अभी हम जा कर ड्राइँगरूम में बैठी ही थीं कि सामने क्या देखती हूँ—दर्वाजे में मिन्नी खड़ी है।

देखते ही मेरे तो होश उड़ गये। सारा फ्रॉक गंदा किया हुआ था। अब शाम को शादी पर क्या पहनेगी।

मैं मिन्नी की ओर बढ़ी "सत्यानाश कर दिया है फ्रॉक का। शाम को अब अपना सिर पहनेगी?" और मैं उसे मारने को ही थी कि राधा ने छुड़ाते हुये कहा, "पागल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गई है क्या? बच्ची पर हाथ उठाती है।" मिन्नी को छुटकारा मिला। उस ने फ्रॉक उतार दिया। फिर मै फ्रॉक धोने गुसलखाने में गई। फ्रॉक को डंडे से कूट पीट रही थी कि राधा वहां आई, "तो क्या अब मिन्नी की बजाये फ्रॉक को पीट कर अपना गुस्सा ठंडा करेगी?"

"इसे धोऊं न तो शाम को वह पहनेगी क्या? दूसरे फ्रॉक तो इतने अच्छे नहीं हैं।"

"पर पीटती क्यों हो? वह फट जायेगा।"

"तो पीटे बिना साफ कैसे होगा?"

"साफ कैसे होगा? सही किस्म के साबुन से। अब जैसे मैं सनलाइट बरतती हूँ ..."

"सनलाइट क्या ऐसा बढ़िया साबुन है?"

"हां, सनलाइट से कपड़े बहुत उजले धुलते हैं। यह बिल्कुल शुद्ध होता है। इस लिये इससे कपड़ों को कोई नुकसान नहीं पहुँचता।"

"पर है तो महँगा न?"

"अजीब बात करती हो," राधा हँसी, जरा इस के फायदे तो देखो। इसे जरा सा कपड़ों पर मलो तो इतना झाग देता है कि ढेरों कपड़े देखते देखते सफेद और उजले धुल जाते हैं। कूटने पीटने से एक तो अपनी जान बचती है, दूसरी कपड़ों की। और इस लिये कपड़े पहले से कहीं ज़्यादा देर तक टिकते हैं। इस तरह साबुन बचा, मेहनत बची, कपड़े भी बचे। अगर इतनी बच्चत हुई तो यह महँगा कैसे हुआ?"

उसी समय मैं ने सनलाइट की टिकिया मंगवाई और उस से फ्रॉक धोने लगी। साबुन फ्रॉक से जरा सा छुआ था कि झाग ही झाग हो गया। मिनिटों में फ्रॉक धुल कर चमकने लगा। शाम को मिन्नी ने वही फ्रॉक पहना, तो सच कहती हूँ, वह बहुत ही प्यारी लगी—परियों की राज-कुमारी जैसी। मैंने अंगुली को काजल लगा कर उस के माथे पर छोटा सा निशान लगा दिया कि कहीं नज़र न लग जाये।

S/P. 3B–50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरमानों का नीलाम जरूर उठ गया। चाँदी की ताकत वाकई बहुत बड़ी होती है।"

बड़े मियाँ बच्चे तो थे नहीं– सन्नाटे में आ गये। थोड़ी देर चुप रहे ; फिर बड़ी सलाहियत से पूछा–"हाजरा से मुहब्बत करते हो?"

"जी हाँ। वह भी मुझसे करती है।" जफर मियाँ जैसे अदालत के सामने हल्फिया बयान देने पर तुले थे–"आपको याद होगा, आपका पयाम जाने के कई दिन बाद तक जवाब न मिला था। हाजरा कहती थी–'मैं जहर खा लूँगी, या नहीं तो, बस, जफर मियाँ से शादी करूँगी।' उधर उसके गरीब माँ-बाप कहते थे कि, आप-जैसा दामाद बार-बार नहीं मिला करता। जीत आप की ही होनी थी, सो हुई।" और, वह छोटे बच्चों कीं तरह आँखों पर हाथ रख कर रो पड़े।

कुछ देर बाद वे फिर बोले–"अब यहाँ खड़ा था कि, हाजरा डोली पर चढ़ेगी, तो उस पर ये गोंदनियाँ न्यौछावर करूँगा। हमारी मुहब्बत उसी गोंदनी के पेड़-तले परवान चढ़ी थी और पाँच साल से हम साथ रहने की सोचते आये थे ; मगर...."

"छि:! मर्द होकर रोते हो! आओ मेरे साथ।...आँसू पोंछ डालो!"

दीवानखाने में अभी काजी साहब और बाराती बैठे ही हुए थे। बड़े मियाँ फूलों से लदे-फदे, जफर मियाँ का हाथ पकड़े दाखिल हुए और दो-एक मिनट इधर-उधर देखने के बाद बीचोबीच जाकर खड़े हो गये। फिर सपाट लहजे में बोले–"जफर मियाँ! मैं हाजरा बेगम को तीन बार तलाक देता हूँ।"

"तलाक?" सब सन्नाटे में आ गये। दो-चार मिनट खामोशी रही होगी, फिर भनभनाहट-सी होने लगी। बड़े मियाँ ने कदरे-सख्ती से हाजरा के बाप को मुखातिब किया–"मियाँजी, आपको मालूम था न कि, आपकी बेटी जफर से मुहब्बत करती है। फिर भी आपने उसे मेरे पल्ले बाँध दिया। मैं ऐसी लड़की को अपनी बीवी नहीं बनाऊँगा!" उनकी आवाज डूब रही थी ; मगर वह सम्भल गये और काजी से बोले–"काजी साहब! पढ़ा दीजिये इसका निकाह जफर मियाँ के साथ! मेहर मैं अभी देता हूँ!" और, उन्होंने अपना सेहरा उतार कर जफर मियाँ के सिर पर बाँध दिया। अपनी जामदानी की अचकन भी उतार कर उन्होंने जफर मियाँ को पहना दी।

इस समय उनकी आँखों में नमी धुल रही थी। बड़ी ही नर्म आवाज से बोले–"जाओ मियाँ, खुश रहो– खाओ, पियो, ऐश करो। मैं तुम दोनों मासूम फरिश्तों के लिए अपनी नेक तमन्नाएँ और दुआएँ भेजता हूँ।"

दस्तरख्वान बिछे ही हुए थे। बड़े मियाँ ने दो-चार उल्टे-सीधे निवाले निगले। फिर हाथ धो, रुमाल से मुँह पोंछते हुए पलंग पर चढ़ कर बैठ गये और आवाज दी–"अरे भाई, खिलाल तो लाइयो!"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परी के आँसू

पंजाबी-कथाकार सुखबीर की एक कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

उस रात मैं बहुत देर तक जागता रहा और फिर पता नहीं, किस समय मेरी आँख लग गयी। हफ्ते-भर की तरह ही उस रात भी वर्षा का कोई अंत नहीं था। मेरे कमरे की छत एक तरफ से चू रही थी और सारा फर्श पानी से भरा हुआ था।

अभी मेरी आँख लगी ही थी कि, किसी ने दरवाजा खटखटाया। मुझे आश्चर्य हुआ कि, भला इस समय कौन आया। तभी दूसरी बार दरवाजे पर दस्तक हुई और मेरे मुँह से निकल गया—"कौन है? आ जाओ अंदर।" इसके साथ ही, मैंने दरवाजे की कुंडी के साथ बँधी रस्सी खींच कर कुंडी खोल दी।

दरवाजा खुला, तो मैं देख कर हैरान हो गया—"यह सपना तो नहीं है?" मेरे सामने एक परी खड़ी थी। हाँ, परी—उन्हीं परियों-जैसी, जिन्हें मैं बचपन में सुनी कहानियों में देखता था। पर इस परी के दोनों पंख कटे हुए थे और अब उनके स्थान पर नये पंख फूट रहे थे। जब वह दहलीज लाँघ कर अंदर आयी, तो मैंने देखा, वह लँगड़ा कर चलती थी। उसका चेहरा बड़ा सुंदर था। उतना सुंदर चेहरा मैंने आज तक किसी का नहीं देखा। उसकी आँखें बहुत चमकदार थीं; पर ऐसा लगता था, जैसे वे कुछ ही देर पहले रोकर शांत हुई हों। उनमें अद्‌भुत प्यार छलक रहा था। ऐसी आँखें तो मैंने केवल अपनी माँ की ही देखी थीं।

मैं बहुत देर तक उसकी आँखों को देखता रहा। फिर मेरी दृष्टि उसकी कलाइयों पर पड़ी, जिनमें उसने रंग-बिरंगी चूड़ियाँ पहन रखी थीं। उसकी साड़ी धानी रंग की और रेशमी थी; पर कई स्थानों पर जली और फटी हुई—पाँवों के पास तो बहुत ज्यादा फटी थी। उसके पाँव नंगे तथा कीचड़ से भरे थे। उसका पूरा शरीर भीगा था—सिर से पाँव तक! उसके सुनहरे-लुभावने बाल माथे और गालों से चिपके थे।

मैं उसे अनिमेष देखता रहा।

वह मेरी चारपाई के पास आकर खड़ी हो गयी। फिर, हौले-से मुस्करा कर पूछा—"तुमने मुझे पहचाना नहीं?"

उसकी आवाज बड़ी सुरीली थी! मैंने इससे पहले कभी किसी को सितार की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/GH-7

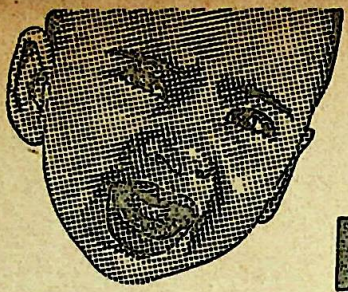

जब आप का बच्चा इस हालत में हों

तो उन के मुस्कुराहट को वापिस लाईये

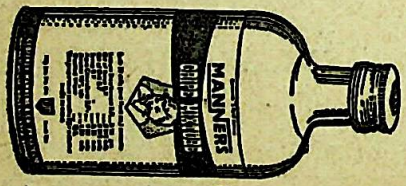

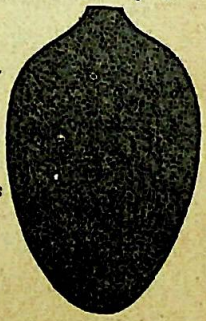

मॅनर्स
ग्राइप मिक्श्चर से

शुद्धता के इस प्रतीक को ध्यान रखें यह मॅनर्स का उत्पादन है

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.
BOMBAY • DELHI • CALCUTTA • MADRAS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झनकार की तरह बोलते नहीं सुना था। सचमुच कोई परी ही ऐसे बोल सकती थी।

उसने फिर कहा—"लगता है, तुम्हारी याद बहुत कमजोर है! तुमने मुझे इतनी जल्दी भुला दिया?"

मैं आश्चर्य में डूबा था। आखिर, मेरे मुँह से निकला—"मैं तुम्हें नहीं जानता। तुम कौन हो? तुम तो आकाश की परी लगती हो!"

उसने कहा—"हाँ, मैं परी ही हूँ; पर आकाश की नहीं, धरती की!"

मैंने कहा—"परियाँ तो आकाश की ही होती हैं।... धरती की परी तो मैंने कभी नहीं सुनी।"

वह मुस्करायी—"लेकिन मैं धरती में से जन्मी हुई परी हूँ। मैं आकाश से नहीं उतरी। हाँ, कभी मैं आकाश में घूमा जरूर करती थी। तब तारों की बहुत कोमल राह थी, मेरे पाँवों के नीचे। मुझे लगता था, जैसे तारों के झाग में से चल रही हूँ।...पर अब तो मुझे धरती के ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर ही चलना पड़ता है और वह भी नंगे पाँवों। यह देखो, मेरे पाँव कैसे जख्मी बने हुए हैं।"

उसने अपना कीचड़-भरा पाँव ऊपर उठाया। उस पर कई जख्म थे। एड़ियों में बवाइयाँ फटी हुई थीं। उनमें से खून रिस रहा था।

मैंने पूछा—"क्या तुम्हें किसी देवता ने शाप दे दिया है, जो तुम आकाश छोड़ कर धरती पर घूम रही हो?"

"हाँ, मुझे शाप ही मिला है।" उसकी आवाज में बड़ा दर्द था।

वह अभी तक खड़ी थी। मैंने उससे कहा—"तुम यहाँ, चारपाई पर, बैठ जाओ।"

उसने अपने गीले कपड़ों की ओर देखा, फिर मेरे बिस्तर की ओर। कहने लगी—"नहीं, मुझे अभी जाना है। फिर कभी आऊँगी।"

और, वह घूम कर लँगड़ाती हुई दरवाजे की ओर गयी; पर बाहर जाने के बजाय उसने दरवाजे की कुंडी लगा दी।

मैं डरने लगा कि, उसने कुंडी क्यों लगा दी? कहीं कमरा बंद कर मेरा गला तो नहीं घोंट देगी?

वह लौट कर चारपाई के पास आ गयी और बोली—"मेरे पीछे कुत्ते लगे थे, सो मैं मौका बचा कर इस कमरे में आ गयी थी। मैंने दरवाजा बंद कर दिया है, ताकि कुत्ते अंदर न आ जायें।"

सुन कर मैंने स्वयं को हल्का-सा प्रतीत किया। मेरे मन का डर उड़ गया।

उसी समय हवा का एक फर्राटा आया और रोशनदान में से एक अंडा नीचे गिर कर चूर हो गया। अंडे के गिरते ही रोशनदान में बने घोंसले में से दो चिड़ियाँ 'चूँ-चूँ' कर उठीं।

मेरी तरह ही उसके चेहरे पर भी अंडे के टूटने का दुःख था। क्षण-भर पश्चात् उसने कहा—"मुझे यह चिड़िया बहुत प्यारी लगती है। मैं जब जेल में थी, तो वहाँ कमरे में ऐसी ही दो चिड़ियाँ मेरी साथिनें थीं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निश्चिन्त रहिये

स्वस्थ मसूढ़े
सुदृढ़ दाँतों
स्वच्छ साँस

फोरहन्स टूथपेस्ट का इस्तेमाल कीजिये
तथा अपने चमकीले,
सफेद, स्वस्थ दाँतों पर गौरव कीजिये

हाल ही में फोरहन्स-चमकीली-मुस्कान-प्रतियोगिता में समस्त भारत से असंख्य प्रशंसा पत्र आये हैं जो फोरहन्स टूथपेस्ट के विशिष्ट गुण पर प्रकाश डालते हैं। और कोई आश्चर्य नहीं...क्योंकि फोरहन्स ही एकमात्र ऐसा टूथपेस्ट है जिस में मसूढ़ों के लिये डा. आर. जे. फोरहन द्वारा बनायी विशेष पौष्टिक दवा मौजूद है। फोरहन्स टूथपेस्ट से आपको स्वस्थ मसूढ़ों, सुदृढ़ दाँतों एवं स्वच्छ साँस का आश्वासन मिलेगा। फोरहन्स टूथपेस्ट का इस्तेमाल कीजिये तथा अपने चमकीले सफेद, स्वस्थ दाँतों पर गौरव कीजिये।

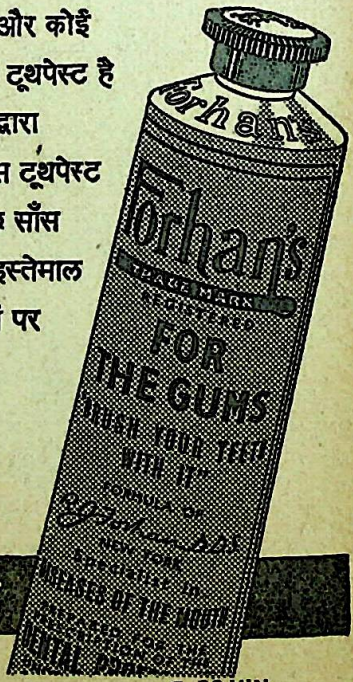

फोरहन्स

एक दंतचिकित्सक द्वारा निर्मित टूथपेस्ट

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.

S. 22 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने हैरान होकर पूछा–"तुम जेल में भी रही हो?"

उसने कहा–"हाँ, जेल में यदि वे न होतीं, तो पता नहीं, मैं कितना अकेलापन महसूस करती।"

मैंने पूछा–"पर तुम जेल क्यों गयी थीं? कब गयी थीं?"

वह धीमे से मुस्करायी–"तुम्हारी याद बहुत कमजोर है।...क्या तुमने मुझे नहीं पहचाना? तुम्हें याद होगा, एक बार जब तुम जेल में थे, तो तुम्हारी माँ, बहन और छोटा भाई तुमसे मिलने आये थे– उनके साथ मैं भी थी। तुम्हारी बहन के पास ही तो मैं बैठी थी।"

पंथी

मुझे लगा, जैसे मैं पागल हो जाऊँगा। "यह कब आयी थी मेरे पास?"–मैंने बहुत सोचा; पर कुछ याद न आया। तभी दरवाजे के पास की खिड़की 'फटाक्' से खुल गयी और वर्षा की बूंदों से भीगा हुआ हवा का जोरदार फर्राटा अंदर आ गया। मेरे उठने के पहले ही, वह खिड़की के पास गयी और उसे बंद कर वापस लौट आयी।

मैंने देखा, वह लँगड़ा कर चल रही थी। मुझे उस पर बहुत तरस आया। आखिर, झिझकते-झिझकते मैंने उससे उसके लँगड़ेपन का कारण पूछ ही लिया।

उसने मेरे पूछने का बुरा नहीं माना; हौले से कहा–"इस टाँग में गोली लगी थी।"

मैं भौंचक रह गया–"वह कैसे?"

उसने कहा–"शायद तुम्हारी बहन ने तुम्हें नहीं बताया। जब तुम जेल में थे और तुम सब कैदी भूख-हड़ताल कर रहे थे कि, तुम्हारे साथ मनुष्यों-जैसा व्यवहार किया जाये, तो उन दिनों हम स्त्रियों ने एक बहुत बड़ा जुलूस निकाला था। उस पर पुलिस ने पहले लाठी-चार्ज किया था– यह देखो, मेरे दो टूटे हुए दाँत– और फिर गोली चलायी थी, जिसमें पाँच स्त्रियाँ मारी गयी थीं। उसी समय मेरी टाँग में गोली लगी थी। तुम्हारी बहन भी तो मुश्किल से बची थी।"

मेरी हैरानी की हद हो चुकी थी। मैंने पूछा–"तो क्या तुम मेरी बहन शोभा को जानती हो?"

उसने कहा– "तुम तो बिल्कुल पागलों-जैसी बातें करते हो।...वह तो मेरी बहुत अच्छी सहेली थी!"

मैंने उसकी आँख बचा कर अपनी बाँह पर जोर से चुटकी भरी कि, कहीं सपना तो नहीं देख रहा हूँ। लेकिन नहीं, मैं तो जाग रहा था।

उसने फिर पूछा–"क्या तुम्हें स्कूल के दिन भी भूल गये हैं? उन दिनों जब तुम आठवीं कक्षा में भूगोल पढ़ाया करते थे, तो कक्षा में सबसे पीछे एक लड़की 'कमला' बैठती थी।"

"हाँ-हाँ, कमला को तो मैं जानता हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

★

हर दिन
हर घर में
कोई न कोई
इस्तेमाल
करता ही है

बालों को
श्याम बनाने
अथवा श्रेष्ठ
केश प्रसाधनार्थ

लोमा

सोल एजंटस्
एम. एम. खंभातवाला
अहमदाबाद-१.

एजंटस् :
सी. नरोतम ॲण्ड कंपनी
बम्बई-२.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंगू चमार की चुँधियायी आँखोंवाली छोटी-सी लड़की थी, जिसे अछूत होने के कारण कोई लड़की अपने साथ नहीं बैठाती थी।"

"हाँ, वही। उसके साथ मैं कुछ समय तक बैठा करती थी।"

मैं फिर उलझन में पड़ गया—"कमला के साथ तो 'सलमा' बैठती थी— इब्राहीम की बेटी सलमा।" क्या बोलूँ, मेरी समझ में कुछ आ ही नहीं रहा था। वह मुस्करायी— "उन दिनों तुम्हें भी तो स्कूल से निकाल दिया गया था।"

मैंने कहा—"हाँ, हेडमास्टर को अपन राजनीतिक विचारों के कारण मैं भाता नहीं था। पर मैंने तो स्कूल में कोई ऐसा राजनीतिक काम नहीं किया था, जिससे स्कूल को नुक्सान हुआ हो।"

वह बोली—"वास्तव में, तुम्हारे पढ़ाने में ही राजनीति भरी थी। जब तुम भूगोल पढ़ाते थे, तो छात्राओं के सामने पूरा हिन्दुस्तान साकार हो जाता था! बर्फ से ढँके ऊँचे-ऊँचे पहाड़, दूध की धारा के समान बह रहीं लम्बी-लम्बी नदियाँ, हरे-सुनहरे बालोंवाले खेत, बेहिसाब अनाज और धरती की कोख में पड़ी हुई धातुएँ— कोयला, सोना, लोहा...और उस सारी दौलत को लुटेरे लूट कर विदेश ले जा रहे थे...। यह राजनीति ही तो थी।" वह एक क्षण को रुकी; फिर पूछा—"अब क्या करते हो?"

"अब मैं क्या करूँगा? उसके बाद नौकरी तो मिली नहीं। आखिर, घरों पर जाकर या अपने घर बुला कर लड़कों को पढ़ाना शुरू कर दिया। बस, गुजारा हो जाता है।..." बोल कर मैं चुप हो गया।

बाहर वर्षा का शोर बढ़ता जा रहा था। कभी-कभी हवा का फर्राटा खिड़की या दरवाजे को कँपा जाता। मेरी आँखें उसके दोनों छोटे-छोटे पंखों को देख रही थीं, जो नये सिरे से फूटे थे। आखिर, मैंने उससे पूछा— "तुम्हारे ये पंख बहुत छोटे-छोटे हैं!"

अन्नदा

[चित्र : फ्रांसीसी चित्रकार मोले के एक शिल्प की रेखानुकृति]

वह मेरा मतलब समझ गयी। कहने लगी—"हाँ, अभी ये छोटे-छोटे ही हैं। नये फूटे हैं न। अभी मैं इनके साथ उड़ नहीं सकती। अब वैसे भी, मुझे उड़ कर कहाँ जाना है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन ब दिन ब दिन...

रेक्सोना साबुन

आप की जिल्द को निखारे चला जाता है

रेक्सोना में तेलों का एक विशेष मिश्रण, कैडिल, मिलाया जाता है जो जिल्द के स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए बहुत गुणकारी है। रेक्सोना के मलाई जैसे मुलायम झाग को अच्छी तरह अपनी जिल्द पर मलिये और देखिये कि दिन ब दिन यह कैसे निखरती चली जाती है!

आप के सौंदर्य के लिए
...रेक्सोना

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, रेक्सोना प्रोप्राइटरी लि. ऑस्ट्रेलिया के लिए भारत में बनाया R.P. 158-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब मुझे आकाश का तारों-भरा रास्ता नसीब नहीं। उसके स्थान पर मुझे धरती के ऊबड़-खाबड़ रास्तों में ही भटकना पड़ेगा।"

"पर पहले तो तुम्हारे पंख बड़े-बड़े रहे होंगे, जब तुम उड़ कर आकाश तक पहुँच सकती होंगी?"

"हाँ, पहले ये बड़े-बड़े थे और मैं बहुत ऊँचा उड़ सकती थी। लेकिन एक समय आया कि, ये पंख काट दिये गये, ताकि मैं उड़ न सकूँ और धरती के ऊबड़-खाबड़ रास्तों में भटकती-भटकती आखिर में मर जाऊँ।

"पर मैंने तो सुना है कि, परियाँ कभी नहीं मरतीं।"

"हाँ, इसीलिए तो मैं भी आज तक जीवित हूँ और इन पंखों के बड़े होने की प्रतीक्षा कर रही हूँ।"

वह कुछ देर तक मेरी ओर देखती रही। फिर, जैसे कुछ याद आने पर कहने लगी—"मैंने एक बार अखबार में तुम्हारा फोटो देखा था।"

मैंने पूछा—"कब? अखबार में तो मेरे दो बार ही फोटो छपे थे। एक बार तब, जब मैं बी० ए० में सारे प्रांत में प्रथम रहा था और एक बार तब, जब सन् बयालीस के दिनों में एक जुलूस पर लाठी-चार्ज हुआ था और मैं बुरी तरह जख्मी हुआ था। उस जख्मी हालत में ही किसी ने मेरा फोटो ले लिया था।"

"हाँ, मैं उसी फोटो का जिक्र कर रही हूँ।"— वह कुछ देर रुक कर बोली—"उन दिनों मैं भी भागी-भागी फिर रही थी। जिस तरह तुम लोग 'रूपोश' (अंडर-ग्राउंड) हो जाते हो न, उसी तरह हम भी मौका पड़ने पर रूपोश हो जाती हैं। उन दिनों मैं अधिकतर गाँवों में ही घूमती थी। शहरों में हर जगह मेरे पीछे कुत्ते लगे थे। गाँवों में मैं चमारों और अछूतों के घरों में ही अधिकतर रहती थी। वहाँ पकड़े जाने का उतना डर नहीं था। उन्हीं दिनों, एक बार शहर आने पर, मैं पकड़ी गयी, तो हत्यारों ने मुझ पर ऐसे अत्याचार किये कि, मैं तुम्हें बता नहीं सकती। मैं तुम्हें अपने सारे अंग नहीं दिखा सकती, वरना..."

उस समय उसका वह अति सुंदर चेहरा घृणा से तमतमा उठा। उसके चेहरे पर एक असह्य पीड़ा करवटें ले रही थी। वह कुछ देर तक कमरे में एक ओर देखती हुई घूरती रही। फिर, उसने अपनी साड़ी का एक भाग मुझे दिखाया, जिस पर खून के बहुत-से छींटे पड़े थे—"देखो, ये खून के दाग। कई बरसातों में धोये जाने पर भी ये नहीं गये। यह किस किस्म के खून का रंग है, जो मिटता ही नहीं? कुछ वर्ष पहले पंजाब में साम्प्रदायिक फसाद हुए थे न, उसी समय के ये छींटे हैं। पाँच दरियाओं की धरती पर जब मैंने खून का वह छठा दरिया देखा, तो मैं पागल हो उठी और फिर दर-दर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह मानी हुई बात है कि
उम्दा तम्बाकू का कोई मुक़ाबला नहीं

पनामा

यानी उम्दा तम्बाकू

GTC GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD.

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता :
गोल्डन टोबॅक्को कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई २४
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT 336

Greens' Advtg.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भटकने लगी। इसी अरसे में एक सेठजी मिले मुझे। उन्होंने मुझसे पूछा कि, क्या मैं उनके घर काम करना पसंद करूँगी। मैंने मान लिया। अपने घर ले जाकर उन्होंने मुझे नये कपड़े दिलाये, नहाने के लिए कहा और फिर बहुत साधारण-सा काम करने के लिए बताया। पर ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, उनकी तरस-भरी दयालु दृष्टि बदलती गयी और अंत में एक दिन मुझे उनके घर से भागना पड़ा, वरना मैं उनकी मंद वासना का शिकार बन जाती। आज तक वे मेरी खोज में हैं। उनके आदमी मेरे पीछे लगे हैं।"

वह इस प्रकार डरी हुई थी, जैसे दरवाजे के बाहर सेठजी के आदमी उसे पकड़ने के लिए खड़े हों।

मैंने हौले से कहा—"पर अब वे तुम्हें पकड़ नहीं सकेंगे। कुछ समय के पश्चात् तुम्हारे पंख बड़े हो जायेंगे, तब तुम आकाश में उड़ जाना।"

वह जैसे कुछ सोच रही थी; कहने लगी—"नहीं, अब मैं आकाश में नहीं जा सकूँगी। धरती की इन स्त्रियों और बच्चों के बिना, जिनके साथ मेरा गहरा सम्बंध बन गया है, मेरा आकाश में कैसे दिल लगेगा? मैं अकेली वहाँ क्या करूँगी? कहा न, मैं आकाश की नहीं, धरती की परी हूँ! धरती के वासियों में रह कर ही मेरा दिल लगेगा।"

अचानक मुझे खयाल आया कि, आकाश की परियों की तरह इसका भी कोई नाम होगा। सो, मैं उससे उसका नाम पूछने ही जा रहा था कि, उसने कहा—"एक बात का मुझे बहुत दुःख है।...सभी देशों के लोग मेरे सुनहरे बाल, दमकते हुए रंग, अलौकिक रूप, सपनों-भरी आँखें और तराशे हुए नक्श की तारीफ करते हैं; लेकिन अपने ही देश के लोग मेरी कद्र नहीं करते। बेचारे जवाहरलाल ने कितनी बार लोगों का ध्यान मेरी ओर आकृष्ट किया; पर यहाँ सब अपनी ही मस्ती में हैं। नतीजा है कि, आज भी मैं ऊबड़-खाबड़ रास्तों में ठोकरें खाती फिर रही हूँ।..."

मैं फिर आश्चर्यचकित रह गया कि, जवाहरलाल नेहरू तक को इस परी का पता है। मैंने पूछा—"पर तुम्हारा नाम क्या है? मैंने तो कभी नहीं सुना जवाहरलाल नेहरू को तुम्हारा नाम लेते। रोज अखबार पढ़ता हूँ।"

वह मुस्करायी और बात टालने की गरज से बोली—"मुझे सबसे बड़ा दुःख अपने इन पंखों का है, जो अभी इतने बड़े नहीं हुए कि, मैं इनके सहारे उड़ सकूँ।"

"पर अब तो ये जल्दी ही बड़े हो जायेंगे।"—मैंने कहा।

"नहीं, अभी पता नहीं और कितना समय लगे। यही तो मुझे शाप है। जब ये पंख काट दिये गये थे, तो मैं कई देवताओं के पास जाकर रोयी थी और मिन्नतें की थीं कि, मेरे पंख मुझे वापस मिल जायें। पर उन्होंने मुझसे कहा था कि, अब ये नये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाइफ़बॉय साबुन से नहा कर तरोताज़ा हो जाइये!

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

L/P. 1-X29 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरे से ही फूटेंगे और पके हुए अनाज की महक इनकी खुराक होगी। उन्होंने मुझे सलाह दी थी कि, मैं हर घर में जाऊँ; क्योंकि उन घरों में पके हुए अनाज की महक जब इन पंखों को छूयेगी, तभी ये फिर फूटेंगे और बड़े होंगे।"

मैंने खुश होकर कहा—"तब तो यह बहुत आसान तरीका है। तुम रोज बहुत-से घरों में जाया करो।"

उसने गम्भीर होकर कहा—"नहीं, यह इतना आसान नहीं है, जितना लगता है। देवताओं ने कहा था कि, हर घर में से अनाज की महक इन पंखों को छूनी चाहिए, तभी ये बड़े होंगे। सो, मैं घर-घर जाती हूँ; पर अभी भी कई ऐसे घर हैं, जहाँ रोटी नहीं पकती और चूल्हे ठंडे रहते हैं।" उसका कंठ अवरुद्ध हो गया।

मैं चुप हो गया। मेरे घर में भी तो दो दिनों से रोटी नहीं पकी थी। अगर रोटी पकी होती, तो उसकी महक की बदौलत उसके पंख बढ़ जाते। मुझे इसका बहुत दुःख हुआ।

वह मेरे इस दुःख को जैसे मेरे चेहरे से भाँप गयी। उसने बहुत नर्मी से कहा—"पर इसमें तुम्हारा तो कोई दोष है नहीं।"

एक क्षण के लिए मुझे ऐसा लगा, जैसे मेरी माँ बोल रही हो। ऐसी नर्मी और ढाढ़स भला और किसके शब्दों में हो सकता था! मेरी आँखें भर आयीं।

उसने अपने कोमल हाथ से मेरे आँसू पोंछे और फिर उठते हुए कहा—"अच्छा, अब मैं चलती हूँ। अभी मुझे और भी कई घरों में जाना है।"

मेरे देखते-देखते वह दरवाजे के पास खड़ी उसकी कुंडी खोल रही थी।

मैं और कुछ न कह सका। मेरे मुँह से, बस, इतना ही निकला—"पर तुमने अपना नाम नहीं बताया। तुम्हारा नाम क्या है?"

उसने दहलीज लाँघ कर फिर से दरवाजा बंद करते हुए कहा—"तुमने सचमुच मुझे नहीं पहचाना? मेरा नाम 'आजादी' है।"

मैं जल्दी से उठ कर उसकी ओर बढ़ा; पर वह कहीं नहीं थी। बाहर मूसलधार वर्षा हो रही थी।

अँग्रेजी-साहित्य के बीरबल मार्क ट्वेन पर से कर्ज का बोझ कभी कम नहीं हुआ। एक दिन वे अपने कार्यालय में बैठे थे कि, चपरासी ने एक पुर्जा दिया। यह दर्जी का बिल था। ट्वेन उसे रद्दी की टोकरी में फेंकने लगे, तो चपरासी ने पुर्जे के पीछे पढ़ने की ताकीद की। उस पर लिखा था कि, कल तक पैसे न मिले, तो नालिश करूँगा। ट्वेन ने तुरत चपरासी को डाँट कर कहा—"जाओ, वापस कर दो। तुम्हें मालूम नहीं कि, सम्पादक कागज के एक ओर लिखा ही पढ़ता है?"

—'मेक्सिकन जर्नल' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीट-कीटाणु पत्रिका

मच्छरों की सभानेत्री का ख़ून!

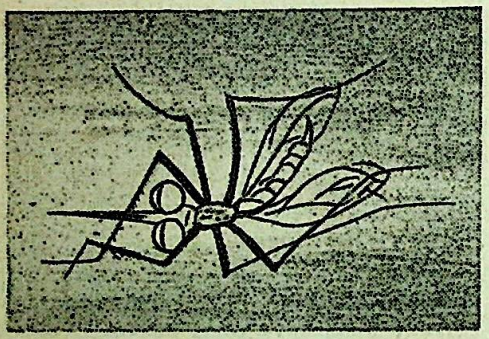

के बाद जब वे बिस्तर-बाँध के किनारे हवा खा रही थीं उन पर अचानक फ़्लिट का सिपाही टूट पड़ा। उनकी तत्काल मृत्यु हो गयी।

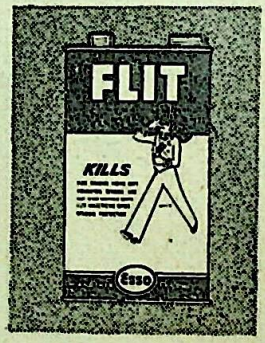

फ़्लिट के सिपाही का अत्याचार!

हमें यह कहते हुए बड़ा दुख होता है कि रविवार को प्रातःकाल मलेरिया मच्छर संघ की सभानेत्री, कुमारी भुनभुन एनोफ़िलीस, की मृत्यु हो गयी।
पता चला है कि रविवार को सुबह मानव-रक्त पीने

स्टैण्डर्ड-वैक्यूम ऑइल कंपनी (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में संस्थापित)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं कौन हूँ

अल्फ्रेड स्टिगलिट्स की एक लघुकथा का हिन्दी-रूपांतर

★

मेरी पत्नी, मेरी बेटी– जो उस समय पंद्रह वर्ष की थी– कलाकार मि० वाकोविट्स और मैं खाने की मेज पर बैठे थे। शाम का समय था।

मेरी बेटी किटी ने, जो मेरे सामने बैठी थी, अचानक कहा– "देखिये आपने मुझे फिर उलझन में डाल दिया।"

"कैसे?"– मैंने साश्चर्य उससे पूछा।

वह वेलटिन स्कूल की छात्रा थी, जिसकी प्रिंसिपल मिसेज वेलटिन और मिसेज स्प्रेगस्मिथ थीं। इस स्कूल का नाम लड़कियों के फैशनेबल स्कूलों की श्रेणी में लिया जा सकता है।

माता मेरी

[चित्र : १५-वीं शताब्दी के एक फ्रांसीसी शिल्प की सरल रेखानुकृति]

मैं किसी भी तरह के फैशन का आदी नहीं हूँ। इसलिए मैं अपनी बेटी की उलझन का कारण बना। पर यह उलझन क्या थी?

उसने मुझे बताया कि, उसकी अध्यापिका ने कई लड़कियों से यह पूछा कि, उनके पिता क्या-क्या काम करते हैं। प्रश्नोत्तर के आरम्भ में ही मिसेज वेलटिन और मिसेज स्प्रेगस्मिथ ने कमरे में प्रवेश किया। किटी को याद नहीं था कि, कक्षा में कुल कितनी छात्राएँ थीं– लेकिन मोटे तौर पर, बहुत ज्यादा नहीं थीं।

एक लड़की ने कहा कि, उसके पिता वकील हैं, दूसरी ने मंत्री बताया। एक और ने व्यापारी बताया, तो दूसरी ने विज्ञान का प्राध्यापक, आदि।

किटी से सबसे बाद में पूछा गया। जब उससे पूछा गया, तो उसने उत्तर दिया– "मुझे सचमुच नहीं मालूम कि, मेरे पिताजी क्या काम करते हैं।"

मिसेज स्प्रेगस्मिथ ने हँसते हुए कहा– "वे तो संसार के सबसे बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अचानक वापसी पर

दस बारह दिन के लिये मुझे मायके जाना पड़ा। जाने के पहले अपने पतिदेव के बारे चिन्ता थी कि बाद में उन के भोजन का क्या प्रबन्ध होगा। होटलों में खा खा कर तो उनका पेट खराब हो गया था। यह दस बारह दिन फिर वे होटलों में खायेंगे तो उनकी पुरानी तकलीफ़ फिर शुरू हो जायेगी। जब पति के सामने यह चिन्ता प्रकट की तो वे हँस दिये, "वाह, यह भी कोई बड़ी बात है! हम खुद अपने हाथ से खाना बनाया करेंगे। तुम क्या समझती हो हमें? क्या भोजन विद्या का ठेका औरतों ने ही ले रखा है? तुम्हारे बाद हम नित्य नई नई चीज़ें बना कर खाया करेंगे। और फिर सतीश भी तो साथ है।"

सतीश उनका दोस्त है जो हमारे पड़ोस में रहता है और हमारे घर ही खाना खाता है। और उस दिन शाम को दफ्तर से आने पर वे भोजन विद्या की एक पुस्तक खरीद लाये, "देखो, इस में ऐसी ऐसी चीज़ें दी हैं जो शायद तुम्हें भी बनानी न आयें।"

मैं मुस्कराई — आखिर मैं चली गई।

और फिर जब बिना खबर दिये ही मैं इतवार के दिन अचानक लौट आई तो घर में पैर रखते ही देखा कि पति देव और सतीश दोनों ही रसोई में खाना बनाने में व्यस्त हैं। मुझे देखते ही दोनों हैरान भी हुये और खुश भी।

दहलीज़ में ही खड़ी हो कर मैं ने एक नज़र रसोई को देखा—रसोई में हर चीज़ ही अस्तव्यस्त थी। बरतन इधर उधर बिखरे पड़े थे। स्टोव दाल और आटे से लथपथ था। एक ओर बहुत सी दिया सलाईयां जली पड़ी थीं। पति देव का रेशमी रूमाल एक तरफ़ पड़ा था जिस पर काले पीले निशान थे। और शेल्फ़ पर भोजन विद्या की पुस्तक खुली हुई पड़ी थी....

रसोई की हालत का तो मैं ने वर्णन कर दिया, परन्तु रसोई में खाना बना रहे पति देव और सतीश की जो हालत थी, उसे वर्णन न ही करूँ तो अच्छा है।

मैं ने आगे बढ़ते हुये कहा, "लाइये, मैं बनाती हूँ खाना। आप मुँह हाथ धो कर होश में आइये।"

"वाह यह भी अच्छी कही। खाना तो हम ने बना भी लिया है। अब सब बैठ कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाते हैं। तुम तैयार हो जाओ।"

तभी सतीश ने कहा, "भाभी, आज तो तुम हमारी मेहमान हो। आज हमीं तुम्हें खिलायेंगे। कल से तुम अपना डिपार्टमेंट सम्भालना।"

जब खाने बैठे तो मैं ने देखा—आलू का साग था जिस में हल्दी नहीं डाली गई थी। दाल थी कि गोता लगाने पर भी दाना हाथ में नहीं आ सकता था। और परौठों को देख कर तो मेरी हँसी ही निकल गई। कई शकलों के परौठे थे। कोई त्रिभुजाकार, कोई लम्बूतरा, किसी के पांच कोने, किसी के बीच में छेद, किसी के किनारे टूटे हुये... मेरे मुहँ से निकला, "इन परौठों में तो ज्योमैटरी की सभी शकलें दिख रही हैं।" और मैं मुस्कराई।

पति ने हँसते हुये कहा, "तुम तो जानती हो कि स्कूल में ज्योमैटरी मेरा सब से अच्छा विषय था। इसी लिये यह परौठे कई शकलों के बनाये हैं। अब तुम खा कर स्वाद देखो। किसी चीज़ की सूरत नहीं, सीरत देखी जाती है।"

खाने में मैं एक भीनी भीनी सुगन्धी महसूस कर रही थी। एक नया सा स्वाद था। शायद भूक ही बहुत ज़्यादा लगी थी या खाना पति के हाथ का बना था कि मैं ने खूब डट कर खाया। यह देख कर मेरे पति और सतीश बहुत खुश हुये।

फिर शाम हुई तो रसोई में चीज़ें ठीक से रखने गई। वहां 'डालडा' का बड़ा डिब्बा देख कर कुछ हैरानी हुई। पहले का छोटा डिब्बा खाली था। यह बड़ा मेरे बाद ही आया होगा। मैं ने हँसते हुये पति से पुछा, "तो क्या मेरे बाद आप भिन्न प्रकार की तली हुई चीज़ें ही खाते रहे हैं? 'डालडा' का यह बड़ा डिब्बा कैसे आया हुआ है?"

पति ने कहा, "नहीं तो, हम तो सारा भोजन ही 'डालडा' से बनाते रहे हैं।"

मैं ने हैरान हो कर पूछा, "सारा भोजन ही? दाल, भाजी, पूरियां, पलाव... हर चीज़ ही?"

पति ने कहा, "क्यों नहीं, जब कि 'डालडा' स्वास्थ्य के लिये बहुत गुणकारी है और इस से हर प्रकार का भोजन बहुत अच्छा बनता है। देखा नहीं तुमने आज?"

मैं ने कहा, "हां, आज खाने में कुछ भिन्न सा स्वाद था।"

उन्हों ने फिर कहा, "'डालडा' चीज़ों का असली स्वाद उजागर कर देता है। 'डालडा' से भोजन पकाने के लिये हमें सतीश के दोस्त जगमोहन ने सलाह दी थी। एक दिन उन के घर खाने पर गये तो पता लगा कि वे सारा भोजन 'डालडा' से ही बनाते हैं। फिर तो हमने भी घर आ कर हर चीज़ 'डालडा' से बनानी शुरू कर दी।"

मेरे मुँह से निकला, "वाह, यह तो खूब रही।"

पति ने फूले न समा कर कहा, "और फिर 'डालडा' में विटामिन ए और डी मिलाये गये होते हैं जो बीमारियों से हमारी रक्षा करते हैं और आँखों, चमड़ी और हड्डियों के लिए फायदेमंद हैं।"

मैं ने कहा, "तब तो आप ने मेरे बाद एक नई खोज की है। आप को इस के लिए इनाम मिलना चाहिये।"

"और भोजन पकाने के लिये कोई इनाम नहीं?" उन्हों ने मुस्करा कर पूछा।

DL. P. 3B-X29 HI हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फोटोग्राफर हैं।"

किटी ने कहा कि, यह असम्भव है; क्योंकि वह यह तो जानती थी कि, उसके पिता फोटो खींचते हैं; लेकिन महान् फोटोग्राफर वे स्टाइकेन को ही मानते हैं।

तब मिसेज वेलटिन ने कहा– "खैर, तो वे एक महान् कलाकार हैं।"

किटी ने कहा– "ओह, नहीं, अभी पिछले ही रविवार को मैंने उन्हें यह कहते सुना था कि, अगर किसी ने भी मुझे कलाकार कहा, तो मैं उसे उसी वक्त वहीं जान से मार डालूँगा।"

इसीलिए किटी ने मेरी ओर देखते हुए कहा– "खैर, पिताजी, अब आप यह बतायें कि, आप हैं क्या?"

"मैं क्या हूँ? तुमने देखा, मेरी उम्र अब पचास से थोड़ी ऊपर है। अब अगर तुमसे कोई फिर यह पूछे कि, तुम्हारे पिता क्या हैं, तो उसे यह कहानी सुना देना और कहना कि, उन्होंने मुझे बताया था कि, मैं अपना सारा जीवन यह पता लगाने की कोशिश में लगा दूँगा कि, मैं कौन हूँ और क्या हूँ।"

किटी ने मेरी ओर देखा और मैंने यह अनुभव किया कि, वह मेरी बात नहीं समझ पायी। उसकी माँ भी समझी या नहीं, मैं नहीं जानता। हाँ, वाकोविट्स इसे समझ गया, ऐसा लगता था!

★

एक दिन सबेरे-सबेरे महर्षि कन्फ्यूशस के पास सम्राट् आकर बैठ गये और बोले—"कन्फ्यूशस! मुझे उस आदमी के पास ले चलो, जो देवताओं से भी महान् है।" कन्फ्यूशस ने उत्तर दिया—"एक तो स्वयं आप ही हैं; क्योंकि जो सत्य को जानने की जिज्ञासा रखता है, वह स्वयं महान् है।" सम्राट् बोले—"ऐसा है, तो मुझसे महान् व्यक्ति मुझे बताओ।" उत्तर मिला—"आपसे महान् मैं हूँ; क्योंकि मैं सत्य से प्रेम करता हूँ।" सम्राट् बोले—"किंतु महर्षि, मुझे तो आपसे भी महान् आदमी चाहिए, जिसके प्रसंग में आप कई बार मुझे बता चुके हैं। मुझे वहाँ ले चलिये।" कन्फ्यूशस ने एक क्षण के लिए सम्राट् को देखा और कहा—"उठ कर कहीं जाने की क्या जरूरत? आपके-हमारे आसपास ही महान्-से-महान् आदमी रहता है। वह सौ वर्ष की बुढ़िया देखिये, जिसकी देह मृत्यु की गोद में पहुँच चुकी है; पर देखते हैं, क्या कर रही है वह?" उत्तर मिला—"कुदाल से कुआँ खोद रही है!" कन्फ्यूशस ने पूछा—"क्यों? उसे कुआँ खोदने की जरूरत?...मगर जरूरत ही सब-कुछ नहीं हुआ करती। जरूरत से भी बड़ी है, आनंद की अनुभूति। जिसका तन-मन ऐसी आनंदानुभूति में काम करता है, वह जीते जी जीवन-मृत्यु की सारी सीमाएँ लाँघ जाता है। उससे महान् और कौन हो सकता है?" —'अमृतकण' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीड़ा की नश्वर प्याली में गिनती की अमृत-बूँदें

दो महायुद्धों के काल-विस्तार में सर्जित जापान के साहित्य में जुनीचीरो तानीजाकी की कृतियों का सम्मान सर्वोच्च है। जापान के साहित्य-इतिहास में इस क्षमता का साहित्य-युगप्रवर्तक शायद ही कोई हुआ हो। मानवीय जीवन के सनातन तत्व-प्रवाह की समस्त छोटी-बड़ी रस-प्रणालियों का जैसा सूक्ष्म और सहज शिल्पांकन उनके उपन्यासों में मिलता है, वैसा एशिया के इने-गिने ही साहित्यकारों की रचनाओं में प्राप्त हो सकता है। कहानियों एवं उपन्यासों के अलावा उन्होंने समान सफलता के साथ काव्य एवं नाटक भी लिखे हैं। पश्चिम के प्रभाव से बिल्कुल अछूता, उनका साहित्य उस अखंड प्राच्य रस-परम्परा का ही एक अंग है, जो मिस्र से लेकर मंगोलिया तक आज भी लोक-जीवन की धमनियों में प्रवाहित हो रही है। यहाँ हम इन्हीं साहित्य-मनीषी तानीजाकी-लिखित जापान के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार-सम्मानित कृति 'इकेकुजी' (मकरंद-मंदिर) का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर प्रस्तुत कर रहे हैं। 'तोता-मैना' के कथावृत्त में वर्णित इस उपाख्यान को पढ़ कर हमारे पाठकों को, निश्चय ही, स्वजनोपम आत्मीयता का अनुभव होगा।

★

एक बड़ी समृद्ध नगरी थी। दो विशाल स्फटिक-सलिला नदियों के बीच में बसी हुई वह सर्वांग-सम्पन्ना नगरी ऐसी लगती थी, मानो दोनों चंचल-सजल कोरों के बीच में प्रफुल्ल कमल-सी आँख हो। नगरी के बीचोबीच सतरंगी ध्वज-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लहरायित हीरक-कलश-उज्ज्वल एक विशाल भवन था– सात मंजिला, पूरा विशुद्ध स्वर्ण का बना हुआ। सातवीं मंजिल पर राजा का देव-दुर्लभ वैभव-विलास-विलसित अंतःपुर था, जिसमें देशों में दिव्य देश सिंहल की अनुपम सुंदरी सोलह सिंगारों से सुसज्ज राजा के विलासी मन की तृप्ति बनी, कभी झरोखों में और कभी दर्पण के सामने, बैठी रहती थी। रानी के शयन-कक्ष में एक तोते का और एक मैना का पिंजरा था। दोनों पक्षियों में मानवों-जैसे गुण थे। तोता रानी को बड़ा प्रिय था और मैना राजा को। एक दिन राजा शिकार खेल कर देर से आये, तो मैना बड़ी व्याकुल हुई। पिंजरे में कभी इधर और कभी उधर तड़फड़ाती रही। रानी ने मैना की तीव्र व्यग्रता देखी, तो ईर्ष्या से जल कर राख हो गयी। तोते को सुना कर वह व्यंग्य से सरोष बोली–"तूने भी देखा रे, तोते! महाराज अभी तक नहीं आये, तो तेरी मैना कैसी परेशान हो गयी। क्या केवल इसे ही महाराज से प्रेम है? हमें नहीं है क्या रे?"

तोता तो पहले से ही मैना की छटपटाहट देख रहा था। वह स्वयं चिंतातुर था; सहज भाव से बोला–"सर्वस्वामिनी, यह इस बेचारी मैना का नहीं, सम्पूर्ण नारी-जाति का ही स्वभाव है कि, प्रियजनों की देर-सबेर में वह अपने को संतुलित रखने में अक्षम पाती है।"

रानी सुन कर चौकन्नी हो गयी। आँखें तरेरती हुई अमर्ष के स्वर में तोते से बोली–"क्यों रे, मूढ़! क्या मैं स्त्री नहीं हूँ? क्या महाराज के सुख-दुःख से मेरा कोई सरोकार नहीं है? क्या उनसे मुझे प्रेम नहीं है? मेरे प्रश्नों का उत्तर दे, नहीं तो मैं तेरी गरदन मरोड़ती हूँ अभी! मेरा ही खाता है और मुझे ही चालें बताता है, नमकहराम!"

रानी की धमकी से तोता ही नहीं, विचलित-मना मैना भी भय-स्तब्ध हो गयी। तोते पर आये संकट की अनुभूति से वह थर-थर काँपने लगी। बड़े अनुनय के साथ रानी से क्षमा माँगी–"महादेवी, मेरी और आपकी बराबरी क्या? मैं पामर पक्षी; जितना छोटा-सा जीव, उतनी ही छोटी-सी बुद्धि! डगर-डगर खाने की खोज में भटक-भटक कर जीवन बितानेवाली मैं एक मूर्ख चिड़िया...और कहाँ आप! अगणित कलाओं में निपुण, अगणित गुणों की खान, अगणित देशों की सम्राज्ञी। अपने रूप में देवांगनाओं की उपास्य, अपनी विद्याओं में ब्रह्मा की पुत्रियों को भी पराजित करनेवाली...मैं आपकी दया पर पलनेवाली...मेरी आपकी तुलना कैसी? अनजाने जो अपराध हो गया, कृपया उसे क्षमा कर दें।"

प्रशंसा तो मादक पेय होता है। कानों के द्वारा ज्यों-ज्यों उसके घूँट चेतना की जीभ पर जाते हैं, त्यों-त्यों उसकी मदाग्नि अपनी प्रचंड शिखाओं में गहरी होती जाती है– मगर यह मादकता अपने संवेग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में सौ गुना बढ़ जाती है, जब कि प्रशंसा मिथ्या का छल-वस्त्र पहने, चापलूसी बन कर अपने आश्रितों के मुख से निःसंकोच प्रवाहित होने लगती है। रानी-मैना-संवाद में भी ऐसा ही हुआ। गर्व एवं कोप के मिश्रित संवेग में रानी अपना विवेक भूल गयी और छलाँग मार कर जिद के छोर पर जा बैठी। वह तोते से बोली—"तू मुझे मेरे सवाल का जवाब दे। मुझे साफ-साफ बतला कि, राजा की प्रतीक्षा में मैना क्यों व्याकुल हुई और मैं क्यों न हुई? मैं भी जाति, स्वभाव एवं शरीर से नारी हूँ, फिर मैं अव्यग्र क्यों रही?"

अमिताभ की शबरी
[चित्र : केंजी इतो के एक चित्र की रेखानुकृति]

अपनी स्वामिनी के इस नाजुक प्रश्न ने तोते को भय-विह्वल कर दिया। प्रश्न का वह क्या जवाब देता? जिस सत्य को उसने रानी के भीतरी कक्ष में से छिपे चोर के रूप में पकड़ा था, उसका प्रकटीकरण वह स्वयं रानी के सामने कैसे कर दे? व्यक्ति अनंत व्यंग्य-बाणों को सह सकता है; किंतु अपने ही सम्मुख अपने चोर का अनावरण कभी सहन नहीं कर सकता।

सत्य तो वैसे ही कड़वा होता है और छल के छिलके में रहनेवाला सत्य तो अपनी कटुता में जैसे हलाहल ही हो। ऐसे तीखे-कटु अनुभव को रानी से कह कर वह अपना तो क्या, किसी अन्य का भी कुछ हित कर सकेगा?

तोते को असमंजस के कीचड़ फँसा देख, रानी अपने आसन से उठी और तोते के पिंजरे की तरफ दौड़ी, मानो भूखी बिल्ली अपने आहार पर झपट पड़ी हो। मैना के प्राण विचलित ताल की तरह काँप उठे—आसन्न मृत्यु के आतंक से उसके अंगानुअंग अवसन्न हो गये। आर्तनाद के साथ वह रो पड़ी—"क्षमा करो, राजमहिषि! इस वाचाल को कभी भी याद नहीं रहता कि, यह क्या कह रहा है। महाराज के प्रति आपके प्रगाढ़ प्रेम को उसने कभी भी सीमित नहीं बताया है।... और, इस मूढ़ के पास अक्ल ही कितनी है, जो आपके हृदय में समुद्र की तरह निःसीम भरे पति-प्रेम को माप सके! आपने इसे इतना मुँह लगा रखा है, इसीलिए इसने बोलने में विचार-अविचार अभी तक नहीं सीखा। आप इसे क्षमा करें! क्रोध का शमन करें—स्वामिनी, अनर्थ को अर्थ न मान लें!"

किंतु रानी तो हठ के ऐसे शृंग पर बैठ गयी थी, जहाँ से नीचे उतरना उसके आहत अभिमान के लिए अत्यंत दुष्कर था। वह रुकी नहीं। उसने तोते का पिंजरा खोल कर उसे बलपूर्वक बाहर खींच लिया और आग्नेय नेत्रों से उसको घूरते हुए उसकी गरदन पर अपना हिंसक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कांप-पाश रखा। मैना चीखी– सारा अंतःपुर मानो अपने अंतराल में विदीर्ण हो गया। सीढ़ियों पर चढ़ते हुए महाराज ने हुँकार भरी– "सावधान!"

मैना ने फिर चीत्कार किया– "महाराज! शीघ्र आइये। प्राण बचाइये... क्रोध में बेसुध महारानी तोते के प्राणों की भूखी हैं। क्षण-मात्र का विलम्ब भी अनर्थ-सूचक हो जायेगा!"

"महारानी! रुकिये। मेरे आने तक क्रोध को वशीभूत कीजिये। महादेवी, तोते के अपराध के लिए मैं स्वयं क्षमा माँगता हूँ। आश्रित जीवों को दंड देना हमें शोभा नहीं देता।"

महाराज के आकस्मिक आगमन से रानी का क्रोध क्षण-भर के लिए जैसे निश्चेष्ट हो गया। उसकी मुट्ठी शिथिल पड़ गयी। जीवन बचने का एकमात्र उपयुक्त अवसर पाकर तोता उड़ निकला और दूर खिड़की के बाहर जा बैठा।

रानी को अपने संकल्प-दौर्बल्य पर बड़ी ग्लानि हुई। वह खिड़की की तरफ तोते को पकड़ने के लिए जाने के बजाय सम्मुख लटके मैना के पिंजरे पर झपटी सीढ़ियों पर महाराज के कदमों की ध्वनि तीव्रतर होती जा रही थी और वे बार-बार रानी को वर्जना दे रहे थे; मगर रानी यह जान बैठी थी कि, राजा के आने से पूर्व ही दोनों तोता-मैना को समाप्त कर देना हितकर है। फलतः रानी ने मैना को अपने चंगुल में पकड़ लिया और ज्यों ही उसकी गरदन अपनी मुट्ठी में दबाने लगी, खिड़की में बैठा तोता चिल्लाया– "सावधान, रानी! मैना को तुम मार डालो; किंतु तुम्हारा रहस्य इस राजमहल से निकल कर जहाँ-जहाँ मैं जाऊँगा, वहाँ-वहाँ पहुँचता जायेगा। उस निरपराधिनी मैना को मारने से न तो तुम्हें अपने सवाल का जवाब मिलेगा और न उस जवाब के भीतर जो रहस्य छिपा है, उसका ही अंत हो पायेगा।"

रानी प्रज्वलित नेत्रों से तोते को देख रही थी और द्वार की चौखट पर महाराज स्तब्ध खड़े तोते की कुछ वचनावली सुन रहे थे। रानी ने महाराज को

सपना

बाहर निकलते ही, सहसा मैंने देखा कि, फ्यूजी-पर्वत के पंख आ गये हैं और वह उड़ने लगा है; नदियाँ एक-के-बाद-एक मेरी आँखों के सामने नाचने लगी हैं; बड़े-बड़े बड़-बलूत के पेड़ मीठे-मीठे स्वरों में गाने लगे हैं; सिर पर छाया आसमान अट्टहास करने लगा है और धरती की हर घास से मंत्रोच्चार हो रहा है। मैं आश्चर्य-अवाक् खड़ा रह गया। क्षण-भर बाद, अकस्मात् याद आया कि, ओह! मैं जाग नहीं रहा हूँ, सपना देख रहा हूँ– दोपहर में!

––अकूतागावा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा, तो सिर-से-पैर तक ठंडे पसीने में जैसे नहा गयी। महाराज दौड़ कर आगे बढ़े और मूर्च्छित मैना को रानी की मुट्ठी में से छुड़ा कर भृकुटि तानते हुए बोले—"क्या राजमहिषी आज यह भूल गयी हैं कि, क्रोध की ऐसी क्षुद्रता उनके पद को शोभा नहीं देती है? एक महान् साम्राज्य की महिमाशालिनी महारानी को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसका अज्ञान अहितकर है!"

तत्पश्चात् महाराज खिड़की में बैठे तोते के पास गये और सुतीक्ष्ण दृष्टि से उसे घूरते हुए बोले—"पक्षिप्रवीण! निर्भय होकर पूर्ववत् मेरे पास आओ। मैं तुम्हारे मुख से ही आज के इस लज्जाजनक क्षोभ-कांड का पूरा विवरण सुनूँगा। तुम्हारे उपालम्भ-भरे वचनों को मैंने ध्यान से सुना है और मैं उस प्रसंग में सम्पूर्ण स्पष्टीकरण आवश्यक समझता हूँ।"

मगर तोता राजा के पास नहीं आया। महाराज ने बड़ी मनुहारें कीं, बड़ा विश्वास दिलाया, आश्वासन-पर-आश्वासन दिये; किंतु तोता राजा के निकट नहीं आया। वह वहीं बैठा-बैठा आँसू बहाता रहा। तोते का यह व्यवहार मैना को बड़ा विचित्र लगा। वह दुत्कारती हुई बोली—"महाराज के इस स्नेह का यह अपमान. तुम्हारी कितनी बड़ी धृष्टता है, क्या तुम्हें इसका पता है? मूढ़-से-मूढ़ प्राणी भी मूर्खता का ऐसा निर्लज्ज परिचय नहीं देता। तत्काल क्षमा माँगो, अपने

अमिताभ

[चित्र : टोडाइजी-मंदिर में सुरक्षित ८-वीं शताब्दी की जापानी मृण्मूर्ति की रेखानुकृति]

अन्नदाता महाराज से!"

तोते ने अजस्र अश्रुधारा के बीच ही उत्तर दिया—"मैं जानता हूँ, मैना! क्षमा सत्य की मार्जक है। सत्य-रूपी स्वर्ण के लिए क्षमा सौरभ है—कलंक-परिहारिणी है; किंतु असत्य के काँटों की गठरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुनर्जन्म

"हमें तत्काल ओपरेशन करना होगा" बाबा हरबंस खन्ना के लिए ये शब्द बम्ब के गोले से कम न थे। उन्होंने आर्त स्वर से पूछा, "डाक्टर, अगर मैं न करा सकूँ... ...तो क्या होगा?" डाक्टर साहब पशोपेश में पड़ गये और बोले, "अगर यह गिलटी न निकाली गयी तो सम्भव है कि आप एक वर्ष से अधिक जीवित न रह सकेंगे।"

बाबा हरबंस सोचने लगे, "किन्तु पैसा कहाँ से आयेगा?" डाक्टर के कमरे से बाहर आते समय यह कटु सत्य उनकी आँखों के सामने नृत्य कर रहा था। वे इस दुनिया में अकेले ही थे और इस नाजुक समय में कौन उनकी सहायता करता?

दिन तेज़ी से बीतने लगे। जून महिने के एक प्रातः को वे अपने काग़ज़ात टटोल रहे थे। उस समय उन्हें फीके रंग की आजीवन बीमा पालिसी मिली। उन्हें याद आया, "आज से कई साल पहले किसी एजेंट को खुश करने के लिए यह पालिसी लखनऊ में ली थी।" परंतु गत कई वर्षों से उन्होंने किस्त ही नहीं दी थी।

वे विचारों में मग्न थे। "क्या इस पुराने काग़ज़ की भी कोई कीमत हो सकती है?" उन्होंने कम्पनी को खत लिखकर पूछने का निश्चय किया। पालिसी की शर्तों के अनुसार वह चुकते बीमे में अपने आप परिवर्तित हो चुकी थी। कम्पनी से तुरन्त उत्तर मिला "हमें यह लिखते हुए प्रसन्नता होती है कि आप अपनी इस पालिसी पर ९५० रुपये कर्ज के रूप में ले सकते हैं।"

उन्हें ओपरेशन के लिए ठीक समय पर कर्ज मिला। एक महीने के बाद बाबा हरबंस बिल्कुल चंगे होकर अस्पताल से निकले। जीवन की नयी कांति उनके मुख पर छायी थी। वे बोल उठे, "जीवन-बीमे को धन्यवाद!"

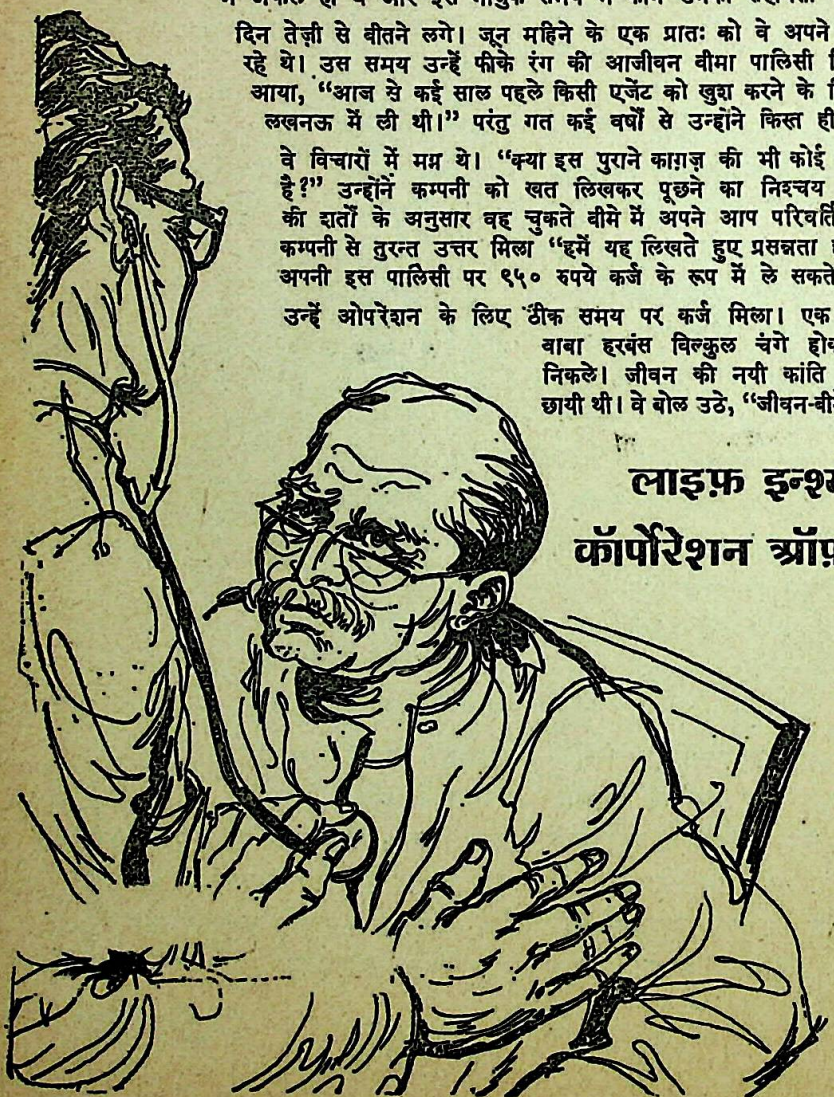

लाइफ़ इन्श्योरन्स
कॉर्पोरेशन ऑफ़ इन्डिया

ASP/LIC-53B HIND

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाँध कर चलनेवाले पथ-भ्रष्ट मुसाफिर को क्षमा कब तक उबारेगी ? कोयले को जल कब तक धोयेगा ? मैं महाराज के स्नेह का पात्र ही कैसे हो सकता हूँ ? मैं तो महारानी तक को प्रसन्न नहीं रख सका।... मैना, महाराज से मेरी ओर से क्षमा माँग ले और यह अनुमति भी प्राप्त कर ले कि, मैं बुद्धधाम की तीर्थयात्रा के लिए चला जाऊँ।"

महाराज किंचित् और आगे बढ़े और दर्प के साथ बोले—"वाचाल शुक ! व्यर्थ के लिए अपने को इतना अटपटा मत बना। मुझे वह रहस्य साफ-साफ बता, जिसका संकेत तूने रानी के प्रति अभी-अभी किया है अन्यथा तू जहाँ भी जायेगा, मैं तेरा वध करूँगा।"

प्रतारणा

[चित्र : हिरोशी योहची-निर्मित एक चित्र की सरल रेखानुकृति]

तोते की आँखें अविलम्ब निर्जल हो गयीं। आकस्मित आवेश के आवेग में बोधिपत्र-सा प्रकम्पित वह बोला—"प्राणों से भी प्रिय महाराज, क्षमा करें ! प्राणों के भय से मैं कभी नहीं भागूँगा यहाँ से। यदि आप मेरे प्राण ही लेना चाहते हैं, तो मैं बोधिसत्व की तरह सहर्ष आपकी तलवार के नीचे स्वयं चला आऊँगा; किंतु मेरा परिज्ञान है कि, मुझे मारने की कुत्सा आपके पवित्र मन के भीतर जाग नहीं सकती ; क्योंकि मारने की इच्छा तो मूलतः प्रतिलोमी रूप में स्वयमेव जीवन की ही इच्छा है। हमारा यह कर्मप्रतीक जीवन और जिस गरुड़ पर यह जीवन प्रतिपल सवार है, वह हमारा चिर-जागरूक अहम् जब अपने मूल अस्तित्व में भयभीत हो जाता है, तभी रक्षात्मक प्रतिक्रिया की प्रेरणा में, प्रतिरोधी को मारने की इच्छा हमारे भीतर जाग्रत होती है। मारना हम यों चाहते हैं कि, स्वमरण - भय से निश्चिंत होकर खुद जियें। रानी मुझे अवश्य मार डालती; क्योंकि रानी के अहम् को मेरे अस्तित्व से चिंता है। मैं उसका कुछ भी अहित न करूँ, तो भी उसकी चेतना के उन सहस्र-सहस्र वज्र-कपाटों की सुरक्षा मेरे अस्तित्व-मात्र के सामने सम्पूर्णतः भंग है। महाराज ! अपने से ही डर कर क्या व्यक्ति कहीं शरण पा सका है ? कोई उसे बचा सका है ? रानी का रहस्य मैं आपसे कभी छिपाऊँगा नहीं—आप नहीं पूछते, तो भी मैं उसे आपके तईं प्रकट करता ही। आपको ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

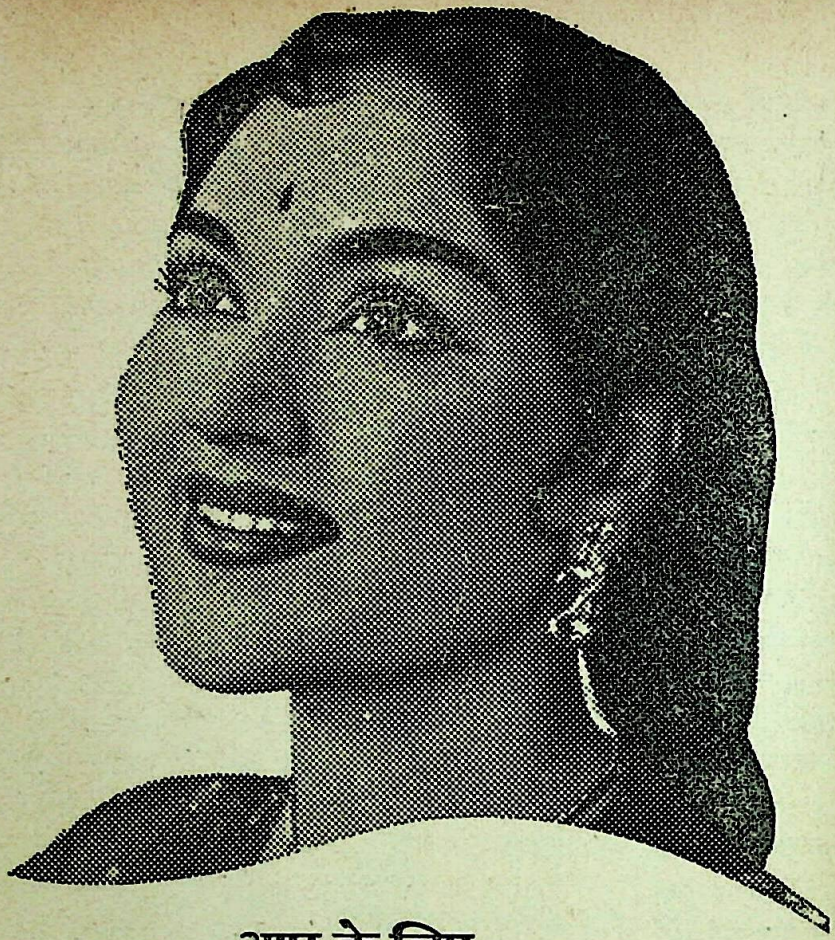

आप के लिए–
चित्र तारिकाओं का सा उज्जवल रंग रूप

वैजयंतीमाला कहती हैं: 'मेरा रंग रूप लक्स टॉयलेट साबुन के इस्तेमाल से तरोताज़ा और मुलायम रहता है। इस का मलाई जैसा झाग मेरी जिल्द के लिए बहुत अच्छा है। और इसकी सुगंध से दिन भर मेरा मन खिला रहता है।'
अपनी सुंदरता को निखारने के लिए आप भी हर रोज़ लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल कीजिये।

शुद्ध सफ़ेद
लक्स टॉयलेट साबुन
चित्र तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंधेरे में रख कर क्या मैं आपका अन्न-जल सरुचि ग्रहण कर पाऊँगा ? किंतु महाराज, यह समय नहीं है उस प्रगूढ़ रहस्य के उद्घाटन का। मुहूर्त आयेगा, तो मैं स्वयं आपको उस रहस्य के गौप्य तट पर ले जाऊँगा और सब दिखला कर आपसे याचना करूँगा कि, अगर आपके पास मेरा कुछ देय है, तो कृपया मुझे दीजिये।... और, मुझे प्रतीति है कि, आप मेरा याचित मुझे अवश्य देंगे।"

तोते ने अगणित बुद्धिजन्य एवं भाव-जन्य तर्कों की मंजूषाएँ, राजा के हठ-मंदिर के देवता को चढ़ायीं ; किंतु महाराज की क्रोध-प्रज्वलित जिज्ञासा का समाधान नहीं हो सका—इसके विपरीत उनका आग्रह और भी अदम्य हो गया। अंत में, तोते ने उनके सामने एक विकल्प रखा कि, यदि महाराज छद्मवेशी परिव्राजक का रूप बना कर मेरे साथ भू-परिक्रमा करें, तो मैं, जो रहस्य मेरी वाणी-द्वारा प्रकट होनेवाला है, उसे प्रत्यक्ष चरम चक्षु-द्वारा दिखला दूँ। महाराज तो जिद के लगाम-रहित घोड़े पर सवार थे। तोते के प्रस्ताव को तत्काल मान गये और दूसरे ही सवेरे तोते की योजना के अनुसार दोनों भू-परिक्रमा के लिए निकल पड़े।

तीन दिन और तीन रात तक नदी-ताल, वन-पर्वत पार करते हुए वे दोनों एक मठ के सामने पहुँचे, जहाँ पचास-साठ नर-नारियों से घिरा एक परम तेजस्वी, तरुण संन्यासी बैठा था। उस संन्यासी की अनुराग-प्रोज्ज्वल वाणी-प्रवाहिनी के सिवाय सारा उपस्थित समुदाय एकाग्र मौन में केन्द्रस्थ था।

दोनों पर्यटक भी प्रशांत भाव से आगे बढ़े और श्रद्धा की शृंखला में एकीभूत उस सभा में सप्रणाम बैठ गये। दोनों ने निमिष-भर वक्ता-संन्यासी को अपलक देखा—उद्दीप्त ललाट के अंचल में स्थिर हीरक-मीन-सी उसकी आँखें इतनी मोहक थीं, जैसे स्वर्ग की सारी दिव्यता उनके भीतर चिर यौवन पा गयी हो। संन्यासी के अंग-अंग से आंतरिक तपाग्नि अपनी स्वर्णच्छटा में फूटी पड़ रही थी। क्षण-भर रुक कर संन्यासी बोला—

"...और, तुम लोग जीवन के बारे में

तृप्ति

एक दिन क्षितिज के चौराहे पर निर्जन की आत्मा कोलाहल की आत्मा से मिली और बोली—"थक गयी हूँ, कब तक अपने ही में डूबी बैठी रहूँ—सुख-दुःख कहने-सुननेवाला ही कोई नहीं मिलता।" इस पर कोलाहल की आत्मा मुँह बना कर बोली—"बात न बनाओ, बहन ! कितनी भाग्यवान् हो तुम ! यहाँ तो शोर की अंधा-धुंध में कोई किसी की नहीं सुनता—हाय ! क्षण-मात्र का भी एकांत मयस्सर नहीं !..." —योन् नागूची

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एनासिन

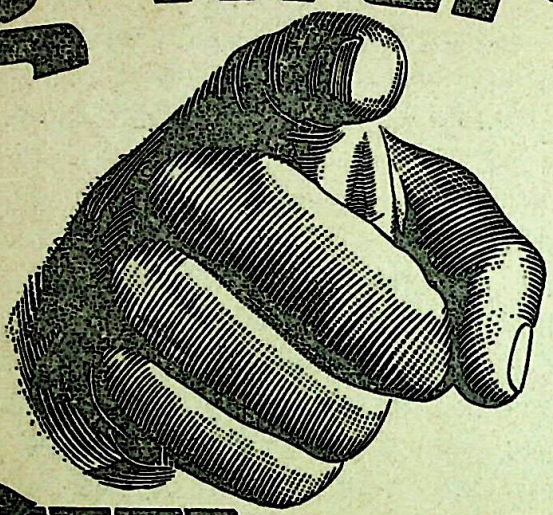

बेहतर है जब आपको सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार व रगपुट्ठों का दर्द हो

क्यों कि इसमें चार दवाइयाँ हैं

'एनासिन' को महज़ एक ही दवा मत समझिये। डाक्टर के नुस्ख़े जैसा चार दवाइयों के मिश्रण का यह वैज्ञानिक फ़ार्मूला है जो आपको सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार, दांत-दर्द व रगपुट्ठों के दर्द से फ़ौरन पूर्ण आराम देता है। सिर्फ एक दवावाली दर्दकी कोई भी दवा आपको 'एनासिन' जैसा फ़ौरन...हानिरहित...और अचूक आराम नहीं दे सकती। अपने घरमें हमेशा 'एनासिन' रखिये।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD. REGISTERED USER

K-66 (R) HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूछते हो, तो सुन लो। जीवन क्या है, यह मैं तुमको बताऊँगा। यह जो-कुछ तुम देख रहे हो, सारा जीवन ही तो है। यह जो तुम देख नहीं रहे हो और पूछ रहे हो कि, देख सको, वह अदेखा भी तो जीवन ही है। और, देखे-अदेखे की सीमाएँ जहाँ खत्म होती हैं और जहाँ से ऐसी भूमि शुरू होती है, जिसके बाशिंदों को न देखने की जरूरत महसूस होती है और न किसी अदेखे को पूछने की, वहाँ भी तो जीवन ही है।...एक बुलबुल थी। बहुत मधुर गाती थी—सारा चमन, हवा का सारा समुद्र उसके गीतों पर झूम उठता था। एक दिन पर्वत की एक शिला पर बैठे एक भयावह शिकरे ने उससे कहा—'मधुरे! दिन-भर मत गाया कर—तू रात को क्यों नहीं गाती, जब हम सब थके-माँदे अपने घोंसलों में विश्राम करने आ जाते हैं?' बुलबुल को बड़ा आश्चर्य हुआ; पूछा—'तुम गाने से मुझे क्यों रोकते हो जी? मैं अपने मौज में गाती हूँ!' शिकरे ने कहा—'तू नहीं जानती, तू कितना अच्छा गाती है। तेरे गीतों को सुनने के बाद हमें न खाने की सुध रहती है और न अपने परिवार को खिलाने की।' बुलबुल ने अपनी माँ के पास जाकर पूछा—'माँ, क्या मैं गाती हूँ? गाना क्या होता है, माँ? क्या गाना इतना अच्छा होता है? और, क्या इतना बुरा भी कि, सुननेवालों को करने-धरने की सुध ही न रहे।' माँ मौन मुस्कराने लगी और व्यंग्य-रहस्य की मिश्रित भ्रूभंगी से अपनी अबोध बेटी को ताकने लगी। बुलबुल को माँ के इस व्यवहार से थोड़ी परेशानी हो गयी। वह फिर हठपूर्वक पूछने लगी। आखिर, माँ ने कहा—'कैसे बताऊँ तुझे कि, गीत कैसा होता है! पीढ़ियाँ बीत गयीं हमारी गाते-गाते! गाना क्या है, अच्छा है या बुरा है—इसके बारे में क्या कभी सोचा जा सकता है? अरी पगली! गीत को गीत ही मान ले। बस, हो गया—गाने के साथ तू बँधी है।'

"...श्रावको! जीवन भी गीत ही तो है—कौन उसके साथ बँधा नहीं है। बीज हमने बोया, उगा, खिला और उसमें फल आये। यह सब क्यों होता है? बीज का अपने में ही अंत क्यों नहीं हो जाता है? नहीं हो सकता। बीज के साथ प्रस्फुटन और स्खलन की परम्परा है—बीज से फिर बीज बनना, यही जीवन है।"

× × ×

पर्यटन-संयोग कि, एक दिन वह तपस्वी फिर उन्हें मिल गया। इस बार वह कलाकारों के एक समारोह में अपने काष्ठासन पर पलथी मारे बैठा था। महाराज ने देखा, उस सभा में उनके राज्य के सभी प्रमुख चित्रकार, संगीतज्ञ, शिल्पी एवं नृत्यांगनाएँ हैं। प्रत्येक नर-नारी परिपूर्ण अचंचल भाव से आदरावनत मुद्रा में बैठे हैं और प्रतीक्षा कर रहे हैं कि, तपस्वी के मुख से कब वाणी के सुमन झरें। ग्रीवा को उत्तिष्ठ कर तपस्वी ने पहले एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपूर्व आकर्षण के लिए...

हिमालय

बुके सिंगार

साधन!

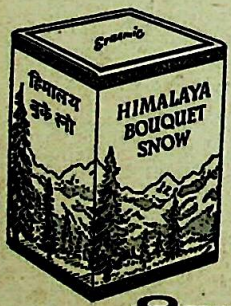

ठंडक पहुंचाने वाली, सुगंधित हिमालय बुके स्नो आप की जिल्द को नर्म और चिकना बनाये रखती है। मख़मल जैसा मुलायम हिमालय बुके टॉयलेट पाउडर आप के रंग रूप की बहार में एक अनोखा निखार पैदा करता है।

हिमालय बुके स्नो और टॉयलेट पाउडर

HBS. 15-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, इरॅस्मिक कंम्पनी लण्डन के लिए, भारत में बनाये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीव्र प्रेममयी दृष्टि से सबको देखा और फिर दोनों हाथों से अभय प्रदान करते हुए कहा– "कलाविदो! आज सौंदर्य के बारे में ही तुमसे बातें करूँगा। तुमने पूछा है, तो मुझे उसे कहना ही चाहिए। सौंदर्य के बारे में सबसे पहले इतना जान लो कि, जीवन की तरह सौंदर्य भी स्वयंभू है– अपने-आप प्रस्फुटित होता है और अपने-आप बदलता है। उसका निर्माण नहीं किया जा सकता और न उसे मिटाया ही जा सकता है। निर्माण तो बाद की क्रिया है, परिमार्जन है, मुलम्मा है– शृंगार कह दो। मगर वह मूल नहीं है। मूल तो 'आत्मभूत' ही है। देखो, यह आसमान कितना सुंदर है। यह नदी कितनी सुंदर है। सुहानी हरीतिमा प्राप्त कर वह वन-प्रदेश कितना इठला रहा हैं। वह हँसता फूल देखो– अपने में फूला नहीं समाता। उधर वह किलकारियाँ भरता शिशु देखो और उसको गोद में मोद से बिठाये उस माँ को देखो– कितनी सुंदर लग रही है! यह सवेरा, यह साँझ; यह सूरज, वह चंद्रमा और अपनी सहज आंतरिकता में मुखर तुम्हारे सबके ये चेहरे–ये सब कितने सुंदर हैं! क्यों हैं? इसलिए कि, सब आत्मशिल्प हैं– सौंदर्य जल की तरह, हवा की तरह, इनमें आकर अपने-आप समा गया है– कहीं कुछ बनाने-बिगाड़ने की जरूरत नहीं पड़ी है। न पहले से मन ने नक्शा बनाया है, न कहीं साँचा तैयार किया गया है कि, मनचाहा रूप ढाल लें– न गणित और नाप-जोख की ही कहीं जरूरत पड़ी है। अपने अजाने भाव में जो जैसा था, जो विकार-रहित सहजता थी, उसमें एक लहर आयी और सौंदर्य का सोना भर गयी।

"...चंद्रदीप की एक अप्सरा थी। चंद्रमा की किरणों से उसका रोम-रोम बना था। जब नृत्य के लिए क्षीरोज्ज्वल प्रांगण में उतरती, तो वारुणी अपनी मादकता भूल जाती। कामिनी काम को बिसरा देती। एक दिन नृत्य की तन्मयता में उसने क्षीर-श्वेत प्रांगण में अपना प्रतिबिम्ब देख लिया– वह देखती रही, देखती रही! कहते हैं, आज तक वह वहीं अपनी बिम्ब-छबि में बेसुध खड़ी है– कोई नहीं विचलित कर सका उसे। देव-दानव, सूर्य-चंद्र, सभी हार गये।

"...सौंदर्य के बारे में भी तुम ऐसा ही जानो। हम सब अपनी-अपनी छबि में बेसुध हैं– इसीलिए तो हम हैं! सौंदर्य को अपने से बाहर करके क्या हममें से कोई जीवित रह सकेगा? और, हम एक स्थल पर रिक्त होंगे, तो क्या दूसरे में लबालब नहीं भर जायेंगे?

"...एक राजा था। शरीर से बड़ा कुरूप, कर्म से बड़ा क्रूर, ज्ञान में मदांध। उसने अपने राज्य में घोषणा कर दी कि, मुझे जो भी सुंदर नजर आयेगा, मैं उसका वध कर दूँगा। राज्य में हलचल मच गयी। जिसने भी अपने को शीशे में देखा, उसे वही सुंदर लगने लगा। नौबत यहाँ तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैडेन्सा

बवासीर के लिए

सभी जगह मिलता है।

DCZ-13 HIN

परिवार-मित्र

दमानल

खाँसि तथा गले की बीमारी के लिये

MARTIN & HARRIS (PRIVATE) LTD.

MERCANTILE BUILDINGS, LALL BAZAR, CALCUTTA - 1.

ALSO AT

BOMBAY MADRAS DELHI RANGOON

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आयी कि, राज्य का प्रत्येक स्त्री-पुरुष, जिनमें अधिकांश वे थे, जिन्होंने कभी अपने बारे में सुंदर होने की कल्पना तक नहीं की थी, राज्य छोड़ कर पड़ौसी राज्यों में जाकर बस गये। सारा राज्य प्रजाविहीन हो गया। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। कई रोज तक वह इस दुर्घटना के बारे में सोचता रहा– 'क्या मेरे राज्य में सभी लोग सुंदर थे? क्या कहीं कोई असुंदर नहीं था?'

"यह है, सौंदर्य का असीम राज्य– भाँति-भाँति के करोड़ों-अरबों बरतनों में सौंदर्य भरा रखा है। छोटा हो या बड़ा, कोई बरतन खाली नहीं है। किंतु यह सब जो है, सब सहज है, अनिर्धारित है– निर्धारित तो मरण है और मरण में सौंदर्य कहाँ?"

× × ×

बरसात शुरू हुई। मूसलधार पानी बरसा। नदी-नाले अपनी बाढ़ में किनारों को तोड़-फोड़ चले। ऐसे में वह तपस्वी एक रौप्य-धौत भवन में बैठा था। उसके आसपास नगर के नामी-गरामी सेठ-साहूकार, मंत्री-राजकर्मचारी और धन-वैभवशाली व्यक्ति बैठे थे। सबने समवेत स्वर से कहा–"भगवन्, कृपया आप हमें धन के बारे में बताइये।"

तपस्वी ने अपने विकच कलियों-जैसे नयन खोले और उसके पूर्णचंद्र-जैसे प्रभासित चेहरे पर एक अमृतोपम मुस्कान लहरा गयी। वह बोला–"श्रावको, धन के बारे में तो कितना-कुछ कहा जा सकता है। धन अपनी जड़ों में केवल महत्वाकांक्षा ही तो है– आकांक्षा कितने रूपों में फलना चाहती है। धन भी, आकांक्षा की बेल में लगा फल है। बस, यह एक बेल है, इतना ही इसे मान लो– न कड़वी मानो, न मीठे फल की बेल! मीठा या कड़वा तो बीज के ऊपर निर्भर है। जैसी आकांक्षा होगी, वैसी ही बेल होगी– वैसा ही फल!

"...मगर, धन के बारे में इतना ही केवल क्यों सोचें? और तरह से क्यों नहीं सोचें? धन को मूल न मान कर ब्याज मान लेने में कोई अनर्थ तो नहीं है। मूल मनुष्य को मानो! तुम मूल हो! मैं मूल हूँ! और, धन जो बिना उपयोग के हमारे आसपास बिखरा पड़ा है, उसे मैं ब्याज कहूँगा। ब्याज इसलिए कि, वह प्रायः मूल को खतरे में डाल कर कमाया जाता है। और, अक्सर ऐसा होता है कि, ब्याज– नाममात्र की प्रत्याशित प्राप्ति– के मोह में हम मूल से भी हाथ धो बैठते हैं!

"...एक और भी पक्ष है– धन से बड़ी शक्ति भी शायद ही कहीं हो। धन शक्ति का महामहिम देवता है, जो अपने भक्तों को मुँहमाँगा दान देता है। अपनी पहुँच से बाहर वह कुछ भी नहीं समझता। मगर वह कानों से बहरा, आँख से अंधा और ज्ञान से कुंठित देवता है। इसलिए देने के औचित्य की उससे आशा नहीं करनी चाहिए– एक प्याले में वह एक घड़ा भी उड़ेल देता है और एक घड़े में प्रायः एक बूँद भी देना उचित नहीं समझता। मगर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

BY APPOINTMENT TO
HER MAJESTY QUEEN ELIZABETH II
SOAP MANUFACTURERS
A & F PEARS LTD.

पियर्स

सुंदरियों का
पीढ़ियों
पुराना सौंदर्य
साधन

PEARS
TALCUM

PEARS
TRANSPARENT
SOAP

पियर्स साबुन — शुद्ध, ग्लिसरीन युक्त सौंदर्य साबुन — आप की जिल्द के लिए अति सौम्य और आप की सुंदरता के लिए सुरक्षित है! अपनी सुंदरता की रोज़ाना देख भाल सुगंधित पियर्स साबुन से कीजिये। बच्चों की नर्म और नाज़ुक जिल्द के लिए पियर्स आदर्श साबुन है! पियर्स टॅल्कम... रेशम जैसा नर्म और मनोहर सुगंध से भरपूर.. आपको दिन भर तरोताज़ा और खूबसूरत बनाये रखता है। हल्के पीले-हरे-और-सुनहरे आकर्षक डिब्बे में पियर्स टॅल्कम खरीदिये!

PSTP. 1-50 HI हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, ए० एण्ड एफ पियर्स लि० लण्डन के लिये भारत में बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसके आँख-कान-बुद्धि नहीं, उसके विकल्प को हम स्वीकार क्यों कर लें— अपनी आवश्यकता के अनुसार क्यों न लें? यदि वह ज्यादा दे भी दे, तो उसको बिना जरूरत के सिर-कंधों पर क्यों ढोते रहें? देवता का तो प्रसाद ही लेना चाहिए— उसके सारे मंदिर को ही घर ले आने की कामना क्यों पोसें?

"...और, निष्प्रयोजन पड़ी शक्ति क्या बिना आहार के रहेगी? शक्ति तो सदैव खाती ही है, बिना भोग के वह क्षण-भर नहीं रह सकती—दानव घर में भूखा पड़ा रहता है, तो कहते हैं, वह दरो-दीवार को ही खाने लगता है!"

× × ×

परिक्रमा में निरंतर लीन तोते और महाराज को वह संन्यासी एक दिन एक वेश्यालय के सामने मिल गया। मोती का चौक पूर कर उसे नगर की वारांगनाओं ने हृदय की पूरी अभ्यर्थना के साथ उच्चासन पर प्रतिष्ठित किया था। रूप और कला में परम प्रवीणा नगरवधुएँ उसे घेर कर खड़ी थीं। छद्मवेशी परिव्राजक और तोता दोनों वहीं एक मणिदीप की आड़ में खड़े हो गये और संन्यासी की वाणी सुनने लगे—

"अच्छी बात है, नारी के ही बारे में सुनो। लेकिन नारी के बारे में ज्ञान ही मेरा कितना है? नारी को कोई जान भी सका है क्या अभी तक? नारी के प्रसंग में किस ज्ञान ने कब मुँह की नहीं खायी? इसका मतलब यह नहीं है कि, नारी बड़ी गम्भीर है, अगाध है, असीम है— ऐसा कुछ भी नहीं है। साथ ही, यह भी नहीं है कि, नारी इतनी सामान्या, इतनी रिक्ता, इतनी उथली है कि, उसके बारे में कुछ अभिप्रेय ही नहीं हो!

"नारी असल में 'नहीं' और 'है' के बीच का मध्यम मार्ग है— वह भाव-प्रसार, जहाँ जड़ और चेतन के अस्तित्व की सारी जड़ें आकर मिलती हैं। कितनी जड़ें हैं ये और इन जड़ों से पोषित कितने पेड़-पौधे हैं और उन पेड़-पौधों की कितनी शाखा-प्रशाखाओं पर कितने फल-फूल विकसित हैं— क्या कोई गणितज्ञ इसका हिसाब लगा सका है? और, इस हिसाब से क्या नारी की महिमा या उसकी अर्थमयता को मापा जा सकेगा? जो भूमि है, उसका विस्तार माप लीजिये, गहराई भी माप लीजिये; किंतु उसमें सर्जन-क्षमता कितनी है, क्या उसे भी किसी ने अभी तक नापा है?

"...पीड़ा को लीजिये। क्या पीड़ा का ओर-छोर कभी किसी के पैमाने पर आया है? हम रोते हैं, चीत्कार करते हैं, हमारे आर्तनाद से पाषाण भी पिघल उठते हैं; किंतु क्या यही हमारी पीड़ा है? क्या यहीं तक उसकी सीमा है? क्या हमारी अभिव्यक्ति के सहस्र-सहस्र द्वारों से निकल कर भी पीड़ा अपने को व्यक्त कर सकी है? नहीं। हमारे भीतर जो अथाह-अतल रव है, वह क्या रुदन-जैसी धागे-सी सँकरी प्रणाली में बह कर निःशेष हो सकेगा? ...तो पीड़ा को भी नारी मान लीजिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तबीयत ख़ुश होगयी!

पेट की गड़बड़ी में **ईनो** से
जल्द आराम
मिल जाता है!

अगर आप कभी तबीयत में ढीलापन, भारीपन और चिड़-चिड़ापन महसूस करें या ज़्यादा खा लेने की वजह से आपके पेट में गड़बड़ी पैदा हो जाय तो चमकदार ईनो का एक गिलास पीजिए। ईनो पेट में पहुँचते ही अपना काम शुरू कर देता है और तकलीफ़देह अम्लों को मिटाकर तरावट पहुँचाता है जिससे फिर पहले जैसी प्रसन्नता और उमंग आजाती है।

हलके अम्लनाशक ईनो का जायका भी अच्छा होता है और बूढ़े-बच्चे सभी इसे पी सकते हैं। पेट की गड़बड़ी में जल्द आराम पाने के लिए ईनो लीजिए।

ईनो 'फ़्रूट साल्ट' से तबीयत खिल उठती है!

'ईनो' और 'फ़्रूट साल्ट'—ये शब्द रजिस्टर किये हुए ट्रेड मार्क है।

ग्लूप लेबोरेटरीज (इण्डिया) प्राइवेट लि०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीड़ा के साथ नारी की संगति खूब बैठती है। नारी पीड़ा की तरह ही सदैव अव्यक्त है...और अव्यक्त के बारे में अधिक कहा ही क्या जा सकता है?...तो क्या नारी नीरवता है? इस प्रश्न के उत्तर में भी मैं तो 'हाँ' ही कहूँगा। नीरवता नारी के साथ मांस-मज्जा की भाँति फबती भी खूब है— नारी के सारे आकर्षण की बिंदु-रेखा यह नीरवता ही तो है। नीरवता कुछ नहीं कह कर इतनी सम्मोहनशील हो जाती है कि, तन या मन से उसके सामीप्य की इच्छा का आसानी से दमन नहीं किया जा सकता!"

× × ×

महाराज और तोते की भू-परिक्रमा का यह क्रम अप्रतिहत चलता रहा— दिन, सप्ताह और महीने बीतते गये और महाराज को ज्यों-ज्यों उस तेजोपुंज संन्यासी की सत्संग-सभाओं में सम्मिलित होने का अवसर मिलता गया, त्यों-त्यों उनका मन उसके प्रति उत्तरोत्तर प्रेमार्द्र होता गया। एक सभा में वह संन्यासी 'राजा और राज-व्यवस्था' पर बोल रहा था—

"राजा तो देवमंदिर में बैठा देवता का भक्तिपरायण पुरोहित है— देवता स्वयं प्रजा है और देवमंदिर राज्य है। देवता की तरह प्रजा भी अव्यक्त है अपनी विभूतियों में। पुरोहित का धर्म यही है कि, वह प्रजा के प्रसुप्त अंतर-वैभव— सच्चरित्रता, न्याय-बुद्धि, श्रमशीलता, त्याग, सहयोग और सहिष्णुता— को प्रकट करने की स्थितियाँ उत्पन्न करे और पुरोहित जैसे एकीभाव से अपनी सम्पूर्ण निष्ठा देवता में केंद्रीभूत रखता है, वैसे ही राजा भी अपने समस्त रसानुराग प्रजा के ही भोग में अर्पण रखे...और पुरोहित जैसे देवता के साथ एकरूप हो जाने में ही अपने जीवन का चरम लक्ष्य मानता है, वैसे ही राजा भी प्रजा के साथ तद्रूप होकर अपना पूर्ण-कामत्व प्राप्त कर ले।"

राजा ने ये वचन सुने, तो उनके अंतर्यामी ने आग्रह किया कि, राजधर्म के ऐसे मर्मज्ञ गुरु के चरणों में वे अपना मस्तक टेक दें और जन्म-जन्मांतर तक उसके दासानुदास कहलाने का गौरव प्राप्त करते रहें।

कुछ दिनों बाद स्त्री-पुरुषों की एक और ऐसी ही मंडली में उसने प्रेम के बारे में भी अति तत्वभरी बातें कहीं— "...प्रेम तो वह पूर्णता है, जो जीवन-भर हमारे अभाव-छिद्रों को भरा करती है— हमारी दुर्बलताओं पर अपना ममत्व छिड़क कर, उनकी हर लाचारी को सहलाया करती है। श्रावको! सच मानो, अगर प्रेम का इस जगत से सर्वथा लोप हो जाये, तो हम सब अपनी बेबसियों में ही डूब मरें। अरे, प्रेम से बड़ी भी क्या कोई क्षति-पूर्ति है— कोई अनुकूलता-स्रोतस्विनी, जहाँ हमारे अभाव अनायास ही अपनी रिक्तता भर सकें! प्रेम से बड़ा कोई आश्वासन भी तो नहीं।...और, संयम भी इससे कहीं बड़ा है क्या?"

इसी प्रकार, नगर के बड़े-बूढ़ों ने जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्त संसार में सुपरिचित

लिचेन्सा—गर्म देशों में होनेवाले समस्त प्रकार के चर्मरोगों के लिए निर्दोष तथा आरामप्रद मलहम है। लिचेन्सा खाज़ खुजली, एकज़ीमा, दाद, चकता, फोडा तथा जलन और घाव आदि को शीघ्र आराम करता है। बवासीर की विश्व-विख्यात औषधि 'हडेन्सा' के प्रस्तुतकारक ही लिचेन्सा के भी निर्माता हैं।

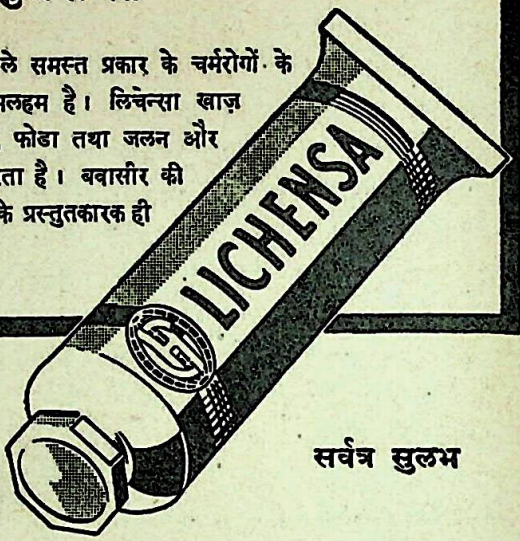

सर्वत्र सुलभ

) DCZ-2HIN

"कोनारक" सिमेंट

सबल व उत्कृष्ट होने के कारण प्रसिद्ध है
और देश की बड़ी-बड़ी योजनाओं में बरती जाती है।

पूछताछ के लिए कृपया लिखिए—

उड़िशा सिमेंट लिमिटेड राजगंगपुर, उड़िशा

प्रबन्ध अभिकर्ताः—

डालमिया एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे अपने स्नेहाग्रह में घेर लिया, तो उसने आयु के विषय में अपना अभिमत देते हुए कहा—"...आयु क्या है, शाश्वत गति का एक टुकड़ा ही तो है। जन्म के साथ गति की शर्त है कि, वह उसे आगे ढकेलती रहे— यों, आगे बढ़ाना या रोक देना दोनों के आपसी समझौते की बात है ; मगर मुझे तो लगता है कि, नदी-प्रवाह में जैसे तिनके अक्सर किनारे पर अटक जाया करते हैं, वैसे ही गति-प्रवाह में हम भी बहते-बहते भटक जाते हैं, वही हमारी मृत्यु है— गति से बिछुड़ने में जीवन-स्फूर्ति कहाँ?"

अल्पवय में ही ज्ञान के सिंधु-मंथन से ऐसे रत्नों को अनायास ही हस्तगत करनेवाले इस तपोलीन संन्यासी के प्रति महाराज की श्रद्धा-भक्ति अविकल्प रूप से अच्युत-अविचल होती गयी और एक दिन उन्होंने तोते से कह दिया—"मैं अब वापस नहीं जाऊँगा— इन्हीं बालमुनि के प्रवचन-नीर में अपने अंतःकरण का मार्जन करता रहूँगा। अब मुझे स्पष्ट भान हो गया है कि, कितना विकार-कर्दम मेरी चेतना के दर्पण पर जमा हुआ है। पक्षिश्रेष्ठ ! मैं तुम्हारे अनुग्रह को कभी नहीं भूल सकता।...विश्वास मानो, रानी का वह रहस्य अब मुझे चित्य नहीं है। हाय, किस तुच्छता की राक्षसी को मैं अभी तक सिर पर बिठाये रहा हूँ!"

सुना, तो तोता और भी गाम्भीर्य में खो गया। कुछ क्षणों के मौन सन्नाटे के बाद वह अपने को टटोलता हुआ कहने लगा—"नहीं, महाराज ! विरक्त मत होइये। रहस्य का सम्पूर्ण उद्घाटन हो चुका है। मुझे आपकी मनःस्थिति के इसी मोड़ की अपेक्षा थी। अब मैं जो कहूँगा, उसे आप निरुद्वेग भाव से सुन सकेंगे। ...महाराज ! यह बालमुनि जानते हैं, कौन हैं? ये एक कुमारी कन्या की संतान हैं। आज से बीस वर्ष पहले एक परम सुंदरी कन्या ने इन्हें जन्म दिया और एक चैत्य के द्वार पर चुपचाप, जीवन-मरण के सिरजनहार अमिताभ की करुणा के विश्वास पर छोड़ दिया...और वह कन्या थी, हमारी आज की महारानी!"

आश्चर्य-विस्फारित नेत्रों से महाराज उस वृद्ध तोते के मुख को अपलक देखते रहे। फिर, दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए बोले— "मित्र ! थोड़ा रुको। सहने की शक्ति बटोरने दो...मगर विश्वास रखो, मैं सह लूँगा...अब आगे कहो, ज्ञानी पक्षि ! हमारी प्राणप्रिया महादेवी का यह पूर्व-वृत्तांत विस्तारपूर्वक कहो!"

तोते ने एक तीक्ष्ण दृष्टिपात के बाद फिर कहना शुरू किया— "महाराज ! यह एक अद्भुत चरित्र है...कोई बीस-इक्कीस वर्ष पहले एक राजकुमार आत्मशुद्धि की कामना लेकर अमिताभ-चरण-चर्चित पर्वतराज की परिक्रमा के लिए गया था। सरदी का क्रूरतम विस्तार था। बर्फ के भीषण अंधड़ अबाध चल रहे थे। चरम शीत के आतंक से सारा पर्वत-प्रदेश निर्जन हो चुका था। किंतु राजकुमार की संनिष्ठा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अदम्य थी। वह निर्भय-निराहार पर्वतों पर चढ़ता गया...सहसा हिमवर्षा के साथ तीव्र आँधी आयी– अनम्र पर्वत-शिखर खंड-खंड होकर टूटने लगे। शीत से जड़ एवं आहत राजकुमार बेसुध होकर एक पेड़ की जड़ में गिर पड़ा।

"सबेरे जब अंधेरा मिटा और तूफान थमा, तो एक भिक्खु अपनी युवा कन्या के साथ अमिताभ की पूजा के लिए उधर से गुजरे। उन्हें राजकुमार दिखायी पड़ गया। वे उसे अपनी कुटिया में ले आये और कुछ देर बाद, अपनी कन्या को वह शीत-विजड़ित कुमार-देह सौंपते हुए बोले– 'लो, इसे तुम अपना ही अंग समझो। तुम्हीं इसे जीवनदान दे सकती हो।'

"कुमारी उसे कुटिया में ले गयी और प्राणपण से उसकी शुश्रूषा में लीन हो गयी; किंतु गर्मी देने के सभी उपाय जब उसके द्वारा असफल हो गये, तो लोक-परलोक की समस्त मर्यादाओं के नियंता अमिताभ को साक्षी कर, वह अपनी नग्न देह के साथ उस क्षीण-प्राण राजकुमार से लिपट कर सो गयी। प्रभु-इच्छा परम प्रबल! कालरात्रि बीती। राजकुमार के भीतर फिर से प्राणों के स्पंदन सिहरने लगे और एक ब्राह्म मुहूर्त के धुँधले में वह कृतघ्न राजकुमार उस त्यागमयी को बेसुध ही सोता छोड़ कहीं चला गया। महाराज! मनुष्य के चरम पतन की यह कथा अब अधिक नहीं कह सकूँगा...घृणा एवं ग्लानि से मेरा रंध्र-रंध्र क्लांत है।...हा, महाराज! यह बालमुनि उसी कुमारिका का पुत्र है– कुमारिकापुत्र! कन्यापुत्र!!" अकस्मात् के आघात से महाराज मानो गिरते-गिरते बचे। फिर, सिर पीटते हुए सविलाप बोले– "बुद्धिसत्तम! वह परम कृतघ्न राजकुमार मैं ही हूँ! मित्र! मेरी बाँह पकड़ो। मुझे मार्ग दिखलाओ। मुझे अपनी राजमहिषी के पास ले चलो– महादेवी से मैं क्षमा माँगूंगा... पूजा से उन्हें प्रसन्न करूँगा। पश्चात्ताप के इस अग्निकुंड से तुम मुझे उबारो, सखाश्रेष्ठ!"

*

एक बार एक युवक ने महान् दार्शनिक सुकरात से पूछा–"महात्मन्, कुछ ही काल बाद मेरा विवाह होनेवाला है। पर मैं यह तय नहीं कर पा रहा हूँ कि, विवाह करूँ या नहीं! आप ही बतायें, क्या मुझे विवाह करना चाहिए? क्या विवाह करना जीवन में आवश्यक है?" सुकरात मंद मुस्कान के साथ बोले– "विवाह? विवाह तो जरूर करना चाहिए; क्योंकि इससे लाभ ही पहुँचता है, हानि नहीं! अगर पत्नी अच्छी मिली, तो जीवन का सारा सुख सिमट कर तुम्हारे पास आ जायेगा और अगर मेरी पत्नी-जैसी अर्द्धांगिनी तुम्हें प्राप्त हुई, तो दार्शनिक बनने का सुअवसर प्राप्त होगा।..." — 'मुक्ताकण' से

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली—सम्पादक : नरेन्द्रनाथ ला ; प्रकाशक : कलकत्ता ओरियंटल बुक एजेन्सी, ९, पंचानन घोष लेन, कलकत्ता-९ ; मूल्य : कोई उल्लेख नहीं।

इतिहास-विषयक इस त्रैमासिक शोध-पत्रिका का सितम्बर-दिसम्बर, १९५८ का अंक हमारे सामने है। यों तो यह अंक इस पत्रिका का ३४-वाँ वार्षिकांक है और तदनुरूप ही इसमें अनेक खोजपूर्ण आधिकारिक रचनाएँ संगृहीत हैं ; पर यों भी इस पत्रिका का हर अंक विषय-वस्तु की दृष्टि से विशेषांक होता है। प्रस्तुत अंक में एलोरा के बौद्ध शिल्प, मिथिला में तांत्रिक धर्म के विकास, कोल-जाति की न्याय-पद्धति, आदि के बारे में बड़े महत्वपूर्ण लेख हैं। खरोष्ठी-लिपि के सम्बंध में प्रो० नलिनाक्ष दत्त और व्रात्य-सम्प्रदाय पर प्रो० राधाकृष्ण चौधरी के लेख तो बहुत ही विद्वत्तापूर्ण हैं। इस तरह की पत्रिकाओं का प्रकाशन हिन्दी-भाषा में भी आरम्भ होने की हम कामना करते हैं।

मन्वंतर-पूर्वी पशु

[चित्र : एक प्राचीन शिल्प की रेखानुकृति]

चले आ रहे हैं—रचयिता : गोपाल-प्रसाद व्यास ; प्रकाशक : आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६ ; पृष्ठ-संख्या : ८५; मूल्य : सजिल्द चार रुपये।

व्यास जी से हिन्दी-पाठक भली-भाँति परिचित हैं। हास्य-व्यंग्य से हिंदी-साहित्य को प्रफुल्लता एवं रसिकता प्रदान करनेवाले महारथियों में इनका नाम अपना विशिष्ट स्थान रखता है। "बिना रंग के जीवन और बिना व्यंग्य के साहित्य भी कोई साहित्य है? ऐसे समझ लीजिये, जैसे बिना सुपारी के पान पकड़ा दिया हो!" अपनी इस उक्ति के अनुसार ही व्यासजी हिन्दी-साहित्य-रूपी पान पर अपनी कृतियों के रूप में धड़ाधड़ सुपारियाँ रखते चले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जा रहे हैं। 'चले आ रहे हैं' उनके द्वारा प्रस्तुत नवीनतम सुपारी है, जो जाति से 'मैसूरी' तो नहीं है ; पर सुगंधि में उससे भी आगे है। इस सुपारी के व्यासजी ने १८ खंड किये हैं—१८ कविताओं के रूप में। स्वाद-गंध में ये सारे-के-सारे एक-दूसरे से होड़ लेते प्रतीत होते हैं।

नागार्जुन — सम्पादक : लक्ष्मीकांत पांडेय ; प्रकाशक : नागार्जुन-कार्यालय, ५८-डी, न्यू अलीपुर, कलकत्ता ३३ ; मूल्य : एक प्रति १।। रु०, वार्षिक १५ रुपये।

'एलोपैथिक' और 'होमियोपैथिक' चिकित्सा-पद्धतियों के भारत-आगमन के बाद, कतिपय अपरिहार्य कारणों से शिथिल पड़ गये और लोकजीवन से काफी हद तक दूर चले गये आयुर्वेद-विज्ञान की ओर अब फिर से लोगों का ध्यान गया है और आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुसार विश्व की इस प्राचीनतम चिकित्सा-पद्धति को उपस्थित किया जा रहा है। आयुर्वेद के विद्वानों और शुभैषियों के प्रयत्नों से इस चिकित्सा-पद्धति की वैज्ञानिकता तो अब बहुत-कुछ प्रमाणित भी हो चुकी है ; पर यथेष्ट रूप में इसे लोकप्रिय बनाने का काम अब भी शेष है। इसी महत् उद्देश्य से प्रेरित हो, अँग्रेजी-भाषा में यह मासिक पत्र प्रकाशित हो रहा है। अपने जीवन के अल्पकाल में ही इस पत्रिका ने आयुर्वेद को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उपस्थित करने में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान किया है। पं० शिवशर्मा-जैसे आयुर्वेद के निष्णात् पंडितों का सहयोग इस पत्रिका को प्राप्त है। इसके हर अंक में आयुर्वेद-सम्बंधी बहुमूल्य शोधात्मक एवं विश्लेषणात्मक रचनाएँ रहती हैं। छपाई-सफाई भी नयनाभिराम है।

प्रगीत—सम्पादक : रामावतार त्यागी और बालस्वरूप राही ; प्रकाशक : किताब महल, २८, फैज बाजार, दिल्ली-७ ; मूल्य : एक प्रति १।। रु०, वार्षिक छः रुपये।

नाम से तो ऐसा लगता है कि, यह पत्रिका केवल कविताओं के लिए निर्धारित है—सम्पादक के रूप में दो कवियों के नाम इस अनुमान को और भी पुष्टि प्रदान करते हैं—पर दरअसल, यह गद्य-पद्य से संयुक्त एक त्रैमासिक पत्रिका है। इसके प्रथम अंक में कई सुंदर रचनाएँ संकलित हैं। वीरेंद्रनारायण-लिखित 'मैकबेथ का हिन्दी-प्रदर्शन और मैं' शीर्षक लेख नाटककारों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है।

भूल सुधार

'नवनीत' के गत अप्रैल-अंक में प्रकाशित लेख "बौद्धदर्शन का एक प्राचीन वातायन" अफगानिस्तान के सांस्कृतिक मुखपत्र 'आर्याना' में प्रकाशित लेखमाला का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर था। हमें खेद है कि, भूल-वशात् हम आभार के साथ दोनों नामों का उल्लेख नहीं कर सके।

—सम्पादक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पायुलीन

बालकोंकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.

GUJARAT

बी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : बम्बई-२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब बरसों से झंकार रेडियो का 'सितारा' रेडियो-निर्माण में उच्चतम दक्षता का प्रतीक-स्वरूप माना जा रहा है। आपको रेडियो-विक्रेता बनना हो या नया रेडियो खरीदना—इन उपयोगी तथ्यों पर जरूर ध्यान दीजिये।

उत्कृष्टता का प्रतीक

* अनवरत अनुसंधान के अन्तर्गत निर्मित
* सुगम चुनाव – दस तरह के रेडियो और सब के सब लुभावने 'विनीयर' से अलंकृत लकड़ी के केबिनेट में उपलब्ध।
* प्रत्येक झंकार रेडियो अपने में बेजोड़—पर कीमत सिर्फ २०५/– से ४२५/– तक ही।

निर्माता :
रेडियो डिविजन :

इन्डियन प्लास्टिकस् लिमिटेड

बम्बई-४७

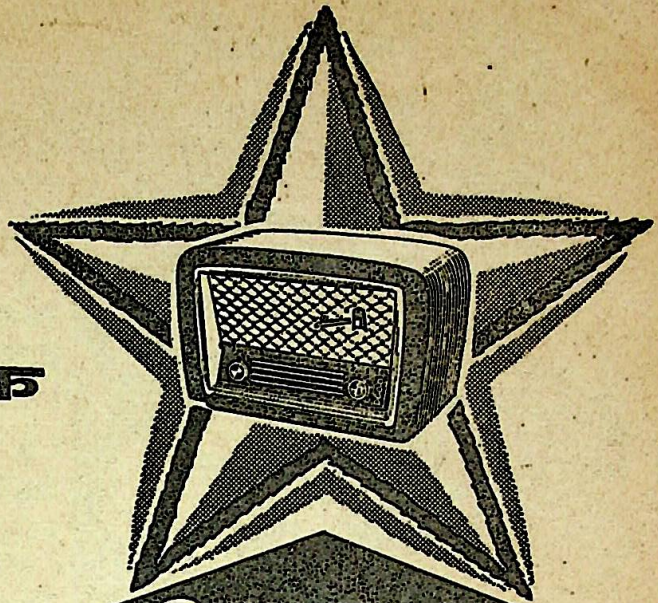

अपूर्व मैग्नाटोन के साथ

JR. 6 SEKAI

ग्रीष्म पर्यन्त दीर्घकालीन

प्रसन्नता

गर्मी और उमस को दूर रख प्रसन्नता बनाये रखने का श्रेय है—हाथकरघे के कपड़ों को—जो घर या बाहर, काम पर या सैर सपाटे में, सभी अवसरों पर उपयुक्त रहते हैं; हवा की तरह हल्के, मुलायम, चमकदार, सुहावने व शीतल होते हैं और जो उष्णता को पास नहीं फटकने देते।

हाथकरघा वस्त्र

सुखद • शोभनीय • विशिष्ट

निर्यात के लिये हाथकरघा वस्त्रों पर शीघ्र ही क्वालिटी का चिन्ह और मुहर लगाई जायेगी। अधिक विवरण के लिये कृपया लिखिये

अखिल भारतीय हाथकरघा बोर्ड

शाहीबाग हाउस, विटेट रोड, बम्बई-१

DA 59/118

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

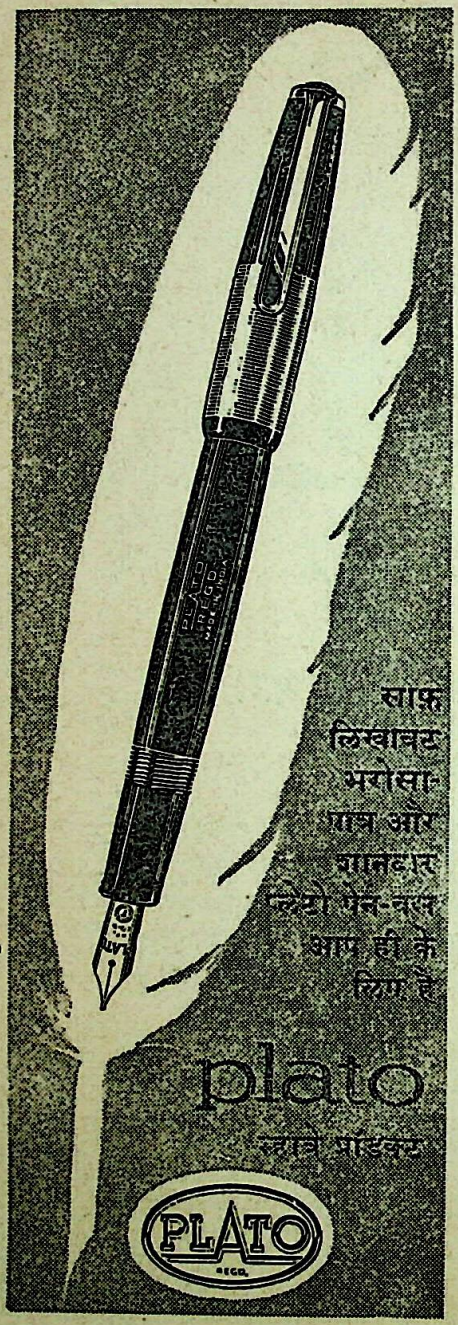

त्वचा सुकोमल रखता है

रेमी स्नो

ए.व्ही.आर.ए. ॲण्ड कं.
बम्बई २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लि०

[१९४३ में रजिस्टर्ड]

प्रधान कार्यालय : २ इन्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूँजी.....८,००,००,०००
लागत पूँजी.....४,००,००,०००
चुकती पूँजी.....२,००,००,०००
सुरक्षित कोष.....१,४८,००,०००

शाखाएँ

भारत : सभी प्रमुख नगरों तथा औद्योगिक और व्यवसायिक प्रसिद्धि के शहरों में–
पाकिस्तान : चटगाँव तथा करांची
बर्मा : रंगून, मोलमिन, अक्याब, मांडले तथा बेसीन
मलाया : सिंगापुर, पिनांग, कौला–लामपुर तथा क्लांग
यू० के० : लन्दन
अन्य हांगकांग,
युरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया,
आदि सारे विश्व में एजेन्ट हैं।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्स्चेंज का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्व-व्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक-सम्बन्धी सेवा प्रदान करती हैं।

सुविधाजनक मूल्यों के रुपयों में ट्रेवेलर चेक दिए जाते हैं।

जी. डी. बिड़ला
चेयरमेन

एस. टी. सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारा हस्तशिल्प वस्तुओं के बारे में

मिट्टी की कारीगरी

प्राचीन काल में हमारे यहां घास की टोकरियों पर मिट्टी चढ़ाकर और उन्हें धूप में सुखाकर पात्र बनाये जाते थे पर अब समय बदल चुका है। आज के भारतीय कलाकार लालित्यपूर्ण, चमकदार और रंग-बिरंगे मिट्टी के पात्र विविध डिज़ाइनों और आकारों में बनाने में सिद्ध हस्त हैं।

दिल्ली के सुविख्यात मिट्टी के नीले पात्र और वस्तुयें, जयपुर और खुर्जा के नीले कटोरे और फूलदान, बम्बई में निर्मित मिट्टी की बिना चमक की वस्तुएँ और नीली अथवा हरी चमक के अथवा प्राकृतिक श्वेत रंग के कारीगरी कटोरे और कूजे, हरेक की अपनी विशिष्टता और आकर्षण होता है। बिहार और बंगाल आधुनिक टेराकोटा और मिट्टी की कारीगरी के माध्यम से प्राचीन कला के प्रतीकों को उतारने में दक्ष हैं।

भारतीय हस्तशिल्प की वस्तुएं—भारत के गौरव-चिन्ह

अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड,
वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय,
भारत सरकार

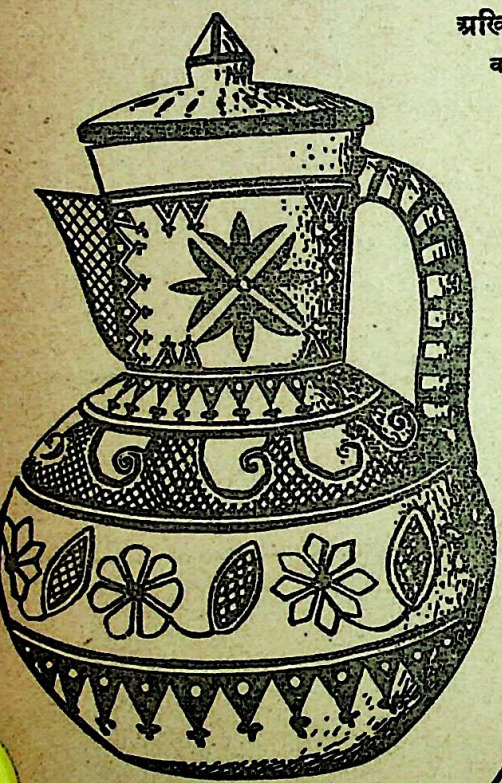

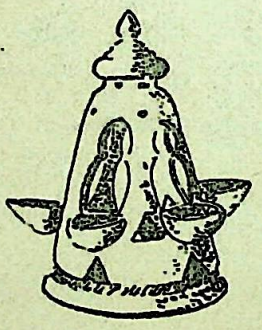

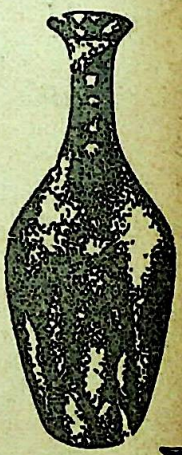

DA 50/56

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

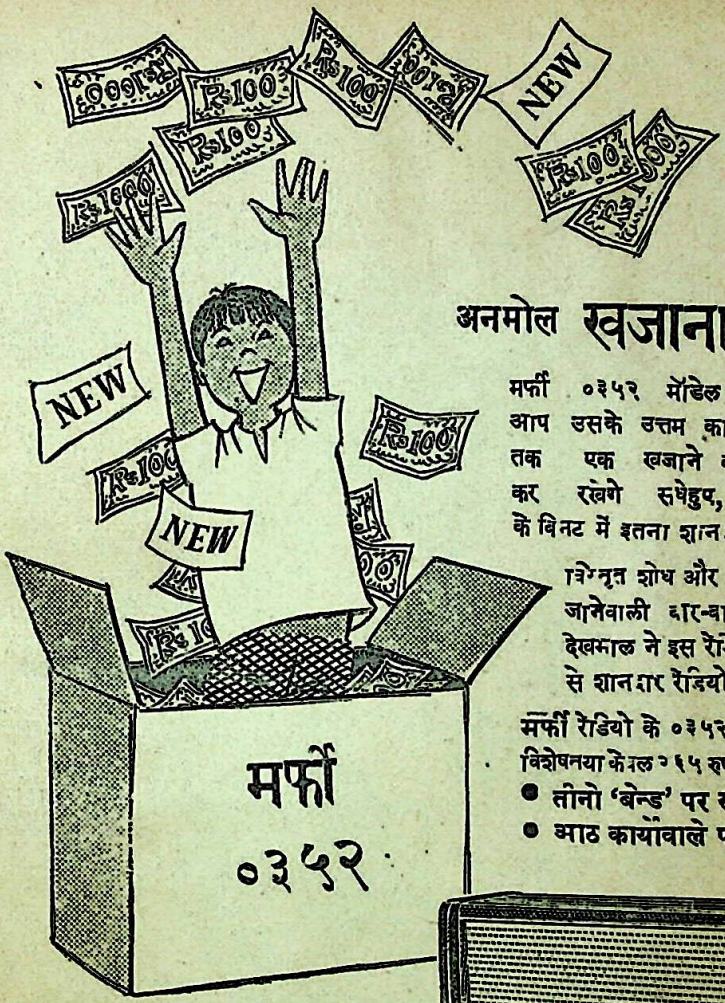

अनमोल खजाना !

मर्फी ०३५२ मॉडेल के रेडियो को आप उसके उत्तम कार्य के कारण वर्षों तक एक खजाने की भाँति संभाल कर रखेंगे सफेद्रुप, छोटेसे सुन्दर, के बिनट में इतना शानदार रेडियो.....

विस्तृत शोध और निर्माण के वक्त की जानेवाली बार-बार की जाँच और देखभाल ने इस रेडियो को हर तरीके से शानदार रेडियो बना दिया है !

मर्फी रेडियो के ०३५२ मॉडेल की कीमत विशेषतया केवल २६५ रुपये ही रखी गयी है।

- तीनो 'बेन्ड' पर सब 'वेन्ज'
- आठ कार्योंवाले पाँच 'वाल्व'

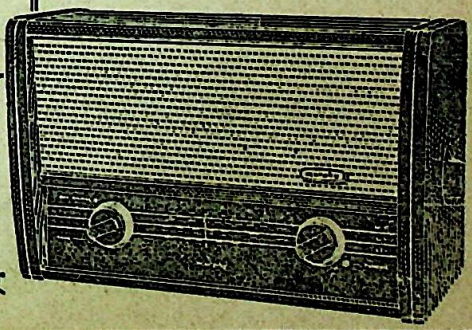

- स्थानीय टेक्स अतिरिक्त

देखने-सुनने में शानदार

MR/76

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

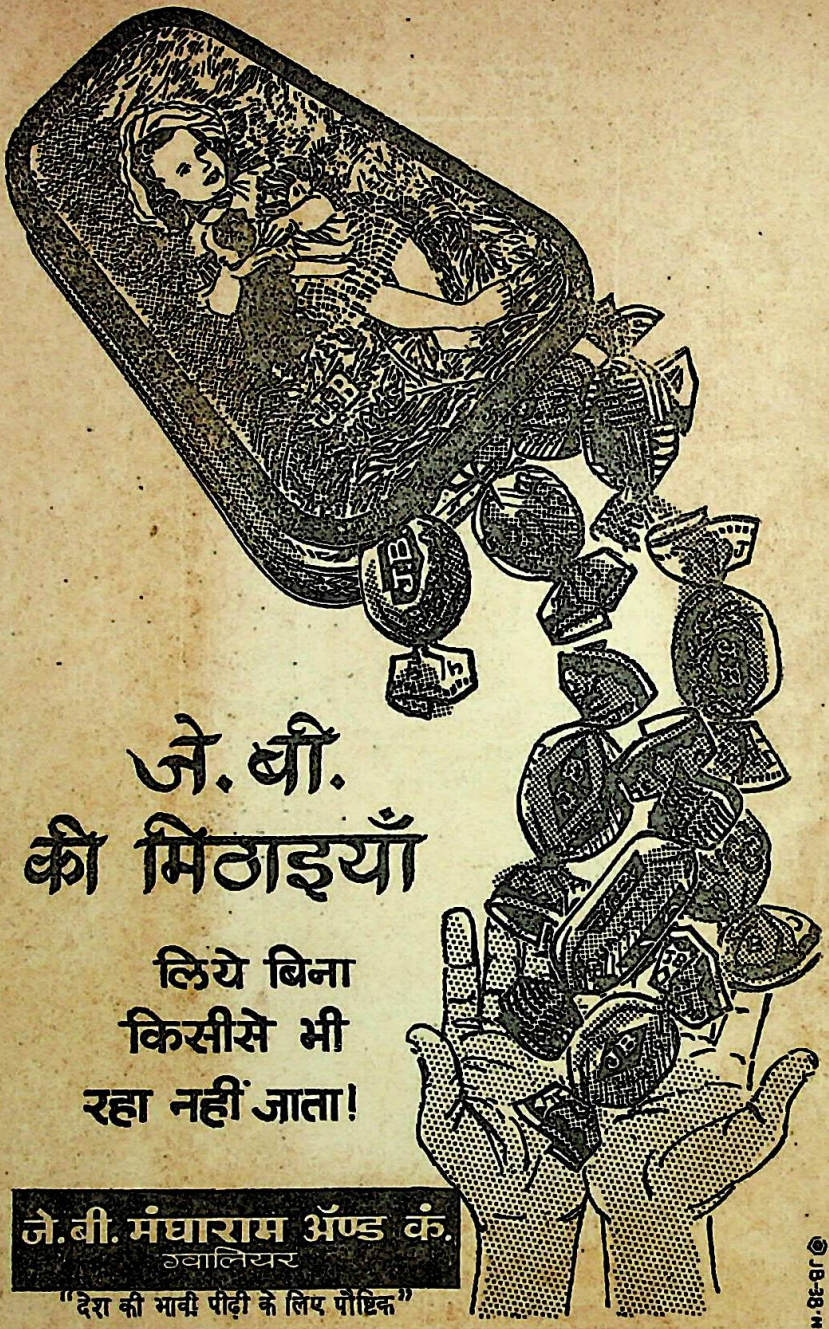

जे. बी.
की मिठाइयाँ

लिये बिना
किसीसे भी
रहा नहीं जाता!

जे.बी. मंघाराम ॲण्ड कं.
ग्वालियर
"देश की भावी पीढ़ी के लिए पौष्टिक"

© JB-38

जे. बी. मंघाराम एन्ड कं., १२ गनबो स्ट्रीट हार्नबी व्यू बिल्डिंग, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे नए प्रकाशन

(१) नटखट बालक : लोकप्रिय कथाकार

यह पुस्तक है अंग्रेज़ी भाषा के विख्यात लेखक मार्क ट्वेन की रोचक जीवन-गाथा। इस विनोदी महापुरुष का जीवन एक नाटकीय व रंग-बिरंगी कहानी है, जो हमें बताता है कि, क्यों उसकी लिखी "टॉम सायर" और "हक्लबरी फिन" अंग्रेजी भाषा में युवकों की सबसे प्रिय पुस्तकें हैं।

मूल्य : केवल डेढ़ रुपये

(२) सागर की गोद में

उक्त उपन्यास में सागर-तट पर वंश-परम्परा से बद्धमूल एक सीधे-सादे अमरीकी परिवार की जीवन-कहानी है। उनकी संघर्षमयी जिन्दगी, सागर की विशालता और सागर-तटीय निवासियों पर उसका स्वाभाविक ममत्व - इन सबको प्रस्तुत उपन्यास में शब्दों की लड़ी में पिरोया गया है।

मूल्य : केवल एक रुपया

पुस्तक-विक्रेताओं को नियमानुसार कमीशन

(प्रकाशक— नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई—७)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

BZ-14-33 HI
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सितम्बर

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पालन पोषण के लिए मां की ममता और ऑस्टरमिल्क

मां की छाती से लगा मुन्ना कैसा प्रसन्न है, कैसा संतुष्ट! इस लिए कि मां उस का पालन पोषण ऑस्टरमिल्क से करती हैं जो कि शुद्ध दूध का आहार है। इस में वे सब गुण हैं जो मां के दूध में होते हैं। मुन्ने के लिए ऑस्टरमिल्क बनाते समय, आप की ममता सदा हमारे ध्यान में रहती है।

मुफ्त! ऑस्टरमिल्क "पुस्तिका" (अंग्रेज़ी में)...बच्चों की देख भाल के बारे में सभी आधुनिक सूचनायें! डाक खर्च के लिए, ५० नये पैसे, इस पते पर भेजिये "ऑस्टरमिल्क, P. O. Box No. 202, बम्बई १।"

मां के दूध के समान

फ़ैरेक्स, मुन्ने का पहला ठोस आहार! जब मुन्ना चार पांच महीने का हो जाये तो उसे फ़ैरेक्स दीजिये जो अनाज का एक पौष्टिक मिश्रण है।

OS. 1-50 HI

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुमित्रा कहती है

घुँघराले काले केशों से
दुनिया करती प्यार।
किन्तु सभी वे होते उजले
जग देता दुत्कार॥

इसलिये यदि आप अपने केशों को मेरी तरह सुन्दर, लम्बे, घने, काले और चमकीले बनाना चाहते हों तो आप भी हमेशा मेरी तरह के एम पी मार्का विशुद्ध नारियल तेल व्यवहार करें।

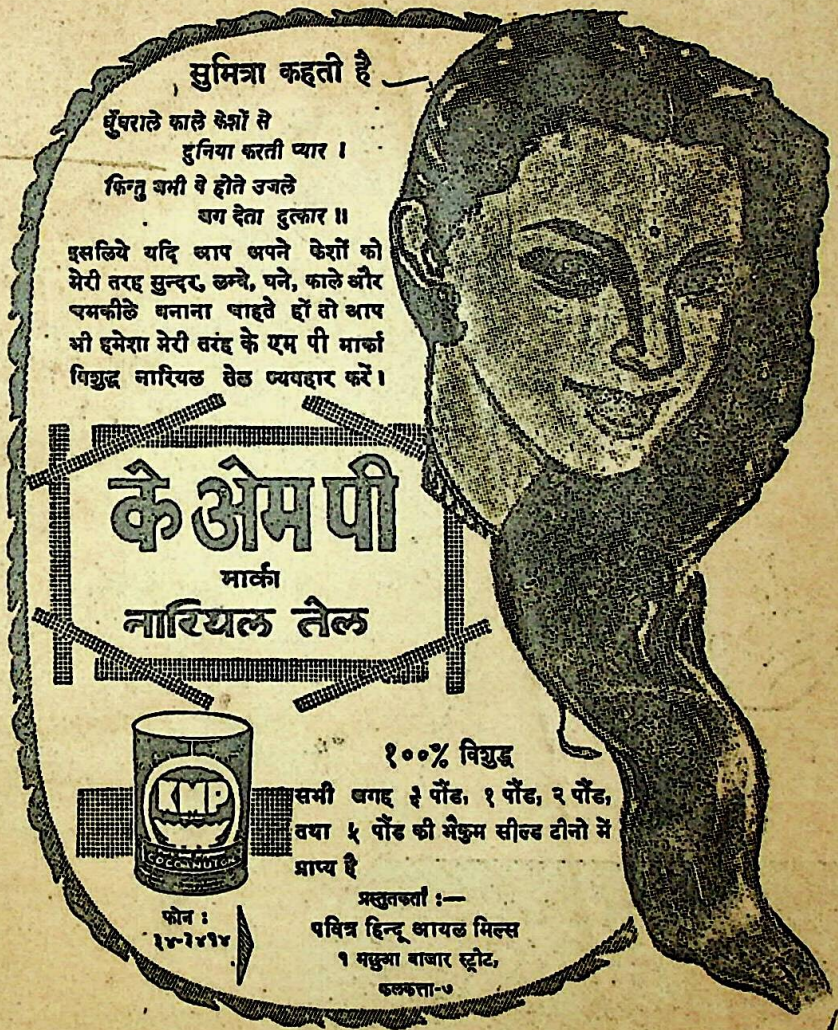

के एम पी
मार्का
नारियल तेल

१००% विशुद्ध
सभी जगह ३ पौंड, १ पौंड, २ पौंड, तथा ५ पौंड की भैकुम सील्ड टीनो में प्राप्य है

फोन :
१४-१४१४

प्रस्तुतकर्ता :—
पवित्र हिन्दू आयल मिल्स
१ मछुआ बाजार स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा केसरी को प्यार हो गया!

एक बार जंगलों के राजा केसरी को रम्मन लकड़हारे की खूबसूरत बेटी से प्यार हो गया। बस, वे पहुँचे उसके यहाँ ताज़े-ताज़े फूलों की सौगात लेकर! रम्मन ने बड़ी दुनिया देख रखी थी। उसने राजा केसरी से कहा "महाराज, आपके इतने बड़े-बड़े पंजों और दाँतों से तो मेरी लड़की डर जाएगी!"

राजा केसरी तो प्यार में बावले हो ही रहे थे। अपने दाँत और पंजों के नाखून निकलवाने के लिए झटपट राज़ी हो गये।

रम्मन ने उनके दाँत और नाखून निकाल लिये और फिर डंडे से उनकी ऐसी ख़बर ली कि बेचारे राजा साहब सर पर पाँव रख कर भाग खड़े हुए!

रम्मन की लड़की ठंडी साँस ले कर बोली "केसरी राजा तो निरे कद्दू निकले। सौगात ही लानी थी तो पैरी की मिठाइयाँ लाते! मैं फ़ौरन उनसे शादी कर लेती!"

तात्पर्य : अपने चहेतों को पैरी की मिठाइयाँ दीजिए

Parry's

पैरी की मिठाइयाँ शुद्ध, स्वादिष्ट और स्वास्थ्यकर होती हैं। ये छुट्टी या रु. १.७५ से लेकर रु. ५.०० तक की क़ीमत के रंग-बिरंगे डिब्बों में मिलती हैं।

बनानेवाले: पैरीज कन्फेक्शनरी लिमिटेड, मद्रास

PRS 517

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

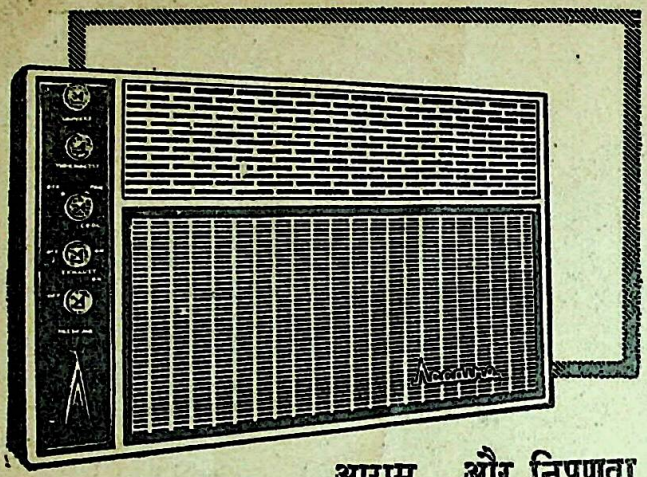

आराम...और निपुणता के लिए

ऍकायर— ए. डब्ल्यू. १०२ ए. सी. डी. डब्ल्यू. १०२ डी. सी.

खिड़कीनुमा कमरे को ठंडा बनानेवाला

- कम कीमत
- शान्तिपूर्ण कार्य
- कष्टरहित सेवा
- एक साल की जिम्मेवारी

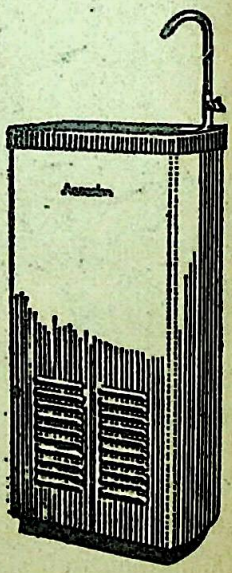

एकूलर—वाटर कूलर्स

- ठंडे स्वास्थ्यदायक जल की निरन्तर प्राप्ति
- जंगसे रक्षित 'केबिनट' • आसानी से लगाने योग्य

सुसंगठित
सेवा
आपके आदेशार्थ

एअर कन्डीशनिंग कोर्पोरेशन प्रा. लि.

कलकत्ता बंबई नयी दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माँ ने आज खाने में क्या भेजा है...

क्या – ग्लुको बिस्कुट का एक पैकेट ? ठीक – आप एक होशियार माँ हैं – आप जानती है कि आप के बच्चे को शक्ती प्रदान करने के लिए ग्लुको बिस्कुट निहायत ज़रूरी है।

आप अपने बच्चे को भोजन के लिए कुछ भी क्यों न दें, किन्तु साथ में कम से कम, छै ताज़े, कुरकुरे और पौष्टिक ग्लुको बिस्कुट ज़रूर दें। इन्हें आप बच्चों को सुबह के नाश्ते में भी दे सकती हैं।

याद रखिए: बच्चों के स्वास्थ्य के लिए पार्ले के पौष्टिक और स्फूर्तिदायक ग्लुको बिस्कुट लाजवाब होते हैं। उन्हें हर दिन छै बिस्कुट अवश्य दिया करें।

पार्ले के ग्लुको बिस्कुट

पार्ले प्रॉडक्टस् मेन्युफेक्चरिंग कं.
प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई – २४

PG.59.IB HIN

EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योग विद्या का अद्वितीय ग्रंथ

"उमेश योग दर्शन"

(प्रथम खंड)–चार भाषाओं में

गुजराती * हिन्दी * मराठी * अंग्रेजी लेखक : योगीराज श्री उमेशचंद्रजी
संस्थापक व संचालक : श्री रामतीर्थ योगाश्रम बम्बई–१४

इस ग्रंथमें रोगी तथा निरोगी स्त्री- पुरुषोंकी तन्दुरुस्ती अच्छी रखनेके लिए ६ प्रकार के मलशोधन कर्म, आसन, मानसिक इलाज, जलोपचार, सूर्य किरण चिकित्सा, आहार चिकित्सा आदि अनेक शक्ति वर्धक तथा रोग निवारक, घर में हो सकें ऐसे सुलभ, साध्य इलाज बताये गये हैं। ४०० से अधिक पृष्ठ तथा १०८ से अधिक चित्र हैं। ग्लेज आर्ट पेपर पर योग के आसनों के चित्र, मलशोधन कर्म के चित्र तथा स्वामीजी के रंगीन चित्र हैं। ३५ वर्षों का निजी अनुभव तथा २५ वर्षोंके दौरानमें श्री रामतीर्थ योगाश्रमसे लाभप्राप्त भाई-बहनोंके अनुभवोंके प्रमाण पत्र भी योगीराज ने इस ग्रंथमें प्रस्तुत किये हैं। संक्षेप में, स्त्रियों, पुरुषों, बालकों, रोगियों तथा निरोगियों सबको अपूर्व मार्ग दर्शन करानेवाली अजोड़ पुस्तक है।

प्रत्येक भाषा की पुस्तक की प्रति का मूल्य रु. १५)
डाक खर्च रु. २) अलग। मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर से भेजिये।

वी. पी. नहीं भेजी जाती। श्री रामतीर्थ योगाश्रम, दादर, बम्बई-१४

अनावश्यक बालों से छुटकारा पाने के लिए सब से सरल और कष्टरहित तरीका है

नई, आश्चर्यजनक, बालों को साफ करने की दवा

एलफिन का प्रयोग

इस दवा को आप प्रयोग करके देखें। आप देखेंगे कि यह कितनी आसानी और आराम से आपके अनावश्यक बालों को साफ करती है। आपको अपनी त्वचा इतनी मुलायम और सुन्दर नजर आएगी मानों वहाँ कभी बाल निकले ही नहीं थे। एलफिन - और - तो - और लगातार बालों की बढोतरी को भी रोकती है।

सोल एजेंट– दी असोसियेटेड मारकेटिंग कंपनी
पोस्ट बेग १००१६, बम्बई–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वयं भगवान भी असहाय रहे,
उस नारी के सामने उनको भी हार माननी पड़ी

गिरिजा
महिपाल
बी. एम. व्यास
कृष्णा कुमारी
काँचनमाला और
पॉल शर्मा

☆

संगीत
कल्याणजी वीरजी

फोटोग्राफी
अनंत नांदेडकर

☆

अपार भीड़ में चल रहा है।

कृष्णा – बम्बई

एल. एन. टॉकीज
अहमदाबाद

☆

इसे देखना न भूलें

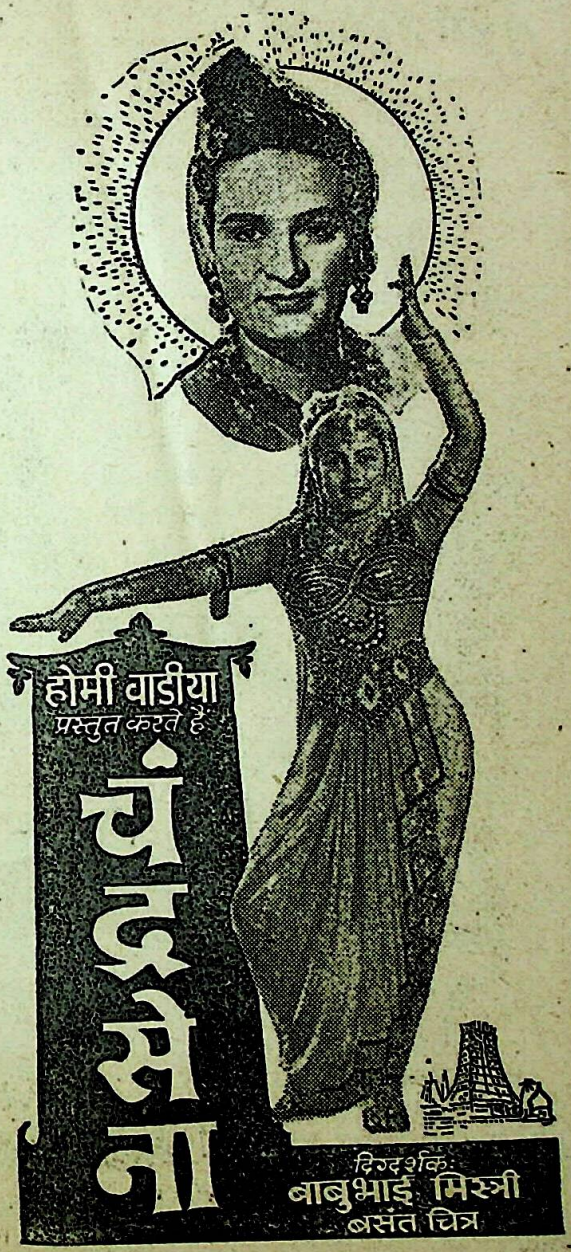

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रमेश ने जीत का गोल किया

फ़ुटबॉल का अच्छा खिलाड़ी बनने के लिए आपमें कुशलता, फुर्ती और शक्ति होनी ही चाहिये। रमेश के पास ये तीनों ही गुण काफ़ी मात्रा में थे और इसीलिए वह अपनी टीम को जिताने में इतना योग दे सका। खेल की नियमित प्रेक्टिस से रमेश ने अपनी कुशलता तथा दौड़ने की रफ़्तार बढ़ाई और आवश्यक शक्ति प्राप्त करने के लिए वह हररोज़ ग्लूकोविटा इस्तेमाल करता था। यह बात ध्यान देने योग्य है कि काम करने या खेलने समय जब आप अतिरिक्त रूप से सक्रिय रहते हैं तो आपको जिस अनिवार्य रक्त-शक्कर की ज़रूरत पड़ती है वही ग्लूकोविटा में होती है।

ग्लूकोविटा चाय, कॉफ़ी, दूध या ठण्डे पेय पदार्थों में लीजिये। एक प्याला या गिलास में इसे तीन चाय के चम्मचभर डालकर हिलावें। यह आसानी से घुल-मिल जाता है।

अतिरिक्त शक्ति के लिए
ग्लूकोविटा

कॉर्न प्रॉडक्ट्स कं. (इण्डिया) प्राइवेट लि.

भारत के लिए एजेण्ट: पैरी एण्ड कं. लि.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निष्ठावान् पुरुष

"बड़े तड़के से काफी रात तक बम्बई में टाटा का कार्यालय उत्साही पूँजी लगानेवालों की भीड़ से घिरा रहता था। वृद्ध और युवक, धनी और गरीब, नारी और पुरुष, सब लोग यथाशक्ति लेकर आये थे; और तीन सप्ताह के समाप्त होते होते कारखाना बनाने के लिए आवश्यक २ करोड़ रुपये से अधिक (१,५३०,००० पौंड) पूरी रकम मिल गई जिसका पाई पाई करीब ८ हजार भारतीयों ने चुकाया था।"

—एक्सेल साहलिन

इस प्रकार भारी उद्योग की स्थापना करने के भारत के प्रथम प्रयास के रूप में, जनता के हार्दिक समर्थन के साथ २६ अगस्त, १९०७ को टाटा आयरन ऐण्ड स्टील कम्पनी खोली गई। इस देश के सबसे बड़े गैर-सरकारी उद्योग तथा प्रधान इस्पात उत्पादक के रूप में इसका विकास संघर्ष तथा संकट के बिना सम्भव नहीं हो सका। १९२० के बाद जब कम्पनी का अस्तित्व खतरे में पड़ गया था, तब भी बहुत से साहसी पूँजी लगानेवाले थे जिनका विश्वास कतई नहीं टला और उन्होंने एक नये उद्योग का खतरा खुशी से उठाया।

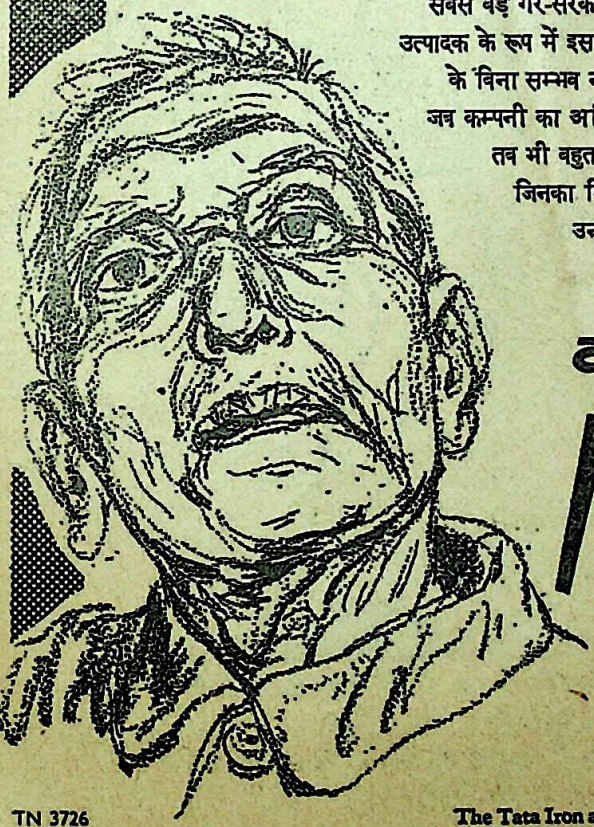

टाटा स्टील

१३बी, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता-६ के ७६ वर्ष अवस्था के श्री रासबिहारी लाहा जो कम्पनी के शुरू से एक हिस्सेदार हैं और जिनके पास कम्पनी के शेयर आज भी हैं।

TN 3726

The Tata Iron and Steel Company Limited

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुन्ना कितनी जल्दि बढ़ता है, न ?

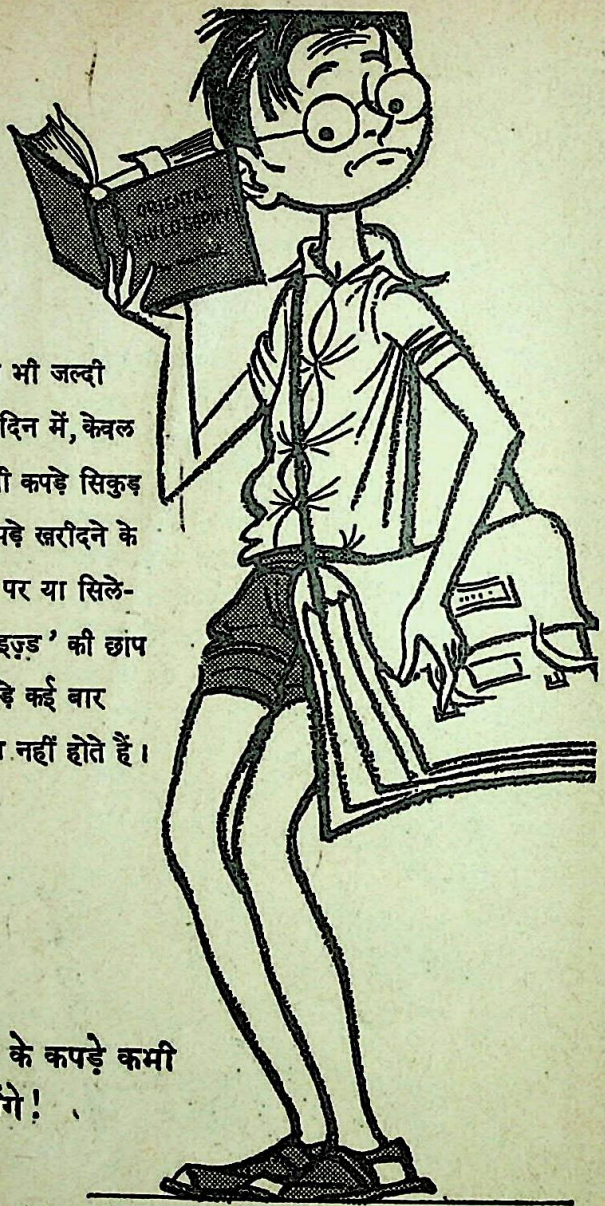

...पर उसके कपड़े उस से भी जल्दी सिकुड़ते हैं! सिर्फ़ एक ही दिन में, केवल एक ही बार धुलने पर, सूती कपड़े सिकुड़ जाते हैं। इसीलिए सूती कपड़े ख़रीदने के पहले, कपड़े के प्रत्येक ग़ज़ पर या सिले-सिलाये वस्त्रों पर 'सेन्फ़ोराइज़्ड' की छाप देखना मत भूलिये। ये कपड़े कई बार धुलने पर भी सिकुड़ कर तंग नहीं होते हैं।

लेबल पर

SANFORIZED
REGD TD MK

यह छाप
देख लीजिए फिर आप के कपड़े कभी सिकुड़कर तंग नहीं होंगे!

रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क 'सेन्फ़ोराइज़्ड' के मालिक क्लुएट, पीबॉडी एण्ड कं. इन्कॉपोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में स्थापित) द्वारा प्रचारित। 'सेन्फ़ोराइज़्ड' ट्रेड मार्क केवल उन्हीं कपड़ों पर लगाने की अनुमति दी जाती है जो इस कंपनी द्वारा निर्धारित कपड़ा न सिकुड़ने की कड़ी शर्तों को पूरा करते हैं।

अधिक जानकारी के लिए: 'सेन्फोराइज़्ड' सर्विस, ९५, मरीन ड्राइव, बम्बई-२

SAN. 58-1B HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

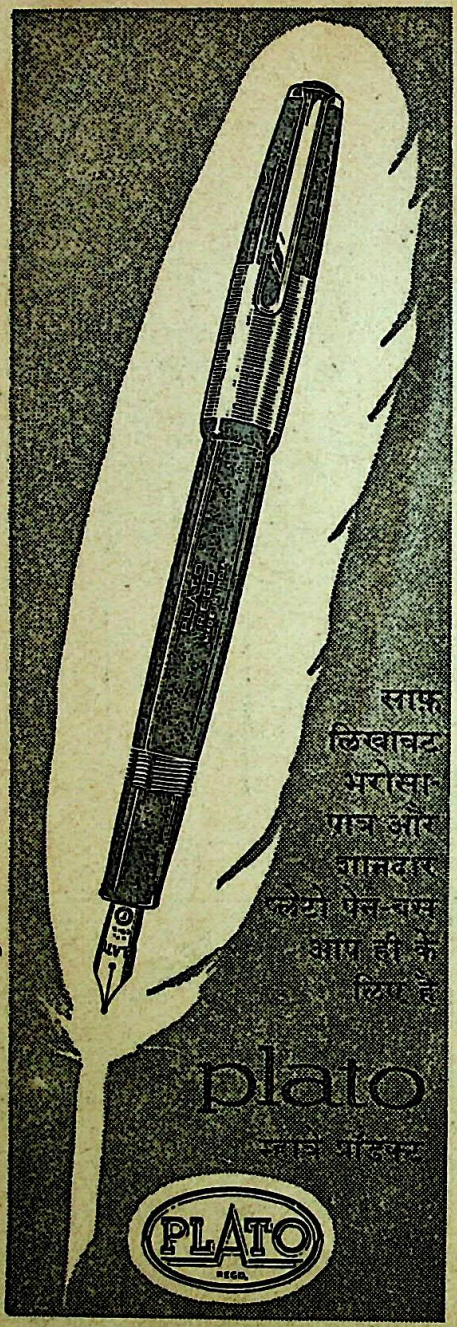

सौंदर्य के लिये..

त्वचा सुकोमल रखता है

रेमी स्नो

ए.व्ही.आर.ए. ॲण्ड कं.
बम्बई २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–३.

तार : 'अशोक होटल' फोन : ३०१११ (४० लाईन)

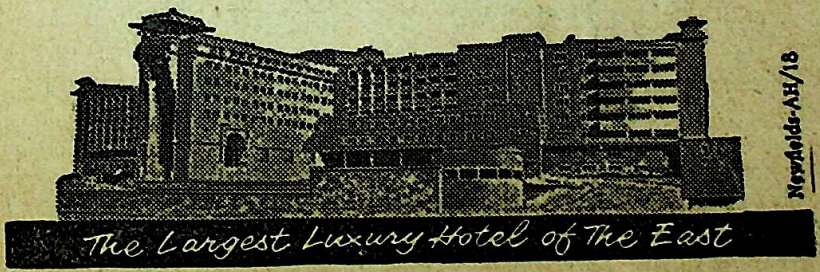

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

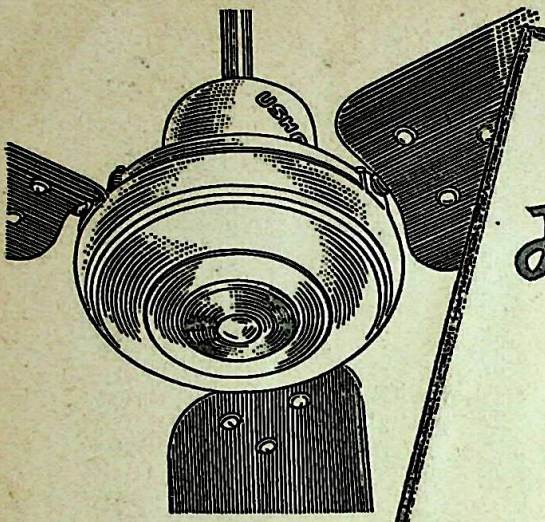

मौके का लाभ उठाइये

अभी खरीदकर पैसा बचाइये

- एसा स्वर्ण सुयोग पहले कभी नहीं आया ।
- १ली सितम्बर से ३१ दिसम्बर १९५९ तक इस सुवर्ण सुयोग से लाभ उठाइये ।
- जितनी जल्दी आप खरीदेंगे किश्त की दर उतनी ही कम होगी

पूरी जानकारी के लिए अपने निकटवर्त्ती उषा के विक्रेता से पूछ-ताछ कीजिए

उषा खरीदिए और निश्चिन्त रहिए

जय इंजीनियरिङ्ग वर्क्स लिमिटेड,

कलकत्ता – ३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सितम्बर

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५९

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

सम्पादक
रतनलाल जोशी
शिल्प
गोपालकृष्ण भोबे

लेख-सूची

१	अंतराल	स्वामी रामतीर्थ	१७
२	प्रायश्चित्त की गंगा	'महाभारत' से	१८
३	विश्वास (कविता)	दिनकर	२०
४	आयुर्वेद : संपूर्ण जीवन-दर्शन	शिव शर्मा	२१
५	विज्ञान	अर्नाल्ड टायनबी	२४
६	मानसवेत्ता कार्ल युंग	... ...	२६
७	प्रेरणा-पुष्प	कार्ल युंग	२७
८	एक दुर्बल किरण	मोहन अनन्य	२८
९	मनुष्य का सिर	विधुशेखर शास्त्री	३२
१०	चीत्कार	योन् नागूची	३३
११	हार्दिकता हम इनसे सीखें	डा० हृषीकेश	३५
१२	मैंने अपना भाग्य-लेख लिखा	जी० एन० व्यास	४०
१३	विभ्रम	तहा हुसेन	४२
१४	चेहरा नया बनवा सकते हैं	वसुबंधु	४६
१५	पंखदान (कविता)	भवानीप्रसाद मिश्र	५१
१६	एक नौजवान : आठ सांड	केप्टैन आबिद पेशावरी	५२
१७	सीख	वल्लतोल	५४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८ सफलता से दूर क्यों भागते हैं? 'नवनीत'-मानसशास्त्र-विभाग ५८
१९ चिनगारी स्वामी विवेकानन्द ५९
२० अग्नि महाकवि हिमनेज ६०
२१ जवानो, आगे बढ़ो ! विनोबाजी ६१
२२ मुस्कान सुख की खान ६२
२३ आग्रह महमूद तैमूर ६३
२४ सही नाम सीख लेना चाहिए आचार्य धर्मेंद्रनाथ ६५
२५ नाम क्षितिमोहन सेन ६८
२६ अपने भी पराये लगते हैं कन्हैयालाल कपूर ७२
२७ अनुभूति अख्तर अंसारी ७४
२८ विषकन्या गौरीशंकर गुप्त ७७
२९ दौड़ कर बनाया गया राज्य राजेश्वर देवकोटा ८०
३० चंद्रयान बन गया है ज्ञानेंद्र ८१
३१ आस्था सुंदरम् ८४
३२ कड़वे-मीठे जीवन-घूँट ८६
३३ उत्पीड़न टी० एस० इलियट ८८
३४ ये जीती-जागती घड़ियाँ डा० एस० के० कल्याणसुंदरम् ९१
३५ कल्पवृक्ष के छोर (मराठी-कहानी) वि० स० खांडेकर ९५
३६ केवल कहानी राजगोपालाचारी ९६
३७ गातो (उर्दू-कहानी) अश्फ़ाक अहमद १०३
३८ कहानी (हिंदी-कहानी) कमल जोशी १२३
३९ अद्वैत जान डोन १२५
४० मीर (जीवन-कथा) सरदार जाफरी १३४
४१ स्वाध्याय-समीक्षा राजहंस १५१

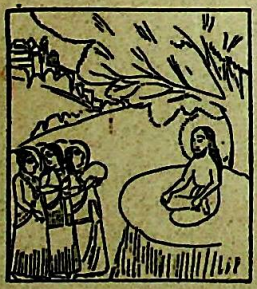

तपोवन

[एक प्राचीन चित्र]

– रेखाचित्र –

नंदलाल बोस, गोगाँ, केथ कालविट्ज़, आर० के० लक्ष्मण, ओके, रामचंद्र शुक्ल, इंद्र शर्मा, सुरेश, मसूरकर

श्री रतनलाल जोशी-द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, १४१ तारदेव, बम्बई-७ के लिए प्रकाशित तथा एसोसियेटेड ऐडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक:
श्रीगोपाल नवटिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष ८ : : अंक ९

सितम्बर, १९५९

अंतराल

गिन नहीं पा रहा हूँ, कौन से जन्म की यह घटना आज अकस्मात् याद आ गयी है—उस दिन हिमालय के सिर से मैं नीचे उतर रहा था। जिसे आजकल गंगोत्री कहते हैं, वहाँ तक जब मैं आया, तो देखा कि, भूमि से सहसा एक स्रोत फूट निकला है और वह नीचे की ओर बहने लगा है। मैं उस जलस्रोत के साथ हो लिया। वह स्रोत नीचे-ही-नीचे बहता गया और मार्ग में कई छोटे-बड़े नदी-नाले उसमें मिलते गये। उस जलस्रोत की यह अद्भुत यात्रा मैं आश्चर्यमुग्ध देखता गया। अन्त में, कई दिनों की यात्रा के बाद, वह जलस्रोत, जो विशाल नदी बन गया था, समुद्र में जाकर समा गया। मैं उसके साथ-साथ समुद्र के अंतराल में भी पहुँचा। क्षणभर तक वह स्रोत मुझे चकित दृष्टि से देखता रहा, फिर बोला—"सब-कुछ देखकर भी लगता है, तुम मेरी इस यात्रा का मर्म नहीं समझ पाये हो!" मेरे स्वीकार करने पर वह आत्मतुष्ट-भाव से कहने लगा-"जानते ही हो हिमालय कितना ऊँचा है; किंतु ऊँचाई चाहे जितनी अमाप हो, वह पूर्णता नहीं है। पूर्णता तो गहराई है, जहाँ सारी कामनाएँ निःशेष हो जाती हैं। मैं हिमालय की, जगत् की इस सबसे महान् ऊँचाई की आत्मा हूँ जो सागर की गहराई में पूर्णता पाने के लिए निकली थी—'गंगा' तो मेरा लोक-प्रदत्त भौगोलिक-भौतिक नाममात्र है।"

—रामतीर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रायश्चित्त की गंगा

प्रायश्चित्त आत्मा की गंगा है, जिसके किनारे जब कभी भी हमारा मन श्रद्धालु तीर्थयात्री की तरह आता है, तो वह पाप-परिताप से मुक्त हो जाता है। प्रस्तुत प्रसंग में महाभारतकार ने प्रायश्चित्त के एक ऐसे ही पवित्रकारी माहात्म्य की पुष्टि की है।

महाभारत में एक प्राचीन आख्यान है। शंख और लिखित दो भाई थ। दोनों बड़े तेजस्वी और व्रतनिष्ठ ब्राह्मण थे। एक नदी के तट पर उन दोनों के फूल-फलयुक्त वृक्षों से सुशोभित सुंदर आश्रम पृथक्-पृथक् बने थे।

एक दिन लिखित अपने भाई शंख के आश्रम में पहुँचे। उस समय शंख कहीं बाहर गये हुए थे। लिखित पेड़ों से पके फल तोड़ कर खाने लगे। इतने में ही शंख लौट आये और उन्होंने पूछा–

"तुमने ये फल कहाँ से पाये भाई ?" लिखित ने हँस कर उत्तर दिया –"आपके ही इस रम्य उपवन से।"

यह सुनते ही शंख की मुखमुद्रा कठोर हो गयी। उन्होंने कहा–

"बिना मेरी अनुमति के तुमने फल क्यों लिये ? यह तो चोरी है। अब तुम राजा के पास जा कर इस चोरी का समुचित दंड प्राप्त करो !"

भाई के ये वचन सुनकर, बेचारे लिखित, राजा सुद्युम्न के पास पहुँचे और सारा वृत्तांत सुनाकर प्रार्थना की–

"हे राजन् ! मैंने बड़े भाई से बिना अनुमति लिये फल खाये हैं। उसका जो कुछ दंड हो, मुझे शीघ्र ही दीजिये।"

राजा सुद्युम्न यह सुनकर चकित रह गया और बोला–

"हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! आपने दंड देने में जैसे राजा को प्रमाण माना है, वैसे ही आज्ञापालन में भी उसे प्रमाण मानिये। अब मैं आपको आज्ञा देता हूँ कि, दंड के अतिरिक्त आप जो चाहें माँगें।"

परन्तु लिखित अपनी बात पर स्थिर रहे और अन्य कुछ माँगने से इन्कार करते रहे। तब विवश हो राजा ने चोरी के दंड में उनके हाथ कटवा दिये।

उसी पीड़ित अवस्था में लिखित अपने भाई शंख के पास पहुँचे और नतमस्तक होकर बोले––

"भैया, दंड पाकर आये हुए अनुज का अपराध अब क्षमा कीजिये।"

भाई को छाती से लगाते हुए शंख बोले – "वत्स ! मैंने तुम पर क्रुद्ध होकर तुम्हें राजा के पास नहीं भेजा था। तुमने अधर्म-युक्त काम किया था, जिसका प्रायश्चित्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवश्यक था। अन्यथा वह अधर्म तुम्हारे समस्त चारित्र्य को ग्रस लेता। राजदंड से उसका यह प्रायश्चित्त हो गया है। अब तुम शीघ्र ही नदी पर जाकर देव-पितरों का तर्पण करो और भविष्य में कभी अधर्म में चित्त न लगाओ।"

अपने भाई की यह दूसरी विचित्र आज्ञा सुन कर शंकित-चित्त लिखित नदी पर गये और जैसे-तैसे स्नान कर बाहर आये। हाथ तो थे नहीं, तर्पण कैसे करते ? इसी सोच-विचार में थे, कि इतने में दोनों हाथ कमल की तरह निकल आये। कहा जाता है कि, इससे उस नदी का नाम 'वाहुदा' अर्थात् वाहु देनेवाली पड़ गया।

परम विक्रम के प्रतीक
गरुड़

तर्पण कर बड़ी प्रसन्नता से वे अपने भाई के पास दौड़े आये। उन्हें देख कर सहर्ष शंख ने कहा– "यह मेरी तपस्या का फल है, तुम इसमें तनिक भी सन्देह मत करो।"

इस पर परम विस्मयान्वित लिखित बोले– "हे तपोधन ! आपने पहले ही मुझे पवित्र क्यों नहीं किया, यदि आप सरीखे ब्राह्मणों के तप का ऐसा ही प्रभाव है ?"

शंख ने उत्तर दिया – "मैं दंड देनेवाला नहीं हूँ, वह तो राजा का कर्त्तव्य है; इसी-लिए मैंने वैसा नहीं किया।"

एक साधारण-सी वात के लिए भ्रातृत्व-ममता भूलकर शंख अपने भाई को कठोर दंड लेने के लिए राजा के पास भेजते हैं; लिखित सहर्ष अपना अपराध स्वीकार करते और क्षमा का वचन मिलने पर भी दंड देने के लिए राजा से अनुरोध करते हैं ; राजा सुद्युम्न को कर्त्तव्यवश कठोर दंड देने में किंचित् भी संकोच नहीं होता। सच्ची नागरिकता का यही मूल आधार है।

दंड एक प्राय-श्चित्त है, जिसे भोग लेने से आत्मशुद्धि होती है। दंड का यह भाव भारतीय नीति-शास्त्र का आधार-भूत विचारतत्त्व है। गौतम, बोधायन आदि धर्मसूत्रों की सारी दंड-विधि का मूल यही महान् विचार है। मनु ने भी लिखा है – "पापी पुरुष राजा द्वारा दंड पाने पर, साधु तथा पुण्यात्माओं की भाँति निष्पाप होकर स्वर्गलोक को जाते हैं।"

शंख ने भी अपने भाई लिखित से यही कहा– "वत्स, तुम धर्म से विचलित हुए थे, दंड से उसका प्रायश्चित्त हो गया।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वास

मुझे विश्वास है, मुझमें रुचिर जो भाव हैं,
वे एक दिन सबमें उदित होंगे।
मुझे विश्वास है, ऊपर जहाँ तक मैं उठा हूं,
वहां तक एक दिन प्रत्येक नर उठकर रहेगा।
मुझे विश्वास है, भू पर
बचेगा अंत में जाकर, सुहावन, श्रेष्ठ, सुंदर ही।
मुझे विश्वास है, प्रति वस्तु की सम्पूर्णता को
कहीं पर रूपरेखा बन चुकी है, चित्र निर्मित हो चुका है।
मगर, इस चित्र में हम आँट नहीं पाते।
अरे, यह आज की है बात, कल सब ठीक होगा।
प्रगति के इस महापथ पर
मनुज आह्वान करता है मनुज का।
अभी यद्यपि अँधेरा-ही-अँधेरा है।
बहुत दिन बाद अब से, स्यात्, वह अमितांशु आयेगा
करेगा जो विभासित विश्व-मुख सारी मनुजता का।
मगर, मैं तो अभी से
आँख में उसकी किरण महसूस करता हूं।

—दिनकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आयुर्वेद संपूर्ण जीवन-दर्शन

कोलम्बो-योजना के अंतर्गत आमंत्रित, श्रीलंका की राष्ट्रीय स्वास्थ्य-संवर्धन-योजना में संलग्न भारतीय आयुर्वेद के निष्णात पंडित शिव शर्मा का एक विद्वत्तापूर्ण प्रबंध

यक्ष-युधिष्ठिर-प्रश्नोत्तरी में अनेक आध्यात्मिक-भौतिक प्रश्नों के बीच यक्ष ने एक बड़ा ही मार्मिक प्रश्न युधिष्ठिर से पूछा था— "हे ज्ञानी पांडुपुत्र, अब मैं तुमसे एक अति गूढ़ प्रश्न पूछता हूँ— मुझे तुम यह बताओ कि, यज्ञों का परम साम क्या है? यज्ञों में समाविष्ट परम यजु क्या है और जो यज्ञों का अवधारण करता है। वह परम पदार्थ क्या है?"

लेखक : शिव शर्मा

ज्ञान-विज्ञान के परम तत्व से परिचित युधिष्ठिर के अकलंक मुख पर एक रहस्य-मधुर मुस्कान बिखर गयी। अपनी सुमार्जित वाणी में वे बोले—"देव, प्राण ही यज्ञों का परम साम है, मन ही यज्ञों का परम यजु है और अन्न ही यज्ञों का अवधारण करने वाला परम पदार्थ है।"

प्रश्नोत्तरी में सुचिंतित प्राण, मन और अन्न की यह समष्टि ही पुरुष है, व्यक्ति है। शतपथादि ब्राह्मणों में इसे काफी विस्तार के साथ स्पष्ट किया गया है। यों, अथर्ववेद के **'तत् प्राणो अभिरक्षति शिरो अन्नमथो मनः'** में तो यह पहले ही प्रतिपादित हो चुका है। कौषीतकी-ब्राह्मण में इसी पुरुष को 'यज्ञ' कहा है— **पुरुषो वै यज्ञः**। इसी 'यज्ञ' को लेकर पिप्पलाद ने प्रतिष्ठित किया है कि, हमारे यज्ञरूपी शरीर में अहोरात्र प्राणाग्नियों का जागरण रहता है। इन अग्नियों में दो मूलाग्नियाँ हैं—प्राण और अपान—जिन्हें यजुर्वेद ने ऐसे 'देव' कहा है, जो स्वप्नरहित प्रहरियों की भाँति सदैव जागते रहते हैं। इस चिरंतन जागरूक प्राणद्वय—प्राण और अपान—को अथर्ववेद में दैवभिषक् अश्विनीकुमार की संज्ञा दी है। इन्हीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अश्विनीकुमारों से वेदकालीन प्रजा शतायु की कामना के साथ प्रार्थना करती है—

संक्रामतं मा जहीतं शरीरं,
प्राणापानौ ते सयुजाविहस्ताम्।

—हे प्रणापान-रूपी अश्विनीकुमारो, तुम इस शरीर को त्याग कर कभी मत जाओ। दोनों संयुक्त सखाओं की भाँति यहीं संचरण करो।

च्यवन-अश्विनीकुमार-प्रसंग में जाकर प्राणापान का यह रूपक और स्पष्ट हो जाता है। जराजीर्ण, अस्थिपंजर च्यवन को जब अश्विनी-कुमारों ने नवयौवन का वरदान दिया, तो प्रतिदान में उन्होंने च्यवन से यज्ञ में सोम-भाग पाने का आग्रह किया। सम्यक् विस्तार के साथ यम-नचिकेता-संवाद की गोप्य प्राणविद्या इस रूपक में एकदम रहस्यमुक्त सहज-सुगम हो गयी है।

उपर्युक्त रूपक का स्पष्टीकरण है कि, प्राणद्वय—प्राण और अपान—यदि सोम का पान करते रहें, तो देह पर जरा का आक्रमण नहीं हो सकता। यज्ञ का सोमपान सरलार्थ में शरीर का ओजरस ही है, जो सहस्रार-मस्तिष्क में अवस्थित रह कर सुषुम्णा के समस्त स्नायु-जाल को निरन्तर सींचता रहता है। इसी ओजरस का दूसरा नाम 'वाज' है। प्राचीन वाजपेय-विद्या यही नवीन ओजरस-उपलब्धि की प्राणविद्या ही है, जो आयुर्वेद में लोकसंग्रह की प्रेरणा से वाजीकरण के रूप में विपुल व्यापक हुई। अपने तात्विक रूप में आयुर्वेद का 'वाजीकरण तंत्र' अनंतकाल से चली आयी, भारतीय प्राणविद्या का ऐसा विज्ञान-संवर्धित भाष्य है कि, उसके सम्मुख कदाचित् ही किसी देश का आयु-संस्कार-शास्त्र खड़ा रह सके। संक्षेप में, वह स्वयं अपने-आप में सुसंग्रथित विज्ञान है।

स्वकर्म

न तो कोई देवता, न गंधर्व, न पिशाच, न राक्षस अथवा न कोई दैवी-अदैवी, भौतिक-अभौतिक कारण ही ऐसे किसी व्यक्ति को रुग्ण कर सकते हैं, जिसने स्वयं अपने चेतन-अवचेतन कर्मों द्वारा रोग का आह्वान न किया हो।

—चरक० नि० ७-२२

अन्य भारतीय ज्ञान-विज्ञान की तरह आयुर्वेद के अवतरण की कथाएँ भी बड़ी अर्थगर्भित है। चरक के अनुसार ब्रह्मा ने दक्ष प्रजापति को, दक्ष ने अश्विनीकुमारों को, अश्विनीकुमारों ने इंद्र को और इंद्र ने भरद्वाज ऋषि को आयुर्वेद का उपदेश दिया। भरद्वाज मूलतः भरण करनेवाली वाज-शक्ति के प्रतीक हैं। देहस्थ ओजरस देह में ही पच कर अमृत बन जाये, यही प्राणों की भरद्वाज-स्थिति है। इसके विपरीत दूसरी च्यवन-स्थिति है, जहाँ ओज के निरंतर क्षय के कारण देह की जीर्णता नितांत अनिवार्य हो जाती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतः यदि आयुर्वेद की उत्पत्ति के रूपक का विश्लेषण किया जाय, तो भरद्वाज स्वयं उस अजर-अमर प्राणशक्ति के प्रतीक हैं, जिसकी महिमा प्रश्नोपनिषद् में गाते महर्षि पिप्पलाद थकते नहीं है और जिसके पुण्यस्मरण में अथर्ववेद के ऋषि ने **'नमस्ते प्राण प्राणते नमो अस्त्वपानते'** के सात्विक भावोद्रेक में अपनी श्रद्धा-गद्गद स्तवांजलि अर्पित की है।

सर्वदर्शनों की स्रोतस्विनी यह सनातन प्राणोपासना, जब आयुर्वेद के घट-शरीर में प्रविष्ट हुई, तो उसने आत्यंतिक लौकिक विस्तार को ही अपना कर्मक्षेत्र चुना—क्षुद्रातिक्षुद्र देह-विन्यास तक में प्रवेश करती हुई आत्मा के उच्चातिउच्च शिखर तक उसकी प्रक्षालन-शक्ति पहुँची। लोक-परलोक की कोई व्याधि उससे अछूती नहीं रही।

ब्रह्मदेश की अश्विनी-शक्ति

आयुर्वेद की फलश्रुति की मीमांसा करते हुए आचार्य चक्रपाणि कहते हैं —**'अनंतो मोक्षः पारमुत्कृष्टं फलं यस्यायुवदस्यासावनंतपारः'**— 'अनंत मोक्ष जिसका चरमोत्कर्ष है, वही है आयुर्वेद।'

जन से जनता तक ही नहीं, प्राणिमात्र तक इस प्राणविद्या का प्रकाश पहुँचा है— अति व्यापक स्तर पर पशु-पक्षियों की चिकित्सा के भी कितन परम्परा-प्रगूढ़ साक्ष्य हमें प्राप्त होते हैं!

"जीवन और अ-जीवन के अगणित प्रवाह व्यक्ति को प्रति पल बनाते-मिटाते रहते हैं।" शापेनहावर के कंठ से निःसृत वेदवाणी का यह सूत्र प्रकारांतर से आयुर्वेद की परिधि का भी प्रतीक है। आयुर्वेद के 'स्वस्थ-वृत्त' एवं 'सद्वृत्त' के अंतर्गत व्यक्ति की समस्त व्याधियों का निराकरण आ गया है। 'स्वस्थ-वृत्त' व्यक्ति का ही नहीं, बृहत् रूप से समाज का भी आरोग्यशास्त्र है। दिनचर्या एवं ऋतुचर्या में विभक्त यह 'स्वस्थ-वृत्त' देश, काल एवं स्थिति की समस्त भौतिक व्याधियों की तह तक गया है। रोग की उत्पत्ति एवं विनाश को लेकर इतना सांगोपांग वैज्ञानिक आरोग्यशास्त्र आज तक अन्यत्र कहीं प्रयोजित नहीं हुआ।

किंतु आयुर्वेद-रूपी प्राणविद्या का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, उसका 'सद्वृत्त' पक्ष, जिसमें वैयक्तिक एवं समष्टीय जीवन-उन्नयन की परिपूर्ण विधि-व्यवस्था है। जिस मानसिक आरोग्यविद्या का विकास आज पश्चिम में हुआ है, वह तो वस्तुतः इस विशाल परिधि का एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिंदु-मात्र ही लगती है।

'सद्वृत्त' के अंतर्गत आनेवाला आरोग्य-शास्त्र व्यक्ति ही नहीं, राष्ट्र के आंतरिक विकारों से उत्पन्न दुःख-परम्परा का भी निवारण करता है और सार्वजनीन सुख-शांति के आधार पर ऐसे सांस्कृतिक उत्कर्ष की प्रतिष्ठा करता है, जहाँ हमारे दैनिक कर्मप्रवाह परम पुरुषार्थ की चरितार्थता प्राप्त करते रहें।

आचार्य पुनर्वसु म हा मा रि यों के कारण-भूत स्रोतों म जल, भूमि, वायु और ऋतुओं के अतिरिक्त अधर्म और असत् कर्म को भी परिगणित करते हैं। वाग्भट ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा है—

सुखार्थाः सर्वभूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः,
सुखं च न विना धर्म्मात्तस्माद्धर्मपरो भवेत्॥

—प्राणिमात्र की समस्त प्रवृत्तियों का एक ही लक्ष्य होता है—सुख...और सुख धर्मपरायणता के बिना संसार में कभी सुलभ नहीं हो सकता।

'चरकसंहिता' में 'रसायन-चर्या' की महिमा भी 'सद्वृत्त' के लक्ष्य की व्याख्या करती है। महर्षि का आश्वासन है कि, रसायन-चर्या के अनुरूप जीवनक्रम को ढालनेवाला व्यक्ति रसायन-औषधों का सेवन न करता हुआ भी, रसायन के समस्त लाभों को प्राप्त कर लेता है। समानांतर स्तर पर चरक की यह रसायन-चर्या गीता के स्थितप्रज्ञ की जीवनचर्या का ही सरल-संक्षिप्त एवं सर्वानुकरणीय रूप प्रतीत होती है।

पंतजलि के 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध :' की भाँति चरक ने भी परम श्रेय की प्राप्ति के निमित्त एक विशिष्ट प्रकार के मनो-निग्रह का विधान किया है, जिसे उन्होंने 'मनःसमाधि' नाम दिया है। मनःसमाधि का माहात्म्य व्यक्त करते हुए एक स्थल पर तो वे जैसे अलंघ्य लक्ष्मण-रेखा ही खींच कर यह घोषित कर देते हैं—

प्रेत्य चेह च यच्छ्रेयः, श्रेयो मोक्षे च यत्परम्।
मनः समाधौ तत्सर्वमायत्तं सर्वदेहिनाम्॥

—इस लोक में, तथा परलोक में ही नहीं, मोक्षावस्था तक में जो श्रेय जीव को उपलब्ध होता है, वह सब मनःसमाधि की ही सिद्धि का प्रतिफल है—चरकसंहिता, चिकित्सास्थान २४-५२।

विज्ञान

आज वह समय आ गया है कि, सत्रहवीं सदी के उन भौतिक एवं यन्त्रिकीय नागपाशों से हम अपने को तत्काल मुक्त कर लें जिन्होंने हमें इस दम्भ और अहंकार से उद्धत कर दिया है कि, पश्चिम जो सोचता-करता है वही वैज्ञानिक है, शेष सब अंध-विश्वास है...स्वयं वैज्ञानिक विश्लेषण की कसौटी पर, यह दृष्टिकोण ही मूलतः वैज्ञानिक नहीं; क्योंकि विज्ञान तो सारे प्रभावों और असहिष्णुताओं से मुक्त सर्वद्रष्टा एवं सर्वग्राही है।

—अर्नाल्ड टायनबी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनःसमाधि की इस सिद्धावस्था का गीता की ब्राह्मी-स्थिति से कितना साम्य है ! दोनों जीव को दुःख-बीज की कर्त्ता-कारण-परम्परा के मुक्त कर 'प्राणो विराट्' के परमानंद का भोक्ता बना देती हैं।

सनातन चिदानंद-स्रोत् की मनोभूमि में आयुर्वेदीय चरम सिद्धियों के इस विवेचन का हमारा अंतिम तात्पर्य यही है कि, आयुर्वेद आधुनिक आयुर्विज्ञान के विपरीत एक समग्र जीवन-प्रणाली है, षड्दर्शनों की भाँति एक सम्पूर्ण जीवन-दर्शन है। हमारे षड्दर्शन अपने मूल अभिधेय में अधिकांशतः वैचारिक हैं; तर्क, बुद्धि एवं संज्ञान के निष्कर्ष की ज्योतिष्मती सिद्धियाँ हैं। अपने विस्तीर्ण क्षितिज में, आयुर्वेद षड्दर्शनों के निचोड़ को अपने में अनुप्राणित करते हुए बृहत्तर लोक-स्तर पर उतरता है और अपने आस-पास भौतिक दुःखांकुरों का उन्मूलन करता हुआ, निरतिशय दुःख के निवारण में लीन हो जाता है।

सारे भारतीय तत्वज्ञान का परम लक्ष्य, इस निरतिशय दुःख की निवृति एवं उसके स्थान पर निरतिशय सुख की प्रतिष्ठा ही है; और इस निरतिशय सुख-स्थिति की सर्वाधिक काम्य निष्पत्ति है मोक्षानुभूति, जिसकी व्याख्या करते हुए छांदोग्योपनिषद् कहता है—**'अशरीरं वा वसन्तं न प्रियाप्रिये स्पृशतः'** अर्थात्, वह मुक्तानुभूति, जहाँ न दुःख का स्पर्श है, न सुख का। बृहदारण्यक में इसका स्वरूप और स्पष्ट होकर **'सर्वात्मैक्य-दृष्टि'** की संज्ञा प्राप्त कर लेता है— यहाँ मुक्तात्मा के लिए सर्वत्र, सब-कुछ आत्मा-ही-आत्मा निःशेष रह जाता है।

चरक ने 'शारीरस्थान' में बड़े विस्तार के साथ इस मोक्षानुभूति का निरूपण किया है। जीव की जन्म-मरण-पर्यन्त दुःखात्मक एषणाओं का मार्मिक विश्लेषण करते हुए, अपनी वैचारिक फलश्रुति में वे कहते हैं—**'प्रवृत्तिर्दुःखं निवृत्तिः सुखमिति यज्ज्ञानमुत्पद्यते तत्सत्यम्।'** इसी अपरोक्षानुभूति को वे 'सूत्रस्थान' में और भी परिसंस्कृत करते हुए, ऋषि-स्फूर्त प्रेरणा के साथ, घोषित करते हैं— **'सुखं समग्रं विज्ञाने विमले च प्रतिष्ठितम्'**, अर्थात्, सारे सुख तत्वतः विमल विज्ञान—कैवल्यानुभव—में ही प्रतिष्ठित हैं।

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयंधीराः पण्डितम्मन्यमानाः।
जंघन्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः॥

—अज्ञान की गहराई में डूबे हुए ज्ञान के चार कण इधर-उधर से बीन कर उसी पर इतराते हुए, अपने को महाप्रज्ञ—महापंडित मानकर डींग हाँकते डोलते फिरते हैं। वे और उनके अनुयायी ऐसे ही विनाश को प्राप्त करते हैं, जैसे अंधे के पीछे चलने वाले अंधे भी गहरे गर्त में जा गिरते हैं। —कठोपनिषद्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मचेता कार्ल युंग

"जीवन की समस्त एषणाएँ कामजन्य हैं।" फ्रायड की इस अति सीमित निष्पत्ति के स्थान पर "जीवन ही एषणा-स्रोत है" सिद्धांत के प्रतिपादन द्वारा मनोविज्ञान को अभिनव व्यक्तित्व प्रदान करनेवाले मनस्वी की परिचय-रेखाएँ

वेदों ने "मनुष्यों के भीतर स्थित अमृत-ज्योति" कह कर जिसकी महिमा गायी है, उस मनस्तत्व के स्वरूप-निरूपण एवं साक्षात्कार की महासाधना करनेवाले पाश्चात्य मनीषियों में कार्ल गुस्टाव युंग का नाम, फ्रायड और एडलर के साथ सादर लिया जाता है।

प्रकृति के शृंगारगृह स्विट्जरलैण्ड में कार्ल युंग २६ जुलाई १८७५ को एक पादरी के यहाँ जन्मे। चिकित्सा-शास्त्र में पारंगत होकर वे ज्युरिख के मानस-चिकित्सालय और ज्युरिख विश्वविद्यालय में नियुक्त हुए। यहीं उनके परीक्षणों ने व्याख्यात्मक मानस-चिकित्सा की नीव डाली।

इसी सिलसिले में युंग की फ्रायड से मित्रता हुई, जो दोनों मनीषियों की सारस्वत-साधना में सहायक बनी। परंतु युंग फ्रायड की तरह, कामभाव को मन की समस्त वृत्तियों का मूल न मान सके; न ही उन्होंने एडलर की भांति सत्तालिप्सा को मूल प्रवृत्ति माना। उनके मत में, मनुष्य में एक सहज धार्मिक-सांस्कृतिक साध भी होती है, जो प्रौढावस्था में विशेष प्रबल हो जाती है। उनकी क्रान्तदर्शी दृष्टि ने यह भी देखा कि, विराट् मनस्तत्व को किसी व्याख्या-विशेष के चौखटे में अँटाया नहीं जा सकता।

युंग ने अमेरिका और अफ्रीका की आदिम जातियों का सूक्ष्म निरीक्षण किया है; नाना जातियों के पुराण पढ़े हैं।

रिचर्ड विल्हेल्म के साथ चीनी धर्म-दर्शन के मंथन का अमृतसार उन्होंने "द' सीक्रेट्स आव द' गोल्डन फ्लावर" में भरा है। जर्मन संस्कृतज्ञ ज़िमर की सहायता से उन्होंने भारतीय योग-वेदांत का जो मर्मज्ञान पाया, उसका प्रभाव उनकी "समष्टिगत अवचेतन", "जातीय स्मृति" एवं "आत्मनिष्ठितता" आदि कल्पनाओं पर स्पष्ट है।

युंग के मत में अभ्युदय की बीजभूत बहिर्मुखता और निःश्रेयस की आधारभूत अन्तर्मुखता के बीच सामंजस्य, धार्मिक-सांस्कृतिक साध की पूर्ति एवं मन को अहंकार तत्व से हटाकर आत्मतत्व में प्रतिष्ठित करने से ही पूर्ण व्यक्तित्व विकास एवं मनो-द्वन्द्वों का उपशम संभव है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरातन प्रभु-पैगम्बरों की भाँति मैं भी आज बाहु उठाकर यह घोषणा करना चाहता हूँ कि, व्यक्ति ही परम श्रेय का बीज है, उसे टुकड़ों में विभाजित मत करो, उसे भूनकर निःसत्व मत बनाओ, उसे मरुस्थल में सड़ने के लिए मत फेंक दो— उसे समझो, उसे अपनाओ, उसे अभय करो; क्योंकि अंतिम त्राण तुम्हें उसका विश्वास ही देगा; नैराश्य के निविड़ अंधकार से वही तुम्हें अपना हाथ बढ़ा कर उबारेगा।

—कार्ल युंग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दुर्बल किरण भी कितना अंधेरा पी गयी

दुर्बल-से-दुबल दीपक की उस किरण के सामने क्या हमारा मस्तक आदर से झुक नहीं जाता है, जो अत्यल्प-प्राणा होकर भी अपने आस-पास के अगाध अंधकार को निपट निगल जाना चाहती है? मानव-अस्थि-पंजर में छिपी ऐसी ही एक क्षीणप्राणा किरण की यह कहानी है, जिसने अपने अंतः-शौर्य से कल्मष-कर्दम के एक पहाड़ को ही उखाड़ फेंका। लेखक हैं श्री मोहन अनन्य।

जापान की राजधानी टोकियो में, मंथर गति से बहनेवाली सुमिडा के तट पर, दया की देवी कन्नोन का भव्य बौद्ध मंदिर है और उसके समीप ही है, दया की देवी के आधुनिक अवतार रैको किटाहारा का निवास स्थान— एक झोंपड़ी! झोंपड़ी में, एक आले में प्रभु ईसा मसीह की माँ कुमारी मरियम की मिट्टी की प्रतिमा रखी है। आले के नीचे दीवार पर कागज का एक टुकड़ा चिपका हुआ है। उस पर जापानी लिपि में छः अक्षर लिख हैं, जिनका अर्थ है – २,५०,००,००० येन, अर्थात् ३॥ लाख रुपये। ये अक्षर कुमारी रैको किटाहारा ने अपने हाथ से लिखे थे, जब वे चींटी-बस्ती के निर्माण के लिए आवश्यक साढ़े तीन लाख रुपये के लिए, प्रभु से निरंतर प्रार्थना किया करती थीं।

करोड़ों-अरबों की रकमों और विशाल योजनाओं के इस युग में, इस छोटी-सी रकम और उस छोटे-से काम का बखान शायद कुछ विचित्र लगेगा। पर एक कुमारी के हृदय के विशुद्ध सेवाभाव की यह कहानी इतनी प्रभावशाली है कि, कौन जाने उससे कब किसको प्रेरणा मिले और नयी रैको किटाहाराएँ जन्म लें!

जैसे कि, सभी बड़े शहरों में निर्धनता-प्रताड़ित गन्दी बस्तियाँ होती हैं, वैसी ही एक बस्ती थी, सुमिडा के तट पर। निधनातिनिर्धन ५०० मानव-प्राणी वहाँ सड़े-गले तख्तों, बारदानों और पुट्ठों के बने घरों में निवास करते थे। वे दिन-भर चींटियों की तरह मेहनत करते, पुराने चीथड़े और कागज के टुकड़े जुटाते और उन्हें मिलों को बेच कर दिन में चार-छः येन कमाते थे। ईमानदार होते हुए भी, उन्हें पुलिस के आतंक और गुंडों के अत्याचार की काली परछाईं में दिन बिताने पड़ते थे। परन्तु आज वे अपने छोटे, सस्ते, साफ-सुथरे मकानों में गर्व से सिर उठाकर रहते हैं। यह सब संभव हुआ कुमारी रैको की अविरत साधना से।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात दस वर्ष पुरानी है। एक संपन्न प्रोफेसर की पुत्री रैको किटाहारा के लिए, अपना जीवन सुख व सम्पन्नता में बिताने के सब साधन समुपस्थित थे; किन्तु उन्होंने एक गंदी बस्ती में नवजीवन का संचार करने के लिए जीवन-दान करना पसंद किया। सुमिडा के तट पर स्थित इस गंदी बस्ती का नाम था 'चींटी-बस्ती'। चींटियों की-सी ईमानदारी और कार्य-तत्परता से उस बस्ती को अनुप्राणित करने के लिए ही, उसका यह अन्वर्थक नाम रखा गया था।

रैको को इस जीवन-यज्ञ के लिए प्रेरित करनेवाले थे, एक पोलिश पादरी भाई जेनो। और इस साधना में उनके सबसे बड़े सहयोगी और समर्थक थे, उपनगर-पति श्री तोरू मत्सुयी। मत्सुयी इस बस्ती के उद्धार के लिए प्रयत्नशील समाजसेवी थे। कौमार्य की देहली पर प्रस्फुटित होती हुई और कीमती किमोनो में सजी हुई नयनाभिराम रैको को पहले दिन बस्ती में देखकर मत्सुयी ने कहा था—"इन कांटों में कहाँ उलझेगी यह सुकुमार कली!"

इस पर रैको ने चारों तरफ नंग-धड़ंग घूमते हुए मैले बच्चों की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया था — "इन नन्हे बालकों की माताएँ जब शहर में चीथड़े चुनने जाती हैं, तब उनकी देख-भाल करने के लिए भी तो कोई चाहिए। यह काम मैं करूँगी।" और उस "करूँगी" के "करने लगी" में परिणत होते देर नहीं लगी। रैको अलस-सुबह पाँच बजे वहाँ आतीं और कभी-कभी तो रात के बारह-एक बज तक अपने घर न लौटतीं।

करुणा के सरित्-प्रवाह में मानव-कल्याण के द्रष्टा जापानी संत
तयोदा

पादरी भाई जेनो और मत्सुयी के साथ रैको ने अपने-आपको चींटी-बस्ती की सेवा में निरत कर दिया। वे बस्ती के बच्चों को नहलाती-धुलातीं, पढ़ाती-लिखातीं, प्रार्थना करना सिखातीं; बस्ती पर पुलिस की कोप-दृष्टि पड़ती, तो उससे उसे बचातीं; जब किसी भले-बुरे मानुस का स्वार्थ बस्ती के हित से टकराता, तो उससे डट कर टक्कर लेतीं।

चींटी-बस्ती के समीप ही एक कुख्यात वेश्या-बस्ती 'योशिवारा' भी थी। उसके एक चकले के मालिक निशि-सान की गृध्र-दृष्टि चींटी-बस्ती पर पड़ी, जो ठीक नदी तट पर थी। निशि-सान चाहता था कि, इन झोपड़ीवालों को भगा कर, उस जगह को हथिया ले और वहाँ अपने धंधे के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ और मकान बना ले। निशि के लिए यह कोई कठिन बात न थी; अफसरों से उसका मेल-जोल था। गरीबों पर चोरी के आरोप लगा कर, उन्हें हैरान करना बड़ा आसान है। निशि-सान ने यही चाल चली। बस्ती के पास ही एक मोटर-मरम्मत का गैराज था। एक रात, वहाँ मोटर की की बैटरियों की चोरी हो गयी। चोरी के इल्जाम में दूसरे ही दिन, बस्ती का एक लड़का पकड़ा गया। रैको रोष और वेदना से उद्वेलित हो उठीं। दोषी एक ईमानदार किशोर था। कुछ ही समय पहले, टोकियो के एक बड़े समाचार-पत्र में चींटी-बस्ती की जो कहानी छपी थी, उसमें इसी किशोर का सचित्र वृत्तांत छपा था—चीथड़े चुननेवाले एक ईमानदार बालक के रूप में। और अब यही बालक चोर!

रैको ने बचाव की तैयारी की। चोरी के माल के रूप में पकड़ी गयी बैटरी को देख कर रैको स्वार्थी निशि और कुटिल पुलिस की करतूत से सिहर उठीं। पर साथ ही प्रसन्न भी हुईं। पुलिस के अधिकारी से उन्होंने एक ही सवाल किया – "क्या यह बालक इस बैटरी को उठा सकता है?" बैटरी इतनी भारी थी कि, उसे उठाने के लिए दो-तीन आदमी आवश्यक थे। बालक छूट गया और चींटी-बस्ती एवं रैको की ख्याति और भी फैल गयी।

रैको अब इन चींटियों के साथ इतनी घुल-मिल गयी थीं कि, रात को अपने पिता के आरामदेह घर में जाकर सोना भी उन्हें भारी लगने लगा। वे स्वयं भी चींटी-बस्ती के एक झोंपड़े की निवासी बन गयीं। प्रोफेसर पिता को इससे आनंद नहीं हुआ। परन्तु पुत्री के दृढ़ निश्चय को देख कर, उसे आशीर्वाद से अभिसिंचित करने के लिए, उन्होंने शिंतो मंदिर में जाकर अपने पूर्वजों को उनकी संतान की इस सत्कृति की सूचना दी।

रैको किटाहारा की नन्ही-सी कुटिया, चींटी-बस्ती का हृदय बन गयी। मत्सुयी के सहयोग से अब रैको अपने सेवा-कार्य को और भी विधिवत् चलाने लगीं। बस्ती की सहायता के लिए उन्होंने एक निधि की स्थापना की, जो उत्तरोत्तर वृद्धि पाती चली गयी। रैको ने चींटी-बस्ती पर एक पुस्तक भी लिखनी शुरू की। काम-काज से बचा समय, वे पुस्तक-लेखन में लगातीं। उन्हें प्रतीत होने लगा कि, मानो जीवन का परम पुरुषार्थ सध गया है, उसमें कहीं कोई कमी नहीं रही है।

पर उधर निशि-सान भी चुप नहीं था। चींटी-बस्ती के निवासियों का पेट भरने का साधन था बाग-बगीचों, सड़कों-चौराहों से चीथड़े चुनना। निशि-सान ने म्युनिसिपैलिटी के कुछ अधिकारियों से साँठ-गाँठ करके चीथड़े बीनने पर प्रतिबंध लगवा दिया; यही नहीं, चींटी-बस्ती की जगह एक बड़ा बाग लगवाने की भी योजना स्वीकार करवा दी।

इन निर्णयों को बदलवाने के लिए मत्सुयी दफ्तरों के धक्के खाते-खाते हैरान-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परेशान हो गये। उन्होंने रैको से निराश होकर कहा—"अब क्या करें ?"

"प्रार्थना।" रैको ने एक ही शब्द में उत्तर दिया। वे दिन-भर सेवा-कार्य के साथ मन में प्रभु से निरंतर प्रार्थना करने लगीं, सहायता के लिए।

फिर एक दिन अचानक म्युनिसिपैलिटी के स्वास्थ्य-विभाग के प्रमुख श्री योसानो, अपने कुछ मित्रों के साथ, चींटी-वस्ती में आये। उन्होंने रैको की पुस्तक पढ़ी थी, जो अब तक प्रकाशित हो चुकी थी और जिसकी आय रैको ने वस्ती की निधि में डाल दी थी। मत्सुयी ने योसानो के समक्ष, उन गरीबों के प्रति म्युनिसिपैलिटी के रवैये की तीव्र आलोचना की। सब सुन कर योसानो को बड़ा अचरज हुआ। उन्हें इन प्रतिवंधों का पता ही नहीं था। वे तो ख्यातिप्राप्त पुस्तक की लेखिका और बेजोड़ जन-सेविका रैको से मिलने, उनका परिचय-लाभ प्राप्त करने आये थे।

योसानो के हस्तक्षेप से कुछ ही समय में, चीथड़े बीनने पर से प्रतिबंध हटा दिया गया। अब रैको व उसके साथियों की सेवा की कीर्ति इतनी फैली कि, नगर-पालिका ने रियायती कीमत म एक बड़ा भूमि-खंड, नयी और आरामदेह चींटी-बस्ती बसाने के लिए प्रदान करने का प्रस्ताव स्वीकार किया।

सारी योजना २॥ करोड़ येन (३॥ लाख रुपये) की बनी। पर बस्ती की निधि में इतना धन कहाँ था ! म्युनिसिपैलिटी से जमीन मुफ्त में देने की प्रार्थना की गयी, जो स्वीकृत न हुई। अधिकारियों का तर्क था कि, किस-किसको मुफ्त जमीन दें। इस पर रैको ने फिर प्रार्थना का सहारा लिया। अपनी कुटिया में अपनी आराध्य देवी मरियम की प्रतिमा के आगे, उन्होंने वे छह जापानी अक्षर लिख कर लगा दिये, जिनका उल्लेख प्रारंभ में किया गया है। मत्सुयी दौड़-धूप करते और रैको प्रार्थना करतीं, सो भी अपनी शय्या में पड़े-पड़े। दिन-रात के सेवा-कार्य ने उसके शरीर का सारा प्राण-बल सोख लिया था। सुख-संपदा की गोद में पली रैको तपःकृश हो चुकी थीं।

थोड़ा-थोड़ा करके धन एकत्र होता गया। म्युनिसिपैलिटी ने भी जमीन के दाम सालाना किश्तों में अदा करने की छूट दे दी। नयी बस्ती एक-एक ईंट करके बसती चली गयी। पर रैको एक-एक श्वास के साथ शरीर-बंधन से दूर होती चली गयीं। नयी बस्ती के बीच, उनकी वही जीर्ण-शीर्ण कुटिया बनी रही। बस्ती पुराना शरीर छोड़ने लगी, तो रैको ने भी अपना चोला छोड़ने की तैयारी कर ली।

मत्सुयी जो किसी समय परम नास्तिक थे, आज पूर्णतः ध्यानस्थ होकर उस कुटिया में, उन छह अक्षरों के सम्मुख नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं। उन्हें याद है कि, २,५०,००,००० येन की रकम एकत्र होने के दो दिन बाद, किस सुख के साथ रैको ने शरीर छोड़ा था !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य का सिर दस लाख वर्ष पूर्व ऐसा था

आज मनुष्य अपने पूर्वजों का गवेषण करने बाहर निकल पड़ा है, सहस्रों वर्षों के अतीत में वह अपनी जिज्ञासा की मोमबत्ती लेकर प्रवेश कर रहा है— शायद, इसीलिए वह अपने स्वयं के साक्षात्कार को भुला बैठा है! प्रस्तुत लेख एक ऐसे ही गवेषण की सूचना देता है।

आधुनिक मानव की उत्पत्ति के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्त्व रखने-वाली एक घटना गत वर्ष हुई। वह थी, दक्षिण चीन में स्थित क्वांग्सी में, आधुनिक पूर्व-एशियाई मानव के प्राचीनतम पथराये हुए अवशेषों की खोज।

पिछले वर्ष सितम्बर के मध्य में, शिन-शिंग फार्म के कुछ मजदूर क्वांग्सी चुआंग प्रदेश की ल्यूचांग काउँटी की तुंगतिएनयेन गफा में फास्फोरस खाद के लिए खुदाई कर रहे थे। वहाँ उन्हें एक पथराई हुई मानव-खोपड़ी तथा कंकाल का एक भाग प्राप्त हुए। उन्होंने फौरन स्थानीय अधि-कारियों को इसकी सूचना दी और कुछ ही समय के अन्दर पुराजीव-विज्ञान संस्थान के विज्ञानवेत्ता उस स्थान पर सर्वेक्षण के लिए पहुँच गये।

तुंगतिएनयेन गुफा लिउचाऊ से लगभग १६ किलोमीटर दक्षिण-पूर्व, एक पहाड़ी में है। पहाड़ी लिउचाऊ-शिलुंग राजमार्ग के पश्चिम की ओर पड़ती है। ये पथरायी हुई मानव अस्थियाँ गुफा के मुँह पर उस स्थान के निकट मिलीं, जहाँ पहले एक भीमकाय पाण्डा (आइलरोपोडा) का सम्पूर्ण कंकाल पाया गया था। खोपड़ी अनजमे पत्थरों की राशि में दबी हुई थी। भूगर्भ-विज्ञान के अनुसार हिसाब लगाया गया है कि, यह खोपड़ी उत्तर-प्रातिनूतन युग की होगी। गुफा में कोई भी मानव-निर्मित वस्तु नहीं मिली।

खोपड़ी लगभग पूरी है। केवल उसमें दोनों ओर की कनपटी की अस्थियों के चापों के कुछ हिस्से नहीं हैं। निचला जबड़ा भी लापता है। यहाँ जो अक्षीय-कंकाल मिला है, उसमें निचली चार उरः-कशेरुकाएँ हैं, पाँचों कटि-कशेरुकाएँ हैं; जिनके साथ विभिन्न लम्बाइयों के, पसलियों के पाँच खंड जुड़े हुए हैं; और त्रिकास्थि भी है। ये सब अस्थियाँ कुछ भूरे सफेद रंग की हैं और इनका साधारण फॉसिलीकरण हुआ है। उपांग कंकाल में दायें कूल्हे की एक हड्डी है, जो काफी सुरक्षित दशा में है। उसमें सिर्फ नितंब का पूर्वभाग नहीं है। यह भी कुछ भरे सफेद रंग की है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसमें दायीं और बायीं जंघास्थियों के दो टुकड़े भी हैं, जो उस इलाके में पायी गयी अन्य पथरायी हुई मानव-अस्थियों से, अधिक काले हैं।

खोपड़ी मध्यम आकार की है। ऊपर की ओर से देखने में वह अंडाकार दीखती है। वह १८९.३ मिलीमीटर लम्बी और १४२.२ मिलीमीटर चौड़ी है। कर्परांक (७५.१ मिलीमीटर) मध्यकापालिक है। बैसियन ब्रेग्मा औसत ऊँचाई (१३४.८ मिलीमीटर) की है। भ्रू-कूट काफी बड़े और माथा कुछ पीछे को हटता हुआ है। भ्रू-मध्य भाग मोटा है। आगे के एवं पार्श्व के प्रार्बुद उभरे हुए नहीं हैं। मांस-पेशीय कूट क्षीण हैं। कान के पीछे के गंडास्थि-भाग विशाल हैं; पर उनके उभार छोटे हैं। सभी मुख्य जोड़ साधारणतः बन्द हैं। दाँत काफी घिसे हुए हैं। कुल मिला कर, यह लगभग ४० वर्ष की आयु के किसी पुरुष की खोपड़ी ज्ञात होती है।

इसके साथ जो कंकाल मिला है, उसकी कशेरुकाएँ अपेक्षाकृत छोटी हैं, त्रिकास्थि औसत चौड़ाई की है। कूल्हे की हड्डी भी छोटी और चिकनी है और जंघास्थि के खंड पतले हैं।

क्योंकि अक्षीय कंकाल और कूल्हे की हड्डी, खोपड़ी के साथ ही मिली है और सबकी रंगत तथा फॉसिलीकरण की अवस्था बिलकुल एक-सी है, इसलिए यह माना जा सकता है कि, ये सब एक ही व्यक्ति की हड्डियाँ हो सकती हैं।

ल्यूचांग-खोपड़ी के इस वर्णन के बाद; यह देख कर आश्चर्य हो सकता है कि, मेरुदण्ड उसके अनुरूप ही पुष्ट क्यों नहीं है। पर इस सम्बंध में यह बात याद रखनी चाहिए कि, दक्षिण अफ्रीका के रोडेशियन-मानव की भी खोपड़ी बड़ी थी और उसकी भी त्रिकास्थि अपेक्षाकृत छोटी थी।

ल्यूचांग-मानव का चेहरा चौड़ा और छोटा है और, उसके अनुरूप ही, अक्षिकूप चौड़े और नीचे हैं। यह बात उल्लेखनीय है कि, दुनिया के अनेक भागों में मिले अधिकतर पुराप्रस्तरयुगी नमूनों में—जैसे कि आस्ट्रेलिया की केलर खोपड़ी, जावा

चीत्कार

मृत्यु की आँख मुँदते ही जन्म ने आँख खोली और आश्चर्य से अपने चारों ओर देखा—कितने रूप? कितने रंग? कड़वी-मीठी कितनी ध्वनियाँ? एक साथ ही कितनी गति-अनुगतियाँ उसके मानस पर बरस पड़ी कि, वह चीत्कार कर उठा—"नहीं, नहीं! मुझे नहीं चाहिए वह जागृति... प्रसुप्ति अच्छी...मृत्यु अच्छी!" हर जन्म की यही अनुभूति, यही कामना होती है, जो मोह के छद्मवेष में हमारी सहचरी बनकर हमें तिल-तिल खाती रहती है।— योन् नागूची

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की वादाजक खोपड़ियों, योरप की क्रोमैग्नन खोपड़ियों, अफ्रीका की एसेलर खोपड़ी और चाऊकाउतिएन की ऊपरली गुफा की खोपड़ियों में—चेहरा चौड़ा और नीचा होता है और उसके अनुरूप ही अक्षि-कूप भी नीचे और चौड़े होते हैं। नीएँडर्थल-मानव के चेहरे आम तौर से ऊँचे होते हैं और अक्षि-कूप भी तदनुरूप ही रहते हैं। परंतु वीडेनरीख की प्लास्टर की नकलों के अनुसार, जावा-मानव (पिथेकैंथ्रोपस) और पेकिंग-मानव (सिनेमथ्रोपस), इन दोनों ही के चेहरे छोटे और अक्षि-कूप, भी उक्त खोपड़ियों की तरह अत्यंत नीचे थे।

कुल मिलाकर ल्यूचांग खोपड़ी में मंगोलायड जाति से स्पष्ट समानता मिलती है, यद्यपि उसके साथ अनेक आदिमजातीय विशेषताएँ भी जुड़ी हैं। गाल की हड्डियाँ काफी बड़ी और उभरी हुई हैं। नाक की हड्डियाँ चपटी और चौड़ी हैं। नासा-सेतु तनिक अवतल है और नाक की जड़ में गढ़ा नहीं है। नासाछिद्र के निचले किनारे पैने नहीं, बल्कि झिरीदार हैं। पूर्वनासा-खात गहरी नहीं है। जबड़े के दंत-गह्वरों का उभार साधारण है। ऊपर के कर्तनक (कुतरने-वाले) दाँत फावड़े की शक्ल के हैं। और ये सभी मंगोलायड मानव की निश्चित विशेषताएँ हैं।

आज के मानव की अपेक्षा ल्यूचांग मानव की जंघास्थि की दीवार कहीं ज्यादा मोटी और मध्यप्रणाली अधिक तंग है। वह नीएँडर्थल मानव की अवस्था से मिलती-जुलती है।

रचना और आकार की विशेषताओं की दृष्टि से विचार करने पर, ल्यूचांग खोपड़ी होमो-सेपियन्स के प्रारम्भिक रूप की प्रतिनिधि हैं, जो चाऊकाउतिएन की ऊपरली गुफा के निवासियों और स्च्वान के त्जेयांग मानव से अधिक आदिम है। अतः ल्यूचांग-मानव न केवल चीन में, बल्कि समस्त पूर्वी एशिया में भी आधुनिक मानव का अब तक मिला सबसे प्राचीन और मूल्यवान् फॉसिल है।

उपर्युक्त विश्लेषण से हम इस अनिवार्य निष्कर्ष पर भी पहुंचते हैं कि, ल्यूचांग-मानव, विकसमान मंगोलायड् के प्रारम्भिक प्रकार के होमो-सेपियन्स का एक अति प्राचीन और आदिम रूप था।

यों दक्षिण चीन के क्वांगसी प्रदेश में मिली, यह आदिम मंगोलायड विशेषताओं से युक्त ल्यूचांग खोपड़ी, और १९५१ में दक्षिण पश्चिम स्च्वान प्रान्त में मिली, त्जेयांग खोपड़ी, इस बात का संकेत करती हैं कि, दक्षिण-चीन उस क्षेत्र का एक भाग रहा होगा, जहाँ मंगोलायड् जाति की उत्पत्ति हुई। इससे यह भी पता चलता है कि, मंगोलायड जाति के बनने और विलगी-करण की प्रक्रिया, उत्तरप्रातिनूतन युग में उनकी सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं के कारण आरम्भ हो चुकी थी।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हार्दिकता हम इनसे सीखें

धरती के रंध्र-रंध्र में जैसे जल का अभिसिंचन है, वैसे पिंड से ब्रह्मांड तक के सारे जीव-विस्तार में प्रेम-प्रीति की आर्द्रता समायी हुई है...और मिथ्या इने कौन कहेगा, जब हर नहाने वाले को वह प्रचुर मिली है। सृष्टि के इस महत्त्व को हम और न भूल जायें, इसी उद्देश्य से हम डा० हृषीकेश द्वारा प्रयोजित वैज्ञानिकों की एक अति मूल्यवान खोज यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

☆

जैसे कई प्रकृति-भक्तों की यह धारणा है कि, पशु-पक्षी कभी आवश्यकता से अधिक आहार नहीं पेट में भरते, वैसे ही बहुत लोगों को यह भ्रम है कि, भावनाओं की तीव्र उथल-पुथल के कारण होने वाला मनोविक्षेप, केवल मानव की बपौती है और पशु-पक्षी उससे सर्वथा मुक्त हैं। इस गलत धारणा की उत्पत्ति के दो स्रोत है। एक तो पशु-पक्षियों के लिए किसी ने पागलखाने या मानसोपचार-गृह नहीं बनवाये हैं। दूसरे, विक्षिप्त होते ही पशु-पक्षियों को प्रायः परलोक पहुँचा दिया जाता है।

परन्तु नये निरीक्षणों और प्रयोगों से इस विषय में अनेक रोचक तथ्य प्रकाश में आये हैं।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की प्राणि-शास्त्र-प्रयोगशाला का एक तरुण बंदर 'क्युपिड', उसी प्रयोगशाला में रहनेवाली 'साइके' नामक वानर-सुन्दरी पर अनुरक्त था। तीन वर्ष तक दोनों ने सुखमय दांपत्य का उपभोग किया। इसके बाद 'साइके' को हटा कर 'टाप्सी' नाम की एक और वानर-तरुणी 'क्युपिड' के पास छोड़ी गयी। वह उसके साथ भी संतोषपूर्वक पूर्ववत् रहने लगा।

परन्तु एक दिन 'क्युपिड' को उसकी पुरानी प्रेयसी 'साइके' दिखायी गयी। 'क्युपिड' मानो सोते से जाग पड़ा। वह अनिश्चय की दृष्टि से कभी 'साइके' को देखता, कभी 'टाप्सी' को। और अन्त में उसके अन्तर्द्वन्द्व का आवेग असह्य हो उठा, तो विक्षिप्त होकर अपने आपको नोचने-काटने लगा। अपनी टाँगों में उसने कई-कई इंच लम्बे घाव कर लिये। यदि बीच में ही प्रयोगशाला के अधिकारी उसे शिकंजे में बाँधकर मरहम-पट्टी न करवा देते, तो 'क्युपिड' के जीवन का अन्त निकट ही था। और यह अन्त किसी भी मानवीय प्रेम-कथा के नायक की मृत्यु से कम करुण न होता।

मरहम-पट्टी के बाद 'साइके' को 'क्युपिड' के पास छोड़ दिया गया और उसने भी पत्नी-सहज प्रेम से उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपचार एवं शुश्रूषा करके उसे स्वस्थ बना दिया; फिर भी 'क्युपिड' की मनः-स्थिति पूरी तरह पूर्ववत् होने में लगभग अठारह महीने लग गये।

जैसे घोर एकान्त मनुष्य को विचलित कर देता है, उसी तरह दूसरे समूह-जीवी प्राणियों पर भी उसका बुरा मानसिक प्रभाव पड़ता है। उससे उनमें कई अस्वाभाविक प्रवृत्तियाँ पैदा हो जाती हैं। एक प्रयोगकर्ता ने सात नवजात मुर्गी के बच्चों को अलग-अलग करके इस प्रकार रख दिया कि, वे न केवल एक-दूसरे को न देख सकें, अपितु उन्हें दाना-पानी देनेवाला मनुष्य भी उनकी नज़र में न आये।

शीघ्र ही देखा गया कि, ये एकान्त-वासी चूज़े, स्वाभाविक अवस्था में रहनेवाले मुर्गी के बच्चों से अधिक शोर मचाने लगे। पहले हफ्ते वे अत्यधिक चंचल हो गये। वे मक्खियों के पीछे दौड़ते, नाहक अपने दाने की तश्तरियों में चंचुपात करते, चारों ओर दाने बिखरा देते। एक चूज़ा तो घड़ी के पेण्डुलम की तरह झूमने लगा। और जब इन्हें दूसरे चूज़ों के साथ छोड़ा गया, तो वे एकदम भयभीत होकर चीखने और पंख फड़फड़ाने लगे; भागने की कोशिश में एक-दूसरे पर लड़खड़ा कर गिरने-पड़ने लगे।

इसी तरह एक तोते को भी एकान्त में पाला गया था। उसने गट्टापारचे की एक नीली-सफेद गेंद को अपना हम-जोली बना लिया था। गेंद को वह चोंच-से सहलाता, पंखों से पोंछ कर पुचकारता—मानो वह भी कोई तोता हो। गेंद की बगल में बैठने पर ही उसे नींद आती। जब-तब वह गेंद के सामने अपनी गर्दन इस प्रकार झुकाता कि, मानो उसे आशा हो कि, गेंद उसकी गर्दन को सहलायेगी। एक तोता दूसरे तोते के साथ जो भी सहज स्नेह प्रकट कर सकता है, यह गट्टापारचे का गोला, उस सबका पात्र बन गया था।

एक रोचक बात यह थी कि, तोता गेंद

ममता

एक बार मेरे गाँव के एक गड़रिये का चार-वर्षीय बच्चा जंगल में खो गया। बहुत खोजा; मगर कहीं नामोनिशान तक न मिला। एक दिन मैं जंगल में सूअर की तलाश में बैठा था, कि मैंने बंदर के एक झुंड को घास में बैठे और विलाप करते देखा। उत्सुकतावश मैं वहाँ पहुँचा। देखा कि, दो बंदरों की गोद में वह बच्चा सोया पड़ा है और सभी बंदरों की आँखें आँसुओं से गीली हैं। मैंने उस बच्चे को हाथों में उठाया। उसे जोरों का बुखार था। जब मैं उसे गाँव की ओर लेकर चला, तो बंदरों का काफ़ला काफ़ी दूर तक मेरे पीछे-पीछे चिंतातुर आया! —मर्दान अली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को सदा अपने सिर के बराबर ऊँचा रखने की चेष्टा करता था। यदि वह जरा भी नीची हो जाती, तो तोता परेशान हो उठता था। जब कभी गेंद पिंजड़े की ज़मीन पर गिर पड़ती, तोता बिलकुल चुप होकर एक कोने में जा बैठता, जैसा कि तोते अपने पिंजड़े के निवासी किसी साथी के मर जाने पर प्रायः करते हैं।

ब्रावस-पशुशाला के अध्यक्ष ली क्रैण्डल ने ईगल बीक नाम का एक कबूतर पाल रखा था, जो जन्म से ही विक्षिप्त था—न तो उसका दिमाग ठीक से विकसित हुआ था और न शरीर। वैसे तो वह कबूतरबाजों-द्वारा उपयोग किया जाने वाला ऊँची नस्ल का उड़ाकू कबूतर था; परन्तु उसे कभी यह न सूझता था कि, किस ओर उड़े। डैने बिलकुल दुरुस्त होने पर भी, जब कभी उसे उड़ाया जाता, वह धप-से धरती पर आ बैठता था। खाना सामने रख दिया तो वह खा लेता था; नहीं रखा, तो दिन भर भूखा ही बैठा रहता था; खाना खोजने की कोशिश कभी नहीं करता था। जीवन-भर किसी भी कबूतरी ने उस पर प्रेम नहीं बरसाया। वैसे साल में एक-आध बार वह किसी कबूतर-कन्या से प्रणय-निवेदन भी करता था; पर वह भी बिलकुल गलत ढंग से। और, जैसा कि स्वाभाविक ही है, वह सदा असफल होता था।

मस्तिष्क और स्नायु-संस्थान की चोटें और अव्यवस्थाएँ सभी पशु-पक्षियों में पायी गयी हैं। एक मरी हुई चींटी के शव की चीर-फाड़ करने पर देखा गया कि, वह मस्तिष्क म व्रण-ग्रंथि (ट्यूमर) हो जाने से मरी थी। मिर्गी की शिकायत तो घरों और चिड़ियाघरों में पाले गये अनेक पशु-पक्षियों में देखी गयी है।

जीव-दया की प्रणम्य अन्वेषिका डा० हेमर बर्किन कहती हैं—उन्हें हिंस्र पशु भी मातृवत् प्यार करते थे!

सहज कामवासना की परितृप्ति न होने से, मनुष्यों की तरह पशुओं में भी मनोविकृतियाँ पैदा हो जाती हैं। नरपक्षियों को गोभी के फूल और शराब के प्याले के सामने प्रणय-निवेदन करते पाया गया है। एक सुनहरी टिटहरी ने तो एक पेड़ के तने के समक्ष पूरे पन्द्रह दिन तक प्रणय-प्रदर्शन किया। मनुष्यों की तरह ही पशु-पक्षियों में भी अनेक रतिभाव से सर्वथा भिन्न भावनाओं की भी परि-समाप्ति काम-क्रीड़ा में होती है। चिड़िया-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घर में अपने पास के कटघरे में बंद भालू की हरकतों अथवा दर्शकों की शरारतों से खीजे हुए बंदी वनराज का, अपनी जीवन-संगिनी की गर्दन चाटने लग जाना कोई विरला दृश्य नहीं ह।

इसी प्रकार अपनी सहज कामभावना की तृप्ति का मार्ग कुंठित पाकर पशु-पक्षी आवेश के दास हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में, जो भी सामने आ जाये, वे उसी पर अपना गुस्सा उतार देते हैं। कई बार क्रुद्ध होने के बजाय वे आत्मप्रदर्शन करने लगते हैं।

"खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे" यह कहावत, पशु-स्वभाव के एक सत्य को प्रकट करती है। एक चिड़िया-घर में देखा गया कि, एक चिंपैंज़ी जब दर्शकों की छेड़-छाड़ के कारण क्रोध से आपे के बाहर हो जाता था, तब खंभे पर चढ़ कर, अपना सिर उस पर दे-दे मारता था। निराश होने पर, चूहे अपने ही नाखून कुतर डालते हैं। प्रसिद्ध जीवशास्त्री पोर्टील्ज ने एक खिसियाये हुए भेड़िये को अपने ही पंजे के साथ लड़ते और उसे नोच डालते देखा है।

जैसे बच्चे असंतुष्ट होने पर अंगूठा चूसने लगते हैं, उसी तरह चिंपैंज़ी बन्दर भी अंगूठा चूसते हैं। भालू के बच्चे भी पैर का अंगूठा चूसते पाये गये हैं। और सबसे आश्चर्य की बात यह है कि, जैसे सांसारिक समस्याओं का समाधान पाने के लिए हम दौड़ कर अपने माता-पिता के पास चले जाते हैं, उसी तरह तरुण चिड़ियाँ जब अपने प्रेमजीवन में कोई विफलता या विघ्न देखती हैं, तो अपनी माँ के पास आकर रहने लगती हैं।

पशु-मनोविज्ञान का विधिवत् वैज्ञानिक अध्ययन करने की परिपाटी आरंभ करने का श्रेय रूस के विख्यात मानसशास्त्री पावलोव को है। उन्होंने कुत्तों पर अनेक महत्त्वपूर्ण परीक्षण किये। एक बार जब लेनिनग्राड में तीव्र बाढ़ आयी, तो इन कुत्तों में उसकी बड़ी अप्रत्याशित प्रतिक्रियाएँ देखी गयीं। कुत्तों के घर पानी में डूब गये थे। उन्हें बाढ़ के पानी में तैरा कर आधे मील दूर पर प्रयोगशाला में ले जाया गया। रास्ते में खूब बादल गरजे, बिजली चमकी, और पेड़ उखड़-उखड़ कर गिरे। अंत में जब कुत्ते प्रयोगशाला में पहुँचे, तो वहा एक-दूसरे से सटकर बैठ गये। उन्होंने एक-दूसरे से लड़ना बिलकुल बंद कर दिया। वर्षों के परिश्रम से पावलोव ने उसमें जिन अभ्यास-जनित सहज प्रतिक्रियाओं (कण्डिशण्ड रिफ्लेक्स) का विकास किया था, उन्हें वे साफ भूल गये। उन्हें पहले की मनःस्थिति में लाने के लिए पावलोव को पूरे दो महीने मेहनत करनी पड़ी। और इसके बाद भी, जब एक दिन एक कुत्ते को दरवाज़े के नीचे से बह कर आता हुआ पानी दिखाया गया, तो वह फिर विक्षुब्ध और भयातुर हो उठा।

मानसिक आघात के और भी विचित्र परिणाम प्राणियों में देखे गये हैं। एक मुर्गी एक कमरे में दाना चुग रही थी कि, उसके बिलकुल सामने एक खरगोश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाकर रख दिया गया। बेचारी घबरा कर पंख फड़फड़ाने लगी। खरगोश को तुरंत हटा लिया गया और मुर्गी शांत हो गयी। परन्तु उस दिन के बाद, उस मुर्गी ने उस कमरे में दाना चुगना बंद कर दिया।

मातृत्व की भावना पशुओं में ज्यादा प्रबल है या मनुष्यों में, यह कहना कठिन है। जब कोई पशु या पक्षी अपने मातृत्व के कर्तव्य नहीं पूरे कर पाता, उसमें मनोविक्षोभ और स्नायविक अव्यवस्था पैदा हो जाती है, जैसे कि मनुष्यों में होती है। एक मुर्गी को पालने-पोसने के लिए चार सौ चूज़े दे दिये गये। बेचारी सबको अपना बच्चा समझ कर, सबकी परवरिश करने की कोशिश करने लगी। पर ऐसा करना असंभव था। एक माँ और चार सौ नटखट नन्हे बच्चे! बेचारी माँ किस-किस की फिक्र करे। शुरू में वह अत्यंत उत्तेजित रहने लगी; फिर उसमें एक प्रकार की शिथिलता ने प्रवेश किया और अन्त में उसने चूज़ों की देखभाल करना बिलकुल ही छोड़ दिया।

पराजय, असफलता आदि का पशु-पक्षियों के मन पर भी स्थायी और अहितकर प्रभाव पड़ सकता है। न्यू यार्क के पक्षी-गृहों में देखा गया है कि, पक्षियों में भी हीनता-ग्रंथि (इन्फीरियारिटी कम्प्लेक्स) विकसित हो जाती है। लड़ाई में हारे अथवा प्रणय-स्पर्द्धा में पराजित हुए, नर-पक्षी का आत्मविश्वास कुंठित हो जाता है और उसके व्यक्तित्व का बिलकुल ह्रास एवं विघटन होने लगता है। ऐसी अवस्था में उसे पुरुष-हार्मोनों का सेवन कराने का परिणाम हितकारी हुआ है।

प्राणियों पर भी संगति और शिक्षा का अच्छा-बुरा असर पड़ता है। "बास" नाम की काली मछली घास और पौधों से भरे छिछले पानी में रहती है। वह अत्यंत अलग-अलग और लुक-छिपकर रहने वाली जीव है। ज्यों ही कोई छोटी मछली दीखती है, "बास" अपनी माँद में से निकलकर उसे हड़प जाती है। परन्तु घास-फूस और दूसरे छिपने के स्थानों से रहित पानी में पालने पर काली "बास" मछलियाँ अपना एकान्त-प्रिय स्वभाव छोड़ कर समूह-जीवी और बड़ी प्रेमल बन जाती हैं और छोटी मछलियों को निगलना बिलकुल बंद कर देती हैं।

★

नन्हा रामू जब आपरेशन के बाद ठीक होकर घर लौटा, उसने अपनी अम्मा को बताया—"अस्पताल में मुझे देखने भगवान् आये थे। अम्मा! आपरेशन के अगले दिन सवेरे नर्स ने मेरे माथे पर हाथ रखा और कहा, 'हे भगवान् इसे तो जोर का बुखार है।' इस पर भगवान् आये और उन्होंने नर्स से अंग्रेजी में कुछ कहा। भगवान् ने घुटने तक लम्बा सफेद कोट पहन रखा था।"

—व्यंग्य-मंजूषा' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस रात को मैंने अपना भाग्य-लेख लिखा

सप्त समुद्र-प्रसारित साम्राज्य को अढ़ाई इंच हृदय-भूमि के सामने तुच्छ चरितार्थ करनेवाले ड्यूक आव् विंडसर की जीवन-कथा का एक मर्मस्पर्शी पृष्ठ— प्रयोजक जी० एन० व्यास

आज जब यह कथा कहने के लिए मैं अपने अतीत पर दृष्टिपात करता हूँ और उन द्रुतगामी घटनाओं का सिंहावलोकन करता हूँ, जिन्होंने मेरे राज्य-शासन का असमय में ही अंत कर दिया, तो दो बातें मेरे स्मृतिपटल पर तीव्रता से उभर आती हैं। एक तो घटना-प्रवाह का विक्षिप्त वेग और दूसरा, कोमल-कलित भावनाओं का दुर्दान्त दमन। वह समस्त नाटक, विश्व की दृष्टि में एक भीषण दुःस्वप्न था, जो अचानक आरम्भ होकर दस ही दिन की अवधि में अकस्मात् पटाक्षेप पर पहुँच गया।

ड्यूक आ_ विंडसर

४ दिसम्बर को जब मैं अपने किले में पहुँचा, तो ऐसा प्रतीत हुआ कि, वह किसी संग्राम के प्रधान सेनापति का शिविर है—वैसा ही टेलीफोन का अवनरत क्रंदन तथा मोटर-साइकिल-सवार दूतों का शोर। पहले जहाँ सब लोग मेरे विरोधी थे, अब वे मेरी दृढ़ता देख कर उत्सुक थे। मुझे अनेक लोगों से सहानुभूति, शिक्षा और सलाह से भरे पत्र मिल रहे थे। साम्राज्य के कोने-कोने से अत्यंत हृदय-स्पर्शी संदेश तथा पत्र आ रहे थे। एक पत्र में एक आइरिश सामंत ने अपनी तलवार को मेरे चरणों पर अर्पित करने की आज्ञा माँगी थी। वे मेरे लिए तन, मन और धन न्यौछावर करने के इच्छुक थे। मुझे यह भी सूचना मिल चुकी थी कि, घटनाओं के इस रुख से कुछ मंत्री भयभीत हो गये थे। परन्तु मैं सहनशीलता की अंतिम सीमा तक पहुँच चुका था। बाल्डविन के लोक-सभा के वक्तव्य से मेरी आशाएँ धूल में मिल गयी थीं; मेरी अब तक की सारी देशसेवा पर पानी फिर गया था। मेरे समर्थकों का यह कथन सत्य हो सकता है कि, जनमत मेरे पक्ष में था तथा मैं इशारे-भर से उसे अपने पक्ष में खड़ा कर सकता था। परन्तु जब मंत्री-मंडल ने रेडियो के द्वारा अपना पक्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनता के सम्मुख रखन की मेरी माँग को ठुकरा दिया, तो मैं उनके विपक्ष में किस मार्ग से बोल सकता था ?

चर्चिल के प्रस्थान के बाद, आधी रात के निबिड अंधकार में, मैंने समस्या के विभिन्न अंगों को अपनी मानसिक तुला पर तौलना आरम्भ किया।

× × ×

मुझे अच्छी तरह याद है वह दिन, जब वैलेस से मेरा प्रथम साक्षात्कार हुआ था। सन् १९३१ की शीत-ऋतु की एक संध्या। मैं अपने एक मित्र के घर पर आमंत्रित था। वहाँ आये अनेक अतिथियों में सिम्पसन-दम्पति भी थे। मैंने उनसे बात-चीत छेड़ने के लिए, साधारण औपचारिक प्रश्न किया—

"हमारे ब्रिटिश मकान तो आपको शायद पसंद नहीं आते होंगे। अमेरिका की तरह बिजली से गर्म रखने की व्यवस्था हमारे यहाँ नहीं है।" मिसेज़ सिम्पसन की आँखों में व्यंग्य की झलक-सी आयी और उसने कहा—

"मुझे हार्दिक दुःख है, श्रीमन्। परन्तु आपने मुझे निराश किया है।"

"किस तरह ?" मैंने पूछा।

"इंग्लैंड का हर आदमी, अमेरिका से आयी हुई हर महिला से यही सवाल पूछता है। ब्रिटिश साम्राज्य के भावी सम्राट् से मैं किसी मौलिक प्रश्न की आशा रखती थी।"

कितना वाक्चातुर्य ! मैं फौरन दूसरे लोगों से बात करने के बहाने वहाँ से सरक गया। परन्तु उसके वे शब्द मेरे कानों में बहुत दिनों बाद भी गूंजते रहे। इस प्रकार हमारा परिचय हुआ था। उसके बाद अगले वर्षों में हम अनेक बार प्रीतिभोजों और सप्ताहांत के स्नेह-संयोजनों में मिलते रहे। परन्तु जिस दिन वह मेरे पिताजी के सम्मुख राजसभा में उपस्थित की गयी, वह दिन तो भुलाये नहीं भूलेगा। उसके सहज अंग-विन्यास और मनोहारी गति पर तो मैं मुग्ध हो गया था।...और एक दिन मेरे जीवन में उसका प्रमुख स्थान हो गया। बहुत दिनों तक तो शायद उसे मेरी इस भावना का आभास मात्र भी नहीं मिल पाया था।

धीरे-धीरे मैं उसे जीवन-संगिनी बनाने के स्वप्न देखने लगा। साथ ही उस स्वप्न की सिद्धि में जो कठिनाइयाँ थीं, उनसे भी मैं पूर्ण परिचित था। राजवंशीय विवाह-विधान तथा मेरे घरवालों के रूढ़िगत विचार तो बाधक थे ही। फिर तलाकशुदा व्यक्ति के प्रति—चाहे वह निर्दोष ही क्यों न हो—राजदरबार का रुख अत्यंत अनुदार था। वैलेस को राज-सभा में उपस्थित होने की अनुमति किसी प्रकार भी नहीं मिल रही थी।

सिंहासनारोहण के बाद मैंने अनुभव किया कि, अपने कार्यभार का वहन मैं तभी कर सकता हूँ, जब वैलेस मेरी सहचरी हो। परन्तु मेरा यह स्वप्न कैसे पूण होगा, यह मैं उस समय नहीं जानता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिताजी से इस विषय में चर्चा करने की मेरी इच्छा थी ; परन्तु उसका तो अवसर ही नहीं मिला।

× × ×

१३ नवम्बर की रात भी भुलायी नहीं जा सकती। मैं विशाल साम्राज्य के अधिपति के दैनिक कार्यभार की थकावट से चूर होकर महल में आया था। मेरे मस्तिष्क में उस समय यदि कोई विचार था तो वह था—गर्म पानी से स्नान कर स्फूर्ति पाने का। स्नान-घर में घुसते ही मेरे व्यक्तिगत सचिव का जरूरी पत्र मिला। उसमें बताया गया था—मेरे और वैलेस के संबंध को लेकर एक वैधानिक संकट उत्पन्न हो गया है। प्रधान मंत्री ने हमारे विवाह को असंभव बनाने का निश्चय कर लिया है। यदि मैं प्रधान मंत्री की इच्छा के अनुसार नहीं चलूँगा, तो वे त्यागपत्र दे देंगे ; और इस समय नूतन मंत्री-मंडल बनाना सम्भव नहीं है।.....मैं क्रोध से तिलमिलाने लगा। "तो बाल्डविन मेरे प्रेम की परीक्षा लेना चाहते हैं... वैधानिकता की पिस्तौल मेरे सिर पर तान कर, वे मुझे वैलेस को छोड़ने की धमकी दे रहे हैं...?" उन्होंने सचमुच मेरे अभिमान पर चोट की थी, जिसे केवल कायर और बुजदिल ही शांति से सह सकते हैं।

वह रात आँखों में ही कटी। दूसरे दिन मैं वैलेस से मिला। पत्र उसे दिखाया। जब वह पढ़ चुकी, तो मैंने उसे अपनी ओर खींच लिया। उसके हाथ अपने हाथ में लेकर मैंने कहा—"वे तुम्हें मुझसे अलग करना चाहते हैं। कल ही मैं प्रधान मंत्री से मिलूंगा ; उन्हें साफ-साफ बता दूंगा कि, अगर वे हमें विवाह करने की अनुमति नहीं देंगे, तो मैं सब-कुछ छोड़ दूंगा।"

"उतावली से काम मत करना।" वैलेस ने कहा, "शायद कोई रास्ता निकल आये।"

"और कोई रास्ता है ही नहीं। इस चुनौती के भूत का खात्मा तो करना ही होगा, चाहे जैसे भी हो।"

विभ्रम

सवेरा होते ही मैं घर से निकल पड़ा। मैदान-पहाड़, नदी-समुद्र, भूतल-आकाश सब जगह गया— एक नहीं दस बार गया—महत्व खोजने के लिए, महिमा ढूंढ़ने के लिए। मगर गोधूलि की बेला तक भटकने पर भी थकान, क्षीणता एवं क्षय के सिवाय कुछ नहीं पा सका। जब देह ने जवाब दे दिया और मैं बाहर के गतिचक्र से निज को मुक्त कर निश्चल लेट गया, तो मेरे ही भीतर से जैसे कोई बोला—"तेरे ही भीतर कब से बैठा हूँ, तेरे इंतजार में? बावरे, जो कस्तूरी एक इंच भी तुझसे दूर नहीं, उसे तू सारे ब्रह्मांड में खोज फिरा है!

—तहा हुसैन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगले दिन मैं प्रधान मंत्री से मिला। समस्त नम्रता और विनय से उन्होंने जो-कुछ कहा, उसका सारांश यही था कि, मुझे वैलेस और राजमुकुट दोनों में से किसी एक का त्याग करना ही होगा। मैं कैंटरबरी के आर्च-बिशप से भी मिला, जो धार्मिक मामलों में सम्राट् के बाद सर्वोच्च सत्ता हैं। उनके साथ भी मेरा सैद्धांतिक संघर्ष हुआ।

कैसा विरोधाभास था! वे मुझे वैलेस से अलग कर रहे थे—इसलिए नहीं कि मैं कोई जघन्य पाप कर रहा था, वरन् इसलिए कि मैं एक सच्चे मनुष्य की भाँति अपनी सर्वगुण-सम्पन्न प्रेमपात्री से पवित्रतम सम्बंध स्थापित करना चाहता था। प्रधान मंत्री ने जो युक्तियाँ दीं, उन्हें उसी तर्क-मार्ग से आगे बढ़ायें, तो उसका यह निष्कर्ष निकलेगा कि, उन्हें मेरे रखैल रखने में जरा भी एतराज नहीं होगा। गुप्त महल, बाग की चाबी और चुने हुए परिचारक, मेरा छिप कर वहाँ जाना-आना—कितने हीन विचार थे! मैंने बाल्डविन से स्पष्ट कह दिया—"मैं वैलेस से विवाह करके ही रहूँगा। यदि सिंहासन पर रहते हुए मैं ऐसा कर सका, तो अच्छा है। पर, यदि आप इस विवाह का विरोध करेंगे, तो मैं वैलेस की बनिस्बत सिंहासन छोड़ना अधिक पसंद करूँगा।"

और इसके बाद बाल्डविन की राजनीतिक चालें, मंत्री-मंडल की गुप्त सभाएँ, मेरा तथा वैलेस का अल्पकालीन वियोग, वैलेस पर अन्यायपूर्ण दबाव आदि घटनाएँ तो विश्व-विदित हैं। यहाँ तक कि, उन लोगों ने वैलेस के मुंह से कहलवा दिया कि, वह मुझसे किसी प्रकार का सम्बंध नहीं रखना चाहती; मुझसे दूर—बहुत दूर—चली जाना चाहती है। मैंने भी उत्तर दिया—"तुम कोई भी निर्णय करने में पूर्ण स्वतंत्र हो। तुम चाहे जहाँ जा सकती हो—चीन, लैबरेडर या दक्षिणी सागर या जहाँ भी तुम चाहो। मगर तुम जहाँ भी जाओगी, मैं तुम्हारे पीछे आऊँगा।"

उफ!... मैं तेजी से चहल-कदमी करने लगा। कल की रात भी, तो ऐसी ही विक्षुब्ध थी। रात के दो बजे मैं महल में आया था। अभी सोने के कपड़े पहन ही रहा था कि, मेरा निजी नौकर वाल्टर आया। उसने कागज के एक डिब्बे में से दो गोलियाँ निकालीं और मेरी ओर बढ़ा दीं।

"क्या है, वाल्टर।"

"नींद की गोलियाँ, हुजूर; बहुत हल्की। मैंने सोचा, शायद आज रात हुजूर को इनकी आवश्यकता पड़े।"

कितना ममत्त्व था! मैंने सधन्यवाद वह डिब्बा ले लिया तथा दो गोलियाँ वाल्टर की ओर बढ़ाते हुए कहा—"और तुम भी स्वीकार करोग वाल्टर कि, इन गोलियों की जितनी आवश्यकता मुझे है, उतनी ही तुम्हें भी है।"

"हुजूर ठीक फरमाते हैं।" वाल्टर मुस्कराते हुए बोला और फौरन उन्हें निगल गया। मैंने गोलियाँ नहीं खायीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सारी रात निर्विघ्न सोया।

× × ×

परन्तु आज की रात! यह तो आत्म-निर्णय की महारात्रि है। चहल-कदमी करते-करते मुझे अपने विगत जीवन की चक्करदार तथा जटिल पगडंडियों का स्मरण आने लगा।

यह संघर्ष मैं अकेला ही लड़ रहा था। प्रेस की सहायता लेने से मैंने इन्कार कर दिया था। संकट के आरम्भ से ही मेरी यह कोशिश रही थी कि, विवाद बढ़ने न पाये, राष्ट्रीय एकता भंग न हो तथा राज-पद को संघर्ष से ऊपर रखा जाय। साथ ही मुझे इस बात का भी डर था कि, कहीं इस सारी दल-बंदी और संघर्ष का शिकार वैलेस को न बना दिया जाय। मेरे अंतरंग मित्र, दैनिक 'टाइम्स' के सम्पादक मेक्स बेवरब्रुक अपने पत्र में वैलेस का वक्तव्य प्रकाशित करना चाहते थे। यह तो वैलेस के लिए साक्षात् अग्निपरीक्षा थी; और मैं अपने प्राणप्रिय व्यक्ति को ऐसी परिस्थिति में डालना हरगिज सहन नहीं कर सकता था। मैक्स का कहना है कि, मेरी इस ज़िद के कारण उसका पत्र वैधानिक संकट के उन दिनों में सर्वथा प्रभावशून्य रहा।

मैक्स के अतिरिक्त विश्व में दूसरे भी ऐसे अनेक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, जो मेरी अनुमति मिलते ही एक सुव्यवस्थित मोर्चा बना सकते थे। वास्तव में, "राज-दल" नामक एक संस्था बन भी गयी थी। यद्यपि उसकी उत्पत्ति, संगठन और नेतृत्व के विषय में कोई कुछ नहीं जानता था; परन्तु उसका गम्भीर स्वर बकिंघम प्रासाद के बाहर चिल्लाये जाने वाले इन नारों से स्पष्ट था– "राजा का साथ दो", "भगवान् राजा को बाल्डविन से बचाये।"

यहाँ तक कि, मेरे कट्टर विरोधी कैंटरबरी के आर्च-बिशप ने भी इस स्थिति को अनुभव किया था जैसा कि उनकी डायरी से स्पष्ट है। आर्च-बिशप के मत में यह दल उन नवयुवकों का था, जो इस संकट को बिलकुल सीधे रूप में देखते थे। इनका तर्क था कि, राजा ठीक ही तो कर रहा है; यदि वह अपनी प्रेयसी से विवाह-सूत्र में बंधना चाहता है, तो इसमें आपत्ति की बात क्या है?

यों इसमें तनिक भी संदेह नहीं था कि, मैं चाहता तो मुझे काफी प्रबल समर्थन मिल जाता। परन्तु समग्र राष्ट्र और ब्रिटिश साम्राज्य का समर्थन पाना टेढ़ी खीर थी। यदि मैं जिद पर अड़ा रहूँ, तो मेरे मित्रों को कामनवेल्थ के कोने-कोने में जाना होगा, मेरे समर्थकों का दल

अनुराग

अनुराग की अमरबेल जिसके हृदय-तरु पर छा गयी, उसको केवल यही सूझता है कि, उसके तन-मन-प्राण उसे अजस्र सींचते रहें। —मधुसूदन दत्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनाना पड़ेगा; और यह गृहयुद्ध का सूत्रपात होता। गृहयुद्ध तो सब संघर्षों में अत्यंत हेय होता है– उससे उत्पन्न होने वाली उत्तेजना अत्यंत उग्र और उसकी घृणा चिरस्थायी। और वह गृहयुद्ध तो और भी विनाशकारी होता है, जो शस्त्रों से नहीं, शब्दों से लड़ा जाय। ब्रिटेन का राजमुकुट साम्राज्य की स्वेच्छा-प्रेरित एकता का सजीव प्रतीक है। वही उस एकता का प्रेरणास्रोत है। उस राजमुकुट की सारी मान-महिमा मिट्टी में मिल जायगी, यदि उसको धारण करनेवाला व्यक्ति, एक खंडित और अन्तर्विभक्त राष्ट्र का शासक होगा। और मैं ऐसा सम्राट् पल-भर भी नहीं रहना चाहता था, जो सारे साम्राज्य को स्वेच्छा से स्वीकार न हो।

उस रात मैंने अपनी अंतरात्मा से प्रश्न किया–"क्या वैलेस और मैं, इस परिस्थिति में सुख की आशा कर सकते हैं?" उत्तर "नहीं" में मिला। मैंने अनुभव किया कि, मैं उस संधिस्थल पर पहुँच चुका हूँ, जहाँ घटनाक्रम को बनाना और संकट को टालना मनुष्य के बल-बूते के बाहर हो जाता है; यदि कुछ भी समय मैंने गँवाया, तो मुझे भयंकर वात्याचक्र का सामना करना पड़ेगा।

इसलिए मैंने आत्मविश्वास और शांति के साथ–फिर भी हार्दिक दुख के साथ– इस सारे वैधानिक संकट को एकबारगी समाप्त कर देने का निश्चय कर डाला। मैं गौरवपूर्वक अपने राज्यकाल का अंत कर दूंगा; अपने अनुज को अपना उत्तराधिकारी घोषित करके इस समस्या का समूल उच्छेद कर दूंगा।

ये थे वे सिद्धान्त, जिन्होंने मुझे इस निर्णय पर पहुँचाया। उन लोगों का मैं तीव्र प्रत्याख्यान करता हूँ, जो कहते हैं कि, प्रेम और कर्त्तव्य के संघर्ष में मैंने प्रेम का वरण किया। निस्संदेह वैलेस से मैंने विवाह इसलिए किया कि मैं प्रेमपंथ का राही था। परंतु राज्य-सिंहासन का त्याग मैंने इसलिए किया कि मैं कर्तव्यपथ से डिगना नहीं चाहता था। राजमुकुट का परित्याग मैंने इतना शीघ्र इसलिए नहीं कर दिया कि उसके मूल्य का मुझे ज्ञान नहीं था; अपितु वह मेरी दृष्टि में इतना अमूल्य था कि उसके आगे आत्माहुति अर्पित करना ही मुझे उचित जँचा।

आखिरकार रात बीती, सवेरा हुआ। मैंने प्रधानमंत्री को अपने निर्णय की सूचना भेज दी।

× × ×

अगले दिन मेरा कक्ष मंद मर्मर से गुंजित था। समस्त राजकीय पत्रों पर हस्ताक्षर करके, मैंने अपने भाइयों के लिए कुर्सी सरका दी। अपने पदानुकूल क्रम से उन्होंने भी हस्ताक्षर किये। वह दृश्य नितांत हृदयस्पर्शी था। मैं उस तैराक की तरह, जो अथाह सागर के तल को स्पर्श करके निरायास ऊपर आया हो, कक्ष से बाहर निकल आया– उषा के उन्मुक्त समीरण में श्वास लेने।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेहरा नया बनवा सकते हैं

अरबों की धनराशि लील जानेवाली शृंगार-प्रसाधनों की सरसा-फैक्टरियों के बिल्कुल विपरीत विज्ञान की मानव-समाज को नयी देन!

*

एक इतिहासकार ने कहा था कि, अगर रानी क्लियोपैट्रा की नाक कुछ अधिक लम्बी होती, तो संसार का इतिहास और ही ढंग से लिखा जाता। हो सकता है कि, आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व, जब मिस्र की वह अभागिन रानी रोमन साम्राज्य के भाग्यविधाताओं के भाग्यों के साथ खिलवाड़ कर रह थी, तब इतिहासकार की यह बात शतांश में सही उतरती—इसलिए नहीं कि, उस युग में रानियों की नाकें ही इतिहास रचती थीं, अपितु इसलिए कि, उस समय प्लास्टिक-शस्त्रचिकित्सा का विकास नहीं हुआ था। यदि आज से दो हजार वर्ष पूर्व के मिस्री वैद्य भी, आज के न्यू यार्क और वियना के सर्जनों की तरह प्लास्टिक-सर्जरी में कुशल होते, तो वे रानी क्लियोपैट्रा की नाक को छोटा-बड़ा करके अपने इच्छानुसार संसार के इतिहास को नये मोड़ दे देते।

सचमुच आज प्लास्टिक-सर्जरी तथा उसी के एक अंग, प्रसाधन-शस्त्रचिकित्सा (कास्मेटिक सर्जरी) ने इतनी प्रगति कर ली है कि, कई बार दैव भी मनुष्य का इतिहास दूसरे ढंग से लिखने के प्रयत्न में पराजित हो जाता है। फ्रांस के भूतपूर्व राष्ट्रपति डा. आरियोल की सुपुत्री कुमारी जैकेलाइन आरियोल की कथा इस तथ्य का ज्वलंत उदाहरण है।

दस वर्ष पहले कुमारी आरियोल फ्रांस की शायद सबसे सुन्दर और सबसे साहसी विमान-चालक थी। एक दिन जब वे एक नये हवाई-जहाज की जाँच-उड़ान भर रही थीं, उनका हवाई जहाज़ सीन नदी में गिर पड़ा। पुलिस के कुशल गोताखोर राष्ट्रपति की पुत्री को, जल-समाधि में से जीवित तो ले आये; परन्तु कुमारी आरियोल के मुख की प्रत्येक हड्डी के कई-कई टुकड़े हो गये थे। अब वह मानव-मुख नहीं रह गया था— त्वचा, मांस, रक्त और हड्डियों का थैला मात्र था। और मानो इस थैले को देखने के लिए ही, भाग्यदेवता ने कुमारी आरियोल की आँखें पूर्णतः सुरक्षित रखी थीं। यह निश्चित था कि, अब कुमारी आरियोल फिर कभी अपने शेष जीवन में हवाई जहाज़ नहीं चला सकेंगी।

परन्तु कुमारी आरियोल तो किसी दूसरी ही धातु की बनी हुई थीं। उन्होंने हार नहीं मानी। पेरिस के बड़े डाक्टरों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उन्होंने कई आपरेशन करवाये, जिससे उनके मुंह का मुख्य ढाँचा ठीक हो गया। फिर वे न्यू यार्क के सुप्रसिद्ध मैनहैटन-स्थित आँख-कान-कण्ठ-चिकित्सालय में आयीं, जहाँ प्रसिद्ध प्लास्टिक-सर्जन डा. जान मार्क्विस कान्वर्स तथा उनके सहकारियों ने अनेक छोटे-बड़े आपरेशन करके उनके मुख की आकृति पहले-जैसी बना दी। कुमारी आरियोल को कुल मिला कर बाईस आपरेशन कराने पड़े।

आपरेशनों का यह सिलसिला अभी चल ही रहा था कि, कुमारी आरियोल को हेलिकाप्टर चलाना सीखने की इच्छा हुई। तुरंत ही बेल एयरक्राफ्ट कारपोरेशन के अध्यक्ष स्व. लारेन्स डी. बेल ने इसकी समुचित व्यवस्था कर दी। कुमारी आरियोल से उनके आपरेशनों की आश्चर्यजनक कहानी सुनकर स्वर्गीय बेल इतने प्रभावित हुए कि, उन्होंने कई शस्त्रचिकित्सकों का सहयोग पाकर एक संस्था की स्थापना की, जिसका नाम है—"सोसायटी फार द' रिहैबिलिटेशन ऑव् द' फेशियली डिसफिगर्ड।" यह संस्था उन लोगों की चिकित्सा में सहायता करती है, जिनके चेहरे किसी दुर्घटना आदि के कारण कुरूप हो गये हों। सन १९५५ में इस संस्था की ओर से मैनहैटन के आँख-कान-कण्ठ-चिकित्सालय में मुख की पुनर्रचना से संबंधित शस्त्रचिकित्सा के लिए ही एक नया विभाग, लगभग पाँच लाख रुपये की लागत से खोला गया है। हाल में इस केन्द्र में आठ वर्ष के एक बालक के, जिसके जन्म के समय से एक ही कान था, नया कान बनाकर लगाया गया है। यों एक व्यक्ति के जीवन की दुर्घटना अनेक व्यक्तियों के जीवन में आशा का संचार करनेवाली सुघटना सिद्ध हुई।

सुमज्ज रानी ने सगर्व पूछा—"हीरामन, बता मुझ-सी सुंदरी कहीं और भी देखी है?"

संसार के एक और प्रसिद्ध व्यक्ति, जिन्हें प्लास्टिक-सर्जरी का कृतज्ञ होना चाहिए, पश्चिम जर्मनी के चांसलर डा. एडेनार हैं। एक मोटर-दुर्घटना में उनका मुख बुरी तरह कुचल गया था। प्लास्टिक-सर्जरी ने उन्हें फिर इस लायक बना दिया कि, उनके फोटो अखबारों में छपवाये जा सकें।

प्लास्टिक-सर्जरी कोई सर्वथा नवीन चीज़ नहीं है। आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'सुश्रुत' में उसके कुछ प्रारम्भिक रूपों का उल्लेख मिलता है। प्राचीन मिस्र के वैद्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी यह विद्या इतनी अवश्य जानते थे कि, टूटी नाक जोड़ दें। परन्तु शस्त्रचिकित्सा की इस शाखा का विशेष विकास तो प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान में हुआ। तब चिकित्सकों ने अनुभव किया कि, आहत सैनिकों के घाव ठीक कर देना ही पर्याप्त नहीं है; अपितु उनके आत्म-गौरव को एवं जीवन में उनकी अभिरुचि को बनाये रखने के लिए यह भी आवश्यक है कि, उनके घायल अंग—और विशेषतः चहरे—को यथासंभव पूर्ववत् बना दिया जाय। इस मानवीय प्रयत्न में मुंह की प्लास्टिक सर्जरी का विकास हुआ, जिसमें रोगी के ही शरीर के अन्य अवयवों से ली हुई त्वचा और कच्ची हड्डी (कार्टिलेज) आदि का उपयोग करके उसके चेहरे को नया और सुन्दर रूप दिया जाता है।

इसी की एक प्रशाखा है प्रसाधन-शस्त्रचिकित्सा, जिसमें चिकित्सक शल्य-क्रिया (सर्जरी) के द्वारा आपके चेहरे के अवांछनीय तत्त्वों को निकालकर, अथवा आवश्यक हो तो नाक और कान आदि का आकार कुछ बदल कर, आपका रूप निखार देते हैं।

चिकित्साशास्त्र के इस वरदान का लाभ सुन्दरता के पीछे लट्ठ लेकर पड़ी रहनेवाली धनी युवतियों और महिलाओं को ही नहीं, अपितु बालक-बूढ़े सभी को अबाध रूप से मिल रहा है। बोस्टन की एक सद्गृहिणी को, जब उसके छः वर्षीय पुत्र के स्कूल के अधिकारियों की मासिक रिपोर्ट मिली, वह चौंक उठी। उसमें लिखा था—"आपका सुपुत्र, स्कूल में न किसी शिक्षक के साथ बात करता है, न किसी सहपाठी के साथ खेलता है। वह हरदम मायूस बना रहता है, सबसे अलग रहने का यत्न करता है।" माता बालक को लेकर मनोविश्लेषक के पास पहुँची। जाँच से पता चला कि, बालक को अपने सूप-जैसे चौड़े एवं खड़े-से कानों के कारण शर्म आती थी। प्रसाधन-शास्त्र-चिकित्सक की सहायता ली गयी। उसने कानों का कोण बदलकर उन्हें कानपटी की ओर ज़रा दबा-सा दिया। बालक की मनोवज्ञानिक समस्या सुलझ गयी।

हमारे पूर्वज

ऋग्वेद के प्रथम मंडल में अश्विनीकुमारों द्वारा की गयी चिकित्सा के कई अद्भुत विवरण हैं। एक स्थल पर कक्षीवान् ऋषि की ब्रह्मवादिनी पत्नी घोषा के कुष्ठ रोग के निवारण की चर्चा है, दूसरे स्थल पर ऋजाश्व के पिता को नयी आँखें प्रदान करने का प्रसंग है तथा एक और सूक्त में खेल राजा की परम सुंदरी रानी विशप्ला के लिए नवीन जीवित जाँघ के निर्माण का उल्लेख मिलता है। — महामहोपाध्याय काणे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रसाधन-शस्त्रचिकित्सा का सबसे अधिक और अच्छा उपयोग अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए उत्सुक व्यक्ति कर रहे हैं। आज-कल ऐसी अधेड़ उम्र की शिक्षित गृहिणियों की संख्या काफी बड़ी है, जो पाँच-छह बच्चों की माँ हैं और अपने परिवार की आय बढ़ाने के लिए, अथवा आर्थिक दृष्टि से कुछ स्वावलंबी बनने के लिए, कोई नौकरी करना चाहती हैं। परन्तु प्रसव-परम्परा और गृहस्थी के बोझ के कारण चेहरे पर अकाल ही आ जमने-वाली बुढ़ापे और क्लान्ति की रेखाएँ, उनके मार्ग में बड़ी बाधा बन जाती हैं। प्रसाधन-शस्त्र-चिकित्सा इस बाधा को दूर करने में सहायता दे सकती है। यदि आपके गाल समय से पहले ही शिथिल होकर लटक आये हैं, तो प्रसाधन-चिकित्सक आपकी कनपटी के ऊपर जरा-सा चीरा देकर आपके मुख की त्वचा को खींचकर ऐसा तान देगा कि, गाल बिलकुल युवकों की तरह तन जायें। यदि आँखों के नीचे खाइयाँ-सी बन गयी हैं, तो वह उसे भी दूर कर देगा। इस प्रकार एक बार किये हुए "काया-कल्प" का प्रभाव सात-आठ साल तक रहता है। उसके बाद आप फिर "काया-कल्प" करा सकते हैं। कई बार तो डाक्टर ठुड्डी तक का आकार बदल कर चेहरे को आकर्षक बना देते हैं।

कुरूपा-कूबड़ी दासी अमितादेवी की तपस्या के फलस्वरूप अप्सरा की देह पा गयी। [चित्र : तोक्यो-म्यूजियम का एक चित्र]

क्लीवलैण्ड के एक बैंक के एक युवक कर्मचारी को प्रसाधन-शस्त्र-चिकित्सा ने बड़ी मदद पहुँचायी। यह युवक था तो एक क्लर्क लेकिन उसमें वे सभी गुण थे, जो उत्तर-दायित्वपूर्ण अधिकारी का पद पान के लिए आवश्यक होते हैं। बैंक के जनसम्पर्क अधिकारी का पद खाली भी था। अधिकारियों की दृष्टि युवक पर पड़ी। परन्तु एक अड़चन थी। युवक के चेहरे पर मुंहासों के इतने अधिक और इतन गहरे गढ़े थे कि, उसका चेहरा अनाकर्षक दीखता था। और जनसम्पर्क अधिकारी को सुंदर नहीं तो भी, कम-से-कम, आकर्षक तो होना चाहिए। अंत में बैंक के उपाध्यक्ष की सलाह पर युवक ने प्रसा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन-शस्त्रचिकित्सक की शरण ली। डाक्टर के आपरेशन-कक्ष में उसे कुल पचीस मिनट रहना पड़ा। तीन ही सप्ताह बाद सहकर्मियों ने उसे जनसम्पर्क अधिकारी के पद पर आसीन पाया। उसका चेहरा अब बच्चों की तरह चिकना व आकर्षक था।

संयुक्तराज्य अमेरिका में प्रति वर्ष जो १,३०,००० व्यक्ति प्रसाधन-शस्त्र-चिकित्सा कराते हैं, उनमें से काफी बड़ी संख्या इस युवक-जैसों की होती है। अमेरिका में इस चिकित्सा की लोक-प्रियता तेजी से बढ़ रही है। वहाँ कुल ३८८ प्रमाणित सर्जन हैं, जो यह चिकित्सा करते हैं। उनके अलावा के चर्मरोग-चिकित्सक भी हैं, जो "त्वचामार्जन" (डर्माब्रेशन) की विधि द्वारा इस प्रकार की चिकित्सा करते हैं।

"त्वचामार्जन" की विधि इस प्रकार है। त्वचा पर जहाँ दाग या धब्बा हो, जिसे कि हटाना है, उस भाग को स्थानीय सम्मूर्च्छन (लोकल एनेस्थीज़िया) के द्वारा सुन्न कर दिया जाता है। फिर एक लोहे के ब्रुश से त्वचा को रगड़ा जाता है। ब्रुश चवन्नी-भर चौड़ा होता है। उसकी दस्ती एक बिजली की मशीन से जुड़ी होती है, जिसे डाक्टर पैर से चलाता है। रगड़ने की क्रिया, आवश्यकता के अनुसार, तीन से तीस मिनट तक चलती है। उसके बाद मरीज़ घर जा सकता है। उसके मुख पर पट्टी बँधी होती है, मानो कोई मामूली चोट लगी हो। यह पट्टी भी अगले दिन उतार दी जाती है। जहाँ "मार्जन" किया गया है, वह स्थान आरंभ में सुर्ख होता है, परंतु हफ्ते-दो-हफ्ते में ललाई फीकी होकर बाकी त्वचा के रंग में घुल जाती है। चेचक के दाग, जन्मजात धब्बे, मुंहासे के चिन्ह और तिल आदि इस विधि से हटाये जा सकते हैं।

चेचक या मुँहासे के गढ़े भरने के लिए उस स्थान को कुरेद कर, शरीर के किसी अन्य अवयव से त्वचा लेकर वहाँ लगाते हैं। इसमें टांके भी नहीं लगाये जाते। कुरेदे हुए स्थान पर नयी त्वचा को बीस-पचीस मिनट तक दबाकर रखते हैं। शरीर की स्वाभाविक जोड़ने की क्रिया और खून के जमाव से त्वचा स्वयं जुड़ जाती है। उसपर पारदर्शक प्लास्टिक की पट्टी, चिपका दी जाती है। सात-आठ दिन बाद पट्टी उतार दी जाती है।

★

एक चोर जिसने पालतू कुत्ते चुराने में विशेष प्रवीणता प्राप्त कर रखी थी, बीमारी के कारण अस्पताल में था। अस्पताल के पादरी की सज्जनता से वह बड़ा प्रभावित हुआ। जब वह ठीक हो गया। पादरी से विदा लेते हुए बोला— "यदि कभी किसी का कुत्ता पसन्द आये तो बताइएगा; ऐसी सफाई से लाऊँगा कि उसके मालिक को पता ही न चले।" — 'नावक के तीर' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंखदान

मन के पंछी को जो पंख नहीं दे पाये
ऐसा गीत न कोई गाये !
आशा जिस पर जमी नहीं वह मन बेचारा
गहन निराशा के फैले आकाश झाँकता !
जिस पर आशा के डैने जम गये
कल्पनाशील प्रबल वह प्राण
तिमिर पर रेख खींच कर
किसी अनागत महाकाल के रूप आँकता !
शिथिल लोथड़े
पर से भर कर पंखवान हों,
तिमिर-उजाला
सन्न-प्रसन्न हवाएँ
ऋतु के शीत-उष्ण परिवर्तन
अंतर बहुत न डालें, ऐसे शब्द हवा पर भेजो !
अन्य दूसरे शब्द अगर आयें ओंठों पर
ओंठ चबा लो !
शब्द उठानेवाले हमने अगर न गाये
नाहक गाया ;
नाहक गाना पल-दो-पल हो जाय सहन
सुननेवालों को, यही बहुत है !
गानेवालो, कंठ तुम्हारा मन-पंछी को
पंखदान दे ; क्योंकि
निराशा की अँधियारी कटी तनिक-सी—
रही बहुत है !

—भवानीप्रसाद मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक नौजवान : आठ सांड

केप्टैन आबिद पेशावरी के यात्रा-प्रवास की एक रसपूर्ण तरंग

अमेरिका, कनाडा और इंग्लैंड में काफी अर्से तक घूमते रहने के बाद मैं काफी थक चुका था। दोस्तों की राय थी कि, मेरा स्वास्थ्य गिर रहा था और मुझे लंदन से सीधा ट्रिपोली चला जाना चाहिए। लेकिन मैं स्पेन जाना चाहता था। इतने करीब होने पर भी स्पेन बगैर देखे चला जाऊँ, यह मुझे कुछ अच्छा न लगता था। चुनाँचे एक दिन सुबह-ही-सुबह विक्टोरिया स्टेशन पहुँचा और मेडरिड का टिकट लेकर गाड़ी का इन्तज़ार करने लगा। ग्यारह बजे गाड़ी रवाना हुई और डेढ़ घंटे बाद डोवर पहुँच गयी। वहाँ से समुद्री जहाज़ से इंग्लिस्तान को अलविदा कहा।

लगभग ढाई बजे जहाज़ "केले" पहुँचा। वहाँ से पेरिस के लिए गाड़ी ली। सात बजे के करीब दुबारा पेरिस पहुँचा और उसी रात दूसरी गाड़ी से मेड़रिड के लिए रवाना हो गया। डिब्बे में मेरे साथ दो स्पेनी लड़कियाँ और एक कनाडियन टूरिस्ट था। रास्ते भर उनसे गप-शप चलती रही।

सुबह हुई, तो गाड़ी स्पेन की सरहद के पार "इरान" के स्टेशन पर खड़ी हुई थी। पासपोर्ट और कस्टम के झमेलों से छुटकारा पाकर अँग्रेजी पौंडों के स्पेनी सिक्के लिये। यहाँ से मेडरिड को दूसरी ट्रेन जाती थी, चुनाँचे उसमें सामान रखा। यहाँ कनाडियन टूरिस्ट तो बिछुड़ गया, लेकिन स्पेनी लड़कियाँ साथ रहीं। डिब्बे में और भी कई स्पेनी मौजूद थे। उन्हें जब मेरे परदेसी होने का पता चला, तो बड़ी खातिर की। मेरा स्पेनी जवान बोलना भी यहाँ बहुत काम आया।

"बुरगाज़" के स्टेशन पर, पेरिस से साथ आयी हुई दोनों लड़कियाँ उतर गयीं और विदा होते हुए खाने-पीने की बहुत-सी चीज़ें, मेरे हवाले कर गयीं—केले, माल्टे, भुनी हुई मछलियाँ, पनीर और लेमन-स्क्वाश की कई बोतलें वगैरह। इन चीज़ों से कई लिफ़ाफ़े भर गये। मैंने कहा भी कि, इतनी सारी चीज़ें क्या करूँगा? लेकिन वे न मानीं। कहने लगीं—"तुम अपने वतन से बहुत दूर हो और तुम्हारी खातिर करना हमारा फ़र्ज़ है।" सो सब चीज़ें रखनी पड़ीं। ट्रेन चली, तो हम काफी देर तक रूमाल हिलाते रहे।

मैं डायरी लिख रहा था कि, कुछ लड़कियाँ दूसरे डिब्बे से हमारे डिब्बे में आ गयीं, जिनसे बड़ी देर तक बातें होती रहीं। उन्होंने स्पेन के लोकगीत भी सुनाये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और "ओले-ओले" के हर्षोद्गार के साथ तालियाँ बजती रहीं।

बातों-बातों में वक्त गुज़रता चला गया और नौ बज गये। मेडरिड करीब आ रहा था और उसकी रोशनियाँ दूर से झिला-मिलाती नज़र आ रही थीं। लड़कियों में से एक ने, जिसका नाम एना था, मुझसे कहा—"लो मेडरिड आ गया तुम्हारा" और हम दोनों खिड़की में आकर खड़े हो गये। गाड़ी रुकने पर मैं डिब्बे के साथियों को अलाविदा कहने लगा।

"अब तुम कहाँ जाओगे, मेरे अज़ीज़?" एना की माँ ने मुझसे पूछा।

"यहीं किसी होटल में ठहरूँगा।" मैंने जवाब में कहा।

"नहीं, तुम हमारे मेहमान रहोगे।"

"इस मेहरबानी का शुक्रिया; लेकिन मैं किसी होटल में ही ठहरूँगा और आकर आप लोगों से मिलता रहूँगा।"

"मेडरिड में हमारा घर होते हुए तुम्हारा किसी होटल में ठहरना बिलकुल असंभव है।"

चुनाँचे मुझे उनके साथ जाना ही पड़ा। घर पहुँचते ही, एक कमरे में मेरे सोने का इन्तज़ाम कर दिया गया; और मैं लेटते ही सो गया। सुबह आठ बजे उठकर सबसे पहले मैंने दाढ़ी बनायी, फिर एना के साथ नाश्ता किया और दोनों सैर के लिए निकल खड़े हुए। देर तक बाज़ार में घूमते-घामते और चीज़ें खरीदते रहे। एक बजे तक धूप काफी तेज हो गयी और भूख भी लगने लगी थी; इसलिए खाने के लिए एक होटल की ओर मुड़े।

केवल भाले से १११ जंगली भैंसों का शिकार करनेवाला वीर नाइजेरियन हेकादोरा

तीन बजे हम घर लौट आये। पंखे के नीचे पसीना सुखाया, बर्फ में रखे हुए अंगूर खाये और फिर पाँच बजे तक आराम किया। एना अपनी दो सहेलियों को फोन करके आने के लिए कह चुकी थी। चुनाँचे कुछ देर बाद काले बालों और काली आखों वाली दो लड़कियाँ आ गयीं। एक ने बालों का जूड़ा बाँध रखा था और दूसरी के बाल कंधे पर बिखरे हुए थे। कुछ देर बातें होती रहीं। फिर एना ने मुझसे कहा—"कपड़े बदल लो, बाहर चलेंगे।" मैं जल्दी-जल्दी नहाया, फाखतई रंग की पतलून पर नीली कमीज़ पहनी, सुर्ख स्कार्फ गले में लटकाया और कैमरा लेकर निकल खड़े हुए। शाम के आठ बजे तक हम चारों इधर-उधर घूमते रहे। फिर दोनों सहेलियाँ विदा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकर चली गयीं।

मेडरिड बहुत खुला शहर है। सड़कें काफी चौड़ी हैं। पैदल चलने वालों के लिए 'साइड-वाक्स' बन हुए हैं। इन्हीं 'साइड-वाक्स' पर कैफे हैं। लोग-बाग जब चलते-चलते ऊब जाते हैं, तो यहीं बैठकर कॉफी या कुछ और पेय पीते हैं। लोग बड़ी बेफिक्री से टहल रहे थे, कहीं-कहीं गिटार के धीमे-धीमे स्वर के साथ मीठे गीत सुनने में आ जाते थे। बड़ी देर तक घूमते रहने के बाद, हम घर लौट आये।

दूसरे दिन सुबह नाश्ते के बाद हम बाहर जाने लगे, तो एना की माँ ने कहा—"दोपहर को खाने के लिए आज घर ही आना; किसी होटल में न चले जाना।"

"शाम को हम बुल-फाइटिंग देखने चलेंगे" एना ने कहा।

स्पेन में दोपहर का खाना दो और तीन बजे के बीच खाया जाता है। उसके बाद घंटा-दो-घंटा आराम और रात का खाना दस बजे के बाद। बड़ी देर तक घूमते-घामते हम एक पार्क में पहुँचे, जहाँ के रेस्तराँ में मैंने मेडरिड की मशहूर चीज 'अनीस दिलमानो' पी।

दो बजे घर लौटे, तो खाना तैयार था। पहले "सूप" (शोरवा) की तरह की कोई चीज आयी, जिसमें सीप का गूदा और डबल-रोटी के मुलायम टुकड़े तैर रहे थे। बड़ा जायकेदार लगा। इसके बाद भुनी हुई मछली आयी; फिर पनीर के छोटे-छोटे सफेद टुकड़े लाल, नीली और हरी तीलियों में लगे हुए। एक और प्लेट आयी, कुटी हुई हरी मिर्चें और टमाटरों का गूदा; खाने का लुत्फ आ गया। इसके बाद आये फल—अंगूर, नाशपातियाँ और आड़ू। सबसे आखिर में काली कॉफी का दौर चला। जब मैंने सिगरेट सुलगायी, तो हलका-सा खुमार महसूस हो रहा था। "अब तुम सो जाओ, शाम को चलेंगे 'बुल-फाइटिंग' देखने।" एना ने उत्साह से कहा।

सीख

दुःसाहस के मदोन्मत्त हाथी पर बैठ कर जब कभी तू बाहर निकले, तो उन द्वारों पर जाना जो आँसुओं से गीले हैं और तब ऐसा कुछ करना कि वे फिर दुबारा गीले न हों—यह दुःसाहस तेरा भगवान् की विभूति के रूप में पूजा जायेगा। —वल्लतोल

न मालूम कब तक सोता रहता; पर एना ने आकर जगा दिया और बोली—"जल्दी से नहा कर नीली कमीज पहन लो झटपट।"

"नहीं, उसके बटन टूटे हुए हैं। मैं सूट पहनूँगा।" मैंने जवाब दिया।

"बटन मने लगा दिये हैं; पतलून पर भी इस्तरी कर दी है और स्कार्फ भी तैयार है।"

नहा कर कपड़े बदले। स्कार्फ लगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा था कि, एना भी तैयार होकर आ गयी। मिडनाइट-ब्लू स्कर्ट, कानों में बड़े-बड़े ईयर-रिंग, गले में मोटे दानों का हार और हाथों में बड़ी-बड़ी सुनहरी जंजीरें।

हम दोनों हाथों में हाथ डाले 'प्लाजा दी तौरोज' पहुँच गये। अंडर-ग्राउंड गाड़ियों में बला की भीड़ थी। मेडरिड का बच्चा-बच्चा बुल-फाइटिंग देखने जा रहा था।

बुल-फाइटिंग की जगह देखकर मुझे रोम का 'कोलोसियम' याद आ गया। बीच में वही बड़ा-सा आँगन और चारों तरफ ऊपर उठती हुई वैसी ही सीटें।

औरतें अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहन कर आयी थीं।

बिगुल बजा और 'तरेरोज' यानी बुल-फाइटर चमचमाती हुई चुस्त पौशाकें पहने, सिर पर काली टोपियाँ रखे प्रकट हुए और उन्होंने प्लाजा का एक चक्कर लगाया। तालियों के शोर से कान फट गये। चक्कर लगाकर तमाम फाइटर वापस चले गये; सिर्फ कुछ फाइटर कोनों में खड़े रह गये।

दरवाजा खुला और एक काला सांड (बुल) बिजली की-सी तेजी के साथ बाहर निकला। उसके सींगों की नोकें बड़ी डरावनी थीं। एक फाइटर ने उसे सुर्ख कपड़ा दिखाया; बुल उधर दौड़ा। फिर दूसरे ने दिखाया, तो लो उसी की तरफ मुड़ गया। इस तरह बुल कभी इस कोने पर हमला करता था, तो कभी दूसरे कोने की तरफ लपकता था। एक बार फिर बिगुल बजा और एक घुड़सवार सिर पर बड़ा-सा टोप पहने, हाथ में भाला लिये आगे आया। घोड़े की आँखों पर पट्टी बंधी थी और उसके बदन के चारों तरफ़ मोटे चमड़े का झूल था। घुड़सवार ने बुल को ललकारा और वह "शूं-शूं" करता हुआ लपका।

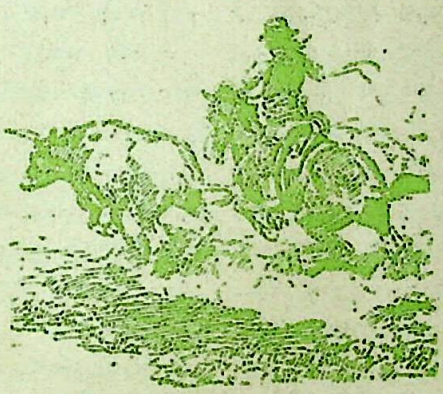

भैंसे का शिकार

घुड़सवार का भाला बुल की गर्दन पर पड़ा। उसकी काली कमर सुर्ख हो गयी। अनेक बार ऐसा हुआ; लेकिन एक बार जो बुल ने हमला किया, तो घोड़ा संभल न सका और गिर गया। साथ ही, सवार भी जमीन पर था। बुल अपने पैने सींगों से उसका पेट फाड़ देने को ही था कि, चारों तरफ से दूसरे फ़ाइटर अपने-अपने सुर्ख कपड़े हिलाने लगे और बुल का ध्यान गिरे हुए सवार की तरफ़ से हट कर उनकी ओर गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर थोड़ी देर तक सुर्ख कपड़े से लड़ाई होती रही। इसके बाद तीन फ़ाइटर कपड़े फेंक कर, हाथों में पाँच-पाँच फट लम्बे दो-दो छड़ लिये सामने आ गये। छड़ों के सिरों पर लोहे की नोकें थीं और उन पर लाल, नीले-पीले कागजों की झालरें लटक रही थीं।

एक फाइटर ने बुल को ललकारा और वह दौड़ा उसकी तरफ। ज्यों ही दोनों आमने-सामने हुए, फाइटर ने उचक कर दोनों छड़ उसकी गर्दन में गाड़ दिये। बुल ने चीख मारी। अब वह पहले से भी ज्यादा खूंख्वार हो गया था। इसी तरह दूसरे फाइटरों ने भी अपने-अपने छड़ बुल की गर्दन में खोंस दिये और बुल अपनी गर्दन में छह छड़ बिंधवा कर, गुस्से में पागल होकर अपने खुरों से मिट्टी हवा में उछालने लगा।

अब एक के सिवा सब फाइटर मैदान से चले गये। यह फाइटर सुर्ख कपड़े के पीछे तलवार छिपाये, ऐसी लड़ाई लड़ा कि, लोग "अश्-अश्" कर उठे। स्पेनी लड़कियाँ, एक आवाज होकर "ओले ओले तरेरो" चिल्ला उठीं।

यह फाइटर खासा जवान और बड़ा सजीला था। बड़ी देर तक वह सिर झुका कर शुक्रिया अदा करता रहा, और फिर दुबारा बुल को ललकारने लगा। अब की ऐसी खौफनाक लड़ाई दोनों ने लड़ी कि, धूम मच गयी। इसके बाद युवक हाथ में कपड़ा लिये, घुटने टेककर जमीन पर बैठ गया। बुल बार-बार हमला करता, मगर सुर्ख कपड़े के साथ लग कर निकल जाता। एका-एक लोगों ने साँस रोक ली। "यह फाइटर क्या कर रहा है?" लड़कियाँ ओठों-ही-ओठों में कहने लगीं—"उसे कहो, खुदा के लिए ऐसा न करे।"

मेरा रौंगटा-रौंगटा खड़ा हो चुका था। फिल्मों में बुल-फाइटिंग, तो मैं कई बार देख चुका था। लेकिन असल और नकल में जमीन-आसमान का फर्क होता है। मेरा तमाम शरीर काँप रहा था।

अस्सी हजार आदमियों की आँखें इस वक्त दो चीजों पर जमी हुई थीं—बुल और फाइटर। फाइटर घुटनों के बल बैठा था और उससे सिर्फ छह फुट दूर काला बुल अपने नुकीले सींग आगे किये, सुर्ख कपड़े के हिलने के इन्तजार में खड़ा था। तलवार और सुर्ख कपड़ा फाइटर की कमर के पीछे थे, और उसका सीना था, बुल के सींगों के बीच। पूरे एक मिनट तक यही दृश्य रहा। दोनों एक-दूसरे को घूरते रहे।

इस एक मिनट में अस्सी हजार दर्शकों के बदन ठंडे पड़ गये। वे साँस रोके काँप रहे थे। हर तरफ खामोशी छायी हुई थी। फाइटर ने कपड़े को जरा हिलाया; अस्सी हजार आदमियों ने एक हलकी-सी आह भरी; लड़कियों ने हाथों से मुँह छिपा लिये और सब तमाशाई पत्थर की मूर्तियाँ बन गये।

बुल ने फाइटर के पेट में अपने नुकीले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सींग भोंक कर, उसे हवा में उछाल दिया था। फाइटर हवा में कुछ गज उछल कर नीचे गिरा, तो बुल उसपर दुबारा झपटा और एक बार फिर उसके बदन में अपने सींग गाड़ दिये। चारों तरफ से दूसरे 'तरेरोज' ने कपड़े हिला-हिलाकर बुल को अपनी तरफ आकृष्ट करने की कोशिश की और वह भी घायल फाइटर को छोड़ कर उनकी तरफ झपटा।

फाइटर ज़मीन पर औंधा पड़ा हुआ था। उसकी चमचमाती हुई हरी पोशाक सुर्ख खून में लत-पत हो चुकी थी। उसके पेट से खून के फव्वारे छूट रहे थे। दर्शक मानो नींद से जाग पड़े। सब खड़े हो गये, और स्पेनी 'सेनोरीटाओं' की आँखों से तो आँसू की झड़ियाँ बरस पड़ीं। इस नौजवान की मौत का मातम मेरी आँखों ने भी मनाया।

मृत फाइटर की लाश के हटाते ही दूसरा फाइटर आ गया। बुल की गर्दन में छह रंग-बिरंगे छड़ अब भी उसी तरह लहरा रहे थे और वह गुस्से में भरा हुआ, अपने खुर जोर-जोर से जमीन पर मार रहा था। फाइटर के कपड़ा दिखाते ही बुल उसकी तरफ लपका। लेकिन जैसे ही वह पास आया, फाइटर ने अपनी तलवार मूठ तक उसकी कमर में उतार दी। बुल बेबस होकर जमीन पर गिर पड़ा। छटपटा कर उसने दम तोड़ दिया।

एका-एक लोग उठ खड़े हुए और रूमाल हिलाने लगे। एना ने बताया कि, वे तकाजा कर रहे हैं कि मरे हुए बुल के कान इस नौजवान फाइटर को इनाम के तौर पर दिये जायें। (यह एक बहुत बड़ी इज्जत है।) सलाह फौरन मंजूर कर ली गयी।

इसी तरह कई मुकाबले हुए। एक और बुल ने एक दूसरे फाइटर को उछाल दिया; लेकिन वह मरा नहीं, बच गया। उस एक शाम की बुल-फाइटिंग में मैंने आठ बुल और एक नौजवान फ़ाइटर को हलाक होते देखा।

स्पेन में कई दिन गुजारने के बाद, आखिर वह दिन आ ही पहुँचा; जब मुझे मेडरिड से विदा होना था। मैं और एना दिन-भर बाजार में घूमते रहे थे। गाड़ी शाम को छूटती थी। एना और उसके माँ-बाप और उसकी सहेलियाँ मुझे विदा करने स्टेशन आये थे। सामान ठीक-ठिकाने से रख कर एना ने मुझे दूसरे मुसाफिरों से मिलाया और बार-बार उनसे कहा कि, मैं दूर का मुसाफिर हूँ, खयाल रखें।

"यह तुम्हारा खाना है।" एना की की माँ ने एक टोकरी मेरे हवाले करते हुए कहा—"तुम जा रहे हो, लेकिन हमें भुलाना मत।" और मेरा सिर आभार से झुक गया। "मी बोइन अमीगो।" एना बार-बार कह रही थी।

गाड़ी ने सीटी दी। मैं सब लोगों से मिला और दरवाजे में खड़ा रहा। गाड़ी चली, तो देर तक हवा में रूमाल लहराते रहे और स्नेही मेजबानों के चेहरे धुंधले होते चले गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफलता से दूर क्यों भागते हैं

प्रकाश इतना सम्मोहक है, फिर भी जीव-जंतु उससे दूर भागते हैं। क्यों? जीव अपने अज्ञान के प्रति इतना मोहमय हो जाता है कि, वह उसको छोड़ना नहीं चाहता—उसे ही त्राता मानकर पकड़े बैठा रहता है और उसी के गर्त में बूड़ भी जाता है। हम-सबके भीतर ज्योतिपथ के प्रति जो उदासीनता है, वह भी शायद इसी आदिम संस्कार की देन है।

सफलता खुद एक प्रेरणा है; मनुष्य के सोये उत्साह एवं शक्ति को फिर से जगाने वाली चेतनता है। जैसे एक छोटी-सी चिनगारी अगाध-से-अगाध अंधकार को भी प्रकाशित कर देती है, वैसे ही सफलता का थोड़ा-सा अंश भी जदगी को खोयी हुई राह के सामने ला खड़ा करता है। जापान के एक बाल-भवन के प्रवेश-द्वार पर एक तख्ती लगी है जिस पर लिखा हुआ है – "सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते सफलता का ही चिंतन करो; सफलता ही तुम्हारी परम उपास्य है। आँखों की ओट से सफलता को विलग न होने दो। मन से सदैव सफलता का मनन करो, तन से सदैव सफलता का आचरण करो। सफलता से बढ़ कर कोई निधि नहीं, सफल आदमी से बढ़कर कोई सिद्ध नहीं।"

सफलता की महिमा में लिखे गये ये शब्द वस्तुतः बड़े अर्थमय हैं और श्रीमद्-भागवत के इन शब्दों की व्याख्या करते प्रतीत होते हैं – "तेज का चिंतन करने-वाला ही तेजस्वी बनता है।"

जब अनंत काल से सफलता इतनी काम्य रही है, तो हममें से प्रत्येक का यह कर्तव्य हो जाता है कि, हम अपनी आँखें खोलें, बाहर-भीतर देखें; निष्पक्ष भाव से मापें कि, हम सफलता की उपासना में कितने समर्थ हुए हैं, कहाँ तक हम उसके अधिकारी हुए हैं और कितने-कितने विघ्न हमारे सामने हैं तथा पूरी पात्रता प्राप्त करने के लिए किन-किन गुणों की और हमें आवश्यकता है। विख्यात मानस-शास्त्री कैसन ने संसार के पाँच हजार चुने हुए एवं सभी क्षेत्रों के सफल व्यक्तियों के रहन-सहन, खान-पान, एवं जीवन-दृष्टियों का अध्ययन-विश्लेषण किया है और इस व्यापक अनुभव के आधार पर उन्होंने कुछ शोधक प्रश्न तैयार किये हैं। इन प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट कर देते हैं कि, आप सफलता प्राप्त करने की दिशा में कितने समर्थ एवं कितने असमर्थ हैं। नीचे हम इन प्रश्नों को दे रहे हैं। प्रश्नों के साथ उनके सही उत्तर भी दिये जा रहे हैं :

१. क्या आपको अपने व्यवसाय में दिलचस्पी महसूस होती है?—उत्तर : हाँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२. क्या वेतन ही एकमात्र संतोष है, जो आपको आपके व्यवसाय से मिलता है ? – उत्तर : नहीं ।

३. अधिक उत्पादन या काम की बेहतरी के लिए क्या आप कभी रचनात्मक सुझाव देते हैं ? – उत्तर : हाँ ।

४. जब काम का सिल-सिला कहीं से बिगड़ा लगने लगता है, तो क्या आप अपने सहकारियों को ही उसके लिए जिम्मेदार मानते हैं ? – उत्तर : नहीं ।

५. जब आप स्वयं गलती करते हैं, तो क्या आप उस-पर पछताने के बजाय, नये उत्साह से काम करना शुरू करते हैं ? – उत्तर : हाँ ।

६. क्या आपको अपने आसपास के लोगों में दिल-चस्पी है ? – उत्तर : हाँ ।

७. क्या फ़ुरसत के वक्त आप मनोरंजन के आदी हैं ? – उत्तर : हाँ ।

८. जिस व्यवसाय में आप संलग्न है, क्या उसके अन-रूप ही शिष्ट-व्यवस्थित पोशाक और भद्र आचरण आपका है ? –उत्तर : हाँ ।

९. जब आपको अतिरिक्त काम में कभी लगा दिया जाता है, तो क्या आपको वह स्थिति अप्रिय लगने लगती है ? –उत्तर : नहीं ।

१०. क्या विश्राम एवं अवकाश के वक्त भी आपको दफ्तर का काम करना पड़ता है ? – उत्तर : नहीं ।

११. क्या प्रायः आप यह महसूस करते हैं कि दफ्तर में आपको ही सबसे ज्यादा काम करना पड़ता है ? –उत्तर : नहीं ।

१२. क्या आप वेतन एवं उन्नति की दृष्टि से अपने काम में और भी विकास करने के लिए तत्पर रहते हैं ? – उत्तर : हाँ ।

१३. क्या नये काम में कुछ दिन मन लगने के बाद आपका मन फिर परिवर्तन की कामना करने लगता है ? – उत्तर : नहीं ।

१४. क्या आप अपने सहकारियों के जीवन एवं उनकी दैनिक समस्याओं में अभिरुचि रखना पसंद करते हैं ? – उत्तर : हाँ ।

१५. क्या आप अपने को दफ्तर में दिये गये कार्य-विशेष के लिए अनिवार्य मानते हैं ? – उत्तर : नहीं ।

१६. कोई भी व्यवसाय आपका हो, क्या आप यह महसूस करते हैं कि, प्रामा-

चिनगारी

चिनगारी तो जंगल-का-जंगल स्वाहा कर देती है। प्राण की एक-एक बूंद करोड़ों को जीवन-दान देती है... तुम्हें तो दोनों मिले हैं—ज्योति और प्राण—ज्योतिर्मय प्राण ! फिर तुम क्यों निश्चेष्ट बैठे हुए हो ? —विवेकानंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

णिकता की सदैव रक्षा होनी चाहिए? —उत्तर : हाँ।

१७. जब आपके सहकारियों को ऊँचा पद या अधिक वेतन मिलने लगता है, तो क्या आपको उनसे ईर्ष्या होने लगती है? — उत्तर : नहीं।

१८. दफ्तर के बाद क्या आप रोज बेहद थक जाते हैं? — उत्तर : नहीं।

१९. क्या आप अनुभव करते हैं कि, आपने काम में उन्नति के साथ-साथ अनायास ही जीवन-सुधार भी किया है? — उत्तर : हाँ।

२०. काम की संलग्नता ने क्या कभी आपको यह अनुभूति भी दी है कि, आनंद स्वयं व्यक्ति में है, उसके बाहर नहीं? —उत्तर: हाँ।

प्रश्न के प्रत्येक सही उत्तर के ५ अंक हैं। बीस प्रश्नों के १०० अंक। यही आपके भीतर स्थित सफलता को मापने का पैमाना है। नेपोलियन के अनुसार तो हर आदमी जन्म से ही सफल आदमी पैदा होता है— आज तक कोई भी असफल व्यक्ति पैदा नहीं हुआ; किंतु हम लोग जन्म के साथ ही उगे इस सफलता के पौदे को विकास का खाद नहीं देते हैं — इतना खाद और पानी नहीं देते हैं कि, वह अपनी शक्ति में पूरा पनपे और फलान्वित हो जाये। ऊपर के प्रश्नों में इसी खाद-पानी की पूछ-ताछ है। आप अपने को कुरेदिये, निष्पक्ष विश्लेषण की कुदाली से अपनी चेतना की जमीन खोदिये। आपको हर स्तर पर सोने की खानें मिलेंगी, जो उत्खनन और परिष्कार के अभाव में मिट्टी बनी सोयी पड़ी हैं। अपनी ही इन खानों पर आपका अधिकार नहीं? अपने ही स्वर्ण भांडार पर आपका उपयोग नहीं? क्या आपको अपने ऊपर रहम नहीं आता है? क्या आत्म-ग्लानि में आप छटपटा नहीं उठते? खैर!

अब भी ज्यादा वक्त नहीं गुजरा है। आप कमर कस कर खड़े हो जाइये। जो आपका प्राप्य है, उसे प्राप्त करने की दिशा में दृढ़ कदमों से आगे बढ़िये। ऊपर के प्रश्नों के सही उत्तरों से, जो अंक आपने प्राप्त किये हैं, वे आपकी वर्तमान स्थिति — शैक्षणिक एवं मानसिक — बताते हैं। उसके अनुसार आप निर्धारित मंजिल की तरफ बढ़ना शुरू कीजिये। सफलता खुद दौड़ी

अग्नि

कहते हैं कि अग्नि जब स्वर्ग से धरती पर उतरा, तो उसे सबसे पहले एक अजगर मिला जो अगाध आलस्य में सोया पड़ा था। अग्नि ने उसे जगाया, तो वह क्रुद्ध होकर बोला— "सो जाओ तुम भी! धरती का यही धर्म है।" तभी से अग्नि सोया पड़ा है, जगाने पर ही जागता है। हर बीज में अग्नि का निवास है। इसलिए हर बीज को श्रम द्वारा जगाना पड़ता है। — महाकवि हिमनेज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चली आयेगी आपके पास !

४० से ५० तक के अंक स्पष्ट करते हैं कि, आप सफलता की परिधि में तो खड़े हैं; किंतु उसके केंद्र की ओर बढ़ना नहीं चाहते – तेजी से कदम बढ़ाइये, जरा !

५१ से ६० तक के अंक स्पष्ट करते हैं कि आप सही दिशा में तो हैं; किंतु अकसर भटक जाते हैं। रास्ते की रंगीनियों में अटक जाते हैं – अपने लक्ष्य पर ही दृष्टि रखिये – 'काम से काम : दाता राम' वाली कहावत चरितार्थ कीजिये।

६१ से ७५ तक के अंक स्पष्ट करते हैं कि, आपने अपनी राह तो बना ली है; मगर अपनी प्रसुप्त शक्तियों का पूरा-पूरा अंदाजा आप नहीं लगा पाये हैं – थोड़ा और कुरेदिये अपने को। आपके भीतर सफलता के स्वर्ण की कमी कहाँ है ?

७६-९० तक के अंक स्पष्ट करते हैं कि आप संसार के गिनती के सफल व्यक्तियों में से हैं, मगर आपकी सफलता से दुनिया ने कम लाभ पाया है – थोड़ा और बाँटिये।

९१-१०० तक के अंक स्पष्ट करते हैं कि आप सफल ही नहीं है, पूर्णकाम, मुक्तात्मा हैं !

जवानो, आगे बढ़ो !

मशालसाजी द्वारा प्रेषित कश्मीर-पदयात्रा के समय विनोबाजी की वाणी से निःसृत एक प्रेरक-प्रबोधक प्रवचन

मैंने देखा कि आज जो जवान मुझसे मिले, उनके दिल में समाज की वर्तमान हालत के बारे में नाखुशी है। यह अच्छा है और लाजमी भी है। बुजुर्ग जिस हालत में हैं, उससे जवान कुछ आगे बढ़ते हैं, तभी तरक्की होती है। लेकिन बुजुर्गों को बनना चाहिए कमान, और जवानों को बनना चाहिए तीर। आगे तीर दौड़ेगा, पर कमान से उसे शक्ति और गति मिलेगी। तभी देश आगे बढ़ेगा। इसलिए जवान आगे जाने की बात करते हैं, तो हमें खुशी होती है।

मैं जवानों को समझाना चाहता हूँ कि, मेरा तरीका सीखो। तुम पार्टी मत बनाओ। पार्टी यानी पार्ट, टुकड़ा। तुम जुज मत बनो, कुल बनो। सबको हजम करने की काबिलियत पैदा करो। जैसे समन्दर में सब नदी-नाले मिल जाते हैं, वैसे ही तुम भी अपने विचारों में सबको हजम करने की ताकत पैदा करो। मेरा मानना है कि, हिन्दुस्तान प्यार से जमीन का बँटवारा कर लेगा, तो वह यहाँ पर समाजवाद, साम्यवाद आदि सभी वादों को हजम कर लेगा।

भूदान से दिल नम्र यानी नरम बनता है, और ग्रामदान से दिल से दिल जुड़ जाते हैं। दिल जुड़ने के लिए यह लाजमी है कि पहले दिल नरम बनें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

★

एडमिरल माउंटबेटन अपने जमाने के सबसे बड़े नौसैनिक माने जाते हैं। इंग्लैंड का हर बच्चा उन्हें अपना 'हीरो' मानता है। कोई ऐसा होस्टेल नहीं जहाँ उनके चित्र न टँगे हों। उनके नाम से किशोरों के कई क्लब चलते हैं। उनके नाविक-जीवन के बारे में कई रोचक कहानियाँ प्रचलित हैं। एक कहानी इस प्रकार है –

एक बार युवक माउंटबेटन को नौसैनिकों की एक परीक्षा के सिलसिले में 'इंटरव्यू' के लिए नाविक अफसरों के सामने पेश होना पड़ा। कमीशन के चेयरमैन ने माउंटबेटन से अन्य प्रश्नों के साथ साथ एक अति सरल प्रश्न पूछा —"नौजवान! अगर जहाज में तूफ़ान आ ये, तो तुम क्या करोगे?"

"हम तब लंगर डाल देंगे।" युवक लेफ्टिनेंट ने सादर कहा।

"अगर दूसरी बार तूफ़ान आये, तो तुम क्या करोगे?"

"हम दूसरा लंगर डाल देंगे।"

"और ....अगर फिर तूफ़ान आ गया तो तुम क्या करोगे?"

"महाशय! हम फिर लंगर डाल देंगे।"

चेयरमैन ने कृत्रिम परेशानी से भृकुटि भींचते हुए पूछा –" नौजवान! अब मुझे यह बताओ कि, इतने लंगर तुम कहाँ से लाओगे?"

माउंटबैटन ने छूटते ही सविनय उत्तर दिया—"महाशय! वहीं से, जहाँ से आप इतने तूफ़ान ले आये!"

× ×

विज्ञान-मनीषी आइंस्टीन संसार के सर्वोच्च गणितज्ञ ही नहीं थे, संगीत के भी वे महान् अनुरागी

यह खिलवाड़ नहीं, लोग इन्हें सर्वोच्च कलाकृतियाँ कह कर खरीदते हैं!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे। वायलिन उनका अपना प्रिय साज था। जहाँ वे रहते थे, उसी मोहल्ले में पियानो के प्रख्यात उस्ताद आर्थर श्नाबेल भी रहते थे। आइंस्टीन और श्नाबेल में परस्पर ऐसी ही मैत्री थी, जैसी दो बालकों में हुआ करती है। अकसर दोनों अपने-अपने साज लेकर बैठ जाते और धुनें मिलाते रहते थे। एक रात कुछ संयोग ऐसा हुआ कि, कोशिश करने पर भी आइंस्टीन का वायलिन श्नाबेल द्वारा बजायी गयी एक रागिनी का साथ नहीं दे सका। श्नाबेल को यह रस-भंग बड़ा अटपटा लगा। आज उन्होंने एक बड़ी अपूर्व धुन पियानो पर निकाली थी और वे उसकी मादकता में रस-विभोर थे। उन्होंने बार-बार आइंस्टीन को सुधारने की कोशिश की; मगर हर बार आइंस्टीन चूके। श्नाबेल आगबबूला हो उठे—"तुम कभी नहीं सीख सकोगे....अरे, क्या तुम गिन भी नहीं सकते...एक...दो...तीन... एक हाँ, बजाओ तो... दो...तीन....अरे, भाई, एक के बाद तीन नहीं दो...दो।"

मगर आइंस्टीन फिर भी नहीं साध सके। आखिर क्रोध में साज छोड़कर श्नाबेल आइंस्टीन के पास आये और उनके कंधों को झकझोरते हुए बोले—"तुमने सारा गुड़ गोबर कर दिया.... महीनों के बाद यह धुन निकाल पाया था; मगर तुम....।"

सहसा श्नाबेल की नजर आइंस्टीन की आँखों पर गयी और वे पहचान गये कि, आइंस्टीन का मन वहाँ नहीं है, कहीं अंतरिक्ष में किसी समस्या के पीछे उड़ानें भर रहा है। वे बैठ गये और देखते रहे। आइंस्टीन निर्बाध वायलिन बजा रहे थे, उनके हाथ बाकायदा काम कर रहे थे; किंतु दिमाग कहीं खोया हुआ था। एक-दो मिनिट बाद जब उनकी प्रसुप्ति भंग हुई, तो श्नाबेल ने पूछा—"कहिये हजरत, कहाँ थे आप?"

आइंस्टीन मुस्करा दिये, बोले—"कुछ नहीं, गिनती दोहराने की कोशिश कर रहा था—तुमने कहा था, तो मुझे संदेह हो गया कि, शायद मुझे गिनती नहीं आती.... और बात यों हुई कि कोशिश करने पर भी मैं पंद्रह से आगे नहीं गिन सका।"

श्नाबेल अपनी हँसी नहीं रोक सके—"प्रोफेसर! कितने भी पढ़ लिये, तुम

आग्रह

...और उस दिन जब सवेरे-ही-सवेरे शाही बगीचे में गुलाब खिला, तो बुलबुल ने परम दीन भाव से याचना की—"मुझे जन्मभर के लिए गुलाम बना लो, मगर क्षणभर के लिए तुम्हारी यह मोहिनी मुसकान दे दो।" गुलाब और खिल गया; बोला—"मुसकान क्या दूँ, प्राण भी ले ले; मगर पलभर के लिए तेरा शर्बती कंठ मुझे दे दे!"

—महमूद तैमूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहे यार, बच्चे-के-बच्चे !"

× ×

कहते हैं कि उर्दू के प्रसिद्ध कथाकार मंटो को अंधेरे से बड़ा डर लगता था – वे अंधेरे में कभी खिड़की भी नहीं खोलते थे और जब सोते भी थे, तब भी कमरे की रोशनी बरकरार रखते थे। उनकी जवानी की बात है। एक रात को दोनों मियाँ-बीबी किसी बात पर झगड़ पड़े – लड़ाई तेज हो गयी और स्वभाव से ही अत्यंत भावुक मंटो क्रोध में काँपते हुए उबल पड़े – "हराम है तुम्हारे साथ जिंदगी बसर करना ! बहुत बरदाश्त किया मैंने। अब तो एक मिनट भी दोजख है। लो सम्भालो ! अपना घरबार। तंग आ गया ऐसी जिंदगी से ! तोबा: तुमने गजब कर दिया – अपने शौहर को आखिर फना करके ही चैन लिया ! तुम्हारी मंशा पूरी हुई....लो मैं खुद अपना खात्मा करके तुम्हारे रास्ते से हमेशा के लिए हट जाता हूँ।"

बेगम बेचारी आपा भूल गयी। वह मंटो के गुस्से से परिचित थी; मगर बात का ऐसा बतंगड़ हो जायेगा, उसे खयाल नहीं था। पागलों-से भागते हुए पति को उसने पकड़ लिया और जार-जार रोने लगी। मगर मंटो तो जैसे बागी तूफान हो गये थे। वे छुड़ा कर भागे। बेगम दरवाजे से सट कर खड़ी हो गयी। खींच-पकड़ के बाद भी जब मंटो बीबी को दरवाजे के सामने से न हटा सके, तो वे खिड़की की तरफ लपके। उनकी वाणी से आवेश की आग बरस रही थी –"अच्छी बात है। तुम कहाँ-कहाँ रोकोगी मुझे। मैंने जो जो सोच लिया, उसे कोई नहीं टाल सकता। मुझे नहीं चाहिए ऐसी गिरस्ती, ऐसी दुनिया। खुदा बचाये इस खौफनाक आदमखोर समाज से।"

बेगम के सामने अशुभ और अनिष्ट की कई भयावह कल्पनाएँ साकार हो उठीं– हाय ! अब क्या होगा। और वह मंटो के पाँव पकड़ कर माफियों-पर-माफियाँ माँगने लगी – "तुम्हारी कसम ! बच्चों की कसम। अब कभी ऐसा नहीं होगा। कुछ भी कहोगे, सुन लूँगी। सिर-आँखों चढ़ा लूँगी। अब के माफ कर दो....."

मगर मंटो तो जैसे पहाड़ी नाले की बाढ़ थे। उन्होंने पाँव छुड़ाते हुए झपट कर खिड़की खोली और जैसे ही नीचे कूदना चाहा, देखा कि चारों तरफ घोर अंधेरा छाया हुआ है। वे रुक गये, कुछ सोचने लगे....फिर पलंग पर लोथड़े की तरह जा पड़े – "बेगम ! वह खिड़की बंद कर दो ! तुम जीती मैं हारा !"

समीक्षक—जब कभी आपके बनाये चित्र देखता हूँ, सोचने लग जाता हूँ...
चित्रकार—यही न कि मैं इन्हें कैसे बनाता हूँ ?
समीक्षक—नहीं; यह कि आप इन्हें क्यों बनाते हैं ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तो हमें सही नाम सीख लेना चाहिए

लेखक : आचार्य धर्मेंद्रनाथ

क्या आपने कभी सोचा है कि, जब आप विदेशी राष्ट्रों के नामों का उच्चारण करते हैं, तो आपका उच्चारण सही होता है या गलत ? आम तौर पर हम दूसरे देशों के नामों को अँग्रेजी के अनुसार बोलते रहे हैं; और कुछ भारत-भक्त अपनी भक्ति के जोश में उन्हीं अँग्रेजी के नामों को खींच तान कर, संस्कृत जैसा बनाने का प्रयास करते रहे हैं। अभी कुछ दिनों पहले तक, कुछ क्षेत्रों में पराये नामों का संस्कृतीकरण या भारतीकरण करके बोलने की प्रथा थी। अफगानिस्तान के निवासी अपने को अफगान कहते हैं, तो हमारे पंडितों ने हमें सुझाव दिया कि, अफगान शब्द 'अपगान' का विकृत रूप है। इस एक झूठ को पचाने के लिये छत्तीस दूसरी झूठों का सहारा लेना पड़ा। "अपगान लोग किन्नरवंश से निकले हुए हैं। किन्नर जाति हिमालय में रहा करती थी और सामवेद के मंत्रों का शुद्ध गान करने के लिये विख्यात थी। अफगानिस्तान के वर्त्तमान निवासियों के पूर्वजों ने उस अपौरुषेय गान को प्राचीन प्रणाली से भिन्न रीति से गाना शुरू कर दिया। अतः किन्नरों ने उन्हें जाति-बहिष्कृत कर दिया और उन्हें 'अपगान' कहकर पुकारना प्रारम्भ किया। उन्हीं 'अपगान' लोगों के वंशजों ने बाद में इस्लाम स्वीकार कर लिया और वे ही आज के अफगान हैं।" यह हुई अफगान शब्द की व्याख्या।

इस दौर में ग्रीस 'गिरीश' हो गया। जर्मन 'शर्मनी' बल्कि 'शर्मणी' हो गया। तिब्बत 'त्रिविष्टप' और ईरान 'आर्यान' बना दिया गया। फ्रांसीसियों को भी अपने देश का शुद्ध उच्चारण नहीं आता ; उनके देश का नाम 'प्राण' देश है, जिसका अपभ्रंश उन्होंने 'फ्रांस' कर डाला है।

दूसरी ओर, अँग्रेजी शिक्षा से प्रभावित लोग विदेशी नामों की शुद्धता को यथापूर्व सुरक्षित रखने का आग्रह करते रहे। उनके लिये शुद्धता और प्रामाणिकता का मापदंड वह है, जो अँग्रेज बोलते हैं। अँग्रेज यदि भारत को 'इंडिया' कहते हैं, तो 'इंडिया' ही शुद्ध है। उनकी दृष्टि में स्वयं अपने देश में मथुरा, कालिकाता और मुम्बई के स्थान पर 'मद्रा', 'कैलकटा'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और बॉम्बे ही अभी तक प्रामाणिक हैं। अँग्रेजी उनके लिये, उसी प्रकार विश्वभाषा है, जिस प्रकार क्रांति-पूर्व के रूसियों के लिये फ्रांसीसी विश्वभाषा थी।

हमने 'जर्मनी' और 'शर्मणी' के झगड़े में यह जानने की कोशिश ही नहीं की कि, 'जर्मन' नाम से पुकारे जानेवाले लोग अपने देश को जर्मनी या शर्मनी ही कहते हैं या और कुछ।

अँग्रेज जिसे जर्मनी कहते हैं, स्वयं उस देश के वासी उसे 'डौइट्शलांट्' कहते हैं। अपने देशवासियों को 'डौइट्शे' कहते हैं और अपनी भाषा को 'डौइट्श'। डौइट्शे लोगों ने अपने देश को कभी जर्मनी कह कर नहीं पुकारा। यह तो वर्त्तमान अँग्रेजों के पूर्वज कैल्ट लोगों का दिया हुआ नाम है, जिससे वे अपने केन्द्रीय और उत्तरी यूरोप के सम्बन्धियों और पड़ोसियों को पुकारा करते थे। अँग्रेज और जर्मनों के पूर्वज मूलतः एक थे, यहाँ तक कि, अँग्रेजी राष्ट्र की मूल उपादान जातियाँ 'ऐंग्ल' और 'सेक्सन', डौइट्शलांट् के सेक्सनी जिले के आसपास से ही इंग्लैंड में जा बसी थीं। स्वयं 'जर्मनी' शब्द लैटिन के 'गैर्मानुस' से निकला है जिसका अर्थ है—'सम्बन्धी'।

इसी प्रकार 'डेनैन्' लोग (डेनिश नहीं) अपने देश को 'डनमार्क' कहते हैं, (डेनमार्क नहीं) और अपनी भाषा को 'डान्स्क'।

स्वीडनवासी अपने देश को 'स्वैरीख' कहते हैं और भाषा को 'स्वैन्स्क'।

'नूरमैन' लोग (नॉर्वेजियन नहीं) अपने देश को 'नौरिके' कहते हैं (नॉरवे नहीं) और अपनी देशभाषा को 'नौर्स्क'।

'फ्रांसेय्' लोग अपने देश को 'फ्रौंस' कहते हैं (फ्रांस नहीं) और अपनी भाषा को 'फ्रान्सेय्'। न उर्दूवालों की तरह 'फरॉंसीसी', न अँग्रेजों की तरह 'फ्रेंच'।

'इतालियानी' लोग (इटैलियन नहीं) अपने देश को 'इतालिया' कहते हैं (इटली नहीं) और भाषा को 'इतालियानो'। उर्दू-वालों ने इतालियानी लोगों और उनकी इतालियानो भाषा के लिए देहलवी, बरेलवी की तुक पर 'इतालवी' गढ़ा है

रूप

मुझे उस घड़ी का जब स्मरण होता है, तो वास्तव में, मैं सिहर उठता हूँ; जब कि मैंने वाणी और अर्थ को सृष्टि के आदिकाल में इस प्रकार विवाद करते सुना था। वाणी ने कहा था—"थक गयी हूँ, तुम्हें व्यक्त करते-करते, कभी तो पूरे व्यक्त हो जाओ मेरे कंठ से—कब के भटका रहे हो, अपने रूप की परिधि के आसपास ?" अर्थ ने रहस्यमयी मुस्कान में उत्तर दिया—"सरले ! क्या कहती है ! अरी, व्यक्त होकर रूप, क्या रूप रह भी जायगा ? अव्यक्त ही तो महिम है।" —'श्रीश्री'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो 'इटैलियन' जैसा ही अशुद्ध है। यहाँ उल्लेखनीय है कि, ग्रीक लोगों से प्रभावित होकर लैटिन-भाषी प्राचीन रोमवासियों ने दुनिया भर के देशों को 'इया' प्रत्ययान्त नाम दे डाले हैं; इंडिया, ऑस्ट्रिया, गॉलिया, यूगोस्लाविया, अल्बानिया आदि। उनकी भाषा में 'इया' प्रत्यय लग कर देशवाचक संज्ञा बनती है; इसलिए 'इतालिया' नाम तो हमें मान्य है; लेकिन दूसरे देशों के नाम के प्रसंग में हमें प्रत्येक देश का स्वकीय उच्चारण ही मान्य करना चाहिए।

आस्ट्रिया नाम से ज्ञात देश के लोग 'डौइट्श' भाषा बोलते हैं और उन्हीं की नस्ल से सम्बंधित हैं। वे स्वयं अपने देश को 'डौइट्शलांट्' का पूर्वीय भाग मानते हैं और अपने देश को 'उइस्टर राइश' (पूर्वीय राज्य) कहते भी हैं। ऐसी अवस्था में रोमनों या अँग्रेजों को क्या अधिकार है कि, उनके देश को लैटिन प्रत्यय लगाकर 'ऑस्ट्रिया' बना दें। हाँ, जिन देशों ने अपने लिये स्वेच्छा से 'इया' प्रत्ययांत नाम मान लिये हैं (जैसे यूगोस्लाविया आदि) उनकी बात दूसरी है।

अँग्रेज जिसे 'स्पेन' कहते हैं, उस देश के लोग अपने देश को 'ऐस्पान्या' कहते हैं। (इस उच्चारण में 'न्' लघु-प्रयत्नतर है। संस्कृत के उच्चारण के ढंग से इसमें 'न्' पर जोर देकर 'ऐस्पान्न्या' जैसा नहीं बोलना है, बल्कि 'न्' और 'न्' के बीच में ऐसी कोमलता के साथ उच्चारण करना है, मानो वह एक अनुनासिक स्वर हो।) ऐस्पान्या के निवासी अपने को 'ऐस्पान्यौलैस' कहते हैं—स्पेनियर्ड या स्पेनिश नहीं; और अपनी भाषा को 'ऐस्पान्यौल' या 'कास्तेल्ल्यानो'।

अँग्रेज लोग हालैंड और बेल्जियम दोनों को मिलाकर 'नीदरलैण्ड' कहते हैं। लेकिन स्वयं उस अंचल में 'नीदरलौंड' नाम से (नीदरलैंड नहीं) केवल 'हॉलैंडस' (हॉलंडवासी) लोगों के देश का बोध होता है, और जो कि 'नीदर

कृषि-पर्व

[चित्र : एक प्राचीन भित्ति-चित्र]

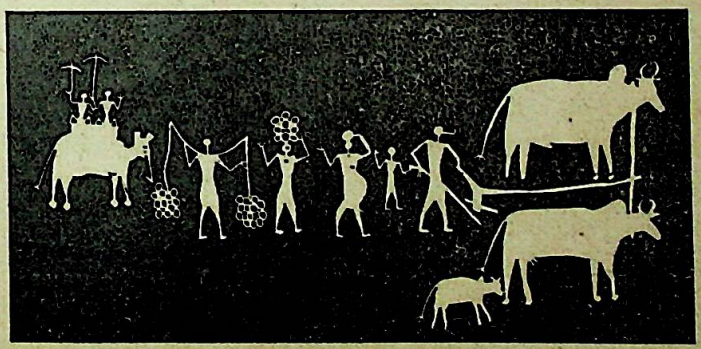

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लौंड्स' भाषा बोलते हैं।

बेल्जियम नाम से ज्ञात देश के लोग अपने देश को 'बैल्षीऐं' कहते हैं। (इस प्रसंग में यह स्मर्त्तव्य है कि, मूर्धन्य 'ष' का उच्चारण शुद्ध रूप में केवल यूरोप की आर्यभाषाओं में, जैसे डौइट्शे, नौर्स्क आदि में ही रह गया है। हमारे यहाँ 'पुरुष' के 'ष' का उच्चारण या तो 'श' की तरह होता है या 'ख' की तरह (पुरुश, पुरुख), जब कि 'ष' का उच्चारण जीभ को मूर्धा की ओर मोड़कर 'ख्ह' जैसा किया जाना चाहिये। आर्यों की यूरोपीय शाखाओं ने रोमन जैसी अपूर्ण लिपि में भी 'ष' का उच्चारण शुद्ध रखा है और हम नागरी-जैसी सर्वाधिक पूर्ण लिपि पाकर भी 'ष' को 'श' में मिला बैठे। यद्यपि उसके लिये 'श' से भिन्न संकेत हमारी लिपि में मौजूद है।) बैल्षीऐं देश में दो भाषाएँ चलती हैं। चालीस प्रतिशत 'वैल्हन' जनसंख्या (बेल्जियन नहीं) शुद्ध फ्रांसेय् भाषा बोलती है और साठ प्रतिशत 'व्लाम्स' भाषा, जिसे अँग्रेज लोग 'फ्लेमिश' कहते हैं। ब्लाम्स भाषा वस्तुतः नीदरलौंड्स या डच भाषा ही है, लेकिन फ्रांसेय् प्रभाव ने उसे थोड़ा कोमल कर दिया है। और इसी फ्रांसेय् प्रभाव के कारण यह उच्चारण आदि के लिहाज से अपनी भगिनी भाषा 'नीदरलौंड्स' से काफी दूर भी जा पड़ी है। यहाँ की फ्रांसेयभाषा-भाषी जनसंख्या 'फ्रौंस' वासियों की ही भाँति अपने देश को 'बैल्षीऐं'के स्थान पर 'बेल्जीक' और देश-वासियों को 'बैलस्हन' के स्थान पर 'बेल्ज' भी कहती है। लेकिन शनैः शनैः फान्सेय् प्रभाव कम हो रहा है।

तुर्क लोग अपने देश को न अँग्रेजों की तरह 'टर्की' कहते हैं न ईरानियों की तरह 'तुर्किस्तान' बल्कि 'तुर्किय' कहते ह, अपनी भाषा को 'तुर्कचे' (टर्किश नहीं) और अपनी जनता को 'तुर्क'। शताब्दियों तक अरबों के रंग में रँगे रहने पर भी, तुर्कीय ने जिस शीघ्रता और प्रूर्णता से अपने को विदेशी प्रभाव से मुक्त कर लिया है, वह एक ऐतिहासिक आश्चर्य की वस्तु है। जिस अरबी भाषा ने तुर्कचे का वास्तविक विकास सैकड़ों वर्षों तक रोके

नाम

नाम के आकर्षण से बढ़कर भी क्या कोई आकर्षण है? नाम के अक्षरों में अनुराग का जो समुद्र लहरा रहा है, क्या उसकी सीमा को कोई माप पाया है... इस जगत् में मैंने दो सार पाये– रूप और नाम! रूप देह के साथ मर जाता है; किंतु नाम कभी नहीं मरता– हवा के हर पृष्ठ पर वह बोलता है और अंतिम काल-रात्रि तक बोलता रहेगा– नाम मौन हो गया, तो सब मौन है! नाम ही तो परम माहात्म्य है! — क्षितिमोहन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखा, उसका अब एक-एक शब्द तुर्कचे में से निकाल दिया गया है।

जिस प्रकार 'जर्मनी' नाम 'डौइट्शलाण्ट्' उसके पड़ोसियों का दिया हुआ है, उसी प्रकार 'हंगेरी' नाम भी उसके पड़ोसियों का दिया हुआ है। मध्य एशिया की लड़ाकू 'मग' जाति की एक शाखा नवीं शताब्दी में डेन्यूब नदी के पूर्वीय तटों पर जा बसी थी। डौइट्शे लोगों के नागरिक पूर्वजों ने उन्हें घृणा से 'उंगारन' (भूखे) लोग कह कर पुकारा। बाद में यह नाम यूरोप में रूढ़ हो गया। लेकिन स्वयं मग लोग अपने देश को 'माज्यर ओरसाग' कहते हैं, अपनी भाषा को 'माज्यर' और अपने देश वासियों को 'माज्यर ऐम्बर'।

मौन अर्पण

[चित्र : रामचंद्र शुक्ल-निर्मित स्केच]

पोल लोग अपने देश को 'पोल्स्का' कहते हैं (पोलैंड नहीं) और भाषा को 'पोप्पौल्स्की'।

रूमानिया का उच्चारण स्वयं उसके देशवासी 'रौमैनिया' करते हैं ('नि' में इकार अनुदात्त है) अपनी भाषा को 'लिम्बा रोमेना' (रोमेना भाषा) कहते हैं और अपने देशवासियों को 'रौमैनी' कहते हैं। न कि, 'रूमानियन'।

चेकोस्लोवाकिया का सही और पूरा नाम 'चेस्कोस्लोवैंस्का रैपुब्लिका' है। उनके देश में दो जातियों के लोग रहते हैं, जिनमें ७५ प्रतिशत 'छेशी' हैं; (चेक नहीं) जो 'चैरकीयाजी' भाषा बोलते हैं। शेष २५ प्रतिशत लोग 'स्लोवात्सी' हैं, (स्लोवाक नहीं) जो 'स्लोवैन्स्कीयाजी' भाषा बोलते हैं।

जिसे अँग्रेजी में 'रशिया' कहा जाता है, उसका पूरा नाम गण-तन्त्र बनने के बाद इतना लम्बा हो गया है कि, उसके पूरे अँग्रेजी अनुवाद में प्रथमाक्षरों का प्रयोग करना पड़ता है। 'रूस्कीयाजिंक' या रूसी भाषा में उसका पूरा नाम है; 'सोयूज सोवियेत्स्किह सोसिअलिस्तिचेस्किह रैस्पूब्लिक'। रूस्की लोग अपने देश को पहले की तरह 'रूसिया' कहलाना पसन्द नहीं करते; क्योंकि उसमें रूस्की लोगों के अलावा, दुसरे गणतंत्र भी बराबर के हिस्सेदार हैं। रूसी भी उन्हीं की तरह एक गण हैं। अतः 'रूसिया' नामकरण से दूसरे गणों में उनके प्रति कुछ अवांछनीय और गलत प्रतिक्रिया हो सकती है। अतएव हमें भी रूस्की लोगों की ही भाँति उनके देश को 'सोयूज़ सोवियेत्स्किय्' या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'सोवियत संघ' कहना उचित है।

सहस्राब्दियों से हम चीन से परिचित रहे हैं। रेशम, प्राचीन समय में चूंकि चीन से आता था, इसलिये संस्कृत भाषा में रेशम को चीनांशुक (चीन का कपड़ा) कहते थे। सम्भवतः हमारे उच्चारण के ही आधार पर अरब में चीन का 'सिना' और वहाँ से ग्रीस में 'सिनाइ' हो गया। यही उच्चारण बिगड़ते-बिगड़ते कहीं चीना (ऐस्पान्या में), कहीं 'चाइना' (इंग्लैंड में), कहीं 'शीन' (फ्रौंस में), कहीं 'खीना' (डौइट्शलाण्ट् में) और कहीं 'कीना' (यूगोस्लाविया में) हो गया। स्वयं चीनी अपने देश को 'चुङ' या 'चुङ्-कोआ' कहते हैं। (गणतंत्र बनने के बाद चीन का पूरा नाम है—'चुङ व्हारैनमिम् कुङ ह कोआ') चीन-वासी अपने आपको चीनी नहीं कहते, बल्कि 'हानजू' कहते हैं और अपनी भाषा को 'हान्'। चिरकाल से हमने 'चुङ' का उच्चारण बिगाड़ कर 'चीन' कर रखा है, इसलिये पुरानी आदत शायद जल्दी न बदली जा सके। लेकिन साथ ही हमें यह जानकारी तो होनी ही चाहिये कि, चीनी अपने देश को 'चुङ्कोआ' (चुङराष्ट्र) कहते हैं; चीन नहीं।

चीन की तरह 'जापान' भी नामकरण भारतीयों का नहीं है। इसका श्रेय यूरोपियन मल्लाहों को है। जापानी लोग (उनकी भाषा में 'निहोंजिन' लोग) अपने देश को 'निप्पों' या 'निप्पन' कहते हैं। विदेशी मल्लाहों की बोली में यह क्रमशः 'निप्पन, 'यिपन', 'जपन' आदि अवस्थाओं से गुजरता हुआ; कहीं 'यपोनिया' (रूस में), कहीं 'हापौन' (ऐस्पान्या में), कहीं 'जापान' (इंग्लैंड में) आदि के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। भारत में विदेशी उच्चारण, चूंकि अँग्रेजी के माध्यम से स्वीकार किये गये; इसलिये जापान के दूसरे सारे रूपों से, यहाँ तक कि, मूल रूप में 'निप्पन' तक से, हम अपरिचित रह गये।

बर्मा-वासी अपने देश को 'म्यम्मा' कहते हैं, जिसका उच्चारण 'ब्यमा' भी होता है। अपनी भाषा को वे लोग 'म्यम्मा जगा' और देशवासियों को 'म्यम्मा ल्युम्यो' कहते हैं। हमारे पूर्वजों ने भले ही इस देश का नामकरण 'ब्रह्मदेश' किया था, लेकिन जब वहाँ के आधुनिक निवासी अपने देश को 'ब्यमा' कहते हैं; तो हमें उन्हीं का नाम मान्य करना है। न ब्रह्मदेश, न बर्मा।

स्याम देशवासी अपने देश को 'प्रदेशथाइ' कहते हैं, भाषा को 'फासाथाइ' और निवासियों को 'खोन् थाइ'। इनकी 'फासा-थाइ' में सारे पारिभाषिक शब्द संस्कृत या पाली से ही लिये जाते हैं। विदेशी शासन से मुक्ति पाने के बाद; थाइ देशवासी थाइ के साथ 'लैंड' तक बर्दाश्त नहीं कर सके। शायद इन्हें खबर नहीं हुई कि, अँग्रेजी विश्व-भाषा है।

लाओस वासी अपने देश को 'लाओस' या 'लाओस भूमि' कहते हैं, भाषा को 'फासालाओ' और देशवासियों को 'लाओ'।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह भी संस्कृत-पाली-बहुल प्रदेश है।

संस्कृत भाषा में जिसे 'कम्बोज' या 'कम्बुज' कहा जाता है; उसका वर्त्तमान नाम 'कम्पुचिया' है। कम्बुज का ही स्थानीय उच्चारण 'कम्पुच' होकर और उसमें लैटिन प्रत्यय 'इया' लगकर 'कम्पुचिया' रूप निष्पन्न हुआ है। लेकिन इस विवेचना का महत्त्व इस शब्द के रूप विकास की प्रक्रिया तक ही सीमित है। इस देश के उच्चारण के प्रसंग में हमें परदत्त रूपों—कम्बोज और कम्बोडिया—के स्थान पर 'कम्पुचिया' को ही मान्य करना चाहिये। कम्पुचिया वासी अपने को 'ख्मेर' और भाषा को 'फासाख्मेर' कहते हैं। यहाँ भी संस्कृत और पाली की विरासत पर लोगों को अभिमान है।

इंडोनेसिया को हमारे कुछ सुधारवादी थोड़े दिनों से 'हिन्देशिया' कह कर पुकारने लगे हैं। लेकिन वहाँ वालों ने, जब यूरोपियनों का दिया हुआ, 'इंडोनेसिया' (द्वीपस्थ भारत) नाम मंजूर कर लिया है, तो हमें भी वही स्वीकार करना है। इंडोनेसिया की भाषा का नाम है 'भासा इंडोनेसिया' और देशवासियों को 'औरांग-इंडोनेसिया' कहा जाता है।

संस्कृत भाषा में 'मलय' नाम से उल्लिखित देश के वासी अपने देश को 'ताना मैलायु' ('स्थान में लायु' का परिवर्तित रूप), अपनी भाषा को 'बहासा मैलायु' और देशवासियों को इंडोनेसियावालों की तरह 'औरांगमलाया' कहते हैं। यहाँ की भाषा पर संस्कृत और पाली का प्रभाव इंडोनेसिया की भाषा के माध्यम से पड़ा है। यहाँ मुख्यतया चार भाषाएँ बोली जाती हैं—इंग्लिश, तमिल, चीनी, और 'बहासा मैलायु'।

'श्री लंका' का अँग्रेजी उच्चारण 'सीलोन' है। यह 'सीलोन' नाम भले ही 'लकवासिया' (लंकावासी) लोगों को मंजूर न हो; लेकिन है तो अँग्रेजों का दिया हुआ; इसलिये हमारे अँग्रेजी धुरंधरों को इष्ट है। यहाँ दो भाषाएँ बोली जाती हैं। पाली भाषा की पुत्री 'सिंहल' और प्रवासी दक्षिण भारतीयों की भाषा, 'तमिल'।

आज आवश्यकता इस बात की है कि, ऐसी राष्ट्रीय ऐटलसें प्रकाशित करायी जायें, जिनमें राष्ट्रों, राजधानियों एवं नगरों के अब तक प्रचलित नामों के साथ-साथ, सभी देशों के स्वकीय नामकरण के अधिकार को भी मान्य किया गया हो, जिनमें अँग्रेजी के मौस्को, पेरिस, बेलग्रेड, प्रेग, डैल्ही, ओस्लो, बर्लिन, वारसा, मैड्रिड, पेकिङ, बुखारेस्ट आदि नामों के साथ-साथ मौस्क्वा, पारी, बेओग्राद, प्राहा, दिल्ली, ऊस्लो, ब्रैर्लीन, वार्शावा, मद्रीद, पेचिङ, बुकुरैश्ति आदि तत्तद्देशीय लोगों के अपने-अपने सही उच्चारण का भी उल्लेख किया गया हो। निश्चिततः यह हमारे और दुनिया के सभी राष्ट्रों के बीच में प्रियतर एवं निकटतर सम्बंधों की स्थापना की ओर, एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कदम होगा।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने भी पराये लगते हैं

असगर गोंडवी ने एक जगह फ़रमाया है—"दैरो-हरम भी कूचे-ए जानाँ में आये थे—पर शुक्र है कि बढ़ गये दामन बचा के हम।" इसी बेहतरीन शेर की व्यंग्यात्मक मुद्रा कन्हैयालाल कपूर के इस हास-उपहास-पूर्ण प्रबंध में देखिये।

★

एक ज़माना था, जब मेरे सभी दोस्त मेरे बारे में कहा करते थे– "ग़ज़ब की याद्दाश्त पायी है आपने। बरसों की बात आपको इस तरह याद रहती है; जैसे वह कल की ही हो।"

गैर-तो-गैर, खुद हमें अपने हाफ़्ज़े पर रश्क आया करता था; मगर आज यह हाल है कि, कभी-कभी दोपहर के वक्त भी सोचना पड़ जाता है कि, सुबह का नाश्ता कर लिया है या अभी करना है। सिगरेट जो सुलगाने के लिये निकाला था, मुँह में रख लिया है या फिर सिगरेट-केस में रख दिया है। जिस दर्ज़ी से कमीज की माँग कर रहे हैं, यह वही है– जिसे कपड़ा लाकर दिया था, या उससे मिलता-जुलता कोई दूसरा है। खैर, ये मामूली परेशानियाँ हैं, इन्हें उठाया जा सकता है। लेकिन इसका अब क्या किया जाये कि, आये दिन कोई जानी-पहचानी सूरत सवालिया निशान बन कर सामने खड़ी हो जाती है और पूछती है–"मुझे पहचाना?"

उस वक्त यह हाल होता है कि, काटो तो लहू नहीं बदन में। लाख हाफ़्ज़े को कुरेदते हैं कि, इन हज़रत से कहाँ मुलाकात हुई थी। बम्बई में? कलकत्ते में? या शायद देहली में? लेकिन इन शहरों में तो सैकड़ों आदमियों से मिले थे। तो फिर, ये कौन हो सकते हैं? अच्छा, तो ये वह हैं; जिनसे एक बार राह चलते कलकत्ता यूनिवर्सिटी का रास्ता दरयाफ्त किया था। लेकिन, ये बंगाली तो मालूम नहीं होते। तो फिर वही होंगे; जिन्हें एक बार किसी मुशायरे में सुना था। या शायद? उफ कुछ समझ में नहीं आता। इसलिये झूठमूठ कह देते हैं–"हाँ साहब, क्यों नहीं पहचाना। भला आपको कैसे भूल सकते हैं?" उखड़ा-उखड़ा लहजा साफ बता रहा है कि, हम हिकमते-अमली से काम ले रहे हैं। आखिर सामने वाला भी इतना कम समझ नहीं कि, वह हमारी घबराहट को भाँप न सके। इसलिये वह फौरन पूछता है–"भला बताइये तो हम कौन हैं?"

अब इस सवाल का क्या जवाब दिया जाये; यानी—

पूछते हैं वह कि गालिब कौन है?
कोई बतलाये कि हम बतलायें क्या?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर यह जानते कि, आप कौन हैं; तो हाथ मिलाते वक्त ही न बतला देते। एक बार फिर उनके चेहरे की तरफ गौर से देखने के बाद हम कहते हैं—"अगर हम गलती नहीं कर रहे हैं, तो आप हमारे उस्ताद मौलवी रमज़ान अली हैं। हम आप से आठवीं जमाअत में फारसी पढ़ा करते थे।"

"हा! हा! हा! मौलवी रमज़ान अली! खूब पहचाना आपने! अजी हज़रत, मैं तो आपका शागिर्द कुरबान अली हूँ। मैं आपसे दसवीं जमाअत में अँग्रेजी और जुगराफिया पढ़ा करता था।"

"आहा? कुरबान अली। हाँ, भाई, तुम वाकई कुरबान अली हो। लेकिन उस वक्त तुम्हारी दाढ़ी नहीं हुआ करती थी। ठीक बात है ना?"

फलवाली

[चित्र : आर० के० लक्ष्मण-निर्मित स्केच]

"जनाब, उस वक्त उम्र ही क्या थी, जो दाढ़ी होती। उस वक्त, तो मैं बच्चा था।"

"बिल्कुल ठीक है, लेकिन अब तो आप खासे बुजुर्ग नज़र आते हैं। शायद दाढ़ी की बदौलत।"

"इस दाढ़ी का भी अजीब किस्सा है साहब! एक बार मेरा सेफ्टी रेज़र गुम हो गया। दूसरा खरीदने का मकदूर न था। मैंने फैसला किया कि, आइन्दा शेव नहीं किया करूँगा। बस, उसी दिन से जो दाढ़ी ने बढ़ना शुरू किया, अब तक बराबर बढ़ती चली जा रही है।"

वह चले जाते हैं और उनकी गैर-हाज़िरी में अपने हाफ्ज़े का मातम करने को जी चाहता है। कुरबान अली को मौलवी रमज़ान अली मरहूम से खल्त-मल्त कर बैठे। ओफ्! कितनी गलती हुई।

चन्द दिनों के बाद गाड़ी के इंतजार में प्लेटफार्म पर टहल रहे हैं कि, किसीने निहायत वेतकल्लुफाना अन्दाज़ में हमारा नाम पुकारते हुए कहा—"मैंने कहा चोपड़ा साहब! एक नज़र इधर भी!"

हैरानी के आलम में हम एक अजनबी से पूछते हैं—"क्यों साहब! आपने हमें आवाज़ दी?"

वह मुस्कराकर जवाब देता है—"जी हाँ, अगर आपका नाम बाबू गणेशदास जी चोपड़ा है, तो!"

फौरन समझ जाते हैं कि, यह शख्स हमें जानता है। लेकिन हम उसे नहीं पहचानते। वह हमारी घबराहट से लुत्फअन्दोज़ होते हुए फिर कहता है—"अगर आप मुरादाबाद के चौरासी घंटा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुहल्ले के रहने वाले हैं तो...।"

यह तो ठीक कहता है। रहनेवाले तो हम मुरादाबाद ही के हैं।

"अगर आपके छोटे भाई का नाम मोतीसागर है तो...।"

यह भी दुरुस्त है।

"अगर आप लखनऊ यूनिवर्सिटी में पढ़ते रहे हैं तो...।"

या इलाही, यह शख्स तो गैब का इल्म जानता है। अभी-अभी कहेगा– "अगर आपकी बीवी का नाम रंजना देवी है तो... अगर आपके सात बच्चे हैं तो... अगर आप की उम्र सत्तावन साल है तो।" लेकिन यह है कौन? हमारी तो इससे यह पहली मुलाकात मालूम होती है। वह एक बार फिर मुस्कराकर पूछता है– "कहिये अब आपने पहचाना हमें?"

"जी हाँ–पहचान लिया!"

"तो फिर बताइये, हम कौन हैं?"

"आप हमारे खयाल में, बनारस के महशूर ज्योतिषी रंगबिहारी लाल हैं– कि जो जन्मपत्री देखे बगैर भूत, वर्तमान और भविष्य की तमाम बातें सूरत देखते ही बता देते हैं।"

"वाह! चोपड़ा साहब वाह! इतनी जल्दी भूल गये। अजी हम रंगबिहारी नहीं, श्याममुरारी हैं। सन् १९४० में आप श्रीनगर में अपने भाई मोतीसागर के साथ हमारे होटल में ठहरे थे।"

इतने में गाड़ी आ जाती है। हम श्याममुरारी से इज़ाज़त लेकर एक डब्बे में दाखिल हो जाते हैं और अपनी सीट पर बैठकर सोचते हैं–यह श्याममुरारी भी अजीब किस्म के होटल प्रोप्राइटर हैं। सन् १९४० में हमें ज़रूर मिले थे। लेकिन बीस साल की बात है। इसपर फरमाते हैं–इतनी जल्दी भूल गये। उँह! जैसे बीस बरस का अरसा मामूली अरसा होता है!

मगर गाड़ी में ज्यों ही हम सामने वाली सीटों पर नज़र दौड़ाते हैं–एक शख्स हमारी तरफ घूर-घूर कर देख रहा है। उम्र में हमसे पांच साल छोटा, चाँद अंडे की तरह साफ-शफ्फाफ, आँखों पर मोटे-मोटे शीशोंवाली ऐनक। दो एक मिनट के बाद, वह हमारी तरफ लपक कर कहता है–"मेरे खयाल में आप प्रोफेसर चोपड़ा हैं।"

हम बड़ी बेरुखी से जवाब देते हैं–"जी

अनुभूति

अपने एक-एक साँस में मैंने,
उम्रभर का अजाब देखा है;
ज़िंदगी की हरेक करवट में,
इक नया इन्कलाब देखा है।
उजड़े दिल में उम्मीद का आलम,
जैसे जंगल में जल रहा हो दिया;
नौजवानी थी ज़िंदगी दरअस्ल,
यूँ में जीने को सारी उम्र जिया।

—अख़्तर अन्सारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हा, आपका खयाल दुरुस्त है।"

"आपने शायद मुझे पहचाना नहीं।"

हम नफी में सर हिलाते हैं।

"ज़रा कोशिश कीजिये। आप मुझे जानते हैं।"

"कुछ अता-पता बताइये, तो कोशिश करें।"

"कलकत्ते में मुलाकात हुई थी।"

"कब?"

"सात बरस की बात है।

"अच्छा, हाँ, हाँ, समझ गये। तो आप हैं! कहिये, आपकी वह फिल्म मुकम्मल हो गयी?"

"कौन-सी-फिल्म?"

"वही, क्या नाम था उसका, लैम्प का जादू!"

"नहीं, नहीं, जादू का लैम्प!"

"जादू का लैम्प? यह आप क्या फरमा रहे हैं?"

"तो कुछ और नाम होगा। बहर हाल वह मुकम्मल हो गयी है न?"

"लेकिन साहब, मैं फिल्म लाइन में नहीं हूँ।"

"फिल्म लाइन में नहीं हैं? तो क्या आप, डायरेक्टर घोष नहीं हैं?"

"अजी कहाँ डायरेक्टर घोष, कहाँ एक मामूली पोस्टमैन!"

"मामूली पोस्टमैन?"

"जी हाँ, मैं अजयकुमार पोस्टमैन हूँ। टालीगंज में जहाँ आप ठहरे थे, मैं आपकी डाक लाया करता था। पूजा की छुट्टियों में आपने मुझे इनाम भी दिया था।"

"हाँ, हाँ, बिल्कुल! बिल्कुल! आप अजय कुमार हैं। माफ कीजिये मुझे मुगाल्ता इसलिये हुआ कि, डायरेक्टर घोष भी आपकी तरह.....।"

"हाँ, हाँ, गंजे हैं।"

"लेकिन ये आप (एकदम) गंजे कैसे हो गये? उस वक्त तो आपके सर पर काफी बाल थे।"

"यह सब नज्ले की मेहरबानी है साहब! पिछली गर्मियों में सब उसी के कारण बाल झड़ गये।"

"ओहो! बड़े अफसोस की बात है। इन गर्मियों में खयाल रखियेगा।"

"जी?"

"कुछ नहीं, वैसे और तो खैरियत है ना?"

"जी हाँ! जी हाँ!"

"इतने में गाड़ी एक स्टेशन पर रुकी। अजय कुमार 'जयहिन्द' कहकर रुख्सत हुए और हम गंजेपन की करामात पर गौर करने लगे; जिसकी बदौलत सब गंजे एक से नज़र आते हैं।

बारहा, यों भी होता है कि, सड़क पर चलते हुए हमने किसी शख्स को देखा और उसके करीब जाकर कहा—"आदाब-अर्ज़ है। कहिये आप कब तशरीफ लाये?"

उसने हमें बिल्कुल न पहचानते हुए कहा—"माफ कीजिये! आपको मुगाल्ता हुआ।"

हमने फौरन कहा—"अजी, हमें बना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहे हैं आप! ठीक है। बहुत बड़े अफसर जो ठहरे।"

"मैं आपका मतलब नहीं समझा।"

"हाँ जनाब, अब आप हमारा मतलब क्यों समझने लगे। गवर्नमैंट कालेज के प्रिंसिपल जो हुए।"

"गवर्नमेंट कालेज के प्रिंसिपल! यह आपसे किसने कहा?"

"अजी कहना किसने था। अखबार में जो छपा था कि, पहली फरवरी से आप प्रिंसिपल बना दिये गये हैं।"

"जी, वह कोई और साहब होंगे।"

"जी नहीं, हमने खुद पढ़ा था कि, रियाज़ अहमद प्रिंसिपल मुकर्रर किये हैं।"

"माफ कीजिये, मैं रियाज़ अहमद नहीं हूँ।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"क्योंकि मेरा नाम अहमद अली है और मैं म्युनिसिपैलिटी में क्लर्क हूँ।"

"ओह! बड़ी गलती हुई। माज़रत चाहता हूँ।"

"कोई बात नहीं! ऐसा अक्सर हो ही जाता है।"

वह चला जाता है और हम अपना-सा मुंह लेकर रह जाते हैं और सोचते हैं कि, वह वक्त करीब आ रहा है, जब हर शख्स पर हमें किसी दूसरे शख्स का धोखा हुआ करेगा। कितनी मज़हकाखेज़ (हास्यास्पद) सूरतेहाल होंगी; जब मिसाल के तौर पर हम किसी नावाकिफ औरत से कहेंगे—

"नमस्ते भाभी! कहिये मिजाज़ कैसा है?" और वह खश्मआलूद (क्रुद्ध) निगाहों से हमारी तरफ देखते हुए जवाब देगी—

"शर्म नहीं आती आपको, राह चलती औरतों से मज़ाक करते हैं!"

ऐसी हालत में बचाव की सिर्फ यही सूरत है कि, अइन्दा किसी को पहचानने की कोशिश ही न करें। हर मुलाकाती से दुआ-सलाम करने के बाद कह दिया करें—"जनाब! हमसे यह उम्मीद मत कीजिये कि, हम आपको पहचान लेंगे। दर असल, बहुत दिन तक ज्ञान की गहराई में डूबे रहने की वजह से, बीनाई इस कदर कमज़ोर हो गयी है कि, गैर-तो-गैर, अक्सर हम अपने को भी नहीं पहचान सकते—

हो गये मुज्महिल कवा गालिब,
अब अनासिर में एतदाल कहाँ।

—गालिब कहता है कि, शरीर के अंग-प्रत्यंग कमज़ोर हो चुके हैं; अब पंचतत्त्वों में संतुलन आने से रहा!

*

एक दिन कवि इंशा नंगे सिर बैठे खाना खा रहे थे। नवाब आसफ उद्दौला अचानक आये, इंशा के सिर पर चुपके-से एक धौल जमा दिया। इंशा समझ गये कि, मजाक नवाब साहेब ने किया है। वे सिर को सम्भालते हुए बोले— "हुजूर, बुजुर्गों ने ठीक ही कहा है कि, नंगे सिर खाना न खाओ, नहीं तो शैतान वार कर बैठता है।

— अब्बासी

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषकन्या

रक्त के हर बिंदु में जो सागरों का माधुर्य-मोहन प्राणान्वित करती आयी है, उस नारी को 'विष-कन्या' के जघन्य रूप में अधःपतित करना, वस्तुतः राजनीति की ही क्रूर दुटिलता हो सकती है। प्रस्तुत लेख में श्री गौरीशंकर गुप्त ने विषकन्या को इतिहास के ऐसे ही पट-परिवर्तनों पर परखने का प्रयत्न किया है।

इतिहास-प्रसिद्ध घटना है कि, औरंगजेब ने एक बार बीकानेर नरेश जसवंत सिंह को खिलअत (राजसी पोशाक) भेंट की थी और उसे धारण करते ही, वह व्याकुल हो उठे थे—उनके सम्पूर्ण शरीर में जलन होने लगी थी।

पुस्तक के माध्यम से विष-प्रयोग का एक विचित्र और रोमांचकारी उदाहरण है। एक बार तत्कालीन राजा ने यूनानी ऋषि डरब पर मिथ्यारोप लगा कर, उसको मौत के घाट उतार दिया। अंतिम समय ऋषि ने एक विलक्षण प्रयोग कर, लोगों को चकित कर दिया—बदला ले लिया। उसने राजा को एक पुस्तक भेंट में देते हुए कहा—"तूने मुझे मृत्युदंड दिया है, मैं तुझे एक पुस्तक भेंट करता हूँ। इसके तीन पृष्ठों को खोल और बायीं ओर की तीन पंक्तियों को पढ़। मेरा कटा हुआ सिर, तेरे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देगा।"

ऋषि का कटा सिर एक थाली में रख दिया गया। रक्त-प्रवाह रोकने के लिये उसपर एक प्रकार की बारीक वस्तु छिड़क दी गयी। सिर ने राजा से कहा—"अब तू पुस्तक के पृष्ठ खोल।" जब राजा पुस्तक के पृष्ठ खोलने लगा, तो उसने देखा कि, पृष्ठ आपस में सटे हुए हैं। उँगली में लार लगा कर उसने काफी परेशानी के बाद छः पृष्ठ खोले और तब देखा कि, पुस्तक के पृष्ठ बिलकुल रिक्त हैं, उन पर कुछ भी अंकित नहीं है। यह कहने पर पुनः सिर बोला—"अभी कुछ और पृष्ठ खोलो।" राजा ने पुनः उक्त विधि से तीन पृष्ठ खोले। पुस्तक के पृष्ठ विषमय थे और शनैः शनैः राजा के शरीर पर विष का तीव्र प्रभाव हुआ। वह वहीं समाप्त हो गया।

जयपुर नरेश माधोसिंह के दत्तक पुत्र, सवाई माधो सिंह के पास पन्ने की एक तश्तरी और पन्ने का ही एक गिलास था। उनके पास खाने के लिये आनेवाली सामग्री की परीक्षा, उक्त दो पात्रों द्वारा होती थी। तश्तरी में खाद्य-पदार्थ और गिलास में पेय-पदार्थ, कुछ समय तक रख कर, यह निर्णय कर लेते थे कि, वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रहण करने योग्य हैं।

इसी प्रकार राणाओं के अधिकार के समय, नेपाल में पुजारी लोग राजाओं को 'चरणामृत' दिया करते थे। वर्तमान नरेश की पितामही पर ऐसा ही प्रयोग एक बार किया गया था। चरणामृत पान करते ही उनका शरीरांत हो गया। तब से राज़वर्ग के लोग चरणामृत केवल मस्तक पर छिड़क लेते हैं।

अमरीकी कवि हौथोर्न की 'रैपैसिनीज डाक्टर' नामक रचना में विषकन्या का वर्णन है। उसने एक डाक्टर का वर्णन करते हुए, उसकी एक ऐसी कन्या की चर्चा की है, जिस पर डाक्टर ने विष के कई प्रयोग किये थे। परंतु डाक्टर के एक साथी ने एक औषधि ऐसी तैयार की थी, जिससे विष-प्रभाव नष्ट हो जाता था।

कथासरित्सागार में वत्सदेशीय नरेश के संबंध में वर्णित, एक कथा अत्यंत रोचक और उल्लेखनीय है। उसके अनुसार राजमंत्री यौगन्धरायण, नरेश को अन्य प्रदेशों पर विजय-प्राप्त करने की सलाह देते हुए, पहले वाराणसी के राजा ब्रह्मदत्त पर धावा बोलने को कहता है। अपने कतिपय गुप्तचरों को पहले वह वाराणसी में भेजता है, जो ज्योतिषियों का बाना धारण कर, ब्रह्मदत्त के दरबार में घुल-मिल जाते हैं। जब वत्सनरेश उस पर चढ़ाई करता है, तब ब्रह्मदत्त का मंत्री शत्रुओं के पथ में जाल बिछा देता है और मार्ग के सभी पेड़ों, लताओं, फूलों, घास और जल आदि को विषाक्त कर देता है। साथ ही, विषकन्याओं को वह नृत्य करने के लिये भेजता है ; पर उक्त गुप्तचर ताड़ जाते हैं और यौगन्धरायण उनका प्रतिकार कर बाधाओं से बच जाते हैं।

इसी प्रकार एक बार एक रूपवती विषकन्या को सिकन्दर के निकट इस आशय से भेजा गया था कि, वह उस पर आसक्त होकर अन्ततः मृत्यु को प्राप्त होगा ; किन्तु अरिस्टोटल ने सिकन्दर को बचा लिया।

चाणक्य के समय में तत्कालीन राजाओं द्वारा, विषकन्याओं का प्रयोग प्रचुर परिमाण में होता था। विशाखदत्त-रचित 'मुद्राराक्षस' में विषकन्या का उल्लेख है। चाणक्य ने स्वयम् चन्द्रगुप्त के माध्यम से पर्वतेश्वर (मलयकेतु) नामक पर्वतीय नरेश के पास विषकन्या भेजी थी। मध्य प्रदेश में प्रचलित कथाओं के अनुसार विषकन्याओं की योनि में विष के दाँत छिपे रहते थे। कंस के द्वारा कृष्ण के वधार्थ भेजी गयी राक्षसी पूतना, एक प्रकार की विषकन्या ही थी। विषकन्या के स्तनों में विष का प्रभाव होगा ही। वात्सल्य की आड़ में वह संहारक प्रयोग कितना रोमांचकारी और हृदय-विदारक लगता है !

हमारे पूर्वज अनेक विद्याकलाओं में जिस प्रकार आदि जगद्गुरु थे, उसी प्रकार विष-विज्ञान में भी पारंगत थे ; परन्तु वे स्वभावतः शांतिप्रिय होने के कारण संहारात्मक पुरुषार्थ की अपेक्षा, रचनात्मक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरुषार्थ में ही संलग्न रहा करते थे। जहाँ-जहाँ उन्होंने संहारात्मक प्रयोगों का वर्णन किया है, वहाँ उसके प्रतिकार भी बता दिये हैं। जहाँ पन्नगास्त्र का प्रयोग बताया है, वहाँ गरुडास्त्र, नकुलास्त्र की भी विधि वर्णित है। इसी तरह विष-प्रयोग के साथ विष-शमन की युक्ति भी उन्होंने बता दी है। ऐसे भयंकर प्रयोगों का लोग दुरुपयोग न करें; उन्होंने यह प्रणाली ही बन्द कर, संसार को विनाश से बचा लिया।

प्राचीन काल में हमारे देश में सुंदरी विषकन्याओं की बड़ी धूम थी और यहाँ से यह विद्या यूरोप में गयी। सर्पों के माध्यम से भी विषकन्याएँ तैयार की जाती थीं। वे गर्भावस्था से ही विष-संस्कारों द्वारा उत्पन्न होती थीं। ऋतु-काल के पहले उनकी जननी को क्रमयोगानुसार अतितीक्ष्ण विष सेवन कराये जाते थे। परिणाम-स्वरूप उसका आर्त्तव (रज) परम विषमय हो जाता था। गर्भस्थिति के पश्चात् गर्भावस्था में भी उस स्त्री को विषों का सेवन कराया जाता था। इस प्रकार गर्भिणी इतनी विषैली हो जाती थी कि, उसके पसीने के स्पर्श-मात्र से शरीर में विष संचार होता और अंत में मृत्यु हो जाती थी।

प्रायः शत्रु वधार्थ ही विषकन्या का प्रयोग होता था और राजाओं में ही यह प्रचलित था। वे लोग विषकन्या को शत्रु के समीप भेज देते थे और कामांध-शत्रु सहज ही उसका शिकार हो जाता था। कूटनीतिविशारदों की निगरानी में विष-कन्याओं का पालन-पोषण होता था। विषकन्याओं का प्रभाव न केवल मनुष्यों पर, अपितु पेड़-पौधों, लता-गुल्मों और वनस्पतियों पर तक होता था। केवल उसके पसीने के स्पर्श से ही नहीं, श्वासादि के सम्पर्क से भी मृत्यु हो जाती थी। विषकन्या के अंग-अंग में विष व्याप्त रहता था।

यक्षिणी

[चित्र : एक प्राचीन शिल्प की रेखानुकृति]

'अष्टांग संग्रह' के अनुसार, विषकन्या का परिचय देते हुए स्पष्ट कहा गया है कि, जन्मारंभ से मृत्युपर्यंत उसे विष-सेवन कराते हैं और युवती होते-होते वह साक्षात् विषकन्या बन जाती है जिसके स्पर्श तथा श्वास-प्रश्वास आदि के सम्पर्क से मनुष्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच नहीं पाता और उसकी मृत्यु हो जाती है। इतना ही नहीं, अपितु विषकन्या के हाथ और बालों के स्पर्श मात्र से पुष्प-पल्लव मुरझा जाते—नष्ट हो जाते हैं। विषकन्या की शैय्या में यदि खटमल हों और वस्त्र में चीलर आदि कीटाणु हों, तो वे मर जाते हैं। उसके स्नान किये हुए जल के विषैले प्रभाव से मक्खी, मच्छर, चींटी आदि जीव भी मर जाते हैं।

आचार्य कौटिल्य अति कुशल मनीषी थे। उन्होंने शत्रु द्वारा अपने ऊपर किये गये, सर्व प्रकार के विष-प्रयोगों के सफल प्रतिकार का वर्णन किया है। उनके अर्थशास्त्र में विष-प्रतिकार के कई प्रयोगों का उल्लेख आया है।

'मनुस्मृति' में भी यह प्रसंग वर्णित है। भोजन के पूर्व अन्न-परीक्षा तथा उसके साधनों के अभाव में विष-शामक औषधियों से भोजन विष रहित करने का आदेश देते हुए, अन्त में मनु कहते हैं कि, राजा को यह उचित और आवश्यक है कि, वह रमण के पूर्व कन्या या स्त्री की भली-भाँति परीक्षा कर या करा ले। आवश्यकता प्रतीत होने पर, उसकी योनि को विषघ्न द्रव्यों या औषधियों से धोने तथा धूपित करने के पश्चात् ही सम्पर्क करे। विषघ्न-रत्नों या मणियों के धारण करने का भी उन्होंने आदेश दिया है।

*

दौड़ कर बनाया गया राज्य

४०० वर्ष पूर्व की बात। नैपाल के शाहवंश का मूल-पुरुष द्रव्यशाह जो लमजुङ के एक छोटे राज्य के राजा का कनिष्ठ पुत्र था, पिता द्वारा राज-दरबार से हटाकर गायगोठ भेज दिया गया। पर गोठ में सात्विक गोरस खाते हुए भी द्रव्यशाह में राजा बनने की तीव्र लालसा जाग उठी। पर सेना कहाँ से आये? पास ही लिगलिग में 'मगर' जाति का राज्य था। विजया-दशमी के दिन राज्य-भर के लोग पहाड़ी के नीचे मैदान में एकत्र होते और राजगद्दी के उम्मीदवार वहाँ से दरबार की ओर दौड़ लगाते। जो पहले पहुँच जाता, वह साल भर के लिए राजा हो जाता था। द्रव्यशाह ने भी दौड़ने का निश्चय किया। पर बलिष्ठ मगरों से जीतना असंभव देखकर उसने सबको चकमा देने का निश्चय किया। वह पहले से ही जाकर एक झाड़ी में छिप गया। जब मगर युवक आँख मूँदकर हवा से बातें करने लगे, तो द्रव्यशाह बीच में से निकलकर दौड़ा और तुरंत दरबार में पहुँच गया।

राजा बनते ही पहला काम द्रव्यशाह ने यह किया कि, विजया-दशमी की दौड़ बंद करा दी। फिर आस-पास के राज्य जीत कर ५२० मील लम्बे नैपाल राज्य की नींव डाली, जिसपर उसकी संतति आज राज्य करती है। —राजेश्वर देवकोटा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंतरिक्ष-यान बन गया है

"मनुष्य की बुद्धि की अंतिम प्रोज्वलता में मेरी पूरी-पूरी आस्था है। द्रोह-द्वेष के भीषण नरक में भी वह अपना मार्ग खोज लेगी। मानव, अपने यान रवाना करो—आसन के शाश पर अपनी पताका रोपो...अंत में, यह अभियान भी प्रभु का स्तव-गान ही बनेगा!" जर्मन कवि शुमाँ के इस काव्यांश के साथ अंतरिक्ष-यान के इस विवरण को पढ़िये।

✱

विज्ञानवेत्ता अन्तरिक्ष पर विजय प्राप्त करने की दिशा में, नि य नवीन प्रगति करते जा रहे हैं। अमरीकी वैज्ञानिक एक्स-१५ नामक एक ऐसे अद्भुत राकेट-यान का निर्माण करने में सफल हो गये हैं, जिसकी गति सामान्य यान से दूनी होगी तथा जो ऊर्ध्वाकाश में अब तक मानव जितनी ऊँचाई तक गया है, उसकी अपेक्षा चार गुना अधिक ऊँची उड़ान भर सकेगा।

अपनी उड़ान के दौरान में जब यह एक्स-१५ राकेट-यान पृथ्वी-मंडल को पार कर लेगा, तब वह वायु की क्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न प्रतिक्रिया से नहीं उड़ेगा; वरन् स्वयं अपने में उत्पन्न केन्द्रापगामी शक्ति द्वारा ऊर्ध्वाकाश में आगे बढ़ेगा। वहाँ वायु के अभाव में केन्द्रापगामी शक्ति ही उसकी उड़ान का अवलम्ब होगी। शून्याकाश में वायु का अभाव होने से इस यान को वायुयान न कह कर, अन्तरिक्ष-यान कहना ही अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

८ जून को यह अद्भत राकेट-यान पहली बार उन्मुक्त परीक्षणात्मक उड़ान के लिए छोड़ा गया। ३८ हजार फुट की ऊँचाई तक यह एक वाहक-विमान पर सवार हो कर गया। यह परीक्षणात्मक उड़ान बिना किसी प्रकार की संचालन-शक्ति के की गयी थी। वाहक-विमान से अलग होने पर एक्स-१५ राकेट-यान ग्लाइडर की भाँति धीमी उड़ान भरता हुआ, एयरफोर्स के एडवर्डस् हवाई अड्डे पर, बिना किसी कठिनाई के उतर आया।

इस परीक्षणात्मक उड़ान के फलस्वरूप जो तथ्य और आँकड़े प्राप्त होंगे, उन्हीं के आधार पर एक्स-१५ राकेट्-यान के परीक्षणों की शृंखला आगे भी जारी रहेगी और आगे चल कर वह शक्ति-युक्त उड़ान भर सकेगा। तब इसमें एक्सन मोटर्स नामक अमेरिकी कम्पनी द्वारा विकसित एक ऐसे अद्भुत इंजन का उपयोग किया जायगा, जिसमें ५० हजार पौंड धक्का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंतरिक्ष-यान का ड्राइंग

देने की शक्ति होगी।

अन्तरिक्ष-यान के निर्माण के सम्बन्ध में चार बातें विशेष रूप से ध्यान में रखने योग्य हैं :—

(१) पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण की शक्ति ;

(२) ऊर्ध्वाकाश में वायु तथा दबाव का अभाव;

(३) तीव्रगामी राकेट का ऊर्ध्वाकाश से वायुमंडल में पुनःप्रवेश ;

(४) प्रकृति में क्रिया और प्रतिक्रिया के सिद्धांत की व्याप्ति के गम्भीरतम रहस्य का परिज्ञान।

सामान्य वायुयान वायुमंडल में उड़ने के कारण, उपलब्ध वायु का प्रयोग करते हैं और फलस्वरूप, उनके आकार और प्रकार दोनों ही भिन्न होते हैं। अग्नि के प्रज्वलित होने के लिए आवश्यक आक्सीजन गैस उन्हें वायुमंडल से उपलब्ध होती रहती है। क्रिया और प्रतिक्रिया की निष्पत्ति उनके अग्र और पुच्छ भाग में लगे विशेष प्रकार के पंखों से होती रहती है ; उनके द्वारा यान वायु को काट कर आकाश में आगे और ऊपर बढ़ते हैं। पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से संघर्ष करने की समस्या उनके सम्मुख नहीं आती। वायुमंडल में वायु के विद्यमान होने से प्रतिक्रिया उतना भयंकर रूप भी नहीं धारण करती।

प्रतिक्रिया एक महान् रहस्य है। उसके पूर्णरूप से उद्घाटित कर लेने पर वैज्ञानिक, प्रतिक्रिया उत्पन्न करनेवाले राकेटों के निर्माण में सफल हो सके हैं।

प्रत्येक क्रिया प्रतिक्रिया को जन्म देती है। इसी सिद्धान्त के आधार पर अमेरिकी राकेट-विशेषज्ञ गोडार्ड ने एक विशेष प्रकार के ईंधन के प्रयोग से राकेट-विज्ञान को अद्भुत गति प्रदान करके इस क्षेत्र में एक क्रान्ति कर दी।

धक्का देने की शक्ति का भी राकेट-यान में विशेष महत्त्व है। यह शक्ति मूलतः ईंधन की शक्ति पर आधारित होती है। वैज्ञानिकों ने प्रयोगों से यह पता लगाया है कि १,००० पौंड धक्का देने की शक्ति रखनेवाला यन्त्र १ पौंड भारी पदार्थ को १८,००० मील प्रति घंटा की गति से आकाश में आगे फेंक सकता है।

अभी तक जो सबसे भारी क्षेपणास्त्र अंतरिक्ष में भेजा गया है, वह चार टन भारी है और उसके प्रत्येक पौण्ड वज़न को उठाने में एक-एक लाख डालर व्यय हुआ है। अमेरिका की मार्टिन कम्पनी के इंजीनियर डा. डैण्ट्रिज एम. कोल अणुबम द्वारा अन्तरिक्ष-यान चलाने की संभावनाओं पर पिछले चार वर्ष से प्रयोग कर रहे हैं। अणुबम से अन्तरिक्ष-यान चलाने पर उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खर्च पहले से शतांश ही रहेगा। वर्तमान योजना के अनुसार अणुशक्ति-चालित पहला जो यान अंतरिक्ष में भेजा जायगा, वह दो किलोटन भारी होगा।

अन्तरिक्ष-यान में सवार अन्तरिक्ष-विहारी यात्री ऊर्ध्वाकाश में इतनी ऊँचाई पर पहुँच जायेगा, जहाँ सूर्य का प्रकाश भी, जो प्रत्येक वस्तु को रूप प्रदान करता है, सन्तुलित अवस्था में विद्यमान होगा। प्रकाश के इस संतुलित प्रसार का फल होगा, पदार्थों का ठीक से न दिखायी देना। उस समय सूर्य के प्रकाश में भी वस्तुओं को देखने के लिए कृत्रिम प्रकाश का ही प्रयोग करना पड़ेगा।

यह अन्तरिक्ष-यान वस्तुतः अन्तरिक्ष में ही उड़ता नहीं रहेगा। उसका वातावरण में पुनःप्रवेश भी होगा। एक्स-१५ राकेट-यान में ऐसी यान्त्रिक व्यवस्था की गयी है कि, यान वायुमंडल के स्पर्श में आते ही गुरुत्वाकर्षण-शक्ति से एकदम आकृष्ट न हो जाय। चालक-यान में संलग्न विभिन्न जटिल यंत्रों के द्वारा यान और गुरुत्वाकर्षण शक्ति के मध्य, ऐसा सन्तुलन स्थापित किया जा सकेगा, जिसके फलस्वरूप यान धीमी गति से वायुमंडल में पुनःप्रवेश कर सके।

यदि किसी यांत्रिक त्रुटि के कारण, यान वायुमंडल में प्रवेश के पूर्व-निर्धारित पथ से तनिक भी विचलित हो गया, तो वह अत्यन्त तेजी से वायुमंडल से टकरायेगा और सम्पूर्ण वातावरण उसके लिए एक अत्यन्त ठोस पदार्थ के समान बन जायेगा।

कोई भी यान जब ध्वनि-सीमा से परे की गति से उड़ता है, वह तुरन्त अत्यधिक गरम ही नहीं हो जाता, वरन् चालक को ऐसा अनुभव होता है कि, मानो आकाश में किन्हीं प्रतिरोधक शक्तियों से उसका संघर्ष हो रहा है। उस समय यान का तापमान १००० डिग्री फा. तक पहुँच जाता है। अब यदि यह पुनःप्रवेश के समय निर्धारित पथ से भटक गया, तो यान का तापमान और अधिक बढ़ जायगा और चालक को घोर प्राण-संकट का सामना करना पड़ जायेगा।

पुनः प्रवेश के समय यह आवश्यक है कि, चालक के सिर में मजबूती से एक पट्टी बँधी रहे; अन्यथा या तो वह संज्ञाहीन हो जायगा, या फिर उसकी गर्दन को आघात पहुँचेगा। गुरुत्वाकर्षण-शक्ति से संघर्ष के समय शरीर के आन्तरिक अवयवों और पेट को भी पर्याप्त आघात पहुँचता है, उसके विकृत होने का डर रहता है। रक्त जम कर पारे जैसा हो जाता है और वह समस्त शरीर से एकत्र होकर नेत्रों और मस्तिष्क के

धरती से चंद्रमा में पहुँचते हुए यान का कल्पित चित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अग्रभाग की ओर प्रवाहित होने लगता है।

जिस समय इस सम्भावित उड़ान के सम्बन्ध में परीक्षण किये गये और स्काट क्रॉस फील्ड को उनमें से होकर गुजरना पड़ा, उस समय वे संज्ञाशून्य हो गये और उनका चेहरा विकृत हो गया।

इन बाधाओं और संकटों पर विजय पाने के लिए ही यह आवश्यक है कि, उक्त यान में प्रतिक्रियात्मक शक्तियों का प्रयोग किया जाये। अमेरिकी इंजीनियरों ने इस प्रतिक्रियात्मक शक्ति को उत्पन्न करने के लिए हाई-ड्रोजन पेराक्साइड नामक पदार्थ का उपयोग किया है।

ऊपरी वातावरण में उड़ान के समय चालक को सम्पूर्ण यान पर नियन्त्रण रखने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। ध्वनि-सीमा की अन्तर्गत गति को पार करके, जब यान ध्वनि-सीमा से परे की गति में उड़ने लगता है, तब दबाव उसके मध्य भाग पर होता है, जहाँ पंख इत्यादि लगे होते हैं; और उस समय आकाश में उत्पन्न होनेवाली प्रकम्पन-तरंगें बड़ी तेजी से यान से टकराती हैं।

इन तरंगों को प्रभावहीन बनाने के लिए सिलीकोन नामक पदार्थ से यान के पंखों को अत्यंत चिकना बना देते हैं। किन्तु फिर भी ऐसी आशंका है कि टकराने, वाली प्रकम्पन तरंगें यान को आघात पहुँचाने में सफल हो जायेंगी।

यान के अत्यधिक ताप से पिघलने और अन्य किसी प्रकार की क्षति पहुँचने की समस्या भी है।

इन दुर्घटनाओं के निराकरण के लिए ही, ५० फुट लम्बा बेलनाकार एक्स-१५ राकेट-यान सख्त धातु का बनाया जाता है, जिसमें निकल और इस्पात का मिश्रण है। उसके बाहरी भाग में निकल-मिश्रित धातु का ही प्रयोग किया गया है। यदि कभी ताप इस परत के भी अन्दर प्रविष्ट हो गया, तो एक दूसरी परत उसे रोक लेगी, जो टाइटेनियम और स्टेनलेस स्टील की बनी होगी। इस यान का ढाँचा ऐसा होगा कि, वह १,००० अंश फा. ताप का बड़ी आसानी से प्रतिरोध कर सकेगा।

एक्स-१५ यान के ६५ प्रतिशत भाग में विभिन्न अवयव ढलाई प्रक्रिया द्वारा

आस्था

उस दिन शाम को सूरज फिर नीचे उतरा, तो उसने पृथ्वी के कान में कहा— "प्रणय-प्रीति की रात तेरे विछोह में ही सदा बीतती रहेगी, मुझे तो ऐसा ही लगता है!" पृथ्वी ने सूरज के नैराश्य-निपीड़ित चेहरे को देखा, तो सहम गयी; मंद निःश्वास में बोली— "देव, विश्वास को मत छलो। वह दिन अति निकट है, जब जड़त्व को केंचुल छोड़, मैं चैतन्य-देह बनूँगी और तुम्हारे चरण सामीप्य में सानन्द लीन हो जाऊँगी।" — सुंदरम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परस्पर सम्बद्ध किये गये हैं, जब कि शेष ३५ प्रतिशत भाग में यान्त्रिक प्रक्रिया द्वारा। पेंच से कसे हुए स्थानों में सभी प्रकार के छिद्रों को बन्द करने के लिए हाइड्रालिक नलिकाओं का प्रयोग किया गया है। ईंधन-व्यवस्था के लिए "उच्च दबाव" वाले टैंक प्रयोग में लाये गये हैं।

आज तक किसी भी अन्य यान में इतनी संख्या में दिशा-निर्देशक यन्त्र नहीं लगाये गये। इस यान में इतने यन्त्रों की आवश्यकता इसलिए है कि, शून्याकाश में दिशा जानना आसान काम नहीं है। वातगति-मापक तथा ऊँचाई-मापक यन्त्र वहाँ काम नहीं दे सकते। चालक को इसलिए सदैव यन्त्रों की सहायता से इस बात की जानकारी रखनी पड़ती है कि, वह अपने मूल स्थान की अपेक्षा शून्याकाश में कहाँ है।

स्पैरी जिरोस्कोप द्वारा निर्मित यन्त्र के सहारे चालक सघन वायुमंडल में पुनःप्रवेश करते समय एक्स-१५ यान की चाल धीमी करके उसे उस अवस्था में रख सकेगा, जिसमें पुनःप्रवेश बिना किसी क्षति के सम्पन्न हो सकता है। शून्याकाश की प्रत्येक उड़ान का विवरण विद्युदणु-प्रक्रिया द्वारा अंकित होता रहेगा।

निस्तब्ध वातावरण में उड़ान के समय तनिक-सी भी आकस्मिक बाधा, यान का सन्तुलन भंग कर सकती है। अतः यान के निर्माण में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि, उस पर नियन्त्रण रखने में चालक को कोई असुविधा न हो। अन्य यन्त्रों के अलावा, उड़ान पर नियन्त्रण रखने के लिए चालक की कुर्सी के नीचे ही ऐसी यान्त्रिक व्यवस्था कर दी गयी है कि, वह बैठे-बैठे अपनी सीधी कलाई के स्पर्श मात्र से यान पर नियन्त्रण प्राप्त कर सके।

आशा है, एक्स-१५ नामक यह अद्भुत अमरीकी राकेट-यान अन्तरिक्ष की उड़ान के क्षेत्र में एक क्रान्ति के आगमन का कारण बनेगा। उसके बाद तो पुस्तकों में वर्णित अन्तरिक्ष-उड़ान की कहानियाँ सत्य हो जायेंगी, और हमारे हृदय आलोक के लोक को जीतने तथा चंद्रलोक पहुँचने की साध की पूर्ति के विजयोल्लास से पूर्ण हो खिल उठेंगे।

✱

नर्स की ममतपूर्ण सेवा से एक घायल सिपाही को, जिसकी दोनों आँखें बम-विस्फोट में नष्ट हो गयी थीं, लगने लगा कि, नर्स उससे प्रेम करती है। सो एक दिन उसने प्रस्ताव रखा—"चलो, आज ही रात यहाँ से भाग चलें!" नर्स ने कहा—"अच्छा।" पड़ोस का सिपाही, जो उनकी बात सुन रहा था, एकांत में बोला—"पर नर्स, वह तो अंधा है।" नर्स मुस्कराते हुए बोली-"तो क्या हुआ? अभी अभी मैं एक और सैनिक के साथ भी भाग चलने का वचन दे आयी हूँ; उसके दोनों पैर कटे हुए हैं।"

✱

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिमपात

तब मैं हरिद्वार में पढ़ा करता था। पहाड़ के इतने पास होते हुए भी, मैंने अभी तक शीत-ऋतु में मसूरी जाकर वहाँ के हिमपात का दृश्य नहीं देखा था। एक दिन मई की एक ऊमस-भरी रात में यही बात चल पड़ी। हम तीन मित्र बैठे थे। एक ने कहा—"चलो स्वामीजी (मेरे सब मित्र मुझे इसी नाम से बुलाते थे), अब की सरदियों में चलेंगे मसूरी; ओवर-कोट और गम-बूट वगैरह तो हैं ही सबके पास।" मैं न जाने किस मूड में था; कह दिया—"अभी तो गरमियाँ हैं। सरदियाँ आने दो; देखेंगे कि, हममें से कौन-कौन यहाँ रहता है। फिर चलने-चलाने की बात करेंगे।" दूसरा मित्र हँस पड़ा—"हाँ स्वामीजी, तुम तो ठहरे—'कल प्रात कहाँ होंगे कह दो' वाले।" बात यह थी कि, कुछ ही दिन पहले मैंने कालेज की कवि-गोष्ठी में अपनी एक कविता पढ़ी थी, जिसका यह मुखड़ा सबकी जबान पर चढ़ गया था—

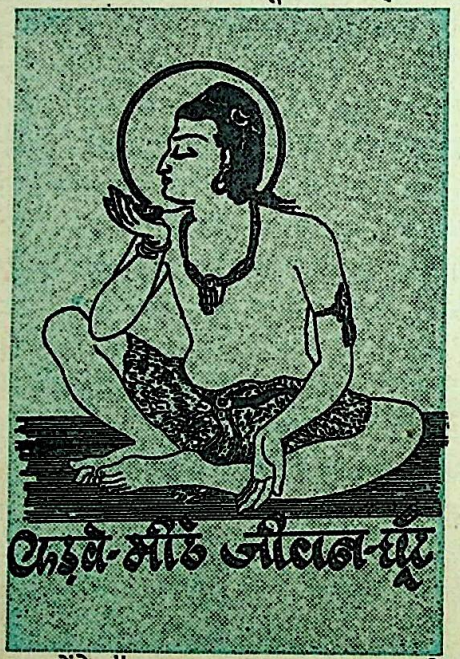

"हम आज यहाँ हँस खेल रहे,
कल प्रात कहाँ होंगे कह दो।"

गरमियाँ बीतीं। सावन-भादों आकर धरती के साथ जल-क्रीड़ा कर चले गये। शरद ने चाँदनी बिखेरी और उसका गुलाबी जाड़ा क्रमशः कड़ाके की सर्दी में बदल गया। जनवरी का मास आया जब प्रकृति मसूरी को हिम का सफेद ऊनी दुशाला ओढ़ा देती है। गरमियों की उस रात की चर्चा याद आ गयी। कमरे में मैं अकेला रह गया था। वह मित्र जिसने कहा था—"स्वामीजी अब की सरदियों में मसूरी चलें चलेंगे", अत्यंत संदिग्ध अवस्था में रेलगाड़ी के नीचे कट कर मर चुका था; पुलिस के पंचनामे में उसे आत्महत्या ही कहा गया था। दूसरा साथी पारिवारिक झंझटों के कारणों से पढ़ाई छोड़ कर घर चला गया था—कारोबार सम्हालने। अकेला मैं हरिद्वार में रह गया था।

उस साल हमारे कालेज की पार्टी हिमपात देखने मसूरी गयी भी। पर मेरा जाने का मन न हुआ। न जाने किस शक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने मेरे कंठ में बैठ कर उस ऊमस-भरी रात में कहलवाया था—"सरदियाँ आने दो; देखेंगे हमम से कौन-कौन यहाँ रहता है।" अपनी वह मनहूस कविता भी मैंने मित्रों के आग्रह के बावजूद, फिर कभी कवि-गोष्ठी म नहीं पढ़ी।

—हरिश्चन्द्र, रोहतक, पंजाब.

*

मर्द

हमारे पड़ौस में एक मियाँजी रहते थे। नाम उनका कुछ रहा होगा, लेकिन मोहल्लेवाले तो उन्हें "मियाँजी" ही कहते थे। कुछ दिन पहले वे हमारे यहाँ पुलिस के दारोगा होकर आये थे। उम्र काफी हो चुकी थी, इसलिए कुछ ही दिनों के बाद पैंशन हो गयी और वे यहीं बस गये। बस क्या गये, उनके बड़े लड़के का, जो खुद भी पुलिस में था, यहीं तबादला हो गया और मियाँजी अपने लड़के और उसके बीवी-बच्चों के साथ रहने लगे। सारा मोहल्ला मियाँजी की बड़ी इज्ज़त करता था; हर मामले में उनकी राय ली जाती थी। शाम को रोज़ाना उनकी बैठक में मोहल्ले के शरीफ आदमी वक्त गुज़ारने के लिए आ बैठते थे।

महर्षि

एक रोज़ शाम का वक्त था और दूसरे कुछ लोगों के साथ मैं भी वहाँ बैठा था। न-जाने क्या बात चल रही थी कि, उनका पोता रोता हुआ आया और कहने लगा कि, पड़ोसी के लड़के ने उसे गाली दी है। कोई ज्यादा बड़ी बात न थी; लेकिन पोता अड़ा हुआ था कि, गाली देने वाले को सज़ा मिलनी चाहिए। मियाँजी ने पोते को समझाया—"देखो बेटे! शराफत तो यही है कि, तुम उसको माफ कर दो; पर अगर बदला लिये बिना तुम्हारी तसल्ली नहीं होती, तो तुम भी उसे गाली दे दो; लेकिन हद से न बढ़ना, वर्ना फिर वह तुम पर दावा लेकर आयेगा।"

लड़का भी शायद यही चाहता था। रोता हुआ आया था, अकड़ता हुआ चला गया। उसके जाने के बाद मियाँजी ने शेख़ सादी का यह किता पढ़ कर हमें सुनाया—

"न मर्दस्त आँ बनज़दीके-ख़िरदमंद।
कि बा पीले-दमाँ पैकार जूयद॥
बले मर्द आँ कस-अस्त अज़ रूये तहक़ीक़।
कि चूँ ख़श्म आयदश बातिल नगोयद॥"

—अक्लमंदों की नज़र में मर्द वह नहीं जो मस्त हाथियों से लड़ता फिरे, बल्कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मर्द वह है जो जब गुस्सा आये, तो बेहूदा न बके। —रमज़ान अली, अलीगढ़.

★

आभार-प्रदर्शन

एक दिन जेठ की दोपहरी के ढलते ही, जब मैंने द्वार खोलकर सड़क पर झाँका, तब भी वह सुनसान ही पड़ी हुई थी और उसकी तारकोल से पुती पीठ पर धूप चिलचिला रही थी। द्वार खोलते ही गालों और कानों पर ऐसी तीव्र झुलसन प्रतीत हुई, मानो भट्ठी के सामने जा खड़ा हुआ होऊँ।

मैंने देखा कि, सड़क के इस किनारे के मकानों की पाँत छाया च्छादित हो चुकी थी और एक चबूतरे की सीढ़ियों से सटा, चीथड़ों में लिपटा हुआ एक किशोर-वय लड़का बूट-पालिश का सामान लिये अलसाया-सा बैठा था। मेरी आहट पाते ही उसकी तंद्रा भंग हो गयी और बहुत ही कातर दृष्टि से उसने मेरी आँखों से आँखें मिलाते हुए पूछा—"पालिश बनाऊँ साहब! बड़ी बढ़िया बनाऊँगा।"

उसके आग्रह के वशीभूत हो कर मैंने भी कह दिया—"अच्छा, बनाते जाओ।" अब तक वह मेरे घर के द्वार पर आ चुका था और मैंने भी किवाड़ के पीछे पड़े हुए जूते पैर से ही आगे खिसका दिये।

उसने जूते उठाये और द्वार के बाहर ही अपनी झोली में कुछ टटोलते हुए वह जमीन पर ही बैठ गया। मेरे मन में आया कि, वहाँ की जमीन तो गरम होगी। इसलिए मैंने द्वार पूरी तरह खोलते हुए उसे निमंत्रित किया—"अन्दर यहाँ बैठ कर बनाओ।"

"नहीं, यहीं ठीक हूँ।" उसने सहजभाव से मेरा निमंत्रण टाल दिया।

मैंने पुनः आग्रह किया—"जमीन गरम होगी, अन्दर आकर आराम से बैठ कर क्यों नहीं बनाते।"

किन्तु वह नहीं माना और न उसने कोई उत्सुकता या जिज्ञासा ही प्रदर्शित की।

मैं भी हठ पकड़ गया और उसे बाँह से पकड़ कर अन्दर लाने का प्रयत्न करने लगा। इस पर उस किशोर ने यह कह कर मुझे शिथिल-गात कर दिया—"साहब, मैं यहीं ठीक हूँ; क्योंकि बड़े

उत्पीड़न

शब्द क्या है, इस पर कभी स्थिर बैठकर सोचा नहीं था। एक दिन चेतना इसी में खो गयी। एक अति पुरानी याद जैसे भटकती-भटकती सामने आ गयी। बूढ़ी मौसी के सामने मैं 'ईश्वर' कहता, तो वह चिढ़कर कहती थी—"चुप! बार-बार कहने से नाम का महत्व घुल जाता है—शब्द के अर्थ की व्यापकता सीमित हो जाती है।" आज मैं देखता हूँ, वह कितनी सही थी। शक्ति-तेज से पुंजीभूत शब्द आज निरर्थक ध्वनिमात्र रह गये हैं। —टी. एस. इलियट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोग कह गये हैं कि—

"ऐसे बोल बोलना नहीं,
कि कोई कहे चुप।
और ऐंसी बैठक बैठना नहीं,
कि कोई कहे उठ।।"

और मैं उस अबोध बालक के मुंह से, युगों पुरानी मृत मर्यादाओं से जकड़ा यह आचार-शास्त्र सुन चुप रह गया।

—प्रभानाथ, रामगढ़, रतलाम.

★

आनंद

उन दिनों मैं घोर आर्थिक संकट में फँसा हुआ था। मेरे छोटे-से वस्त्र-व्यापार में घाटा पड़ जाने से, मैं आकण्ठ कर्ज में डूब गया था। लेनदार किसी तरह मानते न थे; तुरन्त रुपये न लौटाने पर कानूनी कार्रवाई करने की धमकी दे रहे थे। एक-एक रुपया उन दिनों मेरे लिए बड़ा कीमती था, पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह बड़ा प्यारा लगता था।

तबला

[चित्र : आचार्य नंदलाल बाबू-कृत स्केच]

ऐसे ही समय, एक दिन एक छाबेवाला, जिसे मैं प्रतिदिन उसी गली में केले बेचते देखा करता था, दुकान पर आया और तीन रुपये का कपड़ा खरीद कर चला। उसके जाने के बाद मैंने देखा कि, मैले कपड़े की एक पोटली फर्श पर पड़ी हुई है। वह इतनी मैली थी कि, हाथ लगाने की इच्छा नहीं हुई। मैंने कपड़ा मापने के गज से ही उसे पास खींचा। ऐसा लगा कि, उसमें पैसे हैं। फिर तो मैंने लपक कर उसे उठा लिया और खोल कर देखा। पूरे १२३ रु. थे। शायद मेरे तीन रुपये देते समय पोटली गिर पड़ी थी। उसे अलमारी में बंद कर मैं खाता लिखने में उलझ गया।

पर मन ही मन बहस चल पड़ी; या कहूँ कि रुपये की पोटली को लेकर मेरा मन दो हिस्सों में बँट गया। एक मेरी नीति-निष्ठा का प्रतिनिधि था; उसने कहा—"रुपये छाबेवाले के हैं; उसे लौटा दो।" दूसरा मन मेरे आर्थिक संकट से कुण्ठित था; वह बोला—"किसी के हों, मुसीबत में पड़े हो, रख लो; भाग्य की देन है।" मुझे लगा कि, इस द्वंद्व में दूसरा मन जीत गया है।

शाम को मैं दुकान बंद करने की तैयारी में था कि, छाबेवाला बदहवास हाँफता हुआ आया। उसे मुँह भी न खोलना पड़ा; उसके मुख-भाव ने ही जैसे सब-कुछ कह दिया। मैं भी यंत्रवत् बोल उठा—"तुम अपने रुपये भूल गये थे क्या? वे यहीं थे। बता दो कि, कितने थे और लेते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाओ।" छूटते ही उसके मुंह से निकला– "एक सौ तेईस।" और मैंने पोटली उसके हाथ में धर दी। मुझे यह स्मरण तक नहीं आया कि, कुछ ही घंटे पहले मैंने रुपये न लौटाने का निश्चय किया था। छाबेवाले की आँखों में आँसू छलक आये। बोला– "लालाजी मैं गरीब मर जाता। आपके धर्म से बच गया। एक सराफ के मुझ पर रुपये लेने थे। उसने नालिश कर दी है। मैं घरवाली के गहने बेचकर उसे ब्याज की रकम देने जा रहा था; पोटली गिर पड़ी। आप थे सो मिल गये; नहीं तो लालाजी, मेरा घर नीलाम हो जाता।"

छाबेवाले का आनन्द भी मानो संक्रामक था। उस क्षण मुझे लगा कि, मेरी भी सारी आर्थिक दुश्चिंता दूर हो गयी है। मैंने यह भी अनुभव किया कि, सवेरे पर धन मिलने पर जो आनन्द हुआ था, उससे यह दूसरे की वस्तु दूसरे को सौंप देने का आनन्द कहीं अधिक गहरा और तृप्तिकर था। मैंने अपने हृदय के देवता को जो बहुधा हमारी इच्छा के विपरित हमें निलिमार्ग पर चलाता है मन-ही-मन प्रमाण किया।

—राममूर्ति, इरौली जुन्नारदार, मथुरा.

किसी नगर म एक अत्यंत उदार प्रजाप्रिय राजा राज्य करता था। पर उसके राज्य में एक अत्यंत दरिद्र व्यक्ति रहता था, जो राजा के अपमान में अनाप-शनाप बकता रहता था। राजा से यह बात छिपी हुई नहीं थी; लेकिन वह चुप था। एक दिन जाड़े की रात को उस दरिद्र व्यक्ति के द्वारा पर राजा का सेवक आया। उसके हाथ में आटे का बोरा, साबुन का थैला और शक्कर का डिब्बा था। सेवक ने दरिद्र से कहा– "राजा ने याद के प्रतीक-स्वरूप, ये उपहार तुम्हारे लिये भेजे हैं।" दरिद्र व्यक्ति का अहंकार से सीना फूल गया। वह बड़े पादरी से मिलने गया और उससे राजा द्वारा दिये गये उपहारों की चर्चा करते हुए उसने कहा–"देखा न, राजा भी मेरी सद्भावनाओं की अभिलाषा रखता है।" पादरी ने कहा–"अरे बुद्धू! राजा प्रतीकों में बोलता है। आटा तुम्हारे भूखे पेट के लिये, साबुन तुम्हारी मानसिक गन्दगी के लिये और शक्कर तुम्हारी कड़वी जबान के लिए उसने भेजी है, समझे।"

···और उस दिन से वह दरिद्र राजा को और भी अधिक घृणा की दृष्टि से देखने लगा; मगर उससे भी अधिक घृणा का पात्र वह पादरी बना, जिसने राजा के उपहारों की व्याख्या की थी।

—खलील जिब्रान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये जीती-जागती घड़ियाँ

आदमी खो जाता है, देह नहीं खोती। देह तो सूचना देना कभी नहीं भूलती; मगर आदमी के पास सुनने का अवकाश तो हो; और आज का आदमी तो बिल्कुल खो गया है, देह से कोसों दूर अलग जा बैठा है। किंतु पशु-पक्षी अभी तक देह में ही स्थिर हैं– इसलिए देह जो कहती, वे सुनते हैं। डा. एस. के. कल्याणसुंदरम्- लिखित इस प्रबंध में पशु-पक्षियों की इसी सजगता का विवरण है।

★

मधुमक्खियों को मनुष्य सदा ही प्रशंसा की दृष्टि से देखता आया है। उनकी परिश्रमशीलता, और उससे भी बढ़कर, उनकी कार्यदक्षता उसे चकित करती रही है। हाल में विज्ञानवेत्ताओं ने मधुमक्खी के बारे में एक आश्चर्यकारी बात का पता लगाया है। मधुमक्खी के शरीर में प्रकृति ने एक जीवित घड़ी की व्यवस्था कर रखी है, जो मानव-रचित घड़ियों की तरह चौबीस घंटे का हिसाब रखती है।

जीवशास्त्री इस बात को पहले ही अनुभव करते थे कि, ऐसी कोई व्यवस्था अवश्य होती होगी; क्योंकि मधुमक्खियों का समय का परिज्ञान आश्चर्यकर रीति से सही होता है। यह देखा गया है कि, पालतू मधुमक्खियाँ प्रतिदिन ठीक निश्चित समय पर आकर तश्तरी में रखी चाशनी खाती हैं। उन्हें समय का पता कैसे लगता है, यह जानने के लिए चार साल पहले एक परीक्षण किया गया।

पेरिस में दो युवक जर्मन जीवन-शास्त्रियों ने एक छत्ते की मक्खियों को ऐसी आदत डाल दी कि, रोज रात को वे ठीक ८। बजे छत्ते से निकलतीं और तश्तरी में रखी चाशनी खाती थीं। अब विज्ञानवेत्ताओं ने इन मक्खियों को चकमा देने की योजना बनायी। जब पेरिस में रात के ८। बजते हैं, तब अटलांटिक के पार न्यू यार्क की घड़ियों में अभी दोपहर के ३। बज रहे होते हैं। विज्ञानवेत्ता यह देखना चाहते थे कि, यदि दो भोजनों के बीच के समय में मक्खियों को पेरिस से वायुयान द्वारा न्यू यार्क पहुँचा दिया जाय, तो मक्खियाँ कहाँ के समय का पालन करेंगी – पेरिस के, कि न्यू यार्क के ?

सो एक रात को चाशनी खिलाने के तुरंत बाद छत्ते-समेत मधुमक्खियाँ, जालीदार सीलबंद डिब्बों मे भरकर वायु-यान द्वारा न्यू यार्क पहुँचा दी गयीं, जहाँ अमेरिका के म्यूजियम ऑव नैचुरल हिस्ट्री के अधिकारियों ने उन्हें विशष रूप से बनायी गयी प्रयोगशाला में रख दिया। न्यू यार्क की घड़ियों ने जब दोपहर के ३। बजाये, अर्थात् पेरिस में भोजन करने के ठीक २४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घंटे बाद, मक्खियाँ भिनभिनाती हुई छत्ते से बाहर निकल आयीं। इससे सिद्ध हुआ कि, ३,५०० मील की वायु-यात्रा और स्थानीय समय के अन्तर के बावजूद, मक्खियों की घड़ी ने ठीक चौबीस घंटे बाद, जब न्यू यार्क में ३। बजे थे, अलारम बजाकर मक्खियों को सूचित किया कि, चाशनी खाने का समय हो गया है।

अब एक नया प्रयोग किया गया। मक्खियों को न्यू यार्क के ८। बजे चाशनी खाने की आदत डाली गयी और फिर उन्हें वापस पेरिस भेज दिया गया। इस बार मक्खियों ने पेरिस में ८। बज जाने पर भी बाहर आने का उपक्रम नहीं किया।

सूक्ष्म और विस्तृत निरीक्षण द्वारा वैज्ञानिक अब इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि, संसार के अधिकांश प्राणियों के शरीर में इस प्रकार की नैसर्गिक घड़ियाँ होती हैं, जो प्रकाश और अंधकार, ज्वार-भाटे अथवा ऋतु-परिवर्तन के आधार पर, शरीर-यंत्र को काल के लय में बाँधकर रखती हैं।

प्रकृति की इन जीती-जागती घड़ियों में सबसे आश्चर्य-जनक है समुद्री तट पर रहने वाला केंकड़ा। यह देखा गया है कि, इन केंकड़ों की ढाल, दिन के समय जब सूरज की रोशनी तेज होती है, गहरे काले रंग की होती है। साँझ होते-होते काला रंग हलका पड़ने लगता है, रात को बिलकुल फीका हो जाता है और अगले दिन सूर्योदय के बाद से फिर उसकी झाईं गहरी होने लगती है। यह रंग-परिवर्तन केंकड़े को अपने दुश्मनों को चकमा देने में बड़ी सहायता देता है। बहुत समय तक यह समझा जाता था कि, यह प्रक्रिया सूर्य की किरणों का परिणाम है। परन्तु एक दिन एक प्राणिशास्त्री ने एक केंकड़े को अपनी प्रयोगशाला में ले जाकर, सूर्य की रोशनी से सुरक्षित एक कोठरी में रख दिया, जहाँ काफी अंधेरा था। वैज्ञानिक को यह देखकर अपार आश्चर्य हुआ कि, वहाँ भी केंकड़े के रंग में वैसा ही परिवर्तन, ठीक उसी निश्चित क्रम से होता रहा।

कुछ दिन बाद और भी विचित्र बात देखने में आयी। केंकड़े की ढाल का रंग गाढ़ा होने का समय प्रतिदिन ५० मिनट

कौवा

मुर्गा नहीं, कौवा पक्षियों में 'टाइम-पीस' कहा जा सकता है। समय के प्रति मैंने उसे बड़ा सजग पाया है। एकदम अँधेरे तहखाने में रख कर भी हमने देखा है कि, वह सवेरे और शाम की ठीक-ठीक सूचना दे देता है। हालैंड में हमने कौवों को कृत्रिम प्रकाश में रखा; मगर वहाँ भी हम उन्हें छल नहीं सके। शाम की सूचना उन्होंने प्राकृतिक क्रम के अनुसार बिलकुल सही-सही देकर हमें चकित कर दिया। —सालम अली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिछड़ता जाता था। ज्वार-भाटे का समय भी प्रति दिन ५० मिनट पिछड़ता जाता है। इससे वैज्ञानिक ने अनुमान किया कि, केंकड़े की शारीरिक घड़ी ज्वार-भाटे के समय के अनुसार चलती है। फिर उसने दो भिन्न-भिन्न समुद्र-तीरों से, जहाँ अलग-अलग समय पर ज्वार-भाटा होता था, दो केंकड़े मँगवाये। यह देखा गया कि, दोनों अपने-अपने मूलस्थान के ज्वार-भाटे के समय के अनुसार ही रंग बदलते थे।

चींटियों के विषय में अपने निरीक्षण को स्पष्ट करते हुए डा. फार्ब कहते हैं—चींटियाँ एक खास ऋतु में अपनी युवती रानियों को सहवास के लिए उड़ने भेजती हैं। एक बार, मैं अपने घर के पास की पहाड़ी पर, इसी प्रकार के एक बिल की रानी-चींटियों के उड़ने की तैयारी देख रहा था। पहाड़ी के नीचे काफी दूरी पर उसी जाति की चींटियों का दूसरा बिल था, जिसका निरीक्षण मेरी पत्नी कर रही थी। हमने देखा कि, दोनों बिलों की रानी-चींटियाँ बिलकुल ठीक एक ही समय पर बिल से बाहर निकल कर चीटे की तलाश में उड़ने लगीं।

प्रसिद्ध कृमिशास्त्री आल्बर्टो टी. गाल ने जाँच कराकर देखा है कि, मैसैचुसेट्स और न्यू जर्सी राज्यों में स्थित, एक ही नस्ल की चींटियों के दो बिलों से, जिनके बीच पूरे २६० मील की दूरी थी, रानी मक्खियों ने ठीक एक ही दिन और एक ही समय उड़ान भरी, मानो दोनों के पास कैलेंडर और घड़ियाँ हों।

बालक [चित्र : गोगाँ के चित्र की रेखानुकृति]

घुमक्कड़ पक्षियों की सालाना विदेश-यात्राएँ भी सुनिश्चित समय पर ही आरंभ होती हैं। शीत और ग्रीष्म ऋतुओं के आगमन का पक्षियों को बड़ा ठीक ज्ञान रहता है। उनके शरीर की घड़ी-व्यवस्था यह अच्छी तरह जानती है कि, किस दिन कितने समय तक प्रकाश रहा और कितने समय अंधकार रहा।

एक बार शीत-ऋतु में कनाडा के अल्बर्टा विश्व-विद्यालय के एक प्राणि-शास्त्री ने कुछ जंकोस पक्षी पकड़े। ये पक्षी प्रति वर्ष वसंत-काल में उत्तर की ओर अभियान करते हैं। पक्षियों को पिंजड़ों में रखा गया। प्रत्येक पिंजड़े में बिजली की एक-एक बड़ी बत्ती लगा दी गयी, जो प्रतिदिन सूर्यास्त के बाद कुछ समय तक जलायी जाती थी। बत्ती जलाये रखने की अवधि क्रमशः बढ़ायी जाती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रही । इससे पक्षियों को यह भ्रम हुआ कि, दिन लंबे होने लगे हैं। उन्होंने वसंत-कालीन रंगीन पंख धारण किये और जब सरदियों के ठीक बीचों-बीच उन्हें पिंजड़े से मुक्त किया गया, तो वे उत्तर की ओर उड़ चले ,मानो वसंत-ऋतु आ गयी हो।

चतुर प्रकृति-निरीक्षक जापानी तो सदियों से पक्षियों को इस प्रकार चकमा देते आये हैं। वे अपने घरों में पालतू गायक-पक्षियों के पिंजड़े में सरदियों में सूर्यास्त के बाद घंटे-आध-घंटे के लिए बत्ती जला देते हैं। भोले पंछी समझते हैं कि, वसंत-ऋतु चल रही है और सरदियों में भी गाना बंद नहीं करते ।

पक्षियों में ही नहीं, वनस्पतियों में भी इस प्रकार की घड़ी की व्यवस्था है और वह धूप पर निर्भर होती है। इस जानकारी के आधार पर मेरीलैंड (अमेरिका) के बेल्ट्सविल में स्थित अमरीकी कृषि-विभाग के प्रयोग-केन्द्र में कई उपयोगी परीक्षण किये गये हैं। वहाँ यह देखा गया कि, बिजली की सहायता से दिन में रोशनी के घंटे बढ़ाकर, वनस्पतियों की बाढ़ की रफ्तार तेज या कम की जा सकती है। सेवंती (गुलदाऊदी) जैसे कुछ फूल अमेरिका में केवल सरदियों में खिलते हैं, जब दिन छोटे होते हैं और रातें लम्बी। अब कैलिफोर्निया और फ्लोरिडा के बागबान सेवन्ती की क्यारियों पर सरदियों में बिजली की रोशनी रखते हैं, जिससे उनमें फूलों की बहार देर से आती है। इस प्रकार अब प्रायः सारे साल सेवन्ती बाजार में मिलती है ।

हवाई द्वीप के विशाल गन्ने के खेतों के सयाने समृद्ध मालिक, आधी रात को खेतों पर घंटा-आध-घंटा रोशनी करते हैं। इससे रात के अंधकार के घंटे कम हो जाते हैं। परिणामतः गन्ने के फूल निकलने का समय पिछड़ा जाता है और उसका काण्ड अधिक ऊँचा हो जाता है, जिसका मतलब है—अधिक फसल, अधिक पैसा और अधिक समृद्धि ।

ऐसी ही कोई प्राकृतिक घड़ी शायद मनुष्य के शरीर में भी चलती है। यह देखा गया है कि, दिन के चौबीस घंटों में हमारे शरीर के तापमान में लयबद्ध उतार-चढ़ाव होता है। इसी तरह हमारे रक्त में शक्कर की मात्रा में भी प्रतिदिन नियमित ज्वार-भाटे आते हैं। यह भी सिद्ध हुआ है कि, हमारी त्वचा और मांस-पेशियों के कोष दिन के बजाय रात में अधिक संख्या में विभक्त होते हैं। हो सकता है कि, हमारे चिकित्साशास्त्री इन जान-कारियों के आधार पर स्वास्थ्य-रक्षा के क्षेत्र में निकट भविष्य में ही नये चमत्कार-पूर्ण अविष्कार कर दिखायें।

संसार में मनुष्य ही एकमात्र प्राणी है जो झेंपता है या जिसे झेंपने की आवश्यकता पड़ती है।

—मार्क ट्वेन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्पवृक्ष के चोर

वि. स. खांडेकर की एक मराठी कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपान्तर

आज की चाय बहुत अच्छी तो नहीं थी, क्योंकि वह बासी दूध की थी। किंतु उसे पीते हुए, मुझे बड़ा आनंद आ रहा था, मानो मैं अमृत पी रहा हूँ। तभी तो पत्नी ने मेरी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखते हुए मुझसे स्नेहपूर्वक पूछा—"आज, तुम बड़े प्रसन्न दिखायी पड़ रहे हो, क्या बात है?"

निश्चय ही यह बात बिल्कुल ठीक थी कि, आज प्रातःकाल सोकर उठने के बाद से ही, मैं अन्य दिनों की अपेक्षा बहुत ही प्रसन्न था। लेकिन प्रश्न यह था कि, इस प्रसन्नता का कारण अपनी पत्नी से कैसे बताया जाये। बात यह थी कि, मैंने 'अलका' नाम का एक तेल बनाया था, जिसको बिक्री के लिए बज़ार में भेजे हुए भी चार महीने हो चुके थे। दीपावली के अवसर पर भी मैंने पत्र-पत्रिकाओं में उसके अनेकों विज्ञापन प्रकाशित कराये और उन विज्ञापनों में यह प्रचार किया कि, 'अलका तेल' लगाने से ही कालिदास जैसा महामूर्ख व्यक्ति भी परम बुद्धिमान् बन गया और 'शाकुंतल' जैसा अनुपम नाटक लिख सका। नूरजहाँ पर शाहजहाँ के आसक्त होने का कारण, नूरजहाँ द्वारा 'अलका तेल' लगाया जाना ही था। —फिर भी, यह दुर्भाग्य की बात थी कि, जनता को इस अद्‌भुत तेल का इतना बड़ा गुण बता देने तथा महान् साहित्यिक एवं ऐतिहासिक व्यक्तियों से संम्बधित कर देने पर भी, 'अलका तेल' की अपेक्षाकृत माँग बहुत कम हुई।

मैं विज्ञापनों पर इसलिए अधिक जोर दे रहा था कि, आज-कल का जमाना विज्ञापनों का है। लेकिन विज्ञापनों से वांछनीय लाभ न होने के कारण, मैं इधर इस बात से चिंतित हो गया था कि, 'अलका तेल' की खपत कैसे बढ़ायी जाये? इसी चिंतापूर्ण मनःस्थिति में ही आज तड़के मैंने यह स्वप्न देखा कि, एक हंसिनी 'अलका तेल' की शीशियों से भरे कमरे में उड़ कर आयी और सोने के अंडे देने लगी। मैं सोचने लगा कि, क्या इस सपने का मेरे 'अलका तेल' से कोई सम्बंध हो सकता है? प्रातःकाल के सपने सच्चे होते हैं, यह बात मुझे अपनी दादी से पहले ही मालूम थी। मुझे लगा कि, मेरे 'अलका तेल' की लोकप्रियता और प्रगति अब तेजी से बढ़ जायेगी। किंतु, यह सौभाग्य निश्चित रूप से कब मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त होगा. इसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता था। फिर भी मेरी खुशी का कारण यही था कि, निकट भविष्य में मुझे लक्ष्मी की प्राप्ति होने की सम्भावना थी और इसी खुशी के भाव को देख कर मेरी पत्नी ने मुझसे उसका कारण पूछा था।

यद्यपि मैंने उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया था फिर भी मेरी पत्नी हँस रही थी और बोली—"मैं तुमसे एक बात कहना चाहती थी।"

मैंने सोचा कि, शायद मेरी पत्नी यह कहना चाहेगी कि, 'अलका तेल' की खपत बढ़ाने के लिए वह दोपहर में सोने के बजाय दो घंटे तक लोगों के घर जाकर तेल की शीशियाँ बेचने का प्रयत्न आज से करेगी।

मैं उसकी ओर कुछ उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से देख रहा था, तभी उसने कहा—"देखो, ठीक दस बजे चलेंगे यहाँ से।"

"कहाँ?" मैंने पूछा।

"प्रभात सिनेमा-गृह में।"

"क्या वहाँ किसी ने 'अलका तेल' के लिए कोई आर्डर दिया है?"

"नहीं, वहाँ आज से नया खेल दिखाया जा रहा है।"

"पुराना होने पर उसे देख लेंगे—अभी क्या जल्दी है।"

"किंतु यह चित्र कुछ ऐसा-वैसा नहीं है। इसमें एक लड़की बहुत ही सुंदर नृत्य करती है।"

इतना कह कर पत्नी ने मेरे हाथ में उस सिनेमा का एक विज्ञापन रख दिया, जिसमें एक अभिनेत्री का नयनाभिराम चित्र छपा था। उसने कहा—"यही वह अभिनेत्री है, जिसने सारी बम्बई को अपने अद्भुत नृत्यों से सम्मोहित कर रखा है।"

दो रुपये दस आने के टिकट। 'अलका तेल' की शीशियों की बिक्री की कोई सम्भावना होती, तो मैं तत्काल ही प्रभात सिनेमा-गृह गया होता। लेकिन.....

पत्नी को अस्वीकारात्मक उत्तर देना जरा मुश्किल था। मैं विज्ञापन में अंकित अभिनेत्री को गौर से देखने लगा। उसका चेहरा आकर्षक और कोमल था। लंबे

केवल कहानी

आदम था और हौवा थी—दोनों सुख-पूर्वक रह रहे थे। हजारों बरस ऐसे ही बीत गये। कहानीकार को बड़ा क्रोध आया—इस जीवन को लेकर मैं क्या लिखूँ? कहीं कोई मोड़ नहीं; दुःख नहीं, सुख नहीं, राग-विराग कुछ भी तो नहीं। आखिर, उसने कल्पना का आह्वान किया और आदम-हौवा की कहानी, जो आज प्रचलित है, लिख डाली। अतः 'आदिम पाप' की बात कहानीकार की ही देन है; आदम-हौवा तो अभी तक स्वर्ग में परम पिता के सान्निध्य में वैसे ही निश्चेग रहते हैं, जैसे सदियों पूर्व रहा करते थे। —राजगोपालाचारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और काले बालों के कारण तो वह और भी सुंदर लग रही थी।

मैंने पत्नी से पूछा—"इस अभिनेत्री का नाम क्या है?"

"हंसिका"—उसने उत्तर दिया।

"हंसिका!"—नाम सुनते ही प्रातःकाल का सपना मुझे याद आ गया; सोने के अंडे देनेवाली हंसिनी—और, लंबे व काले बालों वाली यह अभिनेत्री हंसिका!—'अलका तेल'—और बाल।

मैं सोचने लगा—'अलका तेल' के विज्ञापन पर हंसिका का फोटो देने से और उसके नीचे उसकी यह राय लिख देने पर कि, 'अलका तेल' के उपयोग से ही मेरे बाल इतने सुंदर काले एवं मुलायम हुए हैं'—मेरा तेल फौरन लोकप्रिय हो जायेगा, और मेरे लिये वह पैसे का पेड़ भी सिद्ध होगा।

शाम को हम लोग प्रभात सिनेमा-गृह में पहुँचे। निश्चय ही पोस्टर में अभिनेत्री हंसिका ऐसी नजरों से दर्शकों को देख रही थी कि, देखने वालों का हृदय आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता था। मुझे भी बड़ी खुशी हुई और मैंने मन-ही-मन कहा—'नारी के शरीर की मादकता छिपाने के लिये नहीं; बल्कि वह प्रकट करने के लिये ही होती है।'

खेल आरंभ हुआ। हंसिका का पहला नाच आरंभ हुआ। दर्शकों की अगली कतार में सीटियाँ बजने लगीं। हंसिका के विपुल केशभार, उसके रूप-सौंदर्य तथा उसके शरीर-सौष्ठव ने दर्शकों को मानो मुग्ध कर लिया।

मध्यांतर में मेरी पत्नी महिला-मंडल की अध्यक्षा से मिलने गयी और एक नयी खबर लेकर लौटी। महिला-मंडल ने संक्रांति-पर्व के अवसर पर, अभिनेत्री हंसिका का भव्य स्वागत करने का सर्व सम्मति से निश्चय किया था।

खेल समाप्त हुआ। हम घर वापस लौटे। अपने तेल के विज्ञापन के विषय में ही मैं निरंतर सोचता रहा और मुझे इस सम्भावना से प्रसन्नता हो रही थी कि, मेरे तेल की लोकप्रियता एवं उससे होने वाली आमदनी भी बढ़ेगी।

तेल के विज्ञापन का विषय निश्चित होने पर, मैंने रसोई घर में जाकर अपनी पत्नी से कहा—"वह हंसिका तो बड़ी सुंदर अभिनेत्री है?"

पत्नी ने मेरी ओर बिना देखे ही कहा—"कोयला अच्छा लाया कीजिये! देखिये! कैसी चिनगारियाँ उड़ रही हैं।"

मैंने अपनी पत्नी के निकट बैठते हुए पूछा—"हंसिका का कौन-सा 'पोज' तुम्हें अच्छा लगा?"

इसी समय मेरा छोटा बालक रमेश जोरों से चिल्लाया—"अम्मा, मुझे बहुत भूख लगी है।"

मैं फिर कहने लगा, "वह हंसिका....."

पत्नी ने बीच में ही रोक कर कुछ रोष-पूर्वक कहा—"तुम्हारी हंसिका गयी चूल्हे में! ...उसी को जाकर बुला लाओ कि,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर से **आश्चर्यजनक** स्वास्थ्यका अनुभव कीजिये !

वॉटरबरीज़ कम्पाउंड एक प्रमाणित बलवर्धक औषध है जिसका उपयोग दुनिया भर में स्वास्थ्य का ख्याल रखनेवाले, अपने और अपने परिवार के लिये, करते हैं।

वॉटरबरीज़ कम्पाउंड में जीवनोपयोगी पौष्टिक तत्व हैं जो आपको और अपने परिवार को वह अतिरिक्त शक्ति प्रदान करते हैं जो प्रबल, स्वस्थ व आनन्दपूर्ण जीवन के लिये ज़रूरी है।

वॉटरबरीज़ कम्पाउंड निरन्तर खांसी, सर्दी और फेफड़े की सूजन आदि का खंडन करता है। बीमारी के बाद शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिये डाक्टर इसकी सिफारिश करते हैं।

अब बोतलों में ऐसे ढक्कन लगाए गए हैं जिनमें से थोड़ी-सी भी दवा का चुराना संभव नहीं है। साथ ही बोतलों पर अब नया, लाल, 'लेबिल' लगा है।

अब पुराना लाल रंग का 'रेपर' हटा दिया गया है।

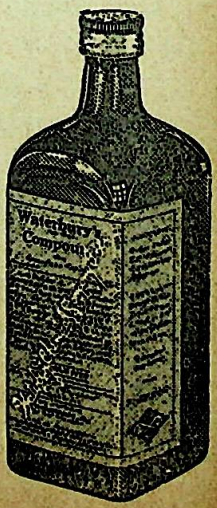

तन्दुरुस्त बने रहने के लिये

वॉटरबरीज़ कम्पाउंण्ड

लीजिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ आकर आग सुलगावे और रसोई बनावे। दो बच्चों के बाप हो गये और उस अभिनेत्री पर मोहित होने में तुम्हें शर्म नहीं आती? मैं अभी सम्पादक के नाम पत्र लिख कर यह माँग करती हूँ कि, ऐसे चित्र देखने के लिये पतियों पर प्रतिबंध लगाया जाये।"

जब मैंने समझाया कि, अभिनेत्री हंसिका से मेरा कोई प्रेम-वेम नहीं है, बल्कि उस पर तो मेरी आजीविका निर्भर होने वाली है। मेरा इरादा तो यह है कि, संक्रांति-पर्व के अवसर पर एक प्रभावशाली मासिक-पत्र में हंसिका के फोटो के साथ 'अलका तेल' का विज्ञापन, उसकी सम्मति के साथ प्रकाशित कराया जाय, तब कहीं जाकर उनका गुस्सा शान्त हुआ।

रातभर मैं मधुर सपने देखता रहा। दूसरे दिन सुबह मैंने विज्ञापन के सिलसिले में 'अलका तेल' की प्रशंसा में सम्मति लेने के लिये एक पत्र अभिनेत्री हंसिका को लिखा।

मेरे पत्र का उत्तर हंसिका की ओर से तीसरे दिन ही आ गया। उत्तर अंग्रेजी में था और नीचे हंसिका के पिता का उर्दू में हस्ताक्षर था। ऐसा लगता था कि, हंसिका के सारे काम, उसके पिता ही किया करते थे। मेरी सारी माँगें, जैसे हंसिनी का फोटो, मेरे तेल की प्रशंसा में उसका व्यक्तिगत अनुभव और सम्मति आदि, स्वीकार करने के लिये वे तैयार थे। लेकिन उनकी शर्त एक थी कि, मैं कम-से-कम ५०० रु. उनको भेंट करूँ। यह रकम मेरी शक्ति के बाहर थी, फिर भी भावी अर्थ-लाभ की आशा से, मैंने 'अलका तेल' की शीशी के साथ एकमुश्त रकम हंसिका के पिता के पास भेजने का साहस कर ही डाला। तीसरे ही दिन हंसिका का फोटो तथा उसकी प्रशंसापूर्ण 'सम्मति' आ गयी और मैंने यह सब चीजें संक्रांति के अवसर पर निकलनेवाले उस मासिक-पत्र के विशेषांक के लिये तुरंत भेज दी।

दूसरे दिन मुझे अपनी पत्नी से ज्ञात हुआ कि, हंसिका ने महिला-मंडल के एक समारोह की अध्यक्षता करना भी स्वीकार कर लिया है।

संक्रांति-पर्व का दिन आया। किंतु यह देख कर मुझे बड़ा आघात पहुँचा कि, विशेषांक में मेरे तेल के अलावा छह अन्य तेलों का भी विज्ञापन छपा था और उन सब विज्ञापनों में अभिनेत्री हंसिका का फोटो तथा उसकी प्रशंसापूर्ण सम्मति भी प्रकाशित हुई थी।

मुझे बड़ा गुस्सा आया और उस धोखेबाज अभिनेत्री से जवाब तलब करने का निश्चय किया।

हंसिका एक होटल में ठहरी थी। उसको देखने के लिये हजारों आदमियों ने होटल को चारों तरफ से घेर रखा था। उस भीड़ में से मार्ग पाना और हंसिका से मिलना एक टेढ़ी खीर ही थी। सौभाग्य से होटल के दरवाजे पर, जो युवक खड़ा था, उसे मैंने 'अलका तेल' की एक शीशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप के लिए
चित्र तारिकाओं का सा
जगमगाता हुआ रंग रूप

वहीदा रहमान कहती हैं, "लक्स टॉयलेट साबुन रंग रूप की देख भाल के लिए ही बना है। लक्स के मलाई जैसे मुलायम झाग से मेरी जिल्द रेशम सी नर्म रहती है!" लक्स टॉयलेट साबुन की मंद मंद सुगंध से आपकी तबीअत खिली रहती है। अपने सौंदर्य के लिए लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल कीजिये।

शुद्ध सफ़ेद **लक्स टॉयलेट साबुन**

चित्र तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

LTS. 10-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमपूर्वक भेंट की और हंसिका के पिता तक, एक चिट्ठी पहुँचाने का अनुरोध किया।

थोड़ी देर में अन्दर से मुझे बुलावा आया। हंसिका के पिताजी हुक्का पी रहे थे। मुझे देखते ही उन्होंने कहा—"आइये, बैठिये!"

मैंने कहा—"इस अंक में तेल के कुछ विज्ञापन हैं, जिनमें यह दिखाया गया है कि, हंसिका उनका उपयोग करती है। यह क्या सच है?"

"हाँ, सच है, इसमें क्या हर्ज है?"

वह बुड्ढा हँसा और बोला—"मेरी लड़की प्रति दिन अलग-अलग तेल का उपयोग करती है। सोमवार को 'अलका तेल,' मंगलवार को....."

फिर भी मैंने कुछ शांत किंतु दृढ़ स्वर में कहा—"अच्छा, अपनी लड़की हंसिका को तो जरा बुलाइये। मैं उसी से सफाई तलब करूँगा।"

"उसकी फीस लाये हैं आप?" बुड्ढे ने प्रश्न किया।

"फीस?" मैंने साश्चर्य कहा।

"क्यों नहीं, क्या डाक्टर और वकील फीस नहीं लेते! मेरी लड़की से भेंट करने की फीस प्रति मिनट ५ रु., प्रति घंटा ५० रु. और प्रति दिवस..."

थोड़ी देर बाद उन्होंने फिर कहा—"देखिये, मेरे समय का भी मूल्य है, यद्यपि मेरी भेंट उतनी महंगी नहीं होती, जितनी मेरी लड़की की होती है। फिर भी मेरी फीस प्रति मिनट १ आना, प्रति घंटा..."

मैं घर वापस आया, और सारा किस्सा अपनी पत्नी को सुनाया। उसने कहा—"घबड़ाओ नहीं, आभार प्रदर्शित करने का काम महिला-मंडल की सेक्रेटरी के रूप में मुझे ही करना है। मैं उस दुष्ट की ऐसी खबर लूंगी कि, वह भी समझेगी!"

मैंने कहा—"आज सायंकाल के समारोह में तुम श्रोताओं को यह अवश्य बताना कि, हंसिका के सुंदर और लंबे बालों के सप्तमांश पर 'अलका तेल' का हक है। इस प्रकार हंसिका देवी और हमारे बीच घनिष्ट संबंध है।"

समारोह से वापस लौटने पर अपनी पत्नी से मैंने उत्सुकतापूर्वक पूछा—"तुम्हारा भाषण सुनकर तो श्रोताओं को बड़ा मजा आया होगा।"

"बात यह थी कि, यदि मैं वैसा कहती, तो अपने तेल की ही बदनामी होती।"

"कैसे?"

"हंसिका के बाल सुंदर, लंबे और मोहक हैं ही नहीं, समझे! वह तो 'बाबकट' है।"

मेरी आँखों के सामने प्रभात सिनेमागृह के पोस्टर में अंकित विपुल केशभार और आकर्षक आखों वाली हंसिका दिखायी दी और इसके बाद ही विशेषांक में छपे विज्ञापन का ५०० रु. का बिल। साथ ही 'अलका तेल' के केशवर्धक होने के संबंध में 'बाबकट' अभिनेत्री का प्रशंसा-पत्र!

किंतु, संतोष की बात यही थी कि, जो कुछ भी हुआ था, उसमें अन्य छह व्यक्ति भी हिस्सेदार थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चुनी हुई वर्जीनिया तम्बाकू
विशिष्ट मिश्रण
सुमधुर स्वाद
मृदु-मधुर सुवास

यानी एक मनपसन्द धूम्रपान

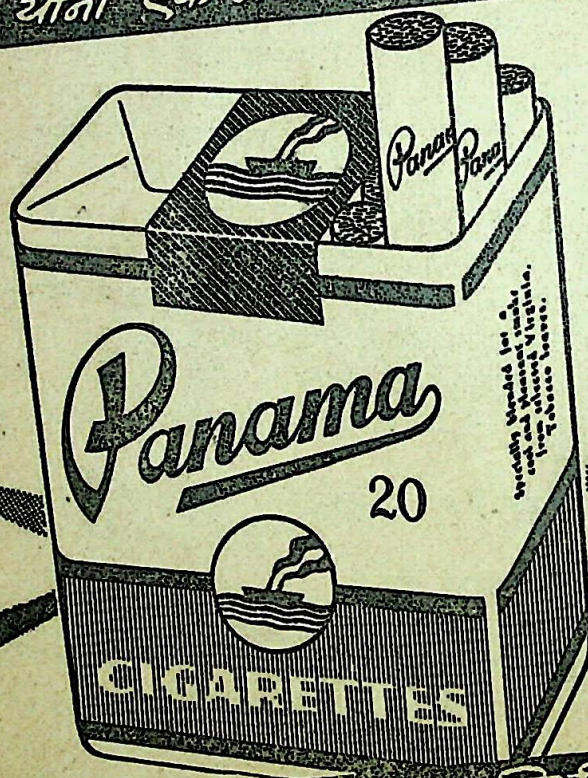

पनामा आपको आखिरी
कश तक मज़ा देती हैं!

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता :
गोल्डन टोबेको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई २४
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

Greens' Advtg.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आन्दोलन

अश्फाक अहमद की उर्दू-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

वह पास वाले बंगले की उन टूटी-फूटी ईंटों के ढेर पर बैठा था, जिन्हें लम्बी-लम्बी दस्तियों वाली छोटी-छोटी हथौड़ियों से तोड़ कर कंकरियों में बदल दिया जाता है। फिर उन्हीं कंकरियों में सिमेण्ट और राख मिला कर नीवों में डालते हैं; और ऊपर इमारत उठाते हैं।

बेगम नियाज़ ने अपने बेड-रूम के सिंगार-मेज़ से सुर्ख रिबन उठा कर रिंग-मास्टर की तरह झटका और अपने फूले हुए बालों में बाँध लिया। फिर सफेद डोरी के सिरे पर लगी हुई पिंगपाँग की गेंद खींची और लोहे के फ्रेम में जड़े हुए अड़तालीस शीशोंवाले दरीचे से सवात के पर्दे इधर-उधर हट गये। दरीचे के ऐन सामने वह ज़ेरेतामीर बंगले की टूटी-फूटी ईंटों के ढेर पर बैठा था। बेगम नियाज़ ने नफरत से भवें सिकोड़ कर दूसरी गेंद खींची और पर्दा फिर अपनी जगह पर आ गया। गुस्से से दाँत पीस कर वे सिंगार-मेज़ के स्टूल पर बैठ गयीं और रुआँखी होकर बोलीं—

"तौबा! रज़ीलों की औलाद किस कदर ज़िद्दी और अड़ियल होती है। जो कुछ माँ-बाप सिखा देते हैं, क्या मजाल कि, रत्ती-भर भी इधर से उधर सरक जायें। सुबह-सुबह फिर आके बैठ गया हरामजादा कहीं का!"

मिस्टर नियाज़ अपनी बेगम को खुश करने के लिए मुस्कराये और लेटे-लेटे तकिये के नीचे हाथ डाल कर सिगरेट तलाश करने लगे। बेगम ने मुँह फुला कर कहा—"आपसे इतना भी तो नहीं हो सकता कि, उसके बाप को बुलाकर धमकायें और उसे अपना रवैया ठीक करने को कहें। आपने तो मातहतों को सर चढ़ा लिया है। कल शाम इस फितने ने जो मुझसे की है, खुदा करे तुम्हारे साथ होती, तो फिर आटे-दाल का भाव मालूम होता। वह तो मेरा जी था, जो चुपकी हो रही; वरना इस हरामी पर प्लोटू छोड़ देती। कीमा ही बाँधकर ले जाते घर वाले।"

मिस्टर नियाज़ ने कोहनियों के बल हो कर सर पीछे डाल दिया और सिगरेट का कश लेते हुए बोले—"घबराइए नहीं! मैं इसके बाप से आज ही जवाब-तलबी करूँगा और उसकी तब्दीली के आर्डर निकाल कर, आज शाम ही बिस्तर गोल करा दूंगा। ज़लील कहीं का!"

"और अगर आपने तब्दीली न की तो?" बेगम ने बेगमाना अन्दाज़ में पूछा।

"तो आप हमें अपने घर में न घुसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धू नौकर समझदार मालिकन

— हाँ, हाँ मालिकन 'डालडा' ही लाऊंगा लेकिन इसकी पहचान तो बता दो।

— अरे मूर्ख पढ़ नहीं सकते, मगर देख तो सकते हो! कई बार बताया कि 'डालडा' के डिब्बे पर खजूर के पेड़ का चित्र होता है!

— अरे हाँ याद आ गया! तो मालिकन कटोरे में लाऊँ या पतीली में?

— अरे लाल बुझक्कड़, 'डालडा' कभी खुला नहीं मिलता, केवल मुहरबंद डिब्बों में मिलता है।

— ताकि लोग चोरी न कर लें?

— हाँ, और मुहरबंद डिब्बों में न मक्खी मिट्टी का डर रहता है न धूल मिलावट का। और तंदुरुस्ती के बिगड़ने का भी खतरा नहीं रहता।

— तो इसी लिए जिस घर में देखो 'डालडा' नज़र आता है!

— हाँ, अच्छा तो कितने वज़न का डिब्बा लाओगे?

— जितने का मिलेगा!

— अरे मिलने को तो यह १/२, १, २, ५, और १० पौंड के डिब्बों में मिलता है, मगर तुम ५ पौंड का डिब्बा ले आना।

— अच्छा अच्छा मालिकन तो डालडा छाप वनस्पति ५ पौंड के मुहरबंद डिब्बे में खजूर के पेड़ का चित्र देख कर लाऊँ— अब तो ठीक है ना!

— हाँ, हाँ, जाओ जल्दी करो।

डालडा वनस्पति में खाना पकाइये—
ताक़त और तंदुरुस्ती पाइये

DL. 468-X29 HI

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीजियेगा।"

बेगम ने ज़मीन पर गिरा हुआ रिबन फिर उठा लिया।

× × ×

कय्यूम के अब्बा दफ्तर में नौकर थे। वे सुबह पतलून को किलिप लगा कर दफ्तर जाते थे। शाम को थैला लेकर सब्ज़ी लेने जाते। कभी-कभी कय्यूम भी उनके साथ जाता। खोमचे वालों को देख कर रुक जाता। कभी कहता—"मुझको यह ले दो!" कभी कहता—"वह ले दो।" उसके अब्बा बहुत नाराज़ होते। कभी झिड़कते, कभी हाथ पकड़ कर खींचते। घर पहुँच कर उसकी माँ से कहते—"फिर कभी मैं कय्यूमी को साथ न ले जाऊँगा। यह बहुत तंग करता है, बाज़ार में। रास्ते में किसी भी चीज़ को देख कर रुक-रुक जाता है।" कय्यूमी की अम्मी बच्चे को समझातीं—"अच्छे बच्चे यों नहीं किया करते! बड़ों का कहा मानते हैं! देखो, असद अपने माँ-बाप का कितना कहना मानता है! है न, बेटा!"

कय्यूमी ने कहा—"उसके अब्बा ने उसे तोता लाकर दिया है।"

"तू तोता लेकर क्या करेगा? गुस्से में आयेगा तो उँगली काट लेगा। पिंजरा खुला, तो उड़ जायेगा।"

"तो फिर मुझे एक छोटा-सा कुत्ता ले दो; जैसा जिमी के पास है।"

"हम कुत्ता कहाँ रखेंगे? जिमी तो कोठी में रहता है। उसके नौकर-चाकर हैं.....।"

"तो फिर मुझे एक बिल्ली ही ले दो। मैं उसके गले.....।"

"बकवास बन्द करेगा कि नहीं! बिल्ली के बच्चे!" उसके बाप ने झिड़का और वह सहम गया।

× × ×

कय्यूम के मामूं इण्डोनेशिया में रहते थे। उसके माँ-बाप इण्डोनेशिया की बातें करते कि, वहाँ हर चीज़ सस्ती है। कय्यूमी ने जब यह सुना, तो बहुत खुश हुआ। ताली बजा कर बोला—

"अम्मी, मुझे वहाँ से एक बिल्ली मँगवा दो!"

अम्मी ने कहा—"सदके जाऊँ, बिल्ली कैसे आयेगी?"

"मामूं को लिख दो कि, डब्बे में बंद करके भेज दें!"

"डब्बे में बिचारी भूखी-प्यासी मर नहीं जायेगी?"

"मामूं को लिखिए कि, उसे छेद वाले डब्बे में भेजें। साथ ही दूध की बोतल रख दें।" माँ ने बेटे को कलेजे से लगा लिया।

× × ×

इण्डोनेशिया के पाकिस्तानी दूतवास में अपना सेवा-काल खत्म करके जब कय्यूम के मामूं लाहौर पहुँचे, तो कय्यूम के लिए एक छोटा-सा बिल्ली का बच्चा भी लाये।

"यह वण्डरफुल बिल्ली है। इसे स्यामीज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंद कीजिये

मसूढ़ेकी तकलीफ
दंतक्षय
बदबूदार साँस

फोरहन्स टूथपेस्ट का इस्तेमाल कीजिये

तथा अपने चमकीले,
सफेद, स्वस्थ दाँतों पर गौरव कीजिये।

हाल ही में फोरहन्स-चमकीली-मुस्कान-प्रतियोगिता में समस्त भारत से असंख्य प्रशंसा पत्र आए हैं जिनमें फोरहन्स टूथपेस्ट के विशिष्ट गुण की चर्चा है। और कोई आश्चर्य नहीं...क्योंकि फोरहन्स ही एकमात्र ऐसा टूथपेस्ट है जिस में मसूढ़ों के लिये डा. आर. जे. फोरहन द्वारा बनायी विशेष पौष्टिक दवा मौजूद है। फोरहन्स टूथपेस्ट दंतक्षय, बदबूदार साँस व मसूढ़ों की तकलीफ को प्रभावशाली ढंगसे बंद कर देगा। फोरहन्स टूथपेस्ट का इस्तेमाल कीजिये तथा अपने चमकीले, सफेद, स्वस्थ दाँतों पर गौरव कीजिये।

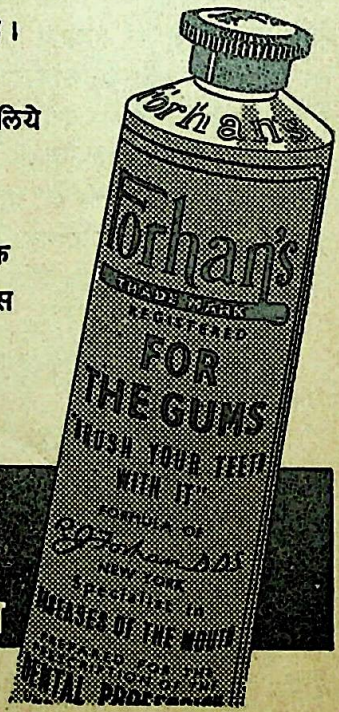

फोरहन्स

एक दंतचिकित्सक द्वारा निर्मित

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.

S. 28 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैंट कहते हैं। जकारता में एक कर्नल के पास थी।" कय्यूमी! मामूँ की कमर के पीछ से निकल कर बिल्ली को प्यार करने के लिए ज़रा-सा आगे बढ़ा ही था कि, बिल्ली ने अंगड़ाई ली और कय्यूमी भी सहम कर पीछे हट गया। सब हँसने लगे। मामूँ ने कहा—"आओ, आगे आओ! यह तो तुम्हारी दोस्त है! हमने इसे तुम्हारा नाम बता दिया है।" फिर उन्होंने बिलौटे की पीठ पर हाथ फेरा और उसके जिस्म से खटर-खटर की आवाज़ निकलने लगी।

कय्यूम के मामूँ ने कहा—"स्यामी-बिल्ली बस एक ही बच्चा देती है। उसके बाद सारी जिंदगी वैसे ही बिता देती है।"

"बड़ी ब्रह्मचारिन बिल्ली है।" ख्वाजा साहब मुस्कराय।

"हाय अल्लाह!" मरियम ने कहा—"एक बच्चा, सिर्फ! मर जाये, तो माँ का जी वीरान हो जाये। है न?"

ख्वाजा साहब ने कहा—"बिल्ली माँ और औरत माँ में बड़ा फर्क है। बिल्ली के बच्चे को न सोने के सेहरे लगते हैं, न उसे डिप्टी बनना होता है। इसलिए वह बच्चे को रो-धो कर भूल जाती है। और माँ का बच्चा मरता है, तो उसके साथ एक दूल्हा मरता है। एक डिप्टी मरता है। कमाई का ज़रिया डूबता है। जब इतनी सारी चीज़ें एक साथ फना हो जायें, तो किसका जी वीरान न होगा भला!"

सिद्दीक ने कहा—"भाई जान तो फिलासफी के लेक्चर देने लगे!"

ख्वाजा साहब बोले—"कराची में रहेगा। दो-चार बच्चे हो जायेंगे, तो तेरी फिलासफी भी खुद-ब-खुद नज़र आने लगेगी।"

"इसका नाम गातो है। जर्मन भाषा में, 'गातो' बिल्ली को कहते हैं।" मामूँ बोले।

"हाँ, अम्मी 'गातो' बड़ा अच्छा नाम है।"

मामूँ ने कय्यूम के सर पर हाथ फेरा और गातो को दोनों हाथों में उठा कर, कय्यूम की तरफ बढ़ा दिया। कय्यूम डरा, झिझका, फिर उसने गातो को हाथ में उठा लिया। गातो ने अपनी दुम पिछली टाँगों में दबायी और पंजे बगलों में दबा लिये। कय्यूम ने डरते-डरते उसकी गुलाबी नाक पर फूँक मारी। गातो ने आँखें बन्द कर लीं। उसने बन्द आँखों वाली गातो को

परछाईं

तबियत होती है कि, शीशे को खिड़की से बाहर फेंक दूँ—जब देखता हूँ, अपना ही चेहरा अजनबी लगता है; जितना पहचानने की कोशिश करता हूँ, उतना ही खुद को अपरिचित पाता हूँ। आख़िर ऐसा क्यों? खुद की परछाईं ही छल करने लगती है? क्या आदमी दर-असल अपने में इतना बँटा हुआ है कि, उसका एक टुकड़ा दूसरे टुकड़े से मीलों दूर पड़ा हो? —नायमी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगमग जगमग चमकदार

-यह है विम का चमत्कार!

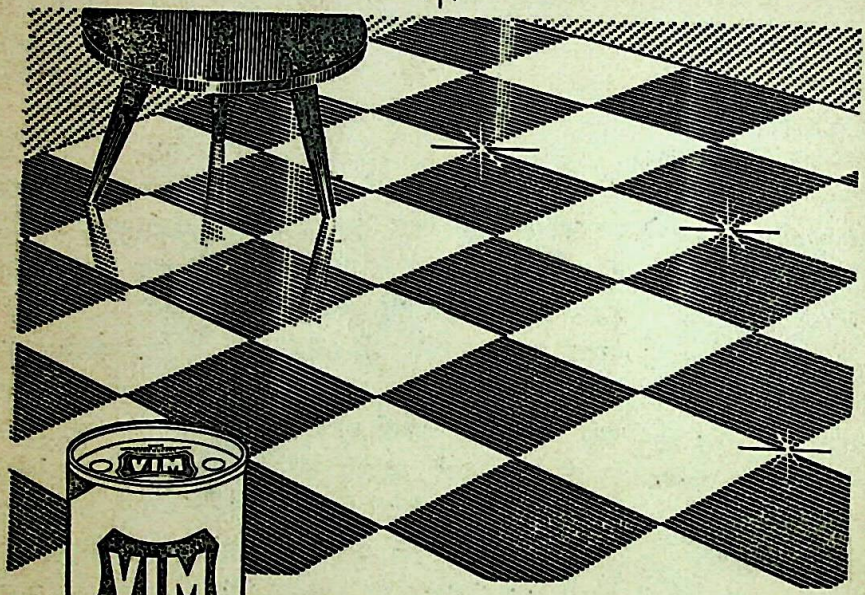

विम से एक बार साफ़ कीजिये और देखिये हर चीज़ कैसे जगमगाने लगती है—फ़र्श, मुंह हाथ धोने और बरतन मांझने की चिलमचियां हों या रसोई घर के बरतन, कांच और चीनी का सामान। विम से सफ़ाई कीजिये तो न रगड़ने के निशान पड़ते हैं न कड़ी मेहनत। और आराम कितना है! गीले कपड़े पर विम छिड़किये, हलके से मलिये—आप दंग रह जायेंगे कि दाग कहां गये! घर की शान बनानी है तो विम इस्तेमाल कीजिये!

विम- जगमग जगमग सफ़ाई के लिए!

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

V.99-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने गाल से लगा लिया। गातो खटर-खटर बोलने लगी।

अब मुहल्ले के बच्चे कय्यूम से खेलने लगे। कोई कहता—"जरा-सी देर के लिए गातो मेरी गोद में दो।" कोई कहता—"एक मिनिट मुझे दो।" कय्यूम हर एक को अपनी बिल्ली दे देता। उसके दोस्त गातो को उठा कर प्यार करते। अपने घरों से दूध चुरा लाते, गातो को पिलाते। खुश होकर कय्यूमी कहता—"मेरे मामूँ विलायत से लाये हैं। साहब से खरीदी है। सौ रुपये में आयी है। अभी छोटी है। बड़ी हो जायेगी, तो चूहे मारेगी, शेर से लड़ेगी। मैं इसे अपने साथ स्कूल ले जाया करूँगा।" कय्यूमी खुश होकर गातो को गले से लगा लेता। उसका मुँह चूमता।

उसकी अम्मी कहती—"तू तो इस बिल्ली के पीछे पागल हो जायेगा। रोटी खाता है, तो साथ बिठाकर! सोता है, तो गले लगा कर!"

कय्यूमी ने कहा—"मेरी गातो है न, आपको क्या! जब मैं स्कूल से आता हूँ, दरवाज़े में बैठी होती है। मैं उसे कहानियाँ सुनाता हूँ। वह मुझे गाना सुनाती है....।"

गाने की बात सुन कर कय्यूमी की अम्मी हँस पड़ी।

× × ×

एक शाम जब ख्वाजा साहब दफ्तर से लौटे, तो उन्होंने मरियम से कहा—"आज बेगम साहिबा दफ्तर आयी थीं।"

"तुम्हारे दफ्तर?" मरियम ने बेताल्लुकी से कहा—"अपने खाविन्द से मिलने आयी होंगी।"

"तो और क्या, मुझसे मिलने आयी थीं।" ख्वाजा साहब चारपाई पर दराज हो गये और मरियम उनके पास पायेंती की ओर बैठ गयी। अपने शौहर के पेट पर हाथ फेर कर बोली—"आज रोटी खायी थी?"

"हाँ!" शौहर ने आँखें बन्द करके कहा—"पुलाव और मुर्गे का शोरबा। अंगूर और केले का कस्टर्ड।"

मरियम ने अपने खाविन्द को ज़ोर से झिझोड़ा और कहा—"हाय अल्ला! मेरे साथ तो मज़ाक न किया करो!"

"खुदा की कसम!" ख्वाजा साहब ने आँखें खोल दीं और पतलून के पाँयचे तले टखना खुजा कर बोले—"बेगम साहिबा अपने साथ बंगले पर ले गयी थीं।"

"खैर अल्ला!" मरियम ने मुस्कराने की कोशिश की, "इतनी मेहरबानियाँ क्यों भला?"

ख्वाजा साहब थोड़ी देर तक चुप रहे। फिर बोले—"सुनो, मरियम! बेगम साहिबा ने गातो को माँगा है।"

"गातो!" मरियम के मुँह से चीख-सी निकल गयी—"कय्यूम की बिल्ली को?"

"हम उसे कोई और ले देंगे। यह अमीरों के रखने की बिल्ली है। वही इसकी ज़ात-कुज़ात समझते हैं।"

"अमीर जायें दोज़ख में। मेरे लाल की बिल्ली! मैं तो किसी को हाथ भी न लगाने दूंगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नालीनगर में भयंकर हत्याकांड!

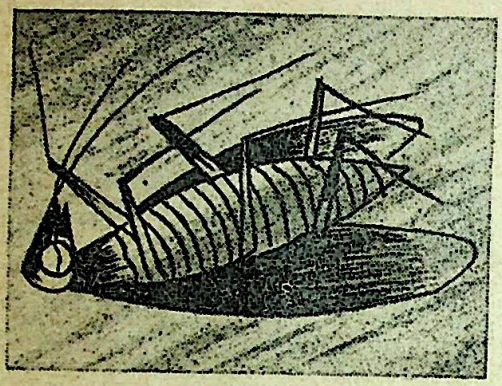

अत्याचार घरेलू कीड़े-मकोड़ों का सत्यानाश करने की नयी योजना का एक हिस्सा है। फ़्लिट के इस अत्याचार से बचने के लिए सुरक्षा-साधन खोजने के सभी प्रयत्न बेकार साबित हुए हैं और अब तो बड़े-बड़े कीट-वैज्ञानिकों ने भी हथियार डाल दिये हैं।

फ़्लिट के कारण छः जानें गयीं!

कल शहर में एक भयंकर दुर्घटना हो गयी। ख़बर मिली है कि नालीनगर के श्री गन्देभाई तिलचट्टे, उनकी पत्नी और उनके चार नन्हे-मुन्ने बच्चों को फ़्लिट ने गला घोंट कर मार डाला।

इस शान्त और गन्दे मुहल्ले में फ़्लिट के अकस्मात प्रगट होने का कारण अभी तक मालूम नहीं हो सका है लेकिन हमारे संवाददाता को पता चला है कि यह

'अब जान नहीं बच सकती!'

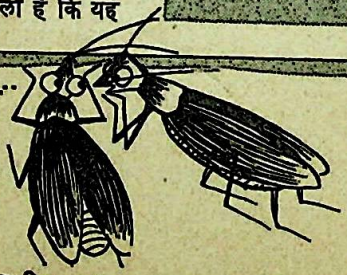

स्टैण्डर्ड-वैक्यूम ऑइल कंपनी (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में संस्थापित)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ख्वाजा साहब ने मरियम की बात पर जान-बूझ कर ध्यान न दिया और बोले—"परसों साहब ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और कहा—'ख्वाजा साहब ! सुना है, आपके पास एक बिल्ली है।' मैंने जवाब दिया—'जी हाँ है।' पूछने लगे—'कैसी है ?' मैंने कहा—'जी, पता नहीं, छोटी-सी है। मेरे लड़के का मामूं इण्डोनेशिया से लाया था। साहब ने मेज़ की दराज़ से एक किताब निकाली। उसमें बिल्लियों की हजारों तस्वीरें थीं। मुझे दिखाकर कहने लगे—'पहचानो तो, तुम्हारी बिल्ली किससे मिलती है।' मैंने आठ-दस वर्क ही उल्टे होंगे कि, गातो जैसी बिल्लियों से पूरा एक सफा भरा हुआ निकल आया। मैंने साहब से कहा—'ऐसी है, जनाबे आली !' साहब बहुत खुश हुए। कहने लगे—'हमारी बेगम को बिल्लियों का बहुत शौक है। यह किताब उन्हीं की है। उन्होंने ही दरख्वास्त की थी कि, अगर कृपया आप अपनी बिल्ली हमें तोहफा दे देंगे, तो आपकी नवाज़िश होगी।' यह सुनकर, मैं शर्मिन्दा-सा हो गया और नज़रें झुका लीं। साहब ने फिर पूछा, तो मैंने कहा—'साहब, वह मेरे बच्चे की बिल्ली है। और उसी के लिए.....' मगर साहब ने मेरी बात पूरी न सुनी और कहा—'बच्चे का क्या है। उसे तुम कोई और खिलौना-विलौना देकर बहला देना। कोई ऐसी मुश्किल बात नहीं। बच्चे बहल ही जाया करते हैं।' और आज बेगम साहिबा आ गयीं कि, चलो अभी बिल्ली लाकर दो। मैंने कल की मोहलत माँगी है।"

मरियम ने यह सारी बात खामोशी से सुन कर कहा—"बेगम साहिबा होंगी, तो अपने घर की होंगी। हम कोई उनका दिया हुआ खाते हैं, जो बिल्ली दे दें। मेरे कय्यूमी की तो उसमें जान है।"

ख्वाजा साहब ने कहा—"मगर हमारी जान साहब के हाथ में है। मैं कल कय्यूम के स्कूल जाने के बाद दफ्तर जाऊँगा और गातो को साथ ले जाऊँगा और बेगम साहिबा के बँगले पर छोड़ आऊँगा। जब कय्यूम स्कूल से वापस आयेगा, तो हम कह देंगे कि, मुहल्ले की आवारा बिल्लियों के साथ भाग गयी।"

मरियम अपने खाविन्द के कंधे से लगी रोती रही। और उसका सारा जिस्म सिसकियों से हिचकोले खाता रहा।

× × ×

कय्यूम चौबारे की छत पर खड़ा था। रो-रो कर उसकी आँखें सूज गयी थीं। गातो न किसी कोठे पर नज़र आती थी, न किसी सहन में। उसने चारों तरफ मुँह उठा कर आवाज़ें दीं—"गातो ! गातो ! गातो ! ....गातो !" पर कोई न बोला। कय्यूम रोता हुआ, नीचे उतर आया। उसकी अम्मी ने कहा—"सदके जाऊँ, क्यों हल्कान होता है। आज गयी है ; कल वापस आ जायगी। बिल्ली अपना घर नहीं छोड़ती। साल भर बाद भी वापस आ जाती है। न आयी, तो मैं अपने चाँद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं, लक्स में धुला है!

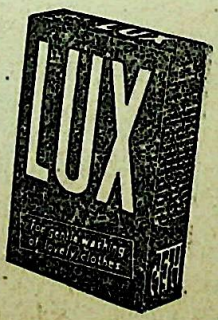

यह फ्राक नया तो नहीं लेकिन लगता नया है क्योंकि यह नरम लक्स फ़्लेक्स में धुला है। उमदा रेशमी, सूती और नाज़ुक ऊनी कपड़े विना खटके लक्स के कोमल और भरपूर झाग में धोइये—इन के असली रंग भी चमकेंगे और ये नज़र भी नये आयेंगे।

लक्स की धुलाई में क़ीमती कपड़ों की भलाई है

LX. 138A-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को कोई दूसरी और ले दूंगी।"

और का नाम सुना, तो कय्यूम और जोर-जोर से रोने लगा। चीखें मारता नीचे उतर गया। जिल्दसाज़ की दुकान पर पहुँचा। कहने लगा—"यहाँ मेरी गातो तो नहीं आयी?" दफ्तरी ने कहा—"उसे क्या जिल्द बँधवानी थी, जो यहाँ आती!" कय्यूम ने पंसारी से पूछा, शरबत वाले से पूछा, कसाई के तख्ते के नीचे नाली में हाथ डाल कर देखा। सिगरेट वाला बोला—"क्लर्क का लौण्डा, क्या गातो-गातो कर रहा है! एक बिल्लौटे को रो रहा है। बड़ा होगा, तो आप ही समझ जायेगा।"

कय्यूम के दोस्त कहने लगे—"चलो! चिट्टीं मस्जिद के मौलवीजी से लोटा फिरवाते हैं। वह चोर की परची निकाल देंगे!" दोस्तों को साथ लेकर, कय्यूम रोता-रोता मौलवी के पास पहुँचा। मौलवी काना था। उसने सारी बात सुनी। दाढ़ी हिलाकर बोला—"पाँच पैसे लाओ, मैं लोटा घुमा दूँगा।" सबने एक-एक पैसा डाल कर पाँच पैसे जमा किये। मौलवी ने लोटा घुमाया। भंगन के नाम की परची निकली। कय्यूम गुस्से में दीवाना, जोर-जोर से दहाड़ें मारता, भंगियों की बस्ती में पहुँचा। जाते ही अपनी भंगन से उलझ गया। उसकी ओढ़नी फाड़ डाली। टाँगों से चिमट गया। चीख-चीख कर कहने लगा—"मेरी गातो दो! मेरी बिल्ली अभी लाकर दो!!"

भंगन ने परे धकेला। कय्यूमी ने उसकी कलाई में काट खाया। भंगन ने जल्दी से हाथ छुड़ाया, तो गिलट का कंकन कय्यूम के माथे में जा लगा। खून की एक पतली-सी लकीर दौड़ने लगी। भंगी ने रोते हुए कय्यूम को उठाया और उसके घर ले आया। अम्मी ने दुपट्टा फाड़कर पट्टी बाँधी। ख्वाजा साहब ने इस हालत में कय्यूम को देखा, तो चुप-चाप नीचे उतर कर बाहर चले गये।

जाड़े का मौसम था और खुश्क सर्दी पड़ रही थी। कय्यूम माथे पर पट्टी बाँधे, अपनी माँ के साथ बिस्तर में दुबका हुआ था। उसने ख्वाब देखा। भंगी दरवाजे पर दस्तक देकर कह रहा था—"बीबीजी, बिल्ली ले लो जी!" भंगी की इस दस्तक से कय्यूम की आँख खुल गयी। उसने अपनी माँ का गोल-गोल कंधा पकड़ा हुआ था। और उसकी माँ उसके अब्बा से कह रही थी—"उस मरनजोगी खच्चर के अपने तो औलाद न हुई, दूसरे के बच्चे का नूर निकाल कर ले गयी, करमजली कहीं की। मैं तो जिस दिन ईद की डाली लेकर गयी थी, उसी दिन पता लग गया था कि, कैसी डायन हैं, तुम्हारी बेगम साहिबा! सारा वक्त मैं तो क़य्यूमी पर पढ़-पढ़ कर दम करती रही। हबीब-पाक उसके दीदों से बचाये। बच्चा-खोर लगती है। इसीलिए तो गोद नहीं भरती। अब गातो को लेकर दूध पिलाती फिरे!"

ख्वाजा साहब चुप रहे, तो मरियम ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया जीवन

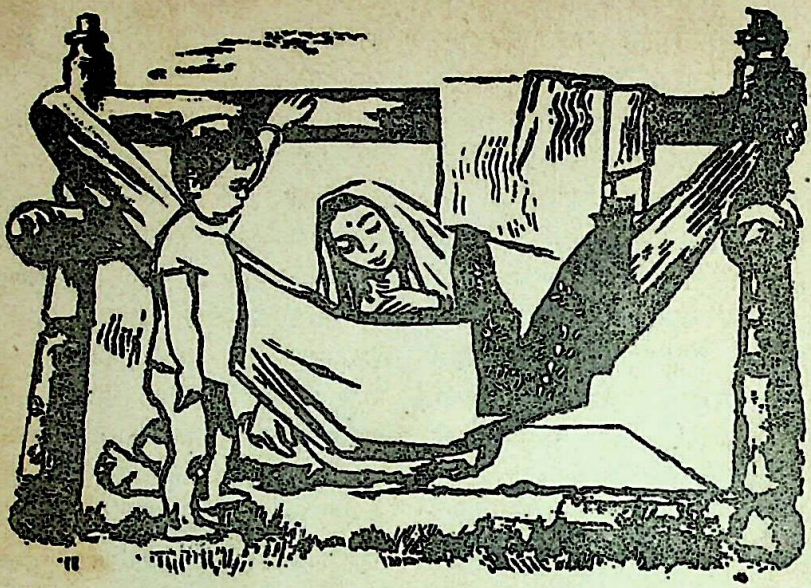

जागते हुए नये जीवन का पहला गीत सुना आपने?
नवजात बच्चे का पहला बोल इस नये जीवन की ललकार है। बेशुमार इन्सान काम और निर्माण के लिए, प्रकृति की शक्तियों पर काबू पाने के लिए उठ रहे हैं। वे ज़िन्दगी को एक नया रूप दे रहे हैं—एक ऐसी दुनिया बसा रहे हैं जिसमें खुशियां ज़्यादा होंगी, चिन्ताएं कम। हां, आज हम सदियों गहरी नींद से जाग रहे हैं।

आज भी, हमेशा की तरह, हमारे उत्पादन घरों को स्वस्थ, साफ़-सुथरा और सुखी बनाने में सहायक होते हैं। लेकिन आज हम प्रयत्नशील हैं....उस आनेवाले कल के निर्माण के लिए जब और ज़्यादा प्रयत्नों से ही जीवन में सुख और सम्पन्नता बढ़ाये जा सकेंगे। नये विचारों, नये उत्पादनों और अधिक विस्तृत साधनों के साथ हम उस समय भी सेवा के लिए पूरी तरह तैयार पाये जायेंगे।

आज और हमेशा...घर घर की सेवा...हिन्दुस्तान लीवर का आदर्श

PR. 2-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूछा—"जब तुमने उसे गातो ले जाकर दी, तो बहुत खुश हुई होगी ?"

ख्वाजा साहब ने लातालुकी से कहा—"कहने लगी—'शुक्रिया ! साहब से कोई काम हो, तो मुझे बताना !' मैंने कहा—'जी अच्छा !' फिर कहने लगी—'बस पर आये हो ?' मैंने कहा—'जी नहीं, सायकिल पर !' कहने लगी—'अच्छा, यहाँ तो घण्टा-घण्टा भर बस नहीं मिलती।' फिर उसने मेरी तरफ देखा—'कोई और काम तो नहीं।' और मैं सलाम करके दफ्तर आ गया।"

"हरामज़ादी।" मरियम ने दाँत पीस कर कहा और करवट बदल कर कय्यूम के माथे पर होंठ रख दिये।

× × ×

ग्यारह बज चुके थे। धुंध बिल्कुल मिट गयी थी। धूप निकल आयी थी। क़य्यूम बस्ता उठाये, सड़कों पर घूम रहा था। अब उसे सरदी नहीं लगती थी। वह आज स्कूल नहीं गया था। बस-स्टाप तलाश कर रहा था। वहीं बस-स्टाप जहाँ पीपल का पेड़ था। जहाँ वह और उसकी अम्मी ईद के दिन सवार हुए थे। क़य्यूमी ने राह चलते लोगों से पूछा—"नियाज़ साहब की कोठी कौन-सी बस जाती है ?" सब हँस पड़े। कण्डक्टर ने कहा—"आज स्कूल नहीं गये न बच्चू !" क़य्यूम सहम कर पीछे हट गया। दूसरी बस की ओट में छुप गया। फिर एक और बस आयी। उस पर "तोता मार्का गरम मसाला" लिखा था। ईद के दिन वह इसी बस में सवार हुआ था। क़य्यूम जल्दी से आगे बढ़ा, लपक कर बस पर चढ़ गया। कितनी देर बाद कण्डक्टर कय्यूम तक पहुँचा। टिकिट लेने के लिये कहा, कय्यूम चुप रहा। उसके पास पैसे नहीं थे। डरने लगा। कहीं कण्डक्टर मारे न ! पर कण्डक्टर ने अपने पंच से बस की पाइप बजायी। बस रुक गयी। उसने क़य्यूम को उतार दिया। धुएँ का बादल उठा, फिर बस उसमें छुप गयी। क़य्यूम ने कहा—"जिधर-जिधर बस जाती है, मैं उधर-उधर मुड़ता जाऊँगा। जब पैट्रोल पम्प आयेगा, बँगला खुद-ब-खुद नज़र आ जायेगा।" वह चलता रहा। टकटकी बाँधे बस की ओर देखता रहा। बस गायब हो गयी। क़य्यूम की रफ्तार सुस्त हो गयी। लेकिन वह बस्ता झुलाता, बराबर चलाता रहा। दोपहर गुज़र गयी। एक दफे उसने नलके पर चुल्लू भर पानी पिया और फिर चल दिया। जब वह टूटे पुल पर से गुजरा, तो सामने उसे पैट्रोल पम्प दिखायी दिया। वह बहुत खुश हुआ और दौड़ने लगा। दौड़ते-दौड़ते साहब के बँगले में दाखिल हुआ।

बँगले में सुर्ख-सुर्ख बजरी बिछी थी, बराम्दे में फूलों के गमले थे। क़य्यूम ने सीढ़ियों पर बस्ता रख दिया। हौले-हौले कदम उठाता दरवाज़े तक आया। शीशों में से देखा। सिंगार-मेज़ के पास रेशमी बिस्तर पर गातो बैठी पंजा चाट रही थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार व रगपुट्ठों के दर्द पर

'एनासिन'

बेहतर है

क्योंकि इसमें चार दवाइयाँ हैं

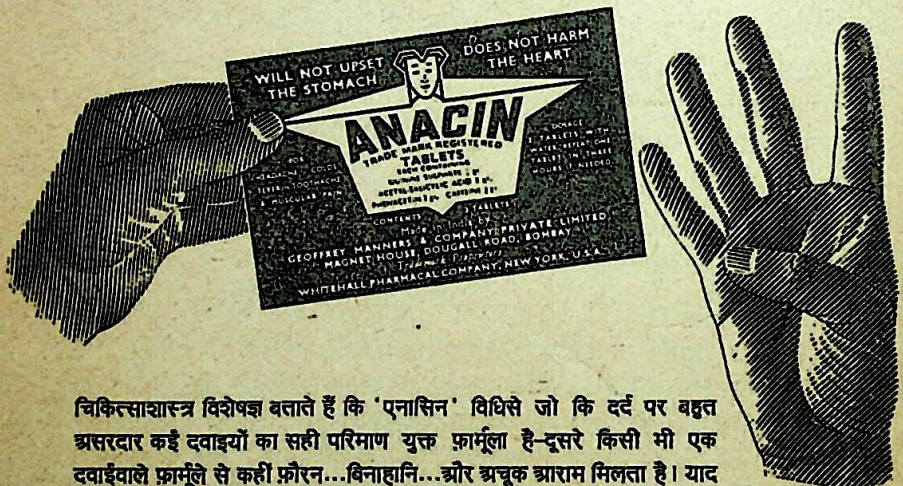

चिकित्साशास्त्र विशेषज्ञ बताते हैं कि 'एनासिन' विधिसे जो कि दर्द पर बहुत असरदार कई दवाइयों का सही परिमाण युक्त फ़ार्मूला है–दूसरे किसी भी एक दवाईवाले फ़ार्मूले से कहीं फ़ौरन...बिनाहानि...और अचूक आराम मिलता है। याद रखिये। 'एनासिन' में डाक्टर के नुस्ख़े जैसा चार दवाइयों का वैज्ञानिक मिश्रण है। इसी लिए सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार, दान्तदर्द व रगपुट्ठों के दर्द से फ़ौरन पूर्ण आराम के लिए 'एनासिन' ही बेहतर है। अपने घरमें हमेशा 'एनासिन' रखिये।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD. REGISTERED USER

K. 87 (R)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क़य्यूम गोले की तरह दरवाज़े में लगा। दरवाज़ा खटाक से खुल गया। क़य्यूमी ने बिजली की तरह टूट कर गातो को उठा लिया। मुँह चूमा, गले से लगाया। गातो खटर-खटर करने लगी।

दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुन कर, बेगम साहिबा अपना तानपूरा छोड़कर उधर भागीं। क़य्यूमी दरवाज़े से निकलने ही वाला था कि, उन्होंने उसे बालों से पकड़ लिया और गरज कर कहा—"हरामज़ादे, कमीने!"

क़य्यूम ने पूरे ज़ोर से आगे बढ़ने की कोशिश की। बाल ज़ोर से खिंचे और उसकी आँखों में पानी आ गया। बेगम-साहिबा ने दूसरा हाथ क़य्यूमी की छाती से भिची हुई, गातो पर डाला और क़य्यूम ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। बेगम न बाल छोड़ कर सर पर ज़ोर का धप्पा मारा, लेकिन क़य्यूम गिरा नहीं। बेगम ज़ोर से चिल्लायी—"कमीने, रज़ील, हरामज़ादे! छोड़ हमारी बिल्ली।" क़य्यूम ने जोर-जोर रोते हुए कहा—"यह आपकी बिल्ली तो नहीं! यह तो मेरी गातो है। मेरे मामूं विलायत से लाये थे; मेरे लिए लाये थे।"

"मामूं! विलायत!" बेगम ने दाँत पीसकर बड़े-बड़े दो धमूके उसकी कमर में दिये और बिल्ली को अपने चंगुल में जकड़ने के लिए, निचला होंठ दाँतों तले दबा कर ज़ोर लगाया। क़य्यूम ने अपनी ठण्डी छाती से लगी बिल्ली को और ज़ोर से भींच लिया। गातो बिलबिलायी। बेगम साहिबा ने मारना-कूटना छोड़कर एक हाथ से क़य्यूमी की उँगलियाँ मरोड़ीं और दूसरे हाथ से बिल्ली छुड़ाने की कोशिश की। क़य्यूमी ने उनकी कलाई में काट खाया। उन्होंने जल्दी से हाथ जो छुड़ाया, तो सोने का कंगन क़य्यूम के माथे पर लगा। खून का फव्वारा बह निकला। बेगम साहिबा ने जल्दी-जल्दी दो-तीन मुक्के, तीन-चार थप्पड़, एक-दो लातें रसीद कीं। क़य्यूम घुटनों के बल गिरा। बेगम साहिबा ने अपने पाँव उसके कमर पर रख कर, ठोड़ी तले से गातो निकाल ली और अपने सीने से लगा कर खड़ी हो गयीं।

क़य्यूम स्प्रिंग की तरह उछला और ज़ोर-ज़ोर से रोकर कहने लगा—"मेरी गातो दे दो! मेरी बिल्ली दे दो! मेरे मामूं, मेरे लिए लाये थे।"

बेगम ने आवाज़ दी—"करीम! ओ करीम!" क़य्यूम बिलबिलाने लगा—"अल्लाह मियाँ आपको सवाब देगा। मेरी बिल्ली दे दो, मेरी बिल्ली दे दो।" बेगम अपनी लाल-लाल नज़रों से क़य्यूमी को घूरती रहीं। क़य्यूम फिर घुटनों के बल गिर गया और बेगम का दामन चूम-चूम कर और हाथ बाँध कर कहने लगा—"मेरी बिल्ली दे दो जी। यह मेरी गातो है। मुझे मार लो। चाहे जितना मर्ज़ी हो, मार लो। पर मेरी बिल्ली दे दो।" सारा कमरा उसके डूबते-उतरते नालों से भर गया। बेगम आँखें सुर्ख किये खड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें तंदुरुस्ती प्यारी है वे सदा लाइफ़बॉय से नहाते हैं।

खेल कूद हो या काम काज हम गंदगी से बच नहीं सकते। और गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं जिन से तंदुरुस्ती को ख़तरा रहता है। लाइफ़बॉय साबुन गंदगी के इन कीटाणुओं को धो डालता है और आप की तंदुरुस्ती की रक्षा करता है।

हर रोज़ लाइफ़बॉय साबुन से नहाइये और अपनी तंदुरुस्ती की रक्षा कीजिये—यह आप को ताज़गी देता है।

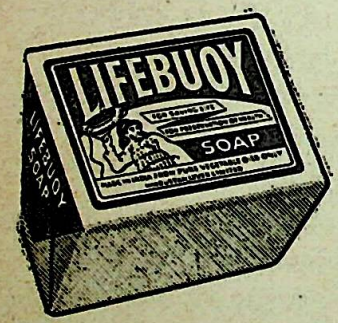

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

L/P. 2-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थीं। गातो उनके सीने से लगी अपना पंजा चाट रही थी।

करीम ने अन्दर आकर पूछा—"आपने मुझे बुलाया था, बेगम साहिबा?"

बेगम ने चिल्ला कर कहा—"कहाँ मर गया था? देख इस हरामज़ादे ने कैसा तंग किया है। उठा कर कोठी से एकदम बाहर निकाल दे।"

क़य्यूम ने ज़िबह होने वाले लैले की तरह पुतलियाँ घुमा कर, करीम को देखा और चीख मार कर कहा—"मुझे बाहर न निकालो जी! मैं तौबा करता हूँ। अल्लाह के वास्ते, तौबा करता हूँ जी। मेरी गातो को मुझे दे दो।"

बेगम ने कड़क कर कहा—"बाहर ले जा, हरामेज़ादे कुत्ते को!"

करीम ने क़य्यूम को बालों से पकड़ कर घसीटा, तो उसने हाथ बाँध कर करीम से कहा—"अल्लाह के वास्ते, मुझे गातो को हाथ लगा लेने दो। अपनी बिल्ली को प्यार कर लेने दो। बस एक बार हाथ लगा लेने दो। अल्लाह के वास्ते, हज़रत साहब के वास्ते!— अल्लाह के.....।" लेकिन, करीम उसे घसीटता ही गया। बजरी पर उसकी नेकर सुर्ख और टांगे कुरमुज़ी हो गयीं और बूटों और जुर्राबों में कंकरें उतर गयीं। घुटनों और पिण्डलियों पर गहरी खराशें पैदा हो गयीं। क़य्यूम ऊँचे-ऊँचे रो रहा था। और करीम उसे घसीटे लिये जा रहा था। सड़क से परे, सफेद जमीन बराये तामीर की सूखी टूटी झाड़ियों पर धक्का देकर, करीम वापस आया और आकर कोठी का फाटक बन्द कर दिया। क़य्यम बड़ी देर तक, रेतीली मिट्टी पर लेटा सिसिकियाँ भरता रहा। जब उसने उठने की कोशिश की, तो रात छा चुकी थी। सारे बंगलों की बत्तियाँ जल चुकी थीं और ठण्डी हवा सीटियाँ बजाने लगी थी। बादल के इक्के-दुक्के टुकड़े ददीज़ होकर, सारे आसमान पर घोर अंधेरा बन कर छा गये थे।

× × ×

कय्यूम बगल वाले बंगले की उन टूटी-फूटी ईंटों के ढेर पर जा बैठा, जिन्हें लम्बी दस्तियों वाली छोटी-छोटी हथौड़ियों से तोड़ा जाता है। उसने सोचा, अच्छे बच्चे जब बहुत अच्छे हो जाते हैं, तो परियाँ आती हैं। उन्हें मिठाई देती हैं। उनके लिए फूल लाती हैं। उनका हर काम कर देती हैं। वह सीने पर हाथ बाँध कर और भी अच्छा हो गया। अभी नीली परी आयेगी। मिठाई लायेगी। मुझे प्यार करेगी। फिर कोठी में जाकर गातो को ले आयेगी। मैं सलाम करूँगा। खुश होकर, दुआ देगी। मैं गातो को लेकर खुशी-खुशी घर चला जाऊँगा।

सर्द हवा के एक तेज झोंके से क़य्यूम का चेहरा सुन हो गया। उसने सर घुटनों में छुपा लिया और कहा—"अल्लाह मियाँ जी! मेरी गातो ले दो, फिर मैं कभी बुरा नहीं बनूँगा। सब मुझको अच्छा कहेंगे। प्यार करेंगे। मेरी गातो ले दो,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

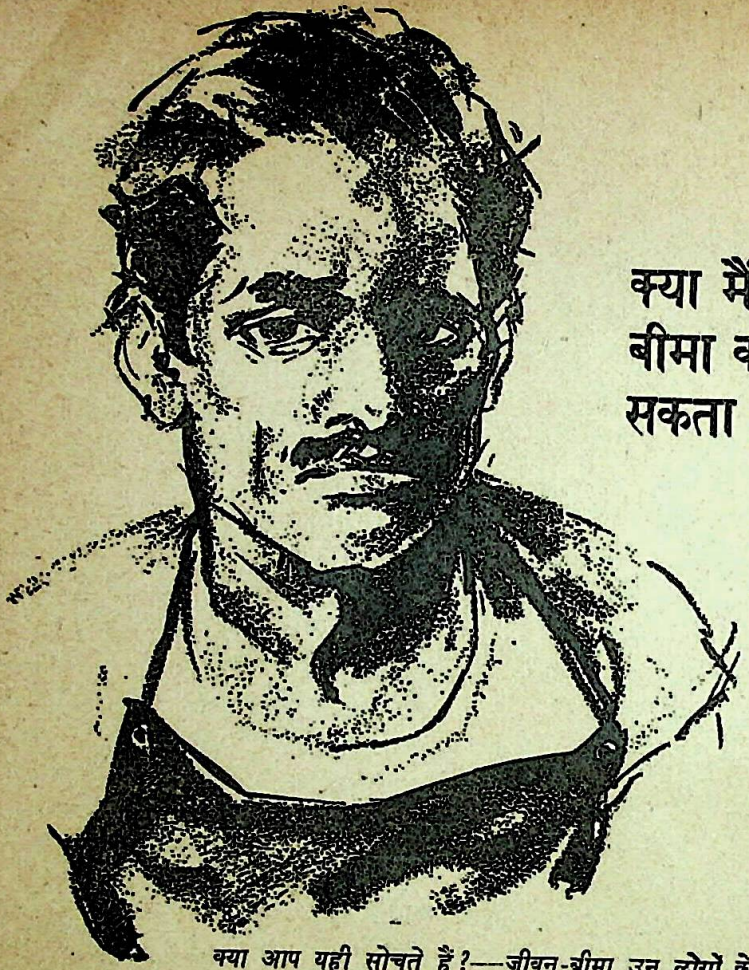

क्या मैं बीमा करा सकता हूँ?

क्या आप यही सोचते हैं?—जीवन-बीमा उन लोगों के लिए है जिनके पास काफ़ी धन है!

अपने जीवन का बीमा कराने के लिए बड़ी रक़म की जरूरत नहीं है। हर महीने में यदि आप कुछ ही रुपये बचा पायें तो भी कई तरह की पालिसियाँ आपकी बन सकती हैं। सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि अपनी छोटीसी आमदनी में आप अपना खर्च चला नहीं पाते तो आपका परिवार कुछ पास न होने पर उसको कैसे चला सकता है? यदि वे आपको—अपने पोषण—कर्ता को, खो बैठें तो फिर उनका क्या होगा? सच तो यह है कि आप जीवन-बीमे से वंचित नहीं रह सकते।

लाइफ़ इन्श्योरन्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इन्डिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अल्लाह मियाँ जी, मेरी गातो!"

वह फिर सिसिकियाँ भरने लगा और गरम-गरम आँसू उसकी ठण्डी यख टांगों पर फिसलने लगे। क़य्यूम ने जरा-सी ऊँची आवाज़ में अल्लाह मियाँ को पुकारा। सर घुटनों में और घुसेड़ा, तो माथे के जख्म में ज़ोर का दर्द हो उठा। दर्द और कर्ब की शिद्दत से क़य्यूम बिलबिला उठा और रोते-रोते उसकी घिग्घी बँध गयी।

"अल्लाह मियाँ जी! चाहे मैं मर जाऊँ। चाहे मुझे मार दो। पर मेरी गातो मुझे ले दो। मैं गातो को लेकर ही जाऊँगा। लेकर ही जाऊँगा; चाहे चुड़ैलें मुझे खा जायँ। भूत खा जाये। अल्ला मियाँ जी! मेरी बिल्ली मुझे दे दो।"

बादल जोर से गरजा। हवाओं ने भद्दी-भद्दी सीटियाँ बजायीं और क़य्यूम डर और सर्दी की शिद्दत से काँपने लगा। फिर एक-दम जैसे आस्मान में दरारें पड़ गयीं। मानों पानी नदी-नाले बन कर एक-दम उतरा और क़य्यूम घुटनों में सर दबाता गया। इर्द-गिर्द की सारी बत्तियाँ बुझ गयीं और आस्मान के किनारों पर बिजली चमकने लगी।

सूरज निकलने से कोई घण्टा भर पेश्तर, एक भीगा हुआ लँगड़ा कुत्ता उधर से गुज़रा, तो क़य्यूम को यों बैठे देखकर रुका। ईंटों पर फुदकता उसके पास पहुँचा। थूथनी उसके करीब ले जाकर सूंघा, ज़रा-सा भूँका और मुँह ऊपर उठा कर रोने लगा। बारिश से बोझिल क़य्यूम के कपड़े उसके ठण्डे यख जिस्म से चिमटे रहे, और लँगड़ा कुत्ता उसके सिरहाने खड़ा बैन करता रहा।

× × ×

बेगम नियाज़ ने सफेद डोरी के सिरे पर लगी हुई, पिंगपौंग की गेंद खेंची और लोहे के फ्रेम में जड़े हुए अड़तालीस शीशों वाले दरीचे से सवात के पर्दे इधर-उधर हट गये। दरीचे के ऐन सामने बगल वाले बँगले की टूटी-फूटी ईंटों के ढेर पर कय्यूमी बैठा था।.....गुस्से से दाँत पीस कर, वह सिंगार-मेज के स्टूल पर बैठ गयीं और रुआँखी होकर बोलीं—

"तौबा! रज़ीलों की औलाद किस कदर ज़िद्दी और अड़ियल होती है। जो कुछ माँ-बाप सिखा दें, क्या मजाल, जो रत्ती भर भी इधर से उधर सरक जायें। देखो, सुबह-सुबह फिर आके बैठ गया; हरामेज़ादा कहीं का!"

★

एक बार 'जोश' साहब और 'जिगर' साहब तांगे में बैठकर कहीं जा रहे थे और दोनों आलमे सुरूर में थे। एकाएक जिगर साहब ने ठंडी सांस भर कर कहा– "या अल्लाह! 'जोश' साहब ने अपने नास्तिकता से पूर्ण स्वर में कहा– "म्याँ आपने मुझे पुकारा?" जिगर साहब ने बेसाख्ता जवाब दिया– "ओ! फिर शैतान बीच में आ गया!

—मुगनी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बी·ओ·ए·सी कॉमेट ४ के द्वारा

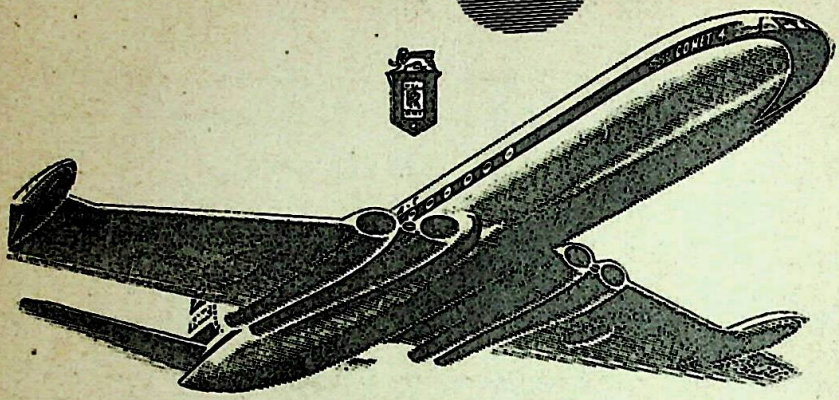

पश्चिम को:

करांची, तेहरान,
बहराइन, बेरूट, रोम,
ज़्यूरिक, फ़्रैंकफ़र्ट,
लन्दन, मॉन्ट्रिएल,
न्यू यॉर्क और
उसके आगे सैन
फ़्रैंन्सिसको* तक

पूर्व को:

कोलम्बो,
रंगून,
बैंकॉक,
सिंगापुर,
हांगकाग
और टोकियो

*दूर गामी जेट प्रॉप **ब्रिटैनिया** से

बी.ओ.ए.सी. द्वारा नियुक्त अपने स्थानीय यात्रा एजेण्ट या बी.ओ.ए.सी. के बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास कार्यालयों से मिलिए और पूँछ-ताछ कीजिए।

ब्रिटिश ओवरसीज़ एयरवेज़ कॉर्पोरेशन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी के सुपरिचित रसाख्यान-लेखक कमल जोशी की एक अद्भुत रस-मुग्ध कहानी

★

उस दिन पहाड़ों की गोद में जो अनुभूति हुई, आज भी उसकी याद आते ही रोमांचित हो उठता हूँ; लेकिन उसकी कोई व्याख्या नहीं खोज पाता।

कई वर्ष बीत गये। पहाड़ों की सैर करने गया था। लगभग एक सप्ताह वहाँ के एक डाक-बँगले में ठहरा था। वहाँ का दृश्य बड़ा अद्भुत और सुन्दर था। बँगले के सामने ही कल-कल निनाद करती हुई पहाड़ी नदी बहती थी।

साथ में तीन मित्र भी थे। परन्तु शाम को ही हमारी मुलाकात होती थी। सुबह से लेकर शाम तक, उस निर्जन स्थान में मुझे अकेला ही रहना पड़ता था। अकेले रहने में कुछ तकलीफ भी नहीं थी। चारों ओर सुन्दर वातावरण, अपूर्व प्राकृतिक शोभा से युक्त पर्वत-शृंखलाएँ और हिम-मंडित गिरि-शिखरों की अनोखी छटा—मेरे लिए सभी-कुछ अभिनव था, अनूठा था।

एक मोटा कोट पहने, मैं नदी किनारे जा पहुँचा। वहाँ पश्चिम की ओर मुँह करके बैठने पर, नदी के दोनों ओर की सूखी हुई सफेद कगार, बहुत दूर तक दिखाई देती थी। उसी ओर मैं देख रहा था। बहुत दूर पहाड़ी मजदूरों की काली मूर्त्तियाँ नजर आयीं, नदी के निर्मल वक्ष-स्थल पर अंकित। जड़ पहाड़ों की साया में एकमात्र चेतन प्राणी। कुछ क्षणों के लिए मैं कल्पना-जगत् में पहुँच गया। ऐसे ही समय एकाएक अपने निकट ही किसी अपरिचित की आवाज सुनायी दी— "साहब, कुछ मदद कीजिए न!" मैं चौंक पड़ा।

पतले चेहरे का एक व्यक्ति। मुँह पर जगह-जगह खरोंच के निशान, जिस कारण शक्ल अस्वाभाविक रूप से विकृत। मुँह का बहुत-सा मांस काट कर, फिर सिलाई करने पर, बहुत दिनों बाद जैसा चेहरा हो जाता है, कुछ वैसा ही मुखड़ा। उसे देखकर मेरा मन पुलकित नहीं हुआ — वह भी इतने निकट से।

लेकिन मैंने देखा कि, उस व्यक्ति की आँखों में करुणा थी।

वह बोला —"साहब, आप जैसे कुछ घबड़ा गये हैं। सोचते होंगे कि, मैं कहाँ से टपक पड़ा! क्या आप यहाँ नये आये हैं? शायद कवि हैं; नहीं तो नदी-पहाड़ों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्त संसार में सुपरिचित

लिचेन्सा—गर्म देशों में होनेवाले समस्त प्रकार के चर्मरोगों के लिए निर्दोष तथा आरामप्रद मलहम है। लिचेन्सा खाज़ खुजली, एकज़ीमा, दाद, चकता, फोडा तथा जलन और घाव आदि को शीघ्र आराम करता है। बवासीर की विश्व-विख्यात औषधि 'हडेन्सा' के प्रस्तुतकारक ही लिचेन्सा के भी निर्माता हैं।

सर्वत्र सुलभ

DCZ-2HIN

सचमुच
गर्व करने
योग्य
सायकिल

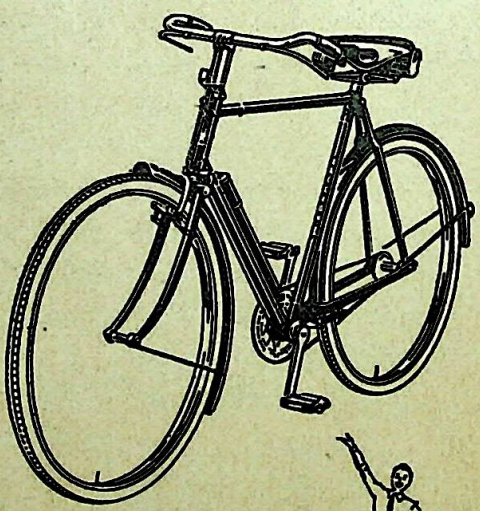

रैले

A SEN-RALEIGH Product

SRC-51 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को देखते हुए, यों घंटों चुप-चाप न बैठे रहते। ठीक है न? और, यही देख कर तो मैं आप के पास आया हूँ – सहानुभूति की आशा से।"

मेरे मुँह से "हूँ" जैसी कुछ अस्पष्ट ध्वनि निकली।

वह आदमी मेरे पैरों के पास बैठ गया। फिर जरा आगे बढ़ कर मेरे मुँह की ओर देखते हुए बोला–"सुनिए, मैं भी कभी आपकी तरह कवि था।"

"कवि।" – मैं आश्चर्य-चकित।

"अपना यह परिचय मैं किसी को नहीं बताता। सब मुँह फेर लेते हैं। यह बात मैं खुद ही भूल गया था। आज आपको इस तरह बैठे देख कर, एकाएक अभी याद आ गयी।"

"आप कवि थे?" मैंने फिर विस्मय और कुतूहल से पूछा।

और भी करीब सरक कर उसने कहा–"यह आज की बात नहीं है। विद्यार्थी-जीवन में कविता करता था–बहुत अच्छी कविता! लेकिन जीवन है, तो जीना ही पड़ेगा। मैं डाकू बन गया।" यह कहकर वह क्षणभर के लिए रुका और मुझे बहुत गौर से देखने लगा, संभवतः मेरी प्रतिक्रिया लक्ष्य करने के लिए। "इसी इलाके के इन सुनसान रास्तों में बटमारी करता था। अँधेरे में राह चलते हुए आदमी पर टूट पड़ता था और उसका सब-कुछ छीनकर....."

हँसते हुए उस आदमी ने कहा–"इस इलाके में मुझे सब पहचानते हैं। मेरा नाम अमोलक राम है। यहाँ की धरती और आकाश, हवा और पानी, पेड़-पौधे और झाड़-झंखाड़, सड़क और पगडंडियाँ तथा धूल का कण-कण मुझे पहचानता है। आप डरें नहीं। मैं वादा करता हूँ, मेरे हाथों आपका कोई अनिष्ट नहीं होगा। सिर्फ आपका दस-पंद्रह मिनट समय मैं जरूर लूंगा। सुनिये, मेरी जिन्दगी की कहानी। मुझे देख कर भी क्या आपकी सुनने की इच्छा नहीं हो रही है? आप तो कवि हैं!"

कोई चारा न देख कर मुझे कहना पड़ा–

अद्वैत

इस अपार प्राण-सागर में कोई मानव द्वीपवत् नहीं– दूसरों से स्वतंत्र और असंपृक्त नहीं। वह तो महाद्वीप का एक अंश है, अखंड भूमि का एक खंड है। यदि सागर की तरंग, मिट्टी का एक ढेला बहा ले जाती है, तो महाद्वीप दरिद्र हो जाता है– मानो तुम्हारे मित्र का, या स्वयं तुम्हारा बँगला बह गया हो। प्रत्येक मानव की मृत्यु मुझे अल्प-प्राण बना देती है; क्योंकि मैं समस्त मानवता में परिव्याप्त हूँ। इसलिए जब गिर्जे का शोक-सूचक घंटा-नाद कान में पड़े, तो यह न पूछो–"किसे काल-देवता का निमंत्रण मिला है?" समझो, निमंत्रण स्वयं तुम्हीं को मिला है। ––जान डोन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परियों की राजकुमारी

मिन्नी को जब मैं ने नया फ्रॉक पहनाया तो वह तालियां बजा कर नाचने लगी।

बड़े प्यार से मैं ने यह फ्रॉक तैयार किया था— दूधिया सफेद फ्रॉक जिस के बार्डर पर नीले रंग के नन्हें नन्हें फूल... मिन्नी उछलती कूदती शीशे के सामने गई। वहां उस ने घूम कर चारों ओर से फ्रॉक को देखा और फिर दूसरे क्षण अपनी सहेलियों को फ्रॉक दिखाने घर से बाहर निकल गई।

मैं ने पुकारा, "मिन्नी, मिन्नी! फ्रॉक उतार दे, मैला हो जायेगा। शाम को शादी पर जाते समय पहनना..."

पर मिन्नी वह गई, वह गई।

मैं ने उसे देखा तो लगा जैसे वह परियों की राजकुमारी हो। बड़ी ही प्यारी लगी वह उस फ्रॉक में।

दिल में तो आया कि मिन्नी को वापस ले आऊँ। फ्रॉक तो मैं ने नाप देखने के लिए ही पहनाया था। लेकिन तभी रसोई में जो भाजी के जलने की महक आई तो उधर दौड़ी और फिर वहां काम में ऐसी फँसी कि होश ही भूल गई।

होश तब आई जब दर्वाजे में अपनी सहेली राधा की आवाज सुनी। इतने अर्से के बाद उसे देख कर चाव चढ़ गया। और अभी हम जा कर ड्राइँगरूम में बैठी ही थीं कि सामने क्या देखती हूँ—दर्वाजे में मिन्नी खड़ी है।

देखते ही मेरे तो होश उड़ गये। सारा फ्रॉक गंदा किया हुआ था। अब शाम को शादी पर क्या पहनेगी।

मैं मिन्नी की ओर बढ़ी "सत्यानाश कर दिया है फ्रॉक का। शाम को अब अपना सिर पहनेगी?" और मैं उसे मारने को ही थी कि राधा ने छुड़ाते हुये कहा, "पागल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गई है क्या? बच्ची पर हाथ उठाती है।" मिन्नी को छुटकारा मिला। उस ने फ्रॉक उतार दिया। फिर मै फ्रॉक धोने गुसलखाने मैं गई। फ्रॉक को डंडे से कूट पीट रही थी कि राधा वहां आई, "तो क्या अब मिन्नी की बजाये फ्रॉक को पीट कर अपना गुस्सा ठंडा करेगी?"

"इसे धोऊं न तो शाम को वह पहनेगी क्या? दूसरे फ्रॉक तो इतने अच्छे नहीं हैं।"

"पर पीटती क्यों हो? वह फट जायेगा।"

"तो पीटे बिना साफ कैसे होगा?"

"साफ कैसे होगा? सही किस्म के साबुन से। अब जैसे मैं सनलाइट बरतती हूँ ..."

"सनलाइट क्या ऐसा बढ़िया साबुन है?"

"हां, सनलाइट से कपड़े बहुत उजले धुलते हैं। यह बिल्कुल शुद्ध होता है। इस लिये इससे कपड़ों को कोई नुकसान नहीं पहुँचता।"

"पर है तो महँगा न?"

"अजीब बात करती हो," राधा हँसी, जरा इस के फायदे तो देखो। इसे जरा सा कपड़ों पर मलो तो इतना झाग देता है कि ढेरों कपड़े देखते देखते सफेद और उजले धुल जाते हैं। कूटने पीटने से एक तो अपनी जान बचती है, दूसरी कपड़ों की। और इस लिये कपड़े पहले से कहीं ज़्यादा देर तक टिकते हैं। इस तरह साबुन बचा, मेहनत बची, कपड़े भी बचे। अगर इतनी बच्चत हुई तो यह महँगा कैसे हुआ?"

उसी समय मैं ने सनलाइट की टिकिया मंगवाई और उस से फ्रॉक धोने लगी। साबुन फ्रॉक से जरा सा छुआ था कि झाग ही झाग हो गया। मिनिटों में फ्रॉक धुल कर चमकने लगा। शाम को मिन्नी ने वही फ्रॉक पहना, तो सच कहती हूँ, वह बहुत ही प्यारी लगी—परियों की राज-कुमारी जैसी। मैंने अंगुली को काजल लगा कर उस के माथे पर छोटा सा निशान लगा दिया कि कहीं नज़र न लग जाये।

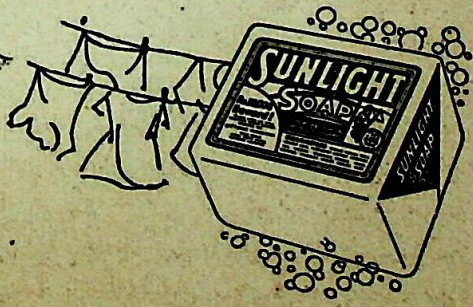

S/P. 3B-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सुनाओ।"

अमोलक ने कहना शुरू किया– "मैं तरुणाई में काफी हृष्ट-पुष्ट था। जीवन में बहुत उच्चाकांक्षाएँ थीं। बड़ा आदमी बनने की इच्छा थी, लेकिन मालिक ने – जो एक आढ़तिया था – बीस रुपया माहवार से ज्यादा नहीं दिया। फिर भी बीस रुपये माहवार में किसी तरह जिंदगी कटी जा रही थी।"

"किन्तु," अमोलक ने क्षण भर कुछ सोचा और फिर कहना शुरू किया– "इस वेतन से मैं संतुष्ट नहीं था। एक दिन, दिल को पक्का कर, मैंने धन कमाने का सीधा रास्ता पकड़ा। सुनसान और अंधेरे में झाड़ियों के पीछे छिपा रहता, अकेले आदमी को पाकर, उस पर टूट पड़ता। किसी-किसी दिन अच्छी कमाई हो जाती। लेकिन सोचिए तो, इसमें कितना रिस्क था? छोटी जगह है। सभी एक-दूसरे को पहचानते हैं। जरा भी पता लग गया, तो खैरियत नहीं। इसके अलावा, रुपया-पैसा लेकर कितने आदमी रात को अकेले निकलते हैं–जहाँ बाघ का राज्य हो? इस धंधे से कोई विशेष आमदनी नहीं बढ़ी। महीने-दो-महीने में एक बार कुछ कमाई होती थी। हर रोज शाम को सड़क के किनारे झाड़-झंखाड़ के पीछे छिपे रहने में भी तो मेहनत पड़ती है। डर भी रहता है कि, कहीं पुलिस या बाघ न पकड़ ले। लेकिन मजेदार बात यह है कि, इसमें खेल-जैसा कुछ आनन्द आने लगा। इसे छोड़ना असंभव हो गया। इस बात को आज दस वर्ष हो गये। लेकिन इस अरसे में मैंने सिर्फ एक से ही, ये सब बातें कही हैं। और, आज आपसे कह रहा हूँ। सारी बातें बताये बिना मुझे चैन नहीं मिलेगा–चैन नहीं मिलेगा।"

कहते-कहते अमोलक हाँफने लगा। उत्तेजना से उसका सारा शरीर थर-थर काँप रहा था। मैं सोचने लगा, यह आदमी आधा पागल है या पूरा। अपना डर दूर करने के लिए मैंने उससे पूछा– "सिगरेट पीओगे?"

"नहीं-नहीं। सिगरेट का लालच मत दीजिये। अब जीवन में मुझे किसी चीज का शौक नहीं रह गया है। आप बराय-मेहरबानी सारी बातें सुन लें; नहीं तो मुझे शान्ति नहीं मिलेगी।

"आप शायद ऊब रहे हैं। इस अंधेरे में भी मैं यह समझता हूँ। लेकिन अब और ज्यादा समय नहीं लूंगा। सुनिये! असहाय आदमी पर टूट पड़ने और उसका सर्वस्व लूट कर रफूचक्कर होने में कुछ समय लगता था। लेकिन जरा कल्पना कीजिए, इसमें कितनी संभावना है, कितना थ्रिल है। यदि किसी के पास हजार-पाँच सौ रुपये मिल जाते! पर कहाँ मिले? अब भी अँधरे में किसी आदमी को देखने पर भूल जाता हूँ। अब भी ऐसा लगता है...नहीं, नहीं, आप निश्चिन्त रहें। अब इन सब बातों से मैं बहुत ऊपर उठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

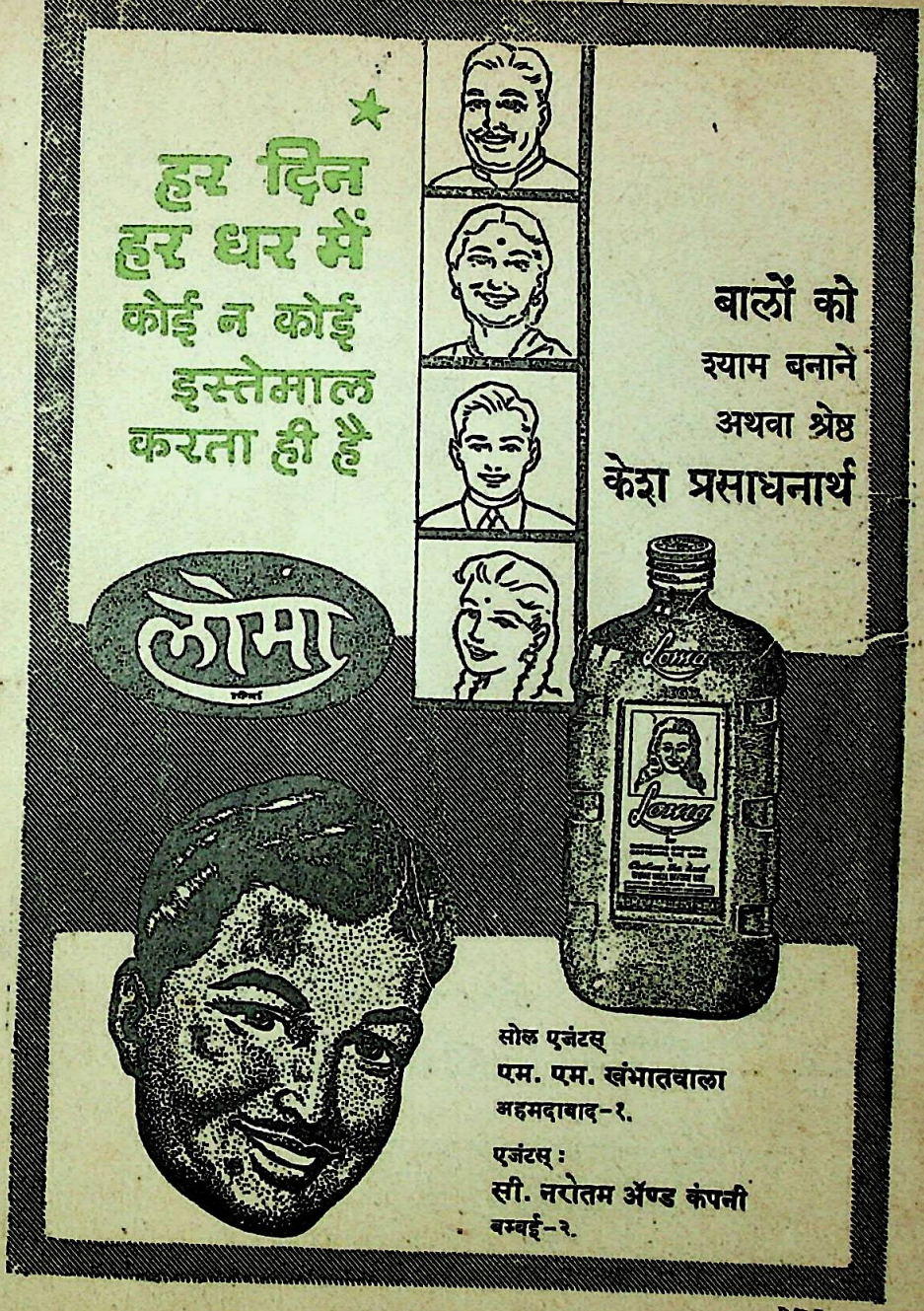

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रीज़

ब्रीज़ — अधिक सुंदर, अधिक स्वस्थ रंग रूप के लिए!

'एक्टमर' (वाशिंगटोनॉल)
अमेरिकन मेडिकल एसोसियेशन द्वारा स्वीकृत है।

ब्रीज टॉयलेट साबुन आप की जिल्द को साफ़ करने के साथ साथ इसे स्वस्थ भी बनाये रखता है। नर्म असर, सुहानी सुगंध वाले ब्रीज में 'एक्टमर' मिलाया जाता है जो जिल्द को हानिकारक कीटाणुओं से छुटकारा दिलाता है।
याद रखिये, ब्रीज के इस्तेमाल से आप अपने रंग रूप की देख भाल भी करती हैं और तन की ताज़गी भी पाती हैं। एतवार के लिए एक बार आज़मा के देखिये।

ब्रीज़ टॉयलेट साबुन—जिल्द की तंदुरुस्ती के लिए 'एक्टमर' युक्त

BZ. 13-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, इॅरस्मिक कं. लि., लन्डन, के लिये भारत में बनाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया हूँ। जिस घटना ने मेरे जीवन की धारा बदल दी, अब वही बताता हूँ। आप वह भयंकर कहानी सुनने के लिए तैयार हो जायें।"

मैंने कहा—"तैयार हूँ, तुम शुरू करो।"

अमोलक और भी निकट खिसक आया और कहने लगा—"ओफ! वह कैसा भयंकर अनुभव था! किसी भी व्यक्ति के जीवन में ऐसी घटना कभी न घटी होगी। आगे भी घटेगी या नहीं, इसमें शक है। सारी मानव-जाति के मुख पर मैंने शायद कालिख पोत दी है। मनुष्य को मैंने पशु के स्तर पर ला दिया है। उसी दिन सर्वप्रथम मैंने यह समझा, अनुभव किया। मेरे मुँह पर आप ये जो निशान देख रहे हैं, ये उसी के दाग हैं—मेरी उपलब्धि के चिह्न।"

अमोलक ने आगे कहा—"बहुत ऊबड़-खाबड़ और चक्करदार रास्ते पर चल रहा हूँ, पर एकाएक सुनाने पर वह घटना असंभव-जैसी लगेगी। आप शायद हँसकर ही उड़ा दें। इसलिए सोच रहा हूँ, किस तरह आपको विश्वास दिलाऊँ? सारी बातें अवास्तविक लगेंगी; क्या करूँ? लेकिन फिर भी मेरा खयाल है कि, आप विश्वास करेंगे। उसकी वजह यह है कि, आप परदेशी हैं, आपकी नजरों में यहाँ सभी कुछ अवास्तविक है। है न? यह जो धुँधला पहाड़ है, वह क्या ऐसा नहीं लगता कि, जैसे शून्य में डूबा हुआ कोई मेघ का टुकड़ा है? मानो वह काँप रहा है—मरीचिका की तरह है, जैसे जरा और आगे बढ़ने पर शून्य में मिल जायगा। इस पृष्ठ-भूमि में मेरी कहानी को भी मान लीजिए....."

इतनी देर में अमोलक सफल हुआ। उसके इस कथन से मैं चौंक गया। आश्चर्य, उसने एकदम सच कहा था। अपने जिन विचारों को प्रकट करने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे थे, उसने उन्हें शब्द दिये थे। कुछ आवेश में ही, मैंने कहा—"यहाँ के सौंदर्य ने मेरे मन में ऐसी उथल-पुथल क्यों मचायी है, मुझे इतना अभिभूत क्यों किया है, इस बारे में मैंने बहुत सोचा; लेकिन ठीक-ठीक कारण मालूम नहीं हो सका। इतनी देर में अब तुमने जैसे मेरे मन की बात कह दी। ठीक कहते हो, सब-कुछ अवास्तविक है। ये पहाड़ स्थिरता का छद्मवेष धारण किये हुए हैं। पर वास्तव में, ये क्षण-स्तंभित तरंगमालाएँ हैं, उनके फेनों का अट्टहास कब गूँज उठेगा, कौन जानता है? इनके सिर पर मेघ हैं और चरणों में नहीं। ये स्वयं ठोस हैं, लेकिन ऊपर और नीचे वाष्प एवं जल के दो तरल व चपल रूप हैं। जैसे..."

"ठहरिए, ठहरिए। ठीक है। अब चुपचाप मेरी कहानी सुनिए।"

मुझे रोककर अमोलक ने कहना शुरू किया—"मने अपनी कहानी की पृष्ठभूमि मात्र बतायी है। इससे यदि आप कुछ और कल्पना करने लगें, तो व्यर्थ में आप ही को देर होगी।"

वाकई, देरी हो रही थी। नदी की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

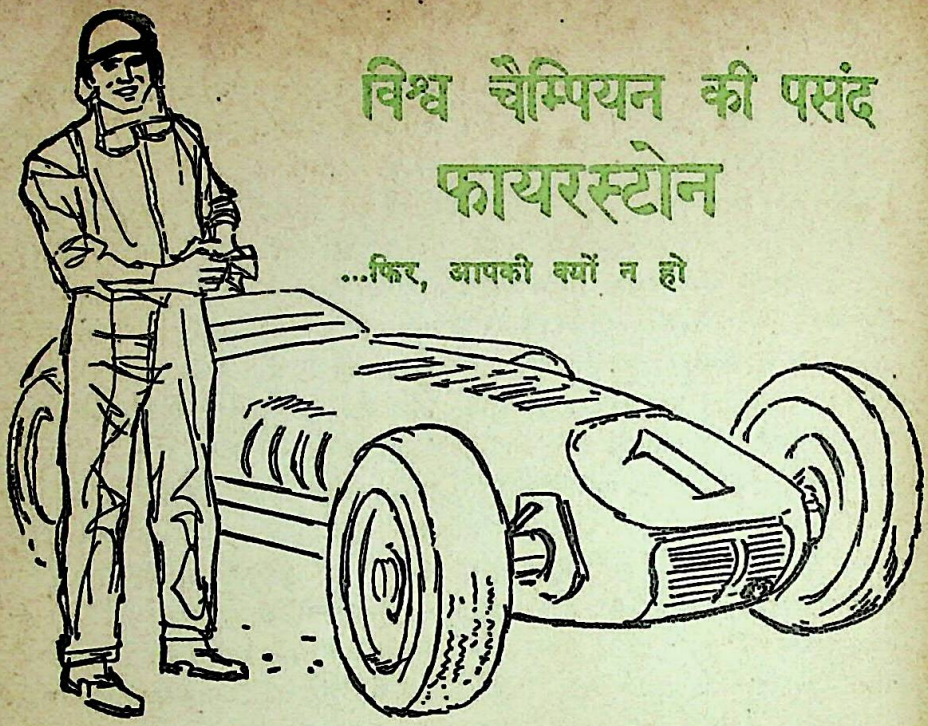

विश्व चैम्पियन की पसंद
फायरस्टोन
...फिर, आपकी क्यों न हो

५०० मील की विश्व प्रसिद्ध 'इण्डियाना पॉलिस' रेस के विजेता जिम्मी ब्रेअन ने प्रति घण्टे १४० मील की गति पर भी बखूबी काम आने वाले फायरस्टोन टायरों की खूब प्रशंसा की, हालांकि टायरों को कड़ी कसौटी पर उतारने वाले इस रेस-मार्ग पर टायरोंको बेरहमी से धक्के खाने पड़े, उनकी तोड़-मरोड़ व घिसाई हुई। आप भी बिल्कुल ऐसी ही सुरक्षा व विश्वसनीयता प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि आपकी कार के फायरस्टोन टायरों में भी रेस के टायरों जैसी ही सुरक्षात्मक निर्माण विशेषताएँ मौजूद हैं। फायरस्टोन टायरों की सुरक्षा क्रियाशीलता द्वारा प्रमाणित है।

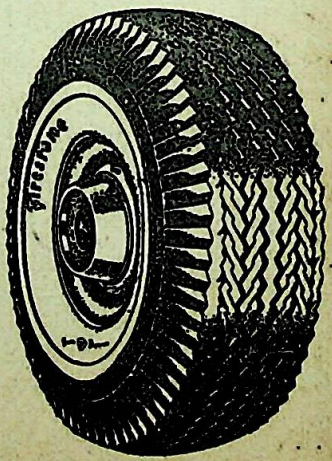

Firestone

न्यू डिलक्स चैम्पियन

ट्यूब रहित या ट्यूब सहित

W.6/8

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल-कल ध्वनि के सिवा चारों ओर सन्नाटा था। मैंने कहा– "तुम अपनी कहानी पूरी करो।"

अमोलक ने गंभीर स्वर में स्वगत-भाव से कहा–"जरा सोचिए, एक माह से कुछ आमदनी नहीं हुई थी। इसका असर सिर्फ शरीर पर ही नहीं, बल्कि मन पर भी पड़ रहा था। अँधेरे में बैठे-बैठे दिन-पर-दिन व्यर्थ ही घंटों प्रतीक्षा की। एक भी शिकार नहीं मिला। जब मैं प्रायः सारी आशा छोड़ चुका था; तब एक दिन..."

अमोलक चुप हो गया।

मैं अधीर हो उठा–"रुक क्यों गये?"

उसने फिर आगे कहना आरंभ किया– "एक बात, अब तक छिपाये हुए था। लेकिन, अब और छिपाने से क्या लाभ। कुछ दिनों से मेरी पत्नी मुझ पर संदेह करने लगी है, यह मुझे मालूम हो गया था। खुल कर कुछ कह तो नहीं पायी, लेकिन ऐसा लगा, जैसे दो-एक दिन उसने मेरा पीछा किया है। मेरा संदेह सही है या गलत, इसकी मैंने जाँच नहीं की। कारण, मुझे इसकी परवाह नहीं थी। सोचा, जब मैं खुद उससे कुछ नहीं कह सकता, तब यदि वह स्वयं अपनी कोशिश से पता लगा ले, तो लगा लेने दो; मैं बाधा नहीं दूँगा। अच्छा, तो अब सुनिये। झाड़ियों के पीछे से निकल कर चुपचाप एक-एक कदम बढ़ाते हुए, मैंने पीछा करना शुरू किया। मेघाच्छन्न अँधेरी रात। हाथ को हाथ नहीं सूझता था। ऐसा घना अंधकार। लगता था, जैसे शिकार काफी तगड़ा है। कच्ची सड़क के वह ठीक बीचो-बीच चल रहा था। और मैं, पहाड़ की ओर, उसके जरा पीछे-पीछे। ज्यादा सोचने का समय नहीं था। कुछ दूर आगे कुलियों की बस्ती थी। किन्तु...क्या कोई और भी उसका पीछा कर रहा है? ऐसा लगा कि, अवश्य कोई कर रहा है। जैसे एक छाया-मूर्ति नहीं, कुछ चलता-फिरता.... फिर वही अनिश्चितता, फिर वही अवास्तविकता, संदेह की छाया। अब मैं बहुत तेजी से आगे बढ़ कर, अपने शिकार को पकड़ने ही वाला था कि, एकाएक एक गड्ढे में मेरा दाहिना पैर पड़ा।

"सूखे पत्तों के ढेर से बचना जानता था। लेकिन गड्ढे से कैसे बचता। एकाएक गड्ढे में पैर पड़ते ही निस्तब्ध अंधकार में जो ध्वनि हुई उससे सब-कुछ उलट-पुलट गया। ...सुन रहे हैं न?"

मैंने कहा–"हाँ-हाँ, सुन रहा हूँ। रुको मत, कहे जाओ।"

"एक अमानुषिक चीख! हाँ, अमानुषिक। ऐसा लगा, जैसे किसी स्त्री की आवाज़ हो, और जैसे वह मेरी ही पत्नी हो। प्राण-भय की चित्कार, आकाश को कँपा देने वाली चीख!

"क्षण भर में ही समझ गया कि, कौन मेरा दुश्मन है। मैं बेहोश होने वाला था!

"बेबसी से मैं रो उठा। प्रचंड शक्तिशाली एक पँजे के दबाव से मेरे प्राण निकलने ही वाले थे।

"विश्वास कीजिये, बाघ गरजता हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दांत निकलने की तकलीफ़ ?

पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन से बच्चों के दांत हंसते खेलते निकल आते हैं!

पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन से बच्चों के दांत हंसते खेलते निकल आते हैं! दांत निकलने की पीड़ा हो या मसूड़े दुखते हों तो उंगली पर नर्म कपड़े की पट्टी लपेट कर पिरॅमिड ग्लिसरीन में डुबोइये और बच्चे के मसूड़ों पर हलके हलके मलिये— झट आराम आ जायगा। बच्चों को इसका मीठा मज़ेदार स्वाद बहुत अच्छा लगता है। यह शुद्ध है और घर के और कई काम आती है। घर में सदा एक शीशी रखिये।

मुफ़्त पत्रिका! यह कूपन भर के इस पते पर भेजिये :
हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, पोस्ट बक्स नं. ४०९ बम्बई १

कृपया मुझे पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन के घरेलू उपयोगों की मुफ्त पत्रिका भेजिये।

मेरा नाम और पता

_____

_____

_____

मेरे कॅमिस्ट का नाम और पता

_____

_____

_____

N. M. B.

डिस्ट्रीब्यूटर्स : आइ. सी. आइ (इ) प्राइवेट लि., बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोला—"मेरे मुँह के ग्रास को सर्तक कर तूने भगा दिया, इसलिए तुझे मरना होगा'।"

"बाघ ने बातें कीं?"—मैंने आश्चर्य से पूछा।

"बीच में रोकिन्दे मत" जोर से डपटते हुए अमोलक ने कहा—"मैंने बाघ को उत्तर दिया—वह तो मेरा खाद्य था, तुमने ही मेरे काम में बाधा डाली, नहीं तो भला वह भाग सकता था?'

बाघ और भी चिढ़ कर बोला—"झूठ! सफेद-झूठ! मनुष्य-मनुष्य का खाद्य नहीं हैं, मैं जानता हूँ।" मैंने कहा—"तुम कुछ नहीं जानते। मनुष्य को मार कर ही मैं अपना आहार संग्रह करता हूँ। मनुष्य पर आक्रमण कर मैं उसका रुपया-पैसा लूट लेता हूँ।"

"मैंने अपनी यह सर्वाधिक गुप्त बात बाघ को सर्वप्रथम बतायी।"

"बाघ का पंजा ढीला हो गया। वह कुछ सोचने लगा। आश्चर्य, वह एकाएक बदल गया। बोला—मुझे माफ करो, सह-धर्मी को हम नहीं मारते। तुम्हारा और मेरा धर्म एक ही है। हम दोनों ही मनुष्य की हत्या करते हैं। क्षमा करो बंधु, तुम्हें पहचान नहीं सका! अनजाने ही मैंने अन्याय किया। आशा है, तुम इसका कुछ ख्याल नहीं करोगे।'

"जब मुझे होश आया तो देखा कि, मैं कमरे में लेटा हुआ हूँ। मालूम हुआ कि, एक स्त्री का आर्तनाद और बाघ की दहाड़ सुन कर कुछ लोग दौड़ पड़े थे और आहत अवस्था में मुझे उठा लाये थे। मेरी स्त्री ने उन लोगों से कहा—हम दोनों एक साथ जा रहे थे कि, एकाएक बाघ ने हमला किया।"

अब मैं और चुप न रह सका। बोला—"ये सब मनगढ़न्त बातें हैं। भला, कभी यह सच हो सकता है?"

अमोलक ने जवाब दिया—"डाक्टर भी यही कह रहा था। उसका खयाल था कि, बाघ के आक्रमण की वजह से बेहोशी की हालत में, मैंने स्वप्न देखा है। डाक्टर से सिर्फ इतना ही कहा था कि, बाघ ने मुझसे बातें की थीं। मैंने कहा था, मुझे संदेह है कि, कोई आदमी बाघ के छद्म-वेश में इस इलाके में घूमता है। सब लोगों ने यह बात हँस कर उड़ा दी। भले ही यह स्वप्न हो, पर मुझे बहुत शर्म आयी थी। बाघ में भी जो विवेक-बुद्धि है, कर्म-ज्ञान है, मुझमें वह भी नहीं है—इसीलिए।"

मैंने कहा—"तुम्हारी यह सारी कहानी अवास्तविक लगती है।"

यह सुनते ही अमोलक एकाएक उत्तेजित हो उठा। उसकी इतनी रौद्र मूर्ति हो सकती है, मैंने यह कल्पना भी नहीं की थी। वह चीख-चीख कर कहने लगा—"मैंने पहले ही कहा नहीं था कि, सब कुछ अवास्तविक मालूम होगा? कहा था न? यहाँ का सब-कुछ मिथ्या है। सब जादूगर की करामात है। जरा यह देखिए—सारे पहाड़ आकाश में उड़े जा रहे हैं, मेघों के सारे रंग अलग-अलग होकर गायब हो रहे हैं, सारे पेड़-पौधे नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब कुछ जैसे हवा में बिखर गया है—अब भी नहीं समझे कि, जो कुछ देख रहे हैं, वह सब मिथ्या है, सब भ्रान्ति है? पैरों-तले जमीन हिल रही है, इतना भी नहीं समझते? देखते नहीं, सब-कुछ शून्य में मिला जा रहा है? जानते नहीं, जिसे सुंदर समझा है, वह कितना बड़ा धोखा है।"

और नहीं सुन सका, काँपने लगा। सच ही ऐसा लगने लगा कि, यह सब मिथ्या है, सब छलना है। डर के मारे पसीने से तर अमोलक को पकड़ने के लिए आगे बढ़ा, तो देखता हूँ कि, मैंने स्वयं को ही पकड़ रखा है। कोई नहीं है।

फिर सब शून्य।

दूसरे दिन मालूम हुआ कि, मेरे मित्र जब लौट रहे थे, तो रास्ते में उन्हें एक बदशक्ल पागल मिला था। उसी ने, उन्हें मेरी बेहोशी की खबर दी थी। सुनते ही वे दौड़े और देखा कि नदी-किनारे एक पत्थर के पास मैं बेहोश पड़ा हूँ।

और यह भी मालूम हुआ कि, इस इलाके में अमोलकराम को कोई नहीं जानता, उसकी-जैसी शक्ल का आदमी किसी ने नहीं देखा है।

वही नेपोलियन बोनापार्ट जिसके जीवन का लक्ष्य था—समय पर न चूकना; और जो यह कहा करता था—"मैं लड़ाइयाँ हार सकता हूँ, परन्तु कोई मुझे एक मिनट भी व्यर्थ खोते नहीं देख सकता।" अपने विवाह की वेदी पर निश्चित मुहूर्त के पूरे ४८ घंटे बाद पहुँचा। पुरोहित प्रतीक्षा करते-करते और उबासियाँ ले लेकर, इतना थक गया था कि, नेपोलियन के पहुँचने के पूर्व ही, वह सो गया।

विवाह हो जाने के ४८ घंटे बाद ही, वह इटैली में एक नये युद्ध के लिये प्रस्थान कर दिया। इस युद्ध में वह और उसकी वीर-वाहिनी ने ऐसा घमासान युद्ध किया कि, सहस्रों वर्षों में भी यूरोप ने ऐसा युद्ध न देखा था। परन्तु, आश्चर्य की बात तो यह है कि, इतनी अस्त-व्यस्तता के होते हुए भी, नेपोलियन प्रति-दिन एक प्रेम-पूर्ण पत्र अपनी प्राणाधिक-पत्नी जोसेफिन को लिखने का समय, उस युद्ध-क्षेत्र में भी निकाल ही लेता था। और वे पत्र भी कुछ मामूली नहीं हैं, बल्कि संसार की एक अमूल्य निधि हैं। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि, सन् १९३३ में, नेपोलियन के अनेकों प्रेम-पत्रों में से केवल आठ पत्र, लन्दन के एक सार्वजनिक नीलाम-घर में जब नीलाम के लिये लाये गये, तो उसके खरीदने वालों की संख्या इतनी अधिक बढ़ गयी कि, उनकी बोली २०,००० डालर (लगभग एक लाख रुपये) बोली गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरहाने 'मीर' के आहिस्ता बोलो अभी टुक रोते-रोते सो गया है

उर्दू-काव्य में से मीर को निकाल दीजिये, तो जैसे गंगा को हिंदुस्तान से निकाल दिया। आज के नये-से-नये उर्दू-कवि की काव्य-निष्ठा के सामने भी 'मीर' की शायरी गंगा की भाँति ही प्रणम्य है—फक्कड़ फकीर 'गालिब' तक ने 'मीर' के काव्य को परिपूर्ण हार्दिकता से आदर दिया है। 'मीर' ग़ज़ल के बादशाह थे। ग़ज़ल को भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से जो परिपक्वता 'मीर' के हाथों मिली, वह आज तक उर्दू के महाकवियों का आदर्श रही है। जीवन के निःसीम उपवन से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहस्र-सहस्र सुरभियों चुनकर शिल्पी 'मीर' जब उन्हें अपनी गजल में गुम्फित करते हैं, तो काव्यानंद का यह रसाई-वैभव किसे विह्वल नहीं कर देता है! इसी को लेकर 'जौक' ने बड़ी स्वाभाविक उक्ति कही है—

न हुआ पर न हुआ 'मीर' का अंदाज नसीब
'जौक' यारों ने बहुत जोर गजल में मारा।

यहाँ हम 'नवनीत' के पाठकों के लिए उर्दू के इन्हीं खुशगवे-सखुन, की संक्षिप्त जीवन-लीला प्रकाशित कर रहे हैं—लेखक हैं उर्दू के प्रख्यात कवि और लेखक सरदार जाफरी और चित्र-शिल्पी इंद्र शर्मा।

यह कोई सवा दो सौ बरस पहिले की बात है.....।

गर्मियों के दिन, एक लाश और एक बच्चा! लाश आगरे के मशहूर सूफी फकीर मोहम्मद अली की है और दस-ग्यारह बरस का बच्चा, उनका बेटा, मोहम्मद तकी है। दरवाजे पर कुछ लोग जमा हैं, हिन्दू-मुसलमान; जो सब-के-सब मरने वाले फकीर के अकीदतमंद हैं। शहर के कुछ हिन्दू बनिये भी खड़े हैं और खुशामद के साथ दो सौ रुपया देना चाहते हैं; लेकिन बच्चा रुपये को हाथ नहीं लगाता और बाप की लाश भी नहीं उठने देता। किसी में इतनी हिम्मत नहीं कि, इस सोगवार बच्चे की इजाजत के बगैर, मोहमद अली को दफन करने का इन्तजाम कर दे। दिन चढ़ता जा रहा है और सब हैरान व परेशान हैं।

मरने से पहिले सूफी फकीर मोहम्मद अली ने अपने बड़े बेटे और मोहम्मद तकी के सौतेले भाई हाफिज मोहम्मद हसन को बुला कर कहा था—"मैं फकीर हूँ, मेरे पास कोई धन-दौलत नहीं है। बस, तीन सौ किताबें हैं; वह मेरे सामने लाओ और भाइयों में बाँट लो।"

लेकिन मोहम्मद हसन ने बूढ़े बाप की बात मानने से इन्कार कर दिया और जवाब दिया—"मैं तालिबे-इल्म हूँ, और मुझे ही किताबों से काम पड़ता है। छोटे भाई किताबों से कोई ताल्लुक ही नहीं रखते। उनके वरक फाड़ डालेंगे। एक पतंग बनायेगा, दूसरा नाव बना-बना कर पानी में बहा देगा। अगर आप यह सब किताबें मुझे ही सौंप दें, तो अच्छा है।"

इस जवाब से फकीर के दिल को बहुत दुःख पहुँचा। उसने डाँट कर कहा—"इस से क्या होता है, जो तूने फकीरों का भेस बदल लिया है, तेरी मक्कारी और चालबाजी तो अभी तक नहीं गयी। तू चाहता है कि, इन बच्चों से दगा करे और मेरी आँखें बंद होने के बाद इन्हें नुकसान पहुँचाये, याद रख! अल्लाह-तआला गयर (स्वाभिमानी) है और गयूर को पसंद करता है। मोहम्मद तकी तेरा मोहताज नहीं होगा और तू इसके साथ अगर दूसरा बर्ताव करेगा, तो नीचा देखेगा। बेहतर है; ये किताबें तू ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ले जा और रख ले।"

इसके बाद फकीर ने नन्हें मोहम्मद तकी से कहा—"मेरे मरने का वक्त आ गया है; मुझ पर बाज़ार के बनियों का तीन सौ रुपया कर्ज़ है। उम्मीद है कि, तुम जब तक मेरा कर्ज़ अदा न कर दोगे, मेरा जनाज़ा न उठाओगे ; क्योंकि मैं मामले का साफ रहा हूँ और तमाम उम्र किसी को धोखा नहीं दिया।"

मोहम्मद तकी—दस-ग्यारह बरस की जान ! इतना बड़ा बोझ कैसे उठा सकता सकता था ? घबड़ा गया, लेकिन बाप ने तसकीन-दी—"मायूस न होना चाहिए। खुदा करीम है। हुंडी रास्ते में ही है और पहुँचा ही चाहती है। चाहता था कि, रुपया आने तक ज़िंदा रहूँ और अपना कर्ज़ अपने हाथ से अदा कर जाऊँ; लेकिन उम्र की चंद ही घड़ियाँ बाकी हैं, अब ठहरना मुमकिन नहीं।"

यह कहकर नन्हे से बच्चे के सर पर हाथ फेरा, दुआएँ दीं और आखिरी साँस लेकर खामोश हो गये।

और अब लाश के पास बैठा हुआ यह बच्चा बाप के वादे के पूरा होने का इन्तज़ार कर रहा था। आखिर एक मुरीद पाँच सौ रुपये की हुंडी लेकर आ गया। मोहम्मद तकी ने तीन सौ रुपया कर्ज़ का अदा कर दिया और सौ रुपये से बाप की आखिरी रस्में पूरी कर दीं।

यही लड़का, बड़ा होकर मीर तकी 'मीर' के नाम से मशहूर हुआ और उर्दू शायरी के सातवें आसमान पर सूरज बन कर चमका। आज भी दो सौ बरस गुज़र जाने के बाद, इस सूरज की चमक-दमक में कोई कमी नहीं है। यह तनहा शायर है, जिसे 'शायरी का खुदा' कहा गया है।

बड़े भाई हाफिज़ मोहम्मद हसन ने सौतेलापन दिखाया और बाप की आँख बंद होते ही, आँखें फेर लीं। अब ग्यारह बरस के मीर के पास अपने एक छोटे भाई के सिवा किसी का सहारा नहीं था। वह भी शायद आँसू गिनने में ही मदद देता होगा। अब बकौले मीर—"मेरे अपने हाथ के सिवा, किसी का हाथ मेरे सर पर न था।"

सुबह से शाम तक आगरे के गली-कूचों की खाक छानना और रात को आकर घर पड़ रहना और छोटे भाई को तस्कीन देना—'मीर' का रोज़ाना मामूल हो गया। बचपन का ज़माना जो खेल-कूद और तालीम में गुज़रना चाहिए था; रोज़ी की तलाश में बीतने लगा।

कई साल इस तरह गुज़र गये और ज़ब कोई आसरा आगरे में नज़र नहीं आया, तो 'मीर' ने देहली का रुख किया। शायद वहाँ कोई अच्छी सूरत पैदा हो जाय। इस वक्त 'मीर' की उम्र सोलह-सतरह बरस की हो चुकी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न जेब में पैसा, न कब्जे में कोई सवारी! न जाने कैसे नदी, नाले, खेत, मैदान पार किये होंगे और फिर देहली के अजनबी शहर में क्या बीती होगी? किसी को क्या मालूम! शायद भूख थी; जो खींचे लिए जा रही थी। देहली में भी दर-ब-दर मारे-फिरने के सिवा कोई रास्ता न मिला, किसी ने सर पर हाथ न रखा।

लेकिन इत्तफाक से, एक दिन एक ऐसा आदमी मिल गया; जो 'मीर' के बाप से वाक़िफ़ था। उसका नाम ख्वाजा मोहम्मद बासित था और वह मोहम्मद शाह के एक दर्बारी अमीरुल-उमरा समसामुद्दौला का भतीजा था। बासित 'मीर' को अपने चचा के पास ले गया। समसामुद्दौला ने बहुत अफसोस जाहिर किया और फिर यह हुक्म दिया—"एक रुपया रोज़ इस लड़के को मेरी सरकार से दिया जाये।"

मीर यह वज़ीफ़ा लेकर आगरा वापस आ गये। समसामुद्दौला का वतन भी आगरा था, इसलिए 'मीर' को एक रुपया रोज़ घर बैठे मिलता रहा और वह नान व नमक खाकर गुज़ारा करते रहे।

लेकिन यह एक रुपया रोज़ की फरागत चंद रोज़ा साबित हुई। एक साल मुश्किल से गुज़रा था कि, देहली पर नादिरशाह ने हमला कर दिया और 'मीर' के मुरब्बी अमीरुल-उमरा समसामुद्दौला नादिरशाह के मुकाबले में काम आ गये। उनकी मौत ने 'मीर' को फिर फाकाकशी की ज़िंदगी की तरफ़ धकेल दिया और वह अपना वतन आगरा, एक बार और छोड़ने पर मजबूर हो गये।

मगर इस बार सिर्फ रोज़गार की तलाश और पेट भरने के सामान ही का सवाल नहीं था, बल्कि मीर अपने सीने में एक जख्मी दिल लेकर जा रहे थे। उनपर किसी परी-चेहरा माशूक ने जादू कर दिया था। उसका नाम आज भी पर्दे ही में है; लेकिन इतनी बात यक़ीनी है कि, इश्क़ की आग दोनों दिलों में लगी और मोहब्बत की पेंगें बढ़ते-बढ़ते इस हद को पहुँच गयीं कि, रुसवाई और बदनामी होने लगी। इसके साथ ही दर्मियान में दीवारें काय़म हो गयीं और मीर को आगरा छोड़ कर चले जाने पर मजबूर हो जाना पड़ा—

जैसे हसरत लिये जाता है जहाँ से कोई।
आह यूँ कूचा-ए-दिलबर से सफ़र हमने किया॥

मालूम नहीं 'मीर' की माशूका कैसी थी, लेकिन 'मीर' की शायरी में जो हसीन जिस्म टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया है; उसमें यक़ीनन उसकी हलकी-सी झलक देखी जा सकती है—

नाजुकी उसके लब की क्या कहिये?
पंखड़ी एक गुलाब की-सी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुल हो, महताब हो, आईना हो, खुर्शीद हो 'मीर'।
अपना महबूब वही है जो अदा रखता हो॥

'मीर' इस बार देहली पहुँचे; तो वहाँ के गली-कूचों में खाक उड़ रही थी। यह हिन्दुस्तान की राजधानी नहीं थी, बल्कि नादिरशाह की लूटी हुई नगरी थी। तीस हज़ार से ज्यादा आदमी तीन दिन के कत्ले-आम में मारे जा चुके थे, और आठ मुग़ल ताजदारों के जमा किये हुये खज़ाने, जिनकी मालियत सत्तर-अस्सी करोड़ के दर्मियान थी; नादिरशाह दस हज़ार ऊँटों, दस हज़ार घोड़ों और तीन हज़ार जंगी हाथियों पर लाद कर ले गया था। अमीर तो अमीर, खुद देहली का बादशाह तक फकीर हो गया था।

क्या कहिये अपने अहद में जितने अमीर थे।
टुकड़े पे जान देते थे, सारे फ़क़ीर थे॥

इस आलम में 'मीर' की मदद कौन कर सकता था? मजबूरन 'मीर' को अपने सौतेले भाई के मामूँ, सिराजूद्दीन अली खाँ 'आरजू' का अहसान उठाना पड़ा और मीर ने उनके घर में पनाह ली।

यह छोटा-सा वाकिआ 'मीर' की ज़िंदगी का बहुत बड़ा मोड़ था। खान आरजू, यूँ तो 'मीर' के सौतेले भाई के मामूँ थे; लेकिन वह अपने ज़माने के बहुत बड़े आलिम और शायर थे, अरबी-फारसी और संस्कृत के माहिर थे। 'मीर' ने अपनी फारसी किताब "नुकातुश्शोरा" में खान 'आरजू' को ऐसा जबर्दस्त शायर और आलिम तसलीम किया है, जिसकी मिसाल उस वक्त के हिन्दुस्तान में मौजूद न थी।

अभी 'मीर' खान 'आरजू' के यहाँ थोड़े ही अर्से रहे थे और शहर के लोगों से चंद किताब पढ़ी थीं कि, एक अजीब-वो गरीब वाकया पेश आया; जिसकी असल वजूहात का आज तक पता ही न चल सका। 'मीर' अपनी आब-बीती 'जिक्रे-मीर' में लिखते हैं—

"जब मैं इस काबिला हुआ कि, किसी का सही मुख़ातिब बन सकूं, तो भाई का खत (मामूँ के नाम) पहुँचा कि, मीर 'तक़ी' फ़ितना-ए-रोज़गार (दुष्ट) है। इसकी तर्बियत (दीक्षा) हरगिज़ न करनी चाहिये। खान 'आरजू' पक्के दुनियादार थे। अपने भानजे की अदावत देख कर मेरा बुरा चाहने लगे। अगर मैं सामने पड़ता, तो फुंफकारने लगते, और बच-बच कर रहता, तो औल-फौल बकते। मैं क्या बयान करूँ कि, उनसे कैसा सलूक देखा और किस तरह कहूँ कि, क्या रंज उठाये? मैं हरचंद सब्रो-ज़ब्त करता। मगर वह अपनी हरकत से बाज़ न आये।"

यह वाकया सन् १७४०–४१ के बीच का मालूम होता है, और उस वक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरानी धारणाओं के फेर में जीवन के नये सुख न खो बैठिए !

बहुतेरे लोगों को आपने आधुनिकता की डींग भरते सुना होगा लेकिन सच तो यह है कि ये लोग अपने जीवन के नये सुखों को अपने ही हाथों खोते जा रहे हैं क्योंकि मौक़ा पाते ही ये लोग आज भी पुरानी लकीर के फ़क़ीर बनने से नहीं चूकते।

कहीं दूर जाने की ज़रूरत नहीं, रसोईघर की ही बात कीजिए। अक्सर लोग कहते हैं "हम वनस्पति से पका खाना तो खाते ही नहीं" या फिर "वनस्पति तो एक बनावटी हुई चिकनाई है। इसमें वह ताक़त कहाँ जो क़ुदरती चिकनाई में होती है!"। और सच पूछिए तो वनस्पति के बारे में कुछ भी क़ुदरती नहीं। हाँ, इसे तैयार करने में साफ़-सफ़ाई का पूरा ध्यान रखा जाता है। बस, यही बात अजीब हो सकती है!

उत्पादन की कड़ी निगरानी

वनस्पति एक विशुद्ध चिकनाई है जो मूँगफली और तिल से प्राप्त की जाती है। साफ़-सुथरे आधुनिक कारख़ानों में मूँगफली और तिल के तेलों को शोध कर वैज्ञानिक तरीक़े से इसे तैयार किया जाता है। इन कारख़ानों में सफ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। इसीलिए, आसानी से पचनेवाली यह चिकनाई आपको बिलकुल शुद्ध रूप में मिलती है। खाना बनाने के लिए यह एक आदर्श चिकनाई है क्योंकि इसमें पके भोज्य-पदार्थों का स्वाद और उनकी ख़ुशबू ज्यों के त्यों बने रहते हैं। यह सस्ती भी होती है... और इसके हर आउंस में पुष्टई का पूर्ण पुट होता है।

अच्छे स्वास्थ्य और बढ़िया रहन-सहन के लिए

वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हर आदमी को तन्दुरुस्त और ताक़तवर रहने के लिए हर रोज़ कम से कम दो आउंस चिकनाई की ज़रूरत होती है। यह ज़रूरी चिकनाई आपको शुद्ध और सस्ते वनस्पति से पके भोजन में बड़ी आसानी से मिल सकती है। क्यों नहीं आप भी अच्छे स्वास्थ्य और बढ़िया रहन-सहन के लिए वनस्पति इस्तेमाल करना शुरू कर देते?

वनस्पति — गृहिणी का सच्चा सहायक

दि वनस्पति मैन्युफैक्चरर्स ऐसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीर की उम्र १८–१९ साल के लगभग होगी। गमे-इश्क, गमे-रोज़गार और फिर खान 'आरजू' की बदसलूकी–इन सबने मिल कर दीवानगी की हालत पैदा कर दी। इनमें सबसे ज्यादा हावी गमे-इश्क था। मीर ने इसको मज़े ले-ले कर बयान किया है–

"चाँद का निकलना तो मेरे लिए कयामत होती थी। चाँदनी रात में एक हसीन पैकर (देह) अपनी तमाम रानाइयों (सौंदर्य) के साथ कुर्रा-ए-कमर (चाँद) से मेरी तरफ आता और मुझे बेखुद कर देता था। जिधर भी आँख उठती, उसी रश्के-परी पर पड़ती, जिस तरफ देखता–उसी गैरते-हूर का तमाशा करता। मेरे घर के दरो-बाम और सहन गोया बरके तस्वीर हो गये थे। यानी हर सिम्त (तरफ) वही हैरत-अफ्ज़ा चेहरा नज़र आता, कभी चौदहवीं के चाँद की तरह सामने, कभी सैरगाहे-दिल में महवे-ख़राम (घूमता हुआ)। अगर गुले-महताब पर नज़र पड़ जाती, तो जान और भी बेकरार हो जाती। हर रात उस परी-पैकर से मुलाकात होती और हर सुबह उसकी जुदाई में वहशत!"

'मीर' इस मर्ज़ से बहुत जल्द अच्छे हो गये; लेकिन यह दीवानगी एक खूबसूरत परछाईं की तरह तमाम उम्र उनकी शायरी पर मँडलाती रही। दीवाने और शायर में एक बुनयादी फर्क होता है। दीवाना अपने ख्वाबों को अपने ज़हन से अलग नहीं कर सकता और न उनकी बेतरतीबी में तरतीब पैदा कर सकता है। लेकिन शायर अपने ख्वाबों के बिखरे हुये जलवों को मुरत्तिब करके एक पैकर (देह) बनाता है और उसको अपने ज़हन से उठा कर कागज़ पर मुन्तकिल कर देता है। 'मीर' ने यह अमल अपनी दीवानगी के आलम ही में शुरु कर दिया था।

उस ज़माने में मिर्ज़ा रफी 'सौदा' के चर्चे थे। एक दिन खान 'आरजू' ने 'सौदा' का एक मतला मीर को सुनाया। मीर ने उस वज़न और ज़मीन में फौरन एक शेर कह सुनाया—

हमारे आगे तेरा जब कसो ने नाम लिया।
दिले-सितम-ज़दा को हमने थाम-थाम लिया॥

खान आरजू यह शेर सुन कर उछल पड़े और दुआ दी कि, खुदा बुरी नज़र से बचाये। इस गज़ल के दो बड़े ही महशूर शेर ये हैं—

खराब रहते थे मस्जिद के आगे मयखाने।
निगाहे-मस्त ने साकी को इन्तकाम[1] लिया॥
मेरे सलीके से हैरों सभी मोहब्बत में।
तमाम उम्र में नाकामियों से काम लिया॥

१–बदला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'सेन्फोराइज्ड' ट्रेडमार्क के अधिकृत उपभोक्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस तरह 'मीर' उन्नीस साल की उम्र में ही, मशहूर और मुस्तनद शायर हो गये थे।

देहली में 'मीर' की शायरी और दीवानगी दोनों की शोहरत थी। 'मीर' जामा-मस्जिद का चक्कर लगाते हुए काज़ी हौज़ पर जा निकले, उस ज़माने में वहाँ एक नहर बहती थी, 'मीर' ने उससे पानी पिया। उनके अंदाज़ की दीवानगी देख कर एक शख्स ने पहिचान लिया। उसका नाम अलीमुल्लाह था। वह 'मीर' को मालवे के सूबेदार के बेटे रिआयत खाँ के पास ले गया, जो 'मीर' के अशआर सुन चुका था और इस निराले शायर से मिलने के लिए बेताब था।

रिआयत खाँ ने 'मीर' को अपना मुसाहिब बना लिया और 'मीर' को मुफलिसी और तंगदस्ती से निजात मिल गयी।

कुछ साल 'मीर' ने बड़ी बेफिक्री से गुज़ारे। इन चंद सालों में उनकी शोहरत सारे हिन्दुस्तान में फैल गयी। लोग एक शहर से दूसरे शहर, मीर के शेरों और गज़लों को तोहफे और सौगात के तौर पर ले जाते थे। 'मीर' अपने घर पर मुशायरे करते थे और उनमें देहली के अहले-कमाल जमा होते थे। सब उनकी उस्तादी के दर्जे को तस्लीम करते थे।

लेकिन 'मीर' जिस देहली में रह रहे थे और जिसके वह आशिक थे—उसकी बुनयादों में भूचाल छिपे हुये थे। यह ज़माना मुगल सल्तनत के ज़वाल और खाना-जंगियों का था। देहली का मर्कज़ कमज़ोर हो चुका था और हिन्दुस्तान में चारों तरफ सूबेदारों ने बगावतें शुरु कर दी थीं। नादिरशाह के हमले के बाद से, देहली और भी कमजोर और मुफलिस हो गयी थी। वह मुफ़लिसी आम शहरियों से लेकर शाही क़िले तक फैली हुई थी। अवाम तो अवाम, शहजादे, शहजादियाँ, हाथी और घोड़े तक भूखों मर रहे थे।

ऐसे आलम में सन् १७४८ ई. में अहमद शाह अब्दाली के हमले शुरु हुए। इन हमलों और हिन्दुस्तानियों की आपसी खानाजंगियों में देहली ऐसी बर्बाद हुई कि, फिर सौ-डेढ़-सौ बरस तक आबाद न हो सकी। फौजों की पसपाई से लेकर, घरों की लूट-मार, बूढ़ों-बच्चों का कत्ल और औरतों की बेइज्ज़ती तक, 'मीर' ने सब-कुछ देखा और भुगता। बारहा वह भी घर से बेघर हुये और फाकों की हालत में दर-ब-दर मारे फिरे। इस तबाही की बड़ी दर्दनाक दास्तानें 'मीर' की आप-बीती 'ज़िक्रे-मीर' में महफूज़ हैं। एक जगह देहली की तबाही का हाल इस तरह लिखते हैं—

"बंदा (मीर) अपनी इज्ज़त थामे शहर में बैठा रहा। शाम के बाद मनादी हुई कि, बादशाह अब्दाली ने अमान दे दी है और रिआया को चाहिए कि, परेशान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत के प्रथम...
अबतक सर्वोत्तम!

प्रभात के उत्पादन

हमें जनताको आश्वासन दिलाते हुए हर्ष होता है कि हम उनके सहयोगसे औद्योगिक स्वतंत्रता एवं आत्म-निर्भरता की मंजिल की ओर अपने राष्ट्रकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिये हम अपने लघु दायरेमें उत्कृष्ट प्रगति कर रहे हैं।

प्रभात (स्टोव ॲण्ड लैम्प) प्राडक्टस कम्पनी प्राइवेट लि.

नोबल चैम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई-१.

K. S. K.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न हो; मगर जब घड़ी भर रात गुज़री, तो लुटेरों ने जुल्मो-सितम ढाने शुरू किये। शहर को आग लगा दी। घरों को जला दिया और सब-कुछ लूट ले गये। सुबह को, तो फौज़ और रोहीले भी कत्लो-गारत में लग गये। तीन दिन-रात तक जुल्म से हाथ न खींचा। हर शख्स इस बला में गिरफ्तार था।"

'मीर' इन हादसों को तमाम उम्र नहीं भूले। इसीलिए ज़ा-बजा उनकी गज़लों में यह तसवीरें उभरती हैं—

सबजाने-ताजा-रू[1] की जहाँ जलवागाह थी।
अब देखिये तो वाँ नहीं साया दरख्त का॥

दिल्ली में आज भीख मिलती नहीं उन्हें।
था कल तलक दिमाग जिन्हें ताजो-तख्त का॥

उम्र भर की परेशानी और दिल्ली की तबाही व बर्बादी ने मीर को बेइन्तहा नाजुक-मिज़ाज, और गमगीन बना दिया था और उनकी शायरी एक खूबसूरत 'आह' बन कर रह गयी। 'मीर' की शायरी में 'दिल' और 'दिल्ली' के अलफाज़ तकरीबन हममानी हो गये हैं। वह कभी दिल्ली की बर्बादी को दिल की तबाही कहते हैं और कभी दिल की तबाही को दिल्ली की बर्बादी!

दिल की बर्बादी का क्या मज़कूर[2] है?
यह नगर सौ मर्तबा लूटा गया॥

दिल की आबादी की इस हद है ख़राबी कि न पूछ।
जाना जाता है कि इस राह से लश्कर गुज़रा॥

अब 'मीर' के लिए यह मुमकिन ही नहीं था कि, अपने वीराना-ए-दिल को लेकर उजड़ी हुयी दिल्ली में और ज्यादा दिन रह सकें। वह खुद दिल्ली छोड़ कर कहीं जाने की फिक्र में थे कि, लखनऊ से नवाब आसफुद्दौला का बुलावा आ गया और 'मीर' ने अपने प्यारे शहर को हमेशा के लिए छोड़ दिया। लेकिन, दिल्ली की याद उन्हें उम्र भर सताती रही।

मौलाना मोहम्मद हुसैन 'आज़ाद' ने उनके लखनऊ पहुँचने की दास्तान इस तरह बयान की है—"लखनऊ पहुँच कर जैसा कि, मुसाफिरों का दस्तूर है, एक सराय में उतरे। मालूम हुआ कि, यहाँ आज एक जगह मुशायरा है। रह न सके, उसी वक्त एक गज़ल लिखी और मुशायरे में शामिल हो गये। जब दाखिले-महफिल हुये, तो वह शहर लखनऊ, नये अंदाज़, नई तराशें, बाँके-टेढ़े जवान जमा, उन्हें देख कर सब हँसने

१—ताजी हरियाली २—जिक्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हॅडेन्सा

बवासीर के लिए

सभी जगह मिलता है।

DCZ-13 HIN

साण्डू

ओरिजिनल

ब्राह्मी तेल

दत्तात्रेय कृष्ण साण्डू ब्रदर्स चेम्बूर प्रायव्हेट लि.

फॅक्टरी और हेड ऑफिस :— चेम्बूर-बम्बई-३८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगे। 'मीर' साहब बेचारे गरीबुल-वतन, जमाने के हाथ से पहले ही दिल-शकस्ता थे और भी दिल-तंग हुए और एक तरफ बैठ गये। शमा उनके सामने आयी, तो फिर सबकी नज़र पड़ी और बाज़ हज़रात ने पूछा कि, हुज़ूर का वतन कहाँ है? 'मीर' साहब ने उसी वक्त यह किता कह कर गज़ल में दाखिल किया—

क्या बूदो-बाश[1] पूछो हो पूरब के साकिनो[2]।
हमको गरीब जानके हँस-हँस पुकार के॥
दिल्ली जो एक शहर था आलम में इन्तखाब[3]।
रहते थे मुन्तखब[4] ही जहाँ रोज़गार[5] के॥
उसको फ़लक[6] ने लूट के वीरान[7] कर दिया।
हम रहने वाले हैं उसी उजड़े दयार[8] के॥

सबको हाल मालूम हुआ, बहुत-बहुत माफी माँगी, सुबह होते-न-होते शहर में महशूर हो गया कि, 'मीर' साहब तशरीफ लाये हैं।

इसके बाद नवाब आसफुद्दौला से मुलाकात हुई। उन्होंने 'मीर' की बड़ी आव-भगत की, और उनको दो सौ रुपये माहवार पर अपने यहाँ मुलाज़िम रख लिया।

यह कहना मुश्किल है कि, 'मीर' को यह बेफिक्री कितने दिन नसीब रही। 'मीर' की गज़लों से यह पता जरूर चलता है कि, वह लखनऊ से खुश नहीं थे, और मोहम्मद हुसैन 'आजाद' ने उनकी नाजुक-मिज़ाज़ी और बद-दिमागी के जो वाकआत (घटनाएँ) लिखे हैं, उनसे पता चलता है कि, 'मीर' को बहुत जल्द मुफलिसी ने घेर लिया था।

एक बार नवाब आसफुद्दौला से इस बात पर बिगड़ गये कि, नवाब ने उनकी गज़ल तवज्जह से नहीं सुनी, और दरबार का आना-जाना छोड़ दिया। एक दिन 'मीर' साहब बाज़ार में चले जा रहे थे कि, नवाब की सवारी उधर से गुज़री। आसफुद्दौला ने देखते ही कहा—"मीर साहब, आपने तो हमें बिलकुल ही छोड़ दिया। कभी तशरीफ भी नहीं लाते।" लेकिन मीर साहब ने यह कह कर मुँह फेर लिया—"बाज़ार में गुफ्तगू करना शरीफों का शेवा नहीं है।"

जब आसफुद्दौला मर गये और सआदत अली खाँ का दौर आया, तो 'मीर' दरबार जाना छोड़ चुके थे। वहाँ से भी किसी ने तलब नहीं किया। एक दिन नवाब की सवारी चौक से गुज़र रही थी। 'मीर' मसजिद की सीढ़ियों पर बैठे थे। सब लोग नवाब की ताज़ीम के लिए उठ खड़े हुए; लेकिन 'मीर' बदस्तूर बैठे रहे। उस वक्त उर्दू के एक और मशहूर शायर 'इन्शा' नवाब के साथ थे। नवाब ने पूछा—"यह कौन मगरूर

१—रहना-सहना २—रहनेवाले ३—चुना हुआ ४—चुनीदा ५—दुनिया ६—आसमान ७—बर्बाद ८—शहर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(घमंडी) आदमी है; जिसके ग़रूर ने उसे हमारी ताज़ीम के लिए उठने भी नहीं दिया ?" 'इन्शा' ने नाम और हाल बताया, और कहा—"आज भी फ़ाक़ा ही होगा।" सआदत अली खाँ पर इसका असर हुआ और उन्होंने महल में आकर बहाली का खिलअत और दावत के लिए एक हज़ार रुपया भेजा। जब चोबदार खिलअत और रुपया लेकर हाज़िर हुआ, तो 'मीर' साहब बिगड़ गये और कहने लगे— "यह रुपया मस्जिद में जाकर गरीबों को बाँट दो।" नवाब को यह हाल मालूम हुआ, तो 'इन्शा' ने फिर सिफारिश की, और 'मीर' साहब से आकर कहा—"अपने बाल-बच्चों पर रहम कीजिये और नवाब का भेजा हुआ तोहफा कबूल कर लीजिये।" मीर साहब ने जवाब दिया—"साहब, वह अपने मुल्क के बादशाह हैं, मैं अपने मुल्क का बादशाह हूँ। कोई नावाकिफ इस तरह से पेश आता, तो मुझे कोई शिकायत न होती, वह मुझसे वाकिफ, मेरे हाल से वाकिफ हैं; इस पर इतने दिनों के बाद एक दस रुपये के खिदमतगार के हाथ खिलअत भेजा। मुझे अपना फक्रो-फाका कबूल है, लेकिन यह ज़िल्लत नहीं उठायी जाती।" आखिर बड़ी मुश्किल से 'इन्शा' की सिफारिश पर, 'मीर' ने रुपये और खिलअत कबूल कर लिये।

उस ज़माने में अँग्रेज गवर्नर जनरल की भी लखनऊ में आमदो-रफ्त रहती थी। कई-बार 'मीर' को बुलवाया गया; लेकिन उन्होंने हमेशा अँग्रेज गवर्नर जनरल से मिलने से इंकार कर दिया। वजह यह ब्यान की—"अगर कोई मुझसे मिलता है, तो वह मेरी शायरी की वजह से, और वह साहब बहादुर की समझ में नहीं आयेगी। ज्यादा-से-ज्यादा यही करेंगे कि, कुछ इनाम देंगे; ऐसी मुलाकात से बेइज्ज़ती के सिवा और क्या हासिल हो सकता है।"

मोहम्मद हुसैन 'आज़ाद' के बयान किये हुये, इन वाक़िआत की तसदीक तारीख की किसी दूसरी किताब से नहीं होती; लेकिन 'मीर' साहब के मिज़ाज और शायरी का ढंग यह बताता है कि, ऐसे वाकिआत मुमकिन थे। उन्होंने बार-बार यह कहा है—

इस सबके पीछे 'मीर' का यह अडिग विश्वास था कि, शायरी और फन की दौलत अमर है!

मुनइम[1] ने बिना[2] जुल्मकी रख घर तो बनाया।
पर आप कोई रात ही मेहमान रहेगा॥
जाने का नहीं शोर सुख़न का मेरे हर्गिज़।
ता हश्र जहाँ में मेरा दीवान रहेगा॥

और यह वाकआ है कि, मीर के ज़माने के अमीरों और बादशाहों का हाल तारीख की किताबों में दफ्न है, लेकिन 'मीर' के दीवान और शायरी की शोहरत आम है। आज भी उनकी गज़लें दिलों में दर्द और मोहब्बत के चिराग जलाती हैं।

१—मालदार २—बुनियादी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूले बिसरे चित्र– लेखक : भगवतीचरण वर्मा; प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली–७; मूल्य : ११ रु.।

भारत के राजनीतिक-सांस्कृतिक नवजागरण के दौरान में मध्यम वर्ग का जो नैतिक नवनिर्माण हुआ, उसकी कहानी 'भूले विसरे चित्र' में एक परिवार की तीन पीढ़ियों के माध्यम से कही गयी है।

उत्तर प्रदेश के एक छोटे कस्बे के अर्जीनवीस मुंशी शिवलाल का एफ. ए. पास लड़का ज्वालाप्रसाद नायब तहसीलदार होकर होते-होते 'डिप्टी' बन जाता है। उसका बी. ए. पास लड़का गंगाप्रसाद डिप्टीगिरी से जीवन आरंभ कर 'जंट साहब' बनता है और कलक्टर की कुर्सी पर बैठता है। परन्तु उसका पुत्र नवल नमक-सत्याग्रह में बड़ें घर चला जाता है। पचास वर्षों में हुआ यह परिवर्तन, बाह्य भी है और आन्तरिक भी; परिस्थिति का भी, मनःस्थिति का भी; जीवन-क्रम का भी, जीवन–दृष्टि का भी। ज्वालाप्रसाद संसार में कुछ बनना चाहता था, पर सहज नैतिक मार्ग से विचलित हुए बिना; वह अपने पिता और चाचा की दुरभिसंधियों से जूझता है। वैयक्तिक जीवन में नैतिकता का विशेष ध्यान न रखनेवाला गंगाप्रसाद भी संसार में कुछ बनना चाहता है, पर स्वाभिमान को ठेस पहुँचाये बिना; असहयोग आन्दोलन का उग्र दमन करते हुए भी वह गांधीजी को गाली देनेवाले एक गोरे से उलझ पड़ता है। नवल को बनने की नहीं, कुछ करने की चाह है; वह आइ. सी. एस. के लिए इंग्लैण्ड जाने के बजाय बीमार पिता की सेवा-टहल करने भुवाली जाना, एल.-एल. बी. का इम्तहान देने के बजाय सत्याग्रह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में भाग लेना पसंद करता है। "बनने" की फिलासफी से, "करने" की फिलासफी पर आने के इस संक्रमण में बहुत-कुछ टूटता है, बहुत-कुछ नया बनता है। जो बन रहा है, वह अशिव-असुंदर नहीं, यह बात पुरानी पीढ़ी भी अनुभव करती है।

हर पात्र अपनी पीढ़ी की अच्छी-बुरी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधि है। पर, है अपनी प्रकृति और परिस्थिति के अनुसार चलने वाला सप्राण जीव; लेखक के हाथ का खिलौना नहीं। पर ऐसा भी नहीं कि, कोई पात्र कथा-सूत्र को तोड़कर भाग निकलता हो। लेखक ने पात्रों पर नियंत्रण भी रखा है, उन्हें अपनी राह चुनने की स्वतंत्रता भी दी है।

वर्ग-विशेष की इस कहानी में द्वंद्व और द्वेष भी है; पर वह है एक ही वर्ग की दो पीढ़ियों, दो जीवन-दृष्टियों का अन्तर्द्वन्द्व और तज्जनित द्वेष। और लेखक ने कहानी को खूँटी बना कर उस पर किसी वाद या सिद्धांत का झोला लटकाने का प्रयत्न नहीं किया है। वर्णन उसका लक्ष्य है, विवेचन नहीं। और यह वर्णन जिस भाषा में किया गया है, वह सहज-सरस है, निराडम्बर है। मुख्यतः कानपुर इलाहाबाद के आस-पास की कथा होने से, बैसवाड़ी का खूब प्रयोग है; पर वह आंचलिक उपन्यासों की तरह सर्वजनगम्यता को कम नहीं करता। कथा का क्षेत्र और उसकी वस्तु भी इतनी व्यापक है कि, भारत के किसी भी छोर में रहनेवाला हिन्दी-ज्ञाता पाठक उसमें तन्मयता अनुभव करेगा।

नवीनता की खोज में, पिछले दो दशकों से हिन्दी-उपन्यासकार बड़ी सँकरी गलियों में भटक गया था। 'भूले बिसरे चित्र' इसका प्रमाण है कि, प्रेमचन्द का हिन्दी आख्यान का जो सीधा पथ था, वह बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के लिए भी सर्वथा उपयोगी है। शायद इसी शैली के कारण पाठक को पुस्तक का आकार (७४९ पृष्ठ) अखरता नहीं।

हमें यह कहते संकोच नहीं कि, विषय-वस्तु और क्षेत्र की व्यापकता, प्रचारात्मकता से मुक्त आदर्शोन्मुखता एवं सर्वजनगम्यता के कारण 'भूले बिसरे चित्र' हिन्दी के प्रेमचन्द्र-परवर्ती उपन्यास-साहित्य के दो-तीन सर्वोत्तम उपन्यासों में से है। भगवतीबाबू को हमारी बधाइयाँ।

मंगला—लेखक : अनन्त गोपाल शेवड़े; प्रकाशक : नीलाभ प्रकाशन, ५ खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद—१; मूल्य: रु. ३.७५।

बहिःसौन्दर्य अपरिपूर्ण और परापेक्षी है; अन्तःसौन्दर्य ही स्वतःपूर्ण एवं परितोषदायक है और आत्मार्पण उसका उद्‌गम है; कला स्वानुभूत दुख से प्राण पाती है—इन चिरंतन सत्यों को गरीब अध्यापक की पुत्री मंगला और उसके अंधे गायक पति सदानन्द की इस कथा में दोहराया गया है। भाषा प्रांजल है, शैली प्रवाहमय।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन ब दिन बं दिन...

रेक्सोना साबुन

आप की जिल्द को निखारे चला जाता है

रेक्सोना में तेलों का एक विशेष मिश्रण, कैडिल, मिलाया जाता है जो जिल्द के स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए बहुत गुणकारी है। रेक्सोना के मलाईं जैसे मुलायम झाग को अच्छी तरह अपनी जिल्द पर मलिये और देखिये कि दिन ब दिन यह कैसे निखरती चली जाती है!

आप के सौंदर्य के लिए

...रेक्सोना

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, रेक्सोना प्रोप्राइटरी लि. ऑस्ट्रेलिया के लिए भारत में बनाया B.P. 158-80 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लि०

[१९४३ में रजिस्टर्ड]

प्रधान कार्यालय : २ इन्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूंजी.....८,००,००,०००

लागत पूंजी.....४,००,००,०००

चुकती पूंजी.....२,००,००,०००

सुरक्षित कोष.....१,४८,००,०००

शाखाएँ

भारत : सभी प्रमुख नगरों तथा औद्योगिक और व्यवसायिक प्रसिद्धि के शहरों में—

पाकिस्तान : चटगाँव तथा करांची

बर्मा : रंगून, मोलमिन, अक्याब, मांडले तथा बेसीन

मलाया : सिंगापुर, पिनांग, कौला—लामपुर तथा क्लांग

यू० के० : लन्दन

अन्य हांगकांग,
युरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया,
आदि सारे विश्व में एजेन्ट हैं।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्स्चेंज का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्व-व्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक-सम्बन्धी सेवा प्रदान करती हैं।

सुविधाजनक मूल्यों के रुपयों में ट्रेवेलर चेक दिए जाते हैं।

जी. डी. बिड़ला
चेयरमेन

एस. टी. सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

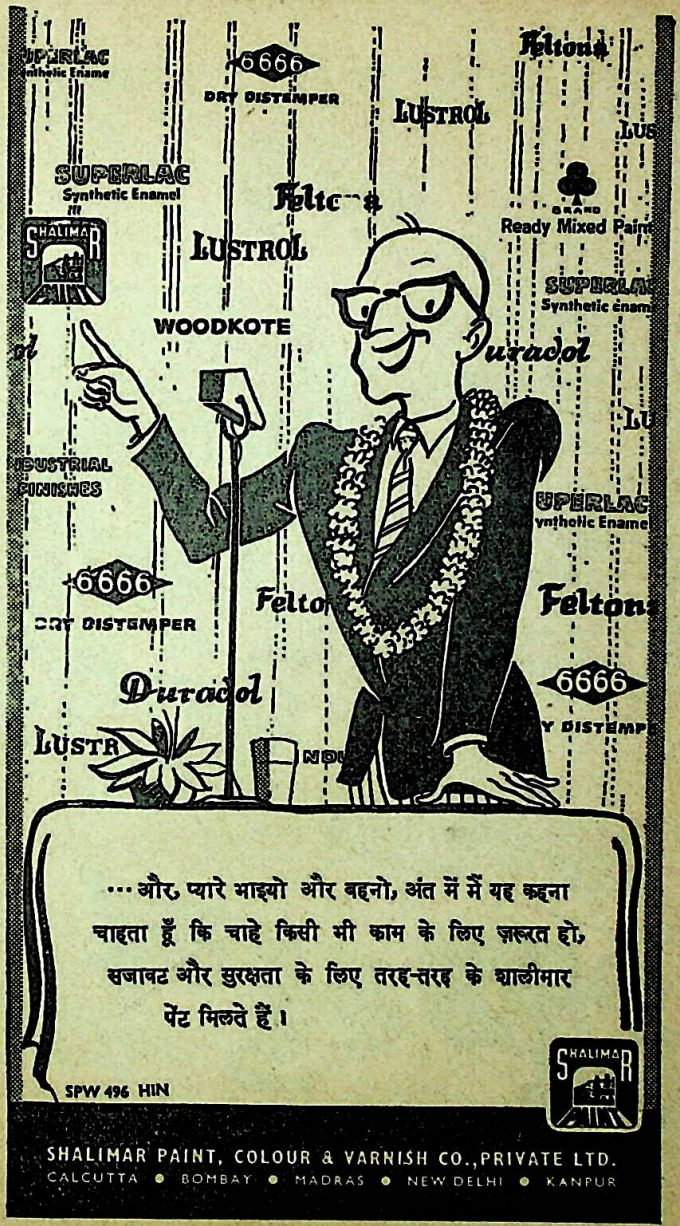

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

याद रखिए

कम क़ीमत ही सबकुछ नहीं है

जब आपको बनस्पति जैसी चीज़ खरीदनी हो, जिसपर आपको तन्दुरस्ती निर्भर है, तो कम क़ीमत पर न जाइए। कम क़ीमत का बनस्पति अच्छा न होने से बाद में आपको डाक्टर का बिल चुकाना पड़ता है, इसलिए शुरू में बचत की परवाह नहीं करनी चाहिए। कुछ पैसे अधिक देकर कुसुम ही खरीदना ठीक है क्योंकि कुसुम सर्वोत्कृष्ट बनस्पति है।

अधिक क़ीमत देकर भी आप कुसुम जैसा अच्छा बनस्पति नहीं खरीद सकते

खरीदिये! नया

कुसुम

इसमें विटामिन ए की पुष्टि और विटामिन डी भी है

उन्नित क़ीमत पर बहुत अच्छा बनस्पति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्गम सड़कों पर और विभिन्न प्रकार के वजनवाली वस्तुओं के लिए

मजबूत 'बेडफोर्ड' ट्रक अपने सुप्रसिद्ध नाम के अनुसार ही संसार की मजबूत से मजबूत ट्रकों में अग्रगण्य है। इसकी बनावट हर प्रकार के असाध्य कार्य के उपयुक्त है।

सुदृढ़ फ्रेम, मजबूत नए स्प्रिंग्स, 'विश्वस्त ब्रेक' और असाधारण बोझा उठाने की शक्ति इत्यादि इन सब गुणों के कारण बेडफोर्ड उत्तमता और मितव्ययिता से माल ढोने-ले जाने का काम करती है।

बेडफोर्ड डिजल व पेट्रोल

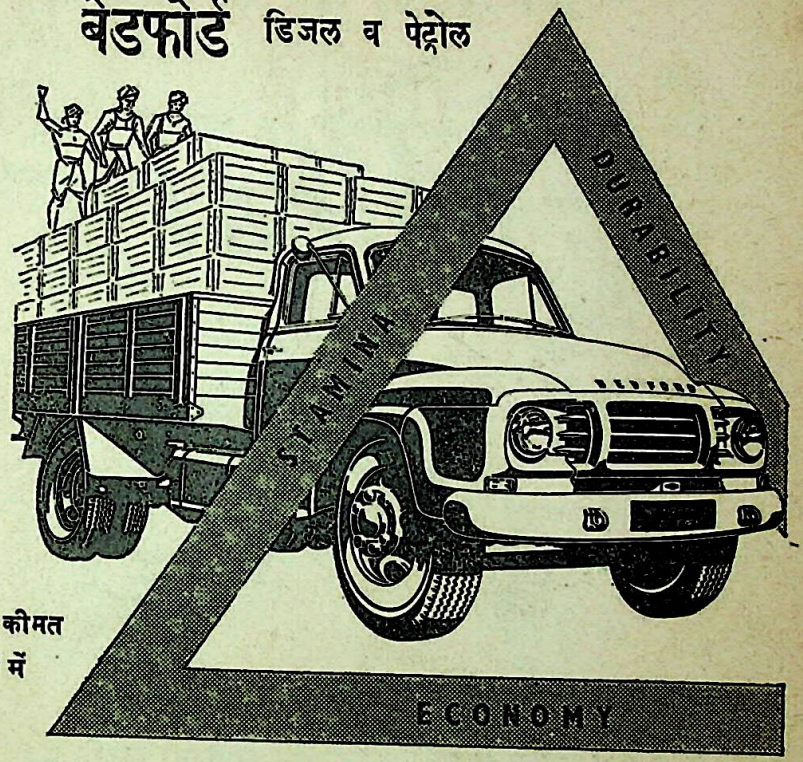

न्यूनतम कीमत
अपने वर्ग में

कीमतः— बेडफोर्ड १६७" डब्ल्यू. वी. डिजल चेसिस रु. २३८४२.
बेडफोर्ड १६७" डब्ल्यू. बी. पेट्रोलचेसिस रु. १७८८०. एक्स प्लांट उत्तर पारा (कलकत्ता टेक्स अतिरिक्त

हिन्दुस्तान मोटर्स कॉरपोरेशन लि. द्वारा 'हायर परचेज' की सुविधा जनक किश्तों पर भी 'बेडफोर्ड' बेची जाती है। विस्तृत ज्ञान के लिए अपने पास के विक्रेता से सम्पर्क साधिये।

बेडफोर्ड जंनरल मोटर्स का उत्पादन विश्व के सबसे बड़े वाहन निर्माता।

हिन्दुस्तान मोटर्स लि. ८, इन्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता—१

अधिकृत विक्रेता :—आगरा, अम्बाला केन्ट, अजमेर, अहमदाबाद, अहमदनगर, इलाहाबाद, बड़ौदा, बंगलौर, भोपाल, बेरहमपुर, बम्बई, बरेली, कलकत्ता, कटक, कोयम्बतूर, देहरादून, दुर्ग, दुमका, डिब्रूगढ़, धनबाद, गौहाटी, इम्फाल, इन्दौर, जयपुर, जबलपुर, जोधपुर, जलगाँव, जोरहाट, जमशेदपुर, जालन्धर सिटी, जम्मू, कानपुर, कोल्हापुर, लखनऊ, मुजफ्फरपुर, मद्रास, मदुराई, मंगलौर, मैरठ, नागपुर, नयी दिल्ली, नेपाल, पटना, पूना, पांडीचेरी, राजकोट, राँची, सम्बलपुर, शिलांग, सिकन्दराबाद, सिलचर, श्रीनगर सतना, तेजपुर, तनजौर, त्रिवेन्द्रम, वाराणसी केन्ट, विजयवाड़ा, विजयानगरम सिटी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्त्रियों के स्वास्थ्य और सुख के लिए

लोध्रा

केसरी कुटीरम
प्राइवेट लि.
रोयापेट्टा, मदास-१४

SISTA'S

"कोनारक" सिमेंट

सबल व उत्कृष्ट होने के कारण प्रसिद्ध है
और देश की बड़ी-बड़ी योजनाओं में बरती जाती है।

पूछताछ के लिए कृपया लिखिए—

उड़िशा सिमेंट लिमिटेड, राजगंगपुर, उड़िशा

प्रबन्ध अभिकर्ताः—

डालमिया एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप के बालों के लिए तैयार किया गया ख़ास साबुन,
द्वारा: **स्वस्तिक** ऑइल मिल्स लिमिटेड, बम्बई

जो लगभग शाम्पू की तरह है
पुरुषों, स्त्रियों और बालकों के काम का

बालों की खूबसूरती स्वस्तिक के शिकाकाई की सहायता से बढ़ाइए।

Shilpi S. O. N.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सपट

लोशन
या
मल्हम

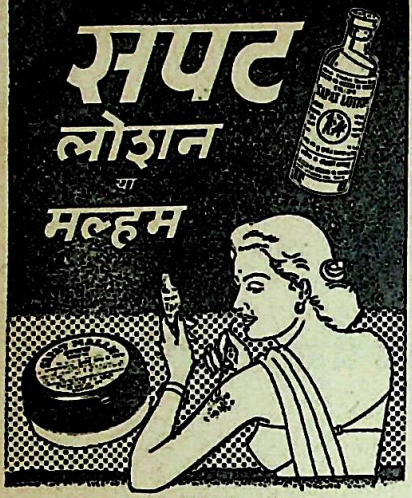

दाद, खाज,
खुजली पर

मेन्यु : सपट एण्ड कं. मुंबई–२

विश्वसनीय

कलमें
"सुलेखा"
और
"ब्रीफमॅन"

PENMEN'S INDUSTRIAL SERVICES
BOMBAY-47.

MPS

ब्रांकाइटिस
जल्द ही
ठीक हो जायगी

गले और सीने का
कष्ट मिटानेवाली
जग-प्रसिद्ध

पेप्स टिकियाँ लीजिए।

पेप्स की गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली गोलियाँ बहुत शीघ्रता से गले की तकलीफ़, ब्रांकाइटिस, खाँसी और सर्दी ठीक करने में सहायक होती हैं। पेप्स की गोलियाँ चूसिए और उनका करिश्मा देखिए—दर्द को मिटाने और कीटाणुओं का नाश करने में वे कितनी सहायता देती हैं।

FPY 56 HIN

पेप्स
गले और सीने का
कष्ट मिटानेवाली
टिकियाँ

सभी औषधि-
विक्रेताओं के यहाँ
मिलती हैं।

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट :
केम्प एन्ड कं. लि., पो. बा. ९३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

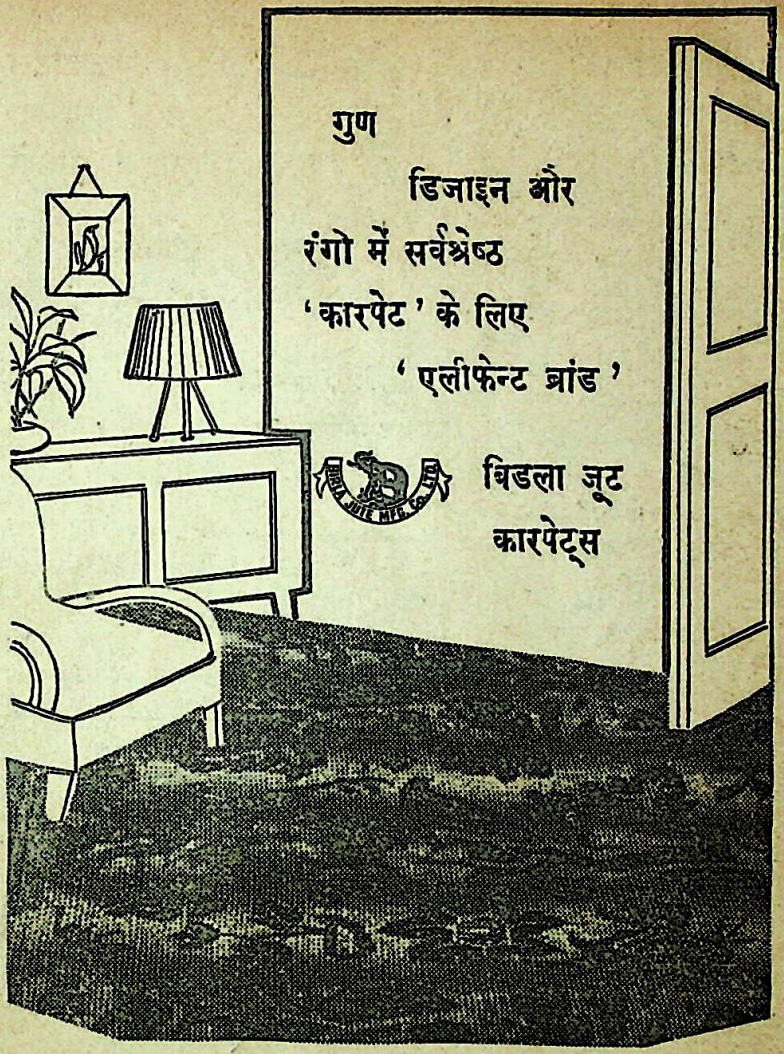

निर्माता

बिडला जूट मेन्यूफेक्चरिंग कंपनी लि०

८ इण्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

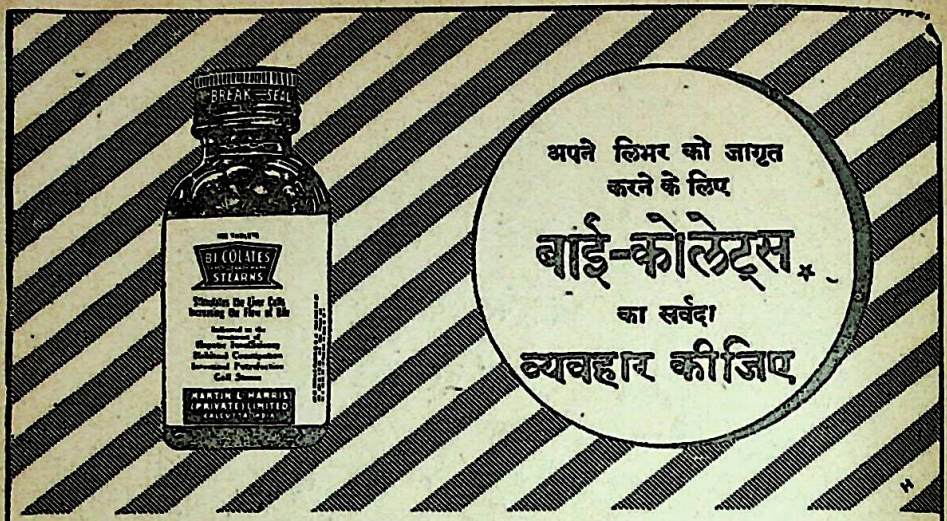

★ REGISTERED USERS OF TRADE MARK AND SOLE AGENTS

MARTIN & HARRIS (PRIVATE) LTD

CALCUTTA • BOMBAY • MADRAS • DELHI

दि बैंक आफ जयपुर लि.,

राजस्थान सरकार के ट्रेजरार्स

चेयरमैन : श्री जी. डी. सोमानी, एम. पी.

अधिकृत पूंजी रु. २,००,००,०००

जारी व विभाजित पूंजी रु. १,००,००,०००

चुकता पूंजी रु. ५०,००,०००

रिजर्व तथा अन्य निधियां रु. २५,००,०००

सम्पूर्ण बैंकिंग सेवाएँ–विदेशी विनिमय सहित

एस. एल. कोठारी, जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्माणकी प्रवृत्ति

बम्बई राज्य

बच्चे की नैसर्गिक प्रवृत्ति उसे निर्माण की दिशा में कार्यरत करने को बाध्य करती है। प्रगति की दिशा में जागरूक राष्ट्र में भी यही प्रवृत्ति कार्य करती है। आजकाल द्वितीय पंचवर्षीय योजना का कार्यान्वय हो रहा है और भारत अपनी विविध निर्माण योजनाओं के कार्यान्वय में व्यस्त है। योजना के अन्तर्गत अपने कार्यक्रमों को पूरा कर बम्बई राज्य भी राष्ट्रीय प्रगति में अपना योग दे रहा है।

बम्बई राज्य की द्वितीय पंचवर्षीय योजना के लिए प्रस्तावित कुल ३५०.२८ करोड़ रुपये की लागत में से प्रथम तीन वर्षों में १९५६ से १९५९ तक १६७.२६ करोड़ रुपये खर्च किये जा चुके हैं। १९५९–६० वर्ष के लिए ९०.१८ करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

प्रगति के पथ पर

इन प्रथम तीन वर्षों में खाद्योत्पादन में लगभग ३.३६ लाख टनों की वृद्धि हुई है। १९५०–५१ की स्थिति की तुलना में योजना के तीसरे वर्ष के अन्त में लगभग २०,००० अधिक प्राथमिक शालाओं का निर्माण किया गया है, लगभग १,००० माध्यमिक शालाओं की वृद्धि हुई है और उच्च शिक्षा की संस्थाओं की संख्या लगभग दुगुनी हो गई है। ३,७२९ मील सड़कों का निर्माण किया गया है: १०४ नये पुल और कॉजवे (पुलियाँ) तैयार किये गये हैं; औद्योगिक कामगारों के लिए १३,१९२ मकान तैयार किये गये हैं: (१९५९–६० में ७,००० और मकान तैयार होना अपेक्षित है)। अल्प आय वर्गों के लिए ४,१६० मकान बनवाये गये हैं।

योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत सिंचाई, बिजली, औद्योगिक तथा अन्य योजनाएं भी तीव्र गति से प्रगति कर रही हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

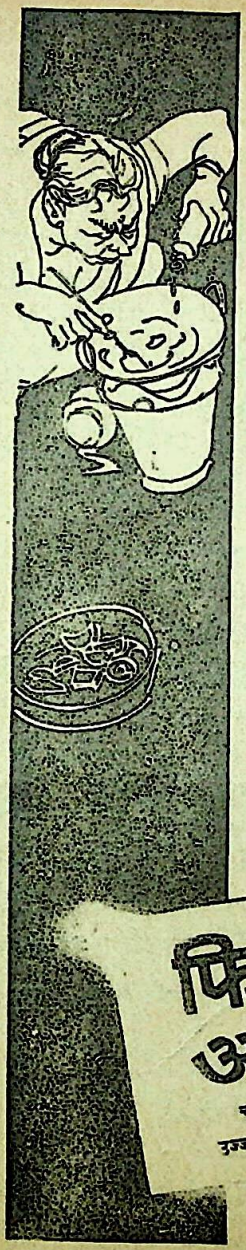

प्रकाश के विषय
में कंजूसी
न करें...

फिलिप्स
अर्जेण्टा
लगाकर बुद्धिमत्ता
का परिचय
दीजिए

जिस रसोईघर में प्रकाश
का उचित प्रबन्ध नहीं वहाँ यह
भी नहीं पता लगता कि पक क्या
रहा है। अपने रसोईघर
में फिलिप्स 'अर्जेण्टा'
लगाइए और सुस्वादु खाने
बनाइये और खाइये।

अब १५० वाट
में भी प्राप्य।

फिलिप्स
अर्जेण्टा
चकाचौंध-रहित
उज्ज्वल प्रकाश के लिए

PHILIPS

फिलिप्स इण्डिया
लिमिटेड

J629

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थायी महत्व की पुस्तकें

	मूल्य		डाक खर्च
रूसी हिन्दी शब्द कोश (संकलक-वीर राजेन्द्र ऋषि)	रु. ३५.००		—
भारत के पक्षी (लेखक-राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह)	१२.५०		१.५०
सम्पूर्ण गांधी वाङमय खण्ड १ व २			
कपड़े की जिल्द	५.५०	प्रत्येक	०.५०
कागज की जिल्द	३.००	प्रत्येक	०.८५
राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के भाषण	३.५०		०.८५
स्वाधीनता और उसके बाद (जवाहरलाल नेहरू के भाषण)	५.००		१.३५
भारत की एकता का निर्माण (सरदार पटेल के भाषण)	५.००		१.००
भारतीय कविता १९५३	५.००		१.२०
द्वितीय पंचवर्षीय योजना	४.५०		०.८५
भारत १९५९	३.५०		०.९५
भारत के बौद्ध तीर्थ	२.००		०.३०
जनता का अपना कार्यक्रम	२.००		०.४०
भारतीय वास्तुकला के ५००० वर्ष	२.००		०.२५
हमारे पक्षी	२.००		०.४०

(रजिस्ट्रेशन व्यय अतिरिक्त)

२५ रुपये या अधिक की पुस्तकों पर डाक खर्च नहीं लिया जाता है।

पब्लिकेशन्स डिवीजन

पोष्ट बाक्स नं. २०११, दिल्ली–८

शाखायें :—१, गार्स्टिन प्लेस, कलकत्ता—

२, प्रास्पैक्ट चैम्बर्स, दादा भाई नौरोजी रोड, बम्बई–१

DA–59/147

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चे इसे पसन्द करते हैं...

और साथ में इसे भी...

जीपला
आलामृत
और
ग्राइप वाटर

बच्चों को स्वस्थ रखता है.

जीपला बम्बई १२

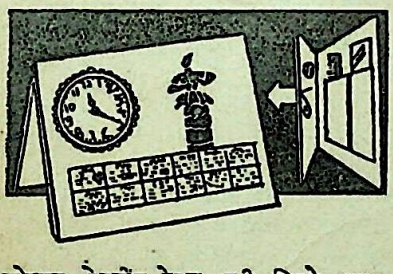

ओसका ट्रेवलींग टेबल घड़ी जिसके साथ मनीपर्स, दर्पण, कंघी और कैलंडर लगा हुआ है। यह घड़ी सही समय बताती है। खिसेमें आसानी से रख सकते हैं। घर या आफीस में टेबल पर रख सकते हैं।

कींमत २० रू. रेडियम स्पेशल २५ रू.
पेकिंग पोस्टेज २ रू. ज्यादा

ओसका वॉच कंपनी
पो. बॉ. नं. ४११८ बम्बई-७.

यह पुस्तक मंगवाइये

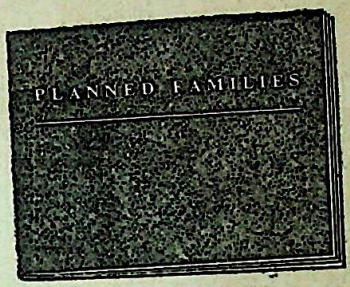

आधुनिक परिवार-नियोजन के ज्ञान की कमी के कारण पति पत्नि को कितनी ही चिन्ताओं और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस पुस्तक में उन सब प्रश्नों के बेझिझक उत्तर दिये गए हैं जिन्हें हम हल नहीं कर पाते। 'प्लान्ड फेमीलीज' नामक यह पुस्तक बड़े स्पष्ट तरीके से बिना किसी संकोच के लिखी गई है। विवाहित जीवन की साधारण से साधारण रात-दिन आ खड़ी होनेवाली हर समस्या का समाधान इसमें मौजूद है। हर विवाहित दम्पति को अपने पास इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। आप अपनी प्रति शीघ्र मंगवा लें, और— बिल्कुल मुफ्त ही

आज ही इस कूपन को भरकर भेज दीजिए।

L.D. SEYMOUR & CO. (INDIA) PRIVATE LTD.,
Dept—I 8
Thoburn House, Apollo Bunder, Bombay-1.
Agents for
"DUREX" and "DURAPAC" contraceptives.
Please send me under PLAIN COVER a free copy of "Planned Families". I am an adult.
NAME .....
ADDRESS .....
.....
.....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या हम आप को स्मरण दिला सकते हैं कि भारतीय रेलें राष्ट्र की ही संपत्ति हैं

कृपया अपनी जूठन के टुकड़े एवं फलों के छिलके प्लेटफार्म या डिब्बों में न फेंकिये। इस प्रकार रेलों को अपनी सीमायें स्वच्छ रखने में सहायता दीजिये।

कृपया असंयमित ढंग से न थूकिये। स्टेशन प्लेटफार्मों पर थूकदान रक्खे हुये हैं। आप उनका उपयोग कर सकते हैं।

कृपया जलती हुई सिगरेटों के टुकड़े गाड़ी के डिब्बों में न फेंकिये। उनसे आग लग सकती है।

जो लोग रेलवे सामान को क्षति पहुंचाते या चुराते हैं, वे राष्ट्र की प्रगति में बाधक हैं। कृपया राष्ट्र की संपत्ति की रक्षा करने एवं सेवा में सुधार लाने के कार्य में रेलों की सहायता कीजिये।

पश्चिम एवं मध्य रेलवे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

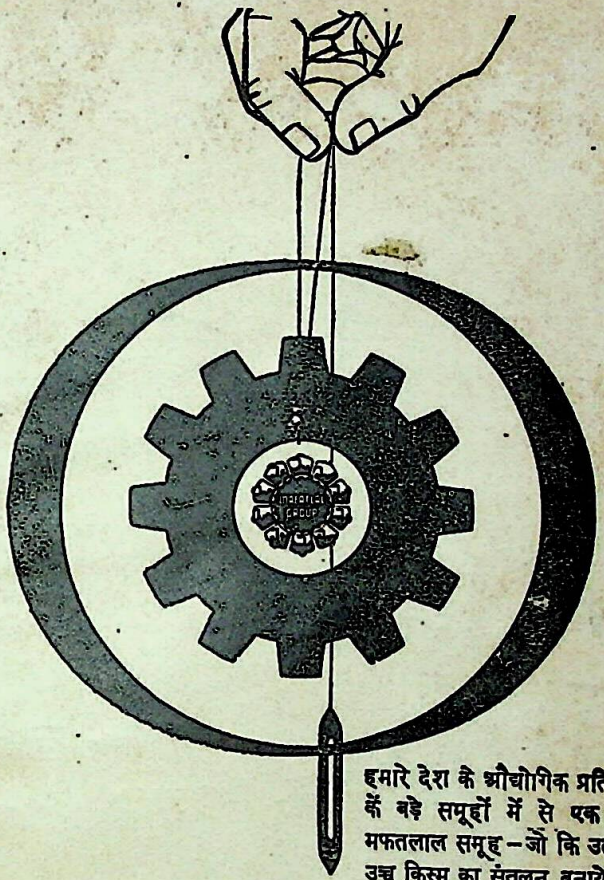

हमारे देश के औद्योगिक प्रतिष्ठानों में बड़े समूहों में से एक है मफतलाल समूह—जो कि उत्पादन में उच्च किस्म का संतुलन बनाये हुए है। इस समूह से संबंधित अनेक कपड़े की मिलें जो कपड़ा बनाती हैं वह डिज़ाइन बनावट व रूपरंग में बेजोड़ होता है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह समूह प्रत्यक्ष रूप में हजारों और अप्रत्यक्ष रूप में लाखों लोगों की रोजी का साधन है। कई लाख लोग इस समूह से लाभान्वित हैं।

मफतलाल मिलों का समूह प्रगति के साथ चलनेवाला

शॉरॉक, अहमदाबाद। न्यू शॉरॉक, नड़ियाड़। स्टेण्डर्ड, बम्बई। न्यू चाइना, बम्बई। सफ़ल, बम्बई। न्यू यूनियन, बम्बई। सूरत कॉटन, सूरत व देवास। मफतलाल फाइन, नवसारी। गगलभाई जूट, कलकत्ता।

दूसरे उद्योग: **कई • शक्कर • रंग** मफतलाल हाउस, बैकबे रिक्लेमेशन, बंबई.

वार्षिक मूल्य १०) मूल्य १)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B 6248

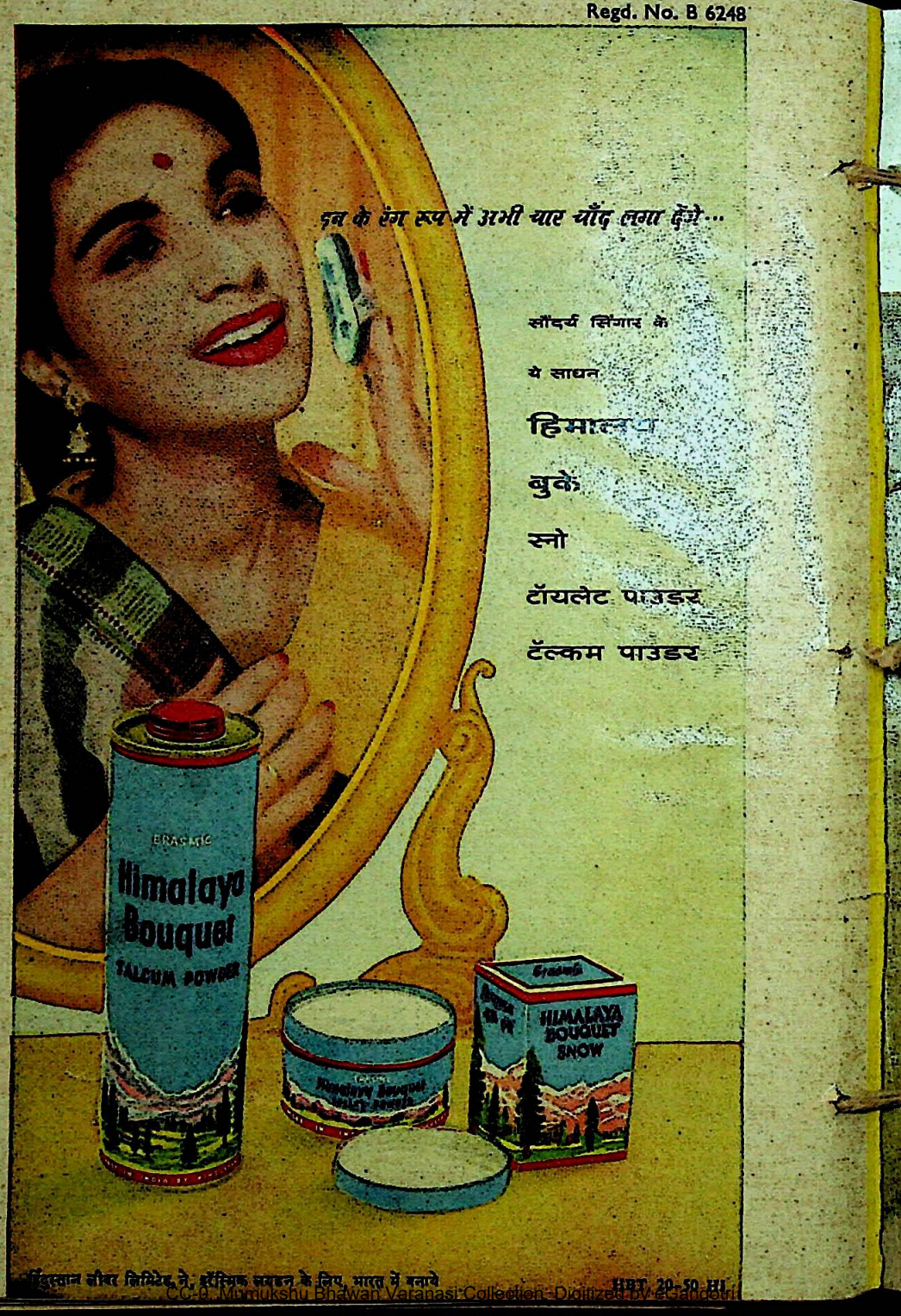
दन के रंग रूप में अभी चार चाँद लगा देंगे...
सौंदर्य सिंगार के
ये साधन
हिमालय
बुके
स्नो
टॉयलेट पाउडर
टॅल्कम पाउडर

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, इरॅस्मिक लवडन के लिए, भारत में बनाये
HBT 20-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

अक्टूबर १९५९

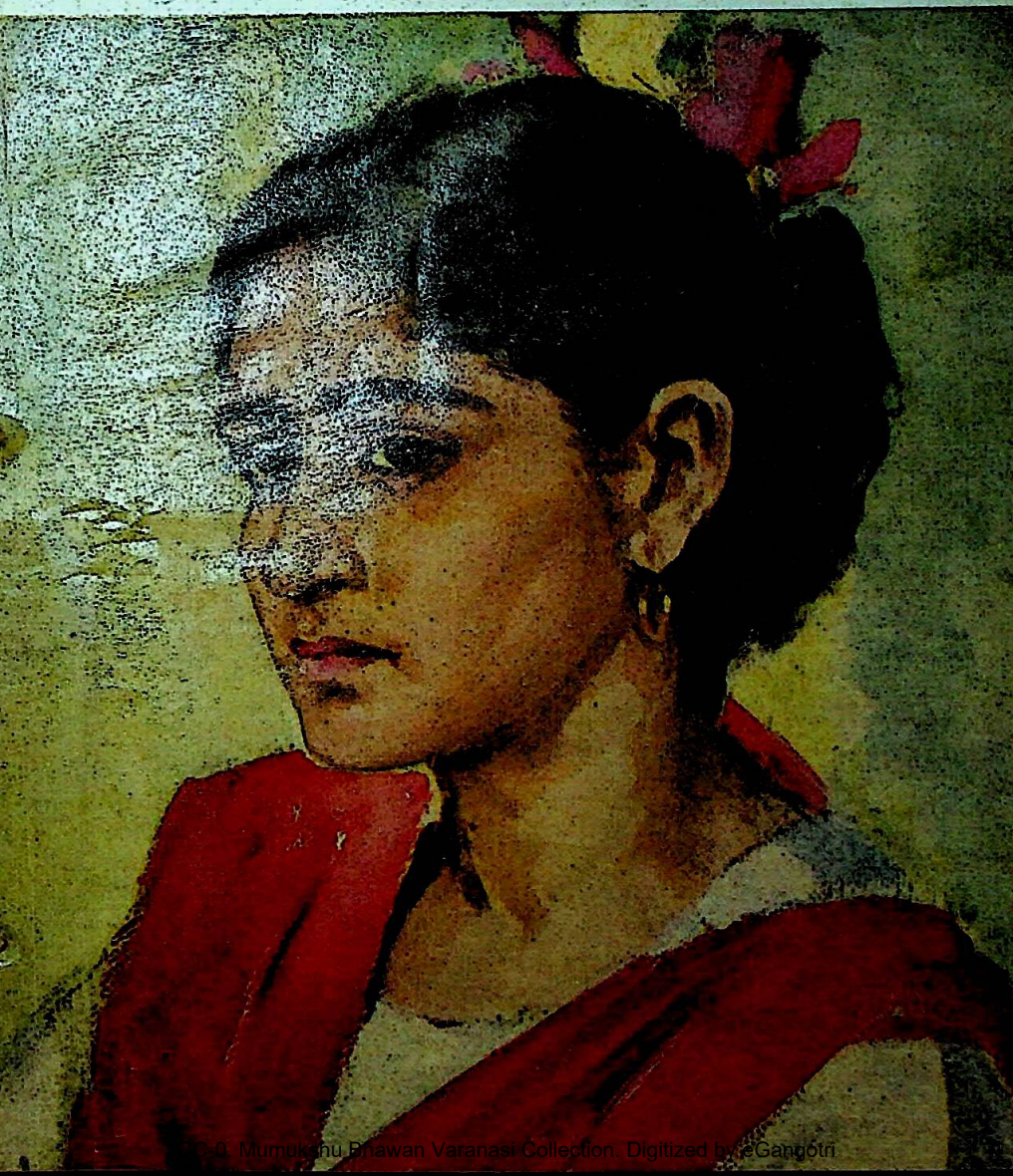

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

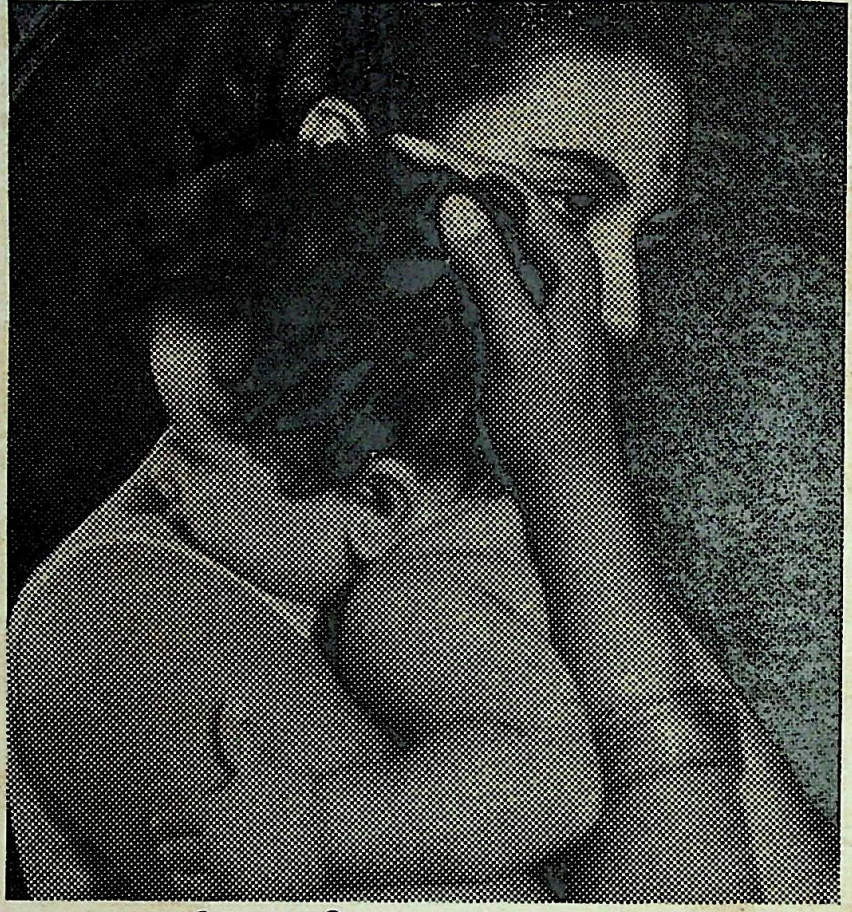

पालन पोषण के लिए मां की ममता और ऑस्टरमिल्क

मां की छाती से लगा मुन्ना कैसा प्रसन्न है, कैसा संतुष्ट! इस लिए कि मां उस का पालन पोषण ऑस्टरमिल्क से करती हैं जो कि शुद्ध दूध का आहार है। इस में वे सब गुण हैं जो मां के दूध में होते हैं। मुन्ने के लिए ऑस्टरमिल्क बनाते समय, आप की ममता सदा हमारे ध्यान में रहती है।

मुफ्त! ऑस्टरमिल्क "पुस्तिका" (अंग्रेजी में)...बच्चों की देख भाल के बारे में सभी आधुनिक सूचनायें! डाक खर्च के लिए, ५० नये पैसे, इस पते पर भेजिये "ऑस्टरमिल्क, P. O. Box No. 202, बम्बई १।"

मां के दूध के समान

फ़ैरेक्स, मुन्ने का पहला ठोस आहार! जब मुन्ना चार पांच महीने का हो जाये तो उसे फ़ैरेक्स दीजिये जो अनाज का एक पौष्टिक मिश्रण है।

OS. 1-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

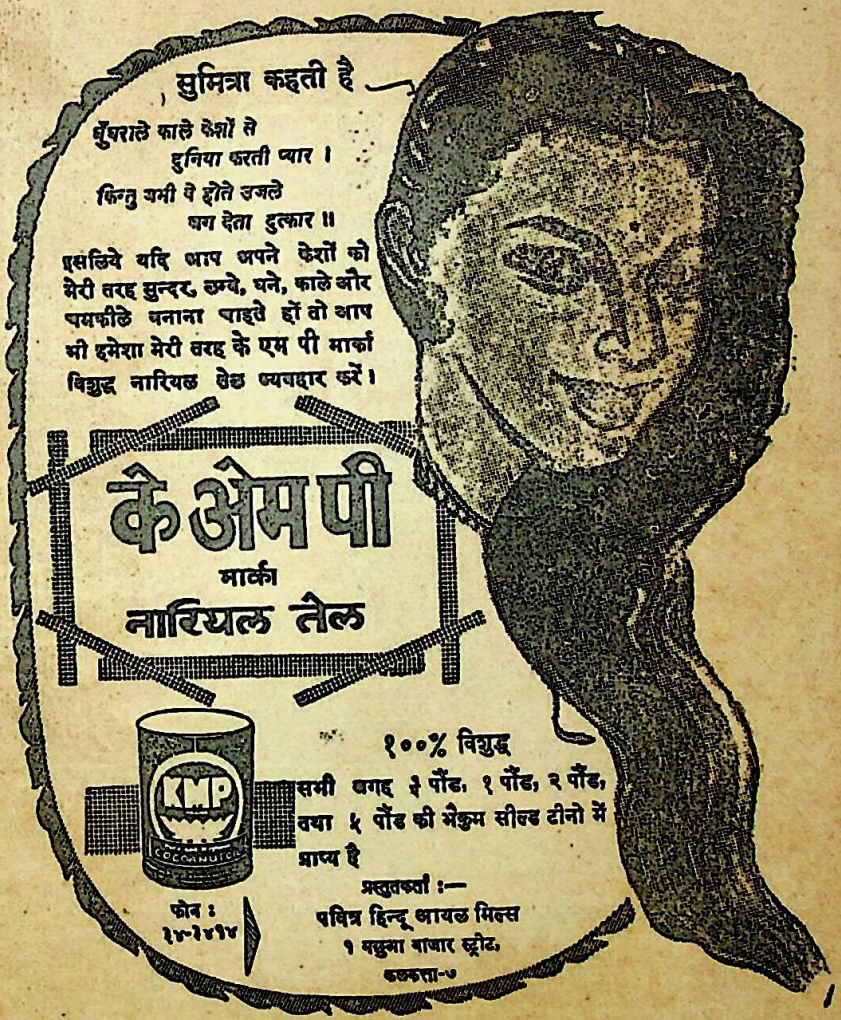

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

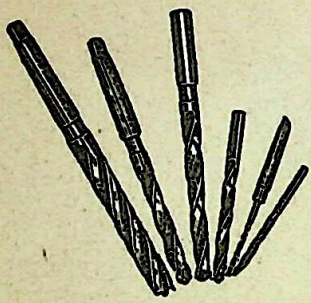

ड्रिल

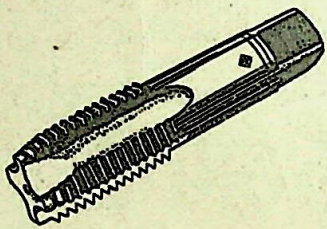

टैप

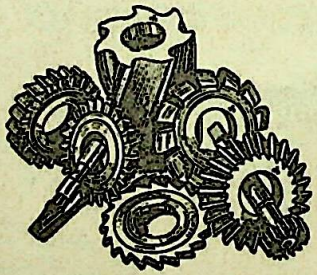

कटर

दी इंडियन ट्रूल
मैन्यूफैक्चरर्स लि.

१०१, शीव रोड, बम्बई २२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

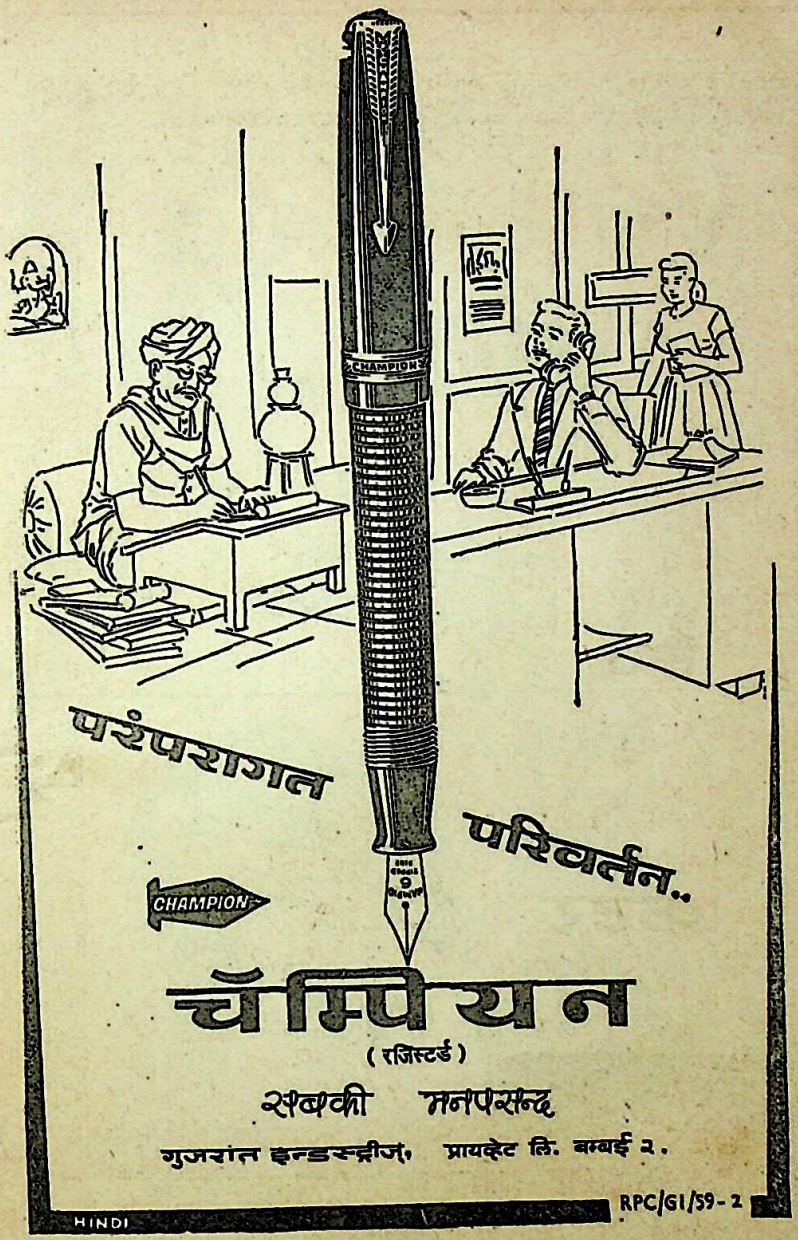

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके खरीदनेलायक बढ़िया सायकिल

रैले

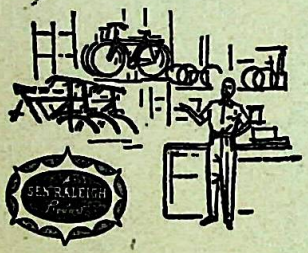

दुनिया की सबसे मशहूर सायकिल

SRC-53 HIN

साण्डू

ओरिजिनल

ब्राह्मी तेल

दत्तात्रेय कृष्ण साण्डू ब्रदर्स चेम्बूर प्रायव्हेट लि.

फॅक्टरी और हेड ऑफिस:— चेम्बूर-बम्बई-३८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गौरवपूर्ण घोषणा

जैमिनी का

महान सामाजिक चित्र

पहचान

श्रेष्ठ कलाकारों द्वारा अभिनीत...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

PHILIPS

PHILETTA DE LUXE

Larger modern restyled cabinet, 6 Noval valves AC/DC, all wave coverage, three wave bands, two position tone control, pickup connection. Fully tropic proof.

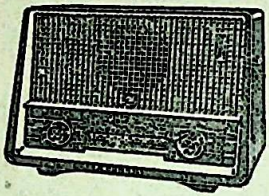

PHILIPS
novosonic
RADIO

A NEW WORLD IN SOUND

B3CA77U
PRICE RS. 315/-
(exclusive of all taxes)

PHILIPS

AUTHORISED PHILIPS RADIO DEALER

PSPD 19

PHILIPS
RADIO

Dealers :

Tel : 28208

MODERN RADIO STORES,
Prarthana Samaj, BOMBAY-4.

Tel : 27958

JAMNADAS RUTONSI,
14, New Queens Road, BOMBAY-4.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पतिसेवा की कसौटी!

दिनभर की मेहनत और दौड़धूप के बाद आप के पति थक गये होंगे–उनकी थकान उतारने के लिये उन्हें शाम की चाय के साथ कम से कम छ पार्ले के कुरकुरे ग्लुको बिस्कुट जरुर दीजिये–वे आप को बेहद सराहेंगे।

हर पत्नी अपने पति की प्रसन्नता के लिये शाम की चाय के साथ उसे कुछ न कुछ स्वादिष्ट चीज खाने को देती है– और पार्ले के कुरकुरे ग्लुको बिस्कुट ऐसे वक्त के लिये आदर्श होते हैं। वे आप के पति को प्रसन्न रक्खेंगे तथा उन्हें ताजगी प्रदान करेंगे.

याद रखिये: पार्ले के कम से कम छ कुरकुरे और पौष्टिक ग्लुको बिस्कुट उन्हें शाम के नाश्ते पर देना न भूलिये।

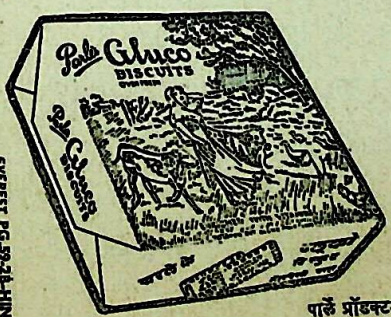

EVEREST PG-59-21-HIN

पार्ले के
ग्लुको
बिस्कुट

विटामिनों से भरपूर

पार्ले प्रॉडक्ट्स मैन्युफैक्चरींग कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई–२४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

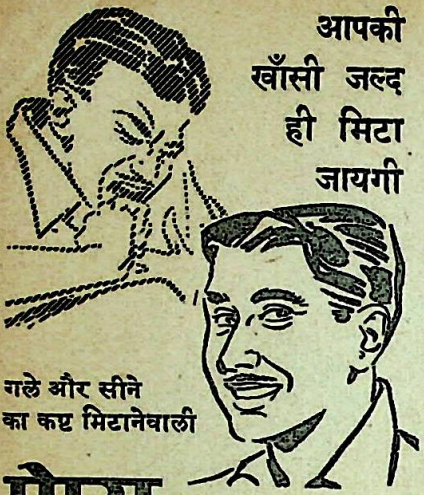

आपकी
खाँसी जल्द
ही मिटा
जायगी

गले और सीने
का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स टिकियाँ लीजिए

पेप्स टिकियां चूसिए और फिर अनुभव कीजिये कि इनकी गुणकारी भाप दर्द मिटाने में किस खूबी से कारगर है और गले का दर्द, ब्रोंकाइटिस, खाँसी या सर्दी–ज़ुकाम पैदा करनेवाले रोगाणुओंका कितनी जल्दी नाश करती है। पेप्स फौरन आराम देकर इन शिकायतों को शीघ्र दूर करती हैं।

पेप्स में
कोई नुकसानदेह
दवा नहीं
ये बच्चों को बेखटके दी
जा सकती हैं
ब्रांकाइटिस,
गले का दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती हैं
सभी औषधि-विक्रेताओं
के यहाँ प्राप्य

FPY 54 HIN

सी. ई. फुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट :
केम्प एण्ड कं. लि., पो. बा. ९३७

यह पुस्तक मंगवाइ ये

आधुनिक परिवार-नियोजन के ज्ञान की कमी के कारण पति पत्नि को कितनी ही चिन्ताओं और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस पुस्तक में उन सब प्रश्नों के बेझिझक उत्तर दिये गए हैं जिन्हें हम हल नहीं कर पाते। 'प्लान्ड फेमीलीज' नामक यह पुस्तक बड़े स्पष्ट तरीके से विना किसी संकोच के लिखी गई है। विवाहित जीवन की साधारण से साधारण रात-दिन आ खड़ी होनेवाली हर समस्या का समाधान इसमें मौजूद है। हर विवाहित दम्पति को अपने पास इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। आप अपनी प्रति शीघ्र मंगवा लें, और– बिल्कुल मुफ्त ही।

आज ही इस कूपन को भरकर भेज दीजिए।

L.D. SEYMOUR & CO. (INDIA) PRIVATE LTD.,
Dept –: 8
Thoburn House, Apollo Bunder, Bombay-1.
Agents for
"DUREX" and "DURAPAC" contraceptives.
Please send me under PLAIN COVER a free copy of "Planned Families". I am an adult.
NAME .....
ADDRESS .....
.....
.....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोडा-सा *टिनोपाल

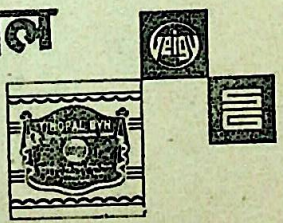

सफेद कपडों को सबसे

अधिक सफ़ेद बनाता है

* 'टिनोपाल' जे. आर. गायगी, एस. ए., बाल, स्विटजरलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है

निर्माता: सुहृद गायगी प्राइवेट लिमिटेड, वडी वाडी, बडौदा — एकमात्र वितरक: सुहृद गायगी ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड, पो. आ. बॉक्स ९६५, बम्बई १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कोनारक" सिमेंट

सबल व उत्कृष्ट होने के कारण प्रसिद्ध है
और देश की बड़ी-बड़ी योजनाओं में बरती जाती है।

पूछताछ के लिए कृपया लिखिए–

उड़िशा सिमेंट लिमिटेड राजगंगपुर, उड़िशा

प्रबन्ध अभिकर्ताः–

डालमिया एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड

दि बैंक आफ जयपुर लि.,

राजस्थान सरकार के ट्रेजरार्स

चेयरमैन : श्री जी. डी. सोमानी, एम. पी.

अधिकृत पूंजी रु. २,००,००,०००

जारी व विभाजित पूंजी रु. १,००,००,०००

चुकता पूंजी रु. ५०,००,०००

रिजर्व तथा अन्य निधियां रु. २५,००,०००

सम्पूर्ण बैंकिंग सेवाएँ–विदेशी विनिमय सहित

एस. एल. कोठारी, जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घरों में

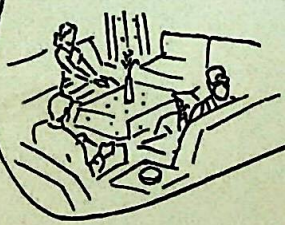

फर्श पर लिनोलियम बिछाइये।
इसके गुण और सुविधाएं :

- विभिन्न रंगों के अनेक डिजायन
- लचकीलेपन के कारण आवाज-रोधक
- कम खर्चीला और टिकाऊ
- स्वच्छ और सफाई में सुगम

लिनोलियम

आधुनिक फर्श का बिछावन

बिछाने की सेवा
विशेषरूप से प्राप्य

इण्डिया लिनोलियम्स लि०, ८, इण्डिया एक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता-१

स्टाकिस्ट और वितरक सर्वत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लि०

[१९४३ में रजिस्टर्ड]

प्रधान कार्यालय : २ इन्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूंजी.....८,००,००,०००
लागत पूंजी.....४,००,००,०००
चुकती पूंजी.....२,००,००,०००
सुरक्षित कोष.....१,४८,००,०००

शाखाएँ

भारत : सभी प्रमुख नगरों तथा औद्योगिक और व्यवसायिक प्रसिद्धि के शहरों में–
पाकिस्तान : चटगाँव तथा करांची
बर्मा : रंगून, मोलमिन, अक्याब, मांडले तथा बेसीन
मलाया : सिंगापुर, पिनांग, कौला–लामपुर तथा क्लांग
यू० के० : लन्दन
अन्य हांगकांग,
युरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया, आदि सारे विश्व में एजेन्ट हैं।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्स्चेंज का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्व-व्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक-सम्बन्धी सेवा प्रदान करती हैं।

सुविधाजनक मूल्यों के रुपयों में ट्रेवेलर चेक दिए जाते हैं।

जी. डी. बिड़ला
चेयरमेन

एस. टी. सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

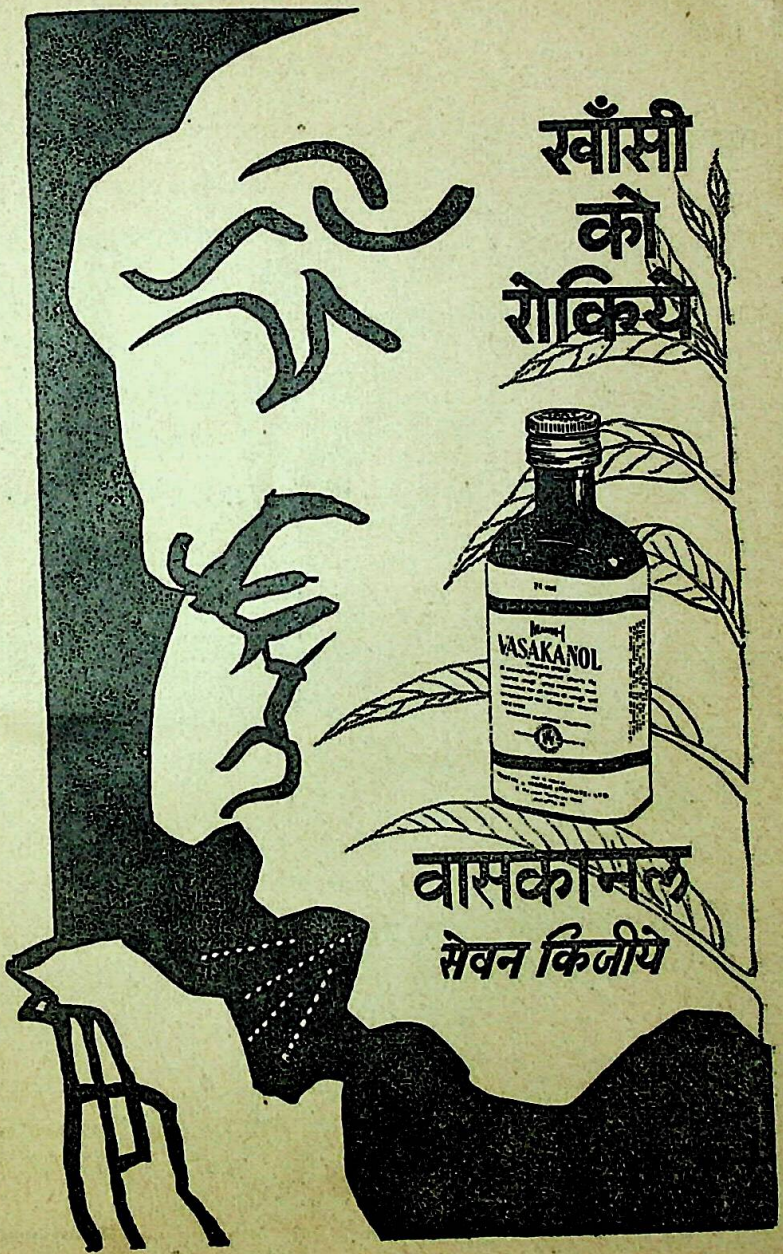

१९५९ १३ हिन्दी डाइ स्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अगर डनलपिलो पर
सोने का माने है कि माँ
हमारे खाने के समय में भी
सोयी ही रहे - तब तो यही
अच्छा होगा कि माँ को
किसी मामूली गद्दे पर
सुलाया जाय - डनलपिलो पर
हरगिज़ नहीं।
पर मुझे भरोसा नहीं होता
कि माँ डनलपिलो के बिना रह
सकती है जैसे मैं
खाने बिना नहीं रह सकता।"

आ जा री निंदिया
तू आ जा....
मेरी माता को
आ के सुला जा....

डनलपिलो

घर में सुख
व आराम
लाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

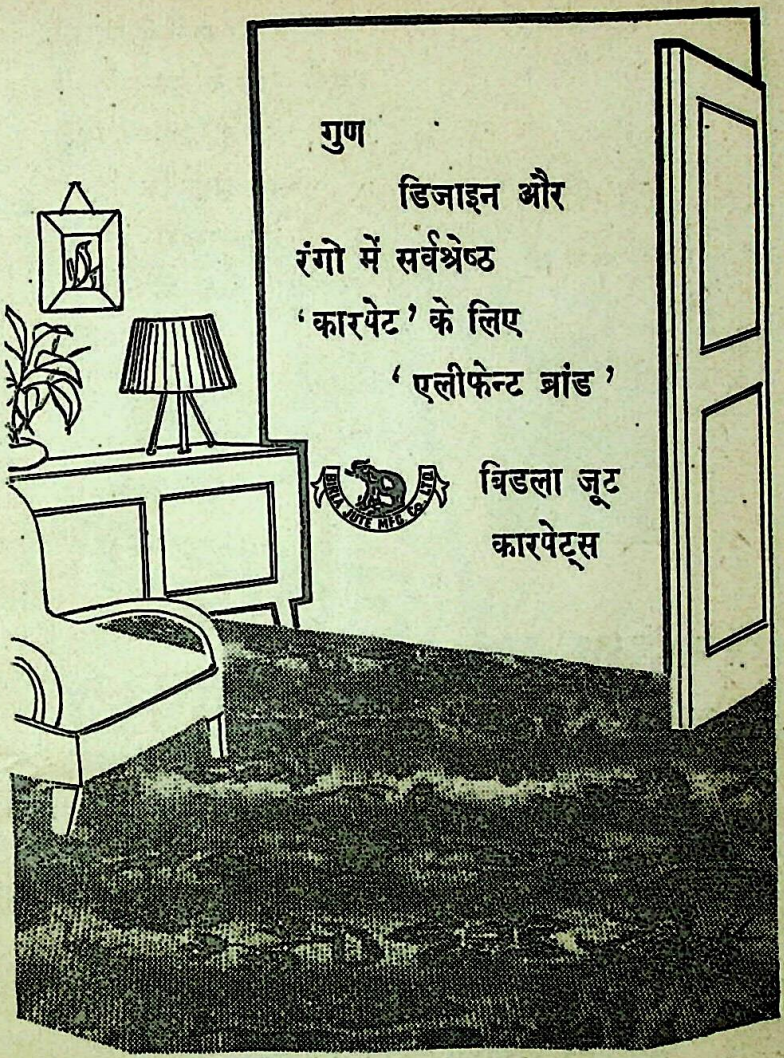

निर्माता

बिडला जूट मेन्यूफेक्चरिंग कंपनी लि०

८ इण्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

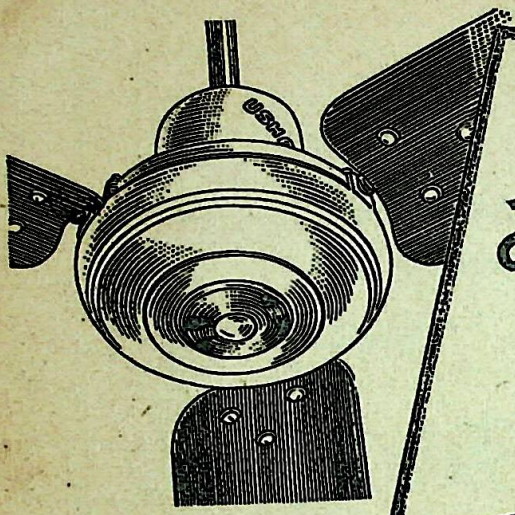

मौके का लाभ उठाइये

अभी खरीदकर
पैसा बचाइये

- ऐसा स्वर्ण सुयोग पहले कभी नहीं आया ।
- १ली सितम्बर से ३१ दिसम्बर १९५९ तक इस सुवर्ण सुयोग से लाभ उठाइये ।
- जितनी जल्दी आप खरीदेंगे किस्त की दर उतनी ही कम होगी

पूरी जानकारी के लिए अपने निकटवर्त्ती उषा के विक्रेता से पूछ-ताछ कीजिए

उषा खरीदिए और निश्चिन्त रहिए

जय इंजीनियरिङ्ग वर्क्स लिमिटेड,
कलकत्ता – ३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अक्तूबर

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५९

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

सम्पादक
रतनलाल जोशी
शिल्प
गोपालकृष्ण भोबे

लेख-सूची

१	अद्वैत	'रमणानुभूति' से	१९
२	तीन श्रीफल	राजगोपालाचारी	२०
३	पूर्णोत्तम (कविता)	सुमित्रानंदन पंत	२४
४	मैं भगवान् से भी श्रेष्ठ हूँ	विनोबा भावे	२५
५	मनीषी चंद्रशेखर वेंकट रामन्	चंद्रहास	२६
६	प्रेरणा—पुष्प	चंद्रशेखर रामन्	२७
७	पुस्तकालय : आत्मा का उधान	डा० जदुनाथ सरकार	२८
८	प्रियदर्शी की घोषणा (कविता)	सियारामशरण गुप्त	३२
९	अब – अब = अब	मोहन अनन्य	३३
१०	अब	स्नीडर	३४
११	काल : जीवन	डा० तहा हुसैन	३५
१२	जब मोतीलाल.....	महावीर त्यागी	३७
१३	रेलें : सरकार	डा० नगेंद्रनाथ	३८
१४	राजा थे	इब्राहीम आदिल	४०
१५	साहस माने सफलता	जहूर बख्श	४२
१६	जीवन	श्री माताजी	४३
१७	मै भी हो गयी लाल	डा० सुकांत वार्ष्णेय	४५
१८	पत्थर की लकीरें	.....	४८
१९	अरुणोदय की जय हो	डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी	४९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२० काम्य	रवींद्रनाथ	५०
२१ चंद्रदूत	बोरोवन्स्की	५३
२२ चाँद	पाल राब्सन	५४
२३ अनातोले फ्रांस	'पुस्तक-कीट'	५६
२४ मुस्कान : सुख की खान	... ...	५८
२५ आनंदमठ	चारुलाल मुखर्जी	६१
२६ चैतन्य	महिम्यांग	६२
२७ बुद्धि तो ब्रह्मा की बेटी ठहरी	... ...	६५
२८ अक्ल और दिल	महमूद तैमूर	६६
२९ एक छींक हाँ भाई...	संजीवनी कुसुमाकर	६९
३० छींक मौसी	डा० सुकांत बरुआ	७०
३१ सिकंदर की कुटिल व्यूह-रचना	मेजर वंसीलाल	७२
३२ जीन हमारे जीवन की प्रथम चिनगारी	डा. फ्रेडरिक हौसर	७५
३३ इंद्रजाल का आचार्य	अच्युत कृष्ण	७९
३४ नज़र	रेंडाल	८०
३५ न देखा, न सुना	'संग्रह'	८२
३६ दृष्टि	प्रसन्नकुमार	८३
३७ 'बटाटे-चाल' का सांस्कृतिक सप्ताह	पी० एल० देशपांडे	८५
३८ कड़वे-मीठे जीवन-घूंट	... ...	९३
३९ प्रायश्चित्त	योगानंद	९४
४० मैं कैसे धोऊँ कपड़े (बँगला-कहानी)	विमल कार	९७
४१ सुख तेरे कितने रूप (उर्दू—कहानी)	हमीद काश्मीरी	१०५
४२ गंगा के मोड़ (हिन्दी-कहानी)	श्रीगोपाल नेवटिया	११५
४३ मौत के कितने पास...(पुस्तक-संक्षेप)	जियाउर्रशीद	१२५
४४ स्वाध्याय-समीक्षा	राजहंस	१५१

'एक पोट्रेट'

[चित्र : वी. एस. गुर्जर]

— रेखाचित्र —

वी० एन्० ओके, सुरेश मसूरकर, रेंगार, केपट, उडरो क्रम्बो

श्री रतनलाल जोशी-द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, १४१ तारदेव, बम्बई-७ के लिए प्रकाशित तथा एसोसिएटेड ऐडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक:
श्रीगोपाल नेवटिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष ८ : : अंक १०

अक्टूबर, १९५९

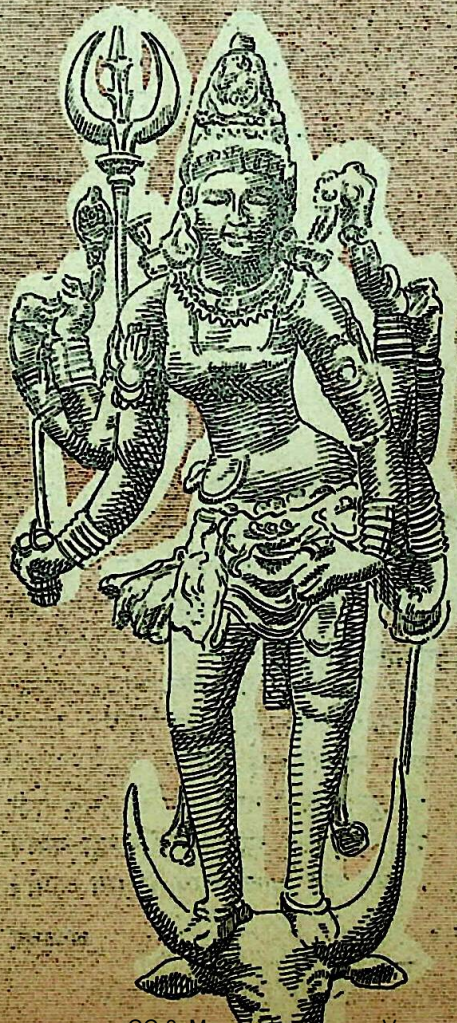

अद्वैत

अंधेरी रात में जब मैंने भी आँखें मूँद लीं, तो जैसे 'जल में जलघट- बाहर-भीतर पानी' वाली कहावत चरितार्थ हो गयी अर्थात् बाहर भी अंधेरा, भीतर भी अंधेरा! अंधकार के इस निःसीम समुद्र में निश्चल बैठे-बैठे मैं क्या देखता हूँ कि, एक बिल्कुल मेरे जैसी ही आकृति मेरी ओर बढ़ती आ रही है। उसने गरज कर मुझसे पूछा- "कौन हो तुम?" मैंने कहा- "क्या नहीं पहचानते? मैं तुम्हारा ही तो व्यक्त रूप हूँ।" वह फिर दर्प से बोला- "कहाँ जा रहे हो, यों आँख मींच कर?" मैंने कहा- "जहाँ तुम ले जाते हो, वहीं तो सदैव जाता हूँ मैं; स्वयं तो कहीं भी नहीं जाता।" सहसा वह मेरे और निकट आ गया। क्रोध में खौलता हुआ बोला- "बंद करो यह सब; मैं तुम्हें माध्यम बनाना नहीं चाहता, मैं स्वयं सब करूँगा। मैं अचल रहना नहीं चाहता, मैं चलूँगा; मैं गूंगा रहना नहीं चाहता, मैं बोलूँगा; मैं अरूप रहना नहीं चाहता, मैं रूप धारण करूँगा।" मैंने कहा- "तो अच्छा है, बनो व्यक्त; मगर सोच लो, कुछ भी न रहोगे- समुद्र घट में जा कर घट बन जाता है। सूर्य बिम्ब में बँध कर छाया रह जाता है। मेरे निःसीम, तुम निःसीम ही रहो।"

— मगर वह नहीं माना। दीवार तोड़, मुझसे आ मिला- जल-से-जल मिल गया- कतरा दरिया बन गया, जीव ईश्वर हो गया! — 'रमणानुभूति' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन कीमल

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के मानस-मंथन के तीन बोध-प्रसंग

वृक्ष के नीचे तपस्या करते हुए एक साधु ने कुछ चिड़ियाँ देखीं और वह सोचने लगा– "यदि मैं भी चिड़िया होता, तो कितना प्रसन्न रहता!"

उसकी तपस्या में इतना बल था कि, उसकी इच्छा तुरंत वास्तविकता में बदल गयी। वह एक खूबसूरत चिड़ा बन गया और एक चिड़िया के साथ प्रसन्नता-पूर्वक आकाश-मंडल में उड़ने लगा।

इस युगल ने जीवन में खूब आनंद मनाया और अपने बच्चों को बड़े प्यार व जतन से पाला-पोसा। खाने के लिए वे बच्चों के लिए कीड़े ला-ला कर देते। पर एक दिन सुबह चिड़ा जो कीड़े पकड़ने बाहर गया, तो लौटा ही नहीं। उसने एक अन्य जीवन-संगिनी ढूँढ़ ली थी।

"आखिर अपने मानव-स्वभाव का परिचय दे ही तो दिया"– दुखी मादा चिड़िया ने रोते-कलपते हुए कहा।

लेखक : राजगोपालाचारी

कुछ दिनों बाद, एक पेड़ पर साधु चिड़ा पुनः अपनी प्रथम संगिनी से मिला। पहले तो वह उससे कुछ दूर बैठा; लेकिन थोड़ी देर बाद उसके निकट आने लगा।

"न, न, मेरे पास न आओ," चिड़िया ने कहा।

"पर तुम ऐसा क्यों कहती हो?" चिड़े ने पूछा।

"क्योंकि तुम असल में चिड़ा नहीं हो।" उसने उत्तर दिया – "यदि तुम सचमुच चिड़िया-जाति के होते, तो मुझे और अपने बाल-बच्चों को छोड़ कर दूसरी के पास न जाते।"

साधु चिड़ा लज्जित हो कर उड़ गया और डाल पर अकेले जा बैठा। तभी उसके पास एक बिल्ली आयी। मारे डर के साधु चिड़े की मृत्यु हो गयी। मरते ही साधु को पुनः अपनी वास्तविक देह मिल गयी और वह फिर ध्यान में लीन हो गया।

अब वही बिल्ली साधु के पास आयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंधर्व

उसन उसे सूँघा; क्योंकि अभी तक चिड़िया की देह की कुछ गंध उसके शरीर से आती थी। साधु ने बिल्ली को भगाया नहीं। बिल्ली उसके निकट ही बैठ गयी और योगी की भांति उसने भी अपने नेत्र बंद कर लिये।

"क्या मानव, चिड़िया के सुन्दर स्वभाव को नहीं पा सकता?" समाधि में डूबे हुए साधु ने अपने-आपसे प्रश्न किया।

"बिल्कुल असंभव!" बिल्ली ने उत्तर दिया। न जाने उसने साधु के विचार एवं मनोभाव कैसे ताड़ लिये थे।

"ऐसा क्यों कहती हो तुम?"

"स्वभाव दुर्लघ्य होता है" –बिल्ली ने कहा। "मैं भी अच्छा बनने की भरपूर कोशिश करती हूँ; पर जब किसी चिड़िया या चूहे को देखती हूँ, तो यह सब-कुछ भूल जाती हूँ। मानव-स्वभाव भी प्रायः ऐसा ही है। मानव भी हम बिल्लियों की तरह बहुत अस्थिर निश्चय वाले होते हैं।"

"भाग जाओ यहाँ से" – साधु ने लज्जित होते हुए कहा—"तुम्हारे यहाँ रहते, मैं तपस्या नहीं कर सकता।"

तभी साधु के सामने देवी प्रकट हुई। "मेरे पुत्र", उसने कहा–"तुम अभी भी कामना से मुक्त नहीं हो। जाओ, भाग जाओ। पहले गृहस्थ-धर्म निभाओ; फिर समाधि-संन्यास की बात सोचना।"

× × ×

प्राचीन काल में वाराणसी के राजा के दो पुत्र थे। दोनों बड़े योग्य और भले थे। पिता की आज्ञा से वे देव-अर्चन के लिए, नित्य प्रातःकाल मंदिर जाते और वहाँ एकांत में कुछ समय ध्यान करके महल को वापस आ जाते।

एक दिन जब बड़ा राजकुमार वीरसिंह ध्यानावस्थित था, भगवान् शिव उसके सम्मुख प्रकट हुए। उन्होंने कहा – "पुत्र, तू क्या चाहता है? माँग; तुझे मिल जायेगा। पर जो कुछ माँगना हो, एक ही वर में माँग ले।"

महर्षि

"भगवन्, मैं सोच कर आपसे कहूँगा"– वीरसिंह ने उत्तर दिया।

"ठीक है। अच्छी तरह सोच लेना। दुबारा न हीं माँग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकोगे।" भगवान् शिव ने समझाया।

वीरसिंह खुशी में फूला न समाया और भली-भांति विचार करने बैठ गया। बड़ी देर तक उसने चिंतन किया; पर किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका। उधर उसकी अनुपस्थिति से महल में चिंता फैल गयी। परंतु राजा ने आदेश दिया कि, वीरसिंह के एकान्त ध्यान में किसी प्रकार की बाधा न डाली जाये।

इसी बीच छोटा राजकुमार सम्पूर्णसिंह सदा की भांति पूजा व ध्यान समाप्त करके महल को लौट आया। उस दिन, उसके सम्मुख भी भगवान् शिव प्रकट हुए थे। उन्होंने उसे भी एक वर दिया था और एक ही वर में अपना समस्त अभिलषित माँगने को कहा था। सम्पूर्णसिंह ने निःसंकोच उत्तर दिया था – "हे भगवन्, आपकी कृपा से मैं केवल ऐसी मति चाहता हूँ, जो कभी किसी वर की कामना न करे।"

"वत्स सम्पूर्ण! तेरी इच्छा पूर्ण होगी।" शिव भगवान् ने कहा और राजकुमार का मुख दिव्य आनंद की दीप्ति से चमक उठा। उसका हृदय हर्ष से भर गया। वह उठा और महल में लौट आया।

रानी ने बड़े चाव से पुत्र का आलिंगन किया, उसका माथा सूँघा। फिर वह राजा के पास गयी, वीरसिंह के महल न लौटने का कारण पूछने।

"वह गहरी समाधि में है", राजा ने उत्तर दिया – "जब समाधि टूटेगी, स्वयं ही लौट आयेगा।"

लम्बी अवधि के पश्चात् वीरसिंह उदास चेहरा लिये, महल को लौटा।

बहुत समय व्यतीत हो गया; फिर भी वीरसिंह कोई निर्णय नहीं कर पाया। वह एक के बाद एक बात सोचता और सोचता ही रहता। अंत तक वह असमंजस में ही पड़ा रहा। उसने खाना-पीना व खेल-कूद भी छोड़ दिया और सारा समय इसी सोच-विचार में लगा दिया कि, क्या वर माँगूँ। दिन बीतते गये, उसका स्वास्थ्य गिरता गया और अंत में वह बीमार पड़ गया।

अब तो राजा भी चिंतित हो उठा। मंत्री-सभा से सलाह करके, उसने वैद्यों को बुलाने का निर्णय किया। पर रानी को उसी रात स्वप्न में भगवान् वैद्यनाथ दिखायी दिये। उन्होंने बताया – "तुम्हारा पुत्र किसी रोग से ग्रस्त नहीं है। वह अभी इस चिंता में है कि, मैंने उसे जो एक वर दिया है, उसमें क्या माँगे।"

रानी ने सारा हाल राजा से कहा – "हाय, हमारा लड़का बहक गया है।" राजा वीरसिंह के पलंग के पास गये और उन्होंने उसे समझाया – "कामनाओं से ऊपर उठना ही सबसे बड़ी संपत्ति है। वर माँगने के बजाय, उल्टे तुम चिंताग्रस्त हो कर अस्वस्थ हो गये हो।"

परंतु वीरसिंह इन शब्दों का मर्म न समझ सका। वह रोग का शिकार हो गया और एक दिन उसकी आत्मा शरीर-पंजर से निकल गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"वत्स, तुम नहीं जानते कि, तुम्हें क्या चाहिए। मेरे पास आओ, मैं बताऊँगा।" यह कह कर भगवान् शिव ने उसे अपने में लीन कर लिया।

× × ×

किसी नगर में एक नास्तिक और एक आस्तिक अड़ोस-पड़ोस में रहते थे। दोनों घनिष्ट मित्र थे। नास्तिक एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्मा और पला था; फिर भी वह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता था। वैसे उसका जीवन बड़ा शुद्ध-पवित्र था।

प्रति दिन दोनों मित्र मिलते और चाय पीते-पीते खूब वाद-विवाद करते। यों ईश्वर के अस्तित्व का खंडन करने के दौरान में नास्तिक मित्र भगवान् का नाम कई बार लेता। परंतु नास्तिक की दलीलों पर विचार करते-करते ही आस्तिक अपनी आधी आस्था खो बैठा।

अचानक एक दिन दोनों-के-दोनों सन्निपात-ज्वर में चल बसे।

भगवान् यम ने नास्तिक का स्वागत किया। "वत्स," उन्होंने कहा – "न चाहते हुए भी तुमने मुक्ति प्राप्त कर ली है। देखो तो, वहाँ कौन तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं!" और उन्होंने महाविष्णु के सेवकों की ओर संकेत किया। "जाओ, उनके पीछे-पीछे जाओ।"

"नहीं, नहीं, ईश्वर कहीं नहीं है–" नास्तिक वहाँ भी अपने आग्रह पर अड़ा रहा। लेकिन विष्णु के सेवकों ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। वे उसे बलपूर्वक ले गये; और रोते-रोते नास्तिक ने स्वर्ग में प्रवेश किया।

"मेरे पुत्र," यम दयार्द्र होकर आस्तिक से बोले – "शुष्क तर्क और प्रमाण, तुम्हें नहीं उबार सकते। तुमने अपना सारा जीवन, ईश्वर के अस्तित्व के खंडन-मंडन की बेकार की दलीलों में नष्ट किया है। भूलोक में ही रहो। श्रीरंगम् में भगवान् विष्णु का मंदिर है। उसमें छोटा–सा चूहा बन कर, वहाँ की धूल में रहो। वह दिव्य जीवन जीने के बाद स्वर्ग-लोक आना।"

इस प्रकार यम ने कहा और आस्तिक की पीठ थपथपा कर, उसे श्रीरंगम् भेज दिया। जब आस्तिक श्रीरंगम् पहुँचा, उसने भगवती लक्ष्मी (पेरुन्देवी) से पूछा –"हे माता! क्या तुम इसे न्यायोचित समझती हो?" वह मंदिर में पहुँच गया या यों कहिए कि, वह मंदिर में पहुँचा दिया गया। अब वह मनुष्य नहीं, एक छोटा-सा चूहा था।

चूहे ने देवी के मंदिर में बचे हुए भोग-प्रसाद के टुकड़े खा कर अपने दिन काट दिये। चूहों की आयु होती ही कितनी लंबी है! और वैसे भी बूढ़े होने के पहले ही वे बिल्ली के पेट में पहुँच जाते हैं। आस्तिक चूहे ने छह महीने में मुक्ति पा ली।

"वत्स, इधर आओ," देवी ने अपने हाथ फैलाते हुए कहा – "मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रही थी।" और यह कह कर उसने सस्नेह आस्तिक को अपनी छाती से लगा लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्णोत्तम

शिथिल पड़ गयी देह, व्यथित हो उठे प्राण-मन
नीरस तर्कों के बोझिल शब्दाडम्बर से,
इनसे कहीं प्रेरणाप्रद लगते ये नारे
प्राण-शक्ति का स्पंदन-कंपन जिनमें जन का।
एक और चेतना-शक्ति है, जो मानव के
अंतरतम में अंतर्हित है, अपने में स्थित
जो विकास-पथ में सम्भवतः जिसके धूमिल
ज्योति-चिह्न भू-पथ में छोड़ गये महान् जन
तर्क-बुद्धि से, चिंतन से जो कहीं पूर्ण है
जिसकी आभा कभी स्फुटित हो अंतर्मन में
आलोकित कर देती स्वतः निखिल भेदों को।
स्वप्नमयी वह, सृजनमयी, आनंदमयी वह
करुणा, विस्तृत माँ की ममता-सी चिर-कोमल
प्रीति-मधुरिमा से भर श्रद्धा-मौन हृदय को
अंकित कर देती रहस्य सब सहज बोध से,
सौ-सौ रूपों के दल खोल दृगों के सम्मुख!

—सुमित्रानंदन पंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं भगवान से भी श्रेष्ठ हूँ

विनोबाजी की प्रज्ञा-पुण्यतोया का एक पुनीत तरंग-प्रवाह

बचपन में हमारे दादा गणपति-उत्सव मनाते थे। हम अपने हाथों गणपति की मूर्ति बनाते और उसकी पूजा करते थे। हमें उसमें बड़ा संतोष मालूम होता था। १३-१४ दिन उसकी पूजा और आरती वगैरह होती थी। आखिर में जब उसे तालाब या कुएँ में विसर्जन करना पड़ता था, तो हमें बड़ा दुख होता था। पता नहीं, इसमें क्या खूबी रही होगी, जिसका हमारे चित्त पर बहुत बड़ा असर होता था।

आवाहन के बाद विसर्जन भी अपने ही हाथों से करते हैं, इसका अर्थ यही है कि, आपने ही मूर्ति को भगवान् के तौर पर बनाया। इस तरह हमारा शास्त्र सुझाता है कि, भगवान् को बनाने वाले तुम हो। इसलिए सबसे श्रेष्ठ देवता मानव है। गणेश-पूजा की इस प्रक्रिया द्वारा हमारे पूर्वज बताते हैं कि, तुम पूजा तो करो; पर यह पहचान लो कि, तुमने ही इसे बनाया है, इसकी प्राण-प्रतिष्ठा करने वाले तुम हो; तुम्हारी ही ताकत से यह मृत्पिंड भगवान् बना है।

ऋग्वेद में एक मंत्र आता है : अयं मे हस्तो भगवान् अयं मे भगवत्तर : यानी मैं भगवान् हूँ, और भगवान् से भी श्रेष्ठ हूँ। इससे बेहतर मंत्र क्या हो सकता है? जहाँ पहले वाक्य में ऋषि कहता है कि, मैं भगवान् हूँ, वहीं कहता है भगवत्तर : अर्थात् भगवान् से भी श्रेष्ठ हूँ। क्योंकि आखिर भगवान् अव्यक्त है और हम व्यक्त हैं। हमारे हाथों जो सेवा होगी, वह व्यक्त होगी।

आवाहन-विसर्जन की इस प्रक्रिया को सारा संसार सीखे-समझे, ऐसा मैं चाहता हूँ। तभी एक अमेरिकन भाई से मैंने कहा— "आप लोग ये जो तरह-तरह के शस्त्रास्त्र बनाते हैं, उन्हें खूब बनायें; क्योंकि उससे लोगों को काम मिलेगा। किंतु क्रिस्मस के दिन हिम्मत के साथ भगवान् ईसा मसीह का नाम लेकर, वे सारे शस्त्रास्त्र समुद्र में डुबा दें। आज आपके शस्त्रास्त्र रूस खत्म करता है और रूस के शस्त्रास्त्र आप खतम करते हैं। यह परावलंबन क्यों? आप स्वावलंबी बनें। इस तरह अपने हाथों शस्त्रास्त्र बनाना और उसे डुबा देना, एक खेल हो जायगा। इससे हमारे हाथ का 'भगवान्पन' अर्थात् अपनी सृष्टि को स्वयं बनाने-बिगाड़ने का अधिकार भी बना रहेगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनीषी चंद्रशेखर वेंकट रामन्

भारतीय विज्ञान-साधना के एक ज्योति-पुंज सिद्ध का दर्शन-प्रयत्न। चित्र एवं बोधवाक्य सामने के पृष्ठ पर।

चेतना की सप्राण धारा को, लोकेष्णा-वित्तेष्णाएँ कुछ काल के लिए भले ही भरमा लें; परंतु लक्ष्य पर पहुँचने से नहीं रोक सकतीं। डा. चंद्रशेखर वेंकट रामन् का जीवन इस सत्य की व्याख्या है।

७ नवंबर १८८८ को तिरुचिनापल्ली में जन्मे रामन् ने तेरह वर्ष की उम्र में मैट्रिक पास कर, १८वें वर्ष में विज्ञान में प्रथम दर्जे में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की और हितैषियों की प्रेरणा से लेखा-विभाग की परीक्षा उत्तीर्ण कर, डेपुटी एकाउंटंट जनरल का पद प्राप्त किया।

परंतु कोई शक्ति उन्हें कुरेदती रही कि, क्या तुम सरकारी जमा-खर्च के लेखे-जोखे में सारा बुद्धिबल और जीवन गँवा दोगे। घर में निजी प्रयोगशाला बना कर वे परीक्षण-प्रयोग करते रहे। दिन-भर दफ्तर में काम; रात को विज्ञान-देवता की आराधना चलती थी।

अंत में १९१७ में डा. आशुतोष मुखर्जी ने इस तरुण विज्ञान-भिक्षु को बही-खाते के गोरख-धंधे से उबार कर, कलकत्ता विश्व-विद्यालय के विज्ञान-विभाग में नियुक्त किया। यहीं उन्होंने रश्मियों के विचलन के संबंध में अपने प्रसिद्ध सिद्धांत, 'रामन् इफेक्ट' प्रतिपादित किये, जिनके लिए १९३० में उन्हें भौतिक-विज्ञान का नोबेल-पुरस्कार मिला और लंदन की रायल सोसायटी आव साइन्स का फेलो भी चुना गया।

अनेक वर्ष बंगलोर के प्रसिद्ध इंडियन इंस्टिट्यूट आव साइन्स के संचालक रहने के बाद, उन्होंने अपना रामन् इंस्टिटचूट आव साइन्स खोला। इसमें उन्होंने विकीर्ण रश्मियों की फ्रीक्वेन्सी, रत्न और भारतीय संगीत-वाद्यों के विषय में महत्वपूर्ण खोजें की हैं। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें नाइटहुड प्रदान की थी, तो स्वतंत्र भारत की सरकार ने उन्हें "राष्ट्रीय प्राध्यापक" पद और "भारत-रत्न" पदक से विभूषित कर, समस्त राष्ट्र की श्रद्धा अर्पित की है।

प्रतिभा और सिद्धि की इस चमक के पीछे, रामन् की पर्वतोपम व्रत-साधना छिपी है। उन्होंने वेद की इस उक्ति को कि "गिरि-गह्वरों और नदी-संगमों में ज्ञानी विप्र पैदा होता है" यों उलट दिया है—"ज्ञानी विप्र जहाँ रहता है, वहीं गिरि-गह्वर और नदी-संगम बना लेता है।"

डा. रामन् सचमुच ज्ञान-गिरि-गुहा में बैठे हैं; वे ज्ञान-सरिताओं के संगम हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

.....प्रतीति सदैव यही रखो कि, तुम साधना के अति उत्तुंग शिखर पर बैठे हो। तनिक भी संतुलन खोया, तो अतल गहराइयों में, खोहों-खाइयों में गिर पड़ोगे; एक क्षण भी खोया, तो जीवन-संपदा को क्षीण कर बैठोगे। तभी तुम जीवन से कुछ पा सकोगे—उससे बढ़कर, जीवन को कुछ दे सकोगे। —डा. रामन्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तकालय : आत्म का उद्यान

जदुनाथ सरकार विद्या-वारिधि थे; किंतु किस प्रकार एक विद्या-बिंदु वारिधि की पूर्णता प्राप्त कर सका, इसका रहस्य उनकी अनवरत स्वाध्याय-साधना में छिपा था। आत्म-उन्नयन के लिए उन्होंने एक अद्‌भुत उद्यान बनाया था– एक बहुमूल्य पुस्तकालय। यहाँ इसी स्वाध्याय-निष्ठा का प्रेरक परिचय हम अपने पाठकों को करवाते हैं।

जब मैं स्कूल में पाँचवें दर्जे का विद्यार्थी था, हमारे दर्जे में अमरीकी इतिहासकार पीटर पार्ले-लिखित 'यूनिवर्सल हिस्ट्री' नामक पुस्तक पढ़ायी जाती थी। पुस्तक बड़े सुंदर ढंग से, कहानियों के रूप में लिखी गयी थी। इस पूरी पुस्तक को मैं पढ़ गया। उसके बाद वाले दर्जे में, उसी पुस्तक से हमें रोमन इतिहास वाले अध्याय पढ़ाये गये। एपामिनांडस और सिकंदर तथा हनीबाल और सीजर की लड़ाइयों की जानकारी इसी ढंग से मैं प्राप्त कर सका।

उन युद्धों के संबंध में कल्पना करने में तब मुझे कितना आनंद आता था! और जैसे नियति ने मेरे उस आनंद की पूर्ति के लिए रास्ता बना रखा था। स्वेज-नहर उस वक्त तक नहीं बनी थी। सो उन दिनों जो ब्रिटिश अधिकारी भारत में काम करने आते थे, वे कम-से-कम १५ या २० वर्ष बाद ही अपने देश वापस जाते थे। और उनमें से अधिकांश, इस लम्बे अर्से को काटने के लिए, अपने साथ अच्छी-अच्छी किताबें लेते आते थे और नौकरी से अवकाश प्राप्त करके विलायत लौटते समय, फर्नीचर के साथ अपनी सारी पुस्तकें बेच देते थे। मेरे पिता, जो राजशाही (उत्तरी बंगाल) के एक जमींदार थे, ऐसे अवकाश-प्राप्त मैजिस्ट्रेटों और जजों की किताबें बहुधा खरीद लिया करते थे। इतिहास की पुस्तकों से पिताजी को बड़ा प्रेम था – एक प्रकार का मोह। कहानियाँ-कविताएँ उन्हें नापसंद थीं। उनकी इन्हीं अंग्रेजों से खरीदी हुई पुस्तकों की राशि में, मुझे एक बड़ी अमूल्य पुस्तक मिली – बैरन डी जोमिनी-लिखित "हिस्ट्री आव द' आर्ट आव वार"। जोमिनी नेपोलियन का एक सिपह-सालार था और उसकी यह पुस्तक इंग्लैण्ड के फौजी कालेजों में पढ़ायी जाती थी।

इस किताब में एपामिनांडस की लड़ाइयों का पूरा विवरण मुझे पढ़ने को मिला। क्रमबद्ध योजनाओं के आधार पर, इन लड़ाइयों को चित्रित किया गया था। इसे पढ़ने के बाद, उस प्राचीन महा-योद्धा के आक्रमण-विधान तथा 'एन एकी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लॉन' की ओर उसके बढ़ने के ढंग की रूपरेखा, मेरे दिमाग में भली-भांति अंकित हो गयी। कैनी में हनीबाल के घेरे की व्यूह-रचना भी मेरे सम्मुख स्पष्ट हो गयी।

चौथे दर्जे में हमें ज्यामिति पढ़ायी जाने लगी थी; सो मैं पीटर-पार्ले की पुस्तक में वर्णित सैनिक प्रगतियों को चित्रित करने के लिए, आड़ी और अर्ध-वृत्ताकार रेखाएँ खींचने लगा। इसमें मुझे अनोखा आनंद मिलता। इस तरह सैनिक इतिहास के जीवाणु, मेरे मस्तिष्क में प्रवेश करते गये। मेरे बड़े होने के साथ-साथ जीवाणु ये भी पनपते रहे।

सन १८८७ में मैट्रिक की परीक्षा पास कर लेने के बाद, मुझे टेनिसन की सुप्रसिद्ध कविता "ओड आन द' वेरियल आव द' ड्यूक आव वेलिंग-टन" पढ़ने को मिली। उसे पढ़ने के बाद से ही यह प्रश्न मेरे दिमाग में चक्कर काटने लगा कि, थोड़े-से तेजस्वी योद्धाओं ने शत्रु-दल के हजारों सैनिकों पर विजय किस प्रकार पायी? वे हजारों सैनिक किसी भी रूप में न कमजोर थे, और न उनके शस्त्रास्त्र कोई कम अच्छे थे।

इस जिज्ञासा ने मेरे इतिहास-प्रेम को जागृत कर दिया। अतीत को कुरेदने की मेरी इच्छा धीरे-धीरे बलवती हो गयी और इसी कारण मुझे भारतीय इतिहास से संबंधित अमूल्य पुस्तकें खरीदने का रोग-सा हो गया। आरम्भ में मैं अंग्रेजी की पुस्तकें ही खरीदता था, जिनमें सिर्फ ब्रिटिश काल का हवाला रहता था। और चूँकि मेरी पढ़ाई-लिखाई का सारा खर्च मेरे पिताजी पूरा करते थे, सो कालेज में मुझे जो छात्रवृत्ति मिलती रही, उसे मैं इन 'भारतीय पुस्तकों' पर खर्च करता रहा। स्वभावतः कलकत्ता की पुरानी किताबों के दूकानदार मुझे अपना सर्वाधिक उदार ग्राहक समझने लगे। इस प्रकार अंग्रेजी क्लबों और बैरकों द्वारा उपेक्षित भारतीय इतिहास की अलभ्य पुस्तकें, सबसे पहले मुझे ही दिखायी जाती थीं।

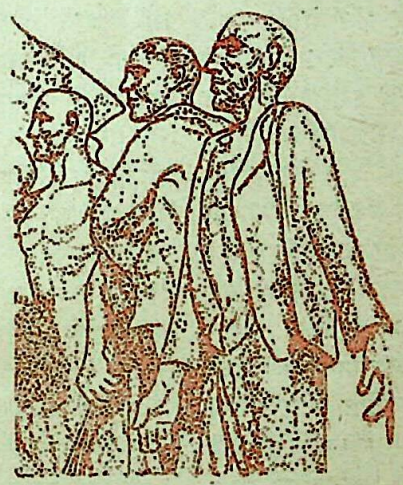

संकल्प

[चित्रः जर्मन चित्रकार रेन्गार के चित्र की रेखानुकृति]

मेरे ऐतिहासिक पुस्तकालय की नींव इसी ढंग से पड़ी। परंतु जब सन १८९७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में मैंने 'प्रेमचन्द फेलोशिप परीक्षा' पास की और स्वयं मौलिक अनुसंधान-कार्य शुरू किया, तब मेरे पुस्तकालय का भी विकास हुआ। तब से प्रत्येक वर्ष मैं इंग्लैंड की पुरानी किताबों की प्रसिद्ध दूकानों को बड़े-बड़े आर्डर देने लगा। पूरे तीस वर्ष तक यह क्रम चला और बाद में स्थगित हो गया; क्योंकि तब तक मेरे पास पर्याप्त पुस्तकें हो चुकी थीं। एक कारण और भी था। तब तक फारसी, मराठी और अंग्रेजी की पांडुलिपियों और दस्तावेजों के आधार पर, स्वतंत्र अनुसंधान करने के प्रति मेरा झुकाव हो चला था।

सन १८९७ के बाद, जब मैंने सही अर्थ में मुस्लिम-कालीन इतिहास के क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान की ओर ध्यान दिया, तो मैंने फारसी, मराठी और फ्रेंच पांडुलिपियों और प्रकाशित सरकारी कागजात को ही मुख्य रूप से आधार माना। तब से उन्हीं को प्राप्त करने में मैंने अपने सारे साधनों का उपयोग आरंभ किया। फलस्वरूप आज मेरे पास फारसी पांडुलिपियों तथा मराठी के प्रकाशित कागज-पत्रों का विशाल संग्रह है। अवश्य ही, इनमें एक पुस्तक नहीं है—'नादिरशाह का छंदोबद्ध इतिहास'। वास्तव में, इसकी एक ही पांडुलिपि संसार-भर में है; और वह है लेनिनग्राड में।

भारत के लगभग सभी प्राचीन पुस्तकालय मैं देख चुका हूँ। रामपुर (उत्तर प्रदेश), हैदराबाद और खुदाबख्श (पटना) पुस्तकालय में तो कई बार जा चुका हूँ; और वहाँ के सारे ग्रंथ मेरे देखे हैं। इनमें से पहले पुस्तकालय से मैंने भारत के सर्व-प्रथम सर्वेक्षण के नक्शे भी प्राप्त किये। भारत के इन पुराने नक्शों में 'चार मील= एक इंच' का पैमाना बरता गया है। कुछ युद्ध-क्षेत्रों और शहरों को दर्शाने में इनमें बड़ी उदारता से काम लिया गया है।

प्राचीन और वैज्ञानिक ढंग से बने ब्रिटिश भारत के ये नक्शे मेरे लिए अमूल्य थे; क्योंकि उनमें ऐसे ऐतिहासिक मार्गों और गाँवों के नाम-धाम मिल जाते हैं, जिन्हें आज कोई नहीं जानता।

प्रारम्भिक वर्षों में मेरे द्वारा संग्रहीत पुस्तकों में सिक्ख, नेपाल, आंग्ल-मराठा और बर्मा की लड़ाइयों से सम्बंधित पुस्तकें अधिक थीं। बाद में मैंने सिपाही-विद्रोह से सम्बंधित पुस्तकों को इस उत्साह से इकट्ठा करना शुरू किया कि, उनकी संख्या १५० से ऊपर पहुँच गयी। और यदि ऐसे प्रत्येक ब्रिटिश अफसर के, जिसने इस विद्रोह के दमन में थोड़ा-सा भी हिस्सा लिया था, संस्मरणों की गणना करें, तो ऐसी पुस्तकें २०० के करीब होंगी।

ऐतिहासिक चित्रों के प्रति भी मेरा कुछ अजीब मोह रहा है; और यही मोह यूरोपीय इतिहास में मुझे फ्रांसीसी क्रांति और नेपोलियन के समय तक खींच ले गया। पेनिनसुला युद्ध और वाटरलू से सम्बंधित जो भी किताब मुझे मिल सकी, मैंने उत्साह-पूर्वक खरीद लीं। इन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तकों में 'नेपोलियन के पार्श्वचर के प्रलाप' (तीन भाग में) भी शामिल है। और मेरा विश्वास है कि, इसके जोड़ की रोचक पुस्तक दूसरी नहीं हो सकती!

कुछ वर्ष बाद, जब मेरा ऐतिहासिक चिंतन प्रौढ़ हो गया, मेरा ध्यान युद्धों के शिक्षणात्मक और टेक्निकल महत्व पर केन्द्रित हो चला। जब तक भारत में विदेशियों का विरोध करनेवाला एक भी राज्य था, तब तक की लड़ाइयों की पुरानी व्यूह-रचना और अन्य बातों का ज्ञान प्राप्त करने में मैं जुट गया। मेरे इस खोज-कार्य ने सिकंदर से वेलिंगटन तक—ईस्वी पूर्व ३२३ से सन १८०३ तक—मेरी सीमा-सी बाँध दी; क्योंकि इन्हीं युद्धों के हमें ठीक विवरण प्राप्त होते हैं।

लेकिन यदि मध्य-कालीन भारतीयों की व्यूह-रचनाओं और युद्ध-कौशल का बिल्कुल ठीक मूल्यांकन करना है और उन्हें इस लायक बनाना है कि, आधुनिक सैनिक उनसे सीख ले सकें, तो पहले यूरोप की युद्धकला के क्रमिक विकास तथा उसकी आधुनिक यांत्रिकता की जानकारी हमें प्राप्त करनी होगी। दुर्भाग्यवश इन विषयों पर भारतीय इतिहास से सम्बंधित पुस्तकें मौन हैं। अतः यूरोपीय सैनिक इतिहास की ऐसी पृष्ठभूमि के बिना, जो ऐतिहासिक काल के भारतीय युद्धों का अध्ययन करने की कोशिश करते हैं, वे मानो रेतीली भमि में हल चलाते हैं। यथार्थता के मूल का वे स्पर्श भी नहीं कर पाते। उदाहरण के लिए एक सज्जन ने अपनी थीसीस में — जिसकी जाँच करने का सौभाग्य मुझे मिला — यह प्रमाणित करने करने का यत्न किया है कि, प्राचीन भारत में रेड-क्रास संस्था थी; क्योंकि हिन्दू राजा युद्ध में अपने रसोइयों, कुलियों और चिकित्सकों को साथ ले जाया करते थे, जो घायलों की देख-भाल किया करते थे।

वस्तुतः ऐसे अन्वेषण का — छुपे सत्य की इस खोज का — जिसे हम अनुसंधान कहते हैं, कोई अंत नहीं है। आवश्यक यह है कि, अनुसंधान सही तरीके पर हो।

नवीन प्राप्त तथ्य और नये विचार, आज भी मुझे अपने पहले के विवरणों और धारणाओं में संशोधन के लिए बाधित करते रहते हैं। 'असाये का युद्ध' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस संबंध में वेलिंगटन के जमाने के प्राप्त कागजों पर आधारित मेरा लेख, 'फाल' पुस्तक के चौथे भाग में सन् १९५० में प्रकाशित हुआ था। किंतु पार्वत्य-प्रदेश के सैनिकों की ७७वीं पंक्ति के विवरणों को—जिनका मैकवे-लिखित "हिस्टारिकल रेकार्डस आव द' सेवंटीएथ हाइलैंडर्स" शीर्षक पुस्तक में उल्लेख मिलता है—पढ़ने के पश्चात् मुझे अपने इस लेख को फिर से लिखना पड़ा। संस्कृत के कवि ने व्याकरण-शास्त्र के विषय में कहा था कि, वह अपार है। वही बात ऐतिहासिक सामग्री पर भी लागू होती है। अतः उसके विवेचन में नीर-क्षीर-विवेक आवश्यक है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रियदर्शी की घोषणा

घोषणा है आज की मेरी यही—
विजय जो यह क्रूर संगर-जन्य है,
मानता हूँ, निज पराजय मैं इसे।
मानता हूँ, बोधि-लाभ नवीन यह—
एक भी हारा हुआ जन हो जहाँ
छिन्न-खंडित ही वहाँ की जीत है।
पूर्ण चेतन-भाव से उद्बुद्ध मैं
कर रहा भू-विजय अस्वीकार हूँ।
भू-विजय है स्थान-बद्ध, नितांत जड़
धर्म की जय ही सदा सच्ची विजय!
साथ में सीमित नहीं वह देह के
ऊर्ध्व स्तर के वायुमंडल में बसी,
वह अलक्षित भी सुचिर जीवंत है।
लाँघकर उत्तुंग शृंग-समूह वे
पैर कर कल्लोल-क्रुद्ध समुद्र वहु
पहुँच सकती धर्म-जय सर्वत्र है।
भूमि-विजयी अनुभवी की बात यह
पुत्र मेरे, पौत्र मेरे सब सुनें—
प्राप्त करने की नहीं है यह विजय
शस्त्र-बल से हो रही हो सिद्ध जो
हीनतर आनंद सब तज्जन्य हैं!

—सियारामशरण गुप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब-अब=अब

समय, काल या वक्त क्या है? इस प्रश्न का उत्तर जितना खोजेंगे, उतना ही डूबते जायेंगे! समय, जिसे हम अपने इस ब्रह्मांड का फीता कह सकते हैं, अजस्र गतिवान् अनादि-अनंत प्रवाह है। अंतरिक्ष जो सबका आधार है— जल, थल और वायु सबको धारण किये बैठा है— वह स्वयं समय की हथेली पर राई की तरह लुढ़क रहा है! उसमें न कुछ कमी जुड़ता है, न कभी कुछ घटता है-- आइन्स्टीन के शब्दों में शून्य में से शून्य निकाल दीजिए, तो सदैव शून्य ही शेष रहेगा। प्रस्तुत लेख में इसी रहस्यमय काल के बारे में जानकारी देने का प्रयत्न है।

*

आदिकाल से मनुष्य समय के बीतने का, काल के व्यतीत होने का अनुभव करता रहा है। नाड़ी का स्पंदन, सूर्य-चंद्र के उदय-अस्त, दिन-रात, समुद्र के ज्वार-भाटे, ऋतु-परिवर्तन, जवानी और बुढ़ापा, ये सब मनुष्य को समय का, समय के बीतने का, भान कराते रहे हैं। ज्यों-ज्यों मनुष्य ने उन्नति की, उसने इस समय को अधिक-से-अधिक ठीक मापने का भी प्रयत्न किया। बालू की घड़ी, पानी की घड़ी, धूप-घड़ी और आज की मशीनी घड़ी, सब उसी प्रयत्न के फल हैं।

बहुत समय तक तो सूर्योदय एवं सूर्यास्त ही घड़ी का काम देते रहे थे। बाद में धूप-घड़ी आयी, जिसने मध्याह्न का सही भान कराया और उसे समय की माप का आरंभ-बिंदु बनाया। सूरज जब ठीक सिर पर हो, तब का समय एक निश्चित पल माना गया। परन्तु विभिन्न स्थानों में सूरज ठीक सिर पर आगे-पीछे पहुँचता है; अतः स्थान-स्थान का मध्याह्न विभिन्न समय पर होता है। पर उन दिनों दुनिया थी ही कितनी बड़ी? पाटलिपुत्र का मध्याह्न, हस्तिनापुर के मध्याह्न से भिन्न रहा, तो क्या? जब यहाँ से वहाँ पहुँचने में सप्ताह-के-सप्ताह लगें, वहाँ के समय में घड़ी भर का फेर हो, तो क्या तकलीफ? यों हर एक मनुष्य अपने शहर के समय को ही प्रामाणिक मानकर चलता रहा।

बहुत दूर तक का समय एक ही हो, यह जरूरत तो रेल के प्रचार के बाद महसूस हुई। यदि दो-दो सौ, तीन-तीन सौ मील के अन्तर से समय बदलता जाय, तो रेल की समय-सारिणी कैसे ठीक बैठे? कैसे यात्री अपनी घड़ियाँ ठीक रखें? इस कठिनाई ने, सार्वत्रिक समय (स्टैंडर्ड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाइम) की पद्धति को जन्म दिया।

अभी ज्यादा पुरानी बात नहीं है। सन् १८७० व १८८० के बीच, संसार के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध देशों में इस विषय की चर्चा हुई; और सन् १८८३-८४ में सारे देशों ने अपने स्टैंडर्ड समय स्थापित किये। परन्तु सारी दुनिया के लिए तो क्या, पूरे एक महाद्वीप के लिए भी, एक ही स्टैंडर्ड समय निर्धारित होना संभव नहीं था। भारत में जब सूर्य मध्याह्न में हो, उसके पूरे पाँच घंटे बाद वह इंग्लैंड के मध्याकाश में पहुँचे, तो दोनों देशों का समय एक हो भी कैसे? परंतु पटना और दिल्ली का समय तो व्यवहार की सुविधा के लिए एक ही हो सकता था, और होना भी चाहिए था। ८० वर्ष पहले की उस व्यवस्था ने इसी का प्रबंध किया।

सारी पृथ्वी को २४ भागों में बाँटा गया। दोनों ध्रुवों को पार करती हुई एक रेखा की कल्पना की गयी, जिसने पृथ्वी को दो गोलार्द्धों में विभाजित किया। यह प्राथमिक विभाजन-रेखा, अथवा वैज्ञानिक भाषा में खमध्य-रेखा या मध्याह्न-रेखा लंदन के पूर्व में स्थित ग्रीनविच से होकर ध्रुव से ध्रुव तक जाये, यह सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। बाकी पृथ्वी को भी १५-१५ अंश के अंतर से २४ खमध्य-रेखाओं के द्वारा विभाजित किया गया। हर दो खमध्य-रेखाओं के बीच, समय में एक-एक घंटे का अंतर मानना स्वीकार किया गया। ग्रीनविच को यह सम्मान प्राप्त हुआ सन् १६७५ में चार्ल्स द्वितीय द्वारा स्थापित वहाँ की प्रसिद्ध राजकीय वेधशाला के कारण, जो अब अपने मूल स्थान से हटकर इंग्लैण्ड के दक्षिण के समुद्रतट पर हर्स्ट-मान-सू चली गयी है। हाँ, तो इस प्रकार मान लिया गया कि, समय का प्रारंभ ग्रीनविच से होता है और उसके पूर्व में प्रति खमध्यांश एक घंटा आगे और पश्चिम में प्रति खमध्यांश एक घंटा पीछे समय चलता है।

इस व्यवस्था में हिसाब लगाने पर ग्रीनविच से पूर्व और पश्चिम की १८०

अब

जरा 'अब' के बारे में भी विचार कीजिए। उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव के 'अब' में $\frac{1}{50}$ सेकेंड का अंतर होता है। इससे आगे जाइए, सूरज के 'अब' में और हमारे 'अब' मे ८ मिनिट का अंतर होता है– वहाँ जो-कुछ हो रहा है, उसका संदेश प्रकाश-किरणें ८ मिनिट में हम तक पहुँचाती हैं। एंड्रोमेडा जो हमारे सबसे निकट का दूसरा ब्रह्मांड है, वहाँ का 'अब' दस लाख वर्ष बाद हम तक पहुँचता है। यह 'अब' कभी खत्म नहीं होता– कभी कम-ज्यादा भी नहीं होता। और हो भी क्यों? यह 'अब' सम्पूर्ण है, सदैव अक्षय-अखंड है। – पाल स्नीडर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंश की दोनों खमध्य-रेखाएँ एक ही स्थान पर पड़ीं। पृथ्वी गोल है न! इसलिए यदि आप ग्रीनविच से पूर्व होकर चलें तो, १८० डिगरीवाले स्थल पर समय ग्रीनविच से १२ घंटे आगे होगा; और पश्चिम होकर चलें तो, होगा १२ घंटे पीछे। इसलिए १८० डिगरी वाली खमध्य-रेखा को अन्तर्राष्ट्रीय-तिथिरेखा (इंटर-नेशनल डेट लाइन) मान लिया गया और उस रेखा के इस पार और उस पार में पूरी एक तारीख का अंतर मानने का निश्चय हुआ। यह तिथिरेखा प्रशांत महासागर में, उत्तर से दक्षिण जाती है। अमेरिका से पश्चिम की ओर चलनेवाला जहाज इस तिथिरेखा को इसी १ सितम्बर को पार करे, तो जिस समय वह तिथिरेखा को पार करेगा, वहीं समय सितम्बर की २ तारीख का हो जायेगा। यदि कोई इसी रेखा को पश्चिम से पूर्व की ओर चलकर पार करे, तो इसके विपरीत होगा; अर्थात् २ सितम्बर, १ सितम्बर बन जायेगी। एक ओर एक दिवस का लाभ, और दूसरी ओर एक दिवस का नुक्सान! हवाई जहाज पर अमेरिका से जापान की बहुधा यात्रा करनेवाले तो, न जाने कितनी बार जीवन का यह एक दिन खोते-कमाते होंगे। पर संयोग से यह तिथिरेखा अधिकांशतः सागर-ही-सागर से होकर गुजरती है। किसी देश में से होकर गुजरती, तो बड़ी गड़बड़ होती। फीजी और एल्वुसियन टापू इस तिथि-रेखा पर पड़ते हैं; पर दो तारीखों की इस गड़बड़ से उन्हें बचाने के लिए, तिथि-रेखा को इन टापुओं के समीप थोड़ा वक्र कर दिया गया है।

वैज्ञानिक दृष्टि से समय-निर्धारण और उसकी माप, दो गतियों पर निर्भर है। एक है, पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने की गति और दूसरी, उसके सूर्य के चौगिर्द घूमने की गति। पहली गति दिनमान के लिए है, तथा दूसरी गति वर्षमान के लिए। किसी भी माप के लिए उसका आरंभ-बिंदु निर्धारित करना भी आवश्यक

काल : जीवन

कौन जाने, कब से यह होड़ चल रही है—काल में और जीवन में! पानी के बुद्बुदे की तरह काल हर बार जीवन को शून्य कर देता है; मगर द्वितीया के चंद्रमा की तरह जीवन फिर काल के निःसीम वक्ष पर उदित हो जाता है। कौन रहेगा, कौन जाने? अभी तक तो काल ही जीता है, और दर्प के साथ उसने जीवन की चिता पर खड़े होकर दुंदुभि बजायी है; किंतु जीवन ने पनाह माँग ली हो, सो बात भी नहीं है। वह अपने संकल्प और साहस में अडिग-अथक है। बहुत सम्भव है कि, अंततोगत्वा वही काल को पछाड़ दे!

—डा० तहा हुसैन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता है। हम हिन्दू अपना दिन प्रारंभ करते हैं सूर्योदय से। पर सूर्योदय का समय इतना परिवर्तनशील है कि, हम समय की माप का प्रारंभ उससे नहीं कर सकते। हाँ, मध्याह्न में सूर्य के खमध्य-रेखा को पार करने का समय, इस विषय में बहुत कुछ मददगार हो सकता है। परन्तु क्योंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर २३½ अंश के कोण पर झुकी हुई है और उसका सूर्य-परिक्रमा का पथ भी गोल नहीं, अपितु अंडाकार है, इसलिए एक मध्याह्न से दूसरे मध्याह्न का समय, वर्ष भर समान नहीं होता। इस कारण समय-निर्धारण के लिए सूर्य देवता पर भी पूर्णतः विश्वास नहीं किया जा सकता।

अतः खगोल-शास्त्रीय गणना के लिए, तारों को आधार मानकर तारा-समय की कल्पना की गयी है। सूर्य की अपेक्षा तारे हमसे अपार दूर हैं। सूर्य की परिक्रमा करते हुए छह महीने में पृथ्वी, आकाश में बीस करोड़ मील स्थानान्तरित हो जाती है। परन्तु तारों की अपार दूरी के कारण, उसके साथ पृथ्वी के स्थानान्तर का अनुपात नगण्य-सा होता है। इस कारण, तारों के आधार पर की गयी समय-गणना में, न-जैसा ही फर्क पड़ता है। परन्तु रोजमर्रा की समय गणना के लिए तारा-समय काम का नहीं। चालू घड़ियों और तारा-समय पर आधारित घड़ियों में, छह महीने में १२ घंटे का अंतर पड़ जाता है।

दूसरी ओर, अगर घड़ियाँ सूर्य के संक्रमण के आधार पर ही मिलायी जायें, तो उनमें सोलह मिनट की घट-बढ़ हो जायगी। नवम्बर के प्रारंभ में एक तरफ, तो फरवरी के मध्य में दूसरी तरफ। सूर्य-समय के इस अंतर के समीकरण का परिणाम ही ग्रीनविच-मध्यमान समय (ग्रीनविच मीन टाइम=जी. एम. टी.) है।

इसके लिए वैज्ञानिकों ने एक काल्पनिक सूर्य की सृष्टि की है। यह कल्पित सूर्य, समय के समान अंतर से एक खमध्य-रेखा से दूसरी खमध्य-रेखा पर पहुँचता है—अर्थात् एक मध्याह्न से दूसरे मध्याह्न के बीच बिलकुल समान समय देता है और असली सूर्य के समान ही, एक वर्ष में अपना परिभ्रमण पूरा करता है। मनुष्य के उर्वर मस्तिष्क की यह उपज ग्रीनविच-समय में परिलक्षित होती है।

ग्रीनविच की ही नहीं, अपितु अन्य प्रमुख वेधशालाओं की भी, जी. एम. टी. के आधार पर चलनेवाली प्रामाणिक घड़ियाँ, आज सारे संसार को समय बतलाती हैं। इनमें एक दिन में एक सेकेंड के हजारवें हिस्से से अधिक अंतर नहीं पड़ता।

✶

जब नरभक्षियों के टापू में एक नये पादरी को धर्मप्रचार के लिए भेजा गया, उसने नरभक्षियों के राजा से जाकर पूछा—"महाराज, मेरे पूर्ववर्ती पादरी कैसे थे?" उत्तर मिला—"बड़े ही स्वादिष्ट थे।"

✶

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

.... जब मोतीलाल जीवन माँगने निकलेगा

महावीर त्यागी-लिखित एक रसार्द्र संस्मरण

*

मैं इन्कम् टैक्स आदि की छान-बीन कमेटी के सिलसिले में मसूरी क्या आया, कि पुरानी यादों ने पागल बना दिया। इत्तफाक से मेरे ठहरने का प्रबन्ध जिस मकान (श्री रूइयाजी के 'नारायण-निवास') में किया गया था, उसने फिर से पुराना उत्साह भड़का दिया। यहीं ठहरे थे भाईजी (पं. मोतीलाल नेहरू), अपने अन्तिम समय में। मैंने जवाहरलालजी को एक पत्र लिख कर यह घटना याद दिलायी, तो वे भी फड़क उठे।

उन्हीं दिनों जवाहरलालजी भी जेल से छूट कर उनसे मिलने मसूरी आये थे। कमला भाभी भी साथ में थीं। उनके लौटने पर, मैंने अपनी बेवकूफी से एक जल्सा देहरादून में रख लिया था। जल्से से पहले श्री उग्रसेन बैरिस्टर के घर पर चाय थी। मैं जल्से का सारा प्रबन्ध ठीक करके श्री उग्रसेन बैरिस्टर के घर गया, तो क्या देखता हूँ कि, कोतवाल-शहर मय दो तीन कानिस्टेबिलों के वहाँ खड़े हैं। पूछने पर पता चला कि, कलक्टर ने दफा १४४ लगा दी है, जिसके नोटिस की तामील करने ये लोग तशरीफ लाये हैं।

सत्याग्रह आन्दोलन जोरों पर था और जवाहरलाल कांग्रेस के प्रधान थे। दफा १४४ को तोड़ कर जेल जाना कांग्रेस-वालों के लिए अनिवार्य था। मुझे डर लगा कि, इस फजीते का घड़ा मेरे गंजे सिर पर फूटेगा। सारे कांग्रेसवाले कहेंगे कि, छोटे-से स्थानीय जल्से के लालच में तुमने जवाहरलाल को जेल भिजवा दिया। अभी किसी से मिल भी न पाये थे; और अगले ही दिन इलाहाबाद में सूबे भर के किसान-कार्यकर्ताओं को परामर्श के लिए बुलाया हुआ था।

मेरे तलवों के नीचे से धरती सरक गयी। आव देखा न ताव—मैंने जल्दी से एक बाइसिकल उठायी और मसूरी की सड़क पर अंधाधुंध धावा बोल दिया। आध मील दूर जवाहरलाल की मोटर मिली। मुझे देखते ही उन्होंने मोटर रोक दी। मैंने साइकिल बराबर के दुकानदार के सुपुर्द की और जवाहरलालजी से कहा कि, दफा १४४ का नोटिस जारी हो गया है। माथे पर हाथ मार कर बोले—"तुमने गजब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर दिया। मेरा सारा प्रोग्राम खराब हो गया। बस कमला, तुम पापा की देखभाल करना। मैं तो चला। आइ एम डन।" मैंने कहा – "एक तरकीब हो सकती है।" बोले–"अब क्या खाक तरकीब हो सकती है। आपकी हिमाकत का नतीजा है।" मैंने कहा–"कोतवाल तो उग्रसेन के घर इंतजार कर रहा है। आप सीधे मीटिंग में चले चलिए; बस दो शब्द कह कर जल्सा खत्म कर देंगे।" बोले–"यह ठीक है, जल्दी मोटर में बैठो।"

हम तीनों सीधे जल्से में पहुँचे। मैं बिना किसी प्रस्ताव के जल्से का अध्यक्ष बन गया और उन्होंने मेज पर खड़े होकर अपना भाषण आरम्भ कर दिया। निश्चय हुआ था कि, दो टूक बात कह कर जल्सा खत्म कर देंगे। पर यह हजरत तो भीड़ के आशिक ठहरे; बोलते ही चले गये। मेरा ध्यान तो फाटक पर लगा था। १०-१५ मिनट में कोतवाल और बहुत-से पुलिस वाले आ गये। मैंने कुर्सी पर बैठे-बैठे यह इंतजाम कर लिया था कि, यदि पुलिस आ ही जाय, तो वालंटियर और जनता की भीड़, किसी को जवाहरलाल के पास तक न पहुँचने दे। पुलिस के देखते ही मैंने जवाहरलालजी का कुर्ता झटकना शुरू कर दिया। पर ये तो जोश में आकर और भी जोर-जोर से बोलने लगे। तकरीर खत्म करने ही को थे कि, पुलिस मंच तक आ गयी। मेरे पूछने पर, कोतवाल ने तुरंत ही नोटिस मेरे हाथ में दे दिया।

मैं सत्याग्रही तो था, पर सच-झूठ का भेद अधिक नहीं करता था; ध्येय की प्राप्ति के लिए झूठ भी बोलना पड़े, तो बोलता था। एक मित्र ने कहा–"गांधीजी से कह दूँगा।" मैंने उत्तर दिया– "कह देना। एक झूठ उनके सामने भी बोल दूँगा।" यह 'संकट-मोची' झूठ भी थके-माँदों का एक शस्त्र है, आड़े वक्त पर काम आता है; इसकी बहुत अवहेलना करना ठीक नहीं है। यह सौगात भी परमात्मा ने केवल मनुष्य जाति को ही प्रदान की है; दूसरे प्राणियों को

रेलें : सरकार

जैसे ही मैं अंदर घुसा, तो बिगड़ पड़े, तनी हुई भृकुटियों के बीच सक्रोध बोले – "पूरा एक घंटा हो गया, खाना खराब हो रहा है, और एक आप हैं, जो मटरगश्ती कर रहे हैं, खबर ही कर देते...." मैंने बीच में ही बात काटना जरूरी समझा, जरा हँसते हुए कहा– "जी, मैं नहीं, रेलगाड़ी कर रही थी मटरगश्ती ! अब स्वराज्य जल्दी लाइए, तो गाड़ियाँ जरा समय से चलने लगें।" वे मेरी तरफ ताकते रहे, फिर बोले – "तुमने ठीक कहा, अब स्वराज्य जल्दी ही आयेगा। दर-असल, जो सरकार रेलें समय पर नहीं चला सकती, वह शासन भी नहीं कर सकती।"

– डा. नगेंद्रनाथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं। पर भगवान् ने यह नुस्खा केवल संकट-समय के लिए दिया है; हर समय इसे प्रयोग करना पाप है।

मेरा जी हुआ कि, नोटिस को फाड़ दूं; पर फिर सुझाई दिया कि, जवाहरलालजी के होते हुए मेरे नोटिस फाड़ने को, षड़यंत्र समझा जायगा। मैंने नहीं फाड़ा; पर जवाहरलालजी के कुर्ते को झटक कर भाषण बंद करा दिया। जवाहरलालजी ने नोटिस पर लिख दिया—"भाषण के बाद मिला। मुझे अफसोस है कि, मैं इसे भंग करने से वंचित रह गया।" फिर चाय पर आये और इलाहाबाद चले गये।

दिशा : समृद्धि

[चित्र : 'यूनेस्को' के सौजन्य से]

स्टेशन से लौटते ही मसूरी से टेलीफोन आ गया। बड़ी चिंता थी भाईजी (मोतीलालजी) को यह जानने की कि, क्या-क्या हुआ। सब हाल सुन कर मुझे बधाई दी और पूछने लगे—"स्टेशन पर कितनी भीड़ थी? और भीड़ में कमला को धक्का-उक्का तो नहीं लगा।" मेरे आँसू आ गये। शायद ही किसी बाप ने अपने बेटे को इतना प्यार किया हो, जितना जवाहरलालजी को किया गया है। शायद यही कारण है कि, ये हज़रत कतई 'बुते बेपीर' और 'माशूके बेमुरौवत' की तरह दीखते हैं।

इस घटना से पहले, जब मैं जेल से छूट कर भाईजी से मिलने मसूरी गया था, तो कृष्णा आंगन में रस्से पर कूद रही थी और भाईजी बरामदे में हकीम नावीना से बातें कर रहे थे। मुझे देखते ही बोले— "मियाँ की ली-दी सिर्फ एक ही तो बीवी थी; वही जेलखाने चली गयी। अब क्या खाली हाथ हिलाते हुए घर आये!" फिर अंदर के कमरे से एक बड़ा-सा लिफाफा लाये। उसी दिन उनके पास शिमले से एक लम्बा-सा तार आया था। मुझे वह तार पढ़ा कर बोले—"देखते हो सरकारी मुलाजिमों की देशभक्ति! 'टाप-सीक्रट' है; और न जाने कितने हिन्दू-मुसलमान तार-बाबुओं की उँगलियों से निकलता हुआ आया होगा।"

तार दस-पंद्रह सफे का था। भाईजी उन दिनों केंद्रीय एसेम्बली में कांग्रेस-पार्टी के नेता थे। उसी दिन वाइसराय ने किसी फाइल पर हस्ताक्षर किये थे, जिसमें एक आर्डनैन्स जारी करने का प्रस्ताव था। उस प्रस्ताव के अनुसार, कांग्रेस गैर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कानूनी घोषित होने जा रही थी। साथ में यह भी था कि, जो कांग्रेस में भाग लेगा या कांग्रेस वालों को रुपये-पैसे की सहायता देता पकड़ा जायेगा, उसकी सारी सम्पत्ति-जायदाद जब्त कर ली जायगी। इस तार में उस आर्डनैन्स का सार था। उस घटना को याद करके मुझे खयाल हो आता है कि, स्वराज्य केवल हम कांग्रेस वालों ने ही नहीं लिया है; बल्कि इसमें उन लोगों का भी काफी हाथ है, जिन्होंने हृदय से देश की मूक और गुप्त सेवाएँ की हैं। हाँ, तो बात भाईजी की चल रही थी।

जवाहरलालजी की और कमला भाभी की जो दो तस-वीरें दीवार पर टँगी थीं, उनकी ओर इशारा करते हुए भाईजी बोले—"जब मोतीलाल अपनी इस औलाद के साथ, और वह जो रस्से पर फुदक रही है, उसकी उँगलियाँ पकड़ कर बाजार में भीख माँगने निकलेगा, तो इस आर्डनैन्स के डर से बहुत-सी दूकानों से मोतीलाल का हाथ खाली वापस हो जायेगा। आनंद-भवन तो जब्त हो जायेगा ही। मैंने हिदायत भेज दी है कि, प्रयाग की रेती में एक झोंपड़ी बना कर तैयार रखें।"

तसवीरों की ओर आँखें उठाते ही आँसू ऐसे छलक आये कि, मानो प्यासे पिता की प्याली खाली देख कर, उन दोनों तसवीरों ने अमृतांजलि से पानी बरसा दिया हो। मुझे भी अपनी साल भर की उमा याद आ गयी, जो अपनी अम्मी के साथ उसी जेल में अपना बचपन बिता रही थी, जहाँ कमला भाभी और श्रीमती उमा नेहरू आदि बंद थीं। रोना भी तो एक छूत की बीमारी है! मेरी आँखें भी गंदला गयीं। बाप भीतर और बेटा बाहर हो, तो कोई गम नहीं; पर जब बाप बाहर और बेटा-बेटी जेल में हों, तो वेदना असहनीय हो जाती है। फिर मोतीलालजी जैसे महान् व्यक्ति का यह कहना कि "बहुत-सी दुकानों से मोतीलाल का हाथ खाली लौटेगा" मुझसे भुलाया नहीं जा सकता। इस वाक्य ने मुझे हिला दिया। (इस घटना की याद ने मुझे अपने जीवन की संकटमय घड़ियों में सांत्वना प्रदान की है।)

राजा थे

दो बार बम्बई में उनकी अर्दली में रहने का मौका मिला था। दूसरी बार जब वे जाने लगे, तो बख्शीश के लिए मुझे भी बुलवाया। मैंने दस रुपये लेने से इंकार कर दिया। जरा गरम होकर बोले– "क्यों? कितना चाहते हो?" मैंने कहा– "लड़की की शादी करनी है सरकार! इस बार सौ माँगूँगा।" फौरन पाँच सौ दिलवाये, बोले – "खाना खिलानेवाले का दर्जा 'बाप' का होता है। जाओ, खुशी से बेटी की, यानी हमारी बहन की शादी करो।"

– इब्राहीम आदिल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहसा मेरे मुख से निकल पड़ा—"आप कैसी बातें करते हैं भाईजी ! मुझे तो यह सुनकर डर लगता है।" बोले—"डर लगता है, तो तुम 'हैंचो' घर बैठो। ऐसे आदमी का कांग्रेस में क्या काम ?" यह बात मुझे तीर की तरह चीर गयी। कहीं सचमुच डरपोक न समझा जाऊँ। मैंने खड़े होकर बड़े जोर से कहा—"भाईजी, बीमारी की वजह से आपका दिमाग चल गया है, जो ऐसी बहकी-बहकी बातें करते हैं। क्या हिन्दुस्तान इस बात को बरदाश्त कर सकता है ? जिस दिन भीख माँगने निकलोगे भी, सारे देश में खून की नदियाँ बह जायेंगी। याद रखना, मसूरी से देहरादून तक सारे रास्ते में गमलों की तरह कटी हुई गर्दनें सजा दूँगा। आग लग जायेगी आग। आप हैं किस होश में ! अब यह देश ज्यादा जुल्म बरदाश्त नहीं करेगा। एक-एक ग्रामवासी देशभक्ति के रंग से रंगा पड़ा है।"

कैसे खुश हुए भाईजी मेरी बौखलाहट से ! जवाहरलाल होते, तो मेरा हाथ पकड़कर नीचे उतरने की सीढ़ी दिखा देते। हकीम नाबीना से भाईजी ने कहा—"इनकी तरह हजारों हैं कांग्रेस में। ऐसों की ताकत से ही चल रही है तहरीक। यह कभी फेल हो सकती है ?" उन बेचारों को क्या पता था कि, स्वराज्य होने पर यही माई के लाल बेच खायेंगे कांग्रेस को, और पदों के लालच में बहा देंगे सारी देशभक्ति पानी की तरह ! जो त्याग और बलिदान की भावना अपने अंतिम काल में स्व. पंडित मोतीलाल नेहरू में थी, वह शमा पर चट-चट करके अपने को न्यौछावर करने वाले परवानों में मिलेगी; किसी दूसरी जगह नहीं।

★

परेशान

शांति-निकेतन में पंडित जवाहरलाल नेहरू आये थे। रात को वहीं बंगाल के कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं की सभा आयोजित थी। मैं भी सभा में था। पंडितजी का भाषण शुरू होते-न-होते कैमरामैनों ने फोटो लेने की झड़ी-सी लगा दी; रुकने का नाम नहीं लेते थे। रात का वक्त; फ्लैश-बल्बों की तेज चमक से आँखें चौंधियाने लगीं। बड़ा गुस्सा आ रहा था फोटोग्राफरों की इन लगातार परेशान करने की हरकतों पर। मन में आया कि, क्यों न खुद पंडितजी से कह कर एक कड़ी डाँट दिलवाऊँ इन्हें। खड़े हो कर मैंने पंडितजी को टोक कर कहा—"पंडितजी, इन फोटोग्राफरों ने तो परेशान कर दिया। आँखें चौंधियाने लगी हैं।" पंडितजी क्षणभर मुस्करा कर बोले—"वाह साहब, बड़ी नाजुक आँखें मालूम हो रही हैं आपकी; रोशनी से परेशान हैं आप !" सब खिलखिला कर हँस पड़े। —गोविंदराम खेतान

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साहस और सफलता

फरओ-कालीन मिस्र देश में लोग सूरज निकलने से पहले उठ जाते थे और दिन में भी कभी नहीं सोते थे; क्योंकि उस समय वहाँ यह विश्वास प्रचलित था कि, तकदीर बड़े सवेरे ही अपनी कलम लेकर दुनिया में निकल पड़ती है और दिन में सोने वाले आलसियों के निकट वह नहीं जाती। ऐतरेय के 'चरैवेति' मंत्र में तो पुरुषार्थ का मूल ही कर्मशीलता के भीतर बतलाया है। यहाँ हम हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक जहूरबख्श द्वारा जञ्जालुद्दीन रूमी के वाणी-विपिन से चुने हुए कुछ पुष्प हमारे पाठकों को भेंट करते हैं।

*

परमात्मा ने परिश्रम का फल ऐसा बनाया है, जो मधुर है – अमृत के समान स्वादिष्ट है; परन्तु आलस्य में ऐसा फल लगाया है, जो कड़वा है – विष के समान घातक है।

परिश्रमी जन भाँति-भाँति के कष्ट उठाते हैं, व्रत एवं नियम से संयुक्त महा-कठिन तपोमय अनुष्ठान सिद्ध करते हैं और जहाँ रहते हैं, वहीं सुन्दर स्वर्ग बना लेते हैं। परन्तु आलसी जन, आलस्य की उपासना ही उपयुक्त समझते हैं, और अपने निवास-स्थान के निकट ही भयानक नरक-कुण्ड का निर्माण कर लेते हैं। इसीलिए हदीस में यह उल्लेख आया है कि, स्वर्ग छिपा हुआ है और नरक प्रत्यक्ष है।

× × ×

पुरुषार्थ का वृक्ष ऐसा होता है कि, वह ज्यों-ज्यों अग्नि के जल से सींचा जाता है, त्यों-त्यों फल देता है। अभिप्राय यह है कि, कार्य ज्यों-ज्यों परिश्रम तथा कठिनाई से किया जाये, त्यों-त्यों वह सुन्दर एवं शीघ्र फलदायक होता है। कुरान-शरीफ में अल्लाह-ताला ने ठीक ही कहा है कि, यदि तुझमें राई के दाने-बराबर भी पुरुषार्थ होगा, तो तुझे अमृत से स्नान कराया जायेगा।

× × ×

तूने ईसा को छोड़ दिया है और गधे को पकड़ रखा है। यदि तू ईसा को पकड़ लेता, तो तुझपर जीवन के सम्पूर्ण रहस्य प्रकट हो जाते और तेरा बेड़ा भी पार हो जाता; परन्तु तू तो गधे पर ही आत्म-विस्मृत हो रहा है। क्या तू नहीं जानता कि, गधों की संगति में विद्वान् भी गधे बन जाते हैं? फिर तू तो पहले से ही गधा है; गधे की संगति में तो, गधे से भी निकृष्टतर हो जायेगा!

× × ×

यदि तू सुख-समृद्धि का भांडार चाहता है, तो निस्संकोच अपने सिर पर दुःख,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कष्ट और पुरुषार्थ की शिलाएँ उठा ले। बिना दुःख उठाये, बिना कष्ट सहे और बिना पुरुषार्थ किये कदापि सुख-समृद्धि का भांडार हाथ नहीं आता।

× × ×

हजरत मोहम्मद मुस्तफा का कथन है —"यदि मैं मन के विरुद्ध बोलने लगूँ, तो बड़े-बड़े पहलवानों का हृदय पानी बन कर बह निकले। अल्लाह-ताला ने हजरत आदम से कहा था — हमने तेरी संतति को विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों से पुरस्कृत किया है। रे मानव, जब तेरे पास हृदय है, बुद्धि है और शक्ति है, तब तू हाथ-पैर क्यों नहीं हिलाता, पुरुषार्थ क्यों नहीं दिखाता और परम श्रेय के निकट पहुँचने से दूर क्यों भागता है?"

× × ×

पुरुषार्थ के पथ का महत्व तो बस, परमात्मा के प्यारे ही जानते हैं। सांसारिक मनुष्य इससे सदा परे रहते हैं। पुरुषार्थी जब इस पथ पर पैर रखते हैं, तो वे प्रगाढ़ अंधकार से बचने के लिए, अपने हाथ में 'तप' का दीपक थाम लेते हैं। जो लोग, इस प्रकार, तपश्चर्या में अपनी आयु की अमूल्य घड़ियाँ बिताते रहते हैं, यदि वे इसमें आनंद का अनुभव न करते, तो चिरकाल तक वनों और पर्वतों की धूल क्यों छानते फिरते?

× × ×

जब तू इस पथ पर चलने के लिए उद्यत हो जाये, तो मौन रह और पथिक जो उपदेश दें, उसे ध्यान से सुन! इस प्रकार जब तेरी मति परिपक्व हो जाये, तो फिर आगे की ओर पैर बढ़ा। यह नियम है कि, बच्चे पहले सुनते हैं; और तत्पश्चात् बोलना प्रारंभ करते हैं।

× × ×.

तू अभिमान छोड़ कर विनम्रता स्वीकार कर; अपने बल का विश्वास त्याग कर, विनम्र भाव से परमात्मा के सामने रोया कर। यदि तू ऐसा करेगा, तो निश्चय ही, दीन-बन्धु के दया-सिंधु में, वह तूफान उठेगा, जो तुझे मूल्यवान् मोती और हीरे देकर रहेगा। इसके पश्चात्, तेरे सामने उपासना का पथ प्रशस्त हो जायेगा और उसपर तेरे पैर स्वयमेव चल निकलेंगे।

× × ×

जहाँ दर्द होता है, वहाँ दवा भी

जीवन

नन्ही चिड़िया के जब पंख आये, तो अपनी माँ के साथ वह घोंसले से बाहर निकली। देखा, तो हक्काबक्का हो गयी— कोई अपनी जगह स्थिर नहीं, सब गतिवान्। चारों तरफ भाग-दौड़ और चहल-पहल। चतुर माँ बिटिया की उलझन ताड़ गयी— "यह पहला सबक है, गाँठ बाँध लो! चलने का नाम ही जीवन है — रुको और चुको.... हाँ, फैलाओ पंख .... उस फुनगी तक!" —श्री माताजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहुँचती है। इसी प्रकार जो दुःखातुर होकर परमात्मा को पुकारता है, उसपर प्यारे का प्रेम-पूर्ण हाथ जा पहुँचता है—उस पर प्यारे की दया का मेह जा बरसता है।

× × ×

यदि तू परमात्मा से मिलना चाहता है, तो एक बार इस लोहे पर दृष्टि-पात कर। यह पहले श्याम-वर्ण था, मल-युक्त था, प्रकाश-विहीन था; परन्तु अग्नि के संयोग से अब कितना उज्वल, निर्मल और प्रकाशवान् हो उठा है। तू इस प्रकार कब तक डरता रहेगा और चिमगादड़ बना उलटा लटकता रहेगा? अरे मूर्ख, यह भय-भीत होना छोड़, यह इधर-उधर भटकना छोड़। वह तो तौबा-मात्र से प्रसन्न हो जाता है। सत्य तो यह है कि, जो उससे मिलने की चेष्टा करता है, वह उसे अवश्यमेव पाता है।

× × ×

जब बच्चा अपराध करता है, तो माता उसे मारती-पीटती है—दंड देती है। परन्तु बच्चा दंडित होने पर भी, माता की गोद से चिपट जाता है। यह कदापि नहीं सोचता कि, सहायतार्थ, माता को छोड़ कर किसी अन्य की शरण में दौड़ा जाये। हे मानव, जब अबोध बच्चा भी माता के अतिरिक्त किसी अन्य का मुँह नहीं ताकता, तो क्या तू उससे भी गया-बीता है, जो परमात्मा को छोड़ कर किसी अन्य का अवलम्ब-आश्रय लेना चाहता है?

★

अंग्रेजी शासन का एक दिलचस्प किस्सा सुना था। एक सरकारी संस्था के लिए सरकार ने एक मकान बँधवा दिया। बड़े जिलाधीश-द्वारा मकान का उद्घाटन हुआ। अच्छे-अच्छे भाषण हुए। अन्त में संस्था के संचालक ने जिलाधीश के हाथ में, एक अर्जी दे दी। संचालक ने कहा कि, जिस मकान का उद्घाटन आपने किया है, उस मकान की मरम्मत के लिए पैसा मंजूर करने के लिए यह अर्जी है। जिलाधीश ने कहा—"अभी तो मकान तैयार हुआ है। आज ही उसकी मरम्मत की बात क्यों छेड़ रहे हो?" संचालक ने कहा—"सो तो मैं भी जानता हूँ। पर इन दिनों सरकारी मकान कंट्राक्टरों के जरिये बनवाये जाते हैं। वे देखते-देखते ही काबिले-मरम्मत हो जाते हैं...दूसरे, यदि आज अर्जी दूँ, तो मंजूरी में चंद साल लग ही जायेंगे। तीसरे, यह अर्जी नीचे से ऊपर भेजूँ, तो शायद आप तक पहुँच ही नहीं पाये। आपकी मुलाकात तो और भी दुश्वार। आज अर्जी पर आपके हस्ताक्षर होंगे। अर्जी ऊपर से नीचे भेजी जायेगी। उसे ताक में रखने की किसी की भी हिम्मत नहीं होगी।" —'मंगल-प्रभात' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं भी हो गयी लाल

अगर रंग नहीं, तो कौन किसको पहचाने? सफेद भी तो रंग है— बेरंग तो आकाश भी नहीं। जो व्यक्त है, वह सब रंगमय है— अव्यक्त की कौन कहे, जिसके बारे में कल्पना भी सम्भव नहीं; मगर कबीर ने भक्ति की नसैनी लगाकर एक दिन व्यक्त-अव्यक्त की दूरी पार कर ली थी और अव्यक्त के प्रथम दर्शन में ही वह विह्वल भाव में फूट पड़ा था— "लाली मेरे लाल की जित देखौं तित लाल, लाली देखन मैं गयी मैं भी हो गयी लाल!" यहाँ हम रंग के सर्वजन-गोचर एवं केवल भौतिक रूप को ही व्यक्त करना चाहते हैं।

✡

हममें से अधिकांश व्यक्तियों को, जो सौभाग्यवश कान पर ध्वनियंत्र (ईयर-फोन) और आँख पर चश्मा चढ़ाने की आफत से मुक्त हैं, प्रायः अपनी श्रवण-शक्ति और दृष्टि की तीव्रता पर बड़ा अभिमान होता है। हम समझते हैं कि, कोई ध्वनि और कोई वस्तु, हमारे आँख-कान की पकड़ में बिना आये नहीं रह सकती। परन्तु यह हमारा भ्रम है; क्योंकि हमारे कानों और नेत्रों की बनावट ही ऐसी है कि, वे सब ध्वनियों को सुनने में और सब दृश्यों को देखने में समर्थ नहीं हैं। हमारे कान न बहुत धीमी आवाज सुन सकते हैं और न बहुत जोर की आवाज। नीचे और ऊपर की दो निश्चित स्वर-कम्पन (फ्रीक्वेन्सी) वाली स्वर-लहरों के बीच की आवाजें सुनने में ही हमारे कान समर्थ हैं; उससे नीचे या ऊपर की नहीं।

इसी प्रकार विभिन्न रंग, विभिन्न नाप की लहरें प्रसारित करते हैं। आँखों का उन लहरों को पहचानना ही रंगों का दर्शन है। युवती के कपोल पर फैली लालिमा को, आकाश में व्याप्त नीलिमा को और वन-उपवन की हृदयहारी हरीतिमा को हमारी आँखों तक पहुँचाने का काम ये रंग-तरंगें ही करती हैं। सबसे छोटी नाप की लहरें बैंगनी रंग का भान कराती हैं। फिर क्रमशः बड़ी नाप की लहरें आसमानी, नीले, हरे, पीले, नारंगी और लाल रंग का भान कराती हैं। बैंगनी से छोटी और लाल से अधिक लंबी लहरों को, हमारी आँखें ग्रहण नहीं कर सकतीं।

प्रकृति के रंगों का रहस्य बड़ा गहरा और दुरूह है। आकाश नीला दीखता है, तो हम मान बैठते हैं कि, आकाश का रंग नीला है। परन्तु यदि सचमुच आकाश का रंग नीला है, तो फिर वह रात को भी नीला ही दीखना चाहिए। वस्तुतः यह नीला रंग आकाश का नहीं है। जैसा कि आप जानते हैं, सूर्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैंगनी, आसमानी, नीली, हरी, पीली, नारंगी और लाल, इन सब रंगों की लहरें प्रसारित करता है। इन सातों रंगों का मिश्रण ही सफेद रंग है। सूर्य की सफेदी वास्तव में सात रंगों की लहरों का संमिश्रित रूप है। उन सातों लहरों में से लालिमा वाली लहरें, जो बड़ी लंबी हैं, वातावरण को पार कर, दूर ऊपर चली जाती हैं; पर नीले रंग की लहरें, जो अपेक्षाकृत छोटी होती हैं, हवा के परमाणुओं से टकरा कर हमारी ओर चली आती हैं। इसीलिए हमें आकाश नीला-नीला दीखता है।

जब सूर्य ठीक सिर पर होता है, तब हमें आकाश में रंगों का वह मेला देखने को नहीं मिलता, जो सुबह या शाम को देखने को मिलता है। क्यों? जब मध्याह्न में सूर्य-किरणें ऊपर से ठीक नीचे आती हैं, तो वे वातावरण में तैरते रहनेवाले विविध पदार्थों की कम-से-कम स्थूल तह को पार करती हैं। परन्तु जब सूरज उगता या डूबता होता है, तब उसकी किरणें वातावरण में दिगंतसम रूप में प्रवेश करती हैं, जिससे उन्हें धूलिकणों का बड़ा गहरा परदा पार करना पड़ता है। उस अवस्था में बेचारी नीले रंग की लहरें तो धूलिकणों अथवा बादलों से टकरा कर बिखर जाती हैं; परन्तु लाल रंग की लम्बी लहरें उन्हें पार कर, हमारी आँखों तक पहुँच जाती हैं। यही कारण है कि, सूर्य के उदय और अस्त के समय आसमान पर नयनाभिराम लालिमा का साम्राज्य छा जाता है। आकाश धूल या जल के कणों से जितना ही अधिक पूरित होगा, उतनी ही गहरी लालिमा प्रातःकाल एवं संध्या में होगी।

रंग-अरंग : व्यक्त-अव्यक्त

[चित्र : केयट का एक रहस्य-रंजित चित्र]

"प्रकृति भवन के सब विभवों से सुन्दर सरस सबेरा"—कवि ने कहा है; और उसकी बात है भी सत्य। प्रातः-काल और संध्या में होनेवाला प्रकाश और अंधकार का संमिश्रण कितना संमोहक है! परन्तु उसके लिए हमें प्रातःकाल और संध्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का नहीं, अपितु आकाश-व्यापी धूलिकणों का आभारी होना चाहिए। यदि पृथ्वी के चारों ओर का वातावरण पूर्णतया विशुद्ध होता, अर्थात् उसमें धूल व अन्य पदार्थों के कणों का सर्वथा अभाव होता, तो न उषा सूर्य का स्वागत करती, न संध्या उसे विदा देती। तब अचानक ही दिन का प्रकाश धरती पर फैल जाता और अचानक ही उसका लोप भी हो जाता।

रंग की लहरों के विक्षेप-विलास का सबसे रोचक रूप है इन्द्रधनुष। वायुमंडल में स्थित जलकण, सातों रंगों की लहरों को ग्रहण करने में समर्थ होते हैं। कभी-कभी कुछ विशेष स्थानों पर, जलकणों का कुछ इस प्रकार का जमाव हो जाता है कि, उसके अलग-अलग भाग अलग-अलग रंगों की लहरों को ग्रहण करते हैं और मिल कर सतरंगे दीखने लगते हैं। फव्वारे की धारा की तरह, ये जलकण निरंतर बदलते रहते हैं; परन्तु जो भी कण उस स्थान-विशेष से होकर गुजरते हैं, वे यह रंगीन परिधान पहनते हैं और अपनी छवि हमें दिखाते हैं।

वातावरण में पृथ्वी के धूलिकण तो उपस्थित हैं ही, स्वयं सूर्य भी सूक्ष्मातिसूक्ष्म कण धरती पर भेजता रहता है। ये कण भी कभी-कभी बड़ा अजीब नजारा पेश करते हैं। और यह नजारा होता है ध्रुव-प्रदेश पर प्रकाश-धारा के रूप में। इस प्रकाश-धारा के सौंदर्य की समता अत्यंत शोभाशाली सूर्यास्त से ही हो सकती है। उत्तरी ध्रुववृत्त में उत्तरी प्रकाश-धारा और दक्षिणी ध्रुववृत्त में दक्षिणी प्रकाश-धारा प्रकट होती है। उत्तरी प्रकाश-धारा, पर्वत-शृंखला पर धधकती आग के समान प्रकट होती है और बढ़ती-बढ़ती कभी विशाल कमान का आकार धारण कर लेती है, तो कभी परदे के समान लटकती दीखती है। यह रंगीन कमान बहुधा अत्यंत चंचल होती है; उसका श्वेतपीत वर्ण लाल व हरे रंग से रंजित हो जाता है। उसमें से किरणें ऊपर उछलती हैं, विलीन होती हैं, पुनः अग्रसर होती हैं। सारा उत्तरी आकाश मनमोहक रीति से फहराती रंग-बिरंगी ध्वजाओं एवं फीतों से परिपूर्ण हो जाता है।

सूर्य से उद्भूत ये सूक्ष्म कण सैकड़ों-हजारों मील प्रति सेकेंड की गति से पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश करते हैं। पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र के आकर्षण के कारण ये कण ध्रुव-प्रदेशों की ओर जाते हैं और वहाँ चलने वाली विद्युत्-धाराओं से प्रभावित होकर ये आक्रमणकारी परमाणु, ३५ मील की ऊँचाई और ६०० मील की लम्बाई में हवा के परमाणुओं को चमका देते हैं।

प्राचीन ऋषियों ने सूर्य को "सर्वलोकस्य चक्षुः" अर्थात् सारे संसार की आँख कहा है। वही सूर्य इन रंगों का जनक भी है। अपनी रंग की लहरों से धूल के कण, पुष्प की पंखुड़ी, पंछियों के परों को चुम्बित कर, वह जिस रूप-राशि का सृजन करता है, वह तो वर्णनातीत ही है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्थर की लकीर

गांधीजी से एक बार एक व्यक्ति ने कहा – "बापू, यह दुनिया बड़ी बेईमान है। आप तो जानते हैं, मैंने ५० हजार रुपये दान देकर धर्मशाला बनवायी; पर अब लोगों ने मुझे ही उसकी प्रबंध-समिति से हटा दिया है। धर्मशाला नहीं थी, तो कोई नहीं था; पर अब पचास अधिकार जतानेवाले आ गये।...." उसकी बातें सुन कर बापू गम्भीर हो गये; बोले– "तुम्हें यह निराशा इसलिए हुई है कि, तुमने 'दान' का सही अर्थ नहीं समझा। वास्तव में, किसी चीज को देकर कुछ प्राप्त करने की आकांक्षा दान नहीं, व्यापार है। और, जब तुमने व्यापार किया, तो लाभ-हानि की सम्भावना तो रहेगी ही!"

—किशोरभाई मश्रुवाला

सुप्रसिद्ध शायर मुहम्मद इकबाल से एक बार उनके एक हिन्दू मित्र ने कहा– "आपके धर्म में एक बात बहुत बुरी है! वह यह कि, काफिर का काम तमाम करना महान् धार्मिक कर्म है।" इकबाल बोले– "इस्लाम ही क्यों, यह तो सभी मजहबों की सीख है।" मित्र चौंके – "नहीं तो, हमारा हिन्दू-धर्म ऐसा नहीं कहता!" इकबाल मुस्कराये – "दोस्त, बदकिस्मती की बात यह है कि, लोग 'काफिर' का सही मतलब ही नहीं जानते। 'काफिर' के माने हैं, इखलाक (प्राणिजगत्) से मुहब्बत न करने के जज्बात! इस्लाम की सीख यही है कि, हर आदमी के अंदर इखलाक के लिए मुहब्बत पैदा करो। इसके लिए क्या यह जरूरी नहीं है, कि उसके भीतर के काफिराना जज्बात का खात्मा किया जाये?"

—असगर गोंडवी

दक्षिण-भारत के स्वनामधन्य दार्शनिक-कवि तिरुवल्लुवर एक दिन एक सरिता-तट पर बैठे थे। अचानक उन्होंने देखा कि, एक व्यक्ति सरिता में कूद कर अपने प्राण देना चाहता है। तिरुवल्लुवर ने दौड़ कर उसे पकड़ लिया, तो उसने शिकायत की–"जिस जीवन की कोई सार्थकता न हो, उसकी रक्षा करने से क्या लाभ?" तिरुवल्लुवर बोले–"देखो, इस दुनिया में धूल का एक कण तक निरर्थक नहीं है। अभी तुम्हारा जीवन तुम्हारे अपने लिए अनुपयोगी लग रहा है; पर निजी उपयोगिता ही तो एकमात्र उपयोगिता नहीं है। अपने लिए नहीं, तो दूसरों के लिए तुम उपयोगी बन सकते हो। और, जब तुम दूसरों के लिए अपना जीवन बिखेर दोगे, तो अपने लिए भी तुम्हारा जीवन उपयोगी सिद्ध होने लगेगा।" —श्रीनिवास शास्त्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरुणोदय की जय हो

डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित गुरुदेव का एक स्तव-स्मरण

*

जब कभी रवींद्रनाथ के विषय में लिखने का प्रयत्न करता हूँ, तो सबसे पहली बात, जो बिना सोचे ही मन में आ जाती है, वह है—मनुष्य की जय-यात्रा में उनका अखंड विश्वास। जीवन की उच्छल प्राण-धारा में उनका अडिग विश्वास था। जहाँ यह उच्छल प्राण-धारा है, वहीं मनुष्य का सर्वस्व है, वहीं आशा है। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे वाणिज्य-व्यवसाय का, प्राण की उच्छल धारा ही सब जगह प्रधान वस्तु है।

नटराज

युद्ध-विग्रह का उन्होंने कस के विरोध किया था; क्योंकि वह भय से, मोह से, लोभ से विकृत मानव का उन्माद है। राष्ट्रीयता के नाम पर पुंजीभूत गतिहीन, प्राणहीन, स्वार्थ-संभार की सड़ाँध से मनुष्य का मन विकृत हो उठा है। परन्तु इससे वे निराश नहीं होते थे; क्योंकि युद्ध इसी सड़ाँध, को झाड़ फेंकने का प्रकृतिदत्त उपचार है। युद्ध में यद्यपि मनुष्यता अपार कष्ट में फँस जाती है, पर मरती वहाँ मृत्यु है, जीतता जीवन है। सन १९१४ के पौषोत्सव के प्रवचन में उन्होंने कहा था—

"हम, जब यहाँ आनंदोत्सव मना रहे हैं, ठीक उसी समय समुद्र के उस पार, मनुष्य के साथ मनुष्य का कैसा दारुण युद्ध चल रहा है! पर वहाँ इसी प्रलय की विभीषिका पर खड़ा होकर मनुष्य अपने मनुष्यत्व का प्रचार भी कर रहा है। वहाँ इतिहास की पुकार पर लोग निकल पड़े है।

"यह नहीं होने का कि, कोई जाति अपने राष्ट्रीय स्वार्थ को पुंजित करके अपनी राष्ट्रीयता को सँकरी कर दे—इतिहास-विधाता का यही आदेश है। मनुष्य राष्ट्रीयता—राक्षसी के पदतल में बहुत दिनों से नर-बलि का उद्योग कर रहा है; इसीलिए आज उस अपदेवता का मंदिर तोड़ देने का हुक्म हुआ है। इतिहास-विधाता कहते हैं—तुम सबको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस स्वार्थ-दानव के मंदिर की दीवारें तोड़ देनी होंगी।। हुक्म मिलते ही, तोप के गोले आकर, उस मंदिर की दीवारों को तड़ातड़ चूर्ण करने में जुट गये हैं। वीरों का दल, अपने रक्त-पद्म का अर्घ्य लेकर, इस इतिहास-विधाता की पूजा के लिए निकल पड़ा है।

समुद्र के उस पार, आज मरण-यज्ञ में यही प्राणों का महोत्सव चल रहा है।"

रवींद्रनाथ ने समझा था कि, युद्ध में चाहे मनुष्य को जितना कष्ट हो, जितनी भी लांछना और गंजना सहनी पड़े, अंन्ततः मनुष्य की प्रगतिशील शक्तियों की ही विजय होगी। वही जीतेगा; जिसमें प्राण की उच्छल धारा का वेग होगा। जो सड़े विचारों और सूखे आचारों से चिपटे हैं, वे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, उन्होंने स्वेच्छा से अपने ऊपर मृत्यु की खाल डाल ली है। मनुष्यता आगे बढ़ेगी, उसे रोकने का प्रयत्न व्यर्थ होगा। इसीलिए आशापूर्ण स्वर में उन्होंने घोषित किया—

"आज जो संसार भर में क्रंदन चल रहा है, उसमें डर का सुर नहीं है; उसके भीतर से इतिहास तैयार हो रहा है। इसी में इतिहास-विधाता का आनंद है। यह क्रंदन, उन्हीं में शांत हो रहा है। उन्हीं शांतम्, शिवम्, अद्वैतम् के भीतर मृत्यु मर रही है; उन्होंने अपने हाथों, मनुष्य के ललाट पर जय-तिलक लगाया है।"

इतिहास-विधाता का प्रथम इंगित नितांत व्यर्थ नहीं गया। युद्ध का बुखार उतरा, तो संसार जैसा था, वैसा नहीं रहा। नवीन शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ। पूर्व गगन में भयंकर रंगों के भीतर से, नवीन ज्योति-लेखा का दर्शन हुआ; परंतु संसार में जिस अपदेवता के मंदिर को देख कर रवींद्रनाथ इतने विचलित हुए थे, उसके मंदिर की दीवारें नहीं टूट सकीं। उनके जीवनकाल में ही, नया संघर्ष छिड़ गया। मृत्यु के कुछ दिन पूर्व, उन्हें संसार के बल-दृप्त राष्ट्रों के भयंकर लोभ और निरीह राष्ट्रों की दयनीय भीति ने विचलित कर दिया

काव्य

इतना भी तो ज्ञात नहीं—
कौन, कब, करके क्षमा, कुछ कहे
बिना, चला गया है।
भूल की हो मैंने, यदि उसके प्रति,
क्षोभ रखेगा क्या तब भी वह,
जब न रहूँगा मैं?
कितने सूत्र छिन्न हुए आस्तरणमय,
उन्हें जोड़ने का अब न रहा
कुछ भी समय।
जीवन के शेष-प्रांत में प्रेम है असीम
जो असम्मान मेरा कोई भी
क्षत-चिह्न अंकित करे उस पर तो
मेरी मृत्यु के हाथ ला दे आरोग्य उसे,
सोचा करता हूँ बार-बार
यही एक बात मैं।

—रवींद्रनाथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। वे बीमार पड़े थे, बेहोश हो गये थे; पर उस बेहोशी में भी उन्हें लोभ और भय का यह दारुण दृश्य व्याकुल किये रहा। होश में आकर उन्होंने गाया—

"हे महाकाल के सिंहासन पर बैठे हुए विचारक! मुझे शक्ति दो, मुझे शक्ति दो, मेरे कंठ में वज्रवाणी संचारित करो; ताकि मैं इस शिशुघाती, नारीघाती कुत्सित बीभत्सता को धिक्कार सकूं — जो धिक्कार लज्जातुर इतिहास के हृदय-स्पंदन में, उस समय भी स्पंदित होता रहेगा, जब कि, यह रुद्रकंठ, भयार्त्त, शृंखलितयुग, चुपचाप अपनी चिता-भस्म के नीचे प्रच्छन्न हो चुका होगा।"

कितनी वेदना है इस कविता में! रवींद्रनाथ को विश्वास था कि, बीभत्स हिंसा, एक दिन चिता-भस्म के नीचे दब जायेगी; परंतु वे व्याकुल बहुत थे। उनकी अनेक कविताओं में इस व्याकुलता का परिचय मिलता है।

जीवन-भर उन्होंने आशा का संदेश दिया था, विश्व-प्रेम का पुनीत पाठ पढ़ाया था, क्षमा और दया का मंत्र सिखाया था —

"जय हो, नवीन अरुणोदय की जय हो, पूर्वी आकाश ज्योतिर्मय हो उठे! (महापुरुषों की) अपराजित वाणी, तुम आओ; और कसके असत्य पर आघात करो। नाश हो शंका का, नाश हो संशय का। नव-जाग्रत प्राण आओ; चिर-यौवन के विजय-संगीत, तुम भी आओ; मृत्यु को जीतनेवाली आशा, आओ; जड़ता को विनष्ट करनेवाली आशा, आओ; तुम्हारा स्वागत है। क्रंदन दूर हो, बंधन क्षय हो।"

ऐसे प्रबल आशावादी कवि ने मृत्यु के कुछ दिन पूर्व अपने भगवान् को पुकार कर कहा —

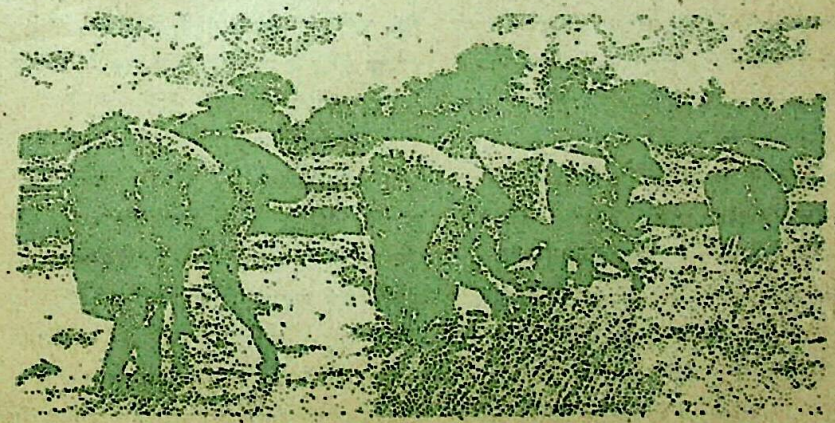

माँ धरित्रि, तेरी स्तन्य-धारा तो सनातन अजस्र है — रवींद्रनाथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आज मेरा गला रुँध गया है; मेरी बांसुरी का संगीत खो गया है, अमावस्या की कारी ने मेरे संसार को दुःखस्वप्नों के नीचे लुप्त कर दिया है, इसीलिए तो आँसू भरी आँखों से तुमसे पुछ रहा हूँ—जो लोग तुम्हारी हवा को विषाक्त बना रहे हैं, उन्हें क्या तुम ने क्षमा कर दिया है? उन्हें क्या तुमने प्यार किया है?"

मर्म-वेदना की उक्तवाणी से यह नहीं समझना चाहिए कि, उन्होंने आशा छोड़ दी थी। उन्हें, उन सब वस्तुओं के लिए कोई मोह नहीं था, जो स्वयं मृत्यु का वरण करके, तीव्र से विनाश की ओर बढ़ रही हैं। मनुष्य ने वास्तविक प्राणशक्ति की यदि उपेक्षा की है, तो वह विनाश के गढ्ढे में गिरेगा ही। प्राण की उपेक्षा करके जीवित रहने की आशा आत्मवंचना है।

मनुष्य उस मिट्टी की ओर से विरत होता जा रहा है, जो प्राणशक्ति का जीवन्त उत्स है और उस आसमान की ओर ताकने लगा है, जो माया है, कुहेलिका है। रवींद्र-नाथ ने गाया था—

"अरे भाई, मिट्टी की ओर लौट—वह मिट्टी जो आँचल फैला कर तेरे मुँह की ओर देख रही है, जिसके वक्षःस्थल को फाड़ कर, यह प्राण-धारा उच्छ्वसित हो रही है, जिसकी हँसी से फूल खिले हैं, जो संगीत के हर तान पर पुकार उठती है। वह देखो, इस छोर से उस छोर तक, इस दिगन्त से उस दिगन्त तक, उसकी गोदी फैली हुई है। जन्म और मरण उसी के हाथ के अलक्ष्य सूत्रों में गुंथे हैं। उसी के हृदय की विगलित वारि-धारा आत्मविस्मृत हो समुद्र की ओर छूटती है, और वहाँ से प्राण का सन्देश वहन कर लाती है। हाँ भाई, इस मिट्टी की ओर ही लौट आ।"

यही आशा है। बाकी सब छलना है, सब माया है। मृत्यु की काली छाया को हटाना है, प्राण की इस उच्छल धारा की ओर देखो। मनुष्य ने जहाँ-कहीं इस प्राण-धारा की उपेक्षा की है—साहित्य में, कला में, वाणिज्य में, राजनीति में, विचारों में आचारों में—वहाँ मृत्यु की काली छाया, स्वयं आ जाती है। प्राण-धारा ठीक रहती है, तो बाकी अनायास ठीक हो जाता है। प्राण-धारा दुर्बल हुई, तो सब विकृत हो जाता है। साम्राज्य बनते हैं— बिगड़ते हैं, विजय डंका बजता है और रुकता है, विजय-पताका फहराती है और झुकती है; परन्तु जीते हैं वही, जो मिट्टी से सम्बद्ध हैं, जो प्राणशक्ति से समन्वित हैं।

रवींद्रनाथ ने यहीं विश्वास जमाया था, यहीं उन्होंने जीवन्त सौन्दर्य देखा था; क्योंकि यहीं प्राणों की अनाविल धारा का प्रवाह है। मिट्टी की ओर ही उन्होंने देश के अपरिपक्व तरुणों को पुकारा था; क्योंकि यद्यपि वे अपरिपक्व हैं, पर उनमें प्राणधारा है। मिट्टी, मेहनत, औदार्य और छलकती प्राणधारा—यही जीवन के चिरंतन सौंदर्य के मूल उत्स हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

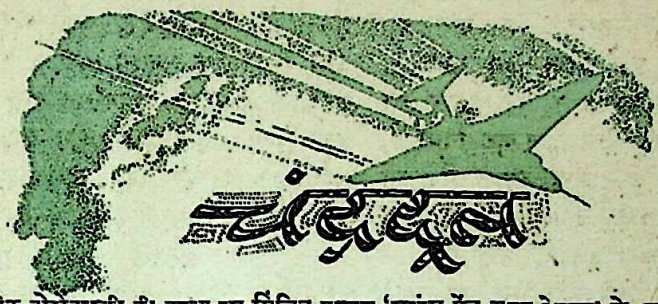

वैज्ञानिक बोरोवन्स्की की काव्य-रस-सिंचित पुस्तक 'साइंस ऐंड ह्यूमन देल्यूज' के एक अध्याय का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

हाल में अन्तर्राष्ट्रीय भू-भौतिकी वर्ष के अन्तर्गत, वैज्ञानिकों ने अन्तरिक्ष के रहस्यों का उद्घाटन करने के लिए, बड़े पमाने पर अनुसंधान किये। हजारों मील की ऊँचाई तक अनेकों राकेट छाड़े गये। उपग्रहों द्वारा प्रेषित संकेतों से पृथ्वी का वायु-मंडल गुंजरित हो उठा और मानव-निर्मित कृत्रिम ग्रह, सौर-मंडल में प्रविष्ट, हो गया। इन परीक्षणों से मानव जाति को क्या-क्या लाभ पहुँचेंगे, इसका पता लगने में, तो अभी समय लगेगा। परंतु तत्काल प्राप्त होनेवाले लाभों में एक यह है कि, निकट भविष्य में संसार के विभिन्न भागों को रेडियो-संवाद भेजने के लिए, उपग्रहों का उपयोग किया जा सकेगा।

संवाद-साधनों में सुधार करने के कार्य में निरत वैज्ञानिकों ने इसी दौरान, एक और महत्वपूर्ण सम्भावना की खोज की है। राडारों की सीमित क्षमता को देखते हुए, उन्होंने यह सोचा कि, रेडियो-संदेश भेजने के लिए, क्यों न चंद्रमा का लाभ उठाया जाये। प्रारंभिक परीक्षणों से उन्हें यह ज्ञात हो गया था कि, चंद्रमा में रेडियो-संवादों को पुनःप्रसारित करने की क्षमता मौजूद है। कई बार उन्होंने तरंगे चंद्रमा पर भेजीं। उससे टकरा कर सफलतापूर्वक पृथ्वी पर लौट आयीं और सूक्ष्म संवेदनशील यंत्रों ने उन्हें बड़ी आसानी से ग्रहण कर लिया। इन उत्साह-वर्धक परिणामों ने वैज्ञानिकों के हौंसले बढ़ा दिये और वह अपने कार्य में अधिक उत्साह से जुट गये।

सतत और कठोर प्रयास के बाद, उन्हें अपने कार्य में सफलता मिली और कनाडा में 'प्रिंस एलबर्ट राडार, परीक्षण-शाला' की स्थापना के अवसर पर प्रेसिडेंट आईज़नहोवर का चंद्रमा से प्रेषित बधाई-संदेश देववाणी की तरह उपस्थित लोगों के कानों में गूंज उठा। परीक्षणशाला की स्थापना पर, कनाडा के प्रधान मंत्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को बधाई देते हुए, अमरीकी प्रेसिडेंट ने दोनों देशों के मैत्री-बन्धनों के और अधिक सुदृढ़ होने की कामना की थी।

चंद्रमा, पृथ्वी से ८ लाख मील दूर है; परन्तु प्रेसिडेंट के इस संदेश को परीक्षण-शाला तक पहुँचानें में केवल ढाई सेकेंड का समय लगा। संवाद-वहन के क्षेत्र में निश्चय ही, यह एक अभूतपूर्व सफलता है और इससे संसार की संचार-व्यवस्था में एक क्रांति होने वाली है, जिसकी हम और आप, अभी कल्पना नहीं कर सकते।

चाँद को तुम गणित में जकड़ दो; चाँद को तुम साबुन से धो दो; चाँद को तुम माप कर दीन-हीन कह दो; मगर दिल की दुनिया में तो चाँद हमेशा प्रेयसी का प्यारा मुखड़ा ही बनकर रहेगा।—पाल राब्सन

मंगलवार को प्रेसिडेंट आइजनहोवर का संदेश टेप पर रिकार्ड कर, वेस्ट-फोर्ड (मेसैचुसेट्स) के 'माइलस्टोन-हिल' वेध-शाला को भेजा गया है, जहाँ से यह संदेश चंद्रमा को माध्यम बना कर, प्रिंस एलबर्ट परीक्षणशाला को प्रसारित किया गया, जिसके ढाई सेकेंड बाद ही उद्घाटन-समारोह में उपस्थित अतिथि-वृंद को वह सुनायी पड़ा। वेस्टफोर्ड की वेधशाला और प्रिंस एलबर्ट-परीक्षणशाला के बीच १,७०० मील की दूरी है और राडारों की सहायता से इनके मध्य संवादों का आदान-प्रदान सम्भव नहीं। क्यों संभव नहीं, इसका एक विशेष कारण है।

उच्च शक्ति वाली रेडियो-तरंगें वक्राकार न चल कर, समानान्तर चलती हैं, जब कि पृथ्वी की सतह वक्राकार है। १,७०० मील की दूरी में यह वक्रता इतनी अधिक हो जाती है कि, राडार से निःसृत रेडियो-तरंगें, पुनः ग्रहण नहीं की जा सकतीं; क्योंकि वे पृथ्वी की ओर न आ कर, सीधे अन्तरिक्ष में विलीन हो जाती हैं। इसके अलावा उत्तरी गोलार्ध में, जो प्रकाश-पुंज विद्यमान रहता है, उसके कारण भी राडार-सिग्नलों के संकेत साफ-साफ नहीं ग्रहण हो पाते। प्रिंस एलबर्ट-परीक्षणशाला को इस परीक्षण के लिए, इसी कारण विशेष रूप से चुना गया था। परीक्षण से यह सिद्ध हो गया है कि, चंद्रमा के माध्यम से आवाज को अत्यधिक दूरी पर स्थित स्थानों को प्रसारित करना सम्भव है। यदि यह प्रयोग आगे चल कर और अधिक सफल रहा, तो शायद वह दिन भी आ जाये, जब चंद्रमा के माध्यम से रेडियो-फोटो भी प्रसारित हो सकेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रिंस एलबर्ट राडार-परीक्षणशाला की स्थापना कनाडा के प्रतिरक्षा-अनुसंधान बोर्ड और अमेरिकी वायुसेना ने मिल कर की है। उसका उद्देश्य, इस विषय का अध्ययन करना है कि, उत्तरी ध्रुव-क्षेत्र के प्रकाश-पुंज में प्रविष्ट हो जाने वाले प्रक्षेपणास्त्र या वायुयान का, राडार द्वारा पता लगाने में क्यों बाधा पड़ती है।

पहली बार १९४६ में अमेरिकी स्थल-सेना, पृथ्वी से चंद्रमा के लिए प्रसारित रेडियो-संकेतों को, पुनः ग्रहण करने में समर्थ हुई थी। उसके कुछ समय बाद, कुछ अन्य देशों के वैज्ञानिकों ने भी, चंद्रमा से टकरा कर लौटने वाले रेडियो-संकेतों को सुना। लेकिन १९५४ में पहली बार नौसेना की अनुसंधानात्मक परीक्षणशाला ने, चंद्रमा से टकरा कर लौटने वाले संदेश को रिकार्ड करने में सफलता प्राप्त की। इसके लिए उसने एक ऐसे बड़े स्पर्श-दंड का निर्माण किया, जो ध्वनि को प्रसारित करने के अलावा टकरा कर लौटनेवाली आवाज को पुनः ग्रहण करने की भी क्षमता रखता था। उसके बाद केवल पाँच वर्षों में इतनी प्रगति हो गयी है कि, अब वैज्ञानिक चंद्रमा को संदेश-वाहक के रूप में इस्तेमाल करने के व्यावहारिक पहलू पर, गंभीरता-पूर्वक विचार कर रहे हैं।

माइल स्टोन हिल-परीक्षणशाला स्थित प्रसारण-यंत्र (ट्रांसमिटर) ५० हजार वाट शक्ति का है। अमेरिका में व्यावसायिक प्रचार इत्यादि के लिए प्रयुक्त होने वाले ब्राडकास्टिंग-स्टेशन भी, लगभग इतनी ही शक्ति के होते हैं। इस ट्रांसमिटर में ऊँची शक्ति वाले एक १० फुट लम्बे 'किलोस्ट्रोन ट्रांसमिटिंग ट्यूब' का इस्तेमाल किया गया है।

चंद्रमा से टकरा कर, लौटने वाली अत्यधिक धीमी ध्वनि-तरंगों को, प्रिंस एलबर्ट-परीक्षणशाला का रिसीवर (रेडियो संकेत-ग्राहक यंत्र) पकड़ता है और उन्हें एक अधिक शक्तिशाली रिसीवर तक पहुँचाता है। चंद्रमा से टकरा कर लौटते समय, रेडियो-संकेत पहले से काफी कमजोर हो जाते हैं। यदि प्रसारण के समय उनकी शक्ति ५०० वाट रहती है, तो लौटते वक्त उनकी शक्ति केवल २० वाट रह जाती है। इधर उधर की आवाजों के कारण संकेतों में गड़बड़ी न पड़ जाये, इसके लिए भी विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता पड़ती है।

संक्षेप में, वह दिन दूर नहीं प्रतीत होता, जब आकाश-मंडल पर चमकने-वाला चंद्रमा, मानव हृदय में उठने वाली हर्षोर्मियों और व्यथाओं का मूक साक्षी मात्र न रह कर, उनका संदेश-वाहक भी बन जायेगा।

☆

भगवान् की वंदना के लिए हमारी अंतर्वेदना से बढ़ कर कोई साधन नहीं।

☆

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनातोले फ्रांस एक झलक

"कैसी विडम्बना है! लेखक दूसरों का जीवन लिखने के लिए बैठता है; मगर अंत में पाता है कि, वह अपना ही जीवन लिख बैठा है।"—ऐसी रसमय प्रतीति पानेवाले एक महान् फ्रांसीसी लेखक का दर्शन-स्मरण

*

"मानव-जीवन पर मैं जितना ही विचार करता हूँ, उतना ही मुझे यह विश्वास होता जाता ह कि, जीवन के साफल्य के लिए, साक्षी और गुरु के रूप में—दो चीजें चाहिए, एक व्यंग्य और दूसरी करुणा। व्यंग्य और करुणा ये दोनों बड़े अच्छे सलाहकार हैं। एक हँस कर जीवन को उपादेय बनाता है; दूसरी उसे आँसुओं से धो कर पवित्र बनाती है।"

जीवन के सत्य की गहरी अनुभूति में पगे ये आर्ष-वचन हैं उन्हीं फ्रेंच साहित्यकार अनातोले फ्रांस के, जिनके ग्रंथों को पोप ने, नैतिक दृष्टि से अत्यंत हानिकर कह कर, अपने करोड़ों अनुयायियों के लिए निषिद्ध कर दिया था।

जीवन को व्यंग्य-चित्रकार की दृष्टि से देखने और उसकी अटपटी-बेतुकी बातों को शिष्ट और गुदगुदाती भाषा में चित्रित करने में, अनातोले अद्वितीय थे। किसी भी चीज को बुत की तरह पूजना, उनकी आदत का अंग नहीं था। वे प्रत्येक वस्तु के अंतर्विरोधी स्वरूप को खोज निकालने की कोशिश में रहते थे। मृत मान्यताओं और अर्थहीन रूढ़ि-मर्यादाओं पर व्यंग्य-प्रहार करने की उनकी इस प्रवृत्ति के कारण, कितने ही उथली दृष्टि वाले आलोचकों ने, उन्हें निरा विध्वंस का पुजारी (निहिलिस्ट) मान लिया था।

परन्तु वस्तुतः अनातोले, व्यंग्य के लिए व्यंग्य करने वाले बंजर-मति साहित्यकार नहीं थे। वे मजाक करते थे, पर उसके पीछे एक आह छिपी होती थी; उनके मुँह पर व्यंग्य की शरारती मुस्कान खेलती थी, पर उसके पीछे धड़कता दिल छिपा रहता था। वस्तुतः, जैसा कि ऊपर दिये हुए उनके वचन से स्पष्ट है, व्यंग्य और करुणा, या और भी ठीक कहें तो, करुणामूलक व्यंग्य, उनकी साहित्य-साधना का मूलमंत्र था। वे निरे मूर्ति-भंजक नहीं थे; सच्ची देव-प्रतिमा को खोज निकालना और उसके चरणों को आँसुओं के अर्घ्य से धोना भी वे जानते थे।

अनातोले फ्रांस का जन्म १८४४ में हुआ और सन् १९२४ में वे स्वर्गस्थ हुए। अपने सुदीर्घ जीवन में, उन्होंने विपुल साहित्य का निर्माण किया। आरंभ में उन्होंने कवि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताएँ लिखीं; पर गद्य-साहित्य में वे अधिक निखरे। 'ताया' और 'ला रूज' उनकी अनुपम रचनाएँ समझी जाती हैं। परंतु स्वयं अनातोले 'जोन द आर्क' और 'हिस्त्वार कोन्तोपोरेन' को अपनी सर्वोत्तम कृतियाँ मानते हैं। सन १९२१ में उन्हें साहित्य के लिए नोबेल-पुरस्कार मिला।

'मोशियो जिरोम क्वान्या' उनकी जीवन-दृष्टि को समझने के लिए सबसे अधिक उपयोगी है। इसमें उन्होंने अपने चिंतन का सार भर दिया है। उनमें से कुछ विचार-मौक्तिक यहाँ संचित हैं –

कुसंस्कार : हमें उन लोगों की प्रशंसा में शतमुख होना चाहिए, जिन्होंने कुसंस्कारों के विरुद्ध युद्ध किये हैं। परंतु उनकी प्रशंसा करना आसान है; उनका अनुकरण करना कठिन। बात यह है कि, वे बादलों की तरह बिगड़ कर फिर बनते हैं। ऐसे व्यक्ति विरले ही होंगे, जो अपने समय के कुसंस्कारों से पूर्णतः बचे रहे हैं और साथ ही जिन्होंने उस बात को देखने की हिम्मत की है, जिसे सब लोग नहीं देखते।

भ्रांति : दो आत्माएँ महान् हैं– एक वह, जिसने प्रवंचक भ्रान्तियों का नाश किया; और दूसरी वह, जिसने ऐसी महाभ्रान्तियों की सृष्टि की, जिनकी मोह-निद्रा से हम कभी जाग न सके।

विज्ञान : प्रकृति का ज्ञान हमारी अनुभूतियों की भ्रान्ति के अतिरिक्त क्या है? क्या आधुनिक वैज्ञानिक वस्तु, हमारी अनुभूति से परे है, सर्वथा तटस्थ है? नये-नये रूपों ने हमें उलझन में डाल दिया है। हम चाहे जितनी निष्पक्षता का स्वांग करें, हम अपने बाहर तो नहीं जा सकते। ...मैं विज्ञान से घृणा करता हूँ; क्योंकि मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ। मैंने चाहा था कि, विज्ञान के द्वारा मैं संसार का सब-कुछ ज्ञातव्य जान जाऊँ; किन्तु आज मैं अपनी अज्ञता से कराह रहा हूँ।

प्रतिभा : प्रतिभावान् व्यक्ति अक्सर असामाजिक होता है। बहुत ही कम ऐसा होता है कि, किसी महामेधावी व्यक्ति के मित्रों और परिचितों की मंडली विशाल हो।..... प्रतिभा में एक गुस्ताखी है, जिसके कारण प्रतिभाशाली व्यक्तियों को जीवन में भीषण बदनामी और अंधी घृणा का शिकार बनना पड़ता है।

राजद्रोह : कोई आदमी विद्रोही तभी कहलाता है, जब वह असफल हो जाता है। सफल व्यक्ति को कभी विद्रोही नहीं कहा जाता।

इन विचारों में हमें एक प्रखर और साहसी बुद्धिवादी का व्यक्तित्व प्रतिबिंबित होता दीखता है। अनातोले ने स्वयं कहा है–"मेरे विचार किसी भी बात से कभी सहम कर उल्टे पाँव नहीं चल देते।" पर साथ ही वे यह भी कहते हैं— "खबरदार, बुद्धि से आविष्कृत सत्य, बाँझ होते हैं। केवल हृदय की सदयता ही स्वप्नों को साकार बना सकती है। भावुकता से ही अच्छाई के, शुभ कर्मों के, बीज बोये जाते हैं, बुद्धि से नहीं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुस्कान सुख की खान

*

सेंध लगाने के अपराध में पकड़े गये एक चोर की वकालत करते हुए, वकील महाशय मजिस्ट्रेट से कह रहे थे—

"योर ऑनर, मेरे मुवक्किल ने सेंध लगाने का काम बिल्कुल नहीं किया। रास्ते से गुजरते समय उसने खुली हुई खिड़की में से हाथ डाल कर दो-चार मामूली चीजें उठा ली थीं। मेरे मुवक्किल का हाथ दोषी है; मेरा मुवक्किल नहीं। केवल एक हाथ के किये हुए अपराध का दंड समूचे शरीर को देना क्या उचित है, न्याय है?"

वकील की युक्ति पर न्यायाधीश ने विचार कर कहा—"आपका कहना ठीक है। मैं उसके अपराध के लिए उसके पूरे शरीर को सजा न देते हुए, उसके एक हाथ को एक वर्ष के सश्रम कारावास का दण्ड देता हूँ। अपराधी चाहे तो अपने हाथ के साथ जेल में जा सकता है।"

अपराधी ने हँस कर वकील साहब की सहायता से अपना काठ का नकली हाथ निकाल कर, जज की मेज पर रख दिया और मुस्कराते हुए कमरे से बहर चला गया।

× × ×

प्रसिद्ध चीनी विद्वान् लिन-यु-ताङ न अमेरिका में एक भाषण दिया। विषय था—चीन का प्राचीन विज्ञान - वैभव। भाषण समाप्त होने पर एक श्रोता ने

हालीवुड तारिका मेरीलिन मनरो—नवीनतम सौंदर्य-शास्त्रियों की दृष्टि में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूछा—"आपने बाकी विद्या-विज्ञानों का तो वर्णन किया; परन्तु प्राणिशास्त्र के विषय में कुछ नहीं बताया।" लिन-यु-ताङ बोले—"हाँ श्रीमन्, मैंने प्राणिशास्त्र के विषय में कुछ नहीं कहा; क्योंकि प्राणिशास्त्र में हम चीनियों ने कोई उन्नति नहीं की है।" फिर भाषण-कर्ता और श्रोता में ये प्रश्नोत्तर हुए:

"क्या कृपया इसके कारणों पर प्रकाश डालेंगे?"

"जी हाँ, अवश्य। आप जानते हैं कि, हम चीनी बड़े भोजन-प्रिय और कुशल रसोइए होते हैं।"

"परन्तु उसका प्राणिशास्त्र से क्या सम्बंध ह?"

"बड़ा गहरा सम्बंध है! जब कोई चीनी—भले ही वह वैज्ञानिक ही क्यों न हो—किसी पशु-पक्षी या कीट-पतंग को देखता है, तो सबसे पहले उसके मन में यह विचार उठता है कि, इसके क्या-क्या भोज्य-पदार्थ बन सकते हैं। फिर तो वह अपनी सारी वैज्ञानिकता भूल कर, कढ़ाई-चूल्हा और नमक-तेल जुटाने में लग जाता है।"

× × ×

सीख

यौन-विज्ञान की प्रसिद्ध लेखिका मेरी स्टोप्स, जब सोलह वर्ष की थी, तो किसी ने उनकी सुंदरता की प्रशंसा कर दी और उन्हें बड़ा गर्व हो गया। उनके पिता ने पुत्री को उचित शिक्षा देते हुए कहा—"बेटी, सोलह वर्ष की अवस्था में कोई तुम्हारी सुन्दरता की प्रशंसा करे तो उसमें अभिमान करने की कोई बात नहीं; क्योंकि उस सुंदरता का श्रेय तुम्हें नहीं, बल्कि प्रकृति को है। हां, जब तुम साठ बरस की हो जाओ, तब भी अगर कोई तुम्हें सुंदर कहे, तो अभिमान करना; तब सुंदरता का श्रेय तुम्हें ही होगा।

—बायग्राफी ले'

एक बार जब ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मंत्री सर विंस्टन चर्चिल अमेरिका गये, तो वहाँ की पत्र-पत्रिकाओं में उनके पारिवारिक जीवन के संबंध में अनेक सचित्र लेख प्रकाशित हुए। इन्हीं में से एक पत्रिका ने उनके नन्हे दुध-मुँहे पोते का भी एक चित्र छापा था।

एक भोज में उसी का जिक्र करते हुए एक सज्जन ने सर विंस्टन से कहा—"आपसे आपके पोते की शक्ल आश्चर्य-जनक रूप से मिलती है।"

चर्चिल बोले—"हाँ साहब, मिलती तो है; पर उसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। संसार में जितने भी गोल-मटोल और शरारती बच्चे हैं, उन सबकी शक्ल मेरे जैसी है।"

× × ×

एक दिन, एक स्कूल में, विज्ञान के अध्यापक ने पाठ पढ़ाने के पश्चात् विद्यार्थियों से प्रश्न पूछने के लिए कहा।

एक लड़का उठ खड़ा हुआ और बोला—"मास्टर साहब, आपने अभी-अभी बताया कि, भीगी चाय की पत्तियों से तिलचट्टे मर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाते हैं; परंतु मैं जानना चाहता हूँ कि, इसका कारण क्या है?"

प्रश्न को सुनकर, अध्यापक महोदय बहुत ही पसोपेश में पड़ गये; परंतु साथ ही अपना अज्ञान भी छिपाना चाहते थे। बोले– "इसमें कौन-सा गूढ़ रहस्य है, जो तुम्हारी समझ में नहीं आया। सीधी-सी बात है, जब तिलचट्टा चाय की भीगी पत्तियों को देखता है, तो सोचता है–'वाह! क्या ही सुंदर बिस्तरा है; बस, उसी पर सो जाता है– गीली पत्तियों पर सोने के कारण, उसे निमोनिया हो जाता है और वह छटपटा कर मर जाता है।"

× × ×

मीर महदी हसन 'मजरूह', मिर्ज़ा ग़ालिब के अभिन्न मित्र थे। उन्होंने सुना की मिर्ज़ा बीमार हैं, तो वे उनसे मिलने चल दिये। मिर्ज़ा पलंग पर पड़े हुए कराह रहे थे। मीर साहब चुपके से मिर्ज़ा के पैर के पास बैठ गये और धीरे-धीरे उनके पैर दबाने लगे। मिर्ज़ा ने चौंक कर उन्हें रोकते हुए कहा–"सैयद होकर मेरे पैर न दबाओ। जीते जी मुझे नरक में क्यों ढकेल रहे हो।"

मीर साहब पैरों को दबाते हुए कहने लगे–"मिर्ज़ा, यदि तुम्हें नरक का इतना डर है, तो मुझे मजदूरी दे देना।"

काफी रात तक मिर्ज़ा अपनी रसपूर्ण बातों से मीर साहब का मनोरंजन करते रहे। जब काफी रात बीत गयी, तो मीर साहब घर चलने लगे। उन्होंने मिर्ज़ा से पैर दाबने का मेहनताना माँगा।

मिर्ज़ा हँसकर कहने लगे– "जनाब लेने-देने की क्या बात है! आपने मेरे पैर दाबे और मैंने आपकी मज़दूरी दाब ली। लेना-देना बराबर!"

× × ×

किसी छोटे नगर के स्कूल में विद्यार्थियों को जानवरों का पाठ पढ़ाया जा रहा था। अध्यापिका ने लड़कों से कई प्रश्न किये, जिनके आसानी से उत्तर मिल गये। अन्त में उसने पूछा,–"कुत्ता भागते समय जीभ क्यों बाहर निकाल लेता है?"

एक विद्यार्थी ने, जिसने अभी तक किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया था, अपना हाथ ऊपर ऊठाया। अध्यापिका ने कहा–"हाँ रमेश, क्यों होता है ऐसा?"

"अपनी पूँछ का सन्तुलन ठीक करने लिए!" लड़के का उत्तर था।

❀

रोम का सुविख्यात शिल्पी माइकेलएंजेलो जब ८८ वर्ष का था, तो बीमार पड़ा। बीमारी धीरे-धीरे असाध्य होती गयी। तभी उसके एक मित्र ने सहानुभूति प्रकट करते हुए उससे कहा–"माइकेल! रोम तुम्हारे बिना कैसे रहेगा?" माइकेल ने अपने हाथ से खुली खिड़की की तरफ इशारा किया, जहाँ से उसकी बनायी हुई कई भव्य इमारतें दिखायी दे रही थीं। वह क्षीण मुस्कान के साथ बोला–"मित्र! रोम कभी मेरे बिना नहीं रहेगा।" —'लाइफ इज लाइक दैट' से

❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनंदमठ

भारत-वर्मा के बीच चली आ रही अजस्र स्नेह-धारा का एक प्राचीन साक्ष्य—आनंदमठ—का संक्षिप्त विवरण—पार्श्व में स्वयं मठ की छायाकृति है।

देश-विदेश के कला-कुतूहली यात्रियों को पगान (बर्मा) आने के लिए विवश करनेवाले विश्व-विख्यात श्वेत-स्वर्णिम पगोडा 'आनंदमठ' के पश्चिमी गलियारे में, दो मानवाकृति प्रस्तर-मूर्तियाँ, भगवान् बुद्ध की शांति-मुद्रा-स्थित प्रतिमा के सम्मुख, पिछले हजार वर्ष से भक्ति-पूर्वक घुटने टेके विनम्र-भाव से बैठी हैं। संपूर्ण मठ के अद्भुत शिल्प-चातुर्य की तरह ही, इन मूर्तियों का अंग-सौष्ठव और उदात्त भाव-भंगिमा, मन को बरबस खींच लेने वाली है। परन्तु, जो चीज यात्री को एकदम विस्मित कर देती है, वह है इन मूर्तियों की मुखाकृति, जो बर्मी नहीं, अपितु शुद्ध भारतीय ढंग की है।

इन मूर्तियों में से एक है 'आनंदमठ' के निर्माता राजा क्यांज़िठ की, जो भारतीय माता की कोख से पैदा हुआ था और जिसने इरावदी की घाटी जीती तथा तालेंगों पर प्रभुता प्राप्त की। दूसरी प्रतिमा है, क्यांज़िठ के गुरु सीन-अरहान की।

क्यांजिठ और 'आनंदमठ' बर्मा की कला और साहित्य-समृद्धि के अरुणोदय के सूचक हैं। और 'आनंदमठ' का शिल्प-कौशल जितना अद्भुत है, उतना ही आश्चर्यकारी है, उसके निर्माता का जीवन।

पगान (अरिदमनपुर) की प्रभुता के प्रतीक, राजा क्यांज़िठ ने सन १०८४ से १११२ तक राज्य किया। जीवन में उसने उत्थान के उन्नत गिरिशृंगों का भी अधि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राहण किया और पतन के अधंकार-भरे गर्तों की धूल भी छानी।

क्यांज़िठ से पूर्व का बर्मी इतिहास, बड़ा विचित्र और उलझन-भरा है। तब देश में मोन, तिब्बती-बर्मी और ताइस (शान) आदि कई जातियाँ छोटे-छोटे राज्य बना कर-आपस में लड़ती, भिड़ती रहती थीं। यातायात के साधन अविकसित थे; सड़कें कच्ची, टूटी-फूटी और अरक्षित थीं; गाँव एक ढंग से स्वतंत्र थे और डाकुओं की लूट-मार के लिए खुले हुए थे। प्रोम उस समय का सबसे बड़ा राज्य था। सन् ९६० में उसकी गद्दी पर नानचाओ ने अधिकार स्थापित कर लिया था।

उसी समय पगान (अरिदमनपुर) में नूआंग-ऊ-स्वराहन का शासन था। कालांतर में एक गुलाम 'कुनशा,' उसे गद्दी से उतार कर स्वयं राजा बन बैठा। उसी का पुत्र था अनवृथ। गद्दी पर बैठते ही उसने नूआंग के पुत्र को, जो सेना जुटा कर आक्रमण की तैयारी कर रहा था, खुले युद्ध में हरा कर मार डाला।

शत्रुचिंता से मुक्त होकर अनवृथ की विवाह-कामना जागी। दूतों ने उसके लिए वैशाली (अराकान) की एक भारतीय कुमारी 'पंचकल्याणी' को पसंद किया। जब बेचारी 'पंचकल्याणी' अपनी अस्सी दासियों के साथ पगान भेजी जा रही थी, तभी उसके संरक्षक राजा ने, उस पर बलात्कार कर डाला और जो भी नौकर-चाकर इस घटना के साक्षी थे, उन सबको दूर-दूर के गाँवों में निर्वासित कर दिया। विवाह के बाद जब बात प्रकट हुई, तो 'पंचकल्याणी' का रानी बनना असंभव हो गया। अनवृथ ने उसे एक विजन प्रदेश में भेज दिया। वहीं उसकी कोख से क्यांज़िठ का ज़न्म हुआ। अभागा राजपुत्र क्यांज़िठ एकांत में पला। पर बाद में अनवृथ ने उसे जंगलसे वापस बुला कर, राजदरबार में ऊँचे पद पर रख लिया।

जब लाओसान् ने आक्रमण किया, तो अनवृथ की आज्ञा से, क्यांज़िठ ने भारतीय सैनिकों को ले कर, उसे पेगू में पराजित कर दिया। तालेंगों ने विजयी राजा के लिए चार अमूल्य उपहार दिये। इनमें एक थी, पेगू के राजा की इकलौती बेटी

चैतन्य

एक दिन सूरज ने अपना हाथ फैला कर मुझसे कहा—"कवि, मेरे इस हाथ में प्राण भर दो, यह एकदम जीर्ण हो गया है; मैं प्रकाश-चक्र घुमाने में भी असमर्थ हूँ—कृपा करो, कवि!" तब मैंने अपने को देखा, मेरा सिर कोटि-कोटि आकाशों को विदीर्ण कर अचल-स्थिर था और छोटे दीपक की तरह सूरज मेरे सामने खड़ा था—उस दिन मैंने चैतन्य के विराट् विस्तार को देखा—स्वयं अपने ही भीतर! —बर्मी महाकवि महिम्यांग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हकीन-यू, जो बर्मी प्रथा के अनुसार, आगे चल कर चार शासकों की महिषी बनी।

पगान जाते हुए मार्ग में ही क्यांजिठ, तरुणी हकीन-यू पर आसक्त हो गया। जब यह बात अनवृथ के कान में पड़ी, तो उसने क्रोध में भर कर, क्यांजिठ पर भाले का वार किया। क्यांजिठ फुर्ती से बच गया और वहाँ से भाग निकला। जंगलों-पहाड़ों की खाक छानते-छानते वह सेगंग आया और एक साधु की पुत्री थंबुला के साथ रहने लगा।

सन १०७७ में अनवृथ के मरने पर उसका पुत्र सावलू गद्दी पर बैठा। उसने पिता की रानी हकीन-यू को अपनी पटरानी बनाया। प्राचीन बर्मी परंपरा में रानी तो शासक का एक राजचिह्न समझी जाती थी, जिस पर उत्तराधिकारी का हक होता था। जब ममनखाँ तालेंग ने सावलू पर आक्रमण किया, सावलू ने सेगंग से क्यांजिठ को सेनापति बनने के लिए बुलवा भेजा; और क्यांजिठ आ भी पहुँचा। पर सावलू को उसकी नीयत पर शक हो गया। क्यांजिठ फिर भाग निकला। उधर मौका पा कर ममनखाँ ने सावलू की हत्या करवा डाली।

परन्तु क्यांजिठ ने बाहर-ही-बाहर सुदृढ़ सेना एकत्र कर तालेंगों पर अचानक आक्रमण कर दिया। ममनखाँ अपनी हीरे-मोती जड़ी नाव में बैठ कर इरावदी नदी के मार्ग से भाग निकला। जाते-जाते एक जगह, उसे कोयल की बड़ी प्यारी कूक सुनायी दी। आवाज कहाँ से आ रही है, यह देखने के लिए उसने सिर उठाया ही था कि, सनसनाता हुआ एक तीर उसकी आँख को भेद कर, सीधे मस्तिष्क में पैठ गया। ममनखाँ की लाश लुढ़क गयी। यह तीर क्यांजिठ के धनुर्धर सैनिक गां-सिंगू के धनुष से निकला था। कोयल की कूक भी उसी के कंठ से निकली थी।

अब राजा बनते ही क्यांजिठ ने अपनी पुरानी प्रेयसी हकीन-यू से विवाह करने की इतनी अधिक उतावली दिखायी कि, घोर संघर्ष ही छिड़ गया। पर उसने दृढ़ता से विरोधियों का दमन किया और अंत में हकीन-यू को अपनी पटरानी बनाया। राज-पुरोहित सीन-अरहान ने प्राचीन

[चित्र : चंडी भीमा में प्राप्त एक प्राचीन मानवाकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परंपरा के अनुसार राज्याभिषेक किया। आनंदमठ में क्यांजिठ के साथ राज-पुरोहित की प्रतिमा भी आज तक सुरक्षित है।

क्यांजिठ ने एक नया महल बनवाया। महल की दीवारों पर उसने बहुत-से लेख अंकित कराये, जो आज बर्मी साहित्य की निधि माने जाते हैं। वैसे राज्य में शांति थी; परंतु उसकी कहानी "और वह सुख से राज्य करने लगा" कह कर यहीं समाप्त नहीं की जा सकती। क्यांजिठ के एक पुत्री थी, स्वे-ऐंथी। चीनी पर्वतमाला में स्थित एक राज्य के शासक ने उससे पाणि-ग्रहण का प्रस्ताव भेजा। पर क्यांजिठ चीनी रक्त का सांकर्य नहीं चाहता था; सो उसने मृत राजा सावलू के लंगड़े पुत्र से स्वे-ऐंथी का विवाह कर दिया। बेचारे चीनी राजा ने निराश होकर आत्महत्या कर ली। स्वे-ऐंथी ने अलिंग-सिथू नामक पुत्र को जन्म दिया। क्यांजिठ ने, नाबालिग नाती को अपना उत्तराधिकारी बना दिया।

तभी एक दिन, एक औरत, एक नन्हे बालक का हाथ पकड़े, राजमहल के महाद्वार पर उपस्थित हुई। क्यांजिठ ने देखा कि, वह तो थंबूला थी; और उस के साथ सेगंग में जो सुखमय दिन उसने गुजारे थे, उसी का स्मारक वह बच्चा था। पुरानी मोह-माया उमड़ पड़ी। थंबूला को उसने अपनी चौथी रानी बना कर उसे 'त्रिभुवन-सुंदरी' की उपाधि से विभूषित किया। पगान का राज्य तो वह अपने नाती अलिंग-सिथू को दे चुका था; इसलिए उसने थंबूला के पुत्र को, अराकान का सात पहाड़ी का राज्य दे दिया।

क्यांजिठ की राज्य-शक्ति के साथ ही, बर्मा में बौद्ध धर्म का प्रभाव भी बढ़ता गया। बौद्ध भिक्षु पगान में पनपने लगे। जब क्यांजिठ ने इन भिक्षुओं के मुँह से, उदयगिरि पर्वत के गुहा-चैत्यों की बात सुनी, तो उसके मन में महत्वाकांक्षा जगी कि, क्यों न मैं भी भगवान् बुद्ध का एक भव्य मंदिर बनवाऊँ और शाश्वत कीर्ति एवं पुण्य अर्जित करूँ। उसी आकांक्षा का मूर्त रूप है 'आनंदमठ'। उदयगिरि से प्रेरणा प्राप्त होने के कारण ही, 'आनंद-मठ' की वास्तु-रचना ऐसी की गयी कि, वह पहाड़ को तराश कर बनाया गया दीखे।

'आनंदमठ' के अतिरिक्त क्यांजिठ ने और भी चालीस छोटे-बड़े पगोडे बनवाये। इनमें से एक उसके जन्मस्थान पर है; दूसरा सेगंग में, जहाँ वह आपत्काल में छिपा था। उसने अपने पिता के अधूरे बनवाये स्वेजीगांग पगोडा को भी पूर्ण कराया। क्यांजिठ ही पहला बर्मी शासक था, जिसने बोधगया की भग्न वेदिकाओं की मरम्मत करायी।

बौद्ध धर्म का करुणा का महामंत्र सुन लेने पर भी, क्यांजिठ के हृदय में मार-काट के जीवन से उत्पन्न कठोरता रह ही गयी थी। 'आनंदमठ' के पूर्ण होने पर उसने सब शिल्पियों को मौत के घाट उतरवा दिया, जिससे उसके जोड़ का दूसरा पगोडा न बन पाये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धि तो ब्रह्मा की बेटी ठहरी

शापेनहावर ने 'संकल्प' की मीमांसा करते हुए कहा है— "संकल्प शून्याकाश के सजल बादल हैं, जो अपने ही बोझ से आहत होकर किसी भी समय अगणित टुकड़ों में विनष्ट हो सकते हैं; किंतु प्रायः ऐसा नहीं होता है; क्योंकि संकल्पों को बुद्धिरूपी वायु का सहारा मिल जाता है और वह उन्हें मनमाने अवकाश में घुमाती है— दुर्गम-से-दुर्गम बिंदु पर भी वह चली जाती है। कदाचित् इसीलिए यूनानी उसे 'प्रजापति की पुत्री' कहते हैं।" यहाँ बुद्धि के बारे में आधुनिक विज्ञान की मीमांसा हम दे रहे हैं— पाठक जरा शापेनहावर के मत से उसकी तुलना करें।

★

ऐसे सिपाही को देख या सुन कर, जो दिनभर में चौराहे पर से गुजरी सबकी-सब मोटरों के नंबर क्रमशः सुना दे, हमें अचरज क्यों न हो! इसी तरह जब यह सुनें कि, शंकराचार्य सात साल के होते-होते समस्त शास्त्रों में पारंगत हो गये थे, दार्शनिक जेरोमी बेंथम चार वर्ष की अवस्था में ही लैटिन और ग्रीक भाषाएँ जानते थे और जर्मन गणितज्ञ जोखारियस डेस सौ-सौ अंकों वाली दो राशियों का गुणनफल जबानी निकाल लेते थे, तो हमें अपने मस्तिष्क की परिसीमा देख कर खेद होना स्वाभाविक है।

चार-चार अंकों वाली राशियों के गुणन में ही जिनकी दिमागी कसरत हो जाये, उन्हें मस्तिष्क की ऐसी क्षमता अनहोनी लगना स्वाभाविक ही है। क्या यह कोई दैवी देन है? या सामान्य मनुष्य में भी ऐसी क्षमता छिपी है, जिसका उसे स्वयं पता नहीं।

वैज्ञानिकों ने यह बात परीक्षणों से सिद्ध कर दिखायी है कि, औसत आदमी अपने जीवन-काल में, अपनी बौद्धिक शक्ति के बहुत थोड़े अंश का ही उपयोग करता है; शेष वैसी ही पड़ी रहती है। इस अतिरिक्त बुद्धिशक्ति का ठीक विनियोग करें, तो हम भी ऐसे बहुत-से बौद्धिक कार्य कर सकते हैं, जो अभी हमारे बूते के बाहर हैं। अत्यंत जरूरी मौकों पर, जैसे परीक्षा पास आने पर, हम उसका उपयोग करते भी हैं। यही कारण है कि, जो बातें हमें महत्वपूर्ण या आवश्यक प्रतीत होती हैं, उन्हें सीखने में हमें कठिनाई नहीं होती। आपने देखा होगा कि, कई बालक जो इतिहास की तिथियाँ याद नहीं कर पाते, साल भर में खेले गये सभी क्रिकेट मैचों के स्कोर स्मरण-शक्ति के बल पर बता सकते हैं।

बेशक यह सच है कि, मानव-मस्तिष्क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी जटिल और चमत्कारी चीज है; और हमारी अधिकांश बुद्धिशक्ति जन्मकाल में ही निश्चत हो जाती है। किंतु हम उसकी चिंता क्यों करें, जब कि हम जानते हैं कि, हम अपनी पूरी बुद्धिशक्ति का उपयोग ही नहीं करते? सो आवश्यकता इस बात की है कि, जो बहुत-सी बौद्धिक शक्ति हमने गठरी बांध कर रख दी है, उसे निकालें; जो स्वर्ण-मुद्राएँ हमारे खजाने में पड़ी-पड़ी कांतिहीन हो रही हैं, उन्हें चमका कर चलाएँ; भीतर जो दीपक अनजला पड़ा है, उसे प्रज्वलित करें। और नीचे लिखे ये अभ्यास इसमें काफी सहायक सिद्ध होंगे।

क्या आपको याद हैं बचपन के दिन? छत पर बरसते मेह की ध्वनि आपको कैसी आनंदप्रद लगती थी! परंतु आज आप वर्षा से आनंदित न हो कर, कपड़े गीले होने के भय से झल्ला उठते हैं। एक नयी अनुभूति ने पुरानी अनुभूति का स्थान ले लिया है। वर्षा की फुहारें अब मस्तिष्क के उस भाग को नहीं छूतीं, जो आनंद का प्रसारण करता है; वे छूती हैं उस भाग को, जो भय जागृत करता है। अपने मस्तिष्क को अभ्यस्त कीजिए कि, अनुभूतियाँ मस्तिष्क के उचित भागों को छुएँ, दूसरों को नहीं।

अपने चारों ओर की चीजों पर बार-बार दृष्टिपात कीजिए। मधुमक्खी के परों पर चमकती सूर्य-किरणें देखिए; बगीचे में पेड़ों पर किल्लोल करती छोटी चिड़ियों को निहारिए; डालियों पर झूमती कलियों का अवलोकन कीजिए। आँखें बंद कर चारों ओर से आती हुई ध्वनियों को पहचानने की चेष्टा कीजिए। कल्पना करके देखिए कि, यदि आप अचानक ही गूँगे और बहरे हो जायें, तो कैसा लगेगा; फिर बोलने-सुनने की शक्ति अचानक ही वापस मिलने पर क्या अनुभूतियाँ होंगी।

मस्तिष्क से अधिक काम लेने के लिए, उसे और सबल बनाने के लिए, सभी इंद्रियों को वांछनीय दिशा में प्रवृत्त होने का अभ्यस्त बनाइए।

अक्ल और दिल

किसी वक्त यहाँ सब जगह जंगल-ही-जंगल था। उसमें दो जीव रहते थे– अक्ल और दिल। अक्ल लूली थी और दिल चौपाया। एक बार इलाके में सूखा पड़ा– मीलों तक पानी का नामोनिशान नहीं। लूली अक्ल मारे प्यास के चीखने लगी। नादान दिल से रहा नहीं गया– वह अक्ल के पास गया, उसे पीठ पर चढ़ाकर किनारे ले गया– शायद तब से ही यह सिलसिला शुरू हो गया है कि, जब अक्ल को 'प्यास' सताती है, तो वह दिल पर सवारी कस कर अपनी मुराद के किनारे पहुँच जाती है।

––महमूद तैमूर

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक मनीषी ने एक बार कहा था—"लोगों की यह धारणा गलत है कि, स्मृति पर अधिक भार डालने से वह शक्तिशाली बनती है। तथ्य तो इसके बिल्कुल विपरीत है। स्मृति पर अनावश्यक भार डालने से वह बेकार हो जाती है।" सो स्मरण-शक्ति बढ़ाने के लिए रटंत नहीं; अपितु सरल, आनंददायक और कम बोझीले उपाय काम में लाइए।

अमेरिका की एक प्रसिद्ध रेल कंपनी 'ट्वेंटियथ सेंचुरी लिमिटेड' का एक सेवक टामस वाल्श, प्रत्येक यात्रा में नवीन यात्रियों के सम्पर्क में आता था और उनमें से प्रायः सभी को दुबारा देखते ही पहचान लेता था। जब उससे इस स्मृति-तीक्ष्णता का रहस्य पूछा गया, तो उसने बताया—"मैं अपने सम्पर्क में आने वाले यात्रियों की विशेष अभिरुचियों को जानने का प्रयत्न करता रहता हूँ। इस प्रकार उनके व्यक्तित्व की विशिष्टताओं को समझ कर, उन्हें स्मरण रखने में मुझे खास कठिनाई नहीं होती।"

जब आपका किसी व्यक्ति से नया-नया परिचय हो, तो उसके स्वभाव की विशेषताओं और उसके स्मरणीय गुणों को पहचानने का प्रयत्न कीजिए। जब आपका किसी से परिचय करवाया जाय, तो प्रत्यभिवादन में उस व्यक्ति का नाम दुहराइए; विदा होते समय पुनः उसे नाम लेकर सम्बोधित कीजिए। ऐसी कल्पना कीजिए कि, बाद में आपको उस व्यक्ति का लिखित वर्णन करना है। फिर आप उसे भूल नहीं पायेंगे। यही आदत प्रत्येक विषय में डालिए; आपकी स्मरण-शक्ति में अवश्य वृद्धि होगी।

हम इच्छानुसार अपने मस्तिष्क के शक्ति-विशेष को कार्यशील बना कसते हैं, बशर्ते, हम स्थिर, तटस्थ एवं नियंत्रित रूप से विचार करने का अभ्यास करें। नीचे लिखे कुछ मानसिक व्यायाम भी इसमें सहायक हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, जिस कमरे में से आप अभी-अभी निकल कर आये हैं, उसमें रखी चीजों को याद करने की कोशिश कीजिए। अगर आप किसी लेख, कहानी या कविता को याद करना चाहते हैं, तो कल्पना कीजिए कि, आपको उसके सम्बंध में अनेक प्रश्नों का उत्तर देना पड़ेगा।

जब आप किसी समस्या को सुलझाना चाहें, तब समझिए कि, वह आपकी न होकर, किसी दूसरे व्यक्ति की समस्या है, जो आपके पास सुझाव माँगने आया है। जब हम दूसरों की समस्याओं पर विचार करने बैठते हैं, तो हमारी बुद्धि बहुत तीव्रता से काम करती है; हमारी सूझ-बूझ ऐसे समय आश्चर्यजनक रूप से सक्रिय हो उठती है।

हमारा मानसिक विकास अन्य लोगों की विचार-धारा एवं मानसिक-तरंगों पर भी निर्भर है। प्रोत्साहन एवं पोषण के लिए भी, हमें दूसरों की मानसिक-शक्तियों का अवलम्बन लेना ही पड़ता है। अतः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय-समय पर, विभिन्न लोगों से, विविध विषयों पर प्रश्न पूछते रहने की आदत डालिए। सरकार कूटनीतिज्ञों को कैसे प्रशिक्षित करती है? समुद्र में पड़ती हुई सूर्य-रश्मियों को चित्रकार कैसे चित्रित करता है? अमुक अजीब-सी आवाज कहाँ से आयी थी?—इस प्रकार के प्रश्नों के तथ्यपूर्ण उत्तर आपके मानसिक ज्ञान-कोष को समृद्ध करने में सहायक होंगे।

मानसिक बुढ़ापे का, जीवन के प्रति अनाकर्षण का, एक कारण है कुतूहल और जिज्ञासा का मंद पड़ जाना, दिमाग के किवाड़ बंद हो जाना। ऐसा न होने दीजिए। यदि आपको अपने वर्तमान जीवन-क्रम में कोई आकर्षण अनुभव नहीं होता, तो अपने मन के कपाटों को उन विचारों के लिए, उन आदर्शों के लिए, खोल दीजिए, जिन्हें आप प्रायः पसन्द नहीं करते। हो सकता है कि, आपको नयी पीढ़ी की विचारधारा, नयी पीढ़ी का जीवन-दर्शन, नयी पीढ़ी के आदर्श बिल्कुल न भाते हों। पर परवाह मत कीजिए और इन नवीनताओं को अपनाने का प्रयत्न कीजिए।

जिन लोगों से आप असहमत हैं, उन्हें खोज-खोज कर उनसे मित्रता स्थापित कीजिए। अन्य जातियों एवं राष्ट्रों के लोगों के सम्पर्क में आने का प्रयत्न कीजिए—उनके खातिर नहीं, अपने जीवन-घट को रसपूर्ण बनाने के लिए।

अनेक प्रयोगों द्वारा सिद्ध हो चुका है कि, कई बार जब हम जागृत अवस्था में, अपनी किसी समस्या को सुलझाने में असफल हो जाते हैं, सोते हुए हमें उनका हल मिल जाता है। स्वयं इस लेख का लेखक, एक बार रात को तीन-चार घंटे तक एक रिपोर्ट लिखने का प्रयत्न करता रहा; किन्तु नहीं लिख सका। अन्ततः निराश होकर सो गया। सुबह जागने पर उसे ऐसा लगा, जैसे कोई दूसरा व्यक्ति रिपोर्ट की सारी विषय-सामग्री को क्रमवार सजा गया है। स्पष्ट है कि, हमारा अवचेतन मन उन सब बातों का ज्ञान रखता है, जिनके बारे में हमारे मस्तिष्क को लेश मात्र भी पता नहीं होता।

परंतु हमारा चेतन मस्तिष्क जितना अधिक भरा-पूरा होगा, हमारा अवचेतन मन भी उतना ही अधिक संवेदनशील और सक्रिय होगा। यदि लेखक उस रात को, रिपोर्ट के विषय में इतना अधिक न सोचता, यदि उसके चेतन मस्तिष्क में इतने अधिक विचार—चाहे वे क्रमहीन ही क्यों न रहे हों—उत्पन्न नहीं होते, तो उसका अवचेतन मस्तिष्क कभी भी समस्या का हल प्रस्तुत नहीं कर पाता।

आपको कोई विषय कितना ही कठिन क्यों न लगता हो, अपने मन एवं मस्तिष्क को उसके सम्बंध में खोज करने से मत रोकिए। मन की उड़ान को सीमाओं में बाँध कर, हम अपने पाँव पर स्वयं कुल्हाड़ी मारते हैं। नये ज्ञान के लिए, नये विचारों के लिए, मन के द्वारों पर 'स्वागतम्' की पट्टियाँ टाँग दें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक छींक ना-भाई
दो छींक हुं-भाई

पूर्वी राजस्थान में मीना-जाति अच्छी-खासी संख्या में है—इस जाति के लोग जब काम पर जाते हैं, तो इस कहावत के अनुसार छींक का शकुन मनाते हैं। यहाँ हम छींक के बारे में कुछ और भी रोचक बातें बतलाना चाहते हैं।

★

छींक का पुराण बड़ा पुराना और उतना ही मनोरंजक है। छींक शुभ और अशुभ, दोनों प्रकार की मानी जाती है। परंतु, जैसे मनचाहे समय मनुष्य के पास सफलता नहीं चली आती, वैसे ही शुभ छींक भी नियत समय पर नहीं पधारती। 'गरुड़-पुराण' में इस छींक के लोकोत्तर चरित्र का विस्तार से विवेचन किया गया है।

किसी शुभ कार्य पर निकले व्यक्ति को, यदि मार्ग में छींक आ जाये, तो वह कुछ देर के लिए वहीं रुक जाता है। यह

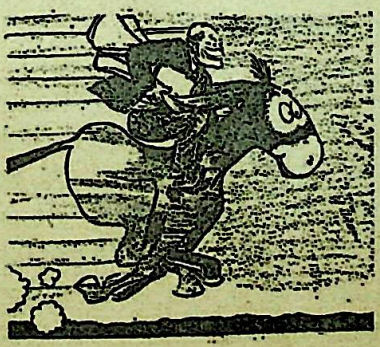

प्रथा हमारे यहाँ ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी रूढ़ है। दरवाजे के बीचों-बीच खड़े-खड़े, यदि छींक आ जाये, तो कुछ लोग उस स्थान पर पानी के छींटें मारते हैं। वार्तालाप के बीच, यदि किसी को छींक आ जाये, तो हमारे मुँह से अनायास ही 'सच है', 'सत्य है', 'बराबर है' आदि शब्द निकल पड़ते हैं। बड़े-बुजुर्ग ऐसे अवसरों पर 'शतंजीव', 'शतायुर्भव' अथवा 'दीर्घायुभव' आदि का उच्चारण करने से नहीं चूकते। हमारे धर्म-शास्त्रों ने कहा है कि, छींक आने पर, यदि किसी ने कुछ नहीं कहा, तो वह पाप का भागी होता है।

पारसियों के धर्मग्रंथ 'सद्दर' की आज्ञा है कि, प्रत्येक पारसी को छींक आने पर 'आहुं वैरयो' तथा 'अशेन वोहू' इन दो मंत्रों का उच्चारण करना चाहिए। पारसियों की यह धार्मिक मान्यता है कि, शरीर में दुष्टात्मा रहती है और जब यह दुष्टात्मा अग्नि द्वारा पराजित होकर, शरीर से बाहर जाना चाहती है, तब छींक के रूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में निकलती है। अतः इन मंत्रों के जरिये विजयी अग्नि को प्रसन्न कर, उसका गुणगान किया जाता है।

एक साथ दो छींकों का आना ईरान में अच्छा माना जाता है। हिन्दी में भी तो कहावत है – "एक साथ दुइ छींका, जहाँ जाय तहाँ नीका।" प्राचीन मेसापोटेमिया में छींक का आदर-सम्मान बिल्कुल अद्-भुत था। जब वहाँ का बादशाह छींकता, तो उसके निकट के तमाम दरबारी, ऊँचे स्वरों में, उसका अभिवादन करते थे। दरबारियों की अभि-वादन-ध्वनि सुन कर इर्द-गिर्द, महल के कक्षों में रहने वाले अन्य राज्य-कर्मचारी भी, जोर-जोर से चिल्ला कर अभि-वादन करते थे। राज-कर्मचारियों की आवाज सुन कर राजमहल के आस-पास के मार्गों पर चलने वाले पथिक, उनका अनुसरण करते। उनकी आवाज पड़ोस की गलियों में पहुँच कर वही प्रतिक्रिया पैदा करती और इस प्रकार होते-होते शहर के तमाम गली-कूचे अभिवादन के निनाद से गूँज उठते। शहर-भर में आधे घंटे के लिए जबरदस्त हंगामा मचा रहता।

यहूदी लोग भी छींक आने पर 'भगवान् तुम्हारा कल्याण करें' तथा 'सुखी रहो' आदि शब्दावलि का प्रयोग करते हैं। मुस्लिम सृष्टि-पुराण के अनुसार जब अल्लाह ने 'आदम' के कान में फूँक मारी, तब मिट्टी का वह जड़ पुतला, चेतन हो गया और तुरंत जोर से छींक पड़ा। साथ ही उसके मुँह से 'अल्लाहम्दुलि-ल्लाह" ये शब्द नि क ले। हजरत मुहम्मद ने अपने शिष्यों को बताया कि, छींक आने पर 'अल्लाहम्दुलिल्लाह' कहने से जिस्म हल्का होता है; इतना ही नहीं, बल्कि इससे शरीर के रोमकूप खुल जाते हैं, जो बहत्तर किस्म की छोटी व बड़ी बीमारियों की रोकथाम करते हैं।

यूनानी लोगों में छींक आना अच्छा समझा जाता है। वे छींक के तीन अर्थ लगाते हैं – (१) बातचीत के दरमियान यदि छींक आ जाये, वह समझिए कि, वह बात सत्य होगी; (२) दुश्मन की चर्चा के समय, यदि छींक आ जाये, तो समझिए

छींक-मौसी

जम्हाई शैतान की माँ और छींक उसकी मौसी है। इस आशय की कई कथाएँ नागाओं में प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार शैतान से सब लोग इतने परेशान हो गये कि, वे देव के पास गये। देव वज्र लेकर शैतान को मारने दौड़ा– डर के मारे माँ-जम्हाई ने शैतान को शरण नहीं दी। अतः वह भागकर अपनी मौसी छींक के पास छिप गया। जब छींक ने शैतान का पता नहीं बताया, तो क्रोध में देव ने उसकी नाक काट ली– तभी से छींक नकटी है और नकटी सबको अशुभ लगती है। – डा० सुकांत बरुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि, उसका बेड़ा गर्क होगा; और (३) यदि कोई रोगी छींक दे, तो यह उसके नीरोग होने का चिन्ह है।

यूरोप के लोग ७८ ई. के पहले, छींक आने पर अपने दोनों हाथ टिकटी की तरह बाँध लेते थे। उनका विश्वास था कि, ऐसा करने से संकट भाग जाता है। अब भी जर्मनी में जूते पहनते समय आयी छींक को, बड़ा अशुभ माना जाता है।

यह तो हुई छींक के संबंध में सभ्य संसार की राय। अब जरा आदिवासी लोगों की भावना को भी समझें।

आदिम लोगों का यह विश्वास आज भी कायम है कि, शरीर में कोई प्रेतात्मा रहती है और वह छींक के बहाने बाहर निकलती है। परन्तु अफ्रीका के कांगो प्रदेश के निवासियों में ठीक इसके विपरीत मान्यता देखने को मिलेगी। उनका ऐसा विश्वास है कि, छींक की शक्ल में शरीर में रहनेवाली आत्मा बाहर चली जाती है; और यदि वह शरीर में वापस न लौटे, तो मनुष्य की मृत्यु निश्चित है। इसीलिए छींकने पर तुरंत ही वे लोग "तू वापस आ। तू वापस आ!" चिल्ला उठते हैं। वे यह समझते हैं कि, उनके ऐसा कहने पर आत्मा तत्काल फिर शरीर में चली आयेगी।

पश्चिम अफ्रीका के लोग, बच्चे के छींकने को अशुभ और बड़ों के छींकने को शुभ मानते हैं। जुलु-जाति के जंगली लोगों में ऐसी भावना है कि, जिस व्यक्ति को छींक आती है, उसके शरीर में पितरों की आत्मा प्रवेश करती है।

छींक के बारे में सर्वप्रथम अनुसंधान करनेवाला व्यक्ति था पेंजर। उसने अपने विश्लेषण की पुष्टि के लिए 'कथा-सरित्सागर' के अंग्रेजी अनुवाद का उपयोग किया था। हेस्टिंग्स द्वारा अंग्रेजी में लिखित 'धर्म और नीति-शास्त्रों का विश्वकोष' में छींक का बड़ा ही मनोरंजक ऐतिहासिक विवरण दिया है।

इन सब उल्लेखों से एक बात तो निर्विवाद सिद्ध है कि, अधिकांश सभ्य-असभ्य लोगों में छींक के साथ संबद्ध प्रथाएँ एक-सी ही थीं। किसी-न-किसी बहाने ईश्वर का नामोच्चार हो—यह हेतु, इस प्रथा के पीछे निहित था।

यह बहुरूपी छींक आज भी उपेक्षा का विषय नहीं है। कुछ डाक्टरों का ऐसा मत है कि, सुबह उठने के बाद आने वाली छींक तंदुरुस्ती की निशानी है। कुछ डाक्टरों की ऐसी भी राय है कि, एक साधारण छींक में लाखों रोग-जंतु शरीर से बाहर निकलते हैं। इसीलिए इन जंतुओं से अपनी तथा औरों की रक्षा करने के लिए, छींकते समय नाक पर रूमाल रखना बहुत आवश्यक हो जाता है।

★

जब सब लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे, वह समय तुम्हारे रोने का होगा; क्योंकि ऐसे ही झूठे पैगम्बरों के पिताओं ने भी उनकी प्रशंसा की थी। —स्वामी राम

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिकंदर की कुटिल व्यूह-रचना

सिकंदर और पोरस के ऐतिहासिक युद्ध की व्यूहात्मक स्थिति पर मेजर बंसीलाल द्वारा विहंगम-दृष्टि

*

जब सिकंदर महान्, यूनान से लेकर ईरान तक, सब राज्यों को पददलित करता हुआ अपनी विश्वविजयी सेना के साथ, सिंध नदी के इस पार उतर आया, तक्षशिला के राजा आंभी ने, कुछ तो अपनी निर्बलता से और कुछ अपने प्रबल विरोधी पोरस से बदला लेने की इच्छा से, सिकंदर के साथ मैत्री और अधीनता की संधि कर ली। परन्तु अभिमानी पोरस विदेशी आक्रांत के आगे झुकने को तैयार न हुआ।

सो जुलाई सन् ३२६ ई. पू. में सिकंदर अपनी विशाल सेना और तक्षशिला के राजा के पाँच हजार सैनिकों के साथ झेलम की ओर अग्रसर हुआ। सिंध पार करने के लिए, जो नावें बनायी गयी थीं, उन्हीं को जोड़-तोड़ कर नौकाओं का बेड़ा तैयार कर लिया गया।

तब झेलम बाढ़ से चढ़ी हुई थी। और उसके उस पार था राजा पोरस – अपनी विशाल सेना और लड़ाकू हाथियों के साथ। पोरस ने अपनी सेना ठीक उसी स्थान पर अड़ा रखी थी, जहाँ से सिकंदर की सेना नदी पार कर सकती थी। उसने कप्तानों की कमान में सेना की कुछ टुकड़ियाँ, नदी की रक्षा के लिए नदी-तट पर ऊपर-नीचे भी भेज दी थीं। पोरस की सेना में ३०,००० प्यादे, ४,००० घुड़सवार, ३०० रथ और २०० हाथी थे।

इतनी विशाल सेना और बाढ़ से भरी नदी देख कर सिकंदर ने अपनी सेना प्रति-दिन एक जगह से दूसरी जगह हटानी शुरू कर दी; ताकि पोरस को ज्ञात न हो कि, उसका इरादा क्या है। इसी उद्देश्य से, उसने सेना के कई टुकड़े कर दिये और सब दिशाओं में भेज दिये। उसने यह भी पता लगवाया कि, कहाँ-कहाँ से नदी पार की जा सकती है। दूर-दूर से उसने रसद जुटानी शुरू की, जिससे पोरस यह समझे कि, वह बरसात तक उसी पार रहेगा।

प्रति दिन सिकंदर की सेना नदी-तट पर ऊपर-नीचे घूमती दीखती थी। उसके सैनिक शांत-भाव से नदी से पानी भरते दीखते थे। पोरस कुछ भाँप न सका कि, हमला कब, कहाँ और कैसे होगा। फिर सिकंदर ने घोषणा भी तो कर दी थी कि, जब तक बरसात का पानी नहीं उतरेगा, वह नदी पार न करेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिकंदर ने यह देख लिया था कि, पोरस के सामने नदी पार करना असंभव है। शत्रु के हाथियों की चिंघाड़ सुनकर उसके घोड़े आगे बढ़ने से इन्कार कर देते थे। यदि उसके प्यादे नदी पार करन की कोशिश करते तो, पोरस के सैनिक उन्हें काट-कूट कर रख देते। इसलिए उसने निश्चय किया कि, रात को छिप कर किसी दूसरी जगह से नदी पार की जाय।

उसने अपने घुड़सवारों को कई दिन तक रोज रात को नदी-तट पर ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर दौड़ाया। सैनिकों को आदेश था कि, वे खूब कोलाहल करें, लड़ाई के नारे चिल्लायें जिससे लगे कि, अभी आक्रमण होने वाला है। कुछ दिन तक तो पोरस की सेना उस ओर बढ़ती थी, जिस ओर से शोर आता था; परन्तु शीघ्र ही वह इस शोर की आदी हो गयी और कोलाहल होने पर, केवल नदी-तट के संतरी कुछ सावधान हो जाते थे।

इतनी भूमिका तैयार कर, अब सिकंदर एक आँधी-तूफान वाली रात में अपने तीरंदाजों, घुड़सवारों और कुछ प्यादों को लेकर अपने पड़ाव से अठारह मील ऊपर नदी-तट पर पहुँचा। उस इलाके में घनी झाड़ियाँ बहुत थीं, जिनकी आड़ में सैनिक नदी पार कर सकते थे। बाकी सेना को उसने जनरल काटेरस की अधीनता में कैंप में ही रहने दिया। जनरल को हुक्म था कि, वह नदी तभी पार करे, जब पोरस उससे लड़ने के लिए आगे बढ़े या भागने लगे; किन्तु यदि पोरस अपने हाथी पीछे ही रहने दे और आधी सेना के साथ आगे बढ़े, तो वह नदी पार न करे।

सिकंदर ने शीघ्र ही चमड़े के थैले घास से भरवाये, सब नावें इकट्ठी कीं और नदी पार कर ली। सबसे पहले नदी के परले तट पर पैर रखा सिकंदर ने। दूतों ने तत्काल पोरस को यह खबर पहुँचायी। पोरस ने अपने पुत्र को २,००० सैनिकों और १२० रथों के साथ उसका प्रतिरोध करने भेजा। पर सिकंदर के घुड़सवारों ने उसे और उसकी सेना को काट डाला।

जब पोरस को यह मालूम हुआ, तो वह हक्का-बक्का रह गया; क्योंकि वह तो देख रहा था कि, सामने के कैंप की सेना अभी नदी पार करने की तैयारी ही

अश्वारोही योद्धा

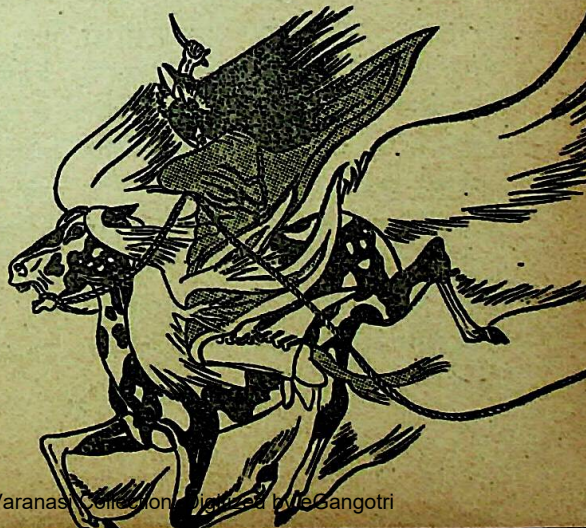

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर रही थी। तुरंत पोरस ने उस स्थान से आगे बढ़कर, सिकंदर से मुठभेड़ करने की ठान ली। कुछ हाथी और प्यादे उसने जनरल काटेरस का मुकाबला करने के लिए छोड़ दिये; और स्वयं ४,००० घुड़सवार, ३०० रथ, २०० हाथी और ३,००० प्यादों के साथ आगे बढ़ा।

जब वह ऐसी जगह पहुँचा, जहाँ मिट्टी चिकनी नहीं थी और घुड़सवारों और रथों के लिए सर्वथा उपयुक्त थी, उसने व्यूह की रचना की। हाथियों को एक-एक सौ फुट के फासले पर खड़ा कर दिया, और उनके बीच तथा पीछे कवच धारी तीरंदाज खड़े कर दिये; ताकि सिकंदर के घुड़सवार और प्यादे हाथियों तक पहुँचने की हिम्मत न करें। दायीं और बायीं ओर घुड़सवार और रथ खड़े किये।

चतुर सिकंदर ने यह व्यूह-रचना देखकर सामने से हमला नहीं किया। उसके घुड़सवार पोरस के अश्वारोहियों से अधिक अच्छे थे; इसलिए उसने कुछ को पोरस की दायीं ओर भेज दिया। जनरल डमि-ट्रिपोस के मातहत बाकी घुड़सवारों को पोरस की बायीं ओर भेजा और अपनी पैदल सेना को हुक्म दिया कि, वह तभी आगे बढ़े, जब पोरस की सेना में खूब खलबली मच जाय।

ज्यों ही दायीं ओर यूनानियों का हमला हुआ, तो पोरस के बायीं ओर के घुड़सवार दायीं ओर सिकंदर के घुड़सवारों पर लपके। सिकंदर यही चाहता था। उसने अपने बाकी घुड़सवार उनके पीछे दौड़ा दिये। इस दुतरफा वार से पोरस की सेना में खलबली मच गयी और उसके सिपाही हाथियों के पीछे छिपने लगे।

इसी समय सिकंदर के पैदल सिपाही लंबे भाले और बरछे लेकर हाथियों पर टूट पड़े। उसके धनुर्धारियों ने हाथियों पर बाण-वृष्टि शुरू कर दी। हाथी घायल होकर अपनी ही सेना को कुचलते हुए, भागने लगे। इसी बीच जनरल काटेरस की सेना, जो कैंप में छोड़ दी गयी थी, नदी पार कर पोरस की सेना का पीछा करने लगी। इस युद्ध में पोरस के करीब २०,००० प्यादे और ३,००० घुड़सवार घायल हुए अथवा खेत रहे। सबके-सब हाथी या तो मारे गये, या पकड़ लिये गये।

पोरस वीरता से लड़ा। मौका देखकर आंभी ने भी उसपर वार किया। अंत में पोरस घायल होकर गिर पड़ा और पकड़ लिया गया। सिकंदर के सामने युद्धबंदी के रूप में उपस्थित किये जाने पर, उसने यूनान के उस विश्व-विजयी सेनापति को क्या उत्तर दिये, यह तो स्कूल में पढ़नेवाले बच्चे तक जानते हैं। उसकी वीरता से प्रसन्न होकर वीर सिकंदर ने उसे उसका राज्य ही नहीं लौटा दिया; अपितु बाद में ब्यास नदी तक अपने विजित प्रदेश भी उसे सौंप दिये। यह था झेलम का युद्ध और उसका परिणाम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीन

हमारे जीवन की प्रथम चिनगारी

जड़ से जीव सूक्ष्म है; अतः जड़ाणु की अपेक्षा जीवाणु कहीं ज्यादा सूक्ष्म होते है और जीव में गति है, तो गतिशील जीवाणु और भी सूक्ष्म होते हैं। जड़ और जीव दोनों की नींव अणु है— जड़ की नींव परमाणु और जीव की नींव वाजाणु या 'जीन'। नीचे की पंक्तियों में इस आदि-स्फुलिंग 'जीन' का सरल विश्लेषण किया गया है।

संतान अपने माता-पिता से, अपने पूर्वजों से इतनी मिलती-जुलती क्यों होती है ? नन्हा-सा पौधा उसे प्राण देने वाले बीज के जन्मदाता, मूल वृक्ष से, क्यों मिलता-जुलता होता है ? एक छोटे-से बीज अथवा उससे भी छोटे रज या वीर्य का कण ऐसी क्या क्षमता रखता है कि, उससे उत्पन्न संतति रूप-रंग में, आकार-प्रकार में, बहुत-कुछ अपने पूर्वजों के समान होती है ?

इसे समझने के लिए हमें वृक्ष-वनस्पतियों के जीवन की ओर देखना चाहिए। फूल से फल बनें और फल में बीज हों, इसके लिए पहले फूल को पराग से गर्भित होना होगा। पराग के बहुत सूक्ष्म कण होते हैं; वे वनस्पति-जगत् में वीर्यवत् हैं।

स्त्री के रजःस्थल की तरह पुष्प के भीतर, एक बहुत ही सूक्ष्म अवयव होता है। अंडे से उसकी तुलना की जा सकती है। जब पराग इस अंडे से मिश्रित होता है, तब वह अंडा वृद्धि पाकर फल का, फल में के बीज का रूप धारण करता है।

इस बीज में जीवन की सब शक्तियाँ और उसके संभाव्य चमत्कार निहित रहते हैं। मिट्टी, जल, वायु और प्रकाश से आवश्यक सहायता प्राप्त कर, बीज पुनः वृक्ष बनता है, उसमें फूल लगते हैं, वे फूल बीजधारी फल बनते हैं, और फिर बीज से अंकुर का वही क्रम चलता है।

यही क्रम अन्य सब जीवधारियों में भी पाया जाता है—मनुष्यों में भी। जीवन के दो सूक्ष्म कोष (प्रभव या जर्म), एक स्त्री-भाग, दूसरा पुरुष-भाग, मिश्रित होकर एक होते हैं। फिर यह सम्मिलित कोष बहुत ही चमत्कारपूर्ण रीति से विभाजित व पुनर्विभाजित होकर गर्भस्थ शिशु का रूप धारण कर लेता है। इन प्रभव-कोषों (जर्म-सेल्स) से ही वंशपरम्परा में समानता का सूत्र चलता है। जीव-तत्व के नन्हे से बिन्दु में वंशानुगति (हेरेडिटी) की पेचीली मशीन छिपी रहती है।

वंश-परम्परा के रहस्यों को समझने के लिए वैज्ञानिक सदा से उत्सुक एवं प्रयत्न-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शील रहे हैं। विएना के समीप एक ईसाई मठ के एबट जान ग्रेगर मैंडेल ने १८५७-६८ में अपनी वाटिका में विभिन्न जाति के मटरों की संकरता (क्रास-ब्रीडिंग) के कई प्रयोग किये। इनके आधार पर उन्होंने यह निर्धारित किया कि, वंशपरम्परा में आनेवाले गुणों में से, कई सशक्त होते हैं और कई अशक्त। मटरों का सशक्त आनुवंशिक गुण है, पौधे की ऊँचाई। मैंडेल ने देखा कि, ऊँचे पौधे और नाटे पौधे की संकरता से, औसत ऊँचाई वाले पौधे नहीं पैदा हुए, अपितु ऊँचे ही पौधे निकले। परन्तु इससे भी अधिक अचरज की बात यह थी कि, जब इन ऊँचे पौधों की संतानें हुईं, तो उनमें से हर तीन पौधों के पीछे दो पूरे ऊँचे और एक नाटा निकले। अर्थात् वंशपरम्परागत नाटापन एक पीढ़ी तक छिपा रह कर, दूसरी पीढ़ी में प्रकट हुआ। दूसरी पीढ़ी के इन नाटे पौधों के पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र आदि सबके सब नाटे ही हुए। परन्तु दूसरी पीढ़ी के लंबे पौधों की जो संतानें हुईं, उनमें से एक-तिहाई तो ऊँचे निकले और शेष में से हर चार के पीछे, तीन लंबे और एक नाटा निकले।

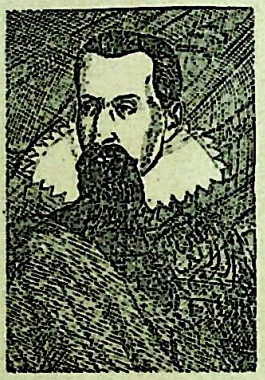

जीव-परमाणु के सम्बंध में प्रथम वैज्ञानिक विचारक नोइल ब्रेंसेल्स, जिसे आरिट्रियन पादरियों ने खंभे से बाँधकर जीवित जलवाया था।

यह भी देखा गया कि, वंशपरम्परा में लम्बाई प्रदान करने में नर ही कारण रहा हो और मादा नहीं, ऐसी बात नहीं। लम्बे पौधे का प्रभव, चाहे अंडा रहा हो अथवा पराग, एक-से परिणाम देखे गये। फूलों के रंग-रूप, फल व बीज के आकार-प्रकार और अन्य गुणावगुणों में भी यही सिद्धांत लागू होते हैं।

आगे चल कर पशुओं पर, ये प्रयोग दोहराने पर यह देखा गया कि, पशुओं के वंशानुगत गुण-दोष—अर्थात् आँखों के रंग, बालों की लंबाई, सींगों के आकार-प्रकार आदि पर भी, यही नियम ज्यों-का-त्यों लागू होता है।

मटर के पौधों की लंबाई की तरह, मनुष्यों में आँख की पुतली का रंग, एक आनुवंशिक गुण है। नीली पुतली वाले वंश में उत्पन्न नीली पुतली वाली माँ और भूरी पुतली वाले पिता की संतान भूरी आँखों वाली होगी। और इस प्रकार उत्पन्न भूरी आँखोंवाले माता-पिता की संतानें नीली आँखोंवाली भी हो सकती हैं और भूरी आँखोंवाली भी।

गुण-विशेष सदैव-सर्वथा प्रबल-निर्बल नहीं होते। यह भी देखा गया है कि, नर-मादा की प्रबलता व निर्बलता औसत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप से भी संतान को प्रभावित करती हैं। लम्बे पिता व ठिगनी माता की संतान

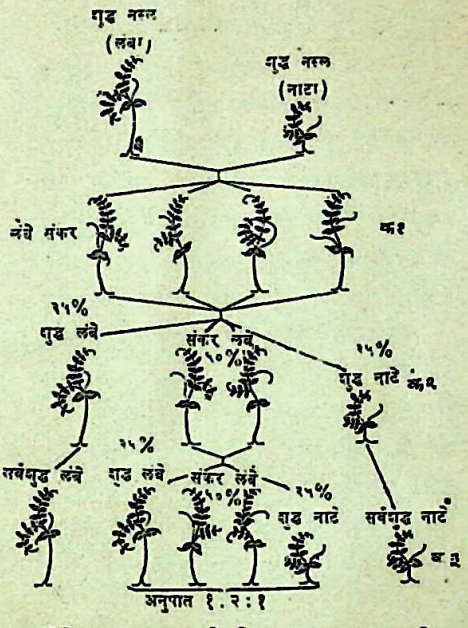

मेंडेल का वंशानुगति नियम : शुद्ध नस्ल के लम्बे पौधे एवं शुद्ध नस्ल के नाटे पौधे से सब लम्बे पौधे पैदा होते हैं (क१)। यह क१ वर्णसंकर है। क१ से उत्पन्न होंगे क२; जो मिश्रित पीढ़ी है—इसमें २५ प्रतिशत पौधे लम्बे (नाटी नस्ल के जीन से मुक्त) होंगे; २५ प्रतिशत नाटे (लंबी नस्ल के जीन से सर्वदा मुक्त) और शेष अपने माता-पिता की तरह लम्बे-संकर होंगे। क२ के लम्बे संकर पौधों की संतति में से २५ प्रतिशत शुद्ध लम्बे, २५ प्रतिशत शुद्ध नाटे और ५० प्रतिशत लम्बे संकर होंगे (क३)। क.३ के लम्बे पौधों की संतति में भी यही क्रम चलता रहेगा।

औसत ऊँचाई की भी हो सकती है। पर ऐसी हालत में दूसरी पीढ़ी के एक चौथाई बच्चे, दादा के पीछे जायँगे और एक चौथाई माँ के। बाकी आधे वही औसत ऊँचाई के रहेंगे।

ये प्रभाव क्यों होते हैं ? वह सूक्ष्म प्रभव-कोष, किस प्रकार यह चमत्कार उपस्थित करता है ? जर्मन वैज्ञानिक आगस्ट वीसमैन ने निर्धारित किया कि, प्रभव-कोष में निहित 'जर्म प्लास्म' नामक वस्तु, इसका कारण है। अणुवीक्षक यंत्र से, प्रभव-कोष के गर्भ का अवलोकन कर, उसके कुछ हिस्सों को रंग कर और कोष के विभाजित होने पर उसकी बारीक-बारीक आकृतियों– क्रोमोसोमों – को देख कर, वीसमैन ने निर्धारित किया कि, वंश-परम्परा को नियंत्रित करने वाला तत्त्व यही क्रोमोसोम है। वनस्पति, पशु, मनुष्य आदि सभी प्राणियों के प्रभव-कोषों में ये क्रोमोसोम पाये जाते हैं। उनकी संख्या प्रत्येक योनि के प्राणियों से विभिन्न होती है। कुछ जीवों में ये चार-छह ही होते हैं और मनुष्य में ४८। क्रोमोसोमों के सदैव जोड़े होते हैं और प्रत्येक जोड़े का आकार अलग-अलग होता है। जब प्रभव-कोष का विभाजन होता है, तो प्रत्येक क्रोमोसोम भी विभाजित होता है और पुनः संगठित होता है।

सभी कोषों में क्रोमोसोमों की पूरी संख्या होती है। किन्तु प्रभव-कोषों की अपनी एक विशेषता होती है। जब वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिपक्व होते हैं, तो उनका एक अंतिम विभाजन होता है। तब प्रत्येक जोड़े में से केवल एक क्रोमोसोम प्रभव-कोष में प्रवेश करता है। इस प्रकार नये कोष में ४८ की जगह २४ क्रोमोसोम ही रहते हैं। ऐसे २४-२४ क्रोमोसोम वाले दो प्रभव-कोषों के सम्मिलन से ही नये गर्भ की स्थापना होती है। यों संतान के कोषों के ४८ क्रोमोसोमों में से २४ का प्रदान पिता द्वारा व २४ का माता द्वारा करवाने में प्रकृति ने महान् कुशलता दिखायी है।

वैज्ञानिकों ने देखा कि, क्रोमोसोमों से ही वंशानुगति का सारा रहस्य नहीं खुलता। वे उसके भी आगे बढ़े। उन्होंने देखा कि, क्रोमोसोम ही प्रजनन-वस्तु के सब से सूक्ष्म भाग नहीं हैं; बल्कि उनसे भी छोटे हैं 'जीन'। ये क्रोमोसोम के पिंड की लम्बाई पर, माला के मणियों की भाँति लगे होते हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि, जीन वंशपरम्परा का अंतिम अणु (एटम) है। प्रत्येक जीन विभिन्न प्रकार का एवं गुण-विशेष से सम्पन्न होता है। वास्तव में, सैंकड़ों जीनों में से प्रत्येक जीन वंश-परम्परा-सम्बंधी नन्हीं-नन्हीं बातों का नियमन करता है। कई बार तो आँखों के रंग संबंधी साधारण-सी बात का नियमन, अनेक जीनों पर एक साथ निर्भर रहता है।

प्रभव-कोष ताश के एक पैकट के समान है, और जीन उसके बावन पत्तों के समान। उन बावन पत्तों के मिलाने से, जैसे हजारों-लाखों विभिन्न हाथ बनते हैं, उसी प्रकार जीनों के विविध मिश्रणों से विभिन्न प्रभव-कोष का, और उससे विभिन्न प्रकार की संतति का प्रजनन होता है।

★

मानदंड

एक यूरोपियन यात्री दल भारत की यात्रा के लिए आया था। एक शहर में घुसते-घुसते उन्होंने रास्ते पर बड़े-बड़े सफेद लड्डू देखे। लड्डू भुने हुए राजगिरा की खील के थे। बड़े-बड़े सफेद लड्डू देखकर उनका मन ललचाया। खाकर देखा, अच्छे लगे। चार लड्डू ले भी लिये। दाम पूछे। बेचनेवाली भोली औरत ने कहा—"एक आने के दो।" इतनी सस्ती कीमत सुनते ही खरीदार चौकन्ना हो गया। अपनी अभिरुचि पर उसका विश्वास नहीं था। इतनी सस्ती चीज खराब ही हो सकती है, लेने में हमने भूल की—ऐसा निश्चय करके लड्डू और पैसे वहीं छोड़ कर वे चले गये। दूसरे लोग भी लड्डू लेकर खाते थे। वे गरीब लोग थे। इन परदेशियों को न और लोगों के अभिप्राय पर विश्वास था, न अपनी स्वादेन्द्रिय पर। जो चीज बाजार में महंगी नहीं है, वह अच्छी नहीं हो सकती—यही था उनकी रुचि का मानदंड।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंद्रजाल का आचार्य

विश्व-विख्यात अमरीकी जादूगर हुडिनी के ऐंद्रजालिक कौशल को दिग्दर्शन करानेवाला एक सरस जीवन-प्रबंध

लंदन का अलहांब्रा थिएटर उस दिन दर्शकों से खचाखच भरा था—ऐसे-वैसे दर्शकों से नहीं; बल्कि डाक्टरों, वैज्ञानिकों और खुफिया पुलिस के बड़े-बड़े अफसरों से। सबकी नजरें परदे पर लगी थीं; सबको परदे के उठने की प्रतीक्षा थी। नियत समय पर परदा उठा और उपस्थिति ने देखा कि, वही व्यक्ति रंगमंच पर उनके सम्मुख खड़ा मुस्करा रहा है, जिसे देखने की उन्हें उत्कट इच्छा तो अवश्य थी, परन्तु आशा तनिक भी न थी।

सब चकित थे; पर सबसे अधिक चकित थे, विश्वविख्यात स्काटलैंड यार्ड के अफसर, जो अभी दस मिनट पहले, इस व्यक्ति को जेल में एक सुरक्षित कोठरी में बंद कर, बड़ा-सा ताला लगा, चाबी अपने साथ लेते आये थे। बंद करते समय, जामा-तलाशी करके देख लिया गया था कि, उस व्यक्ति के पास कोई चाबी नहीं थी। फिर वह कैसे निकल आया ?

बगैर ताला खोले या सेंध लगाये, जेल की कोठरी से बाहर निकल आने का यह चमत्कार, किसी अपराधी ने नहीं, बल्कि एक जादूगर ने दिखाया था। वह था, अमेरिका का विश्वविख्यात जादूगर हुडिनी, जिसका नाम आज बच्चा-बच्चा जानता है। हूडिनी, उनका अपना रखा हुआ नाम था; माता-पिता ने तो बपतिस्मे के समय उनका नाम इनरिख वीस रखा था।

६ अप्रैल, १८४७ को एपल्टन विस्कौन्सिन में इनरिख वीस का जन्म हुआ। उनके पिता का नाम रेबी मेयर सैम्युअल वीस और माता का नाम सेसलिया स्टीनेर था। वे अपने माता-पिता की पाँचवीं संतान थे। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण, इनरिख को बाल्यावस्था में ही, रोजी-रोटी के चक्कर में पड़ना पड़ा। अपने परिवार की सहायता के लिए उन्होंने सभी प्रकार के छोटे-मोटे कार्य किये। इसी दौरान में वे जादू के खेल करने वालों के संपर्क में आये।

प्रारंभ में उन्हें जादूगरी के खेलों से कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। कभी वे मदारी की तरह रकाबियाँ, बोतलें और गेंदें हवा में उछाल कर हस्तलाघव दिखाते, तो कभी सरकस आदि में, जादू के छोटे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोटे खेल दिखा कर, दर्शकों का मनोरंजन करते। कभी-कभी जब जेब में चार-छह पैसे होते, तो किराये का तंबू लगा कर वहाँ नजरबंदी के करिश्मे दिखाते। इन्हीं प्रारंभिक दिनों में, उन्होंने १८ वीं सदी के फ्रांसीसी ज़ादूगर राबर्ट हुडिनी के नाम पर, अपना "हुडिनी" नाम रखा था। फ्रांस के रावर्ट हुडिनी को, ऐसे जादू का जन्म-दाता समझा जाता है, जो एक मनोरंजक कला है और जिसमें दैवी शक्ति की सहायता की आवश्यकता नहीं होती। धीरे-धीरे इनरिख की ख्याति बढ़ती गयी और वे अपने पिता के जीवन-काल में ही अपने समूचे परिवार का भरण-पोषण करने लगे।

हुडिनी ने किशोरावस्था में ताले बनाने वाली एक फर्म में कुछ समय, शागिर्दी की थी। इससे उन्हें ताले के संबंध में पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त हो गयी थी। यह जानकारी आगे चलकर उनके लिए बड़ी लाभ-प्रद सिद्ध हुई।

कुमारी विल्हेल्मिना रेहनर के साथ विवाह होने के पश्चात्, हुडिनी के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। विल्हेल्मिना ने खेलों में सहायक के रूप में, उनके साथ कार्य करना प्रारंभ कर दिया। उसकी सहायता से हुडिनी ने ऐसे अद्भुत करतब दिखाये, जिन्होंने उनकी ख्याति में चार चाँद लगा दिये।

उनका एक खेल बड़ा प्रसिद्ध था। वे विल्हेल्मिना के हाथ बाँध देते थे और उसके बाद दर्शकों में से कुछ लोग उसे लोहे के एक संदूक में बंद कर, ताला लगा देते थे। अब हुडिनी अपने को एक श्वेत वस्त्र से ढाँप लेते थे। कुछ ही सेकेंडों पश्चात्, जब उनके ऊपर से वह श्वेत वस्त्र हटाया जाता था, तो वे नदारद मिलते थे और उनके स्थान पर घबरायी हुई विल्हेल्मिना प्रकट हो जाती थी। जब उस संदूक का ताला खोला जाता था, तो उसमें से हाथ बांधे हुडिनी निकलते थे।

एक बार उन्हें एक संदूक में बंद कर के एक नदी में बर्फ के नीचे दबा दिया गया। लेकिन कुछ मिनटों के बाद, वे सतह पर प्रकट हो गये।

वे कैसे ऊपर निकल आये ?

नजर

अकसर ऐसा हुआ कि मैं बैठा रहा और मेरी खुली आँखों के नीचे ही बिल्ली या तो दूध पी गयी या मेरी प्लेट में से गोस्त का टुकड़ा उठा ले गयी। मुझे इसका पता ही नहीं चला। एक दिन मैंने यों ही उस बिल्ली की आँखों को देखा, तो सारा रहस्य मेरी समझ में आ गया। वह इतनी तीव्र दृष्टि से मुझे देखती थी, कि मैं अपनी सुध भूल जाता था। मुझे लगता है जादूगरों की दृष्टि ऐसी ही सम्मोहक होती है कि, दर्शक अपना आपा भूल जाते हैं।

— रेंडाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब हुडिनी से ऐसे प्रश्न किये जाते, तो वे अपनी कार्य-विधियों के सम्बंध में गोल-मोल उत्तर देकर, लोगों को चक्कर में नहीं डालते थे। उनका यही सामान्य स्पष्टीकरण होता था कि, शारीरिक कुशलता और हाथ की सफाई से ही, यह सब चमत्कार होता है। किन्तु, बहुत कम लोग, उनके इस कथन पर विश्वास करते थे। यहाँ तक कि, कुशल तार्किक सर आर्थर कानन डायल का भी यह कथन था कि, दैवी शक्तियों की सहायता के बिना, ऐसे चमत्कारपूर्ण और चकित कर देने वाले खेल, नहीं दिखाये जा सकते थे। यों अँग्रेजी साहित्य के सबसे कुशल जासूस शरलाक होम्स की सृष्टि करने वाले सर आर्थर कानन डायल भी हुडिनी के रहस्यों का पता न पा सके।

किन्तु, हुडिनी ने अपनी कला और ख्याति से, कभी कोई अनुचित लाभ नहीं उठाया। १९१३ में उनकी माता का देहान्त हो गया। माता की आत्मा के साथ बात-चीत करने की उत्कट इच्छा के कारण, उन्होंने मृतात्माओं के सम्बन्ध में खोज-बीन करने के कठोर प्रयत्न किये; किन्तु इस सम्बन्ध में उन्हें तनिक भी सफलता नहीं मिली। निराश होकर उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "ए मैजिशियन एमंग द' स्पिरिट्स" लिखी; जो १९२४ में प्रकाशित हुई। इसमें उन्होंने प्रेतात्म-विद्या की बातें करनेवाले ठगों का भंडाफोड़ किया है।

३१ अक्तूबर १९२६ को ७९ वर्ष की अवस्था में हुडिनी की मृत्यु हुई। जीवन के अन्तिम वर्षों में, उन्होंने जादू के खेलों को लोकप्रिय बनाने का विशेष प्रयत्न किया। पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने बहुत-से लेख लिखे, जिनमें जादू के खेलों के विषय में जानकारी दी गयी थी, और दो वर्ष तक 'मंथ्ली' नामक पत्रिका का संपादन भी किया। कई वर्ष तक वे "सोसायटी ऑव द' अमेरिकन मैजिशियन्स" के अध्यक्ष रहे। जादू के खेलों के प्रति जन-रुचि को जागृत करने के लिए, उन्होंने सुप्रसिद्ध "मैजिशियन्स क्लब ऑव लन्दन" की भी स्थापना की।

खेलों के आलोचकों ने, उन्हें, उग्रता एवं भावुकता का अद्भुत मिश्रण बताया है और शायद यह उनके व्यक्तित्व का सबसे सही चित्रण था। वे एक दिन, कालेज के छात्रों के सम्मुख भाषण देते हुए बोले—"मैंने जिस ढंग से अपने स्नायु को साध रखा है, उससे मैं अपने शरीर पर कोई भी आघात सहन कर सकता हूँ।" इसे सिद्ध करके दिखाने के लिए, उन्होंने अपने पेट में बड़े जोर से मुक्का मारा, उसी से उनकी मृत्यु हो गयी। यों विश्व-विख्यात जादूगर हुडिनी अपनी कला के करतब दिखाते-दिखाते चल बसा।

हुडिनी को अपनी माता से अगाध प्रेम था। वे अपने अन्तिम दिनों में, अक्सर, अपनी मां की कब्र पर घंटों विचार-मग्न बैठे रहा करते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैंक आव इंग्लैंड, ब्रिटेन का सरकारी बैंक है। जैसे रिजर्व बैंक भारत-सरकार का सारा मुद्रा-व्यवहार सम्हालता है, उसी तरह बैंक आव इंग्लैंड, ब्रिटिश सरकार का महाजन है। परंतु बैंक आव इंग्लैंड की स्थापना वहाँ की सरकार ने नहीं, बल्कि एक डाकू और आवारे ने की थी।

उसका संस्थापक था, विलियम पीटर। सन् १६५८ में वह एक किसान के घर पैदा हुआ। बचपन से वह आवारा था। सत्रह साल की उम्र में घर से भाग निकला और फेरी लगा कर पेट भरने लगा। फिर वह बहामा-द्वीप में चला आया और समुद्री डाकुओं के साथ मिल कर, जल-यात्रियों को लूटने-खसोटने लगा। काफी पैसा इकट्ठा कर वह इंग्लैंड लौट आया और कारोबार करने लगा।

सन् १६९४ में उसने बैंक आव इंग्लैंड की स्थापना की। अगले वर्ष वह स्काटलैंड चला गया और उसने ईस्ट इंडिया कंपनी के मुकाबले में एक कंपनी की नीव डाली। जहाजों का बेड़ा बना कर १६९८ में वह विदेश-व्यापार करने और उपनिवेश बसाने निकल पड़ा; परंतु स्पेनी जल-दस्युओं ने उसका बेड़ा लूट लिया। उसकी पत्नी और बच्चे भी मर गये। वह हाड़-मांस का पुतला भर रह गया था, जब स्काटलैंड में फिर उसने पैर धरा। स्काटलैंड की पार्लमेण्ट ने उसे उसकी सेवाओं के लिए १८,२१४ पौंड दिये और वह सन् १७१९ में ६१ वर्ष की अवस्था में मरा। उसका स्मारक है, बैंक आव इंग्लैंड।

× × ×

अमेरिका के टेक्सास-प्रदेश का एक थोड़ा पढ़ा-लिखा चरवाहा, वहाँ के आस्टिन नगर के एक बैंक का खजांची बना दिया गया। उसके साथियों की बन आयी। आये दिन साथियों में से कोई-न-कोई उसके पास पहुँच कर, रुपये माँगने में जरा भी संकोच न करता। और वह भी अपने मित्र-धर्म को निभाने में उतनी ही तत्परता दिखाता और बगैर किसी हिचक के रुपये दे देता। यह खेल न जाने कितने दिनों तक चलता रहा। परंतु, अचानक एक दिन सरकारी निरीक्षक वहाँ पहुँचा और सब-कुछ निरीक्षण करने के पश्चात्, खजांची को खाते के अनुसार रकम दिखाने की आज्ञा दी। खजांची के तो हाथ-पाँव फूल गये। रकम कम निकली। मुकदमा चलाया गया और उसे पाँच वर्ष जेल हो गयी।

परंतु कौन जानता था कि, यही जेल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खजांचीके लिए वरदान सिद्ध हो जायेगी और वह संसार का एक महान् व्यक्ति वन जायेगा; और उसके पदचिन्हों पर चलने में विश्वभर के कहानी लेखक अपना सौभाग्य मानेंगे; उस अर्द्धशिक्षित व्यक्ति की लिखी कहानियाँ साहित्य की अमूल्यनिधि सावित होंगी।

इस व्यक्ति ने अपने जीवन में बड़े ही अभाव और संकट देखे। एक तो कोई संरक्षक न होने के कारण उसकी ठीक शिक्षा न हो सकी; यहाँ तक कि, हाई स्कूल तक में भी प्रवेश नहीं कर पाया। दूसरे, उसका स्वास्थ्य जीवन-पर्यंत उसे परेशान करता रहा। यहाँ तक कि, डाक्टरों ने कह दिया कि, शीघ्र वह टी. बी. से मर जायेगा और उसे टेक्सास के चरागाह में भेड़ें चराने और उनकी रखवाली करने के लिए भेज दिया। और अव जीवन में इतने अभावों के झंझावातों से जूझ लेने के वाद, उठा कर उसे जेल भेज दिया गया। परंतु, इस जेल ने ही उसके भाग्य-सितारे को चमकाने का कार्य अपने हाथ में लिया। जेल में ही बैठ कर उसने कहानियाँ लिखीं, जिनसे उसके यश की पताका विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक फहराने लगी। यह व्यक्ति था, अंग्रेजी साहित्य का अनुपम कथाशिल्पी ओ'हेनरी।

× × ×

फ्रेंच नाटककार ज़ाक हैवेली ने अपना नाटक 'चार्ल्स द सिक्स्थ' सन १५४७ में पूरा किया। नाटक में एक गाना था—"ओ गॉड किल हिम" (हे ईश्वर। उसका खात्मा कर दो।) नाटक पूरा होने के कुछ ही दिन वाद, किसी अज्ञात व्यक्ति ने ज़ाक का काम तमाम कर दिया।

सात साल बाद, उसी नाटक का अभिनय चल रहा था। जब तीन अभिनेताओं ने मंच पर आकर "ओ गाड किल हिम" गाना शुरू किया, किन्हीं दुष्टों ने बम फेंक कर तीनों को मार डाला।

बाद में वारसाई के राज-प्रासाद में नेपोलियन तृतीय की ईच्छा से जाक का नाटक प्रस्तुत किया जा रहा था, तो किन्हीं अज्ञात व्यक्तियों ने राज-परिवार के सदस्यों पर बम फेंके। परंतु इस बार किसी की मृत्यु नहीं हुई।

दृष्टि

शरच्चंद्र रवींद्रनाथ का बड़ा आदर करते थे। एक दिन दोनों में साहित्यिक वार्तालाप हो रहा था। शरच्चंद्र रवि बाबू की कृति के बारे में अपनी जिज्ञासा प्रकट कर रहे थे। जब चर्चा समाप्त हो गयी, तो रवींद्रनाथ ने पूछा— "और तुमने 'चिर-कुमार सभा' के बारे में क्यों नहीं पूछा?" शरच्चंद्र संकोच में पड़ गये, विनीत, मृदु-स्वर में बोले—"बेटे की नजर माँ के मातृत्व पर ही रहती है, माँ के यौवन पर नहीं।"

—प्रसन्नकुमार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

× × ×

सन १८५८ में 'सीन्स आव क्लेरिकल लाइफ' नामक उपन्यास के प्रकाशन से, इंग्लैंड के साहित्य-संसार में खलबली मच गयी। पुस्तक पर लेखक का नाम 'जार्ज इलियट' छपा था; भूमिका में बता दिया गया था कि, वह एक साहित्यिक उपनाम है। जार्ज तो पुरुष का नाम होता है। एक पादरी ने लिखा कि, लेखक कोई बड़ा पादरी होगा; क्योंकि पुस्तक में पादरियों के जीवन का अत्यंत सूक्ष्म और सच्चा वर्णन है। पर चार्ल्स डिकन्स का विचार था कि, पुस्तक या तो किसी महिला की लिखी हुई है, या किसीऐ से पुरुष की, जिसने स्त्री के मनोभाव शत-प्रतिशत अपना लिये हैं।

अगले वर्ष 'जार्ज इलियट' का दूसरा उपन्यास 'एडम बीड' छपा और चंद महीनों में उसकी १६,००० प्रतियाँ (वह भी पिछली सदी में) बिक गयीं। दो ही मास बाद हाउस आफ कामन्स में एक भाषण में 'एडम बीड' में से उद्धरण, दिया गया। चार्ल्स डिकन्स ने पुस्तक को पढ़ कर कहा—"इससे मेरे जीवन म एक नया युग आरंभ हुआ है।"

अब लोगों को यह तो पता चल गया था कि, 'जार्ज इलियट' महिला हैं; पर देखा उन्हें किसी ने न था। एक पत्रकार ने गपोड़ा उड़ा दिया कि, वे गजब की खूबसूरत हैं। परंतु अंत में जब वे साहित्यकारों और प्रकाशकों के एक भोज में प्रकट हुईं, तो कुछ लोगों नें उन्हें पहचान लिया। ये तो मिस मेरियन इवान्स थीं, जो मामूली रूप रंग-की थीं और दो धर्म-विरोधी जर्मन पुस्तकों का अनुवाद कर चुकी थीं। मिस इवान्स ने बताया कि, "जार्ज" उनके प्रेमी का नाम था। इस प्रेमी ने उन्हें बड़ा धोखा दिया।

जार्ज इलियट ने इसके बाद छह और उपन्यास लिखे। उपन्यासकार डिकन्स, तत्ववेत्ता हर्बर्ट स्पेन्सर और राजनेता डिज़राइली उनके प्रशंसक तथा मित्र थे। परंतु महारानी विक्टोरिया ने यह कह कर, उनसे मिलने से साफ इन्कार कर दिया कि, उस औरत का वैवाहिक जीवन धर्म-सम्मत नहीं है।

घमंडी लेखक : मेरी रचनाएँ खूब बिक रही हैं; मेरे पास पैसा भी काफी इकट्ठा हो गया है। फिर भी मुझे संतोष नहीं। मेरे लेखन का स्तर गिरने लगा है। उदाहरण के लिए मेरी नवीनतम रचना पिछली रचनाओं जैसी ऊँचे स्तर की नहीं है।

साहित्य-समीक्षक : वाह साहब! किसने कहा कि, आपके लेखन का स्तर गिरा है। आपकी नवीन रचना, पुरानी रचनाओं से किसी भी प्रकार निम्न स्तर की नहीं है। बात सिर्फ यह है कि, आपकी रुचि का स्तर ऊँचा उठ रहा है। —'व्यंग्य-तरंग'से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बटाटे-चाल का सांस्कृतिक संघर्ष

आधुनिक मराठी-साहित्य के रससिद्ध नाटक-शिल्पी एवं प्रवीण परिहासाचार्य पुरुषोत्तम एल० देशपांडे के एक हास्य-व्यंग्य-प्रबंध का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

हिन्दुस्तान भर में, जब तरह-तरह के आंदोलन चल रहे हों, तब बंबई जैसी महानगरी के उदर में स्थित, अपनी चाल हलचल-शून्य और ठंडी रहे, इस बात का "बटाटे – चाल" के समस्त निवासियों को, एक दिन सामुदायिक दुःख हुआ। सामने की जुठाभाई बिल्डिंग में, साल में, बारह-बारह, अखिल भारतीय नेताओं के व्याख्यान हों, और अपनी चाल में भाषण देने के लिए, गली का "दादा" तक न मिले! इस बात ने "बटाटे – चाल" में बसनेवाले तमाम भाई-बहनों को हार्दिक पीड़ा पहुँचायी थी।

लेखक : पुरुषोत्तम देशपांडे

वैसे देखा जाय, तो "बटाटे – चाल" में गुणी आदमियों का अभाव नहीं था। एक नंबर की खोली के सोकाजी दादाजी त्रिलोकेकर और उनकी सुशिक्षित (और सुपुष्ट भी) पत्नी सौ. बाबलीबाई त्रिलोकेकर से लेकर, निचली मंजिल के मुकुंद गुणाजी समेल (दी न्यू गजकर्ण औषधालय के मालिक) और उनकी पत्नी रूपाबाई समेल (रॉंगोली कलाविद् – त्वष्टा कासार जाति-भगिनी मंडल की रॉंगोली प्रतियोगिता में तृतीय-पुरस्कार विजयिनी) तक, अनेक विविध-गुण-संपन्न लोग उस चाल के अंधकार में छिपे पड़े हैं।

श्री सोकाजी और श्रीमती बाबलीबाई को चाल का स्वाभाविक नेतृत्व प्राप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। उनके यहाँ अनेक स्टेशनों की खड़-खड़ाहट सुनानेवाला रेडियो था; रोज 'टाइम्स' आता था। उत्तर भारतीय पद्धति की लांग-रहित साड़ी पहनने का चलन, इस चाल में चलाने का श्रेय,श्रीमती बाबली-बाई को ही था। उनके कमरे में काँच की अलमारी थी। उसमें से झाँकते हुए सर वाल्टर स्कॉट के फटे-पुराने अंग्रेजी उपन्यास, सोकाजी नाना का साहित्य-प्रेम प्रदर्शित करते थे।

तेरह नंबर की खोलीवाले अण्णा पावशे के बंबई म्युनिसिपैलिटी के जल-वितरण-विभाग में, आजीवन जुते रहने के कारण, संपूर्ण महाराष्ट्र को एक महान् ज्योतिषी की प्रतिभा से वंचित रह जाना पड़ा है। वास्तव में, जिसके यहाँ नवग्रहों को पानी भरना चाहिए था, उसे दूसरों के घरों की टंकियों में पानी भरा या नहीं, इसकी चिंता करनी पड़ती थी। अण्णा की भविष्य-वाणी अचूक थी। म्युनिसिपैलिटी की नौकरी में सारी उम्र लगा देने के कारण, जरा दीर्घसूत्री हो गये थे। तो भी, गांधी जी की हत्या का भविष्य, उन्होंने हत्या के अगले दिन बता दिया था। चाल के अधिकांश निवासियों की कुंडलियाँ, अण्णा के बोरे में पड़ी हुई थीं। नौकरी में पद-वृद्धि, संतान-योग, आकस्मिक धन-लाभ इत्यादि अनेक विषयों पर, अण्णा के कमरे में चर्चा चला करती। "बटाटे-चाल" की भी कुंडली उन्होंने बना डाली थी। उनका कथन था—चाल पर रवि की वक्रदृष्टि और राहु-केतु का प्रकोप होने से ही, जीने पर दीपक का अभाव और अंधकार का आधिक्य है। "बटाटे-चाल" और भारतवर्ष की राशि एक होने के कारण ही, चाल में जातीय झगड़े, एकता का अभाव, रोग, तथा कतिपय बहनों के जीने पर चढ़ते-उतरते समय भूकंप का भास आदि अनेक संकट उपस्थित रहते हैं।

तेरह नंबर के अण्णा पावशे, यदि, "ज्योतिर्भूषण" कहे जायें, तो सोलह नंबर के मंगेशराव हट्टंगडी को "संगीत-कलानिधि" कहना ही पड़ेगा। परंतु जिनके सुमधुर कंठ से निकले सुश्राव्य स्वर से, असंख्य जोड़े कानों को तृप्ति मिलनी चाहिए थी, वही 'एच० मंगेशराव' आज 'दी रीयल एंड रिलायेबल सिद्धारूढ़ फार्मसी' में डिपुटी असिस्टैंट सब-चीफ एकांउटैंट की हैसियत से, एम० एंड बी० की गोलियों के बिल बनाने में गुँथे हुए थे। जिन अंगुलियों से तानपूरे के षड्ज-पंचम छेड़े जाने चाहिए थे, उन्हीं से 'मैग्सल्फ कैल्शियम' का हिसाब करते हुए, मंगेशराव के मंगलोरी मन पर क्या बीतती होगी, सोचिए तो! मंगेश-राव की पत्नी वरदाबाई, कोई कम गुणी न थी। जब वे गाने लगें, तो सुननेवालों को अपना आपा भूलना ही पड़ जाता था।

मंगेशराव के पड़ोसी हैं श्री बाबू काका खरे। ऐतिहासिक शोध में वे चाहें, तो प्रो० राजवाडे तक को चक्कर में डाल दें। पर वही बाबू काका खरे लोकोपयोगी शोध-कार्य करने के बजाय, 'लोको' आफिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में इंडेंट्स जाँचते हैं। फिर भी, इन्होंने "बटाटे-चाल" का संक्षिप्त इतिहास रच डाला है। उसकी पांडुलिपि दिल्ली की 'नैशनल आर्काइव्स' में पहुँच कर, खोजी विद्वानों के लिए दुर्लभ हो जाय, उसके पूर्व ही, उसका सार जान लेना ठीक होगा।

"बटाटे-चाल" स्व. धुला नामा बटाटे (क्राफर्ड मार्केट के टोकरियों के व्यापारी) ने सन अठारह सौ अस्सी में किस प्रकार बनवायी; किस प्रकार वह विभिन्न मालिकों के हाथों में जा कर, अंत में किराया वसूल करने वाले 'भैय्या' देवकीनंदन तिवारी के पनाती जानकी-दुलारे तिवारी के कब्जे में आयी; इसका प्रमाणपूर्ण इतिहास रोमहर्षक कांडों से भरा पड़ा है। चाल में बिजली के लट्टू किस वर्ष सर्वप्रथम आये और किस वर्ष चले गये; बटाटे-कुल के एक वंशज ने किस प्रकार, कब और कौन-सा रंग चाल पर पुतवाया अथवा स्वयं पोता; किस प्रकार एक जमाने में 'प्रातर्विसर्जनकेंद्र' के भीतर की जंजीरें खींचने पर, पानी आया करता था; किस प्रकार प्रागैतिहासिक काल में तमाम खिड़कियाँ-दरवाजे, यहाँ के निवासियों की इच्छानुसार खोले अथवा बंद किये जा सकते थे; किस-किस नंबर में, कब-कब, कौन-कौन, किरायेदार आ कर बसे; ब्युबानिक प्लेग में कितने काम आये और इन्फ्लुएंजा की महामारी ने कितनों की आहुति ली; कब-कब और किस-किस के यहाँ चोरियाँ हुईं (अथवा 'चोर-चोर' का शोर मचा) और कब-कब और कौन-कौन-सी चुराने लायक वस्तु चोरों के हाथ पड़ीं, इत्यादि तमाम बातों का विस्तृत वृत्तांत, बाबू काका के ग्रंथराज में मिलता है। सात नंबर-निवासी द्वारकानाथ गुप्ते (रैली ब्रदर्स) के ज्येष्ठ भ्राता बंडोपंत और ग्यारह नंबर-निवासी भाऊ साहब

दर्शन

एक दिन मैंने देखा कि, स्वयं सत्य मेरे सामने खड़ा है। उसकी त्यौरियाँ चढ़ी हुई हैं और वह मुझे बुरा-भला कह रहा है। कारण पूछा, तो बोला—"मेरे बारे में तुमने जो लिखा है, वह मेरा अपमान है—जरा सामने आकर लिखो, बगलें देख कर क्या लिखते हो!" मैं हँसी नहीं रोक सका—"तो तुम्हारा मतलब यह कि, सामने का देखा ही सत्य होता है, आस-पास का नहीं—सत्य को तो कहीं से देख लो, और रोकर या हँस कर, कैसे भी देख लो, वह सत्य ही है।" वह तिलमिला उठा—"नहीं, सत्य सीधा होता है, एक होता है, अविभाज्य होता है।" मुझे और हँसी आ गयी—"सच है भाई, मगर देखने वाले को देखने दो—वह सीधा देखे या टेढ़ा-आधा देखे या पूरा—उससे एतराज क्यों?"

—बल्लतोळ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौबल (कलेक्टर्स आफिस) की भगिनी चंपूबाई के प्रेम-विवाह को गिरगाँव का आदि-प्रेम-विवाह क्यों कहना चाहिए, इसका विवेचनापूर्ण इतिहास, जब बाबू काका बखानते हैं, तो अर्जुन-उलूपी के पौराणिक आख्यान की याद हो आती है। बंडोपंत और चंपू, दोनों किस प्रकार माहीम के जंगल में भाग गये थे, इस बात का प्रसंग आते ही, आज भी बंडोपंत का पोपला मुँह खिल-सा पड़ता है और चंपू मौसी के मोतियाबिंद पड़े नेत्रों में आनंदाश्रु छलकने लगते हैं।

ऐसी महिमान्वित चाल के किरायेदारों में परस्पर सदैव छत्तीस का आँकड़ा बना रहे, यह बात स्वयं उन्हीं लोगों को नहीं जँच रही थी। वर्षों साथ रह कर भी हम जाति-भेद नहीं भूल पाते; तेईस नंबर के जानोबा रेगे को आज भी हीन दृष्टि से देखा जाता है; सुनार को 'सुनड्डा' कह कर पुकारा जाता है; बाबलीबाई की जड़ाऊ नथ के हीरे की असलियत पर शंका-संदेह किया जाता है – इत्यादि-इत्यादि बातों का, "बटाटे चाल" के निवासियों को सामूहिक पश्चात्ताप होने लगा। "पड़ोसियों से प्रेम करो!", "सौजन्य (!) उभयपक्षीय सद्गुण है", "जाति-भेद नष्ट करो", "अधिक अन्न उपजाओ", "वन-महोत्सव मनाओ" आदि स्वतंत्र भारत–सरकार की प्रेम-पगी आज्ञाएँ पढ़-सुन कर, चालवासियों का हृदय-परिवर्तन होने लगा है। नल पर अपनी अधभरी गागर हटा कर, दूसरे को 'टमरेल' भरने देने का सौजन्य दिखायी देने लगा है। दोपहर के काम-काज से निबट कर, जब पड़ोसिनों में गप्पें शुरू होती हैं, तो पारस्परिक प्रशंसा के वचनों में वृद्धि होने लगी है। यहाँ तक कि, बाबलीबाई के हाथों की चाय पी लेने में भी, अब किसी पड़ोसिन को आपत्ति नहीं होती।

भाऊ भंडारे के फर्स्ट ईयर फेल छोकरे ने, जिसकी आँखों पर अभी-अभी चश्मा चढ़ा है, गंभीरता से प्रस्ताव रखा– "चाल के एकीकरण का 'साइंटिफिक प्लानिंग' किया जाना चाहिए।" उसी बैठक में यह भी तय हुआ कि, चाल में एक 'सांस्कृतिक सप्ताह' मनाया जाय। यह बैठक सोकाजीराव के कमरे में हुई; सो सोकाजीराव त्रिलोकेकर ही "बटाटे-चाल ऐक्यवर्धक एवं सांस्कृतिक उन्नति-कारक समिति" के अध्यक्ष बन गये। और अध्यक्ष बनने का, यह उनका पहला अवसर नहीं था। एक बार एक जातीय बंधु की अंत्येष्टि-क्रिया के अवसर पर आयोजित शोक-सभा की अध्यक्षता वे कर चुके थे। तय हुआ कि, बाबूकाका खरे "बटाटे-चाल" का समग्र इतिहास और "हूज़ हू" लिखें। गणेशोत्सव बिल्कुल सिर पर आ पहुँचा था। हर साल की तरह मनाये जानेवाले इस उत्सव में, तनिक रद्दोबदल के साथ 'सांस्कृतिक सप्ताह' का आयोजन भी सम्मिलित कर लिया गया।

"बटाटे-चाल" के गणपति का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक महत्व है। यह गणपति प्रथम विश्व-युद्ध के समय खरीदा गया था और तब से हर साल चाल के आँगन के बीचो-बीच का 'चौक' साफ करके इसकी प्रतिष्ठा की जाती है। विसर्जन की परम्परागत ग्राम्य पद्धति से बचे हुए ये महान् गणेश, रंग उड़ जाने के कारण 'एनिमिक' (पांडु-रोग-पीड़त) दिखाई पड़ने लगे हैं। उनके लंबोदर का सौष्ठव समाप्त हो चुका है; उसकी जगह कुछ-कुछ जलोदर के आसार प्रकट होने लगे हैं। उम्र बढ़ जाने के कारण उनके "एकदंत" के बजाय "दंत-हीन" होने का प्रसंग भी आ गया था। किन्तु फिल-हाल उसके रिक्त स्थान पर एक चाक तराश कर लगा दिया गया है; इससे उनका वृद्ध मुख-मंडल आर्टिफिशियल डेंचर की कांति से फिर दमकने लगा है। वैसे इस गणपति की यह 'दंत-कथा' अन्य चाल वालों के विनोद का विषय बनी हुई है।

हम भूल करते हैं कि, सत्य मीठा या तीखा ही होता है— नहीं अनगिनत स्वाद हैं उसके— जितनी जबानें उतने रस! जितनी नजरें उतने स्वाद! —शरत्

सन इकतीस के सत्याग्रह के अवसर पर, तीन नंबर के बाबा बर्वे उर्फ 'नारू के बाबा' महारबावडी के पुलिस थाने में एक दिन का कारावास भोग आये थे। आप बटाटे-चाल के एकमेव देशभक्त हैं। अपने कारावास जीवन के अनुभव सुनाते हुए, आज भी उनके अंग-प्रत्यंग में स्फूर्ति जाग उठती है और पड़ोसियों को अफसोस होने लगता है कि, स्वराज्य के आ जाने से अब उन्हें वैसा अवसर नहीं मिल सकता। सन ३१ के आंदोलन के अवसर पर "बटाटे-चाल" से एक प्रभात-फेरी निकला करती थी। कचहरी के काम की सुविधा को ध्यान में रख कर, प्रभात-फेरी शाम को निकालने की सूझ, इसी चाल वालों की थी। बाबलीबाई के सुस्वर कंठ से "चर्खा चला चला के" और एम. हट्टंगडी से "झंडा ऊँचा रहे हमारा" सुन कर, गोरे सार्जंट तक दुम दबा कर वापस हो जाते थे। इसके अतिरिक्त सूत-कताई वगैरह का चलन तो आज तक चला आ रहा है। स्वयं बाबलीबाई के हाथ के कते सूत की दरियाँ, उनके घर में आज भी उपयोग में लायी जा रही हैं। सोकाजीराव ने तो कोट में खादी का अस्तर लगा कर, अपने साहब तक की आँखों में धूल झोंकी थी! इस प्रकार राजनैतिक, सामाजिक,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक और धार्मिक पार्श्वभूमि से युक्त, "बटाटे-चाल" में सांस्कृतिक-सप्ताह का सम्पन्न किया जाना, कोई अनुचित अथवा अस्वाभाविक बात नहीं है!

हाँ, तो सांस्कृतिक सप्ताह के प्रथम दिवस, 'हूज़ हू' उर्फ 'किसका कौन' के हस्त-लिखित ग्रंथ का प्रकाशन-समारंभ सम्पन्न हुआ; और श्री गणपति के चरणों में उसे समर्पित किया गया। ग्रंथ लिखते समय, कुछ बातों का विशेष ध्यान रखा गया था। पुरुषों के वेतन, स्त्रियों की आयु और सौंदर्य संबंधी उल्लेख, बड़ी सावधानी के साथ टाले गये थे। नमूने के लिए निम्न-लिखित चरित्र देखिए:—

सोकाजी दादाजी नानाजी त्रिलोकेकर: जन्म—उन्नीस सौ दो। जन्म स्थान—झावबा की बाड़ी। नानाजी के पोते। दादाजी के चतुर्थ चिरंजीव। शिक्षण—प्रभु सेमिनरी हाई स्कूल (कहाँ तक, इसका उल्लेख कुशलतापूर्वक टाल दिया गया)। इंपीरियल बैंक लेजर कीपर। वीजक-पटु। क्रिकेट मैच के अवसर पर हिन्दू टीम के पक्ष के महत्वपूर्ण प्रेक्षक; बैंक की टीम के स्कोरर। व्यायाम में रुचि। बैंक से घर तक पैदल चल कर आते हैं। शौक—घर लौटते समय कबाड़ी बाजार में सामानों का अवलोकन और कभी-कभी खरीदना। वृत्ति—धार्मिक। प्रति वर्ष गोरे राम को एक नारियल समर्पण। सोंठ-शक्कर खाये बिना, भोजन को हाथ न लगाने का व्रत। प्रेममय और समतौल स्वभाव। सन्तानें—छह, तीन पुत्र और तीन कन्याएँ।

इसी प्रकार प्रत्येक का चरित्र प्रकाशित हुआ। वह दिन तो अपने और दूसरों के चरित्रों का पठन करने में व्यतीत हो गया।

दूसरा दिन साक्षरता-प्रसार का था। चाल के सभी लोगों के सुशिक्षित होने के कारण, साक्षरता का कार्यक्रम कैसे पूरा किया जाय, यह समस्या उठ खड़ी हुई। अंत में, चाल की तीनों मंजिलों पर बर्तन माँजनेवालों के 'दादा' वस्त्र-पात्र-प्रक्षालक श्री रामा वालु मालवणे को साक्षरता प्रदान करने का निश्चय एकमत से हुआ। परन्तु बाद में पता चला कि, सामने की शत्रु-पक्षीय चाल के एक टट-पुंजिए समाज-सुधारक ने उसे छह महीने पहले ही साक्षर बना दिया है! ऐसा अनुचित और अनधिकार अतिक्रमण करने वाले उस साक्षरता-प्रचारक का विरोध करते हुए, साक्षरता दिन मना डाला गया।

वन-महोत्सव का दिन बड़े उत्साह से सम्पन्न हुआ। पिछले दिन शाम को सोकाजीराव अन्य दो-तीन सज्जनों को साथ लेकर, अपने मामा भुजंगराव नवलकर के यहाँ बोरीवली गये और उनके बगीचे से पचास-साठ पौधे उखाड़ कर लेते आये। प्रातःकाल सबने नहा-धो कर गैलरी के कठघरे पर पौधे रोपे।

इस कार्यक्रम को वैसी ही धार्मिकता प्राप्त हो गयी, जैसी वट-सावित्री के दिन वटवृक्ष को धागा लपेटने की होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसी दिन दोपहर को बाबू काका खरे ने "पेशवा कालीन वृक्ष" इस विषय पर एक खोजपूर्ण व्याख्यान दिया। समेल दादा ने "काष्ठौषधियों का वृक्षों से संबंध" पर वैद्यकीय प्रवचन किया और बहनों ने सुस्वर कंठ से गया – "आओ साथी पेड़ लगायें! उठा कुदाली नाचें गायें!"

लड़कियों ने वन-महोत्सव का नृत्य दिखाया। सभी के मन पर, वृक्षों के राष्ट्रीय महत्व की अमिट छाप पड़ी। देशभक्त बाबा बर्वे किसी से पीछे कैसे रह जाते? उन्होंने भी अपने ओजस्वी और क्रांतिकारी भाषण के दरम्यान समझाया कि, किस प्रकार काला-बाजार वालों को टाँगने के लिए आज देश में वृक्षों की कमी है। "चौपाटी के खुले मैदान में पेड़ लगाकर वृक्ष-सम्पत्ति की वृद्धि की जाय"– यह प्रस्ताव पास किया गया। इसके साथ ही एक दूसरा प्रस्ताव भी पास हुआ, जिसका आशय यह था – "पेड़ों की बहुतायत जंगलों में होने के कारण, उनका सही महत्व शहर के निवासियों की समझ में नहीं आ पाया है; इसलिए जंगल के पेड़ों को शहरों में ला कर लगाया जाना चाहिए और शहरों को जंगलों में ले जा कर बसाया जाना चाहिए।" उक्त दोनों ही प्रस्ताव प्रधान मंत्री के पास दिल्ली भेज दिये गये।

तत्पश्चात् "सौजन्य दिवस" मनाया गया। इस दिन सबने "पड़ोसियों से प्रेम करो" के आदर्श को अक्षरशः पाला। एक पड़ोसी ने दूसरे की पीठ पर बड़े प्रेम से धौल जमायी और दूसरे ने उतने ही प्रेम से उसे ग्रहण किया। बहनों ने बड़े प्रेम से एक-दूसरे के बच्चों को 'सुंदर' कहा और किसी ने किसी के गहनों की सचाई पर किसी प्रकार की शंका-कुशंका नहीं उठायी।

अंत में चाल-निवासियों को अपना सामूहिक फोटो उतारने की धुन सवार हो गयी। अंतिम दिन इसके लिए रखा गया था। सर्वानुमति से तय हुआ था कि, चाल की बहनें भी फोटो के लिए बैठें; सो पूरा एक दिन इस कार्यक्रम में लगता ही।

चंदा इकट्ठा करके किया जानेवाला यह पहला ही कार्यक्रम था। कुछ की राय थी कि, फोटो के लिए टेंडर बुलवाये जायें। किन्तु समयाभाव के कारण 'शेक्स' फोटो स्टुडियो के फोटोग्राफर चित्रे महाशय को ही फोटो उतारने का कंट्राक्ट दिया गया था। खर्च का हिसाब लगाने के बाद, पुरुषों से दस आने, स्त्रियों से नौ आने और बालकों के पाँच आने का चन्दा रखा गया। हाँ, दुधमुँहे बच्चों को गोद में लेकर ग्रूप में बैठने पर कोई अतिरिक्त चार्ज नहीं लिया जायगा, इसकी घोषणा भी करवा दी गयी थी। बिल चुकाने के बाद जो पैसा बचे, उससे फोटो को कांच व फ्रेम मढ़वा कर, उसे चाल के किसी सर्वजन-दृष्टि-गम्य स्थान पर टाँगने का निश्चय हुआ था।

'फोटो दिन' भी आ ही गया। दीवाली के-से उत्साह से सब लोग स्नान-ध्यान से निबटे। तीज-त्यौहार को पहने जानेवाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़े निकाले गये। बहनें तैयारी में जुट गयीं। नुक्कड़ की दूकान में स्नो-पाउडर की बिक्री बढ़ गयी। नयी रिबनें आयीं। सेफ्टीपिनों का लेन-देन शुरू हुआ। साढ़े बारह के आस-पास सारी चाल उतर कर फोटो के लिए नीचे आयी। सारे किरायेदार और उनके कुटुम्ब-परिवार को मिलाकर सौ से कुछ ऊपर ही लोग थे।

बीच के चौक में सामने वाली चाल की दीवार और इस चाल के कंपाउंड के पास, कुल बाईस कुर्सियाँ रखी जा सकती थीं। इतने किरायेदारों में उन बाईस कुर्सियों को अलंकृत करने का सम्मान किस-किसको प्रदान किया जाय, इस पर जो बहस चली, उसमें चाल की एकता, बंधुभाव, सौजन्य सब-कुछ कसौटी पर चढ़ गये। देखने लायक था वह दृश्य। "हम नहीं.....हम नहीं" से शुरू हुई बात "हम क्यों नहीं?.... हम क्या कोई कम हैं?" पर कब जा पहुँची, इसका किसी को पता नहीं चला। उस धमा-चौकड़ी में इतने ही वाक्य सुनायी पड़े :

"अरे जा जा।.... उस बिटलहे के पैरों के पास इस ब्राह्मण बच्चे को बैठने के लिए कहता है?—चमार!"

"हाँ हाँ! फोटो में गले के नकली मोती कोई सच्चे नहीं दीख पड़ेंगे! बंबई वालों की ऐंठ हम नहीं गिनते! कोंकण का पानी नहीं छिप सकता!"

"तनख्वाह बड़ी होने से कोई बड़ा नहीं हो जाता!.... और वासू काका को पाँच सौ मिलते ही हैं, यही हम कैसे मान लें?"

"ऐ, सौक्या! तू कौन आया बीच में बैठनेवाला! जंगल से चार झाड़ वन-महोत्सव के लिए उखाड़ लाया, तो अपने को कन्हैयालाल मुन्शी समझ बैठा है क्या?"

"बाबू काका, जबान सँभाल कर बोलो! तुम्हारी विद्वत्ता तुम्हारे घर में! इज्जत का सवाल है! .... नारू का बाबा कुर्सी पर बैठे और हम उसके पीछे खड़े रहें? हमको चोबदार समझ रखा है? — आफिस की फोटो में मैं जनरल मैनेजर की कुर्सी के पीछे खड़ा हूँ!"

"सटवे, खबरदार जो बड़प्पन की बात कही!"

"शट अप्!"

फिर हाथों और गालों के तथा छड़ियों और पीठों के आवेशपूर्ण सम्मिलन का शब्द।

यों पाँच बजते-बजते जब सांस्कृतिक सप्ताह का "छाया-चित्र दिन" समाप्त हुआ, उस समय उस चौक में कुर्सियों के दो पैर, "किसका कौन" ग्रंथ के कुछ पन्ने, वृक्षा-रोपण के लिए लाये गये पौधों का— जो छड़ियों के तौर पर प्रयुक्त हुए थे— एक ढेर, एक नकली चोटी, तीन नुची हुई वेणियाँ, एक बकल और फोटोग्राफर चित्रे का काला बुरका— इतनी सारी वस्तुएँ, सांस्कृतिक पुनरुज्जीवन और ऐक्य-संवर्धन के इतिहास की गवाही देने के लिए फैली हुई थीं। और चौक के बीचों-बीच भग्नदंत गजानन भग्न-हृदय से इस कांड पर विचार करते हुए-से बैठे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन दिनों मैं बिहार के राज्यपाल का प्राइवेट सेक्रेटरी था, जापान-स्थित भारतीय दूत तथा मेरे सहपाठी श्री विमल-चंद्र पटना आये और राज-भवन में मेरे साथ ठहरे। सायंकाल उन्होंने शहर घूमने की इच्छा प्रकट की। हम दोनों रिक्षा करके, चुपचाप निकल पड़े; राज-भवन की गाड़ी में पहचान लिये जाने का डर था। घूमते-फिरते, हम लोग बाकर गंज से गुजर रहे थे कि, एकाएक विमल ने रिक्शे को रुकवा दिया और मेरा हाथ पकड़ कर, एक गंदी गली में ले गया और एक टूटे-फूटे मकान के सम्मुख जा कर खड़ा हो गया। उस मकान के बरामदे में बैठे एक वृद्ध सज्जन से पूछा– "क्या महावीर प्रसाद मुख्तार का यही मकान है ?" वृद्ध ने कहा – "हाँ, है तो यही; परंतु वे इस संसार में नहीं रहे। उनका खानदान भी आज-कल गांव में बड़ी बुरी हालत में है।"

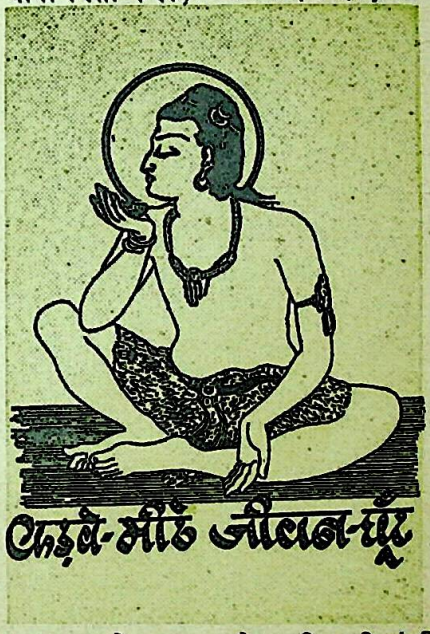

वृद्ध का यह उत्तर सुन कर विमल बहुत गंभीर हो गया। घर आ कर बहुत पूछने पर विमल ने बताया – "मुख्तार साहब बड़े ही उदार हृदय के व्यक्ति थे, किसी को निराश नहीं करते थे; चाहे स्वयं कितना ही कष्ट क्यों न भोगना पड़े। एक ऐसे गरीब युवक को मैं जानता हूँ, जिसे उन्होंने अपना दुशाला और अंगूठी बेच कर, आई.ए. की परीक्षा में बैठाया था। बाद में वह युवक आई. सी. एस. बन गया और आज वह एक ऊँचा अधिकारी है।" मैंने पूछा–"यह तो खुशी की बात है; इसमें दुःखी होने का तो कोई कारण नहीं दिखायी पड़ता ! क्या तुम उस युवक को जानते हो ?" विमल ने एक गहरी साँस ली और कहा– "हाँ, वह युवक मैं ही हूँ। आज, यदि मैं अपनी सारी संपत्ति देकर भी मुख्तार साहब के परिवार का दुःख कुछ कम कर सका, तो अपने को धन्य समझूँगा। मैं आज जो कुछ भी हूँ, वह मुख्तार साहब की ही देन है।"

मुझे किसी कवि का यह कथन याद आ गया कि, कृतज्ञता के विमल अश्रु-कण ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपकार के ऋण का सच्चा प्रतिदान है।

—भुवनेश्वर प्रसाद भुवन, सिंदरी।

★

मधुमूल

उस कालेज में वह मेरा पहला दिन था। 'टीचर्स रूम' में अपने 'पीरियड' की प्रतीक्षा में बैठा, मैं बार-बार घड़ी की ओर देखता जाता था। पाँच मिनिट अभी बाकी थे। सदुपयोग करने की दृष्टि से, जेब में पड़ी नयी पेंसिल निकाल कर छीलने लगा। अभी पेंसिल पूरी छील भी न पाया था कि, एकाएक प्राचार्य महोदय मेरी ओर आते दीख पड़े। मैं शीघ्र ही उनके सम्मानार्थ उठ खड़ा हुआ। एक तिरछी दृष्टि मुझपर डाल कर, वे जरा रुके। और मैंने आश्चर्य से देखा कि, वे झुक कर समीप ही रखी रद्दी कागज की टोकरी को उठा रहे हैं। इसके पूर्व कि मैं कुछ कहता, उन्होंने रद्दी कागज की टोकरी मेरे सामने रख दी और मुस्कराते हुऐ आगे बढ़ गये। किंकर्त्तव्य-विमूढ़-सा मैं क्षण तक खड़ा रहा। फिर फर्श पर यहाँ-वहाँ बिखरे उन छोटे-छोटे टुकड़ों को एकत्र कर मैंने टोकरी में डाल दिया।

उस दिन एक नया पाठ मैंने सीखा। स्वच्छता आदि के लिए दैनिक जीवन में ऐसी कितनी ही छोटी-छोटी बातों की ओर हमें दूसरों का ध्यान आकृष्ट करते रहना पड़ता है। पर इसका भी एक मीठा तरीका है। मिठास अनुशासन की मशीन की ओंघन है। विश्व के नियंता भगवान् विष्णु को हमारे वेद-शास्त्रों ने शायद इसीलिए "मधु का झरना" कहा है।

—रामदास यादव,
जबलपुर।

★

प्रायश्चित्त

एक यवन राजा, स्वामी रामानंद के पास कई दिन आता रहा—वह बड़ी उलझन में था कि, प्रायश्चित्त से मनः-शुद्धि कैसे हो जाती है? स्वामीजी एक दिन उसे एक नदी के किनारे ले गये, जिसका पानी सड़ गया था। राजा को पानी बताते हुए स्वामीजी बोले—"राजन्, जानते हो यह पानी क्यों सड़ गया?" राजा ने उत्तर दिया—"इसे कौन नहीं जानता गुरुदेव, कि प्रवाह रुकने से पानी सड़ जाता है।" स्वामीजी ने स्पष्टीकरण किया—"तो इतना भी जानो राजन्, कि पाप से जब हमारे प्रवाह रुक जाते हैं, तो प्रायश्चित्त वर्षा की बाढ़ बन कर उन्हें गति देता है।" —योगानंद

मुसाफ़िर

अपने मित्र की पुस्तकों की दुकान पर खड़ा-खड़ा मैं नवीनतम पुस्तकों पर नजर डाल रहा था। इतने में मैंने देखा कि, सात-आठ साल का एक लड़का आ कर काउंटर के पास खड़ा हो गया। उसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूछा– "अंग्रेजी की कोई नयी वढ़िया किताव है, कहानियों की ?" मेरे मित्र वोले– "हाँ भाई, कई नयी कितावें हैं। वोलो, तुम्हें कौन-सी चाहिए।" वच्चे ने एक अठन्नी, एक चवन्नी और दो दुअन्नियाँ अपनी जेब से निकाल कर काउंटर पर रख दीं और कहा– "एक रुपयेवाली कोई किताव दे दीजिए।" निश्चय ही यह जेब-खर्च में से वचाया हुआ पैसा था।

मेरे मित्र और मैं कुछ चकित हुए। हमने उससे पूछा कि, किताव वह किस लिए खरीदना चाहता है और किसे देगा ? क्योंकि वह तो अंग्रेजी नहीं जानता था। वालक ने जो उत्तर दिया, वह मेरी कल्पना से परे की चीज थी। उसने वताया—

"कल मेरा कान का आपरेशन है। बावूजी बहुत परेशान हैं। उन्हें अंग्रेजी की कहानियाँ बहुत अच्छी लगती हैं। कहानियाँ पढ़ते-पढ़ते वे चाय पीना भी भूल जाते हैं। यह पुस्तक मैं आज शाम को अस्पताल जाने के पहले बाबूजी को दे कर जाऊँगा। फिर वे आपरेशन की बात भूल जायेंगे।"

मेरे मित्र ने अल्मारी में से पी. जी. वोडहाउस की नवीनतम कहानियों का संग्रह निकाल करबच्चे के हाथ में दिया और एक रुपया ले लिया। पुस्तक ढाई रुपये की थी। —रामाचरण बनर्जी, कलकत्ता

*

यादगार

मेरे पड़ोसी "मास्टरजी", मोहल्ले के सरकारी स्कूल के हेड-मास्टर थे। वागबानी का उन्हें वड़ा शौक था। किराये के घर के सहन में, उन्होंने बहुत-से फूल के पौधे लगा रखे थे। क्यारियों में तरह-तरह की सब्जियाँ भी उगा रखी

"जन्म-जन्मांतर की अतृप्त आँखों के सामने जैसे ही रूप-माधुर्य का प्याला आता है, वैसे ही खुद हमारे हाथ ओंठों के पास विष का प्याला भी ले जाते हैं। सुंदरि, अमृत और विष की यह स्पर्धा ही तो जीवन है।" —महमूद तैमूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थीं। आस-पास के घरों में जब कोई पर्व होता, तो पूजा के लिए फूल "मास्टरजी" के यहाँ से ही आते; स्कूल में जब कोई नेता या बड़ा अधिकारी आता, तो उसके लिए माला "मास्टरनीजी" घर के फूलों से स्वयं बना कर भेजती थीं। हम लोगों को तो उनके घर के बैंगन, गोभी और लौकी जब-तब खाने को मिलते थे।

एक दिन सुना कि, "मास्टरजी" का तबादला दूसरे शहर हो गया है और वे अगले ही हफ्ते चले जाने वाले हैं। मन उदास-सा हो गया कि, इतने मिलनसार और सभ्य पुरुष का पड़ोस छूट जायेगा। दो दिन बाद हमने उन्हें दावत भी दी।

दावत के अगले दिन यानी जिस दिन "मास्टरजी" चले जानेवाले थे, मैंने देखा कि, सवेरे-सवेरे वे चंपा की एक कलम और एक कुदाल लिये मेरे कंपाउंड में चले आये हैं। मैं चकित हो कर खिड़की से देखने लगा। "मास्टरजी"ने, जहाँ हमारा हैंड-पंप लगा है, उसके पास थोड़ी-सी जमीन खोद कर चंपे की कलम लगा दी और फिर भीतर चले आये। मैंने कहा – "क्या कर रहे थे मास्टरजी?"

"सोचा, जा रहा हूँ; अपनी यादगार छोड़ जाऊँ"– मास्टरजी ने मुस्करा कर कहा।

–सत्यशरण, करनाल।

*

हमारे मोहल्ले के कीर्तन-मंदिर में उस शाम को गणपति की आरती थी। एक विख्यात संत भावपूर्ण स्वर में कीर्तन कर रहे थे और भाव-विभोर श्रोता आँखें मूँदे ताल-लय के साथ सिर झुमा रहे थे। इतने में मेरे पास ही कुछ सरसराहट हुई और मैंने देखा कि, पड़ोसी प्रोफेसर सरदेसाई के मुन्ने मोरो का नन्हा पालतू कुत्ता "पामी" हाल में घूम रहा है। मैंने उसे बुलाया और गोदी में बिठा लिया। मुझे डर था कि, कहीं वह भौंकना न शुरू कर दे। कीर्तन के बाद आरती के लिए सब खड़े हुए, तो मैं "पामी" समेत खड़ा हुआ। जब पुजारीजी प्रसादी बाँटने आये, "पामी" को मैंने नीचे उतार दिया। वह लगा भौंकने और पूँछ हिला-हिला कर पंजे उछालने, मानो कह रहा हो –"मुझे गोदी में लो।" मैंने देखा, संत महाराज की नजरें "पामी" पर गड़ी हैं। इतने में किसी ने आंगन में खेलते हुए मोरो को शायद इशारा कर दिया, और हाल में आकर उसने पुकारा– "पामी, पामी, चलो मेरे साथ।" "पामी" तुरंत चुपचाप उसके पीछे बाहर चला गया।

सब संत महाराज को सहमे-सहमे देख रहे थे; न जाने क्या कह दें! संत के गंभीर मुख पर दीप्ति की एक लहर दौड़ गयी। उन्होंने कहा – "भक्तो! देखा आपने? वह पिल्ला अपने मालिक का कितना आज्ञाकारी है। अगर हम सब भी इसी तरह चराचर-जगत् के स्वामी की आज्ञा के अनुसार चलें, तो जीवन धन्य हो जाये।"

–चिंतामण गोखले, कोल्हापुर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं- लक्स में धुली है!

आप की रेशमी, सूती या नाज़ुक साटिन की सुन्दर चोलियां संभाल से धुलने के योग्य हैं। इन्हें सदा लक्स फ़्लेक्स से धोइये। लक्स का मुलायम झाग सारा मैल बड़ी कोमलता से निकालता है। अपने नाज़ुक कपड़ों की देखभाल कीजिये—घर में सदा लक्स रखिये।

LUX

For gentle washing of lovely clothes

लक्स की धुलाई में क़ीमती कपड़ों की भलाई है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आर्यन

आपके दांतोंके अनुरूप है

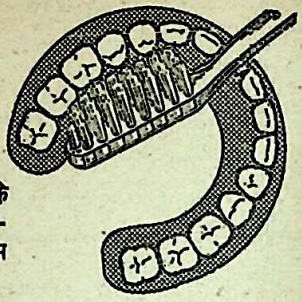

जब आप अपने दांतोंकी देखभालके लिये यथोचित आकार-प्रकारके **आर्यन** ब्रशपर भरोसा करेंगे तो आप निश्चिन्त रह सकते हैं कि इससे आपके सभी दांतों के सभी हिस्से पूर्ण तया साफ हो जायेंगे।

प्रामाणिक व बच्चे के आकारों में प्राप्य। प्लास्टिकके डब्बेमें डिलक्स क्वालिटी भी।

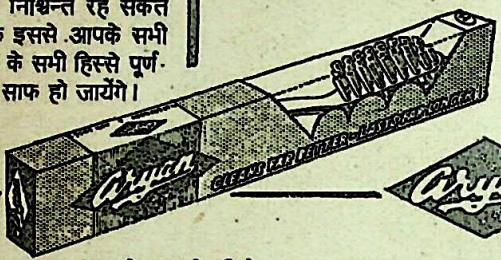

बहुत अच्छी तरह से सफाई करता है और अत्यधिक टिकाऊ है।

प्रभावकारक साबुनके झागके लिये—

हमेशा आर्यन शेविंग ब्रश इस्तेमाल करिये।

योग विद्या का अद्वितीय ग्रंथ

"उमेश योग दर्शन"

-(प्रथम खंड)–चार भाषाओं में

गुजराती * हिन्दी * मराठी * अंग्रेजी लेखक : योगीराज श्री उमेशचंद्रजी

संस्थापक व संचालक : श्री रामतीर्थ योगाश्रम बम्बई–१४

इस ग्रंथमें रोगी तथा निरोगी स्त्री- पुरुषोंकी तन्दुरुस्ती अच्छी रखनेके लिए ६ प्रकार के मलशोधन कर्म, आसन, मानसिक इलाज, जलोपचार, सूर्य किरण चिकित्सा, आहार चिकित्सा आदि अनेक शक्ति वर्धक तथा रोग निवारक, घर में हो सकें ऐसे सुलभ, साध्य इलाज बताये गये हैं। ४०० से अधिक पृष्ठ तथा १०८ से अधिक चित्र हैं। ग्लेज आर्ट पेपर पर योग के आसनों के चित्र, मलशोधन कर्म के चित्र तथा स्वामीजी के रंगीन चित्र हैं। ३५ वर्षों का निजी अनुभव तथा २५ वर्षोंके दौरानमें श्री रामतीर्थ योगाश्रमसे लाभप्राप्त भाई-बहनोंके अनुभवोंके प्रमाण पत्र भी योगीराज ने इस ग्रंथमें प्रस्तुत किये हैं। संक्षेप में, स्त्रियों, पुरुषों, बालकों, रोगियों तथा निरोगियों सबको अपूर्व मार्ग दर्शन करानेवाली अजोड़ पुस्तक है।

प्रत्येक भाषा की पुस्तक की प्रति का मूल्य रु. १५)

डाक खर्च रु. २) अलग। मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर से भेजिये।

वी. पी. नहीं भेजी जाती। **श्री रामतीर्थ योगाश्रम,** दादर, बम्बई-१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन-जन का प्रिय साबुन- हमाम

चिकने, मुलायम झाग
त्वचा को कोमल करनेवाले नये
रसायन की करामात !

सफ़ाई के साथ-साथ ताज़गी...
'हमाम' इस्तेमाल करने में कितना उम्दा
और सुगन्धमय है ।

चलता भी ख़ूब है...
कितना कमख़र्च है !

सारे परिवार का मन-पसन्द- हमाम

हमाम से नहाकर
ताज़गी और सुगन्ध का आनन्द लीजिए।

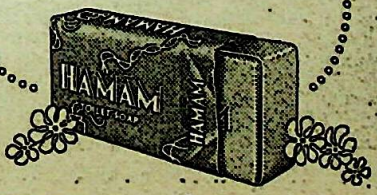

THY-3 HIN

यह एक टाटा – उत्पादन है – अवश्य ही उम्दा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चमकदार ईनो

★ मेदा साफ़ करता है
★ ठण्डक पहुँचाता है
★ पेट ठीक करता है

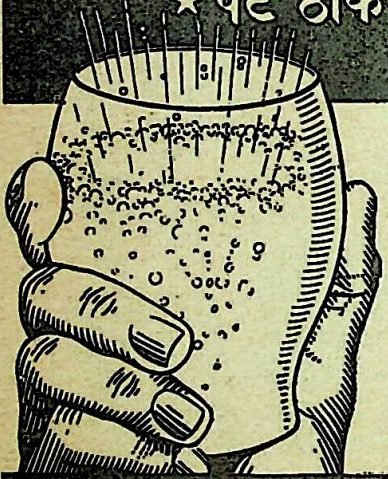

आराम पहुँचाने के
साथ ही तरोताज़गी
भी लाता है

ईनो
'फ़्रूट साल्ट'
पीजिए

'ईनो' और 'फ्रूट साल्ट'—ये शब्द रजिस्टर किये हुए ट्रेड मार्क हैं

ग्रूप लेबोरेटरीज़ (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...मैं कैसे धोऊँ कपड़े

विमल कार की एक बंगला-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

पानी अभी बरस ही रहा था। फिर भी मैं ट्राम से उतर पड़ा। सड़क पर जगह-जगह, जो ताल-तलैया बन गये थे, उन्हें जैसे-तैसे पार कर, गली के नुक्कड़ तक ही पहुँच पाया था कि, तेज हवा के साथ मसलाधार पानी फिर गिरने लगा। पसो-पेश में था कि, कहाँ सिर छिपाऊँ। तभी 'वरदा-कांत लांड्री' का अधखुला द्वार और भीतर से झांकती हुई बत्ती की मद्धिम रोशनी दीख गयी। लपक कर मैं भीतर पहुँच गया। वहीं धुलते थे मेरे सब कपड़े।

आँखों से गीला चश्मा उतार कर पोंछते हुए, मैंने चारों ओर नजर डाली। काउंटर पर अधेड़ उम्र का एक आदमी बैठा था। मुझे देखते ही बोला—"अरे! आप तो बुरी तरह भीग गये हैं साहब! माथे से पानी ऐसे टपक रहा है, जैसे बादल वहीं से बरस रहे हों! ठहरिए, आपको पोंछने के लिए कुछ देता हूँ।" कहते हुए उसने अलमारी खोल कर, धुले हुए कपड़ों में से एक दूध-सा सफेद तौलिया निकाला और मेरी ओर बढ़ा दिया। मैं ठहरा जरा शक्की; मन में सोचा—"क्या मालूम किसका तौलिया है; किसी एग्जीमेवाले का ही हो।" पर मुँह से इतना ही कहा—"ना, ना, तौलिये की क्या आवश्यकता! पानी रुकते ही मैं चला जाऊँगा। घर भी कौन दूर है, यहीं पास ही तो है।"

"जी मालूम है। आप ग्यारह नम्बर में रहते हैं।" फिर हँस कर कहने लगा—"आराम से बैठ जाइए। यह पानी भला इतनी जल्दी थमनेवाला है! घर पहुँचने के लिए तैरना पड़ेगा साहब, तैरना! लीजिए माथा पोंछ डालिए, वरना कहीं सरदी न लग जाय।"

आखिरकार तौलिया लेना ही पड़ा। मुँह-हाथ और माथे को अच्छी तरह पोंछते हुए मैंने कहा—"इसे आप फिर से धुलवा कर....." पर बीच ही में टोक कर बोला—"अजी साहब, यह भी कोई कहने की बात है।" और गीला तौलिया मैले कपड़ों के ढेर में डाल दिया।

काउंटर के एक तरफ पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। लांड्री का मालिक एक बिल-बुक पर सरसरी निगाह डाल रहा था। मेरी ही उम्र का होगा। एकाएक बिल-बुक को बंद कर मेरी तरफ देखते हुए बोला—"सेन साहब, अगर एक दिन और बाद में आते, तो अच्छा होता। इन गीले कपड़ों के बदले, धुले हुए पहन कर घर जा सकते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें तंदुरुस्ती प्यारी है वे सदा लाइफ़बॉय से नहाते हैं।

खेल कूद हो या काम काज हम गंदगी से बच नहीं सकते। और गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं जिन से तंदुरुस्ती को खतरा रहता है। लाइफ़बॉय साबुन गंदगी के इन कीटाणुओं को धो डालता है और आप की तंदुरुस्ती की रक्षा करता है। हर रोज़ लाइफ़बॉय साबुन से नहाइये और अपनी तंदुरुस्ती की रक्षा कीजिये—यह आप को ताज़गी देता है।

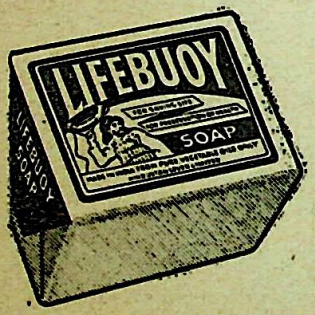

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड के बनाये

L/P. 2-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे। डिलिवरी का दिन परसों है ना।"

मैं चकित रह गया। ये महाशय तो पूरे सर्वज्ञ थे। मेरा नाम, धाम, डिलिवरी-डेट, सब-कुछ इन्हें कंठस्थ था। हँस कर मैंने कहा – "मुझे तो यहाँ आये अभी पूरा महीना भी नहीं हुआ; लेकिन आप तो मेरे बारे में सब-कुछ इस तरह जानते हैं, जैसे मैं वर्षों से यहाँ रहता आया हूँ।"

"वाह, क्यों न जानूँ साहब ? आप रोज सामने से आते-जाते हैं। हफ्ते में चार-पाँच बार आपके कपड़ों की रसीद काटता हूँ। मैं न जानूँगा, तो भला बताइए और कौन जानेगा ?"

बड़ा सरस था उसका बोलने का ढंग। बाहर पानी भी झर-झर गिर रहा था। मैंने सिगरेट सुलगा कर कहा– "तो आप ही वरदाकांत हैं ?"

"जी नहीं, मैं सुधाकान्त हूँ—श्री वरदाकांत मेरे पिताजी थे। दुकान उन्हीं ने खोली थी। छह-सात साल हुए उनका स्वर्गवास हो गया। वह उन्हीं का फोटो है।"

"तब तो आपने काफी दिन दुकान चलायी।" मैंने कहा।

"जी, हाँ। मैट्रिक पास करने के साथ ही, जिंदगी में हमने बहुत उतार-चढ़ाव देखा। धोखा पिताजी ने भी बहुत खाया था। आखिर, हमने इस दुकान का सहारा लिया। इसीने हमें इतने वर्ष रोटी दी है। फिर थोड़ी देर रुक कर कहने लगा– "और इस मैले कपड़ों के गोदाम में बैठ कर ही मैंने बड़ी दुनिया देखी है। कितनी ही कहानियाँ लिखी हैं, मेरे इन कैश-मेमो के पन्नों में।" सुधाकांत रुका।

कैश-मेमो के पन्नों में कहानियाँ ! उत्सुकता से मैंने कहा– "अच्छा ! कुछ सुनाइए हमें भी।"

"क्या-क्या बताऊँ साहब आपको ? इसी मुहल्ले में कितने परिवर्तन देखे मैंने। दस साल पहले जिस घर से जरी, गोटा और रेशम के कपड़े आते थे, वहाँ से अब मामूली मिल के कपड़े आते हैं – और जहाँ से मिल के कपड़े आया करते थे, वहाँ से आने लगे हैं कीमती कपड़े। इन्सान तो इन्सान, कपड़ों ने भी रंग बदला है।"

"हाँ, परिवर्तन तो प्रकृति का धर्म है— तब और अब में कुछ अन्तर भी तो है।" मैंने कहा। अब तक सुधाकांत के प्रति मेरी झिझक दूर हो गयी थी।

"कुछ अन्तर ? कहिए, जबर्दस्त अन्तर !" फिर सुधाकांत ने सिगरेट का गहरा कश ले, स्वर को बिल्कुल नमा कर कहा —"अरे भाई, ऐसे भी परिवार हैं, जो व्याह-शादी में सम्मिलित होने के लिए किराये पर कपड़े ले जाते हैं। क्या करूँ, निराश नहीं कर सकता किसीको। किसी जमाने में उन्होंने भी मेरी दुकान में बहुत पैसे डाले। इसी अठारह नंबर को देखिए ना।" कह कर वह स्वयं चौंक कर रुक गया। मुझे कुतूहल हुआ। मेरे जिज्ञासु नेत्र उसपर टिके रहे।

अपने-आपको संयत कर वह बोला – "जब इतना कह डाला, तो पूरा ही कह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

MPS

बालों की
हिफ़ाजत
जिनके लिये
विशेष
महत्वपूर्ण है
उनके लिये

केशा

अब पिलफरप्रुफ
पेकिंग वाली नयी
सुन्दर बोतल में

"केशा" के उपयोग से
होनेवाले लाभ

- बाल झड़ने बंद होते हैं और बढ़ते है।
- बाल घने और मुलायम होते हैं।
- असमय सफेद बाल नहीं होते।
- इसकी अद्वितीय खुशबु आपको दिनभर प्रसन्न रखती है।

सुप्रसिद्ध लोमां के उत्पादको द्वारा ही निर्मित
सोल एजेन्ट : एम. एम. खंभातवाला, अहमदाबाद १
एजेन्ट : सी. नरोतम एण्ड कम्पनी, बम्बई-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूँ। लेकिन देखिए, बात तीसरे कान तक न पहुँचे। काफी अरसा हो गया। मैंने मैट्रिक पास किया ही था और पिताजी की आज्ञानुसार दुकान पर बैठने लगा था। एक दिन शाम को एक सज्जन आये। पीछे-पीछे उनका नौकर आया। उसके सिर पर से उन्होंने कपड़ों की मोटी गठरी उतरवायी। क्या बताऊँ साहब, उन महाशय के हाव-भाव! ऐसा लगा कि, वे हमपर अहसान कर रहे हैं। अब तक अँग्रेजी लांड्री में कपड़े धुलवाते थे। निहायत उपायहीन होकर हमारे पास आये थे। हमें तो स्वर्ग मिला। हमने पोटली क्या खोली, जैसे भानुमती का पिटारा ही खुल गया। क्या-क्या रंग — नीला, लाल, हरा, पीला, वासंती। क्या-क्या डिजाइन, जरी-गोटे की सुनहरी झिलमिलाहट। मान गये हम भी कि अमीर हैं। दस-बारह साड़ियाँ, पेटीकोट, ब्लाउज, दर्जन भर धोती, कमीज और पाँच सात फ्राक। फ्राक सब एक नाप के; लेकिन डिजाइन तरह-तरह के।

"थोड़े दिन बाद पता चला कि, उन्हीं सज्जन ने अठारह नंबर का मकान खरीद लिया है। नाम था—मणिलाल गांगुली। दो-एक दिन बाद मैं दुकान पर बैठा था कि, देखा—लड़कियों के स्कूल की बस गली के मोड़ पर आकर रुक गयी और मणी बाबू की तेरह साल की लड़की बस में जा बैठी। मैं समझ गया—ये फ्राक उसीके हैं। आप भी मान जाते, अगर उसे देखते तो! चेहरा हो, तो वैसा। और नाम भी तो था छवि।

"फिर हर रोज मैं उसे स्कूल जाते देखता। काले-काले घुँघराले बालों में रंग-बिरंगे रिबन बाँधे, रंग-बिरंगे फ्राक में सज कर, वह लहराती-दौड़ती आया-जाया करती थी। धीरे-धीरे फ्राक पहनने की उम्र बीत गयी। और फ्राक के बदले, आने लगीं साड़ियाँ। वही गजब के रंग और डिजाइन। साड़ी में ज्यादा कलफ और कड़ी इस्त्री वह पसन्द करती थी। साड़ी देखते ही, मैं समझ जाता कि, कौन-सी साल-गिरह की है, कौन-सी दशहरे की और कौन-सी भाईदूज की। छवि की रुचि भी बड़ी ऊँची थी। जो कुछ पहनती, बढ़िया होता था। थोड़ी देर तक सुधाकांत बोलता-बोलता रुक गया।

"एकाएक मेरे पिताजी का देहांत हो गया। मैं क्रिया-कर्म में उलझा रहा। फिर कुछ दिन बाद मैंने सुना कि, छवि का विवाह हो गया। कुछ दिन कपड़े धुलने नहीं आये। आठवें रोज जब ढेर सारे कपड़े आये, समझ में आया कि, छवि अठौड़ा-रस्म निभाने, फिर मायके आयी ह। साल या डेढ़ साल बाद की बात है ....." सुधाकांत की कहानी, जैसे चरम सीमा पर आ कर विश्राम लेना चाहती थी, इसलिए वह रुक गया, फिर रुक-रुक कर स्मृतियों के सजीव चित्रों को मानो प्रत्यक्ष देखता हुआ, अपने वाक्य दोहरा कर कहने लगा — "साल या डेढ़ साल बाद की बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाप्लिन्स

शर्टिंग्स

मर्सेराइज्ड धोतियां

छपी हुई वाइल्स
तथा लान्स

रायपुर मिल्स लि.,

अहमदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ह। तबीयत खराब हो जाने से मैं जलवायु-परिवर्तन के लिए बाहर चला गया था। दो-तीन महीने बाद वापस आया। और, आते ही सीधे दुकान पर पहुँचा। तभी अठारह नंबर का नौकर बिल लेकर आया। बिल लेकर मैं कपड़े ढूँढ़ने लगा। मेरे लिए तो इस घर के सब कपड़े परिचित थे। लेकिन अचानक बिल पर नजर गयी, तो देखा कि, उसमें दो जोड़ा सफेद थान धोती भी लिखा है। चौंक उठा मैं। अठारह नंबर के कपड़ों के इतिहास में, सफेद थान तो यह पहली बार देखा। किसका होगा? उस घर में तो कोई विधवा नहीं है! मैंने नौकर से पूछा और उसने जो कुछ बताया, उसे सुन कर मैं पत्थर बन गया..." और सचमुच सुधाकांत मूर्तिवत् शून्य में ताकता रहा। मैं भी मौन रहा।

फिर वही लंबी साँस लेते हुए, वह बोला—".....छवि विधवा हो गयी थी। अब वह पीहर में ही थी। सफेद धोती के थान उसी के थे। आप भी आश्चर्य करेंगे—मगर यह किसी को बताना भी तो मुश्किल है—उन कपड़ों को वापस करते, मेरे हाथ जाने क्यों काँपने लगे।

"दुबारा थान धुलने आया" —सुधाकांत कहता रहा—"तो मैंने गुम कर दिया। फिर अठारह नंबर के कपड़ों को मैंने तेजाब से नुकसान पहुँचाना शुरू कर दिया, ताकि वहाँ से कपड़े मेरे यहाँ धुलने न आया करें। एक दिन जिसके सुंदर फ्राक से लेकर सुहाग के कपड़े तक मैंने धोये थे, उसीका यह वैधव्य का परिधान धोऊँ! मेरा मन नहीं माना। ...सो इसी लांड्री में बैठे बहुत-कुछ देखा है बाबूजी! हजारों लोगों के इतिहास के छोटे-मोटे टुकड़े!" सुधाकांत अब बिल्कुल मौन हो गया।

★

जब खिलाफत के लिए आन्दोलन शुरू हुआ तो एक जलसा मौलवियों का बुलाया गया। जलसे में गांधीजी ने प्रस्ताव रखा कि, खिलाफत आन्दोलन में हिंदू मुसलमानों का साथ दें और मुसलमान स्वराज्य-आन्दोलन में भाग लें।

जलसे में दो बंगाली मौलवी भी शरीक थे। ये बार-बार उठकर अहिंसा का विरोध करते और कहते—"जिहाद करो जिहाद!"

अहिंसा के मुकाबले में उन्होंने जिहाद की ऐसी रट लगायी कि, डाक्टर अंसारी बड़े परेशान हो गये। आखिर एक उपाय समझ में आया। जैसे ही मौलवी साहब ने फिर कहा—"जिहाद करो जिहाद" तो चन्द आदमी खड़े हो गये—"बहुत अच्छा, जनाब मौलाना! जिहाद ही करें। आइए तलवार उठाइए, चलिए यहीं से कमिश्नर के बंगले पर धावा करें।"

यह रंग देखते ही मौलवी साहब बोले—"हमारा काम फतवा देना है, तलवार चलाना नहीं।"

—मुगनी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन ब दिन ब दिन...

रेक्सोना साबुन

आप की जिल्द को निखारे चला जाता है

रेक्सोना से हाथ मुंह धोने से हर बार आपकी जिल्द पहले से ज़्यादा चिकनी और ज़्यादा नर्म दिखाई देती है। इसलिए कि रेक्सोना में तेलों का एक विशेष मिश्रण, कॅडिल, मिलाया जाता है जो जिल्द के स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए बहुत गुण-कारी है। रेक्सोना के मलाई जैसे मुलायम झाग को अच्छी तरह अपनी जिल्द पर मलिये और देखिये कि दिन ब दिन यह कैसे निखरती चली जाती है।

आप के सौंदर्य के लिए ... रेक्सोना

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, रेक्सोना प्रोप्राइटरी लि., ब्रॉडेनिसा के लिए भारत में बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

RP 159—50 HI

सुख तो कितना रूप

हमीद काश्मीरी की एक उर्दू-कहानी का संक्षिप्त हिंदी-रूपांतर

जब पहला ही बच्चा उल्टे हाँथ-पाँव का पैदा हुआ, तो दोनों मियाँ-बीवी को जैसे साँप सूँघ गया। जैसे उनका कोई जवान और कमाऊ बेटा मर गया हो और सदमे से उन दोनों की सारी वाक्-शक्ति खत्म हो गयी हो.... सदमा तो था ही। उल्टे हाँथ-पाँव लेकर पैदा होने वाला बच्चा उनके लिए संदमा नहीं तो, क्या खुशी के खजाने लेकर आयेगा!

पहले ही वे कौन-से सुखी थे! कोई भी तो महीना ऐसा नहीं गुजरता था जिसमें पूरे तीस दिन उन्होंने पेट भर के खाना खाया हो। बीवी दो-तीन सरकारी अफसरों के घरों में बर्तन वगैरह माँझ कर, पन्द्रह-बीस रुपल्लियाँ महीने में कमा लेती थी। और मियाँ बीमार होने के बावजूद, दिनभर सड़कों पर अमरीकनों और यूरोपियनों के पीछे, उनको रास्ता दिखाने के लिए, कुत्ते की तरह दौड़ता रहता और रास्ता चलनेवाले हर गोरे को, किसी दूकानदार का कार्ड दिखा कर और मिस्कील-सा चेहरा बनाकर अपनी खिदमत पेश करते हुए कहता – "यू वांट सम थिंग, साहब?" (साहब, आपको कुछ चाहिए?)

"नाउप"– अगर साहब अमरीकन होता, तो मखसूस लहजे में नाक से आवाज निकालते हुए इन्कार कर देता। फिर वह किसी दूकानदार का कार्ड दिखाता। पोस्ट आफिस ले चलने को कहता। अच्छे-अच्छे होटलों के नाम गिनाता। पाकिस्तान की बनी हुई बढ़िया चीजें खरीदवाने का प्रलोभन देता। चिड़ियाघर और अजायबघर की तारीफ करता। और आहिस्ता-आहिस्ता जितनी अंग्रेजी याद होती, सारी-की-सारी बोल देता। और फिर भी अगर "साहब" न फँसता, तो वह धीमे लहजे में उसे मामूली-सी गाली दे कर, कहीं फुटपाथ पर बैठ जाता और किसी दूसरे गोरे का इन्तजार करने लगता।

अक्सर ऐसा भी होता कि, वह दिनभर रटी-रटायी अंग्रेजी को शुरू से आखिर तक कई दफा बोल जाता; लेकिन कोई भी प्रवासी उसकी रहनुमाई कुबूल न करता और वह अपना-सा मुँह ले कर शाम को नामुराद वापस चला जाता। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता कि, सुबह-ही-सुबह उसे कोई गोरा साहब मिल जाता। वह चेहरे पर एक कृत्रिम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीट-कीटाणु पत्रिका

फ़्लिट के ज़हर से खटमलों की बस्ती की बस्ती वीरान!

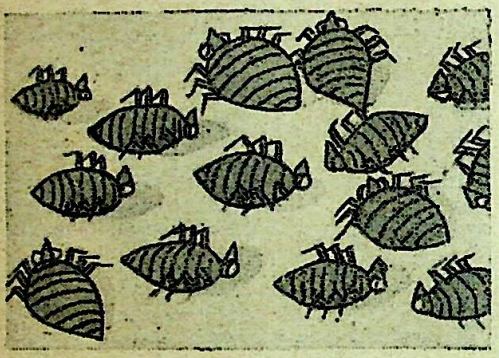

चैन की नींद सो रहे थे। कीटाणुनाशक फ़्लिट का हमला इतनी तेज़ी से हुआ कि वे बेचारे उठ कर भाग भी न सके! इस हत्याकांड से खाटपुर के खटमलों में भारी हलचल मच गयी है।

खाटपुर के खटमलों में हलचल!

चारपाई ज़िले के फलते-फूलते ग्राम, खाटपुर, में रहनेवाले बहुत से खटमलों को कल दिन-दहाड़े फ़्लिट ने बड़ी बेदर्दी के साथ मौत के घाट उतार दिया।
इस दुखद दुर्घटना के समय क़रीब-क़रीब सभी खटमल

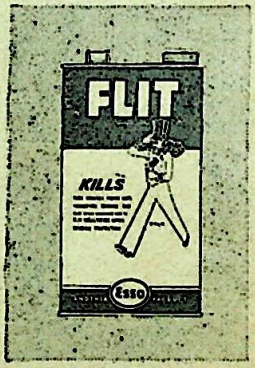

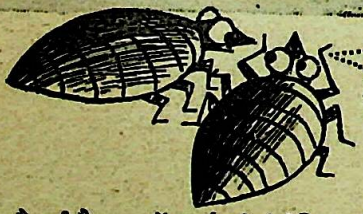

'अब जान नहीं बच सकती!'

V. 8058

स्टैण्डर्ड-वैक्यूम ऑइल कंपनी (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में संस्थापित)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुस्कराहट बिखेर कर, किसी अच्छी-सी दूकान का कार्ड उसके आगे करते हुए अपने मखसूस लहजे में कहता—"यू वांट सम थिंग, सर?"

"यस! ह्वेयर कैन आइ बाइ सम पिक्चर-कार्ड्स?" (पिक्चर-कार्ड कहाँ मिलेंगे?)

"कम एलांग, सर!"—वह खुशी से फूलते हुए कहता; और गोरा उसके साथ-साथ चल पड़ता। जब कई चीजें उसके लिए खरीदवा कर फारिग हो जाता, तो उसे दूकानदार और ग्राहक दोनों से कुछ-न-कुछ कमीशन के तौर पर मिल जाता। शाम को वह खुशोखुर्रम घर जाता। लेकिन एक दिन की कमीशन सिर्फ एक ही दिन चल सकती। अगले दिन वह फिर बड़े-बड़े बाजारों के चक्कर लगाते हुए, लोगों की गोरी और काली चमड़ी को अलग-अलग नजर से देखता; और उसे कुछ मालूम न होता कि, वह खुश-खुश घर जायेगा या मायूस और उदास!

उस रोज वह शाम को इन्तेहाई गमगीन हालत में घर लौट रहा था। एक वजह तो यह थी कि, उसे ग्राहक कोई न मिला था। तिस पर आज उसे पैसे की सख्त जरूरत थी। उसे रहीमू दाई को भी पैसे देने थे। आखिर वह इतनी मेहनत कर रही होगी! उसे उसका हक जरूर मिलना चाहिए। वह इसी उधेड़-बुन में घर पहुँच गया। रहीमू दाई दरवाजे पर खड़ी थी। लेकिन उसके झुर्रियों वाले चेहरे पर काफी परेशानी के आसार थे। उसकी जैसे जान ही निकल गयी। वह दौड़ कर उसके करीब गया।

"क्या हुआ?" उसने घबराहट से पूछा।

".....लड़का!" रहीमू धीरे-से बोली।

इसमें परेशान होने की क्या बात है?—उसने दिल में कहा और खुशी-खुशी अंदर चला गया। बीवी को एक प्यार-भरी नजर से देखा और फिर फौरन बच्चे पर से चादर उठा दी। और चादर उठाते ही, जैसे किसी ने अचानक उसके सिर पर लोहे की सलाख दे मारी हो। उसकी आँखें धुँधला गयीं। कान सॉय-सॉय लगे। लड़के के हाथ भी उल्टे थे और पाँव भी पीछे की तरफ मुड़े हुए थे। चुपचाप फटी-फटी नजरों से वह गुमसुम बीवी की तरफ देखने लगा। जैसे दोनों मियाँ-बीवी बोलने की शक्ति से महरूम हो गये हों।

बात आहिस्ता-आहिस्ता फैल गयी और लोग उस हैरत-अंगेज बच्चे को देखने के लिए आने लगे। और जब कोई देखने के बाद, उन्हें बच्चे की मुबारकबाद देता, तो दोनों शर्मिन्दा हो जाते। और इस झेंप को मिटाने के लिए, वह कई रोज तक रात को देर से घर लौटता।

बच्चा जब चलने-फिरने के काबिल हुआ, तो वे उसे अपना बच्चा समझने के आदी हो चुके थे। उसका हँसना, खेलना, उल्टे पैरों से फुदक-फुदक कर मेंढ़क की तरह चलना और मरे हुए हाथों को सीधा करके उनमें चीजें पकड़ने की कोशिश करना, सभी कुछ उन्हें भला मालूम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों के लिए ख़ुशख़बरी!

सनलाइट

रंग भरने का मुक़ाबला

रु. २५०००

के सैकड़ों शानदार इनाम!

दो
पहले इनाम
रू. ४००० में भारत की शानदार सैर या नक़द!

चार
दूसरे इनाम
एच.एम.वी. रेडिओग्राम!

छः
तीसरे इनाम
मरफ़ी ऑल वेव रेडिओ और एक हिंद अम्बैसेडर बाइसिकल!

२०००
प्रोत्साहन के इनाम
पेंटिंग सेट या एक गुड़िया!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सनलाइट की धुलाई में फ़ायदा ही फ़ायदा है। और अब आप के बच्चे सनलाइट के हर रॅपर द्वारा सनलाइट के रंग भरने के मुकाबले में भाग ले सकते हैं!

बच्चों की आयु के अनुसार यह मुकाबला दो हिस्सों में बांटा गया है: (१) १० वर्ष से कम और (२) १० और १५ वर्ष के बीच। दोनों हिस्सों के चित्र अलग अलग जांचे जायेंगे परन्तु दोनों हिस्सों में पहले, दूसरे, तीसरे और प्रोत्साहन के सभी इनाम एक से दिये जायेंगे।

अपने सनलाइट के दुकानदार से दाख़िला फ़ार्म मुफ़्त लीजिये। फ़ार्मों पर एक सुंदर चित्र है जिस में आप के बच्चों को रंग भरने हैं—वे अपनी पसंदानुसार रंग भरने की कोई भी सामग्री इस्तेमाल कर सकते हैं।

बच्चों के लिए! ये नियम ध्यान से पढ़िये!

(१) अपना नाम, जन्म की तारीख़ और पूरा पता, कूपन में, साफ़ साफ़ और मोटे अक्षरों में लिखिये। (२) आप जितने दाख़िले चाहें भेज सकते हैं, मगर हर दाख़िले के साथ सनलाइट साबुन का एक रॅपर ज़रूर होना चाहिये। (३) दाख़िले खो जाने, देर से पहुँचने या ख़राब हो जाने के हम ज़िम्मेदार न होंगे। (४) सभी दाख़िले १६ नवम्बर १९५९ को दोपहर के १२ बजे से पहले इस पते पर पहुंच जाने चाहियें: सनलाइट, पोस्ट बैग नं. १००५०, बम्बई १। (५) दाख़िलों का निर्णय, प्रसिद्ध चित्रकारों और चित्रकला के जानकारों की एक कमेटी करेगी। उन का फ़ैसला अन्तिम और बाध्य होगा। इस सम्बंध में कोई पत्र व्यवहार नहीं किया जायेगा। (६) दोनों आयु विभागों में से पहला, दूसरा और तीसरा इनाम जीतने वालों के नाम ३१ दिसम्बर १९५९ को या उस के आस पास उन सब दैनिक समाचार पत्रों में छापे जायेंगे जिन में सनलाइट रंग भरने के मुकाबले का विज्ञापन दिया गया है। बाक़ी के इनाम जीतने वालों को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा। (७) इस मुकाबले में हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड और उन की एडवर्टाइज़िंग एजंसी में काम करने वालों के बच्चों के सिवा, भारत में रहनेवाले सभी बच्चे हिस्सा ले सकते हैं।

आज ही अपने दाख़िले भेजिये!

आख़िरी तारीख़: १६ नवम्बर १९५९

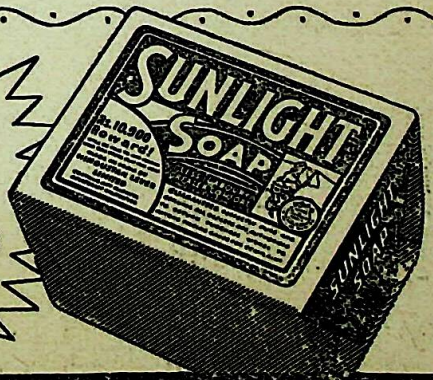

थोड़ा सा सनलाइट मगर ढेरों धुलाई!

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया.

S/9B-50 HI Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होने लगा। और एक दिन जब दोनों मियाँ-बीवी किसी काम से बाजार गये, तो बच्चे को बाप ने बड़ी मुहब्बत से कंधे पर उठाया हुआ था। एक जगह उसने देखा कि, दो-तीन अमरीकन उसके बच्चे की तस्वीर लेने की कोशिश कर रहे हैं। उसने बड़े शौक से बच्चे को नीचे रख दिया। अमरीकनों ने अलग-अलग कोणों से उसकी तस्वीरें लीं और जाती दफा शुक्रिये के साथ पाँच रुपये भी दे गये। बच्चे का बाप खुशी से फूला न समाया; जैसे उसे पाँच नहीं, पाँच सौ रुपये मिल गये हों।

वह अगले दिन इरादतन बच्चे को लेकर बाजार की खूबसूरत सड़कों पर घूमता रहा। उस दिन भी चन्द गैर मुल्कियों की नजरें उसके बच्चे पर पड़ीं। उनमें से एक-आध ने तस्वीर ली और एक रुपया भी बख्शीश के तौर पर उसे दिया। अगरचे उस एक रुपये से उसकी तसल्ली नहीं हुई, लेकिन उसे अपना और अपने बच्चे का मुस्तकबिल रौशन जरूर नजर आने लगा।

अब तो उसने गोरों के पीछे भागने का इरादा ही तर्क कर दिया। और फुटपाथ पर चादर बिछाकर उसपर बच्चे को बिठा दिया; और खुद बाजाहिर थकान उतारने के लिए उसके करीब ही बैठ गया। फिर क्या था! बस एक मजमा लग गया। बच्चा, लोगों को देख-देख कभी डरता और कभी खुश होकर हँसना शुरू कर देता। फिर उसने देखा कि, लोग इकन्नी, दुअन्नी और चवन्नी तक बच्चे की तरफ फेंक रहे हैं। एक बार उसका जी चाहा कि, तमाम रेजगारी उठाकर मजमे के मुँह पर दे मारे और बच्चे को कंधे पर उठा कर घर कीं तरफ भाग निकले और अगले दिन से फिर अमरीकनों के पीछे भागना शुरू कर दे। मगर यह उसका खयाले-खाम था। उसने आगे बढ़कर रेजगारी जमा करके जेब में डाल ली और फिर सिक्कों का इन्तजार करने लगा। शाम तक अच्छी-खासी रेजगारी जमा हो गयी—उसकी मजदूरी के आम दिनों की आमदनी से कई गुना ज्यादा।

"छाम (सलाम) बाबूजी!" कुछ दिनों के बाद बच्चा अच्छी-खासी ट्रेनिंग हासिल कर चुका था। वह हर आने-जाने वाले की तरफ देख कर अपनी तोतली जबान में सलाम करता—"तेय बादे ती (खैर बादे की).... सुती रहो (सुखी रहो) ....अल्ला बोत दे!" और इसी किस्म के रटे हुए दुआइया जुमले बोल कर, लोगों का अपनी तरफ ध्यान आकर्षित कर लेता। अपने उल्टे पाँव दिखाता और फिर मजमे से इकन्नियों-दुअन्नियों के गिरने का इन्तजार करने लगता। जब मजमे में कोई गैर-मुल्की खड़ा होता, तो रेजगारी के बजाय नोट फेंक देता और साथ ही एक तस्वीर भी ले लेता। उसका बाप बड़ी खुशी से तमाम तमाशा करीब बैठा देखता रहता और उस जन-समूह के घटते ही, एकदम पैसे समेट लेता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों मियाँ-बीवी हँसी-खुशी दिन गुजारने लगे। अच्छी-खासी आमदनी शुरू हो गयी और महीने में कोई भी दिन ऐसा नहीं आया, जब उन्होंने फाका किया हो, या कम खाना खाया हो। बल्कि उसकी बीवी ने सन्दूक में दस-दस के कितने नोट भी जोड़कर रख लिये थे। जिस बच्चे की पैदाइश पर उनके घर में सफे-मातम बिछ गयी थी, आज उसीकी दराजिये उम्र के लिए, वे झोलियाँ फैला-फैला के दुआएँ करने लगे। और बाज औकात मियाँ कह उठता – "यह ख्वाजा खिजर है – ख्वाजा खिजर!"

और वह वाकई ख्वाजा खिजर था। वह एक दरवाजे से उनके मकान में दाखिल हुआ, और दूसरे दरवाजे से भूख, इफ्लास, दरिद्रता और दुख-दर्द निकल गये। इस ख्वाजा खिजर को माँगने के लिए उनके पास कितने लोग आये; उन्हें सब्जबाग दिखाने लगे। ने और एक सरकस वाले ने तो, एक बड़ी रकम की पेशकश भी की। उन्होंने भी इस बच्चे को फरोख्त करने के बारे में कितनी बार संजीदगी से सोचा; लेकिन हर बार उनकी मुहब्बत आड़े आयी। और वे उसे फरोख्त करने के इरादे को अमली जामा न पहना सके।

एक दफा शहर में एक घातक बबा का तुन्दो-तेज चक्कर चला। कितनी जानें उस तूफान की जद में आ गयीं। और जद में आने वालों में, उनका ख्वाजा खिजर भी था। यह सदमा उनके लिए जानलेवा साबित हो रहा था। दोनों मियाँ-बीवी एक अजीम बोझ के नीचे दबे जा रहे थे। और यह बोझ उनको कदरे उस वक्त हल्का महसूस हुआ, जब एक और ख्वाजा खिजर की आमद की उम्मीद बँधी। उसने अपनी बीवी को एक जान-पहचान वाले डाक्टर को दिखाया। इस डाक्टर के वह अक्सर-औकात छोटे-मोटे कितने ही काम मुफ्त किया करता था। उसके मुआवजे में डाक्टर ने उसकी बीवी का मुफ्त मुआयना किया और काफी देखभाल के बाद बड़े दुख-भरे लहजे में कहने लगा – "मुझे अफसोस है कि, तुम्हारा दूसरा बच्चा भी पहले की तरह, उल्टा पैदा होगा।"

बड़े मुश्किल से उसने हँसी को जब्त किया और चेहरे पर एक कृत्रिम उदासी फैलाकर बोला –"कोई बात नहीं डाक्टर साहब! खुदा की रजा में इन्सान को राजी रहना चाहिए। मगर यह बताइए कि, लड़का होगा कि लड़की।" "यह तो पैदा होने के बाद ही मालूम होगा।" डाक्टर साहब ने फरमाया।

और वह घड़ियाँ गिन-गिन कर बच्चे की पैदाइश के दिन का इन्तजार करने लगा। अब के दोनों मियाँ-बीवी बहुत खुश थे। उन्होंने एक सरकस वाले से यह वादा कर लिया था कि, बच्चा पैदा होते ही उसके हवाले कर देंगे। जब बच्चा बड़ा हो जाता है, तो उसकी मुहब्बत आड़े आ जाती है, फरोख्त करना मुश्किल हो जाता है। लिहाजा उन्होंने सरकस वाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/GH-7

जब आप का बच्चा इस हालत में हों

तो उन के मुस्कुराहट को वापिस लाईये

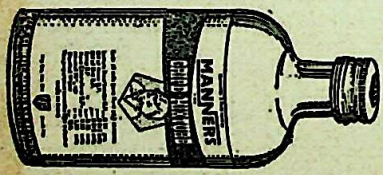

मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर से

शुद्धता के इस प्रतीक को ध्यान रखें यह मॅनर्स का उत्पादन है

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.
BOMBAY • DELHI • CALCUTTA • MADRAS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से पाँच हजार रुपये का सौदा कर लिया था। मगर सरकस वाले ने यह शर्त लगा लगायी थी कि, अगर लड़का हुआ, तो पाँच हजार देगा; और लड़की हुई, तो फक़त तीन हजार। लेकिन उनको सौ फी सदी लड़का पैदा होने की उम्मीद थी। और उसके लिए उन्होंने बहुत-से टोने-टोटके भी कर रखे थे।

आखिर वह दिन भी आ गया, जिस दिन उनके यहाँ फिर से ख्वाजा खिजर आ रहा था और आते ही खट-से पाँच हजार रुपयों की थैली पेश करने वाला था। अंदर उसकी बीवी दर्द से कराह रही थी और रहीमू दाई के दोनों हाथ तेल में चुपड़े हुए थे। बाहर मियाँ और सरकस कंपनी वाले चारपाई पर बैठे बेचैन हो रहे थे। वह बीवी की हर आवाज पर चौंक-चौंक जाता और दरवाजे की तरफ देखने लगता। उसका रोआँ-रोआँ नरीना औलाद के लिए दुआ कर रहा था। लड़की की पैदाइश, जहाँ उसके लिए वैसे ही तकलीफदेह साबित होती, वहाँ दो हजार रुपये का नुकसान भी अलग होता।

"दुआ करो, लड़का पैदा हो!" उसने बेबस होकर सरकस वाले से कहा।

"फिक्र मत करो। इंशाअल्लाह लड़का ही होगा। और लड़की भी हुई, तो क्या है। मेरे दो हजार ही बचेंगे।" सरकस वाले ने अजराहे मजाक कहा।

लेकिन उसको यह मजाक बहुत बुरा मालूम हुआ। वह कुछ सख्ती से इसका जवाब देने को ही था कि, अचानक उसने देखा रहीमू दाई दरवाजे पर खड़ी, उसे इशारे से बुला रही है। वह गोली की-सी तेजी से दरवाजे की तरफ लपका।

"क्या हुआ?.....क्या हुआ?" उसने बड़ी बेताबी से पूछा।

"मुबारक हो.....!" रहीमू दाई खुशी से मुस्कुराती हुई बोली—"लड़का हुआ है।"

वह खुशी से पागल-सा हो गया। उसके मुँह से बेसाख्ता "अल्ला हो अकबर" का नारा बुलन्द हुआ। वह उछलता हुआ अन्दर गया और बीवी की तरफ देखे बगैर, झपट कर लड़के के ऊपर से चादर उठा दी।

अचानक जैसे एक जन्नाटे की गोली किसी तरफ से आयी और उसकी एक कनपटी को चीरती हुई, दूसरी कनपटी से निकल गयी। उसकी आँखें धुँधला गयीं और कान साँय-साँय करने लगे। और दोनों मियाँ-बीवी गुमसुम फटी-फटी नजरों से एक-दूसरे को देखने लगे, जैसे दोनों बोलने की शक्ति से महरूम हों। और एक दफा फिर उनके घर में सफे मातम बिछ गयी।

बच्चा बहुत खूबसूरत और बेनुक्स था।

एक किशोर प्रशंसक की आटोग्राफ-बुक पर, अपने हस्ताक्षर करते हुए जार्ज बर्नाड शा ने लिखा—"अपना समय दूसरों के हस्ताक्षर-संग्रह करने में लगाने के बजाय, अपने हस्ताक्षर को दूसरों के लिए संग्रहणीय बनाने में लगाओ। —जार्ज बर्नार्ड शा।"

—'जोक्स फार आल' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगमग जगमग चमकदार

-यह है विम का चमत्कार!

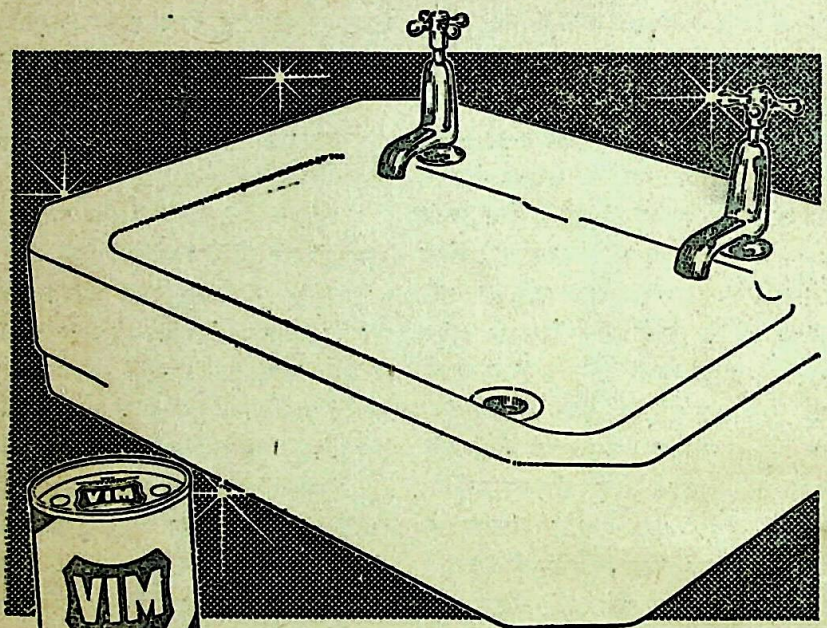

विम से एक बार साफ़ कीजिये और देखिये हर चीज़ कैसे जगमगाने लगती है—कांच या चीनी का सामान हो या रसोई घर के बरतन, फ़र्श और बरतन मांझने की चिलमचियां। विम से सफ़ाई कीजिये तो न रगड़ के निशान पड़ते हैं न कड़ी मेहनत।

और आराम कितना है! गीले कपड़े पर विम छिड़किये, हलके से मलिये—देखते ही देखते एक दमक आ जायेगी और दाग़ गायब! घर की शान बनानी है तो विम इस्तेमाल कीजिये।

विम से हर चीज़ चमक उठती है

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

V. 98-50 HJ

अतीत की नक़ाब उतारकर हिन्दी का यह बीस वर्ष पहले का सफल कहानी-लेखक—श्रीगोपाल नेवटिया—फिर अपनी अनुभूतियों को कथाशिल्प में ढालकर हिन्दी-पाठकों के सम्मुख है!

"सहधर्मिणी ... सहचारिणी ... सहजीविनी ... सहाध्यापिका"—अखबार के विवाह-संबंधी कालम में छपे छोटे-से विज्ञापन के ये शब्द, तीन दिन से मुझे चिंतन-विचिंतन में झुला रहे थे। विज्ञापन के नीचे का पता, तो और भी सुख-सपने सृजता था।

मैं अकेली शहर में रहती थी, किराये के एक कमरे में। सर्विस से इतना मिल ही जाता था, जो भोजन-वस्त्र के अतिरिक्त यत्किंचित आमोद-प्रमोद के लिए भी काफी था। सभा-संस्थाओं में भी भाग लेती थी। दिन, महीने और वर्ष बीतते जाते थे। पर मन तो कुरेदता ही रहता कि, क्या जीवन-पथ ऐसा लकीर जैसा सीधा-सरल ही होता है?

विज्ञापन में पता था, कौशानी के आगे एक गाँव का। जब पढ़ती थी, पाठशाला की यात्रा-टोली में नैनीताल, रानीखेत, अल्मोड़ा, कौशानी तक हो आयी थी। कौशानी के डाक-बँगले के उत्तरी प्रांगण में खड़े हो कर, मैंने पूरब से पश्चिम तक फैली पर्वतमाला देखी थी। और देखे थे विभिन्न शिखरों पर चाँदी के चमकते ताज। उन पर्वतों के चरणों से, इस पर्वत के चरण तक, हरियाली ही हरियाली, नजर आती थी। मैं सोच रही थी – यह गाँव भी उसी हरियाली में कहीं छिपा होगा, कल-कल बहती कोई जल-धारा उसका आँचल धोती होगी, सेब और अखरोटों की झुरमुटों में लकड़ी के बने घर होंगे; गाँव के छोर पर एक पाठशाला होगी, उसमें वे अध्यापक होंगे; प्राकृतिक सौंदर्य का आकर्षण, स्वास्थ्यप्रद स्थान के निवास का लोभ और विद्यादान का सदुद्देश्य उन्हें वहाँ खींच लाया होगा और अब वे "सहधर्मिणी, सहचारिणी, सहजीविनी, सहाध्यापिका" की खोज में हैं। "सहधर्मिणी....सहचारिणी ....सहजीविनी....सहाध्यापिका।"

पूरब में जन्मी-पली और संसार में अकेली होने पर भी, मैं असहाय अबला नहीं थी। जब से होश सँभाला, अपने पाँवों पर ही खड़ी थी। मैंने छोटा-सा पत्र लिखा –"विज्ञापन देखा। रूबरू मुलाकात हो, तो और बातें हों।"

और रूबरू मुलाकात दसवें दिन ही हो गयी। वे आये; उन्होंने मुझे देखा, मैंने उन्हें; मैंने उन पर विजय पायी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

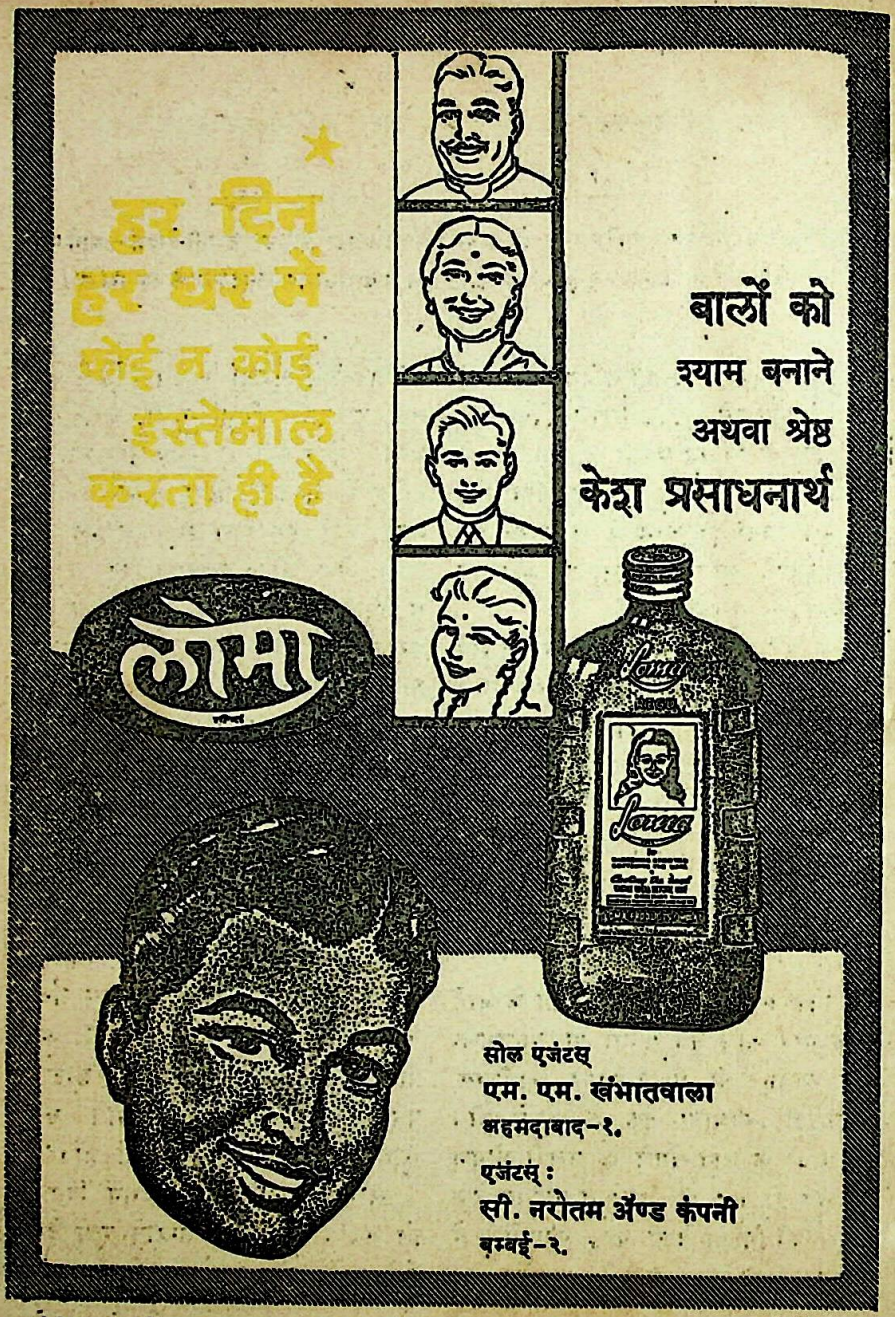

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने मुझ पर। जीवन-पथ ने मोड़ खाया।

× × ×

मैं उस गाँव में, उस वातावरण में, उस घर में, उस हृदय में, पहुँच कर, सचमुच निहाल हो गयी। जितना छोटा गाँव था, उतना ही विशाल वहाँ का सौंदर्य था; जितना ही तंग वह घर था, उतना ही वह विशाल था। उसमें स्थान पाकर कौन नारी निहाल न हो? मैंने अपने आपको उन्हें सौंपा, उन्होंने अपने आपको मुझे।

छोटे-से घर को मैंने व्यवस्थित किया; भोजन-भाजन को सँभाला; अपने तन-मन को पति के अनुरूप बनाने में, अपने-आप को खो दिया। उन्होंने मुझे मनोरम प्राकृतिक सौंदर्य के बीच विचरण करवाया; पुस्तकों में और अपने मस्तिष्क में संचित सौरभ से मुझे रस-विभोर बनाया।

उनकी वह छोटी-सी पाठशाला, उसमें पढ़ते-खेलते वे बालक! मैंने बालकों को नहलाना-धुलाना प्रारंभ किया; उनके खेल-कूद का जिम्मा अपने हाथ में लिया। सहधर्मिणी, सहचारिणी, सहजीविनी और सहाध्यापिका बन गयी।

इस जीवन में कोई मोड़ नहीं था। फिर भी वह बड़ा प्यारा लगता था; बहुत ही सुखकारी।

× × ×

शरद ऋतु बीती। शिशिर का आगमन हुआ। पार्वत्य प्रदेश और सो भी ठेठ हिमालय के अंतराल में। शिशिर के रूप का मुझे प्रथम दर्शन हुआ; बहुत ही प्रिय लगा। गिरि-गह्वर श्वेत, पथ-पगडंडियाँ श्वेत, वृक्ष-गृह सब श्वेत।

धीरे-धीरे शिशिर रौद्र रूप धारण करता गया। पाठशाला की गति-विधि मंद पड़ गयी। हमारे विचरण में भी मौसम के बंधन पड़ गये; पर इन बंधनों ने हमारे स्नेह-बंधनों को और दृढ़ ही बनाया।

पूरे सप्ताह खूब बर्फ गिरी थी। घर से बाहर निकलना दूभर था। साँय-साँय करती हवा चलती और बर्फ के थपेड़े लगते। अचानक सातवें दिन गहरे नीले आकाश में चमचमाता सूरज निकला, नीचे धरती का रूप ही बदल गया। कितनी प्यारी लगती थी वह धूप, वह सर्वव्यापी श्वेतता। विहरण के विरही हम निकल पड़े घर से। ऊँचे चढ़े, नीचे उतरे, पहाड़ी की ढलान पर फिसले, बर्फ से ढकी नदी के साथ किल्लोल किया; कितना विहार किया हमने उस बर्फ पर! अंत में मैं थक कर, वहीं बफ पर पड़ रही; पर उनका बलिष्ठ शरीर तो प्रकृति के साथ अभी और विहार करने के लिए आतुर था। गाँव जिस पहाड़ी के ढलान पर बसा था, उस के ऊपर विस्तृत पठार था। पहाड़ी चढ़ कर उस हिम-सागर को देखने के लिए वे आतुर थे। मैं वहीं सोयी रही और वे ऊपर की ओर चले गये।

मैं तब जगी, जब उनके चिरपरिचित हाथ ने बहुत ही अनजानी रीति से मुझे जगाया। मैं अलसायी-सी उठी। धूप मंद पड़ गयी थी; पर अभी उष्णता थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

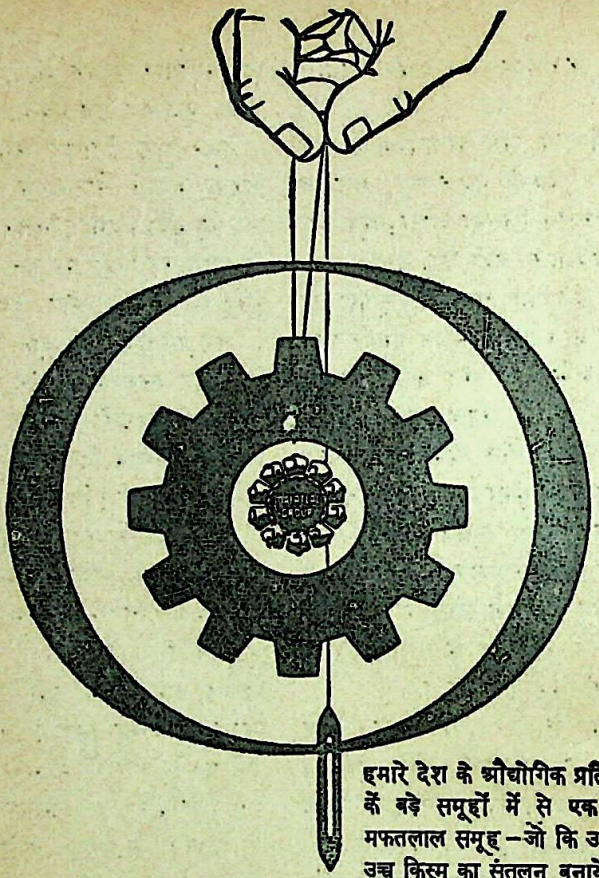

हमारे देश के औद्योगिक प्रतिष्ठानों
के बड़े समूहों में से एक है
मफतलाल समूह—जो कि उत्पादन में
उच्च किस्म का संतुलन बनाये हुए है।
इस समूह से संबधित अनेक कपड़े की
मिलें जो कपड़ा बनाती हैं वह डिझाइन बनावट व रूपरंग में बेजोड़
होता है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह समूह प्रत्यक्ष रूप में हजारों
और अप्रत्यक्ष रूप में लाखों लोगों की रोजी का साधन है।
कई लाख लोग इस समूह से लाभान्वित हैं।

मफतलाल मिलों का समूह प्रगति के साथ चलनेवाला

शॉरॉक, अहमदाबाद। न्यू शॉरॉक, नड़ियाड़। स्टेण्डर्ड, बम्बई। न्यू चाइना, बम्बई। ससून, बम्बई। न्यू यूनियन, बम्बई। सूरत कॉटन, सूरत व देवास। मफतलाल फाइन, नवसारी। गगलभाई जूट, कलकत्ता।

दुसरे उद्योग: रुई - शक्कर - रंग मफतलाल हाउस, बैकबे रिक्लेमेशन, बंबई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने देखा— उनका चेहरा विषण्ण था, शायद अधिक श्रम के कारण; उनकी वे बड़ी-बड़ी आँखें मुँदी-मुँदी जा रही थीं; बड़े श्रम से पलकभर वे खुलतीं, फिर मुँद जातीं। कुछ अजीब-सा लगा। पर उन्होंने कहा— "उठो चलें" और अपना हाथ मेरे कंधे पर टिका दिया। पति के, मेरा थोड़ा-सा सहारा लेकर चलने से ही, मैं कितनी सुखी हुई!

फिर बर्फ पड़ी। फिर वही घर में बंद रहने के दिन। वही हम दोनों। पर देखा, अब वे उतने समीप नहीं आते, कुछ परे-परे रहते हैं; अपनी प्रिय पुस्तकों के साथ भी समय नहीं बिताते। शीत क्या भावनाओं की तरलता का अपहरण कर लेता है? संभव है, कर लेता हो। मैं इस विचार में रही।

फिर एक दिन धूप निकली। मेरा मन नाच उठा। पर जब वे बाहर चल कर, मुझे भी पहाड़ी पर, के पठार की तुषार-कांति के दर्शन कराने के मेरे आग्रह को टाल कर अलसाये-से, आँखें मुँदे आराम कुरसी पर पड़े रहे, तो मैं मन मसोस कर रह गयी। निरंतर सुखपूर्वक बहती हमारी दांपत्य-जीवन की नदी के मार्ग में एक चट्टान आ गयी।

दिन बीतते गये; अधिक-ही-अधिक चटटानें आती गयीं और मैंने यह अनुभव किया कि, वे आती नहीं, लायी जाती हैं। उनकी मुँदी आँखें कभी-कदाक खुलतीं। मेरे बोलने पर मानो किसी दूसरे जगत से सहसा लौट कर इस जगत में आते। कारण की खोज में मेरा मन भकटता रहा, पर खोज नहीं पाया।

× × ×

हिम का प्रकोप कम हुआ। पाठशाला में बालकों का जमाव कुछ बढ़ने लगा। घर की उस उदासी को पाठशाला में उन नन्हे-निर्बोध बालकों के बीच, भुला देने में मैं तत्पर हो गयी। उसकी जरूरत भी थी—मेरे लिए उतनी ही, जितनी उन बालकों के लिए। वे उन्हें अब नहीं पढ़ाते-लिखाते। पाटी या पुस्तक

हमारी सैर

लोग हँसते हैं चहचहाते हैं;
शाम को सैर से जब आते हैं।
लैम्प की रोशनी में यारों को
दास्तानें नयी सुनाते हैं।

हम पलटते हैं जब गुलिस्ता से
आह भरते हैं, थरथराते हैं।
मेज पर सर से फेंक कर टोपी
एक कुर्सी पै लेट जाते हैं।

आप समझे यह माजरा क्या है?
सुनिये, हम आपको सुनाते हैं।
वोह लगाते हैं सिर्फ चक्कर हो।
हम मनाजिर से दिल लगाते हैं।

वोह नजर डालते हैं लहरों पर
और हम तह डूब जाते हैं।
घर पलटते हैं वोह 'हवा' खाकर
और हम 'जख्म' खाके आते हैं।

—जोश मलीहाबादी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्व चैम्पियन की पसंद फायरस्टोन

...फिर, आपकी क्यों न हो

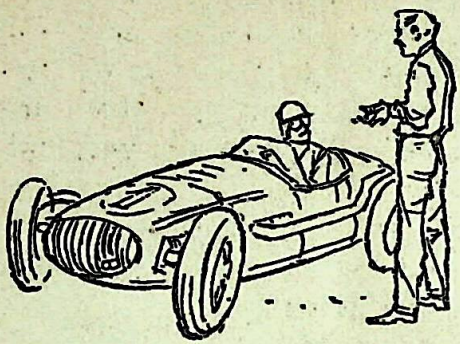

क्योंकि—विश्व की मुख्य मोटर-रेसों में फायरस्टोन टायरों की सुरक्षा, वर्षानुवर्ष सिद्ध हो रही है। इन टायरों की इन रेसों में बेरहमी के धक्के, भारी तोड़-मरोड़, और गर्मी बर्दाश्त करनी पड़ी है, फिर भी एक टायर खराब नहीं हुआ। आप भी बिल्कुल ऐसी ही सुरक्षा व विश्वसनीयता प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि आपकी कार के फायरस्टोन टायरों में भी रेस के टायरों जैसी ही सुरक्षात्मक निर्माण विशेषताएँ मौजूद हैं। फायरस्टोन टायरों की सुरक्षा क्रियाशीलता द्वारा प्रमाणित है।

डार्लिंग्टन, साउथ कारोलीना की ९ वीं वार्षिक '५०० मील' की रेस के विजेता ग्लेन रावर्ट्स की घोषणा है कि मुख्यतः फायरस्टोन टायरों के कारण ही, जिन्होंने सड़क के १२१ डिग्री तापमान को बर्दाश्त करने में अपना आश्चर्यजनक करिश्मा दिखा सका।

Firestone

न्यू डिलक्स चैम्पियन

ट्यूब रहित या ट्यूब सहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से थोड़ी देर में ही ऊब कर वे बच्चों को लेकर एक ओर जा बैठते और आँखें मूंदे-मूंदे उन्हें कहानियाँ सुनाया करते। सो सारा लिखाना-पढ़ना मुझे सँभालना ही पड़ा।

इस बीच मुझे अकेला छोड़ कर वे दो-तीन बार अल्मोडा-नैनीताल गये। क्यों गये, न उन्होंने बताया, न मैंने पूछा। हम दोनों जो इतने समीप थे, इतने दूर हो गये! फिर भी मैं देखती थी उनकी प्रेम-गंगा का स्रोत सूखा नहीं था; करुणा के तुषार ने उसे आच्छादित कर दिया था।

तीसरी बार जब वे नैनीताल से लौट कर आये, तो ऐसा लगा कि, वह तुषार और भी घनीभूत हो गया है। उसे भेद कर पहले जैसे हँसने का वे प्रयास करते, अब वैसा नहीं करते; मुझसे दूर-ही-दूर रहने के लिए यत्नशील रहते। मैं जितनी ही उनके समीप जाती, उतनी ही अधिक पीड़ा उनके मुख पर झलकती। निश्चय ही, वह पीड़ा घृणाजनित तो कदापि नहीं थी। फिर क्या कारण था उसका?

कारण समझ में आया उस दिन, जब मैंने उन्हें एक साधारण सी, पर स्वस्थ पहाड़िन का हाथ पकड़े, बड़े उत्साह से पहाड़ी पर चढ़ते देखा। उनका अट्टहास मेरे कानों में टकरा कर मुझे उद्वेलित करने लगा। नहीं सूझा कि, क्या करूँ? पर बिना कुछ किये रहूँ भी तो कैसे? वहाँ की वायु मेरे लिए विषाक्त हो गयी। सब-कुछ छोड़ मैं जिस राह आयी थी, अनुराग और उमंग का पाथेय लिए, उसी राह लौट चली, कुंठा और अनुताप का बोझ लादे। कैसा भयावह मोड़ था!

× × ×

फिर वही नगर-निवास, वही किराये का कमरा, वही स्वावलंबन, वही अवलंबन का अभाव। मैं वही हो गयी, जो कुछ काल पहले थी। पर कितना अंतर था — बाहर से नहीं, भीतर से।

मैंने नर्स का पेशा अख्तियार किया, मन के अनुताप को शांत करने के लिए; रोगियों को मुक्त-हस्त से अपनी सेवा-शुश्रूषा प्रदान करके, यत्किंचित सुख-संतोष पाने के लिए। शायद उसी पथ पर अग्रसर होती रहती .....यदि यह घटना न हुई होती।

अस्पताल से संलग्न नर्सों का एक क्लब था। हमारी मेट्रेन उसकी अध्यक्षा थीं। हमारे लाभ के लिए वे कभी कोई प्रदर्शन, कभी कोई व्याख्यान, कभी कोई विचार-विनिमय करवाती रहतीं। एक दिन वहाँ एक डाक्टर-वक्ता आये —अपने सेवा कार्यों के लिए ख्यातिप्राप्त एक नामी नेत्र-चिकित्सक। गाँवों में आयोजित अपने "नेत्र-दान यज्ञों" का हृदयग्राही चित्र उन्होंने भाषण में खींच दिया। भाषण के इस अंश ने तो मुझे झकझोर ही डाला—

".....एक उदाहरण दूं। कौशानी के नीचे एक गाँव में एक बहुत ही निस्पृह और सेवा भावी अध्यापक रहते हैं। पिछली सर्दियों में बर्फ की सफेदी की मार खाकर उनकी आँखों की ज्योति जाती रही। उन्होंने नैनीताल आकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अचानक वापसी पर

दस बारह दिन के लिये मुझे मायके जाना पड़ा। जाने के पहले अपने पतिदेव के बारे चिन्ता थी कि बाद में उन के भोजन का क्या प्रबन्ध होगा। होटलों में खा खा कर तो उनका पेट खराब हो गया था। यह दस बारह दिन फिर वे होटलों में खायेंगे तो उनकी पुरानी तकलीफ़ फिर शुरू हो जायेगी। जब पति के सामने यह चिन्ता प्रकट की तो वे हँस दिये, "वाह, यह भी कोई बड़ी बात है! हम खुद अपने हाथ से खाना बनाया करेंगे। तुम क्या समझती हो हमें? क्या भोजन विद्या का ठेका औरतों ने ही ले रखा है? तुम्हारे बाद हम नित्य नई नई चीज़ें बना कर खाया करेंगे। और फिर सतीश भी तो साथ है।"

सतीश उनका दोस्त है जो हमारे पड़ोस में रहता है और हमारे घर ही खाना खाता है। और उस दिन शाम को दफतर से आने पर वे भोजन विद्या की एक पुस्तक खरीद लाये, "देखो, इस में ऐसी ऐसी चीज़ें दी हैं जो शायद तुम्हें भी बनानी न आयें।"

मैं मुस्कराई — आखिर मैं चली गई।

और फिर जब बिना खबर दिये ही मैं इतवार के दिन अचानक लौट आई तो घर में पैर रखते ही देखा कि पति देव और सतीश दोनों ही रसोई में खाना बनाने में व्यस्त हैं। मुझे देखते ही दोनों हैरान भी हुये और खुश भी।

दहलीज़ में ही खड़ी हो कर मैं ने एक नज़र रसोई को देखा—रसोई में हर चीज़ ही अस्तव्यस्त थी। बरतन इधर उधर बिखरे पड़े थे। स्टोव दाल और आटे से लथपथ था। एक ओर बहुत सी दिया सलाईयां जली पड़ी थीं। पति देव का रेशमी रूमाल एक तरफ़ पड़ा था जिस पर काले पीले निशान थे। और शेल्फ़ पर भोजन विद्या की पुस्तक खुली हुई पड़ी थी....

रसोई की हालत का तो मैं ने वर्णन कर दिया, परन्तु रसोई में खाना बना रहे पति देव और सतीश की जो हालत थी, उसे वर्णन न ही करूँ तो अच्छा है।

मैं ने आगे बढ़ते हुये कहा, "लाइये, मैं बनाती हूँ खाना। आप मुँह हाथ धो कर होश में आइये।"

"वाह यह भी अच्छी कही। खाना तो हम ने बना भी लिया है। अब सब बैठ कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाते हैं। तुम तैयार हो जाओ।"

तभी सतीश ने कहा, "भाभी, आज तो तुम हमारी मेहमान हो। आज हमीं तुम्हें खिलायेंगे। कल से तुम अपना डिपार्टमेंट सम्भालना।"

जब खाने बैठे तो मैं ने देखा—आलू का साग था जिस में हल्दी नहीं डाली गई थी। दाल थी कि गोता लगाने पर भी दाना हाथ में नहीं आ सकता था। और परौठों को देख कर तो मेरी हँसी ही निकल गई। कई शक्लों के परौठे थे। कोई त्रिभुजाकार, कोई लम्बूतरा, किसी के पांच कोने, किसी के बीच में छेद, किसी के किनारे टूटे हुये... मेरे मुहँ से निकला, "इन परौठों में तो ज्योमैटरी की सभी शक्लें दिख रही हैं।" और मैं मुस्कराई।

पति ने हँसते हुये कहा, "तुम तो जानती हो कि स्कूल में ज्योमैटरी मेरा सब से अच्छा विषय था। इसी लिये यह परौठे कई शक्लों के बनाये हैं। अब तुम खा कर स्वाद देखो। किसी चीज़ की सूरत नहीं, सीरत देखी जाती है।"

खाने में मैं एक भीनी भीनी सुगन्धी महसूस कर रही थी। एक नया सा स्वाद था। शायद भूक ही बहुत ज़्यादा लगी थी या खाना पति के हाथ का बना था कि मैं ने खूब डट कर खाया। यह देख कर मेरे पति और सतीश बहुत खुश हुये।

फिर शाम हुई तो रसोई में चीज़ें ठीक से रखने गई। वहां 'डालडा' का बड़ा डिब्बा देख कर कुछ हैरानी हुई। पहले का छोटा डिब्बा खाली था। यह बड़ा मेरे बाद ही आया होगा। मैं ने हँसते हुये पति से पुछा, "तो क्या मेरे बाद आप भिन्न प्रकार की तली हुई चीज़ें ही खाते रहे हैं? 'डालडा' का यह बड़ा डिब्बा कैसे आया हुआ है?"

पति ने कहा, "नहीं तो, हम तो सारा भोजन ही 'डालडा' से बनाते रहे हैं।"

मैं ने हैरान हो कर पूछा, "सारा भोजन ही? दाल, भाजी, पूरियां, पलाव... हर चीज़ ही?"

पति ने कहा, "क्यों नहीं, जब कि 'डालडा' स्वास्थ्य के लिये बहुत गुणकारी है और इस से हर प्रकार का भोजन बहुत अच्छा बनता है। देखा नहीं तुमने आज?"

मैं ने कहा, "हां, आज खाने में कुछ भिन्न सा स्वाद था।"

उन्हों ने फिर कहा, "'डालडा' चीज़ों का असली स्वाद उजागर कर देता है। 'डालडा' से भोजन पकाने के लिये हमें सतीश के दोस्त जगमोहन ने सलाह दी थी। एक दिन उन के घर खाने पर गये तो पता लगा कि वे सारा भोजन 'डालडा' से ही बनाते हैं। फिर तो हमने भी घर आ कर हर चीज़ 'डालडा' से बनानी शुरू कर दी।"

मेरे मुँह से निकला, "वाह, यह तो खूब रही।"

पति ने फूले न समा कर कहा, "और फिर 'डालडा' में विटामिन ए और डी मिलाये गये होते हैं जो बीमारियों से हमारी रक्षा करते हैं और आँखों, चमड़ी और हड्डियों के लिए फायदेमंद हैं।"

मैं ने कहा, "तब तो आप ने मेरे बाद एक नई खोज की है। आप को इस के लिए इनाम मिलना चाहिये।"

"और भोजन पकाने के लिये कोई इनाम नहीं?" उन्हों ने मुस्करा कर पूछा।

DL. P. 3B-X29 HI
हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे दो-तीन बार आँखें दिखायीं। मैंने उसका उपचार भी बताया। पर....."

आगे सुनने की मेरी शक्ति ही नहीं रही। सारी इन्द्रियों की शक्तियाँ मानो उन थोड़े से शब्दों के आघात से विशीर्ण हो गयीं। भाषण समाप्त हुआ, सभा-स्थल से बाहर जाते समय डाक्टर साहब से एकांत में कुछ बातें करने का निवेदन कर, उन्हें एक ओर ले गयी। समस्त शक्तिकण बटोर कर मैंने उनसे पूछा — "जिन अध्यापक का आपने-अपने भाषण में जिक्र किया, उनसे आप मिले थे?"

"हाँ, क्यों नहीं। पिछले दौरे में उन्हीं के गाँव में तीन दिन का पड़ाव था। अपनी आँखें न होने पर भी, वे किस सेवा-भाव से दूसरों की आँखें सुधरवाने में लगे थे। मनुष्य नहीं देवता हैं। अब लिखा-पढ़ा नहीं सकते, तो बच्चों को कथा-कहानी सुना कर पढ़ाते हैं। स्वयं दूसरों की दया पर जीते हैं; पर कितनी दया बिखेरते हैं वहाँ? बिचारे एकाकी..."

"एकाकी क्यों?" मैंने बात काट कर कहा, "क्या वह पहाड़िन.....?" मैंने जीभ काट ली।

"कैसी पहाड़िन? क्या बात करती हैं आप? उन्हें जानती हैं आप? ऐसे चरित्रवान सज्जन! सारा गाँव उन्हें बखानता है, कहता है, एक स्त्री विवाह कर लाये थे, पर आँखें चली जाने पर, वह उन्हें छोड़ कर चली गयी। उस स्त्री के सिवाय घर के आँगन में उन्होंने किसी स्त्री की छाया भी नहीं पड़ने दी।"

हे, राम! कैसे उन्हें बताऊँ कि, मैं ही वह अभागिनी हूँ। और कुछ कहे-पूछे बिना, मैं वहाँ से हट गयी।

× × ×

काठगोदाम तक रेल कितनी धीमी चाल से चली, और मोटर बस का यह लम्बा रास्ता, तो काटे भी नहीं कटा। इस रास्ते दूसरी बार जा रही थी। पर मन रास्ते के नहीं; बल्कि कौशानी के पर्वत के दृश्य देख रहा था। वही बर्फ.....वह पहाड़िन .....उनका वह अट्टहास। .....तो अपनी दृष्टिहीनता के कष्ट से मुझे दूर रखने के लिए ही, उन्होंने वह नाटक रचा था; कहाँ वे, और कहाँ मैं?

कौशानी से गाँव तक मैं भागती हुई-सी चली। घर में पहुँची, तो साँझ होने को आयी थी। घर मँह बाये पड़ा था — अस्त-व्यस्त। समस्त शक्ति खोकर मैं वहीं द्वार पर बैठ गयी। अर्द्धचेतना अवस्था में मैंने कुछ देर बाद लाठी की टक-टक सुनी। घर के अहाते में वे चले आ रहे थे। मैं उठ खड़ी हुई। उन्होंने सीढ़ी पर पाँव रखा। मैंने हाथ बढ़ा दिया। मेरा हाथ उनके हाथ से छू गया। चमक कर, उन्होंने अपना हाथ पीछे हटाया। पूछा— "कौन?" बोले —"ओह तुम?" मैंने उनका हाथ दृढ़ता-पूर्वक पकड़ लिया।

एक दिन, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा था। आज मैंने उनका हाथ पकड़ा; अपना नारी-जीवन सार्थक करने के लिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

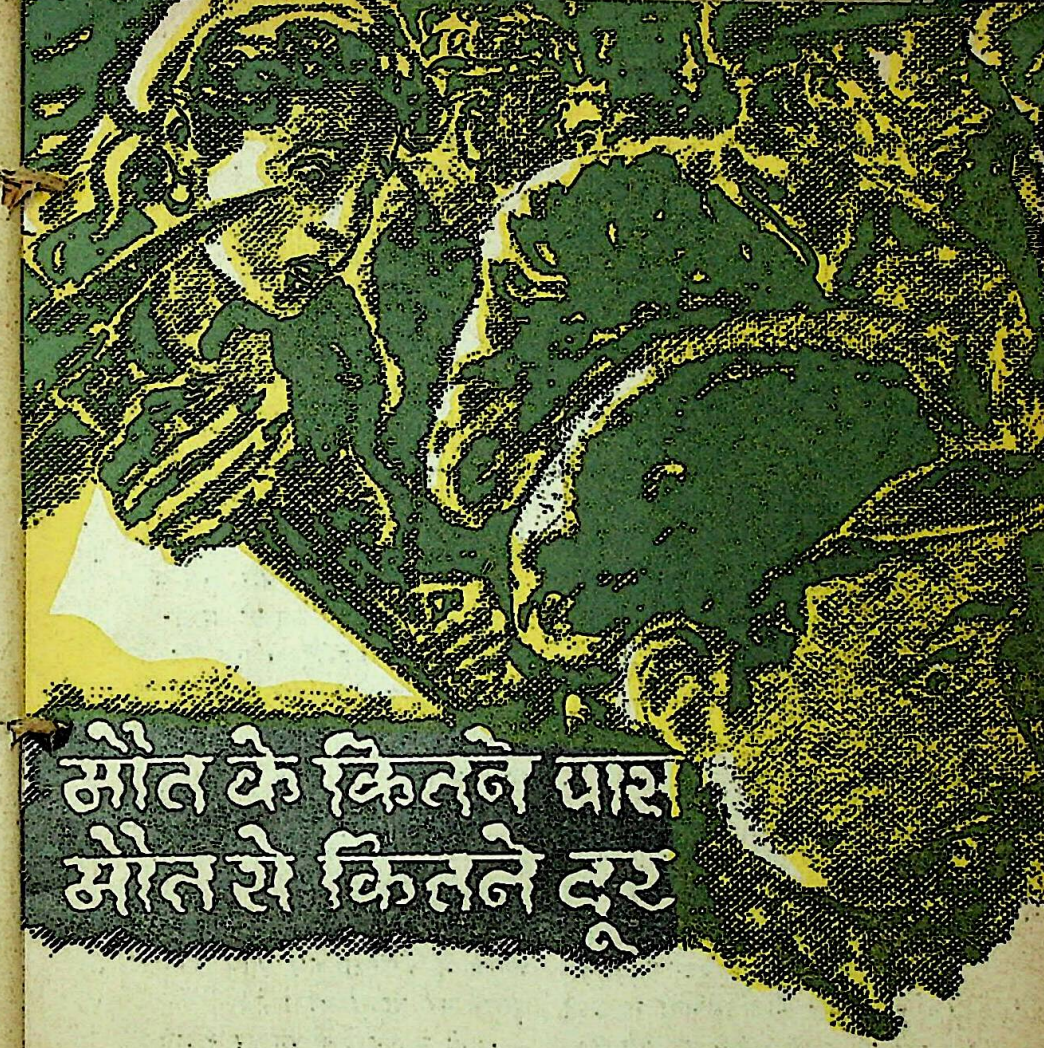

मौत के कितने पास मौत से कितने दूर

"सत्य लूला है; मगर कल्पना के सामने तो गति भी पनाह माँगती है। सत्य, बुद्धि के द्वार पर द्वारपाल की तरह बैठी हुई पत्थर की मूर्ति है। इसके विपरीत कल्पना सातों स्वर्गों में ऐंद्रजालिक रंगीनियाँ बिखेरने वाली मायाविनी मरीचिका है—कला के इंद्रधनुषी क्षितिज की नृत्यांगना है।" अंग्रेज कवि विलियम ब्लैक ने सत्य और कल्पना की तुलना करते हुए ये उद्‌गार प्रकट किये थे; किंतु ब्लैक के ही एक देशवासी वेल्स ने इस 'लूले सत्य' के अद्‌भुत रूप को देख कर कह दिया था—"अंततः सत्य ही अधिक रहस्य-रंजक है, कल्पना नहीं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीचे हम एक प्रसिद्ध उपन्यास को 'नवनीत' के पाठकों के लिए संक्षिप्त कर रहे हैं। इस उपन्यास की सारी कथावस्तु कनाडा के कोयला-क्षेत्र में १९४७ की फरवरी में घटी, एक सत्य घटना का परिवर्द्धित रूप है। जब यह घटना पत्रों में छपी थी, तो ट्रेल्स के वथन को जैसे पूरा समर्थन मिल गया था। पाठक इसी घटना को सुप्रसिद्ध उपन्यासकार जियाउर्रशीद के शब्दों में पढ़ें।

कोयले की खान के पहले भोंपू ने मानो स्प्रिंगहिल (उत्तरी कनाडा का एक शहर, जहाँ हजारों फुट गहरी कोयले की खानें हैं।) के सूरज को भी बेदार कर दिया है और पूर्व दिगंत की छोटी-छोटी पहाड़ियों के आगे क्षितिज पर कुरमुजी, ऊदे और गुलाबी रंग प्रकट होने लगे हैं। दरख्तों पर घोसलों में नन्हे-नन्हे परिंदे चहचहा रहे हैं। सूरजमुखी अपने प्रेमी की पहली झलक देखने के लिए, अपना मुख पूर्व की तरफ किये हुए है। ओस और कुहरे में भीगी हवा में, मिट्टी की सोंधी-सोंधी महक और गुलाब और मोतिये की भीनी-भीनी खुशबू है। उसमें नारियल के रस की मिठास और नीलोफर का खुमार है। मगर इस रूह-परवर हवा में, स्प्रिंग-हिल के मकानों की चिमनियों से उठते हुए धुएँ की बू भी घुलती जा रही है।

खान के मजदूर, मामूल के मुताबिक घरों से निकल कर, गलियों और बाजारों से होते हुए काम पर जा रहे हैं। उन्होंने हिफाजती फुल-बूट पहन रखे हैं और सिर पर फौलादी टोपियाँ रखी हुई हैं। हर मजदूर के हाथ में नाश्तेदान है। तम्बाकू के भक्त, दिन भर का आखिरी तम्बाकू पीते चले आ रहे हैं।

इनमें कुछ औरतें भी हैं, जो ज्यादातर खान के बाहर ही काम करती हैं। मगर उनमें से अधिकांश को, थोड़ी-थोड़ी देर के लिए खान के अंदर भी उतरना पड़ता है।

ये खानें कई बरस से और कई जगह से खुद रही हैं। और अब तो बारह-तेरह हजार फुट की गहराई में एक शहर-सा आबाद हो गया है। हर खान के मुँह पर दो-दो धुरे लगे हुए हैं। एक से जहरीली हवा, खान के अंदर बिछे हुए पाइपों के जाल के जरिये, बाहर निकलती है और ताज हवा नीचे फैलायी जाती है। दूसरे धुरे में दो-दो लिफ्ट लगे हैं; एक कोयला निकालता है और दूसरा सवेरे मजदूरों को भू-गर्भ में उतारता और शाम को फिर भूलोक पर वापस लाता है।

खानों में कमरों के ढंग पर खुदाई हुई है। मजदूर कोयला तराशते हुए, एक-एक कमरा बनाते जाते हैं, जो करीबन पंद्रह फुट लम्बा, बारह फुट चौड़ा और सात फुट ऊँचा होता है। कमरे की छत के सहारे के लिए दो या तीन खंबे तराशे जाते हैं, या बाहर से ला कर शहतीर रखते हैं। जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमरे की दीवारों और छत का कोयला खत्म हो जाता है, तो मजदूर दूसरा कमरा तराशने लगते हैं। इस किस्म के हजारों कमरे, खान में खाली पड़े हैं; और मजदूरों को हर रोज इनमें से हो कर, उन नये कमरों में जाना पड़ता है, जहाँ खुदाई चल रही होती है। कमरों का सिलसिला, जमीन के अंदर मीलों फैल चुका है और न जाने कितना और फैलेगा।

× × ×

काम पर जाने वालों में एक है जॉन। उम्र यही कोई चौबीस के करीब होगी; मगर बेवा माँ ने ऐसी कड़ी निगरानी के साथ परवरिश की है कि, बात-चीत और व्यवहार से जॉन अभी अठारह-उन्नीस बरस का तरुण मालूम होता है। चंद माह से वह स्प्रिंगहिल में काफी मशहूर हो गया है। इस शोहरत की कोई खास वजह नहीं है। अगर जॉन की जगह कोई दूसरा होता, तो कोई ध्यान भी न देता। जॉन की माँ हर मिलने-जुलने वाले से स्वयं ही कहना शुरू कर देती है– "आज-कल का जमाना ही ऐसा है। वह कमबख्त विधवा तो जॉन पर ही डोरे डालने लगी है। मैं ठहरी अबला। जॉन का बाप होता, तो उस बेशर्म की खबर लेता।"

लोगों का खयाल है कि, यह बेल मुँडेरे नहीं चढ़ेगी। क्योंकि जॉन बहरहाल माँ के ताबे में है। और वह माँ, जिसने अपनी सारी जवानी इसी बेटे की परवरिश में खपा दी, भला एक बदनाम विधवा को अपनी बहू बनाने कैसे तैयार होगी!

काम पर जाने वाली औरतों में मेरी भी है। जब वह अठारह साल की थी, उसकी शादी एक युवक मजदूर के साथ कर दी गयी थी। कुछ दिन बड़े आनंद से गुजरे। फिर एक दिन, खान के अंदर एक कमरे की छत गिरी और मेरी का सुहाग उजड़ गया। मेरी और उसकी माँ, फिर उसी स्थान पर आ गयीं, जहाँ से उन्होंने खुशहाली का सफर शुरू किया था। मगर इस बार माँ की जगह, मेरी ने खान में काम शुरू किया। मेरी को बढ़िया कपड़े पहनने और घर सजाने का शौक है। उसके ओंठों पर अक्सर मुस्कराहट खेलती रहती है, जिसने स्प्रिंगहिल के कितने ही आवारा युवकों को गलत-फहमी में डाल दिया है। परंतु उस मुस्कराहट में उच्चता का जो भाव छिपा है, उसे स्प्रिंगहिल के नौजवानों में एकमात्र जॉन ही देख सका है।

मेरी को जॉन का खोया-खोया रहना और उसकी तरफ देख कर मुस्करा देने का अन्दाज, बहुत पसन्द है।

वह जा रहा है, छिदरी दाढ़ी वाला भारी भरकम टाम। स्प्रिंगहिल का सर्वप्रिय, सबसे आनंदी स्वभाव का, सच्चे दिल वाला और दिन-रात शराब पीने वाला टाम। बीस बरस पहले, जोसेफीन के साथ शादी के अवसर पर, गिरजाघर गया था। उसके बाद, आज तक नहीं गया। कुछ लोग उसे नास्तिक भी कहते हैं। लेकिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्होंने उसे करीब से देखा है, उनकी नजर में, टाम में वे सब गुण मौजूद हैं; जो एक ईश्वर-भक्त में होने चाहिएँ।

टाम ने पैसे को कभी विशेष मान नहीं दिया। और पैसा परवाने की तरह इस बेवफा शमा के पास आता रहा। मगर पिछले चंद साल से, टाम एक लगी-बँधी आमदनी के बंधन में जकड़ कर रह गया है। उसने जुआ-सट्टा वगैरह बिल्कुल छोड़ दिया है। और अब वह बीयर और शराब के सहारे, संजीदा जिन्दगी बसर कर रहा है।

टाम का बाप स्प्रिंगहिल में जूते बनाने का माहिर कहलाता था। उसे टाम को उच्च शिक्षा दिलाने का जुनून था। बाप की ख्वाहिश के मुताबिक, टाम ने थोड़ा-बहुत पढ़ लिया; और जब से उसने जिंदगी की गंभीर और गौरवपूर्ण राह पकड़ी है, अखबारों और किताबों का अध्ययन शुरू कर दिया है। आज-कल राज-नीति उसका प्रिय विषय है। उस पर वह घंटों बहस कर सकता है। (टाम का ख़याल है कि, कम पढ़े-लिखे लोगों के लिए बहस, ज्ञान के समुद्र पर पहुँचने का निकटतम मार्ग है।) उसके मिलने वालों में जॉन भी किसी कदर पढ़ा-लिखा है। और चूँकि जान के विचार, टाम के विचारों से मेल नहीं खाते, लिहाजा दोनों में खूब बहस होती है।

जोसेफीन और टाम एक-दूसरे से बड़ा प्रेम करते हैं। और साथ ही हफ्ते में एक दफा ज़रूर आपस में लड़ते हैं। फिर चंद घंटों के लिए बात-चीत बंद हो जाती है।

जोसेफीन हर इतवार को पूरी तैयारी के साथ बच्चों को ले कर गिरजा जाती है। और जाने के पूर्व बरामदे में आराम-कुर्सी पर अधलेटा टाम, जोसेफीन को छेड़ता है— "भई जल्दी करो, तुम्हारे धर्म-कर्म के सौदे का वक्त हो रहा है।"

टाम ऐसी ही बातें किया करता है; जोसेफीन उसे जली-कटी सुनाया करती है और टाम कहकहे लगाया करता है।

टाम हमउम्र और बूढ़े लोगों के बजाय, नौजवानों की सोहबत में बैठना पसन्द करता है। आजकल वह मजदूर-संघ का सेक्रेटरी है। मजदूरों के अधिकारों और उनकी जायज माँगों को, मालिकों से मनवा कर, टाम को दिली खुशी होती है।

जब टाम को मेरी और जॉन के संबंध का पता चला, तो उसने जॉन से कहा— "मेरे बेटे ! अगर यह सही है, तो तुम फौरन मेरी से शादी कर लो। और अगर तुम्हारी खूसट अम्मा तुम्हें घर में न घुसने दे, तो बीवी को ले कर मेरे यहाँ आ जाना। मुझे विश्वास है, तुम उस अभागिन विधवा को धोखा नहीं दोगे। तुम जो भेड़ की तरह मासूम हो, इसीलिए मैं तुम्हें इतना पसन्द करता हूँ।"

जॉन ने हँसते हुए कहा— "बूढ़े लड़के ! वक्त आने पर सब ठीक हो जायेगा।"

और यह "बूढ़ा लड़का" काम पर जा रहा है। उसके मुँह में मैला-सा पुराना पाइप है। किसी को देख कर वह मुस्करा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा है, किसी से हाथ हिला कर कुशल-क्षेम पूछ रहा है, किसी को आँख मार कर 'हलो' कह रहा है।

इन्हीं में एक विल भी है, जो दोस्तों में मुफ्तखोर कहलाता है। दुबला-पतला, धँसी हुई आँखें, पिचके हुए गाल, मित-भाषी और वर्फ किस्म का आदमी। यार लोग लाख मजाक करें, लाख ताने दें, विल के पतले-पतले ओंठों पर मुस्कराहट खेलती रहती है। विल की शराब का खर्च, प्रायः टाम अदा करता है। विल उसके एवज में टाम को गितार पर मेक्सिकी लोकगीत सुनाया करता है। विल वायलिन भी वजा लेता है। टाम उसे कई वार कह चुका है– "दोस्त, तुम गलती से मजदूर वन गये हो। तुम्हें तो अपना आर्केस्ट्रा रखना चाहिए था।"

और विल ऐसी तारीफ सुन कर, अक्सर हल्की-सी आह भरा करता है और कहता है–"ठीक कहते हो, मेरे दोस्त! कुछ रुपये और जमा हो जायें, तो मैं इस मनहूस स्प्रिंगहिल को हमेशा के लिए प्रणाम कर दूँगा।" पर टाम अच्छी तरह जानता है कि, विल स्प्रिंगहिल नहीं छोड़ सकता। विल अभी तक अविवाहित है और उसकी उम्र पैंतीस पार कर चुकी है।

इन्हीं में दोहरे बदन का, फूले-फूले गालों वाला हैरी भी है, जिसने अपने ओंठों में सिगार दबा रखा है और जिसके चेहरे से प्रसन्नता फूट रही है। अगर हैरी का बस चले, तो वह अपनी बीवी और दोनों बच्चों को भी जुए के दाँव पर लगा दे। हमेशा कर्जदार रहता है।

इसके बावजूद हैरी को बीवी और बच्चों से दिली मुहब्बत है। जुए में पैसे जीत कर, सबसे पहले वह जी भर कर शराब पीता है। फिर बाजार से बीवी और बच्चों के लिए, जो चीज अच्छी नजर आये, खरीदता है और सामान उठाये झूमता-झामता घर पहुँचता है। जिस रोज हैरी के घर में, बच्चे विशेष शोर मचा रहे हों और रसोई-घर में उसकी बीवी फुर्ती से काम कर रही हो, तो अड़ोस-पड़ोस के लोग समझ जाते हैं कि, आज हैरी जुए में जीत कर आया है। उस रोज हैरी की बीवी अपना मेक-अप करती है, बालों को शैम्पू से धोकर रिबन बाँधती है और फिर हैरी की जेबों की तलाशी लेती है। अक्सर कई दिन के खर्च का बन्दोबस्त हो जाता है।

कल रात भी हैरी ने जुए में जीता है और इसीलिए आज वह सिगार पीते हुए उल्लास-पूर्वक काम पर जा रहा है।

लार्ड बायरन का हीरो 'डान जान' भी इनमें है। गन्दुमी रंग और घुँघराले बाल, मजबूत चौड़ी कलाइयाँ, चौड़ा सीना, लंबा कद और कमर पेट से लगी हुई। जब स्प्रिंगहिल का यह 'डान जान', जिसका नाम राबर्ट है, भौंहें सिकोड़ कर, दूर से आती हुई किसी औरत की तरफ देखता है, तो उसे देख कर ही हर एक को विश्वास हो जाता है कि, उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमाल अमरोही के टेक्नीकलर
चित्र 'पाकीज़ा' की सुंदरी

आप के लिए
चित्रतारिकाओं का सा
जादू भरा रंग रूप

ऐसा रमणीय रंग रूप जो मन पर मंत्र फूंक दे—यही स्त्रि को सौंदर्य है ! मीना कुमारी कहती हैं, 'मैं अपने रंग रूप की देख भाल लक्स टॉयलेट साबुन से करती हूं। इस के मुलायम झाग से मेरी जिल्द तरोताज़ा रहती है।' लक्स के झाग से आप के रंग रूप में भी एक जादू भरी झमक आ सकती है। रंग रूप की आन बान के लिए लक्स को अपना सौंदर्य साबुन बनाइए।

LUX
TOILET SOAP

शुद्ध सफ़ेद **लक्स टॉयलेट साबुन**

चित्र तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड नें बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औरत के साथ रावर्ट के ताल्लुकात हैं; और अगर नहीं हैं, तो जल्द ही हो जायेंगे। रावर्ट को अपने रूपवान् होने की तीव्र अनुभति है; और चूँकि वह जाहिल है, इसलिए अपने रूप-गर्व को प्रकट भी करता रहता है।

जिस तरह टाम अपनी महफिल का हीरो है, उसी तरह रावर्ट का भी एक प्रभाव-क्षेत्र है, जिसका वह मुखिया है। रावर्ट के स्त्री-प्रसंगों के किस्से स्प्रिगहिल में मशहूर हैं। रावर्ट ने शादी की थी; मगर साल भर में बीवी को तलाक दे दिया और दोस्तों से कहा—"यों महसूस होता है, जैसे मैं जेल से रिहा हुआ हूँ।"

कई दिनों से वह मेरी के साथ मेल-जोल पैदा करने की कोशिश कर रहा है। जॉन अक्सर रावर्ट के दाँत तोड़ने का कोई सुरक्षित और कानूनी तरीका सोचा करता है।

इन्हीं लोगों में बूढ़ा पाल है। पाल उम्र के लिहाज से तो ऐसा बूढ़ा नहीं है; मगर उसकी धार्मिकता का उसकी आत्मा के साथ-साथ, उसके शरीर पर भी असर हुआ है। चवालीस बरस का पाल पचपन से कम का नज़र नहीं आता। पाल ने जवानी आने से भी पहले, अपने लिए जिन्दगी का उकता देनेवाला सीधा रास्ता चुन लिया था और आज तक उसी सीधे रास्ते पर चल रहा है। हफ्ते में सिर्फ इतवार के दिन, वह एक अंडा खाता है और ब्रांडी का एक जाम पीता है।

पाल ने आज तक शादी नहीं की। घर में उसकी विधवा बहन है और हैं बहन के दो बच्चे, जिन्हें वह वर्षों से पाल रहा है। बड़े भांजे को वह पादरी बनाना चाहता है। रोज रात को सोने से पहले, इंजील मुकद्दस का पाठ करता है।

पाल को दुर्व्यसनी लोगों को सही रास्ते पर लाने का जुनून है। आजकल वह रावर्ट के पीछे पड़ा हुआ है। और रावर्ट उसकी छाया तक से घबराता है।

× × ×

स्प्रिगहिल के बाज़ार सूने और उदास हैं। घरों में खामोशी छायी हुई है। बच्चे स्कूल गये हैं और पुरुष हजार फुट की गहराई में कोयला तराश रहे हैं। गृहिणियाँ मामूल के मुताबिक खामोशी से, मशीन के ढंग से, घर के कामों में व्यस्त हैं। बूढ़े या तो अखबार पढ़े जा रहे हैं, या फिर धूप में बैठे-बैठे ऊँघ रहे हैं।

कोई आवाज नहीं, कोई शोर नहीं, कोई हंगामा नहीं। और अगर कोई आवाज, कोई शोर, कोई हंगामा है भी, तो वह स्प्रिगहिल पर पड़े हुए स्तब्धता के भारी पर्दे को चीर कर, अनुभूति की सतह को छूने में मानो असमर्थ है।

अचानक स्प्रिगहिल की उदास स्तब्धता दरहम-बरहम हो गयी। खान में दुर्घटना के भोंपू चीख रहे हैं। दूकानदार जल्दी-जल्दी दूकानें बढ़ा रहे हैं। बच्चे किताबें सम्भाले अपने-अपने घरों की तरफ भागते चले आ रहे हैं। बूढ़े सलीबों के निशान बनाते हुए, खान की तरफ तेज-तेज कदम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASPLIC 50 1111

आप यही कहते हैं : *"मेरी पालिसी की किस्तें सुरक्षित रहेंगी? क्या मैं निश्चित रह सकूँ?"*

सच पूछिए तो अभी आपके बीमे के पैसे अधिक सुरक्षित हैं। बीमेदारों के पैसे की सुरक्षा के लिए ही लोकसभा ने एक कानून बनाकर लाइफ़ इन्श्योरेन्स कारपोरेशन की निर्मिति की है। अब दावे की रक़म नक़द रूप में देने की गारंटी भारत सरकार की है।

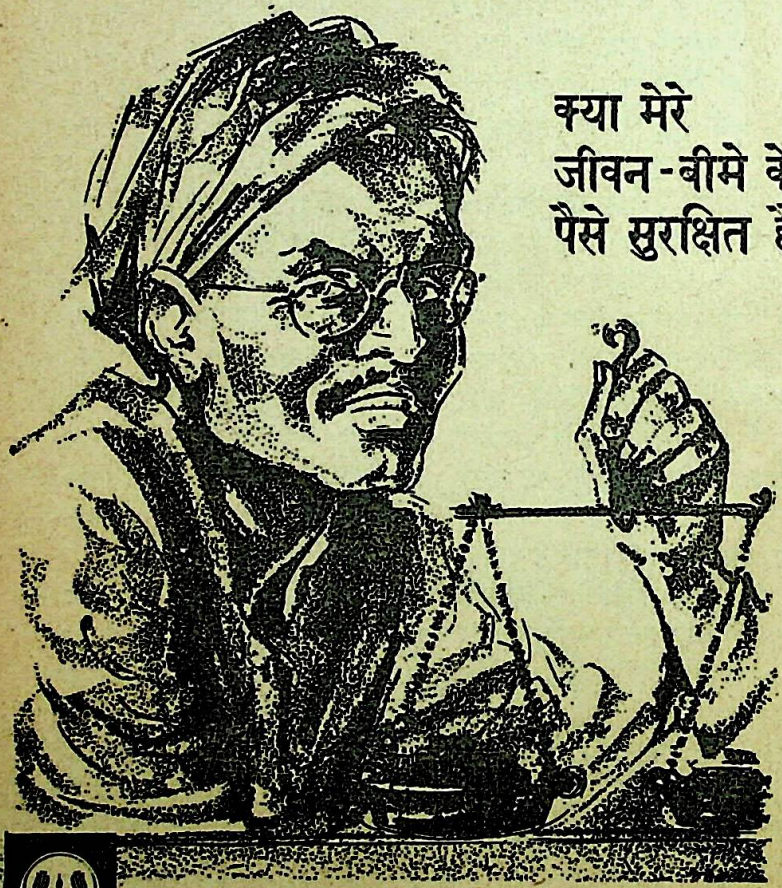

क्या मेरे जीवन-बीमे के पैसे सुरक्षित हैं?

लाइफ़ इन्श्योरन्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इन्डिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उठा रहे हैं। औरतें परेशानी के आलम में चीखती हुईं, खान की तरफ भाग रही हैं।

भोंपू गूंज रहे हैं। माँगें उजड़ रही हैं। लाड़ले यतीम हो रहे हैं। खान के लिफ्ट मजदूरों को बाहर निकाल रहे हैं। जब कोई लिफ्ट ऊपर आता है, जन-समूह की साँस रुक जाती है। फिर चंद चेहरे खिल जाते हैं और बाकी मुरझा जाते हैं। एम्बुलेंस भोंपू बजाती हुई, खान के मुँह पर आ गयी है। खान के अफसरों और मालिकों की कारें भी आनी शुरू हो गयी हैं। और हजारों फुट की गहराई में कमरों के खंबे गिर रहे हैं। चट्टानें गिर रही हैं। राहें बंद हो रही हैं। राही दब रहे हैं, राही पिस रहे हैं, राही काल-कोठरियों में कैद हो रहे हैं।

× × ×

"हे मेरे भगवान्! क्या हम यहाँ से कभी नहीं निकल सकेंगे?" हैरी मायूस नजरों से, अंधेरे में अपने साथियों को देखने की कोशिश करते हुए बोला।

"कभी नहीं, कभी नहीं!" बिल अपने यकीन की आग में जल रहा था।

"ऐसा न कहो खुदा के लिए ऐसा न कहो।" मेरी रो रही थी।

"बिल ने ठीक कहा है, मेरी।" जॉन बेबसी के आलम में बोला।

"हमें खुदा पर भरोसा रखना चाहिए। वही हमें इस हजारों फुट गहरे अंधकार-भरे कुएँ से निकाल सकता है।" पाल ने सलीब का निशान बनाया और अंधकार से राहत पाने के लिए, आँखें बंद कर लीं।

"पाल ठीक कहता है। खुदा अगर हमें नहीं, तो हमारी आत्माओं को तो इस कैदखाने से रिहा कर ही सकता है।" यह कह कर राबर्ट अपने घुँघराले बालों को उँगलियों में उलझाने लगा। तकरीबन घंटे भर तक सब खामोश बैठे रहे। इस अर्से में हर शख्स के दिमाग पर यह विचार छा चुका था कि, शायद, शायद एक दिन .....या दो दिन .....या ज्यादा-से-ज्यादा तीसरे दिन..... !

टाम सोच रहा था –"हमें बचाने वाले कुछ नहीं, तो भी, तीन दिन से पहले तो यहाँ क्या पहुँचेंगे। फिर भी हमें इन्तजार करना चाहिए; और जिंदा रहना चाहिए। यहाँ हम एक औरत और छह आदमी हैं। बहरहाल हमें जितने दिन तक हो सके, जिंदगी को घसीटना होगा। और उसका एक ही तरीका है कि, सब लोगों का खाना इकट्ठा करके चार-पाँच दिनों पर विभक्त कर लें। वरना हम अपना-अपना खाना खत्म करके, बारी-बारी से मरने लगेंगे। लेकिन.....।" टाम को अचानक खयाल आया– "अगर मैंने इन लोगों को जिंदगी की उम्मीद पर जिंदा रखने की कोशिश की, तो शायद ये इन्तजार न कर सकें। इन्सान के लिए सबसे कड़ी मानसिक सजा है– इन्तजार। ये लोग तो सोचते-सोचते पागल हो जायेंगे।"

टाम कुछ देर तक सोचता रहा। फिर उसने टार्च जलायी और कहा –"मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

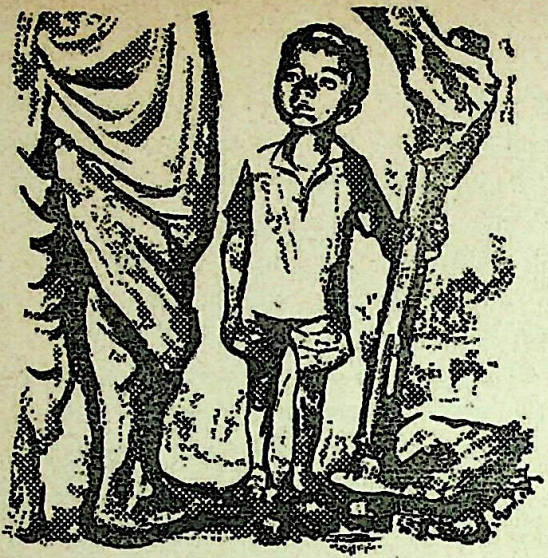

स्वप्न का निर्माण ...

रामू के पिता का फावड़ा आज उसके लिए सिर्फ़ एक खिलौना है। अभी टेलीग्राफ़ के तारों की सनसनाहट में उसे एक अजीब सा संगीत सुनायी देता है; दूर पर उड़ते विमान की गूंज सुन कर वह विचित्र देशों के सपने देखने लगता है। हर बात में पिता की नक़ल करना रामू के लिए अभी एक खिलवाड़ है।

लेकिन समय बीतेगा — 'आज' आनेवाले कल में। ज़िन्दगी में ज़िम्मेदारियां आ जायेंगी। उस वक़्त यही फावड़ा रामू के हाथों में निर्माण का शस्त्र बन जायेगा।

हमारी आज की कोशिशें उस 'कल' को बनाने के लिए हैं जिसमें रामू जवान होगा — जब खुशियां ज़्यादा होंगी; चिन्ताएं कम।

आज भी, हमेशा की तरह, हमारे उत्पादन घरों को स्वस्थ, साफ़-सुथरा और सुखी बनाने में सहायक होते हैं। लेकिन आज हम प्रयत्नशील हैं...उस आनेवाले कल के निर्माण के लिए जब और ज़्यादा प्रयत्नों से ही जीवन में सुख और सम्पन्नता बढ़ाये जा सकेंगे। नये विचारों, नये उत्पादनों और अधिक विस्तृत साधनों के साथ हम उस समय भी सेवा के लिए पूरी तरह तैयार पाये जायेंगे।

आज और हमेशा... घर घर की सेवा... हिन्दुस्तान लीवर का आदर्श

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

PR.3-50 HI

अजीज दोस्तो ! कहाँ हो ?"

"यहीं, और कहाँ जा सकते हैं हम !" जॉन के लहजे में वला की झुँझलाहट थी।

"साथियो, मैं फिर कहता हूँ कि, हमें यों हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और खुदा पर भरोसा.....।"

टाम ने पाल को टोका– "खुदा ! खुदा ! खुदा ! पाल, खुदा के वास्ते तुम इस जमींदोज कैदखाने में तो खुदा की रट न लगाओ।"

मेरी को हँसी आ गयी। टाम खुद भी हँसने लगा। मगर जब पाल भी इन दोनों की हँसी में शामिल हो गया, तो हैरी, बिल और राबर्ट के ओंठों पर भी मुस्कराहट खेलने लगी। और इस तरह उस भयानक अंधकार में, मरणधर्मी मानव की शाश्वत महानता के दीपक की काँपती हुई शिखा में कुछ स्थिरता आयी।

टाम ने कहा – "साथियो, आओ ! जरा गंभीरता से सोचें कि, हमें क्या करना है। हमें सबसे पहले अपना एक लीडर चुन लेना चाहिए, ताकि हमें इस कैद में जितने दिन जीना है, अच्छी तरह जी सकें।"

"टाम ठीक कहता है।" हैरी बोला।

"मैं टाम का नाम पेश करता हूँ।" पाल ने चिल्ला कर कहा।

"हम समर्थन करते हैं।" बिल और हैरी ने एक साथ कहा।

टाम ने कहा –"दोस्तो, इस सम्मान के लिए शुक्रिया। अब मैं आप लोगों के सामने, इस दुनिया की चंद-रोजा जिंदगी का प्रोग्राम पेश करता हूँ। उस पर अमल करना, आप सब लोगों का फर्ज है। यहाँ पर हमारे जिंदा रहने के साधन सीमित हैं; और जब साधन सीमित हों, तब वैयक्तिक स्वातंत्र्य के लबादे में छुपी हुई खुदगर्जी, बड़ी घातक सिद्ध होगी। तो आप लोग, अपने-अपने नाश्तेदान, तम्बाकू की डिबियाँ, पानी और शराब की बोतलें–सब मेरे पास जमा कर दें।"

सबने अपना-अपना खाने-पीने का सामान, टाम के सामने रख दिया। सात नाश्तेदान, पानी की पाँच छागलें, चबाने के तम्बाकू की चार डिबियाँ और शराब के दो अद्धे। फिर उसने टार्च की रोशनी घुमा कर निरीक्षण किया। उस पंद्रह फुट लंबे और बारह-तेरह फुट चौड़े कमरे में, छह मर्दों और एक औरत के लिए, सोने-बैठने का हिसाब वह लगा रहा था। हिसाब लगा कर, एक कोने में मेरी, उससे चंद फुट के फासले पर जॉन, उसके बराबर बिल, फिर राबर्ट, हैरी और पाल। कमरे की चौथी दीवार के साथ टाम खुद। इस इंतजाम के बाद, टाम ने कहा– "साथियो ! मेरे पास सिर्फ दो टार्चें हैं; और मैं हर बारह घंटे के बाद, दो घंटे के लिए टार्च जलाया करूँगा। हर बारह घंटे के बाद आपको खाना मिलेगा; और मेरी सबको खाना परोसा करेगी।"

टाम कह रहा था –"दूसरी अहम बात यह है कि, आप लोग जिस तरह शारीरिक रूप से, बाहरी दुनिया से अलग हो चुके हैं, उसी तरह आपको बाहरी दुनिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह मानी हुई बात है कि
उम्दा तम्बाकू का कोई मुक़ाबला नहीं

पनामा

यानी उम्दा तम्बाकू

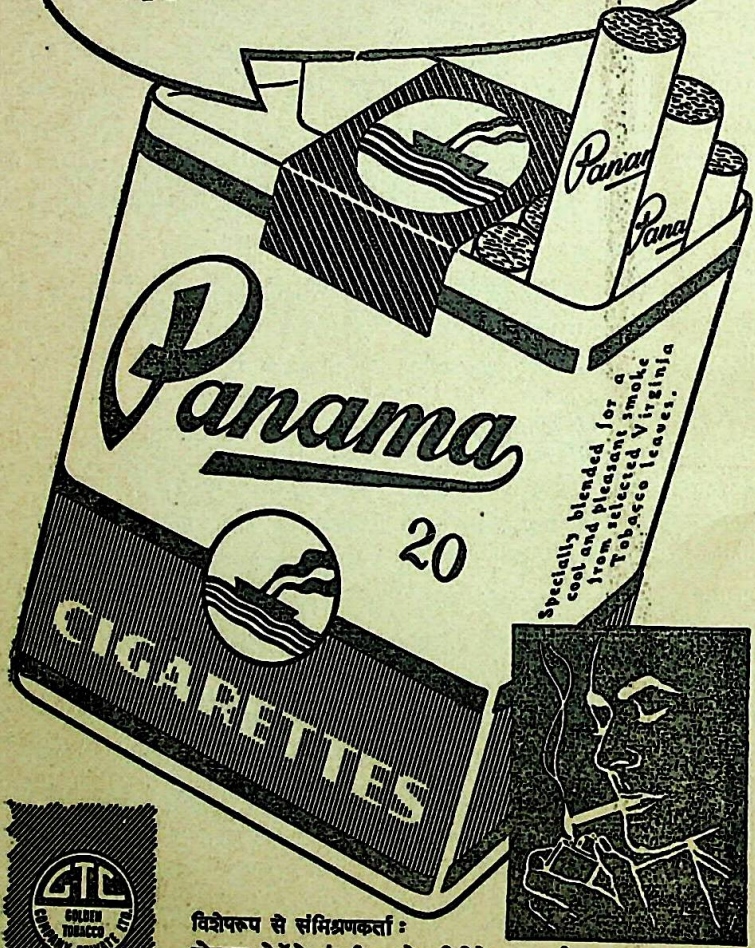

GTC GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD.

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता :
गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई २४
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT 336

Greens' Advtg.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से मानसिक संबंध भी खत्म कर लेना चाहिए। आप उस दुनिया के बारे में जिस कदर सोचेंगे, उतनी ही तीव्रता से भूख, उदासी, विवशता और दुर्भाग्य का एहसास आपको सतायेगा। मेरी सलाह यह है कि, आप सब अपने-आपको एक अस्थायी पड़ाव पर समझें, जहाँ आप एक दुनिया से प्रस्थान करके दूसरी दुनिया में जाते हुए, थोड़ी देर के लिए ठहर गये हैं। अगर संजीदगी के साथ इस तरह सोचने की कोशिश करें, तो आपके दिलों का बोझ फौरन कम होने लगेगा। हममें से कोई भी, भविष्य के बारे में कुछ नहीं कह सकता। यह भी हो सकता है कि, हमारी लाशें भी यहाँ से न निकाली जा सकें। क्योंकि, जब तक हमारी लाशें यहाँ से निकाली जायेंगी, तब-तक हमारे लिए रोने वालों के जख्म भरने शुरू हो जायेंगे। हमारी सड़ी हुई लाशें प्रकट हो कर, उनके भरते हुए जख्मों कों छील कर रख देंगी।"

"इन्सान के लिए आशा से बढ़ कर, मेरे खयाल में, कोई सजा इस दुनिया में नहीं हो सकती। मैं चाहता हूँ कि, आप इस दलदल से निकल आयें। मैंने एक फिल्म देखी थी। उसमें मिस्र के फेराओ को पिरामिड में दफ्न करते दिखाया गया था। उस जमाने के रिवाज के मुताबिक, फेराओ की लाश के साथ, कई श्रद्धालु भी अपनी खुशी से जिंदा दफ्न हो गये थे। वह दृश्य देखते हुए, मेरे जिस्म के रोंगटे खड़े हो गये थे। जब पिरामिड के पत्थर एक दूसरे से मिल रहे थे, तब अंदर फेराओ की लाश के करीब, उसके साथ जिंदा दफ्न होने वाले, बड़े इत्मिनान से मंत्र-पाठ कर रहे थे। मैं चाहता हूँ कि, आप भी किसी फेराओ के साथ, जिन्दा दफ्न होने वाले बन जायें। और मुझे मरा हुआ 'फेराओ' समझ लें।"

सब गौर से टाम की बातें सुन रहे थे। लेकिन जब टाम ने अपने आपको "मरा हुआ फेराओ" कहा, तो विल और हैरी को जोर से हँसी आ गयी।

टाम ने कहा – "आखिर में मुझे यह कहना है कि, आप लोगों को अब से बारह घंटे बाद, इस दुनिया का पहला खाना मिलेगा। हर खाने से पेश्तर, पाल के साथ मिल कर आप लोग दुआ माँगेंगे; मगर मैं दुआ में शरीक नहीं हूँगा।"

"क्यों?" पाल ने पूछा।

"क्योंकि मैं खाना नहीं खाऊँगा।" टाम ने इत्मिनान के साथ जवाब दिया।

"वह क्यों?" मेरी, विल और हैरी ने एक साथ पूछ लिया।

"बस, यह मेरा फैसला है।"

"यह नहीं हो सकता।" हैरी ने तेज स्वर में कहा।

"अभी से आप लोगों का यह आलम है कि, मेरी बात मानने से इन्कार कर रहे हैं। आगे चल कर पता नहीं क्या होगा!" टाम ने जरा गुस्से के साथ कहा।

राबर्ट ने टाम को समझाने की जी-जान से कोशिश की –

"इस तरह तो तुम, हम सबसे पहले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दांत निकलने की तकलीफ़ ?

पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन से बच्चों के दांत हंसते खेलते निकल आते हैं!

पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन से बच्चों के दांत हंसते खेलते निकल आते हैं! दांत निकलने की पीड़ा हो या मसूड़े दुखते हों तो उंगली पर नर्म कपड़े की पट्टी लपेट कर पिरॅमिड ग्लिसरीन में डुबोइये और बच्चे के मसूड़ों पर हलके हलके मलिये— झट आराम आ जायगा। बच्चों को इसका मीठा मज़ेदार स्वाद बहुत अच्छा लगता है। यह शुद्ध है और घर के और कई काम आती है। घर में सदा एक शीशी रखिये।

मुफ़्त पत्रिका! यह कूपन भर के इस पते पर भेजिये :
हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, पोस्ट बक्स नं. ४०९ बम्बई १

कृपया मुझे पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन के घरेलू उपयोगों की मुफ्त पत्रिका भेजिये।

मेरा नाम और पता	मेरे कॅमिस्ट का नाम और पता
_____	_____
_____	_____
_____	_____ N. M. B.

[illegible] आइ. सी. आइ. (आइ.) प्र. लि., बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चल बसोगे।"

"आप इत्मिनान रखिए, मैं आप सब के साथ ही मरूँगा।"

"यही आत्म-विश्वास तुम्हारी नास्तिकता है।" पाल ने संजीदगी से कहा।

"यही आत्म-विश्वास मेरा मजहब है।" टाम ने उत्तर दिया।

× × ×

टाम ने टार्च रोशन करके जमीन पर रखी और कहा – "साथियो! तुम्हारी इस दुनिया का दूसरा सूरज उदय हो गया है; और अब, तुम इस दुनिया का पहला खाना खाओगे।"

थोड़ी देर में जॉन के सिवा सब एक कतार में बैठ गये और मेरी ने सबके सामने एक-एक स्लाइस डबल रोटी, जरा-जरा-सा पनीर, अंडे का चौथा हिस्सा और उबले हुए गोश्त का एक टुकड़ा रख दिया।

टाम ने एक बार फिर जॉन से खाने के लिए कहा, तो जॉन चीख कर बोला – "टाम, आखिर तुम मुझे मेरे हाल पर क्यों नहीं छोड़ देते?" और जॉन ने लेट कर दीवार की तरफ मुँह मोड़ लिया।

टाम ने पाल से दुआ के लिए कहा। पाल खँखार कर दुआ माँगने लगा। दुआ के बाद, टाम ने कहा–"अच्छा, अब आप खाना शुरू कीजिए। अब आप लोग, हर रोज इसी तरह खाना खायेंगे। आप अपने-अपने खाने के आठवें हिस्से का एक कौर ले कर मुँह में रख लें; और फिर उसे आहिस्ता-आहिस्ता चबाते हुए निगलें। आप लोगों की कोशिश यह होनी चाहिए कि, ग्रास को चबाने और निगलने में, ज्यादा-से-ज्यादा वक्त खर्च हो और आपके जबड़े ज्यादा-से-ज्यादा हरकत करें।"

तकरीबन पंद्रह मिनट में सबने खाना खत्म किया। टाम ने मेरी से, सबको दो-दो घूँट पानी देने को कहा। पानी के बाद टाम ने शराब के अद्धे में से, सबको एक-एक घूँट शराब का दिया। और आखिर में उसने दो घूँट शराब के, अपने हलक में उडेल लिये।

"साथियो! आपको मेरी इस हरकत पर शायद ताज्जुब हो रहा होगा। मगर आपको याद होगा कि, मैंने खाना न खाने का वादा जरूर किया था; लेकिन शराब के बारे में मैंने कुछ नहीं कहा था। यह शराब मेरी बीवी हर रोज सुबह, मेरी जैकेट में रख देती थी। खुदा उसे सद्गति दे। अच्छी औरत थी।"

हैरी, बिल और राबर्ट हँसने लगे। हैरी ने कहा – "अगर यहाँ पर ताश होते, तो मैं खाने के बजाय, अपना हिस्सा दाँव पर लगा कर जुआ खेलता।"

"कमबख्त, मैं तुम्हें उसकी कभी इजाजत न देता। तुम हार कर भूखों मर जाते; और फिर तुम्हारा खुदा मेरा गरेबान पकड़ लेता।" टाम ने कहा।

हैरी बोला – "नहीं टाम! यह बात नहीं। जिस तरह तुम आज अपने खयालात को अमली शक्ल दे कर खुशी से भूखे रहे हो, उसी तरह मैं भी, अपना शौक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बी·ओ·ए·सी कॉमेट 8 के द्वारा

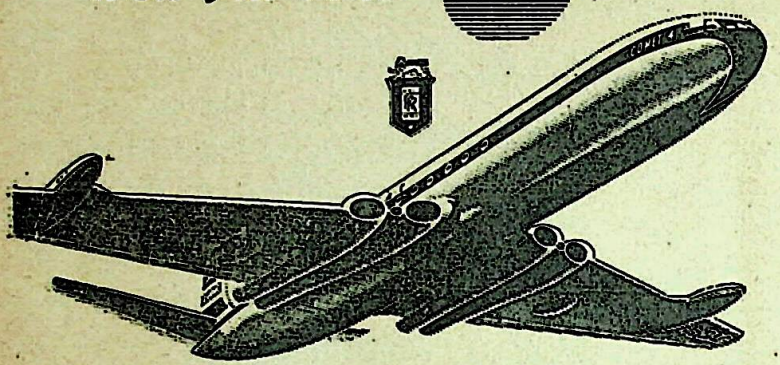

पश्चिम को:

करांची, तेहरान, बहराइन, बेरूट, रोम, ज़्यूरिक, फ्रैंकफ़र्ट, लन्दन, मॉन्ट्रिएल, न्यू यॉर्क और उसके आगे सैन फ्रैंन्सिसको* तक

पूर्व को:

कोलम्बो, रंगून, बैंकॉक, सिंगापुर, हांगकांग* और टोकियो*

और उसके बाद प्रशान्त महासागर के पार *दूर गामी जेट-प्रॉप **ब्रिटैनिया** के द्वारा

बी.ओ.ए.सी. द्वारा नियुक्त अपने स्थानीय यात्रा एजेण्ट या बी.ओ.ए.सी. के बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास कार्यालयों से मिलिए और पूँछ-ताछ कीजिए।

ब्रिटिश ओवरसीज़ एयरवेज़ कॉर्पोरेशन क्वान्टास, ई.ए.ए., एम.ई.ए. और टी.ई.ए.एल. के सहयोग में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूरा करके जिंदा रहता।"

"वह कैसे?" बिल ने पूछा।

"हारने की सूरत में, अगले रोज का खाना हासिल करके, फिर जुआ खेलने की आरजू, मुझे जिंदा रखती।

एक मिश्रित कहकहा उस अँधेरी दुनिया में गूँज गया।

टाम को एक बार फिर जॉन का खयाल आया। उसने मुहब्बत भरे लहजे में कहा—"जॉन, मेरे बच्चे! उठो। तुम भी कुछ खाना खा लो।"

"नहीं! नहीं!" जॉन ने बड़े कटु स्वर में कहा।

टाम को जॉन पर तरस आ रहा था। वह सोच रहा था, "विधवा माँ के इस लाड़ले के लिए, आखिर मैं क्या कर सकता हूँ! कोई क्या कर सकता है!"

टाम ने टार्च बुझा दी। और वह जोसेफीन के बारे में सोचने लगा। वह देर तक, उसके साथ अपनी लड़ाइयाँ याद करके, मुस्कुराता रहा। फिर उसे खयाल आया कि, आजकल जोसेफीन किस कदर गमगीन होगी। फिर उसे अपने गोद लिये बच्चे याद आ गये। टाम की दाढ़ी पर दो गरम-गरम आँसू ढलक आये। उसके मन में खयाल आया—"मुर्दे भी मेरी तरह बेबसी के आलम में चित लेटे, अपने लिए रोने वालों के बारे में सोचा करते होंगे।"

फिर वह सोचने लगा—"अभी तो लोग मायूस नहीं हुए होंगे। अभी तो हमारी तलाश जारी होगी.....खुदाई का काम तेजी से हो रहा होगा।" वह देर तक इसी किस्म की बातें सोचता रहा कि, अचानक मेरी की चीख गूँज गयी। टाम ने फौरन टार्च जला दी। मेरी ने पूरी शक्ति से, राबर्ट को परे ढकेल दिया। उसकी नीली जैकेट के बटन टूट चुके थे और वह लंबी-लंबी साँस ले रही थी। टाम अभी सोच ही रहा था कि क्या करे कि, जॉन जख्मी शेर की तरह, राबर्ट पर झपटा; और दोनों गुत्थम-गुत्था हो गये। हैरी और बिल ने उन्हें छुड़ाना चाहा; मगर टाम ने उन्हें रोक दिया—"अगर जॉन इस बदकिस्मत शैतान को मार सकता है, तो मार डाले।"

टाम के इन शब्दों ने राबर्ट को बद-हवास कर दिया। जॉन देर तक राबर्ट का सिर बालों से पकड़ कर, फर्श पर मारता रहा। आखिर राबर्ट बेहोश हो गया। टाम ने उठ कर जॉन को अलग किया और राबर्ट को खींच कर पाल के पहलू में डालते हुए कहा—"पाल, इस बेचारे के लिए सद्गति की प्रार्थना करो।"

टार्च बुझा कर टाम अपनी जगह पर लेट गया। वह देर तक राबर्ट और जॉन के बारे में सोचता रहा। उसे दोनों अच्छे लग रहे थे। दोनों पर प्यार आ रहा था। वह मुस्करा रहा था कि, उसके कान में जॉन की आवाज आयी—"मेरी, अब मैं तुम्हारी खातिर उस वक्त तक जिंदा रहूँगा, जब तक यह जलील नहीं मर जाता।"

टाम ने कहा—"मेरी, अपने हीरो को खाना खिलाओ; और तुम उसे शराब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

BY APPOINTMENT TO
HIS MAJESTY QUEEN ELIZABETH II
SOAP MANUFACTURERS
A. & F. PEARS LTD.

पियर्स

सुंदरियों का
पीढ़ियों
पुराना सौंदर्य
साधन

पियर्स साबुन — शुद्ध, ग्लिसरीन युक्त
सौंदर्य साबुन — आप की जिल्द के लिए
अति सौम्य और आप की सुंदरता के लिए
सुरक्षित है! अपनी सुंदरता की रोज़ाना
देख भाल सुगंधित पियर्स साबुन से कीजिये।
बच्चों की नर्म और नाज़ुक जिल्द के लिए
पियर्स आदर्श साबुन है! पियर्स टॅल्कम...
रेशम जैसा नर्म और मनोहर सुगंध से
भरपूर..आपको दिन भर तरोताज़ा
और खूबसूरत बनाये रखता है।
हल्के पीले-हरे-और-सुनहरे आकर्षक
डिब्बे में पियर्स टॅल्कम खरीदिये!

PSTP. 1-50 HI हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, ए० एण्ड एफ़ पियर्स लि० लण्डन के लिये भारत में बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के एक घूंट के बजाय, दो घूंट पिला सकती हो। और हाँ, दो घूंट शराब पाल को दो, ताकि उस शरारती को भी पिला दे।"

जॉन ने पहली मरतबा हँस कर टाम को संबोधित किया—"बूढ़े लड़के, इस रिआयत का शुक्रिया।"

× × ×

आखिर इन्तजार की घड़ियाँ खत्म हुईं और टाम ने टार्च रोशन की। उसने नेता की हैसियत से, बारी-बारी सबका हाल रस्मी तौर पर पूछा; और सबने रस्मी तौर पर "फाइन.....फाइन" कहा। फिर टाम रावर्ट के पास गया और टार्च की रोशनी उसके चेहरे पर डाल कर मुस्कराता रहा। उसके चेहरे पर पश्चात्ताप के आसार थे। टाम ने प्यार से उसके गाल पर तमाचा मार कर कहा—"मेरा नालायक बेटा।"

मेरी ने खाना लगा दिया और सब कतार में बैठ गये। आज उनमें जॉन भी था। टाम ने मेरी से कहा कि, वह अपने, जॉन और रावर्ट के सामने, बाकी सबके मुकाबले में दुगना खाना रखे। फिर उसने मेरी से अपने लिए भी एक हिस्सा माँगा। सबने हैरत से टाम की तरफ देखा। मेरी ने पूछा—"जान और रावर्ट को दोहरा हिस्सा मिलने की वजह हो सकती है; मगर मुझे क्यों?"

"अभी मालूम हो जायेगा।" टाम ने यह कह कर, पाल से दुआ के लिए कहा। दुआ में आज वह खुद भी शरीक हुआ और उसने सबके साथ "आमीन" कहा। सब बेताबी से खाना शुरू करने के लिए टाम के हुक्म के इन्तजार में थे। टाम ने कहा—"दोस्तो! आज हमारी इस दुनिया का सबसे सुंदर दिन है। आज मेरी और जॉन तथा पाल की चिर-कालीन अभिलाषाएँ पूरी हो रही हैं। जॉन और मेरी, दूल्हा-दुल्हन बनेंगे; और पाल पादरी।" मेरी की आनंद-भरी चीखों और सबकी तालियों व कहकहों से फिजा गूँज उठी। जॉन और मेरी ने टाम को समझाने की कोशिश की; मगर टाम रावर्ट से कह रहा था—"तुम जॉन के बेस्ट-मैन बनो।" रावर्ट ने बढ़ कर जॉन से हाथ मिलाया। मेरी की आँखों में आँसू उमड़ आये। वह दोनों हाथों से अपना मुँह छुपा कर रोने लगी।

टाम ने लापरवाही से कहा—"मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि, ये खुशी के आँसू हैं; और इस वक्त बहुत जरूरी भी थे।" फिर वह पाल से मुखातिब हुआ—"मियाँ पादरी साहब! शादी की रस्म बस संक्षिप्त ही हो; क्योंकि सबको कड़ाके की भूख लगी है। कहीं तुम पादरी बन कर, पूरी इंजील ही न पढ़ डालना!"

सब हँसने लगे।

रस्म खत्म होने पर, सबने तालियाँ बजायीं। मेरी और जॉन ने एक दूसरे का चुंबन लिया। और रावर्ट ने अदब से झुक कर मेरी का हाथ चूमा। उसके बाद टाम ने नाश्तेदानों के खाली डब्बों में, सबको शराब का एक-एक घूंट दिया। सबने मेरी और जॉन की खुशियों का जाम पिया। खाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर आपको बेहतर ज़िन्दगी प्यारी है— तो इसे पढ़िए!

आज अधिक सुखमय जीवन बिताने के मौक़े हमें पहले से कहीं ज़्यादा मिलते हैं। लेकिन हम में से बहुत-से लोग इन मौक़ों से कोई फ़ायदा नहीं उठा पाते क्योंकि वे आज भी आँखें मूँदकर पुरानी रीतों का दामन थामे रह जाते हैं।

उदाहरण के लिए खान-पान की बात ही लीजिए। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट रहने के लिए हर आदमी को कम से कम दो आउंस चिकनाई हर रोज़ अवश्य ही चाहिए। इस आवश्यक चिकनाई को वनस्पति द्वारा बड़ी आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। फिर भी बहुत-से लोग वनस्पति से पका खाना खाने में हिचकिचाते हैं। उन्हें भ्रम-सा है कि वनस्पति केवल भारत में ही बनाया जाता है। शायद उन्हें पता ही नहीं कि दुनियाभर में स्वस्थ लोग वनस्पति जैसे स्निग्ध पदार्थों से ही खाना पकाना पसन्द करते हैं। यहाँ तक कि डेनमार्क, हॉलैण्ड और अमेरिका जैसे देशों में, जहाँ मक्खन बहुतायत से होता है, लोग मक्खन की अपेक्षा वनस्पतियों से बने स्निग्ध पदार्थ ज़्यादा बरतते हैं। इसका कारण? वे लोग जानते हैं कि वनस्पतियों से तैयार किये जानेवाले स्निग्ध पदार्थ मक्खन वग़ैरह के बराबर ही पुष्टिदायक, लाभकारी और किफ़ायती होते हैं।

विटामिन से भर-पूर पुष्टिदायक स्निकनाई

वनस्पति साफ़-सुथरे आधुनिक कारखानों में मूँगफली और तिल के तेलों को शोध कर वैज्ञानिक पद्धति से बनाया जाता है। इससे यह अनमेल पुष्टिदायक पदार्थ आपको विशुद्ध रूप में मिलता है। इतना ही नहीं, इसके हर आउंस में विटामिन 'ए' के ७०० अन्तर्राष्ट्रीय यूनिट रिसाये जाते हैं। विटामिन 'ए' त्वचा और आँख के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही ज़रूरी है।

बढ़िया से बढ़िया चीज़ें बरतनेवाले लोग रसोई में वनस्पति इस्तेमाल करते हैं। आप भी आज ही से वनस्पति में खाना पकाना शुरू कर दीजिए!

वनस्पति—*गृहिणी का सच्चा सहायक*

दि वनस्पति मैन्युफ़ैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के दौरान में हँसी-मजाक होता रहा। टाम पाल को छेड़ता रहा कि, उसने पादरी बनते ही शादी करायी है मगर आज उसे अफसोस हो रहा होगा कि, वह अब खुद शादी नहीं कर सकता।

खाने के बाद हैरी और बिल ने मेरी से गाने के लिए कहा। मेरी इन्कार करती रही कि, मैं बेसुरी हूँ। मगर जब टाम ने कहा कि, इस दुनिया में वही एक औरत है और वही संगीत-सम्राज्ञी है, तो मेरी गाने के लिए तैयारी हो गयी। सब मिल कर गाते रहे। गीत उदास थे और लय पुरदर्द। उदास गीतों के इस सिलसिले के बाद, टाम ने घबरा कर खुशी के गीतों की फरमाइश की। फिर उनका सिलसिला चला।

टाम ने बची-खुची शराब सबमें बराबर तकसीम कर दी और बोला—"हमारी व्यवस्था में त्योहारों और खुशियों का पूरा-पूरा लिहाज रखा जाता है।" फिर सबने शराब के खाली अद्धे, दीवारों से फोड़-फोड़ कर कहकहे लगाये; और मेरी खुशी से उठ कर, तालियाँ बजा-बजा कर, झूमती रही। आखिर मेरी थक कर गिर गयी और जरा-सी देर में सब एक बार फिर भयानक खामोशी में डूब गये।

टाम को अपने दिल पर बोझ-सा महसूस हो रहा था और उसका जी चाह रहा था कि, लेट कर खामोशी से आँसू बहाता रहे। लेकिन वह खोखली जिंदादिली का इजहार करके बोला—"भई, अब हमें नये मियाँ-बीवी के आराम का बन्दोबस्त करना चाहिए। ये दोनों हम सबको दिल-ही-दिल में गालियाँ दे रहे होंगे।"

जॉन और मेरी हँसने लगे। कमरे की एक दीवार के साथ, उनके लिए जगह खाली कर दी गयी। पाल और राबर्ट दूसरी तरफ आ कर लेट गये। टाम ने टार्च बुझा दी और कहने लगा—"भई, आप लोग अपने-अपने कान बंद करके सो जायें और दूल्हा-दुल्हन की सरगोशियाँ सुनने की कोशिश न करें।" यह कह कर टाम आदत के अनुसार हँसने लगा। फिर सब हँसने लगे; और यह हँसी धीरे-धीरे अँधेरे में डूब गयी।

× × ×

आज के खाने में एक-एक स्लाइस रोटी के अलावा थोड़ा-सा गोश्त था, जिसमें से उठती हुई बिसाँध किसी को नहीं महसूस हो रही थी। पाल की दुआ के बाद, राबर्ट के मशवरे पर सबने अपने-अपने स्लाइस का एक-एक टुकड़ा तोड़ कर, मेरी और जॉन के सामने रख दिया।

"नये शादी-शुदा जोड़े को अच्छी खुराक मिलनी चाहिए।" "राबर्ट ने कहा।

× × ×

आज पानी सबको एक-एक घूँट मिला। टाम की कमजोरी ज्यादा बढ़ चुकी थी। जॉन ने उसके विरोध के बावजूद उसके मुँह में पानी का एक घूँट डाल दिया।

पाल ने कहा—"टाम, अब क्या सोच रहे हो तुम?"

"मैं सोच रहा हूँ कि, आखिर तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम पश्चिम हो हम पूरब हैं
दोनों का मेल न मिलता है
उगता है जो सूरज पूरब में
वह पश्चिम में जा ढलता है
तुम पश्चिम हो....
पूरब की पवन मंगलकारी
मंगल संदेश सुनाती है
पश्चिम की हवा में है जहर भरा
जो घर-घर आग लगाती है
धरती धरती में है फरक बड़ा
माटी माटी में है अंतर
इस माटी में जन्मे साधू
उस धूल में जन्मे 'डिक्टेटर'
तुम पश्चिम हो....
तुम बाँध रहे इस दुनिया को
कानूनों की जंजीरों से
हम जोड़ रहे दिल से दिल को
बस प्यार की चंद लकीरों से
दुनिया की हुकूमत चाहो तुम
तोपों से बमों से गोली से
हमने तो दिलों पै है राज किया
अपनी गीता की बोली से
तुम पश्चिम हो....

तुम ढूंढ़ रहे हो नारी के
नयनों में यौवन का नर्तन
हम ढूढ़ रहे हैं नारी के
हिरदय में ममता का बचपन
तुम झूम रहे मदिरा पीके
रस लेते हो मांस की वोटी में
हम पेट भरें दो रोटी में
और खुश हैं एक लंगोटी में
तुम पश्चिम हो....
तुममें हममें इक फर्क बड़ा जो लाख
मिलाने से मिल न सके
पूरब का हिमालय पश्चिम की आंधी की
थपेड़ों से हिल न सके
पश्चिम में सूरज कभी उग न सके
पूरब में सूरज कभी ढल न सके
तुम जी न सको हम मर न सके
विधि का यह विधान बदल न सके
तुम भक्षक हो हम रक्षक हैं
यह संग कभी ना फलता है
तुम पश्चिम हो....

—भरत व्यास

राजकमल के "नवरंग" का एक लोकप्रिय गीत

आज कल लिबर्टी में पूरे जोश में चल रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोगों को किस तरह ज्यादा-से-ज्यादा अर्से तक जिंदा रखा जाय।"

"आखिर इसकी क्या जरूरत है? शराब खत्म हो चुकी है। खाना और पानी भी खत्म होने वाला है।"

"हैरी ठीक कहता है।" रावर्ट ने कहा।

"लेकिन मैं लीडर हो कर तुम लोगों को आँसू बहाने और एड़ियाँ रगड़ने की इजाजत तो नहीं दे सकता।

"मेरे खयाल में अब एड़ियाँ रगड़ने की ताकत भी हम लोगों में नहीं है।" पाल ने कहा।

यों ही वक्त गुजरता गया। गाहे-ब-गाहे वे बच्चों की-सी बेकार बातें करते। कभी किसी के जिस्म का कोई हिस्सा सुन हो जाता। कभी कोई उठ कर टहलने लगता; मगर फौरन ही थक कर गिर पड़ता और ऊँघने लगता। लेकिन फिर जल्दी ही आँख खुल जाती और वह सोचने लगता। जब सोचते-सोचते उनकी कनपटियों की नसें फड़कने लगतीं, तो उनके दिल डूबने लगते। फिर वे घबरा कर एक-दूसरे का मुँह ताकने लगते।

टाम ने थके हुए लहजे में कहा—"साथियो! तुम्हें इस दुनिया का पाँचवाँ दिन मुबारक हो। उसने टार्च जला दी। सब खामोशी से बैठे रहे। मेरी ने खाना तकसीम करने के लिए उठना चाहा, तो उसे यों महसूस हुआ, जैसे वह किसी डोलती हुई किश्ती में खड़ी हो। मेरी सिर पकड़ कर बैठ गयी। जॉन ने उठ कर एक-एक स्लाइस डबल रोटी और एक-एक घूँट पानी सब लोगों को दिया।

दुआ खत्म करके, सबने पानी में भिगो कर स्लाइस खाया। टाम ने एलान किया—"दोस्तो, तुम्हें यह जान कर खुशी होनी चाहिए कि, आज से हम खाने-पीने की मुसीबत से छूट गये। शायद मैं पहले भी कह चुका हूँ कि, हम खुदकुशी नहीं करेंगे।"

पाल ने डर कर सलीब (क्रास) का निशान बनाया और सोचने लगा—"पिछली दुर्घटना में, दो दिन तक तो सरगर्मी से तलाश जारी रही थी; फिर सब मायूस हो गये थे। औरतों ने खान पर आना छोड़ दिया था और खुदाई वालों की रफ्तार भी सुस्त हो गयी थी; क्योंकि दबी हुई लाशों को निकाल कर दफ्न ही तो करना था। स्प्रिंगहिल के घरों में बहते हुए आँसू ठहर गये थे। फिर रफ्ता-रफ्ता जैसे कुछ हुआ ही नहीं था। यतीम भी किसी न किसी तरह पलते रहे। अधेड़ और बूढ़ी विधवाएँ भी जिंदा रहीं। जवान विधवाओं को नये शौहर भी मिल गये।"

टाम सोच रहा था—"जोसेफीन अब तो रोते-रोते थक गयी होगी। उसने तो मेरी लाश मिलने पर उसे दफ्नाने के लिए, ताबूत और कब्र का इन्तजाम भी कर लिया होगा। काश, उसे मेरी लाश न मिले। मेरी सड़ी हुई लाश देख कर, वह किस कदर दुखी होगी। हाय, वह अब किस पर बिगड़ेगी, किससे रूठेगी, कौन उसे मनायेगा?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपूर्व आकर्षण के लिए...

हिमालय
बुके सिंगार
साधन!

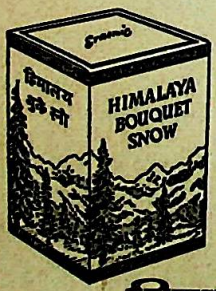

ठंडक पहुंचाने वाली, सुगंधित हिमालय बुके स्नो
आप की जिल्द को नर्म और चिकना बनाये रखती है।
मख़मल जैसा मुलायम हिमालय बुके टॉयलेट
पाउडर आप के रंग रूप की बहार में
एक अनोखा निखार पैदा करता है।

हिमालय बुके स्नो और टॉयलेट पाउडर

HBS. 15*50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, इरहिमक कंपनी लण्डन के लिए, भारत में बनाये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैरी भी उस दुनिया की कल्पनाओं में डूबा हुआ था—"जॉन अभी तक रोता होगा। रीटा शायद बहल गयी हो। अभी तो घर-खर्च के लिए रुपये होंगे। एलन क्या सोचती होगी? बस हर वक्त उदास और खोयी-खोयी रहती होगी। अभी वह जवान है। शायद कुछ अर्से बाद, एक बार फिर दुल्हन बन कर गिरजे चली जाये.....।"

राबर्ट को बार-बार डोरोथी का खयाल आ रहा था। "अजीब लापरवाह लड़की है! कहा करती थी— राबर्ट मुझे धोखा न देना। डोरोथी तरसों तक रोती रही होगी। उसके माँ-बाप मेरी मौत पर खुश होंगे। आज डोरोथी सिर्फ उदास होगी और कल .... कल.....।"

बिल को याद आया—"एक मरतबा खान में चंद आदमी दब गये थे। तलाश करनेवालों में मैं भी था। पहले दिन तो मैं तत्परता के साथ खुदाई करता रहा। मगर दूसरे दिन मेरी रफ्तार सुस्त हो गयी और मुझे मरनेवालों पर गुस्सा आने लगा था। कितनी मुश्किल होती है यह खुदाई....." और फिर वह बैंक में पड़ी हुई बचत के बारे में सोचने लगा—"मैंने अमीर बनने और अपना बैंड स्थापित करने की धुन में, जिंदगी की जरूरतों की तौहीन की। मैं किस कदर जलील आदमी हूँ। मेरे बैंक की रकम का क्या होगा? बैंड कौन स्थापित करेगा..... युरोप का दौरा कौन करेगा?

मेरी ने जॉन से कहा—"मेरे पाँव सुन्न हो गये, क्या मैं अब मर जाऊँगी?"

"नहीं! नहीं! अभी तो तुमने पानी पिया है। एक स्लाइस खाया है....अभी तो मैं जिंदा हूँ।"

"फर्ज करो, जो हम न मरे, तो क्या फिर भी तुम्हारी अम्मी मुझ से नफ़रत करेंगी?"

"अगर उनका दिल पत्थर का नहीं है, तो कभी नहीं!"

टाम ने टार्च रौशन की; मगर उसे किसी की सूरत साफ दिखाई न दी। उसने लोगों का हाल पूछा, किसी ने जवाब दिया, कोई सिर्फ "हूँ" करके रह गया। टाम सारी शारीरिक शक्ति जमा कर के उठा और उसने पानी की छागल लेकर हर एक के ओंठों को अपनी उँगली से तर किया। फिर अपनी जगह पर आकर, जैसा था, वैसा ही पड़ रहा।

सब खामोशी से पड़े, मौत का इंतजार कर रहे थे। सोच रहे थे, उँघ रहे थे, खाँस रहे थे, करवटें बदल रहे थे और बारी-बारी से उठ कर अपने और दूसरों के लब तर कर रहे थे और मरने की दुआएँ माँग रहे थे।

× × ×

कब्र के बासी फूलों की तरह वे सातो पड़े थे। उनके खयालात मर चुके थे। ख्वाब में जैसे खुद कहीं खो गये थे। हर एक जिंदगी की कुश्ती हार चुका था। हर जिस्म पर मानो मनों बोझ पड़ा था। वे कभी-कभी एक-दूसरे को मुखातिब करते; मगर अब उन्हें आवाज भी मुश्किल से सुनाई देती थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धप ! धप !! धप !!!

पाल के ओंठ काँपे। 'टाम ने मुश्किल से आँखें खोली। जॉन की लड़खड़ाती हुई आवाज आयी—"मेरी क्या...?"

धप ! धप !! धप !!!

टाम ने टार्च रौशन कर दी। हैरी चीखा—"क्या कर रहे हो....टार्च बुझा दो।"

"नहीं !" टाम ने कहा। "आज मैं मौत का चेहरा देखूँगा।"

"पागल !" पाल को गुस्सा आ रहा था।

धप ! धप !! धप !!!

"सुन रहे हो ?" टाम ने कहा।

"हाँ" सबने कहा ! "ऐसा मालूम होता है जैसे मौत यहाँ आने के लिए पत्थरों में से अपना रास्ता बना रही है।" टाम ने कहा।

टाम की नजरें, कोने में लगे हुए, हवा के पाइप की तरफ उठ गयीं। वह उठ कर उसके पास गया और पाइप से कान लगा दिये। फिर वह चीख पड़ा—

"साथियो ! यह मौत नहीं जिंदगी है, जो हमारी तलाश कर रही है।"

सातों इंसान एक-दूसरे पर गिर कर पाइप से कान लगाये हुए हैं। रावर्ट उसके पास मुँह ले जाकर चीख रहा है। टाम उसे हटा कर, उसकी चीखों का जवाब सुनने लगा।

एक क्षण,..... दूसरा क्षण,.....तीसरा क्षण— सबको यों लगा, गोया तीन दिन गुजर गये।

आखिर जिंदगी ने आवाज दी—"मैं अकेला हूँ। घण्टे भर में मदद लेकर पहुँच जाऊँगा।"

बिल ने कहा—"कोई बिचारा हमारी लाशों की तलाश में खुदाई कर रहा है।"

तकरीबन पौने दो घण्टे बाद, पाइप में खड़खड़ाहट हुई और एक हेड फोन और छोटा-सा स्पीकर निकल आया। टाम ने स्पीकर लेकर कहा।"हलो, हम यहाँ पर आठ हैं।"

फिर एक पतली-सी नाली पाइप में से होती हुई आयी। ऊपर से डाक्टर हिदायत दे रहा था। "यह सूप है। तुम सब बारी-बारी, एक-एक घूँट पियो।"

टाम ने स्पीकर एक तरफ रख दिया और बोला—"ये डाक्टर भी आधे पागल होते हैं।" और फिर उसने सबको पाँच-पाँच घूँट सूप पीने को कहा।

× × ×

तकरीबन बारह घण्टे के बाद, तीन सौ मजदूरों की लगातार खुदाई ने नवें दिन, इन सात इंसानों को, फिर उसी दुनिया में पहुँचा दिया। उनकी आँखों पर पट्टियाँ बाँध दी गयी थीं, ताकि सूरज की रोशनी उन्हें अंधा न कर दे।

बाहर एक डाक्टर, खान के डाइरेक्टर को एक लतीफा सुना रहा था—"मैंने जब टाम से पूछा कि, तुमने तो कहा था हम आठ हैं। आठवाँ कौन है, तो जालिम ने कहा—आठवें के बारे में जॉन और मेरी से पूछो। वे ही ठीक-ठीक बतायेंगे, उनकी शादी को छह रोज हो चुके हैं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचार-प्रवाह—लेखक : डा० हजारी-प्रसाद द्विवेदी; प्रकाशक : हिन्दी-ग्रंथ-रत्नाकर प्रा० लिमिटेड, बम्बई–४; मूल्य : पाँच रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा, समय-समय पर लिखे गये भाषणों, किसी पुस्तक की भूमिकाओं एवं रेडियो से प्रसारित भाषणों, का संकलन है। संकृत के महाकाव्यों की प्राण शक्ति के निरुपण से लेकर, आधुनिक साहित्य-समस्याओं के समाधान-विवेचन तक के सुदीर्घ प्रसार में, द्विवेदी जी की वलवती लेखनी ने अपनी अद्भुत क्षमता का परिचय दिया है।

द्विवेदी जी अपनी अभिव्यक्तियों में जितने मौलिक हैं, उनके प्रबंधों के विषय भी उतने ही निराले होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक द्विवेदी जी की इस अनंत उद्यान-विहारिणी प्रतिभा का परिपुष्ट प्रमाण है।

ऐसे मूल्यवान् प्रकाशन के लिए श्री नाथूराम प्रेमी, पाठकों की ओर से धन्यवाद के पात्र हैं; जो रुग्ण-शैय्या पर होते हुए भी, हिन्दी साहित्य के वैभव-समृद्धि के प्रति इतने सचेष्ट एवं जागरूक हैं।

'कल्पना' के सौवें अंक के मुखपृष्ठ पर अंकित हुसैन-निर्मित स्केच

कल्पना का सौवा अंक—प्रधान संपादक : आर्येंद्र शर्मा, प्रकाशन-स्थान : ५१६ सुलतान बाजार, हैदराबाद; मूल्य : एक रुपया।

दीर्घ जीवन हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं का स्वाभाविक गुण नहीं है। ऐसी अवस्था में "कल्पना"–जैसी पत्रिका का, जो केवल बौद्धिक अभिजात-वर्ग के मनस्तोष के लिए प्रकाशित होती है, सौवाँ अंक निकलना विशेष हर्ष और आश्वासन की बात है।

बेशक यह विशेषांक भी अन्य अंकों की तरह "कल्पना" की निश्चित प्रकृति के अनुसार सुरुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक है। संपादकीय टिप्पणी "घासलेटी विद्वत्ता" विशेष मननीय है। हमारे देश में विद्या के वट-वृक्ष की जड़ों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को, जो दीमकें चाट डाल रही हैं, उनकी स्पष्ट और सशक्त विवेचना उसमें की गयी है।

अब तक के अंकों में प्रकाशित समस्त पाठ्य-सामग्री की तालिका भी विशेषांक में दी गयी है। उसके अवलोकन से इस बात का हर्ष होता है कि, 'कल्पना' ने अपने उद्यान में प्राचीन के साथ ही, साहित्य के नवीनतम पौधों को भी स्नेह-पूर्वक सींचा है। यह निःसीम ममत्व ही 'कल्पना' के अस्तित्व को सार्थक बनाने के लिए पर्याप्त है।

बधाई देते हुए हम कहेंगे कि, 'कल्पना' के एक सौ अंक ही काफी नहीं, कई सौ अंक होने चाहिए।

चिंतन— लेखिका : श्रीमती दिनेश-नंदिनी डालमिया; पंचशील प्रकाशन, दिल्ली; मूल्य : तीन रुपये।

यह पुस्तक लेखिका के लगभग दो सौ गद्य-गीतों का संकलन है। गीतों के आलंबन हैं भगवान् कृष्ण, जो भारतीय कवि-हृदय का भावना-अर्घ्य सदियों से स्वीकार करते आये हैं। गद्य-गीत शैली पर लेखिका का सहज अधिकार है। अनेक गीत बड़े मर्मस्पर्शी बन पड़े हैं। यदि कहीं-कहीं दूसरे अमर कृष्ण-भक्त कवियों की भावच्छाया-सी है, तो भी वह इन गीतों की श्रीवृद्धि ही करती है। जब विषय भगवान् कृष्ण हों, तो रचना में मौलिकता की नहीं, रसमयता की अपेक्षा की जाती है। और उस दृष्टि से 'चिंतन' काफी सफल है।

स्वदेश — लेखक : रवींद्रनाथ ठाकुर; अनुवाद : के० पी० राय; प्रकाशन मंडल, वाराणसी–१; मूल्य : तीन रुपये।

स्वदेशाभिमान के दो रूप हैं: एक दिव्य, दूसरा दानवीय; इस तथ्य को रवींद्रनाथ ने भारतवासियों को हृदयंगम कराया। यह उनका भारतीय जनता पर एक महत्वपूर्ण और महान् उपकार है। प्रस्तुत संकलन में रवींद्र के भारत की राष्ट्रीयता, भारतीय संस्कृति, उसके नाना प्रश्नों से सम्बंधित बारह मननीय लेख हैं। ये निबंध परतंत्र भारत में लिखे गये थे; परंतु इतना विशाल परिप्रेक्ष्य रख कर लिखे गये थे कि, पंचवार्षिक योजनाओं से अनुप्राणित स्वतंत्र भारत में भी, उनकी मननीयता में कोई कमी नहीं हुई है। आर्ष-वचन कभी पुराना नहीं पड़ता। अनुवाद अच्छा हुआ है।

दोस्तों की शायरी — संकलन-कर्ता: 'कातिल' बनारसी; प्रकाशक : भारतीय प्रकाशन मंडल, वाराणसी-१; मूल्य ढाई रुपये।

गालिब, दाग, जिगर, मीर, इकबाल, दर्द, ज़ौक और अकबर के बहु प्रचलित शेरों के इस छोटे संकलन में विरह-मिलन, रूपसौंदर्य, प्रेम-प्रतीक्षा और कहीं-कहीं जीवन-दर्शन पर चुभती-गुदगुदाती उक्तियाँ, कठिन शब्दों के अर्थ साथ दिये जाने से, उर्दू-अनभिज्ञ पाठक भी इनका रसास्वाद कर सकते हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

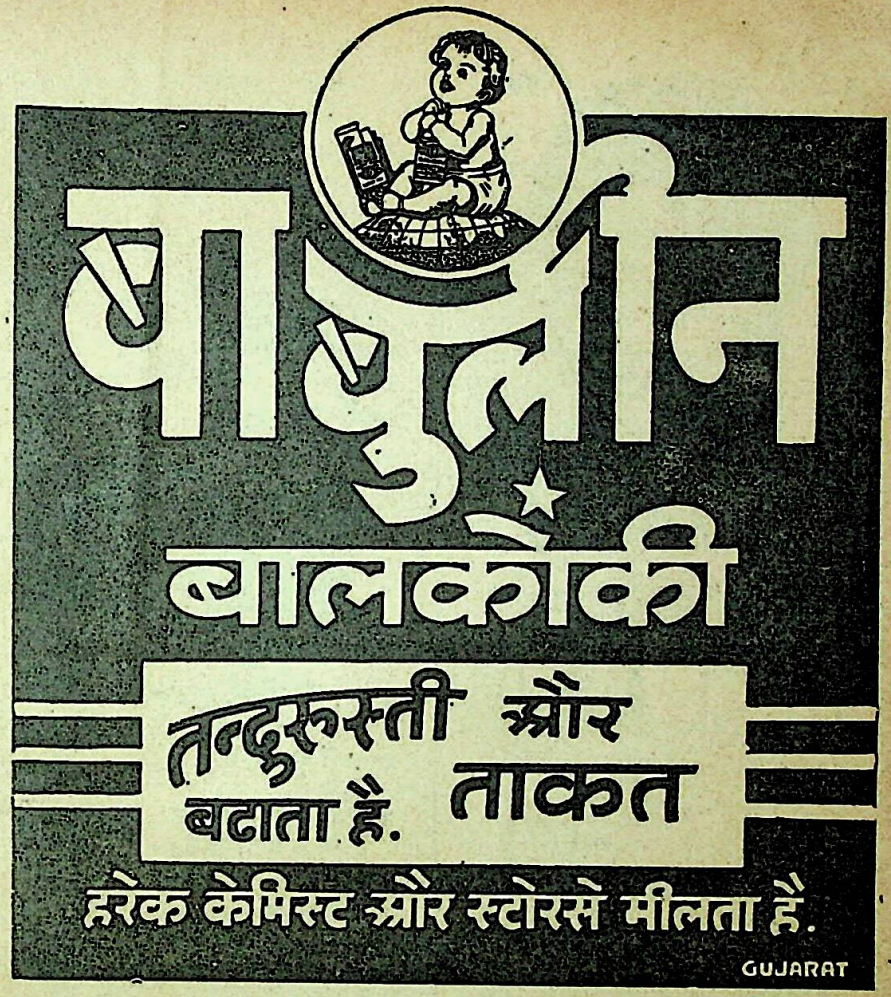

बी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : बम्बई–२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौंदर्य के लिये..

त्वचा सुकोमल रखता है

रेमी स्नो

ए.क्यू.आर.ए. ॲण्ड कं.
बम्बई २

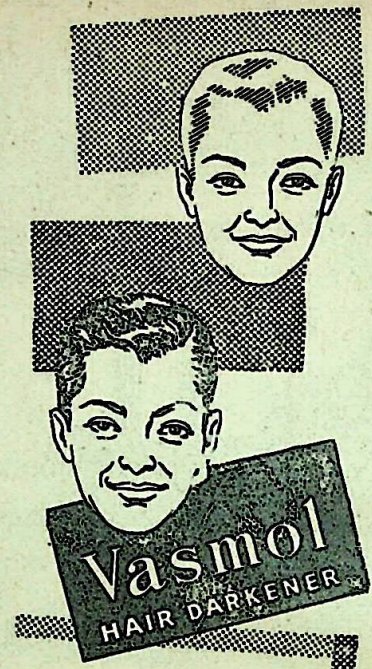

- भूरे बालों को प्राकृतिक चमकदार काला बनाता है
- बालों के बढ़ने में मदद करता है
- भीनी सुगंध वाला–केश सज्जा के लिए आदर्श

समी दुकानों और केमिस्टों से तेल या वेसलीन रूप में मुहर-बन्द बोतलों में प्राप्य

हाईजिनिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बाक्स ११९२, बम्बई–१
बम्बई, मध्य प्रदेश और राजस्थान के सोल एजेन्ट : अकबरअली इब्राहिमजी
३८–सी, कावसजी पटेल स्ट्रीट, बम्बइ–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

९० नये पैसे खर्च करें
और ९०) बचायें

देना बैंक का नवीन धन बचाने का बाक्स आपको १०० अठन्नियाँ बचाने में सहायता करेगा।

भर जाने पर बाक्स देना बैंक की शाखा पर ले जायं जहाँ आपका सेविंग बैंक एकाउन्ट है। बाक्स खाली कर लिया जायगा और रुपया आपके एकाउन्ट में जमा हो जायगा। आज से ही इस सरल आनन्दप्रद रीति से बचाना आरम्भ कर दें।

देना बैंक

बचत बढ़ाता है।

आपकी सेविंग्ज बैंक योजनाओं द्वारा

स्पेशल सेविंग्ज एकाउन्ट—ब्याज २॥ प्रतिशत

५ वर्षीय कैश सर्टीफिकेट—ब्याज ४। प्रतिशत

सेवा का २२ वां वर्ष

१९३८—मई—१९५९

आम बैंकिंग और फारेन एक्सचेंज व्यापार किया जाता है।

प्रवीणचन्द्र वी. गांधी

मैनेजिंग डायरेक्टर

देवकरण नानजी बैंकिंग कम्पनी लिमिटेड,

हैड आफिस : बम्बई १ : ८० शाखायें और २० सेफ डिपाजिट वाल्ट्स।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

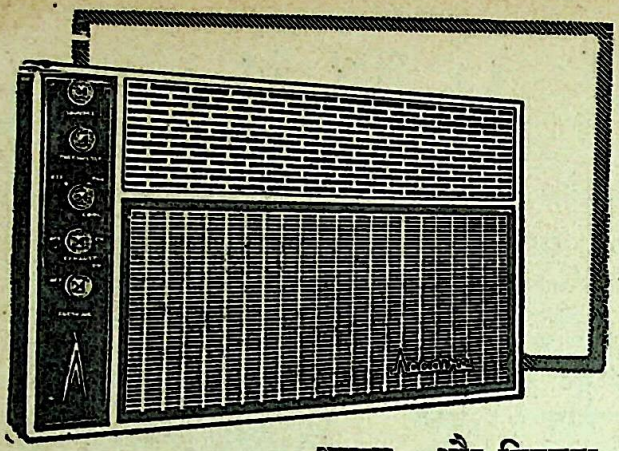

आराम...और निपुणता के लिए

ऍकायर— ए. डब्ल्यू. १०२ ए. सी.
डी. डब्ल्यू. १०२ डी. सी.

खिड़कीनुमा कमरे को ठंडा बनानेवाला

- कम कीमत
- शान्तिपूर्ण कार्य
- कष्टरहित सेवा
- एक साल की जिम्मेवारी

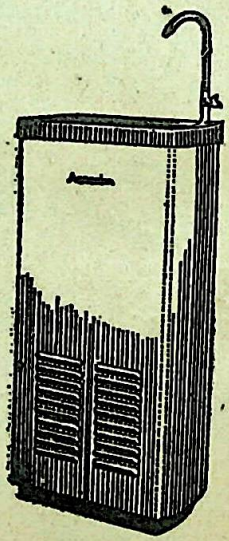

एकूलर–वाटर कूलर्स

- ठंडे स्वास्थ्यदायक जल की निरन्तर प्राप्ति
- जंगसे रक्षित 'केबिनट' • आसानी से लगाने योग्य

सुसंगठित
सेवा
आपके आदेशार्थ

एअर कन्डीशनिंग कोर्पोरेशन प्रा. लि.

कलकत्ता बंबई नयी दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

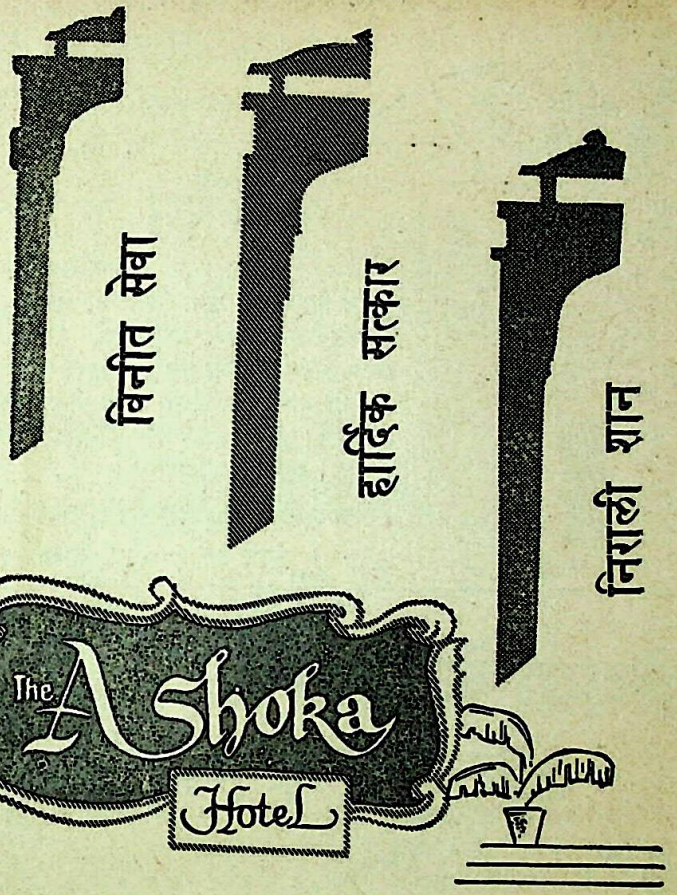

चाणक्यपुरी, नई दिल्ली–३.

तार : 'अशोक होटल' फोन : ३०१११ (४० लाईन)

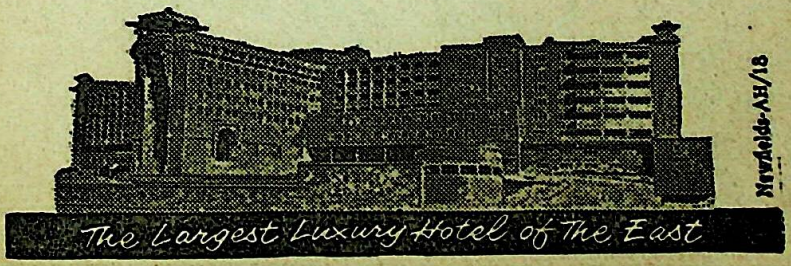

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनावश्यक बालों से छुटकारा पाने के लिए
सब से सरल और कष्टरहित तरीका है

नई, आश्चर्यजनक, बालों को साफ करने की दवा

एलफिन का प्रयोग

इस दवा को आप प्रयोग करके देखें। आप देखेंगे कि यह कितनी आसानी और आराम से आपके अनावश्यक बालों को साफ करती है। आपको अपनी त्वचा इतनी मुलायम और सुन्दर नज़र आएगी मानों वहाँ कभी बाल निकले ही नहीं थे। एलफिन - और - तो - और लगातार बालों की बढोतरी को भी रोकती है।

सोल एजेंट—दी असोसियेटेड मारकेटिंग कंपनी
पोस्ट बेग १००१६, बम्बई—१

स्त्रियों के स्वास्थ्य और सुख के लिए

लोध्रा

केसरी कुटीरम
प्राइवेट लि.
रोयापेट्टा, मद्रास-१४

SISTA'S

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मर्फी ०३५२ मॉडेल का रेडियो आप उसके उत्तम कार्य के कारण वर्षों तक एक खजाने की भाँति संभाल कर रखेंगे। सधे-हुए, छोटे से सुन्दर केबिनट में इतना शानदार रेडियो.....

विस्तृत शोध और निर्माण के वक्त की जानेवाली बार-बार की जांच और देखभाल ने इस रेडियो को हर तरीके से शानदार रेडियो बना दिया है !

* दोनों एसी और एसी/डीसी करंट से चल सकता है।
* तीनों बैंड्स पर सब 'वेव्ज़'
* आठ काम करने वाले पाँच वाल्व
* केवल २७५ रु.

स्थानीय टेक्स अतिरिक्त

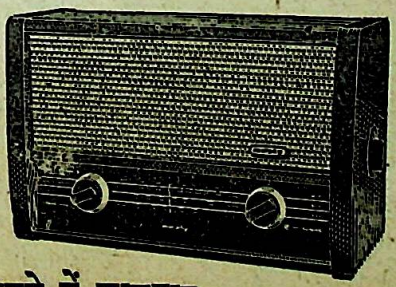

देखने–सुनने में शानदार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आश्चर्य! इतनी शक्ति; कहाँ से—"

युवावस्था में शक्ति का ह्रास स्वाभाविक है। इसकी पूर्ति भी उतनी ही शीघ्रता से होनी चाहिए; नहीं तो शारीरिक वृद्धि व स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव हानिकारक सिद्ध होगा।

पाक-माध्यम के रूप में वनस्पदा निरन्तर शक्ति प्रदान करती है। कारण—यह विटामिनों से पूर्ण व पौष्टिक है।

वनस्पदा

विटामिन-युक्त वनस्पति

बरार ऑयल इण्डस्ट्रीज़, आकोला

V-2/58

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अखिल भारतीय उद्घाटन—शुक्रवार २ अक्टूबर

फिल्मालय के एस. मुकर्जी का

कर्णप्रिय संगीतमय मनोरंजन

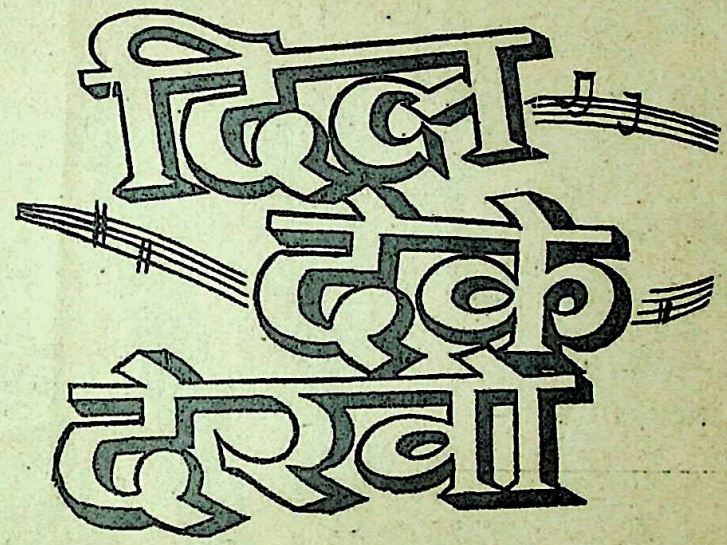

निर्देशन
नासिर हुसैन
जिसने "तुमसा नहीं देखा" बनाया

संगीत
ऊषा खन्ना
बहुचर्चित युवा संगीत निर्देशक

गीत
मजरूह

: कलाकार :

शम्मी कपूर
द्रोही से प्रेमी

आशा पारेख
वर्ष की चंचल बहुचर्चित खोज

नावेल्टी – ब्राडवे – रेक्स – कुमकुम

बांद्रा टाकीज (बांद्रा) कस्तूरबा (मलाड) अशोक (थाना)
प्रकाश (कल्यान) पेरामाउन्ट (कल्याण कैम्प)

एम. बी. बिलिमोरिया एन्ड़ सन्स रिलीज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

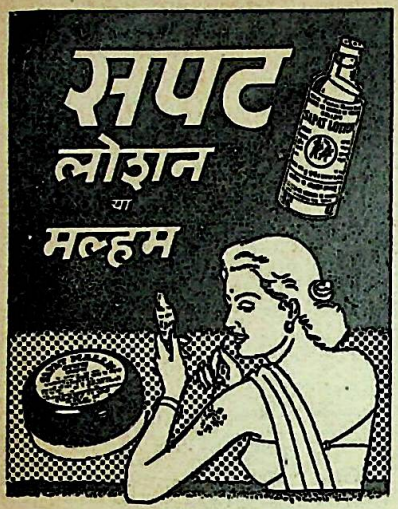

दाद, खाज,
खुजली पर

मेन्यु : सपट एण्ड कं. मुंबई–२

विश्वसनीय

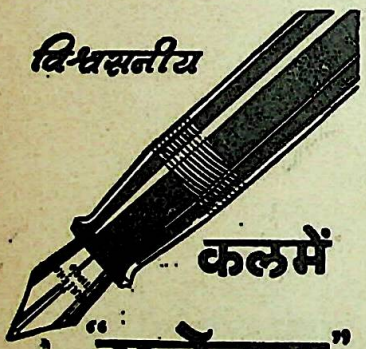

कलमें

"सुलेखा"

और

"ब्रीफमॅन"

PENMEN'S INDUSTRIAL SERVICES
BOMBAY-47.

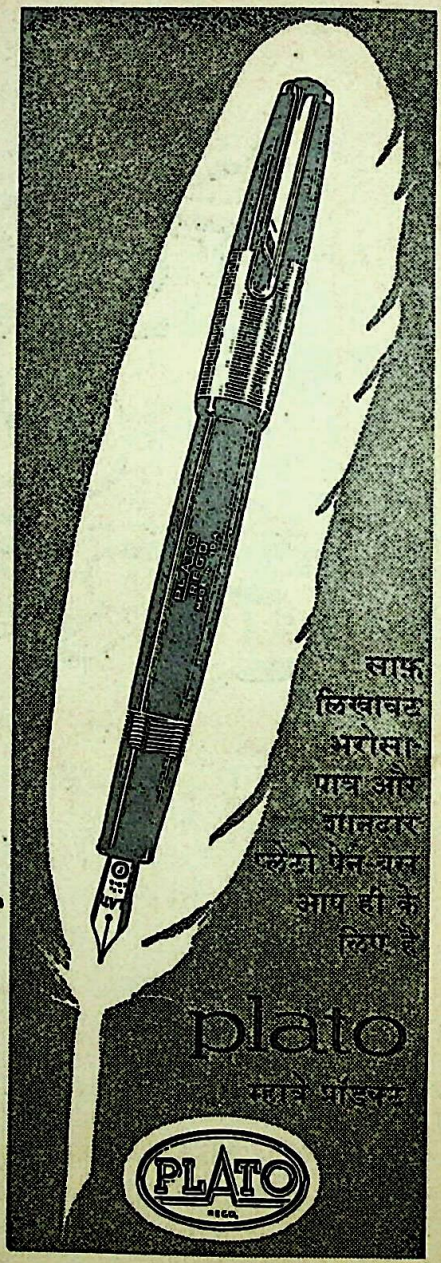

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों को विशेष प्रिय

गोला

मिठाइयाँ
और
टाफ़ियाँ

गोला मिठाइयाँ और टाफ़ियाँ जितनी स्वादिष्ट हैं, उतनी ही पौष्टिक भी। प्राकृतिक 'ए' 'बी,' 'बी₂', और 'सी' विटामिनों से परिपूर्ण होने के कारण वे बालकों के स्वाभाविक शरीर-विकास में बड़ी अमूल्य सहायता देती हैं

दी हिन्दुस्तान शूगर मिल्स लि.
५१, महात्मा गांधी रोड, फोर्ट, बम्बई १

A.S.P.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

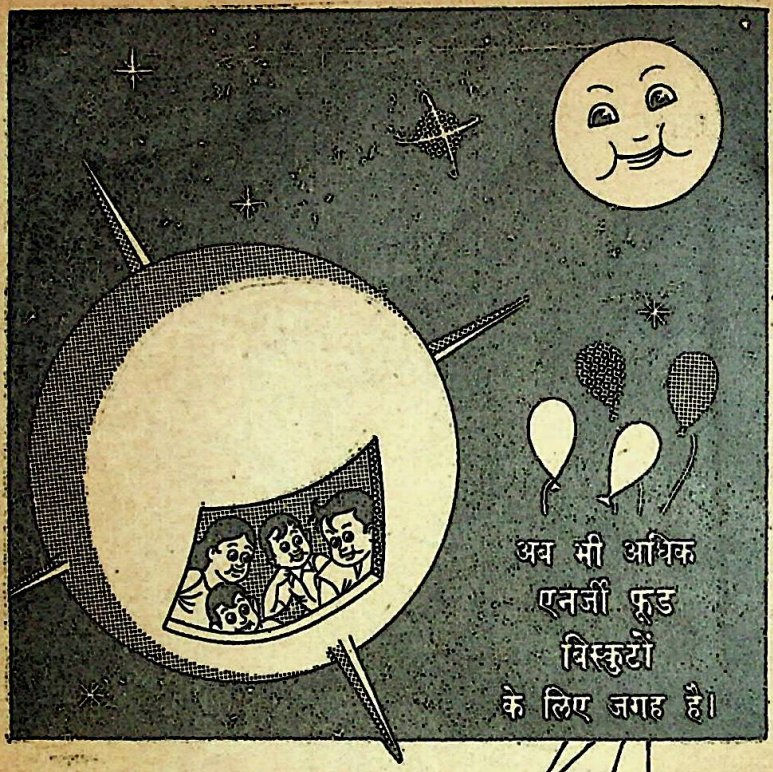

जे. बी. मंघाराम के

एनर्जी फूड
बिस्कुटों

देश की भावी पीढी को स्वस्थ रखती है

जे.बी. मंघाराम ऍण्ड कं.
ग्वालियर

© JB/41h

JBM

जे. बी. मंघाराम एन्ड कं., गनबो स्ट्रीट हार्नबी व्यू बिल्डिंग, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत के प्रथम...
अबतक सर्वोत्तम!

प्रभात के उत्पादन

हमें जनताको आश्वासन दिलाते हुए हर्ष होता है कि हम उनके सहयोगसे औद्योगिक स्वतंत्रता एवं आत्म-निर्भरता की मंजिल की ओर अपने राष्ट्रकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिये हम अपने लघु दायरेमें उत्कृष्ट प्रगति कर रहे हैं।

प्रभात (स्टोव ॲण्ड लैम्प) प्राडक्टस कम्पनी प्राइवेट लि.

नोबल चैम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई-१

K. S. K.

वार्षिक मूल्य १०) मूल्य १)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

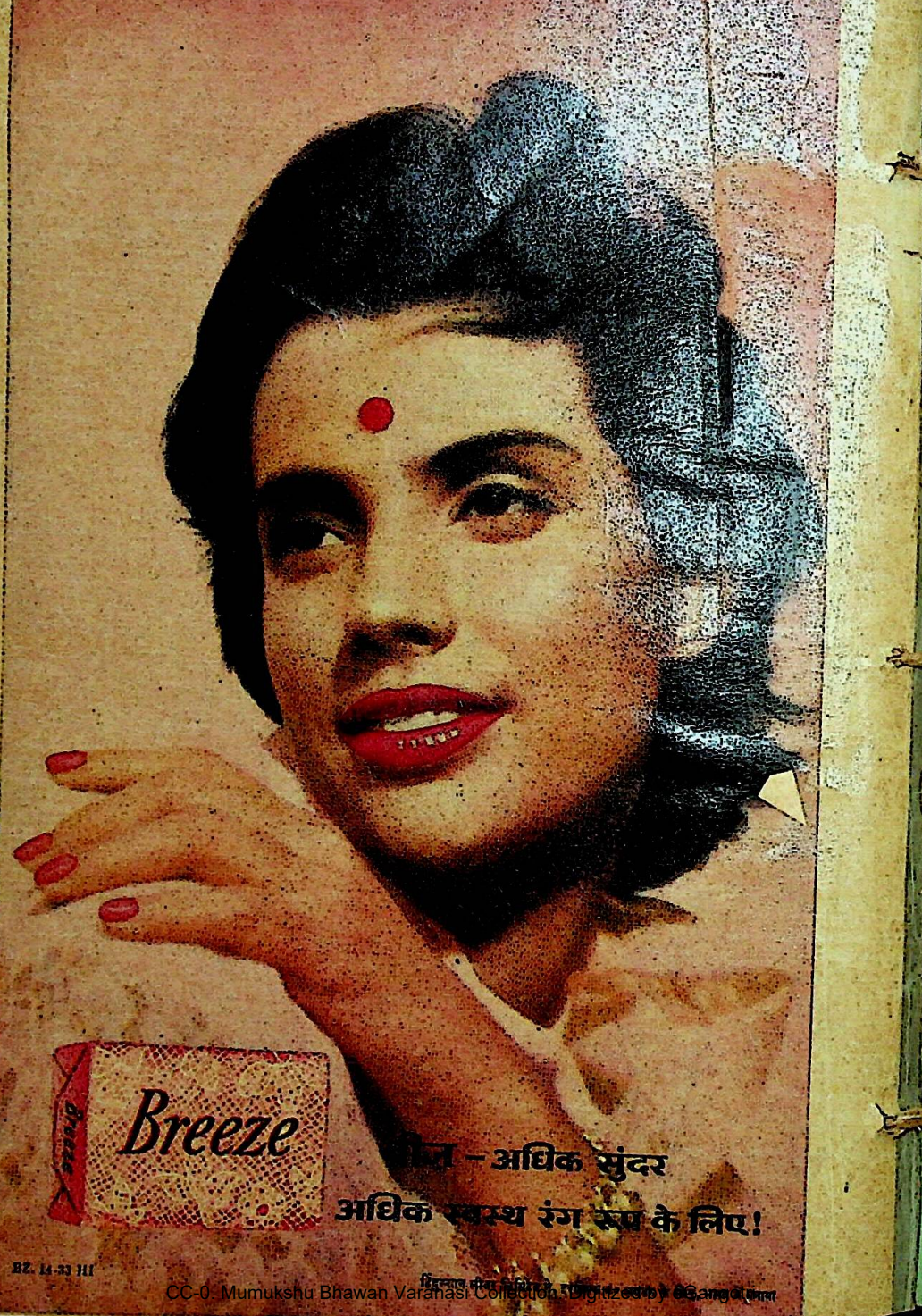

BZ. 14-33 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

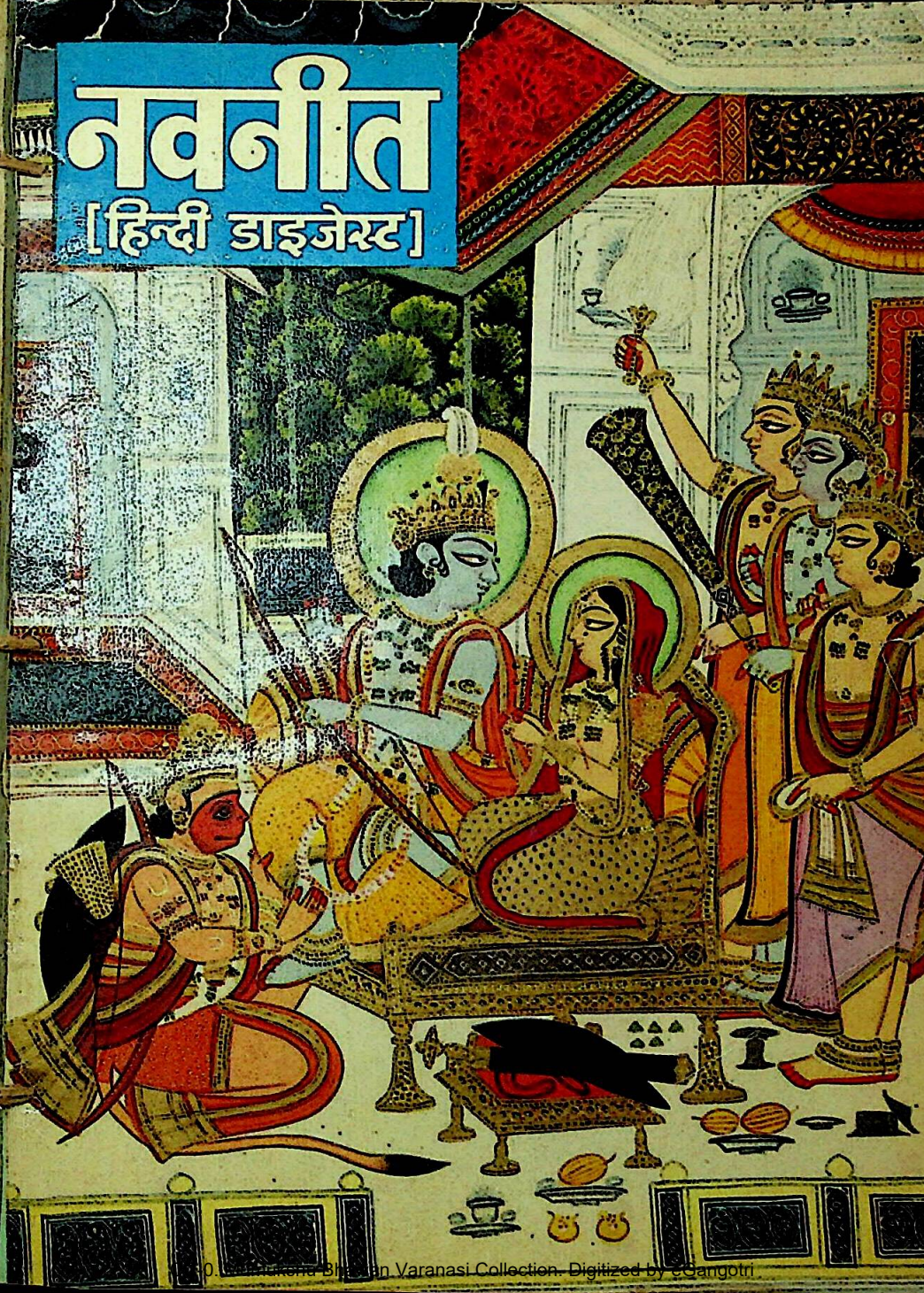

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पालन पोषण के लिए मां की ममता और ऑस्टरमिल्क

मां की छाती से लगा मुन्ना कैसा प्रसन्न है, कैसा संतुष्ट! इस लिए कि मां उस का पालन पोषण ऑस्टरमिल्क से करती हैं जो कि शुद्ध दूध का आहार है। इस में वे सब गुण हैं जो मां के दूध में होते हैं। मुन्ने के लिए ऑस्टरमिल्क बनाते समय, आप की ममता सदा हमारे ध्यान में रहती है।

मुफ्त! ऑस्टरमिल्क "पुस्तिका" (अंग्रेज़ी में)...बच्चों की देख भाल के बारे में सभी आधुनिक सूचनायें! डाक खर्च के लिए, ५० नये पैसे, इस पते पर भेजिये "ऑस्टरमिल्क, P. O. Box No. 202, बम्बई १।"

मां के दूध के समान

फ़ैरेक्स, मुन्ने का पहला ठोस आहार! जब मुन्ना चार पांच महीने का हो जाये तो उसे फ़ैरेक्स दीजिये जो अनाज का एक पौष्टिक मिश्रण है।

OS. 1-50 HI

आवरण-पृष्ठ 'नवजीवन प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोहक, मुलायम एवं घने
बालों के लिए

केशा

रजीस्टर्ड

बालों का असमय गिरना बन्द कर
उन्हें बढ़ाने का विशिष्ट गुण ही
नहीं रखता लेकिन अपनी
अनुपम सुगन्ध से आप को
हर समय प्रफुल्लित रखता है।

सोल एजेन्ट
एम. एम. खम्भातवाला
अहमदाबाद १

एजेन्ट
सी. नरोत्तम एन्ड कं.
बम्बई २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उचित क़ीमत पर

अच्छी चीज़

अच्छी चीज़ बनाने में खर्च कम से कम होता है। कोई प्रस्तुतकर्ता घटा उठाकर अच्छा माल नहीं बना सकता। वनस्पती जैसी चीज़ अच्छी होनी चाहिए क्योंकि इसीसे पकाये भोजन पर आपका स्वास्थ्य निर्भर है। आपको हमेशा इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि आपके घर में अच्छा वनस्पति ही आये। इससे कम कीमत में आप कुसुम जैसा अच्छी क्वालिटी का वनस्पति नहीं खरीद सकते।

अधिक कीमत देकर भी आप कुसुम जैसा अच्छा वनस्पति नहीं खरीद सकते

कुसुम

इसमें विटामिन ए की पूर्ति और विटामिन डी भी है

उचित कीमत पर बहुत अच्छा वनस्पति

खरीदिए नथ्रा

KD/D/L38

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नूतन वर्षाभिनंदन

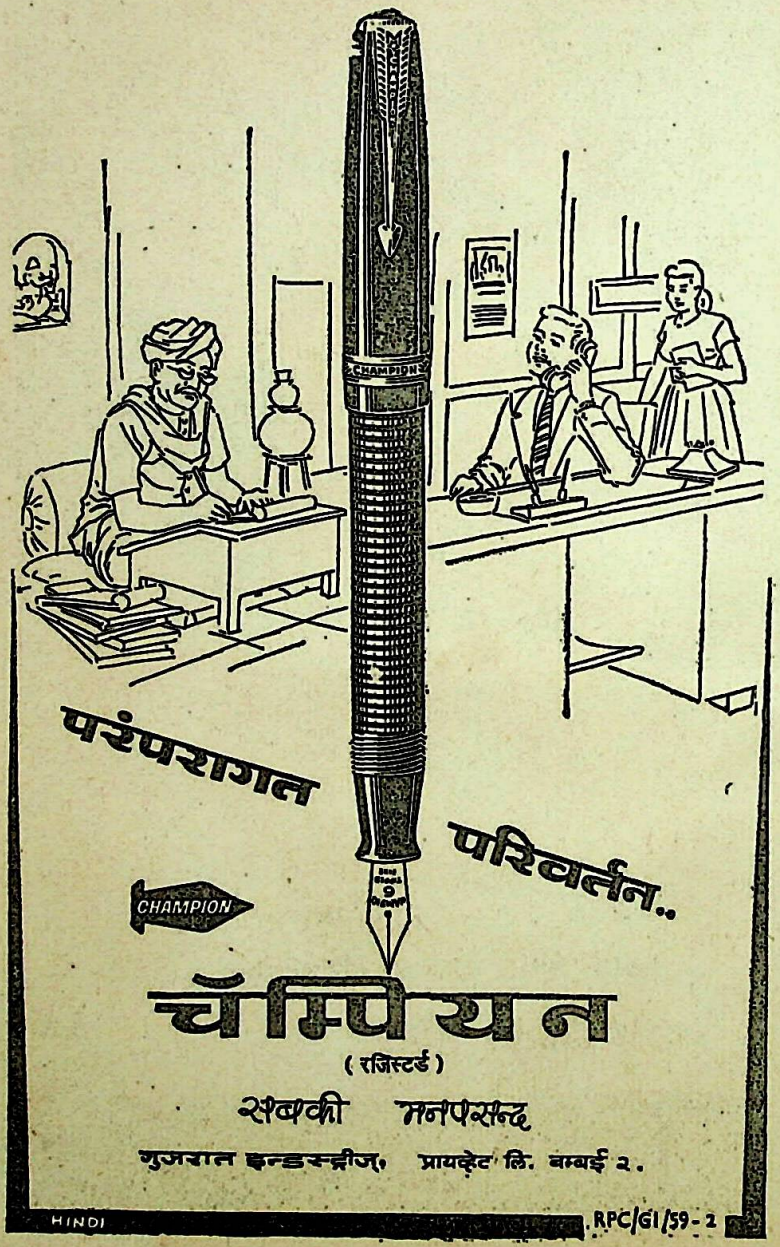

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

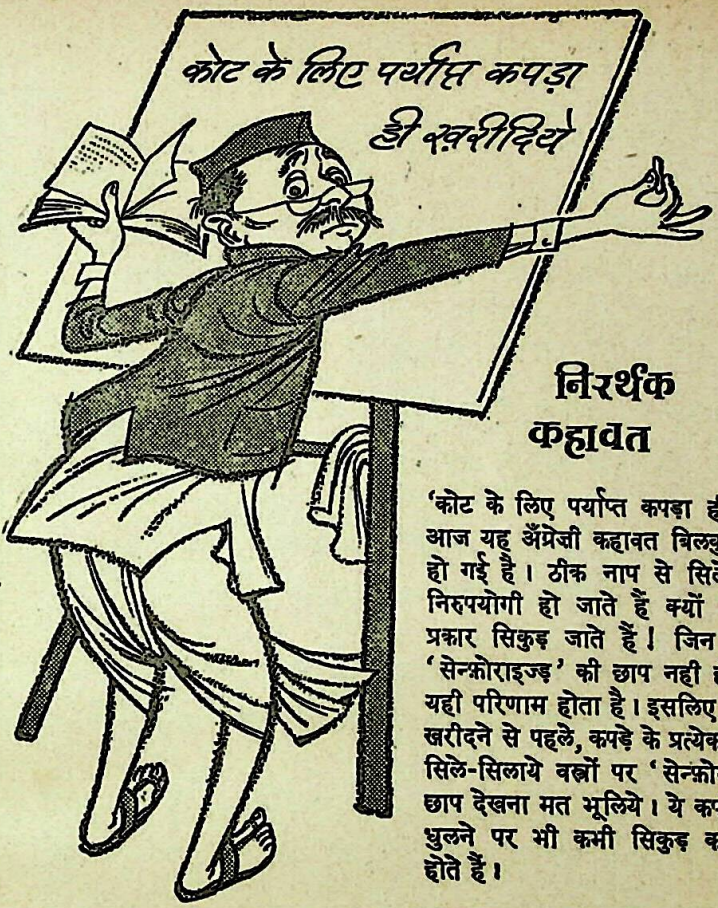

निरर्थक कहावत

'कोट के लिए पर्याप्त कपड़ा ही खरीदिये' आज यह अँग्रेजी कहावत बिलकुल निरर्थक हो गई है। ठीक नाप से सिले कपड़े भी निरुपयोगी हो जाते हैं क्यों कि वे इस प्रकार सिकुड़ जाते हैं! जिन कपड़ों पर 'सेन्फ़ोराइज्ड' की छाप नही होती उनका यही परिणाम होता है। इसलिए सूती कपड़ा खरीदने से पहले, कपड़े के प्रत्येक ग़ज़पर या सिले-सिलाये वस्त्रों पर 'सेन्फ़ोराइज्ड' की छाप देखना मत भूलिये। ये कपड़े कई बार धुलने पर भी कभी सिकुड़ कर तंग नही होते हैं।

लेबल पर 'SANFORIZED' यह छाप

देख लीजिए फिर आप के कपड़े कभी सिकुड़कर तंग नहीं होंगे!

रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क 'सेन्फ़ोराइज्ड' के मालिक क्लुएट, पीबॉडी एण्ड कं. इन्कॉपोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में स्थापित) द्वारा प्रचारित। 'सेन्फ़ोराइज्ड' ट्रेड मार्क केवल उन्हीं कपड़ों पर लगाने की अनुमति दी जाती है जो इस कंपनी द्वारा निर्धारित कपड़ा न सिकुड़ने की कड़ी शर्तों को पूरा करते हैं।

अधिक जानकारी के लिए: 'सेन्फ़ोराइज्ड' सर्विस, ९५, मरीन ड्राइव, बम्बई-२

SAN.58-3B HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब आप रेल से यात्रा करें...

क्या आपके सामान में आभूषण, जवाहरात, घड़ियाँ, रेशम, शाल, कैमरे, संगीत यंत्र या अन्य "वर्जित" सामान हैं?

यदि हैं तो आपको सलाह दी जाती है कि जब ऐसा सामान रेल से भेजें व एक बन्डल में ऐसे सामानों का मूल्य ३००) से अधिक हो तो आपको :—

१) सामान बुक कराते समय उनके मूल्य की घोषणा कर देनी चाहिये।

२) सामान्य भाड़े की दरों के अलावा ऐसे सामान के मूल्य का कुछ प्रतिशत और देना चाहिए।

नहीं तो खो जाने, टूट-फूट जाने, खराब हो जाने या अन्य नुकसान हो जाने की जवाबदारी रेलवे की नहीं होगी। रेलवे टाइमटेबल और गाइड में "वर्जित वस्तुओं" की सूची में ऊपर बताए सामान व कई अन्य सामान आपको मिलेंगे।

यदि आप निकटतम् स्टेशन मास्टर से पूछेंगे तो आपको विस्तृत जानकारी हो सकेगी।

– उत्तर रेलवे –

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

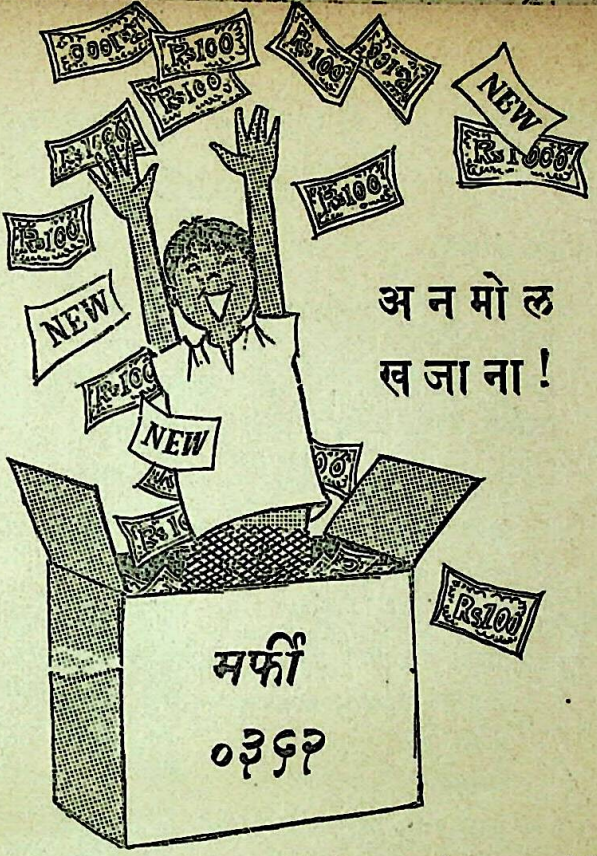

मर्फी ०३५२ मॉडेल का रेडियो आप उसके उत्तम कार्य के कारण वर्षों तक एक खजाने की भाँति संभाल कर रखेंगे। सबे-हुए, छोटे से सुन्दर केबिनट में इतना शानदार रेडियो.....

विस्तृत शोध और निर्माण के वक्त की जानेवाली बार-बार की जांच और देखभाल ने इस रेडियो को हर तरीके से शान-दार रेडियो बना दिया है!

* दोनों एसी और एसी/डीसी करंट से चल सकता है।
* तीनों बैंड्स पर सब 'वेव्ज़'
* आठ काम करने वाले पाँच वाल्व
* केवल २७५ रु.

स्थानीय टेक्स अतिरिक्त

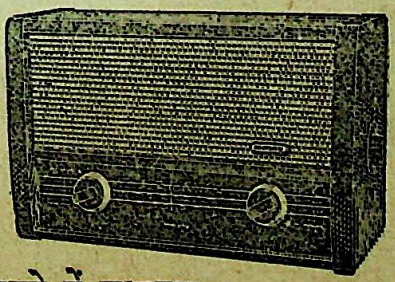

देखने–सुनने में शानदार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लि०

[१९४३ में रजिस्टर्ड]

प्रधान कार्यालय : २ इन्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूँजी.....८,००,००,०००

लागत पूँजी.....४,००,००,०००

चुकती पूँजी.....२,००,००,०००

सुरक्षित कोष.....१,४८,००,०००

शाखाएँ

भारत : सभी प्रमुख नगरों तथा औद्योगिक और व्यवसायिक प्रसिद्धि के शहरों में–

पाकिस्तान : चटगाँव तथा करांची

बर्मा : रंगून, मोलमिन, अक्याब, मांडले तथा बेसीन

मलाया : सिंगापुर, पिनांग, कौला–लामपुर तथा क्लांग

यू० के० : लन्दन

अन्य हांगकांग,
युरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया,
आदि सारे विश्व में एजेन्ट हैं।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्स्चेंज का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्व-व्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक-सम्बन्धी सेवा प्रदान करती हैं।

सुविधाजनक मूल्यों के रुपयों में ट्रेवेलर चेक दिए जाते हैं।

जी. डी. बिड़ला
चेयरमेन

एस. टी. सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाश के विषय
में कंजूसी
न करें...

फिलिप्स
अर्जेण्टा
लगाकर बुद्धिमत्ता
का परिचय
दीजिए

अल्प ज्ञान खतरनाक है
और कम प्रकाश में पढ़ना तो
और भी खतरनाक है।
फिलिप्स 'अर्जेण्टा' के
चकाचौंध रहित उज्ज्वल
प्रकाश में आराम से पढ़िए,
अपनी आँखों की रक्षा कीजिए
और ज्ञान बढ़ाइए।

अब १५० वाट
में भी प्राप्य

फिलिप्स
अर्जेण्टा
चकाचौंध-रहित
उज्ज्वल प्रकाश के लिए

PHILIPS

फिलिप्स इण्डिया
लिमिटेड

P 3627

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने पेन की गतिमानता को साथ देनेवाली

शांत वातावरण में तेजी से लिखने का परिपूर्ण आनंद मिलता है। हाँ, लेकिन स्याही उच्च-स्तर की हो। उच्च-स्तर के द्रव्य और शास्त्रशुद्ध कृति के मिलन के कारण हर बूंद से अधिक शब्द लिखे जाते हैं। इसलिए कैमल इंक ही पसंद की जाती है।

कॅमल इंक

(कॅम्लीसॉल '१००' युक्त)

दीपावलि

शुभचिंतन कॅम्लीन प्रायव्हेट लिमिटेड, मुंबई-१६.

CML-58-7AMAR

EVEREST

साण्डू

च्यवन-प्राशावलेह

(अष्टवर्गयुक्त)

थण्डकालमे लेने के लिये श्रुत्कृष्ट टॉनिक. साथमे "चतुर्मुख" लेनेसे जलद गुण आता है.

दत्तात्रेय कृष्ण साण्डू ब्रदर्स चेम्बूर प्रायव्हेट लि.

चेम्बूर-बम्बई-७८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

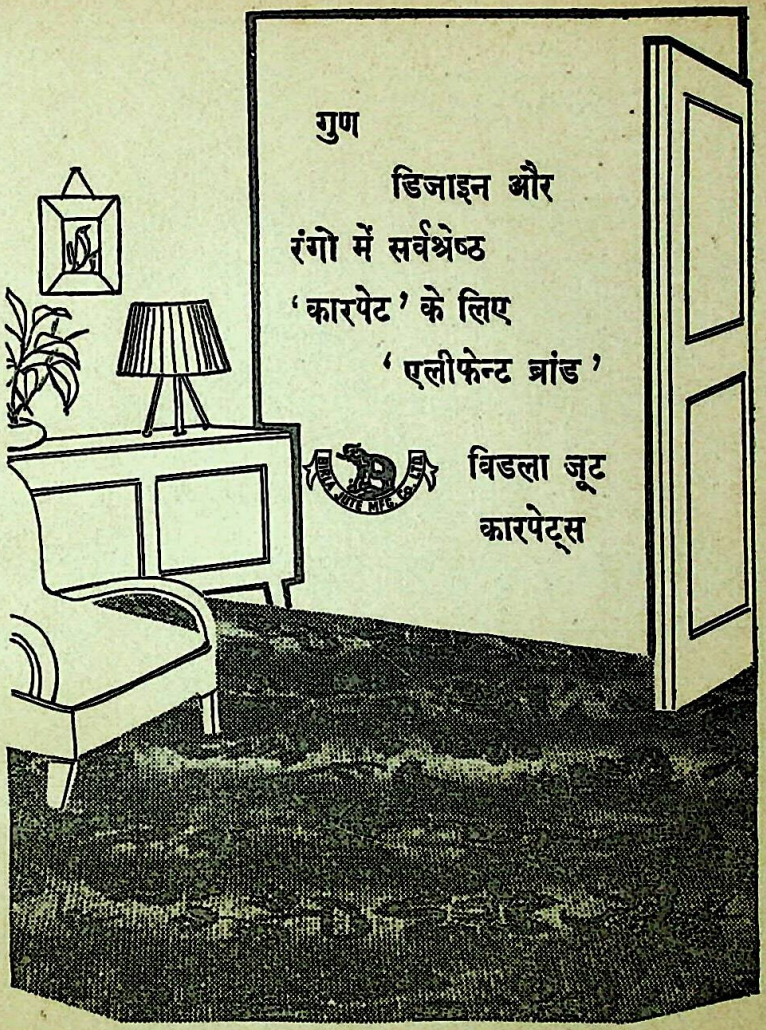

निर्माता

बिडला जूट मेन्यूफेक्चरिंग कंपनी लि०

८ इण्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कोनारक" सिमेंट

सबल व उत्कृष्ट होने के कारण प्रसिद्ध है
और देश की बड़ी-बड़ी योजनाओं में बरती जाती है।

पूछताछ के लिए कृपया लिखिए–

उड़िशा सिमेंट लिमिटेड राजगंगपुर, उड़िशा

प्रबन्ध अभिकर्ताः–

डालमिया एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड

दि बैंक आफ जयपुर लि.,

राजस्थान सरकार के ट्रेजरार्स

चेयरमैन : श्री जी. डी. सोमानी, एम. पी.

अधिकृत पूंजी रु. २,००,००,०००
जारी व विभाजित पूंजी रु. १,००,००,०००
चुकता पूंजी रु. ५०,००,०००
रिजर्व तथा अन्य निधियां रु. २५,००,०००

सम्पूर्ण बैंकिंग सेवाएँ–विदेशी विनिमय सहित

एस. एल. कोठारी, जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युवावस्था में शक्ति का ह्रास स्वाभाविक है। इसकी पूर्ति भी उतनी ही शीघ्रता से होनी चाहिए; नहीं तो शारीरिक वृद्धि व स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव हानिकारक सिद्ध होगा।

पाक-माध्यम के रूप में वनस्पदा निरन्तर शक्ति प्रदान करती है। कारण—यह विटामिनों से पूर्ण व पौष्टिक है।

वनसदा

विटामिन-युक्त वनस्पति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह पुस्तक मंगवाइ ये

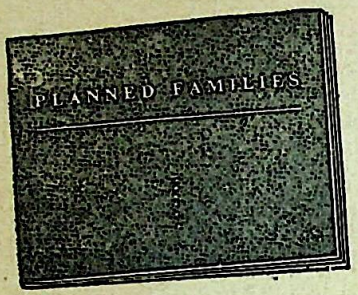

आधुनिक परिवार-नियोजन के ज्ञान की कमी के कारण पति पत्नि को कितनी ही चिन्ताओं और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस पुस्तक में उन सब प्रश्नों के बेझिझक उत्तर दिये गए हैं जिन्हें हम हल नहीं कर पाते। 'प्लान्ड फेमीलीज' नामक यह पुस्तक बड़े स्पष्ट तरीके से बिना किसी संकोच के लिखी गयी है। विवाहित जीवन की साधारण से साधारण रात-दिन आ खड़ी होनेवाली हर समस्या का समाधान इसमें मौजूद है। हर विवाहित दम्पति को अपने पास इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। आप अपनी प्रति शीघ्र मंगवा लें, और—बिल्कुल मुफ्त ही।

आज ही इस कूपन को भरकर भेज दीजिए।

L.D. SEYMOUR & CO. (INDIA) PRIVATE LTD.,
Dept—: 8
Thoburn House, Apollo Bunder, Bombay-1.
Agents for
"DUREX" and "DURAPAC" contraceptives.
Please send me under PLAIN COVER a free copy of "Planned Families".
I am an adult.
NAME .....
ADDRESS .....
.....
.....

आपकी खाँसी जल्द ही मिट जायगी

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स

टिकियाँ लीजिए

पेप्स की गोलियाँ चूसिए—आप देखेंगी कि इनकी आरोग्यकारी भाप बहुत ख़ूबी से दर्द को हल्का करती है, गले की तकलीफ़ को साफ़ करती है और ब्राँकाइटिस, खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती है।

इनमें कोई नुकसानदेह दवाएँ नहीं होतीं ये बच्चों को बेखटके दी जा सकती है ब्रांकाइटिस, गले का दर्द, नज़ले, जकड़न, सर्दी और खाँसी में शीघ्र आराम पहुँचाती हैं सभी औषधि-विक्रेताओं के यहाँ प्राप्य

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

FPY 55 HIN

बम्बई के सोल एजेन्ट :

[illegible] कं. लि., पो. बा. ९३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी संसार में सर्वोत्तम कोश

वृहत् हिन्दी कोश – द्वितीय संस्करण। १३६००० शब्द। सर्वाधिक शब्द, अर्थ और मुहावरे। सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज, आकर्षक और मजबूत जिल्द। मूल्य २५·००।

ज्ञान शब्द कोश – परिवर्धित संस्करण। बृहत् हिन्दी कोश का लघु रूप। कागज छपाई, जिल्द आदि बड़े कोश की ही तरह। मूल्य १५·००।

पारिभाषिक शब्द कोश – राजकीय कार्यों में प्रयुक्त ५ हजार अंग्रेजी शब्दों की परिभाषा तथा हिन्दी अर्थ। सुविधा के लिए हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी अर्थ दे दिये गये हैं। मजबूत जिल्द। कागज, छपाई उत्तम। विद्वानों द्वारा प्रशंसित। मूल्य ४.००।

हिन्दी साहित्य कोश – हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के ८५ प्रमुख विद्वानों एवं डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा आदि पांच सम्पादकों द्वारा अध्ययन और अध्यापन सम्बन्धी पूरी सामग्री प्रस्तुत। इस ग्रंथ पर भारत सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस ग्रन्थ के द्वारा हिन्दी में प्रयुक्त अनेकानेक प्राचीन और नवीन साहित्यिक, पारिभाषिक शब्दों का प्रामाणिक अर्थ वादों और प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक और शास्त्रीय परिचय, साहित्यिक भाषा और बोलियों का भाषा वैज्ञानिक विवेचन तथा शिष्ट और लोक साहित्य के विभिन्न अंगों की उपयोगी जानकारी प्राप्त होगी। छपाई, कागज उत्तम। जिल्द मजबूत और आकर्षक। मूल्य २०.००।

अपने समीप के प्रमुख विक्रेता से इन्हें खरीद कर संग्रह कर लें। न मिलने पर इस पते से मंगा लें:–

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, कबीरचौरा, वाराणसी–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

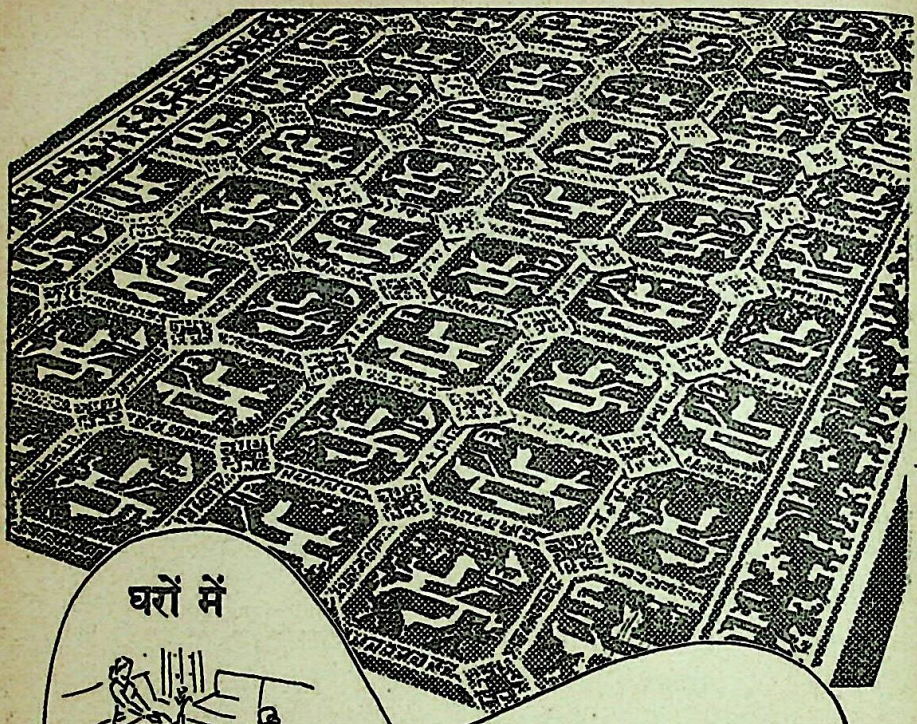

घरों में

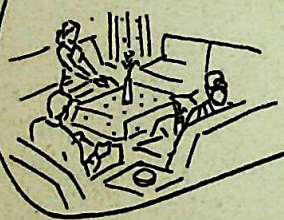

फर्श पर लिनोलियम बिछाइये।
इसके गुण और सुविधाएं :

- विभिन्न रंगों के अनेक डिजायन
- लचकीलेपन के कारण आवाज-रोधक
- कम खर्चीला और टिकाऊ
- स्वच्छ और सफाई में सुगम

लिनोलियम

आधुनिक फर्श का बिछावन

बिछाने की सेवा
विशेषरूप से प्राप्य

इण्डिया लिनोलियम्स लि० ८, इण्डिया एक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता-१

स्टाकिस्ट और वितरक सर्वत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

STUSA

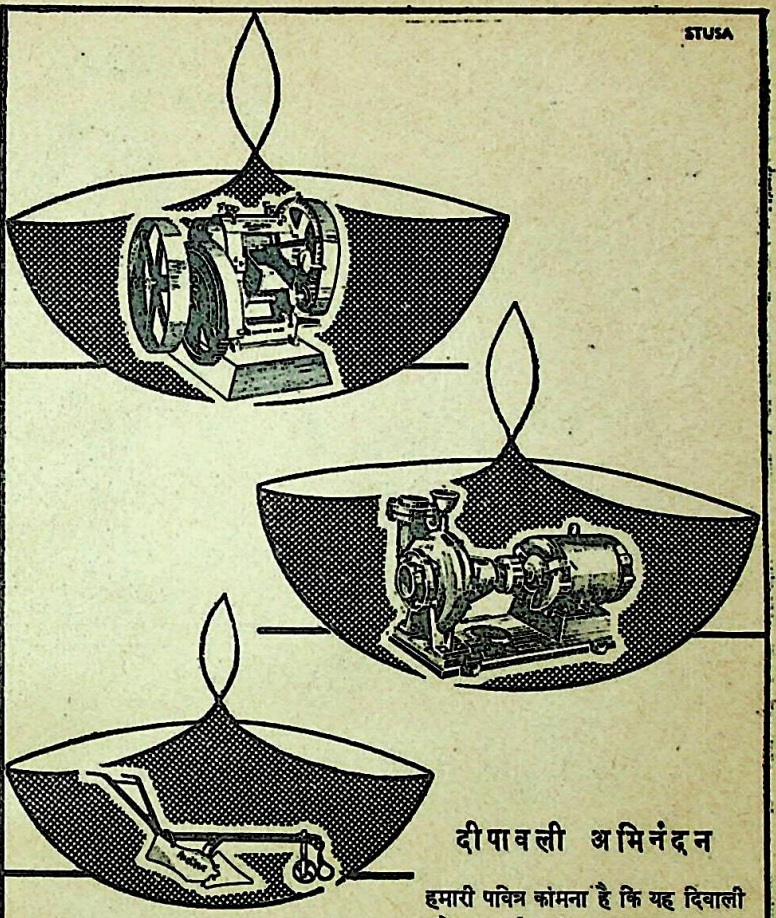

दीपावली अभिनंदन

हमारी पवित्र कामना है कि यह दिवाली
और नव वर्ष हमारे ग्राहकों व शुभेच्छुओं
को असीम समृद्धि और सुख प्रदान करें।

किर्लोस्कर

हल – क्रशर – पम्प

किर्लोस्कर ब्रदर्स लि.
किर्लोस्करवाडी (द. सातारा)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सचमुच

गर्व करने

योग्य

सायकिल

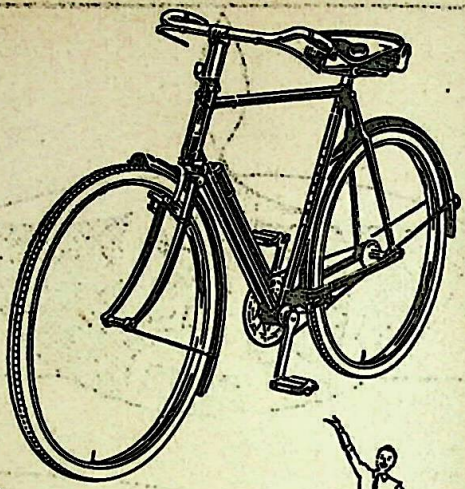

रैले

SRC-51 HIN

रसोइघर के लिये सुरक्षित एवं संथ जलन

तारकर "निर्भय" सुरक्षित स्टोव

Tarkar "NIRBHAYA" WICK-STOVE PATENTED INDIA

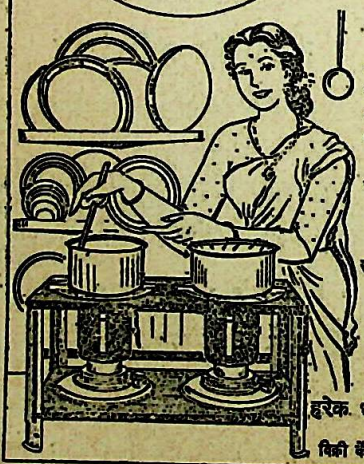

विशेषताएँ

- पितल की मजबूत बनावट
- पिन, पंप एवं स्पिरीट रहित
- आवाज रहित प्रखर ज्वाला
- ज्वाला कम अधिक करनेकी सुविधा
- सुरक्षितता की दृष्टिसे सर्वोत्तम "निर्भय"

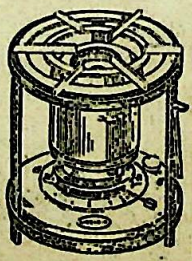

स्टव्ह व्यापारियों के पास उपलब्ध है विशेष जानकारी के लिए लिखीये

मे. बी. ए. तारकर

५०, कँसारा चाल, बम्बई २

हरेक धातुके सर्वोत्कृष्ट बरतन और कुकर्स के उत्पादक

बिक्री केंद्रः मुंबादेवी • ठाकुरद्वार • लालबाग और पुना २, (मंडईके पास)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनमानी आराम के लिये

डनलपिलो

शोषक । तकिये । गद्दियाँ

DPC-103 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संसार में सर्वोच्च जीवन-स्तर....

...की ओर सोवियत सप्त-वर्षीय योजना ले जाती है। यह लक्ष्य कैसे प्राप्त किया जा रहा है...सोवियत जनता देश के औद्योगिक और कृषि उत्पादन बढ़ाने में क्या महत्वपूर्ण योगदान कर रही है... सोवियत जनता कैसे अपने परिश्रम के फल का आनंद उठाती है...इन सब बातों के लिए पढ़िए सोवियत संघ अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में प्रकाशित सचित्र पत्रिका। इस मासिक पत्रिका में अनेकों रंगीन चित्र और सोवियत जीवन के विभिन्न अंगों से सम्बंधित सचित्र लेख और समाचार होते है।

चंदे की दर

वार्षिक ६.१५ रुपये

२ साल का, १० रुपये

देर न करें! आज ही ग्राहक बनिए!

उपहार

वार्षिक ग्राहकों के लिए अनूठा उपहार!

एक सुन्दर ६-पृष्ठों वाला रंग-बिरंगा सचित्र कलेंडर स्पूतनिक प्रत्येक ऐसे ग्राहक को दिया जाएगा जो १५ नवंबर १९५९ तक अपना चंदा भेज देगा। इस केलेंडर के मुखपृष्ठ पर स्पूतनिक का चित्र होगा। अन्य पृष्ठों पर केंद्रीय एशियाई गणतंत्रों की राजधानियों के रंग-बिरंगे चित्र होंगे।

२ वर्ष के ग्राहकों के लिए विशेष दर:
१३.५० रुपये की जगह
१० रुपये दीजिए

प्राप्त है

१. पी. पी. एच. बुक स्टाल, १९० बी, खेतवाडी मेन रोड, बम्बई–४
२. जेक्को सब्सक्रिप्शन एजेंसी, ३, दिन्शा वाच्छा रोड, बम्बई–१
३. पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस, (प्रा०) लि., एम. एम. रोड, न्यू देहली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत से पूर्व या पश्चिम

सर्वोत्तम हवाई सफर कीजिए...

FLY TWA
TRANS WORLD AIRLINES

TWA.G-174

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनावश्यक बालों से छुटकारा पाने के लिए
सब से सरल और कष्टरहित तरीका है

नई, आश्चर्यजनक, बालों को साफ
करने की दवा

एलफिन का प्रयोग

इस दवा को आप प्रयोग करके देखें। आप देखेंगे कि यह कितनी आसानी और आराम से आपके अनावश्यक बालों को साफ करती है। आपको अपनी त्वचा इतनी मुलायम और सुन्दर नज़र आऐगी मानों वहाँ कभी बाल निकले ही नहीं थे। एलफिन - और - तो - और लगातार बालों की बढोतरी को भी रोकती है।

सोल एजेंट– दी असोसियेटेड मारकेटिंग कंपनी
पोस्ट बेग १००१६, बम्बई–१

योग विद्या का अद्वितीय ग्रंथ

"उमेश योग दर्शन"

(प्रथम खंड)–चार भाषाओं में

गुजराती * हिन्दी * मराठी * अंग्रेजी लेखक : योगीराज श्री उमेशचंद्रजी
संस्थापक व संचालक : श्री रामतीर्थ योगाश्रम बम्बई–१४

इस ग्रंथमें रोगी तथा निरोगी स्त्री- पुरुषोंकी तन्दुरुस्ती अच्छी रखनेके लिए ६ प्रकार के मलशोधन कर्म, आसन, मानसिक इलाज, जलोपचार, सूर्य किरण चिकित्सा, आहार चिकित्सा आदि अनेक शक्ति वर्धक तथा रोग निवारक, घर में हो सकें ऐसे सुलभ, साध्य इलाज बताये गये हैं। ४०० से अधिक पृष्ठ तथा १०८ से अधिक चित्र हैं। ग्लेज आर्ट पेपर पर योग के आसनों के चित्र, मलशोधन कर्म के चित्र तथा स्वामीजी के रंगीन चित्र हैं। ३५ वर्षों का निजी अनुभव तथा २५ वर्षोंके दौरानमें श्री रामतीर्थ योगाश्रमसे लाभप्राप्त भाई-बहनोंके अनुभवोंके प्रमाण पत्र भी योगीराज ने इस ग्रंथमें प्रस्तुत किये हैं। संक्षेप में, स्त्रियों, पुरुषों, बालकों, रोगियों तथा निरोगियों सबको अपूर्व मार्ग दर्शन करानेवाली अजोड़ पुस्तक है।

प्रत्येक भाषा की पुस्तक की प्रति का मूल्य रु. १५)
डाक खर्च रु. २) अलग। मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर से भेजिये।

वी. पी. नहीं भेजी जाती। श्री रामतीर्थ योगाश्रम, दादर, बम्बई-१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाह, कितनी सुन्दर हो!

सतेज शुभ्र—डेट धुले वस्त्रों में कितनी सुन्दर लगती हो

डेट—भारतवर्ष का अद्भुत डिटर्जेण्ट, हरकारी धुलाई का माध्यम ज़ी साबुन की मातहत करता है। वह साबु से भी ज्यादा तेज काम देता है, चाहे क्षारयुक्त या शुद्ध पानी हो, वह चिकनाहट तुरन्त दूर कर देता है, भरपूर झागभरा फ़ेन दिलाता है, और गंदगी को तनिक भी नहीं रखता।
डेट की धुलाई से आपके शुभ्र वस्त्रों को अद्भुत शुभ्रता प्राप्त होती है, आपके रंगीन वस्त्र मनोरम चमक से निखर उठते हैं। खासियत यह है कि आपके सबसे बढ़िया प्यारे और सबसे नाजुक वस्त्रों को डेट एक बड़ा उपकारक मित्रमात्र है।

डेट चिकनाहट को तुरन्त भगा देता है

यह घरबार की हर चीज को शुभ्रता और स्वच्छता दिलाता है: उजले मान्डे-वर्तन, क्रॉकरी, कटलरी दीवारें और फ़र्श।
डेट का इस्तेमाल कीजिए आपके घरबार की हर धुलाई के लिए। सुस्तियाँ मंगाओ, परेशानियाँ भूल जाओ, गर्व मानो कि हमारी धुलाई डेट से होती है

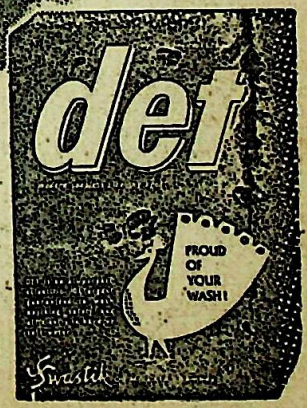

Shilpi 668

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

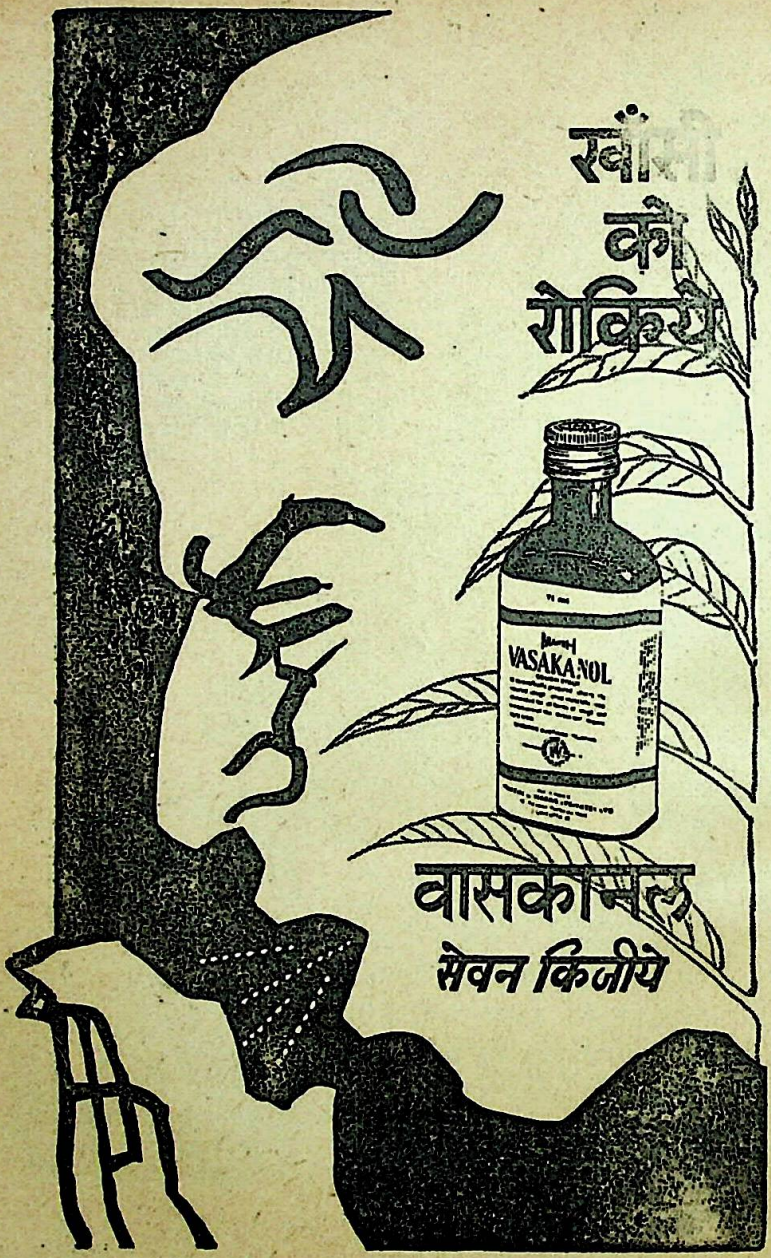

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमूल दुग्ध पदार्थ हर एक दृष्टिकोन से अच्छे हैं...
अब ढोरों की रखवाल को ही ले लीजिये...

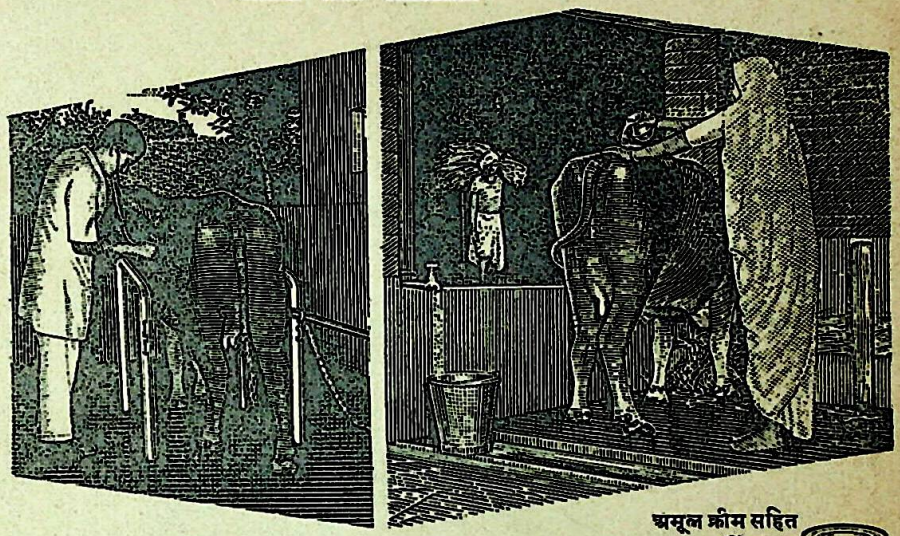

मानी हुई बात है कि जितना गुड़ डालेंगे उतना मीठा होगा—उसी प्रकार दूध का शुद्ध और ताज़ा होना ही उसके उच्च कोटि के होने की निशानी नहीं है—बढ़िया किस्म की अधिक मलाईवाला दूध पाने के लिए ज़रूरी है कि ढोरों को हरी घास चराई जाये और बिनौले खिलाये जायें। इसके लिए खेडा सहकारी संघ ने ऐसा प्रबंध कर रखा है जिसके द्वारा किसान सदस्य ये चारा सस्ते दामों सालभर खरीद सकें। केवल इतना ही नहीं—पशु उपचार के लिये एक चलता फिरता औषधालय भी है...इसके द्वारा ढोरों की देख भाल और इलाज मुफ्त होता है और साथ ही साथ ढोरों की नसल को बढ़िया बनाने के लिये जो कृत्रिम प्रबंध चाहिए वह भी है। यही कारण है कि अमूल दुग्ध पदार्थ वर्षभर केवल शुद्ध, ताज़े और उच्च कोटि के दूध से बन पाते हैं—और सदा ताज़े, स्वास्थ्यदायक और अति पौष्टिक होते हैं।

अमूल क्रीम सहित कंडेन्स्ड दूध
आपकी रुचि के अनुसार मीठा-चाय कॉफी आदि के लिए आदर्श

अमूल मक्खन
विदेशी दुग्धशाला वैज्ञानिकों की दृष्टि में यह संसार के सर्वोत्तम मक्खन के समतुल्य है।

अमूल पाउडर क्रीम सहित दूध
शुद्ध, स्वास्थ्यदायक दूध ताज़ा रखने के लिये नाइट्रोजन द्वारा पैक किया गया।

अमूल घी
केंद्रीय सरकार के खाद्य और कृषि विभाग के मंत्रालय द्वारा सर्वोत्तम कोटि का घी होने पर सुवर्णपदक प्राप्त।

अमूल — सर्वश्रेष्ठ शुद्धता का चिन्ह

खेडा जिल्हा सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड, आणंद (पश्चिम रेलवे)

PSKMP-24D/59

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

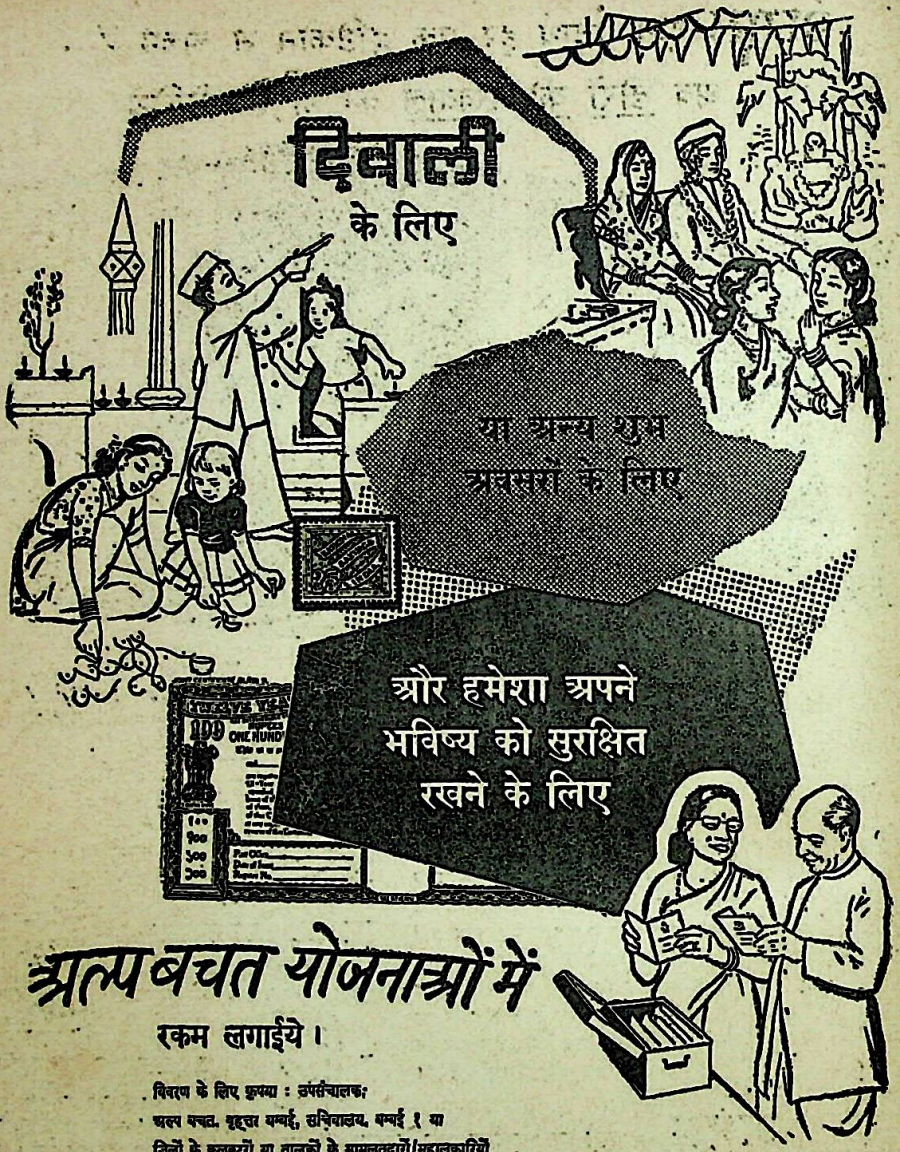

अल्प बचत योजनाओं में

रकम लगाईये।

विवरण के लिए कृपया : उपसंचालक,
अल्प बचत, बृहत्तर मुम्बई, सचिवालय, मुम्बई १ या
जिलों के कलक्टरों या तालुकों के मामलतदारों/महालकारियों
से सम्पर्क साधिए।

FAIRDEAL DIRECPUB

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

SISTA'S-SG-74-HIN

थोड़ा-सा

*टिनोपाल

सफ़ेद कपड़ों को सबसे

अधिक सफ़ेद — बनाता है

* 'टिनोपाल' जे. आर. गायगी, एस. ए., बाल, स्विट्जरलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है

निर्माता: सुहृद गायगी प्राइवेट लिमिटेड, वडी वाडी, बडौदा — एकमात्र वितरक: सुहृद गायगी ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड, पी. आ. बॉक्स ९६५, बम्बई १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

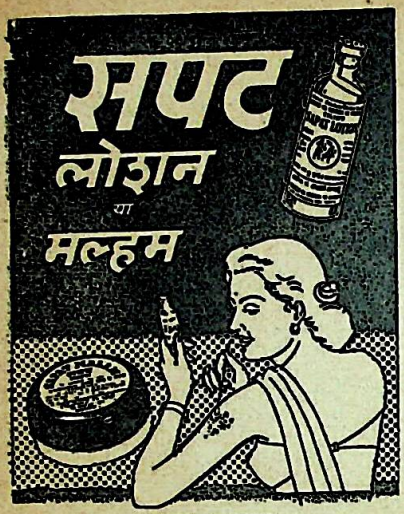

दाद, खाज,
खुजली पर

मेन्यु : सपट एण्ड कं. मुंबई–२

विश्वसनीय

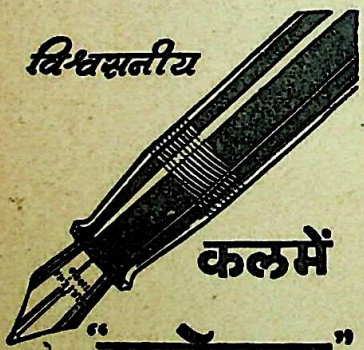

कलमें

"सुलेखा"

और

"ब्रीफमॅन"

PENMEN'S INDUSTRIAL SERVICES

BOMBAY-47.

सौंदर्य के लिये..

त्वचा सुकोमल रखता है

रेमी स्नो

ए.क्वी.आर.ए. ॲण्ड कं.

बम्बई २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

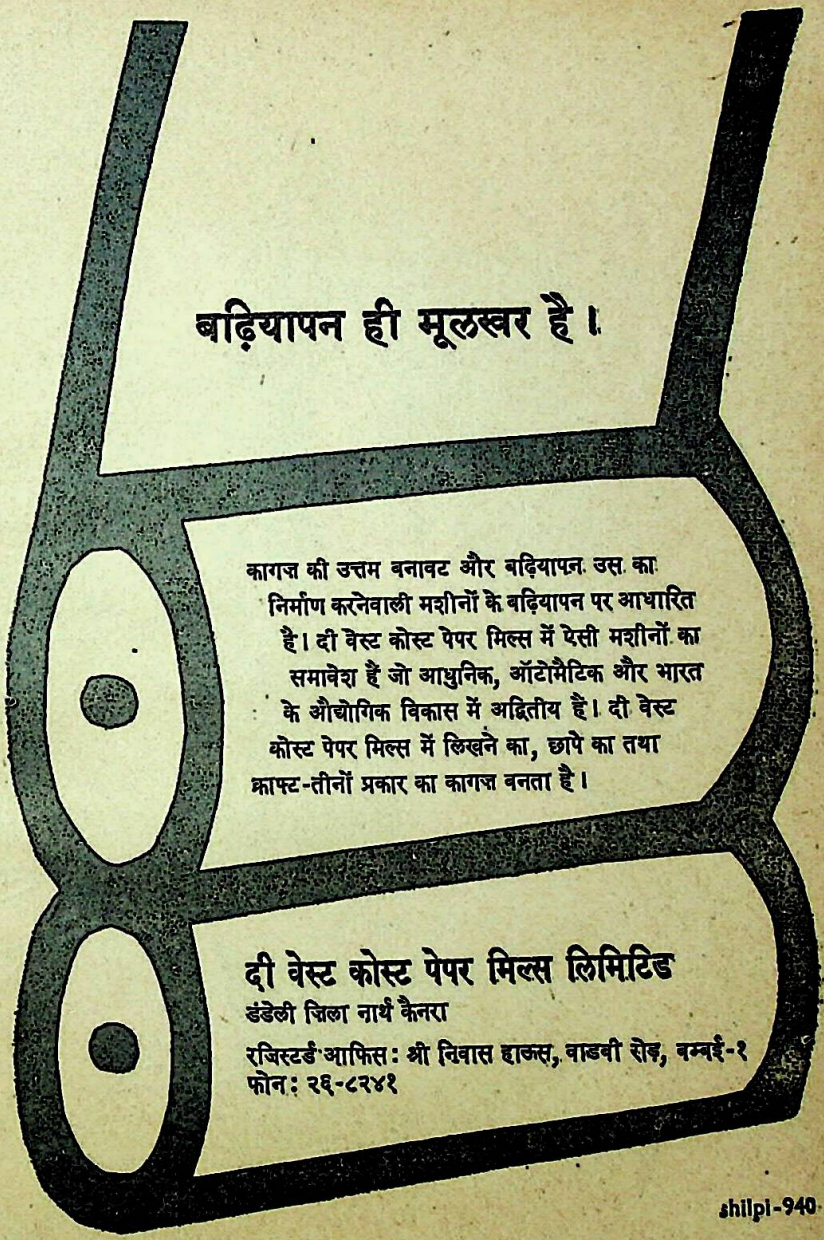

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेशम है तो बस यही !
और फैशन में भी बेजोड़ !!

रेशमी वस्त्र की प्राचीनतम् भारतीय परम्परा को मानव निर्मित आधुनिक एसिटेट सूत ने नया रूप दे दिया है। सरसिल्क के रेशमी कपड़े सुंदरतम् हैं, बनावट में अद्वितीय, रंगों में आकर्षक और सिलाई के बाद खूब फबते हैं। यह उपयोगी, समकालीन, फैशनेबुल होते हुए भी व्यवहारिक है।

विवेकी स्त्रियों के लिये
टफेटा, साटिन, क्रेप
फैशनेबुल पुरुषों के लिये
उत्तम सूटिंग,
शार्संकिन, शर्टिंग
एसिटेट यार्न, एसिटिक
एसिड, एसिटोन

Sirsilk
QUALITY FABRICS

सरसिल्क लिमिटेड, सिरपुर-कागजनगर
आन्ध्र प्रदेश
कलकत्ता कार्यालय : ८, इंडिया एक्सचेंज प्लेस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिवाली और नव-वर्ष

हमारे ग्राहकों के लिए—
प्रसन्नता
उत्कर्ष और स्वास्थ्य की
दृष्टि से
अधिक सुखमय हो,
यही हमारी
कामना है।

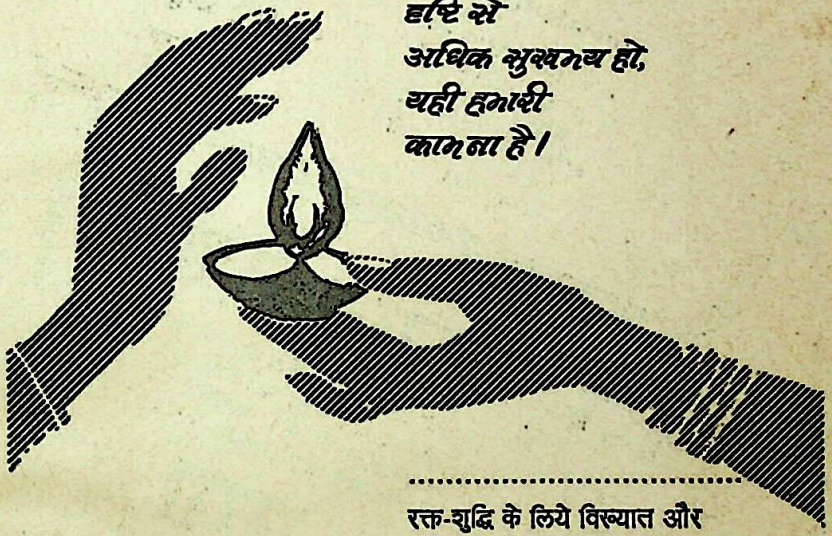

रक्त-शुद्धि के लिये विख्यात और
उत्कृष्ट औषधि — रक्तदोषांतक

खाँसी और गले के अन्य विकारों
के लिये सर्वोत्तम — कास्फ़ो
कफ़शामक मधुर टिकियाँ

APHALI

आयुर्वेदाश्रम फ़ार्मसी
लिमिटेड, अहमदनगर

AYD. 94 A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मौके का लाभ उठाइये

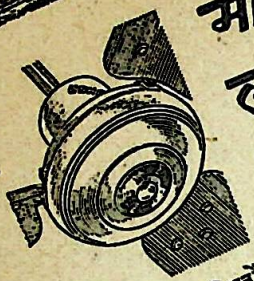

आसान किस्तों में अतिरिक्त मूल्य दिए बगैर खरीदिए

- ३१ दिसम्बर १९५९ तक इस सुवर्ण सुयोग से लाभ उठाइये।
- जितनी जल्दी आप खरीदेंगे किस्त की दर उतनी ही कम होगी।

उषा पंखा

मुफ्त कार्य-प्रदर्शन

अपने निकटस्थ उषा विक्रेता को अपने घर बुला कर आप इसका कार्य-प्रदर्शन और विशेषताएं देख सकते हैं। इसके लिए आप किसी प्रकार से आभारी नहीं होना पड़ेगा।

उषा सिलाई मशीन

जय इन्जीनियरिङ्ग वर्क्स लिमिटेड
कलकत्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

सम्पादक
रतनलाल जोशी
शिल्प
गोपालकृष्ण भोडे

जलगाँव

१९५९

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

अंक-सूची

१	प्रार्थना	'ऋग्वेद' से	३५
२	ज्योति-जाह्नवी : लक्ष्मी	एस० के० दीक्षितार	३६
३	प्रभा-पुत्र आओ.....	रवींद्रनाथ ठाकुर	३९
४	चिदानन्द (कविता)	सुमित्रानन्दन पन्त	४०
५	अब हम अपने को प्रकट करें	सैल्वेडोर कॉसिमोडो	४१
६	बोधिसत्व बंडारनायक	पं० शिव शर्मा	४३
७	प्रेरणा-पुष्प	सालोमन बंडारनायक	४५
८	जीवन (कविता)	दिनकर	४९
९	प्रकाश-पर्व की परम्परा	डा० एस० के० कल्याणसुन्दरम्	५०
१०	अच्युत (बंगला-कविता)	प्रेमेंद्र मित्र	५३
११	बालि-वध (तमिल-नाटक)	राजगोपालाचारी	५६
१२	भूल (कविता)	बालकृष्ण राव	५८
१३	मैंने लिखना कैसे सीखा	बर्ट्रेंड रसेल	६४
१४	लक्ष्मी का प्रिय आवास	गंगाशंकर मिश्र	६५
१५	भरत-वाक्यम्	कालिदास	६८
१६	औरों को हंसते देखो मनु.....	रायकृष्ण दास	७०
१७	गति-मंत्र (कविता)	भवानीप्रसाद मिश्र	७४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८	कश्मीर का ऋणी सारा एशिया है	'परिव्राजक'	७५
१९	परम्परा	वल्लतोल	७६
२०	महिमा	कार्ल सैंडबर्ग	७८
२१	तृप्ति की थाह	के० पी० एस० मेनन	८१
२२	जीवन-शिल्पी प्रेमचन्द	डा. लक्ष्मण शास्त्री	८५
२३	राष्ट्र-लक्ष्मी की प्रतिमा.....	श्रीगोपाल नेवटिया	९१
२४	विज्ञान हमें सींच रहा है]	प्रो० माणिकलाल एस० ठैकर	९७
२५	विनोदी भी कितने थे मिर्जा	रामनाथ सुमन	१०१
२६	चिर मौन गुफाएँ बोलीं	गौरीशंकर गुप्त	१०४
२७	पेड़ों की रसमय कहानियाँ	वेरियर एल्विन	१०८
२८	रूस मौसम बदलेगा	गोविंद रत्नाकर	११२
२९	....यह पहला अग्नि-कण	डा० हेमचंद्र जोशी	११४
३०	चिरयात्रा (बर्मी-कविता)	महिम्यांग	११७
३१	डाक-टिकिटों का रहस्य-रोमांस	ना० वि० सप्रे	११९
३२	प्रेम का मजार (अंग्रेजी-कहानी)	डा० मुल्कराज आनंद	१२४
३३	गजल	'फिराक' गोरखपुरी	१२९
३४	अंगूरी की बोतल के मोल	यशपाल	१३१
३५	राजा और राष्ट्र	वासुदेवशरण अग्रवाल	१४०
३६	ब्याडि : वंदनीय रसायनवेत्ता	सूर्यनारायण व्यास	१४२
३७	रजिया (शब्द-चित्र)	रामवृक्ष बेनीपुरी	१४५
३८	फाख्ता (उर्दू-कहानी)	वाजिदा तबस्सुम	१५९
३९	मोह के क्षितिज (मलयालम-कहानी)	के० एम० पणिक्कर	१७७
४०	श्रद्धा गयी....सब गया (मराठी-कहानी)	वि० स० खांडेकर	१८९
४१	वसिष्ठजी द्वारा यौन-परिवर्तन	रामप्रताप त्रिपाठी	१९३
४२	दो परछाइयाँ (उर्दू-कहानी)	ख्वाजा अहमद अब्बास	२०१
४३	कड्डाराधने (प्राचीन कन्नड-कथा-कोष)	पुस्तक-संक्षेप	२०५

रामपंचायतन

[चित्र : राजपूत कलम, बिड़ला हाउस, बम्बई के सौजन्य से]

— रेखाचित्र —

आइसेंस्टाइन, ओके, इस्माइल, तन्ना, हरकिसनलाल, रामचंद्र शुक्ल, चौरसिया, सुरेश वेदक, नियोगी वाचडमठ, श्यामलता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

सम्पादक
रतनलाल जोशी

प्रार्थना

तद्यौर्दिवो दुहितरो विभाती-
रुपं ब्रुव उषसो यज्ञकेतुः।
वयं स्याम यशसो जनेषु
तद् द्यौश्च धत्तां पृथिवी च देवी॥

—हे दीप्ति की दुहिते, ज्योतिर्मयी उषे! हम शुभकर्म-निष्ठ मनुष्य, तुम्हारा आह्वान करते हैं। हम इस जीव-लोक में यशस्वी हों। पिता द्यावा और माता धरित्री हमें सत्पथ में सदैव अचल रखें। —ऋग्वेद ४.५१.११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्योति-जाह्नवी : लक्ष्मी

वेद-वर्णित श्रीदेवी के आदिकालीन व्यक्तित्व पर महामहोपाध्याय एस० के० दीक्षितार का एक शोधात्मक विवेचन

ऋग्वेद में "श्री" शब्द आत्मिक तेज एवं भौतिक प्रकाश के आविर्भाव की अग्रदूती भगवती उषस् के लिए आया है। "श्री" शब्द के अभिधार्थों में सौंदर्य की गणना आज भी होती है, वह उसी देवी उषस् की सुरम्य छटा की छाया है। श्री से निष्पन्न होने-वाले सुश्रियं, घृतश्री, अश्रीर आदि जो नाना शब्द ऋग्वेद में आते हैं, वे सभी किसी-न-किसी रूप में कांति से सम्बद्ध हैं; और कांति उषा का प्रधान लक्षण है — वस्तुतः उषस् शब्द की व्युत्पत्ति ही उष् धातु से निष्पन्न होती है, जिसका अर्थ चमकना है।

महालक्ष्मी

[चित्र : संगमर्मर पर खुदी जयपुर की एक प्रतिमा की रेखानुकृति]

श्री का स्वतंत्र देवता के रूप में मूल ऋग्वेद में कहीं पर वर्णन नहीं है। श्री का प्रयोग वहाँ सर्वत्र तैजस तत्व को सूचित करने वाली भाव-वाचक संज्ञा के ही रूप में अथवा अन्य विशेषणों के रूप में हुआ है। यही बात "लक्ष्मी" शब्द के विषय में भी है। सम्पदा के अर्थ में भी इन दोनों शब्दों का प्रयोग पाया जाता है। ऋग्वेद में एक स्थल पर जामाता को "अश्रीकर्ता" अर्थात् धन-हर्ता कहा गया है। "लक्ष्मी" शब्द सामान्य संज्ञा के रूप में समस्त ऋग्वेद में केवल एक स्थान पर प्रयुक्त है, जहाँ कहा गया है कि, जो धीर चलनी से सत्तू की तरह, शब्दों का छान-छान कर प्रयोग करते हैं, उनकी वाणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में 'लक्ष्मी वसती है– भद्रैषां लक्ष्मी-निहिताधिवाचि।

इन प्रयोगों में श्री और लक्ष्मी के साथ संपदा का भाव अवश्य जुड़ा हुआ है; परंतु उसे धन-सम्पदा की अधिष्ठात्री नहीं माना गया है। वस्तुतः ऋग्वेद में धन-सम्पदा पर किसी देव-विशेष का आधिपत्य नहीं ज्ञात होता–पूषा, वरुण, अश्विनी कुमार, इंद्र और वैश्वानर अग्नि सभी को ऐश्वर्य तथा धन-कनक आदि का प्रदाता कहा गया है।

मूल ऋग्वेद में उषा, अदिति, इला, सरस्वती, सिनिवाली आदि देवियों तथा वरुणानी, इंद्राणी आदि देवपत्नियों का उल्लेख है; परंतु विष्णुपत्नी लक्ष्मी अथवा श्री का उल्लेख नहीं हैं। विष्णुपत्नी के रूप में श्री अथवा लक्ष्मी का उल्लेख केवल ऋग्वेद के खिल (परिशिष्ट) में पठित श्रीसूक्त के छब्बीसवें मंत्र में उपलब्ध होता है। यह लक्ष्मी-गायत्री मंत्र इस प्रकार है –महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्॥

इस सूक्त में लक्ष्मी अथवा श्री को हिरण्यवर्णा, हरिणी, सुवर्णरजतस्रजा, पद्ममालिनी और चंद्रा कहा गया है। ये सब आलंकारिक वर्णन भी माने जा सकते हैं। छठे मंत्र में उन्हें बिल्वपत्र से प्रसन्न होनेवाली कहा गया है। वस्तुतः श्रीसूक्त की वैदिकता ही असंदिग्ध नहीं है। और वैदिक परिभाषा की दृष्टि से विवेचन करने पर, श्रीसूक्त के अधिकांश मंत्रों का देवता लक्ष्मी नहीं, अपितु जातवेदस् (अग्नि) है, जिससे लक्ष्मी का आवहन करने को कहा गया है– लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।

श्रीमाँ

[चित्र : मित्र की एक प्रागैतिहासिक मृण्मूर्ति का सरल रेखांकन]

यजुर्वेद में श्री और लक्ष्मी को परम-पुरुष की सपत्नियाँ कहा गया है– श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च ते सपत्न्यौ। इस प्रकरण से ऐसा ज्ञात होता है कि, श्री का अर्थ तेज और लक्ष्मी का अर्थ सम्पदा हो गया था; और परम-पुरुष को उन दोनों का स्वामी माना गया था।

अथर्ववेद में विष्णुपत्नी के रूप में सिनिवाली का वर्णन है, जिसका स्वरूप भूमि से अधिक मिलता है। शतपथ में कहा गया है कि, जिन देवताओं में श्री बसती है, वे ज्योतिर्मय होते हैं। इस प्रकार श्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या लक्ष्मी का वैदिक स्वरूप आध्यात्मिक अर्थात् तेजोमय अधिक है, और भौतिक धन-कनक-मय कम।

वैदिक विष्णु का स्वरूप भी इस प्रसंग में विचारणीय है। अपनी प्रखर किरणों से लोकत्रय को व्याप्त और वेष्टित करने वाले माध्यंदिन सूर्य को वेदों में विष्णु संज्ञा दी गयी है। उस विष्णु का ब्राह्म-तेज उषस् ही उसकी श्री है।

कालांतर में जब वैदिक सविता-विष्णु को पौराणिक नारायण-विष्णु की पदवी प्राप्त हुई, तब सविता की श्री अर्थात् भगवती उषस् ही, श्री माँ अथवा भगवती लक्ष्मी बनीं।

पौराणिक लक्ष्मी के साथ धन-वैभव एवं भौतिक सम्पदा का भाव अवश्य जुड़ा हुआ है; परंतु मुख्यतः वे मंगल एवं सौभाग्य की देवी हैं। वेदों में भी लक्ष्मी की विरोधिनी अलक्ष्मी का स्वरूप अमंगल ही है। पुराणों में भी विशुद्ध भौतिक संपत्ति के अधिपति तो वैश्रवण कुबेर माने गये हैं जिनका स्थान माँ लक्ष्मी की तुलना में तुच्छ है।

श्री अथवा लक्ष्मी की यह अर्थ-परंपरा वेदोत्तर-कालीन आर्य-धर्म और संस्कृत भाषा दोनों में आज भी सजीव है। "श्री" शब्द मंगल का सूचक है। जो श्रीप्रद है, वह श्रीर या श्लील है, तद्विरुद्ध अश्रीर या अश्लील। इसी अर्थ में वेदों में भी यह पद प्रयुक्त हुआ है। समस्त शुभ-मंगल का प्रतीक श्री है, जिसका मूल धर्म है। "श्री" भौतिक धन-कनक का—द्वितीय पुरुषार्थ के साधक अर्थ का—भी वाचक है। "श्री" से रमणीयता भी अभिहित होती है; और रमणीयता, रति एवं काम ये एक ही शृंखला की कड़ियाँ हैं। समस्त सांसारिक कामनाओं से विरत श्रेयोन्मुख ब्रह्मनिष्ठ साधकों के साथ भी "श्री" शब्द का प्रयोग होने से, "श्री" ऋतंभरा प्रज्ञा का भी द्योतक है, जो निःश्रेयस का मूल है।

इस प्रकार माँ लक्ष्मी पुरुषार्थ-चतुष्टय की समग्र रूप से अधिष्ठात्री हैं; मानव-जीवन की सर्वांगीण पूर्णता एवं सार्थकता की भारतीय कल्पना का प्रतीक हैं। तभी उनकी अर्चना - उपासना समाज के समस्त अंगों के लिए, अभ्युदय एवं निःश्रेयस का परम साधन मानी गयी है।

न पश्यो मृत्युं पश्यति न रोगं नोत दुःखताम्।
सर्वं हि पश्यः पश्यति सर्वमाप्नोति सर्वशः॥

—जो प्रज्ञा की पुनीत प्रभा में देखता है, वह जीवन में न मृत्यु देखता है, न रोग देखता है और न दुःख-दरिद्रता देखता है; वह जीवन में सर्वत्र सर्व-सार्थक्य देखता है, सब-कुछ पा लेता है। —छान्दोग्योपनिषद्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आओ प्रभापुंज, हमारे तिमिर को दूर करो

रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा महात्मा गांधी के नाम १२ अप्रैल, १९१९ को लिखा गया एक ऐतिहासिक पत्र।

शांति-निकेतन
१२ अप्रैल, १९१९

प्रिय महात्माजी,

शक्ति या सत्ता चाहे किसी भी रूप में हो, वह अपने-आप में जड़ ही है। वस्तुतः वह उस घोड़े की तरह है, जो बँधी आँखों से गाड़ी खींचता है। उसमें वेग है, किंतु विवेक नहीं है। विवेक का धनी तो सारथी ही है। सारथी घोड़े को ही अनुशासन में नहीं रखता, वह उसे गंतव्य की ओर भी ले जाता है। सत्याग्रह के विषय में भी मैं कहना चाहता हूँ कि, सारथी के संयम-अनुशासन के अभाव में, वह भी जड़ शक्ति ही है। नियंत्रण एवं विवेक के अभाव में, उसे सत्य के खिलाफ भी इस्तेमाल में लाया जा सकता है। सत्ता के प्रसंग में हमें एक और बात ध्यान में रखनी है कि, उसके औद्धत्य का भय, सफलता के समय और भी बढ़ जाता है।

मैं जानता हूँ कि, आप सत् के द्वारा असत् को पराजित करना चाहते हैं; किंतु ऐसा अभियान केवल उदात्त वीरों के ही बूते का काम है। उन व्यक्तियों के सामर्थ्य का नहीं, जो अपना आंतरिक संतुलन ही नहीं साध पाये हों। दूसरे, असत् से युद्ध कभी-कभी, तो इतना लम्बा हो जाता है कि, कई पीढ़ियाँ तक उसमें खप जाती हैं। यह अर्सा बड़ा भयंकर एवं मायावी होता है। नये-नये आसुरी तत्व प्रकट होने लगते हैं; और कई बार यह भी होता है कि, इस लम्बे अर्से से ऊब कर, हम प्रायः हिंसा का मार्ग पकड़ लेते हैं। बस, यहीं से विनाश का प्रारम्भ हो जाता है। हिंसा का प्रति-प्रहार कर्ता को सहस्र-सहस्र रूपों में झेलना पड़ता है। आज वस्तुतः हमारे देश में यही दौर चल रहा है। कुछ आतुर व्यक्तियों की हिंसा और प्रतिशोध-भावना ने हमारे शासकों के सौ-सौ दमन अत्याचारों को हमारे तन-मन पर लक्षित कर दिया है– प्रतिहिंसा अपना दानवीय मुँह फाड़े, हर कोने से अपना ग्रास बटोर रही है और हमारे नव-युवकों को रक्तपात की ओर उभार रही है।

घोर संकट की इस वेला में, पुरुष-पुंगव की तरह आपने प्रकट होकर भारत की उदात्त वाणी को शंखघोष में दोहराया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। गोपनीय प्रतिशोध और भयाक्रांत के पराभव में कोई अंतर नहीं है। —अहिंसा के प्रसंग में यह घोषणा करते हुए आपने हमारे सांस्कृतिक शौर्य-भावना का सच्चा स्पष्टीकरण किया है। सत्शक्ति परिपूर्ण निर्भयता में ही अपनी प्रभुता को सिद्ध करती है — भयमात्र असत् का परिचायक है, आपकी इस स्थापना को मैं शब्दशः शिरोधार्य करता हूँ। सच है, आज अवसर आ गया है कि, हम यह सीखें कि, केवल सफलता में ही नैतिक विजय की सार्थकता नहीं है— असफलता में भी हम वैसी ही नैतिक विजय के अधिकारी हैं। आततायी के सम्मुख अविजित अड़े रहना, क्या अपने स्वयं में महान् विजय नहीं है?

... मैंने सदैव यह अनुभव किया है और बार-बार इसे प्रकट भी किया है कि, स्वातंत्र्य का फल दान में नहीं मिलता। केवल विजेता को ही इस फल का भोग मिलता है; और भारत इस विजय का पात्र उस समय बनेगा, जब वह सिद्ध कर देगा कि, अपने नैतिक सामर्थ्य में वह अपने शासकों से बढ़ कर है। आप यही मंत्र लेकर हमारे सामने आये हैं — हाँ, केवल मंत्रोच्चार के लिए ही नहीं, आप स्वयं इस तप को आत्मा में प्रतिष्ठित करके, हमारे प्रकाश-स्तम्भ बने हुए हैं। निर्भय अपराजेय शक्ति! निःसीम शौर्य के चक्रवती राजराजेश्वर! हमारी आत्मा के प्रभापुत्र! आओ, हमारी शत-शत कामनाओं के कल्पवृक्ष, विचरण करो हमारे बीच! — अपनी अनुपम सत्शक्ति में प्रकाशित होकर प्रकाशपुत्र, हमारे तिमिर का उच्छेदन करो।

आपका
रवींद्रनाथ ठाकुर

चिदानंद

वीणा मेरी देह, शिराएँ शोणित झंकृत,
मांस-पेशियों में पौरुष की स्वरलिपि अंकित।
मुक्त स्वर्ग संगीत रुधिर में बहता अविदित,
जब मैं कर्मठ अंगों को करता संचालित।
मेरा मानस आशा के मुकुलों का मधुवन,
जिन पर रंगों की छायाएँ कँपती प्रतिक्षण।
स्वर्ण मरंद भरे भावों के इंद्र-धनुष घन,
जिसका सौरभ पी रोमांचित रहता यौवन।
रजत शांति के अमित व्योम में आत्मा वेष्टित,
बाहर के संघर्षों से रहती संरक्षित।
अंतः करुणा ज्योति प्रीति आनंद अपरिमित
वज्रमुष्टि जड़ में चेतन को करते विकसित।
अपरिमेय सौंदर्य सृजन हो रहा निरंतर,
अति अजेय आनंद तरंगित जीवन सागर।
खुल प्रकाश पटलों पर चिन्मय पटल अनश्वर,
आलोकित करते जड़ चेतन के असंख्य स्तर।

— सुमित्रानंदन पंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

.....अब हम अपने दो प्रकार करें

'नवनीत'–परिवार की ओर से सन् १९५९ के नावल पुरस्कार-सम्मानित इतालियन कवि सैल्वेडोर कासिमोडो का सादर अभिनंदन करते हुए हम यहाँ उनकी दो कविताओं का संक्षिप्त हिन्दी रूपांतर प्रस्तुत कर रहे हैं।

*

हाँ, सुनाओ भाई ! मुझे भी सुनाओ भगवान् का नाम। मैं न तो भगवान् का शत्रु हूँ और न उसके बंदे इन्सान का। फिर मेरे आते ही क्यों बंद कर लिये तुमने अपने ओंठ ? मुझसे डरो नहीं बंधु ! तुम्हारे-जैसी ही भगवान् की छबि में निर्मित मेरी भी देह है ..... हैं।, कहो ! निर्भय-निःसंकोच हो कर कहो कि, मुझे तुम्हारा रवैया पसंद नहीं..... और तुम सच ही कहते हो भाई, दरअसल मुझे तुम्हारे रवैये से चिढ़ है। कितना मीठा नाम है भगवान् का ! और तुम उसे मशीन-गन से गवाते हो ! तुम उसे युद्ध के नगाड़े में बजवाते हो ! माँ के निर्विकार दूध-सा भगवान् का नाम, धरती पर रक्त की नदियों में बहता है..... चीत्कारों से उसकी स्तुति करवाते हो ! इसे तो मैं नहीं सुनूँगा..... चाहे तुम्हें बुरा लगे या तुम्हारे धर्म का अपमान हो इससे; मगर मैं अपनी नफरत नहीं छोड़ूँगा..... हाँ, ढोल बजा-बजा कर कहते फिरो मैं भगवान् का द्रोही हूँ, समाज का शत्रु हूँ; किंतु मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकूँगा। क्यों करूँ मैं क्षमा ? क्या क्षमा कोरा शब्दमात्र है ? क्या कोई उसका अर्थ नहीं ? उसके मूल्य पर बहुत कालिख पोत दी गयी है..... अरे भाई, कम-से-कम मुझसे तो यह कुकर्म न करवाओ। मैं क्षमा करने से इन्कार करता हूँ – मैं क्षमा को फिर से अपना अर्थ दिलवाना चाहता हूँ–मेरी नफरत में जल कर, उसका सारा कलुष मिटेगा..... मुझे इन्कार करने दो, मुझे नफरत करने दो। पादरी मेरे प्यारे, एक बार मुझे भी सर्मन सुनाने दो। मैं कहना चाहता हूँ कि, अब समय आ गया है कि, हम इन्कार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करें, नफरत करें, अपने को अपने असली रूप में निःसंकोच प्रकट करें!

× × ×

"प्रेम भगवान् का आशीर्वाद है।" उस दिन एक फरिश्ता बार-बार मेरे कान में कह रहा था और मैं वर-वेश में अपनी पत्नी के साथ, कुमारी-माँ मेरी के चर्च से नीचे उतर रहा था .... ओ हो! सारा मिलान-शहर हँसता-खिलखिलाता अठखेलियाँ कर रहा था और हर पुरुष, हर नारी हम दोनों को ईर्ष्या और लोलुपता की नजरों से घूर-घूर कर गुजर रहे थे। मैंने अपनी पत्नी की ओर देखा, वह मुस्करा दी.... और तभी अकस्मात् फिर फरिश्ते ने मेरे कानों में कहा– "प्रेम भगवान् का आशीर्वाद है।" इस व्याघात से मेरी मुस्कान कुम्हला गयी –हम दोनों के बीच में यह मुँहजोर फरिश्ता आ कर क्यों अपनी टाँग अड़ाता है? और, जब हम गाड़ी में बैठे और स्वजनों के बीच, प्रथानुसार, जब हमने एक-दूसरे का चुम्बन लिया, तो फिर वह फरिश्ता कहीं से आ गया और 'प्रेम भगवान् का आशीर्वाद है!' इन शब्दों को इतने जोर से उसने मेरे कानों में पछाड़ा कि, जैसे मेरे कान के परदे ही फट गये। मैं आपे में न रह सका, क्रोध से तिलमिला उठा। मैं गरज कर बोला – "दूर हट जाओ।" यह अप्रत्याशित व्यवहार देख कर, सारे उपस्थित स्वजन-स्नेही चौंक उठे... नववधू को तो जैसे बिच्छू ने काट लिया। उसकी भौंहें तन गयीं और रोष-रक्ताभ नजरों से घूरती हुई वह बोली –"क्या मतलब?" मुझे जैसे होश आया। बड़े प्रयत्न के बाद मैं मुस्कराने में सफल हो सका। मैंने पत्नी को बाहुपाश में भर लिया; किंतु इसी क्षण फिर वह फरिश्ता शैतान की तरह मेरे कानों के पास आ गया और कर्ण-स्फोटक चीत्कार में बोला –"प्रेम भगवान् का आशीर्वाद है।" इस बार मैं संयम नहीं रख सका, मैं पूरे क्रोध में चिल्लाया –"आग लगे तुम्हारे प्रेम को ..... चूल्हे में जाये तुम्हारा भगवान्!" बस सारी कहानी खत्म हो गयी...क्षण-भर पहले जो सुख का गुलाब था, वह दूसरे ही क्षण आग का अंगारा हो गया! मैं अपनी मूर्खता को रोता रहा, पत्नी अपने भाग्य को कोसती रही... उसकी अपनी शंकाएँ थीं, मेरी अपनी सफाई थी ..... हाय! कितना अच्छा होता कि, हम प्रेम और ईश्वर की दुहाई देने की इस आदत से बाज आ जाते! क्या बिना फतवे के कोई काम ही नहीं होना चाहिए? हर काम में चेतावनी चाहिए? प्रेम जो कि संसार का सबसे अकृत्रिम, सबसे सरल, सबसे सजीव तत्व है, उसे भी हम यदि बिना हवाले के न भोग सकें, तो इससे बड़ा भी कोई दुर्भाग्य है क्या हमारी जाति का?

✱

स्मरण रखो, सुकर्म, सम्यग्दृष्टि, सद्धर्म, शील और प्रामाणिक आजीविका द्वारा ही जीवों की मनःशुद्धि होती है, गोत्र एवं धन द्वारा नहीं। –मज्झिमनिकाय ३/२६२

✱

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोधिसत्व बंडारनायक

श्रीलंका के हाल ही में दिवंगत प्रधान-मंत्री सालोमन बंडारनायक का पंडित शिव शर्मा के शब्दों में व्यक्तित्व-चित्रण

कुशिनगर के परिसर में शाल-तरुओं के नीचे, तृणास्तरण पर लेटे हुए भगवान् तथागत को जब यह निश्चय हो गया कि, उनके देह-दीप के बुझने का समय आ पहुँचा है, तब सबसे पहले उनका ध्यान पावापुरी के चुंद लुहार की ओर गया, जिसके घर भिक्षा में सूकर-मद्दव ग्रहण कर, भगवान् की अस्सी-वर्षीय तपःकृश काया, रक्तातिसार से आक्रांत हो गयी थी। भगवान् ने आनंद से ये करुणा-सिक्त वचन कहे– "चुंद के मन में कहीं कोई यह शंका न डाले कि, उसके भोजन से ही बुद्ध का निर्वाण हो गया। आयुष्मान् चुंद से कहना कि, तथागत के लिए उसका सूकर-मद्दव और सुजाता का पायस ये दोनों सर्वथा समान हैं।"

ढाई हजार वर्ष बाद, आततायी की गोली से आहत हो, मृत्युशय्या पर पड़े हुए, एक विश्व-विख्यात सिंहली बौद्ध के अंतःकरण में भी वैसी ही अहैतुकी अलौकिक करुणा उतर आयी और उसने अपने हत्यारे के प्राणदान की कामना व्यक्त करते हुए कहा– "प्रियजनो, जिसकी उत्पत्ति है, उसकी च्युति निश्चित है–– माध्यम प्रवंचना ही तो है। अतः निर्वैर रहो, सबको क्षमा दो, करुणा का स्रोत क्षणमात्र को भी अवरुद्ध न होने दो।"

जघन्य मारक के प्रहारों से संत्रस्त देह के भीतर से, जब ऐसी निर्वैर सम्बोधि व्यक्त होती रहती है, तो स्पष्ट है कि, उस देह में लोकोत्तर चैतन्य का निवास है और वह देही उस चैतन्य को बुद्धालोक के सोपानों पर उत्तरोत्तर चढ़ाने का आग्रही है।

परम-बौद्ध आचरण में लीन, ऐसे व्यक्ति को आधुनिक लंका की धर्मप्राण बौद्ध जनता, यदि बोधिसत्व का अपरावतार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानने लगे, तो इसमें अतिशयोक्ति या अनौचित्य को स्थान ही कहाँ है!

निज को निःशेष करके परार्थ को साधना—निज के प्रति चरम निर्दयता और परायों के प्रति चरम सदयता, यही परम सत्वानुभूति तो बोधिसत्व की विहार-भूमिका है। व्यक्ति की करुणा 'स्व' के क्षुद्र क्षरण को त्याग कर, 'परम' के निःसीम सिंधु में लहराने लगे और जीवमात्र के मूल तक उसका अभिसिंचन अजस्र पहुँचता रहे, यही बोधिचर्या तो बोधिसत्वों की एकांत कामना होती है। श्रीलंका के दिवंगत प्रधान-मंत्री के जीवन में स्थल-स्थल पर इस कामना के साक्ष्य मिलते हैं—ज्ञानी-विद्वानों ने इसे देखा या नहीं; किंतु श्रद्धालु लोक-चक्षुओं ने इसे देखा है और देख कर परम आदर से उन्हें शीश नवाया है।

वंडारनायक को न तो अपनी ज्ञान-गरिमा का दर्प था और न ज्ञानियों के सत्संग का मोह ही। एक वर्ग-विशेष या विच्छिन्न द्वीप-विशेष में समाकर रह जाने का स्वभाव उनका नहीं था। वे अकेले अपने में ही जीना हेय समझते थे। रईसी से जनता की ओर निरंतर झुकते देख कर, एक दिन जब उनके पिता ने उनसे शिकायत की और वंश-मर्यादा एवं पितृ-गौरव का उन्हें ध्यान दिलाया, तो वंडारनायक ने बड़े आदर के साथ उत्तर दिया—"पिताजी, वर्षों के विचार-संघर्ष के बाद, मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि, ये संस्कार सब मिथ्या और भ्रामक हैं..... पूर्वजों के कफन को ओढ़ कर, गौरव का अनुभव करने में कौन-सा शौर्य है? मनुष्य का क्षेत्र मनुष्य-समुदाय है; सबके साथ मिल कर, अमिट हो कर रहने में ही, मैं अपने और अपनी वंश-परम्परा की कृतार्थता मानूँगा।"

सम्राट्-सम्राज्ञी

[चित्र : प्राचीन सिंहल के एक भित्ति-चित्र के आधार पर]

चित्त की यही क्रांत-दर्शी प्रवृत्ति, उन्हें तथागत के करुणा-धर्म के तट पर लायी— यहीं बोधिसत्वों की परम्परा के उन्हें दर्शन हुए थे। इसी कल्पवृक्ष की छाया में बैठ कर, उन्होंने 'सद्धर्मपुंडरीक' के शब्दों में भगवान् बुद्ध का यह कामना-घोष सुना था—

"कुलपुत्रो, जो जीव-मात्र के प्रति अक्षुण्ण करुणा के इस धर्म को प्रकाश में लाने का दृढ़ संकल्प कर चुका है, उस नरकेसरी का सिंहनाद मैं सुनना चाहता हूँ। यह अति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन क्या है, जल का ही तो दूसरा नाम है। जल को देखिये, कितना अहं-विहीन, कितना सीमा-रहित! कब उसने अपने को बाँध कर रखा है? सर्वात्मरूप होने में कब उसने कार्पण्य दिखाया है? फिर जीवन क्यों अपने धर्म को भूल जाये? क्यों क्षुद्र सीमा में निरंतर संकीर्ण होता रहे? आइये हम अपना विस्तार करें; रोज परिधियाँ बढ़ायें और प्राणिमात्र के साथ एकप्राण हो कर, असीमात्म हो जायें! —सालोमन बंडारनायक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्गम मार्ग है। कुलपुत्रो, इस मार्ग पर चलने के लिए मैं तुम सबका आह्वान करता हूँ; क्योंकि सद्धर्म का मार्ग यही है। इस सात्विक मार्ग पर जिसके कदम चलेंगे, मैं उस शूरमा को विजय का आशीर्वाद देना चाहता हूँ।"

बंडारनायक की प्रज्ञा ने तथागत के इस घोष को सुना था और इस दुर्गम मार्ग पर वे श्वास के अंतिम आवागमन तक चले थे – सिंहनाद करते हुए चले थे और उनके इस शूरत्व को भगवान् का आशीर्वाद भी प्राप्त हो गया था। जीवन के दिगंत-व्यापी तिमिर में, मार्ग के भीषण व्याघातों को पार करते हुए, सहस्र-सहस्र संघर्षों के बीच, वे अनम्र, अडिग एवं अपराजेय चलते रहे– अकेले नहीं, अपने आस-पास के सारे लोक-समाज को निज आत्मा के दिव्य रथ में बिठा कर, वे उत्तरोत्तर आगे-आगे अप्रतिहत बढ़ते रहे!

अनेक पट-परिवर्तनों में आबद्ध, बंडार-नायक का जीवन, मानव-चरित्र की गहराई में वस्तुतः एक महाकाव्य ही है। अनेक गिरि-वन-प्रांतरों में से अपनी गतानुगति प्राप्त करती हुई, अंततः परम गंतव्य की ओर उनकी जीवन-स्रोतस्विनी बहती चलती है। प्राणवंत प्रखरता उसकी अपनी विशेषता है – सत्व को क्षीण कर बहने का जैसे उसका कभी विकल्प ही नहीं। सीनियर-केम्ब्रिज की परीक्षा में, समस्त ब्रिटिश-साम्राज्य में, तृतीय स्थान प्राप्त कर, जब कुमार बंडारनायक श्रीलंका वापस लौटे, तो इकलौते बेटे के इस उत्कर्ष से पिता का हृदय गर्व-स्फीत हो उठा। प्रभुभक्त, पदवीधारी, अग्रगण्य सामंत सालोमन बंडारनायक ने काफी गहरी गौरवानुभूति के साथ, कुमार को श्रीलंका के गवर्नर सर रावर्ट चामर्स के सम्मुख आशीर्वाद के लिए उपस्थित किया। किंतु आश्रयदाता के गिरि-शृंग से प्रदर्शित वह दया-अनुकंपा, कुमार बंडारनायक को अखरे बिना न रही। साम्राज्यवादी प्रभुता का यह प्रवंचक कृपादान, उन्हें तीर की तरह लगा। अतः जब गवर्नर ने उनसे पूछा कि, शिक्षा-समाप्ति पर क्या बनना चाहते हो, तो कुमार बंडारनायक अपने समस्त पारिवारिक संस्कारों की शिलाओं को जैसे चूर्ण-विचूर्ण करते हुए बोले– "अपनी मातृभूमि और उसमें बसने वाले दुःख-दैन्य-पीड़ित नर-नारियों की सेवा मैं कर सकूँ, यही मैंने अपने भावी जीवन का लक्ष्य बनाया है।" पिता ने सुना, तो जैसे आसमान से वे जमीन पर उतर आये और उधर गवर्नर की भृकुटियों में वक्रता की कई ग्रंथियाँ चढ़-उतर गयीं।

पुत्र की विद्रोहिणी प्रवृत्तियों से राज-भक्त पिता के मन में शंका-आशंकाएँ बढ़ने लगीं। आखिर उन्होंने बंडारनायक को आक्सफोर्ड भेज दिया। उन्हें विश्वास था कि, इंग्लैंड के 'स्वास्थ्यप्रद' जलवायु में पुत्र का यह रोग अपना प्रकृत शमन प्राप्त कर लेगा। किंतु कुमार बंडारनायक को आक्सफोर्ड में देशभक्ति के व्यवधानों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के बजाय, बलवान् आलम्बन-उद्दीपन ही मिले। गौरांग-श्रेष्ठता के दर्प ने उनकी चेतना को इतना कचोटा कि, वहाँ उन्होंने अध्ययन में ही नहीं, खेलों में भी इस 'श्रेष्ठता' का भंडाफोड़ किया। यहाँ उनके साथी और प्रतिस्पर्धी थे एंथनी ईडन, बेवर्ली निकल्स, मालकम मैक्डानल्ड जैसे प्रतिभा-संपन्न, होनहार अंग्रेज-विद्यार्थी, जो बाद में जा कर विश्वविख्यात व्यक्तित्व में चमके। किंतु युवक बंडारनायक की संकल्प-पूर्ति के सम्मुख ये सब पराजित रहे—अध्ययन एवं खेल में ही नहीं, उन्होंने वक्तृत्व-कला में भी चरम विशिष्टता प्राप्त की। यह अंतिम विशिष्टता, बाद में, उनके व्यक्तित्व के साथ ऐसी ओत-प्रोत हो गयी थी कि, दोनों को कभी एक-दूसरे से विच्छिन्न नहीं किया जा सकता था। वास्तव में, जिन्होंने उनके वाणी-वैभव को देखा था, वे न तो कभी उन्हें भूल सकते हैं और न इस युग में वाग्देवी की ऐसी विभूति को प्रत्यक्ष मूर्तिमंत पा ही सकते हैं— विश्व के अमर-प्राण वक्ताओं में बंडारनायक भी एक ज्योति-र्मय नक्षत्र के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

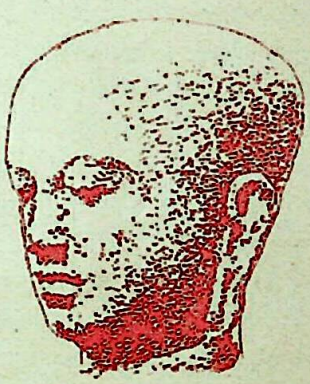

बोधिसत्व

किंतु वाक्शक्ति के अनन्योपासक बंडारनायक कर्मशक्ति के भी एकांत उपासक थे। अभिव्यक्ति के क्षेत्र में, वाक् एवं कर्म दोनों में प्रगूढ़ प्रतिस्पर्धा थी—रूप और गंध दोनों में चरमोत्कर्ष की होड़ लगी थी। वे वाक् को रथ और कर्म को रथी मानते थे। श्रावस्ती के छत्रपाणि उपासक को दी हुई भगवान् बुद्ध की यह भर्त्सना जैसे उनके कानों में सदा गूँजा करती थी— **यथापि रुचिरं पुप्फं वण्णवंतं अगंधकं एवं सुभाषिता वाचा अफला होति अकुब्बतो।** —जैसे फूल सुंदर रंग-वाला होकर भी, यदि गंधहीन है, तो व्यर्थ है; वैसे ही तद्वत् आचरण न करनेवाले की सुभाषिता वाणी भी सर्वथा निष्फल होती है।

आक्सफोर्ड से वापस लौटे, तो पिता ने एटर्नी-जनरल के दफ्तर में एक उच्च पद की उनके लिए व्यवस्था कर दी; किंतु बंडारनायक को शोषक प्रभुशक्ति की कृपा पर चलना ग्राह्य नहीं लगा—उन्होंने अपने-आपको जन-जीवन के दावानल में झोंक दिया। स्वर्ण की परीक्षा थी—लोकसंग्रह के अग्निकुंड में! स्वजनों ने वर्जना दी, मित्रों ने काँटों का डर बताया, बड़े-बूढ़ों ने शंका से सिर हिलाया; किंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन में परमा शक्ति का साक्षात्कार करने वाले बंडारनायक के संकल्प में शिथिलता न आ सकी। वे सहस्र पगों से आगे बढ़े; किंतु आग्रह का उद्दाम आवेग भी उनके भीतर न था। सात्विक शील में स्थिर वे महाकाव्य के धीरोदात्त नायक की भाँति लक्ष्य-पथ पर आरूढ़ हुए। मित्रों-स्नेहियों के प्रेमाग्रह का उत्तर देते हुए, उन्होंने 'बोधिचर्यासार' का जो संदर्भ प्रस्तुत किया, उसके भीतर से मानो एक बोधिसत्व की आत्मा ही झाँक रही थी—

मुच्यमानेषु सत्वेषु ये ते प्रामोद्य सागराः।
तैरेव ननु पर्याप्तं मोक्षणारसिकेन किम्॥

—जीव-जगत् का दुःख शमन करने में, आनंद के जिस सागर की सृष्टि होती है, वही तो परम श्रेय है— केवल अपने लिए जड़ मुक्ति प्राप्त करने में क्या रखा है?

अंतिम रक्ताभिसरण तक बंडारनायक लोकोत्थान और लोक-दुःख-शमन के इस यज्ञ में अपनी कर्माहुति देते रहे— विजय-पराजय, मोह-मात्सर्य और आशा-निराशा का कोई अवरोध उनकी इस यज्ञ-चर्या को खंडित नहीं कर सका। अस्थि-पंजर-देह की उस अतुल शक्ति ने सदियों के गर्त में डूबे राष्ट्राभिमान को ही नहीं उबारा, देश के निपीड़ित मानव के हाथों में अपना निःश्रेयस खोजने के लिए मानव-धर्म का मणिदीप भी दे दिया।

आज बंडारनायक के साथ बोधिसत्व-परम्परा का स्मरण आते ही कई पावन आख्यान और सम्बोधि-प्रोज्ज्वल मूर्तिशिल्प आँखों के सामने प्रत्यक्ष हो उठते हैं। 'दिव्यादान' में परम-कारुणिक चंद्रप्रभ बोधिसत्व का आख्यान है, जिसने जीवहित के लिए अपना सिर भी प्रदान कर दिया था। और इसी शृंखला में आती है व्याघ्री-जातक की कथा जो मानो बोधिसत्व मणिमाला का सुमेरु है। कुछ वर्ष पूर्व, सिंहनाद अवलोकितेश्वर की एक अति भव्य मूर्ति के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। शौर्य और शील का ऐसा रसात्मक एवं दिव्य समन्वय बोधिसत्व की शायद ही किसी मूर्ति में हो। महारुद्र का त्रिशूल और बुद्ध का पद्म, बोधिसत्व की इस मूर्ति में परम शिवत्व की ऐसी व्यंजकता सिद्ध कर रहा था, जहाँ लोक-जीवन की सारी पारमिताएँ फुल्ल कमल की भाँति खिल उठती हैं।

बंडारनायक की समस्त जीवंत आस्थाएँ ऐसे ही बोधिसत्व-आदर्श को चरितार्थ करते हुए जनमोक्ष-मार्ग पर आरूढ़ थीं कि, मंजिल ने स्वयं निकट आकर, उनसे बलि माँग ली। अलौकिक अर्पण की इन घड़ियों में उनके अंतःकरण ने जो व्यक्त किया, उससे अनायास ही 'नागानंद' नाटक के नायक जीमूतवाहन के ये अविस्मरणीय सहजोद्गार जीवंत हो उठते हैं—

शयितेन मातुरंके विश्रब्धं शैशवेन यत्प्राप्तम्।
लब्धं सुखं मयास्या वध्यशिलायास्तदुत्संगे॥

—बचपन में माँ की गोद में सुख-शयन करते हुए जो सुख मैं नहीं पा सका, वह आज इस वधशिला पर प्राप्त कर रहा हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन

पत्थरों में भी कहीं कुछ सुगबुगी है?
दूब यह चट्टान पर कैसे उगी है?
ध्वंस पर जैसे मरण की दृष्टि है,
सृजन में त्यों ही लगी यह सृष्टि है।
एक कण भी है सजल आशा जहाँ,
एक अंकुर सिर उठाता है वहाँ।
मृत्यु का तन आग है, अंगार है,
जिंदगी हरियालियों की धार है।
क्षार में दो बूँद आँसू डाल कर,
और उसमें बीज कोई पाल कर,
चूम कर मृत को जिलाती जिंदगी।
फूल मरघट में खिलाती जिंदगी।
निर्झरी बन फूटती पाताल से,
कोंपलें बन नग्न रूखी डाल में,
खोज लेती है सुधा पाषाण में,
जिंदगी रुकती नहीं चट्टान में।
बाल भर अवकाश होना चाहिए,
कुछ खुला आकाश होना चाहिए,
बीज की फिर शक्ति रुकती है कहाँ?
भाव की अभिव्यक्ति रुकती है कहाँ?

— 'दिनकर'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाश-पर्व की परम्परा

दीपोत्सव-पर्व के प्रसंग में प्राप्त संदर्भ-परम्पराओं को एक माला में पिरोने का प्रयत्न

प्रति वर्ष कार्तिक की अमावस्या को भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक, प्रकाश के मेघपुंज बिखेरने वाला यह अनुपम पर्व, हमारे देश की उस महान् संस्कृति-परम्परा का प्रतीक है, जिसके प्राणोद्रेक से हम प्रत्येक परिस्थिति में, प्रत्येक शताब्दी में, प्रत्येक युग में, मानव-संस्कृति पर छाने वाले सघन अंधकार को पराजित करते हुए, ज्ञान एवं सत्य की पुण्य ज्योति विकीर्ण करते आये हैं। असत्य को उपेक्षित कर, सत्य को अपने पक्ष में समेट लेने की प्यास, मृत्यु को ठुकरा कर जीवन को अमरत्व देने की साध और अंधकार को पराभूत कर, ज्योति की दीपशिखाएँ प्रज्ज्वलित करने का साहस, सबसे पहले इस भारतभूमि में ही जाग्रत हुआ था और यज्ञ की समिधाएँ एकत्र करते हुए वैदिक मनीषियों ने आत्म-गौरव से वक्ष तान कर कहा था :

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।

अंधकार से ज्योति की ओर ले चलने वाले इस छोटे-से वैदिक मंत्र में, हमारी समस्त गतिमान् संस्कृति का जाज्वल्यमान इतिहास प्रतिबिम्बित है। प्रति वर्ष दीपोत्सव के रूप में, हम अपने इसी इतिहास की पुनरावृत्ति करते हैं। इतिहास के अँधेरे पृष्ठों पर अगणित वर्षों से हम अपने गौरव का यह इतिहास लिखते आ रहे हैं; और शायद प्रलय के क्षण तक भी, इसी उल्लास के साथ लिखते जायेंगे।

दीपावली का पर्व, एक ओर, जहाँ हमारे व्यापक जीवन-दर्शन का ज्ञानोज्ज्वल प्रतीक है, वहाँ वह उस रम्य लोक-कल्पना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

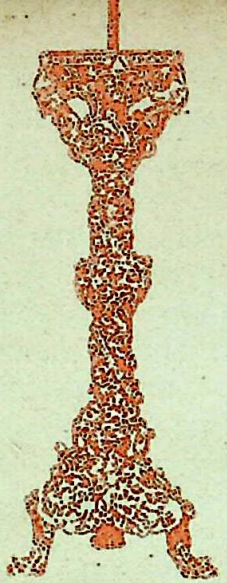

दीपस्तंभ
ग्यारहवीं सदी के यूरोप की धातुकला का कौशल

की भी अभिव्यक्ति है, जिसके अनुसार कार्तिक की अमावस्या को लक्ष्मी विष्णु की, वैभवशाली महाप्रभु की, शेषशय्या त्याग कर, खेतों की हरी-भरी पगडंडियों पर, गाँवों की संकरी गलियों में घूमती हुई, प्रत्येक किसान की झोपड़ी के द्वार पर जा कर आश्रय खोजती है। प्राचीन वाङ्मय से स्पष्ट हो जाता है कि, यह पर्व लक्ष्मी या लक्ष्मीपतियों का ही पर्व नहीं है, वरन् लोक-लक्ष्मी के रूप में उस विराट् जनता का त्यौहार है, जो सदा से हमारी संस्कृति की विधात्री रही है। राजलक्ष्मी की महापूजा के बजाय, इसे हम सदैव जन-लक्ष्मी का ही ज्योति-पर्व मानते आये हैं। इसीलिए 'देवीसूक्त' में यह स्पष्ट उल्लेख है :

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

कठोपनिषद के एक आख्यान के अनुसार, नचिकेता नामक एक बालक ने यम से भी सहानुभूति प्राप्त की थी। नचिकेता की मानस-कल्पना में यम का स्वरूप बड़ा भयंकर एवं संहारक था। कार्तिक अमावस्या की कालरात्रि से यम के रूप की तुलना की गयी है। किंतु जब नचिकेता यम के द्वार पर पहुँचा, तो वह यम की सौम्य एवं शील-सरल मूर्ति देख कर अवाक् रह गया। कार्तिक अमावस्या के ही दिन, यम ने नचिकेता को ब्रह्मज्ञान की अंतिम वल्ली का अनुशीलन कराया था। सावित्री को पुत्रवती होने का वरदान भी, यम ने कार्तिक अमावस्या को ही दिया था। इस प्रकार यम-रूपी अंधकार के भीतर, ब्रह्मज्ञान एवं अनंत सौभाग्य के दो पुण्य-प्रसंगों का उद्भव हुआ था। दीपोत्सव के साथ धर्मराज यम का यही सम्बंध है, जिसके अंतराल में सारी भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा जगमगा रही है। मृत्यु के स्रोत से अमरत्व एवं पुण्य जीवन का उद्रेक, भारतीय संस्कृति की प्राणचेष्टा है।

कालरात्रि के साथ महाकाली एवं महाकाल का भी सम्बंध है। संपूर्ण 'शिव-पुराण' एवं 'दुर्गासप्तशती' में इसके उल्लेख मिलते हैं। शाक्तों के अनुसार महादुर्गा ने जब शुम्भ-निशुम्भ का संहार किया, तो असुरों की समस्त सेना को मार कर भी उनकी हिंसक प्यास शांत नहीं हुई। अतः वे देवताओं की भी सेना में घुस पड़ीं और उसके विनाश में पूरे आवेश से संलग्न हो गयीं। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गयी। महानाश का दावानल, देवों की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारी सृष्टि को तिनकों की भाँति भस्मसात् करने लगा। अंत में शिव ने महाकाली के क्रोध को शांत करने का संकल्प किया। अकस्मात् महाकाली को एक ठोकर लगी और उनके पैर किसी अज्ञात प्रेरणा से थम गये। उन्होंने नीचे झुक कर देखा, तो उनके पैरों के नीचे उग्र तप से अस्थि-पंजर बना शिव का शरीर पड़ा था। दुर्गा का क्रोध ही हिम की भाँति पिघल नहीं गया; अपितु उन्होंने प्रायश्चित्त करने का भी संकल्प कर लिया। महाकाली शिव के तपोद्भूत ओज एवं सौंदर्य पर मुग्ध हो गयीं और उन्होंने आत्म-समर्पण के लिए तपस्या का आश्रय लिया। बर्बरता और तामसिक हिंसा पर-तपस्या एवं शिव की यह विजय, भारतीय इतिहास की सबसे अधिक उल्लेखनीय घटना है, जिसे हृदयंगम करने से सारी भारतीय संस्कृति अपने वास्तविक रूप में स्पष्ट हो जाती है।

द्यूतक्रीड़ा
यूनानी सामंत एकिलीज और एजेक्स जुआ खेल रहे हैं।
[चित्र : छठी सदी का रोमन-शिल्प]

दीप-जागरण के साथ-साथ ही दीपावली, दीप-निर्वाण का महोत्सव भी है— ऐसा पुण्य-क्षण, जब क्षण-भंगुर जीवन की अस्थिर दीप-रेखाएँ बुझ गयी थीं और उस अनंत महाप्रकाश की पुंजीभूत ज्योतियाँ विकीर्ण हो उठी थीं, जिससे सारी मानवता का अंतःकरण जीवन का नया सम्बल पा जाता है। श्रीकृष्ण का देहावसान दीपावली के दिन ही हुआ; गोपियों के प्राण-वल्लभ, महाभारत के अद्वितीय राजनेता और गीता के अमर गायक श्रीकृष्ण ने अपना पार्थिव दीप बुझा कर, इसी दिन आत्मा का अशेष दीप जलाया था। गीता में विभूति-वर्णन के समय श्रीकृष्ण ने अपने को यम भी कहा है : यमः संयमतामहम् — अर्थात् शासकों अथवा दंड देने वालों में मैं यम हूँ।

महात्मा बुद्ध के विषय में भी यही विश्वास प्रचलित है कि, उनका महा-परिनिर्वाण दीपावली के ही दिन हुआ था। उन्होंने अपने परम-प्रिय शिष्य आनंद को बुला कर अपने अंतिम वाक्य इस रूप में कहे थे— "मृतिका का दुखमय दीप, निर्वाण को प्राप्त हो रहा है। आनंद! शोक करने का यहाँ प्रसंग ही क्या है? दुःख से मुक्ति के लिए ही तो हम यहाँ शरीर धारण करते हैं।"

महावीर स्वामी को भी दीपावली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के ही दिन निर्वाण की प्राप्ति हुई थी। महावीर की निर्वाण-प्राप्ति के उपलक्ष्य में, उत्तर भारत के काशी-कोसल के १८ राजाओं ने, मल्ल-गणतंत्र और लिच्छवि-संघ के २० राजाओं ने, एकत्र हो कर उस दिन दीपोत्सव मनाया था। सारी पावापुरी दीपों से जगमगा कर, श्वेतांबर-ग्रंथों की भाषा में यह गंभीर घोष कर रही थी :

दुमपत्तए पंडुयए जहा
निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम मा पमायए॥

—जैसे पतझड़ में ऋतु की रातों के बीत जाने पर, वृक्ष का पत्ता पीला हो कर झड़ जाता है, वैसे ही नश्वर, क्षयशील यह मनुष्य का जीवन है—न जाने कब झड़ जाये। अतः हे गौतम, क्षण भर भी प्रमाद न कर।

दुल्लहे खलु माणुसे भवे
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो
समयं गोयम मा पमायए॥

—चिरकाल के बाद भी, यह मनुष्य का जन्म अत्यंत दुर्लभ है; क्योंकि पूर्व कर्मों के विपाक प्रगाढ़ होते हैं। हे गौतम, क्षणमात्र भी प्रमाद न कर।

वोच्छिंद सिणेहमप्पणो
कुमुयं सारइयं व पाणियं।
से सव्वसिणेहवज्जिए
समयं गोयम मा पमायए॥

—जैसे कमल शरत्-काल के निर्मल पानी को भी नहीं छूता उससे अलिप्त रहता है, उसी तरह तू भी संसार के संकुचित मोह-बंधनों को छेद डाल। गौतम, एक क्षण भी प्रमाद न कर।

तिण्णोसि अण्णवं महं
किं पुण चिट्ठसि तीर मागओ।
अभितुर पारं गमित्तए
समयं गोयम मा पमायए॥

—तू महान् संसार-समुद्र को तैर चुका है। अब किनारे आ कर, मनुष्य-जन्म पा कर क्यों अटक रहा है? उस पार जाने की, जितनी भी हो सके, शीघ्रता कर।

अच्युत

अपने छोटे भीरु हाथों से
जो जीवन को माप
नीड़ बाँध निरापद
कुछेक संचित कौड़ियाँ गिनते रहते हैं,
ईर्ष्या और हिंसा के बल
यदि वे लोग तुम्हारी विशाल मूर्ति को
चिर दिन पंकलिप्त करते हैं तो करें,
इन सबसे ऊपर तुम
अन्य आकाश की ओर उन्मुख हो।
केवल एक पक्ष पहचान कर
करो मत जीवन को खंडित।
दसों दिशाओं से प्रकाश का
निःसंकोच अन्वेषण करो।

—प्रेमेंद्र मित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गौतम, क्षण भर भी प्रमाद न कर।

नवधान्य

यथार्थ-ज्ञान का शरीर अब इस पंच-भौतिक संसार में नहीं रहा; केवल पौद्-गलिक (जड़) शरीर शेष बच गया है। चैतन्य अमर हो गया, और जगत्तत्व क्षय होने जा रहा है।

जैनों के 'हरिवंश-पुराण' में बड़ा हृदय-ग्राही विवरण दिया गया है :

ज्वलत्प्रदीपालिकया प्रबुद्धया
सुरासुरैः दीपितया प्रदीप्तया।
तदा स्म पावानगरी समन्ततः
प्रदीपिताकाशतला प्रकाशते ॥
ततश्च लोकः प्रतिवर्षमादरात्
प्रसिद्धदीपालिकमत्र भारते।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं
जिनेन्द्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक् ॥

भगवान् महावीर के निर्वाणोत्सव पर सुरासुरों ने सर्वत्र महा-देदीप्यमान दीप जलाये, जिससे सारी पावा-नगरी अनुपम सौंदर्य से जगमगा उठी। सारा आकाश नयी ज्योति में आलोकित हो उठा। उस दिन से आज तक, प्रतिवर्ष दीवाली के दिन महावीर के भक्त, दीपों का उज्ज्वल अर्घ्य चढ़ा कर, जिनेंद्र-स्वामी की पूजा करते हैं।

इस प्राचीन परंपरा से, जब हम आधुनिक काल-प्रवाह में उतरते हैं, तो दो अत्यंत समुज्ज्वल दीपों की स्मृतियाँ भी, हमारे मानस में साकार हो जाती हैं। आधुनिक भारत के क्रांति-प्राण मनीषी स्वामी दयानंद ने भी, दीपावली के दिन ही अपनी पार्थिव जीवन-यात्रा समाप्त की थी।

नववस्त्र

महर्षि ने अपने सभी शिष्यों और मित्रों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को बुलवा कर सामने बिठा लिया। उन्होंने मधुर स्वर में वेद-ऋचाओं का गायन किया और फिर प्राणायाम द्वारा अपनी प्राण-वायु को एकत्र कर "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" इन शब्दों के साथ, योग की क्रिया से इहलीला समाप्त कर दी। एक ओर भारत में घर-घर की मुँडेरों पर दीप जलाये जा रहे थे; दूसरी ओर भारत का एक दीप अमर प्रकाश में परिणत हो रहा था। मृत्यु और जीवन की संधि का ऐसा आनंद-समाहित प्रसंग, भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का अनुपम-अद्वितीय प्रतीक है।

आधुनिक युग के विश्वव्यापी मानस-अंचल पर "राम बादशाह" के नाम से अंकित स्वामी रामतीर्थ का स्वर्गवास भी, दीपावली के दिन ही हुआ था। स्वामी-जी के जीवन में दीपावली का महत्व सर्वोपरि रहा है। दीपावली के दिन ही उनका जन्म हुआ, दीपावली के दिन ही उन्होंने संन्यास लिया, दीपावली के ही दिन उन्होंने शरीर त्याग किया। १९०६ के ग्रीष्म-काल में वे अपनी द्वितीय हिमाचल-यात्रा पूरी कर रहे थे। दीपावली का पर्व, पर्वतों एवं पर्वतीय उपत्यकाओं में बहती गंगा के स्नेह-मय संसर्ग में ही मनाने का निश्चय उन्होंने किया। एक कविता लिखी और रसोइये को साथ ले कर गंगा नहाने चल पड़े। एक पर्वत-शिखर पर वे चढ़े और जैसे ही पर्वतों को काटती-भागती वेगवती गंगा में कूदने के लिए आगे बढ़े, उनके पैर के नीचे का पत्थर खिसक गया और वे नीचे गंगा-माता की गोद में गिर पड़े।

यह है हमारी दीपावली की सांस्कृतिक परंपरा, जिसमें पार्थिव दीप बुझे और हमने उनकी पुण्य-स्मृतियों को अमरत्व देने के लिए, सदियों से मृत्तिका के दीप जलाये हैं। ज्योति का विसर्जन अंधकार में नहीं, प्रकाश में ही होना चाहिए; आनंद का पर्यवसान आनंद में ही होना चाहिए—यही भारत की संस्कृति का चरमोत्कर्ष है।

यह दीपोत्सव भारत में कितने वर्षों से चला आ रहा है, इस सम्बंध में स्वयं इतिहास भी मौन है। विक्रमादित्य ने दीपावली के बाद की प्रतिपदा से विक्रम-संवत् आरंभ किया था। इसी आधार पर दीपावली की प्रथा हमारे यहाँ प्रचलित है।

मुस्लिम-यात्री अलबेरूनी ने लिखा है—"हिन्दू लोग कार्तिक की अमावस्या के दिन दीपों की पूजा करते हैं और साफ-सुथरे एवं सुसज्जित घरों में दीपों की कतारें सजाते हैं। हिन्दुओं का विश्वास है कि, वासुदेव की पत्नी लक्ष्मी इस रात्रि को राजा बलि को बंधन-मुक्त करने के लिए स्वर्ग से धरा पर उतरती है।"

इस प्रकार भारतीय इतिहास के अनंत काल-प्रवाह के साथ दीपावली का अटूट संबंध रहा है। लाखों वर्षों से आचरित यह श्रेष्ठ पर्व भारतीय संस्कृति का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग है, जिसमें आनंद एवं प्रकाश की शाश्वत विजय का बड़ा मार्मिक इतिहास जगमगा रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदर्श-वध

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी-लिखित तमिल-नाटक का हिन्दी-रूपांतर

[दृश्य : १]

[किष्किंधा के निकट की अरण्य-भूमि। श्रीराम और लक्ष्मण सघन तरुओं की ओट में छिपे खड़े हैं। कुछ दूरी पर वालि और सुग्रीव मल्ल-युद्ध में निरत हैं।]

श्रीराम :— लक्ष्मण! बड़े विकट धर्म-संकट में पड़ गये हैं हम। अग्नि भगवान् की सन्निधि में, हमने सुग्रीव से मैत्री की शपथ ली थी। उसकी रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है। हम प्रतिज्ञा-बद्ध हैं; और प्रतिज्ञा का भंग नहीं हो सकता। देखो, सुग्रीव बार-बार हमें कनखियों से देखता है। फिर भी क्या करें? हमारा हाथ नहीं उठता। मन नहीं मानता कि, वालि को यों छिप कर मारें, चोरी-छिपे उस पर बाण चलायें। प्रत्यक्ष मुठभेड़ हो जाये, तो कितना अच्छा रहे। वही क्षत्रियोचित भी है। परंतु क्या करें?

लक्ष्मण :— भैया, इस समय यदि आप इस तरह आगा-पीछा सोचते रहेंगे, तो सुग्रीव, वालि के हाथों मार खा कर परलोक सिधार जायेगा और हमारी समस्त कामनाएँ धरी रह जायेंगी। दूसरे, अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा करना आपका धर्म है। हमारे आश्वासन के बल पर ही तो सुग्रीव ने अपने बड़े भाई वालि को युद्ध के लिए ललकारा है। अब वालि के हाथों उसका अंत हो, तो उसकी हत्या का पाप किसके सिर लगेगा? हमारे ही सिर पर न?

श्रीराम :— ठीक है वत्स, तुम्हारा कहना बहुत ठीक है। परंतु वह पाप हम अपने सिर पर ढोयें, यही धर्म है।

लक्ष्मण :— वह देखिए भैया! सुग्रीव प्राण लेकर भाग रहा है.....वालि पीछा कर रहा है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीराम :– महापुरुष है वालि! तभी तो सुग्रीव को प्राण-भिक्षा देकर लौट रहा है। देखो, ये दोनों भाई तो सर्वथा एक-से दीखते हैं। धनुष पर बाण चढ़ा कर मारने का उद्यम करते भी, तो हम धोखा ही खाते!

[दृश्य : २]

[ऋष्यमूक-वन। सुग्रीव हाँफता-हाँफता आता है। श्रीराम और लक्ष्मण सुग्रीव के पास आते हैं। सुग्रीव बात करना तो दूर, आँख उठा कर भी उन्हें नहीं देखता; मुँह फुलाकर भूमि पर चुपचाप आँखें गड़ाये खड़ा है।]

सुग्रीव :– (कुछ क्षणों के उपरांत) तभी तुम लोगों ने अपने मन की बात स्पष्ट कह दी होती, तो मैं मातंग-मुनि के आश्रम ही में चुपचाप पड़ा रहता और छिपे-छिपे किसी तरह अपना जीवन शांति-पूर्वक व्यतीत करता।

साहचर्य

लक्ष्मण :– भाई, क्रोध न करें!

सुग्रीव :– भाई-वाई कुछ नहीं। धूर्त हो, वंचक हो! चिकनी-चुपड़ी बातों से तुमने बहका दिया, मुझे धोखा दिया।

लक्ष्मण :– महाराज! यह क्रोध त्यागिए और हमारी सुनिए। हम धर्म-संकट में पड़ गये थे। जब आप दोनों भाई भिड़ गये, तब हम पहचान नहीं पाये कि, कौन आप हैं और कौन आपका भाई। मन में यह आशंका उठी कि, हमारे अग्रज बाण चला दें और कुछ का कुछ हो जाये तो! यही कारण था कि, धनुष की डोरी पर बाण चढ़ा लेने पर भी, उन्होंने नहीं छोड़ा। यदि उन्होंने बाण चलाया होता, तो कौन कह सकता है कि, वह आपके ही प्राणों का ग्राहक न हुआ होता। तब हमारी क्या गति होती? हम कितने भयंकर पाप-गर्त्त में गिर जाते? तनिक सोचिए तो!

सुग्रीव :– सभी कहते हैं कि, हम दोनों भाइयों की आकृति सर्वथा एक-सी है। अतः तुम्हारे कथन में भी कुछ तथ्य हो सकता है।

श्रीराम :– लक्ष्मण! मैंने अब निश्चय कर लिया है कि, पाप लगे या पुण्य, धर्म हो या अधर्म, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके ही रहूँगा। वह सामने वाली पुष्प-लता उखाड़ कर, माला बना कर वानर-राज के गले में पहना दो, जिससे मैं उन्हें पहचान सकूँ। अच्छा चलो, बालि से राजा सुग्रीव पुनः युद्ध-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संधान करें।

सुग्रीव :– आपकी बातों पर विश्वास करूँ ? वचन-पालन करना; नहीं तो इस बार बालि मेरे प्राण हर कर ही छोड़ेगा।

श्रीराम :– सुग्रीव ! विश्वास मानो; लक्ष्मण की शपथ खा कर, सीता की शपथ खा कर कहता हूँ, बालि निष्प्राण हो कर भूमितल को चूमेगा। आज तुम अवश्य ही यह दृश्य देखोगे।

[दृश्य : ३]

[किष्किंधापुरी का राजप्रासाद। अंतःपुर में बालि सुखासन पर बैठे रानी तारादेवी से सरस वार्तालाप कर रहा है।]

बालि :– सुनती हो प्रिये, सुग्रीव लौट कर ललकार रहा है ! उसका अंत-काल निकट आया दीखता है; मृत्यु उसके सिर पर नाच रही है। ...अच्छा, अब सोचने-विचारने का समय नहीं। अभी जाकर मैं उसे यमलोक पहुँचा देता हूँ।

तारा :– नहीं, नाथ ! आज नहीं। कल देखा जायेगा। उसके गरजने-तरजने से हमारा क्या बिगड़ेगा ? गरजे तो गरजने दीजिए; क्षुद्रजीव है वह।

बालि :–मुझसे यह उद्धतता नहीं सही जाती, प्रिये ! वह हुंकार भर कर मुझे द्वंद्व के लिए ललकारे, तो मैं कायरों की तरह चुप्पी साधे, यहाँ कैसे बैठा रह सकता हूँ ?

तारा:–सो तो ठीक है महाराज ! किंतु तनिक सोचिए तो। एक बार जो आपके हाथों इतना मर्दित हो कर गया है, वही पुनः लौट कर ललकार रहा है। आपके बल-पराक्रम को पूर्णतः जान कर भी ऐसा गरज

भूल

प्रतिध्वनि ने
—बिना पूछे, बिना जाने हुए ही अब
शब्दों का
सदा दुहरा दिया
जैसे उन्हें पाया ;
न आँधी ने
किसी दिन भी
हरी पत्ती उड़ाने से
किया इन्कार
यह कह कर
कि, उसका धर्म है
केवल उन्हीं का भार ढोना
धूप में जो पक चुकीं,
मुरझा चुकीं जो,
हो चुकीं जो पत्तियाँ पीली।
प्रतिध्वनि को अपेक्षा है कड़े स्वर की,
प्रभंजन चाहता है मात्र हल्कापन,
मगर
हम यह समझ बैठे
कि, रहती देर तक जो गूँजती
जो फैल जाती दूर तक
आवाज है केवल वही सच्ची !

— बालकृष्ण राव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा है कि, मानो मृत्यु को आह्वान दे रहा हो। यह क्यों? मुझे तो प्रभो! उसके इस गर्जन-तर्जन से, ऐसा प्रतीत होता है कि, वह किसी नवीन शक्ति का लाभ करके आया है। कोई प्रबल बल उसके पीछे है। तभी तो वह निर्भय हो कर मैदान में उतर आया है। अतः स्वामिन्, मेरा निवेदन है कि, जो कुछ करना है, उसे सोच समझ-कर कल कीजिए; आज नहीं।

[सुग्रीव का गर्जन पुनः सुनायी देता है।]

बालि :– नहीं तारा, नहीं। सहने की भी कोई सीमा होती है। मुझसे अब सहा नहीं जायेगा। उस दुष्ट को यों स्वतंत्र छोड़ना भी सर्वथा उचित नहीं।

[बालि चलने को उद्यत होता है, तो तारा उसके चरण पकड़ लेती है।]

तारा :– मेरी बात सुनिए! अंगद के कल्याण के लिए रुक जाइए। मुझे इसमें बिल्कुल संदेह नहीं कि, आपका भाई सुग्रीव, श्रीराम-लक्ष्मण की सहायता के बल पर ही आपको इस प्रकार युद्ध के लिए ललकार रहा है। अवश्य ही उन्होंने उसे सुदृढ़ वचन दिया है।

बालि :– क्या कहती हो तुम? अयोध्या के श्रीरामचंद्र यहाँ कब आये?

तारा :– चारणों ने अंगद को यह समाचार दिया है। वह आपके समक्ष अपना भय प्रदर्शित करना उचित नहीं समझता। मुझे तो संदेह हो रहा है। अतः आप अभी न जायें, तो अच्छा है।

बालि :– (हँसकर) यदि श्रीराम यहाँ होते तो भी, क्या वे उस भिखमंगे सुग्रीव से मैत्री करते? नहीं, नहीं। मेरे रहते सिंहासन-च्युत सुग्रीव से, अयोध्या के राजकुमार कभी मैत्री न करते। व्यर्थ की चिंता करती हो तुम! मैं जा कर अभी उस उद्धत छोकरे को पाठ पढ़ाऊँगा; तब तक मुझे नींद न आयेगी।

तारा :– नहीं, मेरे नाथ! आज नहीं, कल देखा जायेगा मेरा मन न-जाने क्यों, मना करता है। और मेरी दायीं आँख फड़क रही है। राम-लक्ष्मण और सुग्रीव में अवश्य संधि हुई

स्वाध्याय

[चित्र : नियोगी का एक रेखाचित्र]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है—यह मेरी ध्रुव धारणा है।

बालि :— तारा ! रघुकुल-चंद्र श्रीरामचंद्र कभी अधर्म-मार्ग में पग न धरेंगे। वैसे भी श्रीराम-लक्ष्मण को हमारे इस गृह-कलह में क्या रुचि हो सकती है कि, वे हस्तक्षेप करें ? मुझे तो विश्वास नहीं होता। (नेपथ्य में सुग्रीव का गर्जन सुनायी देता है) मुझे अब मत रोको। शुभ कामना के साथ मुझे विदा करो। मेरी विजय के लिए प्रार्थना करो।

[बालि की, परिक्रमा कर तारा उसकी चरण-रज माथे पर धारण करती है; फिर देवताओं को प्रणाम कर अंदर चली जाती है।]

[दृश्य : ४]

बालि :— सुग्रीव ! यदि प्राण प्यारे हों, तो अभी भी भाग जाओ। अकाल में अपनी मृत्यु को न बुलाओ !

[सुग्रीव गरजता हुआ बालि पर झपटता है और दोनों में मुष्टि-युद्ध होता है।]

लक्ष्मण :— भैया, अब क्षण-भर का भी विलंब करना उचित नहीं।

[श्रीराम धनुष पर बाण चढ़ाते हैं और बाण का ध्यान कर कहते हैं।]

श्रीराम :— हे बाणराज ! मेरे धर्म और बालि के प्राण, दोनों का हनन करने के लिए चल पड़ो। हाँ, जाओ, निकल जाओ ! (बाण चलाते हैं। बाण बालि के वक्षस्थल में प्रवेश कर जाता है।)

बालि :— आः हूँ.... यह क्या.... ?

[चारों ओर दृष्टि दौड़ा कर नीचे गिर पड़ता है। आसन्न-मृत्यु प्राणी की तरह हाथ-पाँव फैला कर, धरती पर पड़ जाता है। श्रीराम और लक्ष्मण निकट आते हैं। बालि के नेत्र उन्हीं पर स्थिर हैं। बड़ी वेदना के साथ धीमे स्वर में बालि बोलता है।]

बालि :— हे राम ! यह क्या कर दिया तुमने ? तुम वीर हो ? मैंने तुम्हारा क्या अहित किया था ? ओट में खड़े हो कर तुमने मुझे क्यों मारा ? अपनी पत्नी को पाने का, क्या यही मार्ग है ? बड़े धर्मनिष्ठ हो तुम ! तुम्हारी सारी कीर्ति ढकोसला है, छलना है। हे क्रूर वंचक ! सामने आ कर मुझसे लड़ते, तो इस समय तुम भूमि को चूम रहे होते, मेरी भाँति हाथ-पाँव फैला कर दम तोड़ रहे होते। कैसा पाप-कर्म कर डाला तुमने ? जन्म-मरण का नाता अटूट है; जो जन्मते हैं, उन्हें एक-न-एक दिन मरना ही है—यह सब जानते हुए भी तुमने मुझे अधर्म से मार डाला ! क्रूर पाप-कृत्य कर डाला ! निर्लज्ज ! तारा ने सच ही कहा था। परंतु मैंने उसे समझाया कि, तुम धर्म-परायण हो। मेरा वह कथन झूठा हो गया !.... हे सुग्रीव ! राज-पद के लोभ में पड़ कर तू ने राम को पाप के गर्त्त में ढकेल दिया ! भोग, अब जितना चाहे, उतना राज-सुख भोग !

[आँखें मुँद जाती हैं। कुछ देर बाद बड़े प्रयत्न से आँखें खोल कर, मौन खड़े श्रीराम की ओर देखता है।]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[दृश्य : ५]

[अंतरिक्ष में एक दृश्य उभर आता है। देवी पार्वती और भगवान् शिव आपस में बातें करते दिखायी देते हैं।]

शिवजी :– प्रिये ! तुम्हारे नयनों से यह अश्रुधारा क्यों ?

पार्वती :– यह दृश्य बड़ा ही करुणा-जनक है, स्वामिन् ! धर्म-संकट में श्रीराम-चंद्र किंकर्त्तव्य-विमूढ़ खड़े हैं। उनके दुःख का कोई पार नहीं है। पत्नी के वियोग का दुःख तो है ही; अब धर्म से च्युत होने का दुःख भी उन्हें साल रहा है। प्रवंचना से क्षुब्ध वालि आसन्न-मरण हो रहा है। यमलोक को जाते हुए भी, वह दुर्दमनीय क्रोध में भर कर जा रहा है ! न-जाने अब क्या होगा ?

मंगल-शिल्प

शिवजी :– प्रिये ! वह देखो, तुम्हारे मंगलमय नेत्रों से निःसृत अमृत-धारा के एक बिंदु के स्पर्श से, बालि के तन-मन दोनों प्रकृतिस्थ हो गये हैं। अब उसका चित्त पूर्णतः प्रशांत है। क्रोध और द्वेष के कल्मष के दूर होते ही, देखो उसके मुख से कैसा दिव्य सात्विक तेज फूट रहा है !

[नीचे भूलोक में, मृत्यु ग्रस्त वालि श्रीराम को देख कर कहता है।]

बालि :– हे रामचंद्र ! न जाने आपने ऐसा क्यों किया ! मेरा तो यह विचार है कि, आपकी मति विचलित हो गयी होगी। जो हो गया, सो हो गया। तरुओं की ओट में खड़े हो कर आपने मेरा प्राण-पाथेय यमराज के हाथ सौंप दिया। मुझे मृत्यु के मुख में देने का काम तो आप कर चुके; अब अपने दोष का परिज्ञान हो जाने पर, क्या आपसे यह हो सकेगा कि, मेरे निकलते प्राणों को लौटा लें ?.. नहीं, यह आपसे कभी संभव नहीं। परंतु अब ऐसा तो आप कर ही सकेंगे कि, तारा और बालक अंगद को को सुग्रीव न सता सके। इतना कर सकें, तो वही मेरे लिए पर्याप्त है। तारा ने मुझे कितना समझाया था कि, भाई-भाई में झगड़ा ठीक नहीं नहीं; दोनों आपस में मिल कर भाई बन कर रहो। परंतु मैंने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। उसी का फल आज भोगा रहा हूँ। द्वेष बड़ी भयंकर वस्तु है। दोष मेरा है, तारा का नहीं। उसे और अंगद को, मैं आपके हाथ सौंपता हूँ। यदि आपमें सचमुच वह करुणा है, जिसका गुणगान सर्वत्र होता है, तो कृपया इतना ध्यान रखें कि, मेरी तारा और मेरे अंगद का, किसी के हाथों कोई अनिष्ट न हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[तारा रोती-बिलखती हुई आती है। धराशायी बालि का सिर गोद में ले कर अतीव करुण विलाप करती है]

तारा :– हाय! मेरे वीर प्रभो! कितने वीरों का दर्प आपने धूल में मिलाया था! अब स्वयं धराशायी हो कर मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हाय, मेरे नाथ! मुझे छोड़ कर, मुझसे मुँह मोड़ कर कहाँ जा रहे हैं?

[रोता हुआ अंगद दौड़ता हुआ आता है। अब सुग्रीव के भी आँसू निकल आते हैं]

तारा :– हे श्रीराम! आप तो धर्मज्ञानी हैं। जब मेरे प्राणेश्वर परलोक के पथ पर पैर रख चुके हैं, तो मुझे मारने में कोई दोष नहीं। मुझे भी मार डालिए। अपने वीर पति से मैं स्वर्ग में मिल लूँगी। मेरी इतनी-सी सहायता कीजिए। आपको कोई पाप नहीं लगेगा। आप तो करुणा-मूर्ति हैं।

बालि :– तारा! ऐसा न कहो। अंगद की देख-रेख के लिए तुम्हें जीवन धारण करना ही चाहिए। शांति से काम लो। कर्त्तव्य से मुँह न मोड़ो! (दूर स्थित हनुमान की ओर देखकर) हे अंजनासुत! समीप आओ। मुझमें अब बोलने की शक्ति नहीं है। यह बाण मेरे प्राणों को बहुत साल रहा है। इसे शीघ्र निकाल दो। मेरे प्राणों को उसी मार्ग से निकल जाने दो। सुग्रीव, भाई मेरे! हम दोनों के भाग्य में यह नहीं लिखा था कि, परस्पर मिल कर आनंद से रहें, सुखमय जीवन व्यतीत करें। इसमें मेरा ही दोष अधिक है। तारा पर अपना क्रोध न उतारना। अंगद की देख-भाल करना; उसके पिता-तुल्य बन कर रहना। तारा के हित-वचन मानना। गुण और ज्ञान की खान है यह तारा। उसकी बातों का, भूल कर भी उल्लंघन न करना! यह लो इंद्रमाला। निर्बाध रूप से समस्त सुखों का भोग करोगे। मेरी जीवन-कथा अब पूरी हो चुकी। तुम्हारा मंगल हो, कल्याण हो– यही तुम्हें मेरा आशीर्वाद है। राम-कार्य कर कीर्ति-लाभ करना!

हनुमान :– नील! महाराज के शरीर से वह शल्य निकालो।

[नील धीरे-से बाण निकालता है। घाव से पहाड़ी झरने के समान रक्त प्रवाहित होने लगता है। बालि के प्राण-पखेरू उड़ जाते हैं।]

तारा :– हाय! मेरे स्वामी के प्राण रक्त की बाढ़ में बह गये! अंगद बेटा! समीप आओ, मेरे लाल! पिता के मुख-दर्शन अंतिम बार कर लो; और अंतिम बार उनकी चरण-रज अपने मस्तक पर लगा लो। आओ बेटा! पिता को प्रणाम करो। और श्रीरामचंद्र! आप अपनी पत्नी को पायेंगे। वानर-वृंद आपकी सहायता करेगा। अवश्य अपनी बिछुड़ी प्रिया को आप पायेंगे। परंतु मेरी आत्मा कहती है कि, यद्यपि आप सीता को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पा लेंगे, तो भी आपका दोष, आपको उनसे बिछुड़ा देगा; पा कर भी आप उन्हें न पायेंगे। मैं कामना करती हूँ कि, आपका मंगल हो।

सुग्रीव:— मेरे लोभ ने ही मुझे नष्ट किया। मेरी मति को नष्ट कर मुझे पाप-कर्म में प्रवृत्त किया और धर्मात्मा भ्राता को मृत्युलोक पहुँचवाया। मैं पापी, मैं अधर्मी क्या करूँ, हे राम? (फूट-फूट कर रोने रोने लगता है।)

श्रीराम :— लक्ष्मण! अब तक हम दूसरों के दोष से दुःख भोग रहे थे। अब हम अपने ही दोष से दुःख भोग रहे हैं।

लक्ष्मण :— भैया! विधि का लिखा कौन मेट सकता है! मैं अल्प-बुद्धि अब समझ पाया। विधि खिलवाड़ न करती, तो क्या उस दिन पंचवटी में, माता जानकी मुझे कभी उस तरह फटकार कर दूर करतीं? (गला रुँध जाता है; नयन सजल हो जाते हैं।)

[अंतरिक्ष में शिव-पार्वती परस्पर बातें करते हुए दिखायी देते हैं।]

शिवजी :— उमा! देखा, देवाधिदेव समस्त सृष्टि को किस प्रकार कठपुतली का नाच नचाता है? उसकी इच्छा के बिना कहाँ क्या होता है!

पार्वती:— परंतु नाथ, तारा का दुःख मुझसे देखा नहीं जाता!

शिवजी :— तारा अब से व्रतमय जीवन बितायेगी और उसका ज्ञान दिनों-दिन अधिक विमल होता जायेगा। प्रिये! तुम्हारा आशीष सबको शांति प्रदान करेगा; माया और मोह के पाश से उन्हें छुड़ायेगा। तारा को आशीष दो कि, उसका यश संसार में शाश्वत रहे। रावण के पाप-पुंज के विनाश के लिए ही यह सब हुआ है। अपना समस्त तपोबल वह स्वयं खा गया है। उसका विनाश-काल निकट आ गया है। परंतु राम-बाण के स्पर्श से पुनीत हो कर, वह भी स्वर्ग पहुँच कर शाश्वत शांति पायेगा।

✱

१९०५ की बात है। उन दिनों समुद्र-यात्रा करना हिन्दू-समाज में पाप समझा जाता था, पर लोकमान्य तिलक इसे पाप नहीं मानते थे। एक बार वे काशी गये, और वहाँ के तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ पण्डित से, जिन्हें महामहोपाध्याय की उपाधि प्राप्त थी, मिले। वे लोटा हाथ में लिये और जनेऊ कान पर चढ़ाये खड़े थे। वहीं खड़े-खड़े उन्होंने तिलकजी से उनके आने का उद्देश्य पूछा। सुनकर बोले—"व्यवस्था तो मिल जायेगी, पर पाँच हजार रुपये लगेंगे।"

"निश्चिन्त रहिए, मुझे आपकी व्यवस्था खरीदनी नहीं है!" तिलकजी ने तुरन्त कहा और उल्टे पाँव लौट आये।

✱

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

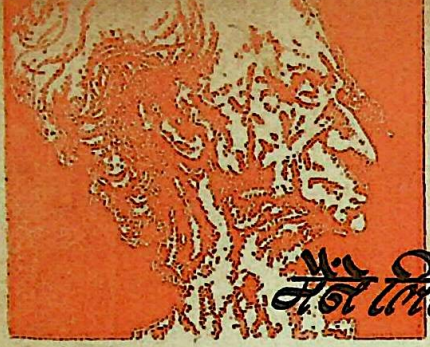

मैंने लिखना कैसे सीखा

इस दुस्साहस के रास्ते पर एक भी कदम आगे बढ़ूँ, उससे पहले यह बता देना जरूरी समझता हूँ कि, गणित-शास्त्र मेरा सर्वस्व है। जो भी मैं सोचता हूँ और करता हूँ, उस सबके मूल में गणित का अंकुश रहता है। जब मैंने लिखने का संकल्प किया, तो गणित का यह नियंत्रण भी मेरे साथ था। मैं प्रत्येक बात को थोड़े-से गिने-चुने शब्दों में कहना चाहता था। अस्पष्टता और दुविधा मुझे पसंद नहीं थी– मेरा आग्रह था कि, सरल और सूत्र रूप से बात कह दी जाये, चाहे उसमें साहित्यिक रसार्द्रता न आ पाये।

इक्कीस बरस की उम्र हुई, तो अपने बहनोई लोगन स्मिथ से मैंने लिखना सीखना शुरू किया। उन्होंने मुझे बताया कि, एक बार लिखे को बार-बार दोहराना चाहिए। मगर यह तो मेरे लिए सरदर्द हो गया–हालत यह हो गयी कि, मैं महीनों तक लिख-लिख कर कागज ही फाड़ता रह गया, कुछ लिख ही न सका। बाद में मुझे इसका कारण मालूम हुआ कि, मैं पढ़ता कुछ नहीं था, ज्ञान के मेरुदंड के बिना ही लिखने बैठ जाता था। मगर इस अनुभूति ने भी मुझे कम परेशान नहीं किया–अब मेरे लिए पढ़ना ही सब-कुछ हो गया था; लिखने का तकाजा ही नहीं होता था। पढ़ने में मेरा चित्त इतना लीन रहने लगा कि, प्रायः मैं शरीर की सुध ही भूल जाता था। अगर एक पुस्तक लिखने की मजबूरी न आती, तो मैं स्वाध्याय की स्वर्ग-वीथियों में ऐसे ही विचरता रहता। जब मैंने यह किताब अपने स्टेनो को लिखवायी और मेरे मित्रों ने उसे पढ़ा, तो मेरे गद्य पर सबको आश्चर्य हुआ–प्रकाशकों में होड़ लग गयी।

शैली लेखक की आत्मा है; और यह आत्मा तभी अक्षरों में अंकित होने को आतुर होती है, जब कि व्यक्ति का अर्जित ज्ञान उसे अभ्यस्त बैठने नहीं देता–अपनी पहली पुस्तक से मैंने यही सबक सीखा और आज भी यह सबक मेरे सामने वैसा ही तरोताजा है–केवल मेरे लिए ही क्यों, मेरे-जैसे ऐसे कई लोगों के लिए, जो अच्छा गद्य लिखना चाहते हों। पद्य की शक्ति और प्रभावोत्पादकता से मैं परिचित हूँ; मगर गद्य के संयम-संयत प्रवाह में अर्थ की जो यथार्थता होती है, आज के युग की तो वही रसात्मकता है।

—बर्ट्रेंड रसेल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मी का प्रिय आवास

जापान में नववधू को आशीर्वाद दिया जाता है– "तुमे, आओ! इस घर को अपने तप से ऐसा सँवारो कि, सुमंगला लक्ष्मी यहाँ सदैव निवास करे।" अब भारतीय परम्परा में प्रचलित विश्वास की झलक गंगाशंकर मिश्र-लिखित इस लेख में देखिये।

*

कई हजार वर्ष पहले की बात है। कुरुक्षेत्र के मैदान के एक शिविर में, भीष्मपितामह शर-शय्या पर पड़े हुए थे। महाराज युधिष्ठिर ने पूछा—"भारत श्रेष्ठ, कैसे पुरुष में और किस तरह की स्त्रियों में लक्ष्मी निवास करती है।" भीष्म ने उत्तर दिया कि, इस विषय में एक यथार्थ वृत्तान्त मैंने जैसा सुना है, उसी के अनुसार तुम्हें बता रहा हूँ। देवकीनंदन श्रीकृष्ण के समीप रुक्मिणी देवी ने साक्षात् लक्ष्मीजी से यही प्रश्न पूछा था, उसका उत्तर उन्होंने इस प्रकार दिया —

"मैं प्रतिदिन ऐसे पुरुषों में निवास करती हूँ, जो सौभाग्यशाली, निर्भीक, कार्यकुशल, कर्मपरायण, क्रोधरहित, देवाराधना-तत्पर, कृतज्ञ, जितेन्द्रिय तथा बढ़े हुए सत्व गुण से युक्त हों। जो पुरुष अकर्मण्य, नास्तिक, वर्णसंकर, कृतघ्न, दुराचारी, क्रूर, चोर तथा गुरुजनों के दोष देखनेवाला हो, उसके भीतर मैं निवास नहीं करती। जिनमें तेज, बल, सत्व और गौरव की मात्रा बहुत थोड़ी है, जो जहाँ-तहाँ हर बात में खिन्न हो उठते हैं, जो मन में दूसरा भाव रखते और ऊपर से कुछ और ही दिखलाते हैं, ऐसे मनुष्यों में, मैं निवास नहीं करती। जो अपने लिए कुछ नहीं चाहते, जिनका अंतःकरण मूढ़ता से आच्छन्न है, जो थोड़े में ही संतोष कर लेते हैं, ऐसे मनुष्यों में भी मैं भलीभाँति नित्य निवास नहीं करती हूँ। जो स्वभावतः स्वधर्म-परायण धर्मज्ञ, बड़े-बूढ़ों की सेवा में तत्पर, जितेन्द्रिय, मन को वश में रखनेवाले, क्षमाशील और सामर्थ्यशाली हैं, जो अपने समय को व्यर्थ नहीं जाने देते हैं, सदा दान एवं शौचाचार में तत्पर रहते हैं, जिन्हें ब्रह्मचर्य, तपस्या, ज्ञान, गौ और द्विज परम प्रिय हैं, ऐसे पुरुषों में मैं निवास करती हूँ।

"जो स्त्रियाँ स्वभावतः सत्यवादिनी तथा सरलता से संयुक्त हैं, जो देवताओं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और द्विजों की पूजा करने वाली हैं, उनमें भी मैं निवास करती हूँ। जो स्त्रियाँ कमनीय गुणों से युक्त, घर के बरतन-भांडे शुद्ध तथा स्वच्छ रखने वाली एवं गोसेवा तथा धान्य-संग्रह में निपुण-तत्पर होती हैं, उनमें मैं सदा निवास करती हूँ। जो घर-बरतन सुव्यवस्थित रूप में से न रख कर, इधर-उधर बिखेरे रहती हैं, सोच-समझ कर काम नहीं करती, सदा अपने पति के प्रतिकूल ही बोलती हैं, दूसरों के घरों में घूमने-फिरने में आसक्त रहती हैं और लज्जा सर्वथा छोड़ देती हैं, उन्हें मैं त्याग देती हूँ। जो स्त्री चटोर, धैर्यहीन, कलहप्रिय, नींद में बेसुध हो कर सदा खाट पर पड़ी रहने वाली होती है, ऐसी नारी से सदा दूर-ही-दूर रहती हूँ।

"सुन्दर सवारियों, कुमारी कन्याओं, आभूषणों, यज्ञों, वर्षा करने वाले मेघों, खिले हुए कमलों, शरद ऋतु की नक्षत्र मालाओं, हाथियों तथा गोशालाओं, सुन्दर आसनों एवं उत्पल और कमल से सुशोभित सरोवरों में मैं सदा निवास करती हूँ। जहाँ हंसों की मधुर ध्वनि गूजती रहती है, क्रौंच पक्षी के कलरव जिनकी शोभा बढ़ाते हैं, जो तटों पर फैले हुए वृक्षों की श्रेणियों से शोभायमान हैं, जिनके किनारे तपस्वी, सिद्ध और ब्राह्मण निवास करते हैं, जिनमें बहुत जल भरा रहता है, तथा सिंह और हाथी जिनके जल में अवगाहन करते हैं, ऐसी नदियों में भी मैं नित्य निवास करती हूँ। जिस घर में लोग अग्नि में आहुति देते हैं, समय-समय पर जहाँ फूलों से देवताओं को उपहार अर्पित किये जाते हैं, उस घर में मैं नित्य निवास करती हूँ। सदा वेदों के स्वाध्याय में तत्पर रहने वाले ब्राह्मणों, स्वधर्म-परायण क्षत्रियों, कृषिकर्म में लगे वैश्यों और नित्य सेवा-परायण शूद्रों के यहाँ भी मैं सदा निवास करती हूँ। संक्षेप में, मैं मूर्त्तिमती एवं अनन्यचित्त होकर, भगवान् नारायण में ही संपूर्ण भाव से निवास करती हूँ; क्योंकि उनमें महान् धर्म सन्निहित है। मैं नारायण के अतिरिक्त अन्यत्र शरीर में निवास नहीं करती। मैं यहाँ ऐसा नहीं कह सकती

स्पेन की लोक-परम्परा में भूमि ही श्री-शक्ति है, लक्ष्मी है। बीजारोपण के समय वहाँ लक्ष्मी-पूजा का प्रचलन है। प्रस्तुत चित्र इसी पर्व-पूजा का द्योतक है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि, सर्वत्र इसी रूप में रहती हूँ। जिस पुरुष में भावना द्वारा निवास करती हूँ वह धर्म, यश धन और काम से सदा संपन्न हो कर सदा बढ़ता रहता है।"

यह प्रसंग अनुशासन-पर्व का है। एक ऐसा ही प्रसंग शांति-पर्व में भी आया है। जब इंद्र ने ब्रह्मा का रूप धर कर, प्रह्लाद से शील माँग लिया, तब लक्ष्मी ने यह कह कर उन्हें छोड़ दिया कि, तुमने शील के ही द्वारा तीनों लोकों पर विजय पायी थी; अब इन्द्र ने तुम्हारा शील अपहरण कर लिया; धर्म, सत्य, सदाचार, बल और मैं लक्ष्मी—ये सब सदा शील के ही आधार पर रहते हैं। शील ही इन सबकी जड़ है, इसमें संशय नहीं। दैत्यों को त्याग कर लक्ष्मी इंद्र के यहाँ पहुँची, तो इंद्र ने पूछा—"देवी, आपने दैत्यों का परित्याग किस लिए किया?" लक्ष्मी ने उत्तर दिया—"पहले दैत्य लोग दान, अध्ययन और यज्ञ-याग में संलग्न रहते थे। देवता, गुरु, पितर और अतिथियों की पूजा करते थे। उनके यहाँ सत्य का भी पालन होता था। वे अपना घर-द्वार झाड़-बुहार कर साफ रखते थे। अपनी स्त्री का मन प्यार से जीत लेते थे। उनमें श्रद्धा थी। वे क्रोध को भूल चुके थे, दूसरों के गुण में दोष-दृष्टि नहीं रखते थे और ईर्ष्या-रहित थे। दूसरों की समृद्धियों से उनके मन में संताप नहीं होता था। वे कर आदि द्वारा धन-संग्रह करते तथा आर्य—जनोचित आचार-विचार करते थे। वे दया करना जानते थे। वे सरल स्वभाव और दृढ़तापूर्वक भक्ति रखनेवाले थे, कृतज्ञ और मधुर-भाषी थे। सबका समुचित रूप में सम्मान करते, सबको धन देते, लज्जा का सेवन और व्रत एवं नियमों का पालन करते थे। वे सदा ही स्नान करते, अंगों में चंदन लगाते और सुंदर अलंकार धारण करते थे। वे सबके विश्वास-पात्र थे। प्रातःकाल कभी सोये नहीं रहते थे। रात के आधे भाग में ही सोते थे और दिन में नहीं सोते थे। कृपण, अनाथ, वृद्ध, दुर्बल, रोगी और स्त्रियों पर दया करते तथा उन्हें अन्न और वस्त्र बाँटते थे। त्रस्त, विषादग्रस्त, उद्विग्न,

"परिवार के स्वाद को थाम, जिस शीला भार्या ने सबके पेट को तृप्त कर दिया, उससे गृह का स्वामित्व कौन छीन सकेगा?" — स्थानी कहावत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयभीत, दुर्बल और पीड़ित को तथा जिसका सर्वस्व लुट गया हो, ऐसे मनुष्य को वे सदा ढाढ़स बँधाया करते थे। वे अकेले बढ़िया भोजन नहीं करते थे; पहले दूसरों को दे कर पीछे अपने उपभोग में लाते थे। सब प्राणियों को अपने ही समान समझ कर, उनपर दया रखते थे। नित्य दान, चतुरता, सरलता, उत्साह, अहंकार-शून्यता, परम सौहार्द सभी सद्‌गुण उनमें सदा मौजूद रहते थे। निंदा, तंद्रा, अप्रसन्नता, दोषदृष्टि, अविवेक, अप्रीति, विषाद और अति-कामना आदि दोष उनके भीतर प्रवेश नहीं कर पाते थे।"

लक्ष्मीजी ने आगे कहा—"इस प्रकार उत्तम गुणवाले दानवों के पास सृष्टिकाल से ले कर, अब तक मैं अनेक युगों से रहती आयी हूँ; किंतु समय के उलट-फेर से उनके गुणों में विपरीतता आ गयी। उनमें धर्म नहीं रह गया। वे काम और क्रोध के वशीभूत हो गये। जब बड़े-बूढ़े लोग सभा में बैठ कर कोई बात कहते हैं, तब गुणहीन दैत्य उनमें दोष निकालते हुए, उन सब वृद्ध पुरुषों की हँसी उड़ाया करते हैं। ऊँचे आसनों पर बैठे हुए नवयुवक दैत्य, बड़े-बूढ़ों के आने पर पहले की भाँति न तो उठ कर खड़े होते हैं और न प्रणाम करके उनका आदर-सत्कार ही करते हैं। बाप के रहते ही बेटा मालिक बन बैठता है। वे शत्रुओं के सेवक बन कर, अपना वह कर्म निर्लज्जता-पूर्वक दूसरों के सामने कहते हैं। धर्म के विपरीत निंदित कर्म के द्वारा जिन्हें महान् धन मिल गया है, उनकी उसी प्रकार धनोपार्जन करने की अभिलाषा बढ़ गयी है। दैत्य रात में जोर-जोर से हल्ला मचाते हैं। पुत्रों ने पिताओं पर और स्त्रियों ने पतियों पर अत्याचार आरंभ कर दिया है। गुरुत्व होते हुए भी माता-पिता, वृद्ध पुरुष, आचार्य, अतिथि और गुरुजनों का भी अभिनंदन नहीं करते हैं। संतान के लालन-पालन पर भी ध्यान नहीं देते हैं। वे तथा उनके रसोइए मन, वाणी और क्रिया द्वारा शौचाचार का पालन नहीं करते। वे दूध बिना ढँके ही छोड़ देते हैं और घी जूठे हाथों ही छू देते हैं। उनकी स्त्रियाँ घर में इधर-उधर बिखरे हुए कुदाल, हँसुआ,

भरतवाक्यम्

परस्परविरोधिन्योरेकसंश्रयदुर्लभं
संगतं श्रीसरस्वत्योर्भूतयेऽस्तु सदासताम्।
अवंस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु।

—पारस्परिक समवाय में दुर्लभ एवं सदैव एक-दूसरे से विमुख रहनेवाली सरस्वती और लक्ष्मी एक मन होकर सज्जनों के कल्याण में निरत रहने लगें। सबके संतापों का शमन हो जाये, सब फूलें-फलें, सबके मनोरथ पूर्ण हों एवं जगत् में सर्वत्र सुख-ही-सुख व्याप्त हो जाये।

—कालिदास : 'विक्रमोर्वशीयम्'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिटारी, काँसे के बरतन तथा अन्य सामानों की देख-भाल नहीं करतीं। उनके गाँवों की चहार-दीवारी तथा घर गिर जाते हैं; परंतु वे उनकी मरम्मत नहीं करते। छोटे बच्चे आशा लगाये देखते रहते हैं और बड़े लोग खाने की चीजें स्वयं खा लेते हैं। सेवकों और अन्य कुटुम्बी जनों को भूखे छोड़ कर, वे स्वयं खाने लगते हैं। वे सूर्योदय होने तक सोने लगे हैं। प्रातः काल को भी रात ही समझते हैं। उनके घर-घर में दिन-रात कलह मचा रहता है। वे दान दी हुई वस्तु भी वापस ले लेते हैं। विवादग्रस्त संपत्ति को, यदि कोई अपने मित्र को सौंपता है, तो वह मित्र अपने थोड़े-से स्वार्थ के लिए, वह संपत्ति चौपट कर देता है। दानवों के यहाँ जो व्यापारी हैं, वे सदा दूसरों का धन ठग लेने का ही विचार रखते हैं। जब पिता और माता उत्सवशून्य की भाँति थक जाते हैं, तब घर में उनकी कोई प्रभुता नहीं रह जाती। बूढ़े दंपति बेटों से अन्न की भीख माँग कर जीते हैं।"

अन्त में लक्ष्मी ने कहा –"देवेंद्र, जब से इन दैत्यों ने धर्म से विपरीत आचरण अपनाये, तब से मैंने यह निश्चय कर लिया है कि, मैं अब इनके घर में नहीं रहूँगी। देवेश्वर, इसीलिए मैं तुम्हारे यहाँ आयी हूँ। जहाँ मैं रहूँगी, वहाँ मेरे साथ आशा, श्रद्धा, धृति, शांति, विजिति, संमति, क्षमा, और जया, ये आठ देवियाँ अवश्य रहेंगी।"

एक लम्बे प्रसंग का यह सारमात्र है। संक्षेप में इसके द्वारा कितनी बातों का उपदेश कर दिया गया है। कहा जा सकता है कि, "लक्ष्मी की कृपा तो आजकल चोर-बाजारी और धोखाधड़ी करनेवालों पर ही अधिक देख पड़ती है।" पर यह भ्रम है। धन का प्रलोभन दिखा कर अंततः वह उन्हें भिखारी बना देती है। फिर लक्ष्मी का प्रतीक धन ही नहीं, इसी प्रसंग में लक्ष्मी ने स्वयं इंद्र को बतलाया कि, "मैं श्री हूँ, मैं भूति हूँ, मैं श्रद्धा, मेधा, संमति, विजिति, स्थिति, धृति, सिद्धि, कांति, समृद्धि, स्वाहा, स्वधा, संस्तुति, नियति, और स्मृति हूँ।" आजकल योजनाओं पर अरबों रुपये खर्च किये जा रहे हैं। पर सफलता नहीं मिलती। जीवन-स्तर उच्च बनाने का प्रयत्न होता है, पर वह गिरता जा रहा है। जनसाधारण की प्राथमिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं हो रही है। व्यक्ति असंतुष्ट और दुःखी है। ऐसा क्यों? इसका उत्तर इस संवाद में मिलता है। महाराज युधिष्ठिर ने जब भीष्मजी से पूछा– "जिस पुरुष का उत्थान या पतन होने वाला होता है, उसके पूर्व-लक्षण कैसे होते हैं?" तब भीष्मजी ने इंद्र-लक्ष्मी का यह संवाद सुनाते हुए कहा –"जिस पुरुष का उत्थान या पतन होने को होता है, उसका मन ही उसके पूर्व-लक्षण प्रकट कर देता है। अभ्युदय-पराभव के लक्षण इससे स्पष्ट हो जाते हैं। तुम्हें स्वयं सोच-विचार कर इसकी यथार्थता का निश्चय करना चाहिए।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औरों को हँसते देखो मनु
हँसो और सुख पाओ

जीवन पर बुद्धि के आत्यंतिक स्वामित्व ने ज्ञान एवं कर्म के बीच जो अगणित आत्म-संहारी विघटन प्रस्तुत कर दिये हैं, जयशंकर 'प्रसाद' ने श्रद्धा की सर्वोच्च प्रतिष्ठा के द्वारा, उनके उन्मूलन का मार्ग में खोज कर हमारी लक्ष्य-भ्रांत जीवन-यात्रा को फिर से भारतीय तत्वचिंतन के अक्षय आनंद-स्रोत की दिशा में प्रवृत्त कर दिया है। इन्हीं कविवरेण्य प्रसादजी की दिनचर्या के दर्शन राय कृष्णदासजी ने यहाँ कराये हैं।

जब प्रसाद जी से मेरा सान्निध्य हुआ, १९१० के लगभग, तब वे कसरत-कुश्ती छोड़ चुके थे। पहले वे अनेक डंड करते और, हजारों हाथ मुगदर फेरते थे। फिर भी उस समय वाला उनका एक दैनिक क्रम बराबर बना रहा, प्रायः आजीवन बना रहा—मालिश कराना। वे नित्य प्रातः काल नियमपूर्वक मालिश कराते। मालिश के बाद वे स्नान करते, तदुपरांत अपने पैतृक शिवाले में, जो घर के सामने ही है, जाकर शिवार्चन करते। पीछे से नहाने के बाद कुछ देर तक ध्यानस्थ हो, उपनिषद्-पाठ और आत्मचिन्तन किया करते।

प्रसादजी

उनका दूसरा दैनिक नियम था, जो बीमारी छोड़ कर सदा निभा—सायंकाल के समय दूकान जाना।

उनका एक तीसरा नियम भी था—लिखना। यद्यपि यह दैनिक न था, फिर भी जीवन के अधिकांश दिवस वे लिखा किये। किन्तु उन्हें किसी ने, कम-से-कम मैंने, कभी लिखते न देखा; क्योंकि वे अपनी सब रचनाएँ बड़े तड़के वा पिछली रात उठ कर करते। कभी-कभी रात में भी लिखते उन्हें लोगों ने देखा था।

इसके अतिरिक्त उनकी दिनचर्या प्रायः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बदलती रही। जब हमारा आरंभिक मिलन हुआ, तब वे प्रातःकाल आपने कारखाने का काम देखते। उच्चकोटि की जरदा, तम्बाकू, सुरती आदि के उनके पारंपरिक नुस्खे थे, जो कुल के ही व्यक्ति जानते। उस समय कुल में एक प्रसादजी थे। उनके प्रशस्त आँगन में एक लंबी दालान है, जिसके एक सिरे पर तख्तबंदी करके एक छोटी-सी कोठरी बनी है, जो सुगंधियों का खजाना कही जा सकती है। इसमें केसर, कस्तूरी, अंबर, तरह-तरह के अत्तर, गुलाबजल, केवड़ाजल एवं अनेक सुगंध-द्रव्य भरे रहते। इसी में प्रविष्ट होकर, द्वार बंद करके, वे उन मिश्रणों को तैयार करते, जो उच्च कोटि की सुरती और तम्बाकू में पड़ते। तब वे मिश्रण कारखाने में दिये जाते, जिसमें अनेक व्यक्ति काम किया करते।

अशोक-वाटिका में
तपःपूत श्रद्धा : सीता

कारखाने का एक दूसरा भाग भी था, जिसमें अंजन-घर और चक्कियाँ थीं। मशीन से तंबाकू के पत्ते और डंठल पीसे जाते, सुँघनी बनाने के लिए तथा खाने-पीने की सुरती के लिए। इस कारखाने का निरीक्षण भी वे प्रातःकाल ही करते।

इसके बाद दरबार जमता। कभी-कभी प्रातःकाल भंग भी छनती। उनके दरबार में तरह-तरह के व्यक्ति आया करते — साहित्यिक, असाहित्यिक, अनेक प्रकार के गुणी तथा व्यावसायिक लोग भी।

भोजन वे जल्दी ही कर लेते और यदि जाड़े के दिन होते, तो भोजन करते ही पान खाते हुए, अपनी घोड़ा गाड़ी पर निकल पड़ते। पान खाने का क्रम उनका प्रातःकाल से ही चलता, जो भोजन के कुछ पूर्व स्थगित हो जाता, फिर रात तक चला करता। पहले तो सोते भी, पान मुँह में रक्खे हुए, पीछे से सोने के पहले मुँह साफ कर दिया करते।

हाँ तो, जाड़ों म भोजनोत्तर, दोपहर में नित्य बगीचे पहुँचते, जो उनके घर से कोई दो मील था। वहाँ अपनी गाड़ी छोड़ देते, मेरी फिटन तैयार रहती, उसी पर हम लोग घूमने जाते। बनारस के आस-पास वाली सड़कों पर, जो प्रयाग और गाजीपुर जाती हैं, हम लोग धूप खाते हुए तरह-तरह का आलाप करते, प्राकृतिक शोभा देखते हुए, छह-छह आठ-आठ मील चले जाते। उनके संग कोई-न-कोई मुसाहब भी होता, साहित्यिक वा असाहित्यिक।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रायः हम लोग सारनाथ या उसके पास वाले उस तूदे पर जाते, जो किसी समय एक बहुत बड़ा विहार था और जो प्रसादजी की अमर कहानी 'ममता' की रंगभूमि एवं पृष्ठभूमि है।

ये काशी के उपान्त वाले स्थल, चाहे सारनाथ-सरीखे प्राचीन संस्कृति से सम्बंध रखनेवाले हों, चाहे खेतबारी हों, चाहे लाल पोखरे हों, उनके अंतस्तल में सन्निविष्ट हो गये थे और इनमें से प्रत्येक मुखर होकर, अपनी एक-एक कहानी उन्हें सुनाता, जिन्हें हम उनकी रचनाओं में पाते हैं।

ऊपर सुखद धूप, नीचे सड़क के दोनों ओर सरसों के फूल से बसंती खेत, उसके कुछ ही दिनों बाद आम्र-मुकुल से सुरभित दिगंत का आनंद लेते हुए, हम दिन रहते बगीचे लौटते और उसके बाद वे अपने घर चले जाते और मैं अपने।

वहाँ प्रायः नित्य भंग छनती और वे अपनी मंडली के साथ दूकान चले जाते जहाँ खूब आमोद-प्रमोद रहता। फिर घर लौट कर ब्यालू करते, जिसके साथ यह दिनचर्या समाप्त होती।

इसके कुछ पहले संध्या का एक दूसरा क्रम था। तब दोपहर का घूमना न होता। संध्या समय घर से तैयार हो कर वे नागरी प्रचारिणी सभा आते और मैं भी अपने शहर वाले मकान से वहाँ पहुँचता। उन दिनों सभा के पुस्तकाध्यक्ष थे श्री स्व० केदारनाथ पाठक, जो हिन्दी-जगत् के एक अनूठे व्यक्ति थे। हिन्दी की गति-विधि तथा प्रकाशनों का उन्हें अगाध ज्ञान था। नये लेखक तैयार करने में वे एक थे और सर्वोपरि बड़े अच्छे मित्र थे। वहाँ उनके साथ हम लोगों की बैठक जमती और प्रचुर साहित्य-चर्चा होती। फिर प्रसादजी दूकान चले जाते, मैं घर लौट जाता या कभी बगीचे चला जाता।

परिस्थितियों और स्वास्थ्य के कारण इस दैनिक क्रम में, वे परिवर्तन करते गये। अब भोजनोत्तर वे घर पर ही विश्राम करते, संभवतः कुछ लिखते भी। तीसरे पहर मैं उनके यहाँ प्रायः पहुँचता और वहाँ की लंबी बैठक के बाद वे दूकान चले जाते, कभी-कभी मैं भी उनके साथ होता।

अब दूकान का समाज बदल रहा था। प्रसादजी साहित्य में आगे आते जा रहे थे और दूकान क्रमशः एक साहित्यिक तीर्थ बनती जा रही थी।

१९२० में भारत कला-भवन स्थापित हुआ और उसका प्रथम कार्यालय काशी के गोदौलिया नामक मुहल्ले में स्थित हुआ। यह स्थान यहाँ के प्रसिद्ध दशाश्वमेघ घाट के निकट है। मैं तीसरे पहर वहीं जाने लगा।

घर से दूकान जाते हुए, प्रसादजी तनिक-सा बढ़ कर, कला-भवन के कार्यालय में आ पहुँचते। अब नित्य ही वहाँ दो-तीन घण्टे की बैठक होती, जहाँ साहित्य के साथ-साथ कला और संगीत विषयक विचार-विनिमय भी हुआ करते।

कला-भवन का वह कार्यालय किराये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर था। कुछ दिनों में मालिक मकान ने उसे खाली करा दिया। तब संध्या समय हम अपने घरों पर मिला करते। नागरी प्रचारिणी सभा का आना-जाना कभी का छूट चुका था।

प्रसादजी के शरीर में रोग घर किये जा रहा था। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि, क्या बीमारी है? घबराहट, पेट में दर्द, भोजनोपरांत भारीपन उन्हें अब सताने लगा था।

अब अपने जीवन को उन्होंने अत्यंत नियमित बना लिया था। घर के पास ही बेनिया पार्क में, वे नित्य प्रातःकाल टहलने जाते। इस चंक्रमण में उनका साथ प्रेमचंद से हुआ करता, जिनका निवास स्थान बेनिया से सटा हुआ था। दोनों साहित्यिकों की दिशाएँ बिल्कुल अलग थीं, क्या भाव में, क्या भाषा में। फिर भी उन लोगों की गाढ़ी छनती और वे एक दूसरे के पूरक हो जाते।

प्रसादजी ने दोपहर का भोजन बहुत नपा-तुला कर दिया था। भोजन के बाद टहलते हुए मेरे घर चले आते। मैं कुछ देर से भोजन किया करता, ज्यों ही हाथ धोकर अपने कमरे में पहुँचता कि, सुनायी देता—"दादाजी आदाब!"

मेरे यहाँ एक गुरुजन रहा करते, जो नाते में मेरे दादा होते—बड़े साहित्य-प्रेमी, अतिशय सहृदय। प्रसादजी उक्त शब्दों से उनका अभिवादन करते और फिर उन्हीं के कक्ष में बैठक जमती। यदि गर्मी के दिन होते, तो नित्य हम गंगा-स्नान को चले जाते। प्रसादजी ने स्वास्थ्य के कारण भंग छोड़ दी थी। शर्बत-ठंढई का ही सिलसिला तीसरे पहर रहता। अक्सर हम लोग आचार्य केशवजी के यहाँ पहुँचते।

संध्या को दूकान पर दरबार, जैसा अभी कह आया हूँ। दूकान एक साहित्यिक तीर्थ-स्थल थी। कितने ही जिज्ञासु, कितने ही उगते साहित्यिक, कितने ही प्रमुख साहित्यकार वहाँ पहुँचते, वहाँ जुड़ते। प्रसादजी पान खाते जाते, समवेत मंडली को खिलाते जाते और साहित्यक चर्चा तथा मनोविनोद होता रहता। उदीयमान साहित्यिकों को आगे बढ़ाने का प्रसादजी में बहुत बड़ा गुण था। प्रसाद-युग के अनेक साहित्यिकों का निर्माण, इस दूकान वाले समाज में ही हुआ।

पिछले दिनों में वे कमजोर हो गये थे। किसी समय का 'मल्ल कवि' अब उसकी परछाईं-भर रह गया था। अब वे दिन में स्वल्पाहार के बाद निकलते नहीं। सन् १९२८ से नागरी प्रचारिणी सभा से उनका सम्बंध पुनः जुड़ गया था, जो आजीवन बना रहा। कला-भवन भी १९२९ में वहीं चला गया था। उनका दैनिक जीवन-क्रम, घड़ी की भांति नियमित चल रहा था, किन्तु बीमारी ने शरीर को भीतर-भीतर चाल डाला था। ठीक-ठीक निदान कि क्षय है, तब हुआ, जब समय बीत चुका था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गतिमंत्र

जो कुछ भी जीवित है उसमें गति है ।
गतिहीन विगत, गतिहीन अनागत
इसीलिए वे प्राणहीन, अविचारणीय ।
वर्तमान जीवित है अपनी गति के कारण
वर्तमान के साथ-साथ चल सकने का सबको सुयोग
गतिहीन विगत से बहुत करो तो शिक्षा ले लो,
वह परकीय विचार, कर्म, वाणी का लेखा
धुँधला, जीर्ण-अजीर्ण, रंगीला अथवा फीका
हम अवकाश क्षणों में उससे बातें कर लें,
किंतु काम के क्षण उस पर किस लिए गुजारें ?
अपना जीवन, अपनी गति, अपनी वैचारिक शक्ति
आज के क्षण-क्षण पकड़े ।
चकाचौंध हर वर्तमान के क्षण की
दीपावली-सरीखी मन पर खींचे रेख
और मैं रंग से भर कर उस रेखा को
धर दूँ उनके आगे जो जागे हैं
उषाकाल की रंगीनी के बीच अनालस
अनथक दोपहरी भर दौड़ हैं जो पथ पर
सांझ सुनहली उनके ओंठों पर स्वाभाविक स्वर न सँवारे अगर
तो जीवित वर्तमान भी नहीं रहेगा ।
स्वर है गति की मुहर ओंठ पर ।
काल-कोष से
वर्तमान असि हो कर भी यदि बाहर निकले
अपने ओंठ गीत ही गायें ।
असिधारा पर
विगत, अनागत दोनों को हम चरण बनाय, धरें-उठायें ।

—भवानीप्रसाद मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीर का ऋणी सारा एशिया है

कश्मीर के सांस्कृतिक प्रज्ञान का उद्‌गाता यह प्रबंध एशिया की अंतश्चेतना पर पुनः श्रेयस को पल्लवित करे—आइये, आप-हम इस सांस्कृतिक पर्वोत्सव के पुण्य-प्रभात में यह कामना सँजोयें!

कल्हण की 'राजतरंगिणी' के अनुसार वर्तमान कश्मीर उपत्यका के स्थान पर, पहले एक विशाल झील थी; कश्यप मुनि ने उसे सुखा कर भूमि निकाली। इसी आधार पर कश्मीर के पुराण-मार्गीय पंडित, आज भी "काश्मीर" शब्द की उत्पत्ति कश्यप-ऋषि से मानते हैं। इतिहासकार इस मान्यता से सहमत नहीं हैं।

कल्हण के अनुसार, कश्मीर के आदि-निवासी "नाग" जाति के थे, जो पामीर से ले कर, सारे मध्य-एशिया में फैले हुए थे और नाग-पूजा करते थे। किंतु अनेक विद्वान् "नाग" जाति और नाग-पूजा में कोई सम्बंध नहीं देखते। वे "नाग" जाति को आर्यों की ही एक शाखा मानते हैं। वैसे भी इसके ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि, कश्मीर के आदि-निवासी मध्य-एशिया के निवासियों से भिन्न रहे हैं। चीनी, मंगोल और तिब्बतियों से उनकी आकृति नहीं मिलती थी, जब कि उनका अंग-विन्यास आर्यों से पूरा-पूरा सादृश्य रखता था। नागों के बाद कश्मीर की घाटी में और भी जातियाँ आयीं। इनमें गांधारी, दरयास, खसा एवं मंगोल मुख्य हैं। आधुनिक इतिहासकारों का मत है कि, "खसा" जाति के आधार पर ही इस प्रदेश का नाम कश्मीर रखा गया है। यह ठीक भी प्रतीत होता है; क्योंकि इस नस्ल के लोगों का आज भी यहाँ प्राचुर्य है।

कश्मीर में प्राप्त होने वाले प्राचीनतम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक अवशेष सम्राट् अशोक के समय के हैं। अशोक के समय बौद्ध-धर्म की सीमाएँ बहुत विस्तृत हुईं; तब कश्मीर में भी बौद्ध-धर्म का प्राधान्य था। और अशोक के देहावसान के बाद अन्य प्रदेशों की तरह कश्मीर में भी बौद्ध-धर्म का भी ह्रास होने लगा। लेकिन ईसवी सन् के प्रारंभ के साथ बौद्ध-धर्म का पुनर्जागरण हुआ। भारत पर आक्रमण करने वाले शकों ने उसे राज-धर्म बना कर, उसके प्रचार में सहयोग दिया। शक राजा हविष्क और कनिष्क के समय, बौद्ध-धर्म की महायान-शाखा कश्मीर का प्रधान धर्म बन गयी। किंतु हिन्दू-धर्म भी अपनी जड़ें उत्तरोत्तर दृढ़ करता जा रहा था। ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह प्रमाणित होता है कि, ईसा की पाँचवीं से दसवीं सदी तक कश्मीर में बौद्ध और हिन्दू दोनों धर्म साथ-साथ पल्लवित होते रहे। कश्मीर के ८० प्रतिशत मंदिर इसी काल में बने हैं।

कश्मीर में हिन्दू देव-मंदिरों के निर्माण की प्रेरणा शंकराचार्य के धर्म-प्रचार से सम्बंध रखती है। दिग्विजय करते हुए शंकराचार्य कश्मीर भी आये थे। कश्मीर के इतिहास में वे "मंदिर-निर्माता शंकराचार्य" के नाम से प्रख्यात हैं। श्रीनगर के पास एक उच्च शैल-शृंग तख्ते-सुलेमान है, जिसे कश्मीर के पंडित आज भी "शंकराचार्य-पर्वत" कहते हैं। इस पर्वत के सर्वोच्च शिखर पर एक बड़ा ही विचित्र मंदिर बना है। इसमें हिंदू और बौद्ध वास्तु-कला के के तत्वों का बड़ा विचित्र मिश्रण हुआ है। सामान्यतया यह माना जाता है कि, सम्राट् अशोक द्वारा निर्मित बौद्धस्तूप के भग्नावशेष पर यह मंदिर बनाया गया है। साधारण जनता तो मंदिर को अशोक-निर्मित ही मानती है। मंदिर का नीचे का भाग शिल्प-कला की दृष्टि से अशोक-कालीन अवश्य है; किंतु ऊपरी भाग की बनावट पर पाँचवीं शताब्दी के शिल्प का प्रभाव है। कश्मीर में इस प्रकार के कई मंदिर पाये जाते हैं। श्री जगदीशचंद्र चट्टोपाध्याय की सम्मति में, मंदिर का शिलान्यास शंकाराचार्य ने किया था। बाकी मंदिर बाद के बने हुए हैं।

मध्य-एशिया के मुसलमानों के हमलों और विशेषतः सिकंदर 'बुतशिकन' की

परम्परा

गिरि-पर्वत-वन-कांतार में दावाग्नि सुलगी हुई थी—चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था; किंतु इन ज्वालाओं के बीच से वह जलमग्ना नदी अपनी अविराम गति में बहती जा रही थी समस्त आर्तनाद की अवज्ञा करते हुए! क्यों? क्योंकि उसे आस-पास के बजाय सागर की वाडवाग्नि की ज्यादा चिंता थी। हाय! दूर के परोक्ष के सामने निकट का प्रत्यक्ष कितना तिरस्कृत होता आया है! —बल्लत्तोल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विध्वंस-लीला से शंकराचार्य-पर्वत वाला मंदिर तो किसी प्रकार बच गया; परंतु कश्मीर के अधिकांश सुंदर मंदिर धराशायी हो गये। स्वयं श्रीनगर की चप्पा-चप्पा भूमि ध्वंसावशेषों और खंडित मूर्तियों से भरी पड़ी है। तोड़े गये मंदिरों के प्रस्तर-खंडों से मकबरे बनाये गये, जियारतों और मसजिदों का निर्माण किया गया। "बादशाही" इमारत इसका ज्वलंत प्रमाण है। यदि मध्य एशिया के आक्रांता यों मंदिरों को भूमिसात् न करते, तो आज कश्मीर प्राकृतिक सुषमा के साथ स्थापत्य और शिल्प-कला के सौंदर्य का भी घर होता।

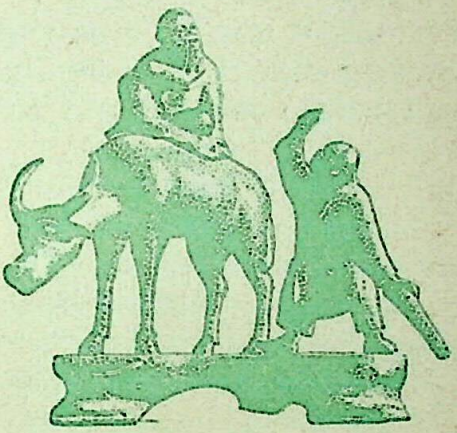

"...कहाँ, पर्वतों के उस पार जा रहे हैं, गुरुवर्य ?" कन्फ्यूशस के शिष्य चा-ओ ने साश्चर्य पूछा। कन्फ्यूशस ने फिर कहा— "ज्ञान वहीं तो है, चा-ओ ! वहाँ, व्यक्ति भोजन पर नहीं आत्मा पर जीते हैं ! — लिङ् ऊ-ताङ्

पाँचवें से दसवें शतक तक का काल कश्मीर में कला और साहित्य का अभिनव सर्जन-काल तो था ही, वह भारतीय संस्कृति के प्रसार का स्वर्ण-युग भी था। कश्मीर ने समस्त मध्य-एशिया और चीन में अपने संस्कृति-दूत भेजे और भारतीय संस्कृति को एशिया के दूरस्थ भागों में फैलाया। हिमालय के उस पार आधुनिक चीनी-तुर्किस्तान, खोतन, तिब्बत, मंगोलिया, चीन और जापान तक कश्मीर से धर्म-प्रचारक जाया करते थे। चौथी शताब्दी में खोतन, तो भारतीय संस्कृति का उपनिवेश ही बन गया था। इसका श्रेय कश्मीरियों को था, जो सहस्रों की तादाद में वहाँ जा कर बस गये थे। कश्मीर का ब्राह्मण-वर्ग उस काल में अपनी शास्त्रीय विद्वत्ता और प्रतिभा के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध था। कश्मीरी ब्राह्मणों की जो शाखा खोतन गयी, उसका कर्तृत्व सारे एशिया, के इतिहास का स्वर्णपृष्ठ है। ऐतिहासिक प्रमाणों से ज्ञात होता है कि, तिब्बत की वर्णमाला का आविष्कार और परिमार्जन, खोतन के एक प्रसिद्ध विद्वान् कश्मीरी ब्राह्मण ने किया था। तिब्बत के अनेक मठों की दीवारों पर जो प्राचीन चित्र मिलते हैं, उनसे भी इस सांस्कृतिक विनिमय की पुष्टि होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बौद्ध-धर्म की महायान-शाखा का प्रसिद्ध दार्शनिक और लेखक कुमारजीव भी कश्मीरी था। उसका पिता कुमारायण कश्मीर राज्य से मंत्री-पद छोड़ कर, मध्य-एशिया के कूचा राज्य में जा कर बस गया था। गोबी के मरुस्थल के उत्तर में अवस्थित यह राज्य, चौथी और पाँचवीं शताब्दी में बौद्ध और ब्राह्मण धर्म के विद्वानों का बड़ा भारी केंद्र था। कुमारायण की प्रतिभा से कूचा का राजा इतना प्रभावित हुआ कि, उसने उसे अपना राजगुरु बना लिया। कुमारायण अत्यंत सुंदर था। उसके आकर्षक व्यक्तित्व ने राजकुमारी जीवा को मुग्ध कर लिया। अंत में कुमारायण ने राजकुमारी से विवाह किया और उनका पुत्र हुआ कुमारजीव। पुत्र-जन्म के बाद जीवा बौद्ध-भिक्षुणी बन गयी और जब कुमारजीव नौ वर्ष का हो गया, तो वह उसे ले कर कश्मीर चली आयी।

कुशाग्र-बुद्धि कुमारजीव ने कश्मीर के प्रसिद्ध पंडित बंधुदत्त के पास रह कर, ब्राह्मण एवं बौद्ध धर्म के साहित्य और दर्शन का अध्ययन किया और थोड़े ही समय में अपरिमित ज्ञान प्राप्त कर लिया। जब वह कूचा वापस गया, तो उसके ज्ञान और पांडित्य की चर्चा चारों ओर फैल गयी। कूचा में बसने के थोड़े समय के बाद ही, कुमारजीव ने बौद्ध-धर्म की दीक्षा ले ली। ईसवी सन् ३८३ में, जब चीन के त्सिन-वंश के राजा ने अपने सेनापति लुक्यांग को कूचा पर आक्रमण करने भेजा, तो कूचा के राजा ने बड़े शौर्य के साथ लड़ने के बाद आत्म-समर्पण कर दिया। जैसे कि उस युग की परिपाटी थी, विजयी लुक्यांग प्रसिद्ध विद्वान् कुमारजीव को अपने साथ चीन ले गया। वह कुमारजीव की प्रतिभा और कर्म-निष्ठा से बड़ा प्रभावित हुआ और जब वह दक्षिणी लियांग का शासक बना, तो उसने कुमारजीव को ही अपना राजगुरु बनाया। लियांग के सांस्कृतिक जीवन के लिए यह बात अत्यंत लाभप्रद सिद्ध हुई। कुमारजीव ४१३ ईसवी सन् तक चीन में रहा और उसी वर्ष उसका देहांत हुआ। कुमारजीव ने संस्कृत और पाली से अनेक महत्वपूर्ण बौद्ध-ग्रंथों का चीनी में अनुवाद किया। चीन और जापान के बड़े-बड़े विद्वान् उसके शिष्य बन गये। यों चीन में बौद्ध-धर्म फैलाने में कुमारजीव का बहुत बड़ा हाथ था। इस धर्म-प्रचार का इतिहास लिखते समय चीनी विद्वान् युग-प्रवर्तक रूप के

महिमा

"कश्मीर ! सात समंदर पार भी तेरी रूप-सुधा मेरी आयु के अवर पीते रहेंगे और फिर वे मेरे कानों को यह आश्वस्त करते रहेंगे कि 'कार्ल, तू चिरयुवा है, चिरायु है ! तेरी आत्मा ने स्वर्ग-सौंदर्य पिया है !'" — कार्ल सैंडबर्ग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में कुमारजीव को स्मरण करना नहीं

भंडन

भूलते। अनंत प्रेम एवं करुणा के प्रतीक कुमारजीव को चीन न भूल सकेगा। चीन का ऐसा कोई बौद्ध-वर्ग नहीं जिस-पर कुमारजीव की प्रतिभा का, ज्ञान का और अपार विद्वत्ता का प्रकाश न पड़ा हो।

एक और कश्मीरी ब्राह्मण बुद्धयश, जो कुमारजीव का समकालीन तथा बड़ा विद्वान् था, सारे मध्य-एशिया में श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था। विद्याध्ययन के बाद वह काशगर चला गया, जहाँ के शासक ने एक बौद्ध-धर्म-सम्मेलन के लिए तीन हजार बौद्ध भिक्षुओं को निमंत्रित किया था। बुद्धयश स्वयं भी बौद्ध भिक्षु था। काशगर का राजा उसके पांडित्य और निस्पृह जीवन से इतना श्रद्धान्वित हुआ कि, उसने उसे अपने महल में रख लिया। कुमारजीव से बुद्धयश की प्रथम भेंट काशगर में ही हुई।

दस वर्ष काशगर में रह कर, बुद्धयश कूचा लौट आया और थोड़े दिन वहाँ रहने के बाद कुमारजीव से मिलने चीन चला गया। कुछ वर्ष तक दोनों ने साथ-साथ कार्य किया और कुमारजीव की मृत्यु के बाद बुद्धयश वापस कश्मीर लौट आया। वह अगाध विद्वत्ता वाला होने के साथ-साथ दृढ़ संकल्प और निर्लिप्त वृत्ति का मनुष्य था। कई राजाओं की श्रद्धा का वह पात्र था; किंतु उसने कभी किसी राजा या धनी की भेंट स्वीकार नहीं की।

प्रतीक्षा

उस समय सारे चीनी-तुर्किस्तान में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूर-दूर तक जो भारतीय उपनिवेश बने हुए थे, उनमें से अधिकांश कश्मीरी भिक्षुओं के थे। बौद्धों के अलावा शैव और भागवत धर्मावलम्बी ब्राह्मणों की भी उस प्रदेश में काफी बस्तियाँ थीं।

कुमारजीव के अवसान के बाद, एशिया में भारतीय संस्कृति की पुनीत प्रभा का प्रसार गुणवर्मन् ने किया। वह भी कश्मीर का था और वहाँ के राज-परिवार में पैदा हुआ था। किंतु तथागत की करुणा के पुनीत स्पर्श से विरक्त हो कर, वह समस्त राजकीय वैभव का परित्याग करके, बौद्ध भिक्षु बन गया। कश्मीर के राजा की मृत्यु के बाद, सचिव-मंडल ने उसे सिंहासनारूढ़ करने का प्रयत्न किया; किंतु तीस वर्ष का गुणवर्मन्, सिंहासन पर आसीन होने के बजाय, अरण्यवासी हो गया और कुछ समय बाद बौद्ध-धर्म का प्रचार करने लंका चला गया। लंका से वह जावा गया। वहाँ के राजा और राजमाता को उसने बौद्ध-धर्म में दीक्षित किया। उसी समय जावा पर बाहरी आक्रमण हुआ। राजा अहिंसा-धर्म का विचार कर, आक्रामकों पर प्रत्याघात करने से झिझकने लगा। किंतु गुणवर्मन् ने राजा के संशय का निवारण किया; और राजा ने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।

गुणवर्मन् के बौद्धिक एवं आध्यात्मिक बल की ख्याति सारे दक्षिण-पूर्वी एशिया में फैल गयी। गुणवर्मन् के प्रयत्नों से सारे जावा में बौद्ध-धर्म का प्रसार हो गया और महायानी बौद्ध तो गुणवर्मन् को बुद्धावतार मानने लगे। सन् ४२४ ईसवी में नानकिंग के चीनी बौद्धों के आग्रह पर, चीनी सम्राट् के राजदूत, गुणवर्मन् को चीन निमंत्रित के लिए जावा पहुँचे। गुणवर्मन् ने आमंत्रण स्वीकार किया और नंदिन नामक एक भारतीय व्यापारी के जहाज में बैठ कर, कई स्थलों पर घूमता हुआ सन् ४३१ में नानकिंग पहुँचा। गुणवर्मन् के स्वागतार्थ सम्राट् स्वयं नगर के बाहर आया। गुणवर्मन् को एक बौद्ध मठ में ठहराया गया, जिसका नामकरण श्रावस्ती के बौद्ध विहार की स्मृति में "जेतवन विहार" किया गया। समस्त चीन के बौद्धों ने उसे "दूसरा बुद्ध" स्वीकार कर लिया। एक वर्ष के बाद गुणवर्मन् का अकस्मात् देहांत हो गया। किंतु वह इतना परिश्रमी और प्रतिभा-शाली था कि, एक वर्ष के इस अल्पकाल में ही उसने ग्यारह संस्कृत-ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया।

दो संस्कृतियों में बौद्धिक आदान-प्रदान की दृष्टि से ऐसी सौहार्दमयी सह-कारिता अन्यत्र देखने को नहीं मिलती, जैसी चौथे शतक से लेकर दसवें शतक तक चीन और भारत के बीच रही है; यह बात चीनी "त्रिपिटक" की अनुक्रमणिका पर एक सरसरी दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाती है। और इसका अधिकांश श्रेय प्राचीन कश्मीर के चिरकाल तक वंदनीय कुमारजीव और गुणवर्मन् इन दो कश्मीरी विद्वानों को है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य की चाह

रूस स्थित भारतीय राजदूत के० पी० एस० मेनन लिखित एक मर्मबोधक लेख

★

अभी पिछली बार, जब मैं हंगेरी गया था, तब मैंने वहाँ एक अत्यंत विचार-प्रेरक नाटक देखा –'मानव का दुर्भाग्य'। उन्नीसवीं सदी के मध्य में, हंगेरी के एक प्रतिभावान् साहित्यकार इमरे मदाक द्वारा लिखित इस नाटक में, इतिहास के आरंभ से ले कर, आज तक की मानव-सभ्यता की व्यंग्य-कथा है।

नाटक का आरंभ बाइबिल की कथा से होता है। स्वर्ग में आदम और हौवा ने निषिद्ध ज्ञान का फल खा लिया है। उनके साथ है लूसिफर (शैतान) जो उन्हें आत्म-विनाश के लिए उकसाता रहता है।

एक स्वप्न में लूसिफर, आदम को मानव-जाति का भविष्य दिखाता है। एक-एक करके सभ्यता के विविध केंद्र हमारे दृष्टि-पथ में आते हैं – प्राचीन मिस्र, क्लासिकल यूनान, साम्राज्यवादी रोम, मध्य-युगीन यूरोप, क्रांतिकारी फ्रांस, पूंजीवादी ब्रिटेन और अंत में एक साम्यवादी राज्य।

आदम भी इनमें विभिन्न ऐतिहासिक व्यक्तियों के रूप में अवतीर्ण होता जाता है, जैसे – फैराओ, धर्मयोद्धा टैंसरेड, वैज्ञानिक केप्लर, क्रांतिकारी डैण्टन।

प्रथम अवतार में हम आदम को मिस्र के फैराओ के रूप में देखते हैं। उसे बड़ा नाज है अपने पिरामिड पर –

जो तूफानों में अटल रहेगा,
भूडोलों में विचल न होगा,
जो देगा साक्ष्य कि, एक दिवस
ईश्वर से इन्सान बली था।

तभी आदम की नज़र हौवा पर पड़ती है, जिसका मजदूर-पति अभी-अभी एक भारी पत्थर के नीचे कुचल कर मर गया है। वह दुःखी हो जाता है। परंतु लूसिफर उससे कहता है –

इस तुच्छ विषय पर शोक!
– मनाओ हर्ष कि, धरती का
कुछ भार कम हुआ।

दूसरा अंक हमें प्रजातंत्रीय एथेंस में ले जाता है। विजयी सेनानी मिल्टियाडेस की

अगवानी करने, लाखों की भीड़ जमा है–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके जयकारे लगाये जा रहे हैं। तभी सेनापति के पुराने द्वेषी, यह चिल्लाना शुरू कर देते हैं कि, मिल्टियाडेस गद्दार है। क्षण-भर में जन-समूह भी जयकारे छोड़-कर, उसी अभियोग को दोहराने लग जाता है। विजयी सेनानी को स्वागत-मंडप के बजाय वध-स्थान की ओर ले जाया जाता है। जाते-जाते वह कहता है—

स्वतंत्रता !...कितनी असार...औ' अर्थहीन
क्या इसी के लिए तिल-तिल बलि दी
तन की ?

एथेंस से हम रोम पहुँचते हैं, जो एक महान् साम्राज्य की राजधानी है। अस्तो-न्मुख साम्राज्य ! नर-नारी भोग-विलास के पीछे भाग रहे हैं। वार-वनिताएँ, विट और "ऋण करके घी पीने" के सिद्धांत के भक्त चार्वाक ! ..... और अर्ध-बर्बर जातियों के रूप में, मौत उनसे जीवन का लेखा-जोखा माँगने आ पहुँची है !

अगला दृश्य। मानव-जाति को अक्षय सुख-शांति प्रदान करने का वचन देने वाले ईसाई-धर्म का अधःक्षरण। धर्मयोद्धा टैंसरेड बन कर आदम कुस्तुंतुनिया आता है। परंतु वहाँ तो ईसाइयों में ही भयंकर अंतःसंघर्ष छिड़ा हुआ है। एरियन के संप्रदाय को— जो त्रिमूर्ति के अभेद का सिद्धांत स्वीकार नहीं करता— इस्लाम से भी बड़ा खतरा माना जा रहा है। ईसाई धर्मगुरु आदेश देता है कि, एरियन के शिष्यों को जिंदा जला दिया जाय। हौवा इस समय कुमारी के रूप में है; उसे धार्मिक हठ और कट्टरता की वेदी पर कुर्बान कर दिया जाता है।

आगे हम धर्म और विज्ञान को परस्पर संघर्ष में गुथा हुआ पाते हैं। आदम ने प्राग में क्लेपर का जन्म लिया है। हौवा उसकी स्वच्छंद और ऐश्वर्यप्रिय पत्नी बार्बारा बनी है। केप्लर बड़े-बड़े वैज्ञानिक आवि-ष्कार करता है; पर दुनिया उनकी कद्र नहीं करती। धर्म के ठेकेदार उसके विरुद्ध हैं; क्योंकि उसकी कई खोजें ईसाई-धर्म के सिद्धांतों के विरुद्ध पड़ती हैं। केप्लर की बीवी दिन-रात उससे पैसे के लिए चख-चख करती रहती है। उसकी खातिर उसे तावीज बेचने पड़ते हैं, जन्म-कुंडलियाँ लिखनी पड़ती हैं, जब कि उसका मन तो यह चाहता है कि —

रहूँ निरखता अपलक
रजनी के रत्नाभूषण;
श्रवण करूँ रसलीन,
अनाहत गीत गगन का।

अब हम, चार-छह सदियों को लाँघ कर, राज्य-विप्लव में उद्वेलित पेरिस में पहुँचते हैं। जननायक डैण्टन का रूप धरे आदम समता, भ्रातृभाव और स्वातंत्र्य के मंत्रोच्चार द्वारा रक्त-क्रांति का दावानल सुलगा रहा है।

भालों की नोकों पर कटे सिर खोंसे हुए रक्त-पिपासु भीड़ मदोन्मत्त है। शीघ्र ही क्रांति के नेताओं की गरदनों पर भी हिंसा का प्रबल पंजा पड़ता है। सेंट जस्ट डैण्टन को देशद्रोही करार देता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अठारहवीं सदी के पेरिस से हम उन्नीसवीं सदी के लंदन में पहुँचते हैं। लंदन-टावर और टेम्स नदी के बीच एक मेला लगा है। आदम मेले की रौनक देखने को निकला है। मेले में रईस हैं, वारांगनाएँ हैं, भिखमंगे हैं, जिप्सी हैं, विदूषक हैं, गजरे बेचनेवाली मालिनें हैं। सयानी अम्माएँ अपनी बनी-ठनी कुँआरी बेटियों की परेड करा रही हैं, धनी दामाद के लिए। नीम-हकीम अपनी टुटपुँजिया दवाओं के गुण बखान रहे हैं – इन्सान को जीते-जी अमर बना देने का दावा कर रहे हैं। भीड़ "सड़ी शराब और बेसुरे संगीत में" मस्त है। पूंजीवाद का चरमोत्कर्ष! "जिसकी लाठी उसकी भैंस" –समाज का मूलमंत्र! बेकारी का बोलबाला! मिल मालिकों द्वारा मजदूरी घटाने की बात! जब मजदूर निवेदन करते हैं कि, उन्हें बाल-बच्चों का पेट भरना है, तो उनसे पूछा जाता है–

किसने कहा करो तुम शादी
और जनो दर्जन भर पिल्ले?

ईर्ष्या और लोभ के तांडव को देख आदम का हृदय जुगुप्सा से भर जाता है।

अगला दृश्य नये युग के मानव के स्वप्न-राज्य साम्यवादी समाज का चित्र प्रस्तुत करता है। इस राज्य की गर्वोक्ति है – "सारा विश्व सबकी मातृभूमि है; सब एक हैं, एक ध्येय में जुटे हैं।"

स्कूल में अध्यापक मानव-जाति का इतिहास पढ़ाते समय, विद्यार्थियों को सोने का लोंदा दिखाता है– "यह है जर, सब झगड़ों की जड़, व्यर्थ ..... सर्वथा व्यर्थ।" और फिर दिखाता है गुलाब–"....और यह है, एक निकम्मा फूल, जो गेहूँ और गन्ने को वंचित कर, सरसब्ज भूमि को आक्रांत रहता किये था।"

उपयोगिता को ही सार्थकता मानने वाले इस नये राज्य में, सौंदर्य को अस्तित्व का अधिकार नहीं; न है प्रेम के लिए कोई स्थान। सारे बच्चे राज्य के हैं। अपने लाल से वंचित की जाती हुई माँ, प्रतिवाद करती है। उसे अफसर समझता है कि, मूर्खतापूर्ण परिवारिक भावना को फिर पनपने दिया गया, तो राज्य तबाह हो जायेगा। इस राज्य में आदम और हौवा भी मानव रूप में बसते हैं। उनका प्रेम सरकार को फूटी आँखों नहीं सुहाता। उन्हें वैज्ञानिक के पास, जाँच के लिए भेजा जाता है। जाँच-पड़ताल के बाद वैज्ञानिक फतवा देता है—"आशिक-मिजाज आदमी और उद्वेग-भरी औरत, निर्बल संतान जनते हैं; इनका दाम्पत्य समाज के लिए अशुभ और अकल्याणकारी है।"

आदम प्रतिवाद करता है– "पर मुझे तो हौवा से प्रेम है!" प्रेम! कितना दकियानूसी विचार! सरकार क्षुब्ध हो उठती है। आदम और हौवा को पागलखाने में भेज दिया जाता है।

इस राज्य में प्रतिभावान् मेधावी मनीषियों के साथ क्या होता है, इसका व्यंग्य-चित्र भी इस दृश्य में है। प्लेटो पर आरोप लगाया जाता है कि, वह सदा कल्पना में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोया रहता है –

सपनों में तुम खोये थे, जब
बहक गयीं सब गैया-बछिया –
उकड़ूँ बैठो ;
ताकि न भटके मन सपनों में।

बेचारा प्लेटो कहता है कि, उकड़ूँ बैठने पर भी उसका मन सपनों की दुनिया में भटक जाता है।

माइकलेंजलो पर बिना अनुमति के कारखाना छोड़ कर भाग जाने का अभियोग लगाया जाता है। अमर-शिल्पी माइकलेंजलो सफाई देता है –

हाँ, मैं भाग गया –
मैं ऊब गया था गढ़ते-गढ़ते
कुर्सी के पाये,
भोंडे बदसूरत पाये।
मैंने बिनती की –
मुझे बनाने दो कुछ अधिक
कलात्मक पाये;
या रचने दो कुर्सी के सुंदर हत्थे।

फिर रंगमंच पर हम हिमयुग का दृश्य देखते हैं; उसमें मानव की क्या दुर्दशा होगी, इसकी एक झलक पाते हैं। विषाद में भरा आदम स्वर्गलोक को लौट जाता है और पहाड़ी पर से कूद कर आत्मघात करने को उद्यत हो जाता है। तभी हौवा आकर उसके कान में कहती है –"मैं तुम्हारे बच्चे की माँ बनने वाली हूँ।" तभी उसे भगवान् की वाणी भी सुनायी देती है—

सुनो मनुज! मम पुत्र!
जतन मत छोड़ो
आस्था का पाथेय साथ,
पथ से मुँह मत मोड़ो।

सो मानव आज भी यत्न किये जा रहा है, आस्था लिये काल-पथ पर चला जा रहा है। परंतु चिरंतन प्रश्न यह है– वह किसमें आस्था करे, किसमें श्रद्धा रखे? क्या पैगम्बरों में या सम्राटों में, प्रजातंत्र में या तानाशाही में, धर्म में या विज्ञान में, अहिंसा में या हाइड्रोजन बम में, अथवा– जैसा कि, हम 'मानव का दुर्भाग्य' में देखते हैं– ईश्वर में या शैतान में?

शायद इस शाश्वत समस्या का सर्वोत्तम समाधान भगवद्-गीता में दे दिया गया है। आत्मावलंबन का शंखनाद करते हुए गीता ने कहा है –

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैवह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

–अपना उद्धार आप करो; अपने को न गिराओ। आत्मा ही सबसे बड़ा मित्र है और आत्मा ही सबसे बड़ा शत्रु।

★

गुंचे तेरी जिंदगी पै दिल हिलता है
बस इक तबस्सुम के लिए खिलता है।
गुंचे ने कहा हँस कर अय बाबा,
य एक तबस्सुम भी किसे मिलता है? —जोश मलीहाबादी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन-शिल्पी प्रेमचंद

डा० लक्ष्मण शास्त्री के शब्दों में प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कुछ किरणों का बिम्ब-दर्शन

★

"जिस समय प्रेमचंदजी मेरे घर आये थे, उसकी स्मृति मेरे सामने बड़ी स्पष्ट है। प्रातःकाल का समय था। चाय पीने जा रहा था और उन्हें एकाएक देख कर उनसे कहा कि, आप भी चले चलिए। मैंने अपनी कन्याओं और पुत्रों को उनका परिचय दिया। सबके चेहरों की वही दशा हुई, जो मेरी तब हुई थी, जब हिन्दू विश्व-विद्यालय के शिलान्यास के समय किसी ने महात्मा गांधी की ओर संकेत कर मुझसे कहा था—"ये ही हैं गांधीजी।" अर्थात् न मुझे उस समय यह विश्वास हुआ था कि, दक्षिण अफ्रिका के वीर पुरुष, ब्रिटिश-साम्राज्य का विरोध करने वाले, सत्यता, निर्भीकता, साहस के कारण संसार को हिलानेवाले गांधीजी यही हो सकते हैं, न मेरे बच्चों को यह विश्वास हुआ कि, हिन्दी के प्रचंड लेखक, साहित्यिक-संसार के सम्मान-प्राप्त प्रेमचंदजी यही हैं। यह समझ कर कि, मैं दिल्लगी कर रहा हूँ—मेरी जिस प्रवृत्ति से मेरे बच्चे आवश्यकता से अधिक परिचित हैं—वे सब हँस पड़े, और जब मैंने हर तरह से, उन्हें विश्वास दिलाया कि, वे यही हैं, जिनकी कहानियाँ उन बच्चों ने पढ़ी थीं, तब जाकर सबने उनका समुचित आदर-सत्कार किया।

प्रेमचंद

"गुण कहिए या दोष, प्रेमचंदजी की यही विशेषता थी कि, उन्होंने अपने बड़प्पन को न माना न जाना....."

यह एक प्रसंग है, जिसे बम्बई के राज्यपाल श्री श्रीप्रकाश ने उपन्यास-सम्राट् प्रेम-चंदजी के संस्मरणों में लिखा है। उनका दैनिक और वैयक्तित जीवन सचमुच इतना सादा था कि, उन बच्चों को क्या, बड़ो-बड़ों को भी, उन्हें देख कर यह कल्पना नहीं हो पाती थी कि, सचमुच उपन्यास-सम्राट् प्रेमचंद ये ही हैं।

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी ने अपने संस्म-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रणों में उनकी वेश-भूषा का बहुत ही सुंदर चित्रण किया है। उन्होंने लिखा है—

"काशी, कम्पनी बाग के निकट का यह चौराहा। एक साधारण-सा व्यक्ति खड़ा। कद, पोशाक, खड़ा होने का ढंग—सभी कुछ साधारण। सिर खाली, जिनमें विशुद्ध आर्यत्व की वंश-परम्परा सूचक ललाई अभी नहीं खोयी थी, वैसे अस्त-व्यस्त बाल, हवा के झोंके से उड़ रहे। जिंदगी की कितनी धूप-छाँहों के चिह्न लिये गोरा चेहरा। ललाट में कितनी सीधी रेखाएँ— गालों पर कितनी सिकुड़न। बेतरतीब-सी मूँछें। दाढ़ी मानो कई दिन से नाई की प्रतीक्षा में। शरीर में कमीज—जिनके ऊपर के दो बटन खुले हुए। एक हाथ में छाता। एक हाथ से कभी वह उड़-उड़कर ललाट से छेड़खानी करने वाले बालों को सम्हालें, या बिगड़ैल मूछों को। साफ-सी दिखने वाली धोती। साधारण-सा ही चमरौधा जूता।

"वह उत्सुक आँखों से एक ऐसे इक्के की तलाश में हैं, जिसपर सवारी की एक ही, जगह बची हो और जो छावनी की ओर जाने वाला हो।

"जब भाई शिवपूजनजी ने यह बताया कि, यही हैं उपन्यास-सम्राट् प्रेमचंदजी, तब मुझे कम आश्चर्य नहीं हुआ.....।"

ये घटनाएँ काशी की हैं, काशी नगर ही उनका कार्य क्षेत्र था। पर प्रारंभ में वे रहते थे, काशी से लगभग छह मील दूर पिसनहरिया के निकट अपने गाँव में। श्री शिवपूजन सहायजी ने उनकी गाँव से नगर और नगर से गाँव तक की दैनिक यात्रा का वर्णन करते हुए लिखा है कि, कभी-कभी पैसे कम पड़ जाते, तो अपने गाँव का इक्का खोजते हुए कुछ दूर पैदल ही चल पड़ते, या पिसनहरिया तक ही इक्के पर जाकर, फिर अपने गाँव तक पैदल चलते थे। इन कठिनाइयों का वर्णन वे बैठे-बैठे हँस-हँस कर प्रेस में किया करते थे। किसी दिन कहते कि, अरदली बाजार या बसना पुल तक, लगभग तीन मील पैदल जाने के बाद गाँव का इक्का मिला था। एक बार कपड़े का फीतादार जूता खरीदा, तो उसकी एड़ी दबा कर चप्पलनुमा बना लिया। और कहने लगे कि, एड़ीदार जूते से पैदल चलने में कष्ट होता था, इसलिए उसे चप्पल बना दिया।.....

पर इतने गहन संघर्ष में भी प्रेमचंदजी अडिग रहते और लगभग दस मील की यात्रा के बाद भी, अपने काम में ऐसे ही जुटे रहते जैसे कि, वे अभी भी बिल्कुल तरो-ताजा हों। एक बार की बात है कि, उनके छोटे भाई महतावराय को सिनेमा का दूसरा 'शो' देखने जाना था, अदब के कारण उन्होंने प्रेमचंदजी से कहा भी नहीं और भाभी से किवाड़ खोलने की बात तय करके चले गये। जब लौटे, तो भाभी सो गयी थीं। इसलिए उनको दो-चार बार कुंडी खटखटानी पड़ी। जग कर उन्होंने दरवाजा खोल दिया। दो-तीन बार दरवाजा खटखटाने से प्रेमचंदजी की समाधि भंग हो गयी। वे शाम से ही लिख रहे थे और अपने काम में इतने तल्लीन थे कि, उनको वक्त का पता ही न था। महताब-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रायजी को देख कर उन्होंने पूछा–"क्या बजा है?" जब महताबराय ने उत्तर दिया– 'दो', तब उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। यह था उनका परिश्रम और यह थी उसके प्रति उनकी लगन!

इतना परिश्रम करने के लिए उनको जो सुविधा प्राप्त थी, एक उदाहरण उसका भी सुन लीजिए! एक बार दक्षिण के एक विद्वान् श्री ए० चंद्रहासन् उनसे मिलने गये। उन्होंने अपनी भेंट का विवरण इस प्रकार लिखा है–

"पता लगा कर शाम के वक्त उनके मकान पर पहुँचा। बाहर थोड़ी देर खाँ-खूँ करने पर भी कोई बाहर न आया, तो दरवाजे पर गया और झाँक कर कमरे में देखा। वहाँ एक आदमी, बड़ी-बड़ी मूँछों के कारण जिसका चेहरा छिपा-सा था, फर्श पर बैठ कर एकाग्र चित्त से कुछ लिख रहा था। मैंने सोचा कि, कोई कर्ल्क होगा और आगे बढ़ कर बोला कि, मैं श्रीयुत प्रेमचंदजी से मिलना चाहता हूँ। उन्होंने झट आँखें उठा कर आश्चर्य के साथ मुझे निहारा, कलम रख दी और हँसी क़रते हुए बोले–"खड़े-खड़े क्या मुलाकात करेंगे? बैठिए और मुलाकात कीजिए!" अविश्वास और अचम्भे में आकर, मैं दो-तीन मिनट तक खड़ा ही रह गया, पर जल्दी ही सँभल कर बैठ गया। मेरे मन में तो प्रेमचन्दजी की कल्पित मूर्ति बिल्कुल दूसरी ही थी।"

प्रेमचंदजी ने अपने कथानकों के ही लिए जन-साधारण को नहीं चुना था, वरन् उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन को भी ऐसे साँचे में ढाल रखा था कि, वह कहीं भी और किसी रूप में भी जनता-जनार्दन से पृथक् न रहे। उनके नामों की कहानी भी इस सम्बन्ध में कुछ कम मजेदार नहीं है। उनका असली नाम था–धनपत राय! पर प्रारम्भ में वे लिखते थे–'नवाबराय'! इस नाम से उर्दू-जगत् में उन्होंने काफी ख्याति पायी। पर उनका यह नाम अधिक दिनों न रहा, और उन्होंने अपना नाम 'प्रेमचंद' रख लिया। एक बार सुदर्शनजी ने उनसे नामों के परिवर्तन का रहस्य पूछा कि, आपने 'नवाबराय' नाम क्यों छोड़ दिया?

हँस कर बोले–"नवाब वह होता है जिस-के पास कोई मुल्क भी हो। हमारे पास मुल्क कहाँ?"

"बेमुल्क नवाब भी होते हैं।"

"यह कहानी का नाम हो जाये, तो बुरा नहीं; मगर अपने लिए यह नाम दंभपूर्ण है। चार पैसे पास नहीं और नाम नवाबराय। इस नवाबी से तो 'प्रेम' भला, जिसमें ठंडक भी है, और सच्चा संतोष भी।"

यह कह कर उन्होंने जोर से कहकहा लगाया और बात उड़ा दी।

यह संतोष ही, उनके जीवन का 'मोटो' था और वस्तुतः उनके इस आदर्श को ही यह श्रेय प्राप्त है कि, लाख-लाख झंझावातों के बावजूद, वे अपने पथ पर अग्रसर होते रहे। एक बार वे पटना गये थे, तो कालेज के कुछ लड़के उनसे संदेश लेने के लिए आये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्होंने लिख दिया—"संतोष ही जीवन का सबसे बड़ा धन है।"

चर्चावश, जब उन्होंने यह बात अपने मेजबान, श्री केशरीकिशोर शरण को बतलायी, तो वे शंका कर बैठे—"संतोष से तो जीवन की क्रिया-शक्ति ही नष्ट हो जायेगी। मेरी समझ में तो यह अभाव है, आकांक्षा और असंतोष की आग है, जिससे क्रान्ति होती है, आन्दोलन होते हैं। संतोष से जीवन निचेष्ट हो जायेगा और निश्चेष्ट जीवन तथा मृत्यु में अंतर ही क्या है।"

वे गम्भीर हो गये और कुछ देर बाद बोले—"सामूहिक रूप से असंतोष अच्छा है; पर मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में असंतोष का फल अच्छा नहीं होता। आंदोलन के नेताओं को देखो। वे निस्पृह रूप से काम करते हैं। वे जानते हैं कि, उनके छोटे-से जीवन में उनका आंदोलन सफल नहीं हो सकता; फिर भी उन्हें संतोष है कि, वे अपना काम तो कर रहे हैं। जननी-जन्मभूमि की रक्षा में अपनी जान तो दे रहे हैं। यही संतोष उनका सबसे बड़ा बल है।"

पर उनका यह संतोष जीवन को निश्चेष्ट बनाने वाला न था। उन्हें इकबाल का एक शेर बहुत पसंद था और अक्सर वे उससे अपनी कार्यशीलता पर प्रकाश डाला करते थे :

रमजे हयात जोई जुजदर तपिश नयाबी।
दरकुल जुम आरमीदन नंगस्त आबे जूरा।

और, फिर इसका अर्थ स्वयं करते हुए कहते थे—"जीवन की चरम सीमा, जीवन-संघर्ष से बाहर कहीं भी नहीं मिलती। सबको मालूम है कि, समुद्र में जाकर सरिता यदि आराम करना चाहे, तो वह नदी के लिए लज्जा की बात है।"

उनका यह अविरल परिश्रम आजीवन जारी रहा। जिन दिनों वे रुग्ण थे, उन दिनों भी उन्होंने अपना लिखना बंद नहीं किया। १९३४ में सुदर्शनजी उनसे मिलने गये, तो उन्हें लिखते देख कर उन्होंने कहा—"यह आप अपने ऊपर नहीं, हम लोगों पर जुल्म कर रहे हैं।"

हँस कर प्रेमचन्दजी ने उत्तर दिया—"शुक्र है, हम भी किसी के जालिम तो हैं!"

"आप कहीं हवा-पानी बदलने के लिए बाहर क्यों नहीं चले जाते?"

"बाहर जाने के लिए रुपया चाहिए।"

"अच्छा, जरा मेहनत कम किया करें।"

"मजदूर मेहनत न करेगा, तो खायेगा कहाँ से?"

कुछ ही देर तक, इस प्रकार के प्रश्नोत्तर चलते रहे। फिर सुदर्शनजी ने कहा—"आखिर यह तपस्या आप ही क्यों करें?"

प्रेमचन्दजी का मुस्कराता चेहरा और भी मुस्कराने लगा, बोले—"आप जिसे तपस्या कहते हैं, उसे मैं भोग कहता हूँ। तपस्या तो तब हो, जब तकलीफ हो। मुझे तो इसमें बराबर मजा आता है और जिसमें आदमी को मजा मिले, वह भोग है।"

प्रेमचंदजी की रुचि कहानियों की ओर किस प्रकार हुई, इसकी भी एक बड़ी मनोरंजक कहानी है, जिसे उर्दू के विख्यात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवि श्री रघुपतिसहाय 'फिराक' ने प्रेमचंद सम्बंधी अपने एक लेख में लिखा है—

"प्रेमचंदजी ने मुझे बतलाया था कि, लड़कपन में उनकी दोस्ती अपने दर्जे के एक ऐसे लड़के से हो गयी थी, जो एक तम्बाकू बेचने वाले का बेटा था। स्कूल के बाद, वे नित्य अपने अल्पवयस्क मित्र के साथ, उसके मकान पर जाते थे और वहाँ तम्बाकू के काले पिंडों के पीछे, वे और उनके मित्र, बैठकर बराबर हुक्का पीते थे और 'तिलिस्म होशरुबा' पढ़ते थे। यह कभी न समाप्त होने वाली, बहुत लम्बी कहानी है, जो अपनी विशालता, विशदता और बहुविध कथानकों के विचार से, यूरोप के मध्य-युग की आध्यात्मिक कहानियों को बहुत पीछे छोड़ देती है। उसकी लम्बाई का यह हाल है कि, यदि वे सब लिखी जायें, तो 'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका' के बराबर हो जायेंगी। खैर, वहीं प्रेमचंदजी अपने अल्पवयस्क मित्रों के साथ बैठ कर 'तिलिस्म होशरुबा' के किस्से सुनते थे। उसी में संध्या हो जाती, तब वे अपने घर चले जाते थे। यह क्रम प्रायः एक वर्ष तक चलता रहा। लेकिन इसी बीच प्रेमचंदजी सदा के लिए कहानियों में डूब गये। वास्तव में वे कहानियाँ उन्होंने जिस तरह मन लगा कर और शौक से सुनी थीं, उससे उनकी वर्णन-शक्ति में धारा-वाहिकता और सरसता के गुण आकर सम्मिलित हो गये थे और उन मनोहर कहानियों की आत्मा उनमें प्रविष्ट हो गयी थी। फिर कुछ दिनों बाद, यही शक्तियाँ और यही गुण प्रेमचंदजी की रचनाओं में जिस सुंदरता के साथ फूले-फले, वे तो प्रेमचंद के पाठक अच्छी तरह जानते हैं.....।"

साहित्य के क्षेत्र में वे एक उद्देश्य लेकर आये और उसपर चलते भी रहे। उनका कहना था कि, साहित्य वह जो बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं; क्योंकि ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है। और कहानी के सम्बंध में उनका कहना था कि, सबसे उत्तम कहानी वह होती है, जिसका आधार मनोवैज्ञानिक सत्य हो। अपने इन्हीं दोनों आदर्शों को लेकर, उन्होंने कहानी - साहित्य में, जहाँ समाज के यथार्थ रूप का चित्रण किया, वहीं यह भी ध्यान रखा कि, वे अपने उपदेशात्मक रूप से भी विमुख न होने पायें। इसीलिए अपनी कहानियों में, न तो प्रेमचंदजी उन यथार्थवादियों के रूप में आते हैं, जिनकी चार पंक्तियाँ पढ़ते ही अश्लीलता नजर आने लगे और न उन मनोवैज्ञानिक कहानी लेखकों के ही रूप में, जो अपने कथानक को छोड़ कर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ही करने बैठ जाते हैं। श्री इलाचंद्र जोशी ने एक स्थान पर, उनकी तुलना गोर्की से की है और यह तुलना वस्तुतः है भी बहुत सत्य। दोनों ने जमाने की कड़वी घूँट पी और दोनों ही अपनी चोटों से समाज को जाग्रत कराने में लगे रहे।

अपने इसी उद्देश्य को, उन्होंने अपनी भाषा में भी सामने रखा और इसीलिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उर्दू के माध्यम को नमस्कार करने के बाद, उन्होंने बड़ी ही सरलता से हिन्दी में भी अपना स्थान बना लिया। उनकी इस सरल-सुबोध भाषा पर उर्दूवालों को भी गर्व था। उर्दू के विख्यात समालोचक मौलाना शिबली ने, तो एक स्थान पर यहाँ तक कहा– "सात करोड़ मुसलमानों में एक भी आदमी प्रेमचंद की तरह सुंदर, कोमल और सँवारा हुआ गद्य नहीं लिखता!"

एक बार मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री आनंदराव जोशी ने प्रेमचंदजी से पूछा कि, आपकी कौन-सी कहानियाँ सर्वश्रेष्ठ हैं। उसके उत्तर में उन्होंने निम्न लिखित कहानियों के नाम गिनाये थे:

"(१) राजा हरदौल, (२) रानी सारंधा, (३) सौत, (४) पंच परमेश्वर, (५) आत्माराम, (६) मंदिर और मस्जिद, (७) दुर्गा का मंदिर, (८) ईश्वरीय न्याय, (९) नमक का दारोगा, (१०) सती, (११) कामना-तरु, (१२) लांछन और (१३) मंत्र।

आजीवन कष्ट सहकर प्रेमचंदजी ने हमें साहित्य की वह चीज दी, जो न केवल कश्मीर से कन्या कुमारी तक के निवासियों को एकता के सूत्र में बाँधे है, वरन् उसने कितने ही विदेशी भाषा-भाषियों को भी, भारत के दरिद्र-नारायण का साक्षात्कार करा दिया है। भारत में तो कहिए, तुलसी के बाद, यदि सबसे अधिक पाठक किसी के हैं, तो वे प्रेमचंदजी के ही।

*

एक प्रसंग मुझे याद आता है। अहमदाबाद शहर का गंदा पानी जिनके खेतों में फैलाया जा रहा था, उन किसानों की कुछ शिकायत थी, जिसके बारे में म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष सरदार वल्लभभाई न्याय नहीं कर रहे थे। आखिरकार श्री रविशंकर महाराज और श्री नरहरिभाई परीख दोनों सरदार के पास गये और सरदार को उनका निर्णय बदलने के लिए दोनों ने बहुत समझाया। सरदार नहीं माने, तब रविशंकर महाराज का पुण्यप्र-कोप सुलग उठा। उन्होंने कहा– "वल्लभभाई, आज तक आपके किसी भी काम का मैंने मन में भी विरोध नहीं किया है। आपका विरोध करना में महापाप समझता हूँ। लेकिन यहाँ तो आप गरीबों के प्रति घोर अन्याय कर रहे हैं। मुझे जो कहना था, वह कह दिया। अब मैं चला। देखता हूँ मैं, इन गरीबों के प्रति आप अन्याय कैसे करते हैं?"

महाराज उठकर चले गये। सरदार वल्लभभाई खामोश रहे। लेकिन तुरंत उन्होंने अपना पहले का हुक्म रद किया और जैसा रविशंकर महाराज चाहते थे, वैसा ही किया।

—काका कालेलकर

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रलक्ष्मी की प्रतिमा अंकबिंदुओं में

लेखक : श्रीगोपाल नेवटिया

★

आप अपना लेखा-जोखा देखिए। रुपये की चवन्नी-दुअन्नी ही नहीं हो गयी, रुपये की जरूरत भी बढ़ गयी है, अर्थात् पहले आप दस गज कपड़े से ही काम चलाते थे और वह आपको अढ़ाई रुपये में मिल जाता था, तो अब आपको दस गज की जगह पंद्रह गज कपड़ा चाहिए और उसके दाम लगने लगे हैं दस रुपये। इस प्रकार दाम भी बढ़े हैं और जरूरियात भी। जरूरियातों का बढ़ना या बढ़ाना आज के जमाने में, अर्थशास्त्र की भाषा में, जीवन-स्तर को ऊपर उठाना है। जैसे जन-जन जीवन-स्तर की उन्नति में व्यग्र-संलग्न हैं, उसी प्रकार जन-जन की धात्री सरकार भी उस दिशा में प्रयत्नशील है। उसकी आवश्यकताएँ भी बढ़ गयी हैं, महँगाई के कारण उनकी लागतें भी। और यह स्थिति स्पष्ट परिलक्षित होती है प्रतिवर्ष केन्द्रीय व राज्य सरकारों के लेखों-जोखों में।

'नवनीत' समय-समय पर अपने पाठकों को – इन लेखों-जोखों के भागीदारों को– उसकी रूपरेखा से परिचित करवाया करता है। आखिर सरकार एक बड़ी कंपनी ही तो है, सारी प्रजा जिसकी भागीदार है – वही उसकी आमदनी का साधन है और वही उसकी आमदनी के उपभोग का पात्र। कंपनी-मैनेजरों की भाँति शासक-वर्ग सत्ताधारी है सही, उसी के किये-कराये सब-कुछ होता है; पर आखिर देश भर के लेखों-जोखों के मालिक तो आप और हम ही हैं। आइए, वर्तमान वर्ष के इन लेखों-जोखों का परिचय प्राप्त कर लें।

सन् १९५९-६० में केन्द्रीय व राज्य सरकारों की कुल आमदनी का अनुमान इस प्रकार किया गया है :–

केंद्र सरकार की चालू आय

	करोड़	लाख
आय-कर	१६६	२५
कम्पनियों का आय-कर	५८	७५
व्यय-कर	१	००
मृत्यु-कर	२	८५
सम्पत्ति-कर	१३	००
दान-कर	१	२०
स्टाम्प आदि	३	५१
भूमि-कर	०	५४
आयात-कर	११४	३२
निर्यात-कर	१६	९५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रम

अन्य कर (वाद वापसी)	१	५०
एक्साइज ड्यूटी	३२७	८०
रेल्वे मुसाफिरी-कर	११	००
अन्य ड्यूटी	७	०६
राज्य-प्रबंध सम्बंधी	३८	७८
रेल्वे-प्रबंध से बचत	५	९८
डाक-तार से बचत	४	२०
नोट व सिक्कों से बचत	५	७८
रिजर्व बैंक का नफा	४०	००
अन्य आय (बाद नुकसान)	३७	६४
जोड़	८५८	११

इस साढ़े आठ अरब की आय में से केंद्र को, राज्य सरकारों को इस प्रकार दे देना पड़ता है :-

	करोड़	लाख
आय-कर में से	७८	६२
मृत्यु-कर में से	२	७१
एक्साइज ड्यूटी में से	७५	१२
रेल्वे मुसाफिरी-कर में से	१०	८९
जोड़	१६७	३४
केंद्र के पास बचत ...	६९०	७७

राज्य सरकारों की चालू आय

	करोड़	लाख
कृषि आय-कर	८	११
पेशा-कर		२८
भूमि-कर	१००	४५
स्टाम्प व रजिस्ट्रेशन	३४	६१
शहरी मकानात-कर	२	३२
राज्य-एक्साइज-ड्यूटी	४३	८२
बिक्री-कर	१००	८४
पेट्रोल पर कर	१२	५१
आमोद-प्रमोद पर कर	९	६६
बिजली पर कर	९	३९
मोटरों पर कर	२४	५५
अन्य कर व ड्यूटी	२०	९८
राज्य-प्रबंध सम्बंधी आय	११९	७५
जंगलात	१९	६४
सिंचाई	१२	४४
बिजली-योजनाओं से	१	८८
सड़कों व जल-वहन से	५	४८
कल-कारखानों से		४५
अन्य आय	५३	६६
मदद व अन्य पूर्त्तियाँ	८९	५६
	६७०	३८

राज्य सरकारों के बजटों के अनुसार केंद्र से उन्हें इस प्रकार मिलेगा :-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

	करोड़	लाख
आय-कर में से	७७	३९
मृत्यु-कर में से	२	५२
केन्द्रीय एक्साइज-ड्यूटी में से	७२	७२
रेल्वे मुसाफिरी-कर में से	१०	८७
	१६३	५०

राज्य सरकारों की कुल आय ८३३ ८८

चालू वार्षिक खर्चों के अतिरिक्त स्थायी सम्पत्ति-सम्बंधी बजट के लिए आय के ये साधन अनुमानित हैं :-

केंद्र सरकार की सम्पत्ति सम्बंधी आयः-

	करोड़	लाख
देश में ऋण	२४०	००
विदेशों में ऋण	२९९	७७
विशेष ऋण	९५	२४
अल्प-बचत	८५	००
अन्य जमा आदि	९	७३
राज्य सरकारों द्वारा लौटाये गये ऋण	९५	३७
अमरीकी गेहूँ की बिक्री व कोलम्बो-प्लान आदि सम्बंधी मददें	१०७	७०
अन्य रकमें	१४	७१
जोड़	९४७	५२

राज्य सरकारों की सम्पत्ति-सम्बंधी आयः-

	करोड़	लाख
स्थायी ऋण	७२	५०
अस्थायी ऋण	१	१५
केन्द्र से ऋण	३०१	९६
अन्य ऋण आदि	१९	९५
ऋण आदि की वापसी से	४६	- ५०
डिपाजिट आदि	४२	७४
जोड़	४८४	८०

ऊपर के ब्यौरों के अनुसार केंद्र व राज्य सरकारों की कुल आय का अंदाज इस प्रकार होता है :-

	करोड़	लाख
केंद्र की चालू आय	६९०	७७
राज्यों की चालू आय	८३३	८८
केंद्र की सम्पत्ति-सम्बंधी आय	९४७	५२

प्राचीन राजस्व-समिति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राज्यों की सम्पत्ति-सम्बंधी आय	४८४	८०
जोड़	२,९५६	९७

इस प्रकार सारे देश की सरकारों के हाथ में, वर्ष भर में खर्च करने के लिए करीब तीस अरब रुपया आता है। जब रुपये की चवन्नी-दुअन्नी कीमत रह गयी है और जब कि देश की बढ़ती आबादी के चालीस करोड़ जनों का जीवन-स्तर ऊँचा करने के साधन उपस्थित करने हैं, और करना है देश की रक्षा का सुप्रबंध, तो प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष का यह ७०-८० रु. का व्यय कौन ज्यादा है! उस धनराशि का भली-भाँति उपयोग हो और उसकी प्राप्ति सुलभ हो, तो यह देश के लिए श्रेयस्कर ही होना चाहिए। कर और कर्जों से बटोर कर, राज्य-संचालन और देशोन्नति में किये जाने वाले इस व्यय के औचित्य और साफल्य को तो भविष्य ही बतायेगा।

इस धनराशि का किस प्रकार व्यय होगा, उसकी रूपरेखा से भी तनिक परिचय पा लीजिए :—

केंद्र सरकार का चालू व्यय

	करोड़	लाख
राजस्व-एकत्रण पर खर्च	२१	४२
शासकीय खर्च	५२	९५
रक्षा-सेना	२४२	६८
ऋण-सम्बंधी	५७	८८
विकास-कार्यों सम्बंधी	२०९	२३
विविध	८८	३३
पेंशन व अन्य विशेष व्यय	२४	६३
राज्य सरकारों को देने आदि	४९	०२
अन्य व्यय	२	९५
जोड़	७४९	०९

राज्य सरकारों का चालू व्यय

शिक्षा	१५८	३३
स्वास्थ्य	७०	९८
कृषि, पशु-रक्षा व सहयोग	६३	८४
सिंचाई	२६	४३
बिजली-योजनाएँ	४	७४
ग्राम व समाज-सुधार	३७	६६
मकानात व सड़कें	५८	५७
कल-कारखाने व सामान	२२	७५
अन्य विकास-व्यय	३७	६६
राजस्व-एकत्रण पर व्यय	६१	३४
ऋण-सम्बंधी व्यय	६२	००
शासकीय खर्च	१४४	९७
विविध	३७	१२
अकाल-सम्बंधी	९	९४
विकास से असम्बंधित अन्य व्यय	३३	५६
जोड़	८२९	८९

केंद्र सरकार का स्थायी सम्पत्ति-सम्बंधी व्यय :—

	करोड़	लाख
रक्षा-सेना	३२	७४
स्टेट ट्रेडिंग योजना	३२	०४
नोट, मिंट व प्रेस	९९	३३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

	करोड़	लाख
रेल्वे	१२१	८१
डाक व तार	१५	४५
नागरिक हवाई जहाज	४	३८
पन-बिजली-योजनाएँ	३	३७
मकानात व सड़कें आदि	२५	७७
कल-कारखाने	५४	२८
अन्य व्यय	८८	४७
कुल व्यय	४७७	५३
स्थायी ऋणों की वापसी	१३०	२७
राज्यों को ऋण आदि	३१२	६९
अन्य ऋण व अग्रिम	१९१	०४
जोड़	१,१११	५३

राज्य सरकारों का स्थायी सम्पत्ति-सम्बंधी व्यय :–

	करोड़	लाख
पन-बिजली-योजनाएँ	५५	७६
सिंचाई व जहाजरानी	७८	५१
कृषि-सुधार	६	४३
बिजली-उत्पादन योजनाएँ	२६	९०
सड़क-परिवहन	२	९२
मकानात, सड़कें, पानीघर आदि	९२	०८
कल-कारखाने	१५	१३
विभिन्न मदें बाद स्टेट ट्रेडिंग		३९
जमींदारी मुआवजे	११	९६

राज्यों में विस्तीर्ण अनुमानित व्यय प्रदर्शक मानचित्र

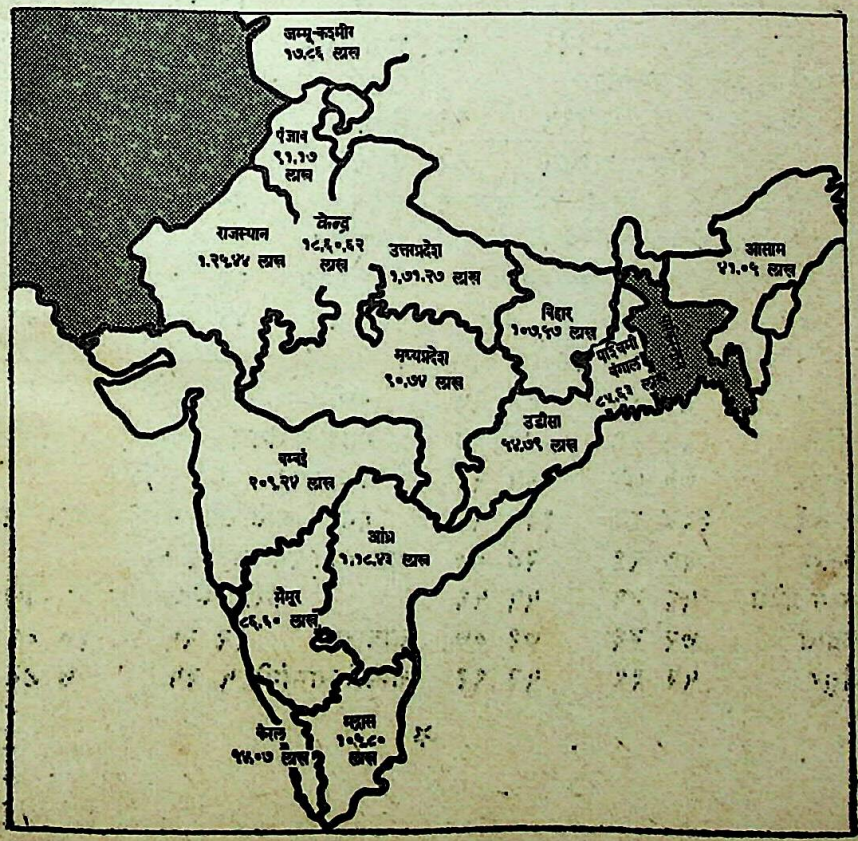

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्य व्यय		२०
कुल व्यय	२९०	२८
स्थायी ऋण की वापसी	७	६७
केंद्र के ऋण की वापसी	६७	७४
ऋण तथा अग्रिम	१२९	६२
जोड़	४९५	३१

ऊपर के ब्यौरों के अनुसार केंद्र व राज्य सरकारों के कुल व्यय का अंदाज इस प्रकार होता है :—

	करोड़	लाख
केन्द्र का चालू व्यय	७४९	०९
राज्यों का चालू व्यय	८२९	८९
केन्द्र का सम्पत्ति सम्बंधी व्यय	१,१११	५३
राज्यों का सम्पत्ति सम्बंधी व्यय	४९५	३१
जोड़	३,१८५	८२

देश के विभिन्न राज्यों की आय व व्यय के आँकड़े नीचे की तालिका में देखिए:—

साधारण वार्षिक आय-व्यय

राज्य	आय		व्यय	
	करोड़	लाख	करोड़	लाख
आन्ध्र	६९	९०	७०	२७
आसाम	३३	०९	२९	६८
बिहार	७०	७४	६५	२१
बम्बई	१३४	५३	१३५	५१
केरल	३७	२९	३८	०७
मध्य प्रदेश	५६	४९	५५	५६
मद्रास	७२	४६	७१	०७
मैसूर	५३	३९	५२	९१
उड़ीसा	२९	८१	२९	७५
पंजाब	५०	५१	५०	८३
राजस्थान	३८	४२	३८	२९
उत्तर प्रदेश	१०९	२८	१११	१४
प० बंगाल	७७	९७	८१	६०
जोड़	८३३	८८	८२९	८९

स्थायी सम्पत्ति सम्बंधी आय-व्यय

राज्य	आय		व्यय	
आन्ध्र	४१	४३	४८	१६
आसाम	९	५०	११	३७
बिहार	३६	५१	४२	३६
बम्बई	७४	५१	७३	७३
केरल	१६	७५	१६	००
मध्य प्रदेश	३३	४१	३५	१८
मद्रास	३४	३१	३४	७३
मैसूर	३२	८८	३३	६९
उड़ीसा	२५	१५	२५	०४
पंजाब	४०	४६	४०	३७
राजस्थान	३४	४०	३४	५२
उत्तर प्रदेश	६१	३५	६०	१३
प० बंगाल	४४	१४	४०	०३
जोड़	४८४	८०	४९५	३१

यह है, करीब ३० अरब रुपये का सालाना लेखा-जोखा।

इसके अतिरिक्त जम्मू-काश्मीर का आय-व्यय इस प्रकार है :—

	करोड़	लाख	करोड़	लाख
साधारण	१२	२५	१०	०९
सम्पत्ति-सम्बंधी	५	३५	७	८९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञान : हमें सींच रहा है

विज्ञान ने जीवन की अभिसंधियों में स्निग्धता सिंचित की है— प्रो० माणिकलाल एस० ठैकर की इस उपलब्धि का विवेचन नीचे पढ़िए।

यह विषय इतना बड़ा है कि, इस पर अनेक ग्रंथ लिखे जा सकते हैं। विज्ञान अलादीन का चिराग है, जिससे मनुष्य ने तरह-तरह के करिश्मे कर दिखाये हैं। विज्ञान के हरेक आविष्कार का कारण, मनुष्य की सुख-सुविधा की खोज है।

आज का युग मूलतः विज्ञान और कारीगरी (टेक्नालाजी) का है। रसोईघर से लेकर संसद-भवन तक सर्वत्र विज्ञान के आविष्कारों से काम लिया जाता है। विज्ञान ने मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य दी है। विज्ञान ही के बल पर मनुष्य पृथ्वी के गर्भ से अनमोल खनिज निकाल सका है। इसी की सहायता से वह क्षणभर में संसार के किसी भी कोने में अपना संदेश भेज सकता है और ध्वनि से भी तेज गति से हवा में उड़ सकता है। पृथ्वी-तल के प्राकृतिक रहस्यों को उद्घाटित करके मनुष्य को संतोष नहीं हुआ और अब वह अनंत आकाश में चंद्रमा और अन्य ग्रहों की यात्रा पर निकल पड़ा है।

'मुख आत्मा का दर्पण है और स्वच्छ दर्पण किसे काम्य नहीं ?' प्लास्टिक सर्जरी में सुश्री मिशेल लिसा ने इन शब्दों के साथ विज्ञान-देवता को मानव-मात्र की सेवा में प्रवृत्त किया।

मनुष्य की ये अद्भुत सफलताएँ विज्ञान के एक ही पहलू को दिखलाती हैं। वास्तव में, ज्ञान का कोई भी क्षेत्र विज्ञान से अछूता नहीं रहा। दर्शन, धर्म और संस्कृति सभी वैज्ञानिक चिंतन से अच्छी तरह प्रभावित हैं। विज्ञान का अर्थ केवल मशीन और कल-पुर्जों का निर्माण भर नहीं है; और न केवल सदियों का संचित ज्ञान-भांडार ही विज्ञान है।

वास्तव में, विज्ञान मस्तिष्क की एक विशेष प्रवृत्ति है। यह नयी-नयी खोज करने, नये तरीकों और नये पदार्थों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आजमाने, अंधविश्वासों और निरर्थक रूढ़ियों को त्यागने और प्रमाण की कसौटी पर कसे तथ्यों को ही ग्रहण करने की एक सजीव प्रेरणा है।

इसी वैज्ञानिक प्रेरणा ने मनुष्य को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाया है। इसी ने मनुष्य को ब्रह्मांड और जीव-सृष्टि के रहस्यों की खोज में लगाया है। इसी से उसने पृथ्वी के वनस्पति, पशु-जगत और पदार्थ तथा शक्ति के विविध रूपों का ज्ञान कराया है। और इसी से उसे रोगों से लड़ने और स्वास्थ्य सुधारने, उद्योग-धंधे बढ़ाने और सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में सहायता मिली है।

यंत्र और कारीगरी में नित्य ऐसे आविष्कार हो रहे हैं और कल-कारखानों में सामान बनाने के तरीके इतनी तेजी से बदल रहे हैं कि, आज का तरीका कल पुराना पड़ जाता है। उद्योग के लिए नयी-नयी खोजों के साथ कदम मिला कर चलना कठिन हो गया है। बढ़ती हुई आबादी और रहन-सहन के ऊँचे होते जाने के कारण, चीजों की माँग भी बढ़ती जा रही है।

औद्योगिक क्षेत्र में छोटे कारखाने बढ़ कर बड़ों से टक्कर ले रहे हैं और बड़े कारखाने अपनी ताकत बनाये रखने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे दोनों के उत्पादन में वृद्धि हुई है। साथ ही कुछ ऐसे धंधे भी शुरू हो गये हैं, जो पहले नहीं थे। इस कारण कच्चे माल और बिजली की खपत बेहद बढ़ गयी है और प्राकृतिक साधनों का भंडार तेजी से घटता जा रहा है। खाद्य, ईंधन, पानी, खनिज आदि साधनों की इस कमी को केवल विज्ञान की सहायता से ही पूरा किया जा सकता है।

बढ़ती हुई जनसंख्या को खाना देने के लिए, अधिक अनाज पैदा करना जरूरी है। इसके लिए अच्छे बीज, अधिक खाद, खेती के नये तरीके, हानिकारक कीड़ों को मारना और पौधों और पशुओं को रोग से बचाना आवश्यक है। उगते समय फसल की सिंचाई और खेतों की उपज बाजार में ले जाने के लिए अच्छी सड़कें और बिक्री की सुविधा भी जरूरी है।

सभ्यता के प्रारंभ से मनुष्य भूमि और पानी का उत्तरोत्तर अधिकाधिक उपयोग करता आया है। फलस्वरूप, खेती और बस्ती के लिए बहुत-से जंगल काट डाले गये। हरियाली नष्ट होने के कारण जमीन सूखी होती जा रही है और उसकी उपजाऊ सतह उजड़ती और कटती जा रही है।

वास्तव में, बहुत-से इलाके तो हमारी गलतियों की वजह से ही सूख गये हैं और सूखते जा रहे हैं। हमें पेड़ों और हरियाली की रक्षा करनी चाहिए और जहाँ संभव हो, वहाँ दलदल और समुद्र से भी जमीन निकलानी चाहिए। हमें इसका ध्यान रखना है कि, जमीन की पैदावार बराबर बढ़ाने के साथ, हमें उसकी उर्वरता को भी कम नहीं होने देना है।

पानी इकट्ठा करने और उससे सिंचाई करने के लिए, हमने विशाल बाँध और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी-बड़ी नहरें बनायी हैं। लेकिन इसके साथ कुछ नयी समस्याएँ भी उत्पन्न हो गयी हैं, जैसे जलाशयों में रेत जमना और भमि में खारापन पैदा होना। इन्हें भी सुलझाना है। जिन इलाकों में काफी पानी नहीं मिलता, वहाँ बाँध बनाये गये हैं और मल तथा कारखानों के गंदे पानी को साफ करके तथा बिजली-क्रिया से समुद्र के पानी का खारापन हटा कर, उससे सिंचाई की गयी है।

फोटो-सिंथेसिस अर्थात् सूर्य-रश्मियों और प्रकाश से पेड़-पौधों के पोषण-ग्रहण करने की प्राकृतिक प्रक्रिया से भी, उपज बढ़ायी जा सकती है। इसी तरह नस्लों के सांकर्य से, अधिक फल देने वाले अच्छी जाति के पौधे भी तैयार किये जा सकते हैं।

खाद्य की तरह शक्ति अर्थात् ईंधन, तेल, बिजली आदि भी आदमी की बड़ी जरूरतें हैं। अभी तक बिजली-उत्पादन के लिए अधिकतर कोयले और तेल को ही काम में लाया जाता था। पर इस गति से कोयला और तेल का भांडार अधिक समय तक नहीं चलेगा। अतः यह आवश्यक हो गया है कि, अणु-शक्ति और सूर्य की किरणों से बिजली बनायी जाये। अणु-शक्ति से तो अब बिजली बनने लगी है; पर सूर्य-किरणों को बिजली में परिवर्तित करना कठिन है। हाल की कुछ खोजों से अब यह आशा होने लगी है कि, इसमें भी सफलता अब दूर नहीं।

खनिज पदार्थों की बेहद माँग भी चिंता का विषय है। इन खनिजों का भांडार भी असीम नहीं है। इधर घटिया किस्म के खनिजों को शुद्ध कर, काम में लाया जा रहा है। धातुओं को जंग लगने और छीजने से बचाने के जो तरीके काम में लाये गये हैं, उनसे इनकी काफी बचत हुई है। आशा है कि, निकट भविष्य में ही समुद्र में से भी धातुएँ निकाली जाने लगेंगी। अब धातुओं की जगह बहुत-सी चीजों में प्लास्टिक भी काम आने लगा है।

रोगों के कारणों को खोजने और उनकी चिकित्सा में भी, विज्ञान ने मनुष्य की बड़ी सेवा की है। बहुत-सी संक्रामक और अन्य बीमारियाँ प्रायः मिटा दी गयीं

"आज हमने अपने ही साथ षड्यंत्र यों कर लिया कि, प्रकाश-किरण के सहारे प्रकाश स्रोत सूर्य को पकड़ने के बजाय, हम किरण-मात्र के विश्लेषण एवं विवेचन में ही जीवन लगा बैठे।" —फ्रांसिस टेल्यार्ड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। रोगों की रोक-थाम में भी विज्ञान ने बहुत कामयाबी पायी है। इससे केवल मनुष्य की आयु ही नहीं बढ़ी है, बल्कि स्वास्थ्य भी अच्छा हुआ है। मल-मूत्र को बहाने और सफाई की व्यवस्था से भी बहुत-सी महामारियों की रोक-थाम हुई है।

हिसाब-किताब और गणित के कठिन समीकरणों को हल करने की भी मशीनें बनायी गयी हैं। अब कारखानों में स्वयं-चलित यंत्रों का प्रयोग भी बढ़ रहा है। इससे मनुष्य की बहुत मेहनत बची है।

विज्ञान ने मनुष्य की बहुत-सी समस्याओं को ही हल नहीं किया, बल्कि मनुष्य के रहन-सहन को भी ऊँचा किया है। अणु-शक्ति, राकेट, राडार, कृत्रिम वर्षा आदि के आविष्कार चमत्कारपूर्ण हैं। पर खेद है कि, जिस विज्ञान के द्वारा यह सब-कुछ हो सका है, उसका दुरुपयोग मनुष्य ने विनाश के लिए भी शुरू कर दिया है।

अणु-शक्ति से ऐसे बम बनाये गये हैं, जिनके प्रयोग से मानव-सभ्यता समाप्त हो सकती है। कीड़ों को मारने की दवाओं के अंधाधुंध प्रयोग से, लाभ से अधिक हानि का खतरा है। रोगों के कीटाणु-सम्बंधी खोजों का दुरुपयोग कीटाणु युद्ध के रूप में हो सकता है।

इससे यह स्पष्ट है कि, यदि विज्ञान को मनुष्य की भलाई में लगाना है, तो मनुष्य के विचारों को बदलना होगा। क्या विज्ञान यह कर सकेगा? मुझे तो पूरा विश्वास है कि, विज्ञान से ऐसा वातावरण पैदा होगा, जिसमें विज्ञान का प्रयोग विनाश के लिए नहीं, अपितु मनुष्य के कल्याण के लिए होगा।

सामाजिक विकास में भी विज्ञान ने बड़ा योग दिया है। विज्ञान ने उन अंध-विश्वासों और रूढ़ियों को हटाने में बड़ी सहायता दी है, जिनके कारण साम्प्रदायिक झगड़े होते थे। वैज्ञानिकों ने केवल ज्ञान का ही भांडार नहीं बढ़ाया, बल्कि तथ्यों के विवेचन की नयी दृष्टि भी दी है। उन्होंने यह साबित कर दिया है कि, सत्य की खोज, जो विज्ञान का चरम लक्ष्य है, वैज्ञानिक तरीके से ही संभव है और वह तरीका सबको सुलभ भी है।

मेरी राय में इस युग की वैज्ञानिक सफलताएँ महान् हैं और उनसे मनुष्य की बहुत भलाई होगी। संसार के बहुत से विवेचक और विद्वान् वैज्ञानिक कार्य में एक-दूसरे से सहयोग कर रहे हैं और ज्ञान की खोज में लगे हैं। उनके परिश्रम से मनुष्य के सुख और समृद्धि का मार्ग अवश्य प्रशस्त होगा।

पास-पड़ोस वालों पर अपने विद्या-व्यसन की धाक जमाना चाहनेवाले एक व्यक्ति ने पुस्तक-विक्रेता को लिखा– "गेटे और शेक्सपीयर की समस्त रचनाएँ भेजिये। साथ ही कुछ पढ़ने-योग्य पुस्तकें भी।" —'व्यंग्य-मंजूषा' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विनोदी भी कितने थे मिर्जा

रामनाथ 'सुमन' द्वारा उद्घाटित मिर्जा गालिब की कुछ हास्य-व्यंग्य-मुद्राएँ

मिर्जा गालिब की अधिकांश जिन्दगी कठिनाइयों में बीती— यद्यपि कुछ हद तक ये कठिनाइयाँ खुद उनकी पैदा की हुई थीं। रईसजदगी की अहंवृत्ति उन्हें अपनी शक्ति से अधिक खर्च करने और एक उच्चतर रहन-सहन ग्रहण करने को विवश करती थी। आमदनी कम, खर्च ज्यादा था। इस प्रकार बाहर कठिनाइयाँ, महाजनों का कर्ज और तकाजा, साहित्य में विरोधियों से संघर्ष, इस पर अनमेल बीबी के कारण घर में वह स्वाद नहीं, जो मानव-जीवन का एक काव्य और प्रसाद है। इन प्रतिकूलताओं के बीच, स्वभावतः वह आत्म-विश्वास के बल पर जिन्दगी का सफर पूरा करते रहे। कुछ तो उनमें जन्मजात उत्फुल्लता और विनोद-वृत्ति थी; कुछ प्रतिकूल वातावरण में रक्षा-कवच-रूप में उभर आयी थी। कठोर परिस्थितियों के कारण ही उनके विनोद में तीव्र एवं प्रच्छन्न व्यंग्यों का स्पर्श है। मिर्जा का जीवन ही लतीफों से भरा हुआ है, जिनमें उनके मजाक और उनकी नश्तर-सी चुभने वाली व्यंग्य-वृत्ति के दर्शन होते हैं। अंदर से दुःखी पर ऊपर से चुहल और खुशी से भरे हुए गालिब के जीवन का यह एक महत्वपूर्ण पर्दा है।

कवि-मुद्रा के छवि-सौंदर्य पर तो प्रजापति को भी कितनी बार ईर्ष्या होती रही है। —आनंद कुमारस्वामी

लखनऊ की एक गोष्ठी में, जिसमें संयोगवश मिर्जा भी मौजूद थे, लखनऊ और दिल्ली की जुबान पर बात चल पड़ी। एक सज्जन ने मिर्जा से कहा कि, जिस बोलते हैं, वहाँ लखनऊ के लोग 'आपको'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोलते हैं। आपकी राय में शुद्ध 'आपको' है या 'अपने तईं'? मिर्जा ने कहा – "फसीह (शुद्ध) तो वही मालूम होता है जो आप बोलते हैं; मगर इसमें दिक्कत यह है कि, मस्लन आपकी ही निस्बत यह अर्ज करूँ कि, मैं तो 'आपको' कुत्ते से भी बदतर समझता हूँ, तो सख्त मुश्किल वाकअ होगी। मैं तो अपनी निस्बत कहूँगा और आप मुमकिन है कि, अपनी निस्बत समझ जायें।" उपस्थित लोग इसे सुन कर फड़क उठे कि, क्या जवाब दिया है और साथ ही व्यंग्य भी कर दिया। फिर अपने-अपने स्थान पर 'आपको' और 'अपने तईं' दोनों के उपयोग का प्रकारांतर से समर्थन भी है।

कामिनी

शब्दों के सम्बंध में मिर्जा का एक और लतीफा भी मशहूर है। दिल्ली में 'रथ' को कुछ लोग स्त्री-लिंग, कुछ पुल्लिग बोलते हैं। किसी ने मिर्जा से पूछा कि—"हजरत, रथ मोअन्नस (स्त्रीलिंग) है या मुजक्कर (पुल्लिग)?" वह बोले—"भैया! जब रथ में औरतें बैठी हों, तो मोअन्नस कहो, जब मर्द बैठे हों, तो मुजक्कर समझो।"

गालिब के जमाने में हजरत मुहम्मद नसीरउद्दीन उर्फ मियाँ काले साहब अपनी विद्वत्ता एवं उच्चारण के लिए प्रसिद्ध थे। वे बहादुरशाह के शेख एवं मौलाना फखरुद्दीन कदससिरा के पोते थे। इन्हीं के कारण किले से मिर्जा का सम्बंध स्थापित हुआ था। मिर्जा से बड़ी मुहब्बत रखते थे। मिर्जा जुए के अभियोग में जेल काट कर छूटे, तो काले साहब उन्हें अपने घर ले गये। अरसे तक वहाँ रखा। उनके आराम-आसाइश की सब सुविधा कर दी। एक रोज मिर्जा काले साहब के पास बैठे थे कि, किसी ने आकर कैद से छूटने की मुबारकबाद दी। मिर्जा कब चूकने वाले थे, झट बोल उठे– "कौन भड़ुवा कैद से छूटा है? पहले गोरे (अंग्रेज) की कैद में था, अब काले की कैद में बंद हूँ।"

गदर के बाद जब मिर्जा साहिब की पेंशन बंद हो गयी थी और दरबार में जाने का दरवाजा भी बंद था, लेफ्टिनेंट गवर्नर पंजाब के मीरमुंशी पं. मोतीलाल एक बार इनसे मिलने आये। मिर्जा ने उनसे कहा—"तमाम उम्र में एक दिन शराब न पी हो तो काफिर, और एक दफा नमाज पढ़ी हो, तो गुनहगार। फिर मैं नहीं जानता कि, सरकार ने किस तरह मुझे बागी मुसलमानों में शुमार किया?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब मिर्जा के खिलाफ तूफान उठ खड़ा हुआ था, तब बहुत-से विरोधी अश्लील बातें एवं गालियाँ लिख कर भेजते थे। इसी जमाने की बात है। मौलाना हाली उनके यहाँ मिलने गये थे। वह लिखते हैं—".....मिर्जा साहिब खाना खा रहे थे। चिट्ठीरसाँ ने एक लिफाफा लाकर दिया। लिफाफे की वेख्ती (अस्तव्यस्तता) और कातिब (लेखक) के नाम की अजनबीयत से उनको यकीन हो गया कि, यह किसी मुखालिफ (विरोधी) का वैसा ही गुमनाम खत है, जैसे पहले आ चुके हैं। लिफाफा मुझको दिया कि, इसको खोलकर पढ़ो। मैं खुद देखता हूँ तो.....फिलहकीकत (वास्तव में) सारा खत, फहश व दुश्नाम (गालीगलौज) से भरा हुआ था। पूछा—'किसका खत है? और क्या लिखा है?' मुझे उसके इजहार में ताम्मुल (संकोच) हुआ। फौरन मेरे हाथ से लिफाफा छीन कर अव्वल से आखिर तक पढ़ा। इसमें एक जगह, माँ की गाली भी लिखी थी। मुस्करा कर कहने लगे—'इस उल्लू को गाली देनी भी नहीं आती। बुड्ढ़े या अधेड़ आदमी को बेटी की गाली देते हैं, ताकि गैरत (शरम) आये। जवान को जोरू की गाली देते हैं, क्योंकि उसका जोरू से ज्यादा ताल्लुक होता है। बच्चे को माँ की गाली देते हैं कि, वह माँ के बराबर किसी से मानूस (हिला हुआ) नहीं होता। यह जो बहत्तर बरस के बूढ़े को माँ की गाली देता है, इससे ज्यादह बेवकूफ और कौन होगा?'

एक महफिल में मिर्जा मीर तकी की तारीफ कर रहे थे। शेख इब्राहीम 'जौक' भी मौजूद थे। जौक और मिर्जा में अक्सर छेड़-छाड़ चलती रहती थी। जौक कुछ 'ठस' करीने के आदमी थे। गालिब जो कहते उसे काटने की ही नीयत उनकी रहती। ग़ालिब द्वारा मीर की तारीफ सुन कर उन्होंने 'सौदा' को मीर से श्रेष्ठ बताया। मिर्जा ने झट चोट की—"मैं तो आपको मीरी (मीर का समर्थक और नेता दो अर्थ) समझता था, मगर अब मालूम हुआ कि, आप 'सौदाई' (सौदा का अनुयायी तथा पागल) हैं।"

एक महाशय भोपाल से दिल्ली सैर को आये थे। वह मिर्जा से भी मिले। कट्टर आदमी थे, धार्मिक सिद्धांतों और परम्पराओं के मानने वाले। जब वे पहुँचे, मिर्जा सागर व मीना सामने रखे बैठे थे। पी रहे थे। आगन्तुक को मालूम न था कि, मिर्जा साहब पीते भी हैं। उन्होंने शराब का शीशा शर्बत का गिलास समझ कर उठा लिया। इसपर पास बैठे दूसरे व्यक्ति ने कहा—"जनाब यह शराब है।" हजरत ने तुरत गिलास रख दिया और कहा—"मैंने तो शर्बत के धोखे उठा लिया था।" मिर्जा ने मुस्कुराकर उनकी तरफ देखा और कहा—"जहे नसीब (भाग्य की बात)! धोखे में नजात (मुक्ति) हो गयी।"

विनोद और हास्य के ऐसे क्षण गालिब के जीवन में बहुत हैं, जिनमें गहराई है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिर मौन गुफाएँ बोलीं

"मैं जहाँ भी खोदूँ मुझे स्वर्ण मिले, मैं जहाँ भी खोजूँ मुझे मधु प्राप्त हो, मैं जहाँ भी देखूँ मुझे प्रकाश दीखे।" इस ऋग्वेदिक ऋचा के प्रकाश में नीचे की पंक्तियाँ पढ़ें।

★

सन् १९४७ की बात है। एक दिन कुछ बद्दू लोग जोर्डन से जोर्डन नदी पार कर, अपने ऊँटों सहित फिलस्तीन में चले आये। वे आम रास्ते से न जा कर, मृत-समुद्र (डेड-सी) के किनारे-किनारे कहीं जा रहे थे। उन्होंने निकट के झरने के पास डेरा डाला, जहाँ से कुछ पर्वत-शिखर दीख पड़ते थे। वे लोग एक शिखर पर चढ़ गये। वहाँ उन्हें २४-२५ गुहाएँ दीखीं। इनमें से एक गुहा में जा उन्होंने देखा कि, वहाँ चार-पाँच फुट ऊँचे मिट्टी के कुण्डे कतार में रखे हुए हैं – कुछ साबुत हैं और कुछ टूटे-फूटे। सब कुण्डों के मुह बंद थे। बद्दुओं ने समझा कि, उनमें धन भरा होगा। एक कुण्डे का मुँह खोला, उसमें से बड़ी दुर्गंध निकली, सड़े हुए चमड़े की। पर साहस करके उन लोगों ने उस कुण्डे में हाथ डालकर अनेक चमड़े के बंडल निकाले; जिनमें उन्हें दो ताम्र-पत्र भी मिले। कुछ बंडल अच्छी अवस्था में थे, कुछ आपस में चिपके हुए थे और कुछ कटे-फटे। इन चर्मपटों में कुछ लेख थे, जो अरबी में नहीं, हिब्रू लिपि में लिखे थे। केवल दो लेखों की लिपि "आरामी" थी। सीरिया का प्राचीन नाम "आराम" था। हजार-बारह सौ वर्ष पहले तक वहाँ की भाषा और लिपि "आरामी" ही थी। ईसा की मातृभाषा भी यही "आरामी" थी। इसी में ही वे उपदेश दिया करते थे।

बद्दू लोग बड़े चतुर और व्यवहार-दक्ष होते हैं। उन प्राचीन लेखों का आर्थिक महत्व समझने में उन्हें कोई दिक्कत नहीं हुई। उन्हें ले कर ये बद्दू यरूशलम आये। वहाँ सीरियन ईसाई-पंथ के महंत (मठाधि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पति) और हिब्रू-विद्यापीठ के प्रमुखों के साथ उन्होंने सौदा किया, जिससे उन्हें अच्छी रकम मिल गयी। उनका हौसला बढ़ा और वे मृत-समुद्र-तट की गुहाओं मे जा कर अधिकाधिक चर्मपट बटोरने लगे। सन १९५७ तक इन चर्मपटों की बदौलत इन बद्दुओं को करीब तीन लाख रुपये की प्राप्ति हुई। हाथों-हाथ लेख अमेरिका पहुँचे। वहाँ एक धनी अमरीकी ने सबके-सब लेख खरीद लिये और इजरायली सरकार को उपहार-स्वरूप दे दिये। सरकार ने एक विशेष भवन बनवा कर, अन्य ऐतिहासिक साधनों के साथ इन प्राचीन लेखों को भी रख दिया। तब से इनकी छान-बीन होने लगी। चिपके हुए चर्म-पट आधुनिक रासायनिक द्रव्यों की सहायता से पृथक किये गये, टुकड़े जोड़े गये, उसके फोटो ले कर पुरानी लिपियों के विशेषज्ञों के पास तथा बाइबिल के संशोधक धर्म-शास्त्रियों के पास भेजे गये। तब से इनपर विद्वानों में जो चर्चा हुई है, उससे अब यह सिद्ध हो गया है कि, ये चर्मपट और ताम्रपत्र ईसा पूर्व १५० से ५० तक के वर्षों में लिखे गये थे। उनका संशोधन करने पर इनसे जो बातें प्रकट हुईं उन्होंने सारे ईसाई जगत् में खलबली मचा दी।

जिस गुफा से चर्मलेख प्राप्त हुए उसी के निकट एक प्राचीन गढ़ी के अवशेष और एक श्मशान-भूमि विद्यमान हैं। श्मशान में ग्यारह सौ कब्रें हैं। पेरिस के एक प्रतिभाशाली पुरातत्त्ववेत्ता के सुझाव पर सरकार के द्वारा वहाँ उत्खनन कराया गया। थोड़े ही नीचे गढ़ी के प्राचीन चौतरे और भवन दीख पड़े। भवन बहुत विशाल था, जिसमें विशाल भोजन-गृह, यंत्रागार, बड़े-बड़े शय्यागृह और एक विस्तृत ग्रंथालय मिला। ग्रंथालय में पुराने चाल की मेजें और दावातें भी मिलीं। इधर-उधर मिट्टी के कुण्डों के टुकड़े बिखरे पड़े थे, जो पूर्वोक्त गुहा में मिले कुण्डों से मिलते-जुलते थे। गढ़ी के रूप में पायी गयी इमारत "एसेनी" पंथ के साधुओं का ही मठ था। ये चर्मपट इन साधुओं ने शत्रु के आक्रमण के समय गुहा में छिपा दिये थे।

"ध्रुव सत्य, बंधु! धर्म की कील पर ही तो घूम रही हैं ब्रह्मांड की ये अनंत अग्निशिखाएँ!" —संत कामते

सन २० में ईसा के समकालीन फिजो नामक ग्रंथकार ने यहूदियों के अनेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्मपंथों पर एक ग्रंथ लिखा। इसके उपरांत सन ६९ से ९४ के बीच जोसेफस नामक एक यहूदी लेखक ने, जो रोमनों का सेनापति था, 'यहूदियों का युद्ध' नामक पुस्तक लिखी। दोनों ग्रंथों में एसेनी-पंथ का विस्तृत वर्णन है। और यह वर्णन पूर्वोक्त गुहा के चर्मपटों के लेख से ठीक-ठीक मिलता है। उसका सारांश यह होता है कि, मृत-समुद्र के पास एसेनी-पंथ के साधुओं का एक विशाल मठ था; सन् ७० में जब यरूशलम जलाया गया, तब यह मठ भी ध्वस्त कर दिया गया; इस भय से कि, रोमन लोगों का इस मठ पर भी आक्रमण होगा, उन साधुओं ने अपने मठ के ग्रंथालय के सब पवित्र धर्मग्रंथ कुण्डों में भर कर गुहा में छिपा दिये और स्वयं वहाँ से निकल भागे। अनुमान है कि, मठ के साथ ही उन साधुओं का भी नाश हो गया होगा, अथवा वे बाबुल में अथवा भारत के कुलाबा जिले में आश्रय के लिए भाग गये होंगे। जो हो, ये इजरायली फिर गुफाओं की ओर नहीं पहुँच पाये और उनके ये धर्मग्रंथ गुहा में पड़े रहे—शायद "धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायां" (धर्म का तत्व गुफा में छिपा हुआ है) इस कथन को चरितार्थ करने के लिए ही।

चर्मपटों के अनुशीलन से इतिहासकारों का यह संदेह पुष्ट हो गया कि, २५ दिसंबर तो ईसा मसीह की केवल आनुमानिक जन्मतिथि है। वस्तुतः 'न्यू टेस्टामेंट' में ईसा के चार चरित्र वर्णित हैं। इनमें से तीन परस्पर मिलते हैं—शायद उनका आधार एक ही है। चौथा जॉन का लिखा है। प्रथम तीन में ईसा के जीवन के अंत के कुछ दिनों का वर्णन है। जॉन-रचित चरित्र कोई तीन साल का विवरण देता है।

ईसा मसीह अपने जीवन के प्रथम छब्बीस-सत्ताईस वर्ष तक कहाँ थे और क्या करते थे, इसका किसी को पता नहीं है। वे किस गाँव में जन्मे थे, इसमें भी बहुत मतभेद है। कोई बेथलहैम को, तो कोई गेलीली को उनका जन्म-स्थान बताते हैं और कोई जूडा को। इसी तरह वे किस साल उत्पन्न हुए, इसका भी पता नहीं है। ईसवी सन् के पूर्व चौथे वर्ष या छठे वर्ष में उनका जन्म होने का अनुमान किया जाता है। किस दिन ईसा उत्पन्न हुए, यह भी अज्ञात है। उनका जन्मदिन २५ दिसम्बर को मनाया जाता है; परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि, इस तिथि का निश्चय बहुत पीछे किया गया। रोमन लोगों का एक त्योहार २५ दिसम्बर को मनाया जाता था—अंधकार पर प्रकाश की विजय का पर्व। इसे रोमनों ने ईरान के मिथ्र (मित्र) लोगों से, जो सूर्योपासक थे, लिया था। ईसा के पूर्व दो-तीन सदियों तक भूमध्य-सागर के आस-पास के पूर्व भाग में मिथ्र-धर्म प्रभावी था और उसके संस्कार लोगों पर बने हुए थे। शायद इस प्राचीन परंपरा से सम्बंध रखने के लिए ही ईसा का जन्म न्यू टेस्टामेण्ट में २५ दिसम्बर माना गया और ऐसी कथाएँ उसमें जोड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गयीं जिनसे ईसा का नया धर्म लोकप्रिय हो जाये। उदाहरणार्थ उसमें लिखा गया है कि, ईसा का जन्म एक गुहा में हुआ था। मिस्री लोगों के आराध्यदेव ओसिरिस का जन्म भी गुहा में ही हुआ था। ईसा और ओसिरिस में बड़ी समता है। ओसिरिस भी सूली पर चढ़ा दिये गये थे। उनकी माँ ईसिस मिस्री देवता मानी गयी, जैसे पवित्र कुमारी मेरी भी देवता मानी गयी हैं। ईसा के जन्म के समय में राजा हिराड ने समस्त नवजात बच्चों को मरवा डाला था। पर फिजो और जोसेफस के ग्रंथों में इनका उल्लेख नहीं है। ये कथाएँ पुराने एसेनी धर्म के साथ ईसाई धर्म का समन्वय करने के हेतु लिखी गयी हैं।

"एसेनी" ग्रीक शब्द है। इसका अर्थ है—साधु, पवित्र आचरण वाला। एसेनी धर्म-पंथ के लोग एकांत जंगलों में रहते थे; क्योंकि फिलस्तीन में सदा मार-काट एवं रक्तपात हुआ करता था और एसेनी साधु युद्ध, हिंसा, गुलाम-प्रथा तथा यज्ञ-बलि को निषिद्ध समझते थे। उनके मत से भगवान एक ही है; और मनुष्य उनके बच्चे हैं। अतः उनमें परस्पर बन्धुभाव होना चहिए। जब कोई उनके पंथ में दीक्षित होता, तो उसे अपना सब धन संघ को अर्पित कर देना पड़ता था। उनका सिद्धांत था कि, रुपया-पैसा, वस्त्र और अन्न सबका है, किसी अकेले का नहीं। वृद्ध और बीमार व्यक्तियों की सम्हाल संघ करता था। मिथ्या-भाषण, गाली-गलौज और सौगंध खाना पाप माना जाता था। निष्कांचन रह कर मित भोजन करना, मनोविकारों को काबू में रखना, काम और क्रोध को जीत लेना एसेनी-पंथ के धर्माचार थे। ये उच्च श्रेणी के साधक आजीवन ब्रह्मचारी रहते थे। इन्हीं सब आचारों का ईसा ने भी उपदेश दिया है।

ऐतिहासिक प्रमाणों से यह भी ज्ञात होता है कि, फकीरी लिये हुए एसेनी लोग मृत-सागर के पास रहते थे। जॉन बैप्टिस्ट और ईसा धर्म-साधना के लिए इस प्रांत में आ कर कुछ समय तक रहे थे। एसेनी-पंथ की तरह, ईसाई मठों में भी तीन प्रमुख व्यक्ति और बारह चेले चुने जाते थे।

उक्त चर्मपटों में यहूदियों के पुराने और ईसाइयों के नये टेस्टामेण्ट का बहुत-सा अंश लिखा हुआ है, जो वर्तमान बाइबिल में तो नहीं है, पर किसी समय सर्वमान्य था। ईसा ने सूर्योपासना को छोड़ कर एसेनी-पंथ के शेष सब आचार ग्रहण किये, जिससे एसेनी और ईसाई कर्मकांड में कोई भेद न रहा। ईसा का भोजन भी एसेनी ढंग का था। रोटी और मद्य को देवदूत का देह और रक्त समझा जाता था।

वस्तुतः प्रत्येक नया धर्म अपने पूर्ववर्ती धर्म के स्वरूप को अधिक निर्दोष एवं सुभग बनाने के लिए ही आरंभ होता है। अतः पूर्ववर्ती धर्म से बहुत-सी बातों में उसकी समता होना स्वाभाविक ही है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेड़ों की रहस्य कहानियाँ

आज जो भी निसर्ग अनाहत बच गया है, उसकी आहत वाणी को हृदयंगम करने वाले वेरियर एल्विन द्वारा संकलित-प्रयोजित ये वृक्षकथाएँ अपने मर्म में भी कितनी मुखर हैं !

★

सावरा जाति के पुराण में लिखा है कि, पहले कित्तुंग देवता ने संसार में सिर्फ फलदार वृक्ष लगाये। तब सभी लोग फल खा कर रहते थे। पर धीरे-धीरे जन-संख्या बढ़ती गयी; लोग कृषि के लिए जंगल साफ करते गये और उन्होंने ईंधन के लिए वृक्ष काट डाले। इससे कित्तुंग बड़ा दुःखी हुआ और एक चट्टान पर बैठ कर रोने लगा; वृक्षों से उसे इतना प्रेम था!। अंत में उसने लोगों को नये वृक्षों के बीज दिये और कहा कि, नये वृक्षों पर फल नहीं लगेंगे; साथ ही बचे हुए पुराने वृक्षों से भी भविष्य में खाने को फल नहीं मिलेंगे।

वृक्ष-मानव

[चित्र : इंडोनेशिया की एक नटाकृति]

आदिम जातियाँ वृक्षों की उत्पत्ति के भिन्न-भिन्न कारण बताती हैं। उनकी कितनी ही कथाएँ यह बताती हैं कि, अमुक वृक्ष या पौधा, पहले-पहल लाश से उत्पन्न हुआ— ऐसे मनुष्य की लाश से, जो अप्राकृतिक मृत्यु से मरा था। उदाहरणार्थ, दो युवा प्रेमी कभी अत्यंत दारुण अवस्था में मारे गये। उनकी लाशों से दो अलग धाराओं में निकला रक्त, संयुक्त धारा में बह चला। उसी से पर्सा वृक्ष उत्पन्न हुआ, जिसमें युवक के लिए लाल फूल है और लड़की के लिए काले। यहाँ काले फूल से स्पष्टतः कली के गहरे हरे रंग के पुष्प-कोष से अभिप्राय है।

दूसरी कई कथाओं में पशु वृक्षों के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। सुअरों का समूह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कटहल का वृक्ष बन गया। झींगे योनि बदल कर इमली के वृक्ष बने। इनमें अधिकांश कथाएँ वास्तविक या काल्पनिक रूप-सादृश्य पर आधारित हैं; जैसे– जनेऊ की वेल बन गयी, अर्थी से गिरी काली लड़की का अंग आबनूस बन गया।

आदिम जातियों के वृक्ष-पुराणों में इमली का बहुत ऊँचा स्थान है और उसकी पत्तियाँ छोटी होने का कारण बताने के लिए कितनी ही कथाएँ हैं। मुंडाओं का कहना है कि, दो वीर भाई थे। वे एक बाज पक्षी, सोने की गदा और सोने की टोकरी ले कर शिकार के लिए जाया करते थे। एक दिन वे अचानक भारी वर्षा में फँस गये और पानी से बचने के लिए इमली के वृक्ष के नीचे खड़े हो गये। उन दिनों उसकी बड़ी-बड़ी पत्तियाँ थीं। पर वर्षा उनमें से भी हो कर आती रही। इससे दोनों भाई क्रुद्ध हो गये और गदा से उन पत्तियों पर तब तक प्रहार करते रहे, जब तक वे कट कर टुकड़ों में नहीं बँट गयीं।

बिठौड़ों की इमली-गाथा भी इसी से मिलती है; पर एक विचित्र घुमाव उसमें है। राम, लक्ष्मण और सीता वन में थे और एक बड़े इमली के वृक्ष के नीचे पर्ण-कुटी बना कर रहते थे। इमली की बड़ी पत्तियाँ धूप और बारिश से उनकी रक्षा करती थीं। एक दिन राम ने अनुभव किया कि, उनका वन-जीवन अति सुखमय है। उन्होंने लक्ष्मण से कहा – "हमें वन-निर्वासन तो कठिनाइयाँ सहन करने के लिए मिला था; पर ये बड़ी पत्तियाँ हमारी धूप-वर्षा से रक्षा करती हैं। अपने धनुष से इन पर प्रहार करो।" लक्ष्मण ने बाण चलाये और पत्तियाँ टूट-टूट कर छोटे छोटे भागों में विभाजित हो गयीं। अगली बार जब तूफान आया, तो राम, लक्ष्मण और सीता को भरपूर कष्ट मिला।

एक "बैगा" कथा इमली के इस परिवर्तन का सम्बंध एक दैवी परीक्षा से जोड़ती है। एक देवी ने अपनी सुंदर लड़की से विवाह करने की इच्छा से आने वाले तरुणों के लिए यह परीक्षा रखी थी कि, वे इमली के तमाम पत्तों की संख्या गिनकर बतायें। उन दिनों यह कार्य असंभव न था; क्योंकि तब इमली के पत्ते बड़े और संख्या में थोड़े होते थे। अचानक एक दिन एक अनिच्छित प्रार्थी आ गया। भय से देवी के हाथ से ताली बज गयी और प्रत्येक पत्ते के बीस-बीस भाग हो गये। पर युवक का जादू और बड़ा था; उसने वे छोटे-छोटे पत्ते भी गिन डाले और वधू को जीत ही लिया।

वनरानी

[चित्र : अवनी बाबू के चित्र की रेखानुकृ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसा कि स्वाभाविक ही है, अनेक वृक्ष-कथाएँ राम-लक्ष्मण के वन-भ्रमण से सम्बंधित हैं। लक्ष्मण ने खजूर के वृक्ष पर बाण चलाया, तो खजूर की पत्तियाँ जो उस समय चौड़ी होती थीं, लम्बी और संकीर्ण हो गयीं। एक "बिठौड़" कथा के अनुसार झड़बेरी पर राम की कृपा हो गयी। सीतापहरण के बाद राम और लक्ष्मण बेर-झाड़ी के पास पहुँचे और उससे बोले– "क्या तुमने रावण को, सीता को ले जाते देखा ?" वृक्ष ने कहा–"हाँ, यह उसी के कपड़े का टुकड़ा है, जिसे मैं पकड़ सका।" और उसने अपनी शाखाओं में उलझी हुई एक चिंदी की ओर संकेत किया। इस पर राम ने वृक्ष को आशीर्वाद दिया और कहा– "शाबाश मित्र ! तुम्हारी कभी मृत्यु न होगी। चाहे तुम्हारे कितने ही टुकड़े हो जायें; पर यदि एक जड़ भी बची रही, तो तुम फिर फूट निकलोगे।" और तभी से उसे नष्ट करना बड़ा कठिन है। कोडावा लोगों का कहना है कि, बादाम बड़ा भाग्यशाली वृक्ष है; क्योंकि दंडक वन में घूमते-फिरते राम ने इसी के नीचे डेरा जमाया था।

केला आदिवासी-कथाओं में सर्वाधिक चर्चा-प्रसंगों का विषय है। इसकी दो विशेषताओं पर मुख्यतया इन लोगों ने ध्यान दिया है–एक तो इसके चौड़े पत्ते और दूसरे, एक बार फल लगने पर इसका अंत हो जाना। इसलिए जो स्त्री केवल एक बच्चा जनती है, उसे वे "केला बाँझ" कहते हैं। नीचे उड़ीसा की पहाड़ियों के गड़ावा लोगों में प्रचलित केला-कथा दी जाती है।

आम, इमली, अंजीर, जामुन और केला पुराने काल में पाँच बहनें थीं। पतियों की खोज में वे ग्राम-ग्राम में नाचने जाती थीं; पर कोई उनसे विवाह नहीं करता था। अंत में भगवान उनके पास आये और उनसे अलग-अलग पूछा कि, वास्तव में तुम्हें क्या चाहिए। आम, इमली, अंजीर और जामुन ने एक ही उत्तर दिया– "मुझे एक पति और कई बच्चे चाहिए।" पर केले ने कहा–"मुझे पति तो नहीं चाहिए, पर बच्चे कई और वह भी अभी चाहिए; क्योंकि मैं अब शीघ्र बूढ़ी हो जाना चाहती हूँ।" भगवान ने उसे वचन दिया और कहा कि, जैसा तुमने चाहा है, वैसा ही होगा। तब से केले का कोई पति नहीं और वह एक वर्ष में ही बूढ़ी हो जाती है।

जल्दी ही बाकी चारों बहनों को पति मिल गये और अनेक बच्चे हुए – इतने कि जितने उनके सिर में बाल भी नहीं थे। उनके पति डर कर भाग गये। बहनें भी भयभीत हो गयीं कि, ये बच्चे हमें मार न डालें। तब भगवान ने पाँचों बहनों को वृक्षों के रूप में बदल दिया। उनके बाल शाखाएँ हो गयीं और बच्चे बन गये फल। "पर अब"–भगवान ने पूछा–"पतियों का तुम क्या करोगी ?"

"जो हमें सींचेगा-उगायेगा, वही हमारा पति होगा।" उन्होंने उत्तर दिया। इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार आदमी वृक्षों के पति हैं।

पीपल भारत का सबसे पवित्र वृक्ष है। कहा जाता है कि, इसकी जड़ ब्रह्मा, छाल विष्णु और शाखाएँ महादेव हैं। इस वृक्ष के विषय में एक विचित्र कथा "सावरा" लोगों में कही जाती है। सृष्टि के आरम्भ में जब जल-ही-जल था, देवता कित्तुंग और उसकी बहन एक लौकी के खोल में रहते थे। जब जल उतर गया, वे दोनों अपने घर से निकले और एकांत पर्वत-प्रदेश में रहने चले गये। उस समय संसार में वृक्ष नहीं थे, सो उन्हें खुले आकाश के नीचे सोना पड़ता था। एक रात को जब वे सो रहे थे, एक गिलहरी ने कित्तुंग के हाथ की चार उँगलियाँ काट लीं; केवल तीसरी उँगली बची रह गयी। दर्द से कित्तुंग जाग गया और चिल्लाने लगा। ग्रीष्म ऋतु आयी तो बहन ने कहा—"इस गर्मी में कैसे रहूँगी, यहाँ तो छाया तक नहीं है?" बहन की पीड़ा से आर्द्र कित्तुंग ने झट अपना पंगु हाथ काट दिया। जो तत्काल बढ़ कर वृक्ष बन गया और छाया देने लगा। यही पीपल है, जिसकी हर पत्ती के बीच में एक ऊँगली है।

इसी प्रकार काँटों की उत्पत्ति बताने वाली भी कई रोचक पौराणिक कथाएँ हैं। राजा के क्रोध से त्राण की खोज में भागता हुआ एक दानव, अपने दाँत उखाड़ कर वृक्ष के तने में गाड़ देता और उनके सहारे ऊपर चढ़ जाता है। उसी समय एक लड़की उपने पति को फल लाने के लिए कहती है, किंतु वृक्ष बहुत ऊँचा है; इसलिए वह अपनी सोने की चूड़ियों के टुकड़े कर वृक्ष में लगाती है। कालान्तर में दानव के वे दाँत और सोने की चूड़ियों के वे टुकड़े, काँटे बन जाते हैं।

वनस्पति-शास्त्र की दृष्टि से ये सब निरी कथाएँ हैं; पर आदिवासी संस्कृति के विद्यार्थी के लिए लोककथाएँ किसी महाकाव्य की भाँति ही महत्वपूर्ण हैं। वे दिखाती हैं कि, इन लोगों का मस्तिष्क किस दिशा में चलता है, उनकी कल्पना किधर दौड़ती है। इनका अध्ययन करते समय हमें विंटरनित्ज के ये शब्द याद रखने चाहिए—"रीति-रिवाजों का उद्गम खोजते समय, हम एक पवित्र भूमि पर खड़े होते हैं—मानव समाज के प्राचीन इतिहास के द्वार पर—मनुष्य के पास जो भी उच्च तथा अनुकरणीय है, उसके सहज-सरल अकृत्रिम उद्गम पर।"

वाग्वैखरी शब्दझरी शास्त्रव्याख्यानकौशलम्।
विदुषामिह वैदुष्यं भुक्तये न तु मुक्तये॥

—वाणी का वैभव, शब्दों के निर्झर, शास्त्रों का पांडित्य, गूढ़ विषयों को विशद करनेवाला व्याख्यान-कौशल तथा विद्वानों की विद्वत्ता—ये सबके-सब भोग के ही मार्ग हैं, मुक्ति के नहीं।

—शंकराचार्य : विवेकचूड़ामणि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूस मौसम बदलेगा

आज इन्सान ने आगे बढ़ कर अनहोनी के द्वार को खटखटाया है; जो अव्यक्त था, उसे अभिव्यक्ति के लिए प्रताड़ित किय है; जो सम्भव नहीं था, उसे झकझोरा है। प्रस्तुत प्रबंध में आधुनिक रूस के ऐसे ही प्राणवान विज्ञानवेत्ताओं के एक नये करिश्मे का जिक्र है।

रूसी वैज्ञानिकों के मन में आजकल जो सबसे महत्वाकांक्षा-पूर्ण योजना चक्कर काट रही है, वह है उत्तरी ध्रुव-वृत्त के देशों का मौसम बदल देने की! वे यूरोप, एशिया और अमेरिका के उत्तरी छोर पर स्थित देशों को, आर्क्टिक सागर से उद्भूत हिमरूपी दानव के शिकंजे से मुक्त करने की तरकीब सोच रहे हैं। और यह योजना कोरी कल्पना या शेखचिल्ली की-सी कहानी नहीं है। उसे क्रियान्वित करने का उपाय भी उन्हें ज्ञात है। है तो यह उपाय बड़ा ही दुःसाध्य, पर आज के इंजीनियरों के लिए असाध्य नहीं।

इस योजना का केन्द्र-बिंदु है साइबेरिया (एशिया) के पूर्वी छोर और अलास्का (उत्तरी अमेरिका) के पश्चिमी छोर को परस्पर मिलने न देनेवाला तथा प्रशांत एवं आर्क्टिक सागरों को जोड़ने वाला बेरिंग का जल-डमरू-मध्य, जिसकी कम-से-कम गहराई १५० फुट और अधिक-से-अधिक चौड़ाई ५५ मील है। रूसी वैज्ञानिकों की महत्वाकांक्षा इसी छोटी-सी जगह पर अटकी हुई है।

जैसा कि सभी जानते हैं, आर्क्टिक-सागर अत्यंत ठंडा है, जब कि प्रशांत महा-सागर में ताजे उष्ण जल की धाराएँ बहती हैं। अब यदि किसी प्रकार, आर्क्टिक सागर में प्रशांत महासागर का पानी प्रचुर परिमाण में डाल कर, उसमें उष्ण जल-धारा प्रवाहित की जा सके, तो उत्तरी ध्रुव-वृत्त की बर्फ पिघलेगी और वहाँ के मौसम में अद्भुत

ऋतु-परिवर्तन-सम्बंधी लक्ष्य का मानचित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिवर्तन पैदा हो जायेगा।

ऐसा करने के लिए बेरिंगजल-डमरू-मध्य पर बाँध बाँधना होगा। इस बाँध का क्षेत्रफल अर्थात् उसकी मोटाई और लम्बाई का गुणनफल, ३ करोड़ ६६ लाख वर्ग फुट होगा। ऐसा बाँध बाँधना आज के युग में कोई असंभव बात नहीं।

यदि ऐसा बाँध बँध सका, तो उसके ये दो बड़े लाभ होंगे—

(१) आर्क्टिक-प्रदेश की जो करोड़ों एकड़ भूमि आज जनहीन और हिमाच्छादित है, उस पर खेती होने लगेगी, उसके हरे-भरे चरागाहों पर पशु चरने लगेंगे।

(२) अमेरिका व एशिया के बीच उत्तरी समुद्रों में हो कर जहाज आने-जाने लगेंगे।

आर्क्टिक-वृत्त पृथ्वी के मौसम का कारखाना कहलाता है। यहीं से पैदा हुई सरदी, उत्तरी देशों की छाती पर छा जाती है। वहीं से अस्थिदंशक बर्फीले तूफान उठते हैं, जो सारे यूरोप, अमेरिका और एशिया के उत्तरी देशों को सच्चे अर्थों में हिम का घर बना देते हैं।

बेरिंग-बाँध की कल्पना रूसियों ने पहले-पहले सन् १९२१ में की थी और तब लेनिन ने एक सुयोग्य निर्माता ग्लेब क्रिशनोवस्की को बाँध के नक्शे बनाने का काम सौंपा था। क्रिशनोवस्की की योजना में एक विचार यह था (और आज की योजना में भी वह है) कि, यह बाँध यातायात के मार्ग का भी काम करे। इस मार्ग से पेरिस से न्यू यार्क तक सीधी रेल ले जाना सम्भव हो जायेगा। सचमुच जिस दिन पेरिस से चली रेल, सारे यूरोप और एशिया को लाँघ कर, बेरिंग-बाँध पर से होते हुए, अलास्का और कनाडा होकर, न्यू यार्क पहुँचेगी, वह दिन मनुष्य की सृजन-शक्ति की विजय का दिन होगा।

बेरिंग-बाँध की सहायता से उत्तरी ध्रुव के शीत पर धावा करने की यह विधि वैज्ञानिकों ने सोची है। अणुशक्ति द्वारा संचालित पम्पों से, बाँध के दक्षिण में स्थित प्रशांत सागर से उष्ण पानी आर्क्टिक में उलीचा जायेगा। इस योजना के सबसे प्रबल हिमायती विश्व-विख्यात रूसी इंजीनियर मार्किन का कहना है कि, इस जल-परिवर्तन से जितनी उष्णता प्राप्त होगी, वह पृथ्वी भर के सारे तेल से प्राप्त हो सकनेवाली गरमी से तिगुनी होगी।

जैसा कि हमने आरम्भ में देखा, अट-लांटिक सागर की उष्ण जलधाराएँ जो यूरोप के उत्तर से चल कर आगे बढ़ती हैं, वे रूस के उत्तर नोवाया क्रेमल्या द्वीप-समूह से टकरा कर रह जाती हैं और उत्तरी ध्रुव से प्रसारित शीत, अबाध रूप से नार्वे, स्वीडन, साइबेरिया, अलास्का, उत्तरी कनाडा, ग्रीनलैंड में छा जाता है। जब बेरिंग-योजना द्वारा प्रशांत सागर का जल, आर्क्टिक महासागर पर आक्रमण कर देगा, स्थिति बिल्कुल उलटी हो जायेगी। वैज्ञानिक उसी के सुख-स्वप्न देख रहे हैं। और आज के वैज्ञानिकों के सपनों को सपना कहना भी तो बड़ी भूल है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रांति की ज्वाला का यह पहला आह्निकण

सन् सत्तावन में प्रारम्भ हुए दासत्व-दहन-यज्ञ की प्रथम आहुति का डा० हेमचंद्र जोशी के शब्दों में रोमांचक विवरण

★

डलहौसी के शासन में कई ऐसे कानून बने कि, उत्तर प्रदेश, बिहार और दिल्ली के आस-पास हिन्दू तथा मुसलमानों में घोर असंतोष की आग धधकने लगी। भारत-भर में असंतोष की ज्वालाएँ उठीं; किंतु नाना धोंडूपंत, तात्या टोपे, नवाब बहादुरशाह आदि द्वारा इस आग में जो घी डाला गया, उसने उत्तर भारत में (पंजाब को छोड़) इस दावानल को ऐसा भड़काया कि, सन् सत्तावन का स्वातंत्र्य-संग्राम होकर ही रहा।

इस विप्लव के कर्णधारों ने समझ लिया था कि, निहत्थी जनता अंग्रेजों का बाल बाँका नहीं कर सकती। केवल सशस्त्र सैनिक ही राज उलटने में समर्थ हो सकते हैं। अतः उन्होंने भारतीय सेना के भीतर नाना उपायों से विद्रोह के बीज बोये। इनमें मुख्य भाग पंडितों और मुसलमान मुंशियों का था। हिन्दू सेनाओं में रामायण की कथा के बहाने प्रचार किया जा रहा था—"पराधीन सपनेहु सुख नाहीं," "सबते अधिक जाति-अपमाना," "जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवस नरक अधिकारी"। सैनिकों को बताया जा रहा था कि, हिन्दू और मुसलमान धर्म नित नये कानूनों द्वारा कुचले जा रहे हैं।

ऐसे वातावरण में, जेलों में कैदियों के बरतनों में कुछ फेर-फार किया गया, तो उत्तर प्रदेश और बिहार की कई जेलों में विद्रोह हो गया। प्रचार की भ्रांत गति-मति में जनता में यह भय व्याप्त हो गया कि, रेलें इसलिए चलायी गयी हैं कि, सब जातें एक हो जायें। गाँवों में भी स्कूल खोलने का कार्यक्रम बना, तो इसका अर्थ यह लगाया गया कि, अंग्रेज सर्वत्र ईसाई-धर्म का प्रचार करना चाहते हैं। इसी समय, सरकार ने जब यह नियम बनाया कि, अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों को नौकरी में प्राथमिकता दी जायेगी, तो पंडितों और मौलवियों में आग लग गयी। राज-भाषा और राजधर्म को मान्यता-च्युत करके, अंग्रेजों ने मुसलमानी प्रभुत्व की अंत्येष्टि ही कर दी थी। इस कारण मुसलमानों में अंग्रेजी-राज के विरुद्ध घोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असंतोष और घृणा थी। बिहार के मुसलमानों ने १८५५ ईसवी में एक घोषणा निकाली, जो बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर हैलिड के पास तक पहुँचायी गयी। उसमें कहा गया था—

"हिंदुस्तान के निवासियों को धोखा देने के लिए, सरकार ने फारसी में एक प्रति-घोषणा निकाली है, जिसमें कहा गया है—सरकार हिंदू और मुसलमान धर्मों को उजाड़ना नहीं चाहती। ये दोनों धर्म भारत में अति प्राचीन समय से चले आ रहे हैं। शायद सरकार हमें बेअदब समझे, पर हम यह कहना चाहते हैं कि, भारतवासी वह सब भली भाँति समझते हैं, जो सरकार करती है।..... क्या सरकार ने हिंदू और मुसलमान धर्मों को समाप्त करने के लिए नाना उपाय नहीं किये हैं? देखिए, (१) सरकार ने हुक्म दिया कि, साहेबगंज जेल में कैदियों का धर्म एक हो जाना चाहिए। परिणाम में वहाँ भयंकर दंगा हुआ। (२) नये-नये स्कूल खोल कर सरकार ने हजारों को बेरोजगार कर दिया है। (३) आरा और मुजफ्फरपुर जेलों में कैदियों की थालियाँ बदली गयीं। वहाँ भी कैदियों ने भयंकर दंगे किये और सरकार की न चली। (४) यहाँ आने के बाद लेफ्टिनेंट गवर्नर निम्न-लिखित नये काम करना चाहते हैं: (१) गाँव-गाँव में नये स्कूल खोलना, (२) ऐसे कानून बनाना, जिससे इज्जतदार आदमियों की इज्जत चली जाये, (३) देशी हाकिमों के नाम पर गश्ती चिट्ठी भेजना कि, वे अंग्रेजी-शिक्षा और ईसाई धर्म की तारीफ करें, (४) पुस्तकालय और वाचनालय खोल-खोल कर हिन्दुओं और मुसलमानों को उनकी धर्म-पुस्तकों से वंचित करना। अरबी, फारसी तथा अन्य देशी भाषाओं पर अंग्रेजी लादना और उसे प्राथमिकता देना, क्या हिमाकत नहीं है? इस आज्ञा के द्वारा सरकार हिन्दू और मुसलमान धर्मों को खत्म कर देना चाहती है। इन बातों को अलग कीजिए। १८५५ ईसवी में कानून बना है कि, औरतों पर मुकदमा चलने पर उन्हें खुद अदालत में हाजिर होना होगा। क्या इससे अच्छे घरानों की इज्जत खाक में न मिल जायेगी? गवाही के लिए भी स्त्रियों को, जब चाहो हाजिर करवा लो। इस दुर्गति में हम जीने से, मरना बेहतर समझते हैं।"

इस प्रकार के विचार, उस समय की धार्मिक जनता का मन मथ रहे थे। इन बातों में हम, इस समय उतना महत्व नहीं देख रहे हैं, क्योंकि आज हमारी नजर और विचार काल की प्रगति के साथ-साथ पलटा खा गये हैं। उक्त विचारों में से बहुतों का आज हम स्वागत करेंगे। छूत-छात समाप्त हो गयी है। स्त्रियाँ पुरुषों की होड़ में लगी हैं। स्कूलों और कालेजों में लड़कियाँ, लड़कों को मात दे रही हैं। नौकरियों में स्त्रियाँ, पुरुषों से पीछे नहीं रहना चाहतीं। धर्म का महत्व नहीं के बराबर रह गया है। सरकारें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तकालय खोलना अपना कर्तव्य मान रही हैं। किन्तु एक-सौ वर्ष पहले, उक्त हस्तक्षेप ने भारतीय जनता में तहलका मचा दिया था। जनता में – लाखों-करोड़ों मनुष्यों के मन में–अंग्रेज सरकार के उक्त विचारों और कानूनों से अंग्रेजी राज के उखाड़ने के लिए जबरदस्त खलबली मच गयी थी। परम्परा की रक्षा के लिए प्राण देना, बायें हाथ का काम हो गया था। फलतः अधिकांश सैनिक भारत में अंग्रेजी राज की जड़ उखाड़ फेंकने को बेचैन हो उठे। कुछ तो सन् सत्तावन का इंतजार भी न कर सके।

रणभेरी

[चित्र : प्रद्युम्न तन्ना-कृत स्केच]

घटना १८५६ ईसवी के जाड़ों की है। चौबीस परगने का अंग्रेज जज, एक शाम को चाय पी कर, अपने कमरे में गया और अपनी डायरी देखने लगा कि, उसने अपना कर्त्तव्य कितना निबाहा है। उसने देखा कि, वह दो महीने से जेल देखने नहीं गया था। इसलिए उसने दूसरे दिन कचहरी में जेल देखने की इच्छा प्रकट की। सब प्रबंध किया गया। साथ में पलटन के कुछ सशस्त्र सिपाही भी कर दिये गये। सूबेदार, पुलिस सुपरिंटेंडेंट, कलक्टर आदि भी साथ थे। जज सदल-बल शाम को पाँच बजे के करीब जेल पहुँचा। जेल के भीतर उसने सब कैदी और उनके निवास-स्थान देखे। इससे पहले कुछ कैदियों ने शिकायत की थी कि, भोजन में मिट्टी मिली होती है, जिससे उन्हें कष्ट हो रहा है। जज ने पता चलाया, तो मालूम हुआ कि, अब जेल के नियमों के अनुसार ठीक भोजन मिलता है। कैदी अपनी-अपनी जात-पाँत के अनुसार अलग-अलग बैठते हैं। जेल की जाँच करने के बाद, जज अपने साथियों के साथ जेल के फाटक पर आया और जेलर को कुछ आदेश देने लगा।

पाँच बज कर दस मिनट पर सैनिकों की टोली जेल पहुँची और तरतीब से जेल के फाटक के दोनों ओर कतार बाँध खड़ी हो गयी। इनमें से दो सिपाही कतार से अलग हो गये और पास में ही एक तरफ मुँह लटका कर बैठ गये।

"क्या बात है? तुम्हें क्या हो गया? कुशल तो है?"– सूबेदार ने पूछा।

उनमें से एक ने, जिसका नाम विसेसर साह था, कहा– "हमारी तबीयत ठीक नहीं है। हमें दिन में लू लग गयी थी और अब तक बड़ी कमजोरी है। हमें इतनी भी ताकत नहीं है कि, आप लोगों के साथ कतार में खड़े रह सकें।"

दूसरा सिपाही दुखी नाम का था। वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चुप रहा; किन्तु उसके चेहरे से साफ झलक रहा था कि, वह अधिक बीमार है। सूबेदार ने तुरत ही उन्हें आज्ञा दे दी कि, कपड़े खोलें और थोड़ी दूर में बरकंदाजों के कमरों में आराम करें। दुखी फौरन वहाँ गया और कपड़े उतार अपनी बंदूक कोने में सँभाल कर रख दी। पर बिसेसर साह टस-से-मस न हुआ। वह अपने स्थान पर बुत की तरह खड़ा-का-खड़ा रह गया। वह बंदूक से भी लैस था। कपड़ों से भी लदा था। यह देख साथी सिपाही बोले—

"भाई, जाओ न! दुखी की भाँति कपड़े खोलो और आराम करो। तुम्हारा चेहरा बिगड़ गया है। तुम्हारी सूरत कुछ ऐसी हो गयी है, मानो तुमने भूत देखा हो और तुम्हें चिपट गया हो, जाओ लेट कर आराम करो।"

"भाई, इस समय मेरा मन खराब है। और मुझे कुछ बुरे खयाल आ रहे हैं। मैं अपने मन को ठीक कर रहा हूँ। आशा है, मेरी तबीयत जल्दी सँभल जायेगी।"

बात यहीं समाप्त हो गयी। बिसेसर साह की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। सैनिक इंतजार कर रहे थे कि, अफसर लोग कब बाहर निकलें और उन्हें छुट्टी मिले। जज, कलक्टर आदि बाहर निकले और थोड़ी देर बात करने ही लगे थे कि, "दन्न" की आवाज बड़े जोर की हुई और सन्न-से एक गोली जज के कान के बहुत नजदीक से पार हो गयी तथा फाटक के कोने के पत्थर से जा टकरायी।

ऐं, यह क्या हुआ? सब अवाक् थे। सब एकाएक अफसरों की ओर देखने लगे। उनमें नाममात्र भी घबराहट न दिखायी दी। वे हँसते-हँसते आपस में बात कर रहे थे।

सबसे पहले इस दुर्घटना से दुखी चौंका। वह अपने बिस्तर से उठा और बाहर निकल कर देखता क्या है कि, बिसेसर साह ने फायर किया है। पर किसी को हानि नहीं पहुँची। वह बिसेसर पर झपटा और जोर से चिल्लाया—"पकड़ो! पकड़ो! हरे राम! तूने क्या अनर्थ किया!" उसकी चिल्लाहट सुन कर

चिरयात्रा

ध्रुवतारे ही तुम रहो सदा—
रहो क्षितिज ही परिधि के।
यात्री चलता रहेगा अथक—
दीप जलता रहेगा अथक
बिंदु ही रहने दो सदैव
सिंधु बनाओ न मुझे तुम
सीमा की कारा न तोड़ो
मन की लगाम न मोड़ो
मुझे प्यार बड़ा अपनों से
मुझे प्यार बड़ा सपनों से
रे मृत्तिका ही मूल मेरा
रे मृत्तिका ही कूल मेरा
मृत्तिका के फूल को बस—
चाहिए मृत्तिका का दुकूल!

बर्मी कविता — कवि : महिम्यांग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दारोगा तथा जेल के बरकंदाज, जो उस समय पहरे पर तैनात थे, बिसेसर पर झपटे। बिसेसर बंदूक में दूसरी बार कारतूस चढ़ा रहा था कि, फिर वार करे। इतने में पकड़ लिया गया और उसकी बंदूक छीन ली गयी। अंग्रेज अफसर यह घटना देख नाममात्र को भी भयभीत न हुए और सवारी पर अपने घर चल दिये।

बिसेसर के मुँह से निकला— "हे भगवान्, मैंने क्या पाप किया था, जो गोरा बाल-बाल बच गया!"

दारोगा ने पूछा—"तुम्हारा यह काम बहुत ही बुरा हुआ। क्या तुमने गोली जान-बूझ कर चलायी थी?"

"जी हाँ, मेरा मतलब था कि, जज और मजिस्ट्रेट दोनों को मार कर, देश को गोरों के अधर्म से बचाना। धिक्कार है मेरे हाथ को, जो ठीक निशाना न लगा सका। वीरगति तो भगवान् मुझे देगा ही।" —बिसेसर ने उत्तर दिया।

"ये दोनों बहुत भले आदमी हैं। इनकी सर्वत्र तारीफ है। ऐसा इंसाफ करने वाला जज कहाँ मिलेगा? तुम्हारी इनसे कोई अदावत है? क्या कभी इन्होंने तुम्हारा कोई नुकसान किया था?"— दारोगा ने पूछा।

"कभी नहीं; पर मैं सब गोरों से घृणा करता हूँ। ये हमारा धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं और इन्होंने छल-कपट से हमारा देश हमसे छीना है। गोरे और उनके गुलाम भारतवासियों ने मिल कर, हमारा देश चौपट कर दिया है। मुझसे बन पड़ता, तो मैं सब अंग्रेजों को नरक भेज देता। इन पापियों के मारने में क्या दया?"— बिसेसर बड़े उत्साह से बोला, मानो उसने महान् पुण्य-कार्य किया हो। उसकी उमंग और उत्साह बता रहे थे कि, उसके मन में मौत का नाममात्र को भी भय नहीं है।

सन् सतावन का यह प्रथम देश-भक्त छपरे का निवासी था। उस पर मामला चला। वह आनंद में सदा सराबोर रहा। उसे आजीवन कालेपानी की सजा मिली। वह उन विद्रोहियों में था, जिन्होंने कुँअर-सिंह के सेनापतित्व में, अंग्रेजों के दाँत कुछ समय के लिए खट्टे कर दिये थे। पर यह वीर देश-भक्त १८५७ ईसवी तक ठहर न सका। अकेले अपना जीवन १८५६ ईसवी में ही मातृभूमि के अर्पण कर, सदा के लिए चला गया।

★

एक दिन आचार्य रामचंद्र शुक्ल के यहाँ कानपुर में काम करनेवाले कोई सम्पादक महोदय आंये हुए थे। शुक्लजी तथा अन्य मित्रों से उनकी बातचीत हो रही थी। प्रसंगवश सम्पादकजी ने कहा— "कानपुर में धूल, धूंआँ और धूर्तों के सिवा और कुछ नहीं है।"

शुक्लजी झट बोले— "तब तो अब मुझे कानपुर जाकर सिर्फ धूल और धूंआँ ही देखना बाकी है।"

सम्पादकजी अपने को 'धूर्त' अनुभव करके बुरी तरह सकपका गये।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डाक-टिकिटों के रहस्य-रोमांच

हममें से अधिकांश को अति तुच्छ लगने वाली यह टिकिटों की दुनिया अपने प्रपंच-प्रसार में कितनी विस्तृत एवं रंगमय है, प्रस्तुत लेख में उसकी एक झलक देखिए।

*

टिकिटों का संग्रह और उनका प्रदर्शन, पाश्चात्य देशों में सांस्कृतिक जीवन का एक अंग हो गया है। वहाँ उनके संग्रह और वर्गीकरण का एक शास्त्र ही बन गया है, जिसे "फिलैटली" कहते हैं।

"फिलैटली" का किस प्रकार और कहाँ प्रारम्भ हुआ, इसका इतिहास भी काफी दिलचस्प है। ब्रिटेन की एक बूढ़ी औरत के मन में आया कि, अपने घर की दीवारों को डाक-टिकिट चिपका कर क्यों न सजाऊँ। उसने अखबारों में इसके लिए विज्ञापन दिया। यह विज्ञापन पढ़ कर, और भी कई लोगों के मन में टिकिट इकट्ठा करने की इच्छा जागृत हुई। धीरे-धीरे यह इच्छा शौक के रूप में बदल गयी। लेकिन आज इस शौक को जो व्यावसायिक रूप प्राप्त हुआ है, उसका श्रेय बर्जर लेवरॉ नामक युवक को है। उसने सन् १८६१ में, उस समय संसार में प्रचलित समस्त डाक-टिकिटों की सूची बनायी थी।

संसार का पहला डाक-टिकिट—१८४० में इंग्लैंड में प्रचारित

डाक का पहला टिकिट आज की तरह चिपकाने वाला नहीं था। पत्रों पर केवल तारीख की छाप रहती थीं। उसे "बिशप मार्क" कहा जाता था; क्योंकि उसे सन् १६६१ में इंग्लैण्ड के तत्कालीन पोस्ट-मास्टर-जनरल हेनरी बिशप ने चलाया था। तब टिकिट का दाम चिट्ठी के वजन के अनुसार ही नहीं, अपितु उसके गंतव्य स्थान की दूरी के अनुसार अधिक या कम हुआ करता था। सन् १८४० के आस-पास इंग्लैण्ड में हिल नामक व्यक्ति ने, सभी पत्रों पर एक पेनी का टिकिट लगाने का आंदोलन चलाया और उसी साल के मई महीने में एक पेनी का टिकिट छापा गया, जिस पर महारानी विक्टोरिया का चित्र था। सन् १८५० से अन्य देशों ने भी इंग्लैंड का अनुकरण किया। और अब तो प्रत्येक देश के अलग-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलाकार गोया की स्मृति में उसके चित्र 'डचेस आव अल्बा' को स्पे ने १९३० में, टिकिट रूप प्रकाशित कर, संसार में तहलका मचा दिया था।

अलग टिकिट छप रहे हैं।

टिकिटों की मूल कीमत चाहे कुछ भी हो, जो टिकिट जितना ही दुष्प्राप्य होता है, उसकी कीमत टिकट-संग्रहियों की दृष्टि में उतनी ही बढ़ जाती है। कभी-कभी तो एक-एक टिकिट की कीमत, लाख-दो लाख रुपये तक हो जाती है। इतना ही नहीं, दुष्प्राप्य टिकटों को प्राप्त करने के लिए, टिकिटों के शौकीन चोरी और खून जैसे अपराध भी कर देते हैं।

कभी-कभी छपाई की भूल के कारण कोई एक-आध टिकिट गलत छप जाता है। डाकखाने की दृष्टि से यह एक दोष माना जाता है। परंतु टिकिट-संग्रह के शौकीन ऐसे टिकिट प्राप्त करने के लिए, मुँह-माँगे दाम देने को तैयार हो जाते हैं।

सन् १९१८ में अमेरिका में एयर मेल के २४ सेंट कीमत वाले टिकिट छपे थे। एक उड़ते हुए हवाई जहाज का चित्र उस पर छापा था। रॉब नामक एक व्यक्ति ने, ये टिकिट लगा कर, अपने न्यू यार्क और फिलाडेल्फिया के मित्रों को पत्र भेजने का निश्चय किया। जिस दिन इन नये टिकटों की बिक्री आरंभ होने वाली थी, रॉब पड़ोस के पोस्ट-आफिस में टिकिट खरीदने पहुँचा। क्लर्क ने जब मेज की दराज खोली और टिकिटों का ताव निकाला, रॉब की नजर उस पर पड़ी और उसका मुख आनंद से चमक उठा। टिकिटों पर उल्टे चित्र छपे थे। रॉब ने टिकिटों का वह पूरा ताव खरीद लिया। फिर यह देखने कि, इस प्रकार के गलत टिकिट और तो नहीं छपे हैं, उसने और टिकिट माँगे। लेकिन क्लर्क नें दूसरे जो टिकिट दिये, वे सब ठीक तरह से छपे थे। रॉब ने यह गलती क्लर्क को बतलायी। फिर उसने शहर के अन्य डाकघरों में जा कर, यह निश्चय कर लिया कि, वह गलती अन्य टिकिटों पर नहीं हुई है। घर आकर रॉब ने टिकिटों का वह ताव अपने एक संग्रही मित्र को दिखाया। धीरे-धीरे खबर शहर भर में फैल गयी

'हवाइयन मिशनरी'—टिकिट, जिसका मूल्य आज लगभग एक लाख रुपया है।

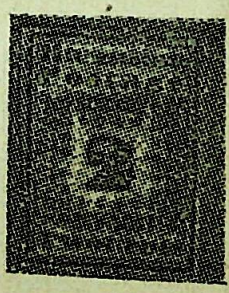

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सभी वैसे टिकिट प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगे।

रॉव ने देख लिया कि, उन टिकिटों पर काफी रकम मिल सकती है। एक व्यवसायी उस ताव के लिए पाँच सौ डालर देने को तैयार था। लेकिन रॉब को यकीन था कि, उसे और भी अधिक बड़ी रकम मिल सकती है और अंत में उसने वह ताव फिलाडेल्फिया के यूजीन कीन को अठारह हजार डालर में बेचा।

भारत में भी, सन् १८५४ में रानी विक्टोरिया के चित्र वाले, जो चार आने के टिकिट छपे थे, उनमें कुछ पर रानी का ब्लाक उलटा छपा था। आज ऐसे टिकिट की कीमत ५,००० रुपये से भी अधिक है। ऐसा एक टिकिट न्यू जीलैंड की एक लड़की के अलबम में प्राप्त हुआ था।

अप्राप्य टिकिटों के लिए खून-खराबी हो जाने का वृत्तांत भी सुनिए। सन् १८५२ में प्रसिद्ध टिकिट-संग्रही गैस्टन लेओरॉ का, उनके घर पर खून हो गया। पुलिस काफी जाँच-पड़ताल के बाद भी हत्या का कोई कारण-सूत्र न खोज सकी। प्रमाणों से यह स्पष्ट था कि, खून सम्पत्ति की लालसा से नहीं किया गया था।

काउंट फेरारी

प्रति सप्ताह हजारों रुपयों के टिकिट खरीदनेवाले इस अन्यतम संग्रहकर्ता के टिकिट फ्रांस सरकार ने ८० लाख रु० में नीलाम किये थे।

चार सेंट के मूल्य के ये टिकिट अमरीकी डाक-विभाग ने जान-बूझ कर उल्टे छापे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रानी विक्टोरिया का भारतीय टिकिट जो लंदन में ११ हजार रुपये में बिका।

इस खून का रहस्य सुलझाने का कार्य पेरिस के अत्यंत चतुर गुप्तचरों को सौंपा गया; और उनमें से एक ने कारण ढूँढ़ भी निकाला। लिओराँ का टिकिट-संग्रह देखते समय, उसके ध्यान में आया कि, बाकी सब टिकिट तो अपनी-अपनी जगह पर हैं, पर दो सेंट का एक "हवाइयन"-टिकट नदारद है। "हवाइयन मिश्नरी" नाम से प्रसिद्ध, ये दो और तीन सेण्ट के दुर्लभ टिकिट दुनिया भर में केवल १२ मिले हैं, जिनमें से चार तो फेरारी-संग्रह की शोभा बढ़ा रहे हैं।

हाँ, तो गुप्तचर को निश्चय हो गया कि, यह खून किसी टिकिट-शौकीन का ही काम है। टिकिट बेचने वालों के यहाँ पता लगवाया गया; लेकिन उनके पास वह टिकिट नहीं था। सो अनुमान किया गया कि, किसी ने अपने टिकिट-संग्रह के लिए ही उसे चुराया है। धीरे-धीरे मालूम हुआ कि, हेक्टर गिराँ नाम के एक व्यक्ति ने "हवाइयन"-टिकिट प्राप्त करने के लिए काफी दौड़-धूप की थी। खुफिया पुलिस वालों ने हेक्टर गिराँ से परिचय बढ़ा कर, बड़े उपाय से उसके मुँह से यह कबूल करवा लिया कि, दो सेंट का एक "हवाइयन"-टिकिट उसके पास है। अगले ही दिन वह गिरफ्तार कर लिया गया। उसने स्वीकार किया कि, लेओराँ किसी भी शर्त पर वह टिकिट देने को तैयार नहीं थे; इसलिए उसे यह भयंकर तरीका इख्तियार करना पड़ा।

कितनी ही बार टिकिट-संग्रही किसी टिकिट को पाने या बचाने के लिए बड़े-बड़े खतरे मोल लेते हैं; फिर भी भाग्य उन्हें धोखा दे जाता है। रूस के राजकुल से सम्बंधित प्रिंस ओल्डनबर्ग का टिकिट-संग्रह बेजोड़ था। जब १९१७ में रूस में

२४ सेंट का १९१८ में प्रचलित अमरीकी एयर मेल - टिकिट

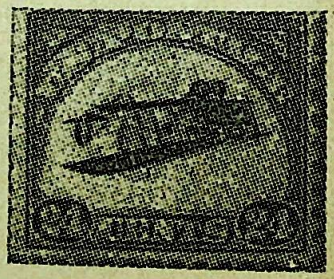

राज्यक्रांति हुई, ओल्डनबर्ग ने देश छोड़ कर स्वीडन भागने की तैयारी की। वह अपना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टिकिट-संग्रह भी ले जाना चाहता था। पर इसमें बड़ा खतरा था। जो देशत्यागी, मूल्यवान् चीजें ले जाता हुआ पकड़ा जाता था, उसे फाँसी दे दी जाती थी। आखिर उसने अपने पास के अत्यंत कीमती टिकिट ही ले जाने का निश्चय किया। इनमें १८६१ का "प्रीमियर ग्रे ब्यूअर्स" टिकिट भी था। ओल्डनबर्ग ने टिकिट को कोट के कालर में छिपा लिया। स्वीडन में वह भूल ही गया कि, उसके कोट के कालर में वह टिकिट भी है। कोट उसने एक शरणार्थी को दे दिया। शरणार्थी ने कोट को उलटवाने के लिए दर्जी को दिया, जिसे यह टिकिट दीख पड़ा। उसने उसे शरणार्थी को वापस दे दिया। शरणार्थी ने वह टिकिट अपने लड़के को दिया। लड़के ने करीब पंद्रह वर्ष बाद, उसे एक प्रसिद्ध संग्राहक को दे दिया। अंत में उस टिकिट की कीमत ५२५ पौंड मिली।

स्वीडन ने १८७२ में टिकिटों की एक सीरीज निकाली थी। जब सन् १८७९ में उसका पुनर्मुद्रण किया गया, तो उसमें "२" की संख्या की गजह "३०" गलती से छप गया। इन टिकिटों के लिए लोगों में काफी होड़ हुई। (आज ऐसे टिकिट की कीमत कम-से-कम ५० पौंड है।) एक संग्राहक को, जब काफी प्रयत्नों के बावजूद यह टिकिट नहीं मिल सका, तो उन्होंने उसे खरीद लिया। उसे साफ करने के उद्देश्य से, उन्होंने उसे पानी से भरे गिलास में डाल दिया। बैठे-बैठे उन्हें नींद आ गयी। जब नींद खुली, तो उनका गला सूख रहा था। उन्होंने पानी-भरा वह गिलास उठाया और एक ही झटके में सारा पानी चढ़ा गये। जब उन्हें टिकिट का ध्यान आया, तब तक पानी के साथ-साथ वह टिकिट भी उनके पेट में प्रवेश कर चुका था।

इससे भी दुखद घटना है लार्ट कार्लटन की, जो टिकिटों के बड़े ही शौकीन थे। टिकिटों के सिलसिले में, जब वे हालीवुड पहुँचे, तो वहाँ की एक सुंदर अभिनेत्री नेवेरा से उन्हें प्रेम हो गया और हफ्ते भर में विवाह करके दोनों लंदन पहुँच गये। कुछ समय के बाद कार्लटन कहीं बाहर गये। उनके जाने के बाद नेवेरा ने सहेलियों को चिट्ठियाँ लिखीं। उनके लिए टिकिटों की आवश्यकता थी; पर पोस्ट-आफिस वहाँ से तीन-चार मील दूर था।

अंत में उसके दिमाग में एक मौलिक बात आयी। उसने अपने पति का टिकिटों का अलबम देखा था। उसने उसमें से अपने मनपसंद टिकिट निकाले और उन चिट्ठियों पर लगा कर, उन्हें पास के बंबे में डाल दिया।

जब कार्लटन बाहर से लौटे, तो उन्हें किसी कारण से अपना टिकिटों का वह अलबम देखना पड़ा। टिकिटों को न पाकर उन्होंने घर में जो तांडव मचाया, वह बेचारी नेवेरा की समझ से बाहर था। सुंदर पत्नी की मौलिक सूझ, लार्ड कार्लटन के लिए बड़ी असुंदर साबित हुई। उन्होंने वे टिकिट कई हजार पौंड में खरीदे थे।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेम का बाजार

डा० मुल्कराज आनन्द-लिखित एक लोककंठ-कूजित कथा

ऊधो के तरुणाई भरे अंग-अंग में कामना का ज्वार आया हुआ था, जैसे नये बौर से लदे आम की डाली-डाली में रस का संचार होता है। नाले के किनारे बसे गाँव के ऊपर, जो ऊँचा चौरस पठार था, जिस पर जहाँ-तहाँ घास के चार गुच्छे उगे हुए थे—उन्हीं की ओर गायों के झुंड को वह हाँक चला। गायें थीं कि बार-बार दूर के पत्थरों की ओर लपकती थीं; वे जानती थीं कि, उन्हीं पत्थरों की दरारों में हरी घास होती है। पर ऊधो झुंझलाहट और उतावली के साथ, उन्हें घेर-घार कर टीले की ओर हाँक लाता था। टीले के ठीक नीचे सड़क थी; बारातें और आदमपुर के शिवरात्रि के मेले में जानेवाले उसी पर से हो कर गुजरने वाले थे। पिता ने उसे मेले में नहीं जाने दिया था। शिवजी का सराप लगे उस बुढ़ऊ को। पर उस ओर जाने वालों को तो वह देख ही सकता था।..... और ऊधो जानता था—गाँव के सूबेदार अजिंदर सिंह की लड़की ग्यानो आज दुल्हन बन कर, डोली में सुजानपुर तीरा जाने वाली है; डोली के अगल-बगल में ग्यानो की बहनें और सहेलियाँ भी होंगी। और शायद दूसरों से नजर बचा कर, उनमें से किसी के साथ आँखें चार करने का मौका ही मिल जाये उसे। और कौन जानता है, उनमें से कोई लड़की मुस्करा भी दे। कहते भी हैं न कि, लड़की हँस दे, तो प्रेम की अर्जी को मंजूर हुई समझना चाहिए।

पाँच गायों और तीन बछड़ों के अपने झुंड को तितर-बितर होते देख, वह चिल्लाया—"अरे क्या मरना है तुम्हें? एक साथ रहो..... घास तो आगे की तरफ है...।"

और उनमें से एक काले-सफेद चित्ते वाला मुस्टंडा-सा बछड़ा, ऊधो की उठी हुई लाठी से बच निकलने के लिए ऐसे उछला, जैसे घोड़े का बच्चा बिदक उठता है।

ऊधो भी बछड़े के पीछे लपका। तभी उसे याद आया—पिछले साल आम चुराने पर, जब उसका पिता छड़ी उठा कर उसे मारने आया था, वह भी इसी बछड़े की तरह भाग गया था। और उसने बछड़े को निकल जाने दिया।

वैसे गायें भी ठीक-ठाक थीं और उस ऊँची चट्टान के आस-पास ही चर रही थीं, जिस पर वह आसन जमाना चाहता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। आगे घास है– कह कर गायों को धोखा देने की भी कोई जरूरत नहीं थी; आगे कंकड़-पत्थर के सिवा धरा ही क्या था। उन्हें इधर-उधर डोलने के लिए छोड़ कर, वह एक अच्छी जगह पर बैठ गया, जहाँ से सब-कुछ देख सकता था। चट्टान पर चढ़ा तो देखा कि, वह तवे की तरह तप रही है। मानो सूर्य भगवान् कैलास-पति भगवान् शिव और पार्वती की क्रीड़ा के लिए वसंत में अनुकूल वातावरण की सृष्टि कर रहे हों।

ऊधो का पिता लैंस-नायक धनीराम बड़ा विशुद्धतावादी बनता था और गाँव का पुजारी ईश्वरदास शिवजी की काम-क्रीड़ा के जो किस्से सुनाया करता, उन्हें "उँह!" कह कर अविश्वास की हँसी में उड़ा दिया करता था। अभी कल ही की बात है कि, पुजारी शिवजी की प्रेम-लीला का बखान रहा था, तो ऊधो के पिता ने उससे तरह-तरह शंकाएँ की थीं। और साथ ही ऊधो और उसके साथियों को "जाओ तुम लोग बाहर खेलो" कह कर भगा दिया था। फिर भी जब ऊधो ओट में खड़ा हो कर उनकी बातें सुनता पकड़ा गया, तो उसका मेले में जाना बंद कर दिया गया।

वैसे खुद बूढ़े धनीराम ने फौज में रहते, तवायफों के साथ कोई कम मौज-मजा नहीं किया था। इसीलिए उसकी बीवी उसे ऊधो के सामने ही खूब जली-कटी सुनाती थी। लेकिन इतना सब-कुछ होते हुए भी धनीराम ने ऊधो को मेले जाने से रोक दिया था। कितना बेरहम था! धनीराम के पीठ पीछे गाँववाले कहा करते थे कि, असल में वह इतना चिड़चिड़ा इसलिए हो गया था कि, फीरोजपुर छावनी में परेड के वक्त रंगरूटों पर हाथ चलाने की वजह से, उसे लैंस-नायक के रैंक से ही रिटायर कर दिया गया। इससे उसकी हवलदार बनने की हविस भी अधूरी रह गयी, पेंशन भी कम मिली। और इसका गुस्सा वह उतार रहा था अपनी घरवाली और बेटे पर.....।

सचमुच कितनी बड़ी ज्यादती है कि, दूसरे सब लड़के तो आलमपुर जायें, और अकेले ऊधो को ढोर-डंगरों के पीछे-पीछे घूमना पड़े।

ऊधो ने अपनी बढ़िया फौजी ढंग की पगड़ी उतारी, जो उसने पिता की देखा-देखी बाँधनी सीखी थी। उसे मोड़-तरोड़ कर चट्टान पर रखा और चट्टानों के बीच में उगे छोटे-से पीपल की छाया में बैठ गया। और झुक गया पगडंडी की तरफ –कोई उस ओर से गुजर रहा है क्या, यह देखने के लिए।

जहाँ सड़क नाले के सूखे पाट को पार करती थी, उस मोड़ से ले कर सामने की इस ढलान तक, जहाँ से पचास हाथ ऊपर वह खुद बैठा था, कहीं कोई भी इन्सान नजर नहीं पड़ता था।

ऊधो ने अपनी लम्बी बाँसुरी उठायी और भैरवी की एक धुन बजाने का निश्चय किया, जिसे वह पिछले कुछ दिन से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंदिर के शहनाई वाले से सीख रहा था।

अभी दो-चार सुर निकाले ही थे कि, उसका गला सूखने लगा और गर्दन व माथे पर पसीने की बूँदे उभर आयीं। पगड़ी के पल्ले से उसने मुँह पोंछा और दुबारा बाँसुरी की तान छेड़ने के पहले घनी छाया में खिसक कर बैठ गया।

मन-मुरली

[चित्र : चौरसिया कृत स्केच]

तान छिड़ी ही थी कि, रुक भी गयी। सामने पाँच के बजाय चार ही गायें थीं। उठ कर उसने इधर-उधर नजर दौड़ायी। भूरी गाय सूखी घास देख कर, उसे चरने कँटीली झाड़ियों में घुस गयी थी। ऊधो ने बेफिक्री की साँस ली; फिर इतमिनान से चट्टान पर बैठ गया।

"भला क्या मजा रखा है ढोर चराने में ? सब दोस्त तो चले गये मेला देखने।" ऊधो मन ही मन बड़बड़ाया– "और कृष्णजी के बाँसरी बजा कर, सारी गायों को झुंड में बनाये रखने की बातें भी निरी गप्पे हैं। भला गायें क्या समझें भैरवी राग ! और ग्वालनों के साथ कृष्णजी की लीला की कहानियाँ भी ऐसी ही मनघड़ंत होंगी। गाँव में तो कोई लड़की कभी किसी लड़के से बात करती नहीं .....। यह और तो मैं ही था कि, उमंग में भर कर, पनघट से लौटती हुई रूपा की कलाई पकड़ ली। अगर मैंने उसकी कलाई पकड़ कर खींचा न होता.....उसकी गाल पर चिकोटी न भरी होती तो.....तो क्या होता खाक ! जब भी मैं उसे घूर कर देखता हूँ, वह भी उलट कर देखती ह .... ढीठ !"

अचानक शहनाई की गूँज से उसके खयालों का सिलसिला टूट गया। आवाज उसके गाँव की तरफ से आ रही थी। ऊँची मीठी धुन ने उसके कलेजे को मसोस डाला, मानो शरीर के पोर-पोर में वह पैठ गयी। वह एक अजीब, आनंदभरी बेचैनी से सिहर उठा।

"इसका मतलब है, ग्यानो की डोली चल पड़ी है..... सब बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहने सुजानपुर तीरा जा रहे होंगे। ग्यानो की बहनें शादी के गीत गातीं, डोली के आस-पास होंगी..... ओह ! जालिम लैन्स-नायक धनीराम लड़ाई में ही क्यों नहीं मर गया ! ..... माँ ने भी तो कितनी बार यही सोचा था।....."

धीरे-धीरे नाले में शहनाई बजानेवालों के पीछे, डोली के लाल-लाल परदे दिखाई देने लगे। बारात नीचे उतर रही थी हूबहू वैसे ही, जैसी उसने कल्पना की थी।

"बारात को तो सुजानपुर तीरा जाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। इस भगदड़ में, अच्छा मौका है....." उसने मन-ही-मन सोचा।

ऊधो के तरुणाई भरे अंग-अंग में कामना का ज्वार आ गया, जैसे नये बौर से लदे आम की डाली-डाली में रस का संचार हो रहा हो।

ऊधो ने अपने कंधे जरा पीछे सरका लिये। वह नहीं चाहता था कि, कोई उसे देखे। बारात में वह नहीं है, यह बात पता लग जाये, तो कितनी शर्म की बात होगी। फिर सूबेदार अजिंदर सिंह के पीछे बाराती की शान से सजा हुआ उसका पिता भी तो हाथ में नारियल का हुक्का थामे चला आ रहा होगा– हवा की तरह स्वच्छंद, घर-बार के फिक्र से मुक्त। जब कि वह– उसका बेटा ऊधो, अठारह बरस का नौजवान – जो दूल्हा राजा बनने लायक हो गया है, गाँव के ढोर-डंगर चरा रहा है। ..... गरम-गरम चट्टान से अपना बायाँ गाल सटाये वह लेट गया। उसकी टाँगें एक-दूसरी में गुँथी हुई थीं। और वहीं लेटे-लेटे उसने बारात को नीचे से गुजरते देखा। वह तो अपनी जगह पर बैठे-बैठे सब-कुछ देख सकता था; पर दूसरा कोई उसे नहीं देख सकता था। उसकी आँखों ने सूबेदार की तीसरी और सबसे छोटी लड़की लछमी को तलाशा और उसी पर जम गयीं। उसकी उभरती जवानी को उसने एक बार देखा था, जब वह धोती पहने इसी नाले में नहा रही थी।

बारात आगे निकल गयी और शहनाई की आवाज भी धीरे-धीरे पहाड़ों की ओट में धीमी पड़ गयी। पर ऊधो ने गरम चट्टान पर से गाल नहीं हटाया; वैसे ही पड़ा रहा। उदासी व निराशा से उसका मुख मुरझा गया था। मुँह से जरा-सी लार निकल पड़ी थी और उसकी नजरें सामने के सूने खड्ड पर अटकी हुई थी। फिर वह वहाँ से उठा। और उसके ओंठ अपने आप गुनगुनाने लगे आलाप को पहले स्वरों को।

विषाद-वदना

[चित्र : रामचंद्र शुक्ल-कृत स्केच]

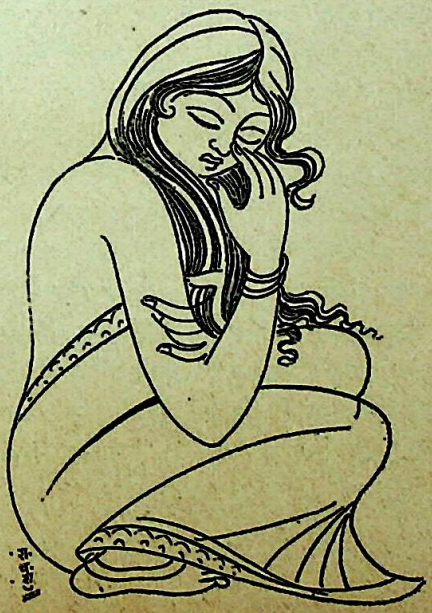

अब जल्दी ही उसे ढोरों को घर की तरफ हाँकना होगा। आज तो पिता भी घर पर नहीं है जो कुछ कहा-सुनी का डर हो। सो रोजाना से कुछ पहले घर पहुँचने में भी कोई हर्ज नहीं। आदमपुर और सुजानपुर नहीं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो अपने ही गाँव के छोटे शिवाले का मेला ही देख आयेगा।

यह सोच कर जैसे ही वह जाने के लिए चट्टान से उठा, उसकी नजर नदी के सूखे पाट पर पड़ी, वहाँ रूपा को देख कर आश्चर्य-चकित रह गया। रूपा का पिता सिपाही किरपा विलायत में लड़ाई में काम आया था। तब से उसकी विधवा माँ ने दूसरों के घर का कूटना-पीसना करके रूपा को पाला था। रूपा की जवानी और बादामी रंग देख कर गाँव के लड़के उससे छेड़-छाड़ किया करते और जब वह पास से निकलती, तो यह गीत गुनगुनाना शुरू कर देते – "गंगिया, तेरा रंग बदमिया।"

ऊधो के तरुणाई भरे अंग-अंग में कामना का ज्वार आ गया, जैसे नये बौर से लदे आम की डाली-डाली में रस का संचार हो रहा हो। वह भी गुनगुनाने लगा – "गंगिया, तेरा रंग बदमिया।" और चट्टान पर लेट कर उसने अपना सिर कुछ पीछे कर लिया, ताकि रूपा उसे देख न सके।

रूपा इधर-उधर झाँकती चट्टान के नीचे से आगे बढ़ रही थी, मानो वह किसी को खोज रही हो। सिर के दुपट्टे की वजह से उसके बादामी रंग के मुखड़े के भोलेपन की खूबसूरती की झलक भर देखने को मिल रही थी; पर सीधी-लम्बी नाक के ऊपर उसकी काली और सावधान आँखें खूब चमक रही थीं। और उसकी उठी हुई छातियों का आकर्षण भी बड़ा जबर्दस्त था।

"पहाड़ों में शिवजी की खोज में ऐसी ही निकली होंगी पार्वतीजी .... बिल्कुल पार्वती ही हैं.....।"

और जवानी की उमंग के जोश में में उसने एक बार पनघट पर उसकी कलाई पकड़ी थी, उसे अपनी ओर खींचना चाहा था..... सोचते-सोचते ऊधो उठ बैठा और चिल्लाया :

"रूपा! ओ रूपा!"

"ऐं! कौन है? जिन हैं या भूत?" आवाज किधर से आयी, यह न जानते हुए रूपा ने पूछा। और वह सीधी चट्टान की तरफ बढ़ी। चोटी का नजारा उसे साफ नहीं दीखता था। उसने गरदन इस लहजे से हिलायी कि, मानो शिकारी की पहुँच का सुराग पा कर, कोई कबूतरी डर से काँप रही हो।

"अरे मैं हूँ ऊधो – तेरा प्रेमी!" उसने चट्टान पर लम्बे खड़े होते हुए और सामने देखते हुए कहा।

"हाँ, आया तू बड़ा प्रेमी।"– रूपा ने धनीराम के बेटे की ढिठाई पर लाल-पीली होते हुए कहा और आगे कदम बढ़ा दिये।

"नहीं, नहीं रूपा, सुन तो।"

"अरे जा जा, अपना काम कर!" रूपा ने कहा।

"कहाँ जा रही है तू?"

और रूपा ने वैसे अब कुछ और जवाब न देने का फैसला कर लिया था; क्योंकि पहले ही काफी झुंझलायी हुई थी। फिर भी बोल पड़ी –

"अपनी अम्माँ की गधिया ढूँढने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकली हूँ....."

"अरे वह....सामने तो है!"—ऊधो ने मजाक किया।

"कहाँ?" —रूपा उतावली हो उठी जानने के लिए।

"अरे और कहाँ, यहीं। तू अपनी अम्मा की गधिया नहीं, तो और क्या है .....?"

इस उल्टे-सीधे मजाक से खीज कर रूपा ने फिर चलना शुरू कर दिया।

"जरा ठहर तो..." —ऊधो चिल्लाया— "मैं..... मैं तुझे प्यार करता हूँ।"

ऊधो की इस घोषणा से रूपा फूल-कर कुछ मुस्करायी। फिर लजा कर सिर पर दुपट्टा खींच लिया।.....भला धनी-राम जैसे खानदानी आदमी का लड़का, एक गरीब विधवा की लड़की के बारे में ऐसे खयाल कैसे रख सकता है? उन दोनों की शादी का सवाल ही क्या? और फिर ऊधो तो इतना उजड्ड है कि, बीच रास्ते में कुँए पर ही उसकी कलाई पकड़ ली.....।

"रूपा, रूपा! अरी पगली, सुन तो...।"

"अच्छा, ले अगर तुझे मेरे से इतना ही प्यार है, तो जरा कूद तो जा चट्टान पर से।" रूपा ने उसका जोश ठंडा करने के इरादे से कहा।

"ले देख, मैं अभी दिखाता हूँ"—ऊधो ने जोर से कहा और बड़े जोश के साथ चट्टान से उसकी तरफ नीचे कूदते हुए अपनी कथनी-करनी एक कर दी।

पलक झपकने की देर में सब-कुछ हो गया। पचास हाथ की ऊँचाई पर से धप से ऊधो, रूपा से जरा ही दूर रास्ते पर आ गिरा।

यह क्या कर दिया ऊधो ने? रूपा चौंक उठी। ऊधो के खून से लथपथ माथे को देख डर गयी। भय-भीत हो कर, रूपा उस पर झुकी। उसके हृदय पर हाथ रखा, फिर माथे पर; अभी भी उसमें कुछ जान बाकी थी।

"ओह कितना खून बह रहा है! यह क्या करा दिया मैंने ऊधो से!" रूपा की रूह काँप उठी। काँपती उँगलियों से उसने ऊधो का सिर उठा कर अपनी गोद में रख लिया। फिर स्त्री-सहज कोमल दृष्टि से, उसकी अबोध मुस्कराती हुई आँखों में आँखें डाल कर बोली—"ऊधो, यह क्या कर डाला तू ने?"

"तू ने ही कहा था न—प्यार है तो कूद

ग़ज़ल

कुछ भी न था इश्क की गिरह में।
और फिर भी लुटा दिये खजाने॥
गुलशन में धुआँ-सा उठ रहा है।
बरसात के आ गये जमाने॥
याद आयी तेरी तो खामुशी भी।
इक धुन में लगी है गुनगुनाने॥
यह दर्द भरी पुकार कैसी।
यह किसको लगा है दिल जगाने॥
जैसे कोई आ रहा हो इस सिम्त।
मुमकिन है वही हो, कौन जाने॥
था जिक्रे-करम 'फिराक' उसका।
क्यों आँख लगी है डबडबाने॥

—'फिराक' गोरखपुरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर दिखा दे।" ऊधो कह रहा था। दिमाग के तीव्र आघात से उसका सिर झन्ना रहा था– "हाँ तू ने ही तो....." और कहते-कहते उसकी साँस बंद हो गयी। जिंदगी व रूपा के लिए जोश का जो उफान उसमें आया हुआ था, मौत की काली छाया में विलीन हो गया।

उसका सिर झटके के साथ लुढ़क गया। रूपा घायल चिड़िया की तरह चिल्लाने लगी—"हाय, हाय! यह मैंने क्या कर दिया.....?" और डर व घबराहट ने उसे पत्थर बना दिया। आँखें फाड़-फाड़ कर वह मदद के लिए देखने लगी।

× × ×

लेकिन वहाँ सिवा सन्नाटे और सूने पन के कौन था? चमकते सूरज की गरम किरणें नदी के सूखे पाट पर झिलमिल-झिलमिल कर रही थीं।

भय से पीली पड़ी हुई और व्याकुल रूपा ने ऊधो के भोले-भाले मुखड़े को देखा और सोचने लगी—"देखो, इसे कितना विश्वास था मुझ पर! और एक मैं अभागिनी थी कि, उसकी बात का विश्वास भी नहीं किया। और अब.....उसके प्रति वफादार तभी कहाऊँगी, उसके त्याग का तभी बदला दे सकूँगी, जब मैं भी उसके लिए वही करूँ, जो उसने मेरे लिए किया।"

यह खौफनाक ख्याल उस पर हावी हो गया। कुछ तो इस डर से कि, लोग क्या कहेंगे; और कुछ ऊधो के लिए दिल में जो भावना थी, उसके कारण। बस ऊधो का सिर गोद से उतार कर वहीं सड़क पर रखा, और पीछे के मोड़ से चट्टान की तरफ दौड़ पड़ी।

गायें रंभा रही थी, मानों ऊधो की मौत की दुःखद कहानी की भनक, उन्हें भी मिल गयी हो। ओह शिवरात्रि के दिन उसने ऊधो की जान ले ली! अब जब वह अपना पाप धो डालेगी, तभी शिवजी शांत होंगे। उसे ऊधो की पार्वती बनना होगा – उसकी पत्नी.....हाँ पत्नी।

रूपा ने आगे देखा न पीछे, ताकि कोई चीज उसे इस फैसले से न डिगा दे। वह चट्टान की चोटी पर चढ़ चली। उसके पैर काँप रहे थे, साँस फूल रही थी और दिल तेजी से धड़क रहा था। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया था।

आखिरकार वह चोटी पर पहुँच गयी। उसने नीचे झाँका और अपने प्रेमी का शरीर देखा। पल भर के लिए उसकी पलकें हिलीं, पर उसने आँखें मीच लीं। और "ऊधो मैं भी तेरे पास आयी!" कहते हुए नीचे कूद पड़ी।

शिवरात्रि के ही दिन, जहाँ वे दोनों गिरे थे, ठीक उसी जगह पर, उन दोनों प्रेमियों का दाह-संस्कार किया गया। और वह "ग्वाला-टीला" आज तक भी एक तीर्थ-स्थान बना हुआ है, जहाँ प्रेमी अपनी मुराद पूरी होने की मनौती मनाने जाया करते हैं।

हम भूल जाते हैं कि, पानी का घड़ा और पानी दोनों दो चीजें हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

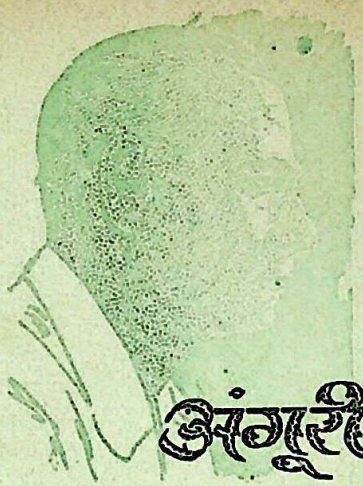

मनुष्य की संधि-अभिसंधियाँ परखनेवाला द्रष्टा साहित्यकार, जब अपने स्वयं के कोणांग एवं वक्रताएँ देखता है, तो स्थिति में नयी रसमयता आ जाती है। यशपाल के इस संस्मरण में ऐसी ही स्थितियों का आस्वादन लीजिये। आगे के पृष्ठों में पशुपक्षियों की मुद्राकृतियों के विपक्ष में मानवीय मुद्राओं का सादृश्य देखिये।

अंगूरी की बोतल के मौन

बात कहने के ढंग पर बहुत-कुछ निर्भर करता है। कहने के ढंग या अभिव्यक्ति की शैली में शिल्प आ जाने पर ही, तो वह साहित्य बन जाता है। नसीहत शैली और शिल्प से दी जाये, तो कहना ही क्या! उपालम्भ और गाली भी शली और शिल्प से दी जाये, तो क्रोध नहीं, मुस्कान आ जाती है। ऐसी बातें कई बरसों तक स्मृति में जम जाती हैं। उससे सुनने-सुनाने वाले दोनों का संतोष होता है। वे बातें मौखिक साहित्य बन जाती हैं। प्रभाव उनका ऐसा होता है कि, व्यक्ति के अभ्यास को भी बदल देती हैं। ऐसी ही कुछ बातें मेरी याद में बनी हैं।

आज प्रातः ही एक ऐसी बात सुनी थी :

माँगने वाले ने द्वार पर आकर पुकार लगायी –"भगवान सदा सुखी रखे। माई जी, दो रोटी का आटा मिल जाये।"

मालकिन ने कह दिया–"बाबा, आटा तो बहुत महँगा हो गया है।"

माँगने वाले ने धैर्य नहीं छोड़ा, बोला–"तो माई जी, एक चवन्नी ही दिला दो।"

"चवन्नी?" मालकिन की भौवें उठ गयीं–"कुछ और माँगा होता!"

"माई जी, आप ही तो कह रही हैं, आटा बहुत महँगा हो गया है।"

मालकिन हँसी नहीं रोक सकीं, बोलीं–"अच्छा, इस उत्तर के लिए तो ले ही जा।"

× × ×

सन् ३५ में कांग्रेसी सरकार बन जाने से सन् ३८ में जेल से मुक्ति मिल गयी थी। पंजाब में, तब भी अंग्रेजी शासन की समर्थक यूनियनिस्ट सरकार थी। इसलिए वहाँ मैं अवांछित था। लखनऊ में ही बस जाना पड़ा।

लखनऊ में बसे दो वर्ष ही हुए होंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतनी जल्दी लखनऊ का शील-शिल्प और लहजा कैसे सीख सकते थे! शहर में कुछ सज्जनों और परिवारों से आत्मीयता हो गयी थी। कई लोगों से पाये सौजन्य और सहायता के कारण उनके प्रति अनुगृहीत भी थे।

एक दिन ऐसे ही एक परिवार के बारे में समाचार मिला कि, उनकी विवाहिता बेटी कई दिन से रोग शैया पर पड़ी है। मिजाज पुर्सी के लिए वहाँ जाना बहुत आवश्यक था। व्यस्तता में सप्ताह भर अवकाश नहीं बना, तो याद भी नहीं आया, और याद आया तो बहुत ग्लानि अनुभव हुई।

रानी काम से गंज जा रही थीं। कहा– "उधर भी होती आना। ममी से ही तो मिलना है। तुम्हारा हो आना काफी होगा।"

रानी लौटीं, तो प्रसन्न नहीं थीं। पूछा तो कुछ उद्विग्नता से बोलीं–"मैं गयी थी। ममी ने तो अजीब ढंग से बात की।"

"क्यों, क्या हुआ?" मुझे विस्मय हुआ। "मैंने ममी से पूछा—सुना है, शम्मी की तबीयत कुछ खराब थी? वह तो एकदम कुछ नाराज सी होकर बोल उठीं– क्या? किसके दुश्मनों की तबीयत खराब है?"

हँसी आ गयी। बताया– "ओफ! यह तो यहाँ के भले लोगों का सलीका है। किसी अजीज की बीमारी या तबीयत खराब होने की बात जबान पर नहीं लायी जा सकती। बीमारी या तबीयत खराब होने की चर्चा, दुश्मन पर डाल कर ही की जानी चाहिए। तुमने "शम्मी बीमार" बोल दिया था न, इसीलिए तो ममी का मन दुख गया।"

"मैं तो सहानुभूति ही प्रकट करने गयी थी, क्या वे नहीं जानती थीं?"

"जरूर जानती थीं, परंतु सहानुभूति में भी अपनी बेटी के नाम के साथ बीमारी का सम्पर्क नहीं सह सकतीं। बात करने का ढंग भी तो होता है। बीमारी दुश्मन पर डाल कर बात करने से ममता की कैसी छलक अनुभव होती है?"

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"प्राग" जाने के लिए ज्यूरिच से यान में चढ़ रहा था। तभी यान की सीढ़ियों के ऊपर द्वार में खड़ी हुई यान-चारिका ने शिष्टता के साथ हाथ मिला कर बहुत आत्मीयता की मुस्कान से पूछ लिया—"आइये, हाल-चाल ठीक है न?" (प्लीज हाउ डू यू डू?)

उत्तर में मुस्कराने की कोशिश की। सोचा, क्या पहले भी किसी यान में भेंट हो चुकी है? पर, वह तो सभी का स्वागत वैसी ही प्रफुल्लता से कर रही थी। क्या सभी से पहले कहीं भेंट हो चुकी होगी?

यान में कुर्सी पर बहुत सुंदर छपे हुए कागज पड़े थे। इन पर्चों में कुछ व्यावहारिक सूचनायें रहती हैं। उठा कर पढ़ने लगा—

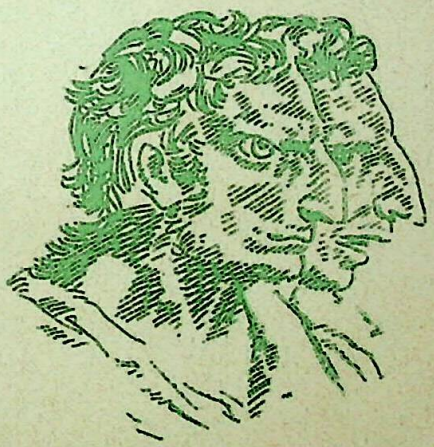

"यान-चारिका आपकी यजमान है, आपकी सेवा के अवसर से अनुगृहीत होगी। हम अपने अतिथियों को यथासंभव सुविधा दे सकने के लिए उत्सुक हैं। परन्तु कुछ बातों में अतिथियों के सहयोग और सहायता के बिना हम असफल रह सकते हैं। हमें अनेक देशों के, अनेक भाषा-भाषी अतिथियों के स्वागत का सौभाग्य मिलता है। आपकी यजमान, यान-चारिकाओं ने बहुत-सी भाषायें सीख ली हैं कि, अतिथियों को असुविधा न हो। परन्तु एक भाषा, मौन की भाषा वे नहीं सीख सकी हैं। यदि आप उनसे कुछ भी अनुरोध नहीं करेंगे, तो वे भी निराश होकर मौन रह जायेंगी।"

एक दूसरे पर्चे में छपा था—

"अतिथियों के छोटे-मोटे सामान के लिए, यान के पिछले भाग में, ओवरकोट—छाता आदि टाँगने की जगह के साथ ही स्थान है। चारिका आपका सामान लेकर स्वयं ही रख देगी। कुछ चीजें, उदाहरणतः महिलाओं के बटुए या सज्जनों के ब्रीफ केस, कैमरा, एयर बैग आदि आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समीप ही रख लेते हैं। कुर्सियों के ऊपर भी छोटा-मोटा सामान रखने के लिए रेक है। बाज वक्त पोर्टेबल टाइप राइटर भी हाथ में साथ चला आता है और रेक पर रख दिया जाता है।

"रेक पर कोई चीज रखते समय सावधानी तो बरती जाती है, पर अवसर की ही तो बात है। कभी कोई चीज फिसल भी सकती है। अब यदि सिर के ऊपर टाइप राइटर रखा हो? ऊपर से चीज गिरने की संभावना चाहे न भी हो, परंतु यदि पड़ोस में बैठे अतिथि को यह मालूम हो कि, उसके सिर के ठीक ऊपर टाइप राइटर जैसी भारी, लोहे की चीज रखी है, तो बेचारा चैन से कैसे बैठ पायेगा?"

× × ×

१९५३ जनवरी का अंतिम सप्ताह था। वियाना से इंटर नेशनल एक्सप्रेस में लंदन जा रहा था। श्री शाह भी वियाना विश्व-शांति सम्मेलन में गये थे और उसी ट्रेन से लंदन जा रहे थे। हम दोनों ने अलग-अलग टिकट खरीदे थे, इसलिए एक ही डिब्बे में यात्रा नहीं कर रहे थे।

श्री शाह बहुत दृढ़-व्रती गांधीवादी हैं। उस समय बहुत जाड़ा था। सब ओर बरफ-ही-बरफ दीखती थी, हवा भी बरफ के कणों से बोझिल थी। तिस पर भी शाहजी अपने केश-हीन कपाल को खद्दर की सफेद गांधी टोपी से ही ढँके रहते थे।

यूरोप में स्टेशन के प्लेट-फार्मों पर जल के नल नहीं होते। ट्रेन आने पर पानीपांडे भी बाल्टी-लोटा ले कर घूमते दिखाई नहीं देते। शाहजी को बहुत प्यास लगी थी। वे लोटा लेकर ट्रेन के कोरीडोर में ओर-छोर कई चक्कर लगा चुके थे। उन्हें जल नहीं मिल रहा था।

ट्रेन में रेस्तोराँ की गाड़ी थी। रेस्तोराँ का आदमी कुछ-कुछ समय बाद, कोरीडोर में से घूम जाता था। कभी वाइन की बोतलें, कभी बियर दिखा जाता, कभी चाय-काफी दिखा जाता, और कभी पेस्ट्री या कुछ अन्य हल्की-फुल्की चीजें दिखा जाता।

शाहजी को सलाह दी—"रेस्तोराँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के आदमी से क्यों नहीं पूछते?"

शाहजी उससे पूछ चुके थे। वह कह देता था, प्यास के लिए बियर है, वाइन है, मिनरल है, साइडर है, चाय है, काफी है और क्या चाहिए?

शाहजी को जल चाहिए था। हम भारतीयों को परहेज न भी हो, पर जन्मगत अभ्यास के कारण प्यास, जल के बिना नहीं बुझती। मेरे विचार में, तो मिनरल से काम चल जाना चाहिए था।

शाहजी का कष्ट देख कर कहा—"मिनरल तो अपने यहाँ का सोडा वाटर ही है। इसमें कोई निषिद्ध या नशीला पदार्थ नहीं है। रेस्तोराँ का आदमी जिस चीज का दाम पायेगा, वही तो लाकर देगा। पर शाहजी को शुद्ध जल ही चाहिए था।

जल की खोज में शाहजी के साथ रेस्तोराँ में गया। सोचा, भोजन की व्यवस्था है, तो जल क्यों नहीं होगा। रेस्तोराँ में जाकर प्रबंधक से कहा—"यह साधु-संत अं र व्रती आदमी हैं। केवल जल ही पी सकते हैं। अतः कुछ जल चाहिए। उसके लिए दाम दे देने में भी हमें आपत्ति नहीं है।"

प्रबंधक ने मिनरल (सोडा वाटर) और साइडर (सेव के रस की बोतलें) दिखा दीं—"यह जल ही है।"

उसी समय सफेद टोपी पहने रसोइये ने एक पतीले के कोने में लगे नल से पानी लिया।

उधर संकेत कर कहा—"इन्हें वैसा जल चाहिए।"

प्रबंधक की भवें चढ़ गयीं—"यह तो घोड़ों को पिलाया जा सकता है, ले लो।"

इस गुस्ताखी का क्या जवाब दे सकते थे? उसकी क्षुद्रता की ओर संकेत करने के लिए पूछ लिया—"एक जग जल के लिए कितना दाम चाहिए?"

रेस्तोराँ वाले को शाहजी की प्यास से कुछ लाभ न उठा सकने के कारण क्षोभ था। परंतु सुसभ्य यूरोप में बोलने का यह कैसा शिष्ट तरीका था?

दोपहर बाद, एक बजे के भोजन के लिए, इंटर नेशनल एक्सप्रेस की रेस्तोराँ कार में गया। सभी मेजों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर दो-दो तीन-तीन लोग बैठ चुके थे। केवल कोने की छोटी मेज खाली थी। उसी मेज की ओर गया।

कुर्सी खींच कर बैठा ही था कि, एक और बहुत शिष्ट वेश, सुस्वरूप युवा सज्जन ने कार में कदम रखा। मुझे अकेले बैठे देख कर बहुत विनय से पूछ लिया– "अपने साथ बैठने की अनुमति दे सकेंगे?" सज्जन शुद्ध स्पष्ट अंग्रेजी में बोला। यूरोप के उस भाग में अच्छी अंग्रेजी बोल सकने वाले अधिक लोग नहीं मिलते।

"अवश्य। मुझे संगति का लाभ होगा।"

सज्जन ने बैठते ही कहा –"मेरा अनुमान गलत हो, तो अन्यथा न मानियेगा। आपको भारतीय समझ कर अंग्रेजी में बात की है।"

"आपका अनुमान बिलकुल ठीक है। मैं जर्मन या फ्रेंच समझ भी नहीं पाऊँगा।"

रेस्तोरॉं का बैरा आ गया। उसने तैयार भोजन की सूची दिखायी। जानना चाहा, हम लोग क्या लेंगे। हम दोनों ने अपने-अपने आर्डर दे दिये।

बैरे ने पूछा –"खाना आने तक पीने के लिए क्या हाजिर किया जाये?"

सज्जन ने उत्तर दिया कि, उन्हें आवश्यकता नहीं थी।

मैंने एक बोतल अंगूरी लेना स्वीकार कर लिया।

सज्जन ने फिर बात आरम्भ की— "आपकी रुचि किन विषयों में है। क्या केवल देश-भ्रमण के प्रयोजन से यूरोप आये हैं? यह मौसम इस देश में भ्रमण के लिए विशेष अच्छा नहीं है?"

उत्तर दिया– "लिख कर निर्वाह करता हूँ। विश्व-शांति-सम्मेलन के भारतीय प्रतिनिधि-मंडल में बियाना आया था। अब लंदन जा रहा हूँ।"

सज्जन ने भारतीय लेखक से मिलने पर बहुत प्रसन्नता प्रकट की।

सज्जन हालैंड का निवासी और पनीर का व्यापारी था। दूध-दही की खटास या पनीर की गंध का कुछ भी आभास या अनुमान उसे देख कर, नहीं हो सकता था। ऐसी साफ-सुथरी चुस्त पोशाक मानो कोई डाक्टर हो या डाइरेक्टर।

ट्रेन स्विटजरलैंड के प्रदेश में फ्रांस की ओर जा रही थी। चौड़ी खिड़कियों से बरफ से ढँकी पहाड़ियाँ और पतझड़े जंगल दिखायी दे रहे थे। कहीं देवदार के ढंग के घने वृक्ष भी दिखायी दे जाते थे।

सज्जन ने फिर कहा– "यदि आप गरमी के मौसम में आते, तो इस प्रदेश का सौंदर्य देखते ही बनता। सब ओर हरियाली और फूल दिखाई देते।"

विश्वास दिलाया–"हम लोगों के देश में हरियाली और फूलों की कमी नहीं है। अलबत्ता बरफ का सौंदर्य केवल कुछ ही स्थानों में दिखाई दे सकता है।"

बैरा अंगूरी की बोतल रख गया था। मेज पर गिलास मौजूद थे। शिष्टाचार के नाते सज्जन से कहा –"आप भी लीजिये।"

"बहुत अच्छा, ले लूँगा।"

मैंने दो गिलास भर दिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सज्जन पनीर के व्यापार के लिए यूरोप के प्रायः सभी भागों में घूमते रहते थे। सभी स्थानों की विशेषताओं का वर्णन बहुत व्यौरे से करते जा रहे थे। विशेष आग्रह किया—"यूरोप में आये हैं, तो हालैंड को देख लेना न भूलियेगा।"

खाना आ गया था। खाना खाते हुए, उनके वर्णन सुनता जा रहा था। उनके बात कहने का ढंग बहुत रुचिकर था।

गिलास समाप्त हो जाने पर, उनसे फिर कहा—"और लीजिये?"

"बहुत अच्छा, ले लूँगा।"

सज्जन ने एक बार भी 'नहीं' नहीं कहा—"बस और नहीं, चाहिए या आप ही लीजिये।"

अच्छा नहीं लग रहा था। भले मानुस को अगर पीनी ही थी, तो अपने लिए अलग बोतल क्यों नहीं मँगा ली थी?

भोजन हो गया, परंतु पनीर के व्यापारी की बात समाप्त नहीं हो रही थी। मैंने मेज पर रखे दाँत कुरेदनों में से एक उठा लिया। उनकी बात सुनते-सुनते कुरेदन का भी प्रयोग करता जा रहा था।

सज्जन कहता गया— "भारत और यूरोप में कितना अंतर है! दो स्वतः पूर्ण संस्कृतियाँ और सभ्यतायें हैं। हम लोग उस देश को देखे बिना वास्तविकता का सही अनुमान नहीं कर सकते, परंतु यह जरूर जानते हैं कि, भारत की संस्कृति और जीवन बहुत सजीव और रंगीन हैं। उनका दृष्टिकोण, रुचि और अभ्यास दूसरे हैं। वहाँ का जीवन और व्यवहार हमें आकर्षक भी लगता है और विचित्र भी। मैं तो भारत के विषय में केवल पुस्तकों और चित्रों से रत्ती भर ही जान सका हूँ, परंतु उस पर मुग्ध हूँ।

"भारतीय व्यवहार की संक्षिप्त-सी झाँकी देख पाने का बहुत थोड़ा सा अवसर कुछ मास पूर्व पेरिस में मिला था। वहाँ अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी थी, उसमें भारत का भी भाग था। अत्यंत सुंदर कलापूर्ण वस्तुयें थीं, भारतीय भोजनालय भी था। उस अवसर को चूक नहीं सकता था। एक बार वहाँ खाना खाया।

"भारतीय महिलाओं की साड़ी की तुलना में महिलाओं की दूसरी कोई भी पोषाक नहीं ठहर सकती। शरीर पर उसकी लहरें और बहाव। मैं उसका बखान नहीं कर सकता। वह तो बिलकुल स्वर्गीय पोशाक है। दर्जी वैसी पोशाक नहीं बना सकते। साड़ी को तो शरीर, अपनी स्थिति और आवश्यकता के अनुरूप स्वयं रूप देता है। यही उसका रहस्य है। आप क्या कहते हैं, मेरा अनुमान ठीक है?"

"आपने भारतीय साड़ी की बहुत अच्छ ढंग से व्याख्या कर दी है।"

"मैं भारतीय भोजनालय में गया था। वहाँ भोजन भारतीय शैली में और यूरोपीय शैली में भी देने की व्यवस्था थी। बैरे सिर पर पगड़ियाँ बाँधे थे, जैसे चित्रों में राजाओं के सिर पर होती हैं। मैंने तो भारतीय भोजन यूरोपीय ढंग से ही लिया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परंतु मेरे सामने एक मेज पर एक भारतीय युगल भोजन कर रहा था। युवक यूरोपीय पोशाक में था, परन्तु युवती भारतीय साड़ी में थी। प्यारी-प्यारी श्यामलता लिये युवती का क्या दिव्य रूप था? और कैसा केश-विन्यास! चमकीले काले रेशम जैसे केश। बड़ी-बड़ी काली आँखें, पलकों में काली रेखाओं से आँखें और भी बड़ी लग रही थीं। माथे पर रक्त-बिंदु।

"खाना खाते व्यक्ति की ओर देखना शिष्टता नहीं है, परंतु कौतूहल का दमन कर सकना, संभव नहीं था। कारण, युवक-युवती भारतीय ढंग से खा रहे थे। आपके यहाँ भोजन का ढंग बिल्कुल भिन्न है।"

"हमारा ढंग बिल्कुल भिन्न है, परंतु आधुनिक होटलों में यूरोपीय ढंग का भोजन भी सुविधा से मिल जाता है। हम लोगों के तरीके में भोज्य पदार्थों को एक के बाद एक, अलग-अलग नहीं परोसा जाता। सब-कुछ एक साथ परोस दिया जाता है।"

"ठीक है ठीक है, यही देख कर मुझे आश्चर्य हुआ था। उन लोगों के लिए भोजन बहुत बड़ी-बड़ी गोल ट्रे में, अलग-अलग लाया गया था। क्या चमचमाते हुए बरतन थे! चाँदी के रहे होंगे या क्रोमियम की कलई के होंगे। बड़ी गोल ट्रे भी बहुत ही सुंदर थी। कांटा-चम्मच भी रखे हुए थे, परंतु वे लोग उँगलियों से खा रहे थे।

"मैं कौतूहल का दमन नहीं कर सका। उँगलियों से इतनी सफाई और स्वच्छता से खा सकना कैसी चमत्कार कला है, देख कर विस्मय-विभूत रह गया। मेरी नजर युवती की उँगलियों की ओर थी। सुंदर सुघड़ उँगलियाँ। युवती ने काँटे-चम्मच को छुआ भी नहीं। रोटी गोल और बहुत पतली थी। युवती केवल एक हाथ के अंगूठे और उँगलियों में रोटी का किनारा लेकर कुछ ऐसे हरकत करती थी कि, छोटा टुकड़ा उसकी उँगलियों में आ जाता था। रोटी के टुकड़े को चम्मच का रूप दे लेती थी। उसी चम्मच से प्यालों में से खा रही थी। प्रत्येक ग्रास के लिए रोटी के टुकड़े का नया चम्मच। खूबी यह कि, चम्मच में कोई दस्ता भी नहीं था, फिर भी उसकी उँगलियाँ बिल्कुल खुश्क-अछूती रहती थीं और मुख के भीतर भी नहीं जाती थीं। देखिये, यूरोप से कितना भिन्न व्यवहार है, परंतु कितना सुसंस्कृत ढंग है! हम तो कल्पना नहीं कर सकते। मैं विस्मय-विभूत देखता रह गया।"

मैं विस्मय-विभूत होकर इस अद्‌भुत वर्णन को सुनता रहा।

उक्त सज्जन बोले —"अब देखिये, जैसे हम भारतीय ढंग की कल्पना नहीं कर सकते, वैसे ही यूरोप के अनेक व्यवहारों का परिचय भारतीयों को होना कठिन है। हालाँकि, इन व्यवहारों में कोई तर्क नहीं होता, पर अपना-अपना व्यवहार होता है। यह व्यवहार परम्परा और अभ्यास से मान्य हो गये हैं, इसलिए सब वैसा ही करते हैं। किसी को दूसरे ढंग से व्यवहार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते देख कर विस्मय होता है, तो कभी चोट भी लग सकती है।"

"हाँ आप ठीक कह रहे हैं। स्वीकृत अभ्यास और परम्परागत व्यवहार से भेद खटकता ही है।" मैंने स्वीकार किया।

"अब देखिये, उदाहरणतः जब मछली परोसी जाती है, तो छुरी और काँटा दोनों रखे जाते हैं। छुरी रखी तो जाती है, परंतु मछली खाने के लिए उसका उपयोग नहीं किया जाता। छुरी से मछली का स्पर्श भी नहीं किया जाता। मछली केवल काँटे से खायी जाती है। यह एक रीति है। इसके लिए तर्क कोई नहीं है।"

बहुत झप लगी। भोजन में मछली परोसी गयी थी और मैंने मछली खाने के लिए काँटे और छुरी का भी व्यवहार किया था। चुप सुनता रहा –

"यदि आप पूछें कि ऐसा क्यों है, तो कोई भी व्यक्ति कुछ भी तर्क-संगत उत्तर नहीं दे सकेगा। बस यह यहाँ के भद्र समाज का आचरण है। सब लोग ऐसा करते आये हैं, इसलिए ऐसा करते हैं। यदि वे किसी भद्र व्यक्ति को छुरी से मछली का स्पर्श करते देखें, उनके लिए यह असह्य होगा। निश्चय ही हमारे यहाँ अनेक ऐसी बातें मिल जायेंगी, जो भारतीयों को या एशियावासियों को बहुत ही अभद्र लगेंगी या असह्य होंगी, परंतु हमें वे स्वाभाविक लगती हैं।"

मन ही मन, पानी-पानी हुआ जा रहा था। क्या कहता ? झेंप से स्वीकार किया– "निश्चय ही आचार-भेद से ऐसी परिस्थितियाँ आ जाना आश्चर्यजनक नहीं है।"

सज्जन कहता ही गया –"और भी अनेक ऐसी बातें या व्यवहार हो सकते हैं। उदाहरणतः कुरेदन की ही बात है। भोजन की मेज पर कुरेदन रखे जरूर जाते हैं, परंतु मेज पर बैठे-बैठे इनका व्यवहार कोई नहीं करता.....।"

उस समय भी कुरेदन मेरे मुख में ही था, तुरंत हाथ नीचे कर लिया।

सज्जन ने उस ओर नहीं देखा। कहता गया –"किसी का ध्यान आकर्षित किये बिना, कुरेदन को उठा कर हथेली में ले लेते हैं या जेब में रख लेते हैं। जब अकेले हुए प्रयोग कर लिया। दाँतों में ज्यादा अलकत लगी, तो हाथ धो आने के लिए गुसलखाने में चले गये और कुरेदन से अलकत मिटा ली.....।"

अब झेंप के कारण और सुन सकना संभव नहीं रहा था। नजर बचाये कहा– "इतनी अच्छी संगति और इतनी जानकारी भरी बात-चीत के लिए अनेक धन्यवाद। आज्ञा दें तो जरा अपने कमरे में जाऊँगा। आधा लिखा पत्र छोड़ आया हूँ।"

कोरीडोर में से लौटता हुआ झेंप से सोचता जा रहा था – भले आदमी ने क्या और किस ढंग से बात की। बात का एनस्थीजिया देकर(पीड़ा की चेतना को सुलाकर) बात का नश्तर चला दिया।

अस्तु, एक बोतल अंगूरी के मोल इतना सीख लेना महँगा सौदा नहीं है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा और राष्ट्र

वासुदेवशरण अग्रवाल के स्वाध्याय-कोश के कुछ स्वर्ण-बिंदु

महर्षि वाल्मीकि के अनुसार राजा की सारी सार्थकता राष्ट्र के कल्याण को लेकर है। न्याय और धर्म से प्रजा का परिपालन राजा का प्रधान कर्त्तव्य है। राजा ही साधुओं की रक्षा और असाधुओं को दंड देता है। न्याय और दंड के प्रसंग में वाल्मीकि का दृष्टिकोण सदैव दृढ़ मर्यादा का रहा है। राज्य एवं लोक की मर्यादाओं में शैथिल्य का लेश भी उन्हें मान्य नहीं था। वाल्मीकि अराजक राष्ट्र को एक क्षण के लिए भी नहीं सह सकते। अराजक राष्ट्र घोर जंगलीपन है, जिसमें सब प्रकार की मर्यादाओं का लोप हो जाता है। अराजक राष्ट्र के वर्णन में वाल्मीकि ने एक गीत दिया है, वह संस्कृत साहित्य में अद्भुत है, उसी से उनके राष्ट्रीय आदर्श का सम्यक् परिचय मिलता है—

विभीषण-राज्याभिषेक

अराजक राष्ट्र विनाश को प्राप्त हो जाता है।

अराजक जनपद में मेघ दिव्य जल से पृथ्वी को नहीं सींचते।

अराजक देश में पुत्र पिता के और स्त्री पति के वशीभूत नहीं रहती।

अराजक राष्ट्र में न धन रहता है, न स्त्री। सत्य अराजक स्थान में कैसे रह सकता है?

अराजक देश में मनुष्य सभा नहीं कर पाते, प्रसन्न होकर उद्यान और घर नहीं बनवा सकते।

अराजक देश में राष्ट्र की सुख-समृद्धि की वृद्धि करने वाले नट और नर्तकों से युक्त समाज और उत्सव नहीं हो पाते।

अराजक देश में सायंकाल के समय कुमारियाँ स्वर्ण के अलंकार पहन कर उद्यानों में क्रीड़ा के लिए नहीं जा पातीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अराजक देश में धनी लोग, जो कृषि और गौ-रक्षा से जीविका कमाते हैं, सुरक्षित रहकर घर के किवाड़ खोलकर निश्चिन्तता से सो नहीं सकते।

अराजक देश में शीघ्रगामी वाहन और यानों पर स्त्री-पुरुष वन में घूमने नहीं जा सकते।

अराजक देश में दूर की यात्रा करने वाले वणिक्, बहुत-सी पण्य-सामग्री लेकर कुशलपूर्वक मार्गों में नहीं चल सकते।

अराजक देश में आत्मा से आत्मा का ध्यान करने वाले, अकेले विचरने वाले, जहाँ साँझ हो वहीं बसेरा करने वाले मुनि कुशल से नहीं रह पाते।

अराजक देश में योग और क्षेम का नाश हो जाता है। अराजक राष्ट्र की सेना शत्रुओं से युद्ध नहीं करती।

अराजक देश में अलंकृत मनुष्य, प्रसन्न अश्वों और रथों पर चढ़ कर नहीं चल सकते।

अराजक देश में शास्त्र-विशारद मनुष्य समाज और उपवनों में शास्त्र की चिंता करते हुए, एक-दूसरे से नहीं मिलते।

अराजक देश में मनुष्य का कुछ भी अपना नहीं होता। जल में मछलियों के समान मनुष्य एक-दूसरे को हड़पने लगते हैं।

वर्णाश्रम की मर्यादाएँ जिन्होंने तोड़ दी हैं, जिन्हें पहले राजदंड दिया जाता था, वे नास्तिक लोग निडर होकर अराजक राष्ट्र में प्रभावशाली बन जाते हैं।

जिस प्रकार शरीर के हित-अहित की प्रवर्तक आँख है, उसी प्रकार राष्ट्र में जो सत्य और धर्म है, उनका प्रवर्तक राजा है।

राजा सत्य और धर्म है, राजा कुलीनों का कुल है। राजा माता-पिता और राजा ही हितकारी है।

अन्त में महाकवि राष्ट्र और राजा की महिमा और कर्तव्य को सर्वोच्च पद पर पहुँचा देते हैं।

अहो तम इवेदं स्यान्न प्रज्ञायेत किंचन।
राजा चेन्न भवेल्लोके विभजन्साध्वसाधुनी॥

—यदि साधु-असाधुओं का पृथक् विभाग करने वाला राजा इस लोक में न होता, तो जैसे दिन अंधकार में विलीन हो जाता है, वैसे ही सब-कुछ तम में डूब जाता।

एक बार केशवचंद्र सेन ब्रह्म-समाज की व्यास-गद्दी से प्रार्थना करा रहे थे। प्रार्थना में उन्होंने कहा—"हे प्रभो! हमें अपने आनंद-समुद्र में सदा के लिए मग्न कर लो।" प्रार्थना के बाद बातचीत के सिलसिले में रामकृष्ण परमहंस ने कहा—"अरे केशव! आनंद-समुद्र में सदा के लिए मग्न होने की प्रार्थना बेकार है। तुम्हारे आँगन में तो साड़ियाँ सूखी हैं। तुम्हारे लिए यही उचित है कि, समुद्र में एक डुबकी लगा कर फिर बाहर आ जाओ। नहीं तो भला इन साड़ियों का क्या होगा?"

—'व्यंग्य-वारिधि' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्याडि : वंदनीय रसायनवेत्ता

पद्मभूषण सूर्यनारायण व्यास के शब्दों में अंकित प्राचीन भारत के एक महान् रसायनवेत्ता मनीषी का संक्षिप्त परिचय

*

सुप्रसिद्ध अरब विद्वान् अलबेरूनी जब सन् १०३० में भारत आया, वह उज्जैन भी गया था। वहाँ उसने तब से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व हुए एक महान् विद्वान् व्याडि की बहुत ख्याति सुनी। उसे यह जान कर आश्चर्य हुआ कि, उस व्याडि ने रसायनों द्वारा प्रयोग-शाला में सोना बनाया था। उस समय तमाम अरब-जगत् के कीमियागर स्वर्ण-सिद्धि की खोज में लगे थे। अलबेरूनी को यह भी पता चला कि, व्याडि ने स्वर्ण-सिद्धि के सम्बंध में 'भैषजसंस्कार' नामक पुस्तक निर्मित की थी। जब अर्थाभावावश व्याडि उस पुस्तक को प्रचारित नहीं कर सका, तो निराश हो कर, उसने उसे शिप्रा नदी में प्रवाहित कर दिया। संयोग की बात थी कि, वह ग्रंथ एक वार-वनिता के हाथ लग गया। उसने उसका महत्व समझ कर, व्याडि को बहुत धनराशि प्रदान की। फिर तो इसी धन से व्याडि ने अनेक औषधियाँ निर्माण कीं और अनेक सफल आविष्कार भी किये।

अलबेरूनी ने अपनी प्रवास-पुस्तक 'किताबुल हिन्द' में लिखा है कि, व्याडि ने एक ऐसा रसायन आविष्कृत किया था, जिसे शरीर पर लगा कर, व्याडि और उसकी बहन दोनों वायु में उड़ने लगे थे। पता नहीं, अल-बेरूनी ने यह सब किस आधार पर लिखा। परंतु इससे यह अवश्य सिद्ध होता है कि, उन दिनों भारत के महान्तम वैज्ञानिकों में रासायनिक व्याडि की गणना होती थी।

व्याडि का जीवन-काल निर्धारित करना बड़ा कठिन है। कुछ लोगों ने अलबेरूनी की सूचना से, व्याडि को उसका समकालीन समझा है। अन्य कुछ विद्वानों की धारणा है कि, व्याडि विक्रम की राजसभा में विद्यमान था और उसके अनेक आविष्कार स्वयं विक्रम ने प्रत्यक्ष देखे थे। यदि यह बात होती, तो ऐसे विलक्षण विद्वान् का नाम नव-रत्नों की नामा-वलि में अवश्य मिलता। हाँ, 'कथा-सरित्सा-गर' के रचयिता ने महाराज विक्रम के यहाँ उज्जैन में, एक रासायनिक व्याडि के होने का उल्लेख अवश्य किया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रसायन-शास्त्री के अलावा, वैयाकरण के रूप में भी व्याडि की बड़ी ख्याति थी। ग्यारहवीं शताब्दी में 'काव्यमीमांसा' के रचयिता राजशेखर ने लिखा था कि, जिस तरह काव्यकारों की परीक्षा उज्जैन में होती थी, उसी प्रकार पाटलिपुत्र (पटना) में शास्त्रकार-परीक्षा होती थी, जिसमें पाणिनि, पिंगल, व्याडि, वररुचि और पतंजलि आदि ने परीक्षा दी थी।

यह प्रसिद्ध है कि, महाभाष्यकार पतंजलि गोनर्द गाँव के थे, जो भोपाल के पास कहीं रहा है, और उन्होंने भेलसा (विदिशा) में शुंगों के अश्वमेध-यज्ञ का पौरोहित्य किया था। संभवतः व्याडि उस समय जीवित रहा हो; क्योंकि व्याडि के एक ग्रंथ 'संग्रह' के उद्धरण 'महाभाष्य' में पतंजलि ने दिये हैं। भर्तृहरि ने भी अपने 'वाक्यपदीय' में उसके कुछ उद्धरण दिये हैं। अतः व्याडि पतंजलि और भर्तृहरि का पूर्ववर्ती नहीं, तो कम-से-कम समकालीन तो रहा ही होगा।

महाभाष्यकार ने व्याडि को "दाक्षायण" कहा है। इससे विदित होता है कि, व्याडि दाक्षायण-कुल का था। महान् व्याकरणाचार्य पाणिनि भी इसी वंश का था। महाभाष्य-कर्ता ने पाणिनि को "दाक्षीपुत्र" बतलाया है।

यों पाणिनि और व्याडि का वंश एक ही था, तो आश्चर्य नहीं कि, दोनों में कोई निकट का संबंध भी रहा हो। यह प्रसिद्ध भी है कि, दक्ष की पुत्री दाक्षी के ज्येष्ठ पुत्र पाणिनि थे और कनिष्ठ पुत्र व्याडि।

एक अन्य महान् वैयाकरण कात्यायन ने भी व्याडि के 'संग्रह' ग्रंथ का सादर उल्लेख किया है। अवश्य ही व्याडि कात्यायन का पूर्ववर्ती है। व्याडि के 'संग्रह' के विषय में कहा जाता है कि, उसमें एक लाख श्लोक थे।

भर्तृहरि-रचित 'वाक्यपदीय' की पुण्यराज-कृत टीका में यह उल्लेख है—

"इह पुरा पाणिनीयेस्मिन् व्याकरणे व्याड्युपरचितं ग्रन्थलक्षपरिमाणं संग्रहाभिधानं निबन्धनमासीत्।"

आज व्याडि का 'संग्रह' ग्रंथ अनुपलब्ध है। संभवतः 'महाभाष्य' जैसी व्यापक एवं प्रांजल रचना के उपलब्ध हो जाने से, व्याडि के ग्रंथ की उपयोगिता कम हो गयी और कुछ समय के बाद वह लुप्त हो गया, जैसे कुणि की रचना 'पाणिनि-सूत्रवृत्ति' लुप्त हो गयी। परंतु महाभाष्य-निर्माता के समय तक, व्याडि का महत्व बना हुआ था। 'महाभाष्य' के निर्माण में 'संग्रह' से पर्याप्त सहायता मिली थी। इसी कारण कुछ समय तक 'महाभाष्य' को 'व्याडिसंग्रह-विवृति' भी कहा जाता था।

पाणिनि का समय ई० सन् से पूर्व ५-६ शतक समझा जाता है। व्याडि, कुणि, भर्तृहरि आदि विद्वान् इसके ५-६ सौ साल बाद रहे होंगे। यह समय वही शुंगों के लगभग आ जाता है। शुंगों के पश्चात् मालव-गणों ने संगठित हो कर, विक्रम के नेतृत्व में शासन-संचालन किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस समय पतंजलि, व्याडि, भर्तृहरि, कालिदास आदि विद्वान् रहे होंगे। इस प्रकार 'कथासरित्सागर' के कथन की संगति भी लग जाती है।

विभिन्न ग्रंथकारों ने व्याडि के वाक्यों का जो उल्लेख किया है, उनसे यही विदित होता है कि, व्याडि ने शब्दों का अर्थ-विवेचन करने वाला ग्रंथ निर्मित किया था। अवश्य ही रामायण, चरक, हर्षचरित तथा यज्ञफल नाटकों में इसी 'संग्रह' ग्रंथ को 'संग्रह-व्याकरण' नाम से ज्ञापित किया गया है। भर्तृहरि के 'वाक्य-पदीय' के निर्माण-काल में इस 'संग्रह' का धीरे-धीरे लोप हो रहा था। भर्तृहरि ने कहा है – **"प्रायेण संक्षेपरुचीनल्पविद्या-परिग्रहान् संप्राप्य वैयाकरणान् संग्रहेस्त-मुपागते"** (वाक्यपदीय २-४८४) अर्थात् क्योंकि वैयाकरणों में भी विस्तृत विवरण की अपेक्षा संक्षेप में जानने की अभिरुचि हो गयी थी, इसलिए 'संग्रह' ग्रंथ अस्त हो गया।

व्याडि बहुत बड़ा मीमांसक भी था। प्रायः मीमांसक जातिपक्ष-वाद के समर्थक रहे हैं; किन्तु व्याडि ने व्यक्ति-अभिधान-पक्ष का प्रतिपादन कर, बहुत बड़े साहस का कार्य किया। 'संग्रह' ग्रंथ के अतिरिक्त, न्याय और परिभाषा पर भी व्याडि का ग्रंथ रहा होगा। पतंजलि और वार्तिक-कार ने अनेक स्थलों पर व्याडि के न्याय और परि-भाषा सम्बंधी ग्रंथ से उद्धरण दिये हैं। **"व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिः"** यह परि-भाषा भी व्याडि ने ही सर्वप्रथम प्रतिपादित की थी। व्याडि के परिभाषा-ग्रंथ का नाम 'व्याडिपरिभाषावृत्ति' था। सुना है कि, कुछ पुरातन संग्रहालयों में इस के कुछ पृष्ठ आज भी सुरक्षित हैं।

'शब्दकल्पद्रुम' में व्याडि को कोषकार भी कहा गया है। उसके रचित कोष का नाम 'उत्पलिनी' बताया जाता है।

इस प्रकार व्याडि अपने समय का असाधारण विद्वान् आचार्य हुआ है। वैया-करणों में तो उसका समादर था ही, रासा-यनिक के रूप में भी वह अप्रतिम विद्वान् था और इस देश का चोटी का रसायना-चार्य माना गया। डा. प्रफुल्ल चंद्र राय ने अपने 'भारतीय रसायन-शास्त्र के इतिहास' में व्याडि के रसायन-विषयक ज्ञान की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

कुछ विद्वान्, वैयाकरण व्याडि और रसायन-शास्त्री व्याडि को भिन्न मानते हैं। परन्तु संभव है, आरंभिक जीवन में जो व्याडि परम वैयाकरण था, वही उत्तर वय में रसायन की ओर प्रवृत्त हो कर, महान् आविष्कारक सिद्ध हुआ हो। व्याडि की विविध विषयों में योग्यता और उसकी प्रतिभा की प्रचंडता महाभाष्य-कार ने भी स्वीकार की है। व्याडि के ज्ञान की इसी सागर-सदृश विशालता और अगाधता के कारण ही, गरुड-पुराण के रचयिता ने उसे यह श्रद्धांजलि अर्पित की है—

व्याडिर्जगाद जगतां हि महाप्रभावः।
सिद्धां विदग्धहितत्परया दयालुः॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रजिया

हमारी संस्कृति के उस विच्छिन्न अंग का विह्वल चित्र, जिसे खोकर हम शायद सदैव दीन रहें—शब्द- चितेरे हैं बेनीपुरीजी।

★

कानों में चाँदी की बालियाँ, गले में चाँदी का हैकल, हाथों में चाँदी के कंगन और पैरों में चाँदी की गोड़ाई, भर-बाँह की बूटेदार कमीज़ पहने, काली साड़ी के छोर को गले में लपेटे, गोरे चेहरे पर लटकते हुए कुछ बालों को सम्हालने में परेशान वह छोटी-सी लड़की, जो उस दिन मेरे सामने आ कर खड़ी हो गयी थी—अपने बचपन की उस रजिया की स्मृति ताज़ी हो उठी, जब मैं अभी उस दिन अचानक उसके गाँव में जा पहुँचा।

हाँ, यह मेरे बचपन की बात है। मैं कसाईखाने से रस्सी तुड़ा कर भागे हुए बछड़े की तरह उछलता हुआ, अभी-अभी स्कूल से आया था और बरामदे की चौकी पर अपना बस्ता-सिलेट पटक कर मौसी से छठ में पके ठेकुए ले कर, कुतर-कुतर कर खाता हुआ, ढेकी पर झूला झूलने का मज़ा पूरा करना चाह रहा था कि, उधर से आवाज़ आयी— "देखना, बबुआ का खाना मत छू देना....." और, उसी आवाज़ के साथ मैंने देखा, यह अजीब रूप-रंग की लड़की मुझ से दो-तीन गज़ आगे खड़ी है।

मेरे लिए यह रूप-रंग सचमुच अजीब था। ठेठ हिन्दुओं की बस्ती है मेरी; और मुझे मेले-पेठिए में भी अधिक नहीं जाने दिया जाता, सुना है, बचपन में मैं एक मेले में खो गया था....कोई औघड़ मुझे लिये जा रहा था कि गाँव की एक लड़की की नज़र पड़ी और मेरा उद्धार हुआ। मैं माँ-बाप का एकलौता— माँ, चल बसी थी; इसलिए उनकी इस एकमात्र धरोहर को मौसी आँखों में जुगो कर रखती। मेरे गाँव में भी लड़कियों की कमी नहीं; किंतु न उनकी यह वेश-भूषा, न यह रूप-रंग। मेरे गाँव की लड़कियाँ कानों में बालियाँ कहाँ डालतीं और भरबाँह की कमीज़ पहने भी उन्हें कभी नहीं देखा। गोरे चेहरे तो मिले हैं; किंतु इसकी आँखों में जो एक अजीब किस्म का नीलापन था वह औरों में कहाँ? और समूचे चेहरे की काट भी कुछ नि रा ली। जरूर, तभी तो उसे एक टक घूरने लगा।

वातायन

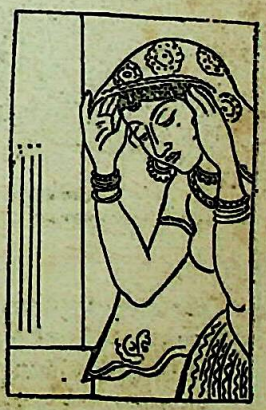

यह -बोली थी रज़िया की माँ, जिसे प्राय:

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रीज़

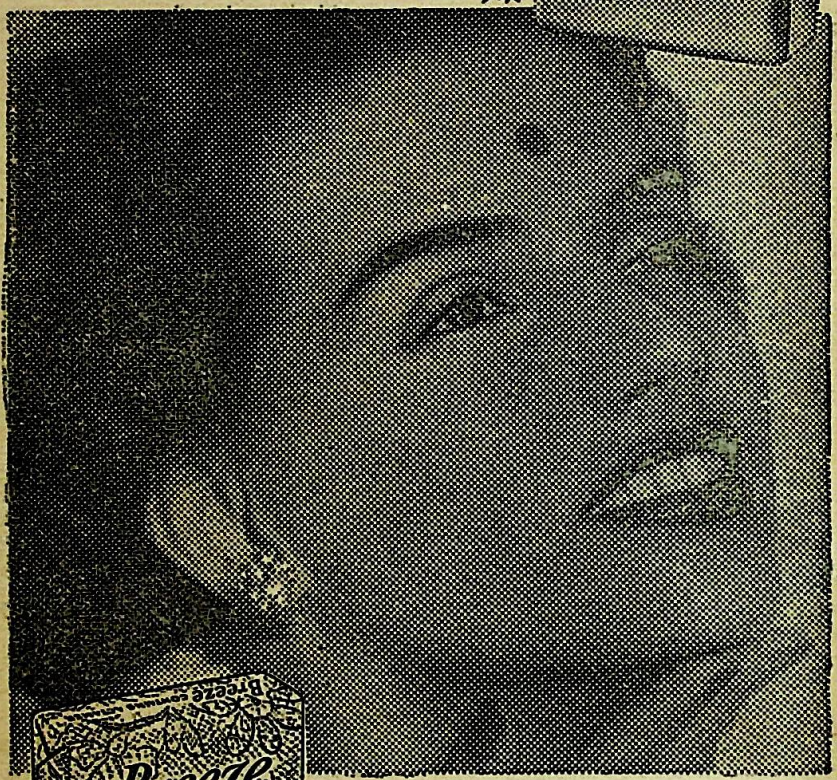

'एक्टमर' (बाइथियोचॉल)
अमेरिकन मेडिकल एसोसियेशन द्वारा स्वीकृत है।

ब्रीज़ — अधिक सुंदर, अधिक स्वस्थ रंग रूप के लिए!

ब्रीज टॉयलेट साबुन आप की जिल्द को साफ़ करने के साथ साथ इसे स्वस्थ भी बनाये रखता है। नर्म असर, सुहानी सुगंध वाले ब्रीज में 'एक्टमर' मिलाया जाता है जो जिल्द को हानिकारक कीटाणुओं से छुटकारा दिलात है।
याद रखिये, ब्रीज के इस्तेमाल से आप अपने रंग रूप की देख भाल भी करती हैं और तन की ताजगी भी पाती हैं। एतबार के लिए एक बार आज़मा के देखिये।

ब्रीज़ टॉयलेट साबुन–जिल्द की तंदुरुस्ती के लिए 'एक्टमर' युक्त

BZ. 13-50-H.I. हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, एरेस्मिक कं. लि., लन्दन, के लिये भारत में बनाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही अपने गाँव में चूड़ियों की खँचिया ले कर आते देखता आया था। वह मेरे आँगन में चूड़ियों का बाज़ार पसार कर बैठी थी और कितनी बहू-बेटियाँ उसे घेरे हुई थीं। मुँह से भाव-ताव करती और हाथ से खरीदारिनों के हाथ में चूड़ियाँ चढ़ाती, वह साँदे पटाये जा रही थी। अब तक उसे अकेले ही आते-जाते देखा था। हाँ, कभी-कभी उसके पीछे कोई मर्द होता ,जो चूड़ियों की खाँची ढोता। यह बच्ची आज पहली बार आयी थी और न जाने किस बाल-सुलभ उत्सुकता ने उसे मेरी ओर खींच लिया था। शायद वह यह भी नहीं जानती थी कि, किसी के हाथ का खाना, किसी के निकट पहुँचने से ही छू जाता है। माँ जब अचानक चीख उठी, वह ठिठकी-सहमी, उसके पैर तो वहीं बँध गये; किंतु इस ठिठक ने उसे मेरे एकदम बहुत निकट ला दिया, इसमें संदेह नहीं।

मेरी मौसी झट उठीं, घर में गयीं और दो ठेकुए और एक कसार ले कर उसके हाथों में रख दिये। पहले तो वह लेती नहीं थी। फिर अपनी माँ के आग्रह पर हाथ में रख तो लिया, किंतु मुँह से नहीं लगाया। मैंने कहा–" खाओ न ? क्या तुम्हारे घरों में ये सब नहीं बनते ? छठ का व्रत नहीं होता ?" कितने प्रश्न– किंतु सबका जवाब 'न' में ही, और वह भी मुँह से नहीं, जरा-सी गर्दन हिला कर। और, गर्दन हिलाते ही चेहरे पर गिरे बालों की जो लटें हिल-हिल उठतीं; वह उन्हें परेशानी से सम्हालने का प्रयत्न करने लगती।

जब उसकी माँ नयी खरीदारिनों की तलाश में मेरे आँगन से चली, रज़िया भी उसके पीछे हो ली। मैं खा कर, मुँह धो कर, अब उसके निकट था; और जब वह चली, जैसे उसकी डोर में बँधा थोड़ी दूर तक घिसटता चला गया। शायद मेरी भावुकता देख कर ही, मनिहारिनों के मुँह पर खेलने वाली अजस्र हँसी और चुहल में ही उसकी माँ बोली–"बबुआजी, रज़िया से ब्याह कीजिएगा ?" फिर बेटी की ओर मुखातिब हो, मुस्कराहट में कहा–"क्या रज़िया, यह दुलहा तुझे पसन्द है।" उसका यह कहना था कि मैं मुड़ कर भागा। ब्याह एक मुसलमानिन से ? रज़िया की माँ ठठा रही थी और रज़िया सिमट कर उसके पैरों में लिपटी थी—कुछ दूर निकल जाने पर मैंने मुड़ कर देखा।

रज़िया चुड़िहारिन ! वह इसी गाँव की रहने वाली थी। बचपन में इसी गाँव में रही और जवानी में भी। मुसलमानों में, गाँव में भी शादी हो जाती है न ! और, यह अच्छा हुआ–क्योंकि बहुत दिनों तक प्रायः उससे अपने गाँव में ही भेंट हो जाया करती थी।

मैं पढ़ते-पढ़ते बढ़ता गया। पर पढ़ने के लिए शहरों में जाना पड़ा। छुट्टियों में जब-तब आता। इधर रज़िया पढ़ तो नहीं सकी, हाँ बढ़ने में मुझसे पीछे नहीं रही। कुछ दिनों तक अपनी माँ के पीछे-पीछे घूमती फिरी। अभी उसके सिर पर चूड़ियों की खँचिया तो नहीं पड़ी; किंतु, खरीदारिनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज बिक्री की चोटी पर

लोमा सिर्फ बालों को श्याम बनाने में ही परिपूर्ण नहीं, बल्कि वह उन्हें सजे-संभारे रखनेवाला सुन्दर तेल भी है। यही कारण है कि भारत के हर क्षेत्र में तथा विदेशों में अधिकतर लोग- क्या जवान, क्या वृद्ध, पुरुष व महिलायें— एक जैसी लगन के साथ, बालों को श्याम करनेवाले अन्य किसी भी चीज की अपेक्षा लोमा को ही ज्यादा पसंद करते हैं।

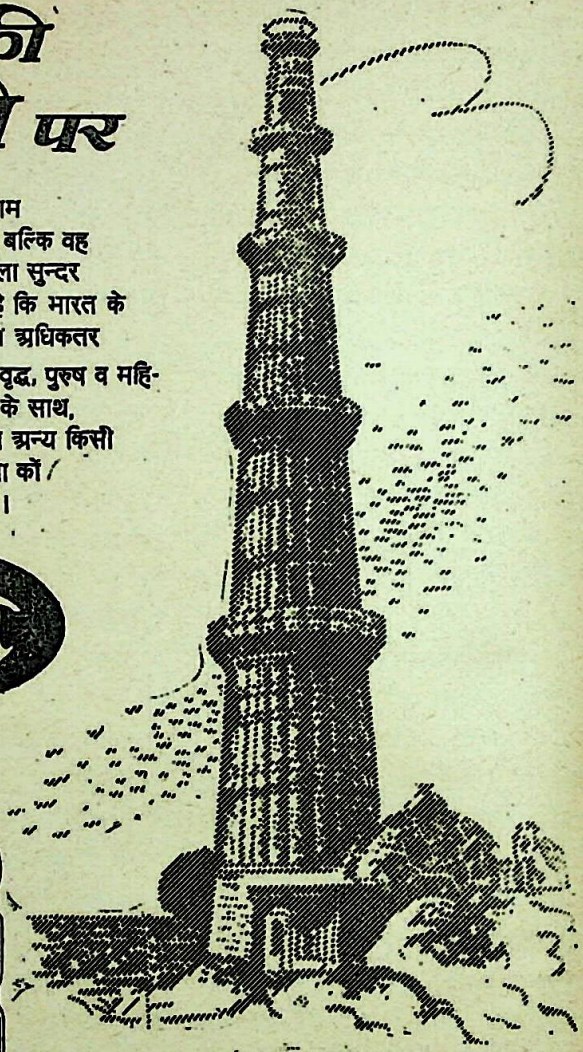

लोमा

सोल एजेंट्सः
एम. एम. खम्भातवाला, अहमदाबाद—१
एजेंट्सः
सी. नरोतम एण्ड कम्पनी, बम्बई—२

HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के हाथों में चूड़ियाँ पिन्हाने की कला वह जान गयी थी। उसके हाथ मुलायम थे, बहुत मुलायम; नयी बहुओं की यही राय थी। वे उसी के हाथ से चूड़ियाँ पहनना पसंद करतीं। जब तक रज़िया चूड़ियाँ पिन्हाती, उसकी माँ नयी-नयी खरीदारिनें फँसाती।

रज़िया बढ़ती गयी। जब-जब भेंट होती, मैं पाता कि, उस में नये-नये विकास हो रहे हैं—शरीर में और स्वभाव में भी। वह कुछ प्रगल्भ हो गयी है। मुझे देखते ही दौड़ कर निकट आ जाती, प्रश्न-पर-प्रश्न पूछती—अजीब अटपटे प्रश्न—"देखिए तो, ये नयी बालियाँ आपको पसंद हैं? क्या शहरों में ऐसी ही बालियाँ पहनी जाती हैं? मेरी माँ शहर से चूड़ियाँ लाती है। मैंने कहा है, इस बार मुझे भी ले चलो। आप किस तरफ रहते हैं वहाँ? क्या, भेंट हो सकेगी?" वह बके जाती, मैं सुनता जाता। शायद वह जवाब की जरूरत भी नहीं महसूस करती।

शृंगार

फिर कुछ दिनों के बाद पाया, वह अब कुछ सकुचा रही है। मेरे निकट आने के पहले, इधर-उधर देखती; और जब कुछ बातें करती, तो ऐसी चौकन्नी-सी कि, कोई देख न ले, सुन न ले। एक दिन, जब वह इसी तरह बातें कर रही थी, मेरी भौजी ने कहा—"देखियो री रज़िया, बबुआजी को फुसला नहीं लीजियो।" वह हँस तो पड़ी; किंतु मैंने पाया उसके दोनों गाल लाल हो गये हैं और उन नीली आँखों के कोने मुझे सजल-से लगे। मैंने तब से ध्यान दिया—जब हम लोग कहीं मिलते हैं, बहुत-सी आँखें हम पर भालों की नोक ताने रहती हैं।

रज़िया बढ़ती गयी। बच्ची से किशोरी हुई और अब जवानी के फूल उसके शरीर पर खिलने लगे हैं। अब भी वह माँ के साथ ही आती है; किंतु पहले वह माँ की एक छाया मात्र लगती थी, अब उसका स्वतंत्र अस्तित्व है और उसकी छाया बनने के लिए कितनों के दिलों में कसमसाहट है। जब वह बहनों को चूड़ियाँ पिन्हाती होती है, कितने भाई तमाशा देखने को वहाँ एकत्र हो जाते हैं। जब वह बहुओं के हाथों में चूड़ियाँ ठेलती होती है, पतिदेव दूर खड़े कनखियों से देखते होते हैं—और जैसे रज़िया को इसमें रस मिलता है। पतियों से चुहलें करने से भी वह बाज नहीं आती—"बाबू, बड़ी महीन चूड़ियाँ हैं! जरा देखिएगा, कहीं चनक न जायें।" पतिदेव भागते हैं, बहुएँ खिलखिलाती हैं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

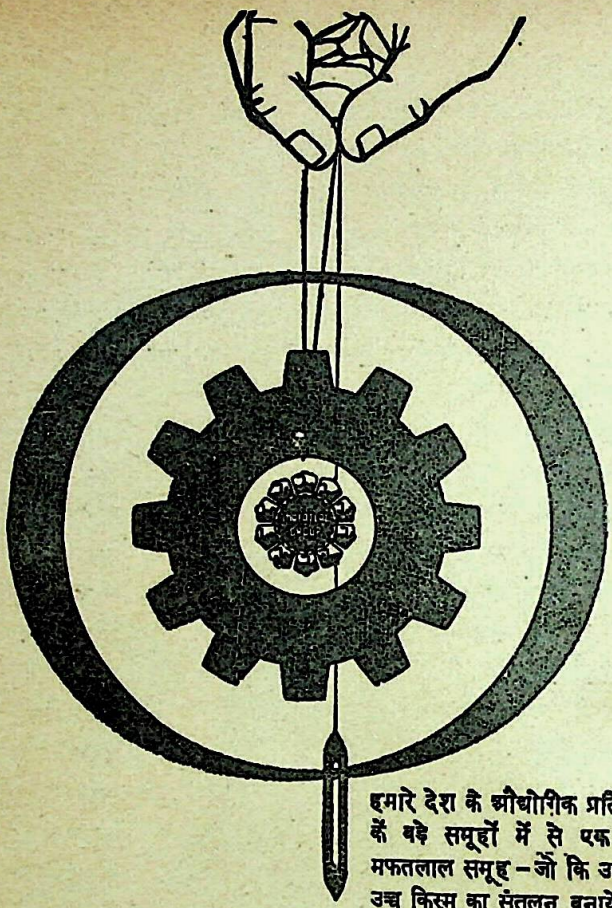

हमारे देश के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के बड़े समूहों में से एक है मफतलाल समूह – जो कि उत्पादन में उच्च किस्म का संतुलन बनाये हुए है। इस समूह से संबधित अनेक कपड़े की मिलें जो कपड़ा बनाती हैं वह डिझाइन बनावट व रूपरंग में बेजोड़ होता है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह समूह प्रत्यक्ष रूप में हजारों और अप्रत्यक्ष रूप में लाखों लोगों की रोजी का साधन है। कई लाख लोग इस समूह से लाभान्वित हैं।

मफतलाल मिलों का समूह प्रगति के साथ चलनेवाला शॉरॉक, अहमदाबाद। न्यू शॉरॉक, नड़ियाड़। स्टेण्डर्ड, बम्बई। न्यू चाइना, बम्बई। ससून, बम्बई। न्यू यूनियन, बम्बई। सूरत कॉटन, सूरत व देवास। मफतलाल फाइन, नवसारी। गगलभाई जूट, कलकत्ता।

दूसरे उद्योग: रुई - शक्कर - रंग मफतलाल हाउस, बैकबे रिक्लेमेशन, बंबई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रज़िया ठट्ठा लगाती है।

हाँ, रज़िया अपने पेशे में निपुण होती जाती थी। चुड़िहारिन के पेशे के लिए सिर्फ यही नहीं चाहिए कि, उसके पास रंग-बिरंगी चूड़ियाँ हों—सस्ती, टिकाऊ, टटके-से-टटके फैशन की; यह पेशा चूड़ियों के साथ चुड़िहारिनों में बनाव-शृंगार, रूप-रंग, नाजो-अदा भी खोजता है, जो चूड़ी पहननेवालियों को ही नहीं, उनको भी मोह सके, जिनकी जेब से चूड़ियों के लिए पैसे निकलते हैं।

ज्यों-ज्यों शहर में रहना बढ़ता गया, रज़िया से भेंट भी दुर्लभ होती गयी। और एक दिन वह भी आया, जब बहुत दिनों पर उसे अपने गाँव में देखा, तो पाया—उसके पीछे एक नौजवान चूड़ियों की खाँची सिर पर लिये है। मुझे देखते ही वह सहमी, सिकुड़ी; और मैंने मान लिया, यह उसका पति है। तो भी अनजान-सा पूछ ही लिया—"इस मजूरे को कहाँ से उठा लायी है री?" "इसी से पूछिए। साथ लग गया, तो क्या करूँ?" नौजवान मुस्कुराया। रज़िया विहँसी, बोली—"यह मेरा खाविन्द है मालिक!"

"खाविन्द!" बचपन की उस पहली मुलाकात में उसकी माँ ने दिल्लगी में जो कह दिया था, न जाने, वह बात कहाँ सोयी पड़ी थी! अचानक वह जगी। मेरी पेशानी पर उस दिन शिकन जरूर उठ आये होंगे, मेरा विश्वास है। और एक दिन वह भी आया कि, मैं भी खाविन्द बना। मेरी रानी को सुहाग की चूड़ियाँ पहनाने, उस दिन यही रज़िया आयी और उस दिन मेरे आँगन में कितनी धूम मचायी थी इस नटखट ने! "यह लूँगी, वह लूँगी और ये मुँह-माँगी चीजें नहीं मिलीं, तो वह लूँगी कि, दुलहन टापती रह जायेंगी।" "हट-हट, तू बबुआजी को ले जायेगी, तो फिर तेरा यह हसन क्या करेगा...." भौजी ने कहा। "यह भी टापता रहेगा, बहुरिया"! कह कर रज़िया ठट्ठा मार कर हँसी और दौड़ कर हसन से लिपट गयी—"ओहो मेरे राजा, कुछ दूसरा न समझना।" हसन भी हँस पड़ा। रज़िया अपनी प्रेम-कथा सुनाने लगी। किस तरह यह हसन उसके पीछे पड़ा। किस तरह झंझटें आयीं। फिर किस तरह शादी हुई और आज भी वह किस तरह छाया-सा उसके पीछे घूमता है—न जाने कौन-सा डर लगा रहता है इसे? और फिर, मेरी रानी की कलाई पकड़ कर बोली—"मालिक भी तुम्हारे पीछे इसी तरह छाँह की तरह डोलते रहें, दुलहन!" सारा आँगन हँसी से भर गया था।

× × ×

जीवन का रथ खुरदरे पथ पर बढ़ता गया— मेरा भी, रज़िया का भी। इसका पता उस दिन चला, जब बहुत दिनों पर, उससे अचानक पटना में भेंट हो गयी। यह अचानक हुई बात तो थी, किंतु क्या इसे भेंट कहा जाय?

इन दिनों पटना में था, यों कहिए, पटना सिटी में। एक छोटे-से अखबार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों के लिए खुशियों भरी!

सनलाइट

रंग भरने का मुक़ाबला

रु. २५,०००

के सैकड़ों शानदार इनाम!

दो
पहले इनाम
रू. ४००० में भारत की शानदार सैर या नक़द!

चार
दूसरे इनाम
एच.एम.वी. रेडिओग्राम!

छः
तीसरे इनाम
मरफ़ी ऑल वेव रेडिओ और एक हिंद अम्बैसेडर बाइसिकल!

२०००
प्रोत्साहन के इनाम
पेंटिंग सेट या एक गुड़िया!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सनलाइट की धुलाई में फ़ायदा ही फ़ायदा है। और अब आप के बच्चे सनलाइट के हर रॅपर द्वारा सनलाइट के रंग भरने के मुकाबले में भाग ले सकते हैं!

बच्चों की आयु के अनुसार यह मुकाबला दो हिस्सों में बांटा गया है: (१) १० वर्ष से कम और (२) १० और १५ वर्ष के बीच। दोनों हिस्सों के चित्र अलग अलग जांचे जायेंगे परन्तु दोनों हिस्सों में पहले, दूसरे, तीसरे और प्रोत्साहन के सभी इनाम एक से दिये जायेंगे।

अपने सनलाइट के दुकानदार से दाख़िला फ़ार्म मुफ़्त लीजिये। फ़ार्मों पर एक सुंदर चित्र है जिस में आप के बच्चों को रंग भरने हैं—वे अपनी पसंदानुसार रंग भरने की कोई भी सामग्री इस्तेमाल कर सकते हैं।

बच्चों के लिए! ये नियम ध्यान से पढ़िये!

(१) अपना नाम, जन्म की तारीख़ और पूरा पता, कूपन में, साफ़ साफ़ और मोटे अक्षरों में लिखिये। (२) आप जितने दाख़िले चाहें भेज सकते हैं, मगर हर दाख़िले के साथ सनलाइट साबुन का एक रॅपर ज़रूर होना चाहिये। (३) दाख़िले खो जाने, देर से पहुँचने या ख़राब हो जाने के हम ज़िम्मेदार न होंगे। (४) सभी दाख़िले १६ नवम्बर १९५९ को दोपहर के १२ बजे से पहले इस पते पर पहुंच जाने चाहियें: सनलाइट, पोस्ट बैग नं. १००५०, बम्बई १। (५) दाख़िलों का निर्णय, प्रसिद्ध चित्रकारों और चित्रकला के जानकारों की एक कमेटी करेगी। उन का फ़ैसला अन्तिम और बाध्य होगा। इस सम्बंध में कोई पत्र व्यवहार नहीं किया जायेगा। (६) दोनों आयु विभागों में से पहला, दूसरा और तीसरा इनाम जीतने वालों के नाम ३१ दिसम्बर १९५९ को या उस के आस पास उन सब दैनिक समाचार पत्रों में छपे जायेंगे जिन में सनलाइट रंग भरने के मुकाबले का विज्ञापन दिया गया है। बाक़ी के इनाम जीतने वालों को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा। (७) इस मुकाबले में हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड और उन की एडवर्टाइज़िंग एजंसी में काम करने वालों के बच्चों के सिवा, भारत में रहनेवाले सभी बच्चे हिस्सा ले सकते हैं।

आज ही अपने दाख़िले भेजिये!

आख़िरी तारीख़: १६ नवम्बर १९५९

थोड़ा सा सनलाइट मगर ढेरों धुलाई!

S/9B-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में था, पीर-बावर्ची-भिश्ती की तरह। यों तो लोग समझते कि, मैं संपादक ही हूँ। उन दिनों न इतने अखबार थे, न इतने संपादक। इसलिए मेरी बड़ी कद्र थी। इस कारण मुझे हमेशा अपनी पद-प्रतिष्ठा का खयाल रखना पड़ता।

एक दिन, मैं चौक के एक प्रसिद्ध पान-वाले की दुकान पर पान खा रहा था। मेरे साथ मेरे कुछ प्रशंसक नवयुवक थे। एक-दो बुजुर्ग भी आ कर खड़े हो गये। हम पान खा रहे थे और कुछ चुहलें भी चल रही थीं कि, एक बच्चा आया और बोला—"बाबू, वह औरत आपको बुला रही है।"

औरत?... बुला रही है?.. चौक पर? मैं चौंक पड़ा। युवकों में हुई थोड़ी हलचल; बुजुर्गों के चेहरों पर की रहस्यमयी मुस्कान भी मुझसे छिपी नहीं रही। औरत?.. कौन? मेरे चेहरे पर गुस्सा था। लड़का सिटपिटा कर भाग गया।

पान खा कर जब लोग इधर-उधर चले, अचानक पाता हूँ कि, मेरे पैर उसी ओर उठ रहे हैं, जिस ओर उस बच्चे ने उँगली से इशारा किया था। थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर पीछे देखा, परिचितों में से कोई देख तो नहीं रहा है; किंतु इस चौक की शाम की रूमानी फिज़ा में किसी को किसी की ओर देखने की कहाँ फुर्सत! मैं आगे बढ़ता गया और वहाँ पहुँचा, जहाँ उससे पूरब वह पीपल का पेड़ है। वहाँ पहुँच ही रहा था कि, देखा—पेड़ के नीचे चबूतरे की तरफ से एक स्त्री बढ़ी आ रही है। निकट पहुँच कर वह कह उठी—"सलाम मालिक!"

धक्-सा लगा; किंतु पहचानते देर नहीं लगी। उसने ज्यों ही सिर उठाया, चाँदी की बालियाँ जो चमक उठीं।

"रजिया! यहाँ कैसे?" मेरे मुँह से निकल पड़ा।

"सौदा-सुलफ करने आयी हूँ मालिक! अब तो नये किस्म के लोग हो गये न? अब लाह की चूड़ियाँ कहाँ किसी को भाती हैं! नये लोग, नयी चूड़ियाँ! साज-सिंगार की कुछ और चीजें भी ले जाती हूँ—पौडर, किलिप, क्या-क्या चीजें। नया जमाना, दुल्हनों के नये-नये मिजाज....."

फिर जरा-सी रुक कर बोली—"सुना था, आप यहीं रहते हैं। कहाँ रहते हैं मालिक! मैं तो अक्सर आया करती हूँ....।"

और यह जब तक पूछूँ कि, अकेली हो या.....कि एक अधबयस आदमी ने आ कर सलाम किया। यह हसन था। लम्बी-लम्बी दाढ़ी, पाँच हाथ का लम्बा आदमी—लम्बा और मुस्तंडा भी। "देखिए मालिक, यह आज भी मेरा पीछा नहीं छोड़ता।" यह कह कर रजिया हँस पड़ी। अब रजिया वह नहीं थी; किंतु उसकी हँसी वही थी। वही हँसी, वही चुहल। इधर-उधर की बहुत-सी बातें करती रही। जब मैंने जाने की बात की, हसन की ओर देख कर बोली—"क्या देखते हो, जरा पान भी तो मालिक को खिलाओ। कितनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बार हुमच-हुमच कर भरपेट ठूँस चुके हो बाबू के घर!"

जब हसन पान लाने चला गया, रजिया ने बताया, किस तरह दुनिया बदल गयी है। अब तो ऐसे भी गाँव हैं, जहाँ के हिन्दू मुसलमानों के हाथ से सौदा नहीं खरीदते। अब हिन्दू चुड़िहारिनें हैं, हिन्दू दरजी हैं। इसलिए रजिया ऐसे खानदानी पेशे-वालों को बड़ी दिक्कत हो गयी है। किंतु, रजिया ने यह खुशखबरी सुनायी कि, मेरे गाँव में यह पागलपन नहीं, और मेरी रानी तो सिवा रजिया के दूसरे के हाथ से चूड़ियाँ लेती ही नहीं।

हसन का लाया पान खा कर, जब मैं चलने को तैयार हुआ, वह पूछने लगी, मेरा डेरा कहाँ है। मैं बड़े पसोपेश में पड़ा। "डरिए मत मालिक, अकेले नहीं आऊँगी; यह भी रहेगा!"

और दूसरे दिन पाता हूँ, रजिया मेरे डेरे पर हाजिर है। "मालिक, ये चूड़ियाँ रानी के लिए"– कह कर मेरे हाथों में चूड़ियाँ रख दीं। मैंने कहा –"तुम तो घर पर जाती ही हो, लेती जाओ। वहीं दे देना।"

"नहीं मालिक एक बार अपने हाथ से भी पिन्हा देखिए!" वह खिलखिला पड़ी। और जब मैंने कहा –"अब इस उम्र में?" तो वह हसन की ओर देख कर बोली—"पूछिए इससे, आज तक मुझे यही चूड़ियाँ पिन्हाता है। क्यों है या नहीं?" और जब हसन कुछ शरमाया, वह बोली– "घाघ है मालिक, घाघ! कैसा मुँह बना रहा है इस समय, लेकिन जब हाथ में हाथ लेता है....." और ठठा कर हँस पड़ी।

× × ×

हाँ, तो अचानक उस दिन उसके गाँव में पहुँच गया। चुनाव का चक्कर जहाँ न ले जाय, जिस औघट-घाट पर न खड़ा कर दे। नाक में पेट्रोल के धुएँ की गंध, कान में सोंय-सोंय की आवाज, चेहरे पर गर्द-गुबार–परेशान, बदहवास; किंतु उस गाँव में, ज्यों ही मेरी जीप घुसी, मैं एक खास किस्म की भावना से अभिभूत हो गया।

यह रजिया का गाँव है, यहाँ रजिया रहती थी। किंतु क्या आज मैं यहाँ यह भी पूछ सकता हूँ कि, यहाँ कोई रजिया नाम की चुड़िहारिन रहती थी, या है? हसन का नाम लेने में भी शर्म लगती थी। मैं वहाँ नेता बन कर गया था। मेरा जय-जयकार हो रहा था। लोग मुझे घेरे खड़े थे। जिससे दो बातें कर लूँगा, वह स्वयं चर्चा का एक विषय बन जायगा। इस समय मुझे कुछ ऊँचाई पर ही रहना चाहिए।

जीप से उतर कर लोगों से बातें कर रहा था, या यों कहिए कि, कल्पना के पहाड़ पर खड़ा, आनेवाले स्वर्ण-युग का संदेश लोगों को सुना रहा था; किंतु दिमाग में कुछ गुत्थियाँ उलझी थीं। जीभ अभ्यासवश एक काम किये जा रही थी; अंतर्मन कुछ दूसरा ही ताना-बाना बुन रहा था।

अचानक लो, यह क्या? वह रजिया चली आ रही है। रजिया, वह बच्ची।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चमकदार

ईनो

फ़्रूट साल्ट

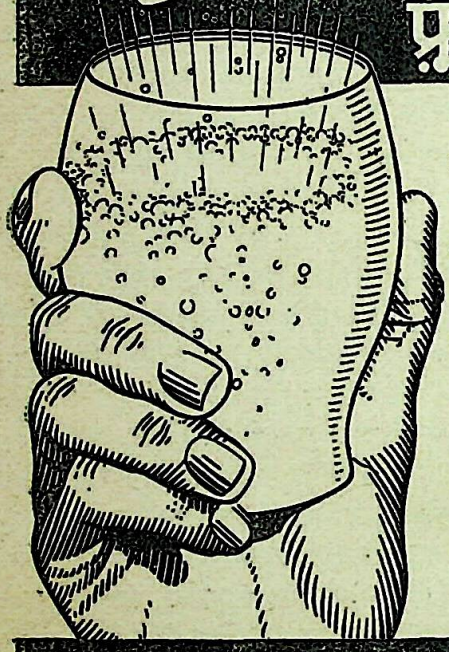

- पेट ठीक करता है
- मेदा साफ़ करता है
- ठण्डक पहुँचाता है

आराम पहुँचाने के
साथ ही
तरोताज़गी भी लाता है

'ईनो' और 'फ़्रूट साल्ट'—ये शब्द
रजिस्टर किये हुए ट्रेड मार्क हैं

ग्रूप लेबोरेटरीज (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरे, रजिया फिर बच्ची हो गयी ? कानों में वे ही बालियाँ, गोरे चेहरे पर वे ही नीली आँखें, वही भरबाँह की कमीज, वे ही लटें, जिन्हें सम्हालती बढ़ी आ रही है। चालीस-पैंतालिस साल का व्यवधान... अरे, मैं सपना तो नहीं देख रहा ? सपना ? दिन में सपना ? वह आती है, गब्बर ऐसी भीड़ में घुस कर मेरे निकट पहुँचती है, सलाम करती है और मेरा हाथ पकड़ कर कहती है—"चलिए मालिक, मेरे घर !"

मैं भौचक्का, कुछ सूझ नहीं रहा, कुछ समझ में नहीं आ रहा। लोग मुस्करा रहे हैं—"नेताजी, आज आपकी कलई खुल कर रही।" नहीं, यह सपना है। कानों में सुनायी पड़ा, कोई कह रहा है—"कैसी शोख लड़की है !" और दूसरा बोलता है —"ठीक अपनी दादी जैसी।" और तीसरे ने मेरे होश की दवा दी— "यह रजिया की पोती है बाबू ! बेचारी बीमार पड़ी है। आपकी चर्चा अक्सर किया करती है। बड़ी तारीफ करती है। बाबू, फुर्सत हो तो जरा देख लीजिए। न जाने बेचारी जीती है या.....।"

मैं रजिया के आँगन में खड़ा हूँ। यह छोटा-सा साफ-सुथरा घर, यह लिपा-पुता चिक्कन-ढुर-ढुर आँगन ! भरी-पूरी गृहस्थी —मेहनत और दयानत की देन। हसन चल बसा है; किंतु अपने पीछे तीन हसन छोड़ गया है। बड़ा बेटा कलकत्ते कमाता है; मँझला पुश्तैनी पेशे में लगा है; छोटा शहर में पढ़ रहा है। वह बच्ची, बड़े बेटे की बेटी। दादा का सिर पोते में, दादी का चेहरा पोती में। हूबहू रजिया—दूसरी रजिया। यह दूसरी रजिया मेरी उँगली पकड़े पुकार रही है—"दादी, ओ दादी, घर से निकल, मालिक दादा आ गये। किंतु पहली "वह रजिया" निकल नहीं रही; कैसे निकले ? बीमारी के मैले-कुचैले कपड़े में मेरे सामने कैसे आये ?

रजिया ने अपनी पोती को भेज तो दिया; किंतु उसे विश्वास न हुआ कि, हवा-गाड़ी पर आनेवाले नेता अब उसके घर तक आने की तकलीफ करेंगे। और जब सुना, मैं आ रहा हूँ, तो बहुओं से कहा— "जरा मेरे कपड़े तो बदलवा दो — मालिक से कितने दिनों पर भेंट हो रही है न !"

उसकी दोनों पतोहुएँ उसे सहारा दे कर आँगन में ले आयीं। रजिया —हाँ, मेरे सामने रजिया खड़ी थी — दुबली-पतली, रूखी-सूखी। किंतु जब नजदीक आ कर उसने "मालिक, सलाम" कहा, उसके चेहरे से एक क्षण के लिए झुर्रियाँ कहाँ चली गयीं, जिन्होंने उसके चेहरे को मकड़जाला बना रखा था ! मैंने देखा, उसका चेहरा अचानक बिजली के बल्ब की तरह चमक उठा और चमक उठीं वे नीली आँखें, जो कोटरों में धँस गयी थीं, और चमक उठी हैं आज फिर वे चाँदी की बालियाँ। और देखो, अपने को पवित्र कर लो—उसके चेहरे पर फिर अचानक लटक कर चमक रही हैं वे लटें, जिन्हें समय ने धो-पोंछ कर शुभ्र-श्वेत बना दिया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुन्ने का मृदु हास अमर हो जाए!

जब मुन्ने की हँसी से आपका आँगन भर जाता है तो लगता है जैसे सारी धरती मुस्कुरा उठी हो! आपके मन की कलियाँ खिल कर फूल बन जाती हैं मानों कुबेर का धन ही आपके हाथ लग गया हो! आप यही चाहते हैं कि मुन्ने की यह हँसी हमेशा आपके कानों में मिसरी घोलती रहे। आप मन ही मन प्रार्थना कर उठते हैं, "भगवन्! मुन्ने का मृदु हास अमर हो जाए"। हँसते-खेलते स्वस्थ बच्चे घर की शोभा होते हैं किन्तु उनकी देख-भाल ठीक से न की जाए तो वे बड़ी जल्दी बीमार भी हो जाते हैं। ऐसे समय डॉक्टर ही आपका सच्चा सहायक हो सकता है। अपने बच्चों के स्वास्थ्य की परीक्षा बराबर करवाते रहिए और हमेशा—

अपने डॉक्टर की सलाह लीजिए

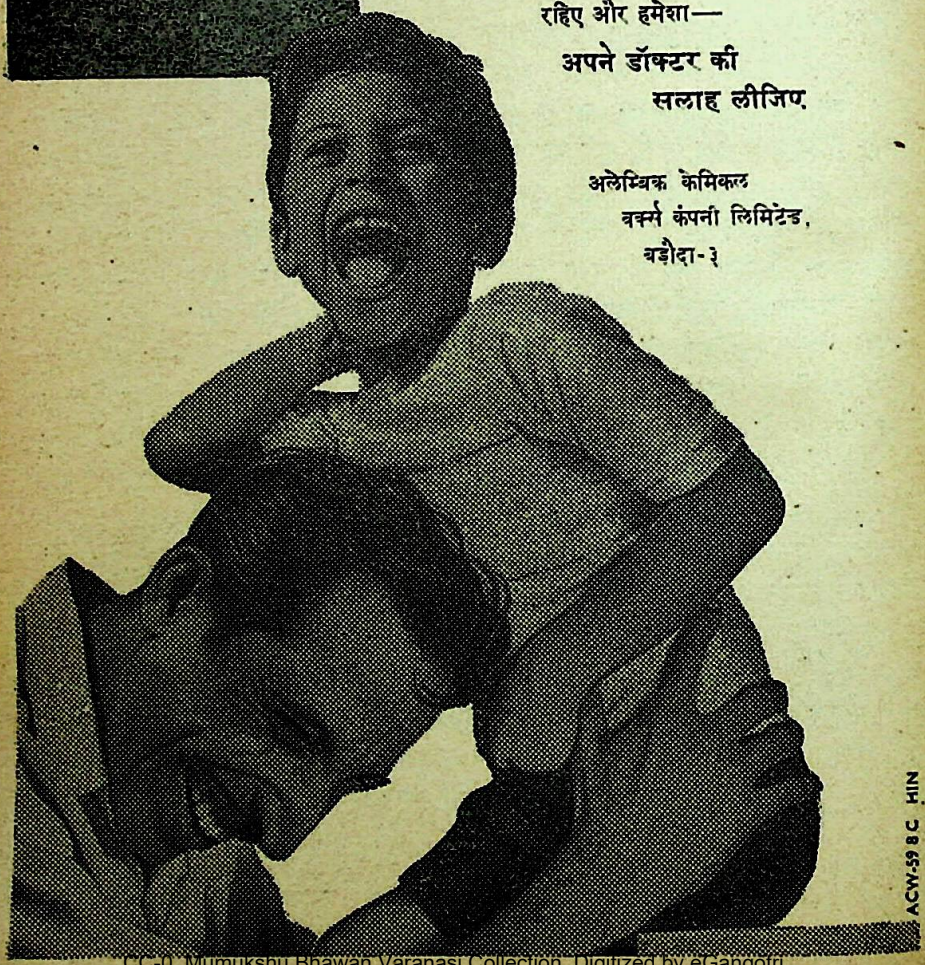

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कंपनी लिमिटेड, बड़ौदा-३

ACW-59 8 C HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारवाँ

उर्दू की नवोदित कहानी-लेखिका वाजिदा तबस्सुम की एक रस-स्रोतस्विनी-सी कहानी

★

मैना अभी-अभी बिस्तर से उठ कर गयी थी। उसके बदन की गर्मी से बिस्तर गोया झुलस रहा था। सिर के दबाव से तकिये के बीच में एक गोल-सा निशान पड़ गया था। चोटी जो पीठ के नीचे दब गयी थी, उसने चादर पर अपना बल खाया हुआ चिह्न छोड़ दिया था। और पूरा बिस्तर भीनी-भीनी खुशबू से महक रहा था।

बशीर मियाँ जूते उतार कर बिस्तर पर बैठने लगे, तो एकदम उन्हें जानी-पहचानी-सी खुशबू का एहसास हुआ। बिस्तर पर बैठे, उसे बड़ा नरम-नरम गरम-गरम-सा पाया, जैसे फाख्ता के पर।

लेखिका : वाजिदा तबस्सुम

"सूँ....." करके उन्होंने जोर से साँस ली। और नाक से होती हुई खुशबू उनके दिल तक उतर गयी। एकदम वे बौखला-से गये। यह कैफियत तो उन पर कभी न गुजरी थी। ऐसा लगा, गोया फाख्ता के गुदगुदे और तपते हुए परों में धँस गये हों। वे बिस्तर से उठ गये। मुन्नी और अरशद कमरे के बाहर खेल रहे थे। उन्होंने बड़ी सहमी हुई आवाज से पुकारा—"ए मुन्नी, ए अरशद, जरा इधर तो आओ!"

मुन्नी भागती हुई आयी और आँखों पर से बाल हटाती हुई बोली—"हमें बुलाया अब्बा मियाँ?"

"बेटी! तुम मेरे बिस्तर पर सोयी थीं?" उन्होंने ऐसे स्वर से पूछा, मानो कोई गोपनीय बात पूछ रहे हों।

"जी नहीं! हम तो जब से बाहर बरामदे में ही खेल रहे हैं!"

"अच्छा तो शायद अरशद सोया होगा।" और उन्होंने अरशद को पुकारा।

"वाह जी, हम तो एकसाँ मुन्नी के साथ खेल रहे हैं। हमने थोड़े ही धरे हैं गन्दे पैर आपके बिस्तर पर! हाँ, आपा अभी अभी सोके उठी हैं।"

बशीर मियाँ सुन्न हो गये! बिस्तर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन ब दिन ब दिन...

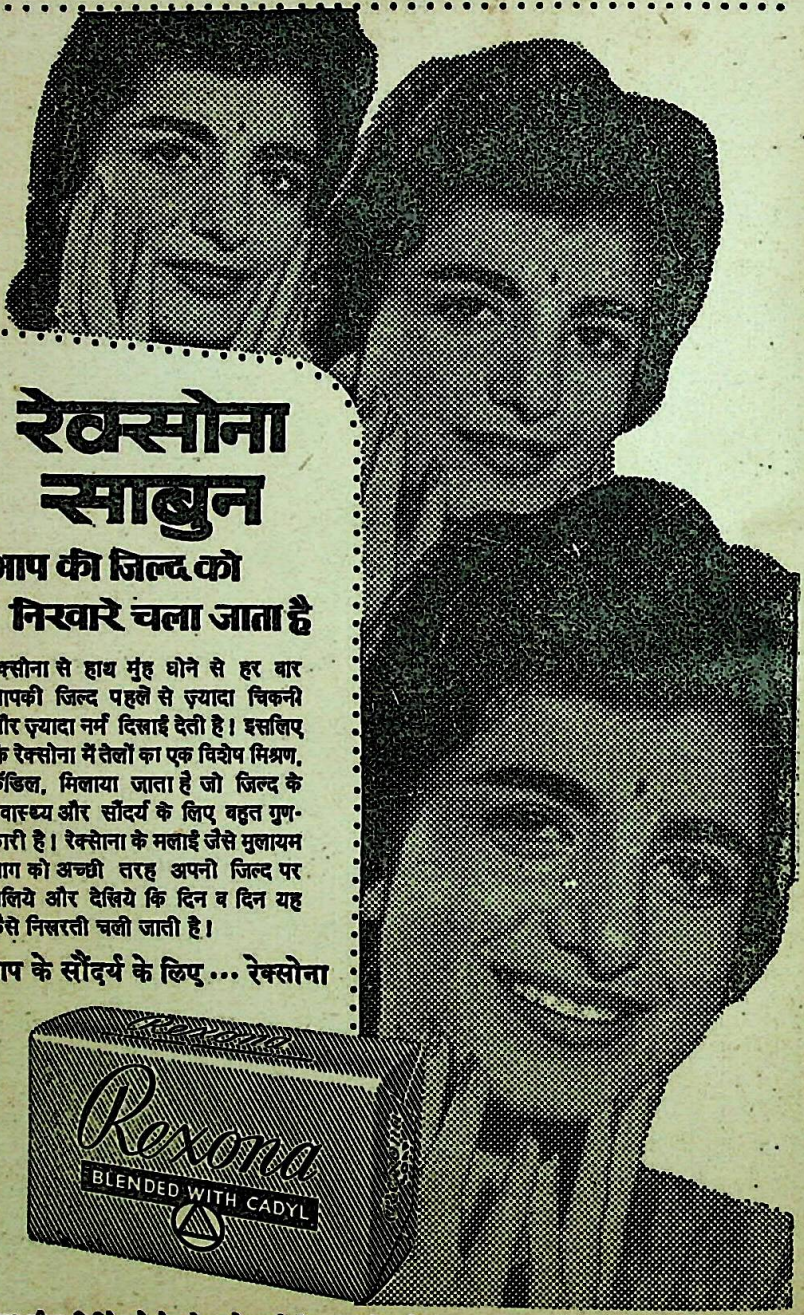

रेक्सोना साबुन

आप की जिल्द को निखारे चला जाता है

रेक्सोना से हाथ मुंह धोने से हर बार आपकी जिल्द पहले से ज़्यादा चिकनी और ज़्यादा नर्म दिखाई देती है। इसलिए कि रेक्सोना में तेलों का एक विशेष मिश्रण, कॅडिल, मिलाया जाता है जो जिल्द के स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए बहुत गुणकारी है। रेक्सोना के मलाई जैसे मुलायम झाग को अच्छी तरह अपनी जिल्द पर मलिये और देखिये कि दिन ब दिन यह कैसे निखरती चली जाती है।

आप के सौंदर्य के लिए ... रेक्सोना

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, रेक्सोना प्रोप्रायटी लि. ऑस्ट्रेलिया के लिए भारत में बनाया

RP 159—50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर मचलती हुई खुशबू ने उन्हें आप ही बता दिया था –"मैं मैना के पास से आयी हूँ!"

उन्हें याद आया–मुमानी बी सदा मैना के लिए चक्की में खुशबूदार मसाले पिसवाया करती थीं और मैना हमेशा साबुन के बजाय मसालों से नहाती है। तभी तो उसके बाल इतने लम्बे-लम्बे हैं और चलने में उसके पास से नयी-नवेली दुल्हनों की-सी खुशबू आती है।

गोल पेचदार जीने पर परिचित-सी खटखट सुनायी दी और फिर बड़ी बारीक सी, मुलायम-सी मीठी आवाज आयी– "ए खानसामाँ, खाना लगा दो–मियाँ आ गये।"

आज बशीर मियाँ को यह आवाज बिल्कुल नयी लगी, लहजा भी बिल्कुल नया लगा। और वे वहीं बैठे-बैठे उलझते रहे—"ए खानसामाँ, खाना लगा दो – मियाँ आ गये–!" मुमानी बी मैना को कई बार टोक चुकी थीं कि, "अय बेटा!. अपनों से बड़ों को रिश्ता लगाया करते हैं।" मगर जहाँ-जहाँ भी रिश्ता लगाने का मौका आया, मैना की जबान हकला गयी।

बशीर मियाँ मुमानी बी के सगों में से होते थे। ऐसा बहुत दूर का रिश्ता भी न था। शादी हुई, तो दोहरा रिश्ता हो गया। भानजे लगते थे और "मुमानी बी–मुमानी बी" कहते मुँह सुखाते थे। मुमानी बी को भी उनसे बड़ी मुहब्बत थी। कोई कार हो, कोई काज हो, हर काम में बशीर मियाँ की राय ली जा रही है, बशीर मियाँ बुलाये जा रहे हैं।

जहाँ कोई अच्छी-सी चीज पकी, रकाबियों में लगा, सरपोश ढक, झट-से नसीबन बुआ के हवाले किश्ती की कि, "जा जल्दी से, बशीर मियाँ के यहँ, पहुँचा आ!"

बशीर मियाँ भी मुमानी से ऐसे घुले-मिले थे कि, माँ से भी इतनी न रही होगी। और जब से उनकी जागीर का किस्सा खत्म हुआ था, ये अपना गाँव छोड़ कर यहीं आ बसे थे। मुमानी बी के ही पड़ौस में छोटा-सा मकान था, वहीं रहते थे। शादी-शुदा थे। शरीफ खानदानी बीवी थी, दो बच्चे थे। मजे से कट रही थी। अपने काम-काज से फुरसत पातीं, तो रफिया बेगम भी घड़ी-दो-घड़ी को मुमानी के पास आ बैठतीं। मैना से उनकी बड़ी दोस्ती थी। दिल से दिल मिलने में क्या देर लगती है? ये तीस के अंदर थीं और मैना तो सोलहवें-सत्रहवें में ही थी। फिर भी दोनों ऐसी घुली-मिली थीं, गोया साथ की खेली सहेलियाँ। घंटों सिर जोड़े बैठी बातें करती रहतीं।

मैना को शहर के अफसर का पयाम आया, तो रफिया बेगम की ही कोशिशों से 'ना' हुई थी। अब लाख मुमानी बी कहती हैं—"बाबी, अच्छा कमाऊ लड़का है। गुन का, ढंग का अब और क्या देखेंगे?" मगर रफिया बेगम की एक 'नहीं' तो लाख 'नहीं'! मुमानी बी ने कहा भी–"अय तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हल्के !
चमकीले !
साफ-सुथरे !

ये सभी
न टूटनेयोग्य
'अल्काथिन'
के बने हैं

'अल्काथिन' के इन चमकीले व रंग बिरंगे सामानों के व्यवहार करने में बड़ा ही आनन्द आता है।
वजन में हल्के, फिर भी सख्त व मजबूत —'अल्काथिन' के इन पेरेल सामानों में अनेक विशेषताएँ हैं।

साफ करने में आसान — सिर्फ गर्म पानी व साबुन से धो डालिये।
आवाज-शून्य — गिरने पर आवाज नहीं होती, खटाने पर झनझनाहट नहीं होती।
उठाने में हल्के — और साथही रंग बिरंगे मिलते हैं। फूटते नहीं, जंग नहीं लगता, दाग नहीं पड़ती — या यों कहिये कि टूटने का नाम नहीं लेते।

'अल्काथिन'
बिल्कुल स्वास्थ्य-सम्मत है।

'अल्काथिन' के बने हल्के, चमकीले एवं साफ-सुथरे सामान खरीदिये।
अब बाजार में 'अल्काथिन' के बने अनेकों किस्म के सामान मिलते हैं।
'अल्काथिन' आई.सी.आई. ग्राण्ड का पॉलिथिन है — अनेकों सामान बनाने की मूल सामग्री।

इम्पीरियल केमिकल इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्राइवेट लि०
कलकत्ता बम्बई मद्रास नयी दिल्ली

1ST IN THE WORLD
IN INDIA
I.C.I. DISCOVERED POLYTHENE.
AND I.C.I.'s SUBSIDIARY,
THE ALKALI & CHEMICAL
CORPORATION OF INDIA LTD.
ARE THE FIRST TO MAKE
POLYTHENE IN INDIA.

IPC-57 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी जनम-जनम की दुश्मन काहे से हो गयी हो लड़की की, कि मुँह तोड़ इन्कार किये जाती हो।" हँस के बोलीं—"अय मुमानी बी, हमारी मरज़ी नहीं, तो आप क्यों मजबूर करें हमें?"

असल में मैना की मरजी न थी। क्यों नहीं थी? बस नहीं थी। उड़ते-उड़ते इतना जरूर सुना था कि, साहबजादे जरा रंगीन-मिजाज हैं। मुमानी बी इतनी रौशन-खयाल भी न थी कि, बेटी के मुँह से साफ "नहीं" सुन सकतीं। इसलिएं रफिया बेगम ने अपनी तरफ से तोड़-जोड़ करके बात बना दी। मुमानी बी भी खटक गयीं। सोचा—"अपनी तरफ से तो यह जोराजोरी से कह नहीं सकती; होगी दोनों की मिली भगत!" खामोश रह गयीं।

वैसे सच बात तो यह थी कि, मुमानी बी इतनी लकीर की फकीर भी न थीं। उन्होंने तो आप ही बहुत-सी दीवारें गिरादी थीं। 'इस्मत' तो खैर बहुत जमाने से आता था। अब तो मासिक-साप्ताहिक पत्रों की दौड़ बंध गयी थी। जहाँ किसी नये परचे का नाम सुना, और मैना ने चन्दा भेजा। इतना यकीन तो उन्हें बेटी पर जरूर था कि, ओंधी-सीधी किताबें तो खैर मैना ने नहीं पढ़ीं। ..... मगर धीरे-धीरे उसने उल्टे-सीधे नावेल और कहानियाँ भी पढ़नी शुरू कर दीं। सबसे पहले जो किताब घर में आयी "दौलत पर कुर्बानियाँ" थी। फिर तो, गोया खुली चिट्ठी ही मिल गयी।

लेकिन अब उल्टे-सीधे नावेल पढ़ने का यह भी मतलब नहीं है कि, सिर से नाक काट डाली माँ-बाप की। मगर हाँ, अपना भविष्य जरूर बना लिया। साथ-ही-साथ पुरानी बातों का तोड़ भी इसी ने तोड़ा।

चारकली के खड़े पाँयचों के पाजामों और बन्द गले की कुर्तियों के बजाय, मैना साड़ी पहनती थी। कानों में मुमानी बी के जहेज की बालियाँ तो उसने सिरे से पहनी ही नहीं। जगमग-जगमग करते टाप्स पहनती थी। खाली हाथ और खाली गला देख कर कभी-कभी तो आने-जानेवालीं टोकतीं भी— "अय, कुँवारी और सुहागन से ही घर की रौनक है। ये ठूण्ठे हाथों की क्या चाल उठायी है बी!" यह मुस्कुराकर रह जाती। खानदान वाले तो सबके सामने कहते—"अय बी, बेगम ने तो लौंडिया को खुली चिट्ठी दे रखी है।"

घुप अंधेरे में जोरदार उजाला घुस पड़े, तो आँखें पहले तो मिच-मिच करने लगती हैं, फिर इसी छमाछम उजाले की आदी हो जाती हैं। मुमानी बी को तो एहसास ही न होता था कि, वाकई उनकी बेटी और खानदान वालियों से उत्तम है।

रफिया बेगम का जच्चाखाना होने वाला था। दर्दों से बेहाल पड़ी थीं। डाक्टर-लेडी डाक्टर का तो किधर गुजर होता! मुहल्ले की दाई को बुलाया गया। वह भी आखिर को अनाड़ी निकली। कुछ समझ पड़ा, कुछ न पड़ा। उसने आड़े-टेढ़े हाथों से कच्ची जचगी को ऐसे झंझोटे दिये कि, उल्टे लेने के देने पड़ गये। बड़ी तजुर्बेकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रील्स, कोनस् और ट्यूब्स के लिए
एक नया नाम कॅलिथ्रेड

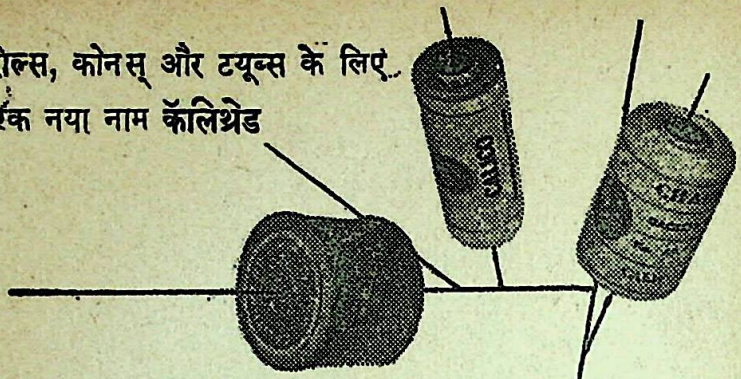

धरेलू और औद्योगिक सिलाई के लिए
विविध प्रकार मे प्राप्य.

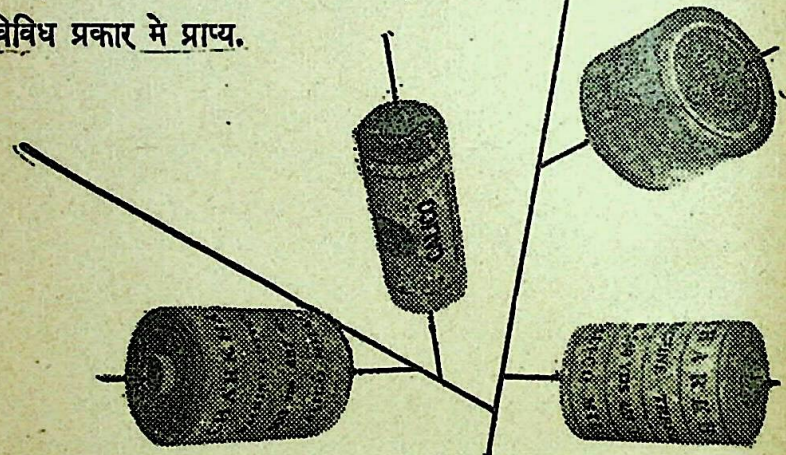

कॅलिथ्रेड

भरोंसा पात्र
मुलायम
और
मजबूत

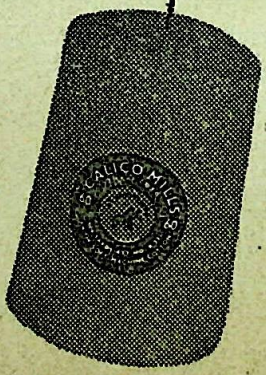

कॅलिको मिल्स
अहमदाबाद में
बनाया हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूढ़ियाँ भी हाथ मल कर रह गयीं। मुमानी बी को भी कुछ न सूझा। मैना अपने घर पर ही थी। कुँवारी-वाली छोकरियों का ऐसे मौकों पर काम भी क्या? मगर बशीर मियाँ को तो मालूम था कि, मैना काफी लिख-पढ़ गयी है। मान लिया कि, वह डाक्टरनी नहीं थी, फिर भी थोड़ी-बहुत दवा-दारू देनी तो आती ही थी।

दौड़े-दौड़े आये। वहीं पर्दे के पास खड़े-खड़े नसीबन बुआ से कहलवाया—"छोटी बीवी से कहियो, बीवी की तबीयत अच्छी नहीं.....।"

सारी बात पूरी होने से पहले ही, नसीबन बुआ चीख उठी— "अय मियाँ, तुम्हारी अकल सलामत है? वाली छोकरी से.....।"

बात पूरी होने से पहले ही मैना खुद दरवाजे तक पहुँच गयी और वहीं से बोली— "मेरी अपनी राय तो यह है कि, आप फौरन किसी लेडी-डाक्टर को बुलवा लीजिए।" और एक डाक्टरनी का पता भी बता दिया।

बशीर मियाँ उल्टे पाँव वापस हुए। जाने क्या बात याद आयी तो, फिर लौट कर आये। आवाज दी और कहा— "मैं तो भूल ही गया था कि, वह फीस क्या लेगी?" अभी यह बात मुँह में ही थी कि, फिर बोले—"और फीस का क्या है? जान से बढ़ कर तो पैसा होता नहीं। अल्लाह जाने वह आती है या नहीं। फिर में क्या करूँगा?" और उनकी आवाज भर्रा गयी।

मैना को भी खयाल आ गया कि, अल्लाह जाने वह इन्कार ही कर दे। फिर क्या होगा? लपक कर बाहर ही तो निकल आयी और बोली—"चलिये, दोनों मिल कर उसे बुला लायें।" और इसी झपाके में वह बशीर मियाँ के साथ हो गयी।

बशीर मियाँ की बीवी की जचगी भी हो गयी। चिल्ला भी नहा लिया; बात पुरानी पड़ गयी। मगर खानदान वालों ने क्या-क्या बोहतान नहीं बाँधे! लेकिन मैना ने जरा शिकन न चढ़ायी। मुमानी बी ने अल्बत दो-चार दिन बिटिया से बोल-चाल जरूर बंद रक्खी। मगर पेट की औलाद से कोई मुँह फेरे भी तो कब तक? अब तो बशीर मियाँ का आना-जाना भी शुरू था। और मैना भी सामने आती थी। सलाम करने को हाथ उठाती; मगर मुँह से कुछ न बोलती। बस चाँदी का पंजा, चाँद ऐसे माथे से छू जाता। मुमानी बी हँस कर प्यार से डाँटतीं भी—"पढ़-लिख कर बिल्कुल ही चलन बदल दिया। यह भी कोई सलाम हुआ!" मैना हँस पड़ती।

रफिया बेगम की जचगी बड़ी मुश्किल से हुआ करती। पहला बच्चा तो जैसा हुआ, हुआ। दूसरा अपने वक्त का कैसर था। डाक्टरनी साफ कह गयी थी कि, अब के बच्चा हुआ तो, जान का खतरा है। मगर ढाई-दो बरस पीछे, फिर रफिया बेगम उम्मीद से रहीं। और अब के जचगी का वक्त आया, तो बच्चा भी जाया हुआ और माँ भी। बशीर मियाँ फिर भरी-पूरी दुनिया में तन्हा रह गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दांत निकलने की तकलीफ़ ?

पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन से बच्चों के दांत हंसते खेलते निकल आते हैं!

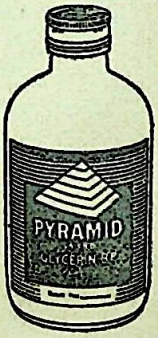

पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन से बच्चों के दांत हंसते खेलते निकल आते हैं! दांत निकलने की पीड़ा हो या मसूड़े दुखते हों तो उंगली पर नर्म कपड़े की पट्टी लपेट कर पिरॅमिड ग्लिसरीन में डुबोइये और बच्चे के मसूड़ों पर हलके हलके मलिये— झट आराम आ जायगा। बच्चों को इसका मीठा मजेदार स्वाद बहुत अच्छा लगता है। यह शुद्ध है और घर के और कई काम आती है। घर में सदा एक शीशी रखिये।

मुफ़्त पत्रिका! यह कूपन भर के इस पते पर भेजिये :
हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, पोस्ट बक्स नं. ४०९ बम्बई १

कृपया मुझे पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन के घरेलू उपयोगों की मुफ्त पत्रिका भेजिये।

मेरा नाम और पता

_____

_____

_____

मेरे कॅमिस्ट का नाम और पता

_____

_____

_____ N. M. B.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेहलुम पर मुमानी बी ने बहुत आँसू बहाये। दिल तो बशीर मियाँ के लिए बहुत हुड़क रहा था; मगर करतीं भी क्या बेचारी! जवान बेटी का साथ था और हर एक के पीछे शैतान लगा है। दुनिया-दिखावे को मुँह से कहा भी कि, "मियाँ अब तो देख-भाल वाला कोई नहीं। हमारे यहाँ उठ आओ ना!" मगर बशीर मियाँ भी उनकी मजबूरी को समझते थे। सिर हिला कर तुरंत इन्कार कर दिया।

मैना को उन पर बड़ा तरस आता। बेचारे अब्बल ही तो अल्लाह की गाय थे, अब तो बिल्कुल ही मोम हो कर रह गये। दोनों बच्चे अलग ढायें-ढायें फिरते। मैना हाथ पकड़ कर मुँह-हाथ धुला देती। नाश्ते के वक्त आते, तो साथ बिठा लेती।

एक दिन बशीर मियाँ भी आये बैठे थे। दोनों बच्चे भी साथ थे। मुमानी बी ने हेर-फेर से जिकर छेड़ा—"अय मियाँ! लोग तो कहते हैं, बीवी की मौत, कोहनी की चोट होती है। लगती बड़े जोर से है, मगर जरा देर में दर्द गायब। तुम कब तक यों ही रहोगे? माशा अल्लाह! खुद भी जान-जवान हो। नन्हे-नन्हे बच्चे हैं। कोई तो हो देख-भाल करने वाला।"

बशीर मियाँ बोले—"मुमानी बी, रंज व गम की बात तो जाने ही दीजिए। मैं सोचता हूँ-आनेवाली बच्चों से सगी माँ का, सा बर्ताव नहीं कर सकेगी। और मैं यह सब-कुछ बरदाश्त नहीं कर सकूँगा।"

उनकी आवाज भीग-सी गयी। फिर ठहर कर बोले—"क्या घर का घरवा हो गया मुमानी बी। अब तो धूल उड़ती है हर तरफ। बाहर से आऊँ, तो कोई मुँह धुलाने वाला भी नहीं। पानी-वानी की जरूरत पड़े, तो खुद उठकर लूँ तो लूँ; वरना कोई इसका भी रवादार नहीं कि, प्यास ही बुझा दे। बच्चे अलग तबाह-हाल।"

मैना का दिल अंदर से पिघल उठा। बोली—"आइए, हमारे यहाँ आ जाइए ना! यहाँ अम्मा भी हैं। बच्चों का जी भी बहल जायेगा।"

"मैं आ तो जाऊँ....।" मगर बशीर मियाँ की जबान रुक गयी।

मुमानी बी बात का रुख देख कर खामोश रह गयीं। मैना फिर बोली—"खान-दान वालों से ही डर रहे हैं ना आप? अपने काम-से-काम रखिए। कुत्तों का काम भौंकना है; भौंकते ही रहते हैं।"

थोड़ी देर यों ही हाँ-हूँ होती रही। मुमानी बी ने भी जोर दिया, तो बशीर मियाँ उसी दिन उठ आये।

मैना का वक्त अब बड़ा अच्छा कट जाता। तमाम दिन बच्चों में उलझी रहती। बच्चे भी हिल-मिल गये थे। अपनी माँ को भूल कर भी याद न करते। कभी-कभी मैना के जिस्म पर कोई खूबसूरत-सा कपड़ा या जेवर देख लेते, तो कहते— "अम्मी जी भी ऐसा ही कुर्ता पहनती थी।.... हमारी अम्मी के पास भी ऐसा ही हार था।"

बशीर मियाँ घर में रहते जरूर; मगर यों जैसे रहते ही न हों। न चट, न पट। न कभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अच्छी पेन्सिलों से लिखना

कितना आनन्ददायक है!!

मरकरी पेन्सिलें हर कसौटी पर श्रेष्ठ सिद्ध हुई हैं।

मरकरी पेन्सिलें काले, रंगीन एवं कोपिंग सीसे में प्राप्त हो सकती हैं।

निर्माता :- **दी मद्रास पेन्सिल फैक्ट्री**
३, स्ट्रीन्जर्स स्ट्रीट, मद्रास–१

मरकरी

अच्छी पेन्सिलों में सर्वश्रेष्ठ नाम

- ARUNA

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊँची आवाज से बोलते, न कहकहा लगा कर हँसते। मुमानी बी जिस वजह से उन्हें अपने घर बुलाने से डरती थीं, वह बिल्कुल, नामुमकिन-सी बात थी। ऐसे भोले भाई थे कि, भूले से भी मैना को आँख भर कर न देखते। एक दिन बातों-ही-बातों में मुमानी बी बोली थीं– "बचपन में मेरी बिटिया मैना की तरह चहकती थी। बस मैंने यही नाम डाल दिया।" इस पर बशीर मियाँ ने आँखें उठा कर जरूर उसे देखा और बड़ी सादगी से बोले– "वाकई अच्छा नाम दिया आपने। मैना बड़ी प्यारी हँसी-हँसती है।"

मैना के चम-चम चमकते दाँत, गुलाबी ओंठों में छुप गये। इतनी सादगी से जो इतना बड़ा सच कह दे, तो उससे कोई खतरा नहीं हो सकता। बशीर मियाँ के लहजे में कोई गहराई न थी।

बड़े नाना कहते थे कि, कुत्तों का रोना बड़ा नहुस होता है। कुत्ते के रोने की आवाज आये, तो दान दिलवा देना चाहिए। उस रात रह-रह कर कुत्ते भौंकते रहे; और सुबह-ही-सुबह नसीबन बुआ ने ताजा दूध उबालने लिए के लिए चूल्हे पर चढ़ाया, तो वह आप-ही-आप फट गया। नसीबन बुआ जमाना देखे हुए थी। मुँह से तो कुछ न बोली; मगर मौला की दुहाई माँगने लगी। चार दिन की बीमारी में मुमानी बी चटपट हो गयी। और मैना! वह मैना से उल्लू बन गयी। अँधियारे में छुपती, रोती फिरती। बिस्तर पर औंधे मुँह पड़ी-पड़ी सिसकियाँ लेती रहती। बीसियों ही तो पयाम अच्छे-बुरे आये होंगे। मगर माँ को पसंद न आये। और जो माँ को पसंद आया, वह बेटी को नापसंद हुआ।

बेटी के ब्याह का अरमान जी-के-जी में ही ले गयीं। अब तो खानदान वालों को मौका ही मिल गया। जहाँ देखो वहाँ मैना और बशीर मियाँ मौजू बने हुए हैं। औंधी-सीधी, झूठी-सच्ची हजारों ही बातें उड़ायी गयीं; और मैना हौल-हौल जाती। बाप का साया तो मुद्दत हुई उठ चुका था। माँ छाँव बन कर सहारे बैठी थी। वह भी चल दी। रुपये-पैसे की कमी न थी; मगर रुपये-पैसे ही से तो सब काम नहीं चलते।

बोलने वाले भी कहाँ तक बोलें। थक-हारकर खुद ही चुप रह गये। बशीर मियाँ अब भी मैना के यहाँ ही रहते। और दोनों इसी जिंदगी के आदी हो गये।

एक दिन अरशद अपनी आँखें खुजलाता हुआ आया और मिनमिना कर बोला –"हमारी आँखों में खुजली होती थी, तो अम्मी काजल लगा देती थीं।"

"अरे रे रे!" मैना ने उसे प्यार से गोद में उठा लिया –"तो भई, मुझसे पहले ही क्यों न कहा? मैं न डाल देती अपने राजा गुड्डे के काजल?"

मैना ने डिबिया से काजल लिया और मुन्ने को गोद में बिठा कर उसकी आँखों में सलाई फेरनी चाही।

"आँ हाँ! अम्मी कहती थीं, आँखों में लोहा नहीं फेरना चाहिए।"

मैना हँस पड़ी –"अच्छा तो उँगली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झिलमिल झिलमिल झलक नई है
चमक दमक यह सब विम की है!

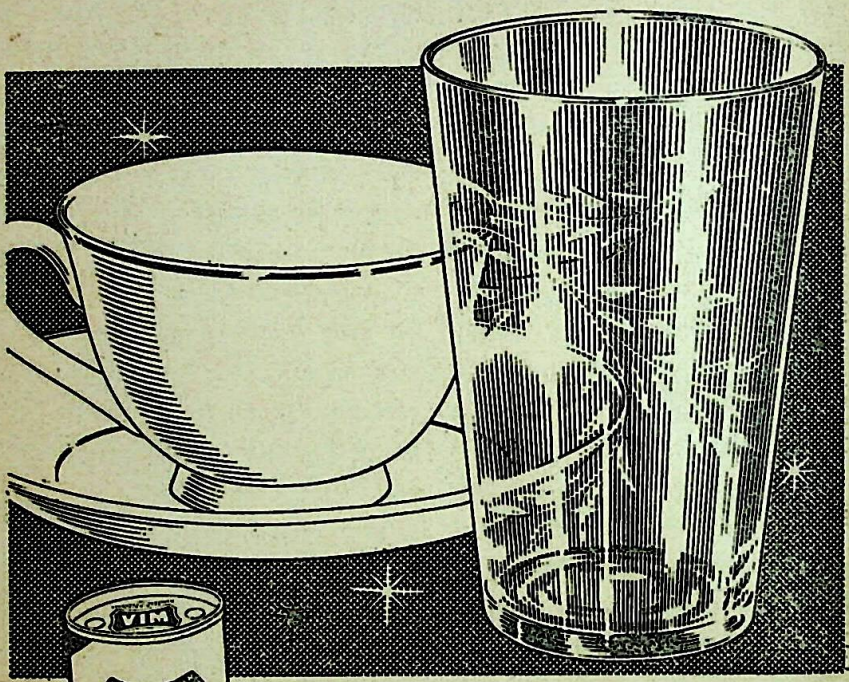

विम से एक बार साफ़ कीजिये और देखिये हर चीज़ कैसे जगमगाने लगती है—चीनी या कांच का सामान हो या रसोई घर के बरतन, बरतन मांझने की चिलमचियां और फ़र्श! विम से सफ़ाई कीजिये तो न रगड़ के निशान पड़ते हैं न कड़ी मेहनत! और आराम कितना है! गीले कपड़े पर विम छिड़किये, हलके से मलिये—आप दंग रह जायेंगे कि दाग कहां गये! घर की शान बनानी है तो विम इस्तेमाल कीजिये!

विम से हर चीज़ चमक उठती है

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

V. 100-50 HF

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से लगा दें, गुड्डे राजा?"

"हाँ!" अरशद ने सिर हिला दिया।

मैना ने अरशद की दोनों आँखों में उँगली फेरी। थोड़ा काजल फिर भी उँगली पर लगा रह गया। वह उसने अपनी आँखों में भर लिया और भूल भी गयी कि, काजल लगाया था।

शाम को बशीर मियाँ आये। गोल पेचदार जीने पर परिचित कदमों की खट-खट सुनायी दी। फिर मीठे लहजे में आवाज आयी—"खानसामाँ, खाना लगा दो। मियाँ आ गये।"

दस्तरख्वान पर बैठे थे कि, अरशद मैना का हाथ पकड़ कर घसीटता हुआ ले आया।

"अब्बा मियाँ! आपा ने हमारी आँखों में काजल लगा दिया है। देखा आपने?"

"हाँ हाँ, बड़ी अच्छी हैं तुम्हारी आपा!" और वे उसी तन्मयता से खाते रहे। खाने के बाद दालान में निकल कर, मूँढे पर बैठे थे कि, मैना आ गयी। अखबार देते हुए बोली —"जरा पढ़ने के लिए ले गयी थी। माफ कीजिए, आपसे बगैर पूछे ही उठा लिया।"

बशीर मियाँ ने उसकी तरफ देखा। उसकी माजरत पर कुछ कहना चाहते थे। मगर एकदम रुक कर सादगी से बोले—"अरे मैंने कभी गौर ही नहीं किया। मैना, तुम्हारी आँखें कितनी खूबसूरत हैं!" और अखबार ले कर यों पढ़ने में व्यस्त हो गये, गोया किसी लड़की की खूबसूरत आँखों की तारीफ न की हो, मौसम की तारीफ की हो —"वाह भई! क्या अच्छा मौसम है!"

मैना बौखला कर उल्टे पाँव भागी, तो उसका पैर साड़ी में उलझ गया और वह गिर पड़ी। बशीर मियाँ ने लपक कर उसे उठाया। नरम-नरम गरम-गरम परोंवाली फाख्ता गोया हाथों में आ गयी। सादगी से बोले—"जरा सम्भल के नहीं चलतीं! अभी हड्डी चूरा हो गयी होती!" और उठने में मैना का सिर उनकी नाक से इतना करीब हो गया कि, भीनी-भीनी सी खुशबू से उनका पूरा वजूद महक-महक गया।

बशीर मियाँ ने उस दिन अखबार पढ़ा जरूर; लेकिन अगर कोई पूछता—"सुनाओ मियाँ, आज की खास खबर क्या है?" तो वे सिटपिटा के रह जाते।

मैना तीन दिन से खाँसी-नजले में पड़ी घुल रही थी। बशीर मियाँ को तीन दिन से वह परिचित खट-खट सुनायी न दी थी। उन्होंने चाहा, खबर लेने को जायें; मगर फिर इरादा तर्क कर दिया। जाने का इरादा करते, तो लगता कि, नरम-नरम परों के ढेर में धँसे जा रहे हैं। घबरा कर वे बाहर निकल आये।

"ऊँह! जुकाम भी कोई बीमारी हुई भला! आप ही ठीक हो जायेगी।"

एक दफा वे बुखार में भुन कर उठ खड़े हुए थे, तो मैना ने उन्हें मशवरा दिया था—"आप शादी क्यों नहीं कर लेते?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज का अवसर खुशी का है।
आमोद-प्रमोद से घर गूँज उठा है।
अपने भविष्य को भी उसी भाँति
सुखमय बनाने के लिए
आज ही जीवन-बीमा कराइए।

लाइफ़ इन्श्योरन्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इन्डिया

ASP/LIC-SP 5

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आखिर कोई देख-भाल करने वाला भी तो चाहिए!"

अब उन्हें खयाल आया कि, यह मैना शादी क्यों नहीं कर लेती? आखिर देख-भाल करने वाला उसे भी तो चाहिए ना? फिर उन्हें मैना और मुमानी के एहसान याद आ गये। उन्होंने दिल में निश्चय कर लिया कि, मैना के लायक कोई वर ढूँढ़ निकालेंगे।

"लाहौल विला!" बशीर मियाँ ने सोचा—"मैं भी कितना कृतघ्न हूँ। वह तो मुझ से, मेरे बच्चों से, इतनी हमदर्दी करे, और मैं उसकी खबर तक न लूँ।" अखबार मूँढे पर रख कर, वे उठे और मैना के कमरे की तरफ चले।

मैना ने सर्दी के मारे स्वेटर चढ़ा लिया था। अब जो गर्मी हुई, तो उसे उतार फेंकना चाहा। स्वेटर खुले गले का न था; गर्दन में से उतारना-चढ़ाना पड़ता था। दरवाजे की तरफ पीठ करके साड़ी का आँचल दोनों घुटनों में दबा कर, वह पीठ के बल झुके-झुके, जोर लगा कर स्वेटर उतार रही थी।

बशीर मियाँ रिवायती काँच की जूती और बालों की सुनहरी लट देख कर अंधा-धुंद आशिक हो जाने वाले शहजादों में से तो थे नहीं। मगर यहाँ एकदम जग-मगाती सुबह देख कर घबरा उठे। ढेर सारे नरम-गरम परों में उनको अपना वजूद डूबता हुआ महसूस हुआ और वे हड़बड़ा कर लौट गये।

मैना ने कदमों की चाप सुन कर, कठिनाई से स्वेटर खींच कर फेंका और देखा तो बशीर मियाँ सिर झुकाये जल्दी-जल्दी चले जा रहे थे।

तीन दिन से तो बुखार ही था। तीन दिन मैना ने यों ही कमरे में काट दिये। हिम्मत न पड़ती थी कि, बाहर निकले। सातवें दिन अपने कमरे से बाहर आयी तो सही; मगर बशीर मियाँ से यों लजायी-लजायी, जैसे नयी नवेली दुल्हन सुसराल-दिखावे को दूल्हा से शरमाये और मौका मिलने पर रह-रह के कनखियों से दूल्हे को देखती जाये।

बशीर मियाँ चुप-चुप-से थे। आगे भी उन्हें यह खुशबू अपने तकिये पर, बिस्तर पर मिल चुकी थी, जो अपने मुँह से कहती थी—"मैं मैना के पास से आयी हूँ।"

अब मैना इतनी गयी-गुजरी न थी कि, किसी के बिस्तर पर लोटें लगाती, फिरे। मुन्नी और अरशद सोने के लिए कमरे में जाते, तो उसे भी घसीट लेते—"आपा, हमें डर लगता है ना! आप भी हमारे साथ चलिए।"

जब तक ये सोयें, यह बैठी किताबें टटोलती रहती। कभी-कभार पीठ सीधी करने को बशीर मियाँ के बिस्तर पर लुढक जाती। उन्हीं का पलंग इस वक्त खाली होता था।

बदली छायी, बरस गयी। आसमान फिर नीला-नीला धुला-धुला था। वही शाम की वापसी। वही बच्चों की शरारत।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

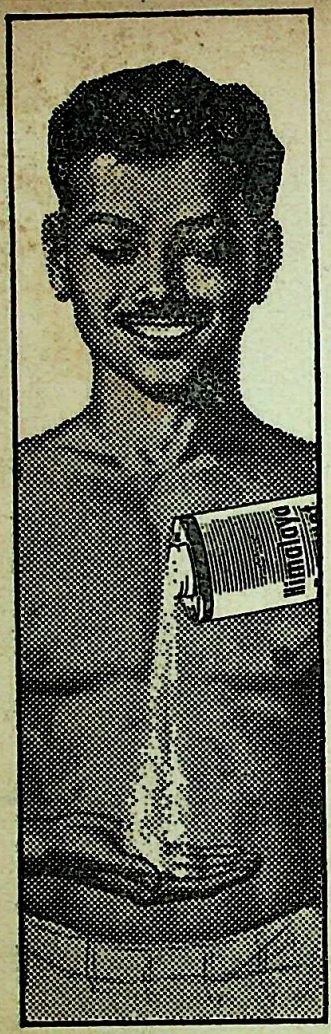

हिमालय बुके टॅल्कम पाउडर

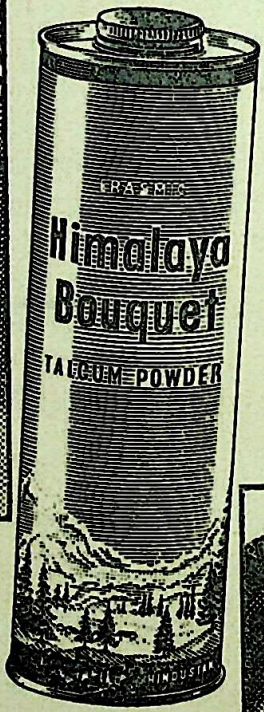

दिन भर तरो ताज़ा रहने का साधन

* सुगंध से भरपूर
* बिल्कुल कम खर्च
* घर भर के लिए आदर्श

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, इंस्मिक लण्डन के लिए, भारत में बनाया

HBT. 19-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वही मैना की खटकती हँसी और गोल पेचदार जीने पर चिर-परिचित खट-खट के बाद नरम-मुलायम धुली-धुली-सी आवाज–"खानसामाँ, खाना लगा दो, मियाँ आ गये।"

जाते-जाते एक दिन बशीर मियाँ कह गये –"मैना इन कपड़ों को जरा धूप दिखा देना। कीड़ा न लग जाये।"

उस दिन तो मैना से न हो सका। दूसरे दिन सुबह अभी बशीर मियाँ घर पर ही थे, तो सारा सामान ले कर बैठ गयी। कपड़ों के सन्दूक में जेवरात की सन्दूकची भी निकली। बच्चे भी आ धमके। सन्दूकची खोल के यों ही मैना बैठ गयी। सामान उलट-पुलट करने लगी। सन्दूकची भरी-पूरी थी–जेवर से ले कर अफशाँ तक; बस ज्यों-की-त्यों। बच्चे पास बैठे आँधी-सीधी बातें कर रहे थे। एक भी सवाल उन्होंने अपनी माँ के बारे में न किया।

मैना खुद ही बोल उठी–"अम्मी की याद आयी मुन्ने?" अरशद और मुन्नी एक जबान हो कर बोले –"ऊँ हूँ! आप जो इत्ती अच्छी हैं।"

"मगर मैं अम्मी की बराबरी कहाँ कर सकती हूँ!" वह हँस कर बोली।

"ऊँ ऊँ ऊँ!" अरशद बोला—"हम तो आपको ही अपनी अम्मी समझते हैं।"

मैना का मुँह लाल हो गया। ओंठ काँप उठे। उसकी आँखों के कोने गीले-गीले हो गये। बड़ी मुश्किल से मुस्करा कर बोली–"सच?"

"हाँ, और क्या!" अरशद बोला।

मैना ने सन्दूकची का निचला खाना टटोला। काली पोथ का लच्छा पड़ा चमक रहा था। उसने लच्छा उठा कर मुट्ठी में दबा लिया और घड़ी की तरफ देखा। दस बजने में पंद्रह मिनिट थे। रोज इसी वक्त बशीर मियाँ घर से बाहर जाते थे।

वह तेजी से लपकी। जीने के पास थोड़ी देर रुकी। मुट्ठी खोली और फिर दौड़ती हुई दरवाजे में रुक गयी–"सुनिए।" वह ठिठक गयी।

बशीर मियाँ भी रुक गये और एकदम चौंक गये। धानी साड़ी में उसका हल्का-हल्का जिस्म काँपा जा रहा था। साड़ी के आँचल का एक कोना पतले-पतले ओंठों में दबा हुआ था। आँखें झुकी हुई थीं। पलकें लरज रही थीं और गोरी-गोरी गर्दन में साँसों के जीरोबम के साथ-साथ काली पोथ का लच्छा काँप रहा था। वह अटक-अटक कर बोली – "सिंगारदान में और तो सब चीजें हैं; मगर मिस्सी नहीं है।" और वह मुँह पल्लू में छिपा कर शरमा कर भाग गयी। बशीर मियाँ के आस-पास नरम-नरम फाख्तई परों का ढेर-सा लग गया। और वे डूबते ही चले गये।

शाम को जब वे हाथ में मिस्सी की दोहरी पुड़ी सम्भाले घर में दाखिल हुए, तो गोल पेचदार जीने पर चिरपरिचित-सी खट-खट हुई और मुलायम-सी शक्कर में घुली हुई मीठी आवाज गूँजी –"खानसामाँ, खाना लगा दो। 'वह' आ गये हैं!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैडेन्सा

बवासीर के लिए

सभी जगह मिलता है।

DCZ-13 HIN

आर्यन

आपके दांतोंके अनुरूप है

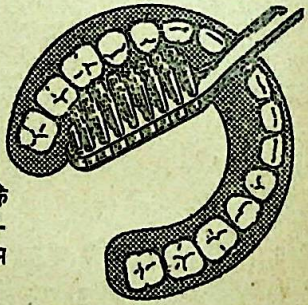

जब आप अपने दांतोंकी देखभालके लिये यथोचित आकार-प्रकारके **आर्यन** ब्रशपर भरोसा करेंगे तो आप निश्चिन्त रह सकते हैं कि इससे आपके सभी दांतों के सभी हिस्से पूर्णतया साफ हो जायेंगे।

प्रामाणिक व बच्चे के आकारों में प्राप्य। प्लास्टिकके डब्बेमें डिलक्स क्वालिटी भी।

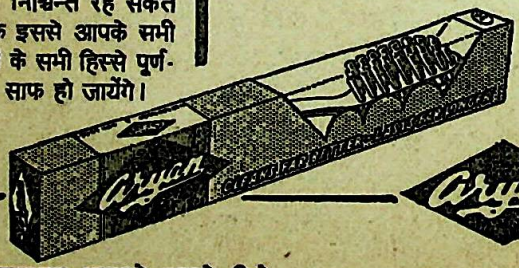

बहुत अच्छी तरह से सफाई करता है और अत्यधिक टिकाऊ है।

Aryan

प्रभावकारक साबुनके झागके लिये—

हमेशा आर्यन शेविंग ब्रश इस्तेमाल करिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोह के क्षितिज

के० एम० पणिक्कर की मलयालम-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी रूपांतर

एक ग्रैजुएट के साथ अपनी छोटी लड़की शारदा के हाथ पीले करके कल्याणी अम्मा गंगा-न्हायी हो गयी। दूसरे बच्चों का सुझाव था कि, अब पारिवारिक संपत्ति का बँटवारा कर दिया जाय। यह ठीक था कि, बँटवारे से कुटुम्ब तीन-तेरह होता था; पर बच्चों के लगातार आग्रह को वह टालती भी कब तक?

लेखक : पणिक्कर

कानून यह था कि, जब तक परिवार में माँ जीवित है, तब तक उसकी राय के बिना बँटवारा नहीं हो सकता; पर वह उसके लिए राजी क्यों न होती? आखिर वह भी तो अपने बच्चों को सुखी ही देखना चाहती थी। तीनों लड़कियों के विवाह हो ही चुके थे और एकमात्र लड़का उत्तर भारत में कहीं नौकरी पर लगा हुआ था। ऐसी हालत में अगर बँटवारे से उन बच्चों को ज्यादा आजादी मिलती है, तो मिले।

उसने सोचा, जब सभी बच्चे उससे दूर जा रहे हैं, तो फिर हिस्सा बाँटने में हर्ज भी क्या है? लड़कियों के पति भी तो धनी नहीं थे। बड़ी लड़की नलिनी का पति पास के ही शहर में वकील था, पर उसकी आमदनी मामूली ही थी। दूसरी लड़की लीला का विवाह कहने को तो एक नामी और धनी घराने के लड़के से हुआ था, पर हालत उसकी भी कोई बहुत अच्छी नहीं दिखायी देती थी। शारदा का पति अभी कहीं कोई काम कर ही नहीं रहा था। इस लिए सम्पत्ति का बँटवारा एक तरह से इन सभी के लिए हितकर सिद्ध होने वाला था। फिर उसके मरने के बाद सम्पत्ति के लिए लड़ने-झगड़ने से तो यही ठीक था कि, वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

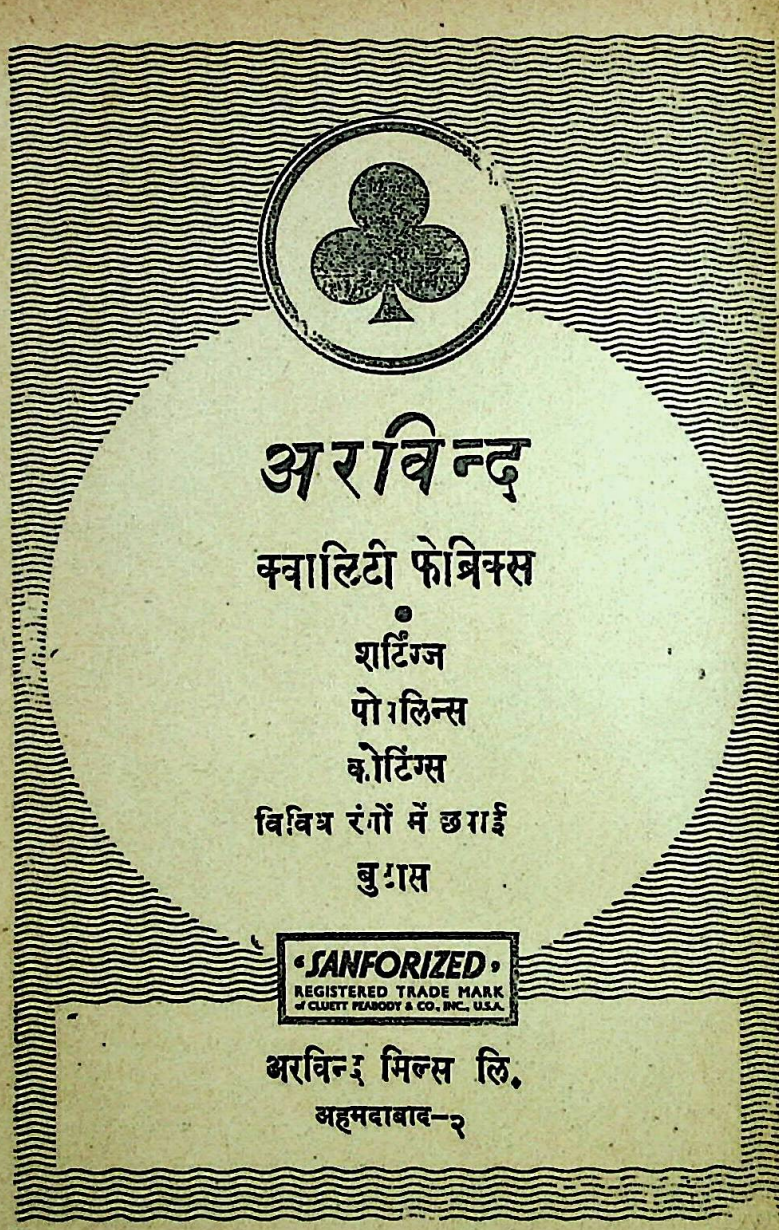

'सेन्फोराइज्ड' ट्रेड मार्क के अधिकृत उपभोक्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने जीते-जी ही सबके हिस्से कर जाये।

सब-कुछ सुनने-समझने के बाद उसने कहा—"मैं इसके बारे में वक्त आने पर सोचूँगी। संभव है, इसे म अनाथालय को भी दे दूँ। आखिर कुछ अधिकार तो मेरा है ही।"

यह सुन कर बच्चे खुश तो नहीं हुए, पर यह जानते हुए कि, बुढ़िया को अनाथालय में काहे-की दिलचस्पी रखी है, उन लोगों ने उसकी बात का विरोध नहीं किया।

ममत्व

[चित्र : हाथी-दांत-अंकित प्राचीन इतालवी चित्र की रेखाकृति]

अनाथालय के मंत्री ने उसके सामने यह सुझाव रखा था कि, वह अपनी सम्पत्ति अनाथालय के नाम कर दे और जीवित रहने तक अपने खर्च लायक रकम लेती रहे। इससे वह सम्पत्ति की देख-भाल करने की चिंता से भी बच जायेगी।

पर कल्याणी अम्मा इतनी भोली नहीं थी। उसने साफ-साफ जवाब दे दिया—"नहीं, नहीं। इसके नतीजे मैंने बहुत देखे हैं। अनाथालय को सब-कुछ दे देने के बाद, भला मेरी कौन सुनेगा? अभी तो आप लोग आते-जाते भी हैं, क्योंकि सब-कुछ मेरे हाथ में जो है।"

मंत्री ने कहा—"तो माताजी, अनाथालय की व्यवस्था ही अपने हाथ में ले लीजिए। अब तो वैसे भी आप अकेली ही रह गयी हैं; इससे आपका मन भी लगा रहेगा।"

"अच्छा मैं इसके बारे में सोचूँगी"—उसने उत्तर दिया।

और कुछ दिनों बाद बिना किसी झंझट के ही बँटवारा हो गया। मकान और उसके आस-पास वाली जमीन अम्मा ने अपने हिस्से में रख ली। बड़ी लड़की बोली—"अम्मा, हमारे साथ क्यों नहीं रह जाती? इतने बड़े मकान में तुम अकेली कैसे रहोगी?"

दूसरी लड़की की भी यही इच्छा थी। कल्याणी जानती थी कि, बच्चे उससे सच्चा प्रेम करते हैं और वे सब मन से उसे बुला रहे हैं। पर उससे यह भी नहीं छिपा था कि, उनका यह बुलावा बिल्कुल बेमतलब भी नहीं है। सबकी निगाह घूम-फिर कर उसकी सम्पत्ति पर ही थी।

लड़कियों में यह होड़ देख कर उसने कहा—"हाँ ठीक है; पर अभी तो यह सवाल ही नहीं उठता। जब तक शारदा के पति की नौकरी न लग जाये, तब तक तो शारदा मेरे पास ही रहेगी और फिर अभी वह बच्ची ही तो है। उसे मैं कुछ दिन और अपने पास ही रखूँगी।"

इस उत्तर से वे दोनों बहनें चुप हो गयीं। शारदा और अम्मा एक साथ रहने लगीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ECHO.4A-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने इरॅस्मिक कं. लि. लण्डन के लिए भारत में बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शारदा तो पति को शहर में ढंग की नौकरी मिलने की कल्पना में ही डूबी रहती। उसके हिस्से की सम्पत्ति उसे मिल ही चुकी थी; इसलिए आर्थिक दृष्टि से अम्मा पर निर्भर भी नहीं थी। धीरे-धीरे वह चंचल हो उठी, और कभी-कभी अम्मा के साथ उसकी छोटी-मोटी झड़प भी हो जाती।

कल्याणी अम्मा को आश्चर्य होता कि, बँटवारे के साथ-साथ मानो आपस का स्नेह-सूत्र भी टूट गया। उसे भी अब बच्चों में पहले जैसी गहरी दिलचस्पी नहीं रह गयी थी।

पति के राजधानी में किसी छोटे पद पर नियुक्त हो जाने की खबर मिली, तो शारदा खुशी में फूली न समायी। बोली—"अम्मा उनका काम लग गया है। तुम भी हमारे साथ शहर में आ कर रहोगी न?"

"हाँ बेटी, तू वहाँ खुश रहेगी।"

कल्याणी अम्मा ऊपर से तो बिल्कुल शांत रही, पर भीतर से बड़ी दुःखी थी। और अब उसकी समझ में आया कि, बँटवारे का असली मतलब क्या है? जब वह मातृ-प्रधान कुटुम्ब की मालकिन थी और संयुक्त सम्पत्ति थी, तब उसके विवाहित बच्चे दूर रहते हुए भी, इस मकान को अपना ही घर समझते थे। वह जानती थी कि, दूर रह कर भी मन से वे अपने को यहीं का समझते थे। अब जैसे कहीं दरार पड़ गयी थी।

ये इतना कैसे बदल गये? हमारे समय में तो कुटुम्ब ही सब-कुछ समझा जाता था। उन दिनों तो लोग माँ और कुटुम्ब को छोड़ कर ज्यादा दिनों के लिए दूर जाने की बात भी नहीं सोचते थे। यह कैसा युग आया कि, कुटुम्ब का महत्व ही कुछ नहीं रहा। बड़े-बूढ़ों का घर तो बस किराये के मकान जैसा रह गया।

इस तरह सोचते-सोचते वह अपनी कल्पना में ऐसी खो जाती कि, मानो कुछ समझने की कोशिश कर रही हो। उसे अपने पुराने दिन याद आने लगते, जब वह युवती थी। उसका जीवन आज से कितना भिन्न था! घर में कितने लोग थे! माताएँ, किशोरियाँ, बच्चे और मामा सभी तो थे। जब कभी कुटुम्ब के बँटवारे की माँग होती, तो परिवार के बड़े-बूढ़े कह उठते—"यह कुटुम्ब देश का सबसे पुराना और धनी कुटुम्ब है। इसे सब लोग बड़ी श्रद्धा से देखते हैं। और तुम उसे ही तोड़ डालना चाहते हो!"

शारदा के जाने के पहले ही खबर पहुँच चुकी थी कि, अगले सोमवार को नलिनी के लड़के का जन्म-दिवस है; और उन लोगों का बड़ा आग्रह था कि, अम्मा शारदा के साथ उनके यहाँ जरूर आये। कल्याणी अम्मा धार्मिक कट्टरता के कारण अभी तक शहर जाने में हिचकती थी। इसी से वह जाने-न जाने की दुविधा में पड़ी रही। पर अंत में शारदा की जिद के कारण जाने को तैयार हो गयी।

नलिनी और उसके पति ने उसकी बड़ी आव-भगत की, घर का सबसे अच्छा कमरा उसे रहने को दिया। बच्चे को देखते ही नानी तो खुशी में फूली न समायी और कुछ ही देर में वे दोनों खूब हिलमिल गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उम्दा तम्बाकू

हल्की-फुल्की तम्बाकू

परिपक्व तम्बाकू

सौम्य तम्बाकू

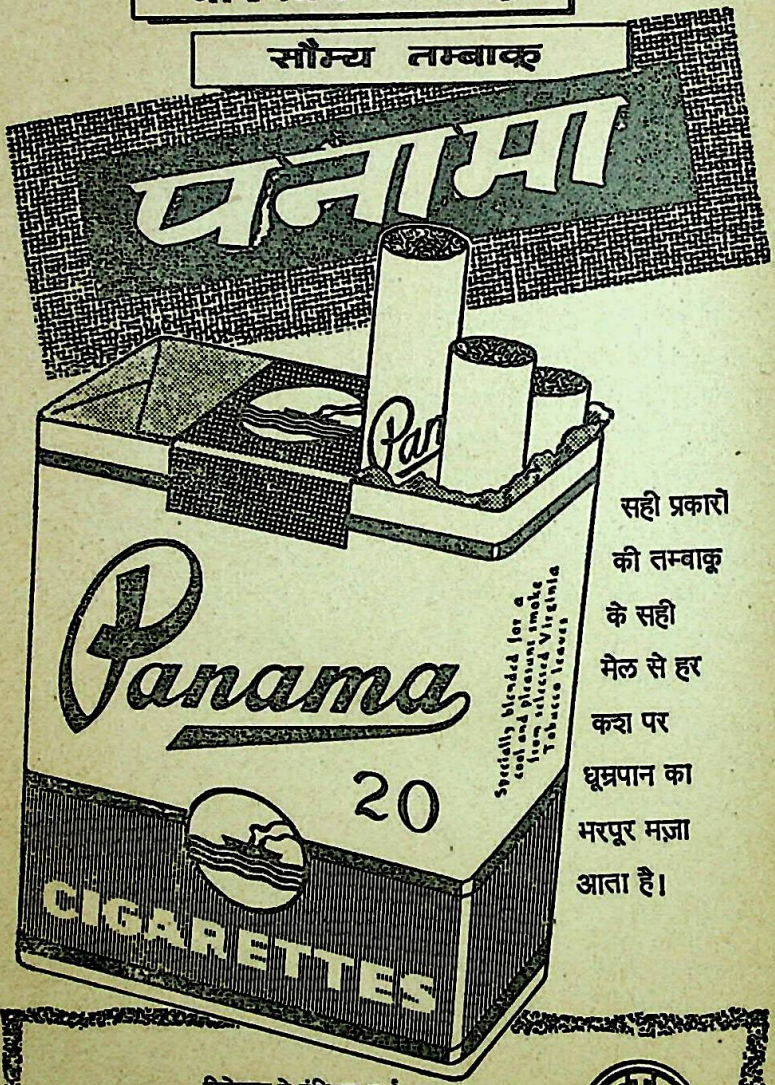

सही प्रकारों की तम्बाकू के सही मेल से हर कश पर धूम्रपान का भरपूर मज़ा आता है।

विशेषरूप से संमिश्रण कर्ता
गोल्डन टोबॅको कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बइ २४.
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GTC GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD.

G.T. 601

Greens' Advts.

 CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शाम को नलिनी ने फिर अम्मा के वहीं रह जाने की बात छेड़ी—

"अम्मा, शारदा के चले जाने पर तो अकेली ही रह जाओगी। तब क्यों न यहीं चली आतीं? यहाँ भी तो सब आराम हैं। और फिर तुम्हारा दिल बहलाने के लिए नन्हा मुन्ना तो है ही।"

"बात तो ठीक है। पर तुम्हारा पति क्या कहेगा?"

"कुट्टन् के बाबूजी को भी मर्जी यही है। वे तो कहते हैं कि, माँ-बेटी एक साथ रहो, तो उन्हें काम करने के लिए समय भी अधिक मिल जाय।"

"ठीक है। अगर तुम दोनों की ऐसी ही मर्जी है, तो शारदा के जाने के बाद मैं इस बारे में सोचूँगी।"

दरअसल बात तो यह थी कि, कल्याणी अम्मा को बुढ़ापे में अकेली रहने से घबराहट-सी होती थी। जब उसने अपने नाती को देखा, तो उसका दिल पिघल उठा। अपने नाती-पोतों की देख-भाल किसे अच्छी नहीं लगती? पर नयी समाज-व्यवस्था में संतान, नानी की देख-भाल की वस्तु न रह कर, माता के सुपुर्द कर दी गयी थी। फिर भी अम्मा ने आगा-पीछा सोच कर अंत में नलिनी के प्रस्ताव को स्वीकार कर ही लिया।

दूसरे दिन उत्सव था। नानी बड़ी मगन थी। उसने अपने ढंग से बच्चे को नहलाया और नये-नये कपड़े पहनाये। फिर उसने धीरे से बेटी के सामने सुझाव रखा कि, बच्चे को ले कर मंदिर चला जाय। और इस काम के लिए नानी ही तो सबसे उपयुक्त थी!

नलिनी बोली—"पर अम्मा, कुट्टन् के बाबूजी यह नहीं चाहते कि, उसे मंदिर में ले जाया जाये। वे कहते हैं कि, पूजा-पाठ का चढ़ावा तो सब ब्राह्मणों की भेंट ही चढ़ता है।"

यह सुन कर वृद्धा को ठेस-सी लगी। बोली—"क्या पूजा-पाठ कुछ भी नहीं होगा? कहीं किसी ने ऐसी बात भी सुनी है? तुम्हारे जन्म-दिन पर तो अभी तक नियम-पूर्वक पूजा भेजी जाती है। और तुम कुट्टन के पहले ही जन्म-दिवस पर ऐसी बात करती हो?"

अम्मा अपने-आप को नहीं रोक सकी और सिसकने लगी।

"अम्मा, मेरी अच्छी अम्मा, भला बताओ तो इसमें मैं क्या करूँ? यह तो कुट्टन् के बाबूजी की मर्जी है।"

"पर क्या कुट्टन् तुम्हारा बच्चा नहीं है? क्या वह हमारे कुटुम्ब का नहीं है? इसके बाबूजी भी कानून चाहें, अपनी माँ के घर में चलायें।"

"लेकिन अम्मा, तुम कैसी बातें कर रही हो? तुम्हें मालूम नहीं कि, पुराना कानून बदल चुका है। बच्चा अब हमारे कुटुम्ब का नहीं, वह उनके परिवार का ही है। अब तो पति-पत्नी एक ही परिवार में माने जाते हैं; पहले की तरह वे दो परिवारों के नहीं है।"

जब अम्मा को यह सब-कुछ मालूम हुआ, तो उसे और भी ज्यादा दुःख पहुँचा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह भी कैसी अजीब बात है कि पहले जब घर था तो नौकरी नहीं थी और फिर जब नौकरी मिली तो घर नहीं था। आखिर बहुत दौड़धूप करने के बाद पिछले महीने जब एक छोटा सा घर मिला तो झट तीन चार दिन की छुट्टी ले कर अपने गाँव

अजीब सपना

पहुँचा ताकि पत्नी और मीनू को ले आऊँ। इतने अर्से बाद उन्हें मिल कर ऐसी खुशी हुई कि वर्णन नहीं की जा सकती। मैं ने शीला से कहा," मेरा ख्याल था कि मेरी जुदाई में तुम सूख कर काँटा हो गई होगी, लेकिन तुम्हारी सेहत तो पहले से भी अच्छी है।"

"कांटा बन जाती तो आप को चुभती ही।" शीला ने मुस्करा कर कहा। बहुत रात गये तक बातें होती रहीं। कैसी सपनों भरी रात थी। कई सपने असलियतें बन गये। कई असलियतें सपने।

अगले दिन सुबह मीनू उठते ही कहने लगा, "पिता जी, आज रात मैं ने इतने केक खाये, इतने केक खाये..." वह बोला, "मैं अकेला ही एक जंगल में जा रहा था। आगे से एक शेर आता हुआ दिखाई दिया। मैं झट खजूर के एक बहुत ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। ऊपर पहुँचा तो वहां बड़े बड़े केक लगे हुये थे। मैं तोड़ तोड़ कर खाने लगा। इतने खाये, इतने खाये..."

जब शीला ने यह सपना सुना तो मुस्कराई। कहने लगी, "कल बार बार केक मांगता था। अब एक ही दिन में तो सब नहीं न खा जायेगा। मैं ने नहीं दिये। सो सपने में ही केक खाता रहा।"

"सपने भी बड़े अजीब होते हैं," मैं ने हैरानी से कहा। "आखिर खजूर के पेड़ पर चढ़ने की क्या जरूरत थी?"

अचानक जैसे कोई बात याद आई हो, शीला ने कहा, "अब समझी, मीनू ने केक खजूर के पेड़ पर चढ़ कर क्यों खाये।" और उस ने मुझे अपने पीछे आने को कहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रसोई में जा कर उसने ऊपर की शेल्फ पर रखे एक डिब्बे की ओर इशारा किया, "वह देखिये, उस डिब्बे पर खजूर का पेड़। उस डिब्बे में केक हैं। मैं ने उसे ऊपर के शेल्फ पर रख दिया था ताकि मीनू का हाथ न पहुँचे। वरना वह शैतान सब चट कर जाता।"

मुझे हैरान देख कर शीला ने फिर कहा, "आप समझे नहीं क्या? सीधी सी तो बात है। मीनू उस डिब्बे तक पहुँचना चाहता था। लेकिन डिब्बा बहुत ऊँचा था। सो सपने में इस खजूर छाप डिब्बे की ऊँचाई खजूर के पेड़ की ऊँचाई बन गई।"

"ओह, मैं समझा," मैं ने मुस्करा कर कहा। "तब तो उस शेर का रूप तुम्हीं ने धारा होगा।"

शीला हँसी, "देखा माँ का दिल! घर में रोका तो जंगल में केक खिला दिये।"

"इस में क्या शक है," मैं ने डिब्बे की ओर देखते हुये कहा, "पर यह तो 'डालडा' का डिब्बा है। तुम ने 'डालडा' कब से शुरू कर दिया?"

"अभी दो अढ़ाई महीने हुये हैं," शीला ने कहा। "पड़ोस में यह नये किरायेदार आये तो पता लगा कि वे भोजन के लिये 'डालडा' वनस्पति ही बरतते हैं। तब मैं ने भी 'डालडा' शुरू कर दिया।"

मैं ने मज़ाक में कहा, "मैं न कहूँ तुम्हारा स्वास्थ्य इतना अच्छा क्यों है।"

शीला ने कहा, "आप तो मज़ाक कर रहे हैं। 'डालडा' वास्तव में स्वास्थ्य के लिये बहुत अच्छा है।"

"यह भी हम ने आज ही सुना," मैं ने हँसते हुये कहा, "'डालडा' का स्वास्थ्य से भला क्या सम्बन्ध?"

"क्यों नहीं 'डालडा' में विटामिन मिले होते हैं!"

"विटामिन!" मैं ने उत्सुकता से पूछा।

"हां, विटामिन ए और डी। यह विटामिन बीमारियों से हमारी रक्षा करते हैं और हमारी आँखों और हड्डियों के लिये बहुत गुणकारी हैं।"

"अच्छा! मैं तो सचमुच मज़ाक ही समझ बैठा था। तब तो 'डालडा' वास्तव में स्वास्थ्य के लिये बहुत अच्छा है।"

"हां," शीला ने कहा, "और फिर मैं और बच्चे आजकल एक नई ज़िन्दगी महसूस करते हैं। इन दिनों सभी में स्फूर्ति भरी रहती है। अच्छा तो अब मैं खाना बनाऊँ?"

"हां हां, जल्दी करो।"

शीला ने खुश हो कर कहा, "'डालडा' से खाना बहुत स्वादिष्ट भी बनता है। यह चीजों का असली स्वाद उजागर कर देता है। आज देखिये तो खाना कैसा लगता है!"

मैं ने कहा, "तुम्हारे क्या कहने हैं! सचमुच तुम मेरी सपनों की रानी हो। अब शहर में जो घर लिया है, उस में तुम्हारे संग मेरे सभी सपने साकार हो जायेंगे।"

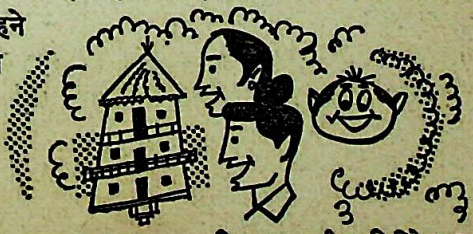

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोली—"तो....तो क्या तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि, तुम्हारा बच्चा, यानी मेरी लड़की का बच्चा, मेरे कुटुम्ब का नहीं, उसके पिता के कुटुम्ब का ही है? यह तो बिल्कुल अनहोनी बात। है तुम भला ऐसे बेतुके विचार अपने मन में कैसे ला सकती हो? आखिर तुम्हारी तरह कुट्टन भी मेरे परिवार का ही तो है।"

"हाँ अम्मा, मैं जरूर थी, पर वह भी बँटवारे के पहले; अब भला कुटुम्ब कहाँ रहा? अब तो कुट्टन के पिता और माता— बस यही परिवार है। कानून भी तो यही कहता है।"

नलिनी ने सोचा कि, अब कुछ देर के लिए अम्मा को अकेले छोड़ देना चाहिए; और वह पार्टी के काम में लग गयी।

अम्मा ने बड़ी मुश्किल से अपने को सँभाला, पर वह आघात उसके लिए बड़ा गहरा था। सोचने लगी – "क्या उसका इतना बड़ा और नामी कुटुम्ब समाप्त हो गया? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। उसका कुटुम्ब तो अब भी गाँव में है, भले ही लड़कियाँ उसे न मानें और.....और क्या नलिनी अपने पति के घर में ही रहने के लिए मुझे बुला रही है? यह घर तो न बेटी का है और न मेरा ही। फिर क्या वह यह चाहती है कि, मैं उसके पति के इशारों पर नाचूँ, उसको खाना खिलाऊँ और जरूरत पड़ने पर उसके जूठे बर्तन भी मलूँ। नहीं, कभी नहीं, अपने जीते-जी तो ऐसा नहीं कर सकती।"

शाम को जब पार्टी हो रही थी, तो अम्मा को कुछ हरारत-सी थी और वह बिस्तर पर लेटी थी। पर मेहमानों को देखे बिना भी उससे नहीं रहा गया। शहर की अन्य पार्टियों की तरह, इस मौके पर पर भी हिन्दुओं, मुसलमानों और ईसाइयों की सम्मिलित पार्टी थी। उनकी बातचीत के ढंग से कल्याणी अम्मा ने अच्छी तरह समझ लिया कि, जिन्हें हिन्दू रीति-नीति से यहाँ खाने-पीने का तो क्या, आने का भी हक नहीं है, वे लोग यहाँ खूब मजे में खा-पी रहे हैं। उसने मन-ही-मन सोचा— नलिनी ठीक ही तो कह रही थी। जिस घर में ऐसे कुकर्म होते हैं, वह घर न तो मेरा है और न हो ही सकता है।

उस शाम को अम्मा ने तबीयत ठीक न रहने के बहाने कुछ खाया-पिया भी नहीं। दरअसल बात यह थी कि, अछूत व्यक्तियों के खान-पान के कारण, अम्मा की नजरों में अब इस घर की इज्जत ही डूब चुकी थी।

जब काफी रात गये, आराम करने के पहले नलिनी अम्मा की तबीयत पूछने आयी, तो अम्मा ने निःसंकोच कह दिया— "नलिनी, मैं कल वापस जाना चाहती हूँ। मेरा घर अब चाहे तुम्हारा न हो, पर मेरा तो है ही। मैं तो वहीं मरना चाहती हूँ, अपने पूर्वजों की तरह।"

"पर अम्मा, अभी तुम मर थोड़े ही रही हो; और आज सुबह ही तो तुम हमारे साथ रहने को राजी हुई थीं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन अम्मा का विचार अब नहीं बदला। बोली–"अब इस बारे में ज्यादा बातचीत की जरूरत नहीं रह गयी बेटी, मैं घर जाना ही चाहती हूँ–बस।"

वह बड़े-बूढ़ों के पुराने घर में लौट आयी। थोड़े ही दिनों बाद शारदा अपने पति के साथ चली गयी। और वह अपने लम्बे-चौड़े मकान में एक दासी के साथ अकेली ही रहने लगी – बस उन बीते दिनों की याद को अपने हृदय से संजोये, जो हमेशा-हमेशा के लिए बीत चुके थे। उसके लिए वह मकान सिर्फ एक मकान भर नहीं था, उसके पूर्वजों का मंदिर भी था। प्रति दिन वह सब कमरों में जाती और बड़े चाव से याद करती – इस कमरे में अमुक का जन्म हुआ था और अमुक की मृत्यु। उसे ऐसा लगता, मानो अब भी आँगन में बच्चे हँसते हुए दौड़ रहे हैं। उसे इस बात का कम सुख नहीं था कि, उसका हृदय अभी भी कुटुम्ब के प्रति प्यार और श्रद्धा से भरा-पूरा है; और कुटुम्ब केवल उसकी मृत्यु के साथ ही खत्म हो सकता है, उसके पहले नहीं।

उसने बाहरी चिंताओं से अपने आप को मुक्त कर लिया। अनाथालय की कार्य-समिति की बैठक में भी जाना छोड़ दिया, बस चन्दा नियमित रूप से जरूर देती रही। तभी खबर आयी कि, शारदा भी माँ बनने वाली है। इस बात में भी उसने कोई दिलचस्पी नहीं ली और पुराने रीति-रिवाजों के अनुसार बेटी को घर भी नहीं बुलाया। कानून से शारदा तो अब अपने पति की है; हमारे कुटुम्ब से उसका क्या?

कुछ दिनों बाद कल्याणी अम्मा बीमार पड़ी। उसके मन में बैठ गयी कि, अब वह बचेगी नहीं। मानो जिंदगी की प्यास ही बुझ गयी हो। तभी उसके लड़के और लड़कियों के पास खबर भेजी गयी। वे आये और अपनी अम्मा की अंतिम इच्छाओं को पूरा करने की इच्छा से उसकी चारपाई के चारों तरफ बैठे रहे। पर क्या उसने उन लोगों से कुछ बातें की? अम्मा ने उनकी तरफ देखा तो जरूर; पर वह बातें उन्हीं से कर रही थी, जो बहुत दिन पहले मर चुके थे। एक बार कल्याणी अम्मा जैसे अपनी नानी से कुछ कहने लगी और तब किसी रिश्तेदार से। फिर नलिनी की ओर देख कर, बड़े प्यार से जैसे अपनी ही माँ से बातें करने लगी। इस रहस्य को उसके बच्चे कुछ भी नहीं समझ सके। वे सब तो सोच रहे थे कि, उनकी अम्मा सन्निपात के आवेश में यह सब बकवास कर रही है। पर अम्मा के चेहरे पर तो एक मधुर मुस्कान खेल रही थी और उसके अंतिम वाक्य थे: "जिस कमरे में मेरा जन्म हुआ था और मेरी अम्मा की मृत्यु हुई थी, उसी पूरब वाले कमरे में मुझे भी ले चलो।"

और यह कहते-कहते कल्याणी अम्मा ने सदा-सदा के लिए सुख की साँस ले ली।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

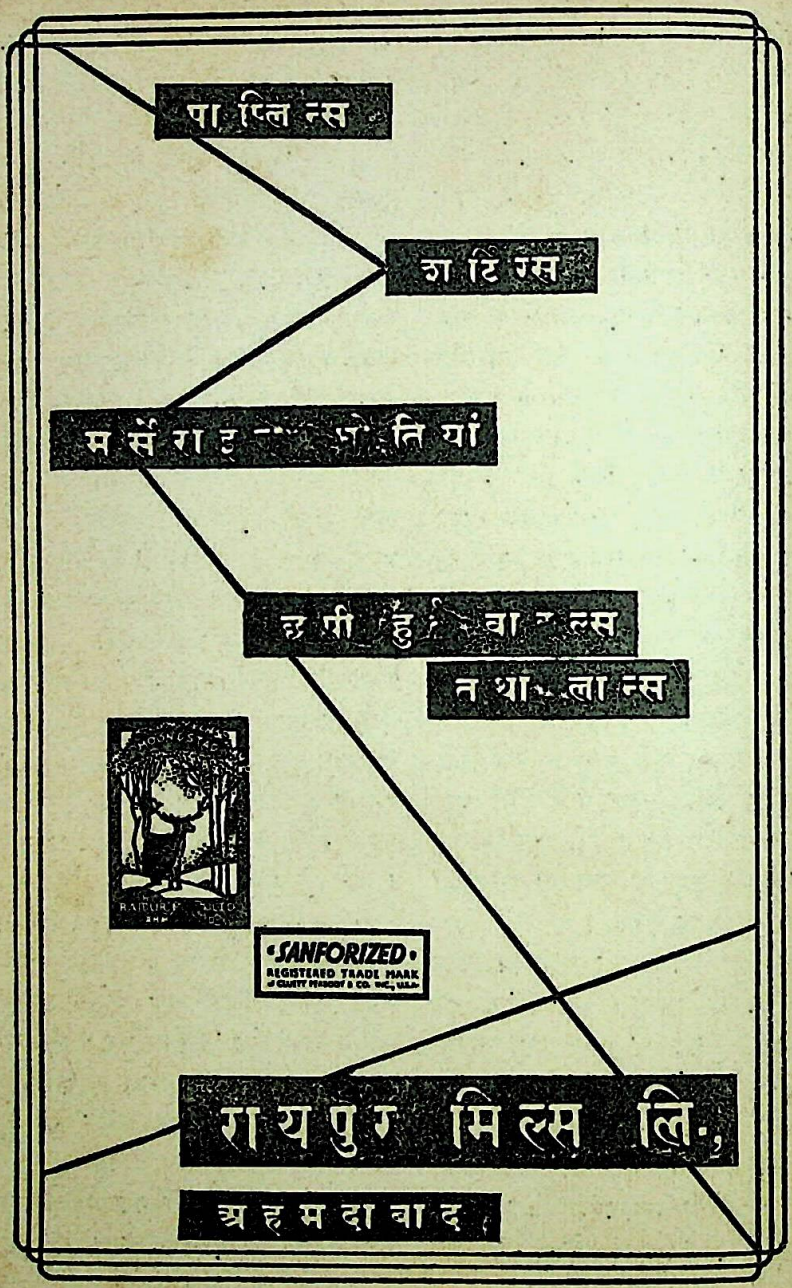

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इच्छा गयी...सब गया

वि० स० खांडेकर की एक लघुकथा का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

*

ग्रीष्म के सहस्ररश्मि सूर्य के ताप से सारा भू-मंडल आंतकित था। कमंडल का जल समाप्त-प्राय था; मगर वह योगी अविराम गति से चला जा रहा था। कुछ दूर चलने के बाद, घने पत्तों से आच्छादित एक वृक्ष को देख, उसका मन पुलकित हो उठा। वह उसकी शीतल छाया-तले विश्राम करने रुक गया। दिन ढलने के बाद, जब वह चलने के लिए उठा, तो उसने वृक्ष को आशीर्वाद देते हुए कहा– "भगवान् तेरा भला करे!"

अतृप्ति

[चित्र : आइसेंस्टाइन-कृत स्केच]

सुन कर वृक्ष खीझ उठा; बोला–"हाँ, हाँ, मुफ्त के आशीर्वाद देने वाले तुम्हारे जैसे न-जाने कितने दढ़ियल संन्यासी देखे हैं मैंने! आशीर्वाद नहीं, मुझे तो वरदान चाहिए!"

योगी के धीर-गंभीर मुख पर मुस्कान बिखर गयी–"अच्छा वरदान चाहिए तुझे?"

मन-ही-मन सहमा हुआ वृक्ष, धीरे से बोला–"एक नहीं, दो चाहिए योगिराज!"

मंद मुस्कान के साथ योगी ने फिर पूछा– "केवल दो ही, या तीन?"

वृक्ष ने साहस बटोर कर कहा—"अच्छा मुझे चार वरदान दे दीजिए, महाराज!"

"ठीक है," योगी ने हँस कर कहा–"जब भी तुझे अपनी वर-पूर्ति की कामना हो, मेरा स्मरण कर लेना। बस तभी तेरे चारों वरदान पूरे हो जायेंगे।"

योगिराज के जाने के पश्चात्, वृक्ष कई शंका-आशंकाओं में उलझ गया। उसने शंकित मन से पूछा– "कहीं इस संन्यासी ने मुझे धोखा तो नहीं दिया? क्यों नहीं मैंने उसकी उपस्थिति में ही, उसकी परीक्षा ले ली? खैर अभी भी समय है, अभी सच-झूठ का निर्णय करता हूँ।"

इस प्रकार प्रताड़ित हो, उसने जोर से पुकारा— "योगिराज! वर्षों से इसी जगह पर खड़े-खड़े मेरा मन ऊब गया है। अब मेरी कामना है कि, यहाँ से दो कोस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरानी धारणाओं के फेर में जीवन के नये सुख न खो बैठिए !

बहुतेरे लोगों को आपने आधुनिकता की डींग भरते सुना होगा लेकिन सच तो यह है कि ये लोग अपने जीवन के नये सुखों को अपने ही हाथों खोते जा रहे हैं क्योंकि मौक़ा पाते ही ये लोग आज भी पुरानी लकीर के फ़क़ीर बनने से नहीं चूकते।

कहीं दूर जाने की ज़रूरत नहीं, रसोईघर की ही बात लीजिए। अक्सर लोग कहते हैं "हम वनस्पति से पका खाना तो खाते ही नहीं" या फिर "वनस्पति तो एक बनायी हुई चिकनाई है। इसमें वह ताक़त कहाँ जो क़ुदरती चिकनाई में होती है!"। और सच पूछिए तो वनस्पति के बारे में कुछ भी क़ुदरती नहीं। हाँ, इसे तैयार करने में साफ़-सफ़ाई का पूरा ध्यान रखा जाता है। बस, यही बात अजीब हो सकती है!

उत्पादन की कड़ी निगरानी

वनस्पति एक विशुद्ध चिकनाई है जो मूँगफली और तिल से प्राप्त की जाती है। साफ़-सुथरे आधुनिक कारख़ानों में मूँगफली और तिल के तेलों को शोध कर वैज्ञानिक तरीक़े से इसे तैयार किया जाता है। इन कारख़ानों में सफ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। इसीलिए, आसानी से पचनेवाली यह चिकनाई आपको बिलकुल शुद्ध रूप में मिलती है। खाना बनाने के लिए यह एक आदर्श चिकनाई है क्योंकि इसमें पके भोज्य-पदार्थों का स्वाद और उनकी ख़ुशबू ज्यों के त्यों बने रहते हैं। यह सस्ती भी होती है... और इसके हर आउंस में पुष्टई का पूर्ण पुट होता है।

अच्छे स्वास्थ्य और बढ़िया रहन-सहन के लिए वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हर आदमी को तन्दुरुस्त और ताक़तवर रहने के लिए हर रोज़ कम से कम दो आउंस चिकनाई की ज़रूरत होती है। यह ज़रूरी चिकनाई आपको शुद्ध और सस्ते वनस्पति से पके भोजन में बड़ी आसानी से मिल सकती है। क्यों नहीं आप भी अच्छे स्वास्थ्य और बढ़िया रहन-सहन के लिए वनस्पति इस्तेमाल करना शुरू कर देते?

वनस्पति—*गृहिणी का सच्चा सहायक*

दि वनस्पति मैन्युफैक्चरर्स ऐसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूर बहने वाली उस नदी के निर्मल प्रवाह में अपना प्रतिबिम्ब निहारते हुए जीवन के शेष क्षण व्यतीत करूँ।"

आगे कुछ कहने के पहले ही "तथास्तु" का शब्द उसके कानों में गूँजा। वह धीर-गंभीर स्वर योगी का था, वृक्ष ने पहचान लिया।

अपनी इच्छानुसार वृक्ष अब नदी के किनारे खड़ा था। उसकी प्रसन्नता की सीमा नहीं थी।

परन्तु उसका यह हर्षोन्माद दीर्घ काल तक नहीं टिक सका। नदी के उस पार सघन वृक्षों से घिरा एक देवालय था। संध्या समय रैन-बसेरे के लिए रंग-बिरंगे पंछी आनंद-उल्लास में मग्न, उन वृक्षों की डाल पर आ कर बैठते थे। उसे उन वृक्षों से ईर्ष्या होने लगी। ईर्ष्या का यह ज्वर इतना बढ़ा कि, अपनी छाया भी, जैसे उसे काटने लगी।

उसने फिर मनोरथ-पूर्ति का वरदान माँगा। अदृश्य योगी ने फिर गंभीर स्वर में "तथास्तु" कहा।

वृक्ष की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। अब वह नदी के उस पार वाले सर्वांग-सुंदर देवालय के ठीक सामने अवस्थित था। उस पावन भूमि पर खड़े, उसके कानों में रात-दिन भक्ति-गान और धार्मिक स्तोत्र गूँजते रहते। भक्तगण वृक्ष को जब भाव-भरी दृष्टि से देखते, उस समय वृक्ष मन-ही-मन निहाल हो उठता।

एक दिन वृक्ष ने एक सुन्दर पँचरंगे पक्षी को अपनी डाल पर आ बैठने के लिए आमंत्रित किया। पर वह पक्षी उपेक्षा के स्वर में बोला—"भला दूसरे एक-से-एक सुन्दर वृक्षों को त्याग कर, मुझे तेरे पास आने की क्या पड़ी? हाँ, सरिता के अथाह जल के बीचों-बीच वह जो छोटा-सा भू-प्रदेश दिखायी देता है न, वहाँ यदि तू होता, तो तेरी डाल पर बैठ कर, कम-से-कम सूर्यास्त का मनोहर दृश्य मैं अवश्य देखता।"

पक्षी की यह बात सुन कर, वृक्ष तिलमिल उठा। उसने फिर वरदान माँगा और योगिराज ने फिर "तथास्तु" कहा।

वरदान को चरितार्थ हुआ देख वृक्ष खुशी से नाच उठा। वह गर्व से चारों तरफ फैले हुए जल-विस्तार को निहार रहा था। अपने सामने, उसे दोनों पार की वृक्षावलियाँ तुच्छ-सी लगने लगीं।

वर्षाकाल आया। मूसलाधार बारिश शुरू हो गयी और नदी ने अपने प्रलयंकारी प्रवाह से उस भू-भाग को घेर लिया। वृक्ष घबरा उठा। नदी की मोहकता और मधुरता विलीन हो गयी। अब वह क्रुद्ध नागिन की तरह, उसे चारों तरफ से घेरती जा रही थी। भय से वृक्ष का अंग-अंग काँपने लगा। उसने कातर वाणी में पुकारा—"योगिराज!"

"क्या?"

"महाराज, मेरी रक्षा कीजिए।"

"अब क्या चाहता है तू?"

"मैं...मैं यहाँ से बहुत दूर, किसी ऐसे स्थान पर जाना चाहता हूँ, जहाँ नदी का यह भयावह वेग मुझ तक पहुँच न सके।"

"तथास्तु"—अदृष्ट योगी ने दयार्द्र वाणी में कहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

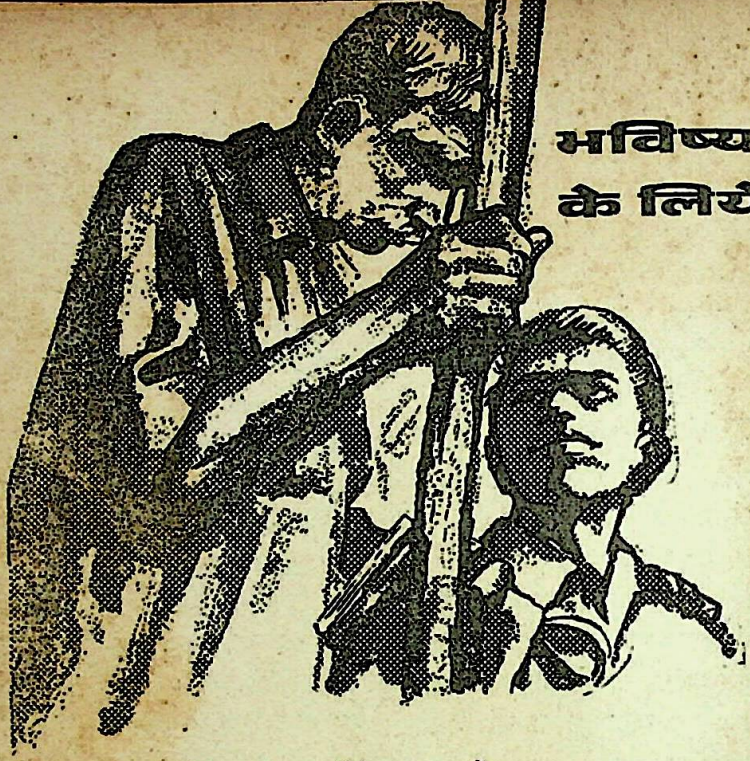

भविष्य के लिये

एक बुढ़ापा—झुर्रियों भरा हुआ है माथा
और दो आँखें—मद्धम मद्धम जलते दिये—
सिहर सिहर कर देख रही हैं
एक नये दिये की जगमग जगमग बाती...
आज बुढ़ापे ने बच्चे पर सब कुछ किया न्योछावर अपना
और ज्ञान की मणि थमाई उस के हाथों
ताकि देख सके वह अपनी मंज़िल अन्धकार में खोई।
जीवन के संघर्षों में से होकर यौवन
सीखेगा, पायेगा, पहुँचेगा मंज़िल तक
और साकार करेगा औरों के संग मिलकर
एक नये संसार का सपना—
एक नया संसार कि जिस में
चिन्तायें कम होंगी, होंगी खुशियां ज़्यादा।

आज, हमेशा की तरह हमारे उत्पादन घरों को अधिक स्वच्छ, स्वस्थ और सुखी बनाने में सहायक होते हैं। लेकिन आज हम प्रयत्नशील हैं...
आनेवाले कल के लिये, जब और अधिक सुन्दर जीवन के लिये दिन प्रति दिन बढ़ती हुई आकांक्षा हम से और अधिक प्रयत्नों की मांग करेगी। और हम अपने नये विचारों, नये उत्पादनों और अधिक विस्तृत साधनों के साथ उस समय भी आप की सेवा के लिये तैयार पाये जायेंगे...

आज और हमेशा घर घर की सेवा हिन्दुस्तान लीवर का आदर्श

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri PR. 4-50 HI

वसिष्ठ द्वारा यौन-परिवर्तन

प्राचीन भारत के एक अद्भुत चमत्कार का रामप्रताप त्रिपाठी द्वारा खोजपूर्ण उद्घाटन

भगवान् वैवस्वत मनु दीर्घ काल तक निःसंतान थे। वे और उनकी पत्नी श्रद्धा-देवी संतान का मुख देखने, उसकी तोतली वाणी का अमृत-पान करने, उसे गोद में उठा कर अपने जीवन को धन्य करने के लिए लालायित थे। वर्षों की प्रतीक्षा के बाद भी, जब उनकी यह साध पूरी न हुई, तो वे अपने कुलगुरु सर्वक्षम, सर्वद्रष्टा महर्षि वसिष्ठ की सेवा में उपस्थित हुए और उनसे करबद्ध प्रार्थना करने लगे—"भगवन् हमें संतान-सुख उपलब्ध हो, ऐसा अनुष्ठान कीजिए।"

अर्धनारीश्वर

करुणा-निकेतन महर्षि वसिष्ठ राज-दम्पति की इस दयनीय अवस्था को देख कर द्रवित हुए। उन्होंने मैत्रा-वरुण नामक यज्ञ का अनुष्ठान कराया, जिससे राज-दम्पति के संतान होना सुनिश्चित था। यज्ञ बड़ी धूमधाम से कई सप्ताह तक चला; और अंत में वह दिन भी आ गया, जिस दिन संतान के संकल्प के साथ यज्ञेश्वर को आज्याहुति अर्पित की जानी थी। संकल्प में यह निर्देश करना आवश्यक था कि, पुत्र चाहिए या पुत्री।

भगवान् मनु संसार के सर्वप्रथम शासक थे। उन्हीं ने संसार को मात्स्य-न्याय से उबारा था, धर्म और न्याय की शासन-मर्यादा स्थापित की थी। वे चाहते थे कि, उन्हें एक सर्वगुण-संपन्न शुभ-लक्षणोपेत पुत्र हो, जो उनके अनंतर राज्य-भार वहन करे, मनुष्य-लोक का सुशासन करे। कुलगुरु वसिष्ठ को राजा की इस कामना से सहानुभूति थी। उधर राज-महिषी श्रद्धादेवी को एक अनिंद्य-सुंदरी मंगलमयी पुत्री पाने की कामना थी। अब पति-पत्नी में से किसकी इच्छा पूर्ण की जाये?

श्रद्धादेवी ने अपनी कामना राजपुरोहित पर प्रकट की। दैवेच्छा समझिए या नारी-पूजा की आर्य-परम्परा का परिणाम कि, राजपुरोहित ने राजा की इच्छा और महर्षि वसिष्ठ के आदेश का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निश्चिन्त रहिये

स्वस्थ मसूढ़े
सुदृढ़ दाँतों
स्वच्छ साँस

फोरहन्स टूथपेस्ट का इस्तेमाल कीजिये
तथा अपने चमकीले,
सफेद, स्वस्थ दाँतों पर गौरव कीजिये

हाल ही में फोरहन्स-चमकीली-मुस्कान-प्रतियोगिता में समस्त भारत से असंख्य प्रशंसा पत्र आये हैं जो फोरहन्स टूथपेस्ट के विशिष्ट गुण पर प्रकाश डालते हैं। और कोई आश्चर्य नहीं...क्योंकि फोरहन्स ही एकमात्र ऐसा टूथपेस्ट है जिस में मसूढ़ों के लिये डा. आर. जे. फोरहन द्वारा बनायी विशेष पौष्टिक दवा मौज़ूद है। फोरहन्स टूथपेस्ट से आपको स्वस्थ मसूढ़ों, सुदृढ़ दाँतों एवं स्वच्छ साँस का आश्वासन मिलेगा। फोरहन्स टूथपेस्ट का इस्तेमाल कीजिये तथा अपने चमकीले सफेद, स्वस्थ दाँतों पर गौरव कीजिये।

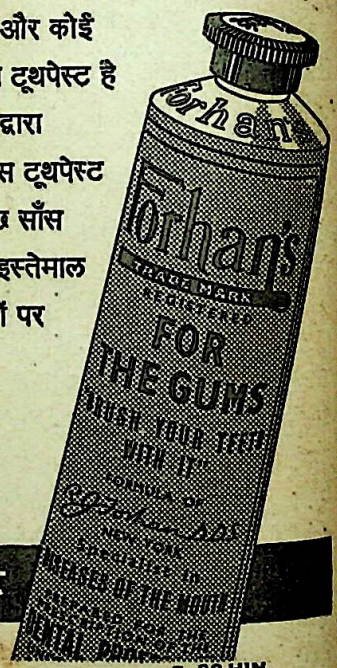

फोरहन्स

एक दंतचिकित्सक द्वारा निर्मित टूथपेस्ट

© GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.

S. 22 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उल्लंघन कर, श्रद्धादेवी की कामना के अनुसार, पुत्री की प्राप्ति के लिए संकल्प पढ़ा और आहुति दे दी। बात राजमहिषी और राजपुरोहित के अतिरिक्त, किसी तीसरे को पता न चली।

नौ मास पूरे हुए। महारानी श्रद्धादेवी ने शुभ मुहूर्त में, एक स्वस्थ संतान को जन्म दिया। शंख, तूर्य और नगाड़े बज उठे। राजकोष से मुक्तहस्त दान किया गया। राजमहिषी और राजपुरोहित के हर्ष का पार न था; रत्न-जैसी पुत्री उत्पन्न हुई थी। हर्ष राजा मनु को भी हुआ; संतान पुत्र हो चाहे पुत्री, है तो आत्मा का प्रतिबिंब। फिर भी उनके मन में यह कसक रह गयी कि, पुत्र नहीं हुआ; और कसक उन्हें सालती ही रही। यह देख कर दयाद्रवित हो महर्षि वसिष्ठ ने अपने दिव्य तपोबल से राजपुत्री को राजपुत्र में बदल दिया। उसका नाम रखा गया इल।

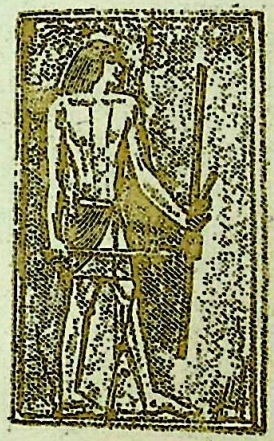

नारी से पुरुष

[चित्र : प्राचीन मिस्र के एक चित्र के आधार पर]

इल सर्वांग-सुंदर बालक था, दिव्य तेज और सद्गुणों से युक्त था। तपोधन गुरुओं की अधीनता में व्रत-पूर्वक रह कर, उसने समस्त विद्याओं का अध्ययन कर, जब यौवन की देहली पर पग रखा, तब मुख-कांति, पौरुषमय अंग-सौष्ठव, तीव्र बुद्धि, सदाचार और सत्पराक्रम में उसकी बराबरी कर सकने वाला युवक, संसार में दूसरा न था। समस्त प्रजा को वह प्राणों की तरह प्रिय था। शुभ लग्न में उसका विवाह हुआ और उसके उत्कल, गय और हरिताश्व नाम के तीन अत्यंत सुंदर पुत्र हुए।

इल का आगमन एक और दृष्टि से भी बड़ा शुभ हुआ। इल के बाद मनु और श्रद्धा के और भी कई पुत्र हुए। उनके नाम थे—इक्ष्वाकु, कुशनाभ, अरिष्ट, नरिष्यंत, करुष, शर्याति, पृषध और नाभाग। इल को अपने अनुज प्राणों की तरह प्यारे थे; और अनुज भी इल का पिता की तरह आदर-सम्मान तथा अनुकरण करते थे।

जब दसों राज कुमार बड़े हो गये, तब भगवान् मनु और श्रद्धादेवी ने वैदिक आदर्श के अनुसार, वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा लेकर, तप करने का निश्चय किया। सो कुलगुरु वसिष्ठ, मंत्रि-मंडल और पौर-जानपदों की सम्मति से राजकुमार इल का राज्याभिषेक कर, सपत्नीक मनु तप करने के लिए महेंद्र-पर्वत को चले गये।

इल ने इतनी योग्यता और धर्म-परायणता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें तंदुरुस्ती प्यारी है वे सदा लाइफ़बॉय से नहाते हैं।

खेल कूद हो या काम काज हम गंदगी से बच नहीं सकते। और गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं जिन से तंदुरुस्ती को ख़तरा रहता है। लाइफ़बॉय साबुन गंदगी के इन कीटाणुओं को धो डालता है और आप की तंदुरुस्ती की रक्षा करता है। हर रोज़ लाइफ़बॉय साबुन से नहाइये और अपनी तंदुरुस्ती की रक्षा कीजिये—यह आप को ताज़गी देता है।

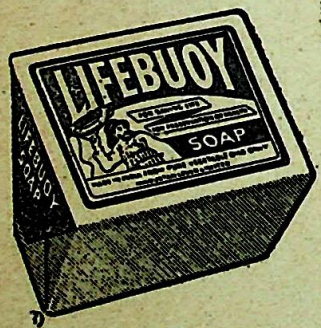

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड के बनाये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से शासन चलाया कि, प्रजा को थोड़े ही समय में भगवान् मनु का सुशासन भूल गया। वह कहने लगी– इल जैसा राजा 'न भतो न भविष्यति।'

सभी क्षत्रियों की तरह राजा इल को भी मृगया से बड़ा प्रेम था; यही समझिए कि, व्यसन था। एक दिन वह अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होकर, एक सुंदर सैंधव अश्व पर बैठ कर, अनुचरों के साथ आखेट खेलने के लिए शरवण नामक वन में गया। मृगों को मारते-मारते, वे वन के गहन कुंज-प्रदेशों में प्रविष्ट हो गये; और फिर इल ने अपना घोड़ा इतना तेज चलाया कि, अनुयायी अंग-रक्षक, कुछ ही समय में पिछड़ गये। जब इल आगे बढ़ा, तो वहाँ एक अत्यंत सुरम्य कानन-प्रदेश दीखा। और उसमें प्रवेश करते ही राजा इल, नारी के रूप में परिवर्तित हो गया और उसका सैंधव घोड़ा भी बदल कर, घोड़ी हो गया।

बात यह थी कि, शरवण का यह दस योजन लम्बा-चौड़ा सुरम्य भाग, महादेवी पार्वती का आनंद-कानन था और उनके अनुरोध पर भगवान् शिव ने यह नियम बना दिया था कि, जो भी पुरुष या नर प्राणी इसमें प्रवेश करे, वह स्त्री हो जाये। सुंदर युवक इल, अब अनिंद्य-सुंदरी इला बन गया। "व्यूढोरस्क, वृषस्कंध, शालप्रांशु, महाभुज" राजा की जगह एक कुंभस्तनी, तनु-मध्यमा, रंभोरु चारु-वदना, नारी वन में विहार कर रही थी। इल के मनोभावों में भी तदनुरूप परिवर्तन हो गया। वह भूल गया कि, वह सूर्य-वंश का प्रदीप है, राजा है, कई बच्चों का पिता है।

उसी समय चंद्रमा का पुत्र बुध उस ओर से निकला, तो उसकी दृष्टि इस युवती पर पड़ी। कामुक बुध तत्काल उस पर आसक्त हो गया। उसे प्राप्त करने का निश्चय कर, उसने ब्रह्मचारी का रूप धारण किया– सिर पर गोखुर के बराबर मोटी फहराती चुटिया, भाल पर त्रिपुंड्र, गले में रुद्राक्ष, बगल में लपेटा हुआ मृगछाला, यज्ञ के लिए कुशा और समिधा का बंडल, एक हाथ में ब्रह्मदंड और दूसरे हाथ में तूंबे का कमंडलु लिये, शिष्य वर्ग समेत वेदोच्चारण करता हुआ उसी ओर आ निकला, जहाँ इला भटक रही थी। और इला को उद्देश्य करके उसने कहा– "हे सुंदरी! कितनी कर्तव्य-विमुख हो तुम! तुम्हें तो आश्रम में रह कर, मेरे यज्ञ की तैयारी करनी थी; और तुम यहाँ वन में भ्रमण कर रही हो!"

इस आकस्मिक वार से इला का मन भ्रांत हो गया। उसका तो पहले ही स्मृति-भ्रंश हो चुका था। वह बोली– "तपस्विन्, क्षमा कीजिए। मैं सब-कुछ भूल बैठी हूँ। मुझे मेरे स्वरूप का परिचय कराइए।"

प्रवंचक बुध ने अपनी वाक्-चातुरी से कुछ ही क्षणों में इला को वश में कर लिया और उसे इलावृत्त में ले जा कर अपने आश्रम में रख लिया। आश्रम क्या, वह तो देव-काम से निर्मित विलास-सौध था। वैसा विलास-संभार देवराज इंद्र की अमरावती में भी क्या होगा? सुंदर बुध को और भोग-संपदा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जार्जियन पर 'मेडालियन'

जनप्रिय 'जार्जियन' आकार की बंगाल पॉटरीज द्वारा निर्मित चीनीमिट्टी के सुन्दर बर्तनों में 'मेडालियन' एक नया पैटर्न है। इस पर फूल-पत्तियों के मनोहर चित्र की 'कार्निस' बहुत ही आकर्षक है। किनारे की सुनहरी धारियाँ इसकी सुन्दरता में चार चाँद लगाती हैं। कम दाम में मिलती है और साथही टूट-फूट जाने पर इसका जोड़ा आसानी से पाया जाता है।

'ब्लू मेडालियन'—सेट न० ११७ए 'मेरुन मेडालियन'—सेट न० ११७बी

बंगाल पॉटरीज लिमिटेड

एकमात्र विक्रय प्रतिनिधि

एलायड डिस्ट्रिब्यूटर्स ऐण्ड कं० ३३ ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता १

BPC-23 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को पा कर इला परम प्रीत हुई और उसने बुध के साथ दाम्पत्य-जीवन चलाया। यथा-समय उनके एक पुत्र हुआ पुरूरवा।

इधर राजा इल के पार्श्वचर उस दिन घने जंगल से यह समाचार ले कर लौटे कि, राजा कहीं भटक गया है। सारे वन को छान डाला गया। राजा का घोड़ा तो घोड़ी के रूप में पहचान में आ गया; क्योंकि हीरे-मोती जड़ी राजकीय जीन, अब भी उसकी पीठ पर फटी-पुरानी अवस्था में झूल रही थी। परंतु राजा इल का कहीं पता न था। अंत में इक्ष्वाकु आदि राज-कुमार, मंत्री और सामंत-गण चिंतित हो उठे। वसिष्ठजी ने सब कुछ देख लिया और फिर अत्यंत दुःख के साथ राजा इल का सारा वृत्तांत कह सुनाया।

युवती इला को बुध के पाश से छुड़ा कर लाया गया। महर्षि के तपोबल और शिव-पार्वती के आशीर्वाद से, इला को किंपुरुष-योनि मिली, जिसमें व्यक्ति एक महीने पुरुष और एक महीने स्त्री के रूप में रहता है। स्नेह-परायण भाइयों और धर्म-निष्ठ मंत्रियों ने, इस विचित्र अवस्था में भी, इल को राज्यासन पर पुनः आसीन किया। राज-पाट ठीक चलने लगा। परंतु इल को बुध से हुए पुत्र पुरूरवा के वियोग से बड़ा दुःख हुआ। उधर इक्ष्वाकु के आतंक और महर्षि वसिष्ठ के आदेश से बुध ने भूलोक से प्रस्थान किया।

इल एक महीने पुरुष रहता और एक महीने स्त्री। इल-इला के पचड़े से बचने के लिए उसने अपना नाम सद्युम्न रख लिया। परंतु उसके स्वभाव में स्त्रैणता आ गयी। शासन-कार्य उसे बोझ-सा लगने लगा। उधर प्रजा में भी उसका पहले का-सा आदर नहीं रह गया था। सो उसने स्वेच्छा से राज्य-त्याग कर दिया। कुलगुरु वसिष्ठ, राजकुमारों और मंत्रियों ने मिल कर, इक्ष्वाकु को उत्तराधिकारी चुना। और इक्ष्वाकु के राज्यारोहण पर प्रजा ने वैसा ही आनंद मनाया, जैसा कि इल के राज-तिलक के समय मनाया था।

सुद्युम्न अपने पुत्र पुरूरवा का मोह न छोड़ सका। उसने उसे भी बुला कर पालन करना शुरू किया। अंत में भाइयों की सहमति से, उसने उत्कल को उत्कल राज्य, गय को गया का प्रदेश, हरिताश्व को कुरु राज्य और पुरूरवा को गंगा-यमुना के संगम का इलाका दे कर, स्वयं संसार-त्याग कर, हिमालय के इलावृत्त की ओर प्रस्थान किया, जहाँ उसने बुध के साथ दांपत्य-जीवन बिताया था।

इला और बुध का पुत्र पुरूरवा ही चंद्रवंश का प्रवर्तक हुआ। पुरूरवा का पितामह चंद्र था न! 'विक्रमोर्वशीय' में उसी पुरूरवा और स्वर्ग-लोक की अप्सरा उर्वशी की प्रेम-कथा वर्णित है। इल के तीन पुत्र उत्कल, गय और हरिताश्व के तथा उनके इक्ष्वाकु आदि नौ चाचाओं के वंशज सूर्यवंश के कहलाये।

इस प्रकार इल के योनि-परिवर्तन से, एक ही मूल पुरुष भगवान् मनु की संतानें, सूर्य-वंश और चंद्र-वंश में बँट गयीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमूल्य

बाल कम हों, तो **केशवर्धिनी** अमूल्य है। इसके प्रयोग से सैकड़ों बालकों के बाल काले, घने और लम्बे हो गये, तो आपके क्यों न होंगे ?

घने और मजबूत बाल, सावधानीपूर्ण परवरिश का परिणाम हैं, न कि संयोग का। अगर आप कृत्रिम, तीव्र सुगंधित और रंग से बने हुए तेलों का उपयोग करते हैं, तो जिस शिकायत से छुटकारा पाना चाहते हैं, वह दूर न होकर बढ़ेगी ही।

केशवर्धिनी सिर की त्वचा की उस अस्वाभाविक दशा को ठीक करती है, जिसके करण बाल गिरने लगते है; और वह उन्हें काले, घने और लम्बे बनाने में आपकी मदद करती है।

यही कारण है कि, विचारशील माताएँ अपने तथा बच्चे के लिए **केशवर्धिनी** को ही पसंद करती हैं।

केशवर्धिनी का

आज से ही प्रयोग करना शुरू कर दें।

केशवर्धिनी शांपू से अपने बाल स्वस्थ-सुगंधित रखें।

निर्माता : **केशवर्धिनी** प्रोडक्ट्स, क्रासकट रोड, कोयम्बतूर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो परछाइयाँ

ख्वाजा अहमद अब्बास की एक मार्मिक कहानी

बादशाह तख्त पर बैठा था। उसके सर पर सुनहरा ताज था। उसके बदन पर रेशमी पोशाक थी। उसके पैरों में जरतार जूते थे। तख्त के नीचे शेर की खाल बिछी हुई थी। और बादशाह ने अपना पैर मुर्दा शेर के सिर पर रखा था।

पनघट

सिपहसालार (सेनापति), वजीर, अमीर और दरबारी, बादशाह के हुजूर में हाथ बाँधे मुअद्दब और सिरनिगूं (नत-मस्तक) खड़े थे। किसी की हिम्मत नहीं थी कि, हुजूर मलिके मुअज्जम के सामने सिर भी उठा सके। हर एक शाही हुक्म का मुन्तजिर था।

दफअतन (सहसा) बादशाह ने ताली बजायी। और उसके दोनों हाथों में अंगूठियों के हीरे चमक उठे। बादशाह ने हुक्म दिया—

"रक्कासा!" (नर्तकी)

यकेबाद दीगरे सात रेशमी परदे खुलते चले गये। और उनमें से रक्कासा इस तरह नमूदार (प्रकट) हुई, जैसे बादलों में बिजली कौंधती है। तख्त के सामने पहुँच कर रक्कासा ने सात बार झुक-झुक कर सलाम किया। और फिर दीवाने-खास की मरमरी दीवारें और सुनहरी मुनक्कश छत मोसिकी (संगीत) की आहंग से गूँज उठीं। रक्सो सरोद की महफिल गर्म हो गयी।

रक्कासा की आँखों में जादू था। उसके गोरे बदन में जवानी का खुमार (मदिरालस) था। उसकी अदायें जुहदशिकन (संयम तोड़ने वाली) थीं। और आवाज में बला का तरन्नुम! उसके रक्स (नृत्य) में कभी मोरनी की चाल थी, तो कभी नागन की लहर। कभी शोले की लपक थी, तो कभी शाखें गुल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की थरथराहट, कभी शर्मोहया के अंदाज थे, तो कभी दावते हवस! लेकिन भरे दरबार में किसी की हिम्मत नहीं थी कि, रक्कासा की तरफ आँख उठा कर देख सके। सिर्फ बादशाह अपने तख्त पर बैठा हुआ, मूँछों को ताव देता हुआ, अपनी तोंद पर हाथ फेरता हुआ, रक्कासा के कमाले फन (कला) से महजूज और मसरू (प्रसन्न) हो रहा था। तबले की आखरी थाप और घुँघरुओं की रोजदार झंकार के साथ, नाच खत्म हो गया। बादशाह ने खुश होकर अपने गले से सातलड़ियों वाला मोतियों का हार उतारा और रक्कासा की तरफ फेंक दिया। रक्कासा ने हार उठा लिया और सात बार फरशी सलाम बजा लायी। फिर वह आगे बढ़ी और बादशाह के कदमों को बोसा देकर बोली–

"अलीजाह! कनीज अपनी इस कद्र अफजाई पर फूली नहीं समाती। खुदावन्द ताला शहन्शाह की शहन्शाहियत, रहती दुनियातक बरकरार रखे। हुजूर पुरनूर का इकबाल बलन्द हो।"

एक भारी आवाज, जो बादशाह की आवाज से भी ज्यादा रोबदार थी गूँज उठी–

"कट!"

दफअतन (सहसा) रौशनियाँ गुल होनी शुरू हो गयीं। और एक पल में दरबार का सारा निजाम तितर-बितर हो गया। दरबारी अपने रेशमी और मखमली लबादों को सँभालते, अपनी नकली दाढ़ियों और मूछों को नोचते, एक्स्ट्राज मेकअप रूम की तरफ भागे। बादशाह ने अपने सर से ताज उतारा, तो नकली लम्बे बालों की विग भी उतार आयी। मेकअप मैन ने डाँट कर कहा –

"अबे क्या करता है? विग सँभाल कर उतारा कर, ढाई सौ रुपये में बनती है।"

बादशाह ने घबरा कर विग को फिर अपने गंजे सिर पर रखना चाहा, तो ताज जमीन पर गिर पड़ा। टीन की झंकार के साथ, और कितने ही शीशे के टुकड़े फर्श पर बिखर गये।

मेकअप रूम में पहुँच कर, बादशाह ने अपना मखमल का लबादा उतारा। रेशमी कुर्ता उतारा। साटन की सलवार उतारी। जरदोजी का जूता उतारा और साथ में रुई से भरा हुआ, अपना नकली पेट भी उतारा। मेकअप मैन ने उसके चेहरे से दाढ़ी और मूछें नोच लीं। और अब बादशाह सिर्फ एक जाँघिया, पहने खड़ा था। और जाँघिये में तीन पैबन्द लगे हुए थे।

और चन्द मिनिट के बाद एक पुरानी रफू की हुई पतलून और एक मैली बुशशर्ट पहने, एक दुबला, सूखा, पिचके हुए गालों और धँसी हुई आँखों वाला, एक्स्ट्रा सप्लायर से दिन भर की उजरत (मेहनताना) के पाँच रुपये वसूल कर रहा था। क्योंकि साढ़े सात रुपयों में से ढाई रुपये कमीशन के पहले ही कट चुके थे। फिर उसने असिस्टैण्ट डायरेक्टर को सलाम करते हुए पूछा –

"साहब! कल भी मेरा मेकअप है न?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जवाब मिला—"नहीं! कल तो हम डाकुओं के मार वाला सीन लेने वाले हैं!"

बादशाह ने गिड़गिड़ाते हुए कहा – "तो साहब मुझे डाकू ही बना दीजिये। बड़ी मेहरबानी होगी। सच कहता हूँ, दो महीने में सिर्फ पाँच दिन मेकअप किया है।"

असिस्टैण्ट ने डाँट कर कहा –"पागल हो गये हो! अरे बादशाह को डाकू कैसे बना दें! पिक्चर की काण्टीन्यूटी खराब कर दें?"

बादशाह की आँखों में आँसू उमड़ आये।

"तीन दिन भी और काम मिल जाता, तो मैं खोली का कराया दे देता। बाल-बच्चों वाला आदमी हूँ साहब! ऐन बरसात में मालिक मकान घर से निकाल देगा, तो उन्हें लेकर कहाँ जाऊँगा। थोड़ा-सा एडवांस ही दिलवा दीजिये। मेरा काम और भी तो आयेगा।"

गर्मी...शीतल जल

"नहीं भाई!" असिस्टैण्ट ने कहा। उसका लहजा हमदर्दाना था, मगर उसका फैसला कतई था। "हमने स्टोरी बदल दी है। बादशाह का आज काम तमाम हो गया।"

× × ×

हवा में दो हाथ बुलन्द हुए। एक हाथ में हथौड़ा था, और दूसरे में दराँती। और इस इंकिलाबी निशान की परछाईं, इंकिलाबी नौजवानों की चमकीली आँखों में थी। उसकी आवाज में करोड़ों मजदूरों और किसानों के इंकिलाबी नारों की बाज-गश्त (गूंज) थी।

वह मजदूरों का लीडर था और खुद एक मजदूर था। अगर उसके हाथ में हथौड़ा और दराँती न होता, तब भी यह पहचानना मुश्किल न था कि, वह मेहनतकश अवाम का नुमाइन्दा है। उसकी नीली कमीज और नीली पतलून पर, कारखाने की मशीनों के तेल के धब्बे पड़े थे। उसके उलझे हुए घूँघर-वाले सख्त बाल, मेहनत की धूल से अटे हुए थे। उसकी आस्तीनें कोहनियों से ऊपर चढ़ी हुई थीं। और उसकी मजबूत बाहों पर, उगे हुए सियाह बाल, उसकी मर्दानगी का एलान कर रहे थे। उसके कीचड़ भरे पाँव में टूटे हुए कोल्हापुरी चप्पल थे। उसकी सिलवटों-भरी पतलून टखनों तक उल्टी हुई थी। उसके कान पर एक अधजली बीड़ी अटकी हुई थी। उसकी जेब में कालमार्क्स का "कम्यूनिस्ट – मेनीफेस्टो" झाँक रहा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"साथियों!" उसने मजदूरों के मजमे (समूह) को मुखातिब (सम्बोधित) करते हुए कहना शुरू किया –"हम लोग, जो फुटपाथ पर रहते हैं, आवारा कहलाते हैं, जो नौकरी ढूँढ़ते हैं और बेकार रहते हैं, जिन्हें एक वक्त में दो रोटी भी मयस्सर नहीं। आज हम अपना हक माँगते हैं और एलान करते हैं कि, यह महलों, यह तख्तों, यह ताजों की दुनिया आज सिसक रही है। हम एक नये निजाम की तामीर (रचना) करेंगे। जिसमें न कोई अमीर होगा, न गरीब। यह निजाम खुद-ब-खुद तामीर नहीं हो जायेगा। इसके लिए हमें जिद्दो-जेहद (संघर्ष) करनी होगी। कुर्बानियाँ देनी होंगी। इंकिलाब लाना होगा।"

एक हजार मजदूरों ने एक साथ नारा लगाया—"इंकिलाब – जिन्दाबाद!"

और एक आवाज ने, जो एक हजार मजदूरों की मुशतरका (मिलीजुली) आवाज से भी गरजदार थी, गरज कर कहा–"ओ के! रेडी फार टेक!"

मेकअप मैन इंकिलाबी नौजवान की तरफ दौड़ा। साथ ही बाल बनाने वाली लड़की भी अपना सामान लेकर लपकी; लेकिन इंकिलाबी नौजवान ने दोनों को डाँट कर भगा दिया।

"पहले मुझे प्रोड्यूसर से बात करनी है।"

सैट के कोने में नौजवान और प्रोड्यूसर की बातचीत हुई। इंकिलाबी नौजवान ने कहा –"शाट होने से पहले किस्त मिल जानी चाहिए।"

प्रोड्यूसर ने कहा–"जी हाँ, लाया हूँ।"

और काँपते हुए हाथों से अपने कोट की अंदर की जेब में से नोटों का एक बंडल निकाला।

"गिन लीजिए, पूरे दस हजार हैं।"

इंकिलाबी नौजवान ने नोटों के बंडल को ले लिया। और प्रोड्यूसर ने डरते-डरते पूछा– "रसीद!"

इंकिलाबी नौजवान ने कहा –"मैं अपने सेक्रेटरी से कह दूँगा। वह एक हजार की रसीद पहुँचा देगा।

प्रोड्यूसर ने कहा –"थैंक यू।"

इंकिलाबी नौजवान मुस्कराता हुआ डायरेक्टर के पास गया और कहा—

"ओके! रेडी फार टेक!"

सारा स्टूडियो रौशनीसे जगमगा उठा। डायरेक्टर ने हुक्म दिया–"साउंड स्टार्ट!"

"साउंड रनिंग!".....आवाज आयी।

क्लैपरब्वाय ने क्लैप दी और फुर्ती से अलग हट गया। दो हाथ हवा में बुलन्द हुए और इंकिलाबी नौजवान की आवाज गूँजी–"साथियो!"

मगर डायरेक्टर ने चिल्लाकर कहा–

"कट! कट!!"

इंकिलाबी नौजवान ने किसी कदर खफगी से पूछा :– "क्यों? क्या हुआ?"

डायरेक्टर ने उसके हाथों की तरफ इशारा किया, जो अबतक हवा में बुलन्द थे।

बायें हाथ में दँराती थी – और दायें हाथ में दस हजार के नोटों का बंडल!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

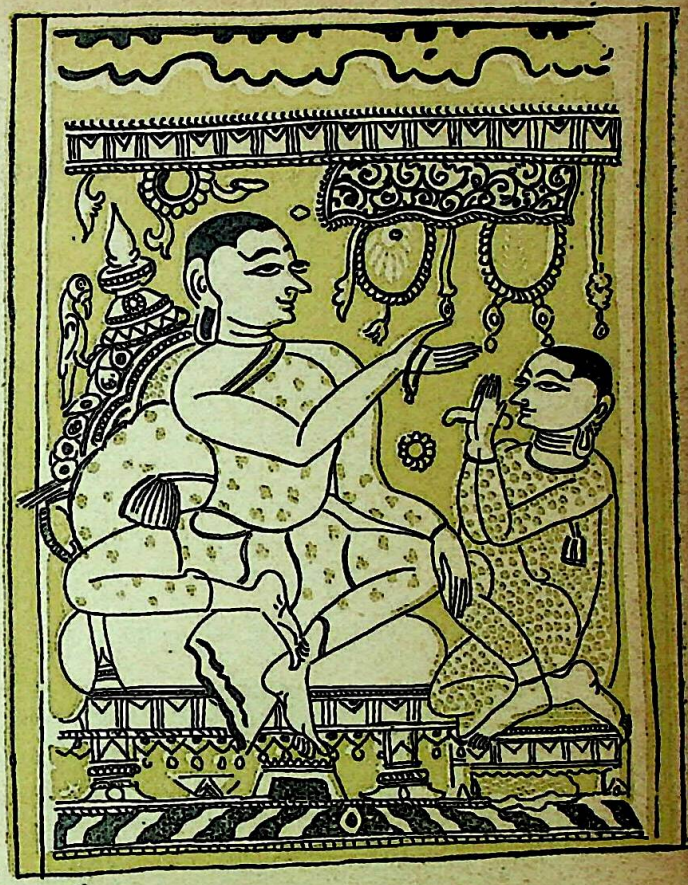

वड्डाराधने

कन्नड-साहित्य का प्राचीन कथाकोश

कथा-साहित्य के क्षेत्र में भारत से अधिक समृद्ध शायद ही कोई देश हो। असीम समुद्र का जल जैसे सीमा-विस्तार और दिक्-काल का अतिक्रमण कर, सारी पृथिवी को सींचता है, भारतीय कथा-सिंधु का जल भी असंख्य बादलों द्वारा दूर-दूर की मानव-संस्कृतियों को सींचने के लिए अति पुरातन काल से पहुँचता रहा है। प्रस्तुत कथाभाग भी इसी परम्परा से स्फूर्त कहानी-शिल्प का उज्ज्वल प्रतीक है। 'वड्डाराधने' अर्थात् 'बड़ों की आराधना' नाम्नी कन्नड की यह गद्य-पुस्तक अभी दो दशक पूर्व उड़ीसा से प्राप्त हुई थी। इसके बाद अन्वेषकों को कर्नाटक में कुछ और प्रतियाँ मिलीं। ग्रंथकार का नाम कुछ प्रतियों में शिवकोटाचार्य और कुछ में रेवकोटाचार्य मिलता है। विद्वान् विद्वानों के मत से ग्रंथ का रचनाकाल ९-१२ वीं सदी के बीच ठहरता है। किंतु इस मत-वैचित्र्य के बावजूद, यह तो स्पष्ट है ही कि, बारहवीं सदी तक केवल संस्कृत में ही नहीं, अन्य संस्कृतेतर भाषाओं में भी गद्य-लेखन का शिल्प काफी विकसित हो चुका था। 'वड्डाराधने' इस साक्ष्य का तेजोदीप्त स्तंभ है। प्रति वर्ष की भाँति, इस वर्ष भी हम नवनीत के वाङ्मय-प्रेमी पाठकों को मातृवाणी के एक अभिनव रसवलय की भेंट देते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जंबूद्वीप-स्थित भारतवर्ष में वत्स नामक राज्य है। उसकी राजधानी है कौशाम्बी। वहाँ प्राचीन काल में राजा अतिबल राज्य करता था। उसकी रानी मनोहरी अपने नाम के अनुरूप ही सबके मन को हरने वाली, सत्य-सदाचार-संपन्ना तथा रूप-लावण्य-परिपूर्णा थी।

चतुर्वेद-पंडित सोमशर्मा अतिबल का कुलक्रमागत मंत्री था। उसकी पत्नी का नाम था काश्यपी। उनके दो पुत्र थे—अग्निभूति और वायुभूति। दोनों बड़े लंठ, सप्त महा-व्यसनों में लिप्त एवं वेदादि शास्त्रों के पठन-पाठन से विमुख थे। पिता की गाढ़ी कमाई खर्च करना ही दोनों भाइयों की एकमात्र अभिरुचि थी।

कालांतर में, एक दिन जब मंत्री सोम-शर्मा परलोक सिधारा, तब राजा अतिबल ने अग्निभूति और वायुभूति को राजमहल में बुलवाया, प्रेम से स्नान-भोजन कराया, बढ़िया वस्त्राभूषण दिये और ढाढ़स बँधा कर घर भेजा। कुछ दिन बाद जब मंत्रि-पद पर नयी नियुक्ति करने का अवसर आया, तो दोनों को बुला कर पूछा कि, तुमने क्या-क्या पढ़ा है। दोनों जब सिर नीचा कर, पैर से जमीन कुरेदने लगे, तो दरबारियों ने बताया कि, दोनों भाई बड़े लंठ और दुर्व्य-सनी हैं। राजा ने उन्हें अपमानित कर दर-बार से निकलवा दिया और मंत्री-पद एक अन्य विद्वान् ब्राह्मण को दे दिया।

इस अपमान से आहत हो कर, अग्नि-भूति व वायुभूति ने संकल्प कर लिया कि, हम भी पढ़-लिख कर विद्वान् बनेंगे और मंत्रि-पद वापस लेंगे। यह बात उन्होंने अपनी माता काश्यपी के सामने कही, तो वह बोली—"पुत्रों, मैं पहले ही तुम्हें कितना समझाती थी; परंतु तुम सुनते कहाँ थे! अस्तु, जो हुआ सो हुआ, अब सुनो। मगधदेश में राज-गृह नाम का नगर है। वहाँ सुबल नामक राजा राज्य करता है। उसका मंत्री सर्वविद्या-

यशोमती के घर सुकुमार का लालन-पालन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पारंगत पंडित सूर्यमित्र मेरा अग्रज है। वह तुम्हें पढ़ा-लिखा कर पंडित बनायेगा। मैंने इस पत्र में सब-कुछ लिख दिया है। इसे ले कर तुम उसके पास जाओ। तुम्हारा शुभ हो।"

दोनों भाई उसी दिन चल पड़े और कुछ दिनों में राजगृह पहुँचे। मंत्री सूर्यमित्र के प्रासादोपम गृह में जा कर, उन्होंने सारा वृत्तांत निवेदन किया और काश्यपी का पत्र दिया। सूर्यमित्र ने उसे पढ़ा। सोमशर्मा की मृत्यु, मंत्रि-पद छिन जाना, यह सब जान कर, उसे बहन व भानजों की दुर्दशा पर बड़ा तरस आया। परंतु उसने दोनों भानजों के रंग-ढंग से जल्दी ही समझ लिया कि, इन्हें शह दी, तो ये यहाँ भी दुर्व्यसनों में पड़े रहेंगे, पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान न देंगे। सो बोला—"काश्यपी नाम की मेरी कोई बहन नहीं है, न सोमशर्मा नाम का बहनोई था। मेरा नाम सूर्यमित्र अवश्य है; परंतु मैं तुम्हारा मामा सूर्यमित्र नहीं हूँ। फिर भी तुम ब्राह्मण हो, विद्याध्ययन के लिए उत्सुक हो; इसलिए उसका प्रबंध कर दूँगा। परंतु शर्त यह है कि, तुम्हें दिन-रात पढ़ना होगा; तुम मेरे घर पर रहोगे तो, किंतु तुम्हें नगर में भिक्षा माँग कर पेट भरना होगा।

दोनों भाई बोले—"आप जो भी कहें, हम करेंगे। किसी तरह हमें पढ़ा-लिखा कर विद्वान् बनाइए।" सो शुभ नक्षत्र में सूर्यमित्र ने बड़े-बड़े आचार्यों से उनका विद्याध्ययन आरंभ कराया। पूरे आठ वर्ष तक दोनों भाई उसके कठोर नियंत्रण में दिन-रात पढ़

सुकुमार स्वामी के घर राजा वृषभांक का स्वागत

कर, चार वेद, छह वेदांग, अठारह धर्म-शास्त्र छह दर्शन एवं काव्य-नाटकादि विद्याओं में पारंगत हो गये। फिर दोनों ने सूर्यमित्र के चरण स्पर्श कर, घर जाने की अनुमति माँगी, तो वह बोला— "प्यारे बच्चो, मैं तुम्हारा मामा हूँ और तुम मेरे भानजे हो। परंतु जब तुम यहाँ आये, तुम्हारे रंग-ढंग से मैंने जान लिया कि, तुम्हें शह दूँगा, तो तुम सुधरोगे नहीं। इसीलिए मैंने तुम्हारे साथ इतना कठोर व्यवहार किया। बुरा न मानना, बच्चो!" फिर भानजों को प्रेम से छाती से लगाया, कई दिन बड़े प्रेम से घर पर रखा और बहुत-सा धन दे कर, आशीर्वाद-पूर्वक कौशाम्बी को विदा किया।

कौशाम्बी लौटते हुए बड़ा भाई अग्निभूति सोच रहा था—"कितना उपकार किया है, मामाजी ने हम पर!" परंतु छोटे भाई वायुभूति के मन में दूसरे ही विचार चक्कर काट रहे थे—"कितने नीच हैं मामाजी! देखो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो, आठ बरस तक घर पर रखा; पर स्वयं मंत्री हो कर भी, हमसे भीख मँगवायी।"

इसी तरह सोचते-सोचते दोनों कौशाम्बी पहुँचे। उनके प्रकांड पंडित हो कर लौटने की बात सुनी, तो राजा ने उन्हें बुलवाया और उनकी कुलक्रमागत मंत्रि-पदवी उन्हें दी। दोनों भाई राज-कार्य और शास्त्राध्ययन करते हुए सुख से रहने लगे।

× × ×

उधर राजगृह में एक दिन जब, मंत्री सूर्यमित्र, सरोवर के तट पर संध्या करके सूर्य भगवान् को अर्घ्य दे रहा था, तो न-जाने कब, उसके हाथ से उसकी मानिक की अँगूठी निकल कर पानी में गिर पड़ी। घर लौटते हुए, जब सूर्यमित्र का ध्यान अपने हाथ की ओर गया, तो वह उद्विग्न हो उठा। वह अंगूठी राजा ने उपहार-स्वरूप दी थी। "अब क्या करूँगा? राजा को कैसे मुँह दिखाऊँगा?"—वह सोचने लगा। तभी उसे एक जैन-मुनि सुधर्माचार्य सामने आते दीख गये। यह श्रमण शायद कुछ बता सके, यह सोचकर सूर्यमित्र उनके पास पहुँचा। उसे देखते ही मुनि बोले—"मंत्रिवर्य, तुमने राजा की दी हुई मानिक की अंगूठी खो दी है। परंतु वह मिल जायेगी। जब तुम अर्घ्य दे रहे थे, वह पानी में गिर पड़ी और एक कमल-मुकुल पर बैठ गयी। कल प्रातःकाल जब कमल-मुकुल पानी से ऊपर निकलेगा, तुम्हारी अंगूठी मिल जायेगी।" मंत्री ने सरोवर पर पहरा लगा दिया। अगले दिन प्रातःकाल, जैन-मुनि के बताये ढंग से, कमल-मुकुल के साथ अंगूठी निकल आयी।

अब सूर्यमित्र ने सोचा—"यह अद्भुत विद्या इस श्रमण से अवश्य सीखनी चाहिए, चाहे इसके लिए छल भी करना पड़े।" यह निश्चय कर, वह सुधर्माचार्य के पास गया और बोला—"हे महामुनि, कृपया मुझे ज्योतिष-विद्या पढ़ाइए।" आचार्य ने मुस्करा कर कहा—"मंत्रिवर्य, यह विद्या सीखने का अधिकार तो वह के वल मुनियों को है।" सूर्यमित्र तो विद्या सीखने पर तुला हुआ था। वह तुरत दीक्षा ले कर जैन-मुनि बन गया। बोला—"अब सिखाइए।" आचार्य बोले—"जो व्यक्ति अन्य समस्त शास्त्र पढ़ चुका

सोमशर्मा और नागश्री नाग-स्थान की ओर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो, उसी को ज्योतिष का अधिकार है।" सूर्यमित्र बोला– "तो अच्छी बात है; मुझे पहले अन्य शास्त्र पढ़ाइए।"

सुधर्माचार्य ने उसे समस्त जैन-आगम पढ़ा दिये। कुशाग्रमति सूर्यमित्र ने भी कुछ ही समय में समस्त शास्त्रों में पारंगतता पा ली। फिर बोला–"अब तो ज्योतिष पढ़ाइए।" आचार्य बोले– "नहीं, अभी द्रव्यानुयोग नामक शास्त्र पढ़ना शेष है। वह पढ़ लो; फिर तुम ज्योतिष पढ़ने के अधिकारी हो जाओगे।" कपट जैन-मुनि सूर्यमित्र खीज उठा– "अधिकार! अधिकार!" परंतु ऊपर से शांत-भाव से बोला– "अच्छा वह भी पढ़ा दीजिए।" शुभ मुहूर्त में सुधर्माचार्यजी ने उसे द्रव्यानुयोग पढ़ाना आरंभ किया। यह शास्त्र पढ़ते-पढ़ते सूर्यमित्र को बंध और बंध-कारण, मोक्ष और मोक्ष-कारण का ज्ञान हो गया; अर्हंतों के गुणों का एवं पच्चीस सांसारिक दोषों का स्वरूप विदित हुआ। वह सांसारिक भोगों के प्रति विरक्त हो गया। ज्योतिष सीखने की बात तो उसे बिल्कुल भूल ही गयी और वह सच्चा जैन-मुनि हो, सुधर्माचार्यजी के साथ बारह वर्ष घोर तप कर, उनकी अनुमति से "ग्रामे एक रात्रं नगरे पंच रात्रम् अटव्यां दशरात्रं" (गाँव में एक रात, नगर में पाँच रात तथा वन में दस रात) इस क्रम से पड़ाव डालता हुआ, एकाकी भ्रमण करने लगा। अब लोग उसे सूर्यमित्राचार्य कहने लगे।

अग्निभूति और वायुभूति

ये सूर्यमित्राचार्य ग्राम-नगर, मंडप-पत्तन और द्रोणामुखों में विहार करते-करते एक दिन कौशाम्बी पधारे। उदयावत-पर्वत पर उन्होंने पड़ाव डाला और नगर में बड़े-छोटे, ऊँच-नीच, धनी-निर्धन का भेद किये बिना भिक्षा माँगते हुए, मंत्री अग्निभूति ब्राह्मण के द्वार पर उपस्थित हुए। अग्निभूति ने उन्हें पहचान कर, उनके चरण छुए और पाँव पखार कर, उन्हें भोजन कराया। फिर निवेदन किया–"आपका छोटा भानजा वायुभूति पास में ही रहता है; उसे भी दर्शन देकर कृतार्थ करें।"

जब वे दोनों वायु-भूति के घर पहुँचे, तो वह स्वर्णासन पर बैठा हुआ, ब्राह्मणों को पढ़ा रहा था। सूर्यमित्राचार्य को देखते ही पहचान तो लिया, पर आसन से उठा नहीं। वायुभूति ने प्रणाम करने को कहा, तो उद्धतता से बोला– "मैं ब्राह्मण हूँ– सब जातियों में श्रेष्ठ! मैं इस अशुचि, मलग्रस्त श्रमण के पैर छुऊँ, जो कभी नहाने का नाम नहीं लेता!" अग्निभूति का मुख तमतमा उठा; परंतु सूर्यमित्राचार्य शांत रहे, बोले–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं- लक्स में धुली है!

आप की रेशमी, सूती या नाज़ुक साटिन की सुन्दर चोलियाँ संभाल से धुलने के योग्य हैं। इन्हें सदा लक्स फ़्लेक्स से धोइये। लक्स का मुलायम झाग सारा मैल बड़ी कोमलता से निकालता है। अपने नाज़ुक कपड़ों की देखभाल कीजिये—घर में सदा लक्स रखिये।

LUX

For gentle washing of lovely clothes

लक्स की धुलाई में क़ीमती कपड़ों की भलाई है

LX. 141-50-55 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड में बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"जो निंदक और स्नेही, शत्रु और मित्र, सुख और दुःख, सबको समभाव से देखता है, वही सच्चा श्रमण है, वही सच्चा प्रव्रजित है।"

और वायुभूति को क्षमा कर चल दिये।

अग्निभूति उनके पीछे-पीछे उदयावत पर्वत गया। बोला—"मुझे दीक्षित कीजिए, प्रायश्चित्त करने दीजिए। मेरे ही कारण आपका अपमान हुआ।" दीक्षा ले कर उसने तप किया और निष्कलंक हो कर, गुरु के साथ घूमने लगा।

इधर अग्निभूति की पत्नी सोमदत्ता ने, वायुभूति को मुनि का अपमान करने पर ऊँच-नीच समझायी, तो उसने क्रोध में भर कर, भाभी को केश पकड़ कर घसीटा और लात मार कर घर से निकाल दिया। सोमदत्ता ने भी क्रुद्ध हो कर प्रतिज्ञा की—"मैं और मेरे पुत्र, शृगाल बन कर तेरा मांस खायेंगे।"

× × ×

मुनि का अपमान करने के परिणाम-स्वरूप सात दिन के भीतर, पंडित वायुभूति औदुम्बर-कुष्ठ से भयंकर यातना पा कर, सड़-गल कर मर गया। शीघ्र ही वह गर्दभी की योनि में पैदा हुआ और उसी नगर के एक नट के घर भारी माल ढो-ढो कर, पीठ में व्रण हो कर, सड़-गल कर मरा। फिर उसे शूकरी की योनि मिली। फिर मर कर, मगध-देश में भंगी के घर कुतिया बन कर रहा। और अंत में चंपा-नगरी में भंगियों के मुखिया केशी के घर में एक जन्मांध बालिका के रूप में पैदा हुआ।

यह लड़की अंधी ही नहीं थी, अपितु अत्यंत कुरूप भी थी। सदा वह बीमार रहती, भूख से हाय-हाय करती रहती। जब यह बालिका, एक दिन दोपहर को, उद्यान में जामुन-वृक्ष के नीचे, पके जामुन-फल हाथ से टटोल-टटोल कर खा रही थी, तभी अग्निभूति-मुनि वहाँ से भिक्षा माँगने निकले। बालिका को देखते ही उनकी आँखों में आँसू छलक आये। वे लाठी से पके-पके फल लड़की के पास सरकाते हुए, वहीं बड़ी देर तक खड़े रहे; फिर बिना भिक्षा पाये ही पड़ाव पर लौट आये। सूर्यमित्राचार्य को सारी बात सुनायी और उस बालिका को देखते ही इतना तीव्र दुःख होने का कारण पूछा। अवधिज्ञान से सब-कुछ जान कर आचार्य बोले—"वह बच्ची और कोई नहीं, तुम्हारा भाई वायुभूति है।" फिर उन्होंने वायुभूति के औदुम्बर-कुष्ठ से मरने और अब भंगी केशी के घर अंधी लड़की के रूप में रहने की बात बतायी। उन्होंने यह भी बताया कि, वह भव्य (मोक्षोन्मुख) जीव है। अग्निभूति-मुनि अगले दिन आचार्य की अनुगति ले कर, फिर उसी उद्यान में जामुन-वृक्ष के नीचे पहुँचे। आज भी बच्ची उसी तरह टटोल-टटोल कर, पके जामुन खा रही थी। उसे बिठा कर उन्होंने अग्निभूति-वायुभूति की सारी कथा सुनायी। कथा सुन कर बच्ची को भी पूर्व-जन्म की स्मृति हो आयी। उसमें धर्म-बुद्धि जागी और उसने उनसे सत्य-अहिंसादि श्रावक-व्रत ग्रहण किये।

इसके बाद जब वह लड़की उद्यान से घर लौट रही थी, तो उसी रास्ते से चंपा-नगरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नॉर्टन साइकिल ही आप की सर्वोत्कृष्ट खरीद क्यों ? इस के चार कारण !

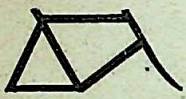

आप के पैसों की योग्य क़ीमत अर्थात् बहुत-ही मज़बूत फ्रेम की बनी हुई नॉर्टन साइकिल। (भारत की ८० प्रति-शत साइकिल-रिक्षाएँ इस प्रकार के दीर्घ-काल तक टिकाऊँ फ्रेम का ही इस्तैमाल करती हैं)।

हैन्डिलबार-क्रोम-प्लेटिड और जंग-रहित बनाए जाते हैं। अधिकतर ये इस प्रकार से बनाए जाते हैं, कि इन के इस्तैमाल करने में अधिक से अधिक आराम और सुगमता हो।

नॉर्टन साइकिल के फोर्क के साथ एक विशेष ढंग की स्प्रींग लगी रहती है, जो ऊबड़-खाबड़ रास्ते के झटकों से साइकिल का बचाव करती है।

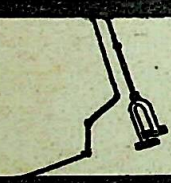

नॉर्टन के मध्याकर्ष-गति-निरोधक (Centre-pullbrakes), शीघ्रता के साथ, सुरक्षित ढंग से गति-नियंत्रण करते हैं।

सुगमता और समाधानपूर्वक चलने वाली नॉर्टन -यही आप की सर्वोत्कृष्ट खरीद है।

हिन्द साइकिल्स लि. २५० वर्ली बम्बई १८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का निःसंतान राजपुरोहित सोमशर्मा, संतान-कामना से नागपूजा करने, सपरिवार नाग-स्थान (नाग-मंदिर) जा रहा था। सहेलियों से उसके जलूस का वर्णन सुन, उस अंधी बालिका के मन में इच्छा हुई –"काश, मैं राजपुरोहित की पुत्री होती।" उसी रात को वह सर्पदंश से मर गयी और नौ मास बाद चंपा-नगरी के राजपुरोहित की पत्नी त्रिवेदी की कोख से, सुंदर बालिका के रूप में पैदा हुई। माता-पिता ने उसका नाम नागश्री रखा।

यह नागश्री बड़ी हो कर एक बार नाग-पंचमी के दिन अमात्य, नगर-सेठ, सेनापति आदि की पुत्रियों के साथ नाग-पूजा के लिए नाग-स्थान गयी, तो वहाँ सूर्यमित्राचार्य और अग्निभूति-मुनि बैठे थे। नागश्री को देखते ही, अग्निभूति-मुनि ही आँखों में आँसू छलक आये, उनका कंठ गद्-गद हो गया। उन्होंने आचार्यजी से कारण पूछा, तो वे बोले– "यह कन्या तुम्हारा भाई वायुभूति है, जो अब राजपुरोहित के घर कन्या-रूप में उत्पन्न हुआ है।" यह सुन कर, नागश्री को भी अपना पूर्व-जन्म याद हो आया। उसने सूर्यमित्राचार्य के चरण छुए और प्रार्थना की कि, धर्म-दीक्षा दें। आचार्यजी ने उसे श्रावकोचित सत्य-अहिंसादि पाँच व्रतों की दीक्षा तो दी; परंतु कहा –"बेटी, यदि कभी तुम ये व्रत न पालना चाहो, तो इन्हें फेंकना नहीं; अपितु यहाँ आ कर, हमें लौटा जाना।"

नागश्री व्रत ले कर घर पहुँची, तो सहेलियों ने सारी बात राजपुरोहित सोम-शर्मा को बतायी। सोमशर्मा बोला– "बेटी हम ब्राह्मण हैं–सब जातियों से ऊँचे, सबके पूज्य। श्रमणों का धर्म हमारे लिए अग्राह्य है। ये सब व्रत फेंक दो।" नागश्री बोली –"ठीक है पिताजी। परंतु आचार्यजी को मैंने वचन दिया है कि, व्रत फेंकूँगी नहीं, वापस लौटा दूँगी।" सो पिता को साथ ले कर, वह व्रतों को वापस लौटाने नाग-स्थान की ओर चली।

वे कुछ ही दूर गये थे कि, उन्होंने देखा– एक सर्वांग-सुंदर यौवन-सम्पन्न तेजस्वी पुरुष को हाथ-पैर बाँध कर, वध-स्थान की ओर ले जाया जा रहा है। नागश्री के कुतूहल प्रकट करने पर, पिता ने सिपाहियों से सारी बात पूछ कर, उसे बताया–"बेटी, यह युवक चंपा-नगरी के प्रमुख व्यापारी इंद्रदत्त का बेटा वरसेन है। जुआ खेल कर, यह अक्षधूर्त नाम के व्यक्ति का सहस्र दीनार का ऋणी हो गया और पैसा माँगने पर उसकी हत्या कर बैठा। इसलिए राजा की आज्ञा से, इसे सूली पर चढ़ने ले जा रहे हैं।"

नागश्री बोली–"पिताजी, यदि मैं भी कभी हत्या करूँगी, तो मुझे भी सूली पर चढ़ाया जायेगा। इसलिए क्या मैं अहिंसा का व्रत रख लूँ?" पिता ने कहा– "हाँ बेटी, एक अहिंसा-व्रत रख लो; परंतु शेष व्रत लौटा दें, चलो।"

जब वे कुछ आगे गये, तो देखा कि, एक और पुरुष को भी उसी तरह ले जाया जा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इधर सत्य और सादगी
उधर फ़ैशन और फ़ज़ूलखर्ची

आदर्शलोक प्रस्तुत करते हैं जयमाला

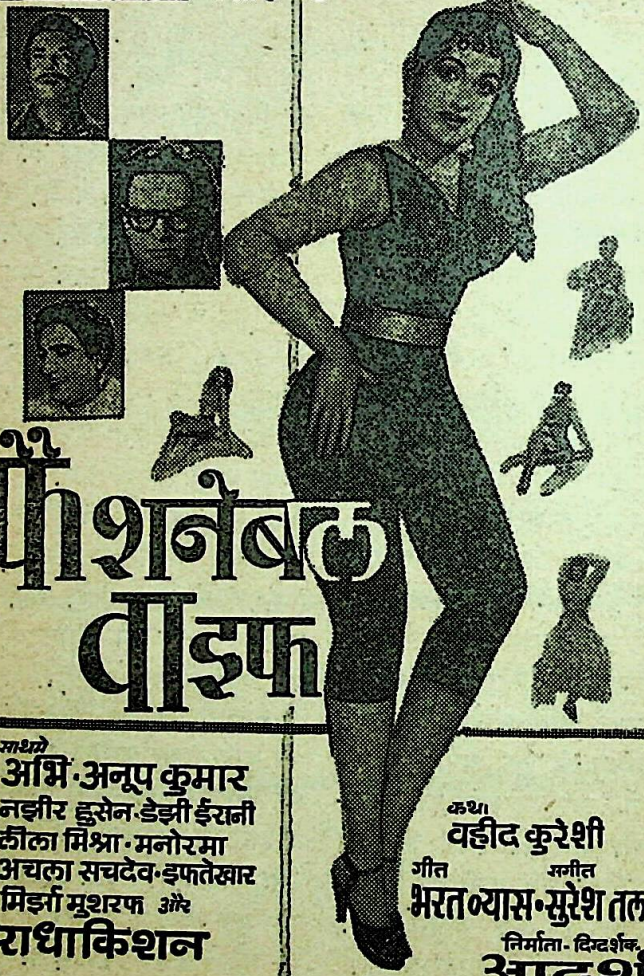

फैशनेबल वाइफ

साथ में
अभि · अनूप कुमार
नज़ीर हुसेन · डेज़ी ईरानी
लीला मिश्रा · मनोरमा
अचला सचदेव · इफ़तेख़ार
मिर्ज़ा मुशरफ़ और
राधाकिशन

कथा
वहीद कुरेशी
गीत संगीत
भरत व्यास · सुरेश तलवार
निर्माता-निर्देशक
आदर्श

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा है। नागश्री की जिज्ञासा पर राज-पुरोहित नें सारी बात पता लगा कर कहा– "बेटी, यह बैमानिक नाम का धूर्त है। यह धान बेचने वालों को एक कन्या और एक बुढ़िया की सचित्र कथाएँ सुना कर, धान तौलने में डंडी मारा करता था।"

नागश्री की जिज्ञासा पर राजपुरोहित ने कन्या की कथा बतायी –

कौशाम्बी में सुमित्र नाम का एक करोड़पति था। उसका पुत्र साँप काटने से मर गया। जब उसे जलाने स्मशान ले गये, तो गरुड़नाभि नामक गारुड़िक (ओझा) बोला –"मैं इसे कल जिला दूँगा। अभी इसे यहीं छोड़ जाओ।" सेठ चार नौकरों को पहरे पर लगा कर घर चला गया। ठंड बहुत थी। नौकर भूखे भी थे। उनमें से एक बोला–"मैं एक बकरी लाता हूँ; मार कर खायेंगे।" और चला गया। दूसरा ईंधन लाने और तीसरा आग लाने चले गये। चौथा पहरे पर रहा। सबने लौट कर आग जलायी, बकरी भून कर खा ली और आग तापने लगे। सवेरे गारुड़िक ने आ कर, लड़के को जिला दिया। जब उसे पारितोषिक देने के लिए सेठ ने सहस्र दीनार की थैली मँगायी, तो वह नहीं मिली। सेठ ने राजा से शिकायत की। राजा ने कोतवाल को बुला कर कहा– "कल सवेरे चोर और चोरी का माल उपस्थित नहीं करोगे, तो चोर का दंड तुम्हें मिलेगा।" कोतवाल ने चारों नौकरों को कारागृह में बंद कर दिया; पर कोई सुराग न मिला। रात को वह सिर पर हाथ धरे बैठा था, तो उसकी पुत्री सुमति बोली– "पिताजी यदि आप अनुमति दें, तो मैं चोर का पता लगा देती हूँ।" नौकर बुलाये गये। सुमति ने उन चारों को यह कथा सुनायी—

"पाटलिपुत्र के सेठ सुदत्त की पुत्री सुदाम्नी एक दिन गंगा नहा रही थी, तो ग्राह ने उसे पकड़ लिया। सुदाम्नी के मामा का लड़का धनदत्त, तट पर ही था। सुदाम्नी ने उससे कहा –'मुझे बचाओ।' वह बोला –'एक शर्त है, अपने विवाह की रात को सज धज-कर मुझे अपना रूप दिखाने का वचन दो, तो मैं बचाऊँ।' सुदाम्नी ने वचन दिया; और धनदत्त ने उसे बचा लिया। कई वर्ष बाद सुदाम्नी का विवाह हुआ, तो पुराना वचन स्मरण कर, उसने षोड़श-शृंगार किया और मध्य-रात्रि में धनदत्त के घर चली। मार्ग में एक चोर ने उसे पकड़ कर, सब आभूषण उतार देने को कहा। इस पर सुदाम्नी ने कहा –'मुझे आवश्यक घरेलू काम है; अभी जाने दो। लौटते समय तुम्हारा कहा करूँगी।' चोर ने उसे जाने दिया। आगे मार्ग में लम्बरदार मिला। उसे भी भी वैसा ही वचन दे कर सुदाम्नी आगे बढ़ी, तो एक ब्रह्म-राक्षस मिला। बोला– 'मैं तुझे अभी खाऊँगा।' सुदाम्नी उसे भी वापस लौटने का वचन दे, आगे बढ़ी। यों सुदाम्नी जब धनदत्त के घर पहुँची, तो वह चकित हुआ। सुदाम्नी ने वर्षों पूर्व नदी-तट पर दिये वचन की याद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

GHV-8

विमला में पकाये हुये भोजन का वे कितना आनंद लेते हैं

VIMALA
REFINED
VEGETABLE OIL

यह केरल सरकार का उत्पादन है। अतएव आपके धन का पूरा लाभ मिलने की जिम्मेवारी है।

अच्छे होटल व रेस्तरां चलाने वाले जानते हैं कि ग्राहकों को खुश रखने का एकमात्र उपाय है अच्छी स्वादिष्ट तैय्यारी। स्वादिष्ट माल खाकर ही वे फिर लौट-लौट कर पुरानी जगह आते हैं। इसीलिये वे 'विमला रिफाइन्ड वेजीटेबल आयल' का ही उपयोग करते हैं।

और इससे उनका खर्चा भी कम होता है... क्योंकि **विमला** रिफाइन्ड वेजीटेबल आयल बहुत ही कम खर्चीला पाक-माध्यम है। खोपरे के तेल से २५ प्रतिशत सस्ता है। हाथ से बिना छुए स्वास्थ्य के सब नियमों का ध्यान में रखकर बनाया हुआ 'विमला रिफ इन्ड वेजीटेबल आयल' पवित्रता और गुण में बेजोड़ है।

गवर्न्मेन्ट हाइड्रोजनेसन फैक्ट्री
कालीकट – केरला

(एकमात्र जनता की सेवार्थ वनस्पति कारखाना)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिलायी, तो हँस कर बोला –'तुम अप्सरा-सी, रूपवती हो। अब घर जाओ।' सुदाम्नी जब ब्रह्म-राक्षस के पास पहुँची, तो वह बोला–'बहन, तुम सत्यवती हो; तुम्हें खाऊँगा, तो मर जाऊँगा। तुम जाओ।' लंबरदार की बारी आयी, तो उसने भी कहा –'तुम सत्यवती हो, आराम से घर जाओ।' जब चोर की बारी आयी, तो उसने भी कहा–'बहन, तुम्हारे ये आभूषण मेरे साथ जन्म-जन्मांतर तक नहीं जाने वाले हैं। सो इन्हें लेकर क्या करूँगा? तुम घर जाओ।'"

इतना सुना कर, सुमति चारों नौकरों से बोली–"अच्छा, अब यह बताओ कि, धनदत्त, ब्रह्म-राक्षस, लंबरदार और चोर इन चारों में से कौन सबसे भला आदमी था?" जिसने बकरी मारी थी, वह नौकर बोला–"ब्रह्म-राक्षस ने सुदाम्नी को खाया नहीं, वह सबसे उत्तम है।" जो नौकर पहरे पर रहा, वह बोला–"लंबरदार ने सुदाम्नी को सताया नहीं, वह श्रेष्ठ है।" आग लाने वाला बोला–"रात को इतनी रूप-यौवन-संपन्न युवती को पा कर, सुरक्षित घर भेजने वाला धनदत्त सबसे उत्तम है।" ईंधन लाने वाला बोला–"चोर सर्वोत्तम है। उसने आभूषण लिये बिना ही, सुदाम्नी को जाने दिया।"

सुमति समझ गयी– चोर का प्रशंसक ही चोर होगा। आधी रात गये, वह चोर की प्रशंसा करने वाले नौकर को जगा कर बोली–"देखो, मैं तुम पर अनुरक्त हूँ। यदि तुम मुझे बढ़िया वस्त्र-आभूषण खरीद दो, तो मैं तुम्हारी पत्नी बनने को तैयार हूँ।" चोर दौड़ कर गया और सहस्र दीनार ला कर देते हुए बोला–"चलो, अभी यहाँ से भाग चलें।" सुमति ने पिता को बुलवा लिया और सहस्र दीनार समेत चोर को उसके हाथ सौंप दिया।

फिर सोमशर्मा ने वृद्धा की कहानी भी नागश्री को सुनायी–

हरिपुर नाम के शहर में, गंभीरा नाम की बुढ़िया थी। उसकी बेटी हरिणी पास के गाँव के वसुदत्त नाम के बनिये को ब्याही गयी थी। जब हरिणी गर्भवती हुई, तो उसे मोदक खाने की इच्छा हुई। यह समाचार पा कर, गंभीरा नाना प्रकार के लड्डू बना कर, बेटी के घर को चली। रास्ते में घोर वन पड़ता था। वहाँ उसने देखा कि, आठ चोर चले आ रहे हैं। गंभीरा संभल गयी। जब चोर पास आये, तो एक चोर को गाढ़ आलिंगन करके कहा–"बेटा, मेरा पुत्र हूबहू तेरे जैसा ही था। न-जाने बारह साल हो गये, कहाँ चला गया; लौटा ही नहीं। अब तुझे देख कर, जी ठंडा हुआ। चलो, तुम सब पास के गाँव में मेरी बिटिया के घर। एक-दो दिन आराम करना।" मूर्ख चोर साथ हो लिये। गाँव पहुँच कर जब आठों चोर गमछे लपेटे, तेल मल कर नहाने लगे, तो बुढ़िया "चोर-चोर" चिल्ला उठी। चोर जिस दशा में थे, वैसे ही भाग निकले और उन्होंने प्रवंचक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्त संसार में सुपरिचित

लिचेन्सा—गर्म देशों में होनेवाले समस्त प्रकार के चर्मरोगों के लिए निर्दोष तथा आरामप्रद मलहम है। लिचेन्सा खाज़ खुजली, एकज़ीमा, दाद, चकता, फोडा तथा जलन और घाव आदि को शीघ्र आराम करता है। बवासीर की विश्व-विख्यात औषधि 'हडेन्सा' के प्रस्तुतकारक ही लिचेन्सा के भी निर्माता हैं।

सर्वत्र सुलभ

DCZ-2 HIN

लिटिल्स ओरियण्टल बाम

सभी प्रकार की सर्दी दर्द तथा पीड़ा के लिये किसी भी प्रकार की चर्मव्याधि के लिये

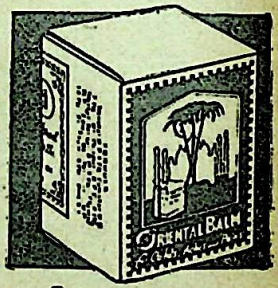

जर्मेक्स

निर्माता :

लिटिल्स ओरियन्टल बाम एन्ड फार्मास्यूटिकल्स लि०

एक्सप्रेस इस्टेट्स, माउन्ट रोड, मद्रास–२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुढ़िया को लूटने की ठान ली। उसी रात को चोरों ने घर में सेंध लगायी। बुढ़िया भी सावधान, तलवार लिये बैठी थी। ज्यों ही एक चोर ने सेंध में सिर डाला, बुढ़िया ने उसकी नाक काट ली। एक-एक करके आठों चोरों ने सिर सेंध में रखा, नाक कटवा ली और भागे।

इतना सुना कर राजपुरोहित सोमशर्मा नागश्री से बोला—"बेटी, धान बेचने के लिए आने वाले कृषकों को, इन कथाओं में उलझा कर, वैमानिक साठ मन के स्थान पर, केवल बीस ही मन तोलता था। और उसका साथी बैन, धीरे-धीरे धान को गुप्त-द्वार से सरका कर, तहखाने में पहुँचा देता था। एक दिन दोनों पकड़े गये, सो राजा ने उन्हें मृत्युदंड दिया है।"

नागश्री बोली—"तो पिताजी, यदि मैं चोरी करूँ, तो मुझे भी सूली पर चढ़ाया जायेगा। इसलिए क्या मैं अस्तेय का व्रत रख लूँ?" राजपुरोहित ने अनुमति दे दी और शेष व्रत वापस करने के लिए दोनों चले। तभी रास्ते में देखा कि, एक पुरुष और स्त्री को हाथ पीठ-पीछे बाँध कर, वध-स्थान की ओर ले जाया जा रहा है। सोमशर्मा ने उसकी भी कथा नागश्री को सुनायी—

चंपा-नगरी के पास श्वेतपुर में, नंद और बोध नामक दो भाई रहते हैं। नंद के मामा की लड़की मोदाली जब माँ के गर्भ में थी, तभी उसका नंद से वाग्दान हो गया था। एक दिन नंद व्यापार करने सुवर्ण-द्वीप चला, तो मामा से कहता गया कि, यदि मैं बारह बरस तक न लौटूँ, तो मोदाली का विवाह बोध से कर दीजिए। बारह बरस बीत गये और नंद आया नहीं। इसपर जब माता-पिता विवाह रचा कर, मोदाली का कन्यादान बोध को कर ही रहे थे, तभी नंद आ पहुँचा। उसे आया देख कर, बोध बोला—"मोदाली मेरे बड़े भाई की पत्नी है; मैं उसे न ग्रहण करूँगा।" नंद बोला—"मोदाली तो मेरे छोटे भाई की हो चुकी; मैं उसे ग्रहण नहीं कर सकता।" यों बेचारी मोदाली कुँआरी ही रह गयी। उसी मोहल्ले में नागशूर नाम का व्यापारी था। दो-दो सुंदर पत्नियों के रहते हुए भी, वह मोदाली से अनुचित सम्बंध रखने लगा। जब एक दिन नागशूर और मोदाली, मेला देखने चंपा-नगरी आये, तो कोतवाल ने उन्हें पकड़ लिया। वे ही ये स्त्री पुरुष हैं। राजा ने इन्हें तपे हुए लोहे की मूर्ति का आलिंगन करा कर मारने का दंड दिया है।

नागश्री बोली—"तो पिताजी, मैं यह स्त्री-पुरुषों के सम्बंध-विषयक विशुद्धता का व्रत रख लूँ?" पिता ने कहा—"हाँ।"

जब वे दोनों आगे बढ़े, तो देखा कि, एक और दृढ़काय पुरुष को, सूली चढ़ाने ले जाया जा रहा है। नागश्री ने कारण पूछा, तो राजपुरोहित ने सारी बात पता लगा कर इस प्रकार सुनायी—

इस पुरुष का नाम है वीरपूर्ण। यह हमारे महाराज की गायों का रखवाला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थायी महत्व की पुस्तकें

	मूल्य		डाक खर्च
रूसी हिन्दी शब्द कोश (संकलक-वीर राजेन्द्र ऋषि)	रु. ३५.००		—
भारत के पक्षी (लेखक-राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह)	१२.५०		१.५०
सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय खण्ड १ व २			
कपड़े की जिल्द	५.५०	प्रत्येक	०.५०
कागज़ की जिल्द	३.००	प्रत्येक	०.८५
राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के भाषण	३.५०		०.८५
स्वाधीनता और उसके बाद (जवाहरलाल नेहरू के भाषण)	५.००		१.३५
भारत की एकता का निर्माण (सरदार पटेल के भाषण)	५.००		१.००
भारतीय कविता १९५३	५.००		१.२०
द्वितीय पंचवर्षीय योजना	४.५०		०.८५
भारत १९५९	३.५०		०.९५
भारत के बौद्ध तीर्थ	२.००		०.३०
जनता का अपना कार्यक्रम	२.००		०.४०
भारतीय वास्तुकला के ५००० वर्ष	२.००		०.२५
हमारे पक्षी	२.००		०.४०

(रजिस्ट्रेशन व्यय अतिरिक्त)

२५ रुपये या अधिक की पुस्तकों पर डाक खर्च नहीं लिया जाता है।

पब्लिकेशन्स डिवीजन

पोस्ट बाक्स नं. २०११, दिल्ली–८

शाखायें :—१, गार्स्टिन प्लेस, कलकत्ता—१

२, प्रास्पैक्ट चैम्बर्स, दादा भाई नौरोजी रोड, बम्बई–१

DA–59/147

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। इसके काम से प्रसन्न हो कर, महाराज ने इसके लिए दैनिक दस गायों के दूध और वार्षिक तीन हजार बोरे अनाज का वेतन बाँध दिया। इस कृपा से वीरपूर्ण का सिर फिर गया और लोभ भी बढ़ गया। जिस किसी की भी कोई बढ़िया दुधारू गाय देखता, तो पकड़ ले जाता और कहता कि, यह महाराज की गोचर-भूमि में घुस आयी थी, सो लौटायी नहीं जायेगी। कल वीरपूर्ण ने महारानीजी की प्रिय गाय कामधेनु को पकड़ लिया, तो बात महाराज तक पहुँची। महाराज ने ने लोभी वीरपूर्ण को प्राण-दंड दिया है।

नागश्री यह सुन कर बोली –"सो पिताजी, असत्य और परिग्रह का सेवन करने पर, इसी प्रकार मैं भी मारी जाऊँगी। क्या सत्य और अपरिग्रह व्रत धर लूँ?"

राजपुरोहित ने "हाँ" कहा। परंतु यों पाँचों व्रत रखने की अनुमति दे कर भी, राजपुरोहित सोमशर्मा जैन-मुनियों से लड़ने अपनी लड़की के साथ, नाग-स्थान जा पहुँचा। वहाँ सूर्यमित्राचार्य और अग्निभूति-मुनि को देख कर, सक्रोध बोला– "ऐ श्रमणो, मेरी पुत्री को व्रत क्यों दिये?"

सूर्यमित्राचार्य तुनक कर बोले– "तुम्हारी पुत्री कौन? हमने अपनी पुत्री को व्रत दिये, तो तुम्हें क्यों ज्वर चढ़ आया?" उन्होंने नागश्री को पास बुलाया, तो नागश्री भी चरण छू कर, उनके पास बैठ गयी। सोमशर्मा इसपर सारे बाजार में –"लुट गया मैं! नंगे श्रमणों ने मेरी बिटिया छीन ली!" यह चिल्लाता हुआ राज-प्रासाद में गया और बोला– "नंगे श्रमणों ने मेरी बेटी छीन ली है; उसे बचाइए।" इस पर राजा चंद्रवाहन अपने मंत्री, सेनापति, दरबारी आदि सबको ले कर, नाग-स्थान आया। नागश्री वहीं बैठी थी। जब राजा ने सारा विषय पूछा, तो सूर्यमित्राचार्य बोले– "यह लड़की हमारी है।" राजपुरोहित चिल्लाया– "बिल्कुल झूठ। नागश्री मेरी बेटी है; मुझे नाग-देवता ने दी थी।"

तब सूर्यमित्राचार्य ने पूछा–"ब्राह्मण, यदि यह तुम्हारी पुत्री है, तो क्या तुमने अपनी बेटी को वेद-शास्त्र पढ़ाये हैं?" राज-पुरोहित को कहना पड़ा कि नहीं। इस पर सूर्यमित्राचार्य बोले–"पर हमने इसे सब वेद-शास्त्र पढ़ाये हैं। नागश्री, तनिक वेद-पाठ तो करो, बेटा।" नागश्री ने जटा-पाठ और क्रम-पाठ की पद्धति से सस्वर ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद पढ़ दिये। राज-दरबार के पंडित-जन "साधु-साधु" कह उठे। राजा चंद्र-वाहन ने निर्णय दिया कि, नागश्री सूर्य-मित्राचार्य की ही कन्या है। तब आचार्यजी ने नागश्री के वायुभूति-ब्राह्मण के रूप में वेदाध्ययन करने की बात और उसके जन्म-जन्मांतरों की सारी कथा सबको कह सुनायी। उसे सुन कर, राजा चंद्र-वाहन को वैराग्य हो गया और उसने वहीं तप आरंभ कर दिया। नागश्री, सोमशर्मा और उसकी पत्नी त्रिवेदी भी तप में निरत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गये। तपःपूत हो कर, क्रमशः शरीर-पात होने पर, वे सभी देवलोक को गये और वहाँ अनेक सागरोपम आयुष्य-पर्यंत दिव्य सुखोपभोग करते रहे।

× × ×

इस अवधि के पश्चात् सोमशर्मा अवंती के करोड़-पति इंद्रदत्त के घर, सूरदत्त नाम से उत्पन्न हुआ। उसका विवाह उसी नगर के एक और करोड़पति की पुत्री यशोमती से हुआ। यशोमती ही पूर्वजन्म में त्रिवेदी थी। उन दोनों के घर नागश्री ने, सुकुमार स्वामी नाम से, एक अत्यंत सुंदर बालक के रूप में जन्म लिया। बालक में धर्म-तेज इतना था कि, उसे देखते ही सूरदत्त सेठ के हृदय में वैराग्य उदित हुआ और वह, नवजात पुत्र को उत्तराधिकारी बना कर, तप करने चला गया। ज्योतिषियों ने यशोमती को बताया कि, सुकुमार अल्पायु है और ज्यों ही किसी जैन-मुनि को देखेगा, वैरागी हो जायेगा।

सुकुमार ने जब यौवन में पदार्पण किया, तो उसका विवाह, बत्तीस देवकन्या-सदृश्य युवतियों से हुआ। बत्तीस पत्नियों के बत्तीस महल थे। सुकुमार पत्नी-परिजनों से घिर कर, बत्तीस करोड़ स्वर्ण-मुद्रा और पंच-महारत्नों की संपदा का उपभोग करने में लग गया। माता यशोमती ने ऐसी व्यवस्था कर दी थी कि, घर में कोई जैन-मुनि न आये।

एक दिन रत्न-द्वीप से एक व्यापारी हीरे-मोती-जड़े लाख-लाख स्वर्ण-मुद्रा के मूल्य के दुशाले बेचने उज्जैन आया। उन्हें ले कर वह सीधे राजा वृषभांक और महारानी ज्योतिर्माला के समीप गया। पर उन्होंने कह दिया– "इतने मूल्यवान् दुशाले हम नहीं खरीद सकते।" इसपर वह व्यापारी, सुकुमार स्वामी के घर आया, तो यशोमती ने बत्तीस बहुओं के लिए बत्तीस लाख दीनार दे कर, बत्तीस बढ़िया दुशाले खरीद लिये।

यह समाचार जब राजा ने सुना, तो आश्चर्यान्वित हो कर, उसने सुकुमार स्वामी का घर देखने की उत्सुकता प्रकट की। यशोमती ने सारे घर में रत्नों से चौक पुरवाये, द्वारों पर हीरे-मोतियों की बंदनवारें बँधवायीं, मणि-कुट्टिमों पर चीनांबर-दुकूल बिछवाये और घृत-दीप एवं मंगल-वाद्यों से राजा का स्वागत किया। राजा यह वैभव देख कर, दंग रह गया। परंतु वहाँ सुकुमार स्वामी को न देख कर, उसने कारण पूछा। यशोमती बोली– "वह तो तो सातवें खंड पर ही रहता है; और आपके आगमन का समाचार उसे विदित नहीं।" सुकुमार को बुलवाया गया, तो माँ से उसने पूछा– "यह कौन हैं?" यशोमती ने बताया– "ये ही हमारे शासक महाराज हैं।" थोड़ी देर में राजा ने देखा कि, सुकुमार की आँखों से आँसू निकल रहे हैं।

फिर जब भोजन परोसा गया, राजा ने देखा– सुकुमार स्वामी भात के प्रत्येक कौर में से चार-छह चावल खाता है, शेष गिरा देता है। भोजनोपरांत कस्तूरी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केसर-मिश्रित ताम्बूल का सेवन करते हुए राजा ने, यशोमती से सुकुमार की आँखों से आँसू आने और उसके पूरा भात न खाने का कारण पूछा, तो यशोमती बोली—"राजन्, मेरे सुकुमार को मणिदीपों के प्रकाश में रहने का अभ्यास है। आपके स्वागत में घी के जो मंगल-दीप जलाये गये हैं, उनके धुँए से उसकी आँखें पीड़ित हो कर आँसू बहा रही हैं। वह प्रतिदिन सद्यो-विकसित कमल-नीलोत्पलों की नाभि में से निकाले गये, कोमल कमल-बीजों के भात का भोजन करता है। आज आप के आगमन पर, बीज और तंडुल मिला कर भात बनाये गये हैं। इसलिए वह भात खा नहीं पाया।" राजा ने सोचा—"सचमुच यह बड़ा सुकुमार है। हम राजा हैं तो क्या? सच्चा सुखोपभोग करना तो सुकुमार स्वामी ही जानता है।" यशोमती ने रत्नोपहार अर्पित कर राजा को विदा किया।

उधर यशोमती के अग्रज दयाभद्र-मुनि, जब ग्राम-नगर, मंडप-पत्तन और द्रोणामुखों में विचरण कर रहे थे, तो उन्हें दिव्य-दृष्टि से यह ज्ञात हुआ कि, उनके भानजे के आयुष्य में, अब केवल चार मास और पाँच दिवस अवशिष्ट हैं। वे उसपर अनुग्रह करने की इच्छा से उज्जैन आ कर, आषाढ़ चतुर्दशी को सुकुमार स्वामी के महल के उपवन में स्थित जैन-मंदिर के द्वार पर उपस्थित हुए। बहन यशोमती ने उनकी उचित स्वागत-पूजा करके पूछा—"भट्टारक, आप यहाँ क्यों पधारे, नगर के बाहर क्यों नहीं ठहरे?" मुनि बोले—"अब तो जाना असंभव है, मुझे ज्वर आ गया है।" यशोमती बोली—"तो जब तक ज्वर है, आप यहीं रहें; परंतु मौन धारण कर मंदिर के तहखाने में रहें; और ज्वर उतरते ही यहाँ से पधारें।" यशोमती ज्योतिषी की भविष्य-वाणी को स्मरण कर के चिंतित थी। दयाभद्र-मुनि भी बहन के बताये ढंग से वहाँ रहने लगे।

कार्तिक मास आ गया और एक दिन सुकुमार स्वामी अपने प्रासाद के सप्तम-खंड की चंद्रशाला में बैठ कर, पूर्णिमा की चंद्रिका का सेवन कर रहा था। उसी दिन दयाभद्र भट्टारक का ज्वर उतरा और वे मौन तोड़ कर, अति मधुर-गंभीर स्वर में 'त्रिलोक-प्रज्ञप्ति' का पाठ करने लगे। उसमें अधोलोक, तिर्यग्लोक और ऊर्ध्वलोक का वर्णन था। उसमें से ऊर्ध्व-लोक के पद्म-गुल्म का वर्णन सुकुमार स्वामी के कानों में पड़ा। उसे सुन कर उसे जाति-स्मृति (पूर्व-जन्म का स्मरण) हो आयी और उसने मन-ही-मन कहा—"अहो, स्वर्ग सुख-रूपी अमृत-सागर की समस्त जल-राशि का पान करने पर भी जिसकी प्यास नहीं बुझी, वह मैं, अब इन तुच्छ सांसारिक सुखों में डूब कर, शिव-शाश्वतिक सुख देने वाले सच्चारित्र्य से विमुख हो रहा हूँ।" तुरंत ही वह उठा। उस खंड पर जितने भी दुशाले, रेशमी प्रावारक आदि मिले सबको बाँध कर, रस्सी-सी बना कर, उसके सहारे चुपचाप प्रासाद से उतरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सबकी नजर बचा कर, उद्यान के जिन-मंदिर में प्रविष्ट हुआ। वहाँ भगवान् की वंदना कर, उसने दयाभद्र भट्टारक के चरणों में पड़ कर निवेदन किया– "गुरुवर्य, मुझे संसार सागर से तारिए।" दयाभद्र भट्टारक ने दया-द्रवित होकर कहा– "वत्स, तुम्हारी अब केवल तीन दिन की आयु शेष है। अतः तप करो।" वहीं सुकुमार ने दीक्षा ली और पंचव्रत धारण कर "सम्यक्त्व" स्वीकार किया और नगर की उपकंठ-भूमि में महाकाल नामक स्मशान में, यावज्जीवन उपवास का संकल्प कर, संन्यास ले कर, धर्मध्यान और शुक्ल-ध्यान के जप के साथ ध्यान करने लगा।

आज तक उसने मणि-कुट्टिमों पर बिछे दुकूलों से नीचे चरण नहीं रखे थे। जब वह नंगे पैर स्मशान को चला, तो कंकर-पत्थर और काँटों से उसके सुकोमल चरण-तल छिद गये; उनमें से रुधिर-धार बह चली; सारा मार्ग रुधिर-बिन्दुओं से सिक्त हो गया। उसी रक्त को सूँघते-सूँघते एक शृगाली और उसके पाँच बच्चे स्मशान में आ गये। यह शृगाली और कोई नहीं, अग्निभूति की पत्नी सोमदत्ता थी, जिसने पुत्रों-समेत वायुभूति का मांस खाने की प्रतिज्ञा की थी। उसने और उसके बच्चों ने, प्रथम दिवस सुकुमार स्वामी की पिंडलियाँ खायीं; परंतु सुकुमार ध्यान-निमग्न रहा। दूसरे दिन शृगालों ने उसकी दोनों ऊरुएँ खायीं; तब भी सुकुमार का ध्यान न टूटा। तीसरे दिन शृगालों ने उसके धड़ को चीर कर, कलेजा खाना आरंभ किया। तब शुक्लध्यान में निमग्न हो कर, रत्नत्रय को साध कर, सुकुमार स्वामी ने शरीर-त्याग किया और सयसत्तम देव का रूप धारण किया।

उधर तीन दिन से सुकुमार की खोज में मारी-मारी फिरती यशोमती भी, महा-काल-स्मशान में आयी। उसने देखा कि, देवगण आ कर सुकुमार स्वामी की स्तुति कर रहे हैं, देव-दुंदुभियाँ बज रही हैं। उसने पुत्र की मृत्यु को समझ कर, अपनी बत्तीसों बहुओं को सज-धज कर आने को कहला भेजा। वे सब दिव्य-रत्नालंकार-भूषित हो कर आयीं, तो यशोमती ने उन्हें देवों के गिराये हुए सुमनों की राशि दिखायी। बहुओं ने फूल हटाये, तो वहाँ सुकुमार स्वामी की शृगाल-भक्षित देह पड़ी थी। बहुएँ बहुत रोयीं-कलपीं। पर अंत में वे, यशोमती तथा अन्य सब बंधु-परिजन, दयाभद्र भट्टारक से दीक्षा ले कर, उग्र तप कर, अपवर्ग-सुख को प्राप्त हुए।

उज्जैन के दक्षिण में देवी-देवताओं ने सुकुमार स्वामी के शरीर को कालागरु, गोशीर्ष, चंदन आदि जिन गंधद्रव्यों से पूजा था, वे सब पिघल कर, वहाँ गंधवती नामक पवित्र नदी बन गयी; और देवताओं की स्तुति एवं देव-दुंदुभियों की कलध्वनि से तथा बहुओं के कलपने की ध्वनि से निनादित वह स्थान, कलकलायत नामक सिद्धायतन बन गया, जहाँ आज भी मुमुक्षु श्रावक पूजा करते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाचुलीन

बालकोकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.

GUJARAT

बी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : बम्बई-२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे
आपकी
बचत की
जरूरत है

और देश को भी

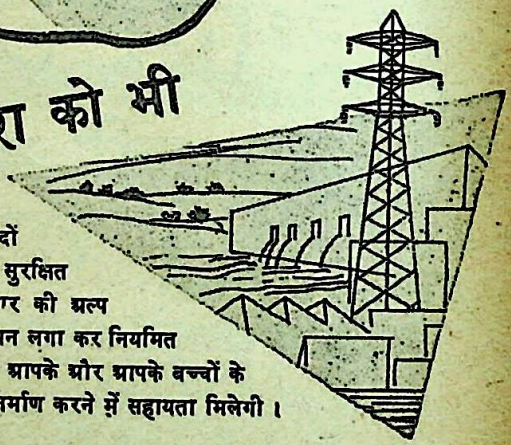

राष्ट्रीय बचत की मदों
द्वारा इसका भविष्य सुरक्षित
कीजिए। भारत सरकार की अल्प
बचत सिक्यूरिटियों में धन लगा कर नियमित
रूप से बचाइये। इससे आपके और आपके बच्चों के
लिए समृद्ध भारत का निर्माण करने में सहायता मिलेगी।

- १२-वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत सर्टिफिकेट
- १०-वर्षीय राजकोष बचत जमा सर्टिफिकेट
- १५-वर्षीय वार्षिकी सर्टिफिकेट
- डाकघर बचत बैंक जमा
- बढ़ने वाली सावधिक जमा योजना

राष्ट्रीय बचत संगठन

नेशनल सेविंग्ज कमिश्नर; नागपुर अथवा आपके राज्य के रीजनल नेशनल सेविंग्ज अफसर आपको सहर्ष अधिक जानकारी प्रदान करेंगे।

योजना की सिद्धि
आपकी समृद्धि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

DA 69/129

फैशन में नई रोशनी

महिलाओं के चरणों में चार चाँद—बाटा की हवाई वेजेज़। विभिन्न फैशन की माँग पूरी करने के लिये विभिन्न स्टाइल। घरेलू वातावरण में 'शोभा'—महफ़िल में 'शीला' और शृंगार में 'नीलिमा'। पहली दोनों की एँड़ियाँ कुछ ऊँची हैं—शिथिल चाल भी हो जाती है सुन्दर-सुदृढ़। तीसरी के हैं सेलुलर सोल—चलिये तो मानो बादलों पर तिरती हों।

बाटा शू कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी इंडियन स्मैल्टिंग एंड रिफ़ाइनिंग कम्पनी लि०

"इन्डस्ट्री हाऊस", १५६, चर्च गेट रीक्लेमेशन, बम्बई—१

केबल : 'ISARC' ★ फोन : { २४५००६ २४६२६१

ब्रेजिंग सोल्डर इंगोट्स (धातुओं की सिलें), ग्रेनूल्ज़ (छोटे दाने) तथा कोल्ड-रोल्ड इन्डस्ट्रियल ब्रास शीट्स, स्ट्रिप्स (पत्तियाँ) व कोयल्स का निर्माण करके

उद्योग की सेवा करती है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बी·ओ·ए·सी कॉमेट 8 के द्वारा

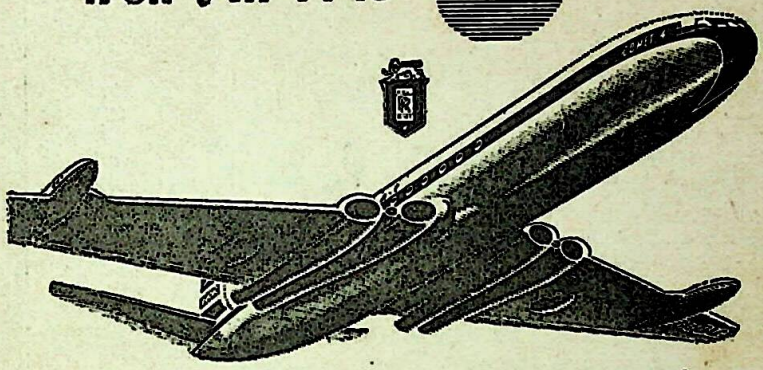

पश्चिम को:

करांची, तेहरान, बहराइन, बेरूट, रोम, ज़्यूरिक, फ्रैंकफ़र्ट, लन्दन, मॉन्टरिएल, न्यू यॉर्क और उसके आगे सैन फ्रैंन्सिसको* तक

पूर्व को:

कोलम्बो, रंगून, बैंकॉक, सिंगापुर, हांगकांग* और टोकियो*

और उसके बाद प्रशान्त महासागर के पार *दूर गामी जेट-प्रॉप **ब्रिटैनिया** के द्वारा

बी.ओ.ए.सी. द्वारा नियुक्त अपने स्थानीय यात्रा एजेंण्ट या बी.ओ.ए.सी. के बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास कार्यालयों से मिलिए और पूँछ-ताछ कीजिए।

ब्रिटिश ओवरसीज़ एयरवेज़ कॉर्पोरेशन क्वान्टास, ई.ए.ए., एम.ई.ए. और टी.ई.ए.एल. के सहयोग में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Divali Greetings

to

The Readers of

NAVANEET

from

COMMERCIAL ART ENGRAVERS PRIVATE LIMITED

The makers of distinguished

QUALITY BLOCKS

in Line, Halftone & Multi-Colours such as

Printed on Covers of this Magazine throughout the Year

Blocks from oriental paintings and colour transparencies to any size—a speciality

SARASWATI MANDIR
4th Floor,
Tutorial School Bldg.,
Kennedy Bridge, Grant Road,
BOMBAY-7.

Phone: 71769 Phone: 71769

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनमानुस की प्रेम-कहानी

एक समय की बात है...एक बनमानुस को चाँद-सी सुन्दर लड़की से प्यार हो गया। बनमानुस दिखने में कुरूप ज़रूर था पर उसका दिल आइने की तरह साफ़ था। यह तो अंधे को भी दिखता कि वह सुन्दरी भी उससे प्यार करने लगी थी।

लड़की की माताजी फूट-फूट कर रोयीं और कहने लगीं, "एक बनमानुस और मेरा दामाद! हाय राम, यह कैसा अन्धेर है!"। इस पर लड़की के पिताजी धीरज बँधाते हुए बोले, "अच्छा... बस... बस..."।

माताजी का पारा तो चढ़ा ही हुआ था, वे बरस पड़ीं, "अब बस-बस ही कहते रहोगे या कुछ करोगे भी?"

कुछ देर बाद वह नेकदिल बनमानुस माताजी की सेवा में पहुँचा और उन्हें पैरी की मिठाइयाँ भेंट कीं।

उसी शाम आख़िरी मिठाई खाते हुए वे लड़की के पिताजी से बोलीं, "सुनते हो, बेचारा बनमानुस है तो क्या हुआ? बढ़िया चीज़ों की परख तो रखता है!"

पिताजी ने सुना और मुस्कुरा दिये। वे तो सब-कुछ समझ ही गये थे!

तात्पर्य :

लोगों का दिल जीतने के लिए उन्हें Parry's पैरी की मिठाइयाँ भेंट कीजिए

पैरी की मिठाइयाँ शुद्ध, स्वादिष्ट और स्वास्थ्यकर होती हैं। ये छुट्टी या रु. १.७५ से लेकर रु. ५.०० तक की क़ीमत के रंग-बिरंगे डिब्बों में मिलती हैं।

बनानेवाले: पैरीज़ कन्फ़ेक्शनरी लिमिटेड, मद्रास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिल्क आफ मेगनेशिया

मेगनेशिया मेगमा यु० एस० पी०

वयस्क, बालक और शिशु सभी
के लिए सुरक्षित व कार्यकारी

अम्लनाशक तथा रेचक

हमेशा ही खरीदें.....

MARTIN & HARRIS (PRIVATE) Ltd. INDIA & BURMA

एम एंड एच मार्का

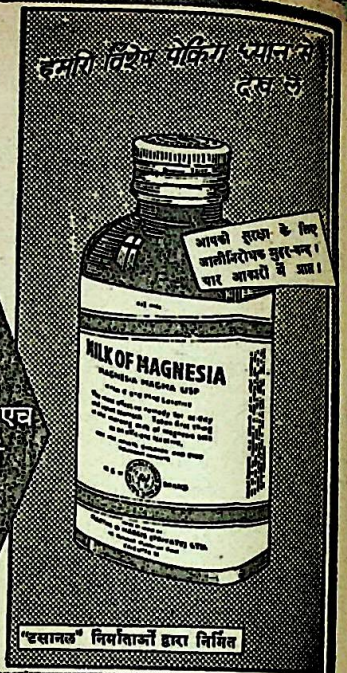

"इसानल" निर्माताओं द्वारा निर्मित

MANUFACTURED IN INDIA BY
MARTIN & HARRIS (PRIVATE) LTD.
18, ASHUTOSH MUKHERJEE ROAD, CALCUTTA 20

गैस-पेटदर्द के लिये

गैसहर पिल्स गैस-वायु, गोला, बादी, कब्ज, पेट का दर्द, शूल, डकारें, पेट का भारीपन, और गैस-वायु विकृति के कारण पैदा होने वाली शिकायतों के लिए उपयोगी, खुराक हजम करके दस्त साफ लाकर भख बढ़ाती है। १८ वर्षों से गैस-वायु पेट दर्द के लिये उपयोगी होने वाली आयुर्वेदिक औषधि, वैद्य, डाक्टर तथा अस्पताल में इस्तेमाल की जाती है। ५० गोलियों की शीशी १.५० रु. (१॥), १५० गोलियों की बड़ी शीशी ४)

शक्ति स्फूर्ति और स्वास्थ्य के लिए :

दुग्धानुपान गोलियां-पाचनक्रिया सुधार कर दस्त साफ लाने वाली, रस, रक्त रुधिर इत्यादि सप्त धातुओं को पोषण देकर दिमागी ताकत, जीवन शक्ति और वजन बढ़ाने वाली ३१ वर्ष की प्रसिद्ध शक्तिवर्द्धक; आयुर्वेदिक औषधि, ३२ गोलियों की शीशी रु. १.५० (१॥), ९६ गोलियां बड़ी शीशी रु ४) वी० पी० खर्च अलग। हर जगह दवावाले बेचते हैं।

बनानेवाले दुग्धानुपान फार्मेसी, गाँधी चौक, जामनगर (सौराष्ट्र)

होलसेल स्टाकिस्ट–देहली–जमनादास कं० चाँदनी चौक। वाराणसी–राधेलाल सन्स चौक। जयपुर–नटवर मेडिकल स्टोर्स, चांदपोल। सहारनपुर–शर्मा मेडिकल हाल रानीबाजार। अजमेर–मेहता ब्रदर्स, मदार गेट। बम्बई–वी ओ ब्रदर्स ७९ प्रिंसेस स्ट्रीट, कलकत्ता–सौराष्ट्र स्टोर्स १८ मल्लिक स्ट्रीट। कानपुर–प्रवीणचन्द्र जयन्तीलाल, ५८.७७ बिरहना रोड। मथुरा–रामानुज फार्मेसी छत्ताबाजार। मंडलाफोर्ट–रामनाथ लक्ष्मणप्रसाद मोदी। शाहजहांपुर–गंगा आयुर्वेदिक स्टोर्स सदरबाजार।

CC-0 Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विख्यात 'गाय - छाप'
प्रतीक द्वारा प्रस्तुत !

SEVASHRAM PRODUCTS
REGD.
TRADE MARK
UDAIPUR

ब्राह्मी-आँवला तैल | सार्सापरिला | द्राक्षासव

ये उत्पादन जमाने की कसौटी पर खरे उतरे हैं और लाखों का विश्वास प्राप्त किया है।

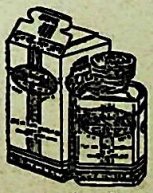

मातृ-जीवन | काला दंतमंजन | ब्राह्मी-जीवन

आयुर्वेद सेवाश्रम लि० उदयपुर (राजस्थान)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

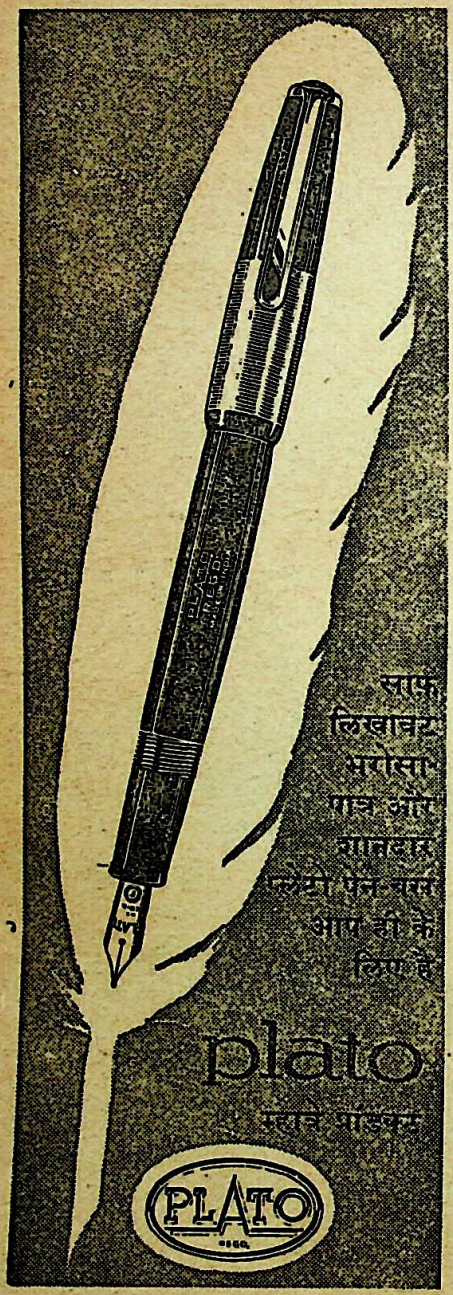

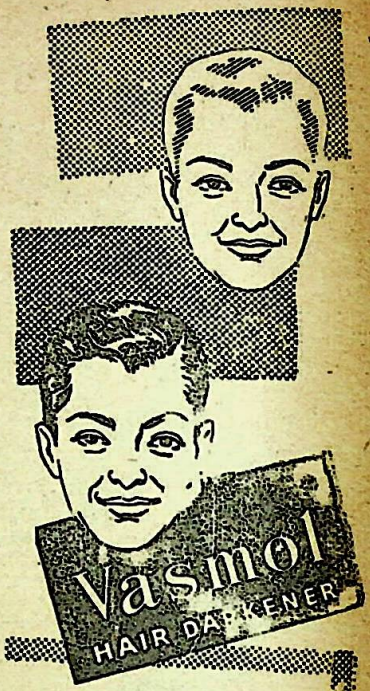

- भूरे बालों को प्राकृतिक चमकदार काला बनाता है
- बालों के बढ़ने में मदद करता है
- मनमोहक सुगंध वाला केश सज्जा के लिए आदर्श

सभी दुकानों और केमिस्टों से तेल या वेसलीन रूप में मुहर-बन्द बोतलों में प्राप्य

हाईजिनिक रीसर्च इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बाक्स ११९२, बम्बई-१
बम्बई, मध्य प्रदेश और राजस्थान के
सोल एजेन्ट : अकबरअली इब्राहिमजी
३८-सी, कावसजी पटेल स्ट्रीट, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

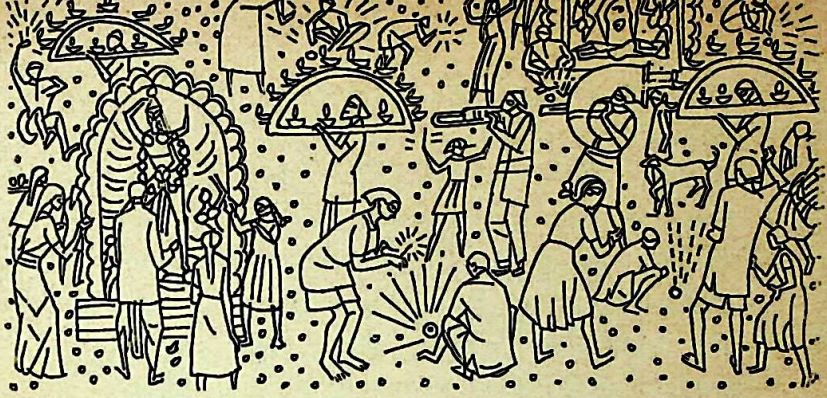

डॉज

डीज़िल ट्रकें तथा बसें

फ़ार्गो

दीवाली की बधाई

दि प्रीमिअर
ऑटोमोबाइल्स
लिमिटेड,
बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"शक्कर के उत्पादन के बारे में हिन्दुस्तान सरकार को उतनी ही अनास्था है, जितनी देश के औद्योगिक विकास के प्रति। हमारे उपयोग के लिए जितना गन्ना और शक्कर आवश्यक है उतना उत्पादन देश को स्वयं करना ही होगा। इस उद्देश्य को सफल बनाने के लिए विस्तृत कार्यक्रम का बनाना, उसे पूरा करने का उत्साह रखना और व्यवसाय को आवश्यक सुरक्षा प्राप्त होना भी अवश्यम्भावी है। अपनी ही सरकार इस कार्य के उत्तर-दायित्व को सोच समझकर उसे सफल बनाने का उचित प्रयत्न कर पायेगी।"

उपरोक्त विचार लोकमान्य टिलक ने 'केसरी' के २२-९-१९०३ के अंक में प्रकट किये थे। श्री. बाबा-साहेब डहाणुकर ने लोकमान्य के इन विचारों से स्फूर्ति ग्रहण कर शक्कर के कारखाने की स्थापना की और लोकमान्य-स्मृति में नगर का नाम भी 'टिलक-नगर' रखा। आज लोकमान्य हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके गंभीर, निश्चयी एवं महान् व्यक्तित्व के समन्वय से बनी हुई प्रस्तर-मूर्ति हमें सतत स्फूर्ति प्रदान कर रही है।

'महाराष्ट्र शुगर मिल्स लिमिटेड' टिलक-नगर के रौप्य महोत्सव के अवसर पर लोकमान्य-स्मृति में सादर समर्पित।

कमल छाप श्वेत दानेदार शक्कर के निर्माता

महाराष्ट्र शुगर मिल्स लिमिटेड,

कारखाना : टिलक-नगर

मुख्य कार्यालय :-इंडस्ट्रियल एशोरेन्स बिल्डिंग्स
चर्चगेट, बम्बई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वागतार्थ....

आपके घर की छोटी से छोटी वस्तु भी आपके घर का रूप बदलकर, आपके मेहमानों का ध्यान आकर्षित कर सकती है। उदाहरणार्थ, 'सेन्चुरी रेयान' के बुने हुए 'फर्निशिंग फेब्रिक्स आपके घर को सुव्यवस्थित और सुन्दर रूप प्रदान करते हैं। इसका कारण है– 'सेन्चुरी रेयान' के फेब्रिक्स सजावट के विविध आकर्षक रंगों में आते हैं।

और फिर इतने सस्ते भी !

Century Rayon

हम देश के ३५% 'रेयानयार्न' के निर्माता हैं– और 'रेयानयार्न' जोकि ऊंची किस्म का होता है।

सेन्चुरी रेयान

निर्माता : सेन्चुरी स्पिनिंग एण्ड मेन्यफेक्चरिंग कं. लि०
इंडस्ट्री हाउस, चर्चगेट, बम्बई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नव वर्ष एवं दीपावली के

अभिनंदन और शुभ कामनाएँ

चिमनलाल पेपर कं०

उच्च किस्म के कागज़ तथा बोर्ड के आयातकर्त्ता

Distributors

Shree Gopal Paper Mills Ltd.

बाम्बे म्यूचुअल बिल्डिंग

हार्नबा रोड, फोर्ट, बम्बई–१

पो. बाक्स नं. १४७५

टेलिफोन

ऑफिस : २६३२३२

एक्सटेन्शन : ऑफिस–सेल्स : २६२०४१–४२

टेलिग्राम

'SELECTION'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

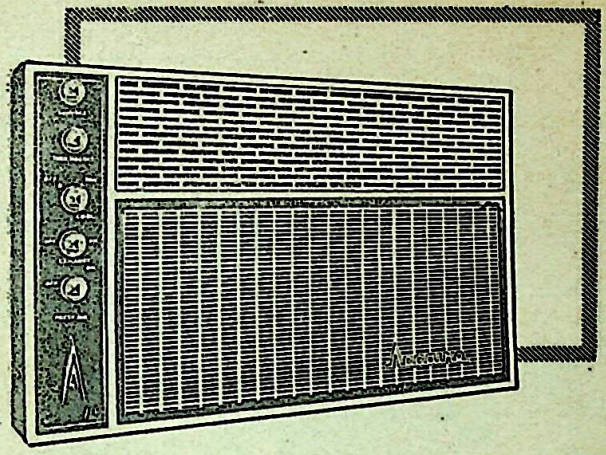

आराम...और निपुणता के लिए

ऍकायर— ए. डब्ल्यू. १०२ ए. सी.
डी. डब्ल्यू. १०२ डी. सी.

खिड़कीनुमा कमरे को ठंडा बनानेवाला

- कम कीमत
- शान्तिपूर्ण कार्य
- कष्टरहित सेवा
- एक साल की जिम्मेवारी

एकूलर—वाटर कूलर्स

- ठंडे स्वास्थ्यदायक जल की निरन्तर प्राप्ति
- जंगसे रक्षित 'केविनट'
- आसानी से लगाने योग्य

सुसंगठित
सेवा
आपके आदेशार्थ

एअर कन्डीशनिंग कोर्पोरेशन प्रा. लि.

कलकत्ता बंबई नयी दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्गम सड़कों पर और विभिन्न प्रकार के वजनवाली वस्तुओं के लिए

मजबूत 'बेडफोर्ड' ट्रक अपने सुप्रसिद्ध नाम के अनुसार ही संसार की मजबूत से मजबूत ट्रकों में अग्रगण्य है। इसका बनावट हर प्रकार के असाध्य कार्य के उपयुक्त है।

सुदृढ़ फ्रेम, मजबूत नए स्प्रिंग्स, 'विश्वस्त ब्रेक' और असाधारण बोझा उठाने की शक्ति इत्यादि इन सब गुणों के कारण बेडफोर्ड उत्तमता और मितव्ययिता से माल ढोने-ले जाने का काम करती है।

बेडफोर्ड डिजल व पेट्रोल

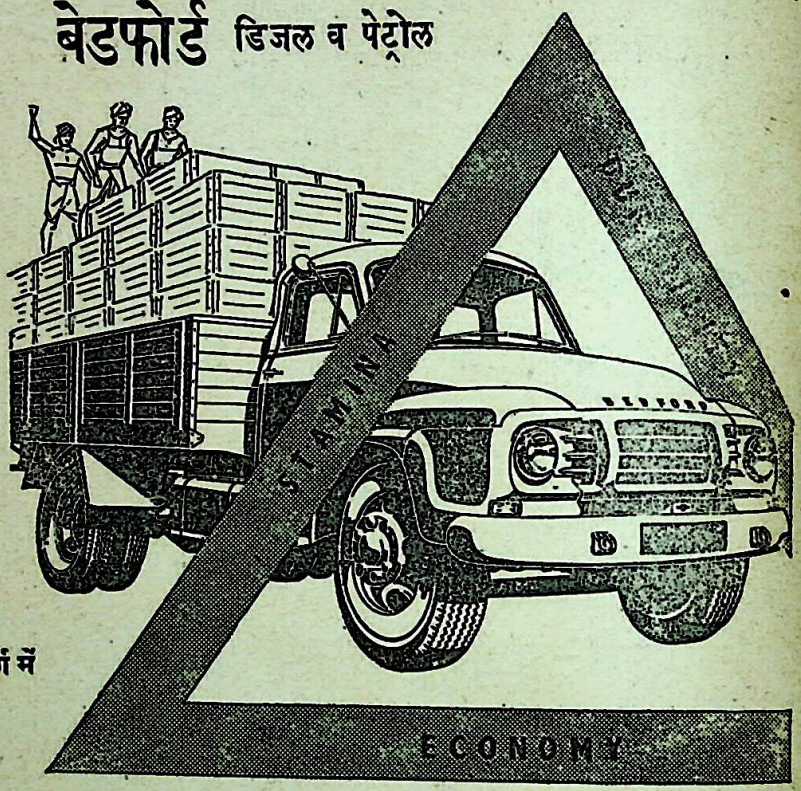

अपने वर्ग में न्यूनतम कीमत

कीमतः— बेडफोर्ड १६७" डब्ल्यू. बी. डिजल चेसिस रु. २३८४१.
बेडफोर्ड १६७" डब्ल्यू. बी. पेट्रोल चेसिस रु. १७८८०. एक्स प्लांट उत्तर पारा (कलकत्ता)

हिन्दुस्तान मोटर्स कॉरपोरेशन लि. द्वारा 'हायर परचेज' की सुविधा जनक किश्तों पर भी 'बेडफोर्ड' बेची जाती है। विस्तृत जानकारी के लिए अपने पास के विक्रेता से सम्पर्क साधिये।

टेक्स अतिरिक्त
बेडफोर्ड जनरल मोटर्स का उत्पादन विश्व के सबसे बड़े वाहन निर्माता।

हिन्दुस्तान मोटर्स लि. ८, इन्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता-१

अधिकृत विक्रेता :—आगरा, अम्बाला केन्ट, अजमेर, अहमदाबाद, अहमदनगर, इलाहाबाद, बड़ौदा, बंगलौर, भोपाल, बुरहानपुर, बम्बई, बरेली, कालकना, कटक, कोयम्बतूर, देहरादून, दुर्ग, दुमका, डिब्रूगढ़, धनबाद, गौहाटी, इम्फाल, इन्दौर, जयपुर, जबलपुर, जोधपुर, जलगाँव, जारहाट, जमशेदपुर, जालन्धर सिटी, जम्मू, कानपुर, कोल्हापुर, लखनऊ, मुजफ्फरपुर, मद्रास, मदुराई, मंगलौर, मैसूर, नागपुर, नयी दिल्ली, नेपाल, पटना, पूना, पांडीचेरी, राजकोट, राँची, सम्बलपुर, शिलांग, सिकन्दराबाद, सिलचर, श्रीनगर, सतना, तेजपुर, तनौर, त्रिवेन्द्रम, वाराणसी केन्ट, विजयवाड़ा, विजयानगरम् सिटी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

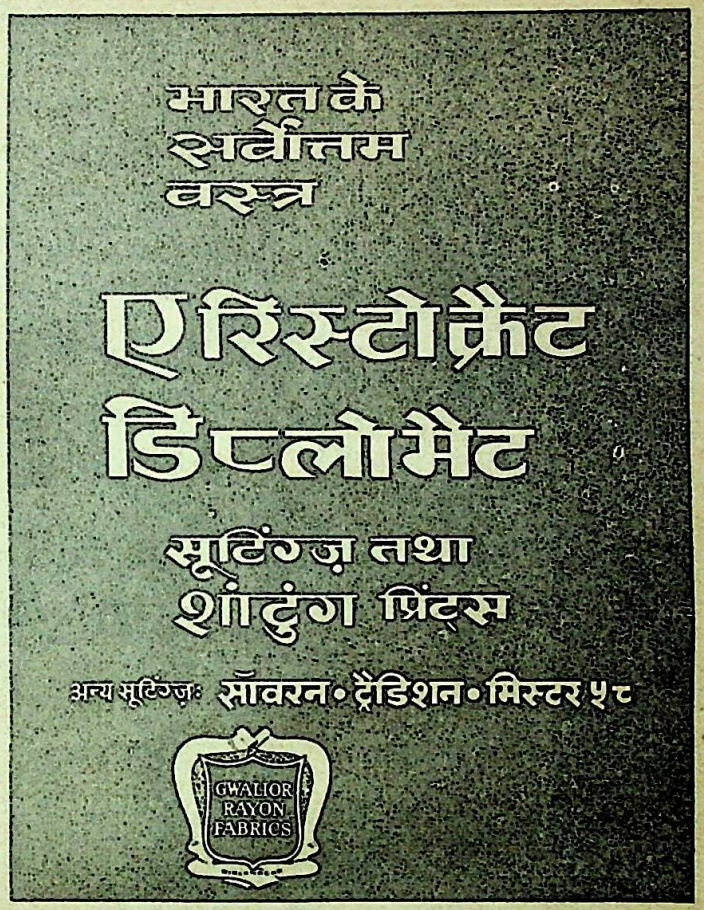

निर्माताः

ग्वालियर
रेयन

अन्यविशेषतायें:
शार्कस्किंज़, शर्टिंग्ज़, टेपैस्ट्रीज़ तथा वैल्वेट्

GR-113

ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यू. (वीविंग) कं. लि.
बिरलानगर (म.प्र.) भारत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

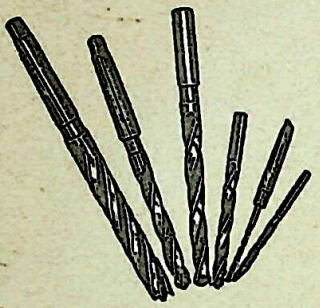

ड्रिल

टैप

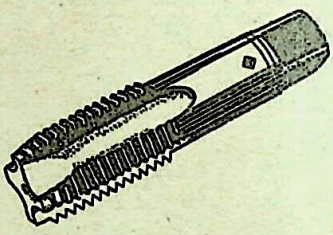

कटर

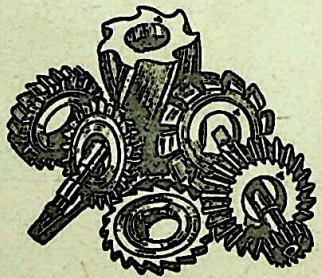

दी इंडियन ट्रूल मैन्यूफैक्चरर्स लि.

१०१, शीव रोड, बम्बई २२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्माता
रतनकुमार

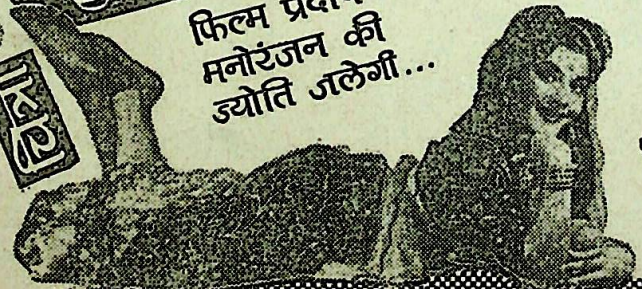

दिग्दर्शक: बाबुभाई मिस्त्री
छाया: आगा हाशम

रतन पिक्चर्स
मदारी

संगीत: कल्याणजी आनंदजी
नृत्य निर्देशन: सत्यनारायण

बम्बई स्टेट : ब्लैक एण्ड ह्वाइट मूवी डिस्ट्रिब्यूटर्स, नाज बिल्डिंग, बम्बई ५.
वर्ल्ड-राइट : फारवर्ड फिल्म्स, ३, सी-नाझ बिल्डिंग, बम्बई ५.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेवा के हमारे आराध्य

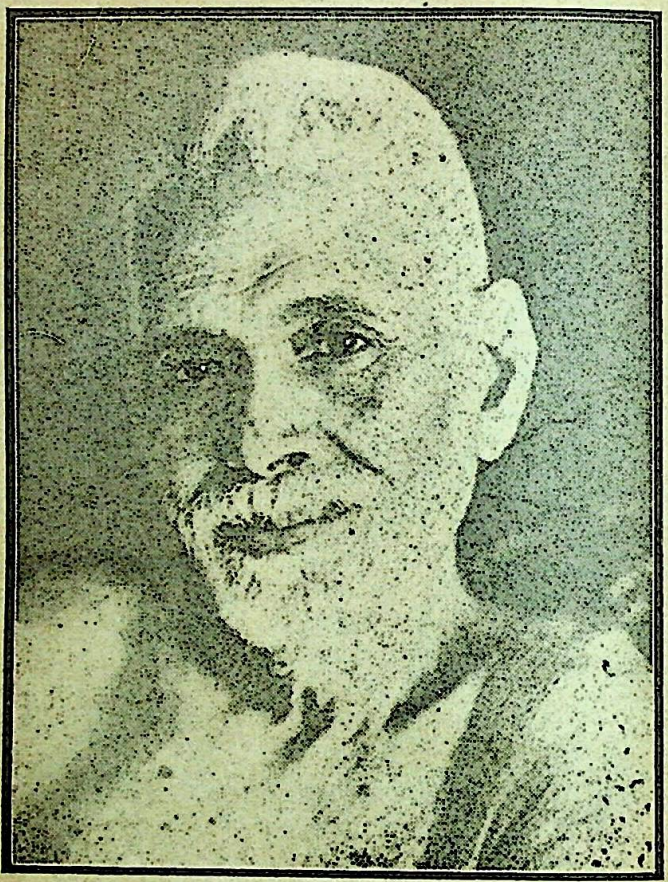

नववर्ष सबके लिए मंगलमय हो

कलात्मक लाईन, हाफटोन एवं रंगीन ब्लाकों के सुप्रसिद्ध शिल्पी

शंकर ऐंड कम्पनी

धोबीवाडी, ठाकुरद्वार रोड, बम्बई–२

टेलिफोन नं. २९६५७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे हाथकरघे

युग युगों से करोड़ों लोगों के रहन-सहन को सौष्ठवपूर्ण बनाने में हमारे ये हाथकरघे महत्वपूर्ण योग देते आये हैं। आजकल के कुटीर उद्योगों में सर्वाधिक फलने-फूलने वाला यह हाथकरघा उद्योग ७० लाख बुनकरों की रोजी का साधन है। ये बुनकर ही सुन्दर वस्त्रों की दुनियां में अपने उत्कृष्ट शिल्प-कौशल के बल पर भारत की परम्परागत ख्याति की अखंड ज्योति जलाये हैं।

भारतीय अर्थ व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी

अखिल भारतीय हाथकरघा बोर्ड
पोस्ट बैग नं० १०००४
बम्बई-१

ALL INDIA HANDLOOM BOARD

डी०ए० ५६/२३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने लिभर को जागृत
करने के लिए
बाई-कोलेट्स
का सर्वदा
व्यवहार कीजिए

★ REGISTERED USERS OF TRADE MARK AND SOLE AGENTS.

MARTIN & HARRIS (PRIVATE) LTD.

CALCUTTA • BOMBAY • MADRAS • DELHI

☆ पेन्ट ब्रसेज
☆ प्लास्टिलक्स ड्राय डिटेम्पर्स
☆ गंगाज सुपर ह्वाइट
☆ जर्मलिरस्क (डी. डी. टी.)

सम्पर्क कीजिये

गंगा ब्रश कंपनी,
कपड़ा बाजार, बम्बई १६

बच्चे इसे पसन्द करते हैं,
और साथ में इसे भी...

जीपला
बालामृत
और
ग्राइप वाटर
बच्चों को स्वस्थ रखता है.
जीपला बम्बई १२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री शक्ति मिल्स लिमिटेड

क्वालिटी रेयोन व नायलोन वस्त्रों के निर्माता

मील नं. १.
हैन्स रोड,
महालक्ष्मी,
बम्बई–११

टेलीफोन नं.
७७३५१ (दो लाईनें)

मील नं. २.
सुपारीबाग रोड,
परेल,
बम्बई–१२

टेलीफोन नं.
६३३८८

मैनेजिंग एजेंट्स :

पोदार सन्स प्राइवेट लिमिटेड

पोदार चेम्बर्स,
पारसी बाजार स्ट्रीट, बम्बई–१
टेलीफोन नं. २५९२६१ (सात लाइनें)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टेलीफोन द्वारा तार शीघ्र मिलते हैं

अपने तार के पते पर पाने वाले के नाम के साथ टेलीफोन नम्बर भी लिखिये। जैसे कि :—

बनर्जी, टे.फो. ३१६७०
नयी दिल्ली

ज्यों ही यह सन्देश तारघर में पहुंचेगा टेलीफोन द्वारा उसे यह सन्देश भेज दिया जायगा। इससे जो समय सन्देशवाहक पहुंचाने में लेगा वह बच जाएगा।

यह सस्ता भी पड़ेगा, क्योंकि टेलीफोन नं० जिनमें टेफो शब्द भी सम्मिलित है, केवल एक शब्द गिना जाता है।

यह सुविधा वहीं उपलब्ध है जहां स्थानीय फोन सर्विस है।

सन्देश की एक प्रति उसी दिन पहली डाक से भेज दी जाएगी।

टेलीफोन द्वारा अपना तार प्राप्त कीजिए

कुछ शहरों में आप अपना तार टेलीफोन पर प्राप्त कर सकते हैं। भले ही भेजने वाले ने आपका फोन नं० न लिखा हो। इसके लिए आपको तारघर में अपने फोन नं० को रजिस्ट्री करवा लेनी होगी। इसके पश्चात् आपके सभी तार आपको फोन द्वारा भेज दिये जाएंगे, जिनकी एक प्रति आपको डाक से भी मिला करेगी। यह सुविधा आगरा, अहमदाबाद, इलाहाबाद, अमृतसर, बंगलौर, बम्बई, कलकत्ता, कोयम्बटूर, दिल्ली, इन्दौर, कानपुर, मद्रास, नागपुर, नयी दिल्ली, सलेम और सिकन्दराबाद में मिल सकती है।

आपकी अच्छी सेवा के लिए हमें सहयोग दीजिए

डाकतार विभाग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैंक
विश्वासपूर्ण

संपूर्ण भारत में फैली हुई ३७५ से अधिक शाखाएँ और संपूर्ण संसार में सुचारू रूप से संचालित ओवरसीज़ एजेन्सियाँ।

कार्यगत कोष	१६८ करोड़ रुपये से अधिक
जमा धनराशि	१३५ करोड़ रुपये से अधिक

दि
पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित सन् १८९५ इं०
प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असमानता के अंधकार को दूर करने लिए
फिल्म रूपी दीपक में प्रगट होगा.....

सदाशिव चित्र

दीदी

निर्माता सदाशिव जे. राव कवी संगीत एन. दत्ता
दिग्दर्शक के. नारायण काले गीत साहिर

कलाकार : सुनीलदत्त – जयश्री
शुभा खोटे, सज्जन, फिरोज, डेझी, हनी, ओमप्रकाश और ललिता पवार
कथा : वाइ० जी० जोशी, पटकथा-संवाद : रामानंद सागर

आगामी परिवर्तन] राक्सी [बसंत फिल्म्स हिन्दी मूवीज़ प्रकाशन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोजन - खाद्य
ज्यादा स्वादिष्ट और
पौष्टिक करने के लिये

स्वदेशी
वनस्पती

इसमें विटामिन 'ए' और 'डी' भी हैं!

दी बिरार स्वदेशी वनस्पती
शेगांव

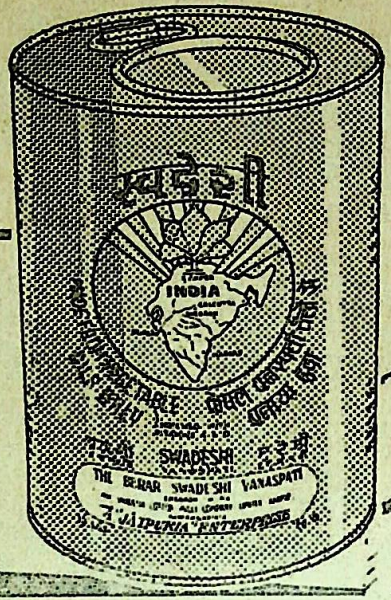

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी हस्तशिल्प वस्तुओं के बारे में

आभूषण

लालित्यपूर्ण सरलता-उच्चकोटि की कारीगरी—असाधारण बहुमूल्यता के गुणों से सम्पन्न आभूषण-विशेष रूप से निर्मित—फंशनप्रिय अथवा सादगी पसंद महिलाओं बच्चों या वधूओं के लिए। विविध आकर्षक नमुनों में गुणों के लिए सर्वप्रिय—हमारी कलात्मक अभिव्यक्ति के सुन्दर प्रतीक

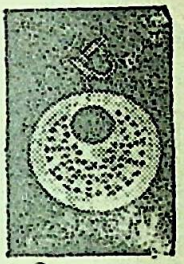

अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड
वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय

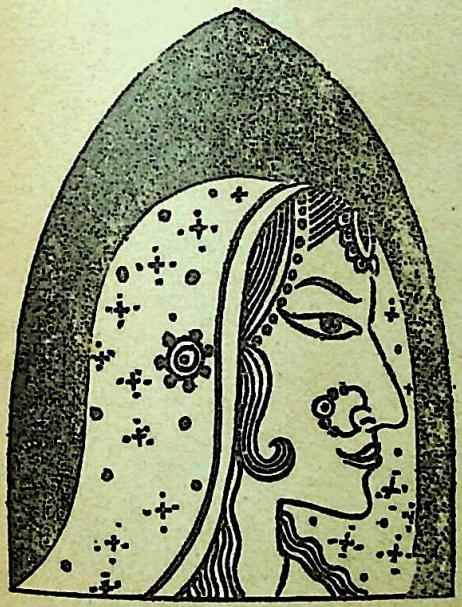

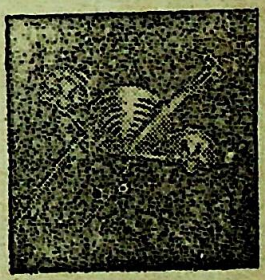

भारत सरकार,
नयी दिल्ली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्त्रियों के स्वास्थ्य और सुख के लिए

लोध्रा

केसरी कुटीरम
प्राइवेट लि.
रोयापेट्टा, मद्रास-१४

SISTA'S

हमारे प्रकाशन

कविता कौमुदी (उर्दू)	मूल्य ८)
नटखट बालक : लोकप्रिय कथाकार	मूल्य १-५०)
सागर की गोद में	मूल्य १)
नवनीत की छः माही जिल्दें	मूल्य ५)

नवनीत प्रकाशन लि०

३४१ तारदेव, बम्बई-७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीघ्र यातायात सेवा

निश्चित समय पर माल पहुंचाती है।

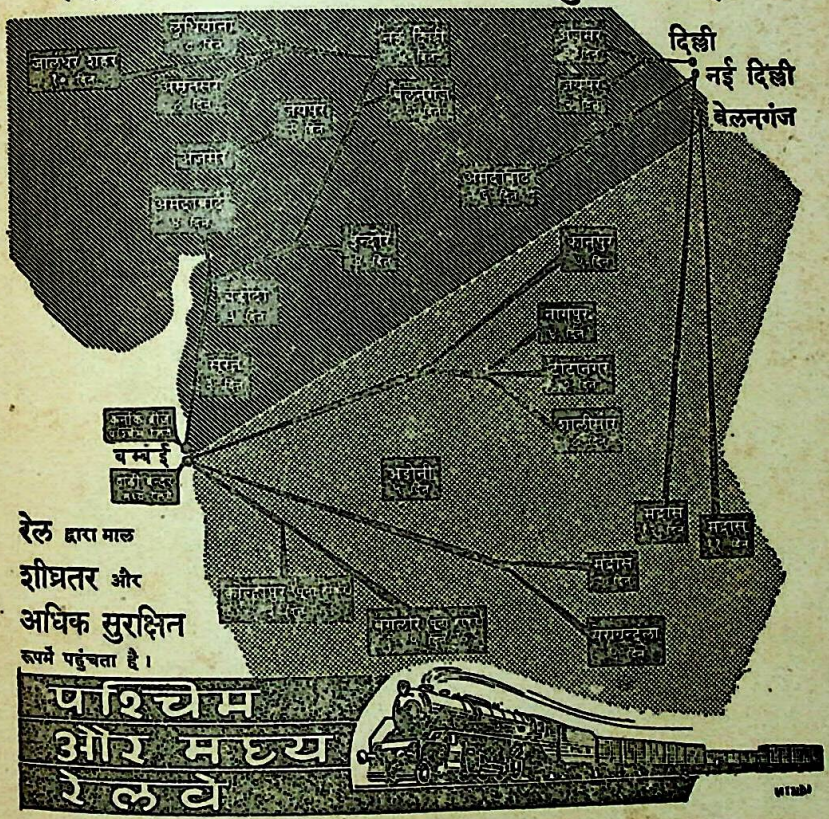

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंगल दीपावली

हमारे सभी आश्रयदाताओंका
इस शुभ अवसर पर मोदमयी
दीपावली और हर्षभरे नूतन
वर्ष की शुभकामनाओं से
हम अभिनन्दन करते हैं।

जे.बी. मंघाराम ॲण्ड कं.
ग्वालियर

J. B. 46. H

जे. बी. मंघाराम एन्ड कं., गनबो स्ट्रीट हार्नबी व्यू बिल्डिंग, बम्बई

श्री रतनलाल जोशी द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, १४१ तारदेव, बम्बई-७ के लिए प्रकाशित
तथा एसोसियेटेड ऐडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत के प्रथम...
अबतक सर्वोत्तम!

प्रभात के उत्पादन

हमें जनताको आश्वासन दिलाते हुए हर्ष होता है कि हम उनके सहयोगसे औद्योगिक स्वतंत्रता एवं आत्म-निर्भरता की मंजिल की ओर अपने राष्ट्रकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिये हम अपने लघु दायरेमें उत्कृष्ट प्रगति कर रहे हैं।

प्रभात (स्टोव ॲण्ड लैम्प) प्राडक्टस कम्पनी प्राइवेट लि.

नोबल चैम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई-१

K. S K.

इस अंक का मूल्य रु. १.५०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

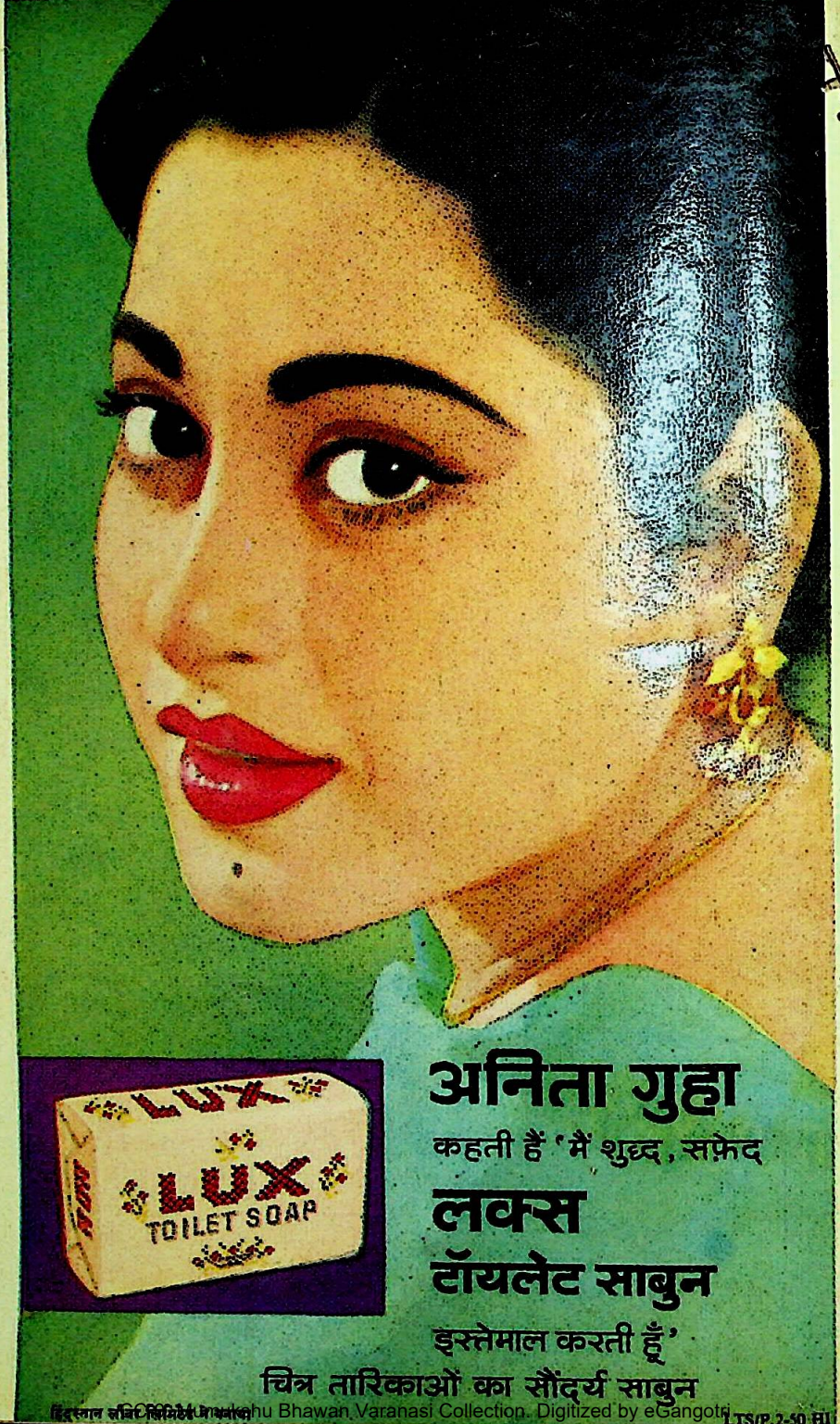

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

दिसम्बर

१९५९

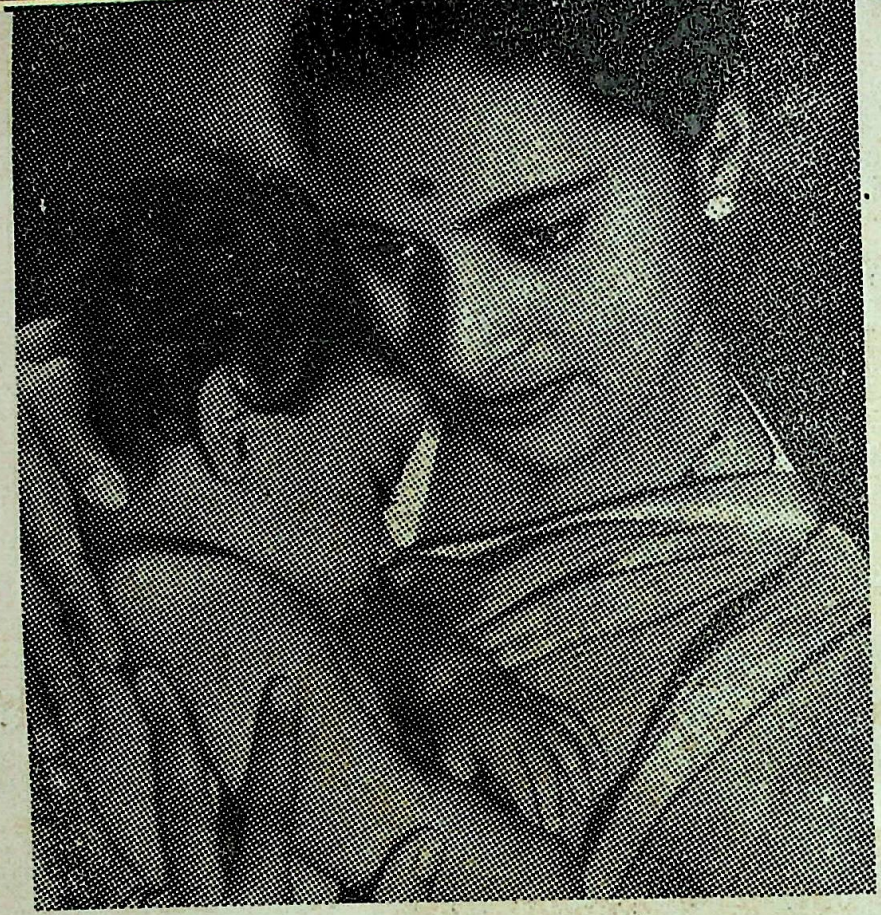

पालन पोषण के लिए मां की ममता और ऑस्टरमिल्क

मां की छाती से लगा मुन्ना कैसा प्रसन्न है, कैसा संतुष्ट! इस लिए कि मां उस का पालन पोषण ऑस्टरमिल्क से करती है जो कि शुद्ध दूध का आहार है। इस में वे सब गुण हैं जो मां के दूध में होते हैं। मुन्ने के लिए ऑस्टरमिल्क बनाते समय, आप की ममता सदा हमारे ध्यान में रहती है।

मुफ़्त! ऑस्टरमिल्क "पुस्तिका" (अंग्रेज़ी में)...बच्चों की देख भाल के बारे में सभी आधुनिक सूचनायें! डाक खर्च के लिए, ५० नये पैसे, इस पते पर भेजिये "ऑस्टरमिल्क, P. O. Box No. 202, बम्बई १।"

मां के दूध के समान

फ़ैरेक्स, मुन्ने का पहला ठोस आहार! जब मुन्ना चार पांच महीने का हो जाये तो उसे फ़ैरेक्स दीजिये जो अनाज का एक पौष्टिक मिश्रण है।

OS. 2-50-B. HI

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि. मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोहक, मुलायम एवं घने
बालों के लिए

केशा

स्पेशियल

बालों का असमय गिरना बन्द कर
उन्हें बढ़ाने का विशिष्ट गुण ही
नहीं रखता लेकिन अपनी
अनुपम सुगन्ध से आप को
हर समय प्रफुल्लित रखता है।

सोल एजेन्ट
एम. एम. खम्भातवाला
अहमदाबाद १

एजेन्ट
सी. नरोत्तम एन्ड कं.
बम्बई २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आराम
के लिये
डनलपिलो

तोशक तकिये गद्दियां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

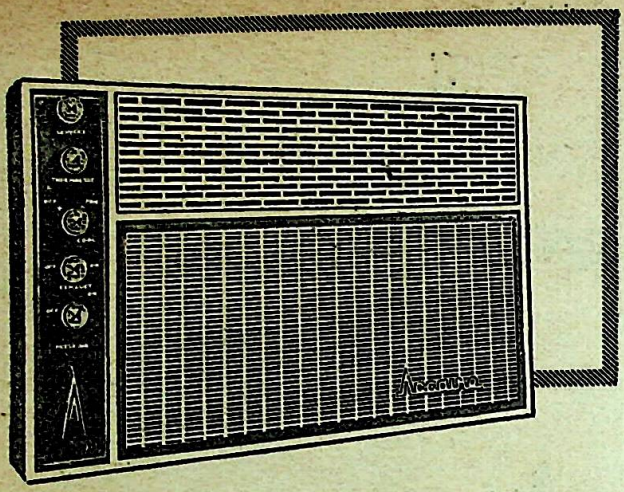

आराम...और निपुणता के लिए

ऍकायर-- ए. डब्ल्यू. १०२ ए. सी.
डी. डब्ल्यू. १०२ डी. सी.

खिड़कीनुमा कमरे को ठंडा बनानेवाला

- कम कीमत
- शान्तिपूर्ण कार्य
- कष्टरहित सेवा
- एक साल की जिम्मेवारी

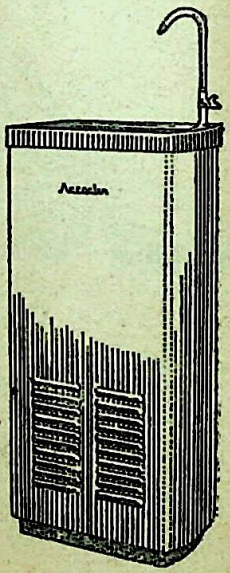

एकूलर–वाटर कूलर्स

- ठंडे स्वास्थ्यदायक जल की निरन्तर प्राप्ति
- जंगसे रक्षित 'केबिनट'
- आसानी से लगाने योग्य

सुसंगठित
सेवा
आपके आदेशार्थ

एअर कन्डीशनिंग कोर्पोरेशन प्रा. लि.

कलकत्ता बंबई नयी दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजकुमार और उसकी बिल्ली

एक समय की बात है, एक सुंदर राजकुमार ने एक बिल्ली पाल रखी थी। वह बिल्ली हरदम उसके क़दमों पर लोटी रहती थी। एक दिन एक दयालु परी ने उस बिल्ली को एक सुंदर राजकुमारी बना दिया। उसका रूप देख कर राजकुमार दिलो-जान से उस पर फ़िदा हो गया। बस, दोनों की शादी हो गयी!

कुछ दिनों बाद परी ने राजकुमारी की परीक्षा लेनी चाही। उसने एक चूहा राजकुमारी के कमरे में भेज दिया। राजकुमारी तो अस्ल में बिल्ली थी ही, झपट पड़ी उस चूहे पर! बस, परी ने उसे फिर से बिल्ली बना दिया! इस पर बेचारा राजकुमार बहुत रोया और कहने लगा, "काश, मैंने इसे पैरी की मिठाइयाँ ला दी होतीं तो आज यह नौबत न आती!"

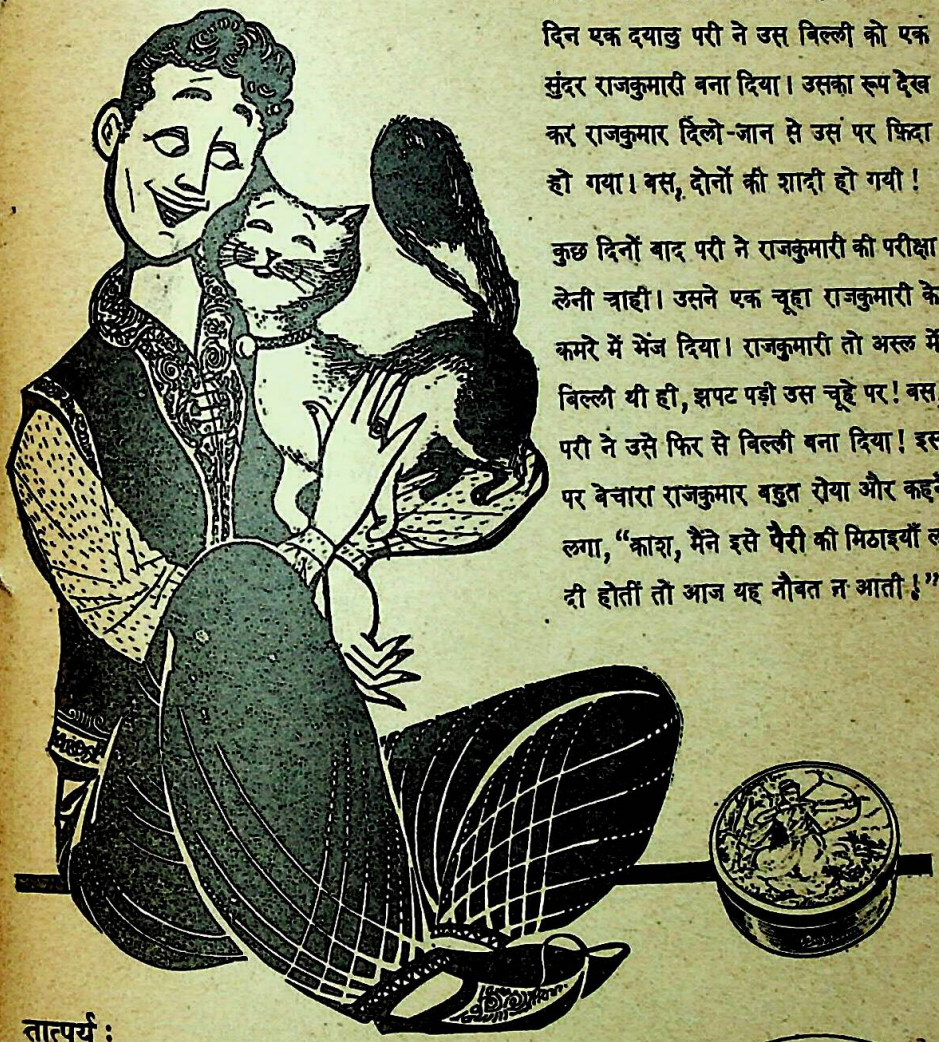

तात्पर्य :

अपने चहेतों को हमेशा **पैरी** की मिठाइयाँ दीजिए

पैरी की मिठाइयाँ शुद्ध, स्वादिष्ट और स्वास्थ्यकर होती हैं। ये छुट्टी या रु. १.७५ से लेकर रु. ५.०० तक की क़ीमत के रंग-बिरंगे डिब्बों में मिलती हैं।

Parry's

PRS 582

बनानेवाले: पैरीज कन्फ़ेक्शनरी लिमिटेड, मद्रास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

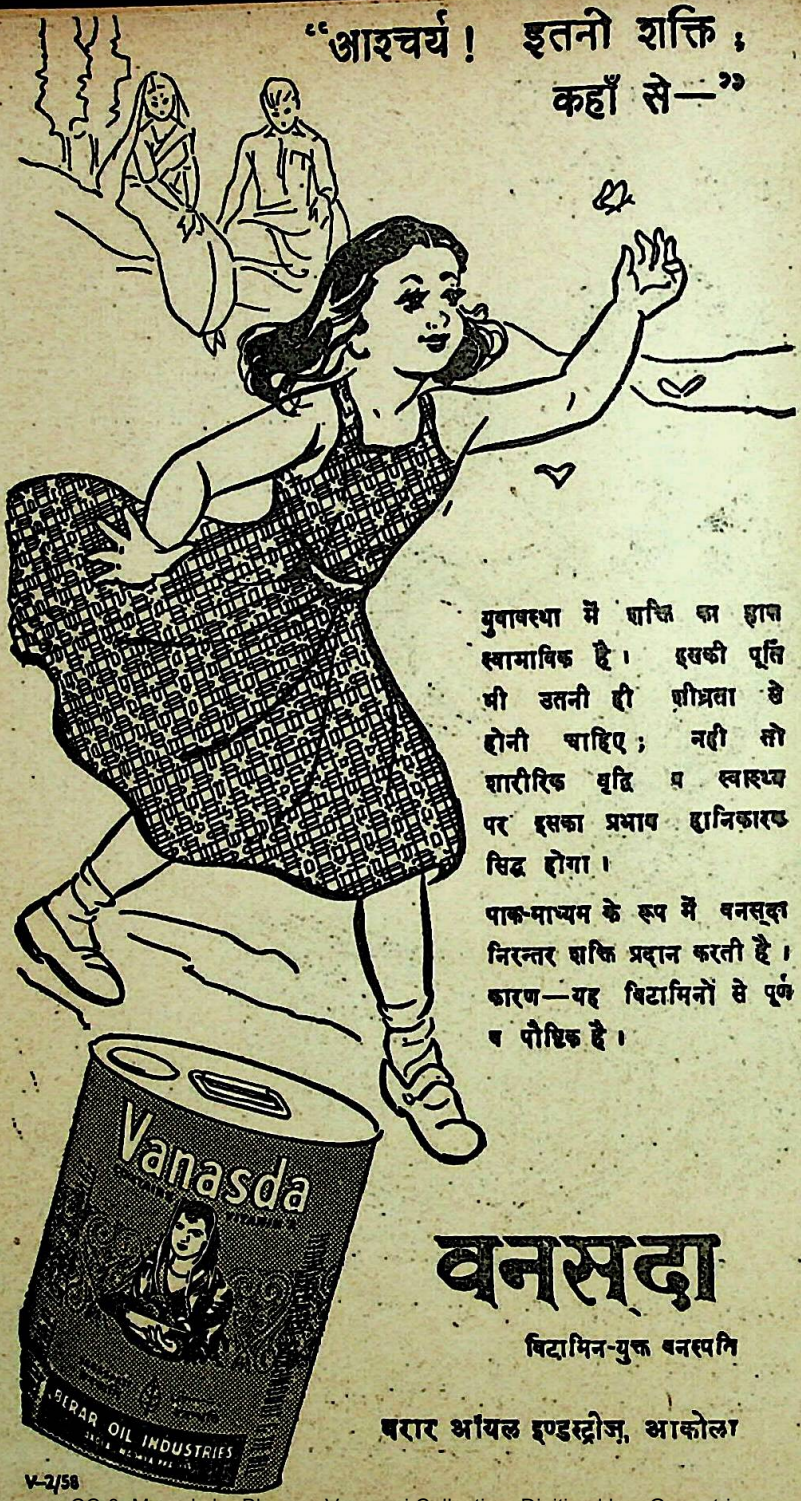

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिलचस्प मेहमाँनवाज़ी

घर में कितने भी मेहमान क्यों न आयें? उन की मेहमाँनवाज़ी के लिये अगर साथ में पार्ले के मोनेको बिस्कुट हों तो हो गया आप का काम! हर एक कुरकुरे मोनेको बिस्कुट पर थोड़ीसी भेल, चटनी या कुछ चटपटी चीज़ रखकर उन्हें खिलाइये। इस का बेहतरीन स्वाद वे मुश्किल से भूल सकेंगे।

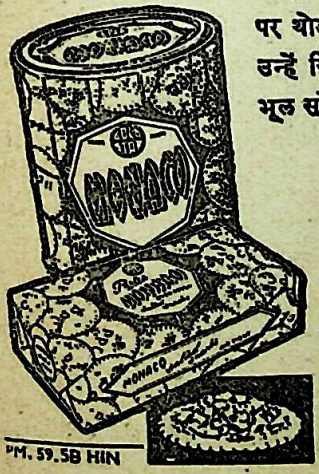

पार्ले के

मोनेको

रवारे बिस्कुट

पार्ले प्रॉडक्टस मैन्युफॅक्चरींग कंपनी
प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई-२४.

PM. 59.5B HIN

EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी संसार में सर्वोत्तम कोश

बृहत् हिन्दी कोश – द्वितीय संस्करण। १३६००० शब्द। सर्वाधिक शब्द, अर्थ और मुहावरे। सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज, आकर्षक और मजबूत जिल्द। मूल्य २५·००।

ज्ञान शब्द कोश – परिवर्धित संस्करण। बृहत् हिन्दी कोश का लघु रूप। कागज छपाई, जिल्द आदि बड़े कोश की ही तरह। मूल्य १५·००।

पारिभाषिक शब्द कोश – राजकीय कार्यों में प्रयुक्त ५ हजार अंग्रेजी शब्दों की परिभाषा तथा हिन्दी अर्थ। सुविधा के लिए हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिन्दी अर्थ दे दिये गये हैं। मजबूत जिल्द। कागज, छपाई उत्तम। विद्वानों द्वारा प्रशंसित। मूल्य ४.००।

हिन्दी साहित्य कोश – हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के ८५ प्रमुख विद्वानों एवं डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा आदि पांच सम्पादकों द्वारा अध्ययन और अध्यापन सम्बन्धी पूरी सामग्री प्रस्तुत। इस ग्रंथ पर भारत सरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस ग्रन्थ के द्वारा हिन्दी में प्रयुक्त अनेकानेक प्राचीन और नवीन साहित्यिक, पारिभाषिक शब्दों का प्रामाणिक अर्थ, वादों और प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक और शास्त्रीय परिचय, साहित्यिक भाषा और बोलियों का भाषा वैज्ञानिक विवेचन तथा शिष्ट और लोक-साहित्य के विभिन्न अंगों की उपयोगी जानकारी प्राप्त होगी। छपाई, कागज उत्तम। जिल्द मजबूत और आकर्षक। मूल्य २०.००।

अपने समीप के प्रमुख विक्रेता से इन्हें खरीद कर संग्रह कर लें। न मिलने पर इस पते से मंगा लें:–

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, कबीरचौरा, वाराणसी–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माँ हमेशा हमाम ख़रीदती हैं

THY-1 HIN

चिकने, मुलायम झाग...
त्वचा को कोमल करनेवाले नये
रसायन की करामात!
सफ़ाई के साथ-साथ
ताज़गी...
'हमाम इस्तेमाल करने में
कितना उम्दा और सुगन्धमय है।
चलता भी खूब है...
कितना कमख़र्च है!

हमाम से नहाकर
ताज़गी और सुगन्ध का आनन्द लीजिए।

सारे परिवार का मन-पसन्द- हमाम यह एक टाटा-उत्पादन है-अवश्य ही उम्दा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घरों में

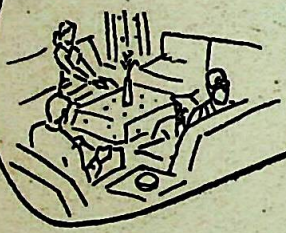

फर्श पर लिनोलियम बिछाइये।
इसके गुण और सुविधाएं :

- विभिन्न रंगों के अनेक डिजायन
- लचकीलेपन के कारण आवाज-रोधक
- कम खर्चीला और टिकाऊ
- स्वच्छ और सफाई में सुगम

लिनोलियम

आधुनिक फर्श का बिछावन

बिछाने की सेवा
विशेषरूप से प्राप्य

इण्डिया लिनोलियम्स लि० ८, इण्डिया एक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता-१

स्टाकिस्ट और वितरक सर्वत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

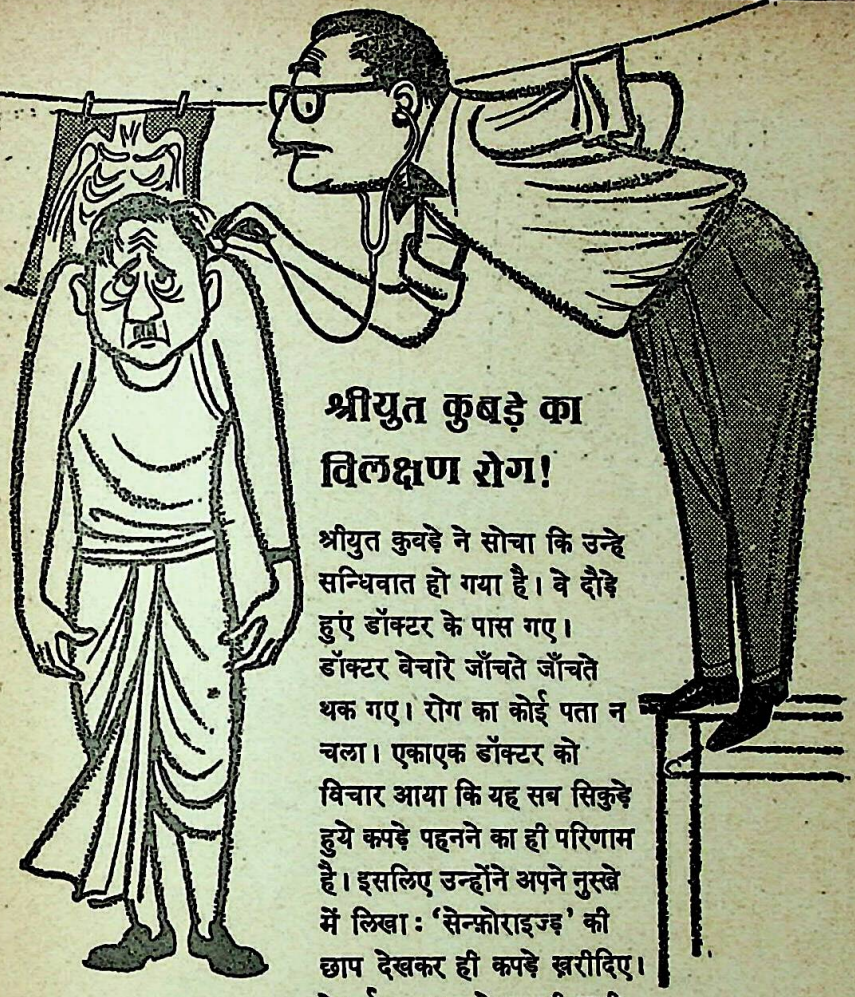

श्रीयुत कुबड़े का विलक्षण रोग!

श्रीयुत कुबड़े ने सोचा कि उन्हे सन्धिवात हो गया है। वे दौड़े हुएं डॉक्टर के पास गए। डॉक्टर बेचारे जाँचते जाँचते थक गए। रोग का कोई पता न चला। एकाएक डॉक्टर को विचार आया कि यह सब सिकुड़े हुये कपड़े पहनने का ही परिणाम है। इसलिए उन्होंने अपने नुस्खे में लिखा: 'सेन्फ़ोराइज्ड़' की छाप देखकर ही कपड़े ख़रीदिए। ये कई बार धुलने पर भी कभी सिकुड़ कर तंग नहीं होते हैं।

लेबल पर ·SANFORIZED· REGD TO MK यह छाप

देख लीजिए फिर आप के कपड़े कभी सिकुड़कर तंग नहीं होंगे!

रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क 'सेन्फ़ोराइज्ड़' के मालिक क्लुएट, पीबॉडी एण्ड कं. इन्कॉपोरेटेड (सीमित दायित्व सहित यू. एस. ए. में स्थापित) द्वारा प्रचारित। 'सेन्फ़ोराइज्ड़' ट्रेड मार्क केवल उन्हीं कपड़ों पर लगाने की अनुमति दी जाती है जो इस कंपनी द्वारा निर्धारित कपड़ा न सिकुड़ने की कड़ी शर्तों को पूरा करते हैं।

अधिक जानकारी के लिए: 'सेन्फोराइज्ड़' सर्विस, ९५, मरीन ड्राइव, बम्बई-२

SAN. 58-5B HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह पुस्तक मंगवाइ ये

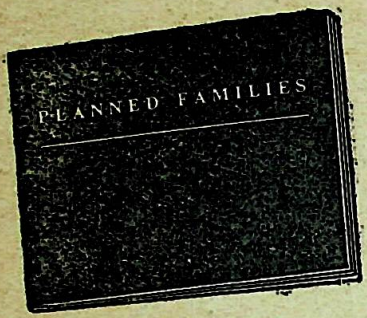

आधुनिक परिवार-नियोजन के ज्ञान की कमी के कारण पति पत्नि को कितनी ही चिन्ताओं और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस पुस्तक में उन सब प्रश्नों के बेझिझक उत्तर दिये गए हैं जिन्हें हम हल नहीं कर पाते। 'प्लान्ड फेमीलीज' नामक यह पुस्तक बड़े स्पष्ट तरीके से बिना किसी संकोच के लिखी गयी है। विवाहित जीवन की साधारण से साधारण रात-दिन आ खड़ी होनेवाली हर समस्या का समाधान इसमें मौजूद है। हर विवाहित दम्पति को अपने पास इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। आप अपनी प्रति शीघ्र मंगवा लें, और—बिल्कुल मुफ्त ही।

आज ही इस कूपन को भरकर भेज दीजिए।

L.D. SEYMOUR & CO. (INDIA) PRIVATE LTD.,
Dept—: 8
Thoburn House, Apollo Bunder, Bombay-1.
Agents for-
"DUREX" and "DURAPAC" contraceptives.
Please send me under PLAIN COVER a free copy of "Planned Families". I am an adult.
NAME .....
ADDRESS .....
.....
.....

ब्रांकाइटिस जल्द ही ठीक हो जायगी

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली जग-प्रसिद्ध

पेप्स टिकियाँ लीजिए।

पेप्स की गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली गोलियाँ बहुत शीघ्रता से गले की तक्लीफ़, ब्रांकाइटिस, खाँसी और सर्दी ठीक करने में सहायक होती हैं। पेप्स की गोलियाँ चूसिए और उनका करिश्मा देखिए—दर्द को मिटाने और कीटाणुओं का नाश करने में वे कितनी सहायता देती हैं।

FPV 56 HIN

पेप्स

गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली टिकियाँ

सभी औषधि-विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं।

सी. ई. फुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट :

केम्प एण्ड कं. लि., पो, बा. ९३७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत से पूर्व या पश्चिम

सर्वोत्तम हवाई सफर कीजिए...

FLY TWA

TRANS WORLD AIRLINES

TWA.S-174

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी

युनाइटेड कमार्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय – २, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूँजी.....८,००,००,०००
लागत पूँजी.....४,००,००,०००
चुकती पूँजी.....२,००,००,०००
सुरक्षित कोष.....१,४८,००,०००
चालू कोष.....११४,००,००,०००

(३१–१२–५८) समाप्त

शाखाएँ

भारत में – सभी प्रमुख नगरों तथा व्यापारिक व औद्योगिक महत्त्व के सभी कस्बो में।

पाकिस्तान में – चटगांव व करांची।

बर्मा में – रंगून, मोलमेन, मांडले।

मलाया में – सेरांगून रोड़, सिंगापुर, पेनांग, कौला लुमपुर, क्लांग।

यू. के. – लंदन।

अन्य – हांगकांग और काझलून।

एजेंट – विश्व में हरजगह – यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है, तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्सचेंज का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्वव्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक संबन्धी सेवा प्रदान करती है।

जी. डी. बिडला
चेयरमेन

एस. टी. सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब कार्पेट्स में सर्वश्रेष्ठ!

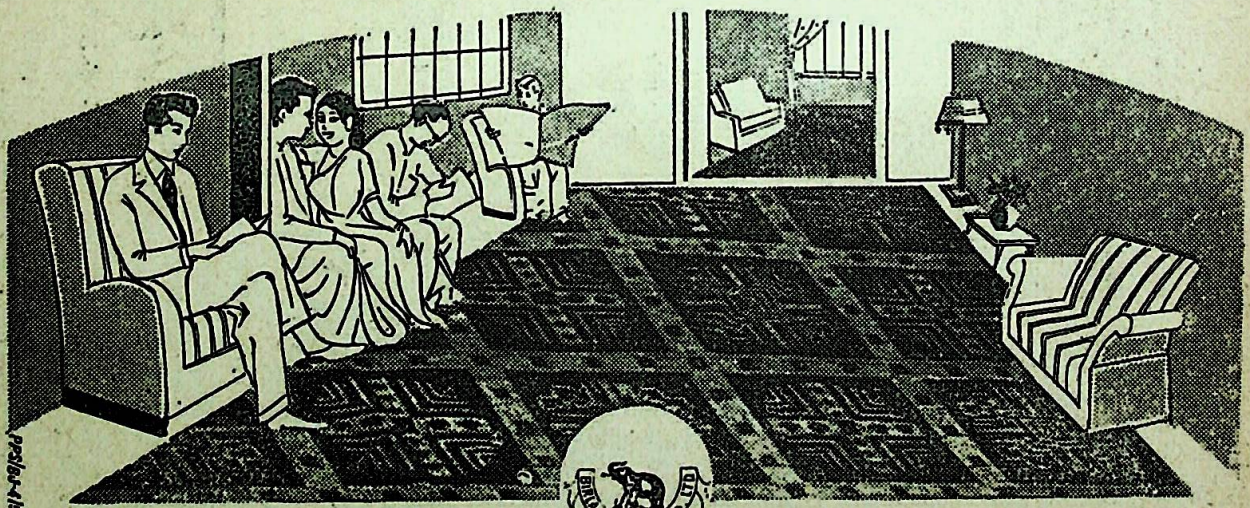

गुण में सर्वश्रेष्ठ डिजाइन और रंग में आनंददायक। घर, दफ्तर, स्कूल और होटलों के लिए आदर्श कार्पेट!

हाथी छाप **बिडला जूट कार्पेट्स**

बिडला जूट मेन्यूफेक्चरिंग कं. लि.
८, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुभ-विवाह का उपहार

विवाह पर आप ऐसी वस्तु उपहार में देना चाहेंगे जो कि सदा दुल्हन के प्रयोग में आकर आपकी शुभ कामनाओं की प्रतीक रहे। उषा एक ऐसा परफेक्ट उपहार है जिसको हर दुल्हन पाकर खुश होती है। उषा आप भिन्न-भिन्न प्रकार में अपनी सुविधानुसार ले सकते हैं।

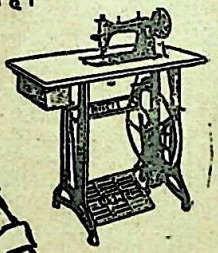

उषा की देशव्यापी बिक्री एवं देखभाल इतनी विस्तृत है कि दुल्हन इसे कहीं भी ले जाय उसको आवश्यकता पड़ने पर हर प्रकार की सुविधा मिल सकती है।

COUNTRY-WIDE SALES & SERVICE

उषा
सिलाई मशीन

जय इन्जीनियरिंग वर्क्स लिमिटेड, कलकत्ता-३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिसम्बर

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९५९

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

सम्पादक
रतनलाल जोशी
शिल्प
गोपालकृष्ण भोबे

लेख-सूची

१	संकल्प	'अरविंदानुभूति' से	१९
२	पूजा हम विराट् की ही करें	विनोबा	२०
३	विश्वकर्मा विश्वेश्वरैया	.....	२२
४	प्रेरणा—पुष्प	डा० एम० विश्वेश्वरैया	२३
५	....चाँद-सूरज मिले थे	उपेंद्रनाथ गंगोपाध्याय	२४
६	छल	महिम्यांग	२७
७	गंगोत्री के दर्शन	श्री आदित्य विक्रम	२९
८	वारुणी	जाह्नवीकुमार चक्रवर्ती	३३
९	विजय-रहस्य	'कथा-लहरी' से	३७
१०	हजार-हजार होठों से पिया मगर....	सामरसेट माम	३९
११	जीव	हारातोजी	४१
१२	कविपुत्र कुबेर	शौरिराजन्	४३
१३	तिल-तिल जलिये न जलिये तो....	डा० मनु मेहता	४६
१४	अग्नि	कृष्णमूर्ति	४७
१५	अंतरिक्ष में प्राणदेवता	.....	४९
१६	सम्बंध	'शम्स-ए-तबरेज' से	५३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१७ आदि-आर्यों का भोजन	डा० मुनीतिकुमार चाटुर्ज्या	५६
१८ ये हैं इस्पात की सीढ़ियाँ....	मोहन अनन्य	५९
१९ यह मौन कितना बुलंद है	.....	६५
२० सबसे ऊँची प्रेम सगाई	शिवनंदन कपूर	७१
२१ प्रेम (कविता)	एक तमिल लोकगीत	७२
२२ आत्मविश्वास की जड़ें....	'नवनीत-मानसशास्त्र-विभाग'	७४
२३ भूले हुए फसाने....	महावीर त्यागी	७६
२४ न देखा : न सुना	.....	८१
२५ ये भाखरा की जीवित ईंटें	खुशवंतसिंह	८५
२६ मुस्कान : सुख की खान	.....	९०
२७ साथी (कविता)	जी० शंकर कुरुप	९३
२८ कड़वे-मीठे जीवन-घूँट	.....	९४
२९ वात्सल्य का वातायन (मराठी-कहानी)	महादेव शास्त्री जोशी	९७
३० बोझ	रवींद्रनाथ	१०१
३१ तेरी मुस्कान पर.... (गुजराती-कहानी)	गुलाबदास ब्रोकर	११५
३२ निर्णय (बंगला-कहानी)	माणिक बंद्योपाध्याय	१२७
३३ इब्नबतूता की रोमांचक यात्रा	(पुस्तक-संक्षेप)	१२९
३४ स्वाध्याय-समीक्षा	राजहंस	१५१

एक पोर्ट्रेट
[चित्र : मनसाराम]

— रेखाचित्र —

ओके, रामचंद्र शुक्ल, चौरसिया, आइसेंस्टान, के० के० हेब्बार, पाइंटर मिखालोव्स्की

श्री रतनलाल जोशी-द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, १४९ तारदेव, बम्बई-७ के लिए प्रकाशित तथा एसोसियेटेड ऐडवर्टाइजर्स ऐंड प्रिंटर्स, ५०५, आर्थर रोड, बम्बई में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
हिन्दी डाइजेस्ट

संचालक:
श्रीगोपाल नवरिया

सम्पादक:
रतनलाल जोशी

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

वर्ष ८ : : अंक १२ दिसम्बर, १९५९

संकल्प

नये दिन का नया सूरज निकला। नयी डाल पर नयी कोंपल उभरी। नव-उमंग की पहली कली खिली और नव की ऊष्मा को छोड़ एक-शावक आकाश के अनंत को मापने निकल पड़ा। नवजात के पहली किलकारी सुन माँ धन्य हो गयी, पिता आनंद-विभोर हो गये। कहीं नहीं नवोदय का स्वागत, नवोदय की अभ्यर्थना! नवोदय को देख, कहीं नहीं प्रेमधारा का उद्रेक!.....

हृदय में निकली यह प्रमत्त वाणी निखिल जन-मन के कगारों से टकरायी और प्रतिध्वनि बन कर यों वापस आयी—"नहीं, झूठ है यह, प्रमाद है, भ्रम है—अपने को ही अपना उदय सुखद लगता है, पराये का नहीं। पराये के प्रति तो ज्वाला ही प्रज्वलित होती है।" आकाश ने अपनी बूढ़ी दाढ़ी हिलायी; किंतु धरती ने कहा—यह सही है, जीव अभी तक इस द्वैत में बद्ध है; उसे मुक्त करो। आकाश की प्रेरणा में धरती की कोख से एक ज्योति-पुरुष का उदय हुआ। उसकी प्रथम किलकारी में ध्वनित था—"मैं अक्षय-पुरुष आकाश, धरती का द्वैत मिटाने आया हूँ।" प्रतिध्वनि ने कहा—"मगर द्वैत तो अति व्यापक है, एक किरण से क्या होगा?" आकाश ने कहा—"किरणें अनंत हैं, द्वैत सांत···एक दिन यह अँधेरा नष्ट हो होनेवाला है···मरणशील मरेगा ही!" —'अरविंदानुभूति'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूजा हम विराट् की ही करें

मुक्तानंद-प्रेरित विनोबा के आत्म-दर्शन की एक-दो किरणें

गंगोत्री में गंगा बहुत ही निर्मल और परिशुद्ध होती है; परंतु उसकी धारा भी वहाँ छोटी ही होती है। आगे-आगे उसका प्रवाह शक्तिशाली बनता है, उसका विस्तार होता जाता है और सागर-संगम के स्थान पर तो वह बहुत ही फैल जाती है। फिर भी जैसे-जैसे विस्तार बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे उसकी स्वच्छता और निर्मलता कम होती जाती है। दुनिया में भी बहुधा ऐसा ही अनुभव होता है कि, जहाँ संख्या-वृद्धि हुई, वहाँ गुण का कुछ ह्रास ही हुआ और जहाँ गुण पर जोर दिया गया, वहाँ पर संख्या कम हो गयी।

द्रष्टा : संत

मैं इस तत्व पर बहुत विचार करता हूँ कि, क्या गुण-वर्धन और संख्या-वृद्धि में विरोध है। सभी चिंतनों का मूल आधार, परम आदर्श, परमेश्वर है। जब उसकी ओर देखता हूँ, तो यही दीख पड़ता है कि, वह परम शुद्ध है और परम व्यापक भी; वहाँ शुद्धि और व्यापकता का विरोध नहीं दीखता। हम आसमान की तरफ देखते हैं, तो वहाँ भी यही दीख पड़ता है कि, व्यापकता के साथ उसकी निर्मलता में कोई कमी नहीं हुई। वह परम शुद्ध है और व्यापक भी।

हमारी हालत गंगा के समान है, आसमान के समान नहीं। हम परमेश्वर की प्रतिमा नहीं बन पाते; उसके साथ हमारे जीवन और अनुभव का ताल-मेल नहीं बैठ पाता।

आखिर इसकी क्या वजह है? जब मैं बहुत सोचता हूँ, तो मालूम होता है कि, जो एक-देशीय रह कर शुद्धि की कोशिश करते हैं, उनकी शुद्धि संकोच में (संकीर्णता में) टिकती है। इसीलिए व्यापकता (यानी संख्या) और शुद्धि (यानी गुणों) के बीच विरोध पैदा होता है। व्यापक चिंतन में यह विरोध लाजिमी नहीं है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमें सोचना होगा कि, हमारा चिंतन कहाँ तक ठीक चलता है, कितना व्यापक रहता है। अभी हम एक बात निकालते हैं, तो दूसरी ढीली पड़ जाती है, दूसरी निकालते हैं, तो पहली ढीली पड़ जाती है; और तीसरी निकालते हैं, तो दोनों ढीली हो जाती हैं। इस प्रकार समग्रता में विरोध होता है। जहाँ ऐसा होता है, वहाँ एकाग्रता में ही, उसकी कल्पना में ही कोई दोष है, ऐसा कहना पड़ेगा। अतः हमें ऐसी युक्ति साधनी चाहिए कि, एकाग्रता और समग्रता एकत्र हो सकें।

मीरा का उदाहरण लीजिए। जहाँ अक्सर साधक, सब लोगों को टाल कर, ध्यान के लिए एकांत में जाते हैं और वहाँ परमेश्वर के साथ एकरूप होने की कोशिश करते हैं, वहीं मीरा दुनिया के सारे बंधन तोड़ कर, लोगों के सामने नाचती है और कहती है—"मैं तो गिरिधर आगे नाचूंगी।" उसे कोई युक्ति सध गयी थी, जिससे उसकी समग्रता और एकाग्रता परस्पर बाधक नहीं होती थीं। जब समग्रता और एकाग्रता में विरोध आये, तो समझना चाहिए कि, हमारा विचार ही कुंठित है।

प्रथम सर्वोदय-सम्मेलन की बात है, जो गांधीजी के महाप्रयाण के बाद, सेवाग्राम में हुआ था। उस समय हमारे आंदोलन के नामकरण की बात चली। कुछ लोगों ने कहा कि, इसे गांधीजी का नाम दिया जाये। मैंने कहा—"सर्वोदय शब्द बड़ा ही सुंदर है और गांधीजी ने ही हमें दिया है। इसलिए यही बेहतर होगा कि, उसी को हम चलायें और गांधीजी का नाम न रखें।" खुशी की बात है कि, यह लोगों की समझ में आ गया और उन्होंने मेरी यह बात मान ली। यदि हम कहते कि, "सत्यनिष्ठा और अहिंसा हमारे उपास्य देवता हैं और गांधीजी हमारे एकमात्र गुरु" तो निःसंदेह हम अपने सद्विचार में एकदेशीयता ले आते। परिणाम-स्वरूप यह आपत्ति आती कि, संख्या बढ़ती, पर गुण घट जाता। लेकिन वह आपत्ति टल गयी; क्योंकि हमने गांधीजी के नाम को अपने हृदय में ही रखा, वाणी में नहीं आने दिया।

इस तरह यह स्पष्ट है कि, जहाँ हमारे चिंतन में एकदेशीयता आ जाती है, वहाँ गुण और संख्या के बीच विरोध खड़ा हो जाता है। किंतु जहाँ एकदेशीयता नहीं है, वहाँ इस प्रकार का भय नहीं है।

उट्ठान कालम्हि अनुट्ठहानो युवा बली आलसियं उपेतो।
संसन्न संकप्प मनो कुसीतो पञ्ञाय मग्गं अलसो न विंदति॥

— जो समुत्थान-काल में प्रबुद्ध नहीं, जो युवा और बलिष्ठ होकर भी आलस्याविष्ट है, जिसकी संकल्प-शक्ति क्षीण एवं मन वंध्य विचारों से पूर्ण है, वह प्रभावी मनुष्य प्रज्ञा के मार्ग को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। —'धम्मपद'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वकर्मा विश्वेश्वरैया

सुप्रसिद्ध वास्तुशिल्पी-राजवेत्ता मोक्षगुंडम् विश्वेश्वरैया की जीवन-झाँकी

साधनों का सद्विनियोग ही विवेक है और वह योजना-बद्ध कर्म से ही सध सकता है – यह सूत्र डा० मोक्षगुंडम् विश्वेश्वरैया के सुदीर्घ जीवन-सत्र का मूल-मंत्र कहा जा सकता है।

१५ सितम्बर १९६१ को बंगलोर के समीप, एक ग्रामीण परिवार में जन्मे होनहार विश्वेश्वरैया ने आज से ७५ वर्ष पूर्व (१८८४ में) बम्बई-सरकार के सार्वजनिक निर्माण-विभाग में सहायक इंजीनियर के रूप में काम करना प्रारंभ किया।

बाद में, पूना में रहते हुए, विश्वेश्वरैया ने भारत के आर्थिक दिवालियेपन और उपक्रम के अभाव का कारण-विश्लेषण एवं उपचार-अन्वेषण किया। योजना-बद्ध आर्थिक विकास एवं शिक्षा-प्रसार ही उन्हें इसका एकमात्र उपचार प्रतीत हुआ।

आर्थिक नव-निर्माण के स्वप्न को साकार करने का अवसर, विश्वेश्वरैया को १९१२ में, मैसूर का दीवान बनने पर मिला। महाराजा कृष्णराज वोडेयर के प्रोत्साहन से प्रथम विश्वयुद्ध के समय, उन्होंने भारत के प्रथम सरकारी लोहा-कारखाने भद्रावती आयरन ऐंड स्टील वर्क्स, कृष्णराज-सागर बाँध, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर बैंक एवं चेम्बर आव कामर्स स्थापित कर, मैसूर को जन-कल्याण राज्य के आदर्श का अनुगामी बनाया। दीवान-पद से निवृत्त होने के पश्चात्, छः वर्ष भद्रावती-कारखाने के अवैतनिक अध्यक्ष रहते हुए, उन्होंने जो यात्रा-भत्ता—लगभग दो लाख रुपये—नहीं लिया था, उसी से बाद में बंगलोर का जयचामराजेंद्र आक्युपेशनल इंस्टिटचूट स्थापित हुआ।

देश का शायद ही कोई विशाल औद्योगिक आयोजन, नदी-बाँध योजना या विकास-कार्यक्रम होगा, जिसमें विश्वेश्वरैया से सलाह नहीं ली गयी हो। तभी सन् १९५५ में उन्हें 'भारत-रत्न' पदक से विभूषित करते हुए, राष्ट्रपति ने कहा था – "वे भारत में आयोजित आर्थिक-विकास की विचारधारा के प्रवर्तक हैं।"

वयोवृद्ध राजनेता विश्वेश्वरैया के लिए, कर्म – सुव्यवस्थित कर्म – जीवन का पर्यायवाची है। उनकी कभी-कभी यांत्रिक-सी दीखने वाली इस कर्मनिष्ठा का लक्ष्य है – लाखों-करोड़ों मानवों के लिए, जीवन को अधिक जीने योग्य बनाना।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

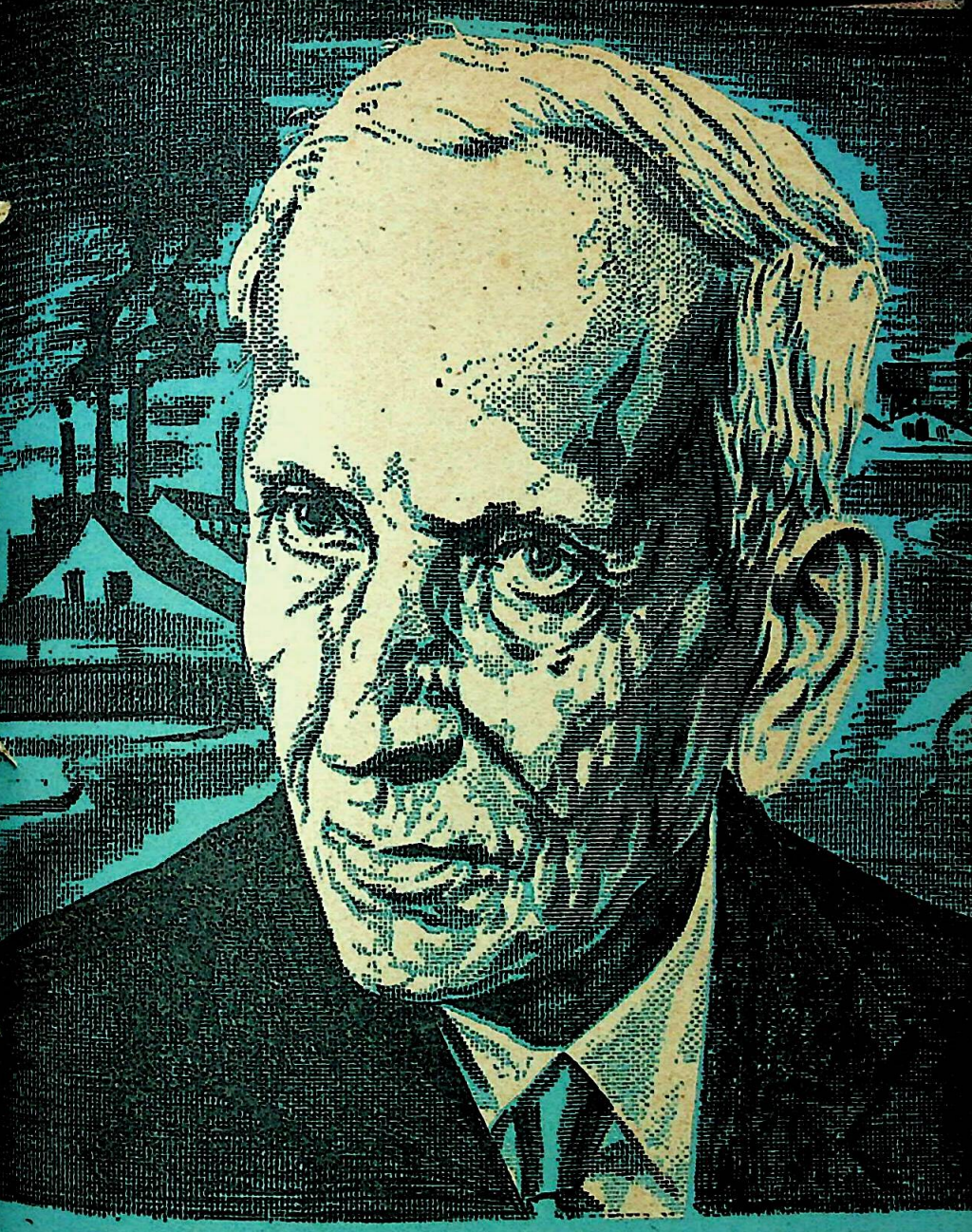

.....कर्म की नदी तो पहाड़ों और वज्र-जैसी शिलाओं को भी तोड़ कर बहती है—कर्म के अंकुर को बाधा कहाँ ? बीज में अगर सत्व है, तो वह फूटेगा जरूर—चाहे ज़मीन अनुकूल हो या प्रतिकूल - बीज की यह अदम्य-अपराजेय जीवनी-शक्ति है। हम अक्सर अपनी इस सत्व-क्षमता को भूल जाते हैं—प्राण-बीज की महिमा विसरा बैठते हैं। देश के नवयुवक यदि अपने इस चैतन्य को पहचान लें, तो उनकी बाधाएँ अनायास ही परास्त जायेंगी।

—भारत-रत्न विश्वेश्वरैया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस दिन चाँद-सूरज मिले थे

उपेंद्रनाथ गंगोपाध्याय-लिखित एक बहुमूल्य संस्मरण का बंगला से सरल हिन्दी-रूपांतर

*

कई वर्ष पहले की बात है। उन दिनों रवींद्रनाथ और शरच्चंद्र के बीच बड़ा मनमुटाव चल रहा था। यों तो, इस शोचनीय स्थिति के पूर्व, उन दोनों में परस्पर एक-दूसरे के प्रति, अमिट स्नेह एवं गहरी श्रद्धा की अंतर्धारा प्रवाहित हुआ करती थी।

यह पारस्परिक विरोध – दोनों ओर के सिर्फ भक्तों के ही नहीं, अपितु प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा भी इधर-की-उधर लगाने का दुःखद परिणाम था।

वैसे भी, प्रतिभाशाली व्यक्ति स्वभावतः कान के कच्चे होते हैं। वे एक बार जो-कुछ सुन लेते हैं, उस पर सहज ही अविश्वास नहीं कर पाते। विशेषतया आत्म-निंदा सुन कर, तो तुरंत ही उत्तेजित हो उठते हैं। जरा-सी बात से ही उनके कान भर जाते हैं। वास्तव में सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये, तो इन सम्भ्रांत व्यक्तियों की इस दुर्बलता में भी, उनके हृदय में पारस्परिक सामंजस्य की क्षीण रेखा छिपी रहती है।

लोग तो परिवार की सामान्य बातों को ही सोच-समझ कर नहीं कह पाते, उनमें भी कभी-कभी बात का बतंगड़ बन जाता है। फिर रवींद्रनाथ की घरेलू बैठक में, शरत् की रचनाओं पर होने वाली आलोचना, भला इधर-की-उधर करने वालों को कैसे पचती! वहाँ से सुन-सुना कर झट कोई-न-कोई व्यक्ति जाकर शरत् के कानों में पूर देता। जोड़ासांको (रवि बाबू का निवास) की तिल जैसी बात, बालीगंज (शरत् बाबू का निवास) पहुँचते-पहुँचते ताड़ हो जाती। और फिर, उस बात के कटु प्रहार से शरच्चंद्र लाल हो उठते। ऐसे ही कुछ दिनों बाद, धीरे-धीरे बालीगंज की बात बतंगड़ बन कर, जब रवींद्रनाथ के पास पहुँचती, तो उनके कान भी खड़े हो जाते।

कभी-कभी बालीगंज की बातों का तिल तो एक बार में ही ताड़ का रूप ले लेता। वह इसलिए कि, रवींद्रनाथ के वाक्य जितने संयत-सजग होते थे, उतने शरत् के नहीं। इसके अतिरिक्त, रवींद्रनाथ की शरत्-विषयक उक्तियों के पीछे ठोस आधार रहता था; जब कि शरच्चंद्र वास्तविकता को सदैव ताक पर रख कर, अपनी अपूर्व कल्पना एवं सृजन-शक्ति के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बल पर कहानी गढ़ कर ही वाक्-तीर छोड़ा करते थे। यों भी, सत्यमूलक उक्तियों की अपेक्षा कल्पित कहानी, वार करने में प्रायः अधिक तीक्ष्ण होती है; क्योंकि सत्य की तो एक मर्यादित सीमा होती है, जबकि कल्पना है क्षितिज के समान ही निःसीम, अनंत।

अभी शरत् बाबू का मकान बालीगंज-स्थित अश्विनीदत्त रोड पर नहीं बन पाया था। उन दिनों वे सामतावाडी में निवास करते थे और जब कभी काम-काज के सिलसिले में कलकत्ते आते, तो बेहला (कलकत्ता शहर का उपनगर) में श्री मणींद्रराय के यहाँ उतरा करते। शरत् बाबू का आगमन सुन कर,कलकत्ते के साहित्यिक एवं बंधु-बांधव प्रातःकाल ही बेहला पहुँच जाते और अच्छा खासा दरबार लग जाता। शाम को शरच्चंद्र आवश्यक काम-काज के लिए शहर में चले आते।

रवींद्रनाथ–२९वें वर्ष में

एक दिन दस बजे के लगभग, जब मैं बेहला पहुँचा, तो क्या देखता हूँ कि, शरत् बाबू को घेरे दस-बीस व्यक्ति जमे हुए हैं। मुझे देखते ही शरच्चंद्र ने पूछा– "उपेन, कुछ सुना तुमने?"

मैंने गला साफ करके कहा—"नहीं, मैंने तो कुछ नहीं सुना।"

"रवींद्रनाथ और रामानंद बाबू एक-दूसरे का मुँह देखना भी नहीं चाहते; आपस में बोल-चाल तक बंद है।"

इस बात में कितना तथ्य था, यह समझते मुझे देर न लगी। जिस बात के कहने से सहज ही गुल खिल सकता था, उसे ही कहने के लिए शरच्चंद्र आज आतुर थे। मैं स्वयं भी ऐसी रसमय बातों में आनंद लेने का आदी था। अतः वास्तविकता को जानते हुए भी, रस-भंग न हो जाये, इसलिए मैंने साश्चर्य पूछा–"बतलाइये तो सही, यह सब कैसे हो गया?"

शरच्चंद्र ने कहना प्रारम्भ किया–"यूरोप-भ्रमण के उपरांत स्वदेश लौट कर, रामानंद बाबू ने कई स्थानों पर कहा है कि, यूरोप की सभा-सोसायटियों में उनको भाषण करते देख कर, बहुत-से लोगों को रवींद्रनाथ का भ्रम हो जाता था। समाचार-पत्रों में यह समाचार पढ़ कर, रवींद्रनाथ बड़े चिंतित एवं क्षुब्ध हुए। उन्होंने रामानंद बाबू को बुला कर कहा– 'अब आप विदेश जाकर, न जाने क्या-क्या बकेंगे? और लोग यही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझेंगे कि, मैं ही बोल रहा हूँ। यह बात तो अच्छी नहीं है। वस्तुतः लोगों को आपकी इस दाढ़ी से भ्रांति होती है। हम दोनों की दाढ़ी सफेद, लम्बी और एक समान है। अतः आप अपनी दाढ़ी बनवा डालिये, जिससे लोग भ्रम में न पड़ें।'

"रामानंद बाबू ने असहमति प्रकट करते हुए कहा—'नहीं, मुझसे यह नहीं हो सकता। न जाने कितने दिनों के प्रयत्न से तो अपनी इस दाढ़ी को बढ़ा पाया हूँ। उसके प्रति मेरे मन में बड़ी ममता है।'

"यह सुन कर रवींद्रनाथ बोले—'अच्छा, फिर यदि इसे बिल्कुल नहीं बनवा सकते, तो छिपा कर ही रखिये।'

"रामानंद बाबू दाढ़ी को छिपा कर रखने के लिए भी तैयार नहीं हुए। बस, इसीलिए दोनों व्यक्ति एक-दूसरे का मुंह नहीं देखना चाहते।"

शरच्चंद्र की यह अद्भुत कहानी सुन कर, बैठे हुए सभी लोग हँसी के मारे लोट-पोट हो गये। पर, यदि मैं स्वयं न सुनता, तो मुझे भी कम विस्मय न होता। वहीं बैठे हुए एक व्यक्ति जोड़ासांको पहुँचे, उस बात में अपनी तरफ से और भी नमक-मिर्च लगा कर, रवींद्रनाथ से कह आये।

दोनों ओर की इस तरह की सत्य, अर्ध-सत्य एवं कल्पित ऊटपटाँग बातों का यह दुष्परिणाम हुआ कि, रवींद्रनाथ और शरच्चंद्र के मानस-पटल पर मलिनता के मेघ घिर गये। इतना ही नहीं, आगे चल कर तो यहाँ तक हुआ कि, संयोगवश कभी किसी सभा या गोष्ठी में वे दोनों पहुँच भी जाते, तो रवींद्रनाथ उत्तर की ओर मुँह करके बैठते और शरच्चंद्र दक्षिण की ओर।

मैं उस समय 'विचित्रा' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन करता था। हमारी पत्रिका के वे दोनों ही मान्य लेखक थे। मैं बड़े धर्म-संकट में था। यह सब देख कर मुझे दुःख भी कम न था। तभी एक दिन, प्रशांत बाबू के बड़नगर-स्थित निवास-स्थान पर मेरी रवींद्रनाथ से भेंट हो गयी। मैंने उनसे कहा—"देखिए, हमारे साहित्याकाश के आप तो सूर्य हैं और शरत् बाबू चंद्र। आप दोनों के बीच स्नेह-सौहार्द न रहने से, केवल मुझे नहीं, दोनों पक्षों के भक्तों को भी बड़ा क्षोभ होता है।"

रवींद्रनाथ उच्छ्वसित कंठ से बोले—"तो बताओ, मैं क्या करूँ? वह तो मेरे नाम पर जहाँ-तहाँ, न जाने क्या-क्या बकता फिरता है।"

मैंने कहा—"वे क्या बकते फिरते हैं, यह तो मुझे नहीं मालूम; हाँ इतनी बात जरूर जानता हूँ कि, उनके समान आपका भक्त और कोई नहीं। मैं भी स्वयं आपका एक बड़ा भक्त होने का गर्व करता हूँ; किंतु शरच्चंद्र की भक्ति के आगे मेरी भक्ति तो तुच्छ-सी लगती है। 'वाकलैंड ब्रिज' वाली बात सुनें, तो आपको इस बात का विश्वास हो जायेगा।"

"क्या बात थी वह?"—रवींद्रनाथ ने बड़े कुतूहल से पूछा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने कहना शुरू किया—"बहुत दिन पहले की बात है। प्रिंस आव वेल्स भारत-भ्रमण पर थे। राजकुमार के कलकत्ता-आगमन पर, स्वयं देशबंधु चित्तरंजन दास प्रतिवाद-स्वरूप एक दिन की आम हड़ताल की व्यवस्था करा रहे थे। मैं उस समय, विशेष कारणवश शरच्चंद्र के घर के पास ही शिवपुर में रहता था।

"एक दिन शरच्चंद्र नंगे पाँव मेरे डेरे पर पहुँचे। मैंने आश्चर्य-चकित हो पूछा—'शरत् यह क्या, नंगे पाँव कैसे?' बोले—'कैसे क्या? मालूम नहीं, आज हड़ताल है? सुना है, हावड़ा स्टेशन की तो बड़ी बुरी हालत है। हर ट्रेन में यात्री भरे चले आ रहे हैं। सवारी के अभाव में, वे अपने घरों को जायें भी तो कैसे? दूध के बिना बच्चों ने रो-रोकर माताओं को परेशान कर रखा है, तो चाय के बिना बूढ़ों का मिजाज चिड़चिड़ाया हुआ है। स्टेशन चलते हो क्या? शायद हम उनकी कुछ सहायता कर सकें?'

"मैंने हाँ भर ली। और नंगे पाँव ही हम दोनों बातें करते-करते हावड़ा स्टेशन के लिए रवाना हो गये। जब स्टेशन के निकट 'वाकलैंड ब्रिज' पर पहुँचे, तो उन्होंने मुझसे एक प्रश्न किया—'अच्छा जरा बताओ तो, हमारे देश के लेखकों में रवींद्र-नाथ का कौन-सा स्थान है? पहला, दूसरा... आठवाँ, नवाँ अथवा कुछ और?'

"एक बार तो आगा-पीछा सोचे बिना ही मन हुआ कि, निःसंकोच कह दूँ—'प्रथम'। किंतु जब स्वयं शरच्चंद्र ने यह प्रश्न किया हो, तो उसका उत्तर इतनी सरलता से नहीं दिया जा सकता था। क्षण-भर मौन रह कर मैंने कहा—'बड़ा जटिल प्रश्न है। मेरी समझ में तो कोई उत्तर नहीं आता। आप ही बताइये कि, रवींद्रनाथ का कौन-सा स्थान है।'

"वे बोले—'रवींद्रनाथ द्वितीय हैं।'

"द्वितीय! सुन कर मैं भौंचक्का रह गया। यदि वे कहते कि, रवींद्रनाथ का चौबीसवाँ स्थान है, तो उनके ऊपर के तेईस नाम सोचने में, फिर भी कुछ समय लगता। परंतु जिस वेग से उन्होंने 'द्वितीय' कहा था, उसी वेग से वे फिर पूछ बैठे—'अच्छा अब बताओ, प्रथम कौन है?'

"कुछ देर सोच कर मैंने कहा—'यह प्रश्न तो और भी कठिन है। मैं तो उत्तर देने में असमर्थ हूँ। आप ही बताइये, भारत का प्रथम लेखक कौन है?'

श्रुति

पूर्व दिशा ने पश्चिम दिशा को दुतकारते हुए कहा — "अधमाधम कहीं की!" पश्चिम दिशा से भी उत्तर मिला- "अधमाधम कहीं की!" जब गाली गलौज काफी जम गयी, तो मैं हँसी नहीं रोक सका— "हाय रे छल! अछोर अंतरिक्ष में कहाँ पूर्व? कहाँ पश्चिम? केवल भ्रम ही अपने से लड़ता है!"

— अहिल्यांग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"शरत् बोले– 'प्रथम हैं वेदव्यास।'

"वेदव्यास! हे भगवान्! उनकी यह बात पहले तो मेरी समझ में नहीं आयी। पूछा– 'तब वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति ..... ये लोग?'

"शरच्चंद्र बीच में ही बोल पड़े– 'अरे, इन लोगों का नाम तो बहुत पीछे आता है। प्रथम और द्वितीय में, इसी तरह द्वितीय और तृतीय में जो अंतर है, उसे देखते हुए, तो उन लोगों को उनके बाद भी स्थान नहीं दिया जा सकता।'"

ज्यों ही 'वाक्लैंड ब्रिज' वाली बात समाप्त हुई, मैंने देखा कि, रवींद्रनाथ का मुख-मंडल उल्लास से उद्भासित हो रहा था।

इसमें उन बेचारों का भी क्या कसूर! स्वयं विधाता से भी यदि कहा जाता कि, लेखकों में वेदव्यास के बाद आपका ही नम्बर है, तो उसका मुख भी ऐसी ही प्रसन्नता से खिल उठता।

मैंने कहा–"देखा, आपने अपने द्वेषी शरच्चंद्र को! आपके भक्तों में, वे बड़े हैं या दूसरे दिखावटी भक्त? मैं किसी दिन उनको लेकर आऊँ, तो आप उनसे मिलेंगे न?"

रवींद्रनाथ ने अपनी दोनों भुजाएँ फैलाकर कहा –"हाँ, हाँ दोनों हाथ भर कर।"

बात समाप्त हो गयी। मैं तुरंत अश्विनी-दत्त रोड पर, शरच्चंद्र के पास पहुँचा। बोला –"आपको रवींद्रनाथ के पास चलना होगा और अपने मन का सारा मालिन्य धो डालना होगा।"

शरत् ने दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए खिन्न मन से कहा –"उपेन, मिलना संभव नहीं। मुझ पर तो वे बड़े क्रुद्ध हैं; देखते ही खूब उल्टी-सीधी सुनायेंगे।"

मैंने कहा—"नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं होगा। वे तो कह रहे थे कि, आपसे कौली भर कर मिलेंगे। इतने पर भी यदि आप नहीं गये, तो आपका ही पलड़ा हल्का हो जायेगा।"

अब राजी होने के अतिरिक्त शरत् पास और चारा भी क्या था! दूसरे दिन अपराह्न में, शरत् और मैं, प्रशांत बाबू के बड़नगर-स्थित निवास पर पहुँचे।

रवींद्रनाथ एक बड़े बरामदे के अंतिम सिरे पर, आराम-कुर्सी पर सुख-पूर्वक लेटे हुए थे। हम लोगों को देखते ही वे सीधे हो गये और हर्ष-विभोर हो बोले– "आओ शरत्।"

शरच्चंद्र तेजी से आगे बढ़े और झुक कर रवींद्रनाथ की चरण-रज लेते हुए, उनके निकट ही एक कुर्सी पर बैठ गये।

रवींद्रनाथ ने पूछा –"कहो, कैसे हो?"

और इस तरह धीरे-धीरे सहज-सामान्य रूप से वार्ता प्रारंभ हो गयी। किसी ने भी पुराने पारस्परिक विरोध का उल्लेख नहीं किया और न किसी ने कोई कैफियत ही दी। दोनों की चेतना पर, एक-दूसरे का जो सुंदर चित्र अंकित था, उसके कारण एक बार तो वे खूब दिल खोल कर मिले। और यह 'मिलन' फिर जीवन-पर्यंत मिलन ही बना रहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंगोत्री के दर्शन

श्री आदित्य विक्रम द्वारा गंगोत्री-यात्रा के पावन अनुभवों की एक झलक

पतित-पावनी भागीरथी का उद्गम-स्थान हिमालय के अंक में स्थित गंगोत्री है। गंगा वास्तव में कहाँ से निकलती है, इसका पता नहीं; किंतु फिर भी, गंगा का उद्गम-स्थान गंगोत्री ही माना गया है। पौराणिक कथाओं के अनुसार यही मान्यता है कि, भगीरथ ने गंगोत्री में तपस्या की और गंगा का पृथ्वी पर आगमन हुआ।

कथा ऐसी है कि, अयोध्या का सगर नाम का एक प्रतापी राजा था। उसकी दो पत्नियाँ थीं। एक का नाम था केशिनी और दूसरी का नाम था सुमति। राजा को कोई पुत्र नहीं था। महर्षि भृगु के आशीर्वाद से, एक रानी के असमंजस नाम का पुत्र हुआ और दूसरी सुमति के ६० हजार पुत्र हुए। असमंजस तो 'यथानामा तथा-गुणः' पूरा नालायक था; पर ये ६० हजार पुत्र काफी प्रतापी थे।

राजा सगर ने एक बार अश्वमेध-यज्ञ किया और घोड़े की रक्षा के लिए इन ६० हजार बल-विक्रमशाली पुत्रों को तैनात किया। इतना होने पर भी, इंद्र जिसका स्वभाव ऐसे मामलों में उपद्रवी था, घोड़े को चुरा ले गया और कपिल मुनि के आश्रम में जाकर छिपा दिया। अब ये ६० हजार लड़के भी खोजते-खोजते, कपिल के आश्रम में पहुँचे और बिना सोचे-समझे, कपिल ने घोड़ा चुराया है, ऐसा मान लिया और मुनि को कुछ गाली-गलौज भी दे डाली। बस अब क्या था! जैसा कि प्राचीन मुनियों का स्वभाव था, कपिल ने क्रोध में आकर, इन ६० हजार पुत्रों को शाप देकर भस्म कर दिया और ये सारे-के-सारे राख का ढेर बन गये।

सगर को संताप होना स्वाभाविक था; पर करे तो क्या करे! इसी दुःख में बेचारा क्षीण होकर मरा; हालाँकि इस चिंतावस्था में भी तीस हजार साल तो उसने निकाल ही दिये। उसके बाद, उसका पौत्र अंशुमान् गद्दी पर बैठा; और उसके बाद दिलीप और उसके बाद भगीरथ सिंहासन पर बैठे।

भगीरथ के भी कोई संतान नहीं थी। उस जमाने में फैमिली-प्लानिंग की फैशन चल नहीं पायी थी। इसलिए राजाओं को संतान की चिंता

भागीरथी गंगा
बेसनगर-स्थित प्रतिमा
की रेखानुकृति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आये-दिन घेरे रहती थी। और इसका नुस्खा भी एक ही माना जाता था – तप करना। सगर ने भी अपना सोटा-चिमटा उठाया और हिमालय पर जाकर तप करने लगा।

अक्सर इन तपों के कारण, उस जमाने में देवता लोग द्रवीभूत भी हो जाया करते थे। और किस्सा हुआ भी यों ही। ब्रह्माजी को दया आयी और कहा –"माँग"। भगीरथ ने कहा –"सरकार, दो चीजें माँगता हूँ; एक तो बच्चा दीजिये और दूसरे मेरे ६० हजार पितामह राख का ढेर होकर पड़े हैं। उन्हें गंगा का अवतरण करा कर मोक्ष दीजिये।" ब्रह्माजी ने सिर खुजलाया और कहा –"भाई साहब, बात तो ठीक है। मेरी सहानुभूति भी है; पर गंगा को थामने वाला है कौन, जो उसका बोझ उठा ले! उसके बोझ से तो पृथ्वी छिन्न-भिन्न भी हो सकती है। एक ही शख्स हैं, जो गंगा को झेल सकते हैं; और वे हैं महादेवजी। इसलिए तुम शिव की आराधना करो।"

बेचारे भगीरथ को एक गाँव से दूसरे गाँव भेज दिया। खैर, भगीरथ भी था धैर्यशील। इतने साल ब्रह्मा को उपासा, अब शिवजी के पीछे पड़ा। शिवजी ने कहा –"खैर, आने दो गंगा को देख लेंगे।"

पर गंगा को भी अपने बल का अभिमान था। उसने सोचा, मैं भी कुछ अपना विक्रम दिखाऊँ और ऐसे जोर से अवतरण करूँ कि, मेरे स्रोत की तेजी से शिवजी के भी पाँव उखड़ जायें। इस गर्व के साथ, वह बड़े जोर से गर्जना करके मूसलधार शिवजी के सिर पर पड़ी। पर शिवजी की जटा थी कुछ गहरी। कैलाशवासी शिव की बर्फीली सफेद चोटी और फिर सघन जंगल! यह उनकी जटा गंगा के सारे पानी को सोख गयी। गंगा इन्हीं पहाड़ियों और वृक्षों में गायब हो गयी। एक बूँद भी शिव की जटा के बाहर नहीं पहुँच पायी– यानी हिमालय के जंगलों के बाहर एक बूँद पानी नहीं पहुँच पाया।

अब भगीरथ फिर घबराया। शिवजी की फिर मिन्नत-आरजू की। तब भगवान् महादेव ने कहा, खैर सोचेंगे; और धीरे-धीरे बिंदु-बिंदु करके गंगा का स्रोत छोड़ा। धीरे-धीरे अर्थात् मंदाकिनी चाल से, गंगा स्रवने लगी। आगे-आगे भगीरथ का रथ चलता गया, यानी उसका प्लानिंग होता गया और पीछे-पीछे गंगा चलती गयी। इस तरह भागीरथी आयी। सगर (स-गर) यानी पानी-सहित जो ६० हजार धाराएँ पानी के अभाव में सूख गयीं थीं, उन सबका एकीकरण करके, भगीरथ ने गंगा को भागीरथी का रूप दिया और सूखे हुए नदी-नाले फिर से जल से प्लावित हुए यानी सगर से सागर हुए।

पौराणिक कवियों की सूझ और उपमा भी अनोखी है। कुछ कथा कुछ इतिहास, इस तरह के संमिश्रण से, यह भागीरथी की अनुपम कथा इस भूमि में चली और उसने लोगों को प्रभावित किया। इस भागीरथी का हमने साक्षात् दर्शन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया और उस अनुपम विश्वकर्मा को भी हृदय से नमस्कार किया।

महाकवि कालिदास ने भी इस घटना का 'मेघदूत' में जिक्र करते हुए कहा है—

पहुँच वहाँ से वहाँ जाह्नवी
हिम-गिरि से कनखल के पास,
सगर-सुतों के लिए स्वर्ग की
सीढ़ी-सी उतरी सविलास।

गंगोत्री एक महान् तीर्थ है और प्रत्येक वर्ष हजारों स्त्री-पुरुष इस पुण्य-धाम के दर्शन के लिए आते हैं और अपने को पावन करते हैं।

मुझे वहाँ जाने की अत्यंत लालसा थी और सुअवसर आते ही, मैंने उसे हाथ से न जाने दिया। प्रातःकाल दिल्ली में हम लोगों की सारी पार्टी इकट्ठी हुई और उसी दिन संध्या समय मोटर से हरिद्वार पहुँच गये।

गंगा के सुरम्य तट पर अवस्थित हरिद्वार एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। साधु-संतों का तो मानो यह अड्डा है। रात को हम लोग हर की पैड़ी पर आरती देखने गये। सारी जगह खचाखच भरी पड़ी थी और सब लोग भक्ति-भावना में विभोर थे। कोलाहल होते हुए भी, वहाँ एक अपूर्व शांति थी।

दूसरे दिन सुबह ५ बजे रवाना हुए। शाम को ५ बजे डुंडलगाँव पहुँचे। सब थक गये थे। रास्ते-भर कड़ी गर्मी मिली। धूल खाते हुए आये; और हमें अभी तीन मील पैदल चलना था। सारा सामान मोटरों से उतारा और घोड़ों तथा खच्चरों पर लदवाया; और फिर हम लोगों ने पैदल यात्रा शुरू की। संध्या समय हम लोग नाकोरी पहुँचे। डाक-बँगला थोड़ी ऊँचाई पर, बहुत सुंदर स्थान पर था। वहाँ पर पहुँचते ही सब लेट गये; क्योंकि काफी थक गये थे।

रात को पेट्रोमैक्स तथा लालटेन जलाये और उन्हीं के आलोक में बैठ कर सबने भोजन किया। खाना बहुत अच्छा लगा; क्योंकि भूख हमें बहुत जोर से लग रही थी।

रात को सोते समय गद्दे नहीं थे और न खटिया ही थी; वरन् सीमेण्ट का कड़ा फर्श था। किंतु लेटते ही ऐसी अच्छी नींद आयी, जो मुलायम गद्दों पर भी न आती—"जिन आँखों में नींद घनेरी तकिया और बिछौना क्या?"

गंगोत्री-मंदिर

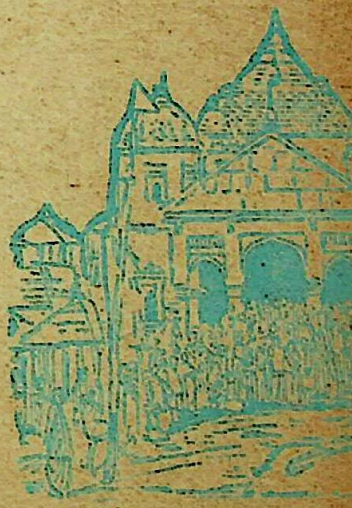

चारों तरफ सुनसान था। सारा वातावरण स्वच्छ भावना से ओतप्रोत था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रातःकाल सूर्योदय होते ही कूच का डंका बजा। हमें उस दिन नौ मील चलना था और हमारा पड़ाव उत्तरकाशी था। उत्तरकाशी हम लोग करीब १० बजे पहुँचे। बीच में एक फर्लांग के लिए रास्ता बहुत ही खतरनाक था। यदि पैर फिसल जाये, तो संसार से बिदाई लेनी पड़े।

उत्तरकाशी बहुत बड़ा शहर है और प्रायः सब सुविधाएँ यहाँ प्राप्त हैं। कहा जाता है कि, जब भारतवर्ष में घोर कलि-युग आ जायेगा, तब शंकरजी काशी से उठ कर, उत्तरकाशी में वास करेंगे।

दूसरे दिन एकदम सवेरे ही चल कर हम लोग ११ बजे मनेरी पहुँचे। सब लोग थक गये थे। मनेरी की ऊँचाई लगभग ५,००० फीट थी। मनेरी से भटवाड़ी, भटवाड़ी से गंगनानी और वहाँ से सूकी चट्टी पहुँचे। इस चट्टी में सरकार का डाक-बँगला नहीं था; इस कारण हम लोगों को यहाँ की पाठशाला में रहना पड़ा। हमें ज्ञात हुआ कि, यहाँ चीते बहुत होते हैं और स्कूल के मास्टरजी ने हमें बताया कि, बघेरे तो पाठशाला के सामने कई बार आ जाते हैं। अतः हम लोग दरवाजा अच्छी तरह बंद करके तथा उसके पीछे दो पेटियाँ लगा कर सोये; किंतु रात को सपने में भी बघेरे ही दिखायी दिये। सपनों का फाटक बंद करना हमारे हाथों में न था।

दूसरे दिन हम लोग भैरवघाटी पहुँचे। वहाँ हमें धर्मशाला में ठहरना पड़ा। उस दिन वहाँ इतनी भीड़ हुई कि, लोगों को बाहर खुले मैदान में सोना पड़ा। लगभग ३०० यात्रियों ने एक छोटी-सी धर्मशाला में रात बितायी।

अगले दिन सुबह, हम लोग गंगोत्री पहुँच गये। बड़ा रमणीय स्थान है। यह गंगा का उद्गम-स्थान माना जाता है। चारों तरफ पानी की कल-कल ध्वनि गूँज रही थी। गंगा का निर्मल पानी, अपनी लम्बी यात्रा आरंभ कर रहा था। आकाश में बादल छाये हुए थे। सूर्य रुक-रुक कर उनके बीच में मुस्करा-सा देता था।

हम सब मंदिर की तरफ चले। मंदिर काफी बड़ा था; पर कोई ज्यादा प्राचीन नहीं था।

गंगोत्री एक घाटी में बसी हुई है। इसके चारों ओर बर्फ से ढँके हुए पहाड़ हैं। सुबह गंगोत्री में नहाने गये। पानी बहुत ही ठंडा था। पैर रखने पर लगता था कि, पैर सुन्न हो गया है; सारा शरीर भी सुन्न हो जाता था।

दूसरे दिन हम लोग संध्यासमय दो बजे रवाना हुए। गंगोत्री छोड़ने को मन नहीं करता था; किंतु समय हमें गंगोत्री से ले जा रहा था। थोड़े दिनों बाद, यह वर्त्तमान भूत बन जायेगा और जीवन की एक बीती हुई घटना बन जायेगी। गंगोत्री से हमारा शरीर तो चल पड़ा; किंतु मन चलने के लिए तैयार नहीं था। रह-रह कर गंगोत्री के सुरम्य दृश्यों का ध्यान आ जाता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वारुणी

वेदों का सोमपान अपनी व्यंजना में पतित होकर खैयाम की 'मय' का खुमार बन कर रह गया—वरुण की बेटी वारुणी अतिचैतन्य को छोड़ कर अवचेतन की विकृति बन गयी। नीचे की कथा में वारुणी के रूप-विवेचन की एक चेष्टा प्रस्तुत है।

★

उस चारु-सुंदरी का नाम था वारुणी। उसके अंग-अंग में थी यौवनपूर्ण सुषमा की रक्तिम दीप्ति; चाल में भरा था स्पर्धा का दर्पपूर्ण हुंकार और मन में अपने अनुपम सौंदर्य का मद। उस चंचला का विश्व-व्यापी अपरिमेय प्रभाव था। महा-प्रतापी राजा वरुण, जिनके संकेत-मात्र पर उफनता समुद्र मंत्र-मुग्ध भुजंग की भाँति नत-मस्तक हो जाता, उसके पिता थे और रूप-दर्पिता सुंदरी शुक्रा उसकी माता थी। वारुणी भी पिता-जैसी तेजस्विनी एवं माता-जैसी रूप-दर्पिनी थी। दोनों की एकमात्र संतान वारुणी बड़े ही प्यार में पली। माता की साध थी कि, उसकी नंदिनी सुर-भोग्या ही हो।

वारुणी के रूप-वह्नि पर पतंग की तरह जीव-मात्र आकृष्ट होते। राहु उसके रूप पर मुग्ध, केतु उसके इंगित का दास। ऐसा था उसका अतुलनीय रूप, अपरिमेय ऐश्वर्य, अपरिमित मोहिनी शक्ति। भला विश्व में कौन नारी उसके समकक्ष है? उसकी यह धारणा त्रिलोक को पदानत कर सकती है। पर वारुणी का यह दर्प पहली बार उस दिन आहत हुआ, जिस दिन सुर और असुर अमृत-लाभ के उद्देश्य से सागर-मंथन में प्रवृत्त हुए।

वासुकि नागरूपी रज्जु के पुच्छांश को देवता एवं शीर्षांश को दानव पकड़े हुए थे। उनके संचालक थे स्वयं विष्णु। भीषण शब्द से वरुण-राज्य विक्षुब्ध हो उठा। कुछ मंथन के उपरांत रत्नाकर के एक-एक कर घोंघे, बड़े-बड़े जीव-जंतु विष्णु-वल्लभा लक्ष्मी, ऐरावत एवं बहुमूल्य रत्नादि निकले। भगवान् विष्णु ने सभी द्रव्यों को देवता और दानवों में बाँट दिया। सभी उत्कृष्ट पदार्थ देवताओं को मिले। क्षुब्ध आक्रोश से दानवों का हृदय भर गया; परंतु उन्होंने कोई प्रतिवाद नहीं किया। जिस दुर्लभ अमृत के लिए समुद्र-मंथन हुआ, यदि वह नहीं पाया, तो लक्ष्मी, ऐरावत इत्यादि क्या हैं? बस, रज्जु फिर द्विगुणित उत्साह से खिंचने लगी।

देवता श्रम-क्लांत हो चुके थे। उन्होंने भगवान् विष्णु से उनके शरीरों में बलाधान करने की सविनय प्रार्थना की। कुछ ही समय पहले, विलोड़ित सागर-गर्भ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से रसाधार सोम का उद्‌भव हुआ था। विष्णु ने वही सोम देव-समाज में बाँट दिया। सोमरस को पान कर देवताओं में फिर स्फूर्ति आ गयी।

उधर दानव-शक्ति भी प्रायः लुप्त हो चली थी। शरीर से स्वेद-कण चू रहे थे। फिर भी उन्होंने समस्त शक्ति संचित कर, एक बार प्राण-पन से और जोर लगाया। प्रबल वेग से मंथन-दंड घूम रहा था और परिश्रान्त वासुकि-नाग का मुख आरक्त हो गया था। सभी उत्तप्त दृष्टि से व्याकुल प्रतीक्षा में थे।

तभी सहसा वरुणालय से शोभनांगी वारुणी प्रकट हुई और अपनी रूप-माधुरी बिखेरती हुई आगे बढ़ी। झलझल कांति, मदहोश गति एवं विलोल कटाक्ष।

उसे देख कर क्षण भर तो देवता और दानव मंत्र-मुग्ध से खड़े-के-खड़े रह गये।

देवराज इंद्र ने मन में सोचा – "यह कौन है? क्या द्वितीय कमला है?"

काम-मोहित दानवों ने प्रश्न किया – 'समुद्र से यह कौन उद्‌भूत हुई है, जिसका अंग-अंग कांचन-दीप्ति से दमक रहा है?"

जब सुरासुर यों विचार-विमूढ़ थे, वह अपने कोकिल-कंठ से बोली—"मैं वरुण-कन्या वारुणी हूँ? मेरी माता शुक्रा है, जिसकी तेज-वह्नि की दीप्ति मेरी देह में भी है।"

यह सुन कर देव-दानव निर्वाक् रह गये। वारुणी ने देखा—उसके रूप विभ्रम से सुरासुर सभी सम्मोहित हैं। वह उत्फुल्ल हो उठी। वह तो विश्व-मोहिनी है; फिर भला उसके रूप पर कौन मोहित नहीं होगा? परंतु वह तो सुर-समाज में ही वरणीया होगी। सुंदर को जय करने में ही तो सुंदरता की सार्थकता है। और फिर संसार भी तो कहेगा, यही है सुर-विजयिनी सुरा।

सुदृढ़ आत्म-विश्वास ले, वह किन्नरी-लीला से देवताओं के समक्ष उपस्थित हुई और बोली –"कहो, आपमें से कौन देवता मुझे ग्रहण करने को प्रस्तुत है? मैं लक्ष्मी से भी बढ़ कर रूपवती हूँ; शक्ति-संचार में सोम से भी अधिक मेरा प्रभाव है; मैं स्वयं बलदायिनी शक्ति हूँ।"

वारुणी के इन शब्दों से देवता चंचल हुए; परंतु सामने ही सोमरस पायी भगवान् विष्णु उपस्थित थे। उनके निर्देश के बिना कोई द्रव्य स्वेच्छा से कैसे ग्रहण किया जा सकता था। इसलिए तृषातुर दृष्टि से, एक बार उन्होंने मन-मोहिनी वारुणी को देखा, और फिर जिज्ञासु नेत्र से विष्णु को। केवल आदेश की प्रतीक्षा थी।

भगवान् विष्णु ने वारुणी की माया को समझा। देवताओं को सचेष्ट करते हुए वे बोले –"यह वारुणी तो विषकन्या है। इससे बल पाने का अधिकार केवल असुरों को है। तुम तो उसे सर्वथा त्याज्य और अग्राह्य समझो।"

देवता स्तब्ध रह गये; उनका उत्साह-दीप बुझ चला। वारुणी चंचल हो उठी और दर्प की मुद्रा से पुनः बोली—"मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूर्य-मंडल से उत्पन्न सुरा हूँ। सुर-लक्ष्मी की तरह ही मेरा ऐश्वर्य है। और मैं विश्व-कामना का मूल-कमल हूँ। बोलो, कौन देवता मुझे ग्रहण करने को तत्पर है?"

एक बार फिर देवताओं के अंग में विद्युत्-तरंग खेल गयी। किंतु भगवान् विष्णु शांत रहे। वे सुर और सुरा दोनों को लक्ष्य कर बोले—"सोमपायी देवता सोमरस से ही बल-संचय करते हैं; वारुणी सुरवर्ग के लिए काम्य नहीं।"

"मैं केवल वारुणी ही नहीं, सुर-संभव सुरा हूँ, सुर-भोग्या हूँ।"

"परंतु सुर-संभवा होकर भी, तुम्हारी राजसिक स्वभाव और तामसिक आचरण है। अतः तुम सुर-भोग्या नहीं हो सकती।"

इस आवाज़ से वारुणी विक्षिप्त हो उठी। उस आजन्म-स्वेच्छाचारिणी की इच्छा का यह प्रथम व्याघात था। तिल-मिला कर बोली—"तब सुरा किसकी किसकी भोग्या है?"

वरुण-कन्या

असुरों की ओर इंगित करते हुए भगवान् विष्णु शांत व सस्मित स्वर में बोले—"देखो, वे क्लांत दैत्य-दानव तुम्हारे रूप पर मुग्ध हैं ही; उनकी ही भोग्या होगी तुम।"

आहत सर्पिणी की तरह फन ऊँचा कर, वारुणी खड़ी हो गयी। क्षणमात्र के लिए आवेश से कंठ अवरुद्ध हो गया। उसका संकल्प प्रतिहत हो सकता है, यह उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। अहंकार-दर्पिता गर्जन कर उठी—"ऐसी दांभिकता वरुण-कन्या सुर-संभवा सुर-गम्य वारुणी की यह उपेक्षा!" वह प्रतिशोध ले कर रहेगी।

दानव-समाज उसकी रूप-चंद्रिका में खोया-सा खड़ा था। उसी की ओर अपांग-विक्षेप करते हुए वारुणी बोली—"तुम लोग भी सुन लो। मैं शक्ति-संचारिणी सुरा हूँ। स्वेच्छा से तुम लोगों को वरण कर रही हूँ; मुझे ग्रहण करो।"

इन्हीं वाक्यों की प्रतीक्षा, तो दानव कर रहे थे। वे मानो कृतकृत्य हो गये। वारुणी के चरणों पर नत हो गये। उल्लास से जय-ध्वनियाँ हुईं। असुर-पुरी में सुरा का अभिषेक हुआ।

उसी समय से वारुणी दैत्य-कुल की, भोग्या बन गयी। वह एक-वीरा नहीं, बहु-वीरा हुई। उसकी वह्नि-ज्वाला दैत्यों के सर्वांग को छू गयी; इसलिए वे सब-के-सब सतत उत्तप्त, चंचल व मोहांध बने रहे।

किंतु असुर-भोग्या होने पर भी वह सुर-उपेक्षिता है, यह अपमान सुरा के हृदय को बींधे जा रहा था। स्वर्ग की सीमा में उसका प्रवेश निषेध था। फिर भी उसके अंतर में सुर-संयोग की कामना बनी ही रही।

बहुत दिन बाद एक सुयोग हाथ लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच, संजीविनी-विद्या सीखने के लिए दैत्य-गुरु शुक्राचार्य के पास आये। सुरासक्त दानवों ने उस सुंदर ब्राह्मण-संतान की हत्या कर डाली। वारुणी उग्र निष्पलक दृष्टि से पैशाचिक उल्लास के साथ कच का रक्त देखती रही। यही रक्त, तो उसके शरीर में भी है। फिर भी वह सुर-लोक से भ्रष्टा! दानवों ने निर्णय किया कि, कच के अस्थि-चूर्ण से दानव-गुरु का तर्पण किया जाय और उस चूर्ण को आहार्य रूप देने का काम करे वारुणी। पुलकित हो उठी वारुणी। दैत्य-गुरु शुक्राचार्य देवांश-संभूत। बस इस ऋषि को मोहित कर, अब वह सुर-संभोग की अपनी अतृप्त वासना को पूर्ण करेगी।

आज दानव-पुरी उत्सव-प्रमत्त थी। चतुर्दिक् मोहमयी सुरा का प्रभाव था। उसी में निमंत्रित होकर दैत्याचार्य पधारे। वहाँ का राग-रंग देख कर वे सोचने लगे—"इंद्रपुरी में इतना ऐश्वर्य कहाँ, नंदन-कानन में इतना आनंद कहाँ?"

मोहिनी-वेश में वारुणी प्रमोद-कक्ष में उपस्थित हुई और गुरु-चरणों में नत हो गयी। महर्षि शुक्राचार्य चमक उठे। कल्प-लोक से उनकी दृष्टि नीचे आ गयी और कामिनी के कमनीय अंगों पर स्थिर हो गयी। वे ठहरे कवि, सौंदर्य के उपासक। सुंदरता क्या केवल कोमल-कमनीयता ही है? यह जो रुद्र-काठिन्य, यह जो भीम-कांति है क्या सुंदर नहीं है? मुग्ध कवि ने वारुणी का अंग-स्पर्श किया और उस विद्युत् स्पर्श से उनका चित्त विक्षिप्त हो गया। मस्तिष्क में भीषण उत्तेजना, सर्वदेहमय प्रदाह व्याप्त हो गया। अर्ध-मूर्छित हो गयी चेतना। मदिरा-विह्वल नयन में घोर तंद्रा छा गयी। धीरे-धीरे वे स्वप्नों की दुनिया में खो गये।

यह सुयोग पा मोहिनी वारुणी ने शुक्राचार्य के मुँह में कच का अस्थि-चूर्ण डाल दिया। किंतु भार्गव की यह मोह-मुग्धता क्षण-मात्र के लिए थी। सत्य-द्रष्टा ऋषि का वारुणी से विह्वल होना, प्रकृति-विरुद्ध था। ध्यान-बल से उसी क्षण वे जान गये कि, मुहूर्त-भर की विभ्रान्ति के कारण, भयंकर अनिष्ट हो गया। मोह मुग्ध हो, उन्होंने जल के साथ, प्रिय शिष्य कच का अस्थि-चूर्ण पान कर लिया है, ब्रह्म-पातक के भागी हो गये हैं। यह विभ्रान्ति किसने उत्पन्न की?

वारुणी की मायावी चाल देख कर उग्रतेजा भार्गव उत्तेजित और क्रुद्ध हो उठे। उनकी भौंहें तन गयीं। दर्पिनी वरुण-नंदिनी को लक्ष्य कर उन्होंने कहा—"सुरा हो कर भी तुम आत्म-दर्प से सुर-परित्यक्ता हुई, तो भी तुम्हारा दर्प नहीं गया। असुरों की भोग्या हो कर भी, तुम संभोग-कामना में अस्थिर हो। तुम्हारी यह अधम लालसा देवधर्मी ऋषि-ब्राह्मण के ऊपर भी प्रभाव डाल रही है। मैं शाप देता हूँ—"आज से तुम ब्राह्मणों की भी परित्याज्या होगी। .....और धृतव्रत वीर कापलिक के हाथ, तुम्हारा शेष दर्प भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चूर्ण हो जायेगा।"

ऋषि-कोप से वारुणी सिहर उठी; किंतु निरुत्साहित नहीं हुई। विशालकाय शाल-वृक्ष वज्र से विदीर्ण हो कर भी झुकता नहीं। अविचल-भाव से खड़ी रही उग्रतेजा दानव-गुरु के संमुख, जिनके तपोबल से देवराज इंद्र भी काँप उठते हैं।

यह देख कर शुक्राचार्य विस्मित हो गये। कैसा अदमनीय दर्प! कैसा कठिन तेज! शांत भार्गव के नेत्रों के सम्मुख भैरवी की सुंदर मूर्ति जाग उठी। तापस के मन्यु ने कवि की सहानुभूति का रूप ले लिया। वे सुरा को लक्ष्य कर बोले—"सुरा, तुम्हारी मदांधता से क्रुद्ध हो कर ही मैंने अभिशाप दिया था; किंतु तुम्हारी दृढ़ता देख तुष्ट भी हुआ हूँ। तुम्हारा रूप-दर्प अशेष है, और तुम्हारी भोग-वासना प्रबल। तुम असुर-राज्य में बहु-भोग्या होगी और मर्त्य-लोक में भी तुम्हारा अधिकार अक्षुण्ण रहेगा। इह लोक में जो काम-सक्त, मृगयासक्त और द्यूतासक्त जन हैं, उनके हृदय में तुम अबाध विचरण करोगी। जो अहंकारी, दाम्भिक, अजितेंद्रिय एवं दुर्बल-चित्त मनुष्य हैं, उनके घर में भी तुम एकेश्वरी रहोगी। समस्त मर्त्य-लोक तुम्हारे सदर्प आक्रमण से अस्थिर रहेगा। परंतु.....।"

बोलते-बोलते ऋषि उदास हो गये। करुणा से उनका कंठ अवरुद्ध होता जा रहा था। फिर भी वे बोले, "....पर क्या यह दर्प भला है सुरा? क्या यह उग्र भोग-कामना अच्छी है? तुम सुर-नंदिनी हो कर भी सुर-परित्यक्ता हो। अन्य-भोग्या होने के कारण तुम्हारी देह अपवित्र है। ..... तथापि मेरे आशीर्वाद से तुम शाप-मुक्त हो सकती हो। जिस वीर्यवान् वीर साधक के हाथ से तुम्हारा दर्प नष्ट होगा, उसी के वाम-मंत्र से तुम शाप-मुक्त हो जाओगी। उस दिन तुम अमित सात्विक शक्ति धारण करोगी। तुम्हारे स्पर्श-मात्र से साधक सुर होंगे, और तब तुम्हारा सुरा नाम सार्थक हो जायेगा।"

विजय-रहस्य

शस्त्र-बल और वर-बल से इक्कीस बार इंद्रासन पर अधिकार करके भी, जब असुर स्वर्ग से पतित हो गये, तो नारद ने ब्रह्मा से इंद्र की इस अपराजेयता का रहस्य पूछा। ब्रह्मा ने अपने पुत्र की इस रहस्योद्घाटन-जिज्ञासा से प्रसन्न होते हुए कहा—"तात, विजय-पराजय के बारे में बस इतना जान लो कि, जिसने रस को जीत लिया, उसे कोई नहीं जीत सकता और जिसे रस ने जीत लिया, वह किसी को नहीं जीत सकता। इंद्र ने सारे रसों को जीत रखा है, अतः उसे कभी कोई नहीं जीत सकेगा।" —'कथा-लहरी'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुक्राचार्य ने अब और विलंब नहीं किया। सुरा-संग से ब्रह्म-पातक के भागी हुए थे और बृहस्पति-पुत्र कच को मुक्त करना था। अतः वे तेजी से दानव-पुरी से बाहर निकल आये।

उसी क्षण से विश्व में वारुणी का प्रचंड तांडव प्रारंभ हो गया। उसके आतंक से सारे विश्व में हाहाकार मच गया। वह कभी क्रोध से गर्जन करती, कभी अट्टहास कर हँसती, और कभी शांत हो जाती।

सहसा सूर्य अस्त हुआ; किसी अज्ञात आशंका से वारुणी का हृदय काँप उठा। तभी उसे पद-ध्वनि सुनायी पड़ी। मानो कोई बोलता आ रहा है – "शिवोऽहम् सुरोऽहम्, न चान्योहमऽस्मि।" कैसा गंभीर कंठ-नाद! वारुणी विस्मित हो गयी। एक जटाधारी, बलिष्ठ देह वाले व्यक्ति उसके समक्ष आये। रक्ताम्बर-परिधान, ललाट पर रक्त-चंद्र, कंठ में रुद्राक्ष-माला, हाथ में कपाल-पात्र।

"भयभीत हो रही हो वारुणी? उग्रतेजा शुक्राचार्य को पराभूत करने पर भी भय!" वारुणी ने हड़बड़ा कर प्रश्न किया—"कौन?"

"मैं व.म.च.री कापालिक। आद्याशक्ति काली हमारी उपास्या है। आज अमा की मध्य-रात्रि में शव-साधना से उनको तुष्ट करूँगा। तुम्हारी आवश्यकता है।"

"मेरी?" वारुणी का कंठ शुष्क होता जा रहा था। अवरुद्ध कंठ से बोली—"मेरी क्यों? नहीं...नहीं, मैं वारुणी हूँ; देव-भोग में मेरा अधिकार नहीं है।"

"कौन कहता है अधिकार नहीं है?" कापालिक उच्च स्वर में बोले—"तुम केवल वारुणी नहीं, सुरा भी हो। तुम्हें विदित नहीं कि, वीर-साधक क्या कहते हैं—ब्रह्मलोक में जैसा अमृत है, मर्त्य-लोक में वैसी सुरा है। उसके भोग से साधक सुरत्व लाभ करते हैं।"

वारुणी मानो संज्ञा-हीन हो गयी। फिर भी प्राण-पन से अपनी शेष शक्ति बटोरती हुई बोली—"मैं सुरा हो कर भी लौकिकी सुरा हूँ; दानव-मानव के भोग से अपवित्र साधक की अस्पृश्या हूँ।"

"अपवित्र को मैं पवित्र करूँगा", उन्मुक्त हास्य का उच्छ्वास छोड़ते हुए वीर-साधक बोले—"हमारे धर्म में कोई अपवित्र नहीं। माँ की गोद में शुचि-अशुचि का भेद नहीं; आओ।"

वीर-कापालिक ने अपनी सबल भुजाएँ फैला दीं। वारुणी ने आत्म-गोपन करने की चेष्टा की; परंतु कापालिक ने क्षण मात्र में उसे अपने हाथों में उठा लिया।

कापालिक वारुणी को लेकर अंधकारा-च्छन्न निर्जन श्मशान में आये। और अपने पूर्व-निर्दिष्ट शवासन पर बैठ गये। मुख से एकाक्षरी-मंत्र उच्चारण करते रहे।

इस तरह उस शुद्ध-शुचि सुरा को वीर-साधक ने अपनी देह-कुंडलिनी के मुख से धारण किया। सुप्ता कुंडलिनी निमेष-मात्र में जागृत हो गयी। न रहा वारुणी का रूप-दर्प और न रहा उसकी शक्ति का अभिमान! वह शाप-मुक्त हो गयी।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हजार-हजार होंठों से पिया
अगर स्वाद हर बार नया है

जीवन से विराग क्यों? रस-दृष्टि है, तो जीवन एक रस-क्षण है, चाहे वह एक दिन का हो या शत वर्ष का—८५-वर्षीय वाक्शिल्पी सामरसेट माम की इस जीवन-आस्था के कुछ रत्न-कण

*

जीने के लिए जीना, यही मेरा सिद्धांत है। केवल जीना भी, जीवन का इतना बड़ा आकर्षण है कि, उसके लिए मानव हजारों यातनाएँ सह लेता है। इस प्रकार, हर किसी परिस्थिति में जीते रहने की इच्छा, जीवन के मार्ग पर प्रत्येक को ढकेलती रहती है। परंतु इस इच्छा का स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति में, भिन्न-भिन्न रूप में दृष्टिगोचर होता है।

हम अपने जीवन में अनुभूत सुख-दुःख पर से, दूसरे के सुख-दुःख का अनुमान लगाते हैं। ऐसे ही अनुमान द्वारा दूसरों के दुःख की कल्पना करके, संसार में पर्याप्त निराशा उत्पन्न हुई है। इन्हीं अनुमानों के आधार पर, कई उपन्यास गलत जीवन-दर्शन से भरे हुए दिखायी देते हैं। सच बात यह है कि, संसार में सच्ची कल्पना-शक्ति बहुत ही कम लोगों में होती है। कल्पना द्वारा दूसरों के दुःख-दर्द को पहचानने वाले लेखक प्रायः वास्तविकता से बहुत दूर चले जाते हैं।

उदाहरणार्थ इसी भावना को लें कि, जीवन की कुछ निजी बातें गुप्त होती हैं। गरीबों के जीवन के तथ्य तो खुले और स्पष्ट बिखरे पड़े हैं। प्रायः कहा जाता है कि, इन बेचारों के जीवन में कोई व्यक्तिगत गोपनीयता नहीं होती। परंतु वास्तव में देखा जाये, तो प्रतीत होगा कि, दूसरों से अलिप्त रहना, गरीबों को अच्छा नहीं लगता। उन्हें एकांत कैद की तरह लगता है। एकांत के आनंद की मानवीय कल्पना, गरीबों के मन को कभी जँचती ही नहीं। हम जिन्हें गरीबों की आवश्यकताएँ मान कर चलते हैं, उनमें से अनेक की आवश्यकता तो उन्हें कभी महसूस ही नहीं होती। गरीबों का दुःख कही जाने वाली अनेक अतिरंजित बातें, इस प्रकार की होती हैं कि, स्वयं गरीबों को उनकी जानकारी नहीं होती।

वस्तुतः उनकी जीवितेच्छा का स्वरूप ही कुछ भिन्न होता है। उनका जीवन भी हमारे जीवन के समान होना चाहिए, ऐसा मान कर हम प्रायः चलते हैं। और ऐसा मान कर चलते समय, हमने कभी नहीं सोचा कि, हमारा सुधारित जीवन उन्हें कैसा लगता होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुधरे हुए कहाने वाले आज के राष्ट्रों में हो रही नृशंसताओं को देख कर, उस दुनिया से दूर रहने वाले व्यक्तियों को कैसा लगता होगा ! इसे देखते हुए क्या आज का मानव-जीवन पूर्वापेक्षया अधिक सुरक्षित कहा जा सकता है ? कई प्रकार के दुःख हमने कम कर लिये हैं, ऐसा मानने के पूर्व हमें समष्टि में वर्तमान दुःख का विचार भी करना चाहिए। ऐसा करने पर सहज ही मालूम हो जायेगा कि, परमावश्यक कर्तव्य की ओर से आधुनिक मानव मुँह फेरे हुए है। प्राप्त ज्ञान, संपादित सामर्थ्य, किये गये सुधार, इन सब बातों पर विचार करने पर, हम इसी नतीजे पर पहुँचते हैं कि, हम आज भी निसर्ग के हाथों की कठपुतली हैं। भूकम्प के धक्के, ज्वालामुखी के विस्फोट, दुष्काल, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक प्रकोप पृथ्वी के जन्म के साथ ही उत्पन्न हुए; भविष्य में भी वे हमें इसी प्रकार डराते रहेंगे। और फिर, मानव द्वारा की जा रही असंख्य भयावह भूलें क्या कम हैं ?

निकट भविष्य में इस स्थिति के परिवर्तित होने के कोई आसार नहीं। संसार में अमंगल की मात्रा आज भी अधिक ही है। इससे सावधान रहना अत्यावश्यक है। इस ओर से आँखें मूँद लेना व कान बंद कर लेना, मूर्खता ही कही जायेगी। परंतु उसके सम्बंध में सदैव रोते रहने से भी क्या लाभ ! विलाप को स्पीनोजा ने स्त्रियों का गुण बताया है। उसका तात्पर्य यह प्रतीत होता है कि, जो दुःख अपरिहार्य है, उसके नाम पर रोते रहने का कोई अर्थ नहीं।

परंतु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि, मैं दैव-वादी और नैराश्य का पुजारी हूँ। मुझे जो सुख और वैभव मिला है, उससे मुझे सदैव आश्चर्य होता रहा है। मुझसे अधिक योग्यता वाले व्यक्तियों को जितना कम सुख-वैभव मिला है, उसे देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। मैं जीवन के प्रति अधिक संतुष्ट हूँ और आनंद अनुभव करता हूँ। परंतु इस जीवन को भोगने के लिए पर्याप्त आयुष्य ही न मिले तो ? परंतु मुझे इसके प्रति कोई आकर्षण नहीं; इसमें कोई लुभावनी बात भी मुझे प्रतीत नहीं होती। इसका कारण यह है कि, जो प्राप्त हो गया है, वही क्यों व कैसे हो सका, यह मैं नहीं बता सकता। उसमें मेरे कर्तृत्व का भाग कम और योगायोग का ही अधिक है।

मेरे अतीत जीवन से यदि तुलना की जाये, तो आज के युवक कितने भाग्यशाली हैं ! क्योंकि हमें जो अप्राप्य थीं ऐसी कितनी ही वस्तुएँ उन्हें जीवन के प्रथम चरण में ही मिल रही हैं। रूढ़िवाद टूट रहा है। इसलिए तारुण्य का मूल्य उनको समझना चाहिए। हमें जो ज्ञान अथक प्रयत्नों के पश्चात् मिला, वह उन्हें अनायास ही उपलब्ध है। युवा स्त्री-पुरुषों के आपसी सम्बंधों में अब कितनी स्वाभाविकता आ गयी है ! आज की युवा स्त्रियाँ सहचरी के रूप में हैं। हमारे समय में स्त्रियों ने अपने प्राचीन बंधनों को तोड़ा और नवीन स्वतंत्र जीवन में केवल श्वास ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिया था। उस समय की सद्यःमुक्त नारी, पुरुषों से स्पर्धा करने में ही उलझी हुई थी। आज उसमें मैत्री-भाव है। वह आत्म-विश्वास के साथ, शांत भाव से उज्वल-भविष्य की ओर निहार रही है।

इस तरुण पीढ़ी को अब आगामी अर्थ-विचार-प्रधान विश्व के लिए तैयार हो जाना चाहिए। पूर्व का सुरक्षित गृह-जीवन अब दिशा बदल रहा है। श्रमजीवी वर्ग में पर्याप्त चेतना उत्पन्न हो गयी है। आज के शासकों को भी पुराने दृष्टिकोण त्याग कर, श्रमजीवी वर्ग के अधिकारों को मान्यता देनी चाहिए। नहीं तो स्पष्ट है कि, किसी दिन उन्हें भी रूस के सत्ताधीशों के समान जबर्दस्त धक्का दिया जायेगा। और सत्ता की यह काया-पलट प्रेम तथा सहिष्णुता से न हो सकी, तो संसार में अराजकता फैलेगी और हिंसा जोर पकड़ेगी। कम-से-कम अपने जीवन-काल के लिए तो यही कामना करता हूँ कि, ऐसा दृश्य देखने का अवसर न आये। परंतु समय तेजी से भागा जा रहा है।

रूस से भाग कर आये एक धनिक ने मुझे बताया कि, जिस समय उसका सर्वस्व गया, उसे बड़ी यातना भोगनी पड़ी; परंतु पंद्रह-बीस दिनों के अंदर ही उसने अपने मन को कड़ा कर लिया और बीती को भुला कर, उसे फिर मन में नहीं आने दिया। लेकिन मुझे विश्वास है, मेरा सर्वस्व छिन जाने पर भी, मेरा मन इतना दुःखी नहीं होगा। ऐसा प्रसंग आने पर, त्याग करने की शक्ति उत्पन्न करनी चाहिए। यदि जीना असंभव प्रतीत हो, तो जीवन का लोभ छोड़ देने की शक्ति एवं धैर्य, उसी क्षण आ जाना चाहिए। आत्म-हत्या से लोग इतना क्यों घबराते हैं, मेरी समझ में नहीं आता। जीवितावस्था में जिस क्षण, दुःख और दुर्दैव के सिवा सभी कुछ असंभव दीखता हो, उस समय भार-स्वरूप प्रतीत होने वाले जीवन को राजी-खुशी समाप्त कर लेना कितना अच्छा है!

जीव

केवल देह के प्यासे जीव, कुछ और भी पी—रस के कितने घट तेरे सामने भरे पड़े हैं! केवल अहम् के ही भूखे जीव, कुछ और भी तो खा—रस के कितने व्यंजन तेरे सामने रखे हैं! ओह, समझा मैं! तू मनुष्य है न—तू तो अपने हाथ की प्याली भी नहीं पी सकता, सदा दूसरों की प्यालियों को ही ताका करता है! —हारातोजी (जापानी)

वृद्धावस्था को मैंने अत्यधिक शांति-पूर्वक स्वीकार किया है। "लारेन्स इन अरब" वाली कथा मुझे स्मरण हो आती है। वृद्धावस्था से वह कितना भयभीत था! वह अपनी मोटर-साइकिल सदैव अत्यधिक वेग से चलाया करता था। कारण क्या था? यही कि, यदि दुर्घटना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो, तो तत्काल मृत्यु हो जाये एवं संभावित वृद्धावस्था की दुर्दशा से भी बचा जा सके। इसमें मुझे उसके जीवितेच्छा-सम्बंधी गहरे अज्ञान का दर्शन होता है। उषा और मध्याह्न की शोभा एवं चंचलता देख कर, संध्या के शांतिपूर्ण वातावरण के भय से धड़ा-धड़ खिड़की बंद करने वाला व्यक्ति, भ्रांतचित्त नहीं तो क्या है? वृद्धावस्था के भी कुछ आनंद हैं। वे युवावस्था से भिन्न है; किंतु युवावस्था में अनुभूत आनंद के समान ही, वे भी सार्थक हैं। निस्संदेह मूर्ख की वृद्धावस्था मूर्खता से व्याप्त होगी; परंतु उसकी युवावस्था भी तो उसी मूर्खता में व्यतीत होती है। ऐसे भी कुछ आनंद हैं, जो केवल वृद्धावस्था में ही प्राप्त हो सकते हैं। प्रवास की पूर्ण तैयारी के साथ गाड़ी के लिए प्लैटफार्म पर आकर, उसकी प्रतीक्षा में बैठने में जैसे सुख व आनंद की अनुभूति होती है, उसी प्रकार का सुख व आनंद, जीवन-यात्रा की वृद्धावस्था में भी प्राप्त होता है।

वृद्धावस्था का एकमात्र दुःख आप मृत्यु को ही मानते हैं न? परंतु मृत्यु तो अपरिहार्य है। मृत्यु की पीड़ा, किसी की मौत को प्रत्यक्ष देखे बिना अनुभव नहीं की जा सकती। मैंने तो केवल कल्पना के आधार पर ही उस दुःख को जानने का प्रयत्न किया है। मैंने अपने नाटकों में भिन्न-भिन्न पात्रों के मुख से उसे कहलाया भी है। परंतु मृत्यु के विषय में मुझे सदैव आज जैसा ही लगता रहेगा, यह भविष्यवाणी मैं नहीं कर सकता।

भविष्य का ध्यान रख कर जीने की मेरी आदत है। उससे अब कई बार मन में मृत्यु के विषय में विचार आता है। अब मृत्यु सन्निकट भी तो है। प्रियतम के पास जाने के लिए अधीर प्रेयसी के समान, स्वयं ही चार कदम बढ़ा कर उसके बाहुपाश में जाने की इच्छा होती है। इस अंतिम मुक्ति का क्षण कब आयेगा? वैसे अब भी, जब तक डाक्टर नीरोग रख सकें, तब तक मेरी जीने की तैयारी है। परंतु वास्तव में जीवन में पूर्णत्व आना ही मृत्यु है। जीवितेच्छा का पूर्णत्व मृत्यु में ही है। संसार में इतने दिन से मैंने एक स्थान पर कब्जा जमा रखा है; उसे अब किसी दूसरे के लिए रिक्त करना होगा।

कलाकार कलाकृति तैयार करते हुए, जब उसे पूर्ण कर देता है और उसमें कुछ भी करना शेष नहीं रहता, तो उसे छोड़ देता है। उसी दृष्टिकोण से हमें जीवन को भी देखना चाहिए। जीवितेच्छा का कार्य पूर्ण हो जाने पर भी उसे बनाये रखना, जीवन की हानि करना है। मनुष्य जीवितेच्छा के ही बल पर जीता है; परंतु उस इच्छा पर अनावश्यक बोझ डाला गया, तो वह शेष जीवन को असह्य बना देती है। इसकी अपेक्षा यदि वह अपने जीवन के कार्यों की ओर तुलनात्मक दृष्टिपात करे, तो यही जीवितेच्छा जीवन के अंत तक, मृत्यु का स्वागत करने का धैर्य प्रदान करेगी।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कविपुत्र कुबेर

एक देवता के जीवन-पथ के उतार-चढ़ावों का रोचक वर्णन

*

मानवों की भाँति, देवताओं की महिमा और पद-प्रतिष्ठा में भी, काल-गति से उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। धनपति कुबेर, जो आज उत्तर-दिशा के चौकीदार भर रह गये हैं, कभी बड़े महिमाशाली देव थे। आज वे मंदिरों की बाह्य-भित्तियों पर ही स्थान पाते हैं; परंतु कभी वे गर्भगृह में विराजते थे।

यक्ष-कुल के अधिनायक, नव-निधियों के स्वामी एवं उत्तर-दिशा के परिपालक के रूप में तथा नरवाहन, वैश्रवण और धनपति आदि नामों से, कुबेर का उल्लेख पुराणों में पाया जाता है। वे शिवजी के परम-मित्र हैं और कैलास-पर्वत की गोद में बसी अलका-नगरी उनकी राजधानी है। अलका की उपकंठ-भूमि में कुबेर का जो सुरम्य उद्यान है, उसी के एक भाग में शिवजी का निवास है और शिवजी के जटाजूट पर स्थित चंद्रकला के कारण, अलका में सदा शुक्ल-पक्ष रहता है— बाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिकाधौतरम्या।

पार्थिव-संपदा के पति होने पर भी, कुबेर रूप-संपदा से वंचित ही हैं। कुत्सित "बेर" (शरीर) का होने के कारण, वे कुबेर कहलाये। वे तुंदिल और दंतिल हैं।

कुबेर मंत्रभाक् देवता हैं। तैत्तिरीय आरण्यक में "राजाधिराजाय" से आरंभ होने वाला सूक्त, कुबेर-मंत्र है। उसका अंत "कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः" इस पंक्ति से होता है। यह मंत्र शिवजी की आराधना के समय पढ़ा जाता है। राजा-महाराजाओं, मंत्रियों तथा धनी-मानियों के स्वागत-समारोहों पर भी, पूर्णकुंभ लिये वैदिक ब्राह्मण, इस मंत्र का गायन करते हैं।

वाल्मीकि-रामायण के उत्तर-काण्ड में, कुबेर का इतिवृत्त यों वर्णित है—

ब्रह्मदेव के मानसिक पुत्रों में एक थे पुलस्त्य। इन्हीं के पुत्र हुए कविपुत्र वैश्रवण। वैश्रवण ने अपने पितामह ब्रह्मदेव की विशेष आराधना करके, अमरत्व तथा समस्त ऐश्वर्य के स्वामित्व का अधिकार प्राप्त किया; साथ ही लंकापुरी का राजपद भी पाया। पुलस्त्य को इससे बहुत क्रोध हुआ कि, उनका पुत्र वैश्रवण उनकी उपेक्षा करके, अपने पितामह ब्रह्मदेव का कृपापात्र बन बैठा है। परिणाम यह हुआ कि, पुलस्त्य ने अपने ही अंश से, विश्रवस नामक एक अत्यंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बली पुत्र को उत्पन्न किया और उसे अपने ज्येष्ठ पुत्र के विरुद्ध भड़काया। विश्रवस अपने अग्रज कविपुत्र वैश्रवण से अतीव द्वेष करने लगा। चतुर वैश्रवण ने भी देखा कि, यह घर की फूट सर्वनाश का कारण बनेगी; इसलिए पुष्पोत्कटा, मालिनी तथा राका नाम की तीन रूपसी राक्षसी युवतियाँ, उसने पिता पुलस्त्य की सेवा में अर्पित कीं। पुष्पोत्कटा से रावण और कुंभकर्ण, मालिनी से विभीषण तथा राका से कर नामक पुत्र एवं शूर्पनखा नाम की पुत्री पुलस्त्य के हुए। परंतु इन राक्षसी-पुत्रों को भी अपने बड़े भाई कुबेर से प्रबल विद्वेष रहा। ब्रह्मदेव की तपस्या कर, इन राक्षसी-पुत्रों ने अनूठे वर पाये। इन्हीं वरों के बल पर, रावण ने लंका पर आक्रमण कर, उसे जीत लिया। तब से कुबेर गंधमादन पर्वत पर जा कर रहने लगे।

वराह-पुराण में कुबेर की जीवनी दूसरे ही रूप में वर्णित है। जब ब्रह्मदेव ने सृष्टि-कार्य आरंभ किया, तब उनके मुँह से बड़ी आँधी निकली, जिसके साथ आकाश से पत्थरों की वर्षा भी हुई। थोड़ी देर के बाद जब शिलावृष्टि थमी, तो ब्रह्मा ने उन पत्थरों से एक पुरुष का सर्जन किया और उसे सम्पत्ति का अधिदेवता बनाया।

आगमों और शिल्पग्रंथों में, कुबेर की रूप-रचना के विषय में विस्तार से बताया गया है। विभवा और वृद्धि ये दोनों कुबेर की पत्नियाँ बतायी गयी हैं। ये देवियाँ एक हाथ से अपने पति को आलिंगन किये और दूसरे हाथ में रत्नमय पात्र लिये, अंकित की जाती हैं।

विष्णुधर्मोत्तर-पुराण में बताया गया है कि, कुबेर की बायीं आँख पिंगल वर्ण की है, उनकी देह पर कवच है। उनकी मूँछ और बाहर निकला बड़ा दांत तथा विशाल तोंद, ये सब उन्हें एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करते हैं। कुबेर के वाहन के विषय में भिन्न-भिन्न मत हैं। कतिपय पुराणों में, पद्मपीठाकार रथ को उनका वाहन बताया गया है, तो कुछ के अनुसार मनुष्य उनकी सवारी है। 'अंशुभेदागम' के अनुसार उनका वाहन भेड़ है। 'रूपमंडन' नामक ग्रंथ में हाथी का उनकी सवारी के रूप में उल्लेख है। इनके अतिरिक्त कुछ शिल्प-रचनाओं में, वे सिंह पर आसीन दिखाये गये हैं। कुबेर के दोनों पार्श्वों में शंखनिधि, पद्मनिधि, अष्ट ऐश्वर्यों की अधिष्ठात्रियों एवं यक्षों का रहना भी आवश्यक है।

पुरातत्व के अध्ययन से पता चलता है कि, प्राचीन काल में कुबेर के स्वतंत्र मंदिर होते थे, जिनमें उनकी पूजा-आराधना शिव, दुर्गा, विष्णु आदि की भाँति ठाठ से हुआ करती थी। अब भी दक्षिण-भारत में और उत्तर-भारत के भी कुछ प्रदेशों में, कुबेर की पूजा विशिष्ट त्योहार पर की जाती है।

हिन्दुओं की तरह, जैन भी कुबेर को आराध्य देवता मानते हैं। जैन-ग्रंथों में, कुबेर को उन्नीसवें तीर्थंकर नेमिनाथ का यक्ष-देवता बताया गया है। जैनों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मतानुसार, कुबेर के चार सिर और आठ हाथ होते हैं और उनका चिह्न या वाहन हाथी होता है।

बौद्ध-ग्रंथों में भी, कुबेर का चित्रण पाया जाता है। उनमें कुबेर के जम्बल, वस्सवण (वैश्रवण) आदि नामों का उल्लेख है, जो आज भी लंका में प्रचलित हैं। बौद्ध मूर्ति-विधान में, कुबेर की गोद या बगल में एक नेवला, दायें हाथ में मधुपात्र और पीठ के नीचे पूर्णघट होता है।

बौद्ध-ग्रंथों में कुबेर की पत्नी का नाम हारीती बताया गया है। इनके पाँच-छः संतानें हैं। हारीती को बौद्ध लोग मातृत्व के प्रतीक के रूप में पूजते हैं। आंध्र-प्रदेश के नागार्जुनकोंडा में, इस देवी की आराधना के उत्कीर्ण भित्ति-चित्र पाये जाते हैं। वहाँ के खंडहरों में, देवी हारीती का पृथक् मंदिर होने के चिह्न भी मिले हैं। संतानार्थी दम्पतियों और मुख्यतया, गर्भिणी स्त्रियों के लिए, यह मंदिर पुनीत तीर्थस्थान था। हारीती को आराध्य कुलदेवता मानने-वालों में, दक्षिण के कदम्ब-कुल के राजा और पूर्वी चालुक्य प्रमुख थे। इनके वंशज "हारीतीपुत्र" का बिरुद बड़े अभिमान से धारण करते थे।

आजकल दक्षिण के शिव-मंदिरों में जो सोमास्कंद की भव्य मूर्तियाँ पायी जाती हैं, उनकी समता कुबेर-हारीती की मूर्तियों में देखी जाती है। तंजाऊर के बृहदीश्वर-मंदिर में, परिवार-देवताओं की पंक्ति में, कुबेर-दम्पति ने भी स्थान पाया है। कुबेर-पूजा केवल हमारे देश में ही नहीं, अपितु जावा आदि समुद्र-पार के द्वीपों में भी, जहाँ भारतीय संस्कृति के अंकुर पनपे, प्राचीन काल से चलती आ रही है। आज भी वहाँ कुबेर-मूर्तियाँ उपलब्ध होती हैं।

प्राचीन काल में, भक्त-जन कुबेर के वाहन नेवले को घर-घर पाला करते थे। 'पंचतंत्र' की ब्राह्मणी और नकुल की कथा, इसका प्रमाण है। सुप्रसिद्ध तमिल-महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम्' में भी इस प्रथा का उल्लेख है। यह भी पता चलता है कि, नेवले को मारना घोरतम पाप माना जाता था। तमिल में नेवले को 'कीरि' तथा कुबेर को 'कीरन्' (कीरिवाला) कहते हैं। यह 'कीरन्' शब्द तमिल देश में पहले अधिक प्रचलित था। लखपति-करोड़पति ही नहीं, अपितु विद्या-विवेक के धनी भी, अपने नाम के साथ 'कीरन्' शब्द जोड़ने में गौरव अनुभव करते थे। विशेषतः प्रकांड पंडितों एवं महा-कवियों के नामों के अंत में "कीरन्" शब्द जोड़ने की प्रथा-सी बन गयी थी। इसका कारण शायद यह रहा हो कि, कुबेर के नामों में 'कविपुत्र' भी एक है। वैसे यह अस्पष्ट है कि, उनका यह नाम क्यों पड़ा। शायद कभी वे बौद्धिक वैभव अर्थात् विद्या के भी अधिपति रहे हों। 'कीरन्' पद, अनेक स्थानों के नामों में भी पाया जाता है, जैसे—कीरनूर, कीरन्-कुडि, कीरन्पाक्कम् और कीरन्कुन्नम्।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिल-तिल जलिये— न जलिये तो मौत

कंठमणि—थाइरायड ग्लैंड—हमारे शरीर का अग्नि-प्रवाह है, हमारी ऊर्जा है। प्रस्तुत प्रबंध में उसके मौलिक वैशिष्ट्य का निदर्शन पढ़िये।

*

आपने ऐसा आदमी देखा है, जो दिन में चार-चार बार भर-पेट खाना खाने पर भी भूखा बना रहता है और दिनों-दिन क्षीण होता जाता है? बड़े-बुजुर्ग ऐसे आदमी के लिए कहा करते हैं—"इसे अतिक्षुधा का रोग हो गया है।" उनकी बात ठीक ही है; क्योंकि ये लक्षण शरीर की स्वस्थ अवस्था के नहीं हैं। अगर आप इस आदमी की डाक्टरी जाँच करायें, तो पता लगेगा कि, उसकी थाइरायड-ग्रंथि अत्यधिक सक्रिय है। और किसी ग्रंथि की अति-सक्रियता भी एक रोग ही है।

मनुष्य की गर्दन में स्थित, तितली के आकार की थाइरायड-ग्रंथि, शरीर का संतुलन और व्यवस्थित संचालन करने वाले महत्वपूर्ण अंतःस्रावों (हार्मोनों) का निर्माण करनेवाली सबसे प्रमुख ग्रंथियों में से एक है। मोटर में जो स्थान एक्सेलेरेटर का होता है, वही मानव-शरीर में थाइरायड का है; वही शरीर की कार्यगति को बढ़ाती-घटाती है। अपने अंतःस्राव के द्वारा, वह शरीर के तापमान और रासायनिक प्रज्वलन-क्रिया (मेटाबोलिज्म) का नियंत्रण करती है। दिन-भर में वह प्रायः एक औंस के दो हजार आठ सौवें भाग जितना अंतःस्राव तैयार करती है। इस स्राव की मात्रा में जरा भी कमी-बेशी होने का अर्थ है— शरीर की रासायनिक प्रक्रिया में भयंकर उथल-पुथल।

शरीर की रासायनिक प्रक्रिया को हम दूसरे शब्दों में "जीवन" कह सकते हैं। मुर्दे में यह प्रक्रिया नहीं होती; इसलिए वह ठंडा पड़ जाता है। इसी प्रक्रिया के कारण, जीवित प्राणी का शरीर गरम रहता है। यदि थाइरायड स्वस्थ होती है, तो यह प्रक्रिया संतुलित रूप में चलती है। थाइरायड के सुस्त हो जाने पर, शरीर-क्रियाएँ मंद पड़ जाती हैं। यदि किसी के शरीर की रासायनिक प्रक्रिया मंद हो, तो समझिए कि, उसकी थाइरायड-ग्रंथि सुस्त हो गयी है। बुढ़ापे में ऐसा बहुधा होता है। यही कारण है कि, बूढ़ों को ठंड अधिक लगती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस युवती की थाइरायड-ग्रंथि बहुत सुस्त पड़ गयी है, वह माता नहीं बन सकती। इसके विपरीत थाइरायड का अति-सक्रिय हो जाना भी खतरनाक है। मेरे मरीज श्री 'क' की यही स्थिति थी।

श्री 'क' जब पहले-पहल मेरे पास आये, मैंने देखा कि, उनके शरीर का ढाँचा विशाल है; परंतु उस पर मात्र त्वचा शेष रह गयी है। उनकी आँखें अस्वाभाविक रूप से बड़ी दीखती थीं। उन्होंने बताया कि, वे दिन में छः बार खाना खाते हैं, फिर भी उनकी क्षुधा शांत नहीं होती और वजन भी लगातार गिरता जा रहा है। मेरे पूछने पर, उन्होंने यह भी बताया कि, उनके सिर के बाल और नाखून बहुत तेजी से बढ़ते हैं और शरीर से बहुत पसीना छूटता है। मैंने देखा कि, उनके हाथों में कंपन थी और उनकी हृदगति बहुत तेज।

जब मैंने श्री 'क' की थाइरायड-ग्रंथि की परीक्षा की, तो प्रतीत हुआ कि, वह थोड़ी-सी बढ़ी हुई है; परंतु वह इतनी आगे निकली हुई भी नहीं थी कि, भद्दी दीखे। थाइरायड-ग्रंथि के अधिकांश रोगियों में यह देखा गया है कि, उनकी यह ग्रंथि तनिक भी बढ़ी हुई नहीं होती। अगले दिन श्री 'क' के शरीर की रासायनिक प्रक्रिया की जाँच और मपाई की गयी। वह इस तरह कि, उन्हें एक टेबल पर विश्राम की मुद्रा में लिटा दिया गया। उनके चेहरे पर एक आवरण फिट कर दिया गया, जिसमें से वे साँस ले सकते थे। इस आवरण से एक यांत्रिक हाथ जुड़ा होता है। उस हाथ ने साथ के ग्राफ-कागज पर कुछ आड़ी-टेढ़ी लकीरें खींच दीं। लेबोरेटरी में इस ग्राफ की जाँच करने के बाद, उसकी रिपोर्ट मेरे पास आयी। उसमें लिखा था कि, श्री 'क' का बी० एम० आर० अर्थात् बेसल मेटाबोलिक, रेट +४५ था।

इन गूढ़ाक्षरों का अर्थ यह था कि, श्री 'क' अपनी ही वय, वजन और ऊँचाई के साधारण स्वस्थ मनुष्य की अपेक्षा, ४५ प्रतिशत अधिक आक्सीजन का उपयोग कर रहे हैं। इसका यह भी अर्थ था कि, उन्हीं की वय, वजन और ऊँचाई के एक साधारण स्वस्थ व्यक्ति को, अपना वजन बनाये रखने के लिए, जितने भोजन की आवश्यकता है, उससे ४५ प्रतिशत अधिक भोजन की, श्री 'क' को आवश्यकता है।

मानव-शरीर जलती भट्ठी के समान

अग्नि

अग्नि धारण भी तो करता है। अग्नि के अभाव में भला कभी कोई जीवन के दर्शन कर सका है? अग्नि जैसे काष्ठ में है, वैसे देह की अस्थियों में भी! यदि अस्थियाँ जलती न रहें, जीवन को घुलाती न रहें, तो ज्योति कैसे जले प्रवाह कैसे पले?

— कृष्णमूर्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। भट्ठी में आक्सीजन के जलने के लिए ईंधन चाहिए। शरीर में भी आक्सीजन को ईंधन चाहिए; हमारा भोजन ही वह ईंधन है। जब थाइरायड के अति-सक्रिय हो जाने से, शरीर में स्वाभाविक अवस्था से अधिक आक्सीजन जलने लगती है, तो उसके लिए भोजन भी अधिक चाहिए। यह भोजन न मिलने पर, रासायनिक वह्नि हमारे शरीर को ही जलाने लगती है। यही कारण है कि, ऐसा रोगी महाभुक्खड़ हो जाता है और क्षीण होता जाता है।

तीन सप्ताह के विश्राम, पौष्टिक भोजन और 'प्रापिल-थियोरेसिल' नामक दवा के सेवन से, श्री 'क' के स्वास्थ्य में आश्चर्यकारी परिवर्तन हुआ। उनका वजन १० पौंड बढ़ गया और आँखों का अस्वाभाविक फैलाव भी कम हो गया।

प्रायः ऐसे व्यक्ति, जो कुछ अधिक सक्रिय थाइरायड-ग्रंथि वाले हैं, दूसरों से अधिक क्रियाशील होते हैं। वे "जो काल करे सो आज कर, जो आज करे सो अब" के सिद्धांत के कायल होते हैं। जब वे चलते हैं, तो दौड़ते-से जान पड़ते हैं। आज के समाज में ऐसे लोगों की बड़ी प्रतिष्ठा होती है।

थाइरायड की चिकित्सा में अभी कुछ साल पहले तक, आयोडीन ही ऐसी अद्भुत दवा मानी जाती थी, जो "मानव-शरीर की ज्वाला" को बुझा सके। लेकिन आयोडीन एक बार ही, और वह भी थोड़े ही समय के लिए, लाभ करती है। परंतु अभी जो नयी आश्चर्यकारी दवा 'थियोरेसिल' निकली है, वह आयोडीन की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। इस नयी दवा का उपयोग थाइरायड के आपरेशन में भी किया जाता है; परंतु इसके लगातार प्रयोग करने से, रोगी को ऐसा चमत्कारी लाभ होता है कि, आपरेशन की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

लेकिन यह भी ध्यान में रखने की बात है कि, 'थियोरेसिल' कोई मामूली दवा नहीं है। जब कोई डाक्टर अपने किसी रोगी को 'थियोरेसिल' या थाइरायड-सम्बंधी अन्य कोई दवा खाने की राय दे, तो उसे इसका भी खयाल रखना चाहिए कि, रोगी पूर्णतः उसकी आज्ञा के अनुसार ही चले। महीने के अंत में, या आवश्यक समझे तो बीच-बीच में भी, डाक्टर को लेबोरेटरी में रोगी का परीक्षण कराते रहना चाहिए; ताकि रोगी की रासायनिक प्रक्रिया के न्यूनाधिक होने का पता चलता रहे। प्रत्येक महीने अथवा आवश्यकतानुसार सप्ताह के अंत में, रक्त का परीक्षण कराना भी आवश्यक है; क्योंकि इन दवाओं से लाभ-हानि दोनों हो सकते हैं।

निकट भविष्य में, शायद ही किसी थाइरायड-रोगी की शल्य-चिकित्सा हो तथा शायद ही इस रोग का रोगी अस्पताल के बिस्तर पर पड़ा मिले; क्योंकि आज का चिकित्सा-विज्ञान थाइरायड की—जिसकी अग्नि से आपका शरीर तिल-तिल करके भस्म होता रहता है—अति-सक्रियता के कारणों की छान-बीन कर रहा है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंतरिक्ष में प्राणदेवता

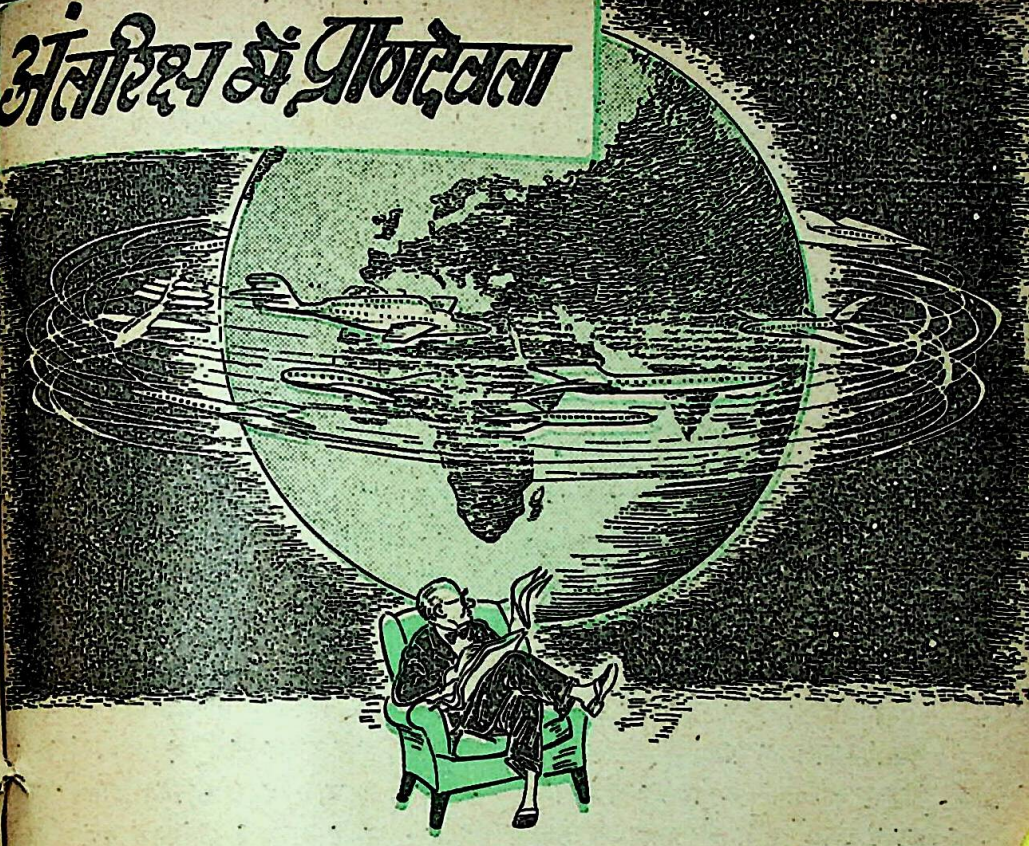

प्राण तो व्यक्ति में सीमित हैं; अंतरिक्ष निःसीम है। सीमित जब असीम में पहुँचेगा; तो बँट कर कुछ न रह जायगा—एसा तर्क अभी तक चल रहा था; किंतु आज विज्ञान ने कह दिया कि, ऐसा नहीं। प्राण अंतरिक्ष में भी अविभाज्य-अक्षय रह सकेगा। ऐसी ही एक योजना के लिए प्रस्तुत निबंध पढ़िये।

—

★

अंतरिक्ष-यात्रा के मार्ग में सबसे पहली बाधा ऐसी मशीन या यान के अभाव की है, जो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से मुक्त हो कर, अंतरिक्ष में उन्मुक्त विहार कर सके। वैज्ञानिकों ने अनेक राकेटों और परीक्षणात्मक राकेट-यानों का निर्माण किया है; लेकिन अभी तक, वे ऐसा अंतरिक्ष-यान निर्माण नहीं कर पाये हैं, जो प्रकृति की समस्त बाधाओं को पार कर, अंतरिक्ष में प्रवेश कर सके और पुनः सकुशल पृथ्वी पर वापस लौट कर आ सके।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसमें कोई संदेह नहीं कि, यह एक बहुत बड़ा कार्य है; लेकिन इससे भी एक बड़ी समस्या आज अंतरिक्ष-यात्रा के लिए उत्सुक वैज्ञानिकों के समक्ष है– और वह है – मानव को अंतरिक्ष-यात्रा के योग्य बनाने की। टेक्निकल दृष्टि से, मानव को अंतरिक्ष-यात्रा के लिए अधिक उपयुक्त और योग्य बनाने की दिशा में, कुछ भी नहीं किया जा सकता; क्योंकि मानव, न तो मशीन है, जिसको विशेष अनुसंधान द्वारा इस योग्य बनाया जा सकता है और न वह रासायनिक प्रयोगों के ही अंतर्गत आ सकता है।

यह तो सभी जानते हैं कि, मनुष्य अंतरिक्ष-यात्रा में आनेवाले खतरों का सीधा सामना करने में समर्थ नहीं है। वैज्ञानिकों के लिए, मानव की यह अयोग्यता, निश्चय ही अत्यधिक निराशा की बात है। इस सम्बंध में सभी वैज्ञानिक एकमत हैं कि, अंतरिक्ष-यात्रा की दृष्टि से, मनुष्य में जीव-विज्ञान और रसायन-विज्ञान की दृष्टि से कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता। मनुष्य कहीं भी वायु और भोजन के अभाव में जीवित नहीं रह सकता। यदि उसे अंतरिक्ष में जीवित रहना है, तो यान के अंदर ही उसे अनुकूल परिस्थितियाँ और वातावरण सुलभ होना चाहिए। प्रश्न यह नहीं है कि, अंतरिक्ष-यात्रा में विशेष प्रकार का सूट पहने अथवा साधारण वस्त्र। मुख्य समस्या तो यह है कि, उसे ऐसा परिचित वातावरण सुलभ होना चाहिए, जिसका वह पृथ्वी पर अभ्यस्त है। संक्षेप में, अंतरिक्ष-यान को स्वयं एक छोटी सी पृथ्वी का रूप देना पड़ेगा।

संसार के विज्ञान-सुदक्ष विश्व-विद्यालयों, अनुसंधान-संस्थाओं, यान-निर्माताओं और इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं द्वारा, अंतरिक्ष-यात्रा में, मनुष्य की प्रस्तावित भूमिका का, अत्यधिक सूक्ष्मता के साथ अध्ययन किया जा रहा है। ये अनुसंधान-संस्थाएँ अंतरिक्ष-यात्रा में मानव की भूमिका के विभिन्न पहलुओं पर गहन और व्यापक अनुसंधान कर रही हैं। यद्यपि वैज्ञानिकों और अनुसंधान–कर्ताओं को यह ज्ञात नहीं है कि, इन विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किस आधार पर और कहाँ से आरंभ किया जाना चाहिए; फिर भी, कुछ समय के लिए कल्पना का आश्रय लेकर, वे अंतरिक्ष में जीवन के अस्तित्व से सम्बद्ध विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर रहे हैं। उदाहरणार्थ, जीवाणु-रसायन-शास्त्री यह अध्ययन कर रहे हैं कि, अंतरिक्ष में मनुष्य के शरीर की रक्षा किस प्रकार की जा सकती है, उसे कैसे और किस प्रकार भोजन कराया जा सकता है। रेडियो-जीवाणु-शास्त्री मानव शरीर पर ब्रह्मांड-किरणों के संभावित प्रभावों के विषय में, स्वच्छता और सफाई कार्यों के इंजीनियर मल-मूत्र को ठिकाने लगाने और यान को साफ-सुथरा रखने, तथा वनस्पति-शास्त्री इस सम्बंध में अनुसंधान कर रहे हैं कि, अन्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रहों पर मनुष्य किस प्रकार की खाद्य-सामग्री की आशा कर सकता है। यही नहीं, वैज्ञानिक मनुष्य की कार्य-क्षमता तथा मनोवैज्ञानिक-क्षमता को भी मापने के लिए प्रयत्नशील हैं।

मनोवैज्ञानिक, रसायन-शास्त्री, औषध-विज्ञान शास्त्री, भौतिक-विज्ञान वेत्ता, ज्यो ति ष - शा स्त्री, स मा ज - शा स्त्री अंतरिक्ष-यात्रा में मनुष्य की भूमिका का बहुत ही गंभीरता के साथ अध्ययन कर रहे हैं।

यह भी प्रश्न उठता है कि, वर्षों की अंतरिक्ष-यात्रा पर रवाना होनेवाले मानव के स्त्री और बच्चों का क्या होगा। अंतरिक्ष-यात्रा का प्रभाव, मानव-समाज और मनुष्य के पारस्परिक सम्बंधों और दाम्पत्य-जीवन पर भी पड़ेगा। अतएव, समाज-शास्त्रियों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि, वे इन बातों पर भी अभी से गंभीरता-पूर्वक मनन करना शुरू कर दें, ताकि उपयुक्त अवसर आने पर मनुष्य को अंधेरे में न भटकना पड़े।

विज्ञान : कला

[चित्र : सुप्रसिद्ध खगोलवेत्ता जेकाब बीनर का जीवन विज्ञान की जिज्ञासा और कला के रसानंद का मधुर संयोग है।]

एक क्षण के लिए यह भी मान लीजिए कि, यदि मनुष्य किसी ऐसे ग्रह पर जा उतरता है, जहाँ के निवासी न केवल टैक्निकल दृष्टि से, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी उनसे आगे हैं, तो उसकी स्थिति क्या होगी? यदि ये अन्वेषक अंतरिक्ष-यात्री वहाँ की उत्कृष्ट शासन-व्यवस्था, संस्कृति और सभ्यता से प्रभावित होकर, पृथ्वी को जीतने के लिए उन्हें आमंत्रित करते हैं और उनका पथ-प्रदर्शन करने के लिए प्रस्तुत हो जाते हैं, तब क्या होगा? इस प्रकार की अनेक संभावनाओं पर वैज्ञानिक, स मा ज - शा स्त्री, इतिहास-वेत्ता तथा अन्य विशेषज्ञ, अत्यधिक सावधानी से विचार कर रहे हैं।

लेकिन इसके पूर्व, मनुष्य को अंतरिक्ष में भेज कर, सकुशल पृथ्वी पर वापस लाने की समस्या हल करनी है; और आजकल मनोवैज्ञानिक तथा अन्य वैज्ञानिक इस विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार कर रहे हैं कि, इस कार्य के लिए किस प्रकार का व्यक्ति सर्वाधिक उपयुक्त होगा?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमेरिका के एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक डा० जेराल्ड एन० माइकेल ने इण्डियानापोलिस में 'अमरीकन एसोसिएशन फार द' एडवान्स आव साइन्स' के समक्ष, अभी हाल में भाषण देते हुए कहा था कि, मंगल-ग्रह की यात्रा में लगभग २॥ वर्ष लगेंगे। आधुनिक सभ्य समाज में, ऐसा व्यक्ति मिलना अत्यंत कठिन है, जो इतने दीर्घकाल तक अंतरिक्ष यान में धैर्य के साथ रह सके। इसके लिए हमें, ऐसे समाज के व्यक्तियों को चुनना होगा, जिसमें लोग दीर्घकाल तक एकांत में रहने के अभ्यस्त हों। एक अन्य अमेरिकी मनोवैज्ञानिक का कहना है कि, विभिन्न व्यक्तित्व के व्यक्तियों को चुन कर, अन्तरिक्ष के समान परिस्थितियाँ उत्पन्न कर, उनकी परीक्षा करनी चाहिए, ताकि यह पता चल सके कि, दीर्घकाल तक एकांतवास करने का उन पर क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है।

कुछ अमेरिकी वैज्ञानिकों का कथन है कि, अंतरिक्ष-यात्रा का सूत्रपात करने के लिए महिला अधिक उपयुक्त रहेगी; क्योंकि वह पुरुष की अपेक्षा, तंग वातावरण में और चहारदीवारी के अंदर रहने की अधिक अभ्यस्त होती है। एक दूसरा कारण यह भी है कि, महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक दीर्घजीवी होती हैं और लम्बी अंतरिक्ष-यात्रा के लिए दीर्घजीवी यात्री का होना अधिक उपयुक्त होता है। महिलाओं के पक्ष में एक तीसरा कारण यह भी पेश किया जाता है कि, वे अधिक समय तक अकेली रह सकती हैं। कुछ वर्ष पूर्व डा० हेराल्ड वी० पेपन्स्की नामक एक मनोवैज्ञानिक ने यह भविष्यवाणी की थी कि, आदर्श अंतरिक्ष-यात्री शायद एक महिला भौतिक-शास्त्री होगी।

कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि, अंतरिक्ष-यात्री के लिए भौतिक विज्ञान का ज्ञान ही आवश्यक नहीं; बल्कि उसे इंजीनियरिंग, ज्योतिष-विज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान इत्यादि विषयों का भी अच्छा ज्ञाता होना चाहिए। पुरुष या महिला अंतरिक्ष-यात्री का पूर्ण स्वस्थ होना भी परमावश्यक है। यह भी आवश्यक है कि, इन स्वस्थ अंतरिक्ष यात्रियों को आवश्यक प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाये; ताकि वे बदली हुई परिस्थितियों के अनुकूल, अपने को ढाल सकें। एक अन्य वैज्ञानिक का मत है कि, अंतरिक्ष-यात्री को प्राणि-शास्त्र विशेषज्ञ और भाषा-विशेषज्ञ भी होना चाहिए; ताकि किसी दूसरे ग्रह में उतरने पर, यदि वहाँ प्राणी रहते हों, तो वह वहाँ की भाषा को समझ सके और उनसे विचारों का आदान-प्रदान कर सके।

यदि अंतरिक्ष-यान में एक भौतिक-शास्त्री, एक ज्योतिष-शास्त्री, उल्का पिंड-विज्ञान-शास्त्री, इंजीनियर, डाक्टर इत्यादि को ले जाने की व्यवस्था हो जाये, तो यह कठिनाई आसानी से हल हो सकती है। लेकिन इस समय तो यही प्रतीत होता है कि, पहला अंतरिक्ष-यान केवल एक व्यक्ति को ही ले जा सकेगा, क्योंकि इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय की गणना से यह पता चलता है कि, १ पौण्ड वजन को अंतरिक्ष में ले जाने के लिए आधा टन ईंधन और धातु की आवश्यकता पड़ेगी।

लेकिन, यदि विशालकाय अंतरिक्ष-यान के निर्माण का स्वप्न साकार भी हो जाये, तो यह मानना पड़ेगा कि, इस यान में मौजूद प्रत्येक यात्री को, अपने प्राण हथेली पर रख कर यात्रा करनी होगी। अतएव यान के सभी सदस्य ऐसे होने चाहिए, जो आपस में मिल-जुल कर रह सकें और कार्य कर सकें। विशेषज्ञों का यह मत है कि, कहने को तो यह बात सरल प्रतीत होती है; परंतु वस्तुतः है बहुत कठिन। वैज्ञानिकों के अनुसार, ऐसे अंतरिक्ष-यान में अधिक-से-अधिक पाँच व्यक्ति रहने चाहिए। अंतरिक्ष-यान के यात्रियों की संख्या कुछ भी क्यों न हो, यह तो निश्चित है कि, उन्हें एक-दूसरे की त्रुटियों को दीर्घकाल तक सहन करना पड़ेगा।

कैलिफोर्निया-विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर ने यह सुझाव दिया है कि, मंगल-ग्रह की यात्रा पर रवाना होने वाले अंतरिक्ष-यात्री को, शरीर का तापमान कम करने वाली ऐसी औषध दी जानी चाहिए, जिसे खाकर, वह उस समय तक कुंभकर्ण की नींद सोता रहे, जब तक यान मंगल-ग्रह के आस-पास न पहुँच जाये। इस दवा के प्रभाव से यात्री सम्मोहित अवस्था को प्राप्त हो जायेगा, उसके शरीर का तापमान घट जायेगा, हृदय की धड़कनें मंद पड़ जायेंगी। शरीर को भोजन और पानी की बहुत कम आवश्यकता पड़ेगी और इस दौरान में शरीर को जिस चीज की आवश्यकता पड़ेगी, वह इंजेक्शन द्वारा अपने-आप उसके शरीर में पहुँचती रहेगी। इस प्रकार की औषध, अभी तक तो बन नहीं सकी है और कब बन सकेगी, यह भी कोई नहीं कह सकता। पनडुब्बियों की जल-गर्भ-यात्रा से प्राप्त अनुभवों के आधार पर, वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि, केवल आवश्यक परिमाण में पौष्टिक तत्व सुलभ करना ही, मनुष्य को स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त नहीं है। यह परमावश्यक है कि, मनुष्य को कुछ ताजा भोजन मिलता रहे, आहार

सम्बंध

आकाश से ओस की बूंद नीचे गिरी, तो पृथ्वी ने कहा— "शून्यदेव, कोई व्यथा है तुम्हें क्या? आओ, आँचल से तुम्हारे आँसू पोंछ दूँ।" आकाश से एक और ओस की बूंद गिरी और बोली— "किसे बुलाती हो? क्या वह कभी आ सकेगा? बहुत बड़े हो जाने का यही तो दंड है कि, सहानुभूति से हमारे सम्बंध टूट जाते हैं। —'शम्स-ए-तबरेज'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संतुलित रहे और स्वादिष्ट रहे। यदि ऐसा न हुआ, तो यात्री-दल पर इसका दुष्प्रभाव अवश्य पड़ेगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि, जल-गर्भ में यात्रा करने वाले व्यक्तियों की स्थिति एक समान रहेगी।

अमेरिका में अनेक अनुसंधान-संस्थाओं और विश्व-विद्यालयों में इस सम्बंध में परीक्षण किये जा रहे हैं कि, अंतरिक्ष जैसी परिस्थितियों का, यात्री-दल के सदस्यों पर क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ सकता है? अब तक किये गये परीक्षणों से पता चला है कि, एक या दो दिन तक, इस प्रकार की परिस्थितियों में रहने पर, अनुभवी उड़ाकों पर भी मनोवैज्ञानिक प्रभाव दृष्टि-गोचर होने लगता है। डेटन (ओहायो राज्य) में अमेरिकी सेना की परीक्षण-शाला में ५ व्यक्तियों के दल पर, इस प्रकार के परीक्षण किये गये। उन्हें एक ऐसे कृत्रिम कक्ष में ५ दिन के लिए बंद कर दिया गया, जहाँ अंतरिक्ष के समान परिस्थितियाँ विद्यमान थीं। उनकी बातचीत का मुख्य विषय केवल भोजन रह गया और ऐसा प्रतीत हुआ, मानो वे पाँचों व्यक्ति केवल भोजन के लिए जीवित हैं। यात्री-दल के प्रत्येक व्यक्ति को १६ घंटों तक एक घंटे में १५ मिनट काम करना था तथा शेष ४५ मिनट इधर-उधर बैठ कर व्यतीत करने थे। इसके बाद उन्हें ८ घंटे की छुट्टी मिलती थी। शुरू में तो यात्री-दल के सदस्य सभी विषयों पर चर्चा करते रहे; परंतु धीरे-धीरे उनकी बातचीत का विषय, केवल भोजन रह गया। प्रत्येक यात्री ने यह ताक-झाँक करनी शुरू कर दी कि, उसका दूसरा साथी अपने भोजन का किस प्रकार उपयोग करता है। वे यह नहीं समझ पाये कि, वे हर बार जरूरत से ज्यादा खा रहे हैं अथवा कम। जिस प्रकार की दिन-चर्या वे व्यतीत कर रहे थे, उसके फल-स्वरूप उनका पेट बिगड़ गया और उनमें परस्पर इस बात को लेकर वाद-विवाद होने लगा कि, अमुक समय पर नाश्ता करना चाहिए कि भोजन। जब तक वे जगते रहते, उनके दिमाग पर भोजन की बातें छायी रहतीं। उन्हें जो भोजन सामग्री दी गयी थी, उसमें सभी प्रकार के परिचित खाद्य-पदार्थ थे।

यात्रियों को ताजा भोजन सुलभ करने के सम्बंध में, कुछ वैज्ञानिकों का सुझाव है कि, अंतरिक्ष-यान के अंदर ही, एक विशेष प्रकार की एल्गी (एक विशिष्ट वनस्पति) उगायी जा सकती है। इसमें सभी पोषक तत्व, आवश्यक अंश में विद्यमान रहते हैं और यान के अंदर विशेष प्रकार के टैंकों में यह आसानी से उगायी जा सकेगी। इसे उगाने के लिए यात्रियों द्वारा परित्यक्त मल-मूत्र को खाद के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकेगा। अंतरिक्ष-यात्रियों को आक्सीजन सुलभ करने में भी इससे बहुत सहायता मिलेगी।

अंतरिक्ष-यात्रियों के समक्ष एक सबसे बड़ी समस्या भारहीनता की है। राकेट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के, गुरुत्वाकर्षण शक्ति से मुक्त होते ही, यात्रियों को इस स्थिति का सामना करना पड़ेगा। वह बिल्कुल भारहीन हो जायेगा। उसके कक्ष की वायु में भी कोई भार नहीं रहेगा और उसमें साँस लेने के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा। परिणाम यह होगा कि, यान के अंदर की सभी वस्तुएँ कक्ष में तैरती हुई दीखेंगी। ऐसे वातावरण का अभ्यस्त बनने में मनुष्य को काफी समय लग सकता है, उसके शरीर पर इसके अनेक दुष्प्रभाव पड़ सकते हैं।

अंतरिक्ष से सकुशल पृथ्वी पर वापस लौट आने वाले व्यक्ति को भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। भारहीनता का अभ्यस्त हो जाने पर, उसे पृथ्वी पर चलने-फिरने में अत्यधिक कठिनाई हो सकती है। इस समस्या को हल करने के लिए वैज्ञानिक यान के अंदर कृत्रिम गुरुत्वाकर्षण शक्ति उत्पन्न करने की संभावना का अध्ययन कर रहे हैं। लेकिन इसके बाद भी एक समस्या रह जाती है। असीम अंतरिक्ष में, चालक अपनी स्थिति की जानकारी किस प्रकार प्राप्त कर सकेगा ?

पृथ्वी से शुक्र और मंगलग्रहों की यात्रा में तीन वर्ष तक, प्रतिदिन १० लाख मील की दूरी तय करनी पड़ेगी। यह तो निश्चय है कि, अंतरिक्ष में मनुष्य अपने को अकेला और भूला-भटका अनुभव करेगा। वहाँ कोई क्षितिज न होगा, चारों तरफ घनघोर अंधकार होगा और सूर्य तथा अन्य नक्षत्र अँधियारे में भी बहुत प्रकाशमान दिखायी पड़ेंगे। नक्षत्र झिलमिलाते हुए नहीं; बल्कि एक ही स्थान पर जड़े से प्रतीत होंगे। ध्वनि-तरंगों का वहाँ कोई अस्तित्व नहीं होगा। यान की गति चाहे कितनी भी तीव्र क्यों न हो, चालक यही अनुभव करेगा कि, यान स्थिर और रुका हुआ है। अंतरिक्ष-यान के लिए नये किस्म के ऐसे यंत्रों का विकास करना होगा, जो प्रकाश-वर्ष के रूप में यान की गति बता सकें। यही नहीं, ऐसे यंत्रों की भी आवश्यकता पड़ेगी, जो अंतरिक्ष में यान की स्थिति, गति तथा भावी कदम के सम्बंध में यान-चालक के प्रश्न करते ही, तुरंत उत्तर दे सकें।

यात्रा के प्रथम चरण में, यान पर ब्रह्मांड-किरणों का इतना तीव्र प्रहार होगा कि, यदि चालक का ध्यान न बँटाया गया, तो उसका मानसिक संतुलन निश्चय ही बिगड़ जायेगा। इसी प्रकार की अन्य समस्याएँ जब तक हल नहीं हो जातीं, जब तक अंतरिक्ष में मनुष्य की सुरक्षा के सम्बंध में वैज्ञानिक पूरी तरह आश्वस्त नहीं हो जाते, तब तक मनुष्य का अंतरिक्ष में प्रवेश करना सम्भव नहीं।

आशा है कि, वैज्ञानिकों के भगीरथ प्रयत्नों के फलस्वरूप, निकट भविष्य में इन सभी समस्याओं का उचित समाधान खोज निकाला जायेगा और तब मनुष्य पूर्ण साहस और आत्म-विश्वास के साथ अंतरिक्ष विजय के लिए प्रयाण कर सकेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदि-आर्यों का भोजन

हमारे आदि-पूर्वजों के षट्रसों का प्रतिबिम्ब देनेवाला सुनीति कुमार चाटुर्ज्या-लिखित एक रोचक प्रबंध।

जब आदि-आर्य ईरान तथा उत्तर मेसोपोतामिया के ठण्डे और रूखे-सूखे देश में रहा करते थे, तब वे आंशिक रूप से कृषि-जीवी (काश्तकार या खेती करनेवाले) थे। भेड़ों, गायों एवं घोड़ों के झुण्डों को अपनी मुख्य सम्पत्ति समझते थे। पशु-पालन, बैलों से हल जोतना और कुछ जौ की खेती—यही उनकी आजीविका थी। यों उन्होंने भारत के बाहर ठहरने के वक्त, जो जीवन-पद्धति अपना ली थी, उसे बाद में उन्हें लगभग बदल ही देना पड़ा। उनके भारतागमन के समय, सिंध एवं पंजाब प्रदेश जंगल से भरा हुआ था और ईरान के मुकाबले में, एक साथ ज्यादा गरम, पानी से भरपूर और गीला भी था। उनका खाना, पहनना तथा रहन-सहन सब-कुछ, नयी जगह और उसकी जल-वायु के कारण परिवर्तित हो गया।

आदि-आर्य, अपने जातीय-बन्धुओं—ग्रीस के रहनेवाले हेलेनिक जाति के लोगों की भाँति ज्यादातर मांस ही खाते थे। यह मांस भेड़, बकरी एवं गाय का होता था। सूअर खाने की आदत भी थी, और कभी-कभी घोड़े का माँस भी खाते थे। साथ-ही-साथ, वे लोग भूंजे, सत्तू या रोटी के रूप में जौ का उपयोग भी करते थे। इनके अतिरिक्त दूध और उससे बने खाद्य-पदार्थ (मक्खन, घी, दही आदि) भी बहुत से लोग खाते थे।

मधु उनके लिए एक प्रिय सुखाद्य था। एक प्रकार के मादक पेय को, जिसका वैदिक नाम सोम था (जिसे आदि-आर्य या इंडो-ईरानी में 'सौम', अवेस्ता भाषा में 'हौम' कहते थे) और जो किसी पर्वत-जात गुल्मलता को दो पत्थरों के बीच पीस कर तथा दूध में मिला कर बनता था, आदि-आर्य स्वयं भी बड़े चाव से पीते थे और अपने उपास्य देवों को भी श्रद्धा-पूर्वक अर्पण करते थे। मधु से बने एक दूसरे मादक पेय का भी, उनमें प्रचलन था।

संभवतः भारतागमन के पश्चात् ही, आदि-आर्य कई किस्म की दालों—जैसे मूंग, माषया उडद से परिचित हुए, जो उस समय चावल के साथ, गेहूँ से भी अधिक प्रचलित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। आजकल दाल-भात (या पंजाब और उत्तर भारत में दाल-रोटी) सर्व-सामान्य भारतीय खाद्य है। दाल में कुछ घी या तेल दिया जाता है और नमक व मसाले भी डाले जाते हैं। इस तरह दाल से रोटी या चावल को सुस्वादु बनाने के लिए 'सूप' या व्यंजन तैयार होता है। इसके अतिरिक्त दूध या उससे बना दही या छाछ भी, भारतीय खाने में आता है। सागर-तटीय अंचलों में और जहाँ ज्यादातर मंगोलयड जाति का वास है, ऐसे पूर्वीय प्रांतों में, लोग मुख्य रूप से चावल और मछली खाते हैं; पर दाल व दूध तो सम्पूर्ण भारत में प्रचलित सामान्य खाद्य हो गया है।

बनानेवाले की रुचि का अनुपात ही भोजन में रस और रुचि पैदा करता है—यों स्वयं भोजन में कोई रस नहीं रहता। वह तो जीवन की आवश्यकता को पूरा करने का एक साधनमात्र है। —प्रेमचंद

आर्य लोगों ने भी भारत में आने के बाद, चावल-दाल को अपना मुख्य आहार बना लिया और नियमित रूप से प्रचुर मात्रा में मांस-भक्षण की जो पुरानी आदत थी, वह धीरे-धीरे कम हो गयी और कहीं-कहीं तो एकदम ही परित्यक्त हो गयी। महाभारत के अनुशासन-पर्व में मांसाहार के पक्ष-विपक्ष का वर्णन है, जिसमें साधारणतया मांस की लालसा रहते हुए भी, दार्शनिक एवं जीवदया-विषयक विचार फैलने के कारण, मांसाहार से विरत रहने का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। उस समय दूध व निरामिष खाद्यों के प्राचुर्य और साथ-ही-साथ अहिंसा की भावना के प्रादुर्भाव—इन दोनों के कारण, भारत जैसे गरम देश में, मांसाहार की प्रवृत्ति जो स्वयमेव कम होती जाती थी, धीरे-धीरे और भी कम होने लगी।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र, अशोक के अभिलेख, महाभारत, रामायण और पुराणों से यह बात स्पष्ट होती है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र अपने मूल रूप में, ईसा पूर्व चतुर्थ शतक का ग्रंथ हो सकता है; उसमें लिखा है कि, 'आर्य-भक्त' अर्थात् उच्च श्रेणी के हिन्दू का सामान्य भोजन यों बनता था—एक प्रस्थ का चावल, उससे एक चौथाई सूप या घी, नमक, मसालेदार दाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(जिसमें दाल के सोलहवें भाग जितना नमक)। 'अवर' या निम्न श्रेणी के लोगों के लिए भी वैसा ही खाना होता था, पर उसमें दाल व घी कम होता था। इससे ज्ञात होता है कि, ईसा पूर्व चौथी सदी में भारतीयों का साधारण आहार दाल-भात था—(कौटिल्य अर्थ-शास्त्र, २।१५।६१,६२,६३) यहाँ यह भी कह देना चाहिए कि, अशोक के अभिलेख के अनुसार 'सूप' का अर्थ 'दाल' न होकर शोरबेदार मांस भी हो सकता है। तुर्की विजय के बाद, जब ईरानी-भाषी मुसलमान भारत में आने लगे, तब वे तुर्क, पठान, ईरानी सब-के-सब यह देख कर आश्चर्य-चकित हो गये कि, वे स्वयं जैसे अपने देश में गेहूँ की रोटी और गोश्त खाते थे, हिन्दू वैसा खाना न खाकर 'दाने से दाना' खाते थे (गल्लह-रा बा-गल्लह मी-खुर्दन्द)। हालैंड के व्यापारी एफ० पैलसर्ट ने सत्रहवीं सदी के प्रथमार्द्ध में लिखा था कि, भारत-भर में जनता का खाना चावल, दाल और साथ में कुछ घी था। इस प्रकार स्पेनिश लोगों के अमेरिका-खंड में में पहुँचने के पहले, मेक्सिको के लोगों का मामूली खाना भी भारत जैसा ही था। मकई के दानों को भिगो कर और पीस कर तैयार की हुई पतली चपातियाँ और एक प्रकार की दाल—मेक्सिको में जिस खाने को चालू स्पेनिश भाषा में टॉर्टिला या चपाती और फीजोल्स या दाल कहते हैं। अब स्पेनिश लोग जो बहुत-कुछ नये-नये खाद्य (जैसे गेहूँ, चावल, भेड़, गाय, मुर्गी का मांस, इत्यादि) मैक्सिको में लाये हैं, ये सब खाये भी जाते हैं; परंतु साधारणतया मेक्सिको के लोग, विशेष कर मिश्र जाति के या शुद्ध अमेरिन्दीय जाति के लोग, पुराने खाने (मकई की रोटी और दाल) को ज्यादा पसंद करते हैं। किसी देश की प्राकृतिक देन, अपना स्थान बनाये रखती है और उसके प्रबल-प्रभाव को जल्दी मिटाया भी नहीं जा सकता।

सन् १९३४ में जब भूकम्प के प्रलयकारी हाथों से उत्तर-बिहार प्रायः उजड़ चुका था, रिलीफ—कार्य का निरीक्षण करने के निमित्त, बिहार के एक सर्वमान्य नेता दरभंगा जा रहे थे। लगभग दोपहर के दो बजे वे सोनपुर पहुँचे। गर्मी के दिन! ट्रेन में ठसाठस भरे लोगों के बीच से "पानी-पानी" की आवाज आ रही थी। वे नेता प्यास से छटपटाते लोगों को न देख सके। डिब्बे से उतर पड़े। एक हाथ में पानी से भरी सुराही और दूसरे हाथ में गिलास लिये, लोगों के बीच आवाज लगाने लगे—पानी पीओगे बाबू, पानी चाहिए भैया! दूसरी ओर से आवाज आती—"ए पानी पांडे! हमें पानी पिलाओ।" और वे नेता—डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद—उसी ओर सुराही लिये जा पहुँचते। —सत्यदेवनारायण सिन्हा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

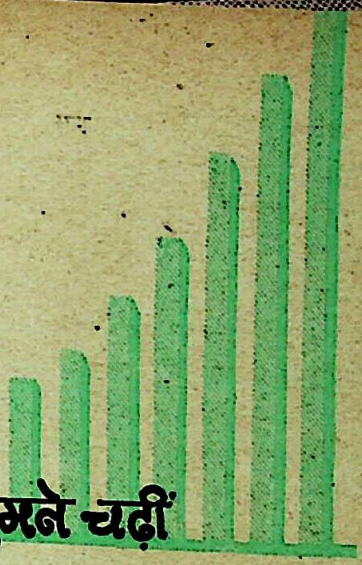

ये हैं, इस्पात की सीढ़ियाँ; हमने चढ़ीं

आज के जगत् में राष्ट्रीय सुदृढ़ता को इस्पात के उत्पादन द्वारा मापा जाता है। एक सुप्रसिद्ध जर्मन उद्योगपति ने अभी पिछले मास कहा था—"जर्मनी इस्पात के महत्व को पूरी तरह समझकर ही तो आज फिर अपनी श्रेष्ठता का ध्वज फहरा पा रहा है।" यहाँ हम अपने देश के इस्पात-उद्योग का एक ब्यौरा प्रस्तुत कर रहे हैं।

★

कहा जाता है कि, कम्युनिस्ट चीन ने प्रति वर्ष १२० लाख टन इस्पात बनाने की क्षमता प्राप्त कर ली है; परंतु इस्पात उत्पादन में पचास वर्ष का अनुभव होने पर भी, हम लोग केवल ६० लाख टन ही उत्पादन का कार्यक्रम बना रहे हैं। यह उत्पादन सरकारी और गैर-सरकारी दोनों ही क्षेत्रों में है। यद्यपि इतने उत्पादन से हम लोगों की आवश्यकता पूरी हो जायेगी और बाहर से इस्पात मँगाने की हमें आवश्यकता भी नहीं रह जायेगी; तथापि ३७ करोड़ लोगों के लिए इतना इस्पात कोई पर्याप्त नहीं है।

मूलभूत उद्योगों के लिए इस्पात की बेहद आवश्यकता होती है। सोवियत रूस ने १९५८ में ६०० लाख टन इस्पात बनाना शुरू कर दिया और १९६७ में वह इससे भी दुगुना इस्पात बनाने लगेगा। अमेरिका १,३०० लाख टन इस्पात बना लेता है। हम अभी ६० लाख टन तक इस्पात नहीं बना पाते। इस प्रकार अभी हमारे लिए बहुत बड़ा कार्यक्षेत्र पड़ा हुआ है। हमारी विकासोन्मुख अर्थ-व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, सरकार ने तीन इस्पात कारखाने स्थापित किये हैं। तीनों के लिए अलग-अलग उत्पादन-सामग्री निर्धारित कर दी गयी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत में सर्वप्रथम इस्पात तैयार करने का काम १९१२ में आरंभ हुआ, जब जमशेदजी टाटा ने इस बारे में प्रथम प्रयास किया। १९१८ में इंडियन आयरन एंड स्टील कंपनी ने हीरापुर में कार्य करना आरंभ किया। १९२३ में मैसूर सरकार ने इस दिशा में प्रयास किया। उसने सरकारी तौर पर प्रथम चार कोल-ब्लास्ट भट्ठियों की स्थापना की, जिनसे प्रति वर्ष २०,००० टन पिग आयरन तैयार हो सके।

दो विश्वयुद्धों के कारण, भारतीय इस्पात उद्योग को बहुत प्रोत्साहन मिला और १९३९ तक भारत में बिक्री योग्य इस्पात का उत्पादन ८,००,००० टन तक पहुँच गया। १९४२ में ८,३९,००० टन का उत्पादन हुआ, जो भारत में अधिकतम उत्पादन था। द्वितीय महायुद्ध के समय टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (जमशेदपुर) आमेल प्लेट, आर्मर कार, स्टेनलेस स्टील आदि भी बनाने लगी। इनका उत्पादन ३० लाख टन तक पहुँच गया। युद्ध की आवश्यकता को पूरा करने के लिए फेरोटंग स्टेन और दूसरे फेरो-एलाय (लौह मिश्रण-धातु) के उत्पादन के लिए भी कारखाना स्थापित किया गया। १९४७ में जब देश आजाद हुआ, तो जनता का जीवन-स्तर ऊँचा उठाने के लिए हमारा ध्यान औद्योगीकरण की ओर विशेष रूप से गया। हर तरफ उत्पादन-वृद्धि का सवाल आया। परंतु इस्पात के बिना, किसी भी उद्योग का कार्य आगे नहीं बढ़ सकता था; इसलिए इस ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक हो गया।

पंचवर्षीय योजनाओं में लोहा और इस्पात-उद्योग के विकास की जो रूपरेखा बनायी गयी है, उस पर विचार करने के पूर्व, इस उद्योग के कच्चे सामान के साधन-स्रोतों का अध्ययन कर लेना आवश्यक है; क्योंकि पिग आयरन का लगभग ८० प्रतिशत खर्च और तैयार इस्पात का ६० प्रतिशत खर्च, कच्ची सामग्री पर ही निर्भर है। लोहा और इस्पात के लिए भारत के पास कच्चे माल का अभाव नहीं है। भारत के पास लगभग २१,०,००० लाख टन कच्चा लोहा है। बिहार के सिंहभूम जिले में विश्व का सर्वोत्तम लोहा है। वहाँ मिलनेवाले कच्चे लोहे से ६० प्रतिशत तक लोहा निकल सकता है, जब कि अमेरिका में ५० प्रतिशत और यूरोप में ४० प्रतिशत ही निकलता है।

जहाँ तक खनिज कोयले का सवाल है, हमारा भंडार सीमित है। अतः लोहा गलाने के लिए, हमें कोकिंग कोयले का प्रयोग करना पड़ता है। लो-शाफ्ट भट्ठियों की स्थापना से भी नानकोकिंग कोयले (कार्बनाइज्ड लिगनाइट) के प्रयोग की सुविधा होगी। द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अंत तक, हमारे लिए ५६ लाख टन तक कड़े कोक की जरूरत पड़ेगी। अतः हमें खानों से १०३.४ लाख टन कोकिंग कोल प्राप्त करना चाहिए।

जब तक फेरो-एलाय (लोह मिश्रण-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धातु) पर विचार न कर लिया जाये, तब तक इस्पात-उद्योग का अध्ययन अधूरा रहेगा। इस उद्योग के लिए फैरो-मैंगनीज और फैरो-सिलिकन की बहुत आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, दस लाख टन इस्पात तैयार करने के लिए, हमें १०,००० टन फैरो-मैंगनीज और १.५० टन फैरो-सिलिकन की आवश्यकता होती है। चूँकि इनका देशी उत्पादन अपर्याप्त है, अतः आवश्यक फेरो-एलाय का बाहर से आयात किया जाता है। अतः यह स्पष्ट है कि, फेरो-एलाय के उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि की जानी चाहिए।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व, भारत लगभग १७,५०,००० टन पिग आयरन और ७,५०,००० टन इस्पात प्रति वर्ष तैयार करता था। १९४१ में २० लाख टन पिग आयरन का उत्पादन होने लगा और १९४३ में लगभग ११ लाख टन पक्का इस्पात तैयार होने लगा। परंतु युद्धकाल में कारखाने के बहुत अधिक प्रयोग करने और मरम्मत न होने के कारण, उत्पादन में गिरावट होने लगी। १९४८ में यह गिरावट रुक गयी और उत्पादन फिर बढ़ने लगा।

इस्पात को मूल बिंदु मानकर गृह-निर्माण-कला को विकास के नये छोर देनेवाले राइट महाशय।

जब प्रथम योजना तैयार करते समय, यह अनुमान लगाया गया था कि, १९५७ तक इस्पात की आवश्यकता २१ लाख टन से बढ़ कर २८ लाख टन तक हो जायेगी, तो यह भी अंदाज किया गया था कि, यह माँग बढ़ कर १९६०-६१ तक ४५ लाख टन तक हो जायेगी और तीन लाख टन का निर्यात किया जायेगा। देश में जितना इस्पात पैदा होता है, उससे हमारी माँग पूरी नहीं होगी; अतः विदेशों से आयात करके बाकी कमी पूरी करनी होगी। प्रथम योजना में यद्यपि मुख्य रूप से खेती पर जोर दिया गया था; परंतु इस्पात-उद्योग के विकास के लिए ७६ करोड़ रुपये की व्यवस्था की गयी थी। खास तौर पर युद्ध-काल में जो मशीनरी पुरानी पड़ गयी थी, उसे बदल कर नयी मशीनें लगाने और वर्तमान कारखानों की उत्पादन-शक्ति का पूरा-पूरा उपयोग करने की जरूरत है।

जब तक इस्पात-उद्योग का विस्तार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं हो जाता, तब तक उस पर अवलंबित दूसरे उद्योगों का भी विकास सम्भव नहीं है। अतः निश्चय किया गया कि, भविष्य में इस उद्योग के विकास का उत्तरदायित्व सरकार पर होगा। निजी क्षेत्र से समय-समय पर सहयोग ही लिया जा सकता है। इसके अनुसार राउरकेला में ५ लाख टन पिग आयरन और ३॥ लाख टन इस्पात की क्षमता वाले कारखाने की स्थापना का कार्यक्रम बनाया गया। योजना-काल के उत्तरार्ध में भिलाई और दुर्गापुर में १० लाख टन इस्पात की क्षमता वाले दो और कारखानों की स्थापना पर विचार किया गया। अब सोवियत रूस की सरकार और ब्रिटिश उद्योगपतियों की सहायता के आधार पर, ये कारखाने स्थापित किये जा रहे हैं।

द्वितीय योजना-काल में, तीनों इस्पात कारखानों में उत्पादन आरम्भ करने का प्रयत्न किया गया, जिससे ६० लाख टन इंगट स्टील से ४५ लाख टन बिक्री-योग्य इस्पात बनाया जा सके। प्रत्येक कारखाने में तैयार माल बनाने के प्रश्न पर, बहुत अधिक विचार किया गया। कोई दो कारखाने एक ही वस्तु के निर्माण में शक्ति न लगायें, इसका भी ध्यान रखा गया। उदाहरणार्थ यह कार्यक्रम बनाया गया कि, राउरकेला में आधुनिक ब्राड स्ट्रीप मिल में, फ्लैट शीट और टिन प्लेट तैयार किये जायेंगे; भिलाई में रेल और हेवी सेक्शन का उत्पादन किया जायेगा; दुर्गापुर में चक्र, टायर और धुरे तैयार किये जायेंगे। और यही कारण है, तीनों कारखानों के लागत खर्च में काफी अंतर है। राउरकेला-कारखाने पर १७० करोड़ रु०, भिलाई पर १३१ करोड़ रु० और दुर्गापुर पर लगभग १३८ करोड़ रु० खर्च होंगे।

निजी उद्योग के क्षेत्र में टाटा आयरन एंड स्टील कम्पनी लिमिटेड ने ६२ करोड़ रुपये खर्च करके, २० लाख टन का कार्यक्रम पहले ही पूरा कर लिया है। इंडियन आयरन एंड स्टील कम्पनी ने अपनी समस्त विस्तार-योजनाओं में, लगभग ४५ करोड़ रुपया खर्च किया है। १९५९ में टाटा आयरन एंड स्टील कम्पनी ११॥ लाख टन और इंडियन आयरन एंड स्टील कम्पनी लगभग ६॥ लाख टन बिक्री-योग्य इस्पात तैयार करने लगी। १९६० में उत्पादन की गति और भी तेज हो जायेगी।

१९३८ से १९५७ तक के बीस वर्षों में गैर-कम्युनिस्ट देशों के औद्योगिक उत्पादन में, १३० प्रतिशत की वृद्धि हुई और इस्पात के उत्पादन में १५७ प्रतिशत की। भारतीय इस्पात-उद्योग ने अभी हाल में ही अपनी अर्द्ध-शताब्दी मनायी। परंतु दुःख की बात है कि, ५० वर्षों में भारत का इस्पात उत्पादन १३ लाख टन प्रति वर्ष से अधिक नहीं हुआ है। भारत में अब जो कारखाने बन रहे हैं, उनकी उत्पादन-क्षमता को ध्यान में रख कर, इस प्रकार का आँकड़ा तैयार किया जा सकता है :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

	अशुद्ध लोहा	पक्का लोहा (दस लाख टन में)
टाटा आयरन एंड स्टील कम्पनी	२	१.५०
इंडियन आयरन एंड स्टील कम्पनी	१	०.८०
राउरकेला	१	०.७२
भिलाई	१	०.७५
दुर्गापुर	१	०.७५
	६	४.५२

ये तो हमारी आवश्यकता के मोटे आँकड़े हैं ; वास्तव में हमें कितना इस्पात चाहिए, इसका सही अंदाज अभी लगाया नहीं जा सकता। परंतु इतना निश्चित है कि, स्पात का अभाव प्रायः बना ही रहेगा। यह तीव्रता से अनुभव किया जा रहा है कि, माँग के यथार्थ आँकड़े तैयार कर लेने चाहिए, जिससे भावी उत्पादन की उचित योजना बनायी जा सके।

इस्पात-उद्योग के संभावित अधिकतम स्तर का पता लगाने के लिए, चार पृथक्-पृथक् समाधान तैयार किये गये हैं। सर्वप्रथम यह देखा जाता है कि, अभी इस्पात के उपयोग की दर में किस प्रकार वृद्धि हो रही है। इसके बाद यह कि, औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि के लिए, कितने इस्पात की जरूरत है। इस्पात मन्त्रालय तथा उद्योग और वाणिज्य मंत्रालय के साथ मिल-जुल कर 'वैज्ञानिक और औद्योगिक गवेषणा परिषद्' ने देश में इस्पात की खपत का अध्ययन किया है। हर एक अविकसित देश के विकास के आरम्भिक चरण में, निर्माणकारी उद्योगों के लिए इस्पात की आवश्यकता होती है। बिजली-उत्पादन योजनाएँ, रेलें, सड़कें, बाँध, पुल और मकान आदि निर्माणकारी उद्योग हैं। पिछले दस वर्षों में हीराकुंड,

[चित्र : सोने से भी अधिक 'कीमती' लोहे की खोज में श्वेतांग जातियों ने जब 'अंधेरे' महाद्वीप अफ्रीका में कच्चे लोहे का सर्वप्रथम पता लगाया]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दामोदर-घाटी, तुंगभद्रा, भाखरा-नांगल की बहु-उद्देश्यीय योजनाएँ तैयार हुईं; रेलवे-लाइनों का विस्तार किया गया; इंजन और डब्बे बनाये गये। खाद-फैक्ट्री बनी और इस्पात कारखानों का विस्तार हुआ। इन सभी में इस्पात की आवश्यकता होती है। उत्पादक उद्योगों (कैपिटल इंडस्ट्री) में अगले कुछ वर्षों तक, इस्पात का खर्च बराबर होता ही रहेगा।

इस्पात का सबसे अधिक उपयोग करने वाला उद्योग है रेलवे। भाप के इंजनों के स्थान पर, डीजल और बिजली द्वारा चालित इंजन तैयार किये जा रहे हैं, जिनके लिए भी इस्पात की बहुत अधिक जरूरत है। गरज यह कि, इस्पात भारत की साँस है, जिसके बिना हमारा काम क्षण-भर भी चलना मुश्किल है।

इस्पात-उत्पादन में तेजी के साथ वृद्धि करना हमारी द्वितीय पंचवर्षीय योजना का मुख्य पहलू है। यूरोप और अमेरिका में पिछली शताब्दी में ही "इस्पात-युग" आरम्भ हो गया; परंतु भारत में इस नये युग के प्रतीक केवल रेलवे और टेलिग्राफ ही रहे। इस शताब्दी की कुछ दशाब्दियों में, देश में आधुनिक ढंग के कुछ उद्योग अवश्य स्थापित किये गये। परंतु ये उद्योग भी वस्त्र, जूट, चीनी, सीमेंट और इसी प्रकार की उपभोग-सामग्रियों के उत्पादन तक ही सीमित रहे। प्रमुख औद्योगिक विकास के लिए जमशेदपुर में केवल शुरुआत की गयी। अब देश को आगे बढ़ाने के लिए, हर एक उद्योग को बढ़ाना होगा। लेकिन यह काम इस्पात के बिना सम्भव नहीं।

विभाजन के बाद, हमें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा; परंतु देश अब एक मंजिल पर पहुँच गया है। अतः नये सिरे से विकास का कार्य आरम्भ करना होगा। द्वितीय पंचवर्षीय योजना के आरम्भ में १० लाख टन से अधिक पक्का इस्पात हम लोग तैयार नहीं कर सकते थे; परंतु अब ४५ लाख टन पक्का इस्पात तैयार करने की योजना बनायी गयी है। जब देश के पाँच इस्पात कारखानों में उत्पादन-कार्य जोरों से होने लग जायेगा, तो तब केवल विशेष ढंग के इस्पात के ही आयात की आवश्यकता रहेगी। रेलवे के लिए हर प्रकार के इस्पात की व्यवस्था, देश के अंदर कर दी जायेगी। इसके बावजूद माँग की तुलना में उत्पादन कम ही रहेगा; परंतु भारत में औद्योगिक विकास की गति निश्चय ही बढ़ेगी।

*

आ गैरियत के परदे एक बार फिर उठा दें,
बिछुड़ों को फिर मिला दें, नक्शे-दुई मिटा दें।

—इकबाल

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह मौन कितना मुखर है

कालनिद्रा में लेटे हुए अतीत के खंडहर जिस भाषा में हमें पुकारते हैं, वैसी करुण मोहिनी शायद ही किसी मौन में हो — हृदय का हिमालय कितने-कितने स्रोत-प्रवाहों में गल कर फूट निकलता है। इस लेख में हम पाठकों को एक ऐसी ही मौन मोहिनी की परिक्रमा करवाना चाहते हैं।

*

लखनऊ और दिल्ली का नाम लिये बिना, उर्दू शायरी का जिक्र करना असंभव है। ये दोनों नगर एक ओर प्रभुत्व और यश-केंद्र होने के कारण प्रसिद्ध हैं, तो दूसरी ओर शायरों, उनकी नोक-झोंक और मुशायरों के लिए मशहूर हैं। उर्दू-साहित्य के इतिहास में इन दोनों शहरों को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। उर्दू के अधिकांश बड़े शायर या तो लखनवी थे, या देहलवी। लम्बे अरसे तक, बाहर का कोई भी व्यक्ति, शायर होने का दावा नहीं कर सका। यही कारण है कि, उर्दू की उच्च कोटि की शायरी लखनऊ-स्कूल और देहली-स्कूल में विभक्त हो गयी है।

परंतु कविता के क्षेत्र में दिल्ली का स्थान लखनऊ से कहीं ऊँचा है। मिर्जा गालिब के कलाम की गहराई तथा व्यापकता और मीर तकी मीर का सोजो-गुदाज दिल्ली की ही देन है। लखनऊ इन दोनों के मुकाबले का एक भी शायर पैदा न कर सका।

कवियों की इस मंडली में अध्यात्मवादी हैं, दार्शनिक हैं, पिंगल-शास्त्र के पंडित हैं और कल्पना-जगत् में विचरने-वाले रूमानी हैं। हर एक का स्वभाव अलग है और शैली अलग। सभी प्रसिद्धि के उच्च शिखर पहुँचे और दिल्ली को साहित्य के इतिहास में अमर कर गये। एक जमाने में मुशायरों में इन शायरों का कलाम सुनने के लिए ही, दूर-दूर के लोग दिल्ली आया करते थे।

गत सौ वर्षों में कई इन्कलाब आये और दिल्ली की काया पलट कर चले गये। अब तो पुराने दिनों की याद भर रह गयी है। मुशायरे आज भी होते हैं; परंतु वह पहले की-सी शान-शौकत उनमें अब कहाँ! आज की दिल्ली में बहुसंख्या पंजाबी, बंगाली, सिंधी और दक्षिण भारतीयों की है, जो एक विचित्र मिश्रित भाषा बोलते हैं। उसका पुरानी दिल्ली वालों की आडम्बर-रहित और सरस भाषा से दूर का भी सम्बंध नहीं। लेकिन कहीं-कहीं गली-कूचों में आज भी उसकी चाशनी चखने को मिल जाती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इससे भी दुःखदायी बात यह है कि, जिन महापुरुषों ने दिल्ली के रूप को निखारा और उसके नाम को प्रसिद्धि के उच्च शिखर पर पहुँचाया, आज उनकी याद ताजा रखने का कोई साधन नहीं है। यहाँ तक कि, उनकी कब्रों तक का पता नहीं चलता। इन पंक्तियों के लेखक ने एक बार उर्दू कविता के इन निर्माताओं की कब्रों को खोजने का प्रयत्न किया था; लेकिन यह काम प्रायः असंभव लगा। अनेक अवसरों पर किसी विशेष कब्र का पता लगाने के लिए, कोई सूराग मिलने की आशा तक छोड़ देनी पड़ी। अंत में कुछ मित्रों की सहायता से चंद महत्वपूर्ण कब्रों का पता लग ही गया।

सबसे पहले, हम हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह पर चलते हैं। यहाँ इस सूफी महात्मा की सन्निधि में, भारत के महाकवि अमीर खुसरो सो रहे हैं। छः सौ वर्ष पूर्व, भारत और ईरान में अमीर खुसरो की तूती बोलती थी। फारसी का शायर होते हुए भी अमीर खुसरो ने हिंदी में कविता की। अपनी कविता में उन्होंने जिस भाषा का उपयोग किया, वह आज की उर्दू और हिन्दी का प्रथम रूप है, जिसे खड़ी बोली (या खरी बोली) कहते हैं। इस लिहाज से हिन्दी तथा उर्दू साहित्य के इतिहास में उनका स्थान बहुत ऊँचा है।

अमीर खुसरो केवल कवि ही नहीं, वीर सैनिक भी थे। अनेक अवसरों पर वे मैदाने जंग में मुगलों के विरुद्ध लड़े; लेकिन साहित्य के क्षेत्र में वे सचमुच बेजोड़ थे। १६ से १९ वर्ष तक की आयु में उन्होंने सैकड़ों-हजारों पद्य और दो लम्बे-लम्बे स्तुति-वर्णन लिख डाले। उनके सर्वग्राही मस्तिष्क ने एक ओर उनसे बच्चों के लिए पहेलियाँ और मुकरनियाँ लिखवायीं, तो दूसरी ओर प्रौढ़ों के लिए गीत रचवाये, जो आज भी गाये जाते हैं। संगीत-जगत् को सितार भी उन्हीं की देन है, जिसे वह कभी नहीं भूल सकता।

शायर होने के बावजूद, अमीर खुसरो ने दुनिया के रंग-ढंग एवं रहस्य से सात सल्तनतों का उत्थान और पतन अपनी आँखों देखा और हर बादशाह के दरबार में एक-जैसा मान प्राप्त किया। उस जमाने के राजनैतिक वातावरण को ध्यान में रखते हुए, यह कोई साधारण बात न थी।

अमीर खुसरो जीवन के हर पहलू में दिलचस्पी रखते थे। एक ओर वे बादशाहों की आज्ञा पर कविताएँ लिखते थे, तो दूसरी ओर अपने गुरु हजरत निजामुद्दीन के साथ, अध्यात्मवाद के रहस्यों पर वाद-विवाद भी करते थे। उन्होंने गलियों की खाक भी छानी और गाने वालियों के मुजरे भी सुने।

शाम को गुरु पूछा करते थे – "कहो खुसरो! क्या खबर है?" और खुसरो राजदरबार में होने वाली साजिशों से लेकर बाजार में उड़नेवाली अफवाहों तक, हर खबर अपने गुरु तक पहुँचा देते थे।

अब हम चंद शताब्दियाँ आगे चलते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं और चहार-दीवारी से घिरे हुए दिल्ली शहर में पहुँचते हैं। तुर्कमान गेट से शहर में दाखिल होकर, बहुत-सी छोटी-मोटी सँकरी और पेचदार गलियों में से होते हुए, हम एक पुरानी इमारत के सामने जा पहुँचते हैं। यह दरगाह अबुलखैर है। इसके अंदर का वातावरण बाहरी दुनिया से बिल्कुल भिन्न है। यह एक पवित्र स्थान है; लेकिन ख्वाजा निजामुद्दीन की दरगाह की तरह यहाँ न कोई मुजाविर है, न भिखारी। वैसे यहाँ हर साल उर्स होता है और लोग दूर-दूर से अपने पीर को श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए आते हैं।

रूप के क्षणों का गर्वीला अहंकार भी कितना प्रिय लगता है; किंतु जब रूप निराकार में समा जाता है, तो केवल करुणा ही उसका पता देती है। —रिल्के

यहाँ गुरु और चेलों की कब्रें संगमरमर से ढँकी हुई हैं। दीवार में लगे पत्थर की तख्ती से पता लगता है कि, दायीं ओर की आखिरी कब्र सुप्रसिद्ध कवि मिर्जा मजहर जानजाना की है। ये अट्ठारहवीं शताब्दी के कवि थे और उनके पिता औरंगजेब के दरबार में नौकर थे। उनकी प्रशंसा स्वयं बादशाह ने की थी और वे अपने जीवन-काल में ही महाकवि माने जाने लगे थे। उन्होंने उर्दू कविता को पुरानी और पिटी हुई शैली के गढ़े से बाहर निकाला। साथ ही वे सूफी दार्शनिक भी थे। मजहर जानजाना बचपन में, वर्षों तक मस्जिद में झाड़ू देते रहे और बड़े होने पर, उन्होंने वह स्थान प्राप्त किया कि, उनके मुरीदों की संख्या हजारों तक पहुँचती है।

वे बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि वाले और सरस थे; हमेशा हाजिर-दिमाग रहते थे। उनकी विद्वत्ता ने उन्हें ऐसा वाक्चतुर बना दिया था कि, दिल्ली का हर व्यक्ति उनकी मजलिस में सम्मिलित होना और उनकी बातें सुनना चाहता था। वे सूफी थे, सो उन्होंने बड़े त्याग और संयम का जीवन व्यतीत किया। लेकिन इसके बावजूद वे बड़े सुलझे हुए व्यक्ति थे। उनका मकबरा एक पवित्र स्थान माना जाता है; इसीलिए अच्छी हालत में है।

दूसरी ओर हमें ख्वाजा मीर दर्द की कब्र के चिह्न दिखाई देते हैं। तुर्कमान गेट के पास ही एक छोटा-सा टीला है, जिस पर बहुत-सी कब्रों के अवशेष पाये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाते हैं। एक बड़े वृत्त में तीन कब्रें हैं। इनमें से एक ख्वाजा मीर दर्द की, दूसरी उनके पिता की और तीसरी भाई की बतायी जाती है।

मीर दर्द, मिर्जा मजहर से अगले युग के कवि थे। वे भी सूफी थे। अध्यात्म उनकी गजलों का प्राण है। कवि की हैसियत से वे जानजाना से ऊँचे माने जाते हैं। महाकवि मीर ने उन्हें 'आधा कवि' कहा है; और मीर दर्द को कवियों की प्रथम श्रेणी में रखने के लिए यह काफी है।

मीर दर्द युवावस्था में रूमानी शायर थे; परंतु उन्होंने बहुत जल्दी भौतिक सुखों को त्याग दिया। वे बड़े सभ्य और सुसंस्कृत व्यक्ति थे और उनके घर होने वाले मासिक मुशायरों में, हर व्यक्ति को दिल्ली के शिष्टाचार का सख्ती से पालन करना पड़ता था। कहा जाता है कि, एक बार दिल्ली के सम्राट् शाह आलम को भी, शिष्टाचार से न बैठने पर कवि ने झिड़क दिया था।

मीर दर्द को दिल्ली से अनन्य प्रेम था। उन्होंने उस अस्थिरता के जमाने में भी उसे न छोड़ा, जब कि हर समझदार व्यक्ति वहाँ से चला गया। यहाँ तक कि, महाकवि मीर तकी मीर और रफी सौदा भी लखनऊ चले गये; क्योंकि वहाँ के हालात अच्छे थे।

उनकी याद जिंदा रखने के लिए, उनकी कब्र के पास से गुजरने वाली सड़क का नाम मीर दर्द रोड रखा गया है; लेकिन उनकी कब्र को सुरक्षित रखने की कोई व्यवस्था नहीं की गयी है। उनकी कब्र के आस-पास जहाँ दरगाह बनायी गयी थी, बड़ी गंदगी है। टूटी हुई दीवारों के खंडहर इस महाकवि के निवास-स्थान का पता देते हैं। इस दृश्य को देख कर उनका यह शेर याद आ जाता है –

दर्द कुछ मालूम है तुमको ये लोग,
किस तरफ से आये थे किधर चले।

अब हम उन्नीसवीं शताब्दी पर आते हैं, जहाँ एक युग खत्म होता है और दूसरा आरंभ होता है, जहाँ एक सभ्यता विलीन होती है और दूसरी जन्म लेती है और शायरी का एक दौर समाप्त होकर दूसरा शुरू होता है।

जौक निश्चय ही उस युग के सबसे लोकप्रिय कवि थे। उनका नाम शेख इब्राहीम था; लेकिन अधिकांश लोग उन्हें तखल्लुस से ही पहचानते हैं। पिंगल-शास्त्र का यह पंडित, जो एक सिपाही का बेटा था, बहुत जल्दी श्रेष्ठता के शिखर पर पहुँच गया। १९ वर्ष की आयु में उन्होंने बादशाह की शान में एक कसीदा (स्तुति) लिखा और खाकानि-ए-हिन्द का खिताब पाया। उस जमाने में आम लोगों में भी शायरी की योग्यता और रुचि पायी जाती थी। लेकिन जौक वास्तव में उस्ताद थे। युवावस्था में ही वे मुशायरों में सिद्धहस्त शायरों को चुनौती दे दिया करते थे। उस जमाने में, दी हुई मिस्रे-तरह पर, निश्चित समय में अधिक-से-अधिक शेर कह देना ही शायर की योग्यता का प्रमाण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माना जाता था और इसमें जौक को कोई नहीं हरा सकता था।

केवल अपनी योग्यता के बूते पर जौक राजकवि के पद पर पहुँचे और अंतिम मुगल सम्राट् बहादुरशाह जफर ने उन्हें अपना उस्ताद बनाया। शाही दरबार में वे बादशाह के लिए मिनटों में शेर कह दिया करते थे। भाषा के प्रवाह और शैली की सादगी में वे अपना सानी नहीं रखते थे। और आज भी उनकी लोक-प्रियता का कारण उनके ये ही गुण हैं।

दिल्ली में मुश्किल से दो-चार व्यक्ति मिलेंगे, जो यह जानते हैं कि, जौक को कहाँ दफनाया गया था। कुतुब रोड पर एक कब्रिस्तान में उनकी कब्र है, जिस पर उनके नाम की पट्टी तक नहीं है। किसी जमाने में उसके चारों ओर दीवारें खड़ी की गयीं थीं और इन्हीं दीवारों से यह कब्र पहचानी जाती है।

जौक की शायरी का अधिकांश भाग १८५७ के हंगामों में नष्ट हो गया। कहा जाता है कि, जब अँग्रेजी फौजों ने दिल्ली में दमन-चक्र चलाया, तो उनके अत्याचार से बचने के लिए लोगों ने भागना शुरू किया। उन्हीं में जौक के एक माने हुए शागिर्द मौलाना हुसैन आजाद भी थे। घर छोड़ते समय मौलाना को ध्यान आया कि, कम-से-कम वह बहुमूल्य वस्तु तो साथ लेता चलूँ, जिसे अपने जीवन से भी प्रिय समझता रहा हूँ; और उन्होंने वह कागजों का पुलिंदा अपने साथ ले लिया, जिसमें उस्ताद जौक का कलाम सुरक्षित था। पर जिस समय वे यमुना नदी का पुल पार कर रहे थे, संतरी ने आवाज लगायी – "कौन जा रहा है?" आजाद रुक गये। संतरी ने देखा कि, एक व्यक्ति कागजों का पुलिंदा लिये खड़ा काँप रहा है। उसने पूछा – "यह तुम अपने साथ क्या लिये जा रहे हो?"

"ये बेकार कागज हैं।"– मौलाना ने कहा। इस पर – सिपाही ने हुक्म दिया– "तो इन्हें फेंक दो!"

मौलाना ने बड़ी सावधानी से बंडल नीचे रख दिया, ताकि बाद में मौका पा कर उसे उठा ले जायें। लेकिन सिपाही ने एक ठोकर लगायी और जौक की जीवन-भर की मेहनत यमुना की लहरों में बह गयी।

इस घटना के वर्षों बाद, जौक के शिष्यों ने अपनी याददाश्त की मदद से, अपने पूज्य गुरु का कलाम एकत्र किया। इसी पुण्य-प्रयत्न के सुफल के रूप में एक छोटा-सा 'दीवान-ए-जौक' पाया जाता है।

कवि की हैसियत से जौक अपने समकालीनों पर छाये हुए थे। यहाँ तक कि, महाकवि गालिब भी वह स्थान प्राप्त नहीं कर सके, जो जौक को प्राप्त था। लेकिन आज तो मिर्जा गालिब सब पर छाये हुए हैं। पिछले बीस वर्षों में गालिब के विचारों की गहराई और ताजगी पर, उनकी मेधा की उपज और अनुपम शैली पर अनेक ग्रंथ लिखे जा चुके हैं।

शराब, आम और पुस्तकों के रसिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गालिब एक आकर्षक व्यवितत्व के मालिक थे। उनकी कविता में मानव-प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ है। उनकी हाजिर-जवाबी के सैकड़ों लतीफे मशहूर हैं। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद, गालिब अपने बुजुर्गों का बनाया हुआ स्तर कायम रखने के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे।

कहा जाता है कि, एक बार तो इतनी बुरी हालत हुई कि, वे नौकरी करने पर मजबूर हो गये। दिल्ली कालेज में फारसी के अध्यापक की जगह खाली हुई, तो बुलाये जाने पर वे पालकी में सवार होकर गये। लेकिन दरवाजे से वापस लौट आये; क्योंकि कालेज के अधिकारी उनका स्वागत करने के लिए बाहर नहीं आये। यह तो खैर सरकारी नौकरी थी, गालिब तो इतने स्वाभिमानी थे कि, काबे से भी लौट आते –

बंदगी में भी वह आजादा-
ओ-खुदबीं हैं कि हम,
उल्टे फिर आये दरे काबा
अगर वा न हुआ।

गालिब की कब्र वर्षों से एक मिट्टी का ढेर मात्र हो चुकी थी। अभी कुछ ही वर्ष पूर्व, गालिब सोसायटी के प्रयत्न से एक सुंदर यादगार बना दी गयी है। इस मकबरे का डिजाइन नवाब जैनयार जंग ने बनाया था। गालिब भी हजरत निजामुद्दीन के मजार के पास दफ्न हैं।

इस मंडली के आखरी कवि मोमिम खाँ मोमिन हैं। इनकी कब्र पुरानी जेल के पीछे वाले कब्रिस्तान की दीवार के बाहर है। इसके एक ओर धोबीघाट है और दूसरी ओर रेल्वे-लाइन। कुछ वर्ष पूर्व प्रो० अहमदअली देहलवी ने उनके मजार पर एक पत्थर गड़वा दिया था, ताकि यह कब्र भी कहीं गुम न हो जाये।

आज से सौ वर्ष पूर्व दिल्ली में शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो, जिसने मोमिन का नाम न सुना हो। कवि, हकीम और ज्योतिषी– वे एक साथ कई गुणों में प्रवीण थे। कविता तो शौकिया करते थे। फिर भी उसमें नाम कमाया और ऐसे जौहर दिखाये कि, आज उनका स्थान उच्च कोटि के कवियों में है–

तुम मिरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता।

यह मोमिन का वह शेर है, जिसे सुन कर गालिब को भी रश्क होने लगा और उन्होंने मोमिन से कहा कि, यह शेर तुम मुझे दे दो और बदले में मेरा पूरा दीवान ले लो।

कहा जाता है कि, मोमिन अपने जमाने में दिल्ली के सबसे खुशपोश (फैशनेबल) व्यक्ति थे। उनके सुंदर और आकर्षक व्यक्तित्व के किस्से हमें लार्ड बायरन की याद दिलाते हैं। अनजानी जगह पर, उनकी यादगार के रूप में एक मिट्टी का ढेर देख कर गालिब का यह शेर याद आ जाता है –

सब कहाँ कुछ लाला-ओ-गुल में नुमायाँ
हो गयीं।
खाक में क्या सूरतें होंगी कि पिंहाँ हो गयीं।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबसे ऊँची प्रेम सगाई

प्रेम की आयु नहीं होती; कम-ज्यादा और छोटे-बड़े का माप भी वहाँ नहीं होता। प्रेम ऐसा अंतरिक्ष है, जिसमें हमारा सब-कुछ अपनी सीमाएँ खो देता है—सब पानी की तरह एकतल हो जाता है। प्रेम आत्यंतिक अर्पण भी तो है, जहाँ 'स्व'-जैसा कुछ भी तो नहीं रह जाता। इस विवेचन की स्थापना में जरा नीचे की पंक्तियाँ पढ़ें।

★

विवाह के समय वर-वधू में कौन बड़ा हो, इस प्रश्न ने हमारे पूर्वजों को विशेष परेशान किया हो, ऐसा नहीं प्रतीत होता। तभी शास्त्रों में जाति, कुल, गोत्र आदि की तरह, स्पष्ट विधि-आदेश वर-वधू के आयु-तारतम्य के विषय में नहीं मिलते। परंतु जहाँ धर्मशास्त्र चुप हो जाता है, वहाँ अनुभव-शास्त्र काम करता है। अनुभव ने शायद दिखाया कि, वर से यदि वधू छोटी रहे, तो गृहस्थी की नौका का संचालन अधिक अच्छा होता है; तभी वाग्दान के पूर्व जन्म-पत्री मिलाते समय, इसका ध्यान रखा जाता है। संभव है, जन्म-पत्री रखने के मूल में यह कारण भी रहा हो। किंतु हिन्दू-समाज में भी बहुत-से दम्पति ऐसे मिल जाते हैं, जिनमें वधू वर से बड़ी हो। महात्मा गांधी और कस्तूर बा का उदाहरण सबसे ताजा और सबसे प्रसिद्ध है। बा बापू से छः महीने बड़ी थीं।

स्मृति

[चित्र : चौरसिया-कृत एक स्केच]

परंतु इस विषय का ऐतिहासिक विवेचन करना है, तो हमें पहले पुराणों पर दृष्टि डालनी चाहिए। श्रीमद्-भागवत में हमें बलराम-रेवती की कथा मिलती है। कुशस्थली के राजा ककुद्मी अपनी कन्या रेवती को साथ लिये, वर-निर्वाचन करने के उद्देश्य से ब्रह्माजी के निकट गये। उस समय ब्रह्म-लोक में संगीत-सभा जमी थी। अतः उन्हें कुछ क्षण रुकना पड़ा। पर देवताओं का एक क्षण माने मनुष्यों के कई युग। उत्सव के अंत में जब वार्तालाप का अवसर देखा, तो नमस्कार कर राजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने अपना अभिप्राय कह सुनाया। आने का उद्देश्य सुन कर, ब्रह्माजी हँस कर बोले– "राजन्, जिन मनुष्यों को आपने रेवती के उपयुक्त समझा था तथा जिनमें से एक के विषय में मेरा मत लेने आप यहाँ आये थे, वे सब तो काल के गाल में जा चुके हैं। अब उनके पुत्रों-पौत्रों की तो कौन कहे, गोत्रों के भी नाम नहीं सुनायी पड़ते। इस बीच में सत्ताईस चतुर्युगी का समय बीत चुका है। हाँ, भगवान् नारायण के अंशावतार महाबली बलदेवजी पृथ्वी पर विद्यमान हैं; उन्हीं को यह कन्या-रत्न समर्पित कर दो।" राजा ने अपनी सर्वांग सुंदर कन्या, बलरामजी को अर्पित कर दी तथा स्वयं तप करने घोर जंगल में चले गये।

विचार करने की बात है, २७ चतुर्युग बड़ी कन्या! आकार में भी कितनी बड़ी रही होगी! ऐसे अवसर पर बलरामजी का हल काम आया। इच्छानुसार बढ़ जाने वाले हल को, बलरामजी ने रेवती के कंधे पर रख कर नीचे खींचना प्रारंभ किया; और उस समय तक खींचते रहे, जब तक कि; रेवती उनके कंधों से दो चार अंगुल नीची न हो गयीं।

प्रेमोपासना की मूर्ति राधा भी उम्र में कृष्ण से बड़ी ही थीं। 'गोतगोविंद' में नंद राधा से, रात हो जाने के कारण डरते हुए कृष्ण को घर पहुँचा आने के लिये कहते हैं– "नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय।"

मालवा के राजा मुंज ने चालुक्य राजा तैलपदेव पर आक्रमण किया था। दुर्दैववश वह पराजित हुआ तथा बंदी बना लिया गया। बंदीगृह में ही, उसका तैलपदेव की बहन एवं श्रीपुर के राजा चंद्र की विधवा मृणालवती से प्रेम हो गया। मृणाल आयु में मुंज से बड़ी थी। पर प्रेम ने छोटे-बड़े का कब ध्यान किया है! मृणाल ने मुंज को सुरंग का मार्ग दिखा कर, भाग जाने की प्रेरणा दी। किंतु बाद में उसे यह ध्यान आया कि, कहीं यह मालवा जाकर मुझे भूल न जाये – मैं आयु में उससे बड़ी जो हूँ। और इसी चिंता से उसके मन में पाप का उदय हुआ। उसने ईर्ष्यावश, मुंज के भागने का रहस्य, अपने भाई को बता दिया। परिणाम-स्वरूप तैलप ने नीचों

प्रेम

क्यों प्रेम कितना बड़ा है जी?
वह तो विराट् से भी बड़ा है जी!
क्यों प्रेम कितना गहरा है जी?
वह तो सागर से भी गहरा है जी!
क्यों प्रेम कितना छोटा है जी?
वह बुद्धि जितना ही छोटा है जी!
क्यों प्रेम कितना उथला है जी?
वह देह जितना ही उथला है जी!
अब यह कहिये, प्रेम क्या है जी?
प्रेम मधु नहीं, मधुर स्वाद है जी!

—एक तमिल लोकगीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उसका वध करवा डाला।

इस्लाम के प्रवर्तक पैगंबर मुहम्मद साहब का प्रथम विवाह २५ वर्ष की अवस्था में खदीजा बीबी के साथ हुआ। खदीजा उनसे १५ साल बड़ी थीं; किंतु इस पर भी २५ से ५० वर्ष तक का उनका वैवाहिक जीवन अत्यंत सुख-पूर्वक बीता।

अँग्रेजी का प्रसिद्ध कृती राबर्ट ब्राउनिंग कवयित्री एलिजाबेथ बैरेट की एक कविता पर मुग्ध हो कर, उससे प्रेम करने लगा। नस कट जाने से अस्वस्थ, अस्थिपंजर-मात्र एलिजाबेथ के पास, ब्राउनिंग के पत्र ज्वार की लहरों के समान पहुँचने लगे। चार मास तक एलिजाबेथ ने उसके पत्रों का कुछ भी उत्तर न दिया। चार मास बाद दिया भी, तो अधूरा-सा। वह ब्राउनिंग से छः मास बड़ी थी, साथ ही अस्वस्थ भी। इसी कारण, वह उसे प्रोत्साहित नहीं करना चाहती थी। ब्राउनिंग उससे मिला। उसने विवाह का प्रस्ताव रखा; पर एलिजाबेथ ने अपनी पूर्व-धारणा के कारण उसे ठुकरा दिया। ब्राउनिंग ने कविता लिखना बंद कर दिया; किंतु मन के आवेगमय भावों को छंदोबद्ध कर एलिजाबेथ के पास भेजने लगा। एलिजा उन्हें छपने के लिए प्रेस में दे देती। इस प्रकार ५७२ कविता-पत्रों के आने के बाद, उसने पिता की स्वीकृति के बिना ही ब्राउनिंग से विवाह कर लिया। परिणय के समय एलिजा में इतनी भी शक्ति न थी कि, वह विवाह के रजिस्टर पर हस्ताक्षर कर सके। तीन बार प्रयत्न करके भी वह असफल रही। अंत में कुछ देर विश्राम करने के उपरांत, थोड़ा जल पीकर, उसने किसी प्रकार हस्ताक्षर कर दिये। पिता का विरोध तो था ही। विवश ब्राउनिंग रोग-जर्जर एवं मृतप्राय एलिजा को लेकर इटली चला गया।

प्रसिद्ध रूसी साहित्यकार गोर्की जब अपने नगर नोवीग्राड में, एक पत्र के सम्पादन-विभाग में कार्य कर रहा था, तभी उसकी भेंट कैथराइन वोल्जास्वाया से हुई। वह गोर्की से अवस्था में दस वर्ष बड़ी थी। पर गोर्की को उससे इतना अधिक प्रेम हुआ कि, वह उससे विवाह करके ही रहा।

रोमन वीर डेमिट्रियस ने, प्रसिद्ध नरेश ऐंटिपेटर की फीला नामक कन्या से विवाह किया था, जो आयु में उससे बड़ी थी। डेमिट्रियस की लेमिया नामक एक प्रेमिका भी थी। अवस्था में वह डेमिट्रियस से काफी बड़ी थी।

साधारणतया हमारे यहाँ स्त्रियों का विवाह, कौमार्य या यौवन काल में ही होता है और चालीस के पार तो विधवा-विवाह भी प्रायः नहीं होते। किंतु कुछ मास पूर्व पड़दा-ग्राम की एक ८०-वर्षीय मुस्लिम महिला ने, रामपुर के एक ९६५-वर्षीय वृद्ध से निकाह कर लिया।

इन विवाहों से प्रेम के अंधे होने की लोकोक्ति ही नहीं चरितार्थ होती, अपितु सच्चे स्नेह के समक्ष अवस्था आदि की बाधा की व्यर्थता भी सिद्ध होती है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मविश्वास की जड़ें आपमें कितनी गहरी हैं

आत्मविश्वास से विश्वसनीय हमारा साथी कौन हो सकता है ? आत्मविश्वास हमारे उत्कर्ष की रीढ़ ही नहीं, प्राणोपम शक्ति है; वह हमें धारण ही नहीं करता, आगे भी ढकेलता है। प्रस्तुत प्रश्नावली में आत्मविश्वास की गहराई मापने का एक प्रयास है; आप मापिये और जितनी कमी हो, उसकी पूर्ति कीजिये ।

★

विश्वास जीवन का सम्बल है। यदि आप स्वयं ही अपने पर विश्वास नहीं कर पाते, तो भला दूसरा व्यक्ति आप पर कैसे विश्वास करेगा ! जीवन का यह कटु सत्य है कि, प्रत्येक व्यक्ति अपने आत्म-विश्वास से ही मापा जाता है। आपके मुख पर छायी हुई हीनता, झिझक और उदासी सहज ही संकेत कर देती हैं कि, आप आत्मविश्वास से शून्य हैं। और फिर यह जान लेने के बाद, तो प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में आपको उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगता है।

तब, जरा अपनी परीक्षा करके देखिये कि, आपमें कितना आत्मविश्वास है । निम्न-लिखित प्रश्नावली को ध्यानपूर्वक पढ़िये और ईमानदारी से एक-एक प्रश्न पर 'हाँ' या 'ना' का चिह्न लगाते जाइये—

१. क्या आपको यह विश्वास है कि, आप उतने ही योग्य हैं जितना कि, दूसरे लोग आपको समझते हैं ?

२. क्या आपको ऐसा लगता है कि, बहुत-से लोग आपको चाहते हैं ?

३. क्या आपके मन में सामाजिक समारोहों में सम्मिलित होने और उनमें रस लेने की इच्छा होती है ?

४. क्या आप किसी व्यक्ति से प्रभावित हुए बिना, भली-भाँति निष्पक्ष आलोचना कर सकते हैं ?

५. आपके विषय में लोग, जो-कुछ सोचते या कहते हैं, क्या उसे सुन कर भी आप विवेकपूर्ण और तटस्थ रह सकते हैं ?

६. क्या आप हीनता की भावना से ग्रस्त हुए बिना, बड़े-से-बड़े निर्मम आक्षेपों का सामना कर सकते हैं ?

७. क्या आप नये लोगों, नये मालिक, नये काम और नयी परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको आसानी से ढाल सकने में समर्थ हैं ?

८. क्या आप बोलने में पहल करके, अक्सर दूसरे लोगों का ध्यान अपनी ओर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकर्षित कर लेते हैं?

९. क्या आप कभी-कभी ही झेंपते और शर्माते हैं?

१०. क्या आप अपना उपहास या मजाक सहन कर सकते हैं?

११. क्या आप बिना किसी घबराहट के, अपने विषय में सहज-सरल बात-चीत कर सकते हैं?

१२. जब लोग आप पर नजर गड़ाये हों, तब क्या आप प्रसन्नतापूर्वक अपना काम कर सकते हैं?

१३. क्या आप अपनी राय सुगमता से प्रकट कर सकते हैं?

१४. किसी वाद-विवाद में, क्या आप अपने दृष्टिकोण को अंत तक बनाये रख सकते हैं?

१५. क्या आप यह कह सकते हैं कि, आप अपने परिवार, मित्रों एवं अन्य लोगों की राय से बहुत ज्यादा प्रभावित हैं?

१६. क्या बाधाओं एवं कठिनाइयों की चुनौती, आपको दूने उत्साह से उनका सामना करने की प्रेरणा देती है?

१७. क्या आप साधारणतया कामों में स्वयं पहल करते हैं?

१८. सामने आये हुए उत्तरदायित्व को, क्या आप अपनी योग्यता सिद्ध करने का सुअवसर समझ कर, उसका सहर्ष स्वागत करते हैं?

१९. क्या आप आवश्यकता अनुभव होने पर, किसी दुकान या रैस्टोरैंट में मैनेजर से शिकायत करना पसंद करते हैं?

२०. क्या आप भविष्य के लिए योजनाएँ बनाते रहने के बजाय, आज ही कुछ-न-कुछ कार्य आरम्भ कर देते हैं?

अब उपर्युक्त प्रश्नों पर जहाँ-जहाँ 'हाँ' के चिह्न लगे हैं, उन पर पाँच-पाँच के हिसाब से अंक देकर, उन्हें जोड़ लें। यदि जोड़ ७० या उससे अधिक है, तो आप वास्तव में बड़े आत्मविश्वासी हैं। ६० से ७० तक अंक मिलें, तो स्थिति संतोषजनक है। ५० से ६० अंक तक भी दशा कुछ अच्छी कही जा सकती है। पर यदि अंकों का जोड़ ५० से कम है, तो अवस्था सचमुच असंतोषजनक है।

यदि आपने ६० से कम अंक प्राप्त किये हैं, तब भी निराश होने की आवश्यकता नहीं। बस इसी प्रकार हर महीने अपनी जाँच करते रहिये। यह भी देखते रहिये कि, किस तरह आपके प्राप्तांक बढ़ सकते हैं और आप अपने में आत्मविश्वास जगा सकते हैं। उदाहरण के लिए मान लीजिये कि, यदि आपके चौथे, आठवें और बीसवें प्रश्न का उत्तर 'न' में है, तो आप मन में निश्चय कीजिये कि, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाकर आप उसे जल्दी ही 'हाँ' में बदल डालेंगे।

★

समीक्षा-मर्मज्ञ ने जिज्ञासु शिष्य को समझाया – "वत्स, एक ग्रंथ से उतारना साहित्यिक चोरी है; अनेक ग्रंथों से उतारना अनुसंधान।" – 'परिभाषा-निधि' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूले हुए फ़साने सब याद आ रहे हैं

महावीर त्यागी-लिखित संस्मरण-मणिमाला की कुछ मणियाँ

सन् १९३८ में मैं यू० पी० प्रदेश काँग्रेस कमेटी का मंत्री चुना गया। उन दिनों प्रांतों में काँग्रेसी सरकारों की स्थापना हो चुकी थी। श्री गोविंद वल्लभ पंत हमारे प्रांत के प्राइम मिनिस्टर थे और श्री रफी अहमद किदवई, डा० काटजू, विजय-लक्ष्मी पंडित, हाफिज मुहम्मद इब्राहीम और सम्पूर्णानंद मिनिस्टर थे। मैं साधारण एम० एल० ए० था।

शर्मदा का देहांत हो चुका था और उमा, उषा और सरोज तीनों अपनी मौसी के पास दिल्ली में रहती थीं। मेरे साथी श्री अजित प्रसाद जैन, रफी अहमद किदवई के नीचे महकमा-माल के पार्लमेंटरी सेक्रेटरी थे। तब तक डिप्टी-मिनिस्टरी के पद चालू नहीं हुए थे। दिन भर मैं असेम्बली के कामों में और सुबह-शाम प्रांतीय काँग्रेस कमेटी के दफ्तर में लगा रहता था। खाने-पीने और सोने-बैठने का प्रबंध अजित प्रसाद जैन के घर था।

करीब-करीब दो वर्ष तक जैन-परिवार ने जिस आदर से मुझे अपने घर रखा, उसे भुलाया नहीं जा सकता। जब कभी मियाँ-बीबी की लड़ाई होती, तो मैं परिवार का जज बन जाता था। दोनों को बुला कर डाँट देता और जैन साहब पर कुछ-न-कुछ जुर्माना कर भाभीजी को दिलवा देता। बनिये की बेटी और स्वभाव की देवी। उन्हें तो इतना ही काफी था कि, मुकद्दमा जीत जायें, फिर मैं तो जुर्माना भी नकद दिलवाता था।

अजित प्रसाद के बेटों– श्यामा और शांति – को भी किसी ने सुझा दिया कि, बाप पर मुकदमा करो, तो जज साहब जुर्माना दिलवा देंगे। आये दिन दोनों कोई-न-कोई मुकदमा ले आते। मैं बाकायदा हलफिया बयान लेता और बच्चों को दो-चार आने दिलवा देता। एक दिन मैंने छोटे बच्चे श्यामा का मुकदमा खारिज कर दिया। बस उसको इतना दुःख हुआ कि, उसने रोना शुरू कर दिया और मुद्दालेह (श्री जैन), गवाह (अपनी अम्मी) और अदालत को (मुझे) घूँसे-ही-घूँसे मारना शुरू कर दिया–अभी तीन वर्ष का तो था ही। आज वे ही श्यामा विलायत में डाक्टरी कर रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन दिनों, चूँकि श्री जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, राजेंद्र बाबू और महात्मा गांधी सभी असेम्बलियों से बाहर थे, इसलिए काँग्रेस वर्किंग कमेटी-पार्लमेंटरी बोर्ड और प्रांतीय और जिला काँग्रेस कमेटी सभी अपनी-अपनी जगह सम्मानित संस्थाएँ मानी जाती थीं और कोई भी प्रांतीय प्राइम मिनिस्टर, इन कमेटियों के प्रस्तावों की अवहेलना नहीं कर सकता था। एक बार गवर्नर साहब ने (जो अंग्रेज थे) हमारी प्रांतीय सरकार के राजनैतिक बंदियों को छोड़ने के निर्णय को अस्वीकार कर दिया, तो पार्लमेंटरी बोर्ड ने पंतजी को त्यागपत्र देने का आदेश दे दिया। हालाँकि, पंतजी इस प्रस्ताव से खुश नहीं थे, फिर भी तुरंत मंत्रि-मंडल ने त्यागपत्र दे दिया।

उन दिनों पार्टी में बात-चीत की बहुत स्वतंत्रता थी। यों तो नैनीताल-अल्मोड़ा के लोग अपनी मर्यादा के अनुसार, पंतजी के पैर छूते ही थे; पर पंतजी पैरों को छूने के पहले ही हाथ आगे बढ़ा कर, आशीर्वाद दे दिया करते थे। मैदान के वे लोग भी, जिन्हें पंतजी छोटे भाई या बेटे की नाईं प्यार करते थे, कभी-कभी पैर छूते; परंतु किसी लालच से या खुशामद के लिए नहीं। उन दिनों काँग्रेस संस्था का रूप एक परिवार का-सा था। उसमें एक-दूसरे की डाँट-डपट भी होती थी और रूठे हुओं की खुशामद भी।

असल में उन दिनों हमारा साझे का सपना था। सभी अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार उसमें रंग भरते थे। इसलिए आपस में ईर्ष्या नहीं थी, स्पर्धा थी। नयी पीढ़ी के लोग, उन दिनों का चित्रण पूरी तरह से नहीं कर सकते; क्योंकि अब वे सपने टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं। अब तो हम सब व्यक्तिगत सपने देख रहे हैं और केवल अपने सपने ही में रंग भरने की चिंता करते हैं। इसीलिए तो कांग्रेस-वाले अब आपस में दिल खोल कर बातें नहीं करते कि, कहीं हमारा सपना दूसरे को मालूम न हो जाये। सँभल-सँभल कर करते हैं बात, और सोच-सोच कर करते हैं प्यार। जरूरत पड़ने पर हँसते हैं और पाँच-सालाना चुनाव-आयोजन के अनुसार जोड़ते हैं दोस्ती। ईश्वर की देन प्यार और मुहब्बत भी, अब तो व्यापारिक वस्तु बन गयी है।

जवाहरलालजी उन दिनों भी हमारे नेता थे; परंतु मोतीलालजी के रहते हुए, वे बड़े भाई के समान रहे, पिता के तुल्य नहीं। जो उम्र में बहुत छोटे थे, वे कभी उनके पैरों की ओर हाथ बढ़ा कर नमस्कार करते थे, छूते नहीं थे कि, कहीं ठोकर न मार दें; क्योंकि अपनी जवानी में ये बड़े मरखने थे और अपने पैरों को छुआने में ऐसे शर्माते और गुस्सा करते थे कि, जैसे बचपन में किसी ने चुम्मी काट ली हो।

प्रांतों में राष्ट्रीय दल की सरकारें तो बन गयीं थी; पर अभी अँग्रेजी-राज्य था। मुस्लिम लीग असेम्बलियों में विरोधी दल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का कार्य करती थी। बड़े-बड़े राजे और ताल्लुकेदारों ने भी एक गुट बना रखा था, जो अपने को कृषि-दल कहता था। कुछ लोग हिन्दू-सभा के भी थे। पर जितने भी विरोधी दल में थे, जनता की बढ़ती हुई उमंग और उफनती हुई देश-भक्ति के प्रभाव में ऐसे आये हुए थे कि, विरोध में कहनी ही कहते थे, अनकहनी नहीं। और लाबी और टिफन-रूम में पार्टी का सारा मत-भेद भूल कर मुहब्बत से बातें करते और एक-दूसरे पर चुटकियाँ भी कसते थे। पंतजी इतने उदार और सज्जन थे कि, बेईमानों को भी ईमानदार मान कर भरोसा करते थे कि, कभी-न-कभी तो सीधे रास्ते पर आ ही जायेंगे। उनके इस स्वभाव से बहुतों ने लाभ उठाया। पर स्पष्टवादिता खत्म हो गयी। रफी अहमद किदवई और उनके बहुत-से साथियों को, प्रांतीय शासन छोड़ कर केंद्र में आना पड़ गया। फिर भी, आपस का व्यवहार बहुत प्यारा और मीठा रहा।

एक दिन किसी ने असेम्बली में प्रश्न पूछा कि, सरकार ने शारदा-ऐक्ट के अनुसार कितनी छोटी-उम्र की शादियाँ रोकी हैं। डा० काटजू ऊँचे दर्जे के वकील थे; सवाल-जवाब में उन्हें फाँसना कठिन था। फिर भी जल्दी में कह गये कि, "यह काम उन संरक्षकों का है, जिनकी संतानें हैं।" मैंने खड़े होकर पूछा —"क्या सरकार 'संतान-रहित' है?" काटजू सटपटा गये। पर पंतजी के बराबर हाजिर-जवाब मिलना कठिन है। तड़ाक से बोले —"भला आपके होते हुए ऐसा कैसे हो सकता है!" सारी असेम्बली ने ठहाका लगा दिया। मैं आये दिन दूसरों का चुटकी लिया करता था; पर उस दिन पंतजी ने मुझे सचमुच लाजवाब कर दिया।

× × ×

उन दिनों कांस्टिटचूएंट असेम्बली बन चुकी थी और पंडित जवाहरलाल नेहरू वाइसराय के नीचे प्राइम मिनिस्टरी कर रहे थे। एक दिन मैंने असेंबली में, उनके कंट्रोल और राशनिंग के विरुद्ध बहुत तीखी तकरीर कर दी और कह दिया कि, रिश्वतखोरी का बाजार गरम है। यह बात रफी साहब तक को पसंद न आयी। रात को पार्टी की कार्यकारिणी बुलायी गयी और मेरा कोर्ट-मार्शल किया गया। पंतजी ने कहा—"जब त्यागी-जैसे पुराने साथी असेम्बली में ऐसी तीखी-तीखी तकरीर करेंगे, तो अनुशासन कहाँ रहेगा? इन्होंने केवल प्रांतीय सरकार पर नहीं, बल्कि केंद्रीय सरकार पर भी तरह-तरह के अभियोग लगाये हैं। जिस वृक्ष की छत्रछाया में बैठे हैं, जब उसी पर वार किया जायेगा, तो संस्था का क्या हाल होगा?"

पचीस वर्ष के जिगरी दोस्त, मुसीबत के साथी, जिनके साथ दाँत-काटे रोटी का सम्बध था, वे मुझे काँग्रेस से निकालने की बात पर "हाँ" कैसे कहें? हमारी कार्य-कारिणी के सभी सदस्य परेशान थे। फिर भी कायदे में जवाब-तलब किया गया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो मैंने कहा –"मुझे सभी मित्रों के बीच में यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि, मेरी तकरीर से पार्टी का अनुशासन भंग हुआ है। पर बहुत आदर के साथ मैं यह कहना चाहता हूँ कि, जिस ढंग से प्रांत-सरकार चल रही है, उससे कॉंग्रेस की मान-मर्यादा को ठेस लग रही है और साथियों में निर्भीकता की जगह चरण-चुम्बन की प्रवृत्ति बढ़ रही है। सरकार हमारे सपनों में रंग भरने की जगह, हमें नैतिक पतन की ओर ले जा रही है। अब समय आ गया है कि, कॉंग्रेस पार्टी को घूँस-खोरी और चोर-बाजारी को सख्ती के साथ दबाना चाहिए। पर आप लोग अपने निजी बनने-सँवरने में ऐसे जुटे हैं कि, शासन तबाह हो रहा है।"

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, जो हमारी असेम्बली में स्पीकर थे, पार्टी-मीटिंग में आया करते थे। उन्होंने कहा– "जब तुम-जैसे सीनियर साथी यह मानते हो कि, तुम्हारी स्पीच पार्टी के अनुशासन के विरुद्ध थी, तो तुम्हें क्षमा-याचना कर लेनी चाहिए।" मैंने उत्तर दिया– "जो आप कहते हैं, वह ठीक है टंडनजी। पर मेरी तीन बेटियाँ हैं; मैं नहीं चाहता कि, मेरे मरने पर उन्हें यह सुन कर गरदन नीची करनी पड़े कि, मुसीबत की रात में, जब उनके पापा की परीक्षा का समय आया, तो उसने क्षमा माँग ली थी। दुनिया में जितने बड़े-बड़े उपन्यास लिखे गये हैं; उनके लेखकों ने अपने नायक के चरित्र में समता रखी है। मैं भी एक नायक हूँ; स्वयं अपना उपन्यास लिख रहा हूँ। तब माफी माँगने से मेरे चरित्र की समता भंग न हो जायेगी!"

बेगम वाजिद ने कहा –"मैं तो त्यागीजी के खिलाफ कुछ कह नहीं सकती; क्योंकि उनमें कुछ दाग नहीं हैं।" ठाकुर मलखान सिंह ने पूछा– "जब आप मानते हैं कि, आपने अनुशासन-भंग कर दिया है, तो आप ही बतायें कि, ऐसी हालत में हमें क्या निर्णय देना चाहिए?"

मैंने कहा– "कॉंग्रेस-मैन होने के नाते मेरी राय है कि, आप मुझे कॉंग्रेस से निकाल दें और असेम्बली से मेरा त्यागपत्र माँग लें। ऐसा करने से कॉंग्रेस की मान-मर्यादा बहुत बढ़ेगी और भविष्य में अनुशासन भंग होना कतई बंद हो जायेगा। यदि आपने ऐसा न किया, तो मैं इससे भी कहीं अधिक कड़ी तक़रीर करने वाला हूँ; क्योंकि मुझे आपके शासन से तसल्ली नहीं है। यदि अभियुक्त को सफाई और गवाह पेश करने का अधिकार हो, तो मैं रफी साहब से पूछना चाहता हूँ कि, वे हलफ उठा कर कहे दें कि, उन्हें वर्तमान शासन-नीति पसंद है?" रफी साहब हँस पड़े। मैंने कहा–"हँसी के माने हैं सहमति। दूसरे गवाह सम्पूर्णानंद हैं। कहिए, आपको तसल्ली है?" वे भी चुप रह गये। मैंने कहा –"या तो हाँ बोलो, वरना मैं समझ जाऊँगा कि, अलखामोशी नीम रजा (चुप्पी के अर्थ हैं सहमति)।" वे कुछ नहीं बोले।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर मैंने विजयलक्ष्मी पंडित से पूछा। मेरे ये तीनों गवाह पंतजी के कैबिनेट में थे। विजयलक्ष्मी से मैंने कहा– "तुम पंडित मोतीलाल नेहरू की मरी-मिट्टी की निशानी हो। बताओ, क्या तुम्हें मौजूदा शासन-प्रणाली से संतोष है?" वे बोलीं– "कतई नहीं।"

अब तो पंतजी को लेने-के-देने पड़ गये। आये थे रोजे छुड़ाने, नमाज गले पड़ गयी। बोले–"जैसे पार्टी की समझ में आये, फैसला करे", और कुर्सी छोड़ कर जाने लगे। वे डाल-डाल तो मैं पात-पात। मैं भी उनके पीछे-पीछे यह कहता चल दिया कि, "आपके पीछे ये सब न्यायाधीश, जो मेरे मित्र हैं, मुजरिम से मुरव्वत खा जायेंगे और न्याय नहीं कर सकेंगे। इसलिए मुझे भी अपने साथ ले चलिए।"

अब पंतजी को बहुत परेशानी हुई और बोले– "तुम्हें यहीं रहना चाहिए।" मैंने कहा कि, जब आवाज पड़ेगी, तो मुजरिम अदालत में हाजिर हो जायेगा। फिर पंतजी भी बैठ गये, मैं भी बैठ गया। और मुकदमे की कार्यवाही फिर शुरू हो गयी। अलगूराय शास्त्री ने एक वेद-मंत्र पढ़ कर कहा कि, त्यागीजी का यह स्वीकार कर लेना पर्याप्त है कि, अनुशासन-भंग हो गया। बस, यहीं किस्सा बंद कर दीजिए, वरना पंतजी को चाहिए कि, सोने के थाल में घृत-दीप जला कर, हर कॉंग्रेस वाले का मुँह देखें। जिसने ज्यादा कुर्बानी की है और अधिक त्याग किया है, उसे पकड़ कर लायें। वही त्यागी को कॉंग्रेस से बाहर निकाल सकता है। हमारी तो यह हिम्मत नहीं है।

मैंने जोर देकर कहा– "निकाल दो, निकाल दो। मैं निकाल दिये जाने के बाद भी, कहीं घर तो चला नहीं जाऊँगा। बाहर कम्बल बिछा कर, सड़क की पटरी को घर घोषित कर दूँगा। जब आप लोग चंदा लेने जाया करोगे, तो मैं आपसे बीस कदम पीछे-पीछे चलूँगा। जो भी आपको चंदा देने से मना कर दे, उसे समझा-बुझा कर मैं आपके पास भेज दूँगा।"

डा० काटजू दूसरों की कम सुनते थे, उन्होंने एक माफीनामा अंग्रेजी में लिख कर, मुझसे कहा कि, इस पर हस्ताक्षर कर दो। मैं बौखला गया और उस कागज को फाड़ कर फेंक दिया।

जब कुछ निर्णय न हो सका, तो अनुशासन प्रस्ताव इन शब्दों में पास हो गया– "यह कमेटी त्यागीजी की तकरीर को अनुशासन के विरुद्ध मानती है।" पंतजी ने कहा कि, इस प्रस्ताव को पत्रों में छपवा दिया जाये। इस पर अजित प्रसाद जैन ने पूछा– "आपका इरादा पार्टी में अनुशासन स्थापित करने का है या साथियों की टोपियाँ उछालने का?"

इसको सुन कर जलसा खतम हो गया और सब फिर हँसने-बोलने लगे।

*

धर्म जब भूत बन कर आदमी पर सवार होता है, तो वह पहले उसके हृदय की हत्या करता है और फिर विचारों की।

*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न देखा न सुना

अलहाजेन (९६७-१०३८ ई.) अपने समय में, समस्त अरब-जगत् का सबसे बड़ा विज्ञान-वेत्ता था। सूर्य-किरणों और तालों (लेन्स) के विषय में उसने बड़ी खोजें की थीं। वातावरण में होनेवाला किरणों का विचलन, नतोदर तालों में प्रतिबिम्ब पड़ने का विधान आदि की उसी ने सर्वप्रथम वैज्ञानिक व्याख्याएँ पेश कीं। उस समय ही क्या, बाद में भी कई सदियों तक यह माना जाता था कि, हमारी आँखों से एक प्रकार की किरणें निकलती हैं, जो बाहर की वस्तुओं पर गिर कर उन्हें चमकाती हैं और उसी से वस्तुएँ दीखती हैं। अलहाजेन पहला वैज्ञानिक था जिसने कहा कि, आँखों से ऐसी कोई किरण-विरण नहीं निकलती।

परंतु इतने मेधावी और प्रतिभाशाली विद्वान् को, अपने जीवन के अनेक वर्ष पागल होने का नाटक रचने में बिताने पड़े। बात यह थी कि, अलहाजेन जितना विद्वान् था, उतना ही घमंडी और गप्पी भी था। एक दिन उसने बड़े-बड़े लोगों के सामने डींग हाँक दी—"मैं एक ऐसी मशीन बना सकता हूँ, जो नील नदी की बाढ़ रोक देगी।" बात खलीफा हकीम के कानों तक पहुँची। वह खलीफा मिस्र का भी शासक था, जहाँ नील नदी की बाढ़ से, आये-साल तबाही मचा करती थी। उसने अलहाजेन को कहला भेजा कि, आकर सरकारी खर्चे से मशीन बनाओ। मशीन तो भला क्या बनती! हाँ, यह निश्चित था कि, कैद या फाँसी हो जायेगी। तब अलहाजेन के पास एक यही उपाय रह गया बचने का कि, पागलपन का ढोंग रचे।

× × ×

जिन चीजों को हम नित्य देखते रहते हैं, उनके बारे में हमारा यह खयाल-सा बन जाता है कि, वे अनादि काल से ऐसी ही चली आ रही होंगी। डाक्टरों के छः इंची जेबी थर्मामीटर को ही लें, जिसे हम बुखार देखने के लिए काम में लाते हैं। वह हमें, ज्यादा नहीं तो भी, तीन-चार सदी पुराना तो लगता ही है। परंतु उसका आविष्कार हुए, अभी सौ साल से अधिक समय नहीं हुआ है।

उसके आविष्कर्ता थे सर टामस क्लिफोर्ड आलबट, जो केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में चिकित्सा-शास्त्र के प्राध्यापक और प्रसिद्ध डाक्टर थे। १८६७ में उन्होंने पहले-पहल यह जेबी थर्मामीटर तैयार किया, जो एक-डेढ़ मिनिट में तापमान बता सकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके पहले, डाक्टर जो थर्मामीटर काम में लाते थे, वह पूरा एक फुट लम्बा होता था और रोगी को उसे पूरे बीस मिनिट मुँह में रखना पड़ता था।

× × ×

भूगोल के पाठ में हम यही पढ़ते हैं कि, भूमध्य-रेखा एक काल्पनिक रेखा है, जिसे मनुष्य ने अपनी सुविधा के लिए नक्शे पर खींचा है। परंतु हाल की खोजों से पता चला है कि, प्रशांत-महासागर में जिस स्थान से हमारी काल्पनिक भूमध्य-रेखा गुजरती है, ठीक उसके नीचे मूँगे और सीप के जीवाश्मों (फासिल) की बनी, एक लम्बी दीवार फैली हुई है। इसके निर्माण के विषय में वैज्ञानिकों का यह अनुमान है। भूमध्य-रेखा पर दोपहर को जब सूरज ठीक सिर पर तपता है, तब बहुत गरमी पैदा होने से, ऊपर का पानी गरम होकर फैल जाता है और उसका स्थान लेने के लिए, चारों ओर से ठंडा पानी आता है। उन शीतल जलधाराओं के साथ खिंच कर आनेवाले मूँगे, सीप आदि समुद्री जीव मर कर वहीं डूब जाते हैं और कालांतर में जीवाश्म (फ़ासिल) बन जाते हैं। इन्हीं जीवाश्मों की परतों के जमने से, भूमध्य-रेखा पर यह दीवार बन गयी है।

× × ×

रैफ्लेसिया अर्नाल्डी संसार का सबसे विशाल फूल है। इसकी चौड़ाई एक गज के बराबर होती है और प्रत्येक पंखुड़ी एक फुट लम्बी। इस फूल का मधुकोष तो मानो एक घड़ा है; उसमें पूरा डेढ़ गैलन मकरंद भरा होता है। रैफ्लेसिया अर्नाल्डी का नाम, उसकी खोज करनेवाले वैज्ञानिक सर स्टैम्फोर्ड रैफ्लेस और जोसेफ अर्नाल्ड के नाम पर रखा गया है।

× × ×

उन्नीसवीं सदी में अंग्रेजी उपन्यास-कला को नयी दिशा देनेवाले जार्ज मेरेडिथ, अपने समय के अँग्रेजी साहित्य-संसार में साक्षात् भगवान् समझे जाते थे। उनका वचन वेद-वाक्य होता था। जिसे वे सोना कह देते, वह चाहे मिट्टी ही क्यों न हो, सोना मान लिया जाता था। साहित्य और मानवीय चिंतन की भावी प्रगति का, मेरेडिथ को इतना दिव्यदृष्टि-पूर्ण ज्ञान था कि, एक समालोचक ने उनके विषय में कहा है—"आज के लगभग सभी प्रौढ़तम और प्रगल्भतम

पूर्वजों से मिलने के लिए वस्त्र-सज्ज नागा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचार, मेरेडिथ के किसी-न-किसी उपन्यास में, कहीं-न-कहीं गुँथे हुए मिल जाते हैं।"

परंतु ऐसे दिव्यदृष्टि-सम्पन्न मेरेडिथ में, उदीयमान प्रतिभा को पहचानने की तनिक भी शक्ति नहीं थी। मेरेडिथ एक बहुत बड़े प्रकाशक के वैतनिक सलाहकार थे। इस पद पर रहते हुए, उन्होंने ऐसी अनेक पुस्तकों की पांडुलिपियाँ "प्रकाशन के अयोग्य" और "कूड़ेदान में डालने लायक" कह कर लौटवा दीं, जिन्हें छाप कर, बाद में दूसरे प्रकाशक मालामाल हो गये। इस प्रकार मेरेडिथ की सलाह से "खेद है, हम इसका उपयोग न कर सकेंगे" की चिट लगा कर वापस की गयी रचनाओं में, जार्ज बर्नार्ड शा के आरंभिक उपन्यास और नाटक भी थे।

× ×

आक्सफोर्ड-विश्वविद्यालय के गणित के प्राध्यापक रेवरेंड डाजसन को बच्चों को किस्से-कहानियाँ सुनाने का बड़ा शौक था। एक दिन शाम को, तीन नन्ही बच्चियों के साथ नौका-विहार करते हुए, प्रो० डाजसन ने उन्हें एक कहानी सुनायी। बच्चियों को कहानी इतनी पसंद आयी कि, उन्होंने उसे लिख देने का आग्रह किया। घर लौट कर, डाजसन ने रात को कहानी लिख डाली। फिर वे उसके बारे में सब-कुछ भूल गये। वर्षों बाद, जब किसी मित्र की दृष्टि उस पर पड़ी और उसने उसे प्रकाशित कराने का सुझाव दिया, तो डाजसन चौंक उठे। उन्होंने कहा—"मैं गणित का प्रोफेसर यह किताब छपवाऊँगा, तो लोग क्या कहेंगे? फिर मैं ईसाई-धर्म में दीक्षित रेवरेंड पादरी भी तो हूँ।" फिर भी मित्र के आग्रह पर, वह पुस्तक उन्होंने प्रकाशक के पास भेज दी; परंतु अपने नाम से नहीं, "लुई कैरोल" के नाम से। पुस्तक छपते ही इतनी लोकप्रिय हो गयी कि, संसार की सभी प्रमुख भाषाओं में उसका अनुवाद हो गया। वह पुस्तक है, बाल-साहित्य का अमर रत्न 'एलिस इन वंडरलैंड'। और डाजसन आज 'एलिस इन वंडरलैंड' के प्रणेता के ही रूप में अमर हैं।

मदाम मोंलिस : भविष्य-दर्शिका

जो केवल अपनी मृत्यु की ही सही भविष्यवाणी कर सकी।

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैज्ञानिकों ने हिसाब लगाया है कि, चीन की पीली नदी, जो ४,८४५ मील लम्बी है, प्रतिवर्ष १३८ करोड़ टन यानी ३६२ करोड़ घन-गज मिट्टी बहा कर, समुद्र में ले जाती है। इस मिट्टी से संपूर्ण भूमध्य-रेखा पर २२३ गज ऊँची और एक गज मोटी मिट्टी की भीत खड़ी की जा सकती है।

× × ×

संसार के महान् आश्चर्यों में परिगणित चीन की 'बड़ी दीवार' के निर्माता सम्राट् चिङ् शी-वान-ती (ई. पू. २४६-२१०) का पारिवारिक जीवन भी एक बड़ा आश्चर्य था। उसकी १३,१५० रानियाँ थीं और २,८००बेटे।उसके राज-प्रासाद में १०,००० कमरे थे और उसने एक कमरे में दो बार न सोने का नियम बना रखा था। इस नियम का उसने पूरे सत्ताईस बरस तक पालन किया।

शी-वान-ती अपने को "संसार का सर्व-प्रथम सम्राट्" कहा करता था। वह जितना युद्धप्रिय था, उतना ही क्रूर भी था। कहते हैं कि, चीन की 'बड़ी दीवार' के निर्माण में, उसकी सख्ती के कारण, एक लाख से अधिक मजदूरों को प्राणों से हाथ धोने पड़े थे। इनमें से कई सहस्र को तो जान-बूझ कर बलि चढ़ाया गया था, ताकि दीवार प्रलय-काल तक स्थिर रहे। मृत्यु-शय्या पर पड़े-पड़े भी, शी-वान-ती ने करुणा का पाठ नहीं पढ़ा। उसने आदेश दिया कि, उसके मरने पर उसकी तमाम रानियाँ और निजी नौकर-चाकर भी उसके साथ उसकी कब्र में दफना दिये जायें।

× × ×

तुर्की और ईरान बहुत दिनों से एक दूसरे को हड़पने के लिए प्रयत्नशील थे; परंतु किसी को सफलता नहीं मिली। उन्हीं दिनों ईरान के सुप्रसिद्ध सूफी संत फरीदुद्दीन अत्तार को तुर्कियों ने पकड़ कर बंदी बना लिया और उन्हें मौत की सजा सुना दी। इस समाचार से ईरान में खलबली मच गयी।

ईरान के कितने ही अत्यंत धनी-मानी व्यक्तियों ने संत के वजन के बराबर हीरे-जवाहरात देने की आतुरता दिखायी, कितने ही बदले में अपने प्राण तक देकर उन्हें छुड़वाने को तैयार हो गये; परंतु तुर्कों ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया। अंत में ईरान के बादशाह ने स्वयं तुर्किस्तान के सुलतान से कहा—"हमारे राज्य से आप वंश-परम्परा से वैर-विरोध निभाते चले आ रहे हैं। कितनी ही लड़ाइयाँ भी लड़ीं; परंतु हमारे राज्य पर आपका अधिकार नहीं हो सका। अब मैं आपके पास यह कहने आया हूँ कि, मेरा सारा राज्य ले लीजिये और संत को छोड़ दीजिये। कारण यह है कि, धन, सम्पत्ति और राज्य ये सब नश्वर हैं। केवल संत ही अविनाशी हैं। यदि ईरान ने संत को अपने हाथ से खो दिया, तो उसके माथे पर कलंक का ऐसा टीका लगेगा, जो जन्म-जन्मांतर तक नहीं धुल सकेगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये भारत की नींव ईंटें

खुशवंतसिंह-लिखित एक शब्दचित्र का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

घुमक्कड़पन तो मेरे स्वभाव में है। इधर कई वर्षों से मैं घूम-घूम कर, देश में बन रहे बाँध, बड़े-बड़े कारखाने, जन-कल्याण केंद्र, देहाती स्कूल, अस्पताल समझिये सभी चीजें देखता रहा हूँ। इनमें से कई को तो देख कर बड़ा प्रभावित भी हुआ हूँ। परंतु इनके देखने का तात्पर्य केवल उनकी बाह्य रूप-रेखा का परिचय पाना ही नहीं। मेरा यह भी उद्देश्य रहा है कि, भारत के इन नये तीर्थों के निर्माण में, अपने श्रम का योग देकर, राष्ट्र-कल्याण का उत्तुंग स्वर्ण-कलश लगाने वाले उन व्यक्तियों के भी दर्शन प्राप्त करूँ, जिन्होंने हजारों की संख्या में एकत्र होकर, ऊजड़-बीहड़ स्थानों को नंदन-कानन बना दिया है। साथ ही यह भी देखना था कि, इस महान् कार्य को उन्होंने रोजी कमाने का साधन-मात्र स्वीकार किया है, अथवा वे उस बाँध के द्वारा भविष्य में होने वाले महान् परिवर्तन के स्पंदन से भी परिचित हैं; उसकी सफलता-असफलता में अपने को सह-भागी मानते हैं या नहीं। मुझे यह भी ज्ञात करना था कि, आया उन्हें यह पता है कि, विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं और रहन-सहन से संकुल, इस विशाल राष्ट्र के अन्य लाखों लोग भी, उन्हीं की भाँति देश को समृद्ध और सम्पन्न बनाने के कार्य में प्राणपण से जुटे हुए हैं। संक्षेप में, मुझे यह देखना था कि, नींव के पत्थर रखने वाले ये लोग भी, क्या हमारी राष्ट्रीय योजनाओं से उत्साहित हुए हैं या नहीं।

परंतु जितनी सरलता से मैंने इन प्रश्नों का उत्तर पाने की अपेक्षा की थी, काम उतना सरल नजर नहीं आया; क्योंकि श्रमिक अपने विषय में बात करने में अनिच्छा प्रकट करते हैं। वे बड़े-से-बड़ा कार्य कर जाने पर भी, उसका श्रेय लेने में हिचकिचाते हैं। पर कहीं-कहीं तो उनकी सफलता ही उनके विषय में सारी बातें प्रकट कर देती है। इसी प्रकार मैं घूमते-घामते भाखरा-नांगल जा पहुँचा। यहाँ आकर मैंने जो कुछ देखा, सुना और समझा, वह वर्णनातीत है। मुझे ऐसा लगा कि, मैं किसी एक साधारण मजदूर से नहीं, बल्कि किसी महान् साहसिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीर सेनापति से मिल रहा हूँ। दो-एक उदाहरणों से, मेरे इस कथन का तात्पर्य स्पष्ट हो जायेगा।

यहाँ के एक श्रमिक हैं दुर्गादास। भाखरा के निर्माण का कार्य जब से प्रारंभ हुआ, तब से आप यहाँ काम में लगे हुए हैं। आपने एक साधारण कुली के रूप में इस विशाल योजना में इकाई बन कर, कार्य आरंभ किया। आप एक गरीब पंजाबी किसान-परिवार के हैं। परिवार में छः भाई हैं। इन सबके बीच, जीवनोपार्जन का एकमात्र साधन था, छोटा-सा भूमि का टुकड़ा। सभी भाई अशिक्षित एवं गरीब हैं। उनमें से तीन भाई भाखरा आये और कुली के रूप में कार्य करने लगे। लगातार १३ वर्ष काम करने के पश्चात् भी, वे अपनी योग्यता एवं क्षमता अधिक नहीं बढ़ा सके। केवल दुर्गादास ही सुपरवाइजर के पद तक पहुँचे सके। किस प्रकार वे उन्नति करते-करते इस पद तक पहुँच सके, यह भी एक छोटा-मोटा महाकाव्य है।

प्रारंभ के दिनों में, मिट्टी खोदने, पृथ्वी के भीतर दबी विशाल चट्टानों तथा सुरंग के रास्ते में आने वाले पर्वतों के तोड़ने का कार्य अधिक करना पड़ा था। दुर्गादास को इसी खतरनाक कार्य पर नियुक्त किया गया। सतलज नदी की सूखी तलहटी में बन रहे इस बाँध के कार्य में, दो विशाल सुरंगें खोदनी थीं – संसार की सबसे लम्बी सुरंगें। उन्हीं को खोदने का काम, सबसे पहले आरंभ किया गया। सतलज का पानी इन्हीं के द्वारा निकालना था। भाखरा के पार्श्व में खड़े हिमालय को देखते ही पता लग जायेगा कि, यह कार्य कितना खतरनाक है। वहाँ की चट्टानें कठोर न होकर, शिथिल, कोमल एवं परतदार हैं। थोड़े दबाव से ही वे टूट जाती हैं। पहाड़ी सड़कों पर हल्की-से-हल्की गाड़ियों के चलने से बड़ी-बड़ी चट्टानें और पर्वत-खंड गिर पड़ते हैं। ऐसी हालत में इंजीनियरों के सम्मुख वास्तविक समस्या बाँध के निर्माण की नहीं, बल्कि बाँध की ५५ मील की पूरी लम्बाई में पड़ने वाले इन पर्वतों और चट्टानों को सुदृढ़ करने की थी। इसलिए प्रति घंटे ४०० टन सीमेंट इन पर्वतों में डाली जाने लगी, ताकि ये सुदृढ़ और टिकाऊ बन जायें और जल के भीषण दबाव को सह सकें।

वहाँ पर कार्य करने वाले ८,००० मजदूरों को इस खतरे की पूरी जानकारी थी। दुर्गादास तथा उनके साथियों को भी यह बात भली-भाँति मालूम थी। वे दिन-प्रतिदिन चट्टानों को उड़ाते-तोड़ते सुरंग की गहराई में घुसते चले जा रहे थे, जहाँ पर घोर अंधकार का साम्राज्य छाया था। उन्हें इस बात का हमेशा डर बना रहता था कि, किसी भी समय ये दानवी चट्टानें उनके सिर पर टूट सकती हैं। बात भी कुछ ऐसी हुई कि, उनके भय ने एक दिन वास्तविकता का रूप धारण कर ही लिया।

एक दिन प्रातःकाल, जब दुर्गादास अपने साथियों के साथ एक चट्टानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीवार में ड्रिल मशीन से खुदाई कर रहे थे, तो अचानक ऊपर की छत टूट पड़ी और वह विशाल पर्वत खिसक कर नीचे आ गया। दुर्गादास को अपने साथियों सहित एक छोटे-से स्थान में मानो जीवित-समाधि मिल गयी। वहाँ न था प्रकाश, न पीने को पानी, न खाने को भोजन। और तो और, साँस लेने को स्वच्छ हवा तक भी नहीं थी। सबसे बड़ी आफत यह थी कि, समय रहते कोई सहायता भी मिलनी असंभव थी; क्योंकि बाहर निकलने का रास्ता बंद हो गया था।

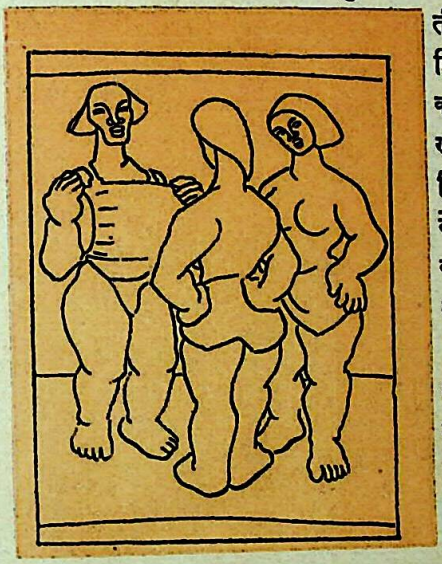

मनुष्य की मानसिक शक्तियाँ शत-प्रतिशत कार्यरत तब होती हैं, जब वह सब काम छोड़, गप्पें लगा रहा होता है। —चिंग चाओ

उस संकट-पूर्ण घड़ी की कल्पना-मात्र से हृदय काँप उठता है। फिर जिन पर यह दुर्घटना घटी उनकी क्या मनोदशा हुई होगी! कितने तो बच्चों की भाँति फूट-फूट कर रोने लगे। कितने ही इस आशंका से अधमरे हो गये कि, स्वच्छ हवा न मिलने से सब-के-सब दम घुट कर यहीं मर जायेंगे।

परंतु मौत की उस भयानक छाया में भी दुर्गादास की बुद्धि ने अद्‌भुत चमत्कार दिखाया। उन्होंने अपने साथियों को पुकार-पुकार कर एकत्र किया और बाहर निकलने के लिए उद्‌बोधित किया। दुर्गादास को इस बात की पूर्ण आशा थी कि, अपनी कोशिश से यदि बाहर न भी निकल पाये, तो भी हमें बचाने के लिए आते हुए साथियों से, आधे रास्ते मुलाकात हो ही जायेगी। इस प्रकार दुर्गादास अपने साथियों सहित, तीन-दिन तीन-रात, निरंतर मृत्यु से संघर्ष करते रहे — बिना खाये, बिना पिये, बिना ताजी हवा के। वे खोदते रहे पर्वत को, जो उनका मार्ग अवरुद्ध किये हुए था।

उधर बाहर भी साथियों को दुर्घटना का पता लग गया था। वे भी जी-जान से लगातार ७२ घंटे तक उन चट्टानों को तोड़ने के बाद, दुर्गादास और उनके साथियों को मृत्यु के जबड़े से छीनने में सफल हो सके।

किसी को यह आशा नहीं थी कि, ये लोग इस जीवित-समाधि से बाहर निकाले जा सकते हैं। यह तो दुर्गादास के अपार साहस का परिणाम था, जो सब-के-सब जीवित और सकुशल फिर इस दुनिया में आ सके। इस वीरता के लिए, दुर्गादास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को पुरस्कृत भी किया गया।

इस दुर्घटना के कटु अनुभव ने दुर्गादास को जरा भी विचलित नहीं किया। उसके बाद भी वे उसी कार्य को कर रहे हैं और तब तक करते रहेंगे, जब तक बाँध बन कर पूरा न हो जायेगा। भाखरा तो दुर्गादास के जीवन का एक अंग बन गया है। योजना का सब काम समाप्त हो जाने पर, जब वे यहाँ के कार्य से विश्राम लेंगे, तब भी उनका सम्बंध भाखरा से बना रहेगा; क्योंकि दुर्गादास को हिसार जिले में कुछ जमीन दी गयी है, जिसकी सिंचाई भाखरा के ही जल से होगी।

दुर्गादास कहा करते हैं—"यह तो मेरे शेष जीवन के लिए पेंशन के रूप में होगा; क्योंकि मैंने अपने जीवन का सर्वोत्तम समय भाखरा को दिया है। अब भाखरा की बारी होगी कि, मेरी बुढ़ौती में, वह मेरे खेतों को सींच कर, उसका मुआवजा मुझे चुकाये।"

× × ×

इसी तरह की कहानी अजीत सिंह की भी है, जो एक सी-४ मैरियन शावेल मशीन पर फोरमैन का काम करते हैं। अगर पर्वत ने दुर्गादास को जीवित-समाधि देने की सोची, तो उसने अजीत सिंह को उनकी मंशीन सहित, चूर-चूर कर देने की कोशिश भी की।

भाखरा की वह संकीर्ण घाटी, जहाँ पर ७४० फुट ऊँचा बाँध खड़ा किया गया है, बड़ी ही कातिल है और खून की प्यासी है। न जाने कितने श्रमिकों ने इस भयंकर ऊँचाई से गिर-गिर जानें गँवायी है। जब मैंने उस पर चढ़ कर, नीचे झाँकने का प्रयत्न किया, तो मुझे ऐसा लगा कि, अब गिरा तब गिरा। फिर भी, उस संकरे मार्ग पर काम करने वाले ऐसे ड्राइवर भी थे, जो बड़ी निर्भीकता से अपना काम किये जा रहे थे, जैसे वे कहीं मैदान में काम रहे हों।

एक दिन प्रातःकाल, जब अजीत सिंह ने चाय पीने के लिए थोड़ी देर के लिए काम रोका, पड़ोस की पहाड़ी में जोर का एक धमाका हुआ। अजीत सिंह की वह एक लाख रुपये कीमत की मेरियन शावेल जिस चट्टान पर खड़ी थी, उसका आधार शिथिल पड़ गया, उसमें बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गयीं। ऐसा लगाता था कि, किसी भी क्षण उस पहाड़ी का हिस्सा, अजीत सिंह तथा उनकी मशीन को साथ लेकर, नीचे चला आयेगा और फिर मशीन का नामो-निशान तक न बाकी रह जायेगा। आस-पास काम करने वाले आदमी प्राण लेकर भाग खड़े हुए; परंतु अजीत सिंह निर्भय, निःशंक वहीं खड़े रहे। वह मशीन तो उनका शरीर और प्राण बन चुकी थी। अपने स्त्री-बच्चों को मरते देखना शायद उनके लिए सह्य था; परंतु इस मशीन को नष्ट होते, वे कभी नहीं देख सकते थे। अपने प्राणों की तनिक भी परवाह किये बिना, वे उस झूलती हुई पहाड़ी तक गये, मेरियन शावेल को स्टार्ट किया और मृत्यु के मुख में से उस मशीन को निरापद और सुरक्षित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थान पर ले आये।

कुछ ही क्षणों के पश्चात्, पर्वत का वह सारा हिस्सा, जहाँ अजीत सिंह की की मेरियन शावेल खड़ी थी, भयानक चीत्कार करता नीचे जा गिरा। उसकी भयंकर ध्वनि से वहाँ का सारा पर्वतीय-अंचल न जाने कितनी देर तक गूँजता रहा। यह भीषण कांड अजीत सिंह के देखते-देखते हो गया। मानो पहाड़ मशीन के वहाँ से हटाये जाने की ही प्रतीक्षा कर रहा था। वे तो पागल-से हो गये और अपनी मशीन की स्टीयरिंग पकड़ कर लिपट गये और रो-रो कहने लगे –"तुझे मौत के मुँह में जाते देख कर, मैं पागल हो गया था। अगर तू आज समाप्त हो गयी होती, तो तेरे साथ मैं भी मर जाता।"

× × ×

भाखरा के निर्माण-कार्य में लगे ८,००० व्यक्तियों में से, मैंने केवल दो व्यक्तियों की ही वीरता की कहानी सुनायी है। परंतु वहाँ तो सभी के साथ किसी-न-किसी प्रकार ऐसी ही कहानियाँ जुड़ी हुई हैं। मैं ऐसे कितने ही व्यक्तियों को जानता हूँ, जो कारखानों तथा प्रयोगशालाओं में अपनी टेबल पर बैठे-बैठे ही, बड़ी लगन और समर्पण की भावना से कार्य कर रहे हैं। मैं ऐसे एक और फोरमैन को जानता हूँ–उनका नाम है अच्चर सिंह– जिन्होंने वहाँ हज़ारों मजदूरों को शिक्षित किया है।

जैसा कि, यहाँ के प्रमुख इंजीनियर श्री स्लोकम ने स्वयं स्वीकार किया है, यह बाँध संसार में सबसे बड़ा है और उनके जीवन का यह महान् कार्य है। आपको यह जान आश्चर्य होगा कि, पाकिस्तान में बन रहे वारसिक बाँध में ८०० कुशल विदेशी इंजीनियर कार्य कर रहे हैं, जबकि वह बाँध हमारे भाखरा का चौथाई भाग मात्र है। कार्य को इतना सुगम तथा व्यक्तियों को योग्य बनाने का कार्य अच्चर सिंह का रहा है, जिन्होंने पहले स्वयं काम सीखा और फिर हजारों व्यक्तियों को तैयार किया। आज वे भाखरा के निर्माण में एक सुदृढ़ स्तंभ हैं। अगर वे न होते, तो संसार के इस विशालतम बाँध पर, हमें भी सैकड़ों विदेशी कुशल इंजीनियर रखने पड़ते।

भाखरा न केवल संसार का सबसे बड़ा बाँध है; बल्कि बाँध-निर्माण-कला के प्रशिक्षण का एक विशाल विश्वविद्यालय भी है। जब यहाँ का कार्य सन् १९६२ में समाप्त होगा, तब यहाँ पर काम सीखे हुए कुशल कार्यकर्त्ता, भविष्य में बनने वाले न जाने कितने बाँधों के निर्माण में सहयोग दे सकेंगे।

★

संगीत-प्रेमी मेजबान ने काफी देर तक अपना पियानो-वादन सुनाने के बाद, डा० जान्सन से पूछा कि, क्या संगीत उन्हें पसंद आया। "नही श्रीमन्", डा० जान्सन ने उत्तर दिया—"परंतु यह दूसरे सब प्रकार के शोर-गुल से कम अप्रिय था।"

–'नाव के तीर' से

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक अमरीकी विश्वविद्यालय के दर्शन-शास्त्र के प्रख्यात प्रोफेसर को एक ग्रंथ की आवश्यकता थी। ग्रंथ बड़ा प्राचीन और दुर्लभ था। एक पुस्तक-विक्रेता ने बताया कि, सारे अमेरिका में वह पुस्तक केवल अमरीकी कांग्रेस के ग्रंथागार में हो सकती है। यह पता लगाने के लिए कि, ग्रंथागार में वह पुस्तक है या नहीं, प्रोफेसर साहब ने ग्रंथागार का सूचीपत्र मँगवाने का निश्चय किया और एक पत्र लिखा। जब पत्र खोला गया, तो उसमें लिखा था—"प्रिय महोदय, कृपया लौटती डाक से कांग्रेस-ग्रंथागार भेज दें। उसका मूल्य २५ सेंट, साथ में डाक-टिकटों के रूप में, भेज रहा हूँ। आपका, (हस्ताक्षर).....दर्शनाध्यापक"।

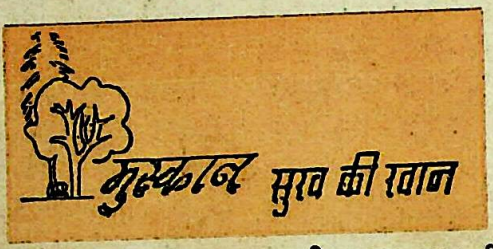

× × ×

ट्रैजुएट माँ ने बाल-मनोविज्ञान की पुस्तक में पढ़ा कि, यदि बच्चों से कोई काम कराना हो, तो उन्हें आदेश नहीं देना चाहिए कि, यह करो—वह करो; बल्कि कहना चाहिए—"आओ हम यह काम करें; इसमें बड़ा आनंद आता है।" यह महारहस्य क्या पता चला, माँ को मानो कारूँ के खजाने की कुंजी ही मिल गयी। उसी शाम को जब उसका चार-वर्षीय आलोक, ड्राइंग-रूम में सारे खिलौने बेतरतीब बिखेर कर, आँगन में बैठ कर तस्वीरों की पुस्तक देखने लगा, तो माँ ने पुकारा—"आलोक आओ तो, खिलौने उठा कर रखें; बड़ा मज़ा आता है इसमें।" वहीं बैठे-बैठे आलोक ने बुजुर्गाना ढंग से उत्तर दिया—"मम्मी, साला मदा तुमी लो; मुदे तिताब पड़ने दो।"

× × ×

एक बूढ़ा और बड़ा मालदार जमींदार किसी सुंदर तरुणी पर आसक्त हो गया। उसने विवाह का प्रस्ताव रखा; परंतु तरुणी ने अस्वीकार कर दिया। जमींदार को बड़ा सदमा पहुँचा और इस बात का जिक्र करते हुए उसने प्रसिद्ध फ्रेंच साहित्यकार वाल्टेयर से कहा—"मैंने गलती की, जो उसे अपनी सच्ची उम्र बता दी; मुझे अपनी उम्र पंद्रह साल घटा कर, कहना चाहिए था कि, मैं ४५ वर्ष का हूँ।" वाल्टेयर बोले—"नहीं श्रीमन्, आपको पंद्रह साल बढ़ा कर, अपनी उम्र ७५ वर्ष बतानी चाहिए थी। तब वह तरुणी आपका प्रस्ताव हर्गिज अस्वीकार न करती।"

× × ×

मस्जिद के मुल्ला और मंदिर के शास्त्रीजी में बड़ी बनती थी। दोनों बड़े हाजिर-जवाब थे, सो बातचीत में खूब नोंक-झोंक होती थी। एक दिन मुल्ला साहब बोले—"सास्तरीजी, बड़ी बीं रोगन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये हैं एप्स्टीन अपनी अपूर्ण शिल्प-मूर्ति के साथ—प्रतिमा कलाकार की कल्पना का चंद्रमा है।

जोश कमाल का पकाती है। कब आइएगा खाने के लिए?" शास्त्रीजी बोले—"आपके बेटे करीम के जनेऊ पर।"

× × ×

एक महाशय की किसी ने जेब काट ली थी। उसमें उनके पचास रुपये और तीन आने थे। वे बड़ी चिंता में थे कि, अब कैसे खर्च चलाया जाये। तभी अचानक उन्हें उनकी खोया हुआ बटुआ मिल गया। खोला तो उसमें सिर्फ बीस रुपये एक आना थे। साथ एक चिट्ठी भी थी। उसमें लिखा था—"किसी ने एक बार मेरी भी जेब काट ली थी। उसमें मेरे तीस रुपये और दो आने थे।"

× × ×

लंदन की एक सम्भ्रांत महिला सौंदर्य-प्रसाधनों पर बड़ा खर्च करती थी। एक दिन उसने जार्ज बर्नार्ड शा से पूछा—"आपको मेरी उम्र कितनी लगती है?"

बर्नार्ड शा ने उसे ऊपर से नीचे तक घूरते हुए उत्तर दिया—"तुम्हारे दाँतों पर ध्यान देते हुए, तो मुझे तुम्हारी उम्र १८ वर्ष कहनी चाहिए; भूरे व घुँघराले बालों से १९ वर्ष और तुम्हारे रुख को देख कर १४ वर्ष।"

महिला ने चापलूसी करते हुए फिर कहा—"आपकी इस राय के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। पर तो भी, आप मुझे कितनी बड़ी समझते हैं?"

शा ने कहा—"अच्छी बात है; १८, १९ और १४ को जोड़ लो; तुम्हें मेरा उत्तर मिल जायेगा।"

ये हैं जिप्सी—जमीन के चप्पे-चप्पे से जीवन का अमृत निचोड़नेवाले।

× × ×

रेल के डिब्बे में बैठे एक विद्यार्थी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने, किसी मोट व्यक्ति को आते देख, जोर से कहा– "चलो-चलो यहाँ से! तुम्हें मालूम नहीं कि, नये कानून के अनुसार रेल के डिब्बे में एक व्यक्ति के लिए केवल अठारह इंच जगह दी गयी है।"

"ठीक है भाई," मोटे व्यक्ति ने तनिक रुक कर कहा–"पर मैं तो कानून के अनुसार नहीं बनाया गया था।"

× × ×

एक लड़का घरों में किराने का सामान दिया करता था। उसकी नियमितता और होश्यारी से खुश होकर, एक दिन मकान-मालकिन ने उसका नाम पूछा।

"विलियम शेक्सपीयर", लड़के ने अपना नाम बता दिया।

"अरे, यह तो बड़ा प्रसिद्ध नाम है!", मालकिन ने हँस कर कहा।

"क्यों न होगा?", लड़के ने भी उसी लहजे में कहा–"मैं इस पड़ोस में पिछले तीन साल से सामान जो दे रहा हूँ।"

× × ×

एक बार कुछ समाचार-पत्रों के प्रतिनिधि आइंस्टीन के घर पहुँचे। श्रीमती आइंस्टीन ने उन लोगों का स्वागत किया और नम्रता-पूर्वक अपने पति की व्यस्तता का जिक्र किया। पत्रों के प्रतिनिधि सकते में आ गये कि, यहाँ आना तो निष्फल हुआ। तभी एक को सूझा–श्री आइंस्टीन के सम्बंध में जानकारी देने के लिए श्रीमती आइंस्टीन से बढ़ कर और कौन होगा। पत्रकारों ने परस्पर निश्चय कर, श्रीमती आइंस्टीन से ही प्रश्न पूछने आरंभ कर दिये।

एक पत्रकार ने पूछा–"आपके पति संसार के महान् व्यक्तियों में से हैं। उन्होंने 'सापेक्षवाद–सिद्धांत' का अन्वेषण किया है। आप इस सिद्धांत के विषय में क्या-कुछ जानती हैं?"

उत्तर मिला–"मैं तो इस सिद्धांत के विषय कुछ भी नहीं जानती; क्योंकि वह मेरा विषय नहीं है। हाँ, इस सिद्धांत के विषय में उनका कहना है कि, इसे समझने वाले संसार में कुल बारह व्यक्ति हैं। लोग उन्हें जब बहुत तंग करते हैं कि; स्पष्टतः कुछ स्वयं बतायें, तो वे एक दृष्टांत द्वारा अपने सिद्धांत की इस प्रकार व्याख्या कर दिया करते हैं–'जब आप किसी सुंदर युवती के साथ पूरे घंटे-भर बातें करते हैं, तो भी आपको ऐसा लगता है कि, अभी तो जैसे एक मिनिट ही हुआ है; और वही जब आप चूल्हे के पास एक मिनिट बैठते हैं, तो मालूम होता है कि, एक घंटा गुजर गया।' अब तो आप समझ गये होंगे! लेकिन अरे, आप लोग यह सब लिख क्यों रहे हैं? मैं तो सुनी-सुनायी बातें कह रही हूँ।"

बचपन में लार्ड टेनिसन ने अपनी दादी की मृत्यु पर, उनकी समाधि पर खुदवाने के लिए एक कविता लिखी। कविता उनके दादा को पसंद आ गयी और वे पोते को दस शिलिंग देते हुए बोले–"कविता से होने वाली यह तुम्हारी पहली आय है और मैं बता देता हूँ, अंतिम भी।" —'व्यंग्य-तरंग' से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथी

आकाश और धरती सोये हुए हैं !
ओ साथी हम हैं, यहाँ अकेले
तू और मैं भी !
मेरी आत्मा के कानों में कह दे
अपनी अंतरतम आत्मा का भीतरी भेद
ओ उपद्रवी आत्मा, जो ठुकरा देती है जीवन की सीमाएँ,
और देखता है, उनको ईश्वरीय असंतोष से
तब फूट निकलता है तेरी इन गीत-लहरियों से
घोर क्रान्तिकारी उद्घोष,
हिला देता है सदा के रूढ़िगत देश को।
वास्तव में तेरा संदेश,
तारों के विशाल साम्राज्य तक को
भय से कँपा देता है।
मेरी दुर्बल आत्मा को खंडित होने दे,
यदि होना ही है इसे इस तरह खंडित;
इसे बना ले अपनी वीणा
इस पर गाता चल अपने गान !

—जी० शंकर कुरुप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मातृत्व

बात १९४२ के आरंभ के दिनों की है, जब भारत के राजनीतिक क्षितिज पर काले बादल तेजी से उमड़ते आ रहे थे। पिताजी हमें सेवाग्राम में छोड़ कर गोसेवा-संघ के कार्य से छः महीने के लिए बंगलोर चले गये। उनका जाना था कि, माँ और हम दोनों बहनें बीमार पड़ गयीं; बीमारी भी काफी लम्बी चली। ऐसे समय पिताजी की अनुपस्थिति हमें खटके, यह स्वाभाविक था; परंतु बापू ने हमारे औषधोपचार, भोजन-पथ्य आदि सबका निरीक्षण स्वयं अपने जिम्मे ले लिया था। नित्य सुबह-शाम घूमने के समय वे हमें देखने आते और हमारा हाल-चाल पूछ कर, अपने विनोदों से हमें हँसा कर, हमारी आधी पीड़ा तो हर ही लेते थे।

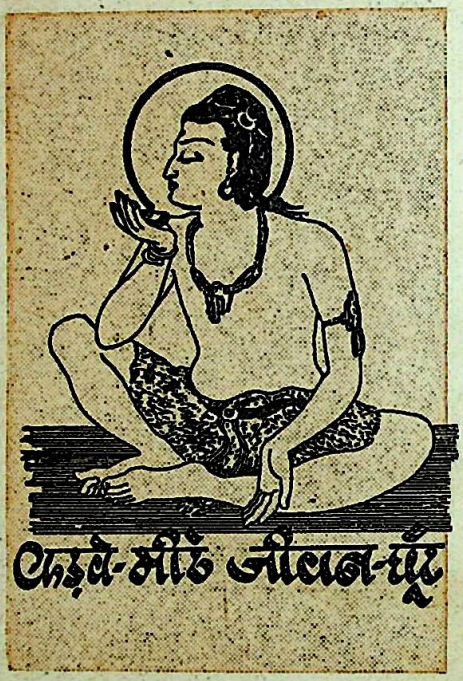

इसी बीच किसी कार्य से बापू को बाहर जाना पड़ा। कहाँ गये थे, यह तो पता नहीं; परंतु सात-आठ दिन बाहर रहे। और ४८ घंटे की रेल-यात्रा पूरी कर जब वे सेवाग्राम पहुँचे, तब दोपहर के ११ और १२ के बीच का समय था। प्रार्थना-भूमि के पास वे मोटर से उतरे। भोजन का समय होने वाला था। हमें आशा थी कि, जब भोजन से पहले वे स्नानगृह जायेंगे, तब अपने कमरे की खिड़की से उनके दर्शन कर सकेंगे। सो हम बहनें और माँ सींखचों का सहारा लेकर खिड़की के पास खड़ी हो गयीं। हमारी दृष्टि स्नान-गृह के रास्ते पर जम गयी। परंतु काफी देर तक प्रतीक्षा करने पर भी जब बापू न दिखायी दिये, तो हम निराश होकर, बिस्तर पर लौट आयीं।

तभी बड़े भैया दौड़ते हुए भीतर आये और बोले– "बापू आ रहे हैं।" और हम लोग उनकी बात समझें इतने में, एक हाथ आश्रम की एक बालिका के कंधे पर रखे और दूसरे हाथ से लाठी टेकते हुए, बापू हमारे कमरे में उपस्थित थे। हर्ष से गद्‌गद होकर हमने चरण-रज ली। उन्होंने बड़े वात्सल्य से पीठ थपथपायी और हमारी नब्ज देखने लगे। स्नान-भोजन की भी चिंता छोड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर हमारी कुशल पूछने आने की बात सोच कर, माँ ने कृतज्ञता-मिश्रित संकोच से कहा—"बापू, साँझ को घूमने जाते समय आ जाते, तो वही काफी था।"

बापू का वह मौन-दिवस था। उन्होंने अपने हृदय पर हाथ रख कर टटोलने का, संकेत किया। मानो कह रहे थे —"हृदय से पूछ कर देखो।" उस संकेत का मर्म उस समय शायद मैं पूर्णतः हृदयंगम न कर सकी। परंतु अब समझी हूँ, अकेले भारत में ही नहीं, सारे संसार में लाखों व्यक्तियों को बापू से जो स्नेह-समाधान मिलता था, उसका रहस्य बापू के इसी ममतामय मातृत्व में था।

—सीता अग्रवाल, दिल्ली

★

बाल-मन

मेरे पुत्र शशिधर की उम्र पाँच साल की थी और वह बाल-मंदिर में पढ़ता था। एक बार उसकी आँख में ऐसा रोग हो गया कि, अस्पताल ले जाकर आपरेशन कराना पड़ा। अस्पताल से लौट कर, डाक्टर के आदेशानुसार, उसे साल भर तक काले रंग का चश्मा पहनना बहुत जरूरी था। काला चश्मा पहन, वह अपने बाल-मंदिर में गया, तो उसके सह-पाठी उसे 'काले चश्मे वाला' कह कर चिढ़ाने लगे। वह खिन्न होकर आया और मुझसे कहने लगा कि, कल से वह बाल-मंदिर नहीं जायेगा; वहाँ लड़के उसे चिढ़ाते हैं। अगले दिन मैं बाल-मंदिर गयी; मुख्याध्यापिका से बच्चों के समक्ष भाषण देने की अनुमति ली। क्लास-रूम में सभी बच्चे इकट्ठे थे। मैंने भाषण में कहा—"प्यारे बच्चो, तुम्हारे साथी शशिधर की आँखों का बड़ा कठिन आपरेशन था; पर उसने बड़े धैर्य के साथ उसे सह लिया। न वह तनिक भी घबराया और न रोया। उसके साथियों को इससे सबक लेना चाहिए। उन्हें साहसी और धैर्यवान् होना चाहिए। दुःख से तनिक भी नहीं घबराना चाहिए।"

भाषण देकर मैं घर लौटी। दूसरे दिन, जब मैं अपने भाषण का प्रभाव जानने के लिए वहाँ फिर गयी, तो देखा कि, शशिधर के आठ-दस मित्र काला चश्मा पहने, कतार में सैनिक-परेड की नकल कर रहे हैं और उन्होंने नेता बनाया है शशिधर को!

—ललिता वर्मा, छपरा

★

दंड

हमारे स्कूल के जल्से के दिन, रात को लेक्चर सुनने आस-पास के गाँवों से सैकड़ों लोग आये थे; पास के कस्बे से कुछ भाई साइकलों पर भी आये थे। कार्यक्रम समाप्त होने वाला था कि "चोर.... चोर" की आवाज आयी। देखा तो एक हट्टा-कट्टा जवान सड़क छोड़, खेतों की ओर भाग रहा था। सड़क पर साइकल पड़ी थी। लोग दौड़ पड़े, पीछा करके चोर को पकड़ लाये। पता चला कि, वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसी श्रोता की ताला-बंद रैले साइकल उठा कर भाग रहा था। फिर क्या था, हम सब किशोर पिल पड़े चोर पर। तभी हमारे परम-सज्जन संस्कृताध्यापक शास्त्री-जी आ गये। उन्होंने चोर को छुड़वाया और पूछा –"क्यों रे दुष्ट, तूने चोरी क्यों की?" चोर काफी पिट चुका था; बोला– "मति मारी गयी थी महाराज!" शास्त्रीजी महाराज को दया आयी, उन्होंने उससे कहा कि "राम नाम जपा कर, मति ठीक हो जायेगी।" शास्त्रीजी तो चाहते थे कि, इस उपदेश को ही पर्याप्त दंड समझ कर चोर को छोड़ दें; पर साइकल-मालिक को बिना पुलिस बुलाये चैन न पड़ी। पुलिस चोर को ले गयी। सुना, पुराना चोर था; चार-छः महीने की सजा हो गयी।

एक दिन दोपहर को, शास्त्रीजी से हम लोग व्याकरण पढ़ रहे थे कि, कोई कक्षा में आया और "पालागन पंडतजी" कहते हुए, शास्त्रीजी के चरणों में झुक गया। देखा तो वही चोर था। पता चला कि, उसी हफ्ते जेल से छूट कर आया था। उसके घर कोई पूजा थी। पर कोई भी पंडित, चोर के घर जाने तैयार न था; इसलिए शास्त्रीजी के पास आया था। शास्त्रीजी साथ चलने को तैयार हो गये। बदनाम चोर के घर जाने और पूजा कराने में उन्हें तनिक भी संकोच न हुआ।

तब से वह नौजवान शास्त्रीजी का शिष्य बन गया है। बहुत-कुछ सुधर भी गया है। पुरानी आदत के कारण अब भी छोटी-मोटी चोरी या मार-पीट कर बैठता है। पर सारी बात शास्त्रीजी को बता जाता है और उनकी आध्यात्मिक दंड-व्यवस्था का पालन करता है।

–देवदत्त, यमुनानगर

मैसूर की दिवंगत राजमाता जब पंचलिंग-क्षेत्र का दर्शन करने पधारीं, मैं वहाँ का तहसीलदार था। राजमाता ने एक सायंकाल, उस प्रदेश की सम्भ्रांत महिलाओं को बुलवाया। आस-पास के बड़े कस्बों के दस-बीस प्रतिष्ठित कुलों की गृहिणियों को लिये मेरी पत्नी, राजमाता के पड़ाव पर पहुँची। राजमाता के साथ उनकी पौत्रियाँ और राजकुल की अन्य कुमारियाँ भी थीं। अच्छा खासा महिला-दरबार लगा। दरबार में आयी गृहिणियों में एक जरा स्थूलकाय थी, गोद में उसके बच्चा था–जरा साँवला और गोल-मटोल। बीच दरबार में जब वह बच्चा रोने लगा, तो माँ वहीं अँचल की ओट करके दूध पिलाने लगी। राज-कुमारियाँ खिलखिला कर हँस पड़ीं यह ग्राम्यता देख कर। पर राजमाता बोलीं–"बहन तुम धन्य हो, जो इस कन्हैया-से लाल को दूध पिला रही हो। असीस दो मेरी इन नादान बच्चियों को कि, इन्हें भी ऐसा सौभाग्य मिले।"

–नवरत्न रामराव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वात्सल्य का आलयन

महादेवशास्त्री जोशी की एक मराठी-कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

सुमित्रा घर से क्या गयी, घर का बचा हुआ आनंद भी जैसे अपने साथ बटोर कर लेती गयी; उसकी उपस्थिति से सजीव घर, अब निर्जीव और निःसत्त्व हो गया है। आँखें उसे खोजती फिरती हैं, कान उसकी आहट को सुनने के लिए बेताब हो उठते हैं; पर उनका क्या उपयोग ? अब उसमें और मुझमें बारह कोसों का अंतर हो गया है। इसके आगे कल्पना की शरण में जा कर, उसकी वहाँ की हलचलों को आँखों के समक्ष लाना होगा।

जिनके लिए जीना चाहिए, जिनके हर्षोल्लास में हम भी गद्‌गद हो जाते थे, वैसे दो व्यक्ति हमारी आँखों के समक्ष ही इस घर से अदृश्य हो गये। एक को हमारी माया के कोष में से काल ने छीन लिया और दूसरे को मैंने स्वयं अपने ही हाथों से बाहर ढकेल दिया। अब इस घर में हम दोनों बूढ़े व्यक्ति, अपनी व्यथा और दाहक स्मृतियों को दिल से चिपका कर बैठे हैं।

हम फूट-फूट कर रोते हैं और आँसू पी कर जीते हैं—ऐसा मत समझ बैठना। हम अब उससे भी आगे की अवस्था पर पहुँच गये हैं। अब तो हमें आगंतुकों के आगे वेदना को उडेलना भी अच्छा नहीं लगता और किसी के पास से आश्वासन की कोई अपेक्षा भी नहीं है। हृदय की तप्त भूमि में, अश्रुओं की कमी से भाप हो गयी है।

हम दोनों ही इस घर में घूमते-फिरते हैं। हमारा रिश्ता है पति-पत्नी का; पर फिलहाल हम कितने निर्बल और अलिप्त हो गये हैं ! संभाषण भी कुछ अधिक नहीं होता। वह अपने ही विषाद में व्यस्त और मैं अपने व्यवसाय में डूबा हुआ। परोसने आती है, तब भी वह मूक ही खड़ी रहती है। मैं भी शब्दों की अपेक्षा, हाथों के इशारों से ही सब निपटा लेता हूँ। कभी लहर आ गयी, तो दो-चार प्रश्नों का आदान-प्रदान हो जाता है; आगे फिर वही मौन। यह हमने पहले से निश्चित किया हो, ऐसा नहीं है। स्वयमेव वैसा चलता आ रहा है। और मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि, अंत तक ऐसे ही चलता रहेगा।

विधाता का भी कैसा विचित्र बर्ताव है देखिए। जब अनुकूल हुआ, तो सजली मेघ के सदृश शत-सहस्र धाराओं से बरसने लगा। महायुद्ध छिड़ गया और इतने साल तक ज्यों-त्यों चलते हुए मेरे धंधे में, सहसा बरकत आ गयी। थोड़े ही समय में चार पैसे भी जमा हो गये। उलकबाड़ी में जमीन का एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज बिक्री की चोटी पर

लोमा सिर्फ बालों को श्याम बनाने में ही परिपूर्ण नहीं, बल्कि-वह उन्हें सजे-संभारे रखनेवाला सुन्दर तेल भी है। यही कारण है कि भारत के हर क्षेत्र में तथा विदेशों में अधिकतर लोग- क्या जवान, क्या वृद्ध, पुरुष व महिलायें— एक जैसी लगन के साथ, बालों को श्याम करनेवाले अन्य किसी भी चीज की अपेक्षा लोमा को ही ज्यादा पसंद करते हैं।

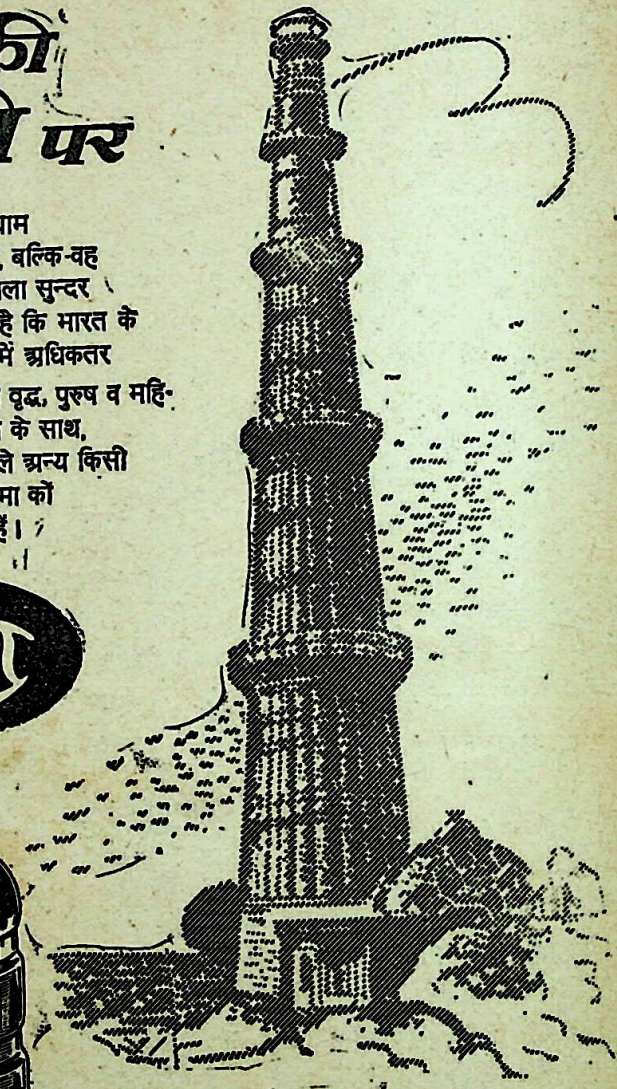

लोमा

सोल एजेंट्सः
एम. एम. खम्भातवाला, अहमदाबाद—१
एजेंट्सः
सी. नरोतम एण्ड कम्पनी, बम्बई—२

HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टुकड़ा खरीद कर, मैंने यह छोटा-सा बँगला बनवाया। उसने अपने लिए दो-तीन हजार के गहने भी बनवा लिये। मैंने उससे कहा – "इतने शौक से गहने तो बनवाये; किंतु अब उन्हें पहनती क्यों नहीं ?"

"ये अब तो कुमार की बहू आयेगी न, उसके लिए हैं। मैंने अपने लिए थोड़े ही बनवाये हैं! सोचा, चलो अभी मौका है, इसलिए बनवा लिये।"

कुमार ने इसी साल बी०एस-सी० पास किया था और हम उसकी शादी के स्वप्न देखा करते थे। वह कहती– "कुमार कितना खूबसूरत है! उसके लिए बहू भी चाँद-जैसी चुननी होगी।" तब मैं कहता–"वह यदि चाँद-जैसी न भी हो, तो चलेगी; पर हृदय की सुशीला एवं प्रेमल तो होनी ही चाहिए।"

निमग्ना

[चित्र : रामचंद्र शुक्ल-कृत एक रेखा-चित्र]

पर कुमार तो कुछ और ही स्वप्न देख रहा था। उसके साथ के कालेज के मित्र कमिशन प्राप्त कर, भारतीय सेना में भर्ती हो गये थे। कुमार भी उसी मार्ग पर अग्रसर हो रहा था। उसने जब हमारी सम्मति चाही, तब उसकी माँ तो रोने लगी। मुझे भी कुमार का यह खयाल पसंद नहीं आया। वही तो हम अन्धों की लकड़ी था। वह हमसे दूर जायेगा और वह भी संग्राम के मैदान में! यह कैसे सहन कर सकता था, हमारा वात्सल्यपूर्ण हृदय!

पर वह बड़ा ही महत्त्वाकांक्षी था और अपनी धुन का पक्का भी। उसे रोक सकना टेढ़ी खीर थी। अंत में हमने जी कड़ा करके उससे कहा–"अच्छा बाबा!" पर-फुटा परिंदा कभी घोंसले में नहीं रहता। वह गगन में उड़ कर दसों दिशाओं के छोर देखना चाहता है– ऐसा सोच कर हमने अपने निर्बल हृदय को कुछ आश्वस्त किया।

कुमार को कमिशन प्राप्त हो गया और शिक्षा के लिए पहले वह बंगलोर और बाद में क्वेटा में कुछ महीने रहा। एक साल के बाद, महीने की छुट्टी लेकर जब वह घर आया, तब हमने उसे चतुर्भुज बनाने का निश्चय किया। हमारी इच्छा से, वह भी इसके लिए सहमत हो गया।

हमने कितनी ही लड़कियाँ देखीं; पर जब सुमित्रा को देखा, तब मन बोल उठा– "तू जिसे खोज रहा था, वह यही लड़की है।" मैंने कुमार के दिल में भी झाँक कर देखा। वहाँ भी उसी लड़की की छबि प्रतिबिम्बित हो उठी थी। बाप की पसंदगी के साथ लड़के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

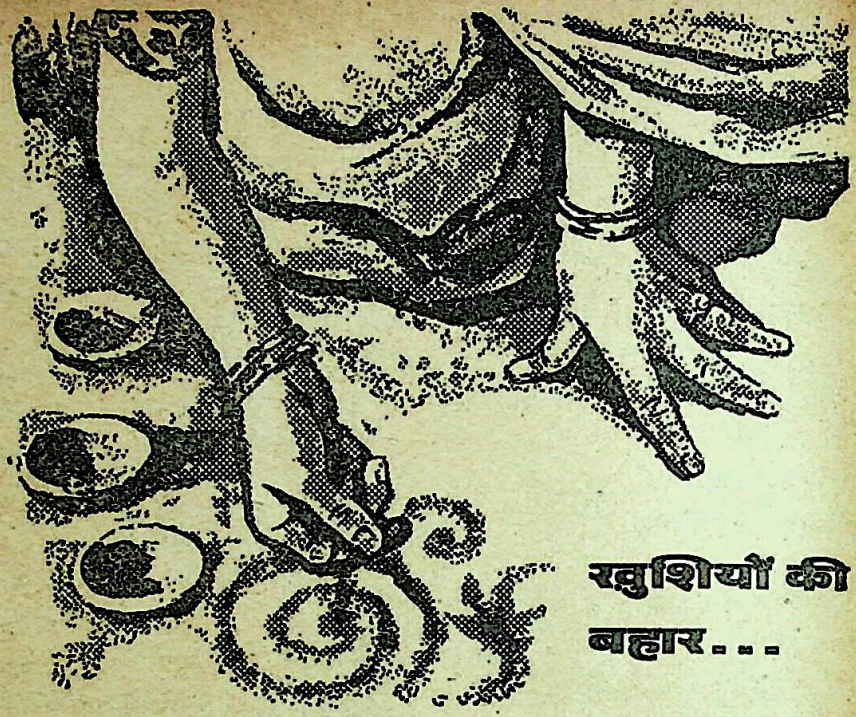

खुशियों की बहार...

न बिजलियों का वह कूँदना, दिल यह दहल जाये
न बादलों का वह घोर गर्जन कि कान सन्न हों
है फिर से निखरा आकाश नीला, उड़ा रहा बादलों के तोदे
कि फिर से सूरज का तेज़ रफ़्तार रथ दौड़ा है नीले पथ पर
जवान हुई हैं आज धरती की बेटियां, लहलहाती फ़सलें
ख़ुशी में नाची हैं मेहनतें कि रंगोलियों की बहार आई ।

हमारी मेहनत, हमारे सपने—खिली रहे यह बहार यूँही
और साकार हो वह संसार
जिस में चिन्तायें कम होंगी औ' मुस्करायेंगी नई ख़ुशियां ।

आज हमेशा की तरह, हिन्दुस्तान लीवर के उत्तम उत्पादन भारतीय घरों को अधिक स्वच्छ, उज्ज्वल और सुखी बनाने में सहायक होते हैं... कल, जब और अधिक सुन्दर जीवन की आकांक्षा दिन प्रति दिन बढ़ेगी तो हम अपने नये उत्पादनों और नये विचारों के साथ उस समय भी आप की सेवा के लिये तैयार पाये जायेंगे...

आज और हमेशा ...घर घर की सेवा ...हिन्दुस्तान लीवर का आदर्श

PR. 10-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की पसंद का मेल, बहुत कम ही हुआ करता है—और वह भी केवल उसके सदृश प्रियदर्शिनी-शुभांगी होने के कारण ही। स्वभाव और रूप की इतनी मधुर लड़की कुमार के लिए रख छोड़ने के लिए, मैं उस करुणा-निधान का आभार मानने लगा।

"सखा सप्तपदी भव" कह कर कुमार ने सुमित्रा का पाणिग्रहण किया। सुंदर साड़ी पहन कर और सास के हाथों से सभी गहनों से सुसज्जित सुमित्रा ने, हमारे घर में पदार्पण किया। सारा घर सुमित्रा के सौंदर्य से जगमगा उठा। वह जब मेरे समक्ष नमस्कार करने के लिए झुकी, तब मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि, उसे समीप खींच कर, वात्सल्य-भाव की शीतल धाराओं में उसे आपाद-मस्तक नहला दूँ।

कुमार छुट्टियाँ समाप्त होते ही चला गया। मैंने सुमित्रा की दृष्टि से उसकी विदाई को देखा और उसमें निहित करुणा से मैं अभिभूत हो गया। आज-कल का जीना भी क्या जीना है। सदैव दौड़-धूप। प्रति दिन नयी समस्याएँ और नयी चिंताएँ घेरे रहती हैं।

कुमार का जो पहला पत्र मिला, वह भी कोई समुद्र पर टॉरपीडो छोड़नेवाले युद्ध-पोत से आया था। मैं कहीं बाहर गया था। मुझे घर लौटने में जरा देर हो गयी थी और सुमित्रा के धैर्य का बाँध टूट चुका था। मैंने तनिक क्रोध जतलाते हुए उससे कहा—"यह क्या सुमित्रा? पत्र खोल कर पढ़ नहीं सकती थी? अभी बचपन नहीं गया तुम्हारा?" कुमार ने अपने पत्र में पूरा विवरण देते हुए अपनी महत्वाकांक्षा के सफल होने का जो आनंद व्यक्त किया था, उसे पढ़कर उसके साथ हम-सब भी आनंद-मग्न हो गये।

"क्या तुम्हें कोई पत्र नहीं मिला?"—मेरे इस प्रश्न पर इंकार करते हुए गरदन हिला कर, जब सुमित्रा वहाँ से खिसक गयी, तब मेरा मन सुन्न हो गया। मैंने जवाब में कुमार को लिखा—"बहू आयी, इसलिए कुमार माँ-बाप को भूल गया—ऐसा हम कहेंगे, इसीलिए तूने, मेरे नाम पत्र लिखा है न? पर आगे से ध्यान रखना कि, तू सुमित्रा के ही नाम पत्र भेजना। उसके लिफाफे में ही हमारे लिए एक छोटा-सा खत रख देने से भी

बोझ

मैंने जहाँ कहीं जो-कुछ पाया है, उसे सिर्फ
जमा ही करता आया हूँ—
इसीलिए आज जो देखता है, वही हिसाब
माँगता है—क्षमा कोई नहीं करता।
मेरे इस बोझ को उतार दो
हे मित्र, उतार दो;
भार के वेग से ठेला जाकर चल रहा हूँ—
मेरी यह यात्रा तुम रोक दो,
रोक दो, मेरे मित्र रोक दो!

—रवींद्रनाथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर आपको बेहतर ज़िन्दगी प्यारी है— तो इसे पढ़िए!

आज अधिक सुखमय जीवन बिताने के मौक़े हमें पहले से कहीं ज़्यादा मिलते हैं। लेकिन हम में से बहुत-से लोग इन मौक़ों से कोई फ़ायदा नहीं उठा पाते क्योंकि वे आज भी आँखें मूँदकर पुरानी रीतों का दामन थामे रह जाते हैं।

उदाहरण के लिए खान-पान की बात ही लीजिए। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट रहने के लिए हर आदमी को कम से कम दो आउंस चिकनाई हर रोज़ अवश्य ही चाहिए। इस आवश्यक चिकनाई को वनस्पति द्वारा बड़ी आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। फिर भी बहुत-से लोग वनस्पति से पका खाना खाने में हिचकिचाते हैं। उन्हें भ्रम-सा है कि वनस्पति केवल भारत में ही बनाया जाता है। शायद उन्हें पता ही नहीं कि दुनियाभर में स्वस्थ लोग वनस्पति जैसे स्निग्ध पदार्थों से ही खाना पकाना पसन्द करते हैं। यहाँ तक कि डेनमार्क, हॉलैण्ड और अमेरिका जैसे देशों में, जहाँ मक्खन बहुतायत से होता है, लोग मक्खन की अपेक्षा वनस्पतियों से बने स्निग्ध पदार्थ ज़्यादा बरतते हैं। इसका कारण? वे लोग जानते हैं कि वनस्पतियों से तैयार किये जानेवाले स्निग्ध पदार्थ मक्खन वग़ैरह के बराबर ही पुष्टिदायक, लाभकारी और किफ़ायती होते हैं।

विटामिन से भर-पूर पुष्टिदायक चिकनाई

वनस्पति साफ़-सुथरे आधुनिक कारखानों में मूँगफली और तिल के तेलों को शोध कर वैज्ञानिक पद्धति से बनाया जाता है। इससे यह अनमेल पुष्टिदायक पदार्थ आपको विशुद्ध रूप में मिलता है। इतना ही नहीं, इसके हर आउंस में विटामिन 'ए' के ७०० अन्तर्राष्ट्रीय यूनिट रिसाये जाते हैं। विटामिन 'ए' त्वचा और आँख के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही ज़रूरी है।

बढ़िया से बढ़िया चीजें बरतनेवाले लोग रसोई में वनस्पति इस्तेमाल करते हैं। आप भी आज ही से वनस्पति में खाना पकाना शुरू कर दीजिए!

वनस्पति—*गृहिणी का सच्चा सहायक*

दि वनस्पति मैन्युफ़ैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया द्वारा प्रचारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमें संतोष मिलेगा। उसे अलग से पत्र न देकर, तुमने उसे कितना दुःखी किया है, यह तुम नहीं जान सकते।" अपना यह उत्तर, जब मैंने सुमित्रा को पढ़ने दिया, तब उसके मुख पर कृतज्ञता छलक उठी थी। उसकी दृष्टि कह रही थी– "आप बूढ़े हो गये; फिर भी अभी तक तरुण हृदय की आकांक्षा को नहीं भूल पाये हैं।"

उसके पश्चात्, दो महीने बीत गये और सावन आ पहुँचा। उसने बहू की मंगलागौर ठाट-बाट से मनाने का निश्चय किया। उन दोनों ने जबर्दस्त तैयारियाँ कीं और मुझ-जैसे बूढ़े को "यह ले आओ, वह ले आओ" कह कर परेशान कर दिया। सोमवार को सवेरे ही स्नान से निपट कर, रेशमी साड़ी पहन कर, सुमित्रा मंदिर में गयी और "शिवामूठ" चढ़ा आयी। डाकिये ने तार का लिफाफा मेरे हाथ में रखा। धड़कते हृदय से मैंने तार का लिफाफा खोला।

तार क्या था, वह तो स्वयं वज्र का प्रहार था हमारे परिवार पर! किसी परदेसी रणभूमि ने हमारे कुमार का बलिदान ले लिया था। आज भी उसके स्मरण-मात्र से कलेजे में टीस उठती है। पहाड़ के सदृश दुःख सहने पड़े, फिर भी हम जीवित कैसे रहे, इसका ही मुझे आश्चर्य होता है। मानव-जीवन यदि पानी का बुदबुदा है, तो फिर ऐसी दारुण दुर्घटना से हमारे दो बुदबुदे क्यों नहीं फूट गये?

कुछ दिन बाद ही, सुमित्रा के पिता उसे ले जाने के लिए आये। उनकी दृष्टि से यह उचित ही था। वस्तुतः अब इस घर में उसका अपना कौन था? बीच की वह शृंखला ही टूट गयी थी। पर सुमित्रा नहीं गयी। मैं जानता हूँ कि, हम दोनों को ऐसी परिस्थिति में अकेला छोड़ कर जाना उचित नहीं था, इसीलिए उसने जाने से इंकार कर दिया। मानवता की कसौटी ऐसे ही समय पर होती है। उसके इस सौजन्य की प्रशंसा, मैं भला किन शब्दों से करूँ? वह यदि चली गयी होती, तो हमारी दशा छोटे बच्चे-से भी बदतर हो जाती। सामने परोसे हुए भोजन को यदि छूआ नहीं, तो वह तुरत बोल उठती- "आप यदि चाहते हैं कि मैं खाऊँ, तो आपको चार कौर मुँह में डालने ही पड़ेंगे।" और यह सुनते ही मैं पेटू की भाँति खाने लगता।

ऐसी गूढ़, विकल अवस्था में एक के बाद एक दिन व्यतीत होते जा रहे थे कि, एक दिन अंतर्मन ने ताना मारा और मुझ से पूछा–"भले आदमी! अपने दुःख से कब तक कराहते रहोगे? मर्मांतक बाण के प्रहार से आहत हुई, उस कोमल नारी की ओर भी जरा देखो। क्या उसे सारी जिंदगी खा-पीकर काम करनेवाली नौकरानी की हैसियत से ही रखना चाहते हो?"

मेरी आँखें खुल गयीं। मैंने उस दृष्टि-कोण से अभी तक विचार ही नहीं किया था। सुमित्रा भी कुछ नहीं बोली थी। सभी भ्रमित-से हो गये थे। फिर तो मैंने उस साल जून के प्रारंभ में ही, उसका नाम कालेज में लिखा दिया। पहले दिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारी धन्य हो गयी !...

नारी के सुहाग को नया जीवन मिला तो उसके मन की बगिया फिर से गमक उठी... उसका रोम-रोम दमक उठा...उसकी सारी अभिलाषाएँ पूरी हो गयी।

वे सभी लोग जिन्हें असाध्य रोग हो गया है आज औषधि शास्त्र से पूरा लाभ उठा सकते हैं। ऐसी औषधियाँ मिलती हैं जो उन्हें रोग से छुटकारा दिला सकें और ऐसी हालत मे एक ही आदमी काम का साबित होता है....वह है डॉक्टर—जो अपनी जानकारी और अपने अनुभव का फ़ायदा रोगियों में बाँट देता है। इसलिए हमेशा.....

अपने डॉक्टर से सलाह लीजिए

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड
बड़ौदा-३

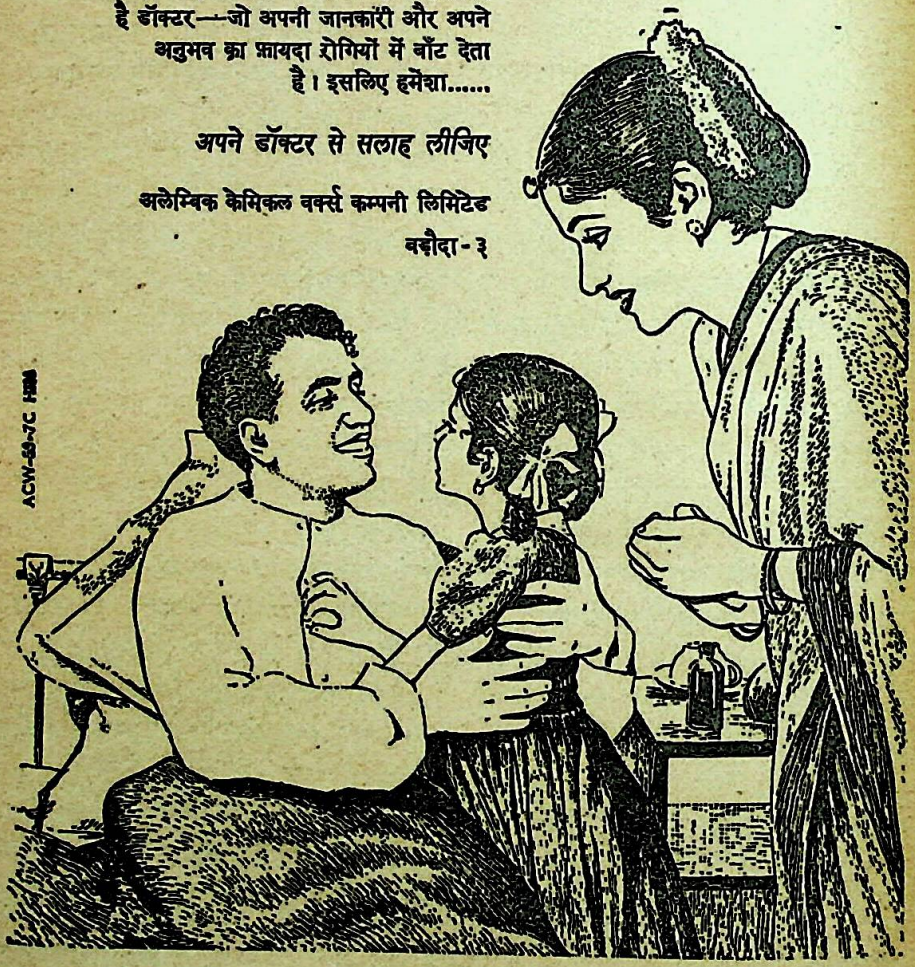

ACW-59-7C HBB

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कालेज जाते समय, वह कितनी हिच-किचायी थी! उसका अन्तस्थल बोझिल हो गया था। प्रारंभ में तो जब वह घर से कालेज जाती और जब तक वापस लौट कर न आ जाती, तब तक मेरा जी खूँटी पर टँगा रहता था।

उसका जीवन शृंखलाबद्ध हो गया था। उसे अब एक नया मोड़ मिला। पर बीच-बीच में उसके हृदय का घाव हरा हो उठता। वह हताश हो जाती थी। सिरदर्द से बेचैन होकर छटपटाती थी। मेरी आँखों का सतर्क पहरा सदैव उस पर रहता था। उसकी प्रकृति में सूक्ष्माति-सूक्ष्म परिवर्तन भी मेरे हृदय के रेकार्ड पर आलेखित हो जाता था, और उसे इस प्रकार मायूस देख कर, हम दोनों एक-दूसरे का मुँह ताकते हुए निश्वास छोड़ने लगते थे।

एक दिन मैं सुमित्रा की अनुपस्थिति में, उसके कमरे में गया। कितना सफाई और करीने से रखा था उसने अपना कमरा! पर वहाँ के एक दृश्य से मैं सकपका गया। उसकी मेज पर फौजी गणवेष में सुसज्जित कुमार की तस्वीर थी और उस पर एक तरोताजा गुलाब का फूल चढ़ा हुआ था। मेरी आँखें भर आयीं। मैं बहुत देर तक वहीं खड़ा रहा। मेरी दृष्टि की किरणें उसमें चेतना भर देना चाहती थीं। उसकी सारी मधुर स्मृतियाँ मुझे झकझोर रही थीं। पर...अब वह मुझे और सुमित्रा को कभी दिखायी नहीं देगा। फिर भी सुमित्रा उसकी तस्वीर की पूजा करती थी, उसके लिए तड़पती थी। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं था। अतः मैंने वह तस्वीर वहाँ से उठा ली और अपने ट्रंक में छिपा कर रख दी।

उस दिन वह बहुत बेचैन थी, मानो उसकी कोई अनमोल चीज खो गयी हो। पर वह उसके बारे में हमसे पूछ भी नहीं सकती थी। संध्या के समय वह बहुत कष्ट से भोजन करने आयी, तब भी उसकी नाक और आँखें लाल थीं। मैंने उससे कहा—"सुमित्रा, अतीत की काली गुफा में मत घूमो। भविष्य की ओर दृष्टि रखो। उस ओर प्रकाश-ही-प्रकाश है।"

मेरा यह कथन उसे पहेली के सदृश प्रतीत हुआ। फिर उसका अर्थ वह समझ गयी। उसका सुख या दुःख हथिया लेनेवाले इस श्वसुर को उसने शायद पाषाण-हृदय समझा होगा। पर मैंने यह क्रूर कर्म उसके लिए ही किया था। उसी की भलाई के लिए!

बीच में एक बार और उसके पिता ने उसे मायके ले जाने का प्रयास किया। वे चाहते थे कि, सुमित्रा सदा के लिए उनके पास रहे। वे केवल उसे ही नहीं चाहते थे; बल्कि उसके साथ गहनों का डिब्बा भी चाहते थे। किंतु मैंने उसे नहीं भिजवाया; और उसे भी इस बात का कोई रंज नहीं हुआ।

अब वह अध्ययन में रस लेने लगी थी। इंटर में उसे द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ था और बी० ए० की परीक्षा में यथा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पा प्लि न्स

श र्टिं ग्स

म र्से रा इ ज्ड धो ति यां

छ पी हु ई वा इ ल्स

त था ~ ला न्स

•SANFORIZED•
REGISTERED TRADE MARK

रा य पु र मि ल्स लि.,

अ ह म दा बा द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संभव प्रथम स्थान प्राप्त करने की लगन उसके मन में लगी हुई थी। और लड़कियों के सदृश बर्ताव करना, कालेज की चहल-पहल में यथाशक्ति भाग लेना आदि कामों में धीरे-धीरे उसका मन लगने लगा था। फहराती साड़ी पहन कर और मेरी भेंट दी हुई सुंदर घड़ी को कलाई पर बाँध कर, जब वह "जाती हूँ" कहती हुई सीढ़ियाँ उतरती, तब मुझे प्रतीत होता– हमारी सुमित्रा सचमुच अब मनुष्य होने लगी है।

एक दिन वह आहिस्ते-से मेरे कमरे में आयी और कालेज की त्रैमासिक पत्रिका का अंक मेरे समक्ष रख कर चली गयी। कुछ विशेष पढ़ने के लिए, जब मैं अंक देखने लगा, तो दसवें पृष्ठ पर उसकी कहानी देखी। मुझे बचकानी कहानियाँ पढ़ने का तनिक भी शौक नहीं था। पर वह कहानी सुमित्रा की थी, इसीलिए उसे पूरी पढ़ कर, बाहर आकर उससे बोला– "अरे वाह! यह नवीन कला कब अर्जित की? हमें पता तक नहीं लगने दिया।"

"मुझे आता ही क्या है? पर सम्पादक हाथ धोकर पीछे ही पड़ गये। कहने लगे कि, तुम्हारी कहानी के बिना अंक प्रकाशित नहीं हो सकेगा। इसीलिए कुछ भी लिख दिया और जान छुड़ायी।"

"कौन हैं ये संपादक?"

"मेरे ही वर्ग के एक विद्यार्थी हैं। उनका सरनेम है देशमुख। पर कालेज में वे 'कवि सूर्यकांत' के नाम से प्रसिद्ध हैं। संस्कृत के स्कालर हैं वे। कितनी सुंदर कविता करते हैं! इस वर्ष उनका कवितापाठ सुनने में बड़ा मजा आया...."

दोपहर को लेटे-लेटे एक बार फिर अंक देख रहा था कि, दूसरे पृष्ठ पर सूर्यकांत की कविता दीख पड़ी। "विनयवती को" उसका शीर्षक था। पूरी कविता मैंने पढ़ी और चकित हो गया। उस कविता की आराध्या सुमित्रा ही होनी चाहिए, ऐसा मुझे संदेह हुआ। क्योंकि प्रत्येक पंक्ति से उभरता हुआ स्वभाव-चित्रण उसका ही था। और आज दोपहर को सूर्यकांत का वर्णन करते-करते सुमित्रा की रसना भी अमृत से पग गयी थी। मेरा ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हुआ।

अब मेरे समक्ष एक नयी समस्या मुँह बाये खड़ी हो गयी। यह पारस्परिक प्रेम का तो प्रकार नहीं है? और वैसा हुआ, तो मुझे क्या करना चाहिए? अनुरोध या विरोध? पर विरोध भी क्यों? यदि सूर्यकांत सुशील एवं समर्थ होगा, तो सुमित्रा उसके साथ खुशी से संसार जोड़ सकती है। पर, यदि वह वैसा न हुआ, तो....? मुझे पहले ही सूचना मिल गयी है, बात सच है; पर दर्द नाजुक जगह पर है। एक बार क्या सुमित्रा से स्पष्ट पूछ लूँ? पर मेरी हिम्मत न पड़ी। मैं चुपचाप जटिल परिस्थिति का अध्ययन करता रहा।

अगले दो-तीन महीनों तक मैंने सुमित्रा की प्रत्येक हलचल पर बहुत कड़ी निगरानी रखी। पर कुछ भी तो संदेहास्पद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अरे भले मानस, उन कहानियों का ढंग हलका फुलका है मगर तुम्हारी तरह वे बे सिर पैर की तो नहीं उड़ाते! जब कहने की बात पर आते हैं तो हंसी मज़ाक छोड़ कर बड़े सहज स्वभाव और गम्भीरता से वर्णन करते हैं।"

"और हर विज्ञापन में वे जो ये नॅारे लगाते हैं कि 'डालडा' शक्तिदायक है, 'डालडा' स्वास्थ्यकारी है—ये सब तथ्य हैं! यह हंसी दिल्लगी या शायरी नहीं?"

"अजीब औंधी खोपड़ी है तुम्हारी। इस में शायरी क्या हुई? यह तो मानी हुई बात है, क्योंकि 'डालडा' की पौष्टिकता परीक्षाओं से साबित हो चुकी है। यही पौष्टिकता शक्ति देती है और स्वास्थ्य भी—आई समझ में!"

"मैं ऐसे हारने वाला नहीं। शब्दों का गोरखधंधा छोड़ कर पौष्टिकता की कोई उदाहरण दो?"

"सुनो क्या तुम जानते हो कि शक्ति के लिए हमें चिकनाइयों की ज़रूरत है। चावल या गेहूं के मुकाबिले में चिकनाइयां ढाई गुना अधिक शक्तिदायक होती हैं। यही चिकनाइयां हमें वह ताकत देती हैं जिनके बल बूते पर हम बीमारियों का मुकाबिला कर पाते हैं। और 'डालडा' एक ऐसी ही अच्छी और स्वास्थ्यकारी चिकनाई है।"

"तुम तो यूं बात करते हो जैसे डालडा वनस्पति की विधि तुम ने तैयार की है। मगर मेरे होनहार मित्र पौष्टिकता की सब से महत्वपूर्ण बात तुम गोल ही कर गये।"

"अरे चचा ग़ालिब के भतीजे, तुम्हें पौष्टिकता से यह दिलचस्पी कब से हुई? लेकिन ख़ैर, पौष्टिकता की सब से महत्वपूर्ण बात से तुम्हारा मतलब है विटामिन्ज़, हैं ना! तो सुनो, 'डालडा' विटामिनों की दौलत से भी मालामाल है। इसके हर औंस में विटामिन ए की ७०० और विटामिन डी की ५६ अंतरराष्ट्रीय इकाइयां मिलाई जाती हैं।"

"जवाब नहीं तुम्हारी जानकारी का। अच्छा यह तो मान गये कि इस में विटामिन भी हैं। परंतु सुनने में आया है कि पकाते समय सब्ज़ियों तरकारियों के विटामिन प्रायः नष्ट हो जाते हैं। यही बात अगर 'डालडा' की भी है तो तुम्हारी सारी वकालत मिट्टी में मिल गई!"

"प्यारे, मेरा घोड़ा कभी नहीं हारता! परीक्षाओं से यह साबित हो चुका है कि सभी वनस्पतियों की तरह 'डालडा' के विटामिन सुरक्षित रहते हैं, बल्कि इस बात में 'डालडा', पकाने की दूसरी चिकनाइयों से, कहीं ज़्यादा अच्छा है।"

"तुम तो मेरी हर चाल मात कर रहे हो!"

"इस लिए कि तुम सुनी सुनाई उड़ाते हो, और मेरे पास तथ्य हैं। 'डालडा' के विज्ञापनों की सच्चाई का और प्रमाण चाहिए तो याद रखो कि यह सदा सरकारी आदेशों के अनुसार बनाया जाता है। और 'डालडा' के गुण इस लिए भी विश्वासनीय हैं कि इसे बनाने वाली एक बहुत बड़ी सुप्रसिद्ध कम्पनी है।"

"अरे भई बस बस! तुम तो आप एक बोलता हुआ विज्ञापन बन चले! तुम्हें शायद यह नहीं पता कि हमारे घर में तो केवल 'डालडा' ही इस्तेमाल होता है!"

"तो अपनी खोपड़ी के दुश्मन, मेरा दिमाग़ चाटने से फ़ायदा?"

"बस यूंही। वह चचा ग़ालिब ने कहा है ना कि:— यार से छेड़ चली जाये 'असद'"

"हत्, ग़ालिब के नालायक भतीजे! तुम अपना वही शीर्षक रखो—'बिकाऊ है, एक जवांमर्द!'"

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"'बिकाऊ है, एक जवांमर्द'—यह शीर्षक कैसा रहेगा?"

"बहुत खूब! नौकरियां देने वाले पढ़ें न पढ़ें, छोकरियां ज़रूर पढ़ेंगी।"

"सभी पढ़ेंगे—मेरी तुम्हारी शर्त रही!"

"ख़ैर, आगे बढ़ो।"

"हां तो बिकाऊ है, एक जवांमर्द! मेहनत का शौकीन है, दयानतदारी उस का दीन है। काम के साथ साथ सलाम करना भी जानता है। घोड़े की पछाड़ी से बचता है और अफ़सर की अगाड़ी से। दफ्तर के बाद अफ़सरों के बच्चों को खिला सकता है, मेम साहिब के लिए बाज़ार से सब्ज़ी तरकारी ला सकता है—कहो कैसी रही!"

"यहां तक तो बहुत अच्छी! मगर अब तनख्वाह की कैसे कहोगे? अपना शीर्षक याद रखना 'बिकाऊ है'!"

"तुम चिंता न करो। मैं ने सब सोच रखा है। हां तो कहां थे हम? हां—मेम साहिब के लिए सब्ज़ी तरकारी भी ला सकता है। बात चीत में हंसमुख, देखने में छैला छबीला। इंटरव्यू के लिए अपने दफ़्तर में बुलाइये। पसंद आने पर, आप की सुविधा के लिए कीमत मासिक किस्तों में ली जायेगी जिसे आप अपनी पुस्तकों में तनख्वाह की मद में लिख सकते हैं। ये किस्तें तब तक चालू रहेंगी जब तक आप की नौकरी सलामत रहे या आप का सेवक!"

"भई वाह, क्या विज्ञापन तैयार किया है तुम ने!"

"लेकिन आख़िरी चोट तो बाकी है! सुनोगे तो फड़क जाओगे!—उसकी बात चीत से सूझ बूझ उजागर है, बस यूं समझिये कि गागर में गुणों का सागर है!"

"भई वाह वा! बहुत बढ़िया लिखा है प्यारे! मगर एक बात कहूं—इस में मतलब की बात कम है और मज़ा ज़्यादा। लोग इसे मज़ाक समझ के टाल देंगे।"

"यह मज़ाक है! और डालडा वनस्पति वालों की वह कहानियां—'मैं जो एक ख़ानदानी महाराज हूं'—'कैलंडर की शरारत'—और 'बातों का जाल'—जिन में वे डालडा वनस्पति' को हर पकवान के लिए एक आदर्श चिकनाई के रूप में पेश करते हैं—वह मज़ाक नहीं!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं लगा। उसके मुँह से उस सम्पूर्ण अवधि में एक बार भी सूर्यकांत का नामोच्चारण नहीं हुआ। मुझे प्रतीत हुआ कि, मैं व्यर्थ ही संशय का भूत खड़ा करके त्रस्त हो गया था। पर मैं पागल नहीं था—और मेरा संशय भी झूठा नहीं था।

उस दिन उसकी मुखप्रभा सहसा फीकी पड़ गयी थी। उसकी उनींदी आँखें रात के जागरण और मनस्ताप की सूचना दे रही थीं। बहुत कष्ट के साथ ही वह कालेज जाने के लिए रवाना हुई थी। चप्पलें पीछे के दरवाजे पर रह जाने के कारण, हाथ की पुस्तकें बाहर की मेज पर पटक कर, वह पीछे गयी। उतने में पवन ने अठखेलियाँ करते-करते ऊपर की पुस्तक के पृष्ठ फड़फड़ा दिये और उनमें से एक कागज बाहर उड़ गया। उसे इसका पता न चला। इसलिए वह पुस्तकें उठा कर उसी तरह चल दी।

और जूतों के शेल्फ के पीछे पड़ा हुआ वह कागज मेरे हाथों में आ पड़ा। मैंने पढ़ना शुरू किया। उसमें लिखा था—"प्रिय सुमित्रा....." मैं कुतूहलवश नीचे की लिखावट पढ़ने लगा—

"पंद्रह दिनों के पश्चात् बी० ए० की परीक्षा समाप्त होते ही, मैं घर चला जाऊँगा। घर जाने पर मेरी शादी का प्रश्न उपस्थित होगा। अनेक कन्याएँ मेरे समक्ष लायी जायेंगी। क्या मैं उस समय अपने माँ-बाप से कह सकूँगा कि, मैंने अपनी वधू का चुनाव कर लिया है? क्या तुम मेरे प्यार को स्वीकार करोगी? तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा करूँगा।

तुम्हारा अपना,
सूर्यकांत"

पत्र यहीं समाप्त नहीं होता था। उस पत्र के नीचे की खाली जगह में सुमित्रा का यह उत्तर भी था—

".....तुम्हारी माँग को अस्वीकार करते हुए, मेरे हाथ ही नहीं, बल्कि सारा शरीर थरथराने लगता है। पर मैं क्या करूँ? यह बात मेरे श्वसुरजी को तनिक भी पसंद नहीं आयेगी; और उनका मन दुखाकर मैं अपने सुख का मंदिर नहीं रचना चाहती। सूर्यकांत! निष्फल आशा पर मत झूलो। मुझे भूल कर, अपना मार्ग ढूँढ़ लेना। मेरा जन्म प्रेम-साफल्य के लिए नहीं है.....

सुमित्रा"

उसकी वे नपी-तुली पंक्तियाँ, विशेषकर अंतिम वाक्य —'मेरा जन्म प्रेम-साफल्य के लिए नहीं है' पढ़ कर मेरे कलेजे को बड़ा धक्का लगा। "छीः! छीः! सुमित्रा, अब भी तुम मुझे पहचान नहीं पायी"—वह जैसे मेरे समक्ष ही थी, मैं बड़बड़ाया। यह पत्र मेरे हाथों में देकर ईश्वर ने मुझ पर बड़ा ही अनुग्रह किया।

कालेज पहुँचने पर, पत्र खोने का अंदेशा उसके मन में आया होगा—क्योंकि सिरदर्द का बहाना करके वह पीरियड छोड़ कर चली आयी थी। उत्सुक किंतु चोर नजरों से, वह कोना-कोना छानने लगी, कमरे की सभी पुस्तकें देख रही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। मैं सब-कुछ समझ गया। पर राज मेरे हाथों लग गया है – ऐसा भाव तनिक भी मैंने मुख पर नहीं आने दिया। आगे क्या कहना है, यह मैंने सोच लिया था और अब केवल उसकी उठा-पटक और झुंझलाहट का आनंद ले रहा था।

परीक्षा समाप्त होने तक उसका चित्त-स्वास्थ्य बिगड़ने न देने की जिम्मेदारी मुझ पर थी। परीक्षा समाप्त हो गयी और उसके सभी पर्चे अच्छे हो गये– जब मुझे ऐसा पता चला, तो शीघ्र ही कालेज में गया। सूर्यकांत तो चला गया था। मैंने उसका पता ढूँढ़ निकाला और दूसरे ही दिन "जरा गाँव हो आता हूँ", ऐसा कह कर मैंने मालवण का रास्ता पकड़ा। घर आने पर सुमित्रा ने मुझसे पूछा – "जाते वक्त तो नहीं पूछना चाहिए; किंतु वापस लौटने पर पूछने में कोई बाधा नहीं है। कहाँ गये थे आप चार दिनों तक? बताइए तो!"

"गया था एक किसान के घर!"

"कोई लेन-देन का व्यवहार है?"

"इतने दिनों तक तो नहीं था; पर अब शुरू करना है।"

"उसे रुपया देनेवाले हैं क्या?"

"रुपया नहीं...पर जाने दो उस विषय को। मुझे पहले चाय तो पिलाओ।"

उसी दिन दोपहर को मैंने उस पत्र को ट्रंक से बाहर निकाला और सुमित्रा के उत्तर के नीचे लिखा—

"उदारमना सुमित्रा! मेरे खातिर अपने जीवन पर अंगारे मत रखो। ऐसी जलती-तड़पती यदि तुम मेरे घर में रहोगी, तो तुमसे अधिक मेरा जी तिलमिलायेगा। बेटी, तुम्हारा प्यार सफल हो! उसके लिए मैंने स्वयं नेतृत्व लिया है। उचित समय पर सूर्यकांत की माँग का सक्रिय उत्तर मिलेगा।

तुम्हारा,
श्वसुर"

उसे बताये बिना वह पत्र मैंने उसकी मेज पर एक पुस्तक के नीचे दबा कर रख दिया। मुझे विश्वास है कि, थोड़ी ही देर में वह पत्र उसके हाथ में पड़ा होगा; क्योंकि वह बहुत देर तक बाहर ही नहीं आयी। अकल्पित आनंद से अपने मन को काबू में लाने के लिए, उसे बहुत श्रम उठाना पड़ा होगा। वह बाहर आयी; पर मेरी नजरों के समक्ष नहीं आ रही थी। उसके मन की कली खिल गयी थी, भाव-सौरभ से महकने लगी थी – यह निश्चित था। किंतु सामने से उसके दर्शन मुझे नहीं हो रहे थे। मैंने सोचा, भले ही वह मुझे न दिखायी दे; उसका लज्जाशील संयम कितना आल्हादक था!

मैंने पत्नी को एकांत में बुलाकर पूछा–"एक महत्त्वपूर्ण कार्य में तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी, करोगी न?"

"भला यह भी कोई पूछने की बात है। क्या कभी मैंने आपकी आज्ञा का उल्लंघन किया है?"

मैं आश्वस्त हो गया। मैंने अपनी पत्नी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंद कीजिये

मसूढ़ेकी तकलीफ
दंतक्षय
बदबूदार साँस

फोरहन्स टूथपेस्ट का इस्तेमाल कीजिये

तथा अपने चमकीले,
सफेद, स्वस्थ दाँतों पर गौरव कीजिये।

हाल ही में फोरहन्स-चमकीली-मुस्कान-प्रतियोगिता में समस्त भारत से असंख्य प्रशंसा पत्र आए हैं जिनमें फोरहन्स टूथपेस्ट के विशिष्ट गुण की चर्चा है। और कोई आश्चर्य नहीं...क्योंकि फोरहन्स ही एकमात्र ऐसा टूथपेस्ट है जिस में मसूढ़ों के लिये डा. आर. जे. फोरहन द्वारा बनायी विशेष पौष्टिक दवा मौजूद है। फोरहन्स टूथपेस्ट दंतक्षय, बदबूदार साँस व मसूढ़ों की तकलीफ को प्रभावशाली ढंगसे बंद कर देगा। फोरहन्स टूथपेस्ट का इस्तेमाल कीजिये तथा अपने चमकीले, सफेद, स्वस्थ दाँतों पर गौरव कीजिये।

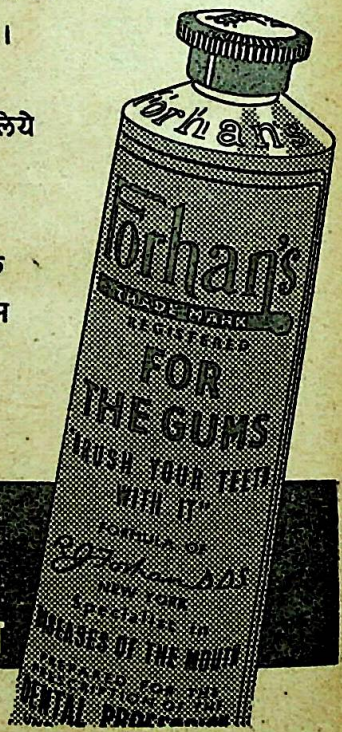

फोरहन्स
एक दंतचिकित्सक द्वारा निर्मित

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.

S. 28 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से सभी बातें समझा कर कह दीं। पर वह यह कटु सत्य न निगल सकी। अंत में मैंने कहा—"सुमित्रा का कल्याण होगा। एक मुरझाये हुए पौधे को नया जीवन मिलेगा। उस वज्राघात के अवसर पर सुमित्रा ने अपना दुःख निगल कर, हमें बचा लिया था। हम दोनों तो थोड़े ही दिनों के पश्चात् इस संसार से विदा ले लेगें। अब भी उसे सुख की उपलब्धि का आशीर्वाद तुम नहीं दोगी क्या?"

आँखों को आँचल से ढँक कर उसने स्वीकृति दे दी। 'तो फिर चलो देवघर में', ऐसा कह कर मैं उठा। देवघर में जाकर, हम दोनों भगवान् के आगे खड़े हो गये। उसने दीपक जलाया और मैंने सुमित्रा को पुकारा। वह दरवाजे में आकर खड़ी हो गयी। "यहाँ हमारे समीप आओ"—मैंने कहा। वह ज्यों ही समीप आयी कि, मैंने पत्नी से कुंकुम का तिलक लगाने को कहा—"अपने चूड़ियोंवाले हाथों से सुमित्रा के ललाट पर तिलक लगाओ।"

काँपते हाथों से उसने तिलक लगाया। हमारे घर में यह कितना करुणा-प्लावित अवसर था! सुमित्रा भी बवंडर में उलझी हुई लता की भाँति, थरथर काँप रही थी। उससे देवी को नमस्कार करने को कहा और मैंने हाथ जोड़े—

"माँ, जगदंबे! मेरी इस बेटी को तूने अपने आँचल में लिया है। इस पर अब मंगल आशीर्वाद की वर्षा कर!"

उसके पश्चात् उसने हम दोनों को नमस्कार किया और वैसी ही मेरे चेहरे की ओर ताकती हुई खड़ी रही। उसे बहुत कुछ कहना था, पर वाणी पंगु हो गयी थी। ज्यों-त्यों उसके कंठ से दो अक्षर फूट ही पड़े—

"बाबा.....!"

मैंने विस्मित होकर उसे पूछा—"किसको बाबा कहा तुमने? मुझे?"

"हाँ, तुम्हें ही कहा। इसी घर में मेरी मृत्यु आयी और इसी घर में मेरा पुनर्जन्म भी हुआ। और वह भी तुमने ही दिया। जिसने जन्म दिया, उस पिता ने भी स्वार्थ ही रखा और चूंकि वह प्राप्त न हो सका, इसलिए मेरी उपेक्षा कर दी। पर तुम धर्म-के पिता बन कर, मेरे पीछे खड़े रहे। जो ससुराल थी, वही मायका बन गयी। पिता कितना प्रेमल और अच्छा हो सकता है, यह मुझे तुम्हारे हृदय में देखने को मिला।"

मैं आगे न सुन सका। मैंने उसके मुँह पर हाथ रख दिया और उसे छाती से लगा लिया। उसने मेरे कंधों पर अपनी गरदन टिका दी। भावों से उमड़े उस सुख के सागर में, मैं डूब तो नहीं जाऊँगा — मुझे ऐसा भय हुआ। दूसरों को सुखी करने का आनंद, कितना अनिर्वाच्य होता है, इसका साक्षात्कार मुझे तब हुआ। वही मेरे जीवन का अंतिम सुखद क्षण था! सुमित्रा के माथे पर लटक आनेवाले बालों को पीछे हटाते हुए मैंने कहा— 'बेटी, एक बार फिर 'बाबा' कहकर पुकारो तो!"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

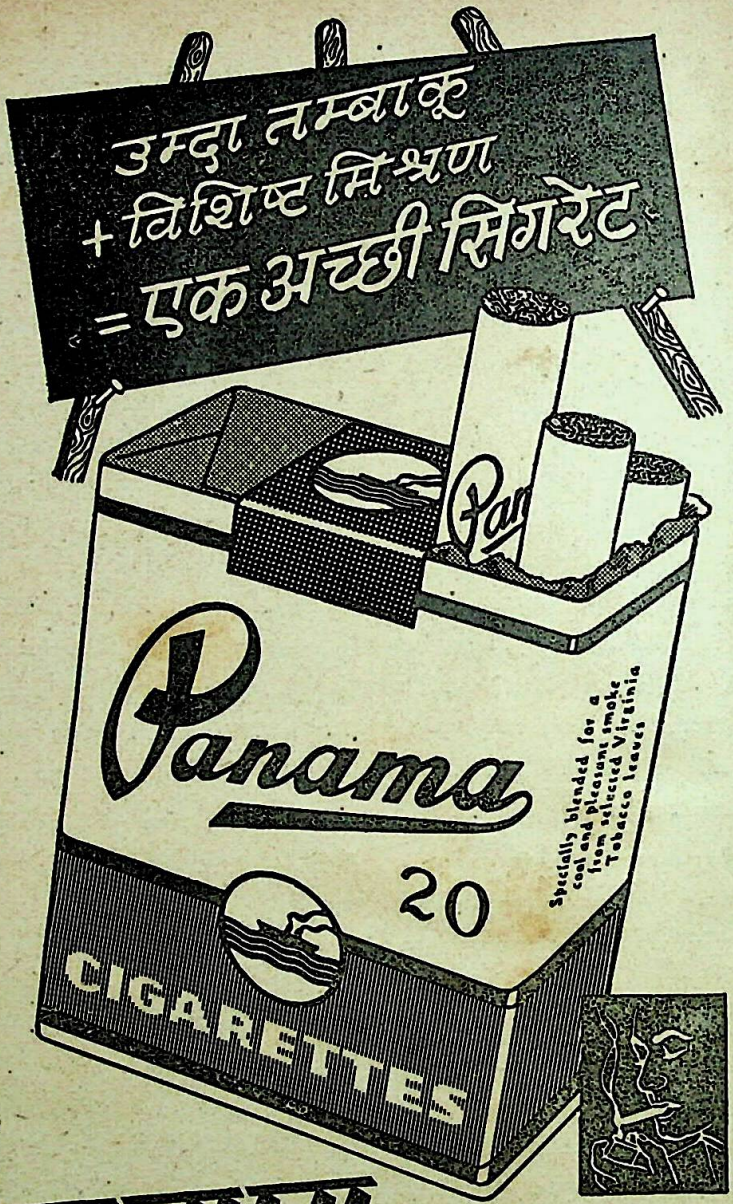

पनामा
अच्छी सिगरेट है।

विशेषरूप से संमिश्रण कर्ता :
गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई २४
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

G.T. 602 Greens' Advtg.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरी मुसकान पर मृत्यु भी मुग्ध

गुलाबदास ब्रोकर-लिखित एक भावपूर्ण गुजराती कहानी का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

दूधर कुछ अरसे से प्रकाश के मन में, बस यही विचार चल रहा था कि, उसने जीवन में लेखन-व्यवसाय को जो इतना अधिक महत्व दिया, धन और सुख प्राप्ति के दूसरे कई साधनों की उपेक्षा की और जीवन के कई कीमती साल यों ही गँवा दिये, क्या यह एक गंभीर गलती नहीं थी?

घटनाएँ भी कुछ ऐसी घटती आ रही थीं कि, यह विचार आना स्वाभाविक ही था। लेखन-कला में अधिक प्रवीण होते-होते, प्रतिष्ठा की सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते वह लेखकों के विशाल समुदाय के परिचय में आने लगा था। परंतु उन परिचयों से उसे सदा सुखद अनुभव ही हुए हों, सो बात नहीं। जिस समुदाय से, दूसरे समुदायों की अपेक्षा उदारता, मानवता और जिंदादिली की आशा रखी जा सकती है; उसी समुदाय में संकीर्णता, मान-प्राप्ति की क्षुद्र लालसा, तदर्थ की जानेवाली क्षुद्र खटपटें, आपसी ईर्ष्या और कटुता देख कर वह खीज उठा था। कुछ लेखक इसके अपवाद भी थे – हर नियम के अपवाद होते हैं – उनसे मिलना एक विशेष प्रसंग माना जाता था, उनका प्रेम संपादन करना तो जीवन की धन्यता मानी जाती थी। किंतु अपवाद तो अपवाद ही होते हैं; आटे में नमक के बराबर।

एक ताजे प्रसंग की स्मृति प्रकाश के मन में उभर आयी। एक मित्र ने विभिन्न लेखकों की रचनाओं के एक संकलन का संपादन किया था। स्थानाभाव के कारण एक लेखक की रचना को उसमें स्थान नहीं दिया जा सका था। लेखक ने पहले तो अपनी कृति को उसमें सम्मिलित कराने के लिए बड़ा प्रयत्न किया, फिर भी जब सफलता न मिली, तो उस संकलन के विरुद्ध प्रचार एवं प्रहार आरंभ कर दिया। अंत में एक दिन जब संपादक मित्र ने, उन लेखक महाशय से व्यथित होकर कहा– "आप मेरे संग्रह के विरुद्ध प्रचार करें, इसका मुझे कोई दुःख नहीं है; किंतु ऐसे प्रयत्न करके आप लेखक के नाते अपना गौरव तथा स्वत्व गँवा रहे हैं, इसका मुझे एक सहधर्मी की हैसियत से अवश्य दुःख है।" तो उत्तर मिला—

"मुझे ऐसे स्वत्व-ममत्व तथा गौरव-वौरव की परवाह नहीं है....." ये शब्द जब प्रकाश के कानों में पड़े, तो उसके हृदय में गहरी वेदना का जन्म हुआ। लेखक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें तंदुरुस्ती प्यारी है वे सदा लाइफ़बॉय से नहाते हैं।

खेल कूद हो या काम काज, हम गंदगी से बच नहीं सकते। और गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं जिन से तंदुरुस्ती को ख़तरा रहता है। लाइफ़बॉय साबुन गंदगी के इन कीटाणुओं को धो डालता है और आप की तंदुरुस्ती की रक्षा करता है। हर रोज़ लाइफ़बॉय साबुन से नहाइये—और अपनी तंदुरुस्ती की रक्षा कीजिये। यह आप को ताज़गी देता है।

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया.

L/P. 3-X29 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को, या किसी भी आत्मसम्मानी व्यक्ति को, गौरव और स्वत्व से बढ़ कर भी किसी चीज की परवाह हो सकती है? जीवन में स्वाभिमान एवं स्वत्व के समाप्त हो जाने के पश्चात् और किस मूल्य की आराधना शेष रहती है?.....

पर बात अकेले उस लेखक की थोड़ी है। प्रकाश ने ऐसे अनेक लेखक देखे हैं, जो अपनी पुस्तकों की प्रशंसात्मक विवेचना के लिए परोक्ष प्रयत्न करते हुए, यत्र-तत्र दौड़ते-फिरते हैं। और इनमें साहित्य-लोक में अभी-अभी प्रवेश पाये हुए तरुण लेखक ही नहीं, कीर्ति के उच्च शिखरों पर आरूढ़ वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, अनुभववृद्ध लेखक भी थे। प्रकाश अपनी आँखों से यह सब देख चुका है, देख रहा है। "गौरव और स्वत्व की परवाह हमें नहीं है"—ये शब्द सुन कर, प्रकाश को महसूस हुआ कि, उस लेखक ने अकेले अपने लिए नहीं, वरन् सारे लेखक-वर्ग के लिए यह बात कही है। तभी से प्रकाश के मन में यह विचार आरंभ हो गया कि, लेखन-व्यवसाय को अधिक महत्व देकर क्या उसने गलती नहीं की? वह ज्यों-ज्यों गहराई से सोचता उसकी संवेदना तीव्रतर होती गयी और वह दिन-प्रतिदिन सूक्ष्म विचार-मंथन में डूबा रहने लगा।

स्वजनों से मिलने और अपनी व्यथा कह सुनाने से हृदय की वेदना कम होती है, यह सोच कर प्रकाश ने कपड़े पहने और दवे साहब के घर की ओर पग बढ़ाये। प्रकाश की दृष्टि में दवे साहब बड़े अच्छे लेखक और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे।

रास्ते में भी उसका चिंतन-क्रम चालू रहा — औरों की बात चाहे जो भी हो, मैंने तो लेखन-व्यवसाय को स्वीकार कर गलती ही की है। मैं ऐसा कौन-सा शेक्सपियर या कालिदास हूँ कि, मेरी रचनाएँ मेरे आज तक के तप-त्याग को सत्य बना कर मेरे नाम को अमर कर देंगी। लेखन का पल्ला पकड़ कर, मैंने अपने जमे-जमाये पुश्तैनी व्यापार की उपेक्षा की और हानि उठायी। स्वजनों ने और स्वयं मेरी पत्नी तक ने, विरोध किया। स्वाभाविक ही था — मेरी इस खब्त के कारण उन्हें कितनी ही सुख-सुविधाओं और इनसे भी बढ़ कर, दुनियावी मान-गौरव से वंचित रह जाना पड़ा था। और यह सब गँवा कर मैंने जो पाया, क्या वह इसकी क्षतिपूर्ति के लिए पर्याप्त है? दो-चार कहानियाँ या काव्य की पचास-साठ पंक्तियाँ आधुनिक साहित्य के संकलनों में छप जाती हैं; दो-चार पत्रिकाओं में प्रशंसात्मक लेख या समालोचनाएँ प्रकाशित हो जाती हैं; कुछ मित्र मन-ही-मन ईर्ष्या करते हैं; कुछ विरोधी खुल्लम-खुल्ला गाली देते हैं — यही तो है न मेरी अब तक की सिद्धि। परंतु ये कौन-सी चिरस्थायी चीजें हैं। जो चार-छः चीजें मैंने अच्छी लिखी हैं, उनका आयुष्य भी भला कितना दीर्घ होगा? वे किसके हृदय में ऊष्मा उत्पन्न करने की शक्ति रखती हैं? किसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एनासिन

बेहतर है जब आपको सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार व रगपुट्ठों का दर्द हो

क्यों कि इसमें चार दवाइयाँ हैं

'एनासिन' को महज़ एक ही दवा मत समझिये। डाक्टर के नुस्ख़े जैसा चार दवाइयों के मिश्रण का यह वैज्ञानिक फ़ार्मूला है जो आपको सिरदर्द, सर्दी-ज़ुकाम, बुख़ार, दांत-दर्द व रगपुट्ठों के दर्द से फ़ौरन पूर्ण आराम देता है। सिर्फ एक दवावाली दर्दकी कोई भी दवा आपको 'एनासिन' जैसा फ़ौरन...हानिरहित...और अचूक आराम नहीं दे सकती। अपने घरमें हमेशा 'एनासिन' रखिये।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD. REGISTERED USER

K-66 (R) HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन को आश्वासन दे सकती हैं? उनकी परवाह ही कौन करता है आज?

प्रकाश दवे साहब के घर पहुँचा। यह प्रश्न उसके मन पर इतना हावी हो गया था कि, दवे साहब से भी उसने इसी विषय की चर्चा छेड़ दी और जब पाया कि, लेखकों के संबंध में उनके अनुभव भी कुछ उसके जैसे ही हैं, तो उसकी परेशानी और बढ़ गयी। वह बोला –"ये लेखक! क्या ये ही अनुभूति की, आदर्श की, कला की सृष्टि के सूत्रधार हैं? क्या ये ही नयी और भव्य सृष्टि की रूपरेखा बनायेंगे....?" प्रकाश की बात जब भाषण का रूप धारण करने लगी, तो उसकी भूल सुधारते हुए दवे साहब ने कहा –"प्रकाश भाई, इसमें हमारी और आपकी भूल है। हम यह क्यों मान बैठते हैं कि, लेखक दूसरे व्यवसाय वालों की अपेक्षा ऊँची कक्षा में होते हैं? व्यापारी जैसे व्यापार करता है, वकील जैसे वकालत करता है, वैद्य जैसे दवाई बनाता है और देता है, ठीक वैसे ही लेखक लेखन करता है। जब हम व्यापारी, वकील और वैद्य से महानता की आशा नहीं रखते तो केवल लेखक को ही महान् क्यों समझें?" फिर मुस्करा कर उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ायी –"मेरे विचार में तो बात बिल्कुल स्पष्ट है। लेखक केवल लेखक है, और कुछ नहीं। फिर हम उनके लिए कहाँ लिखते हैं! इसलिए हम तो अपना कर्तव्य करते चले जायें।"

कर्तव्य की बात तो सही है। पर किसके लिए हम कर्तव्य निबाहें? साहित्य-रसिक-जनता के लिए, जो दस साल में एक हजार, अर्थात् साल भर में सौ प्रतियाँ भी नहीं खरीदती। यह सोच कर प्रकाश मन-ही-मन व्यंग्यपूर्वक हँस उठा। कुछ भी समाधान पाये बिना ही, वह दवे साहब से विदा लेकर अपने घर की ओर चला।

वह विचारों की इन्हीं गुत्थियों से जूझता हुआ चला जा रहा था कि, पीछे से किसी ने उसके कंधों पर हाथ रख कर हँसते हुए कहा—"कौन-से महाकाव्य के विचार में घूम रहे हैं, कविराज?" जैसे वह अचिंत्य निद्रा से जाग उठा, चकित दृष्टि से अगल-बगल देखता खड़ा रह गया।

यह देख कर मित्र हँसने लगा। उसने पूछा –"रास्ते में भी क्या आप सोते जा रहे थे? दो बार पुकारा तो भी नहीं सुना।"

"जरा विचारों में डूबा चला जा रहा था जगदीश भाई, सो ख्याल न रहा; बुरा न मानियेगा"– प्रकाश ने मित्र का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा –"पर आप इधर कैसे आ निकले?"

"सोचा था, आपसे मिलता चलूँ। अच्छा ही हुआ कि, आप रास्ते में मिल गये। पर आप तो .....।"

"अरे चलिए न, मुझे कोई भी काम नहीं है – और फिर आज मुझे साथी की जरूरत भी है।"

"तो चलिए"– जगदीश ने कहा– "मैं एक मित्र के घर गया था।" कह कर जगदीश ने, जिस दिशा की ओर से वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन ब दिन ब

दिन ब दिन ब

रेक्सोना साबुन

से आप की जिल्द निरवरती चली आती है।

रेक्सोना में जिल्द को सुंदर और स्वस्थ बनाने वाले तेलों का एक विशेष मिश्रण 'कॅडिल' मिला है जो आपकी जिल्द को ज़्यादा साफ़, ज़्यादा कोमल और ज़्यादा सुंदर बनाता है। अपने सौंदर्य के लिए रेक्सोना इस्तेमाल कीजिये!

रेक्सोना प्रोप्राइट्री लि० ऑस्ट्रेलिआ के लिए हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने भारत में बनाया

RP. 161-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आया था, उसकी ओर संकेत किया। और देखते ही प्रकाश की दृष्टि एक घर पर पड़ी। जैसे उसे कुछ याद आ गया। वह बोला —"देखिए, जगदीश भाई, उस मकान में मेरे एक मित्र रहते हैं; अर्से से मुलाकात नहीं हुई; पर कल सुना कि, उनकी पत्नी बहुत बीमार है। आपको उज्र न हो तो पाँच मिनट के लिए वहाँ हो आयें। बस फिर बिल्कुल स्वतंत्र! सामने से निकले हैं, तो चलो हो आयें।"

जगदीश भाई को कोई उज्र नहीं था। दोनों मित्र जल्दी से सीढ़ी पर चढ़े। प्रकाश ने मित्र के दरवाजे पर की बेल दबायी, और जगदीश से कहा —"खूब पैसा पैदा किया है इसने पिछले पाँच वर्षों में।"

"इस जमाने में किसने नहीं कमाया है, भला?" जगदीश ने कहा।

"हमने"— प्रकाश के स्वर में कुछ कटुता उभर आयी।

"हमारा तो पेशा ही ऐसा है। रुपये-पैसे हमारे भाग्य में कहाँ!" जगदीश हँसा। इतने में द्वार खुला। किसी अपरिचित स्त्री ने दोनों को घर में दाखिल करते हुए पूछा—"किससे मिलना है?"

"नवीन भाई से.... क्या घर पर नहीं हैं?"— प्रकाश ने पूछा।

"हैं; आइए न"— स्त्री ने कहा। फिर दोनों को ड्राइंग रूम में बैठाते हुए उसने बात आगे बढ़ायी—"जसु बहन बहुत बीमार हैं। इसलिए वे उसके पास बैठे हैं। अभी भेजती हूँ। पर हाँ, आपका शुभ नाम?"

"प्रकाश.....प्रकाश झवेरी।"

"ओ हो....आप ही हैं। नवीन भाई को भेजती हूँ।" स्त्री भीतर चली गयी।

क्षण भर में नवीन आ पहुँचा। उसके चेहरे पर श्रम और चिंता के तथा आँखों में रतजगों के स्पष्ट चिह्न दृष्टिगोचर हो रहे थे। उसने हँसने का प्रयत्न-सा करते हुए कहा—"आइए प्रकाश भाई।"

"जसु बहन की तबियत कैसी है?" प्रकाश ने खड़े होते हुए पूछा।

"बहुत खराब है"— नवीन की आवाज में ग्लानि स्पष्ट ध्वनित हो रही थी —"पर बैठिए प्रकाश भाई।"

"इस ओर से जा रहा था"— प्रकाश ने बैठते हुए कहा —"सुना कि, जसु बहन की तबियत खराब है, तो सोचा चलूँ, मिलता चलूँ।"

"यह अच्छा ही किया आपने"— नवीन ने कहा —"वर्ना मुझे स्वयं आपको बुलाने आना पड़ता।"

"क्यों, क्या बात थी?" प्रकाश ने चकित होकर पूछा।

"जसु को पहले टाईफाइड हुआ, और फिर उससे न्यूमोनिया हो गया। बड़ा तीव्र एटेक है। डाक्टर कहते हैं, पूरा आराम देने की जरूरत है। पर पिछले दो-तीन दिनों से उसे न जाने क्या हो गया है कि, वह आपको ही याद करती रहती है। पूछती है —"प्रकाश भाई क्यों नहीं आते हैं?" किसी ने बात-ही-बात में आपको याद किया होगा, और यहाँ तो आप आये ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

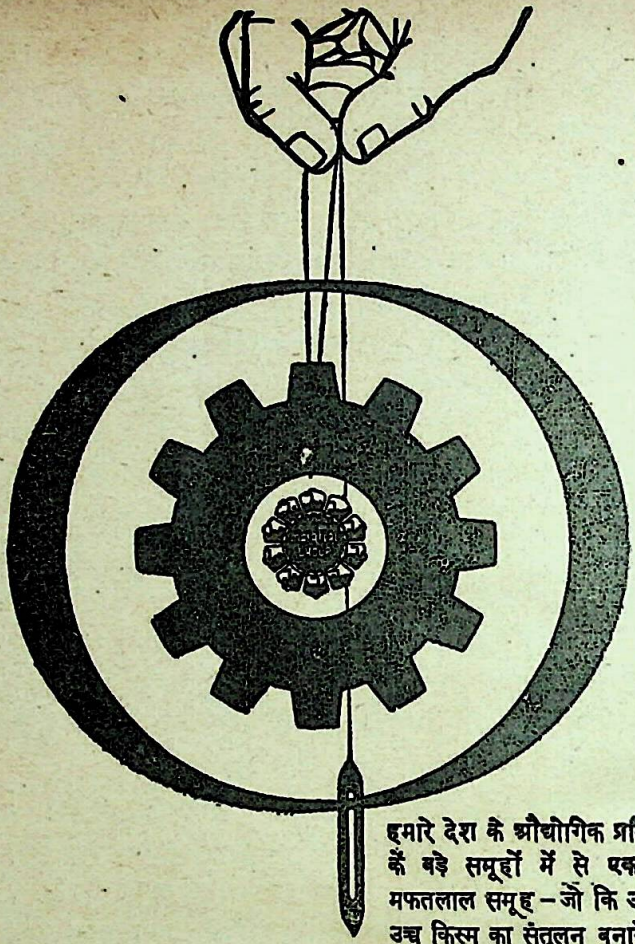

हमारे देश के औद्योगिक प्रतिष्ठानों
के बड़े समूहों में से एक है
मफतलाल समूह – जो कि उत्पादन में
उच्च किस्म का संतुलन बनाये हुए है।
इस समूह से संबधित अनेक कपड़े की
मिलें जो कपड़ा बनाती हैं वह डिझाइन बनावट व रूपरंग में बेजोड़
होता है। आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह समूह प्रत्यक्ष रूप में हजारों
और अप्रत्यक्ष रूप में लाखों लोगों की रोजी का साधन है।
कई लाख लोग इस समूह से लाभान्वित हैं।

मफतलाल मिलों का समूह प्रगति के साथ चलनेवाला
शॉरॉक, अहमदाबाद। न्यू शॉरॉक, नड़ियाड़। स्टेण्डर्ड, बम्बई। न्यू चाइना,
बम्बई। ससून, बम्बई। न्यू यूनियन, बम्बई। सूरत कॉटन, सूरत व
देवास। मफतलाल फाइन, नवसारी। गगलभाई जूट, कलकत्ता।

दुसरे उद्योग: रुई - शक्कर - रंग मफतलाल हाउस, बैकबे रिक्लेमेशन, बंबई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं हैं – यों कभी-कभार मैंने कहा होगा, इससे आपके अनागमन की बात उसके चित्त में जम गयी है..... चलिए आपको मिला दूं उससे।"

नवीन भीतर जाने के लिए उठा। इतने में प्रकाश ने कहा –"यें है मेरे मित्र जगदीश पटेल। नाम तो....."

"इनका नाम किसने नहीं सुना होगा !" नवीन ने जरा रुक कर कहा–"इनको भी जसु के पास ले चलिए। वह खुश होगी।"

दोनों मित्र भीतर गये। वहाँ का वातावरण शांत होते हुए भी भयप्रद था। सभी के चेहरों पर – नर्स तक के–एक प्रकार के भय की परछाई पड़ी हुई थी। नवीन ने भी परदा उठा कर मित्रों को अंदर ले जाते समय, अपने ओंठों पर चुप रहने के इशारे के लिए अंगुली रखी। दबे कदमों सब मरीज के बिस्तर के पास पहुँचे।

जसु को देखते ही प्रकाश हैरान रह गया। क्या यही है वह जसु? कितनी हँसमुख, चंचल और तरुणी थी वह! और यह? इसके चेहरे पर तरुणाई तो क्या, जीवन के भी लक्षण नहीं। बाल निस्तेज, भूरे, बाँधने का प्रयत्न करने पर भी बंधन तोड़ कर इच्छानुसार बिखरे हुए। आँखें गहराई में धँसी हुईं। मानो दस-पंद्रह मील दौड़ कर आयी हो, इस तरह धड़कता हुआ सीना। पलंग तक को हिलाता हुआ श्वासोच्छवास। चेहरे और ओठों पर रक्तिमता की छाया तक नहीं। दुःख–भरा चेहरा लिये प्रकाश जसु के बिस्तर के पास खड़ा रहा। जसु के कान के समीप अपना मुंह ले जाकर नवीन ने कहा –"जसु, पहचानती है प्रकाश भाई को? उन्हें याद करती थी न?"

जसु की आँखों में क्षण भर परिचय चमक उठा। पल भर उसके अधरों ने हँसने का प्रयत्न किया। और फिर उसने बिस्तर के दोनों ओर निश्चेष्ट से पड़े हुए अपने हाथों को जोड़ कर नमस्कार करने का प्रयत्न किया। कितना करुण था वह प्रयत्न! जैसे वे हाथ बड़ा बोझ थाम कर ऊपर उठने का प्रयत्न कर रहे हों। प्रकाश की आँखें सजल हो गयीं। उसने कहा –"आराम कीजिए जसु बहन, आपको व्यर्थ कष्ट हो रहा है।"

उत्तर में जसु के ओठ कुछ हिले, पर उनसे निकली आवाज प्रकाश के कानों तक न पहुँच सकी। नवीन ने जसु के मुंह के पास अपना कान रखा और फिर प्रकाश से कहा –"यह कहती है कि, मैं आपको बहुत याद करती थी।"

जसु के ओठ पुनः खुले। इस बार तो प्रकाश ने ही जसु के मुंह के पास अपना कान रखा। आवाज बहुत मंदी थी – नजदीक से भी बड़े श्रम से सुनी जा सके ऐसी – फिर भी उसमें आनंदानुभूति का रणत्कार स्पष्ट अंकित था – "आपकी अंतिम कविता मुझे बहुत पसंद आयी।"

"अरे जसु बहन, ऐसी हालत में भी आप यह सब याद रखा करती हैं?" प्रकाश ने आश्चर्य-चकित होकर कहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रीज़

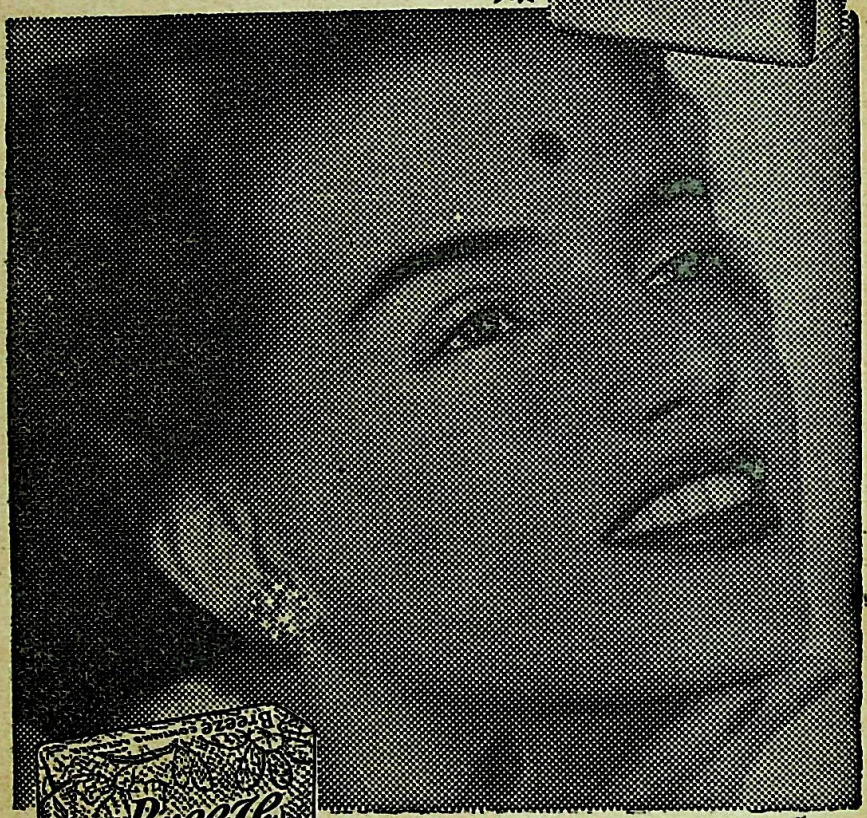

'एक्टमर' (वाइथियोनॉल)
अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन द्वारा स्वीकृत है।

ब्रीज़ — अधिक सुंदर, अधिक स्वस्थ रंग रूप के लिए!

ब्रीज टॉयलेट साबुन आप की जिल्द को साफ़ करने के साथ साथ इसे स्वस्थ भी बनाये रखता है। नर्म असर, सुहानी सुगंध वाले ब्रीज में 'एक्टमर' मिलाया जाता है जो जिल्द को हानिकारक कीटाणुओं से छुटकारा दिलाता है।
याद रखिये, ब्रीज के इस्तेमाल से आप अपने रंग रूप की देख भाल भी करती हैं और तन की ताजगी भी पाती हैं। एतबार के लिए एक बार आजमा के देखिये।

ब्रीज़ टॉयलेट साबुन–जिल्द की तंदुरुस्ती के लिए 'एक्टमर' युक्त

BZ. 13-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने, इरॅस्मिक कं. लि., लन्डन, के लिये भारत में बनाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर इस ख्याल से कि, ऐसी व्यर्थ की बातों में मरीज की ताकत को नष्ट नहीं करना चाहिए, उसने बात बदल दी– "जसु बहन, ये हैं मेरे मित्र जगदीश पटेल। नाम तो आपने सुना ही होगा।"

जसु की आँखों में आनंद चमक उठा। उसके ओठ पुनः मुस्कराने के लिए खुलने का प्रयत्न करने लगे, और उसके दोनों हाथ भी ..... पर नवीन ने उसे रोका। प्रकाश ने भी कहा –"जसु बहन, आप अधिक श्रम न कीजिए। इतने शिष्टाचार की आवश्यकता नहीं।"

जसु को अपनी अशक्ति पर क्षोभ हुआ। उसने जोर से बोलने का प्रयत्न किया; पर आवाज अत्यंत मंद निकली। फिर भी प्रकाश, और पहले से कुछ अधिक समीप खड़े हुए जगदीश ने उसकी ध्वनि सुन ली–"आपकी कहानियों ने मुझे बहुत आनंद दिया है।" और एक क्षण –शायद क्षणार्ध– के लिए उसके तेज–विहीन मुख पर आनंद का भाव कुछ तेज प्रकट कर गया।

आनंद का अतिरेक भी रोगी को हानि पहुँचा सकता था, इसलिए दोनों मित्रों ने "जल्दी स्वस्थ हो जाइए, जसु बहन; हम फिर आयेंगे"– कहते हुए विदा ली। सीढ़ी पर दोनों को विदा देते हुए नवीन ने कहा –"मैं आपका बहुत ही आभारी हूँ, प्रकाश भाई। इतने दिनों में मैंने आज ही उसके मुख पर आनंद की ये लहरें देखीं है।"

सीढ़ी उतरते और पुनः विचार में खोए हुए प्रकाश से जगदीश ने कहा – "प्रकाश भाई, आप कहते थे न कि, आपका मित्र पिछले पाँच-सात साल में बहुत धनवान् हो गया है; किंतु हम भी क्या कम धनवान् बने हैं? आपने देखा न?"

"मैं भी यही सोच रहा था"– प्रकाश ने कहा। और उसके चेहरे पर भी एक क्लेश-विहीन कृतज्ञता की, कृतकृत्यता की उदार मुस्कान खेल उठी.....

चिरस्थायी मुस्कान।

✶

मैं पूना गया, तो भारतरत्न महर्षि धोंडो केशव कर्वे के दर्शन करने उनके घर भी गया। कुछ वर्ष पूर्व मैंने उनकी आत्म-कथा 'लुकिंग बैक' का कन्नड में अनुवाद किया था; सो पत्र-व्यवहार द्वारा वे मुझसे परिचित थे। बड़े प्रेम से मिले। स्त्री-शिक्षा, समाज-सुधार और दीर्घ-जीवन आदि विषयों पर बातें होती रहीं। फिर उन्होंने पूछा–"आपके कितने बच्चें हैं?" मैंने बताया कि, आठ हैं। वे बोले–"तो राष्ट्र को आपकी देन मुझसे दुगनी है।" महर्षि से मेरी राष्ट्र-सेवा दुगनी! बात मेरी समझ में नहीं आयी। प्रश्नात्मक दृष्टि से मैंने महर्षि को देखा। "समझे नहीं आप? मेरे चार ही बच्चे हैं और आपके आठ ... चार के दुगने आठ।"—महर्षि मुस्कारते हुए बोले और हँस पड़े। आखिर वे गणित के प्राध्यापक थे!

—एच० योगनरसिंहम्

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्त संसार में सुपरिचित

लिचेन्सा—गर्म देशों में होनेवाले समस्त प्रकार के चर्मरोगों के लिए निर्दोष तथा आरामप्रद मलहम है। लिचेन्सा खाज़ खुजली, एकज़ीमा, दाद, चकता, फोडा तथा जलन और घाव आदि को शीघ्र आराम करता है। बवासीर की विश्व-विख्यात औषधि 'हडेन्सा' के प्रस्तुतकारक ही लिचेन्सा के भी निर्माता हैं।

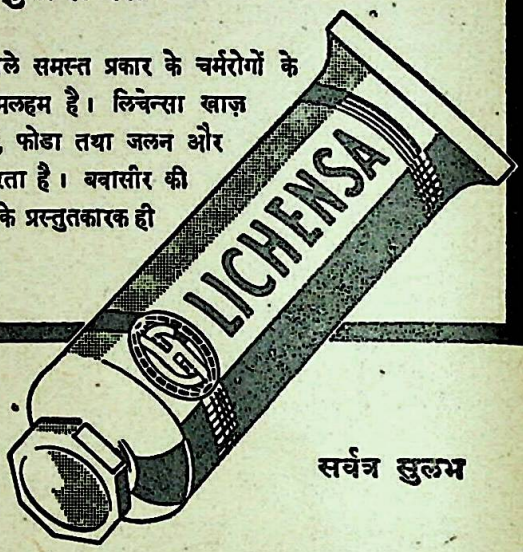

सर्वत्र सुलभ

DCZ-2HIN

आर्यन

आपके दांतोंके अनुरूप है

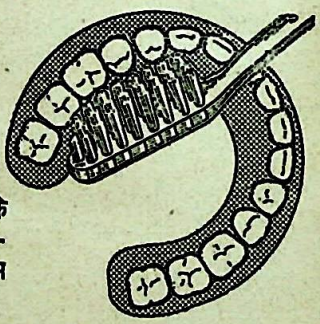

जब आप अपने दांतोंकी देखभालके लिये यथोचित आकार-प्रकारके आर्यन ब्रशपर भरोसा करेंगे तो आप निश्चिन्त रह सकते हैं कि इससे आपके सभी दांतों के सभी हिस्से पूर्ण-तया साफ हो जायेंगे।

प्रामाणिक व बच्चे के आकारों में प्राप्य। प्लास्टिकके डब्बेमें डिलक्स क्वालिटी भी।

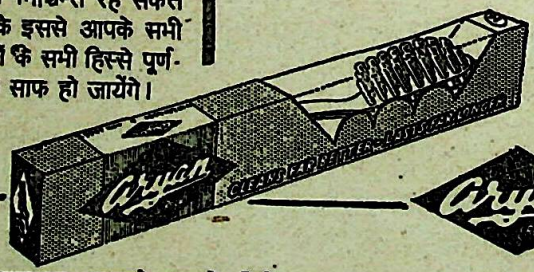

बहुत अच्छी तरह से सफाई करता है और अत्यधिक टिकाऊ है।

Aryan

प्रभावकारक साबुनके झागके लिये—

हमेशा आर्यन शेविंग ब्रश इस्तेमाल करिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्णय

माणिक बंद्योपाध्याय की मर्मस्पर्शी बंगला लघुकथा का संक्षिप्त हिन्दी-रूपांतर

★

बीस-वर्षीया सुनीति अपने दोनों देवरों की देख-भाल में, चुपचाप अपने वैधव्य के दिन काट रही थी। बड़े देवर का नाम विनय था। वह ग्रेजुएट था और किसी जूट मिल में काम करता था; उम्र होगी सुनीति के ही बराबर।

सुनीति उसके लिए लक्ष्मी-सी बहू की तलाश में थी। उसने निश्चय कर लिया था कि, अब के अगहन के पहले विनय को गृहस्थी के बंधन में बाँध देगी।

छोटे देवर का नाम पंचू था। बारह वर्ष का लड़का, स्कूल का विद्यार्थी।

एक दिन सुबह पंचू बिस्तर से उठकर दालान में आ ही रहा था कि, देहलीज से ठोकर खा कर धम से गिर पड़ा।

सुनीति तुरंत आ पहुँची। पंचू को उठाया, चोट जरा गहरी थी। सुनीति ने पंचू को गोद में बिठा लिया, उसकी पीठ सहलायी और तरह-तरह से लाड़-प्यार किया। किसी तरह पंचू चुप हो गया।

पड़ौसी सरकार-परिवार की बड़ी बहू तब वहीं उपस्थित थी।

"बेटी तुम्हारी बड़ी उम्र हो," उसने सुनीति को आशीर्वाद देते हुए कहा—"पंचू की तुम भाभी क्या, साक्षात् माँ हो।"

धीरे-धीरे यह बात चारों तरफ फैली। सारा-का-सारा मोहल्ला सुनीति की बड़ाई से गूंज उठा—"कैसी भली लड़की है। देखो, देवरों के लिए कितना मरती-खपती है?"

कुछ दिनों बाद, एक दिन दोपहर को विनय दफ्तर से लौटा, तो बुखार में था। हालाँकि टेम्परेचर कोई ज्यादा नहीं था; पर मारे दर्द के सिर भन्ना रहा था।

सुनीति ने उसे झट पलंग पर लिटा दिया। बेचैनी से विनय करवटें बदल रहा था और कराह रहा था।

उसकी व्याकुलता देख, सुनीति का दिल भर आया। वह पलंग पर बैठी। स्नेह से विनय के सिर को अपनी गोद में रख लिया। फिर सिर दबाते हुए जरा झुक कर बोली —"क्या बहुत दर्द है?"

तभी सरकार-परिवार की बड़ी बहू की आवाज आयी —"कहाँ हो बेटी?" और साथ ही वह स्वयं भी दालान में आ पहुँची। झाँक कर भीतर का दृश्य देखा, तो सन्न रह गयी और दूसरे ही क्षण उल्टे पाँव वह लौट गयी।

तुरंत रिपोर्ट फैल गयी। सारा मोहल्ला कहने लगा —"देखो तो, कैसी बदचलन औरत है!"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दांत निकलने की तकलीफ़ ?

पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन से बच्चों के दांत हंसते खेलते निकल आते हैं!

पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन से बच्चों के दांत हंसते खेलते निकल आते हैं! दांत निकलने की पीड़ा हो या मसूड़े दुखते हों तो उंगली पर नर्म कपड़े की पट्टी लपेट कर पिरॅमिड ग्लिसरीन में डुबोइये और बच्चे के मसूड़ों पर हलके हलके मलिये— झट आराम आ जायगा। बच्चों को इसका मीठा मजेदार स्वाद बहुत अच्छा लगता है। यह शुद्ध है और घर के और कई काम आती है। घर में सदा एक शीशी रखिये।

मुफ़्त पत्रिका! यह कूपन भर के इस पते पर भेजिये :
हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, पोस्ट बक्स नं. ४०९ बम्बई १

कृपया मुझे पिरॅमिड छाप ग्लिसरीन के घरेलू उपयोगों की मुफ्त पत्रिका भेजिये।

मेरा नाम और पता

_____
_____
_____

मेरे कॅमिस्ट का नाम और पता

_____
_____
_____ N. M. B.

विज्ञापक : आर. सी. आर. (आइ.) प्र. लि., बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इब्नबतूता की रोमांचक यात्रा

"चलने वाले की पिंडलियाँ पुष्ट होती हैं और आत्मा फलवती"– यह उपनिषद् के ऋषि का क्रांत - दर्शन था। पर्यटन से चरणों की पुष्टि आनुषंगिक है; उसमे जीवन की अचिंत्य विराट्ता और विश्व की नानारूपता का जो भव्य दर्शन होता है, वही सच्चा फलागम है। चौदहवीं सदी के अफ्रीकी पर्यटक इब्नबतूता की अफ्रीका के पश्चिम छोर से चीन के पूर्वी तट तक की साहस-यात्रा का वृत्तांत मानो, इस सत्य का सटीक भाष्य है, जो अगले पृष्ठों में प्रस्तुत किया गया है। 'नवनीत' प्रयत्नशील है कि, इसके मूल स्रोत बतूता-रचित 'रेहला' के और भी रोचक रस-प्रसंग पाठकों को निकट भविष्य में उपलब्ध हो सकें।

CC-0. Mumukshu

चीन की जमीन पर पैर रखते ही, मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और सरे-बाजार मुझे जंजीरों में बाँध कर राज-महल की तरफ ले जाया गया। ज्यों-ज्यों मैं आगे-आगे बढ़ता जाता था, त्यों-त्यों शहरियों का झुंड मेरे पीछे-पीछे घना होता हुआ, तरह-तरह के नारों से जमीन-आसमान एक कर रहा था। करीब एक मील तक, मुझे इसी प्रकार के प्रचंड जुलूस के साथ ले जाया गया। जंजीरों से मेरे हाथ-पाँव जकड़े हुए जरूर थे; मगर किसी सिपाही ने मेरे साथ बुरा सलूक नहीं किया था। आखिर मुझे एक पिंजरे के पास ले जाया गया, जो एक आलीशान इमारत के सामने रखा था। मैंने देखा, उस पिंजरे में चार-पाँच पिटारे रखे हुए थे। पिटारे बंद थे और ढक्कन के तौर पर बड़े-बड़े पत्थर उनके ऊपर तरतीब से जमा कर रखे गये थे। मेरे पिंजरे के करीब पहुँचते ही, सारा हजूम काफी दूर हट कर, एक गोलाकार व्यूह में बदल गया। एक सिपाही आगे बढ़ा और उसने पिंजरे का दरवाजा खोल कर मुझे पिंजरे में जाने के लिए कहा। मेरे हाथ-पैर की जंजीरें खोल दी गयीं और सिपाही के आदेश के अनुसार, मैं पिंजरे के अंदर चला गया। मेरे पिंजरे के अंदर जाते ही, उपस्थित जन-समूह ने फिर नारे लगाये, जिनका अर्थ मैं कुछ भी नहीं समझा।

क्षण-भर सिपाही मेरी ओर ताकते रहे। फिर उन्होंने मुझसे उन पिटारों को खोलने के लिए कहा। उन्होंने तेज निगाहों से मुझे देखा और वे अपने धनुष-बाण चढ़ा कर पिंजरे से काफी दूर खड़े हो गये। जब मैंने पिटारा खोलने के लिए हाथ बढ़ाया, तो मेरा हाथ थर-थर काँप रहा था। खुदा का नाम लेकर, मैंने पूरी ताकत के साथ, एक बड़े-से पिटारे का ढक्कन उठाया। उपस्थित जन-समूह के कंठ से एक चीख निकली और चारों तरफ भगदड़-सी मच गयी। मैंने सामने देखा, तो भय से चिल्ला उठा – इस पिटारी में से कोई बीस-पच्चीस काले साँप बाहर निकल पड़े। मैं हक्का-बक्का वहीं खड़ा रह गया। भागने की ताकत पैरों में नहीं थी। वे साँप पूरे क्रोध में मुझ पर झपटे। इतने रूपों में मृत्यु को सम्मुख देख कर, डर से मेरी आँखें बंद हो गयीं। साँप उछल-उछल कर मेरे शरीर पर गिर रहे थे।

जब मुझे होश आया, तो मैंने अपने को एक झोपड़ी में, एक खटिया पर सोते पाया। मैंने चारों तरफ देखा। एक खूबसूरत औरत अपने कोमल हाथों से मेरे शरीर पर पंखा झल रही थी। मुझे आँखें खोलते देख, उसने होठों पर उँगली रखते हुए, मुझे मौन रहने का आदेश दिया। मैंने फिर आँखें बंद कर लीं।

जब रात हो गयी और चारों तरफ घटाटोप अँधियारा छा गया, तो वह औरत एक दीपक लेकर मेरे मुँह के पास आयी और जब मैंने उसके प्रदीप्त चेहरे को देखा, तो दीपक को नीचे रख कर, वह मुझसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिपट कर रोने लगी। मैंने उसे अलग करने की कोशिश करते हुए, सांत्वना देने की चेष्टा की; किंतु वह थी कि मुझे अपने बाहुपाश से छोड़ती ही नहीं थी। वह फूट-फूट कर रो रही थी। मैं उठ बैठा; मगर दूसरे ही क्षण वापस खटिया पर पड़ गया—शरीर बिल्कुल चूर हो रहा था। बैठने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। मेरे पलंग पर गिरते ही, उस औरत ने दौड़ कर शीशे की एक सुराही में से एक गिलास उड़ेल कर मुझे पिलाया। स्वाद तो शराब-जैसा था; मगर वह कोरी शराब ही नहीं थी, और भी कुछ उसमें मिला हुआ था। उस पेय से मुझे एकदम ताजगी मिली—सारे शरीर में एक बिजली दौड़ गयी हो, ऐसा अनुभव हुआ।

हाट की ओर
[आइसेंम्टाइन-कृत स्केच]

तब उसने मुझे अपने सहारे से उठाया और दरवाजे के बाहर घोड़ा-गाड़ी में बिठा-कर मेरे सामने ही बैठ गयी। गाड़ी तेजी से चल दी। एक पहर तक हम लोग चलते रहे। चारों तरफ अँधेरा था; मगर उस औरत के पास एक अंगूठी थी, जो इतनी तेज चमक रही थी कि, उससे गाड़ी का सारा भीतरी भाग रौशन था। गाड़ी से उतर कर हम लोग एक पुराने देवस्थान में घुसे, जहाँ एक पुरोहित ने हम दोनों के सिर पर कुछ छिड़का और मेरे हाथ में उस औरत की बाँह देकर कुछ कहा, जो मेरी समझ में नहीं आया। हम दोनों फिर गाड़ी में बैठे और जहाँ से रवाना हुए थे, वहीं पुनः आ गये।

एक-दो रोज में यह सारा रहस्य मेरी समझ में आ गया—हम दोनों पति-पत्नी बन गये थे। मेरी उस पत्नी ने मुझे हर तरह का आराम दिया। वह मुझसे बेहद प्यार करने लगी थी। एक दिन मैंने उससे उन साँपों के पिटारों के बारे में पूछा, तो उसने बताया कि, हर विदेशी के साथ यहाँ इसी प्रकार का व्यवहार होता है। यहाँ की प्रथा है कि, जो उस पिंजरे में रखे तीनों पिटारों के साँपों का सामना करके भी जिंदा बचा रहता है, वह इस देश का राजा होता है और उससे यहाँ के राजा की लड़की से शादी होती है। मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा की लड़की हूँ और इतनी उम्र हो गयी, फिर भी क्वाँरी हूँ; क्योंकि कोई भी परदेशी उस पिंजरे के सामने जीवित नहीं बचा है। एक तुम्हीं ऐसे व्यक्ति हो, जो एक पिटारे को खोल कर जीवित बचे हो। अभी तुम्हें दो पिटारे और खोलने हैं। मैं तुम्हारी पत्नी हो गयी हूँ; मगर भविष्य में मेरे भाग में क्या बदा है, इसकी कल्पना से मैं काँप उठती हूँ। यदि तुम साँप के विष से मर गये, तो मैं विधवा हो जाऊँगी और स्वधर्म के अनुसार तुम्हारे साथ ही दफना दी जाऊँगी। दूसरा चाँद उगने के दिन, तुम्हें फिर उस पिंजरे में ले जाया जायेगा और तुमसे दूसरा पिटारा खोलने के लिए कहा जायेगा। मेरे भाग्य से यदि इस बार भी तुम बच गये, तो फिर तीसरे चाँद के उदय के दिन, तुम से तीसरा पिटारा खुलवाया जायेगा। अगर मेरे जीवन में विधाता ने सुहाग लिखा होगा, तो देवता तुम्हें तीसरी बार भी बचा लेंगे।

उसने अपना जो नाम बताया था, वह तो मैं भूल गया; मगर उसने मुझे जिसे ऐशो-आराम से रखा, वह शाहों को ही नसीब होता है। सात-आठ दिन मैंने वहाँ खाने-पीने और नाच-गान में बिताये; मगर चाँद उगने का दिन ज्यों-ज्यों नजदीक आता जा रहा था, मेरे प्राण सूखते जा रहे थे। एक रात को, मैं उसे निश्चिंत सोता ही छोड़, वहाँ से भाग निकला और समन्दर के किनारे आकर, एक डोंगी में सवार हो गया। डोंगी का खेवैया पहले तो आनाकानी करता रहा; मगर जब मैंने उसे अपनी बेशकीमती अंगूठी दे दी, तो वह तेजी से नाव खेने लगा। तीन दिन और तीन रात हम लोग बिना रुके चलते रहे।

तीसरे दिन की रात ज्यों ही शुरू हुई, तूफान शुरू हो गया; नाव समुद्र की लहरों पर गेंद की भाँति थिरकने लगी। हम लोगों ने हिम्मत हार कर सब-कुछ खुदा के भरोसे छोड़ दिया।

× × ×

जब हिंदुस्तान आया, तो वहाँ के शहरों की रौनक देख कर तबीयत बाग-बाग हो गयी। मछुओं के एक गाँव में हम लोग ठहरे। उन लोगों ने हमारी बेहद खातिर की और जब हम जाने लगे, तो हमें आगाह किया कि, जंगल के चीतों से ही नहीं, डाकुओं से भी सावधान रहें। अपने तीन बर्छेधारी जवान भी, उन्होंने हमें मार्ग-प्रदर्शन के लिए दे दिये। दिन-भर चलने के बाद, शाम को हम सब एक नदी के किनारे ठहरे। करीब आधी रात को हमें वहाँ नजदीक ही लोगों का शोर-गुल और रोना-पीटना सुनायी दिया। हम एकदम डर गये। वह रोना-पीटना और काफी नजदीक आ रहा था। हम लोग हथियार बाँध कर तैयार खड़े हो गये। इसी बीच मैंने गाँव से हमारे साथ आये, उन तीन मार्गदर्शकों को भी ढूँढा; मगर कहीं भी उनका पता नहीं चला। मेरे एक साथी ने उन्हें एक चट्टान के सामने घुटने टेके रोते हुए पाया। जब हम उनको उठाने लगे, तो वे सीधे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नदी में कूद पड़े और तेजी से नदी पार करने लगे – तैरते-तैरते बेतहाशा चिल्लाते भी जाते थे, कहते जाते थे – "भागो, भागो! प्रेत तुम्हें खा जायेगा!"

हम लोग हक्के-बक्के हो गये। तभी हमने देखा कि, हाथों में रोशनी थामे बीस-पच्चीस आदमी-औरतें एक अर्थी लिये वहाँ आये। वहाँ श्मशान था। लेकिन ज्यों ही उन्होंने हम लोगों को वहाँ देखा, वे ठिठक कर खड़े हो गये और अर्थी को वहीं नीचे फेंक, पागलों की तरह भाग खड़े हुए– केवल औरतें बच गयीं। थोड़ी देर में तीस-पैंतीस औरतें और आ गयीं। सबके पास तलवारें थीं। उन्होंने हमें पकड़ लिया और अर्थी के साथ बाँध दिया। तब अर्थी को बीच में रख कर, वे तलवारें हाथों में लिये नाचने लगीं। सवेरे तक उनका यह नाच चलता रहा!

सूरज निकलते ही, उन्होंने तलवारें एक जगह कर लीं और हमें अर्थी से छुड़ा कर गौर से देखने लगीं। तभी उनकी मुखिया औरत मेरे पास आयी और मुझे आगे-आगे चलने का संकेत किया।

जब मैं उनके निवास पर पहुँचा, तो मुझे वहाँ दस-बारह आदमियों के सिवाय औरतें-ही-औरतें नजर आयीं। बाद में पता चला कि, वहाँ औरतों का ही राज था। मर्द तो नौकरों की हैसियत से वहाँ रखे जाते थे। वे औरतें आस-पास से जवान मर्दों को चुराती थीं और उनसे उनके जो संतानें होती थीं, उनमें से केवल लड़कियों को जीवित रखती थीं – लड़कों को मार डालती थीं।

× × ×

ऊपर के ये दो प्रसंग, इब्नबतूता के यात्रा-विवरण के कुछ रोचक प्रसंगों में से हैं। अपनी इन यात्रा-कथाओं को बतूता ने 'रेहला' नामक पुस्तक में लिपिबद्ध किया है।

'रेहला' के जर्मन-अनुवादक हैंस वान मजिक ने मध्य-युगीन विश्व के सुप्रसिद्ध यात्रियों में, मार्को पोलो को प्रथम और इब्नबतूता को द्वितीय माना है। पर उसने यह भी सिद्ध किया है कि, यात्रा की अवधि एवं विवरण की दृष्टि से, मार्को पोलो से इब्नबतूता ने बाजी मारी है।

अपनी यात्राओं के बीच, इब्नबतूता ने कई देशों में काजी के रूप में भी सफलता-पूर्वक कार्य किया था; विविध समाजों में उसका सम्मान था और साथ ही उसे 'फाकी' की तरह समझा जाता था। 'फाकी' शब्द उस समय उद्भट विद्वान्, चिकित्सक एवं विधि-वेत्ता के लिए प्रयोग किया जाता था।

अपनी यात्राओं की पुस्तक 'रेहला' में, इब्नबतूता ने प्रसंगवश इस्लाम और हदीस (पैगम्बर की वाणी) के उच्च-कोटीय साहित्य का भी उल्लेख किया है, जो उसने अरब, मिस्र और इराक के प्रसिद्ध लेखकों और प्राध्यापकों की छत्र-छाया में पढ़ा था।

इब्नबतूता लेखन-कला से बिल्कुल अनभिज्ञ नहीं था। स्मृतियों को संजोने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहां चाहिये वहां
आप रोशनी कीजिये,
जहां चाहिये वहां
आप आग जलाइये...

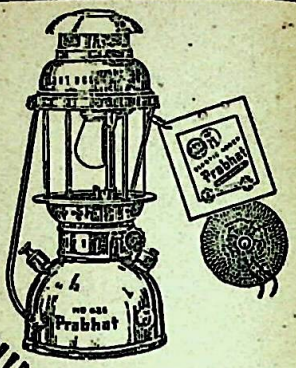

प्रभात

लैम्प्स व स्टव्स

प्रभात के लैम्प्स व स्टोव्स अपनी कार्यक्षमता के अतिरिक्त, वजन में हल्के हैं। इनके पार्ट-पूर्जों में पूर्णतया समन्वय है तथा ये मजबूत हैं. यानी आप रोशनी व आग के लिये जहां चाहिये वहां इन्हें ले जा सकते हैं।

यात्रा, पार्टी, पिकनिक, कैम्पिंग आदि के लिये बहुत ही सुविधाजनक।

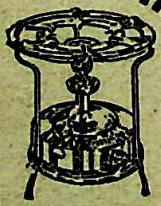

"भारत के प्रथम... अबतक सर्वोत्तम!"

प्रभात (स्टोव ॲण्ड लैम्प) प्रॉडक्टस कम्पनी प्राइवेट लि.
नोबल चैम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई-१.

HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वभाव और सम्पर्क में आयी हर वस्तु एवं व्यक्ति की तह तक पहुँचने की उसकी आदत से सिद्ध होता है कि, वह अपनी यात्राओं की मोटी-मोटी बातें लिख लिया करता था। उसने बुखारा में कई संस्मरण लिखने का उल्लेख किया है, जो अन्य वस्तुओं के साथ-साथ उस समय खो गये थे, जबकि मलबार समुद्र-तट के पास, भारतीय डाकुओं ने उसे लूट लिया था। यात्रियों की सूची में सर्वोपरि स्थान दिलाने में, केवल उसकी अभूतपूर्व यात्रा का ही नहीं, अपितु उसकी अनुपम पुस्तक 'रेहला' का भी महत्वपूर्ण योग है, जिसे उसने 'जादू या करामात की किताब' ठीक ही कहा है। सचमुच यह पुस्तक तत्कालीन इतिहास की खान और मनोरंजक विवरण से भरपूर है।

अपनी ७७,६४० मील से भी अधिक लम्बी एवं कष्टप्रद यात्राओं के बीच, तेज झरनों, झुलसते रेगिस्तानों, भयावह दर्रों, धूलि-धूसरित सड़कों और गहन-गंभीर एवं अज्ञात समुद्रों से गुजरते हुए, इब्नबतूता को न जाने कितनी विपत्तियों का सामना करना पड़ा था! ७७,६४० मील में से, १४,३१८ मील से भी अधिक की दूरी उसने भारत, मालदीप एवं चीन की यात्राओं में नापी थी। यह उसकी सम्पूर्ण यात्रा का सर्वाधिक मनोरंजक भाग है।

इस्लाम-प्रधान जगत् में, उसने लगभग सभी महत्वपूर्ण स्थान देखे थे— जैसे मक्का, मदीना, सिकंदरिया, काहिरा, दमिश्क, बगदाद, नजफ, इस्पहान, शीराज, कुफा, कर्बला, फिलस्तीन, त्रिपोली, समरकंद, खुरासान, बुखारा, ख्वारिस, बल्ख, हेरात, निशापुर, गज़नी, काबुल, देहली, सोनारगाँव, सार्डिनिया, जिब्राल्टर, ग्रेनाडा और फेज आदि।

इस बीच इब्नबतूता ने, जहाँ-कहीं भी विद्वान्-पंडित और सूफी फकीर थे, ढूँढ़-ढूँढ़ कर उनसे सम्पर्क स्थापित किया था। अपने समय के हर मुस्लिम बादशाह का दरबार उसने देखा था और वह कुस्तुंतुनिया, लंका और चीन जैसे गैर-मुस्लिम देशों में भी गया था। एक यात्री, विद्वान् एवं विचारक के साथ ही, वह एक साहसी अन्वेषक भी था। नयी-नयी जगह

श्रम-निरता

[के० के० हेब्बार की रचना की सरल रेखानुकृति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नयी
साड़ी ?

नहीं- लक्स में धुली है !

शिफ़ॉन, निनॉन, वॉयलें, बढ़िया रेशम—आप के सभी नाज़ुक कपड़े शुद्ध, मुलायम लक्स फ़्लेक्स में धुल कर जगमगा उठते हैं और इन की चमक दमक भी नहीं बिगड़ती।

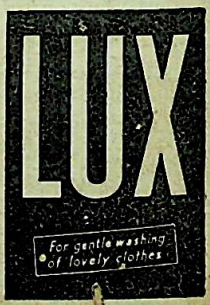

लक्स की धुलाई में क़ीमती कपड़ों की भलाई है

LX. 139-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, बम्बई, का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और रास्ते खोजने, हज्ज करने, इस्लामी धर्म-स्थान देखने और संसार-भर के राजाओं रानियों, राजनीतिज्ञों, विचारकों एवं चरित्रवान् विद्वान् स्त्री-पुरुषों से मिलने की उसमें बलवती इच्छा थी। यही कारण है कि, उसकी पुस्तक में अन्य सब बातों के साथ ही, तत्कालीन ज्ञान-विज्ञान, इस्लामी सभ्यता की प्रतीक बड़ी-बड़ी मीनारों, इमारतों, वहाँ के स्त्री-पुरुषों के विचार, विश्वास, स्वभाव एवं रहन-सहन के ढंग का भी विस्तृत ब्यौरा मिलता है।

हाँ, तो वह १४ जून का दिन था, जब उसने २१ वर्ष की आयु में, अपने रोते-बिलखते माता-पिता से विदा ले, तनजेर से मक्का की ओर प्रस्थान किया। ५ अप्रैल १३२६ को वह सिकंदरिया पहुँचा। वहाँ वह शेख बुरहानुद्दीन अल्लाराज और शेख अबू अब्दुल्ला-अल-मुरशीदी नाम के दो फकीरों से मिला, जिनकी मनोरंजक भविष्यवाणियों ने उसकी विश्वयात्रा-सम्बंधी इच्छा को एक नया मोड़ ही दे दिया।

"तुम मुख्तलिफ मुल्कों की सैर करना चाहते हो न?" शेख बुरहानुद्दीन के पूछने पर इब्नबतूता ने कहा था – "हाँ, जरूर चाहता हूँ।"

इसी प्रसंग में बतूता ने लिखा है कि, तब तक उसने हिंदुस्तान और चीन जैसे सुदूर देशों में जाने की बात तक, मन में नहीं सोची थी।

शेख ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा – "खुदा के फज्ल से तुम्हें हिंदुस्तान में फरीदुद्दीन, सिंध में रुक्नुद्दीन जकरिया और चीन में बुरहानुद्दीन नाम के मेरे भाई मिलेंगे। जब तुम उनसे मिलो न, तब मेरी तरफ से उन्हें मुबारकबाद देना।"

इब्नबतूता का कथन है–"उनके ये शब्द सुन कर, मैं विस्मय-विमुग्ध हो गया। उनसे ही मुझे ये सब देश देखने की प्रेरणा भी मिली और मैंने अपनी यात्रा तब तक चालू रखी, जब तक कि, शेख के इन तीनों भाइयों से न मिल लिया और उन तक शेख की मुबारकबाद न पहुँचा दी।"

इसी तरह सिकंदरिया के निकट फुआ नामक नगर में, शेख अबू अब्दुल्ला-अल-मुरशीदी द्वारा की गयी भविष्यवाणी से भी इब्नबतूता काफी प्रेरित हुआ। एक दिन, जबकि इब्नबतूता उसके यहाँ ठहरा हुआ था, तो शेख ने रात को स्वप्न में देखा––बतूता एक बड़ी चिड़िया के पंखों पर बैठा हुआ था, जो उसे पहले दक्षिण दिशा की, और वहाँ से उत्तर दिशा की ओर उड़ाये ले जा रही थी। फिर वह चिड़िया पूर्व की ओर मुड़ी और पुनः दक्षिण की ओर जाकर उसने अपने सवार–इब्नबतूता – को एक घने और हरे स्थान पर छोड़ते हुए, पूर्व की ओर लम्बी उड़ान भर ली।

सुबह होने पर शेख ने अपने स्वप्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चमकदार ईनो

★ मेदा साफ़ करता है
★ ठण्डक पहुँचाता है
★ पेट ठीक करता है

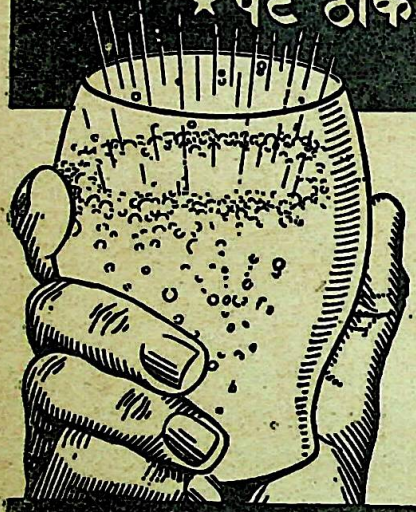

आराम पहुँचाने के
साथ ही तरोताज़गी
भी लाता है

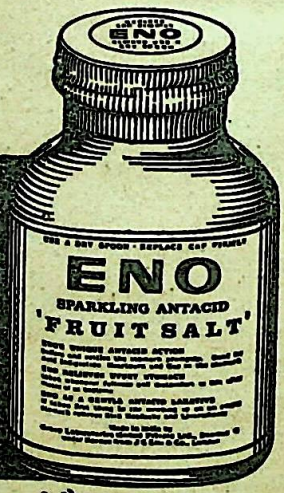

ईनो
'फ़्रूट साल्ट'
पीजिए

'ईनो' और 'फ़्रूट साल्ट'—ये शब्द रजिस्टर किये हुए ट्रेड मार्क हैं
ग्रूप लेबोरेटरीज़ (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की बात इब्नबतूता को बतायी और कहा– "तुम हज करोगे और पैगम्बर की वह कब्र देखोगे, जहाँ अमन का राज छाया हुआ है। यमन, इराक, तुर्किस्तान और हिंदुस्तान वगैरा मुल्कों में भी सफर करोगे और एक लम्बे अरसे तक वहाँ रुकोगे भी। वहीं तुम मेरे भाई दिलशाद से मिलोगे, जो मुसीबत के वक्त तुम्हारी मदद करेगा।"

इस तरह सिकंदरिया से अपने मन में एक नया उत्साह भर, इब्नबतूता हेजाज की तरफ बढ़ा और रास्ते में काहिरा, जरूसलम, त्रिपोली तथा एंटीओक होता हुआ, ९ अगस्त १३२६ को दमिश्क पहुँचा। वहाँ से उसने अपनी यात्रा फिर प्रारंभ की और हज करने के लिए मक्का चला गया, जहाँ वह कई फकीरों से मिला। १७ नवम्बर १३२६ को उसने मक्का से विदा ली और इराक में आया। वहाँ उसने नजफ और कर्बला की कब्रें देखीं। तभी ईरान की संक्षिप्त यात्रा पूरी कर, वह इराक लौट आया और बगदाद देखा। वहाँ से उसने फिर मक्का का कार्यक्रम बनाया; पर रास्ते में ही बीमार पड़ गया। लेकिन तब भी, उसने हिम्मत न हारी, अपनी यात्रा चालू ही रखी और मक्का पहुँच कर, उसने कुछ समय वहीं रुकने का निश्चय किया। फलस्वरूप, वह तीन वर्ष तक वहीं ठहरा और विद्वान् फकीरों के चरणों में बैठकर, इस्लामी दर्शन-विज्ञान का अध्ययन किया। इसके उपरांत, उसने पूर्वी अफ्रीका के लिए प्रस्थान किया, जहाँ से दूसरी हज करने के लिए वह फिर मक्का वापस आ गया। और तब, वह पूर्व दिशा में हिंदुस्तान की ओर बढ़ा; पर जहाज के लिए जेद्दा में ठहर गया। फिर उत्तर दिशा की ओर मुड़ कर एशिया महाद्वीप की दिशा में घूमते हुए, इब्नबतूता कुस्तुंतुनिया आ गया। इसके बाद पूर्व दिशा की यात्रा करते हुए, वह क्रमशः निशापुर, हिंदूकुश, हेरात, काबुल और करमाश आया, जहाँ से १२ सितम्बर १३३३ को वह सिंधु के तट पर आ लगा।

मंजिल कितनी दूर

[पोलिश चित्रकार पाइटर मिग्लोव्स्की की तूलिका से]

सिंधु नदी को पार कर, इब्नबतूता जानानी पहुँचा और उसने क्रमशः सेहवान, लहारी, बुकुर एवं ऊक देखे। तब वह मुल्तान आया और फिर अबोहर, अबुबखार, अयोध्या, सरस्वती एवं मसूदाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि आपका बच्चा इस हालतमें हो

मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर दीजिये

उत्कृष्टता के इस प्रतीक को ध्यान रखें
यह मॅनर्स का उत्पादन है

मातापिताओंके लिये सूचना:

मेनर्स ग्राइप मिक्श्चर ऐसी दवाइयोंके संयोजन से बनाया गया है जो भारतीय बालकोंके लिए विशेष रूप से अनुकूल है। मेनर्स ग्राइप मिक्श्चर का विशिष्ट रंग भी इसी संयोजन के कारण है।

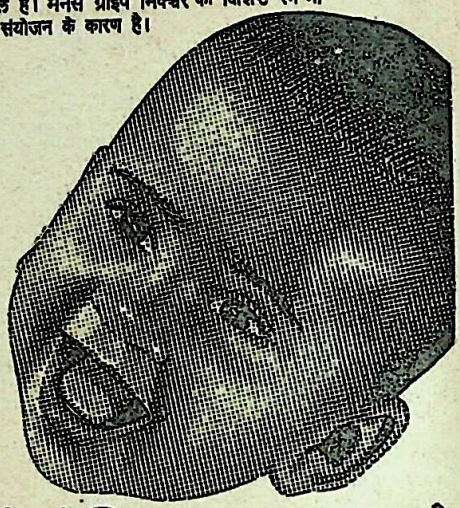

और देखिए मुस्कराहट उसके चेहरे पर फिर खिल उठती है।

GEOFFREY MANNERS & CO PRIVATE LTD.

ASHCH 17

हॅडेन्सा

बवासीर के लिए सभी जगह मिलता है।

DCZ-13 HIN

GC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होते हुए दिल्ली पहुँच गया। यह उल्लेखनीय है कि, वह सदैव टोली के साथ यात्रा करने का बहुत ध्यान रखता था। जब वह दिल्ली पहुँचा, तब भी उसके साथियों की संख्या चालीस थी।

९ जून १३३४ को दिल्ली में बतूता काजी नियुक्त हुआ और उसे सराय-प्रबंधक का कार्य-भार सौंपा गया। तदनंतर, अगस्त १३३६ में वह कार्यवश अमरोहा और अफगानपुर गया।

१३४० में उसने शाही टोली के साथ, बहराइच-स्थित सालार मसूदा गाजी की कब्र पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए, गंगा और उसकी सहायक नदी सरयू को पार किया। वहाँ से १३४१ में वह दिल्ली लौट आया। इसके तुरंत बाद ही, इब्नबतूता सांसारिकता को त्याग शेख कमालुद्दीन अब्दुल्ला घरी की सेवा में, फकीरों की टोली में शामिल हो गया। बादशाह ने उसे सेहसवान में बुलाया और पुनः काम देने और लौट आने की इच्छा प्रकट की; पर इसके लिए उसने मना कर दिया और विनम्रता-पूर्वक मक्का जाने की आज्ञा माँगी, जो उसे जुलाई १३४१ में मिल गयी। पर सितम्बर १३४१ में उसे चीन जानेवाले शाही दूतावास का पथ-प्रदर्शन करने को कहा गया, जिसके लिए वह सहर्ष तैयार हो गया।

इस अवधि के बीच, एक बार उसने किसी व्यक्ति को जल्लाद की तलवार के नीचे देखा। बतूता ने ग्वालियर के सूबेदार अहमद-बिन-शेर खाँ से इस आशय की सिफारिश करके कि, वह अपनी आँखों के सामने किसी को मरते नहीं देख सकता, उस व्यक्ति को मौत के मुँह से बचा लिया। एक दूसरे मौके पर, जबकि वह पुराने बादशाह जलालुद्दीन खिलजी के दिल्ली-स्थित महल को देख रहा था, तो अनायास ही उसे मृत बादशाहों के भाग्य की याद हो आयी और उस वीरान और सुनसान महल को देखते-देखते उसके नेत्र सजल हो गये।

इब्नबतूता लोगों से खूब हिला-मिला। इसी बीच मथुरा के सैयद जलालुद्दीन अहसान की लड़की हूर नशब से उसने शादी भी की। हूर को, जिसने एक लड़की को जन्म दिया था, वह खूब चाहता था; पर आगे चल कर उनका अलगाव हो गया। और बतूता को भी ज्ञात नहीं कि, फिर उन दोनों माँ-बेटियों का क्या हुआ। नौ वर्ष के इस लम्बे समय के बीच, यद्यपि उसने अपने किसी दूसरे विवाह का उल्लेख नहीं किया, फिर भी गुलाम लड़कियों के साथ अपने अस्थायी संसर्ग को उसने अवश्य स्वीकार किया है।

इन बातों से सिद्ध होता है कि, उसने शायद ही कभी किसी लड़की के साथ बिना यात्रा की हो। कुस्तुंतुनिया की यात्रा के बीच, उसने दो खूबसूरत यूरोपीय गुलाम लड़कियाँ भी खरीदी थीं—एक तो स्मरना के पास तीरा में और दूसरी मानिसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ECHO.4A-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने इरॅस्मिक कं. लि. लण्डन के लिए भारत में बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के पास बलिकासारी में।

२२ जुलाई १३४२ को शाही दूतावास ने चीन के लिए प्रस्थान किया; परंतु एक हमले के कारण कोइल के निकट ही उसे रुक जाना पड़ा। उसका वर्णन करते हुए, इब्नबतूता ने लिखा है—

"जैसे ही हम लोग कोइल की तरफ बढ़े, हमें मालूम हो गया कि, कुछ काफिर हिन्दुओं ने जलाली नगर पर आक्रमण करके उसे घेर लिया है। यह नगर कोइल से केवल सात मील की दूरी पर ही था, सो हम उसी तरफ बढ़ गये। हमने देखा कि, वे आक्रमणकारी जलाली के नागरिकों से लड़ रहे हैं, जिन बेचारों का एक प्रकार से सर्वनाश निश्चित ही था। जब तक हमने उन काफिरों पर प्रचंड आक्रमण नहीं कर दिया, वे हमारे बारे में कुछ भी न जान सके; हालाँकि संख्या में, वे लोग एक हजार घुड़सवार और तीन हजार प्यादे थे। हमने उनमें से एक-एक को गिन-गिन कर मारा और उनके घोड़े और हथियार भी छीन लिये .....।

"एक दिन की घटना है। मैं घोड़े पर सवार हो, अपने कुछ साथियों के साथ जा रहा था। गर्मी के दिन थे। दोपहर को कुछ नींद ले लेने की इच्छा से हम एक बाग में घुसे। पर जब हमने शोरगुल सुना, तो अपने घोड़ों को फौरन उधर ही मोड़ दिया और उन काफिरों से युद्ध करने में जुट गये, जिन्होंने अभी-अभी जलाली के एक गाँव पर आक्रमण किया था। हमने उनका पीछा किया; पर वे इधर-उधर भाग गये। हमारे साथी भी उनका पीछा करते-करते आपस में बँट गये। मैं केवल पाँच साथियों के साथ वहाँ रह गया। तभी पास वाले जंगल से घुड़सवारों और प्यादों की एक टुकड़ी ने हम पर धावा बोल दिया। उनकी काफी भीड़-भाड़ देख कर हम भाग खड़े हुए। दस लोगों ने मेरा पीछा किया; पर अंत में तीन के सिवाय सबने अपने शिकार को छोड़ दिया। मैं बुरी तरह फँस गया था। किसी भी तरह बच निकलने का उपाय नहीं था। घोड़े के अगले दोनों पैर पत्थरों से जकड़े हुए थे। तभी मैं नीचे उतरा, सामने के पत्थर हटाये और फिर सवार होकर एक घाटी की तरफ दौड़ चला। वहीं से एक सड़क जाती थी, मैं उसी पर हो लिया; पर सड़क कहाँ जाती थी—यह मुझे नहीं मालूम था। जैसे ही मैं वहाँ से गुजर रहा था, चालीस आक्रमणकारी अपने शस्त्र और तीर लेकर मुझ पर टूट पड़े। मैं डर के मारे पीला पड़ गया और सोचने लगा—अगर मैंने भागने की कोशिश की, तो ये अपने तीर मेरे शरीर के आर-पार निकाल देंगे। यों भी, तो मैं निहत्था था। अतः मैंने अपने-आपको जमीन पर डाल दिया और स्वयं ही उनसे पकड़ने को कहा। मैं जानता था कि, इस तरह करने पर, वे किसी व्यक्ति को मारते नहीं। उन्होंने मुझे पकड़ लिया और एक अंगरखा, कमीज और पायजामे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या खूब आवाज़ !

मॉड़ेल ०३५२

* एसी और एसी/डीसी दोनों में
* सब 'वेव्ज़' और तीनों बेन्ड
* ५ वाल्व और ८ कार्य
* और कीमत केवल रु. २७५.००

स्थानीय टैक्स अतिरिक्त

मर्फी रेडियो

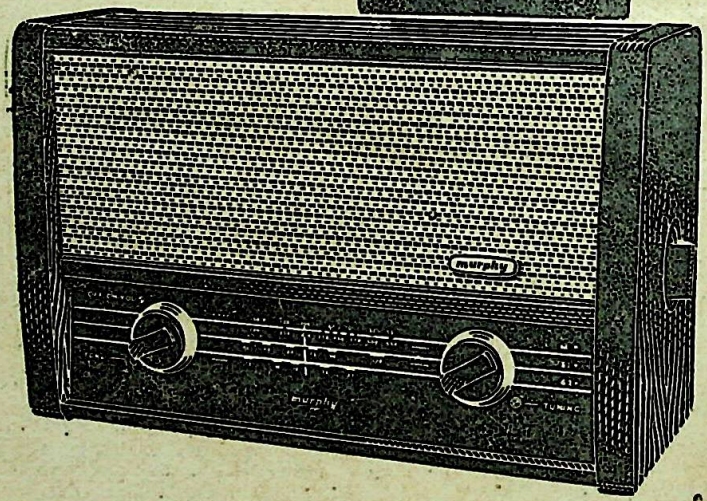

घर को
प्रसन्नता
से भर
देता है !

murphy radio

मर्फी रेडियो आफ इंडिया लि० बम्बई–१२.

MR/86

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को छोड़कर मेरा सारा-का-सारा सामान मुझसे छीन लिया।

"तब वे लोग मुझे अपने कैम्प की दायीं तरफ, एक जंगल में ले गये और वहाँ कुछ खाने की चीज ले आये, जिसे खाकर मैंने थोड़ा पानी पिया। उनके साथ दो मुसलमान थे, जिन्होंने फारसी में मेरे से बातें कीं और मेरी इस दुर्दशा के बारे में पूछताछ भी। मैंने उन्हें अपने बारे में बताया कि, मैं सुल्तान की ओर से यहाँ आया हूँ। 'वे या दूसरे लोग, तुम्हें सच-मुच मार डालेंगे; पर यहाँ उनका मुखिया हैं—और उन मुसलमानों ने उनमें से एक की तरफ इशारा करते हुए अपनी बात खत्म कर दी। मैंने उनसे मुसलमान की हैसियत से, कुछ पक्ष लेने का प्रयत्न किया। उन्होंने मुझे अन्य तीन लोगों के सुपुर्द कर दिया।.....शाम को वे लोग मुझे एक गुफा में ले गये। अगले दिन सुबह, वे आपस में जो बात-चीत कर रहे थे, उससे मैं समझ गया कि, वे मुझे मारना चाहते हैं।.....जैसे-तैसे दिन बीता और शाम हो गयी। वहीं पड़ी एक रस्सी देख कर, मैं मन-ही-मन सोचने लगा कि, मारते वक्त वे मुझे इसी से बाँधेंगे। तभी वहाँ कुछ लोग और आ गये और आपस में बातचीत करने लगे। उससे मैंने अनुमान लगाया कि, वे पहरेदारों से मेरे बारे में पूछ रहे थे—अरे, तुमने अभी तक इसे मारा क्यों नहीं?

"उन तीनों में एक सुंदर आकृति का नौजवान था। उसने मुझसे पूछा—'क्या तुम मेरे से यह चाहते हो कि, मैं तुम्हें छोड़ दूँ?' 'हाँ,' मेरे दीनभाव से उत्तर देने पर उसने कहा—'अच्छी बात है, जाओ।' यह सुनना था कि, मैं भाग खड़ा हुआ। पर मन-ही-मन डर रहा था कि, कहीं उन लोगों की नीयत न बदल जाये और मुझे फिर न पकड़ लें। इसलिए मैं झट से बाँस के जंगल में घुस गया और शाम होने तक अपने-आप को वहीं छिपाये रखा। फिर, उस नौजवान ने जिस ओर संकेत किया था, उस रास्ते पर बढ़ चला। इस तरह चलते-चलते एक पहर रात बीत गयी और मैं एक पहाड़ के निकट पहुँचा और जमीन पर सो रहा।

राजपुरुष
[श्रीलंका की एक प्राचीन कलाकृति का रेखानुकरण]

"सुबह होने पर अपनी यात्रा फिर शुरू कर दी और उस पहाड़ पर आया, जहाँ एक 'बैन' था। ('बैन' नाम, तत्कालीन भारतीयों ने ऐसे बड़े कुँए का रखा था, जिसके चारों ओर पत्थर की मुँडेर और पानी तक उतरने के लिए जिसमें सीढ़ियाँ होती थीं।) उसके पास ही सरसों की कुछ डंठलें पड़ी थीं, जिन्हें शायद कोई कपड़े धोते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डाली पर

'ग्रीन ऐण्ड गोल्ड'

'ग्रीन ऐण्ड गोल्ड' अंकित यह डाली सेट बहुत ही मनोहर होती है। डलिये की बुनावट की भांति ढाले हुए किनारे पर सुनहरी रेखाओं से घिरी हुई हरी रेखायें अंकित हैं। डाली आकार की सेट में यही एक विशेष आकर्षण है। बंगाल पॉटरीज द्वारा निर्मित चीनी मिट्टी के सुन्दर बर्तनों में डाली सेट वाकई एक मनमोहक सेट है। कम दाम में यह मिलती है और साथ ही टूट जाने पर इसका जोड़ा आसानी से मिलता है। डाली की टी सेट, डीनर सेट तथा कॉफी सेट मिलती है।

बंगाल पॉटरीज लिमिटेड

एकमात्र विक्रय प्रतिनिधि:

एलायड डिस्ट्रिब्यूटर्स ऐण्ड कं०. ३३, ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता-१

BPC-25 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वक्त भूल गया था। वहाँ पहुँच कर मैंने कुछ सरसों खाकर पानी पिया और फिर वहीं एक पेड़ की शीतल छाया में आराम से सो गया।

"जब मैं सोया हुआ था, तभी बैन के पास चालीस सशस्त्र घुड़सवार पहुँचे; पर खुदा का फज्ल था कि, वे मुझे न देख सके। जैसे ही वे गये, तो हथियारों से लैस दूसरे ५० आदमी आ धमके। उनमें से एक तो बिल्कुल मेरे सामने वाले पेड़ तक ही आ गया था; पर मुझ पर उसकी नजर नहीं पड़ सकी। तभी मैं कपास के खेत में जा छिपा और अगले दिन तक वहीं रहा। रात को जब उनकी आवाजें आनी बंद हो गयीं, तब मैं खेत से बाहर निकला और घोड़े के खुरों के निशान देखते-देखते एक दूसरे बैन तक चला आया।

" सूर्योदय होते ही, मैं पुनः चल पड़ा और इस तरह चलते-रुकते कई दिन बीत गये। तभी एक गाँव की तरफ जाते-जाते, मुझे दो बिल्कुल नंगे और काले-कलूटे आदमी मिले। मैं उनसे भयभीत होकर, वहीं बस्ती के पास पेड़ों के नीचे रुक गया। रात को गाँव में गया वहाँ मैंने एक मकान देखा, जिसके एक कमरे के कोने में इतना बड़ा सुराख था कि, उसमें से एक आदमी भी मजे से गुजर सकता था। मैं उसमें चला गया। अंदर जाकर देखा, तो जमीन भूसे से पटी हुई थी, वहीं एक पत्थर पड़ा था, जिस पर सिर रख कर मैं सो गया। नजदीक ही पत्थर पर एक चिड़िया बैठी थी, जो रात-भर अपने पंख फड़फड़ाती रही। मैंने सोचा, शायद वह भी डरी हुई होगी। और इस तरह दो भयाक्रांत आत्माओं का (मेरा और उसका) अनायास ही मिलन हो गया।

" कैद होनेवाले दिन के बाद से, एक-एक करके सात दिन बीत गये। अब आठवाँ दिन था। मैं प्यास के मारे बुरी तरह परेशान था। चलते-चलते एक कच्चे कुँए के पास पहुँचा। वहीं घाट पर एक रस्सी पड़ी थी, जिसमें टोप बाँध कर मैंने पानी खींचा। एक बार के बाद टोप तो गीला हो गया; पर मेरी प्यास नहीं बुझी। तब मैंने रस्सी में अपना एक जूता बाँध कर पानी निकाला, पर प्यास थी कि, बुझाये-न-बुझती थी। फिर पानी खींचने का प्रयत्न किया, तो रस्सी ही टूट गयी। अब मैं दूसरा जूता बाँध कर पानी निकालने की कोशिश कर ही था कि, तभी एक काले रंग का आदमी हाथ में पानी का बरतन लिये दीख पड़ा। वह बड़ा रहम-दिल था। उसने मुझे कुछ खाने को दिया और पानी पिलाया। उसकी इस मेहरबानी से मैं निहाल हो गया। उसके पूछने पर, मैंने अपना 'मुहम्मद' नाम बता दिया। उस भले आदमी का नाम काल्बुल-फरेह था, फारसी में जिसका अर्थ 'दिलशाद' होता है।

"तब उसने मुझे अपने साथ चलने को कहा। मैंने हाँ तो भर ली, पर थकावट के कारण, मुझसे चला नहीं गया। उसने अपनी पीठ पर बिठा कर ले चलने का आग्रह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

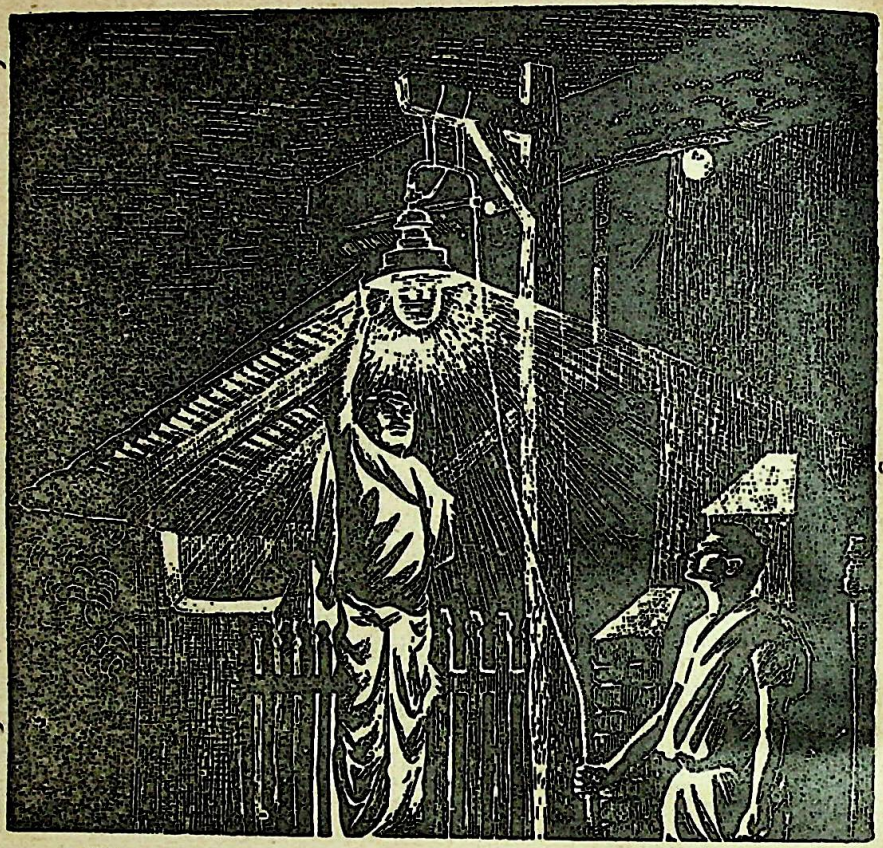

विकास की ज्योति

- साफ सुथरा गांव और स्वस्थ जनता
- अच्छी सड़कें और नालियां
- उन्नत खेती और भरपूर फसल
- निरक्षरता और छुआछूत के विरुद्ध जबर्दस्त आन्दोलन
- पानी के नल और गोबर से गैस बनाने का यंत्र

ये सब काम गांव वालों ने अपनी मेहनत के बल पर किए हैं और यह भाग्यवान गांव है—पटेलपाली जो मध्य प्रदेश के रायगढ़ सामुदायिक विकास खण्ड में स्थित है।

जो कुछ पटेलपाली में हुआ है वह आपके गांव में भी हो सकता है। केवल मेहनत और मिल कर कोशिश करने की जरूरत है। गांव की उन्नति का मतलब है आपके जीवन में अधिक सुख और देश की जल्दी प्रगति।

योजना की सिद्धि

आपकी समृद्धि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया। मैंने कहा –'तुम तो खुद ही कमजोर हो, मुझे कैसे ले चलोगे भला ?' वह कहने लगा –'खुदा सबु ताकत दे देगा, तुम मेरी पीठ पर बैठ तो जाओ।' मैं उसकी पीठ पर बैठ गया और चलते-चलते उसकी पीठ पर ही मुझे झपकी भी आ गयी। जब मैं जागा, तो अपने-आपको एक गाँव में पाया। मेरे पूछने पर उसने बताया कि, उस गाँव का नाम ताजपुरा था, जो कोइल से, जहाँ कि मेरे साथी ठहरे हुए थे, थोड़ी ही दूरी पर था।.... जब मैंने उस व्यक्ति को जरा ध्यान से देखा, तो शेख अबू अब्दुल्ला अल-मुरशीदी की भविष्यवाणी याद आ गयी। उसने कहा था–'हिंदुस्तान की सैर के दरम्यान तुम मेरे भाई 'दिलशाद' से मिलोगे, जो मुसीबत के वक्त तुम्हारी मदद करेगा।'"

यह है इब्नबतूता की कहानी उसी की जुबानी। दिलशाद के साथ अधिक दिन न रह सकने का उसे बराबर अफसोस बना रहा। क्योंकि दिलशाद ने उसके साथियों को सूचित कर दिया था, अतः वे आकर बतूता को अपने साथ ले गये और इस तरह वह न चाहते हुए भी, दिलशाद से बिछुड़ गया।

उनकी टोली फिर सुसंगठित हुई और वे बृजपुर, कन्नौज, अलापुर, ग्वालियर, चंदेरी, धार और उज्जैन होते हुए दौलताबाद पहुँचे और वहाँ से नन्दुरबार, काम्बे एवं गोवा होकर गांधार के बंदरगाह पर आ लगे। यहाँ से जहाज द्वारा मलबार-तट की ओर जाते हुए, उन्होंने क्रमशः गोगो, हिनावर, बरसेलोर, फकनार, हिली, जरफतन, दहफतन, फन्दारयाना और कालीकट देखे। पर कालीकट से उसके अन्य साथी तो एक चीनी जहाज पर सवार हो, चीन के लिए रवाना हो गये और बतूता दूसरे जहाज की इंतजारी में वहीं रह गया। तब वह २२ अप्रैल १३४३ को हिनावर लौट आया। वहाँ कुछ समय ठहरने के बाद, उसने मालद्वीप जाने का निश्चय किया। फिर वह १८ सितम्बर १३४४ को सुल्तान खादीजा और वजीर सुलेमान मनायक से मिलने माहल पहुँचा। वहाँ उसने अपने आप को अपरिचित ही रखना चाहा; पर कुछ अरबी और फारसी फकीरों ने वजीर से उसका परिचय करा दिया। वहाँ उसने क्रमशः चार विवाह किये और काजी

विजय-यात्रा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का पद भी स्वीकार किया; लेकिन अगस्त १३४५ में उसने इस पद से त्यागपत्र देकर उस द्वीप से प्रस्थान कर दिया।

मालद्वीप से जहाज द्वारा उसने बंगाल के लिए प्रस्थान किया। वहाँ से ४० दिन की यात्रा करके, वह सुमात्रा पहुँचा। वहाँ के राजा मलिक जाहीर ने बतूता का खूब स्वागत किया। यात्रा के बीच उसने जावा (जिसे तब मुल-जावा कहा जाता था) और तावल द्वीप देखे। जावा के राज-दरबार में उसे एक बड़ी विचित्र घटना देखने को मिली। वहाँ उसने एक व्यक्ति को हाथ में तेज चाकू लिये देखा, जिसे उसने दोनों हाथों से पकड़ कर अपनी नंगी गर्दन में घुसेड़ लिया था। तब बादशाह ने बतूता से पूछा –"क्या तुम्हारे देश में भी कोई व्यक्ति ऐसा करता है?" "ना, इस तरह का दृश्य तो मैंने कभी नहीं देखा", इब्नबतूता के यह कहने पर बादशाह हँसा और कहने लगा –"ये हमारे गुलाम हैं, जो हमारे लिए अपनी जान देते हैं।" इसके बाद उस व्यक्ति का मृत शरीर वहाँ से हटा दिया गया और बादशाह ने उसके परिवारवालों को कई बहुमूल्य उपहार देकर, विदा कर दिया।

तदुपरांत, बतूता ने अपनी यात्रा फिर प्रारंभ की और जहाज से तूफानी समुद्र की सैर करते हुए, वह तावल द्वीप पहुँचा। वहाँ के सौंदर्य से वह बहुत प्रभावित हुआ और वहाँ के निवासियों से, उनके बुत-परस्त होते हुए भी, उसे हार्दिक स्नेह हो गया। इसके बाद जहाज से २० दिन की यात्रा करके, वह चीन आया।

फिर चीन से बगदाद, जेरुसलम, काहिरा, मक्का आदि की यात्रा करते हुए, बतूता फैज के भव्य नगर में पहुँचा। यहाँ आकर उसकी ऐतिहासिक एवं साहसिक यात्रा-वृत्तांत के अंतिम अध्याय में पूर्ण-विराम लग गया। यहीं उसने अपनी यात्रा-वर्णन सम्बंधी पुस्तक 'रेहला' लिखी। पुस्तक-समाप्ति के २३ वर्ष बाद सन् १३७८ में, ७४ वर्ष की आयु में संसार के इस महान् यात्री ने अपने कृतित्व के इस प्रिय जगत् से विदा ली।

★

जब प्राध्यापक ने कक्षा में एक निबंध पढ़ कर सुनाया और विद्यार्थियों से उसकी समीक्षा करने को कहा, तो एक के बाद एक विद्यार्थी ने उसमें गलतियाँ दिखायीं; उनका आशय था कि, निबंध एकदम घटिया है। प्राध्यापक ने बताया कि, निबंध तो स्वयं उन्हीं का लिखा हुआ है। विद्यार्थी झेंप-से गये। तभी प्राध्यापक बोले–"परंतु भाइयो, मैं तो सारी रात मेहनत करके, इतनी गलतियाँ कर पाया। पता नहीं, आप लोग केवल दस मिनट में यह सब कैसे कर लेते हैं।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओ भैरवी ! — लेखक : यशपाल; प्रकाशक : विप्लव कार्यालय; लखनऊ; मूल्य : ढाई रुपये।

हिन्दी के सफल कथा-शिल्पी यशपालजी की सन् १९५५ के पश्चात् की ११ कहानियों का यह संग्रह लेखक की सुपरिचित शैली एवं शिल्प के अनुरूप ही है। संग्रह सर्वत्र रोचक और सुपाठ्य तो है ही; अनेक स्थानों पर रसात्मकता से, हृदय को एवं सामाजिक व्यंग्य से, मस्तिष्क को भी छूता है। कुछ कथानक अतीत से लिये गये हैं, कुछ कथाएँ आज के जीवन की हैं; परंतु सभी को लेखक ने वर्तमान की तुला पर तोला है। भूमिका में इसका विवेचन भी किया गया है। विशेषत : 'वर्दी', 'सामंती कृपा' और 'महाराजा का इलाज', जिनमें व्यंग्य के साथ मीठा हास्य भी मिला है, सफल कथाएँ हैं। संग्रह स्वागत-योग्य है।

ताल-प्रकाश — लेखक : भगवतशरण शर्मा; प्रकाशक : संगीत कार्यालय, हाथरस (यू० पी०); मूल्य : पाँच रुपये।

संगीत-शिक्षार्थियों के लाभार्थ संगीत कार्यालय द्वारा प्रकाशित हो रही ग्रंथ-माला का यह पुष्प तबला और उसके वादन से सम्बद्ध लगभग सभी ज्ञातव्य विषयों को, २६० पृष्ठों एवं ३१ अध्यायों में सार रूप से प्रस्तुत करता है। अनेक बातें जो केवल श्रुति-परंपरा से ही प्राप्त की जा सकती थीं, पुस्तक में प्रथम बार दी गयी हैं। ताल के आधार-भूत लय-तत्व का विवेचन भी दिया जाता, तो ग्रंथ में लक्ष्य और लक्षण अंगों में अधिक संतुलन रहता। ग्रंथ उपयोगी है।

ज्ञानोदय (विज्ञान-अंक परिशिष्ट समेत) — सम्पादक : लक्ष्मीचंद्र जैन, शरद देवड़ा; प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, कलकत्ता-१; मूल्य : तीन रुपये (परिशिष्ट समेत)।

विज्ञान-युग का सबसे बड़ा खतरा है, विज्ञान का मुट्ठी-भर विशेषज्ञों की संपदा बन कर रह जाना, उसका जन-मन तक न पहुँच पाना। आइंस्टीन ने ठीक ही कहा था कि, इस खतरे को टालना, मानवता की सबसे बड़ी सेवा होगी। 'ज्ञानोदय' ने विज्ञान-अंक द्वारा इस दिशा में सराहनीय प्रयत्न किया है। क्योंकि अभी तो पत्र-पत्रिकाएँ ही हिन्दी के पाठकों तक विज्ञान को पहुँचाने का एकमात्र माध्यम हैं। विज्ञान की अब तक की सिद्धि, उसके भौतिक, भावनात्मक एवं वैचारिक प्रभाव एवं परिणति, भावी संभावनाएँ, विज्ञान के साथ चिंतन एवं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुभूति के अन्य क्षेत्रों का तारतम्य—इन सब पर विवेचनात्मक एवं वर्णन-प्रधान लेखों के साथ, रोचक वस्तु एवं रूप-सज्जा का समन्वय कर, संपादकों ने विशेष कुशलता का परिचय दिया है। दिनकर एवं डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के लेख विशेष मननीय हैं। इस आयोजन के लिए सम्पादक महोदय साधुवाद के पात्र हैं।

जन्मभूमि पंचांग—सम्पादक : पंडित कृष्णाजी सोमण तथा अमृतलाल एल० शाह (शास्त्रार्थ-गणित विभाग); प्रकाशक : 'जन्मभूमि' प्रकाशन मंदिर, 'जन्मभूमि भवन', घोघा स्ट्रीट, बम्बई-१; मूल्य : पौने दो रुपये।

विक्रम संवत् २०१६ तथा शाके १८८२ का हिन्दी-गुजराती में प्रकाशित, यह जन्मभूमि पंचांग गत कई वर्षों से अपने खगोल-सिद्ध सूक्ष्म निरयन गणित-पद्धति एवं सुंदर छपाई के लिए प्रसिद्ध है। इसमें ज्योतिष के गणित एवं फलित विभाग पर, कई गवेषणात्मक एवं संशोधनात्मक संग्रहणीय लेख हैं। भारतीय तिथि एवं अंग्रेजी तारीख की एकरूपता रखने के लिए तथा व्रत, त्यौहार, भद्रा एवं पंचक आदि के निश्चित समय को और भी स्पष्ट करने के लिए, २४ घंटे के बाद २५, २६, २७ आदि घंटे की नवीन पद्धति का प्रचलन स्तुत्य है।

ज्योतिष-रहस्य (गणित खंड)—लेखक : गुप्त और अज्ञात; प्रकाशक : उपन्यास बहार आफिस, राजघाट, वाराणसी १; मूल्य : सवा रुपया।

प्रस्तुत पुस्तिका हिन्दी ज्योतिष-वाङ्मय के एक बड़े अभाव की पूर्ति करती है। सांपातिक काल से कुंडली निर्माण तथा सूक्ष्म मुहूर्त-काल साधने की कोई पुस्तक हिन्दी में उपलब्ध नहीं थी। ३२ पृष्ठों की इस छोटी-सी पुस्तिका में, कुंडली-गणित-सम्बंधी प्रचुर एवं आवश्यक सामग्री के साथ, इष्ट सांपातिक काल द्वारा किसी भी स्थान की कुंडली सरलता एवं शीघ्रता से बना लेने की पद्धति बतायी गयी है। इष्ट-काल पर विकलांत सूक्ष्म ग्रह-स्पष्टीकरण की सारणी भी दी गयी है। दक्षिणी गोलार्ध की भी सारणियों का समावेश होता, तो पुस्तिका की उपयोगिता और भी बढ़ जाती।

★

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अयोध्या में किसी मँगते को यह कहते सुना कि, "बाबूजी की टोपी ऊँची रहे।"—उन्होंने उसके हाथ में दुअन्नी रखकर सलाह दी—"अगर तुम औरतों से भिक्षा चाहते हो, तो जब किसी स्त्री को जाते देखो, बोला करो—'मेमसाहब की जूती ऊँची रहे।'"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमूल दुग्ध पदार्थ

हर एक दृष्टिकोन से अच्छे हैं...

अब, दूध का एकत्रीकरण, ले लीजिये...

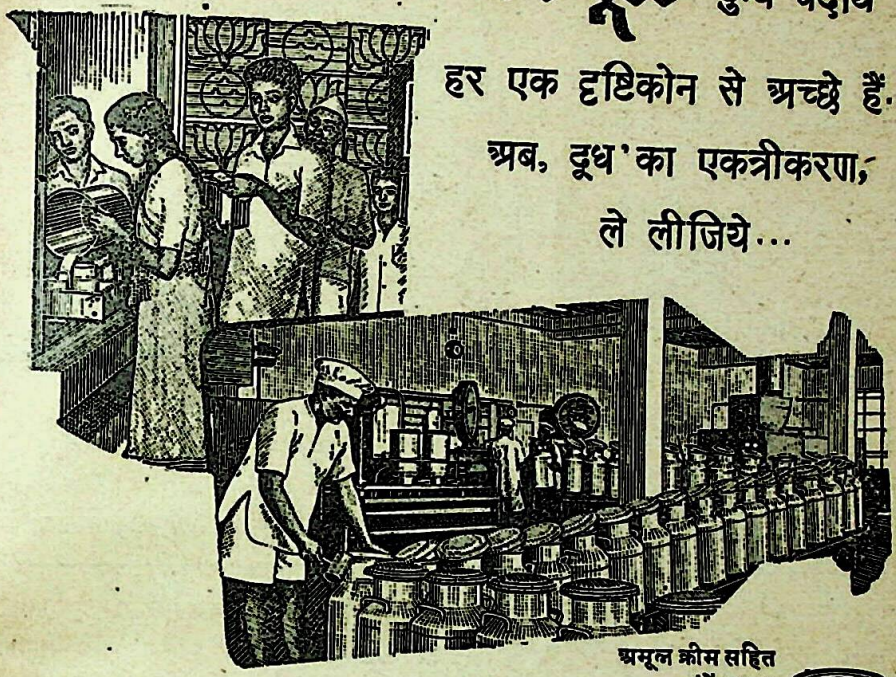

दूध ... शुद्ध ताज़ा ....और मलाई के अंश से भरपूर। अमूल की डेअरी फैक्टरी में ऐसा बढ़िया दूध १,००,००० सेर की मात्रा में हर रोज़ आता है और पैश्चराइज़ (कीटाणुनाशक क्रिया) किया जाता है। इसमें से ४०,००० सेर दूध हररोज़, विख्यात आरे मिल्क कॉलोनी द्वारा, बम्बई में बांटा जाता है और संयुक्त राष्ट्र संघ की एक शाखा के साथ समझौते के अनुसार लगभग ४,००० सेर दूध लेडा ज़िलों के १६,००० बच्चों को मुफ़्त दिया जाता है। इस शक्तिदायक, स्वास्थ्यकारक दूध का बाक़ी का हिस्सा; अमूल दुग्ध पदार्थ बनाने के काम आता है जो कि आज घर-घर में प्रचलित है।

अमूल क्रीम सहित कंडेंस्ड दूध

आपकी रुचि के अनुसार मीठा-चाय कॉफ़ी आदि के लिए आदर्श।

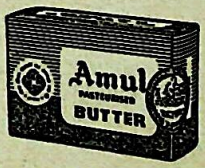

अमूल मक्खन

विदेशी दुग्धशाला वैज्ञानिकों की दृष्टि में यह संसार के सर्वोत्तम मक्खन के समतुल्य है।

अमूल पाउडर क्रीम सहित दूध

शुद्ध, स्वास्थ्यदायक दूध ताज़ा रखने के लिये नाइट्रोजन द्वारा पैक किया गया।

अमूल घी

केंद्रीय सरकार के खाद्य और कृषि विभाग के मंत्रालय द्वारा सर्वोत्तम कोटि का घी होने पर सुवर्णपदक प्राप्त।

अमूल– सर्वश्रेष्ठ शुद्धता का चिन्ह

खेडा जिल्ला सहकारी
दूध उत्पादक संघ लिमिटेड,
आणंद (पश्चिम रेलवे)

PSKMP-26D/59

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकाशवाणी विविधा

१९५९

आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित
चुने हुये लेखों, कविताओं, कहानियों, संस्मरणों
आदि का वार्षिक संकलन

रायल अठपेजी आकार, २८३ पृष्ठ
मूल्य केवल रु० ३·५० (डाकखर्च ५० नये पैसे)
आज ही आर्डर भेज कर अपनी प्रति मंगाइये

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली–८

शाखायें: १–गार्स्टिन प्लेस, कलकत्ता-१
२–प्रौस्पैक्ट चैम्बर्स, दादा भाई नौरोजी रोड, बम्बई-१
३–आनन्द सागर, ८, सैन थौम हाई रोड, मद्रास

DA-59/352

योग विद्या का अद्वितीय ग्रंथ

"उमेश योग दर्शन"

(प्रथम खंड)–चार भाषाओं में

गुजराती * हिन्दी * मराठी * अंग्रेजी लेखक : योगीराज श्री उमेशचंद्रजी
संस्थापक व संचालक : श्री रामतीर्थ योगाश्रम बम्बई–१४

इस ग्रंथमें रोगी तथा निरोगी स्त्री- पुरुषोंकी तन्दुरुस्ती अच्छी रखनेके लिए ६ प्रकार के मलशोधन कर्म, आसन, मानसिक इलाज, जलोपचार, सूर्य किरण चिकित्सा, आहार चिकित्सा आदि अनेक शक्ति वर्धक तथा रोग निवारक, घर में हो सकें ऐसे सुलभ, साध्य इलाज बताये गये हैं। ४०० से अधिक पृष्ठ तथा १०८ से अधिक चित्र हैं। ग्लेज आर्ट पेपर पर योग के आसनों के चित्र, मलशोधन कर्म के चित्र तथा स्वामीजी के रंगीन चित्र हैं। ३५ वर्षों का निजी अनुभव तथा २५ वर्षोंके दौरानमें श्री रामतीर्थ योगाश्रमसे लाभप्राप्त भाई-बहनोंके अनुभवोंके प्रमाण पत्र भी योगीराज ने इस ग्रंथमें प्रस्तुत किये हैं। संक्षेप में, स्त्रियों, पुरुषों, बालकों, रोगियों तथा निरोगियों सबको अपूर्व मार्ग दर्शन करानेवाली अजोड़ पुस्तक है।

प्रत्येक भाषा की पुस्तक की प्रति का मूल्य रु. १५)
डाक खर्च रु. २) अलग। मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर से भेजिये।

वी. पी. नहीं भेजी जाती। **श्री रामतीर्थ योगाश्रम,** दादर, बम्बई-१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टाटा स्टील

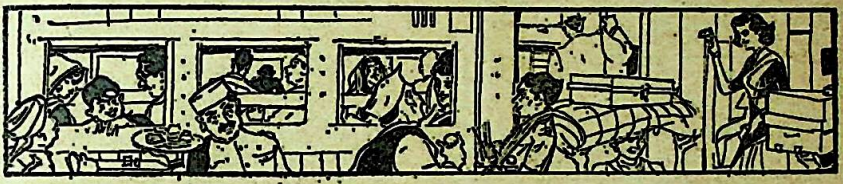

राष्ट्र की

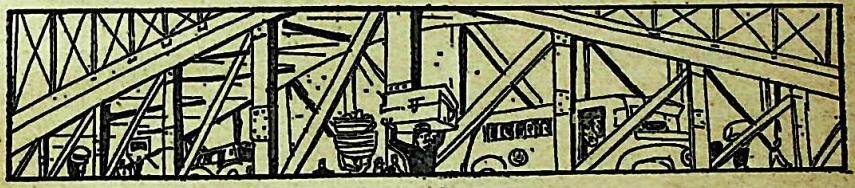

सेवा

करता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाद, खाज,
खुजली पर

मेन्यु : सपट एण्ड कं. मुंबई–२

विश्वसनीय

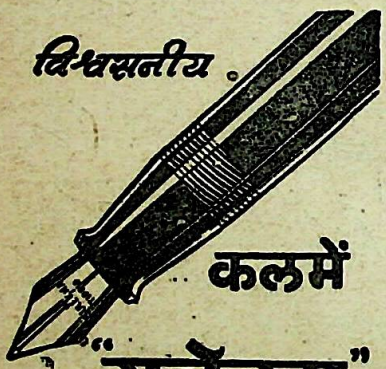

कलमें

"सुलेखा"

और

"ब्रीफमॅन"

PENMEN'S INDUSTRIAL SERVICES

BOMBAY-47.

सौंदर्य के लिये..

त्वचा सुकोमल रखता है

रेमी स्नो

ए.व्ही.आर.ए. ॲण्ड कं.

बम्बई २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाह, कितनी सुन्दर हो!

सतेज शुभ्र—डेट धुले वस्त्रों में कितनी सुन्दर लगती हो

डेट—भारतवर्ष का अद्भुत डिटर्जेण्ट, हरकारी धुलाई का माध्यम जो साबुन की मातहत करता है। यह साबु से भी ज्यादा तेज काम देता है, चाहे क्षारयुक्त या शुद्ध पानी हो, यह चिकनाहट तुरन्त दूर कर देता है, भरपूर झागभरा फ्रेन दिलाता है, और गंदगी को तनिक भी नहीं रखता।
डेट की धुलाई से आपके शुभ्र वस्त्रों को अद्भुत शुभ्रता प्राप्त होती है, आपके रंगीन वस्त्र मनोरम चमक से निखर उठते हैं। खासियत यह है कि आपके सबसे बढ़िया प्यारे और सबसे नाजुक वस्त्रों को डेट एक बड़ा उपकारक मित्रमात्र है।

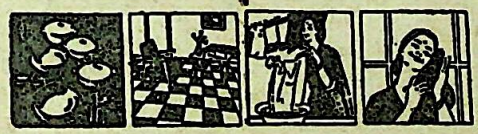

डेट चिकनाहट को तुरन्त भगा देता है

यह घरबार की हर चीज को शुभ्रता और स्वच्छता दिलाता है, उजले भान्डे-बर्तन, क्राँकरी, कटलरी दीवारें और फ़र्श।
डेट का इस्तेमाल कीजिए आपके घरबार की हर धुलाई के लिए। खुशियाँ मनाओ, परेशानियाँ भूल जाओ, गर्व मानो कि हमारी धुलाई डेट से होती है

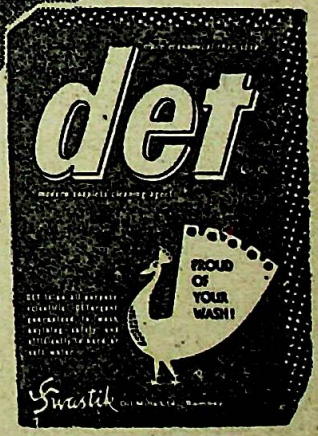

Shilpi 668

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्त्रियों के स्वास्थ्य और सुख के लिए

लोध्रा

केसरी कुटीरम
प्राइवेट लि.
गोपापेट्टा, मद्रास-१४

SISTA'S

FAMOUS GB GANGA BRUSH

☆ पेण्ट तथा वार्निश ब्रशेस
☆ प्लास्टिलक्स डाय डिस्टेम्पर पाथडर
☆ उत्तम सेंविंग ब्रशेस.
☆ जी. व्हाइट (सफेद और चमकदार के लिए.)
☆ गंगा सुपर व्हाइट (सभी कपड़ों के लिए.)
☆ गंगा "जर्म किलर" डी. डी. टी.

सम्पर्क कीजिये

गंगा ब्रश कंपनी,

२४/ए, कापड़ बाजार, बम्बई-१६.

हमारे प्रकाशन

कविता कौमुदी (उर्दू)	मूल्य ८)
नटखट बालक लोकप्रिय कथाकार	मूल्य १)५०
सागर की गोद में	मूल्य १)
नवनीत की छः माही ज़िल्दें	मूल्य ५)

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड

३४१–तारदेव, बम्बई–७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वसनीय बैंक

संपूर्ण भारत में फैली हुई ३७५ से अधिक
शाखाएँ और संपूर्ण संसार में सुचारू
रूप से संचालित ओवरसीज़ एजेन्सियाँ।

कार्यगत कोष	१६८ करोड़ रुपये से अधिक
जमा धनराशि	१३५ करोड़ रुपये से अधिक

दि
पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित सन् १८९५ इं०
प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

PHILIPS

PHILETTA DE LUXE

Larger modern restyled cabinet, 6 Noval valves AC/DC, all wave coverage, three wave bands. two position tone control, pickup connection. Fully tropic proof.

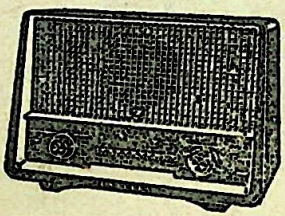

PHILIPS novosonic RADIO

A NEW WORLD IN SOUND

B3CA77U
PRICE RS. 315/-
(exclusive of all taxes)

AUTHORISED PHILIPS RADIO DEALER

PHILIPS RADIO

FSPD 19

Dealers :

Tel : 27958

JAMNADAS RUTONSI,
14, New Queens Road, BOMBAY-4.

Tel : 28208

MODERN RADIO STORES,
Prarthana Samaj, BOMBAY-4.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

मराठी डायजेस्ट

ज्ञान–विज्ञान के उच्च–कोटि के साहित्य देने की, जिस स्वस्थ परम्परा का पालन, गत आठ वर्षों से 'नवनीत' हिन्दी डाइजेस्ट, करता आ रहा हैं; उसी उत्कृष्ठ मार्ग–दर्शन का सम्बल लेकर, उसका अनुज, 'नवनीत' मराठी डायजेस्ट, आगामी जनवरी १९६० से, प्रति मास प्रकाशित होने जा रहा है। मराठी पाठकों की सुरुचि एवं कलाप्रियता को ध्यान में रखते हुए, अन्य भाषाओं से भी सुंदर एवं पठनीय सामग्री देने की परम्परा का निर्वाह, हिन्दी की ही भाँति, 'नवनीत' मराठी डायजेस्ट, में भी किया जायेगा।

दुग्ध–धवल ग्लेज कागज, चित्रों से भरपूर दो रंगी छपाई, चार रंगो में आकर्षक मुखपृष्ठ तथा कलात्मक साज–सज्जा से सम्पन्न, इस 'नवनीत' मराठी डायजेस्ट, का मूल्य, प्रति अंक, एक रुपया होगा।

वार्षिक चंदा: १० रुपये, द्वैवार्षिक १८ रुपये, त्रैवार्षिक २५ रुपये

वितरण व्यवस्थापक, नवनीत (मराठी डायजेस्ट)

३४१, तारदेव, बम्बई-७

वार्षिक मूल्य १०) मूल्य १)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B. 3215

कमाल अमरोही के टॅक्नीकलर चित्र 'पाकीज़ा' की सुंदर तारिका

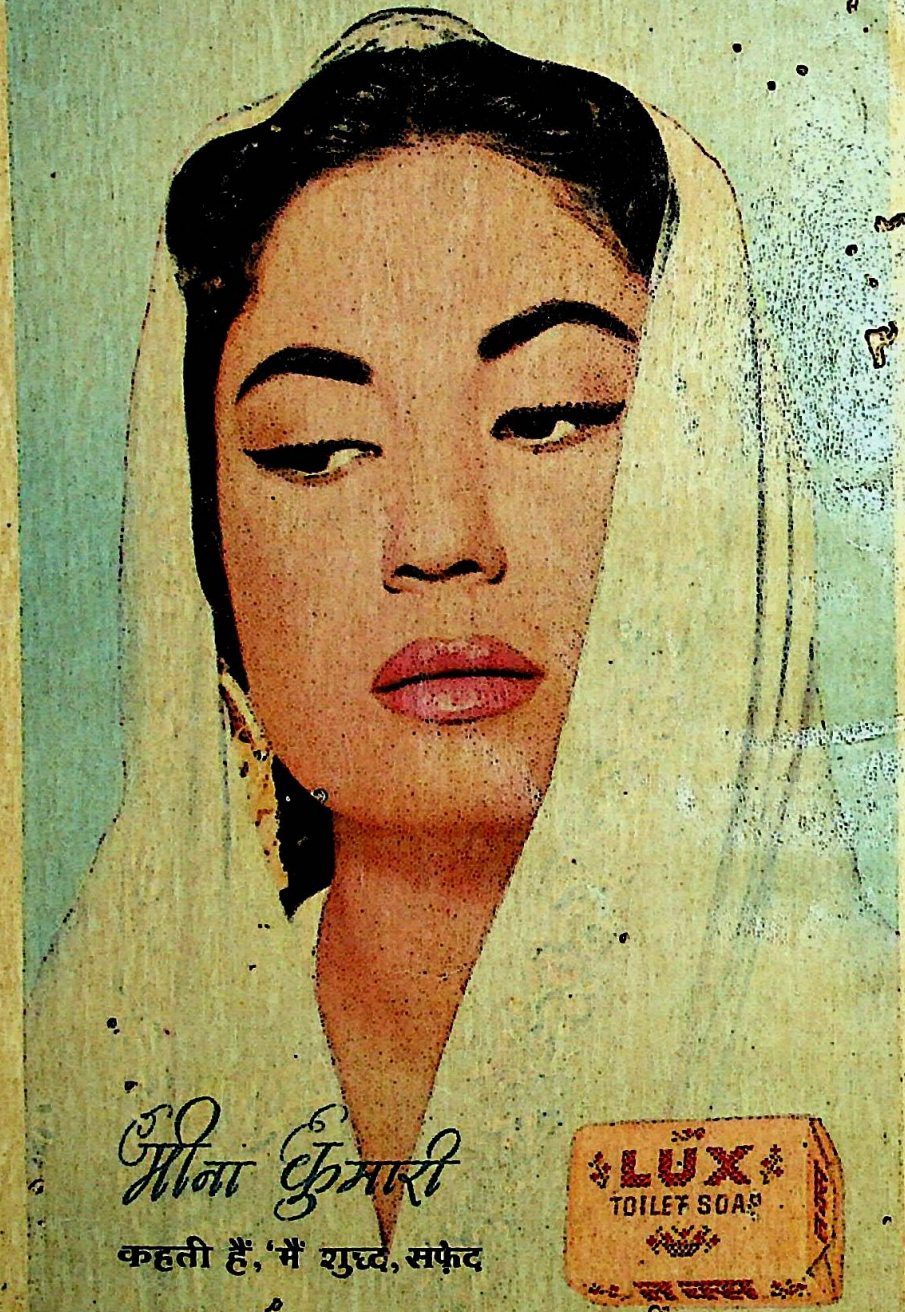
मीना कुमारी
कहती हैं, 'मैं शुद्ध, सफ़ेद
लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल करती हूं'

चित्र तारिकाओं का सौंदर्य साबुन

LTS. 23-50 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिंदुस्तान लॉर्ड लिमिटेड ने बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

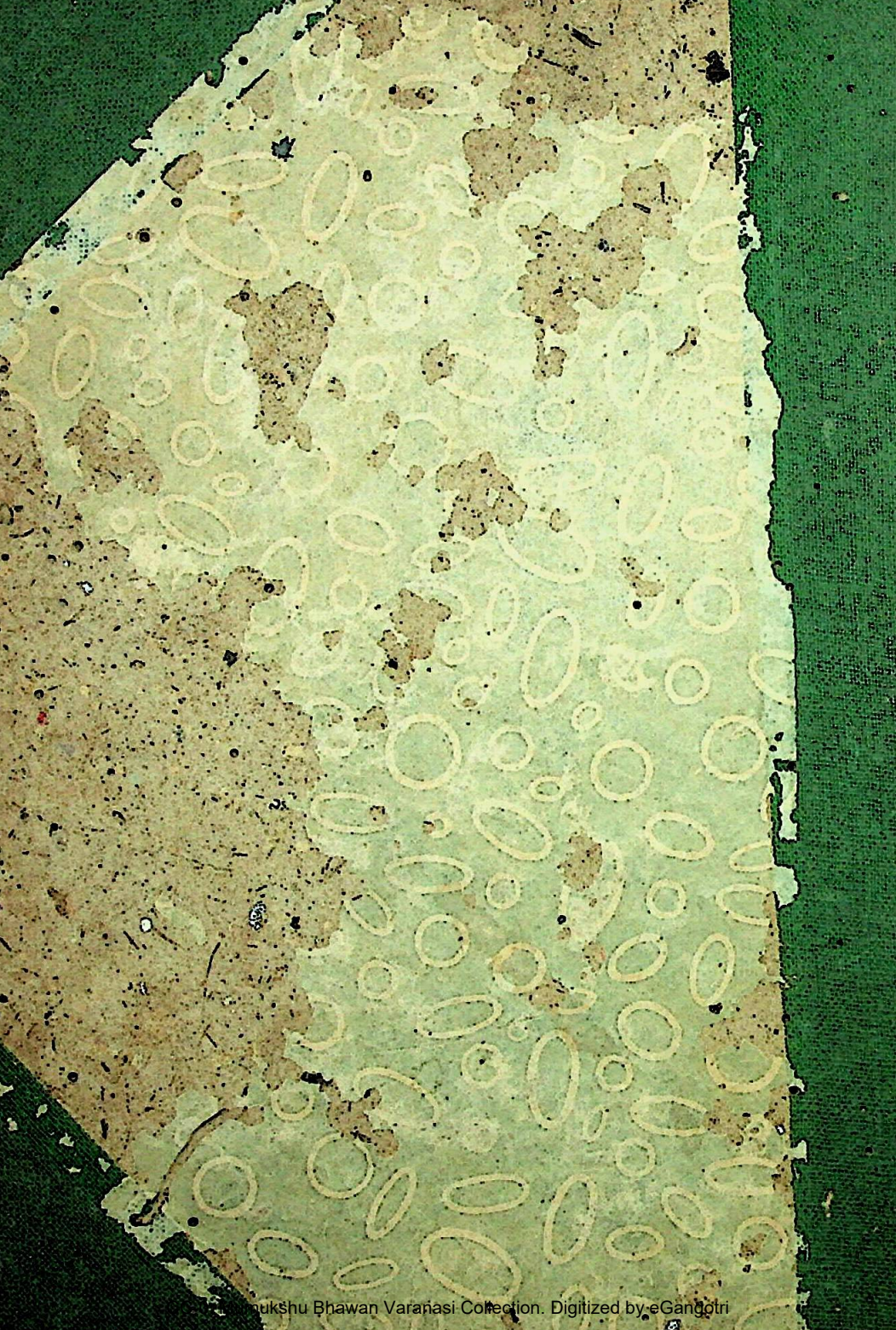
Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri